

भगवानुं ठेकाणुं :
 श्री. अ. ला. स्वे. स्थानकेवासी
 जैन शास्त्रोद्धार-समिति,
 ठे. गरेडिया कुवा रोड,
 राजकोट, (सौराष्ट्र).

Published by :
 Shri Akhil Bharat S. S.
 Jain Shastroddhara Samiti,
 Garedia Kuva Road, RAJKOT,
 (Saurashtra), W. Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
 जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैप यत्नः ।
 उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
 कालोद्भयं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
 जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
 जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
 है काल निरवधि विपुलपृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्य: ₹. २५=००

प्रथम आवृत्ति अत १२००
 वीर संवत् २४६२
 विक्रम संवत् २०२२
 धसवीसन १९६६

मुद्रक :
 मण्डिताल छगनदास शाह
 नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस,
 धीकांटा रोड, अमदावाद.

" સમજાવો યરહ ઉપદેશ ને દર્શ બાજબી દેખાડે
 સમજાવો ગિં રૂપ ફરબા સી જુદાકરે રૂપ ને
 સમજાવો સમજાવો રૂપ બાજબી. પાંચે ને મરુદ મરુદ
 પ્રેરે રૂપે ને મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ ને દર્શ બાજબી સમજે
 દર્શ બાજબી બાજબી બાજબી મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ
 બાજબી ને દર્શ મરુદ મરુદ ઉપદેશ બાજબી દર્શ બાજબી
 ને મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ
 ને પ્રેરે મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ
 મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ "

સાલે બાજબી મરુદ મરુદ મરુદ મરુદ

નામ ને ને
 બાજબી

श्री
स्थानाङ्ग सूत्रके पांचवें भागकी
विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय आठवां स्थान	पृष्ठाङ्क
१	आठवें स्थानका विषय विवरण	१
२	एकलविहारी साधुके स्वरूपका वर्णन	२-६
३	योनि संग्रह और गतिआगतिका निरूपण	६-९
४	कर्मप्रकृतिके चयादिका निरूपण	९-१२
५	मायावीके मायाके आलोचनका निरूपण	१३-२१
६	मायावी साधुके स्वरूपका निरूपण	२४-२८
७	अनालोचित-अप्रतिक्रान्त मायावीके उपपातकी गर्हणाका निरूपण	२९-३१
८	अनालोचित-अप्रतिक्रान्त मायावीकी आयतिकी गर्हणाका निरूपण	३१-३५
९	आलोचित-प्रतिक्रान्त मायावीके उपपातकी प्रशंसा	३६-४२
१०	आलोचित-प्रतिक्रान्त मायावीकी आयतिकी प्रशंसा	४३-४८
११	संवरासंवरका निरूपण	४८-४९
१२	आठ प्रकारकी लोकस्थितिका निरूपण	५०-५२
१३	आठ प्रकारकी गणिसंपदाका निरूपण	५२-५६
१४	महानिधिका निरूपण	५६-५७
१५	ईर्यासमित्यादि भावनिधिका निरूपण	५७-६०
१६	आलोचना देनेवाले आचार्य और लेनेवाले साधुके प्रायश्चित्तका निरूपण	६१-७०
१७	आठ प्रकारके भद्रस्थानोंका निरूपण	७०-७१
१८	आठ प्रकारके अक्रियावादियोंका निरूपण	७२-८९

१९	पापशास्त्रोंका निरूपण	९०-९४
२०	वचनविभक्तिके स्वरूपका निरूपण	९५-१०१
२१	आयुर्वेदके स्वरूपका निरूपण	१०१-१०५
२२	शक्रादि देवेन्द्रोंकी अग्रमहिषियोंका निरूपण	१०६-१०७
२३	असमारंभ और समारंभसे संयमासंयमका निरूपण	१०८-१११
२४	आठ प्रकारके सुक्ष्मजीवोंका निरूपण	१११-११३
२५	सिद्धके स्वरूपका निरूपण	११४-११६
२६	दर्शनोंके स्वरूपका निरूपण	११६-११७
२७	अर्द्धौषम्य कालके स्वरूपका निरूपण	११८-१२१
२८	भगवान् महावीरके द्वारा प्रव्रजित हुए आठ राजाओंका निरूपण	१२१-१२६
२९	आहार के स्वरूपका निरूपण	१२७-
३०	कृष्णराजी और तद्गत लोकान्तिक विमान और देवोंके स्वरूप निरूपण	१२८-१३३
३१	धर्मादि चारके मध्यभागका आठस्थानोंसे निरूपण	१३४-
३२	भविष्यदे तीर्थकार द्वारा प्रव्रजित होनेवाले राजाओंका निरूपण	१३५-
३३	कृष्णकी अग्रमहिषियोंका निरूपण	१३६-१३७
३४	आठ प्रकारके गतिका निरूपण	१३८-१३९
३५	अन्तर्द्वीपोंका निरूपण	१४०-१४२
३६	चक्रवर्तीके रत्नविशेषका निरूपण	१४३-१४४
३७	योजनके प्रमाणका निरूपण	१४४-१४६
३८	जम्बूस्वामी आदिकोंका निरूपण	१४७-१४९
३९	जम्बू मन्दरमें रही अन्य वस्तुओंका निरूपण	१४९-१५४
४०	तीर्थकारके स्वरूपका निरूपण	१५४-१५६
४१	दीर्घवैताढ्य आदिकोंका निरूपण	१५७-१६२
४२	मन्दर चूलिकाका निरूपण	१६३-१६५

६८	नवप्रकारके विकृतिके नामका निरूपण	२५८-२६०
६९	शरीरके नव छिद्रोंका निरूपण	२६०-२६१
७०	नव प्रकारके पुण्यका निरूपण	२६१-२६३
७१	पापके कारणोंका निरूपण	२६३-२६४
७२	पापश्रुतका निरूपण	१६४-२६६
७३	निपुण पुरुषका निरूपण	२६७-२६९
७४	साधुके गणका निरूपण	२७०-
७५	नवकोटि (नववाड) से शुद्ध भिक्षाका निरूपण	२७१-२७२
७६	ईशान देवेन्द्रके अग्रमहिषीका निरूपण	२७३-
७७	देवनिकायके स्वरूपका निरूपण	२७४-
७८	अव्यावाध देवके ग्रैवेयक विमान प्रस्तरका निरूपण	२७५-२७६
७९	आयुके परिणामका निरूपण	२७७-
८०	भिक्षुप्रतिमाके स्वरूपका निरूपण	२७९-
८१	प्रायश्चित्तके स्वरूपका निरूपण	२८१-२८२
८२	दक्षिण भरतमें रहे हुवे सिद्धादिकूटोंका निरूपण	२८३-२८८
८३	आंतररोगके कारण कर्मविशेषका निरूपण	२८८-२९०
८४	तीर्थंकरादिके नाम गोत्रप्राप्त करनेवाले श्रेणिक आदिकोंका निरूपण	२९०-२९२
८५	भावी मध्यमतीर्थंकर केवलीके स्वरूपका निरूपण	२९२-२९९
८६	श्रेणिकके तीर्थंकरत्वका निरूपण	३००-३२८
८७	महापद्मजिनके द्वारा प्ररूपित होनेवाले आरम्भ आदि स्थानोंका निरूपण	३२८-३३२
८८	नक्षत्रविशेषका निरूपण	३३२-३३३
८९	कल्पविशेष में रहे हुए विमानकी संख्याका निरूपण	३३३-३३४
९०	ऋषभ कुलकर विशेष ऋषभ प्रवर्तित प्रवृत्तिका निरूपण	३३४-३३६
९१	ग्रह विशेष वीथि प्रमाणका निरूपण	३३६-३३७
९२	नव प्रकारके नौ कषायका निरूपण	३३७-३३८

०.३	गुह्यकारके कोटिका निरूपण	३३८-३३९
०.४	गुह्यकारके स्वरूपका निरूपण	३३९-३४०
	दशवैध्यानाका मारम्भ	
०.५	दशवैध्यानाका विषय विवरण	३४१-
०.६	लोकमिथिनिका निरूपण	३४२-३४७
०.७	शब्दभेदका निरूपण	३४७-३४९
०.८	दश प्रकारके इन्द्रियागोंका निरूपण	३४९-३५२
०.९	गुह्यकारके स्वरूपका निरूपण	३५३-३५५
१.०	क्रोधके उत्पत्तिके कारणका निरूपण	३५६-३५८
१.०१	संयमादि निरूपण	३५८-३६१
१.०२	असंवरका विशेष प्रकारका कथन	३६१-३६३
१.०३	समाधि और असमाधिका निरूपण	३६३-३६४
१.०४	दश प्रकारकी प्रवृत्तिका निरूपण	३६५-३६७
१.०५	दश प्रकारके श्रमणधर्मका निरूपण	३६७-३६८
१.०६	दश प्रकारकी वैशाखन्यका निरूपण	३६९-३७०
१.०७	जीवके परिणामका निरूपण	३७१-३७८
१.०८	अजीवके परिणामका निरूपण	३७८-३८६
१.०९	अव्याख्यायके स्वरूपका निरूपण	३८७-३८९
१.१०	संयमानसंगमके स्वरूपका निरूपण	३९०-३९८
१.११	सूक्ष्मके स्वरूपका निरूपण	३९८-४०१
१.१२	गंगाभिध समूह नदियोंमें आत्ममगर्षण करनेवाली नदीका निरूपण	४०१-४०२
१.१३	भक्तशेखरान समवासीका निरूपण	४०३-४०५
१.१४	सम्पूर्णव्यास केके उक्ति आदिका निरूपण	४०५-४०६
१.१५	अष्टावक्र का आठ प्रश्नवाचके स्वरूपका निरूपण	४०६-४०८
१.१६	नानाप्रकारकी लोभीय वृत्ति केवला निरूपण	४०९-४१५
१.१७	आपसी परस्पर संदर्भवाचके उक्ति आदिका निरूपण	४१६-४१७

जम्बू द्वीपगत भरतादि दशक्षेत्रका निरूपण	४१५-४१६
अञ्जनक पर्वत आदिके उद्देश आदिका निरूपण	४१६-४१८
रुक्मवर कुण्डलवर पर्वतके उद्देश आदिका निरूपण	४१८-४१९
द्रव्यानुयोगके स्वरूपका निरूपण	४१९-४२९
चमरादि अच्युतेन्द्र आदिके उत्पात पर्वतका निरूपण	४३०-४४९
योजन सहस्रात्मक अवगाहनाका निरूपण	४४९-४५२
दश प्रकारके अन्तके स्वरूपका निरूपण	४५३-४५४
पूर्वगतश्रुतका निरूपण	४५५
दश प्रकारकी प्रतिलेखनाका निरूपण	४५५-४५९
आलोचनामें त्यागने योग्य दोषोंका निरूपण	४६०-४६२
आलोचना देनेवाले और लेनेवालेके गुणका निरूपण	४६३-४७१
प्रायश्चित्तके स्वरूपका निरूपण	४७२-४७४
मिथ्यात्वका निरूपण	४७४-४७७
वासुदेव सम्बन्धी वक्तव्य निरूपण	४७८-४८०
भवनवासी देवका निरूपण	४८०-४८१
दश प्रकारके सुखका निरूपण	४८१-४८५
उपघात और विशोधिके स्वरूपका कथन	४८६-४९५
संक्लेश और असंक्लेशके स्वरूपका कथन	४९५-४९७
दश प्रकारके बलका निरूपण	४९८-५००
सत्यमृषा आदिका निरूपण	५०१-५१२
दृष्टिवादके नाशका निरूपण	५१३-५१७
दश प्रकारके शस्त्रका निरूपण	५१७-५३७
वाग् (वागी-वचन) योगका निरूपण	५३८-५५०
दानके भेदोंका कथन	५५१-५५५
गति के भेदोंका निरूपण	५५६-५५८
दश प्रकारके मुण्डके स्वरूपका कथन	५५९-५६०
दश प्रकारके संख्यानका निरूपण	५६०-५६४

१४५	दश प्रकारके प्रत्याग्यानका निरूपण	५६५-५७२
१४६	दश प्रकारकी सामान्यामीमा निरूपण	५७२-५८०
१४७	सत्तासी भगवानके दश गृहान्तर्दोषा निरूपण	५८०-५८७
१४८	दश गृहान्तर्दोषके फलका निरूपण	५८४-५९१
१४९	सप्तम भूधरात्मिका निरूपण	५९१-५९९
१५०	दश प्रकारके मंडान्तर्दोषा निरूपण	६००-६०३
१५१	मैत्रिकीकी दुःखवेदनाका निरूपण	६०४-६०५
१५२	अमूर्त अर्थको जिन से जानने के ऐसा निरूपण	६०५-६०९
१५३	जिनपणीत योगार्थ दृष्टिक श्रुतिनिर्देशका निरूपण	६०९-६१८
१५४	नासिकादि तीरके दृश्यभेदका निरूपण	६१९-६२४
१५५	मध्यमकामीके कारणका निरूपण	६२४-६३०
१५६	आश्रमा योगका निरूपण	६३०-६३३
१५७	दश प्रकारके भर्म का निरूपण	६३३-६३६
१५८	दश प्रकारके स्वमित्रोंका निरूपण	६३६-६३८
१५९	पुत्रके भेदोंका निरूपण	६३८-६४१
१६०	दश प्रकारके अनुग्रहका निरूपण	६४१-६४३
१६१	मनुष्य श्रेणिका निरूपण	६४४-६४६
१६२	दृश्यम सुखानके परिमाणके प्रकारका निरूपण	६४७-६४८
१६३	सुखमसुखानके दृष्ट विवेक कथन	६४८-६५१
१६४	दश धर्मरूपोंके नामका निरूपण	६५१-६५३
१६५	दश प्रकारके सामान्य विचारका निरूपण	६५३-६५४
१६६	दश प्रकारके सामान्य विचारका निरूपण	६५५-६५७
१६७	दश प्रकारके सामान्य विचारके फलका निरूपण	६५७-६५९
१६८	जीवके भेदका निरूपण	६५९-६६०
१६९	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६०-६६१
१७०	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६१-६६२
१७१	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६२-६६३
१७२	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६३-६६४
१७३	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६४-६६५
१७४	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६५-६६६
१७५	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६६-६६७
१७६	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६७-६६८
१७७	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६८-६६९
१७८	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६६९-६७०
१७९	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७०-६७१
१८०	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७१-६७२
१८१	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७२-६७३
१८२	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७३-६७४
१८३	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७४-६७५
१८४	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७५-६७६
१८५	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७६-६७७
१८६	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७७-६७८
१८७	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७८-६७९
१८८	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६७९-६८०
१८९	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८०-६८१
१९०	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८१-६८२
१९१	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८२-६८३
१९२	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८३-६८४
१९३	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८४-६८५
१९४	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८५-६८६
१९५	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८६-६८७
१९६	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८७-६८८
१९७	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८८-६८९
१९८	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६८९-६९०
१९९	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६९०-६९१
२००	सामान्य धर्मके प्रकारका निरूपण	६९१-६९२

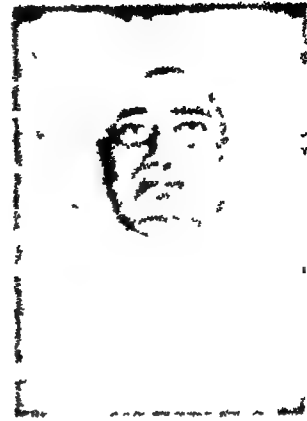
१७२	देवावास विशेषका निरूपण	६८५—
१७३	तेजोनिसर्गका निरूपण	६७६—६८४
१७४	दश प्रकारके आश्चर्यका निरूपण	७८५—६९२
१७५	रत्नप्रभा पृथ्वीके संबंधका कथन	६९२—६९४
१७६	रत्नप्रभाके आधेयभूत द्वीपादिका निरूपण	६९४—६९५
१७७	ज्ञानके वृद्धि करनेवाले नक्षत्रोंका निरूपण	६९७—६९८
१७८	कुलकोटी सूत्रका निरूपण	६९९—७००
१७९	चयादिका निरूपण	७००—७०६
१८०	शास्त्रप्रशस्ति	७०७—७०८

॥ समाप्त ॥





માહાત્મા મહેન્દ્રપ્રતાપસિંહ
અમદાવાદ



શ્રી. દેવશ્રી દુર્ગાબાઈ દાસીરામ ચાંડ્યા
બામુન.



શ્રી. દુર્ગાબાઈ ચૌધરી-ચાંડ્યા.



શ્રી. દેવશ્રી દુર્ગાબાઈ ચૌધરી-ચાંડ્યા
અમદાવાદ.



શ્રી. દેવશ્રી દુર્ગાબાઈ ચૌધરી-ચાંડ્યા
અમદાવાદ.

આધ્યમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી શામળભાઈ વેલજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



શ્રી વિનોદભાઈ વીરાણી



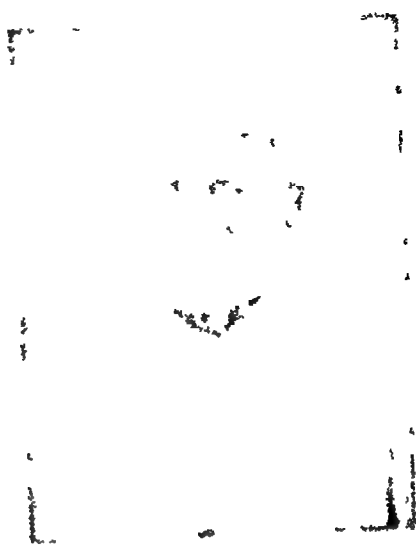
શેઠશ્રી જીસિંગભાઈ પોઆલાલભાઈ
અમદાવાદ.



(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



५ श्रीमन्, श्री श्री मुद्गगलप
प्राप्तिया प्राप्ति प्राप्तः



શ્રી વૃન્દાસ દત્તભટ્ટ પારેખ
રાજકોટ.



27. 2014 ମସିହା 27/12/14 ର 21:15
 ଘଟଣା.

[illegible]

આધ્યમુરખીશ્રીઓ



શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. હુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદજી સા.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન્ મૂલચંદજી
જવાહીરલાલજી ખરડિયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા ભાઈ મિશ્રીલાલજી ખરડિયા
૩ ઉભેલા સૌથી નનાભાઈ પૂનમચંદ ખરડિયા

આવમુજીશ્રીઆ



મ્વ. ડ્રેટ તામચંદ્રજી તાંત્રે ગેલડા
મદ્રાસ.



શ્રીમાન મેટશ્રી
મીમગજી મા. ચોગડિયા

૧૦ ૦
૧૦ ૦
૧૦ ૦

શ્રીમાન મેટ શ્રી. મીમગજી મા. ચોગડિયા
મદ્રાસ.

શ્રી

॥ શ્રી વીતરાગાય નમઃ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-વ્રતિચિરચિતયા
સુધાચ્યયા વ્યાચ્યયા સપલ્કૃતમ્

॥ શ્રી-સ્થાનાન્ગસૂત્રમ્ ॥

(પાંચમો ભાગઃ)

સ્થાનાન્ગસૂત્રસ્ય-સુધાચ્યયાયાં વ્યાચ્યયાયાં અષ્ટમં સ્થાનમ્

વ્યાચ્યયાતં સપ્તમં સ્થાનમ્, સમ્પતિ સંખ્યાક્રમપ્રાપ્તમષ્ટમં પ્રારમ્ભયતે, યસ્યેદ-
માદિમં સૂત્રમ્-તથા-અસ્ય સૂત્રસ્થાનન્તરાધ્યયનાન્તિમસૂત્રેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ-
અનન્તરસૂત્રે પુદ્ગલાઃ પ્રોક્તાઃ, તે ચ કર્મણા, તન્નિર્જરાચ પ્રતિમાવિશેષપ્રતિપન્નેન
અભિગ્રહવિશેષધારિણા મુનિના વિશેષતઃ ક્રિયતે ઇતિ એકલવિહારપ્રતિમાયોગ્યં
પુરુષં નિરૂપયતિ—

॥ અષ્ટમ સ્થાન પ્રથમ ઉદ્દેશ ॥

સાતવાં સ્થાન વ્યાચ્યાત હો ચુકા-અબ ક્રમપ્રાપ્ત આઠવાં સ્થાન
પ્રારમ્ભ હોતા હૈ, ઇસકા યહ “ અદ્વહિં ઠાણેહિં ” ઇત્યાદિ સૂત્ર પ્રથમ
સૂત્ર હૈ, ઇસ સૂત્રકા અનન્તર સાતવેં સ્થાનકે અન્તિમ સૂત્રકે સાથ એસા
સમ્બન્ધ હૈ કિ અનન્તર સૂત્રકે અન્તમેં પુદ્ગલોંકા કથન કિયા ગયા હૈ-
સો ઇન પુદ્ગલોંસેહી કર્મ બનતે હૈં-અથવા યે પુદ્ગલ કર્મરૂપ ભી હોતે
હૈં, ઇન કર્મરૂપ પુદ્ગલોંકી નિર્જરા જો જીવ પ્રતિમાયુક્ત (અભિગ્રહધારી)
હોતા હૈ-એસો વહ મુનિ જીવ વિશેષ રૂપસે કરતા હૈ અતઃ અબ સૂત્રકાર
એકલવિહારપ્રતિમા યોગ્ય પુરુષકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

આઠમા સ્થાનના પહેલા ઉદ્દેશનો પ્રારંભ

સાતમાં સ્થાનનું નિરૂપણ પૂરું કરીને હવે સૂત્રકાર કેમપ્રાપ્ત આઠમાં
સ્થાનની શરૂઆત કરે છે. તેનું પહેલું સૂત્ર આ પ્રમાણે છે—“અદ્વહિં ઠાણેહિં”
ઇત્યાદિ. આ સૂત્રનો આગલા સ્થાનના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ
છે—આગલા સ્થાનના છેલ્લા સૂત્રમાં પુદ્ગલોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે,
તે પુદ્ગલો વડે જ કર્મ બને છે અથવા તે પુદ્ગલો કર્મરૂપ પણ હોય છે.
પ્રતિમાયુક્ત (અભિગ્રહધારી) મુનિ વડે તે કર્મરૂપ પુદ્ગલોની નિર્જરા વિશેષ
રૂપે થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર એકલવિહાર પ્રતિમાને યોગ્ય પુરુષનું
નિરૂપણ કરે છે—“ અદ્વહિં ઠાણેહિં સંપન્ને ” ઇત્યાદિ—(સ. ૧)

મૂલમ્—અટ્ઠહિં ઠાળેહિં સંપન્ને અણગારે અરિહિં એગલ્લવિ-
હારપહિમં ઉવસંપજિત્તા પં વિહરિત્તિય્, તં જહા—સઢ્ઢીપુરિસ-
જાણ ૧, સચ્ચે પુરિસજાણ ૨, મેહાવી પુરિસજાણ ૩, વહુસ્સુણ
પુરિસજાણ ૪, સત્તિમં ૫, અપ્પાહિગરણે ૬, ધિહિમં ૭, વીરિય-
સંપન્ને ૮ ॥ સૂ. ૧ ॥

છાયા—અષ્ટભિઃ સ્થાનૈઃ સમ્પન્નોઽનગારઃ અર્હતિ એકલવિહારપ્રતિમામ્
ઉપસંપદ્ય સ્વલુ વિઠ્ઠુમ્, તદ્વથા—શ્રદ્ધિપુરુષજાતમ્ ૧, સત્યં પુરુષજાતમ્ ૨,
મેધાવિપુરુષજાતમ્ ૩, વહુશ્રુતંપુરુષજાતમ્ ૪, શક્તિમત્ ૫, અલ્પાધિકરણં ૬,
ધૃતિમત્ ૭, વીર્યસમ્પન્નમ્ ૮ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—‘અટ્ઠહિં ઠાળેહિં’ इत्यादि—

અષ્ટભિઃ સ્થાનૈઃ=ગુણવિશેષૈઃ સમ્પન્નો=યુક્તોઽનગારઃ સાધુ એકલવિહાર-
પ્રતિમામ્ - એકલસ્ય=એકાકિનો વિહારઃ=ગ્રામાદિચર્યા સર્વ પ્રતિમા=
અભિગ્રહસ્તામ્-જિનકલ્પપ્રતિમાં, માસિક્યાદિકાં ભિક્ષુપ્રતિમાં વા ઉપસંપદ્ય=સ્વીકૃત્ય

“અટ્ઠહિં ઠાળેહિં સંપન્ને” इत्यादि ॥ सूत्र १ ॥

ટીકાર્થ—આઠ સ્થાનોએ સમ્પન્ન અનગાર એકલ વિહાર પ્રતિમાનો પ્રાપ્ત કર
વિહાર કરનેકે યોગ્ય હોતા હૈ । સ્થાન શબ્દસે યહાં ગુણ લિયે ગયે હૈ,
અનગાર શબ્દકા અર્થ સાધુહૈ, અર્થાત્ આઠ ગુણોંકેધારી અનગાર હોતા
હૈ, વહી એકલવિહાર કર સકતા હૈ, ગચ્છ સે સાધુસંઘસે અલગ
હોકર ગ્રામાદિકોંમેં વિહાર કરના યહી એકલવિહાર પ્રતિમા હૈ, એસી
વહ એકલવિહાર પ્રતિમા જિનકલ્પપ્રતિમારૂપ યા માસિકી આદિ
ભિક્ષુપ્રતિમા રૂપ હોતી હૈ । જો ભિક્ષુ-મુનિ-આઠ ગુણોં સહિત હોતા
હૈ, વહી એકલવિહાર રૂપ પ્રતિમા-અભિગ્રહકો સ્વીકાર કરકે વિહાર

ટીકાર્થ—“અટ્ઠહિં ઠાળેહિં સંપન્ને” इत्यादि

આઠ સ્થાનોથી (ગુણોથી) યુક્ત અણગાર એકલ વિહાર પ્રતિમાથી
યુક્ત થઈને એકલ વિહાર કરવાને યોગ્ય બને છે. આ કથનનો બાવાર્થ એ
છે કે આઠ ગુણોથી યુક્ત સાધુ જ એકલ વિહાર કરી શકે છે. ગચ્છથી—
સાધુઓના ગંઘથી—અલગ થઈને ગ્રામાદિકોમાં વિહાર કરવો તેનું નામ એકલ
વિહાર પ્રતિમા છે. એવી તે એકલવિહાર પ્રતિમા જિનકલ્પ પ્રતિમારૂપ
માસિકી આદિ ભિક્ષુપ્રતિમારૂપ હોય છે. જે મુનિ આઠ ગુણોથી સંપન્ન હોય
છે. એજ એકલવિહારરૂપ પ્રતિમા (અભિગ્રહ) નો સ્વીકાર કરીને એકલ-

વિહર્તુમ્, અર્હતિ=યોગ્યો ભવતિ, એમિષ્ટગુણેર્હીનસ્તુ ન તથા ભવતિ । તાનેવ ગુણ-
નાદ-તદ્વયા-શ્રદ્ધિ-શ્રદ્ધા=જિનતત્ત્વવિષયકં શ્રદ્ધાનમ્-આસ્તિક્યમિતિ યાવત્ અનુ-
ષ્ઠાનવિષયકઃ સ્વક્રીયોઽભિલાષો વા, તદ્યુક્તં પુરુષજાતમ્=પુરુષપ્રકારઃ-યઃ
સકલસુરેન્દ્રૈઃ સમ્પક્તચારિત્રાચાલ્યમાનોપ્યચલઃ સન્તિષ્ઠતે, તાદૃશઃ પુરુષ-
વિશેષઃ इति પ્રથમઃ ૧। તથા-સત્યમ્=સત્યવાદિ=ચારિત્રનિર્વાહને શૂરત્વાત્,
સદ્ભ્યો=જીવેભ્યો હિતં વા સત્યં-જીવાનાં હિતચિન્તનપરં પુરુષજાતમ્-સત્યવાદી
જીવહિતપરાયણો વા પુરુષમેદઃ, इति દ્વિતીયઃ ૨। મેધાવિ-મેધા=ધારણાયતી

કરને યોગ્ય હોતા હૈ । જો હન આઠ ગુર્જોસે રહિત હોતા હૈ, વહ એકલ
વિહાર પ્રતિમાકો પ્રાસકર વિહાર કરનેકે યોગ્ય નહીં હોતા હૈ, વે આઠ
સ્થાનરૂપ ગુણ હસ પ્રકારસે હૈ-શ્રદ્ધિ પુરુષ જાત ૧, તત્ત્વ વિષયક શ્રદ્ધાન
કા નામ શ્રદ્ધિ હૈ-દૂસરા નામ હસકા આસ્તિક્ય ખી હૈ, અથવા-
અનુષ્ઠાન વિષયક જો અપના અભિલાષ હૈ, વહ શ્રદ્ધિ હૈ, હસસે યુક્ત
જો પુરુષ જાત હૈ, વહ શ્રદ્ધિ પુરુષ જાત હૈ, એસા શ્રદ્ધિ પુરુષજાત વહી
હોતા હૈ, જો સકલ સુરેન્દ્રોસે ખી મપને ગૃહીત સમ્પક્ત્વસે ચલાયમાન
કરનેકે કારણ ઉપસ્થિત કિયે જાને પર ખી ચલાયમાન નહીં હોતા હૈ,
કિન્તુ મેરુકી તરહ અચલ રહના હૈ એસા યહ પહલા સ્થાન હૈ ૧। સત્યં
પુરુષજાતમ્-જો પુરુષ ચારિત્રકે નિર્વાહસે શૂરવીર બોનેકે કારણ સત્ય-
વાદી હોતા હૈ, અથવા-જો જીવોંકી મલોઈ કરનેમેં તત્પર બના રહતા
હૈ, મેરે દ્વારા કિસી ખી જીવકો થોડાસા ખી દુઃખ ન પહૂંચે પ્રત્યુત

વિહાર કરવાને પાત્ર ગણાય છે જે સાધુ આ આઠ ગુણથી યુક્ત હોતો નથી
તે એકલવિહાર પ્રતિમાને અંગીકાર કરીને એકલવિહાર કરવાને પાત્ર
ગણાતો નથી. તે આઠ ગુણ નીચે પ્રમાણે સમજવા—

(૧) શ્રદ્ધિ પુરુષ જાત—તત્ત્વ વિષયક શ્રદ્ધાનું નામ શ્રદ્ધિ છે. તેનું બીજું
નામ આસ્તિક્ય (આસ્તિકતા) પણ છે. અથવા અનુષ્ઠાન વિષયક જે
પોતાની અભિલાષા છે તેનું નામ શ્રદ્ધી છે તેનાથી યુક્ત જે
પુરુષ હોય છે તેને શ્રદ્ધિ પુરુષ જાત કહે છે. સકલ સુરેન્દ્રો દ્વારા ચલાયમાન
કરવામાં આવે તો પણ જે પુરુષ ગૃહીત સમ્પક્ત્વમાંથી ચલાયમાન થતો
નથી, પરંતુ મેરુના જેવો અડગ રહે છે, એવા પુરુષને આ ગુણથી સંપન્ન
માનવામાં આવે છે (૨) સત્યં પુરુષજાતમ્—જે પુરુષ પોતાના ચારિત્રના
નિર્વાહમાં શૂરવીર હોવાને કારણે સત્યવાદી હોય છે, અથવા જે પુરુષ જીવોનું
લજ્જ કરવાને તત્પર રહેતો હોય છે, એવા પુરુષને જ સત્ય પુરુષ જાત કહે છે.

બુદ્ધિઃ, તદ્યુક્તં, મર્યાદાયાં ધાવતીતિ વા મેધાવિ-મર્યાદાવર્તિપુરુષજાતમ્ ।
 શ્રુતગ્રહણશક્તિયુક્તઃ સાધુમર્યાદાવર્તી વા પુરુષપ્રકાર इति તૃતીયઃ ।૩। વહુશ્રુતં-
 વહુ=પ્રચુરં શ્રુતં=શાસ્ત્રં સૂત્રતોઽર્થતથ્ચ यस્ય તાદૃશં પુરુષજાતમ્-ઉત્કૃષ્ટતઃ કિંચિ-
 ન્યૂનદશપૂર્વધરો જવન્યતો નવમસ્ય તૃતીયાચારવસ્તુપર્યન્તધરઃ પુરુષવિશેષ
 इति ચતુર્થઃ શક્તિમત્-શક્તિઃ=સામર્થ્યં, તદ્યુક્તમ્, તપઃ પ્રભૃતિ પશ્ચ સામર્થ્ય-
 યુક્તઃ પુરુષવિશેષઃ । ઉક્તં ચ—

“ તવેળ સત્તેગ સુત્તેગ, એગત્તેળ વલ્લેળ ય ।

તુરુગા પંચહા વુતા, જિળકપ્પં પહિવજ્જમ્મો ॥૧॥”

સવકા મેરે-ઢારા મલા હો એસા પુરુષહી સત્યપુરુષ જાત કહા જાતા હૈ ।
 યહ દૂસરા સ્થાન હૈ । મેધાવી -પુરુષ જાત - ધારણાવાલી
 બુદ્ધિકા નામ મેધા હૈ-એસી બુદ્ધિસે જો પુરુષ યુક્ત હોના હૈ, વહ મેધાવી
 પુરુષ જાન હૈ, અથવા-મર્યાદાકે અનુકૂળ ભવની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ ચલા-
 નેવાલા જો પુરુષ હૈ, વહ મેધાવી હૈ-એસા મેધાવી જો પુરુષજાત વિશેષ
 પુરુષ હૈ વહ મેધાવી પુરુષજાન હૈ યહ ત્રીસરા સ્થાન હૈ ૩ ।

ચૌથા વહુશ્રુત પુરુષજાત-જો આગમકા સૂત્રકી ઓર અર્થકી અપેક્ષા
 વિશેષ જ્ઞાના હોતો હૈ, વહ વહુશ્રુત હૈ, એસા વહુશ્રુત ઉત્કૃષ્ટસે કિંચિન્ત
 ન્યૂન દશ પૂર્વકા પાઠી હોતા હૈ, ઓર જવન્યસે નૌવે પૂર્વકી તૃતીય
 આચાર વસ્તુ તરુકા જ્ઞાતા હોતા હૈ યહ ચૌથા સ્થાન હૈ ૪। પાંચવાં
 સ્થાન શક્તિમાન્-તપ આદિરુપ પશ્ચ સામર્થ્યસે યુક્ત જો પુરુષ વિશેષ

તે પુરુષની એવી ભાવના રહે છે કે “ મારા દ્વારા કોઈ પણ જીવને સહેજ
 પણ દુઃખ પહોંચવું નેઈએ નહી, પરંતુ મારા દ્વારા સૌનું ભલું
 જ થવું નેઈએ.”

(૩) મેધાવી પુરુષ જાત—ધારણાવાળી બુદ્ધિનું નામ મેધા છે. એવી
 બુદ્ધિથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને મેધાવી પુરુષ કહે છે. અથવા મર્યાદાને
 અનુકૂળ પોતાની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ ચલાવનાર જે પુરુષ છે તેને મેધાવી પુરુષ
 કહે છે. એવા મેધાવી પુરુષ વિશેષને મેધાવી પુરુષ જાત કહે છે.

(૪) બહુશ્રુત પુરુષ જાત—સૂત્ર અને અર્થની અપેક્ષાએ જે આગમનો
 વિશેષ જ્ઞાતા હોય છે તેને બહુશ્રુત કહે છે. એવા બહુશ્રુત અત્રિક્રમાં અધિક
 દસ પૂર્વ કરતાં સહેજ ન્યૂન શ્રુતનો અને ઓછામાં ઓછો નવમાં પૂર્વની ત્રીજી
 આચાર વસ્તુ પર્યન્તનો જ્ઞાતા હોય છે,

(૫) શક્તિમાન—તપ આદિ રૂપ પાંચ સામર્થ્યથી જે પુરુષ વિશેષ
 યુક્ત હોય છે, તેને શક્તિમાન કહે છે. કહું પણ છે કે—

છાયા—તપસા સત્ત્વેન સૂત્રેણ એકત્વેન વલેન ચ ।

તુલના (યોગઃ) પશ્ચથા ઉક્તા જિનકલ્પં પ્રતિપચમાનસ્ય ॥૧॥ ઇતિ ।

ઇતિ પશ્ચમઃ ૧। અલ્પાધિકરણમ્—અલ્પમ્=અવિદ્યમાનમ્ અધિકરણં=કલહો
યસ્ય તાદૃશં પુરુષજાતમ્—કલહરહિતઃ પુરુષવિશેષ ઇતિ પષ્ઠઃ ૬। ધૃતિમત્=
ધૃતિઃ=ધૈર્યમ્. સોઽસ્તિ યસ્ય તત્, તથાવિધઃ પુરુષપ્રકારઃ । રત્યરત્ય કૂચપ્રતિકૂ-
લોપસર્ગસહનમમર્થઃ પુરુષવિશેષ ઇતિ સપ્તમઃ ૭। તથા—વીર્યસમ્પન્નમ્—વીર્ય=

યુક્ત હોતા હૈ, વહ શક્તિમાન કહા ગયા હૈ, ઉક્તં ચ—‘ તવેણ સત્ત્વેણ
સુત્તેણ ’ ઇત્યાદિ ।

જી જિનકલ્પકો પ્રાપ્ત કરના ચાહતા હૈ—અસકી તુલના તપસે,
સત્ત્વસે, સૂત્રસે, એકત્વસે ઓર વલસે કી જાની કહી ગઈ હૈ, અર્થાત્—
પ્રખર તપસ્વી હો દૃઢ સત્ત્વધારી હો સૂત્રકા પ્રખર જ્ઞાતા હો શારીરિક
વલસે યુક્ત હો વહ શક્તિમાન હૈ.

અલ્પાધિકરણ—જો પુરુષ કલહ કરનેસે રહિત હોતો હૈ, વહ અલ્પા-
ધિકરણ હૈ—યહાં અલ્પ શબ્દ અવિદ્યમાન અર્થકા ઘોનક હૈ યહ છદ્ધા
સ્થાન હૈ ૬, ધૃતિ, માન—જો પુરુષ વિશેષ રતિ—અરતિ, અનુકૂલ એવં
પ્રતિકૂલ, પરીવહ ઓર ઉપસર્ગોં કો સહન કરનેકી ક્ષમતાવાલાં હોતા
હૈ, એસા પુરુષહી ધૃતિમાન કહા ગયા હૈ યહ સાતવાં સ્થાન હૈ ૭, વીર્ય
સમ્પન્ન—ઉત્સાહકી અધિકતાકા હોના યહ વીર્ય હૈ—હસ વીર્યસે જો પુરુષ

“ તવેણ સત્ત્વેણ સુત્તેણ ” ઇત્યાદિ—

જે સાધુ જિનકલ્પ પ્રતિમારૂપ એકલવિહાર કરવા માગતો હોય, તે
તપ, સત્ત્વ, સૂત્ર, એકત્વ અને બલથી સંપન્ન હોવો જોઈએ એટલે કે પ્રખર
તપસ્વી, દૃઢ સત્ત્વધારી, સૂત્રનો પ્રખર જ્ઞાતા, અને શારીરિક બળથી યુક્ત
હોય એવા પુરુષને જ શક્તિમાન કહે છે અને એવો જ એકલ વિહાર
કરવાને પાત્ર ગણાય છે.

(૬) અલ્પાધિકરણ—જે પુરુષમાં કલહ કરવાનો સ્વભાવ હોતો નથી,
એવા પુરુષને અલ્પાધિકરણ સંપન્ન કહે છે. અહીં અલ્પપદ અવિદ્યમાનના
અર્થનું ઘોતક છે.

(૭) ધૃતિમાન—જે પુરુષ વિશેષ રતિ અરતિ, અનુકૂળ અને પ્રતિકૂળ,
પરીવહ અને ઉપસર્ગોંને સહન કરવાને સમર્થ હોય છે—ધૈર્યપૂર્વક તેમને
સહન કરવાની ક્ષમતા ધરાવતો હોય છે, એવા પુરુષવિશેષને જ
ધૃતિમાન કહે છે.

પરાક્રમ-ઉત્સાહાધિક્યમિતિ યાત્, તેન સમ્પન્નન=યુક્ત પુરુષજાતમ્-ઉત્સાહ-સમ્પન્ન: પુરુષવિશેષ इत्यष्टमः । આગ્રેષુ ચતુર્ષુ સ્થાનેષુ પુરુષજાતશબ્દો દ્રશ્યતે, સોઽત્યેષ્વપિ ચતુર્ષુ સ્થાનેષુ યોજનીયસ્તુલ્યન્યાયાદિતિ । ગુણગુણિનોરભેદોપ-ચારાદગુણી એવ ગુણત્વેનોક્ત ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

एवं विधोऽनगारः सर्वप्राणिनां रक्षणे समर्थो भवतीति तेषां प्राणिनां योनि संग्रहं गतिमार्गं चाष्टस्थानत्वेन प्ररूपयति—

મૂલમ્-અટ્ટવિહે જોણિસંગહે પળ્લન્તે, તં જહા-અંડયા ૧, પોયયા ૨, જાવ ઉબ્ભયા ૭ ઉવવાઙયા ૮ અંડયા અટ્ટગઙયા અટ્ટગઙયા પળ્લન્તા, તં જહા-અંડા અંડાસુ ઉવવજ્જમાણે અંડાહિંતો વા પોયાહિંતો વા જાવ ઉવવઙાહિંતો વા ઉવવ-જ્જેજ્ઞા । સે ચેવળં સે અંડા અંડયન્તે વિપ્પજહમાણે અંડયન્તાણ વા પોયયન્તાણ વા જાવ ઉવવાઙયન્તાણ વા ગચ્છેજ્ઞા ! એવં પોયયાવિ જરાડયાવિ । સેસાળં ગઢ આગઢં ણત્થિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

युक्त होता है, वह वीर्य सम्पन्न है, अर्थात् वज्ररिपभनाराच संहननके धरनेवाला हो उक्त आठ गुणके धरनेवाला एकेला विचर सकता है, यह आठवां स्थान है ८ यहां सूत्रमें आदिके चार स्थानोंमें पुरुष जात शब्द देखा जाता है-सो उक्त आठ गुणोंसे युक्त हो यह अकेला विहार कर सकता है बाकी के स्थानोंमें भी उसका योग कर लेना चाहिये यहां गुण एवं गुणीमें अभेदके उपचारसे गुणीही गुण रूपसे कहा गया है ॥ सू० १ ।

(૮) વીર્ય સંપન્ન—ઉત્સાહની અધિકતા હોવી તેનું નામ વીર્ય છે. આ વીર્યથી જે પુરુષ યુક્ત હોય છે તેને વીર્ય સંપન્ન કહે છે એટલે કે વજ્રરૂપના નારાય સંહનનવાળો પુરુષ આ પ્રકારના વીર્યથી સંપન્ન હોય છે.

ઉપર્યુક્ત આઠ ગુણોથી સંપન્ન મુનિ જ એકલવિહાર કરી શકે છે. અહીં પહેલા ચાર સ્થાનોમાં પુરુષજાત શબ્દ વપરાયો છે, બીજાના ચાર સ્થાનોમાં પણ તે શબ્દનો યોગ કરી લેવો જોઈએ. અહીં ગુણ અને ગુણીમાં અભેદ માનીને ગુણીને જ ગુણરૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. ॥ સૂ. ૧ ॥

છાયા—અષ્ટવિધો યોનિસંગ્રહઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—અણ્ડજાઃ પોતજાઃ યાવત્ ઉદ્ભિજ્જા ઔપપાતિકાઃ । અણ્ડજા અષ્ટ ગતિકા અષ્ટાગતિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—અણ્ડજોઽણ્ડજેષુ ઉપપન્નમાનઃ અણ્ડજેભ્યો વા પોતજેભ્યો વા યાવત્ ઔપપાતિકેભ્યો વા ઉપપદ્યેત । સ એવ સ્વલુ સોઽણ્ડજઃ અણ્ડજત્વં વિપ્રજંહત્ અણ્ડજતયા વા પોતજતયા વા ઔપપાતિકતયા વા ગચ્છેત્ । એવં પોતજા અપિ જરાયુજા અપિ । શેષાણાં ગતિરાગતિર્નાસ્તિ ॥ સૂ ૦ ૨ ॥

હસ પ્રકારકા અનગાર સર્વ પ્રાણિયોંકી રક્ષા કરનેમેં સમર્થ હોના હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર ડન પ્રાણિયોંકે યોનિ સંગ્રહકો એવં ડનકી ગતિ ઓર આગતિકો અણ્ડસ્થાન રૂપસે પ્રરૂપિત કરતે હૈ—

“ અઢ્ઢવિહે જોનિસંગહે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂ ૦ ૨ ॥

સૂત્રાર્થ—યોનિ સંગ્રહ આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—અણ્ડજ, પોતજ, યાવત્ ઉદ્ભિજ્જ, ઔપપાતિક હનમેં અણ્ડજ અણ્ડગતિક ઓર અષ્ટ આગતિક હોતે હૈ । જૈસે—અણ્ડજોંમેં ઉત્પદ્યમાન હોતા હુઆ અણ્ડજ અણ્ડજોંસે અથવા પોતજોંસે અથવા—યાવત્ ઔપપાતિકોંસે આકરકે અણ્ડજોંમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, તથા અણ્ડજ અણ્ડજપનેકો છોડકર પુનઃ અણ્ડજ રૂપસે તથા પોતજ રૂપસે યા ઔપપાતિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ । હસી તરહકા કથન પોતજ એવં જરાયુજોંકી ગતિ આગતિકે સમ્બન્ધમેં ખી જાનના ચાહિયે ચાકીકે જીવોંકો ગતિ આગતિ નહીં હોતી હૈ ।

આ પ્રકારનો અણુગાર સર્વ જીવોની રક્ષા કરવાને સમર્થ હોય છે. આ પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના સંબંધને અનુલક્ષીને હવે સૂત્રકાર યોનિસંગ્રહનું તથા તેમની ગતિ અને આગતિનું આઠ સ્થાનરૂપે કથન કરે છે—

“ અઢ્ઢવિહે જોનિસંગહે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૨)

સૂત્રાર્થ—યોનિસંગ્રહ આઠ પ્રકારનો કહ્યો છે. જેમ કે (૧) અંડજ, (૨) પોતજ, અને ઉદ્ભિજ્જ પર્યંતના સપ્ત સ્થાનમાં દર્શાવેલા સાત પ્રકારો તથા (૮) ઔપપાતિક તેમાંથી અંડજ જીવો આઠ ગતિ અને આઠ આગતિવાળા હોય છે. એટલે કે અંડજોમાં ઉત્પદ્યમાન અંડજ જીવ અંડજોમાંથી, અને ઔપપાતિક પર્યંતના આઠ પ્રકારોમાંથી આવીને અંડજોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, તથા અંડજ જીવ અંડજ પર્યાયને છોડીને ફરી અંડજરૂપ પણ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે અથવા પોતજથી લઈને ઔપપાતિક પર્યંતના જીવો રૂપે પણ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. જેજ પ્રકારનું કથન પોતજો અને જરાયુજોની ગતિ અને આગતિના વિષયમાં પણ સમજવું જોઈએ, બાકીના જીવોની ગતિ આગતિ થતી નથી.

ટીકા—‘ અદ્ભુતિહે જોણિસંગહે ’ इत्यादि—

अस्य सूत्रस्य व्याख्या सप्तमस्थानकस्य तृतीयसूत्रे गता । नवरम्-औपपा-
तिकाः=देवनारकाः । अष्ट गतयोऽष्टागतयश्च-अण्डजपोतजजरायुजानामेव भवन्ति,
तद्भिन्नानां रसज-संस्वेदिम-संमूर्च्छिमोद्भिज्जोपपातिकानां तु न भवन्ति ।
यतो रसजाद्युद्भिज्जान्ताः औपपातिकेषु नोत्पद्यन्ते रसजादयोहि देवनारकेषु न
गच्छन्तीत्यर्थः । देवनारकेषु पञ्चेन्द्रियजीवा एवोत्पद्यन्ते । एवमेव देवनारका
अपि रसजादिषु नोत्पद्यन्ते, किन्तु ते पञ्चेन्द्रियेषु पृथिव्यवनस्पतिलक्षणैकेन्द्रि-
येषु नोत्पद्यन्ते । अत एषां रसजाऔपपातिकान्तानामष्टगतित्वमष्टागतित्वं च नास्ति ।

टीकार्थ—इस सूत्रको व्याख्या सप्तम स्थानकके तृतीय सूत्रमें की जा चुकी
है, औपपातिक शब्दसे यहां उपपाद जन्मवाले देव और नारक लिये
गये हैं । अण्डज, पोतज और जरायुज इनकेही अष्ट गतियां और
अष्ट आगतियां होनी हैं । इनसे भिन्न जो रसज, संस्वेदिम, संमू-
च्छिम, उद्भिज्ज और औपपातिक हैं, उनके अष्ट गतियां और अष्ट
आगतियां नहीं होती हैं । क्योंकि रसजसे लेकर उद्भिज्ज तकके जीव
औपपातिकोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं—अर्थात् रसज आदि जीव मरकर
देव नारकियोंमें नहीं जाते हैं । क्योंकि देव नारकियोंमें पञ्चेन्द्रिय जीव
ही उत्पन्न होते हैं । इसी तरहसे देव नारक भी रसज आदिक जीवोंमें
उत्पन्न नहीं होते हैं । किन्तु वे पञ्चेन्द्रियोंमें अथवा—पृथिवी, अप् वन-
स्पति, इन एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसीलिये रसजसे लेकर औप-

टीकार्थ—આ સૂત્રમાં આવતી પહેલી સાત થેનિઓનું સ્પષ્ટીકરણ
સાતમાં સ્થાનના ત્રીજા સૂત્રમાં થઈ ગયું છે ઔપપાતિક
શબ્દ દ્વારા અહીં ઉપપાદ જન્મવાળા દેવો અને નારકો
ગૃહીત થયા છે. અંડજ, પોતજ અને જરાયુજોમાં જ આઠ ગતિઓ અને
આઠ આગતિઓનો સફલાવ હોય છે. તે સિવાયના રસજ, સંસ્વેદિમ, સંમૂ-
ચ્છિમ, ઉદ્ભિજ્જ અને ઔપપાતિક, આ પાંચ પ્રકારના જીવોમાં આઠ ગતિઓ
હોતી નથી, કારણ કે રસજથી લઈને ઔપપાતિક પર્યંતના જીવો
ઔપપાતિકોમાં ઉત્પન્ન થતાં નથી. એટલે કે તે પાંચ પ્રકારના
જીવો મરીને દેવો અને નારકોમાં જતાં નથી, કારણ કે દેવ
અને નારકોમાં પંચેન્દ્રિય જીવો જ ઉત્પન્ન થાય છે એજ પ્રમાણે દેવો અને
નારકો પણ રસજ આદિકોમાં ઉત્પન્ન થતાં નથી, પરંતુ તેઓ પંચેન્દ્રિયોમાં
અથવા પૃથ્વી, અપ્, અને વનસ્પતિકાય, આ એકેન્દ્રિયોમાં જ ઉત્પન્ન થાય
છે. તે કારણે રસજથી લઈને ઔપપાતિક સુધીના જીવોમાં અષ્ટ ગતિકતા

અમુમેવાર્થ સૂચયિતુમાહ સૂત્રકાર:—“સેસાણં ગઈ આગઈ જાતિ” ઇતિ । અત્રેદં
વોધ્યમ્—સંમૂર્ચ્છિમ્ પદેનાત્ર સંમૂર્ચ્છિમપશ્ચેન્દ્રિયતિર્યચ્છો ન ગૃહ્યન્તે, યતસ્તે
દેવેષુ નારકેષુ ચાપ્યુત્પદ્યન્તે ઇતિ ॥ સૂ. ૨ ॥

અણ્ડજાદયો જીવા અણ્ડવિધકર્મણાં ચયાદિસત્ત્વે એવ ભવન્તીતિ ચયાદીન્
પ્રત્યેકમણ્ડસ્થાનત્વેન નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—જીવા ણં અટ્ટ કમ્મપગડીઓ ચિણિંસુ વાં ચિણંતિ
વા ચિણિસ્સંતિ વા, તં જહા—ણાણાવરણિજં ૧ દરિસણાવર-
ણિજં ૨, વેયણિજં ૩ મોહણિજં ૪ આડયં ૫ નામં ૬ ગોત્તં ૭
અંતરાઈયં ૮ નેરહયાણં અટ્ટકમ્મપગડીઓ ચિણિંસુ વા ચિણંતિ
વા ચિણિસ્સંતિ વા, તં જહા—એવં ચેવ । એવં નિરંતરં જાવં

વેમાણિયાણં ૨૪ । જીવા ણં અટ્ટકમ્મપગડીઓ ઉવચિણિંસુ વા
ઉવચિણંતિ વા ઉવચિણિસ્સંતિ વા એવં ચેવ । એવં ચિણ ૧
ઉવચિણ ૨ બંધ ૩ ઉદીર ૪ વેય ૫ તહ ણિજ્જરા ૬ ચેવ । એ
છ ચઉવીસા દંડગાં માણિયઢવા ॥ સૂ. ૩ ॥

પાતિક તકકે જીવોંમેં અષ્ટ ગતિકના ઓર અષ્ટ આગતિકતા નહીં
હૈ । ઇસી અર્થકો સૂચિત કરનેકે લિયે સૂત્રકારને “સેસાણં ગઈ
આગઈ જાતિ” એસા કહા હૈ । સંમૂર્ચ્છિમ પદસે યહાં સંમૂર્ચ્છિમ
પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ્છ ગૃહીત નહીં હુએ હૈ, ક્યોંકિ વે દેવોંમેં ઓર નારકોંમેં ભી
ઉત્પન્ન હોતે હૈ ॥ સૂ. ૨ ॥

અણ્ડજ આદિ જીવ આઠ પ્રકારકે કર્મોંકે ચયાદિકે હોને પર હી
હોતે હૈ, અતઃ અબ સૂત્રકાર પ્રત્યેક ચયાદિકા નિરૂપણ આઠ સ્થાન

અને અષ્ટ આગતિકતાનો અભાવ ઠહો છે. એજ વાતને સૂચિત કરવાને માટે
સૂત્રકારે અહીં “સેસાણં ગઈ આગઈ જાતિ” આ સૂત્રપાઠ મૂક્યો છે અહીં
સંમૂર્ચ્છિમ પદના અર્થોગ દ્વારા સંમૂર્ચ્છિમ પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યચ્છ ગૃહીત થયા
નેથી, કારણ કે તેઓ દેવો અને નારકોમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે ॥ સૂ. ૨ ॥
આઠ પ્રકારના કર્મોના ચયાદિ થવાથી જ જીવાને અંકભાષિ રૂપે
ઉત્પન્ન થવું પડે છે, તેથી હવે સૂત્રકાર ચયાદિનું આઠ સ્થાનરૂપે નિરૂપણ કરે છે—

છાયા—જીવાઃ સ્વલ્પ અષ્ટ કર્મપ્રકૃતીઃ અચિન્વન્ વા ચિન્વન્તિ વા ચેષ્યન્તિ વા, તદ્વથા—જ્ઞાનાવરણીયં ૧, દર્શનાવરણીયં ૨ વેદનીયં ૩, મોહનીયમ્ ૪, આયુઃ ૫, નામ ૬, ગોત્રમ્ ૭, આન્તરાયિકમ્ ૮ । નૈરયિકાઃ સ્વલ્પ અષ્ટ કર્મપ્રકૃતીઃ અચિન્વન્ વા ચિન્વન્તિ વા ચેષ્યન્તિ વા, તદ્વથા—એવમેવ । એવં નિરન્તરં યાવદ્ વૈમાનિકાનામ્ ૨૪ । જીવાઃ સ્વલ્પ અષ્ટ કર્મપ્રકૃતીઃ ઉપાચિન્વન્ વા ઉપચિન્વન્તિ વા, ઉપચેષ્યન્તિ વા, એવમેવ । એવં ચયઃ ઉપચયોવન્ધ ઉદીરો વેદસ્તથા નિર્જરા ચૈવ । એતે પદ્, (એવં) ચતુર્વિંશતિઃ દણ્ડકાઃ મણિતવ્યાઃ ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘જીવાણં’ ઇત્યાદિ—

જીવાઃપ્રાણિનઃ સ્વલ્પ અષ્ટ કર્મપ્રકૃતીઃ અચિન્વન્=ઉપાર્જિતવન્તોઽતીતકાલે, ચિન્વન્તિ=ઉપાર્જયન્તિ વર્તમાનકાલે, ચેષ્યન્તિ=ઉપાર્જયિષ્યન્તિ ભવિષ્યત્કાલે, તદ્વથા—જ્ઞાનાવરણીયમ્ ૧, દર્શનાવરણીયમ્ ૨, વેદનીયમ્ ૩, મોહનીયમ્ ૪, આયુઃ ૫, નામ ૬, ગોત્રમ્ ૭, અન્તરાયિકમ્—અન્તરાય એવ—આન્તરાયિકમ્—અન્તરાય કર્મેતિ ૮ । इदं सामान्यसूत्रम् । एवं विशेषसूत्राणि नैरयिकादि वैमानिकान्ता-

રૂપેસે કરતે હૈ—‘જીવાણં અદ્વકમ્પગઢીઓ ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૩ ॥ ટીકાર્થ—જીવોને અતીત કાલમે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયોંકા ઉપાર્જન કિયાહૈ, વર્તમાન કાલમેં યે ડનકા ઉપાર્જન કરતે હૈ । તથા ભવિષ્યત્કાલમેં ધી યે ડનકા ઉપાર્જન કરેંગે । યે આઠ કર્મ પ્રકૃતિયાં હસ પ્રકારસે હૈ—

જ્ઞાનાવરણીય ૧, દર્શનાવરણીય ૨, વેદનીય ૩, મોહનીય ૪, આયુ ૫, નામ ૬, ગોત્ર ૭ ઓર અન્તરાય ૮, યહ સામાન્ય સૂત્ર હૈ હસમેં વિશેષ કથન હસ પ્રકારસે હૈ—નૈરયિક જીવોને અતીત કાલમેં આઠ કર્મપ્રકૃતિયોંકા ઉપાર્જન કિયાહૈ, વર્તમાનમેં યે ડનકા ઉપાર્જન કરતેહૈ તથા ભવિષ્યત્ કાલ મેં ધી યે ડનકા ઉપાર્જન કરેંગે ।

“જીવાણં અદ્વકમ્પગઢીઓ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩)

ટીકાર્થ—જીવોએ ભૂતકાળમાં આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કર્યું છે, વર્તમાન-કાળમાં પણ તેઓ તેમનું ઉપાર્જન કરે છે તથા ભવિષ્યમાં પણ તેઓ તેમનું ઉપાર્જન (ચય) કરશે. તે આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) જ્ઞાનાવરણીય, (૨) દર્શનાવરણીય, (૩) વેદનીય, (૪) મોહનીય (૫) આયુ, (૬) નામ, (૭) ગોત્ર અને (૮) અન્તરાય. આ સામાન્ય સૂત્ર છે. હવે નારકાદિ જીવોવશેષોની અપેક્ષાએ કથન કરવામાં આવે છે—નારક જીવોએ ભૂતકાળમાં આઠ કર્મપ્રકૃતિઓનું ઉપાર્જન કર્યું છે, વર્તમાન કાળે પણ તેઓ તેનું ઉપાર્જન કરે છે. અને ભવિષ્યકાળમાં પણ તેઓ તેનું ઉપાર્જન કરશે. એજ પ્રકારનું કથન વૈમાનિક પર્યન્તના જીવો વિષે પણ સમજવું. વૈમાનિક પર્યન્તના જીવોનાં વિષયમાં પણ તેઓ તેમનું ઉપાર્જન કરતા હતા, કરે છે, અને કરશે. તેમ સમજવું

નાશ્રિત્ય વિવરણીયાનિ । અમુમેવાર્થં સૂચયિતુમાહ સૂત્રકારઃ—‘ નેરહ્યાણં અટ્ટકમ્મ-
પગડીઓ ચિર્ણિસુ વા ’ इत्यादि—‘ एवं निरन्तरं जाव वेमाणियाणं ’ इत्यन्तमिति ।
एवमुपचय-सूत्राण्यपि सामान्यविशेषोभयात्मकानि बोध्यानि । तदाह—“ जीवाणं
अट्ट कम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा, उवचिणंति वा उवचिणिस्संति वा, एवंचेव ”
इति । एवमेव सामान्यविशेषरूपेण बन्धादि सूत्राण्यपि । विज्ञेयानि । एतदेव
दर्शयितुं संग्रहणीगाथोत्तरार्द्धमाह—

“ एवं चिण उवचिण बंध उदीर वेय तह गिज्जरा चेव ”-इति ।

चयोपचयसूत्राणि तु सामान्यविशेषोभयात्मकत्वेनोक्तानि । बन्धसूत्राणि
उदीरणासूत्राणि वेदनासूत्राणि निर्जरासूत्राणि चापि सामान्यविशेषोभया-

इसी तरहसे यावत् वैमानिक जीवोंने भी निरन्तर अनीत कालमें
आठ कर्म प्रकृतियोंका उपार्जन किया है, वर्तमानमें वे उनका उपार्जन
करते हैं, तथा भविष्यत्कालमें भी वे उनका उपार्जन करेगे ।

इसी प्रकारसे सामान्य विशेष रूपसे उपचय सम्बन्धी सूत्रोंका
भी कथन कर लेना चाहिये. यही बात सूत्रकारने “ जीवा णं अट्टकम्म-
पगडीओ उवचिणिंसु० वा, उपचिणंति वा, उवचिणिस्संति वा एवं चेव ”
इस सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की है, तथा इसी तरहसे सामान्य विशेष
रूपसे बन्धादि सूत्रोंको भी कहलेना चाहिये यह प्रकट करनेके लिये
यहां सूत्रकारने संग्रहणी गाथाका यह उत्तरार्ध “ एवं चिण उवचिणं
बंध उदीरवेय तह गिज्जरा चेव ” कहा है । तात्पर्य इसका ऐसा है—
कि जिस प्रकार सामान्य और विशेष रूपसे ये चयसूत्र और उपचय-
सूत्र कहे गये हैं—उसी प्रकारसे बन्धसूत्र, उदीरणसूत्र, वेदनासूत्र

जीवाणं अट्टकम्मपगडीओ उवचिणिंसु वा, उपचिणंति वा, उवचिणिस्संति
वा एवं चेव ” अथ सूत्रमां नेपुं कथनं કરવામાં આવ્યું છે એવું જ કથન
સામાન્ય છે. અને નારદેથી લઈને વૈમાનિક પર્યંતના જીવોના
વિષયમાં ઉપચયને અનુલક્ષીને પણ કરવું જોઈએ. એ જ
પ્રમાણે સામાન્ય વિશેષરૂપ બન્ધાદિ સૂત્રોનું પણ કથન કરવું જોઈએ. એજ
વાત પ્રકટ કરવાને માટે સૂત્રકારે અહીં સંગ્રહણી ગાથાનો આ ઉત્તરાર્ધ લાગ
પ્રકટ કર્યો છે—“ એવ ચિણ ઉવચિણ બંધ ઉદીરવેય તહ ગિજ્જરા ચેવ ” આ
કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે જેવી રીતે સામાન્ય અને વિશેષરૂપે અથસૂત્રનું
કથન કરવામાં આવ્યું છે, એજ પ્રમાણે બન્ધસૂત્ર, ઉદીરણ સૂત્ર, વેદના
સૂત્ર અને નિર્જરાસૂત્રનું પણ સામાન્ય અને વિશેષરૂપે કથન કરવું જોઈએ.

ત્મકત્વેન પૂર્વવદ્ વિજ્ઞેયાનીતિ । ચયાદીનામર્થસ્ત્વમ્-ચયનમ્=કષાયાદિ પરિણતસ્ય
 કર્મપુદ્ગલોપાદાનમાત્રમ્ ૧। ઉપચયનં=ચિતસ્યાત્રાધાકાલં વિદ્યાય જ્ઞાનાવરણીયા-
 દિતયા નિષેકઃ સંવેત્થમ્-પ્રથમસ્થિતૌ વહુતરં કર્મદલિકં નિપિશ્વતિ, તતો દ્વિતી-
 યાર્યા સ્થિતૌ વિશેષહીનમ્, એવં યાવત્ ઉત્કૃષ્ટાયાં સ્થિતૌ વિશેષહીનં નિપિશ્વતિ
 ૨। બન્ધનમ્-તસ્યૈવ જ્ઞાનાવરણીયાદિતયા નિપિક્તસ્ય પુનરપિ કષાયપરિણતિ-
 વિશેષાત્ સંશ્લેષણમ્ ૩। ઉદીરણમ્-ઉદયમપ્રાપ્તસ્ય કર્મદલિકસ્ય વીર્યવિશેષેણ
 સમાકૃષ્યોદયાવલિકાયાં પ્રવેશનમ્ ૪। વેદનમ્-સ્વભાવેન ઉદીરણાકરણેન ચ

और निर्जरासूत्र भी सामान्य एवं विशेष रूपसे व्याख्यात कर लेना
 चाहिये । इन चय आदिकोंका अर्थ इस प्रकारसे है-कषाय आदि रूपसे
 परिणत हुए जीवके द्वारा जो कर्म पुद्गलोंका सामान्य रूपसे उपार्जन किया
 जाता है, वह चय है १, आधाधाकालको छोड़कर गृहीत कर्म पुद्गलोंका जो
 ज्ञानावरणीयादि रूपसे निषेक है, वह उपचयन है २, वह उपचयन रूप
 निषेक इस प्रकारसे होता है, जैसे-प्रथम स्थितिमें बहुतर कर्मपुद्ग-
 लका निषेक होता है, उसके बाद द्वितीय स्थितिमें विशेषहीन कर्म
 दलिकोंका निषेक होता है, इस तरह होते २ यह निषेक यावत् उत्कृष्ट
 स्थिति तक विशेष २ हीन होता है, ज्ञानावरणीयादि रूपसे निषिक्त
 हुए कर्म पुद्गलका कषाय परिणति विशेषसे जो आत्माके साथ संश्ले-
 षण (सम्बन्ध) है, वह बन्ध है ३, उदयमें प्राप्त नहीं हुए कर्म
 दलिकको वीर्य विशेषसे खींचकर उदयावलिकामें प्रवेश कराना इसका
 नाम उदीरणा है ४, स्वभावसे या उदीरणाकरणसे उदयावलिकामें

આ ચયાદિનો અર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે - કષાય આદિરૂપે પરિણત
 થયેલા જીવ દ્વારા જે કર્મપુદ્ગલોનું ઉપાર્જન થાય છે તેનું નામ ચય છે.
 આધાધાકાળને છોડીને ગૃહીત કર્મપુદ્ગલોનો જે જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપે
 નિષેક થાય છે, તેનું નામ ઉપચયન છે. તે ઉપચયન રૂપ નિષેક આ પ્રકારે
 થાય છે-પ્રથમ સ્થિતિમાં બહુતર કર્મપુદ્ગલોનો નિષેક થાય છે, ત્યાર બાદ
 દ્વિતીય સ્થિતિમાં વિશેષ હીન કર્મદલિકોનો નિષેક થાય છે, આ પ્રમાણે
 થતાં થતાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પર્યંત તે નિષેક વિશેષ વિશેષ હીન થતો જાય છે.
 જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપે નિષિક્ત થયેલાં કર્મપુદ્ગલોનું કષાયપરિણતિ વિશેષ
 વડે આત્માની સાથે જે સંશ્લેષણ (સમ્બન્ધ) થાય છે, તેનું નામ
 બન્ધન છે. ઉદયાવલિકામાં નહીં આવેલાં કર્મદલિકોને વીર્યવિશેષ
 વડે ખેંચીને ઉદયાવલિકામાં પ્રવેશ કરાવવો તેનું નામ ઉદીરણ છે. સ્વાભાવિક

उदयावलिकाप्रविष्टस्य, कर्मणोऽनुभवनम् । निर्जरणं-कर्मणोऽकर्मताभवनं-जीव
प्रदेशेभ्यः कर्मणां परिशटनमित्यर्थः ६। क्वचित्तु चयनादीनामयमर्थः, तथाहि-
चयनम्=असंकलनम् १, उपचयनम्=परिपोषणम् २, बन्धनम्=निर्मापणम् ३,
उदीरणाकरणेन कर्मदलिकानाकृष्य तेषामुदयावलिकायां प्रक्षेपणम् ४, वेदनम्=
अनुभव उदय इत्यर्थः ५, निर्जरा=प्रदेशेभ्यः शटनमिति ६ ॥ सू०-३ ॥

कश्चिज्जीवोऽष्टविधकर्मणश्चयादिकारणमासेव्यं तद्विपाकं जानन्नपि कर्म-
गुस्त्वान्नालोचतीति दर्शयितुमाह—

मूलम्-अट्टहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा नो
पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा, तं जहा-करिंसु वाऽहं १,
करोमि वाऽहं २, करिस्सामि वाऽहं ३ अकित्ती वा मे सिया ४,
अवण्णे वा मे सिया ५, अवणए वा मे सिया ६, कित्ती वा
मे परिहाइस्सइ ७ जसे वा मे परिहाइस्सइ ८ ॥ सू० ४ ॥

प्रविष्ट हुए कर्मका जो अनुभवन है, वह वेदन है ५, जीवके प्रदेशोंसे
कर्मपुद्गलोंका जो परिशटन-झरना है-एक देशसे नष्ट हो जाना है,
वह निर्जरण है ६, कहीं २ पर इन चयनादिकोंका स्वरूप इस प्रकारसे
प्रकट किया गया है-आसंकलनका नाम चयन है, परिपोषका नाम
उपचयन है, निर्मापणका नाम बन्धन है, उदीरणाकरणसे कर्म दलिकोंका
खींचकर उनका उदयावलिकामें प्रक्षेपण करना इसका नाम उदीरणा
है, कर्मोंके फलोंका भोगना इसका नाम वेदन है ५, और प्रदेशोंसे
थोडा २ विनाश होना निर्जरा है ॥ सू० ३ ॥

रीते अथवा उदीरणाकरणेन वडे उदयावलिकायां प्रविष्ट-अथेला कर्मणुं ने अनु-
भवन छे, तेणुं नाम वेदन छे. उपना आत्मप्रदेशोभांथी कर्मपुद्गलानुं ने
परिशटन (अरवानी किया)-अेक देशभांथी नष्ट थवा इप कार्य छे तेणुं नाम
निर्जरणु छे. केअ केअ शास्त्रोभां आ चयनादिकेणुं आ प्रकारणुं स्वरूप
पणु अताणुं छे-आ संकलनणुं नाम चयन छे, परिपोषणुं नाम उपचयन
छे, निर्मापणुणुं नाम बन्धन छे, उदीरणाकरणेन वडे कर्मदलिकेने जेथीने
तेमणुं उदयावलिकायां प्रक्षेपण करणुं तेणुं नाम उदीरणु छे, कर्मोना इदोने
भोगववा तेणुं नाम वेदन छे, तथा आत्मप्रदेशोभांथी कर्मदलिकेना थोडा
विनाश थवे तेणुं नाम निर्जरा छे. ॥ सू० ३ ॥

जाया—अट्टभिः स्यान्निः मायी मायां कृत्वा नो आलोचयति, १ नो प्रतिक्रामति, याचन्तो प्रतिपत्ते, तथा—अकुर्ववा अहम् १, करोमि वाऽहम् २, परिश्रयामि वाऽहम् ३, अकीर्त्तिर्वा मे स्यात् ४, अवर्णो वा मे स्यात् ५, अपनयो वा मे स्यात् ६, कीर्त्तिर्वा मे परिहास्यति ७, यशो वा मे परिहास्यति ८ ॥

टीका—‘अट्टहिं टाणेहिं’ इत्यादि—

मायी=मायायुक्तः पुरुषो माया प्रधानम् अतिचारं कृत्वा तर्ता मायाम् अष्टभिः स्यान्निः कारणैः नो आलोचयति=गुरवे नो निवेदयति, नो प्रतिक्रामति=मिथ्या-दुष्कृतं न ददाति, याचन्पदात्—“नो निंदेज्जा, नो गरहेज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विमोहेज्जा, नो अकरणयाण् अवमुट्टिज्जा, नो जहारिहं तवोकम्मं”

जाया—नो निन्दति, नो गर्हते, नो व्यावर्त्तते, नो विशोधयति, नो अक-

काई जीव आठ प्रकारके कर्मोंके चयादिके कारणोंका आसेवन करके उनके विपाकको जानना हुआ भी कर्मकी गुरुता होनेके कारण आलोचना नहीं करता है—यही घान अथ सूत्रकार प्रकट करते हैं—

“अट्टहिं टाणेहिं माई मायं कट्टु” इत्यादि । सूत्र ४ ॥

टीकार्थ—माया युक्त पुरुष माया प्रधान अतिचार आदि करके उस अनिचारकी आठ कारणोंसे आलोचना नहीं करता है—गुरुसे उस हुए अनिचारका निवेदन नहीं करता है—प्रतिक्रमण नहीं करता है—मिथ्या दुष्कृत नहीं देता है, यावत्—“नो निंदेज्जा०—नो गरहेज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विमोहेज्जा, नो अकरणयाण् अवमुट्टिज्जा, नो जहारिहं तवोकम्मं” निन्दा नहीं करता है, गर्हा नहीं करता है,

कैलं लुप अये होय छे के के आठ प्रकारना कर्मोना अयाहिना कट्टु, नुं आसेवन करीने सेवना विपाकने जानुवा छतां पणु कर्मोनी गुरुता सेवने कट्टु अलोचना करतो नथी, अथ वात हवे सूत्रकार प्रकट करे छे—

“अट्टहिं टाणेहिं माई मायं कट्टु” इत्यादि—(सू. ४)

टीकार्थ—मायायुक्त पुरुष माया प्रधान अतिचार आदिनुं सेवन करीने, आठ कर्मोंसे हीन से अनिचारकी आलोचना करतो नथी—गुरुनी सभीपे पोताना दान, सेवाएँ, अनिचारकेनुं निवेदन करतो नथी, प्रतिक्रमण करतो नथी—मिथ्या दुष्कृत देने नहीं, ‘नो निंदेज्जा, नो गरहेज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विमोहेज्जा, नो अकरणयाण् अवमुट्टिज्जा, नो जहारिहं तवोकम्मं’ तेनी निन्दा करतो नथी, गर्हा करतो नथी, इत्यादि कट्टु पणु करतो नथी.

રણતયા અભ્યુત્તિષ્ઠતે, નો યથાર્હં તપઃકર્મ-ઇતિ સંગ્રહઃ । તત્ર નો નિન્દતિ=આત્મ-સમક્ષં સ્વીકૃતાતિચારનિન્દાં ન કરોતિ, નો ગર્હતે=ગુરુ સમક્ષં સ્વીકૃતાતિ-ચારનિન્દાં ન કરોતિ નો વ્યાવર્તતે = અતિચારાન્ન નિવર્તતે, નો વિશોધયતિ=અતિચારકલહ્નં શુભભાવજલેન નો પ્રક્ષાલયતિ, નો અકરણતયા અભ્યુત્તિષ્ઠતે=તસ્માતિચારસ્ય ભૂયોડનાચરણે સમુદયતો ન ભવતિ, તથા-યથાર્હં= યથાયોગ્યં-તદતિચારદૂરીકરણે સમર્થં તપઃકર્મ=પ્રાયશ્ચિત્તમપિ નો પ્રતિપદ્યતે= ન સ્વીકરોતિ, કાનિ તાનિ સ્થાનાનિ ? ઇત્યાહ-તથથા-અકુર્વમ્ અહમ્=અહમ્

ઇત્યાદિ કુછ મી નહીં કરતા હૈ, નિન્દા આદિ શબ્દોંકા અર્થ હસ પ્રકારસે હૈ-“ અપને દ્વારા કૃત અતિચારોંકી અપને આપ નિન્દા કરના-યહ મૈને અછ્છા નહીં કિયા-હસ પ્રકારસે આત્મગ્લાનિ હોના હસકા નામ નિન્દા હૈ, અપને દ્વારા હુએ અતિચારોંકા ગુરુકે સમીપ નિવેદન કરના-उनकी निन्दा करना यह गहाँ है, अतिचार करनेसे रुक जाना फिर अतिचारोंका सेवन नहीं करना इसका नाम व्यावर्त्तन है, अतिचारोंका शुभ भावरूप जलसे प्रक्षालन करना इसका नाम विशोधन है, अब मैं आगे अतिचारोंका आसेवन नहीं करूँगा इस प्रकारके विचारोंमें बद्ध होना इसका नाम अकरणतया अभ्युत्थान है, तथा-लगे हुए अतिचारोंकी शुद्धिके लिये यथायोग्य प्रायश्चित्त लेना इसका नाम यथાર્ह तपःकर्म है । “ इन નિન્દા આદિ પદોંકા ગ્રહણ યહાં યાવત્ પદસે હુઆ હૈ, માયા યુક્ત પુરુષ इन निन्दा आदिका जो यावत्पदसे गृहीत हुए हैं, नहीं करता है, ऐसा जानना चाहिये.

નિન્દા આદિ પદોના અર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

“ આ મેં ખોટું કયું ”, આ પ્રમાણે પોતાના દ્વારા થયેલા અતિચારની પોતાની જાતે જ નિન્દા કરવી અથવા પોતાના દોષો માટે આત્મગ્લાનિ અનુભવી તેનું નામ નિન્દા છે.

પોતાના દ્વારા જે અતિચારો સેવાયા હોય તે અતિચારોની ગુરુની સમક્ષ નિન્દા કરવી તેનું નામ ગર્હા છે. અતિચારો સેવતાં અટકી જવું અને ફરી તેમનું સેવન ન કરવું તેનું નામ વ્યાવર્તન છે. શુભ ભાવ રૂપ જલવડે અતિચારોનું પ્રક્ષાલન કરવું તેનું નામ વિશોધન છે. “ હવે ભવિષ્યમાં હું અતિચારોનું આસેવન નહીં કરું ” આ પ્રકારનો દૃઢ નિશ્ચય કરવો તેનું નામ “ અકરણતયા અભ્યુત્થાન ” છે. જે અતિચારો લાગ્યા હોય તેમની વિશુદ્ધિને માટે યે ગ્ય પ્રાયશ્ચિત્ત લેવું તેનું નામ “ યથાર્હં તપઃકર્મ ” છે. અહીં ‘ ઇત્યાદિ ’ પદ વડે વ્યાવર્તન આદિ “ યથાર્હં તપઃકર્મ ” પર્યંતના પ્રદો ગ્રહણ થયાં છે.

અતિચારં કૃતવાન્ કૃતસ્ય નિન્દયા કિમ્ ? इति प्रथमं स्थानम् । करोमि वा अहम्=सम्प्रत्यहम् अतिचारम् आचरामि, अनिष्पन्नेऽतिचारे तस्यालोचना-
कथम् ? इति द्वितीयं स्थानम् । करिष्यामि वा अहम्=अहमग्रेऽतिचारं करिष्या-
मीति सम्प्रति ममातिचारालोचनं निरर्थकमिति तृतीयं स्थानम् । कृतस्याति-
चारस्यालोचने मे अकीर्तिः स्यात्-इति चतुर्थम् । एवम्-अवर्णः=अवर्णवादो मम
स्यात्-इति पञ्चमम् । अपनयः=पूजासत्कारादेर्हानि र्वा मे स्यात् इति षष्ठम् ।
कीर्ति र्वा मे परिहास्यति=मम कीर्ति हीनता यास्यतीति सप्तमम् । तथा-यशोवा
मे परिहास्यति=हीनता यास्यतीति अष्टमम् । अत्रेदं बोध्यम्-कीर्तिः=सर्वदिग्ब्या-
पिनी, अवर्णः=अयशः, यशस्तु एक दिग्ब्यापि-इति ॥ मू० ४ ॥

વે આઠ કારણ હસ પ્રકારસે હૈ-મૈને અતિચાર કિયા હૈ-અતઃ
કૃતકી નિન્દાસે અંચ કયા હોતા હૈ, એસા યહ પ્રથમ સ્થાન હૈ, મૈ અતિ-
ચાર કરતા હૂં અતઃ અનિષ્પન્ન અતિચારકે હોને પર ઉસકી આલોચના
કૈસી કરું તથા મૈ આગે અતિચાર સેવન કરુંગાહી અતઃ હસ સમય
અતિચારકી આલોચના નિરર્થક હૈ, એસા યહ તૃતીય સ્થાન હૈ । તથા
કૃત અતિચારોંકી આલોચના કરને પર મેરી અંકીર્તિ હોગી એસા યહ ચોથા
સ્થાન હૈ । તથા કૃત અતિચારકી આલોચનામૈ મેરા અવર્ણવાદ હોગા એસા યહ
પાંચવાંસ્થાન હૈ, કૃત અતિચારકી આલોચનામૈ મેરી પૂજા હોનેકી મેરે સત્કાર
હોનેકી હાનિ હોગી એસા યહ છઠા સ્થાન હૈ, તથા કૃત અતિચારકી
આલોચના કરને પર મેરી કીર્તિ ક્ષીણ હો જાવેગી એસા યહ સાતવાં
સ્થાન - હૈ । -તથા કૃત અતિચારોંકી આલોચના કરને પર
મેરા યશ ઘટ જાવેગા એસા યહ આઠવાં સ્થાન હૈ, સમસ્ત

તે આઠ કારણો હવે પ્રકટ કરવામાં આવે છે—(૧) મેં અતિચારનું
સેવન કર્યું છે, હવે તે થઈ ગયેલા દોષની નિન્દા કરવાથી શું વળવાનું છે !
(૨) હું અતિચાર સેવું છું, તેથી અનિષ્પન્ન અતિચારના સદ્ભાવમાં તેની
આલોચના કેવી કરું ! (૩) હું બવિષ્યમાં પણ અતિચારનું સેવન કરવાનો જ
છું, તેથી અત્યારે અતિચારની આલોચના કરવી નિરર્થક જ છે. (૪) કૃત
અતિચારની આલોચના કરવાથી મારો અવર્ણવાદ થશે, (૫) કૃત અતિચારની
આલોચના કરવાથી મારી જે પૂજા થાય છે, છે બંધ પડી જશે (૬) કૃત
અતિચારની આલોચના કરવાથી મારો સત્કાર થવાનું બંધ થઈ જશે (૭) કૃત
અતિચારની આલોચના કરવાથી મારી કીર્તિ ઘટી જશે (૮) કૃત અતિચારની
આલોચના કરવાથી મારો યશ ઘટી જશે.

ઉક્તાર્થત્રિપર્યયેણ અઘ્ઠૌ સ્થાનાંનિ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્—અઘ્ઠિં ઠાળેહિં માઈ માયં કટ્ટુ આલોણ્જા જાવ પડિવજ્જેજ્જા, તં જહા—માઈસ્સ ણં અર્સિસલોણ ગરહિણ ભવઈ ૧, ઉવવાણ ગરહિણ ભવઈ ૨, આજાઈ ગરહિયા ભવઈ ૩, એગમવિ માઈ માયં કટ્ટુ નો આલોણ્જા જાવ નો પડિવજ્જેજ્જા નત્થિ તસ્સ આરાહણા ૪, એગમવિ માઈ માયં કટ્ટુ આલોણ્જા જાવ પડિવજ્જેજ્જા, અત્થિ તસ્સ આરાહણા ૫, બહુઓ વિ માઈ માયં કટ્ટુ નો આલોણ્જા જાવ પડિવજ્જેજ્જા નત્થિ તસ્સ આરાહણા ૬, બહુઓ વિ માઈ માયં કટ્ટુ આલોણ્જા જાવ અત્થિ તસ્સ આરાહણા ૭, આયરિયઉવજ્જાયાસ્સ વા મે અઈસેસે નાણદંસણે સમુપ્પજ્જેજ્જા, સે ય મમં આલોણ્જા માઈણં એસે ૮ ॥ સૂ. ૫ ॥

છાયા—અઘ્ઠમિઃ સ્થાનૈર્માયી માયાં કૃત્વા આલોચયતિ યાવત્ પ્રતિપદ્યેતે, તદ્વથા—માયિનઃ સ્વલુ અયં લોકો ગર્હિતો ભવતિ ૧, ઉપપાતો ગર્હિતો ભવતિ ૨, આયતિઃ ગર્હિતા ભવતિ ૩, એકામપિ માયી માયાં કૃત્વા નો આલોચયેત્ યાવત્ નો પ્રતિપદ્યેત નાસ્તિ તસ્ય આરાધના ૪, એકામપિ માયી માયાં કૃત્વા આલોચયેત્ યાવત્ પ્રતિપદ્યેત અસ્તિ તસ્ય આરાધના ૫, બહુતોઽપિ માયી માયાં કૃત્વા નો આલોચયેત્ યાવત્ નો પ્રતિપદ્યેત નાસ્તિ તસ્ય આરાધના ૬, બહુતોઽપિ માયી માયાં કૃત્વા આલોચયેત્ યાવત્ અસ્તિ તસ્ય આરાધના ૭ આચાર્યોપાધ્યાયસ્ય વા મે અતિશેષં જ્ઞાનદર્શનં સમુત્પદ્યેત, મ ચ મામ્ આલોકયેત્ માયી સ્વલુ પ્રણા ॥ સૂ. ૫ ॥

દિશાઓમાં વ્યાસ—જો પ્રસિદ્ધિ હૈ, વહ કીર્તિ હૈ, એવં એક દિશામાં વ્યાસ જો પ્રસિદ્ધિ હૈ, વહ યશ હૈ, અવર્ણ નામ અયશકા હૈ । સૂ. ૪

અવ સૂત્રકાર ઉક્ત અર્થસે વિપરીત રૂપમાં આઠ સ્થાનોની પ્રરૂપણા

સમસ્ત દિશાઓમાં વ્યાપેલી પ્રસિદ્ધિનું નામ કીર્તિ છે અને એક જ દિશામાં વ્યાસ ધ્યાતિનું નામ યશ છે. અવર્ણવાદ એટલે અયશ થવો ॥ સૂ. ૪ ॥

હવે સૂત્રકાર ઉપર્યુક્ત અર્થ કરતાં વિપરીત રૂપે આઠ સ્થાનોની

ટીકા—‘ અટ્ટહિં ઠાણેહિં ’ ઇત્યાદિ—

અષ્ટમિઃ સ્થાનૈર્માયી-ઇત્યાદિ વ્યાખ્યાતપૂર્વમ્ । નવરમ્-અત્ર માયી આસે-
વનાકાલાપેક્ષયા વોધ્યો ન તુ આલોચનાકાલાપેક્ષયા । યતોડયં સ્વકૃતમતિચાર-
માલોચયત્યેવેતિ । તાનિ સ્થાનાન્યાહ-તથથા-માયિનઃ=માયાકારકજનસ્ય ‘અર્સિ’
અત્ર પ્રથમાર્થે સસમી આર્પત્વાત્તેન-અપં લોકો ગર્હિતઃ અતિચારવત્ત્વેન લોકનિન્દિ-
તત્વાદ્ જુગુપ્સિતો ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ મીડવિગ્ગનિલુકો, પાયડપચ્છન્નદોસસયકારી ।

અપ્પચયં જણંતો, જડસ્સ ધી જીવિયં જિયડ્ ॥૧॥

કારતે હૈં—“ અટ્ટહિં ઠાણેહિં માઈ માયં કટ્ટુ ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-માયી-માયા યુક્ત પુરુષ માયાકો-માયા પ્રધાન અતિચારકો કરકે
ઉસ માયાકી આઠ કારણોંસે આલોચના કરતા હૈ, યાવત્તુ ઉસકે લાયક
તપ કરતા હૈ, યહાં પર માયી યહ શબ્દ યહ પ્રકટ કરતા હૈ, કિ જિસ
કાલમેં ઉસને માયાકા સેવન ક્રિયા હૈ, વહ ઉસ કાલમેં માયી હૈ, કિન્તુ
જબ વહ ઉસ માયાકી આલોચના કર રહા હૈ, ઉસ કાલમેં વહ માયી
નહીં હૈ, અતઃ આસેવન કાલકી અપેક્ષાસે હસે માયી કહા ગયા હૈ,
આલોચન કાલકી અપેક્ષાસે નહીં । ક્યોંકિ યહ સ્વકૃત અતિચારોંકી
આલોચના જો કરતા હૈ-વે આઠ કારણ હસ પ્રકારસે હૈં-માયાકારક
જનકા યહ લોક અતિચારવાલા હોનેસે લોક નિન્દિત હોનેકે કારણ
જુગુપ્સિત હોતા હૈ કહા મી હૈ—

પ્રપ્થા કરે છે—“ જટ્ટહિં ઠાણેહિં માઈ માયં કટ્ટુ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-માયી (માયાયુક્ત પુરુષ) માયા (માયાપ્રધાન અતિચારો) કરીને તે
માયાની આઠ કારણોને લીધે આલોચના કરે છે, તથા તેની વિશુદ્ધિ નિમિત્તે
યોગ્ય તપઃકર્મ પર્યન્તનું (ઉપયુક્ત નિન્દા, ગર્હા આદિ) બંધું કરે છે, અહીં
‘માયી’ પદ એ વાત પ્રકટ કરી છે કે જે કાળે તેણે માયાનું સેવન કર્યું
હતું ત્યારે જ તે માયી હોતો, પરન્તુ તે માયાની આલોચના આદિ કરતી
વખતે તે માયી હોતો નથી. આ રીતે આસેવન કાળની અપેક્ષાએ તેને માયી
કહ્યો છે. આલોચના કાળની અપેક્ષાએ તેને માયી કહેવામાં આવ્યો નથી. તે
પોતાના દ્વારા જે અતિચારોનું સેવન થઈ ગયું હોય છે તે અતિચારોની
નીચેના આઠ કારણોને લીધે આલોચના કરે છે—

માયાકારક મનુષ્યનો આ લોક તેના અતિચારોને કારણે નિન્દિત થવાને
કારણે જુગુપ્સિત થાય છે, કટ્ટુ પશુ છે કે—

છાયા—મીતોદ્વિગ્નગુપ્તઃ પ્રકટપચ્છન્નદોષશતકારી ।

અપ્રત્યયં જનયન્ જડસ્ય ધિગ્ જીવિતં જીવતિ ॥૧॥ ઇતિ ।

અર્થ માવઃ—માયાવી પુરુષઃ સ્વકૃતમાયયા મીતઃ=મયયુક્ત ઉદ્વિગ્નઃ=ઉદ્-
ભ્રાન્તચિત્તશ્ચ ભવતિ, તથા—ગુપ્તઃ=સંવૃતો ભવતિ—મમ માયાં ન કોઽપિ જાનાત્વિતિ
માયાયા ગોપને કૃતપ્રયત્નો ભવતીતિ માવઃ । એતાદૃશોઽયં પ્રકટપચ્છન્નદોષ-
શતકારી=પ્રકટતયા પ્રચ્છન્નતયાચાગણિતદોષકારી ભવતિ । તતઃ સ જડસ્ય=
મૂર્ખસ્યાઽપિ જનસ્ય અપ્રત્યયમ્=અવિશ્વાસં જનયન્ ધિગ્જીવિતં જીવતીતિ । ઇતિ
પ્રથમં સ્થાનમ્ । તથા—માયિન ઉપપાતઃ=દેવજન્મગર્હિતો ભવતિ । કિલ્વિવિકાદિ
દેવત્વેનોત્પાદાત્તસ્ય માયાકારકસ્ય પરજન્મ ગર્હિતં ભવતીત્યર્થઃ । ઉક્તંચ—

“ મીડવિગ્નગનિલુક્કો ” ઇત્યાદિ ।

જો માયાવી પુરુષ હોતા હૈ, વહ અપને દ્વારા કૃત માયાકે પ્રભાવસે
મયયુક્ત એવં ઉદ્ભ્રાન્ત ચિત્તવાલા સદા બના રહતા હૈ, તથા મેરી માયાકા
પર્દા ખુલા ન હો જાવે હસ વિચારસે વહ માયાકો ઢાંકનેકે લિયે અનેકાનેક
પ્રયત્ન કરતા રહતા હૈ, હસ તરહ યહ માયાચારી પુરુષ પ્રકટ રૂપસે
ઑર પ્રચ્છન્ન રૂપસે અગણિત સૈકડોં દોષોંકા કર્તા હોતા હૈ, અતઃ એસે
પુરુષકા વિશ્વાસ સાધારણસે સાધારણ જન ઓ નહીં કરતા હૈ, તો
ફિર એસે ધિક્કાર યોગ્ય જીવનસે કયા લાભ—અર્થાત્ એસે જીવનકો
સર્વથા ધિક્કાર હૈ, તથા—માયાચારીકા જન્મ કિલ્વિવિક આદિ દેવોંમે
હોતા હૈ, અતઃ ડસકા વહ જન્મ ઓ ધિક્કાર યોગ્ય હી હોતા હૈ—
ગર્હિત હોતા હૈ, કહા ઓ હૈ—“ તંવતેણે ચૈતેણે ” ઇત્યાદિ ।

“ મીડવિગ્નગનિલુક્કો ” ઇત્યાદિ—

માયાવી પુરુષ, પેતાના દ્વારા જે માયા (માયા પ્રધાન અતિચારો)નું
સેવન થઇ ગયું હોય છે તેને કારણે સદા લયયુક્ત અને ઉદ્ભ્રાન્ત ચિત્તવાળો
બની જાય છે. મારી માયાને પર્દો ઉઘડી જશે, આ પ્રકારના લયને કારણે
પેતાની માયાને ઢાંકવાને માટે તે ઘણા પ્રયત્નો કર્યા કરે છે આ રીતે તે
માયાચારી પુરુષ પ્રકટ રૂપે અને પ્રચ્છન્ન રૂપે અગણિત દોષો કરતો રહે છે.
તે કારણે સામાન્યમાં સામાન્ય માણસ પણ તેનો વિશ્વાસ કરતો નથી. તેથી
તે માયાવી પુરુષને પેતાના આ પ્રકારના માયાવી વર્તન પ્રત્યે ધિક્કારની
લાગણી પેદા થાય છે. આ પહેલું કારણ છે તથા માયાચારીનો જન્મ કિલ્વિ
વિક આદિ હલકી કોટિના દેવોમાં થાય છે. આ રીતે તેનો પરસ્પર પણ
ધિક્કારને યોગ્ય ગર્હિત બને છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ તવ તેને વૃત્તેણે, રૂવતેણે ય જે નરે ।

—આચારભાવતેણેય, કુર્વઈ દેવકિલ્વિસં ॥૧૧”

છાયા—તપસ્તેનો વાક્સ્તેનો રૂપસ્તેનશ્ચ યો નરઃ ।

આચારભાવસ્તેનશ્ચ કરોતિ દેવકિલ્વિપમ્ ॥૧૧૥ ઇતિ

ઇતિ દ્વિતીયમ્ । તથા—કિલ્વિપિકદેવયોનિતઃ ચ્યુતસ્ય તસ્ય આયતિઃ=તત-
ચ્યવનાનન્તરં મનુષ્યભવે પુનરુત્પત્તિરપિ ગર્હિતા=જાત્યૈશ્વર્યરૂપાદિરહિતતયા
નિન્દિતા ભવતિ । ઉક્તંચ—

“ તત્તો વિ સે ચૃક્ષાણં, લલ્ભિશી ઇલમૂયગં ।

નરગં તિરિક્ષજોણિં વઃ, વોહી જત્ય સુદુલ્લહા ॥૧૧”

જો જીવ તપ ચોર હોતા હૈ, ચ્ચન ચોર હોતા હૈ—રૂપચોર હોતા
હૈ, આચાર એવં ભાવ ચોર હોતા હૈ એસે મનુષ્યકા જન્મ
કિલ્વિષિકજાતિકે દેવોમૈં હોતા હૈ, એસા યહ દ્વિતીય
સ્થાન હૈ, આયતિ ઉસકી ગર્હિત હોની હૈ, એસા યહ તૃતીય
સ્થાન હૈ—ઇસકા તાત્પર્ય એસો હૈ કિ જબ કિલ્વિષિક, દેવોમૈંસે ચ્ચ
કર મનુષ્ય ભવમૈં ઉત્પન્ન હોના હૈ, તો વહાં પર ખી ઉસકી ઉત્પત્તિ
જાતિ, એશ્વર્ય, એવં રૂપ રહિત હોનેસે નિન્દિત હોની હૈ, કહા ખી હૈ—

“ તત્તો વિ સે ચૃક્ષાણં ” ઇત્યાદિ ।

કિલ્વિષિક દેવ યોનિસે ચ્ચ કર વહ માયી સાધુ, બહિરા ઔર
મૂંગા હોતા હૈ, નારક અથવા તિર્યક્ ચ્ચ યોનિમૈં જન્મ લેના હૈ, ઇસ સ્થિતિમૈં
વહ ચોરિકો પ્રાપ્ત નહીં કર સકતા હૈ । એસા યહ તૃતીય કારણ હૈ ।

“ તવતેણે વૃત્તેણે ” ઇત્યાદિ—

જે જીવ તપચોર હોય છે, વચ્ચનચોર હોય છે, રૂપચોર હોય છે, આચાર
અને ભાવચોર હોય છે, એવા પુરુષનો જન્મ કિલ્વિષિક જાતિના દેવોમાં થાય
છે. આ પ્રકારનું બીજું કારણ સમજવું (૩) તેની આયતિ પણ ગર્હિત થાય
છે. એટલે કે જ્યારે તે કિલ્વિષિક દેવોમાંથી ચ્ચવીને મનુષ્યભવમાં ઉત્પન્ન
થાય છે, ત્યારે પણ કુળ, જાતિ, રૂપ અને ઐશ્વર્યથી રહિત હોવાને કારણે
નિન્દિત જ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—“ તત્તો વિ સે ચૃક્ષાણં ” ઇત્યાદિ—

તે માયી જીવ કિલ્વિષિક દેવગતિનું આયુષ્ પુરૂં કરીને—ત્યાંથી ચ્ચવીને
જે મનુષ્યગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે, તો મૂંગો, બહેરો આદિ શરીરિક ખોડ
આપણવાળો હોય છે, અથવા તો તે નારક, તિર્યક્ અદિ ચોનિમાં પણ
જન્મ લે છે. આ રીતે તેની આયતિ પણ ગર્હિત બને છે. આ પ્રકારનું
આ ત્રીજું કારણ છે.

છાયા—તતોऽપિ સ ચ્યુત્વા खलु लभते एडमूकताम् ।

नरकं तिर्यग्योनिं वा, बोधिर्यत्र सुदुर्लभा ॥१॥ इति । इति तृतीयम् ।

तथा - यो मायीजन एकामपि मायाम् = अतिचाररूपां कृत्वा तां पुन न आलोचयेत् यावत् नो तपःकर्म प्रतिपद्येत, तस्य ज्ञानादिमोक्षमार्ग-
विषया आराधना न भवति । तदुक्तम्—

“ लज्जाए गारवेण य, बहुस्मयमएण वावि दुच्चरियं ।

जे न कहिंति गुरुणं, न हु ते आराहणा होति ” ॥१॥

छाया—लज्जया गौरवेण च बहुश्रुतमदेन वापि दुश्चरितम् ।

ये न कथयन्ति गुरुभ्यो न खलु ते आराधका भवन्ति ॥१॥ इति ।

तथा—“ न वि तं सत्थं, व विसं, व दुप्पउत्तो व कुणह वेयालो ।

जं तं व दुप्पउत्तं, सप्पो व पमाइणो कुद्धो ॥२॥

जं कुणह भावसल्लं, अणुदियं उत्तमइकालम्मि ।

दुल्लહवોહियत्तं, અણંતસંસારિયત્તં વા ॥ ૩ ॥”

છાયા—નાપિ તત્ શસ્ત્રં વા ત્રિષં વા દુષ્પ્રયુક્તો વા કરોતિ વેતાલઃ ।

यन्त्रं वा दुष्पयुक्तं सर्पो वा प्रमादिनः क्रुद्धः ॥२॥

यत् करोति भावशल्यम् अनुद्धृतम् उत्तमार्थકાલે ।

દુર્લભવોધિકત્વમ્ અનન્તસંસારિકત્વં વા ॥૩॥ ઇતિ ।

अयं भावः—ये साधवो लज्जया गौरवेण बहुश्रुतमदेन=‘अहं बहुश्रुतोऽस्मि’
इत्यहङ्कारेण वापि स्वीकृत्य दुश्चरितम्=अतिचारं गुरुभ्यो न कथयन्ति=न निवेद-

जो मायी जीव अतिचार रूप मायाको करके उसकी आलोचना नहीं करता है, यावत् उसके लायक तप कर्मको स्वीकार नहीं करता है—
ऐसे उस जीवको ज्ञानादि रूप मोक्षमार्ग विषयक आराधना नहीं होती है । कहा भी है—“ लज्जाए गारवेण य ” इत्यादि ।

इन श्लोकोंका तात्पर्य ऐसा है, जो साधुजनसे अथवा गौरवसे या
मैं बहुश्रुत हूँ, इस प्रकारके अहंकारसे अपने अतिचारको गुरुजनोंसे

(૪) જે માયી જીવ અતિચાર રૂપ માયાનું સેવન કરીને તેની શુદ્ધિને
માટે થે.ગ્ય તપ કરતો નથી, તે જીવ વડે જ્ઞાનાદિ રૂપ મોક્ષમાર્ગની આરાધના
થતી નથી. કહ્યું પણ છે કે—“ લજ્જાએ ગારવેણ ય ” ઇત્યાદિ —

એટલે કે જે સાધુ લગ્નને કારણે, ગૌરવને કારણે અથવા પોતે બહુ
શ્રુત છે એવા અહંકારને કારણે પોતાના અતિચારને ગુરુજનો પાસે બહેર
કરતો નથી—તે અતિચારની આલોચના કરતો નથી, તે સાધુ જ્ઞાન, દર્શન,

યન્તિ, ન સ્વલુ તે આરાધકાઃ=જ્ઞાનદર્શનચારિત્રરૂપમોક્ષમાર્ગારાધકા ભવન્તીતિ ॥૧॥ તથા-પ્રમાદિનઃ ઉત્તમાર્થકાલે=સંયતાવસ્થાયામ્ યત્ અનુદ્ભૂતં ભાવશલ્યં દુર્લભબોધિક્ત્વરૂપમ્ અનન્તસંસારિક્ત્વરૂપં ચેત્યનર્થદ્વયં કરોતિ, તાદૃશમનર્થં નાપિ શસ્ત્રં કરોતિ, ન વા વિષં કરોતિ, ન વા દુષ્પ્રયુક્તો વેતાલઃ કરોતિ, નાપિ વા દુષ્પ્રયુક્તં યન્ત્રં કરોતિ, ન વા ક્રુદ્ધઃ સર્પઃ કરોતીતિ ॥૩॥ ઇતિ ચતુર્થમ્ ।

તથા-યો માયી એકામપિ માયાં કૃત્વા આલોચયેદ્ યાવત્ પ્રપિપ્થેત, તસ્યાસ્તિ મોક્ષમાર્ગારાધના । અયં ભાવઃ--યઃ સાધુર્માયાં કૃત્વા ગુરવે નિવેદયતિ યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રતિપદ્યતે સ મોક્ષમાર્ગારાધકો ભવતિ ।

તદુક્તમ્--ઉદ્ધરિયસવ્વસલ્લો, ભક્તપરિન્નાદ ઘણિયમાઉત્તો ।

મરણાસાદ્ગજુત્તો, ચંદ્રગવેજ્ઞં સમાણેઽ ॥૧॥

છાયા--ઉદ્ભૂતસર્વશલ્યો ભક્તપરિજ્ઞાયાં ગાઢમાયુક્તઃ ।

મરણારાધના યુક્તશ્ચન્દ્રકવેશ્ચં સમાપ્નોતિ ॥૧॥ ઇતિ ।

નહીં કહતે હૈં, વે જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્ર રૂપ મોક્ષમાર્ગકે આરાધક નહીં હોતે હૈં । પ્રમાદીકો સંયત અવસ્થામેં અનુદ્ભૂત ભાવશલ્ય જૈસા દુર્લભ બોધિક્ત્વ રૂપ ઓર અનન્તસંસારી રૂપ દો અનર્થકો ઉત્પન્ન કરતા હૈ, એસે અનર્થકો ન શસ્ત્ર કરતા હૈ, ન વિષ કરતા હૈ, ન દુષ્પ્રયુક્ત વેતાલ કરતા હૈ, ઓર ન દુષ્પ્રયુક્ત યન્ત્ર કરતા હૈ, ઓર ન ક્રુદ્ધ સર્પ હી કરતા હૈ, એસા યહ ચતુર્થ કારણ હૈ, તથા-જો માયી જીવ એક માયા રૂપ આલોચના કરકે ગુરુજનકે સમક્ષ આલોચના કરતા હૈ યાવત્ ઉસકે યોગ્ય તપઃકર્મ કરતા હૈ, ઉસકો મોક્ષમાર્ગકી આરાધના હોતીહૈ, અર્થાત્ એસા જીવ મોક્ષમાર્ગકા આરાધક હોતા હૈ કહા ભી હૈ—

“ ઉદ્ધરિયસવ્વસલ્લો ” ઇત્યાદિ ।

ચરિત્ર રૂપ મોક્ષમાર્ગનો આરાધક થઈ શકતો નથી. પ્રમાદી સંયત અવસ્થામાં અનુદ્ભૂત ભાવશૈલ્ય જેવા દુર્લભબોધિક્ત્વ રૂપ અને અનંત સંસારી રૂપને અનર્થને ઉત્પન્ન કરે છે એવો અનર્થ તો શસ્ત્ર પણ કરતું નથી, વિષ પણ કરતું નથી, દુષ્પ્રયુક્ત વેતાલ પણ કરતો નથી, દુષ્પ્રયુક્ત યન્ત્ર પણ કરતું નથી અને ક્રુદ્ધ સર્પ પણ કરતો નથી. એવું આ ચોથું કારણ સમજવું.

(૫) જે માયી એવ માયા રૂપ અતિચારતું સેવન કરીને ગુરુની પાસે તેની આલોચના કરે છે, ગિન્દા, ગર્હા આદિ કરે છે અને તેની વિશુદ્ધિને માટે યોગ્ય તપ કરે છે, તેના દ્વારા મોક્ષમાર્ગની આરાધના થઈ શકે છે. એટલે કે એવો એવ મોક્ષમાર્ગનો આરાધક બને છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ ઉદ્ધરિયસવ્વસલ્લો ” ઇત્યાદિ

राधावेधवद् दुस्साध्यं मोक्षमार्गं समाप्नोति=साधयति । इति पञ्चमम् । एवं षष्ठं सप्तमं च स्थानद्वयं विज्ञेयम् । नवरं=बहुतोऽपि=बह्वीमपि । सार्वविभक्ति-कस्तसिल् प्रत्ययोऽत्र बोध्यः । तथा मम आचार्यस्य उपाध्ययस्य च अतिशेषम्=अतिशयितं ज्ञानदर्शनं समुत्पद्येत=जायेत, ततः स माम् आलोकयेत्=जानीयात्, यदेव मायावीति । इति अष्टमं स्थानम् । एभिरष्टभिः स्थानैः मायी मायां कृत्वाऽपि आलोचयति यावत् तपःकर्म प्रतिपद्यते इति ॥ सू० ५ ॥

भक्तपरिज्ञामे अत्यन्त लवलीन हुआ साधु समस्त अतिचार रूप शल्पको दूर करके राधावेधकी तरह दुस्साध्य मोक्ष मार्गको सिद्ध कर लेता है, ऐसा यह पांचवां स्थान है, इसी तरहसे छठा और सातवां स्थान जानना चाहिये, जो मायी अतिचार रूप बहुतसी मायाको करके उसकी आलोचना नहीं करता है, यावत् उसके योग्य-तपःकर्मको प्राप्त नहीं करता है, उसकी आराधना नहीं होती है ३। तथा जो बहुत सी माया करके उसकी आलोचना करता है, यावत् उसके योग्य तपःकर्म करता है, उसकी आराधना होती है, ऐसा यह सातवां स्थान है, आठवां स्थान इस प्रकारसे है—मेरे आचार्यको अथवा उपाध्यायको जब अतिशयित ज्ञानदर्शन उत्पन्न हो जावेगा, तब वे मुझे ऐसा जान जावेंगे कि यह मायावी है, अतः मुझे आलोचना करलेनी चाहिये यावत् उसके योग्य तपकर्म प्राप्त कर लेना चाहिये इस प्रकारके इन आठ

भक्त परिज्ञामां अत्यन्त लवलीन थयेला साधु समस्त अतिचार रूप शल्पने दूर करीने राधावेधनी जेम दुःसाध्य मोक्षमार्गने सिद्ध करी दे छे. जेवुं आ पांचमुं स्थान (कारण) समजवुं.

जेव प्रमाणे छट्टुं अने सातमुं कारण पण समजवुं.

(६) जे मायी अतिचार रूप धणी ज मायानुं सेवन करीने तेनी आलोचना आदि करतो नथी, अने तेनी विशुद्धि माटे योग्य तपःकर्म पर्याप्तनुं कथुं पण कस्तो नथी, तेनाथी आराधना थती नथी.

(७) जे साधु धणी ज मायानुं सेवन करीने तेनी आलोचना आदि करे छे, अने तपःकर्म द्वारा तेनी विशुद्धि पण करे छे, तेना द्वारा आराधना थाय छे.

(८) “भार आचार्यने अथवा उपाध्यायने न्यारे अतिशयित ज्ञान दर्शन उत्पन्न थय जशे, त्यारे तेमने भयर पडी जशे के हुं मायावी छुं, तेथी ते अतिशयानुं विशुद्धि करवा माटे भारे आलोचना आदि करवुं जेछे. अही आदि पद द्वारा निहाथी लधने योग्य तपःकर्म पर्याप्तना पूर्वोक्त सूत्रपाठने अडणु करवे जेछे. आ प्रकारनां आठ कारणेनी दीधे मायीजन् माया

માયા કૃત્વાં સાધુઃ કીદશો ભવતીત્યાહ -

મૂલમ્-માઈ ણં માયં કટ્ટુ, સેં જહાનામણ અયાગરેઈ વા તંત્રાગરેઈ વા તડ આગરેઈ વા સીસાગરેઈ વા રુપ્યાગરેઈ વા સુવન્નાગરેઈ વા તિલાગણીઈ વા તુસાગણીઈ વા બુમાગણીઈ વા ણલાગણીઈ વા દલાગણીઈ વા મૌડિયાલિચ્છાણિ વા મંડિયાલિચ્છાણિ વા ગોલિયાલિચ્છાણિ વા કુંભારાવાણઈ વા કવેલ્લુગાવાણઈ વા ઇટ્ટાવાણઈ વા જંતવાડચુલ્લીઈ વા લોહારંબરિસાણિ વા તત્તાણિ વા સમજોઈમૂયાણિ કિંસુગફુલ્લસમાણાણિ ઉક્કાસહસ્સાઈં વિણિમ્મુયમાણાઈં વિણિમ્મુયમાણાઈં જાલા સહસ્સાઈં પમુંચમાણાઈં ૨ ઇંગાલસહસ્સાઈં પરિકિરમાણાઈં ૨ અંતો અંતો ઝિયાયંતિ, એવામેવ માઈ માયં કટ્ટુ અંતો અંતો ઝિયાયઈ, જઈ વિ ય ણં અન્ને કેઈ વયઈ તંપિ ય ણં માઈ જાણઈ અહમેસે અભિસંકિજ્જામિ ॥ સૂ. ૬ ॥

છાયા--માયી સ્વલુ માયાં કૃત્વા, સ યથાનામકમ્-અય આકર ઇતિ વા તાંત્રાકર ઇતિ વા ત્રપ્પાકર ઇતિ વા રુપ્યાકર ઇતિ વા સુવર્ણાકર ઇતિ વા તિલાગ્નિરિતિ વા તુલાગ્નિરિતિ વા બુલાગ્નિરિતિ વા નડાગ્નિરિતિ વા દંલાગ્નિરિતિ વા શુણ્ડિકાલિચ્છાણિ વા માણ્ડિકાલિચ્છાણિ વા ગોલિકાલિચ્છાણિ વા કુમ્ભકારાપાક ઇતિ વા કવેલ્લુકાપાક ઇતિ વા ઇટ્ટાપાક ઇતિ વા યન્ત્રવાડચુલ્લીતિ વા લોહકારામ્વરીવાળીતિ વા તપ્તાણિ વા સમજ્યોતિર્ભૂતાણિ કિંશુરફુલ્લસમાનાણિ ઉલ્કાસહસ્તાણિ વિનિર્મુચ્ચન્તિ વિનિર્મુચ્ચન્તિ જ્વાલાસહસ્તાણિ પ્રમુચ્ચન્તિ ૨ અદ્ધારસહસ્તાણિ પરિકિરન્તિ ૨, અન્તરન્તો ધ્માયન્તે, એવામેવ માયી માયાં કૃત્વા અન્તરન્તો ધ્માયન્તે, યથપિ ચ સ્વલુ અન્યાન્ કોઽપિ વદતિ, તદપિ ચ સ્વલુ માયી જાનાતિ અહમેવોઽભિશઙ્કયે ॥

સ્થાનોસે માયી માયા કરકે મી આલોચના કરતા હૈ, યાવત્ તપકર્મ ધારણ કરતા હૈ. ॥ સૂ. ૬ ॥

કુર્ચા બાદ પશુ આલોચના આદિ કરે છે અને યોગ્ય તપદ્વારા પેતાના દોષોની વિશુદ્ધિ કરી દે છે. ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘ માઈ ણં ’ ઇત્યાદિ —

યો માયાવાન્ પુરુષો માયાં કૃત્વા નાલોચયતિ યાવન્ન પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રતિપદ્યતે, સ કીદૃશઃ સમ્પદ્યતે ? ઇત્યાદિ—‘ સે જહાનામ્ ’ ઇત્યાદિ । સ ઇતિ પ્રસિદ્ધૌ, યથેતિ—દૃષ્ટાન્તે, નામેતિ સંભાવનાયાં વાક્યાલક્ષ્યારે વા । યથાનામ સં પ્રસિદ્ધઃ અય આકારઃ=લોહાકરોઽન્ત ધમાયતે=પ્રજ્વલતિ, ‘ ઇતિ ’ અત્ર સ્વરૂપોપદર્શને, વેતિ વિકલ્પે । એવમગ્રેઽપિ बोध्यम् । યથા ચ-તામ્રાકરો વા ત્રણ્વીકરઃ=રજ્જાકરો વા શીશાકરો વા રૂપ્યાકરો વા સુવર્ણાકરો વા અન્તર્ધમાયતે, યથા વા-તિલાગ્નિઃ યથા વા તુષાગ્નિઃ=અન્યત્વગ્નિઃ, યથા વા-બુભાગ્નિઃ=કડકજ્વારાગ્નિઃ, યથા વા-નડાગ્નિઃ=નડાઃ=શરસદૃશશુષિરતૃણવિશેષાઃ, તેષામગ્નિઃ, યથા વા-દલાગ્નિઃ=પત્ત્રાગ્નિઃ=અન્તર્ધમાયતે । યથા ચ શુણ્ડિકાન્નિચ્છાનિ-શુણ્ડિકાઃ=પિટ્ઠાકારાણિ

માયા કરકે સાધુ કેસા હોતા હૈ, હસવાનકો અચ સૂત્રકાર કહતે હૈ.

“ માઈ ણં માયં કદુ ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—જો માયાવાન્ પુરુષ માયા(કપટ)કરકે ઉસકી આલોચના નહીં કરતા હૈ, યાવત્ ઉસકે યોગ્ય તપઃકર્મ સ્વીકાર નહીં કરતા હૈ, વહ એસા હોતા હૈ, જૈસે લોહકી खान भीतर भीतर प्रज्वलित होती रहती है, अथवा जૈસે તામ્રકી खान भीतर ही भीतर प्रज्वलित होती रहती है, अथवा— જૈસે શીસેકી खान भीतर ही भीतर प्रज्वलित होती रहती है, अथवा—, જૈસે ચાંદીકી खान या सुवर्णकी खान भीतर ही भीतर प्रज्वलित होती रहती है, अथवा—જૈસે નિરુકી અગ્નિ યા તુષકી અગ્નિ, યા ભૂસાકી અગ્નિ, યા વાળ જૈસે છેદવાલે તૃણ વિશેષકી અગ્નિ, અથવા પત્તોંકી અગ્નિ, भीतर ही भीतर जलती रहती है, अथवा—જૈસે શુણ્ડિકા-

માયા કર્યા બદ સાધુની કેવી હાલત થાય છે, તે હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—

“ માઈ ણં માયં કદુ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જે માયાયુક્ત પુરુષ માયા કરીને તેની અલોચના કરતો નથી, નિન્દા, ગર્હા આદિ કરતો નથી, યોગ્ય તપઃકર્મ દ્વારા તેની વિશુદ્ધિ કરતો નથી, તેનો અંતરાત્મા પશ્ચાત્તાપ રૂપ અગ્નિ વડે પ્રજ્વલિત થયા કરે છે. તેનો અંતરાત્મા કેટલો બધો પ્રજ્વલિત રહે છે, તે નીચેની ઉપમાઓ દ્વારા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે.

જેમ લોઢાની બાણ અંદરથી પ્રજ્વલિત થતી રહે છે, અથવા જેમ તાંબાની બાણ અંદરથી પ્રજ્વલિત થતી રહે છે, અથવા જેમ સીસાની બાણ અંદરથી પ્રજ્વલિત થતી રહે છે, અથવા જેમ ચાંદી કે સોનાની બાણ અંદરથી પ્રજ્વલિત થતી રહે છે, અથવા જેમ તલનો અથવા તુષનો (અનાજના ભૂસાનો) અગ્નિ, અથવા બાણ જેવા છેદવાળા તૃણવિશેષનો અગ્નિ, અથવા પથ્થોનો અગ્નિ,

સુરાપિષ્ટસ્વેદનપાત્રાણિ તાસાં લિચ્છાનિ=ચુલિકા સ્થાનાનિ વા, યથા વા મણ્ડિકાલિચ્છાનિ=માણ્ડિકા:=પિષ્ટપાચનપાત્રવિશેષાઃ, તાસાં લિચ્છાનિ, યથા વા-ગોલિકાલિચ્છાનિ=દીર્ઘા માણ્ડિકા એવ ગોલિકા ઉચ્ચન્તે, તાસાં લિચ્છાનિ અન્તર્ધર્માયન્તે । યથા ચ કુમ્ભકારાપાકઃ=કુમ્ભકારસ્ય માણ્ડપાકસ્થાનં વા, યથા વા-કવેલ્લુકાપાકઃ-કવેલ્લુકાઃ ' નલિયા ' इति भाषा प्रसिद्धाः, તત્પાકસ્થાનમ્, યથા વા-ફટાપાકઃ=ફટકા પરિપાકસ્થાનં, યથા વા-ચન્નવાટચુલ્લી-ચન્ન સ્થાને દક્ષત્રો રસાર્થં ચન્ને નિષ્પીડચન્તે તત્સ્થાનં ' ચન્નવાટ ' इत्युच्यते, તત્ સ્થિતા ચુલ્લી-અન્તર્ધર્માયતે । યથા વા-લોહકારામ્બરીપાણિ-લોહકારસ્ય અમ્બરીપાણિ=ભ્રાણાણિ ' માહ ' इति भाषा प्रसिद्धानि. કોટશાનિ તાનિ ? इत्याह-તપ્તાનિ=ઉષ્ણાનિ, સમજ્યોતિર્ભૂતાનિ=અગ્નેસ્તુલ્યતાં પ્રાપ્તાનિ, કિંશુકફુલ્લસમાનિ=પલાશપુષ્પવદરુણાનિ, તથા ઉલ્કાસહસ્રાણિ=ઉલ્કાઃ=અગ્નિપિણ્ડાસ્તેષાં

લિચ્છ, અથવા - માણ્ડિકાલિચ્છ, અથવા ગોલિકાલિચ્છ, ખીતરહી ખીતર પ્રજ્વલિત હોતે રહતે હૈં, અથવા-જૈસે-કુમ્ભકારકા આવા-વર્તન પકાનેકા સ્થાન-ખીતરહી ખીતર પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ, અથવા-જૈસે-કવેલ્લુક-નલિયોંકો પકાનેકા સ્થાન ખીતર હી ખીતર પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ, અથવા-જૈસે ફટોંકે પકાનેકા સ્થાન ખીતર હી ખીતર પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ, અથવા જૈસે ચન્ન દ્વારા નિકાલે ગયે દક્ષુકે રસકો પકાનેકે લિયે બનાયા ગયા ચૂન્હા ખીતર હી ખીતર પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ, અથવા-જિસ પ્રકારસે લોહકાર-લોહારકા અમ્બરીષ મટ્ટી જો કિ ખીતર બાહર ગરમ રહતી હૈ, ઓર અગ્નિકે જૈસી હો જાતી હૈ, તથા કિંશુકકે ફૂલકે જૈસી લાલ હોતી હૈ, પ્રચુર અગ્નિ પિણ્ડોંકો જો અપને ખીતરસે બાહર ર નિ કાલના રહતા હૈ, યહાં

અથવા જેમ શુક્રિકાલિચ્છ, અથવા ભાંડિકાલિચ્છ, અથવા ગોત્રિકાલિચ્છ અંદરને અંદર પ્રજ્વલિત રહે છે, અથવા જેવી રીતે કુંભારના નિભાડાને અગ્નિ અંદરને અંદર પ્રજ્વલિત થતો રહે છે, અથવા જેમ નળિયાં પકાવવાનું સ્થાન અંદરને અંદર પ્રજ્વલિત થતું રહે છે, અથવા જેમ ઘટેાને પકાવવાનું સ્થાન અંદરને અંદર પ્રજ્વલિત થતું રહે છે, અથવા શેરડીના રસમાંથી ખાંડ, ગોળ આદિ બનાવવા માટે તે રસને ઉકાળવા માટે બનાવેલી ભટ્ટી કે ચૂલો જેમ અંદરથી પ્રજ્વલિત થતો રહે છે, અથવા લુકારની ભટ્ટી અંદર અને બહારથી ગરમ ગરમ થઈ જાય છે અને અગ્નિના જેવી લાલચોળ થઈ જાય છે-કિંશુકના ફૂલો જેવી લાલ લાલ થઈ જાય છે, અને તેમાંથી અનેક અગ્નિકણો

સહસ્રાણિ-પ્રચુરાગ્નિષિખાન્ વિનિર્મુશ્ચન્તિ વિનિર્મુશ્ચન્તિ=ભૂયો ભૂયસ્ત્યજન્તિ, સહસ્રશબ્દઃ પ્રાચુર્યે, જ્વાલાસહસ્રાણિ-પ્રચુરાગ્નિશિખાઃ પ્રમુશ્ચન્તિ ૨=નિર્ગમયન્તિ, ૨, તથા-અક્ષારસહસ્રાણિ-અક્ષારાઃ=અગ્નિકળાઃ, તેષાં સહસ્રાણિ પ્રચુરાક્ષારાન્ પરિકિરન્તિ ૨, પરિતઃ=સમન્તાદ્ વિક્ષિપન્તિ અન્તરન્તઃ=અન્તરન્તર્ભાગે ધમાયન્તે=પ્રજ્વલન્તિ, એવમેવ=પૂર્વોક્તવદેવ માયી માયાં કૃત્વા અન્તરન્તઃ=સ્વાન્તઃકરણે ધમાયન્તે=પશ્ચાત્તાપાગ્નિના પ્રજ્વલિતો ભવતિ । યદ્યપિ ચ સ્વલુ અન્યાન્ કોઽપિ વદતિ, તદપિ ચ સ્વલુ માયી જાનાતિ=મન્યન્તે-‘ ઇપોઽહમ્ એમિઃ અભિશબ્દક્યે=અતિચારકારિકતયાઽનુમીયે ઇતિ । ઉક્તં ચ—

“ નિચ્ચં સંકિયમીઓ, ગમ્મો સવ્વસ્સ સ્વલિયચારિત્તો ।

સાહુજણસ્સ અવમઓ, મઓ વિ પુણ દુગ્ગહં જાહ ॥ ૧ ॥ ”

સહસ્ર શબ્દ પ્રચુર અર્થકા ઘાચકુ હૈ-પ્રચુર અગ્નિ શિખાઓંકો જો બાર ૨ છોડતા હૈ, એવં પ્રચુર અગ્નિકળોંકો જો બાર ૨ હ્ધર-ઉધર વચ્ચેરતા હૈ, મીતર હી મીતર પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ, હસી પ્રકારસે માયી માયાકો કરકે અપને મીતર હી મીતર પશ્ચાત્તાપરૂપી અગ્નિસે પ્રજ્વલિત હોતા રહતા હૈ । યદ્યપિ વહ માયાચારી જબ કોઈ દૂસરોંસે કુછ કહતા હૈ, તો માન લિયા કરતા હૈ, જાન જાતા હૈ-કિ યે લોગ મુજે માયાચારી રૂપસે અનુમિત કર રહે હૈ-ઉક્તં ચ—

“ નિચ્ચં સંકિયમીઓ ” ઇત્યાદિ ।

માયી જીવ નિત્ય શક્તિન બના રહતા હૈ, મયમીત હોતા રહતા હૈ, અપને ચારિત્રસે વહ પતિત હોના હૈ, સબ કોઈ ઉસકા અપમાન કરતે

(તણુખાઓ) ખહાર ઉઘ્યા કરે છે (અહીં ‘ સહસ્ર ’ પદ પ્રચુર અથવા અનેકના અર્થમાં વપરાયું છે), પ્રચુર અગ્નિ શિખાઓ જેમાંથી ચારે બાજુ ફેલાતી રહે છે, એવી લુહારની ભટ્ટી જેમ અંદરથી પ્રજ્વલિત રહ્યા કરે છે, એજ પ્રમાણે માયા રૂપ અતિચારોનું સેવન કર્યા બાદ તે માયીનું અંતઃકરણ પશ્ચાત્તાપ રૂપ અગ્નિ વડે અંદરને અંદર પ્રજ્વળ્યા કરે છે. જ્યારે આ માયાચારી અન્ય લોકોને કંઈ પણ કહે છે ત્યારે તેના પોતાના મનમાં જ તેને એવું લાગ્યા કરે છે કે આ લોકો મને માયાચારી જ ગણે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ નિચ્ચં સંકિયમીઓ ” ઇત્યાદિ—

માયી પુરુષ સદા શંકિત જ રહે છે, ભયભીત રહે છે અને પોતાના ચારિત્રથી બ્રહ્મ થાય છે. કોઈ પણ માણસ તેનું અપમાન કરતા સંકેત અનુભવતો નથી, સાધુઓ તેનો આદર કરતા નથી, સૌ તેનો અનાદર જ કરે

છાયા—નિત્યં શક્તિમીતો ગમ્યઃ સર્વેય સ્વલિતચારિત્રઃ ।

સાધુજનસ્ય અવમતો મૃતોઽપિ પુનર્દુર્ગતિં યાતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

અવમતઃ—અનાદતઃ—નિન્દિતઃ इत्यर्थः । અનેન સન્દર્ભેન માયિનોઽસ્ય લોક-
સ્ય ગર્હિતત્વં પ્રદર્શિતમિતિ ॥ સૂ. ૬ ॥

આલોચનાદ્યઋતુર્માયાવિન ઉપપાતોઽપિ ગર્હિતો ભવતીતિ દર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—માઈ ણં માયં કટ્ટુ અણાલોહ્યપડિક્કંતે કાલમાસે
કાલં કિચ્છા અણ્ણયરેસુ દેવલોગેસુ દેવત્તાણ ઉવવત્તારો ભવઈ,
તં જહા-નો મહિઢ્ઢિણ્ણેસુ જાવ નો દૂરંગઈણ્ણેસુ નો ચિરઢ્ઢિણ્ણેસુ ।
સે ણં તત્થ દેવે ભવઈ ણો મહિઢ્ઢિણ્ણે જાવ નો ચિરઢ્ઢિણ્ણે ।
જાવિ ય સે તત્થ વાહિરબ્બંતરિયા પરિસા ભવઈ સા વિ ય ણં
નો આઢાઈ નો પરિયાણાઈ નો મહરિહેણં આસણેણં ઉવનિમ્મં-
તેઈ । માસં પિય સે માસમાણસસ જાવ ચત્તારિ પંચ દેવા અવુત્તા
ચેવ અબ્બુટ્ટેતિ મા વહુ દેવે માસડ, માવહુ દેવે માસડ ॥સૂ.૦૭॥

છાયા—માયી સ્વલુ માયાં કૃત્વા અનાલોચિતમતિકાન્તઃ કાલમાસે કાલં
કૃત્વા અન્યતમેષુ દેવલોકેષુ દેવતયા ઉપપત્તા ભવતિ, તથા-નો મહર્દિકેષુ
યાવન્નો દૂરગતિકેષુ નો વિરસ્થિતિકેષુ । સ સ્વલુ તત્ર દેવો ભવતિ નો મહર્દિકો
યાવદ્ નો ચિરસ્થિતિકઃ । યા પિ ચ તસ્ય તત્ર વાહ્યાભ્યન્તરિકા પરિપદ્ ભવતિ,
સા પિ ચ તં નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ નો મહાર્હેણ આસનેન ઉપનિમન્ત્રયતિ ।
માપામપિ ચ માપમાગસ્ય યાવત્ ચત્વારઃ પન્ચ દેવા અનુક્તા એવ અભ્યુત્તિષ્ઠન્તિ—
મા વહુ દેવ ! માપતામ્, મા વહુ દેવ ! માપતામ્ ॥

હુણ સંકોચ નહીં કરતાં હૈ, સાધુજન હસકા આદર નહોં કરતે હૈ,
કિન્તુ અનાદર હી કરતેહૈ, યહ મરકંર દુર્ગતિમેં જાનાહૈ । હસ સંદર્ભસે
યહ પ્રકટ કિયા ગયાહૈ, કિ માયાચારીકા યહ લોક ગર્હિત હોતાહૈ ॥સૂ.૦૬॥

છે, અને એવો જીવ મરીને દુર્ગતિમાં જ બીય છે. આ પ્રકારના સંદર્ભને
અનુલક્ષીને અહીં એવું પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે માયાચારીનો આ લોક
ગર્હિત હોય છે. ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ માઈ ણં ’ ઇત્યાદિ—

માયાવી પુરુષો માયાં કૃત્વા અનાલોચિતપ્રતિક્રાન્તઃ—ન આલોચિતં પ્રતિ-
ક્રાન્તં ચ યેન સ તથા—આલોચના પ્રતિક્રમગર્જિતઃ કાલમાસે=કાલાવસરે કાલં
કૃત્વા=મૃત્વા અન્યતમેષુ દેવલોકેષુ=વ્યન્તરાદીનાં દેવનાં મધ્યે કેષુચિદ્ દેવેષુ
દેવતયા=દેવત્વેન ઉપપન્ના=ઉપપાતવાન્ ભવતિ । કેષુ દેવેષુ સ ઉત્પદ્યતે ? ઇત્યાદિ—
તથા—નો મહર્દિકેષુ=પરિવારાદિસમૃદ્ધિસહિતેષુ દેવેષુ નોત્પદ્યતે, અમહર્દિકેષુ
દેવેષુ ન્પદ્યતે ઇત્યર્થઃ, યાવત્કારણાત્—‘ નો મહાદ્યુતિકેષુ નો મહાનુભાગેષુ, નો
મહાસૌખ્યેષુ ’—ઇતિ સંપૂર્ણત્રે । તત્ર—મહાદ્યુતિકેષુ=શરીરાભરણાદિદીપ્ત્યા દીપ્તિ-
મત્સુ દેવેષુ સ નોત્પદ્યતે । તથા—નો મહાનુભાગેષુ=વૈક્રિયાદિલબ્ધિરૂપમહાપ્રભાવ-

આલોચના આદિ નહીં કરનેવાલે માયાવીકા ઉપપાત મી ગર્હિત
હોતા હૈ—હસ બાતકો અવ મૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈ—

“ માઈ ણં માયં કદ્દુ અણાલોહ્યપડિક્કંતે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—માયાવી પુરુષ માયાકો કરકે યદિ આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ
નહીં કરતા હૈ, ઓર કાલ માસમેં કાલ કર જાતા હૈ, તો વહ કિસી એક
વ્યન્તરાદિ દેવલોકમેં વ્યન્તર દેવરૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ, વહ મહ-
ર્દિક-પરિવાર-આદિ સમૃદ્ધિ સહિત દેવોમેં ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ,
કિન્તુ અમહર્દિક દેવોમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ, યહાં યાવત્તદસે—“ નો મહા-
દ્યુતિકેષુ નો મહાનુભાગેષુ, નો મહાબલેષુ, નો મહાસૌખ્યેષુ ” ઇસ પાઠકા
ગ્રહણ હુઆહૈ, શરીર આભરણાદિકી-દીપ્તિસે જો દીપ્તિયુક્ત હોતેહૈ, એસે
દેવોમેં વહ ઉત્પન્ન નહીં હોના હૈ, જો દેવ વૈક્રિયાદિ લબ્ધિરૂપ મહા-
પ્રભાવસે યુક્ત હોતે હૈ, ઊનમેં વહ ઉત્પન્ન નહીં હોના હૈ, જો દેવ પ્રચલ-

આલોચના અદિ નેહી કરનારનો (માયાવીનો) ઉપપાત પણ ગર્હિત
જ હોય છે, એજ વાતનું સૂત્રકાર હવે પ્રતિપાદન કરે છે.

“ માઈ ણં માયં કદ્દુ અણાલોહ્યપડિક્કંતે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—માયાવી પુરુષ માયા કરીને તેની આલોચના, પ્રતિક્રમણ આદિ કર્યા વિના
કાળનો અવસર આવે જો કાળધર્મ પામી જાય છે, તો તે વ્યન્તરાદિ દેવલોકમાં
વ્યન્તરાદિદેવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે—તે પરિવાર આદિથી સમૃદ્ધ એવા મહ-
ર્દિક આદિ દેવોમાં ઉત્પન્ન થતો નથી, પરન્તુ અમહર્દિક દેવોમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે.
અહીં ‘ યાવત્ ’ પદ દ્વારા “ નો મહાદ્યુતિકેષુ નો મહાનુભાગેષુ, નો મહાબલેષુ,
નો મહાસૌખ્યેષુ ” આ સૂત્રપાઠ ગ્રહણ કરાયો છે. એટલે કે શરીરાભરણ
આદિની દીપ્તિથી યુક્ત જો દેવો હોય છે, તેમનામાં તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી,

સમ્પન્નેષુ, નો મહાવલેષુ=પવન્નશક્તિમન્સુ નો મહાસૌખ્યેષુ=મહાસૌખ્યસમ્પન્નેષુ
 ચ દેવેષુ સ નોત્પદ્યતે । તથા-નો દૂરગતિકેષુ=સૌધર્માદિદેવગતિષુ દેવેષુ, નો ચૈવ
 ચિરસ્થિતિકેષુ=સાગરોપમસ્થિતિકેષુ દેવેષુ સ નોત્પદ્યતે । સોઽનાલોચિતપ્રતિ-
 ક્રાન્તઃ સાધુઃ સ્વલ્લુ=નિશ્ચયેન તત્ર=વ્યન્તરાદીનામન્યતમેષુ દેવેષુ દેવો ભવતિ ।
 અત એવ સ મહર્દિકો યાવત્ ચિરસ્થિતિકો દેવો ન ભવતિ । વ્યન્તરાઘન્યતમેષુ
 સમુત્પન્નસ્ય તસ્ય તત્ર ચ યાઽપિ બાહ્યાભ્યન્તરિકા પરિપદ્મવતિ સાઽપિ ચ તં નો
 આદ્રિયતે=તસ્યાદરં ન કરોતિ, નો પરિજાનાતિ=સ્વામિતયા ન મન્યતે, તથા-
 મહાર્હેણ=મહતાં યોગ્યેન આસનેન તં ચ ઉપનિમન્ત્રયતિ, તથા-ક્વાપિ દેવસભાયાં

શક્તિવાલે હોતે હૈં, ડન દેવોંમેં વહ ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ, જો દેવ મહા
 સૌખ્યશાલી હોતે હૈં, ડનમેં વહ ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ, તથા-જો દેવ
 સૌધર્માદિ દેવગતિયોંમેં હોતે હૈં, તથા જો દેવ સાગરોપમકી સ્થિતિ-
 વાલે હોતે હૈં ડન દેવોંમેં વહ દેવરૂપસે ઉત્પન્ન નહીં હોતા હૈ, ઇસ તરહ
 જો માયી સાધુ આલોચના ઓર પ્રતિક્રમણ ઇન દોનોંસે વર્જિત હોતા
 હૈ વહ કાલ માસમેં કાલકર વ્યન્તરાદિક દેવોંમેંસે કિસી ઇક દેવ-
 લોકમેં દેવ હોતા હૈ, પરન્તુ વહ મહર્દિક યાવત્ ચિરસ્થિતિક દેવ
 નહીં હોતા હૈ, વ્યન્તરાદિ દેવોંમેંસે કિસી ઇક દેવલોકમેં ઉત્પન્ન હુએ
 ડસ દેવકી વહાં પર જો કોઈ ભી બાહ્ય આભ્યન્તર પરિષદા હોતી હૈ,
 વહ ભી ડસકો આદર નહીં કરતો હૈ, ડસે અપના સ્વામી રૂપસે નહીં
 માનતીહૈ, તથા-મહાપુરુષોંકે યોગ્ય આસનસે ડસે ઉપનિમન્ત્રિત નહીં કરતી

જે દેવો વૈક્રિયાદિ લઙ્ગિ ઇપ મહાપ્રભાવથી યુક્ત હોય છે, તે દેવોમાં પણ
 તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી, જે દેવો પ્રબળ શક્તિવાળા હોય છે,
 તે દેવોમાં પણ તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી, જે દેવો મહા સૌખ્યશાળી હોય
 છે, તે દેવોમાં પણ તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી, તથા સૌધર્મ આદિ કલ્પોમાં
 પણ તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી, તથા સાગરોપમની સ્થિતિવાળા દેવોમાં પણ
 તેની ઉત્પત્તિ થતી નથી. આ રીતે જે માયી સાધુ આલોચન અને પ્રતિક્રમણથી
 રહિત હોય છે, તે કાળનો અવસર આવે કાળધર્મ પામીને વ્યન્તરાદિક દેવો-
 માંથી કોઈ પણ ઓક દેવલોકમાં દેવપર્યાયે ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ તે મહર્દિ-
 કથી લઈને ચિરસ્થિતિક પર્યાંતના વિશેષણોથી યુક્ત થતો નથી વ્યન્તરાદિ
 દેવોમાંના કોઈ પણ ઓક દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયેલા તે દેવની ત્યાં જે કોઈ
 બાહ્ય આભ્યન્તર પરિષદ હોય છે તે પણ તેનો આદર કરતી નથી, તેને
 પોતાના સ્વામી રૂપે માનતી નથી તથા મહાપુરુષને યોગ્ય ઓવાં આસન પર
 તેને બેસાડતી નથી. તથા કોઈ પણ દેવસભામાં જ્યારે તે દેવ જાય છે અને

ગતસ્ય કિંચિદ્વિષયાં ભાષાં=વાણીં ભાષમાણસ્ય=સામાન્યેન વદતો, યાવતા પદેન-
પ્રજ્ઞાપયતઃ=વિશેષરૂપેણ વદતઃ, પ્રરૂપયતઃ=યુક્તિપ્રયુક્તિમિશ્ર વદતસ્તસ્ય દુર્ભગસ્ય
ચત્વારઃ પશ્ચ ત્રા અન્યે દેવાઃ અનુક્તાઃ=કેનાઽપ્યપ્રેરિતા એવ અનભિમતસ્ય તસ્ય
ભાષગનિષેધાય અભ્યુત્તિઃ-ઋર્ધ્વીમવન્તિ, વદન્તિ ચ-હે દેવ ! માં બહુ ભાષ-
તામ્, માં બહુ ભાષતામ્-ઇતિ । અત્ર વાક્યદ્વિરુક્તિસ્તસ્યાત્યન્તાપ્રિયત્વં
સૂચયતીતિ ॥ સૂ ૭ ॥

ઇત્યમુપપાતગર્હતા પ્રોક્તા, સમ્પતિ તસ્યાયતિગર્હતામાહ—

મૂલમ્—સે પાં તાઓ દેવલોગાઓ આડકલણં ભવકલણં
ઠિડકલણં અણંતરં ચયં ચઇત્તા ઇહેવ માણુસસણ ભવે જાઈં
ઇમાઈં કુલાઈં ભવંતિ તવથા-અંતકુલાણિ વા પંતકુલાણિ વા
તુચ્છકુલાણિ વા દરિદ્રકુલાણિ વા ભિક્ષાગકુલાણિ વા કિવ-
ણકુલાણિ વા, તહપ્પગારેસુ કુલેસુ પુમત્તાણ પચ્ચાયાઈ, સે પાં
તત્થ પુમે ભવઈ-દુરુવે દુવન્ને દુગંધે દુરસે દુપ્પાસે અણિટ્ટે

હૈ, અર્થાત્ મહાપુરુષોંકે યોગ્ય આસન પર ઉસે નહીં બેઠાતી હૈ, તથા-
કિસી બી દેવ સભામેં ગયે હુણ ઉસ દેવકો કિસી બી વિષય પર બોલતે
સમય યાવત્ વિશેષ રૂપસે યુક્તિ પ્રયુક્તિયાં દ્વારા અપને વિષયકા પ્રરૂપણ
કરતે સમય ઉસ દુર્ભગ દેવકા ચાર પાંચ દેવ જો કિસી બી તરહસે
દૂસરે દેવોં દ્વારા ઉકસાયે નહીં જાતે હૈં, સ્વહે હોકર ભાષણ કરનેસે
નિષેધ કર દેતે હૈં, ઓર કહતે હૈં, હે દેવ ! અથ તુમ અધિક મત બોલો
૨ યહાં જો હસ પ્રકારસે દ્વિરુક્તિ હુઈ હૈ, વહ ઉસમેં અત્યન્ત અપ્રિયતા
પ્રકટ કરનેકે લિયે હુઈ હૈ ॥ સૂ ૭ ॥

કેઈ પણ વિષય પર જ્યારે બોલે છે, યાવત્ વિશેષ રૂપે યુક્તિપ્રયુક્તિઓ
દ્વારા પોતાના વિષયનું પ્રતિપાદન કરવા માટે છે, ત્યારે તે પરિષદમાં હાજર
હોય એવા ચાર પાંચ દેવો—(કે જેમને અન્ય દેવો દ્વારા તેની વિરૂદ્ધ ઉશ્કે-
રવામાં પણ ન આવ્યા હોય—) જિહ્વા થઈ જઈને તેને બોલવા દેવાનો નિષેધ
કરે છે, અને કહે છે કે “હે દેવ ! હવે તમે અધિક ન બોલો. હે દેવ !
હવે તમે બોલવાનું બંધ કરો ” અહીં જે આ પ્રકારની દ્વિરુક્તિ થઈ છે, તે
તેના પ્રત્યે અત્યન્ત અપ્રિયતા (અણુગમો) પ્રકટ કરવાને માટે થઈ છે ॥ સૂ ૭ ॥

અકંતે અપિય અમણુણે અમણામે હીણસ્સરે દીણસ્સરે અણિ-
ટ્ઠસ્સરે અકંતસ્સરે અપિયસ્સરે અમણુણસરે અમણામસ્સરે અણા-
ણજ્ઞ વયણપચ્ચાયાણ । જાવિ ય સે તત્થ બાહિરબ્બંતરિયા પરિસા
ભવઙ્ગ, સા વિ ય ણં ણો આઢાઙ્ગ ણો પરિયાણાઙ્ગ ણો મહરિહેણ
આસણેણં ઉવણિમંતેઙ્ગ । માસંપિ ય સે માસમાણસ્સ જાવ
ચત્તારિ પંચ જણા અવુત્તા ચેવ અબ્બુદ્ધેતિ—મા બહું અજ્ઞઉત્તો !
માસઉ, મા બહું અજ્ઞઉત્તો ! માસઉ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

છાયા—સ खलु ततो देवलोकात् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अन-
न्तरं चयं त्यक्त्वा इहैव मानुष्यके भवे यानि इमानि कुलानि भवन्ति, तद्यथा—
अन्तकुलानि वा प्रान्तकुलानि वा तुच्छकुलानि वा दरिद्रकुलानि वा भिक्षाक-
कुलानि वा कृपणकुलानि वा, तथाप्रकारेषु कुलेषु पुंस्तया प्रत्यायाति, स खलु
तत्र पुमान् भवति दुरुषो दुर्वणो दुर्गन्धो दूरसो दुःस्पर्शोऽनिष्टः अकान्तः अप्रियः
अमनोज्ञः अमनओमो हीनस्वरो दीनस्वरः अनिष्टस्वरः अकान्त स्वरः अप्रियस्वरः
अमनोज्ञस्वरः अमन आमस्वरः अनादेयवचनप्रत्यायातः । यापि च तस्य तत्र
बाह्याभ्यन्तरिका परिषद् भवति, साऽपि च खलु नो आद्रियते नो परिजानाति
नो महार्हेण आसनेन उपनिमन्त्रयति । भाषामपि च तस्य भाषमाणस्य यावत्
चत्वारः पञ्च जना अनुक्ता एव अभ्युत्तिष्ठन्ति मा बहु आर्य पुत्र ! भाषताम्, मा
बहु आर्यपुत्र ! भाषताम् ॥

ટીકા—સઃ અનાલોચિતપ્રતિક્રાન્તો માયાવી તતો દેવલોકાત્=વ્યન્તરા-
ધન્યતમરૂપાત્ આયુઃક્ષયેણ=આયુઃ કર્મપુદ્ગલનિર્જરણેન, ભવક્ષયેણ=આયુઃ કર્માદિ

હસ પ્રકારસે ઉપપાતમેં ગર્હતા પ્રકટ કર અવ સૂત્રકાર ઉસકી
અયતિમેં ગર્હતા પ્રકટ કરતે હૈ—

“સે ણં તાઓ દેવલોગાઓ આઉક્કલ્લણં હત્થાદિ ।

ટીકાર્થ—અતિચાર રૂપ માયાકી આલોચના એવં પ્રતિક્રમણ નહીં કરનેવાલા
માયાવી જન વ્યન્તરાદિક કિસી ખી દેવલોકસે ઓયુકર્મ પુદ્ગલોંકી

આ પ્રકારે તે માયાના ઉપપાતમાં ગર્હતા પ્રકટ કરીને હવે સૂત્રકાર
તેની આયાતિમાં ગર્હતા પ્રકટ કરે છે—

“સે ણં તાઓ દેવલોગાઓ આઉક્કલ્લણં” હત્થાદિ—

ટીકાર્થ—અતિચાર રૂપ માયાની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કર્યા વિના કાળધર્મ
પામીને વ્યન્તરાદિક કોઈ પણ દેવવિશેષમાં ઉત્પન્ન થયેલો તે માયાવી પુરુષ,

નિવન્ધનદેવપર્યાયનાશેન, સ્થિતિક્ષયેણ=આયુઃ સ્થિતિવન્ધક્ષયેણ દેવમવનિવન્ધનશેષ-
કર્મણાં વા ક્ષયેણ અનન્તરમ્=આયુઃક્ષયાદેઃ સમનન્તરમેવ ચયં=દેવશરીરં ત્યક્ત્વા
ઇહૈવ માનુષ્યકે ભવે=મનુષ્યલોકે યાનિ હમાનિ=વક્ષ્યમાણાનિ કુલાનિ ભવન્તિ
તથાપ્રકારેષુ=તદ્વિધેષુ કુલેષુ પુસ્તયા=પુરુષત્વેન ઉપપત્તું પ્રત્યાયાતિ=પ્રત્યા-
ગચ્છતિ ઉત્પન્નો ભવતીત્યર્થઃ । તાનિ કુલાનિ પ્રાહ-તથથા-અન્તકુલાનિ=શુદ્રકુલાનિ
વરુદ્ધિમ્પકાદીનાં કુલાનીતિ યાવત્, પ્રાન્તકુલાનિ=ચાળડાલાદિકુલાનિ વા,
તુચ્છકુલાનિ વા=અલ્પમાનુષાણિ કુલાનિ, યદ્વા-અગમ્भीરાશયાનિ કુલાનિ, દરિ-
દ્રકુલાનિ=ધનધાન્યાદિમૃદ્ધિર્વિજિનાનિ કુલાનિ વા, ભિક્ષાકકુલાનિ=ભિક્ષાવૃત્તિ-
જીવિનાં કુલાનિ વા, કૃપણકુલાનિ-રઙ્ગકુલાનિવેતિ । एतेषामन्तकुलादीनां कस्मि-

निर्जरा हो जानेसे, आयु कर्मादिके कारणभूत देवपर्यायके नाश हो
जानेसे, एवं स्थितिके-आयु की स्थितिके बन्धके-स्थिति बन्धके क्षय हो
जानेसे, उसी समय वह देव शरीरको छोड़कर इसी मनुष्य भवमें जो
ये कुल हैं, जैसे कि-अन्तकुल, प्रान्तकुल, तुच्छ कुल, दरिद्रकुल, भिक्षाक-
कुल अथवा कृपण कुल इनमें वरुद, छिम्पक आदिके जो क्षुद्रकुल हैं,
वे अन्तकुल हैं, चाण्डाल आदिके जो कुल हैं, वे प्रान्त कुल हैं, जिन-
कुलोंमें अल्प मनुष्य होते हैं वे तुच्छ कुल हैं. अथवा-अगम्भीर आश-
यवाले जो कुल होते हैं वे तुच्छ कुल हैं, धनधान्य आदि समृद्धिसे
विहीन जो कुल हैं, वे दरिद्र कुल हैं, भिक्षावृत्तिसे जिनमें मनुष्य अपनी
आजीविका चलाते हैं वे भिक्षाक कुल हैं, जो कुल रङ्गजनोंके होते हैं,

તેનુ દેવલોક સંબંધી આયુષ્ય પૂર્ણ થવાથી-આયુકર્મપુર્ણલોની નિર્જરા થઈ
જવાથી, આયુની સ્થિતિના કારણભૂત દેવપર્યાયનો નાશ થઈ જવાથી, આયુની
સ્થિતિના બન્ધનો (સ્થિતિબન્ધનો) ક્ષય થઈ જવાથી, એજ સમયે તે દેવ
શરીરને છોડીને હીન મનુષ્ય કુળોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. અન્તકુલ, પ્રાન્તકુલ,
તુચ્છકુલ, દરિદ્રકુલ, ભિક્ષાકકુલ, કૃપણકુલ, આદિને હીન કુલ કહે છે. વરુદ,
છિમ્પક આદિના જે ક્ષુદ્રકુળો છે તેમને અન્તકુળ કહે છે. ચાંડાલ આદિના
જે કુળ છે તેમને પ્રાન્તકુળ કહે છે. જે કુળોમાં અલ્પ (તુચ્છ) મનુષ્યો
થાય છે તે કુળોને તુચ્છકુળો કહે છે. અથવા અગમ્भीર આશયવાળા જે કુળો
હોય છે તેમને તુચ્છ કુળો કહે છે. ધન, ધાન્ય આદિ સમૃદ્ધિથી વિહીન જે
કુળો હોય છે તેમને દરિદ્રકુળો કહે છે જે કુળના લોકો ભિક્ષા માગીને પોતાનું
શુશ્રૂણ ચલાવતા હોય છે તે કુળોને ભિક્ષાકકુળો કહે છે. રંક જનોના અથવા
કૃપણ લોકોના જે કુળો હોય છે તેમને કૃપણકુળો કહે છે. આ કુળોમાંથી કેઇ

શ્રિત્ કુલે દેવલોકાચ્ચયુતોઽનોલોચિતપ્રતિક્રાન્તમાયાવીજીવઃ પુરુષત્વેન પ્રત્યા-
યાતીતિ સંક્ષિપ્તોઽર્થઃ । તત્ર સ કીદશો ભવતિ ? इति दर्शयति-‘ સે ણં તત્થ ’
इत्यादि । स खलु तत्र=अ ताद्यन्यतमकुले दूराः=जन्मतः कुत्सितरूपयुक्तः, दुर्वर्ण=
उत्पन्ननन्तरं रोगादिना वर्णवैकृत्यं प्राप्तः, दुर्गन्धः=कुत्सितगन्धयुक्तः दूरसः=
कुत्सितप्रकृतियुक्तः, दुःस्पर्शः=रोगादिना कुत्सितस्पर्शः, अनिष्टः=लोकानां द्वेष्यः,
अक्रान्तः=अक्रमनीयः, अप्रियः=सर्वेषाम् अप्रीतिभाजनम्, अमनोज्ञः=मनसोऽन-
वे कृपण कुल हैं, इन कुलोंमेंसे किसी एक कुलमें देवलोकसे चवकर
वह आलोचना एवं प्रतिक्रमणसे विहीन हुआ मायावी जीव पुरुष
रूपसे उत्पन्न होता है, वहां वह पुरुषरूपसे उत्पन्न होकर कुत्सित
रूपवाला होता है, दुर्वर्णवाला होता है-उत्पत्तिके बादही रोगादिसे
वर्णकी विकृतिवाला होता है, दुर्गन्धयुक्त होता है-कुत्सित गन्धवाला
होता है, दूर कुत्सित प्रकृतिसे युक्त होता है-दुःस्पर्श-रोगादिसे कुत्सित
स्पर्शवाला होता है, अनिष्ट लोकोंका द्वेष्य होता है, अक्रान्त-अकम-
नीय होता है, अप्रिय-समस्त जनोंको अप्रीतिका भाजन होता है,
अमनोज्ञ-मनके अनुकूल नहीं होता है, अमन आम-मनको अत्यन्त
अनिष्ट होता है, तथा-हीन स्वर-ह्रस्व स्वरवाला होता है, दीन स्वर
दीनता युक्त स्वरवाला होता है, अनिष्ट स्वर-लोकको अप्रिय लगे
ऐसे स्वरवाला होता है, अक्रान्त स्वर-अकमनीय स्वरवाला होता है,
अप्रियस्वर-जिसके वचन सबको अप्रिय लगे ऐसे वचनवाला होता

પણ એક કુળમાં તેની આયતિ થાય છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે જે માયાવી
પુરુષ પોતાના કૃત અતિચારોની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ નહીં કરવાને
કારણે બ્યન્તરાદિ દેવોમાં ઉત્પન્ન થયો હોય છે, તે જીવ ત્યાંનું આયુષ્ય પૂરું કરીને
ઉપયુક્ત કાંઈ પણ એક મનુષ્યકુળમાં મનુષ્ય રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. ત્યાં
ઉત્પન્ન થયેલા તે પુરુષ કુત્સિત રૂપવાળો અને દુર્વર્ણવાળો, (ઉત્પત્તિ થયા
બાદ રોગાદિને કારણે વર્ણની વિકૃતિવાળો હોય છે, વળી તે દુર્ગન્ધયુક્ત
(કુત્સિત ગન્ધવાળો) હોય છે, દૂરસ (કુત્સિત પ્રકૃતિવાળો) હોય છે,
દુઃસ્પર્શ (રોગાદિને કારણે કુત્સિત સ્પર્શવાળો) હોય છે, અનિષ્ટ (લોકો
જેના પ્રત્યે અણુગમે રાજો એવો) હોય છે, અક્રાન્ત (અક્રમનીય) હોય છે,
અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અમનામ (મનને અત્યંત અણુગમે પ્રેરે એવો) હોય છે,
હીનસ્વર (સ્વરની ખોડવાળો), દીનસ્વર (દીનતાયુક્ત સ્વરવાળો), અનિષ્ટ
સ્વર (અણુગમે પ્રેરે એવા સ્વરવાળો), અક્રાન્ત સ્વર (અક્રમનીય સ્વરવાળો)
અપ્રિયસ્વરવાળો, અમનોજ્ઞ સ્વરવાળો, અને અમનામ સ્વરવાળો (મનને

નુકુલઃ, અમન આમઃ=મનસોડ્યન્તાનિષ્ઠઃ, તથા-હીનસ્વરઃ=દૂસ્વસ્વરઃ, દીન-
સ્વરઃ=દીનતાયુક્તસ્વરવાન્, અનિષ્ઠસ્વરઃ અનિષ્ઠઃ=લોકાનાં દ્વેષ્યઃ સ્વરો यस્ય સ
તથા, અક્રાન્તસ્વરઃ=અકપનીયસ્વરઃ, અપિયસ્વરઃ=સર્વેષામ્ અપ્રિયકૃદ્વચનવાન્,
અમનોજ્ઞસ્વરઃ=મનસોડપ્રીતિકૃદ્વચનવાન્, અમનઆમસ્વરઃ=મનસોડ્યન્તાનિષ્ઠસ્વર-
વાન્, અત એવ અનાદેયવચનપ્રત્યાયાતઃ-અનાદેયે=અનુપાદેયે વચનપ્રત્યાયાતૈ=
વચનજન્મની यस્ય સ તથા-અનુપાદેયવચનજન્મા ચ પુમાન્=પુરુષો ભવતિ ।
તત્ર=અન્તાદ્યન્યતમકુલે સમુત્પન્નસ્ય દૂરૂપાદિવિશેષણવિશિષ્ટસ્ય તસ્ય ચ યાડપિ
ચાહ્યા=દાસીદાસરૂપા, આભ્યન્તરિકા=પુત્રકલત્રાદિરૂપા પરિષદ્ ભવતિ, સાડપિ ચ
સ્વલુ તં પુરુષં, નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો મહાર્હેણ આસનેન ઉપનિમન્ત્ર-
યતિ । તથા-ક્યાડપિ મનુષ્યસમાયાં કિંવિદ્વિપયાં ભાષાં=ત્રાણીમપિ ભાષમાણસ્ય=
વદતઃ, યાવત્પદેન પ્રજ્ઞાપયતઃ પ્રરૂપયતશ્ચ તસ્ય ચત્વારઃ પશ્ચ વા જનાઃ અનુક્તાઃ=
કેનાડપ્યપ્રેરિતા એવ અનભિમતસ્ય તસ્ય ભાષણનિષેધાય અભ્યુત્તિષ્ઠન્તિ=ઊર્ધ્વા
ભવન્તિ, વદન્તિ ચ હે આર્યપુત્ર ! વહુ મા ભાષતામ્ વહુ મા ભાષતામ્ ઇતિ ।
અત્રાપિ દ્વિરુક્તિરત્યન્તાપ્રિયત્વમૂચનાયેતિ ॥ સૂ ૦ ૮ ॥

હૈ, અમનોજ્ઞ સ્વર-સબકે મનમેં અપ્રીતિ ઉત્પન્ન કરનેવાલે વચનોંવાલા
હોતા હૈ, અમન આમ સ્વર-મનકો અત્યન્ત અનિષ્ઠ સ્વરવાલા હોતા હૈ,
અત એવ વહ અનુપાદેય વચન (આદેય વચનસે રહિત હોતા હૈ) ઓર
અન્યવાલા હોતા હૈ, હસ પ્રકારકે દૂરૂપાદિ વિશેષણોંસે વિશિષ્ટ ડસ
અન્તાદિ કુલમેં ઉત્પન્ન હુએ જનકી જો દાસી દાસ રૂપ ચાહ્ય પરિષદા
હૈ, વહ એવં-પુત્ર કલત્રાદિ રૂપ જો આભ્યન્તર પરિષદા હૈ, વહ ડસ
પુરુષકા આદર આદિ કુહ મી નહીં કરતી હૈ યહાં યાવન્ પદસે “પ્રજ્ઞા-
પયતઃ-પ્રરૂપયતઃ” હન પદોંકા સંગ્રહ હુઆ હૈ । આગે કે પદોંકા
અર્થ સ્પષ્ટ હૈ ॥ સૂ ૦ ૮ ॥

અનિષ્ઠ લાગે એવા સ્વરવાળો હોય છે. તે કારણે તે અનુપાદેય-વચનવાળો
(આદેય વચનથી રહિત) હોય છે, અને એજ પ્રકારના અન્ય વિશેષણોથી
પણ યુક્ત હોય છે. આ પ્રકારના દૂરૂપાદિ વિશેષણોથી યુક્ત, અને ઉપયુક્ત
અન્તાદિ કુળોમાં ઉત્પન્ન થયેલા તે પુરુષનો કોઈ પણ માણસ આદર કરતું
નથી. હાસદાસી રૂપ તેમની બાહ્ય પરિષદ અને પુત્રકલત્રાદિ રૂપ આભ્યન્તર
પરિષદ પણ તેમનો આદર કરતી આદિ કરતી નથી. અહીં ‘આદિ’ પદ
વડે “પ્રજ્ઞાપયતઃ પ્રરૂપયતઃ” આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આગલા પદોનો
અર્થ સ્પષ્ટ છે. ॥ સૂ. ૮ ॥

इत्थमनालोचितः प्रतिक्रान्तास्य मायाविन इहलोकपरलोकायतीनां गर्हितत्व-
मुक्त्वा सम्प्रति यः साधुरालोचितप्रतिक्रान्तो भवति, तस्य उपपातः कीदृशो भव-
तीति निरूपयितुमाह —

मूलम्—माई णं मायं कट्टु आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं
किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव्वत्तारो भवइ, तं
जहा--महिद्धिएसु जाव चिरट्ठिइएसु । से णं तत्थ देवे भवइ
महिद्धिए जाव चिरट्ठिइए हारविराइयवच्छे कडगतुडियथंभिय-
भुए अंगयकुंडलमट्टुगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे
विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउडीकल्लाणगपवरवत्थपरि-
हिए कल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे भासुरबोदी पलंबवणमाल-
धरे दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रसेणं दिव्वेणं
फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्डीए
दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्छीए
दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासे-
माणे महयाऽहयणट्टुगीयवाइत्ततंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडु-
प्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणे विहरइ । जावि
य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ, सावि य णं आढाइ
परियाणाइ महारिहेणं आसणेणं उव्वनिमंतेइ । भासंप्पि य से
भासमाणस्स जाव चत्तारि पंचदेवा अवुत्ताच्चेव अब्भुट्ठित्ति-
वहुं देवे ! भासउ-वहुं देवे ! भासउ ॥ सू० ९ ॥

छाया—मायी खलु मायां कृत्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे कालं
कृत्वा अन्यतमेषु देवलोकेषु देवतया उपत्ता भवति, तद्यथा-महर्दिकेषु यावत्
चिरस्थितिकेषु । स खलु तत्र देवो भवति-महर्दिको यावत् चिरस्थितिको हार-

વિરાજિતવક્ષાઃ કટકત્રુટિતસ્તસ્મિતશુજઃ અન્નદકુન્ડલમૃદ્ધગન્ધતલર્કણપીઠધારી
 વિચિત્રહસ્તામરણો વિચિત્રવસ્ત્રામરણો, વિચિત્રમાલામૌલિઃ કલ્યાણકપ્રવરવસ્ત્રપરિ-
 હિતઃ કલ્યાણકપ્રવરગન્ધમાલ્યાનુલેપનધરો માસ્વરશરીરઃ પ્રલમ્બવનમાલાધરો દિવ્યેન
 વર્ણેન દિવ્યેન ગન્ધેન દિવ્યેન રસેન દિવ્યેન સ્પર્શેન દિવ્યેન સંઘાતેન દિવ્યેન
 સંસ્થાનેન દિવ્યયા ઋદ્ધયા દિવ્યયા છુત્તયા દિવ્યયા પ્રભયા દિવ્યયા છાયયા
 દિવ્યયા અચ્યા દિવ્યેન તેજસા દિવ્યયા લેશ્યા દશ દિશઃ ઉદ્ધોતયન્ પ્રમા-
 સયન્ મહતા અહતનાટયગીનવાદિતતન્ત્રા તલવાલત્રુટિતયનમૃદ્ગપટુપ્રવાદિત-
 રવેણ દિવ્યાન્ ભોગભોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરતિ । યાપિ ચ તસ્ય તત્ર બાહ્યાભ્યન્ત-
 રિકાં પરિપદ્ ભવતિ, સાઽપિ ચ સ્વલુ તમ્ આદ્રિપતે પરિજાનાતિ મહાર્હેણ આસ-
 નેન ઉપનિમન્ત્રયતિ । ભાષામપિ ચ તસ્ય ભાષમાણસ્ય યાવત્ ચત્વારઃ પશ્ચ વા
 દેવા અનુક્તા એવ અશ્વુત્તિષ્ઠન્તિં વહુ દેવ । ભાષતામ્, વહુ દેવ । ભાષતામ્ ॥

ટીકા—‘માઈળં’ ઇત્યાદિ—

માયાત્રી સાધુઃ માયાં કૃત્વા આલોચિતપ્રતિક્રાન્તઃ સન્ કાલનાસે કાલં
 કૃત્વા અન્યતમેષુ=સૌધર્માદ્યન્યતમેષુ દેવલોકેષુ=દેવેષુ દેવત્વેન ઉપપત્તા ભવતિ,

इस प्रकार अनालोचित एवं अप्रतिक्रान्त मायावीके इहलोकमें परलोकमें, एवं आयतिमें गहिंता कहकर अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं—कि जो साधु आलोचित एवं प्रतिक्रान्त होता है, उसका उपपात कैसा होता है ? “माईणं मायं कर्दु आलोह्यपडिक्कते” इत्यादि।

टीकार्थ—मायावी साधु मायाको करके जब आलोचना एवं प्रतिक्रमण कर अतिचार रहित हो जाता है—और काल मासमें काल करता है, तो वह सौधर्म आदि देवलोकोंमेंसे किसी एक देवलोकमें देवरूपसे उत्पन्न हो जाता है—जैसे—वह जब उन देवलोकोंमें जिस किसी देवलोकमें

આ પ્રકારે અનાલોચિત અને અપ્રતિક્રાન્ત માયાવીના આલોક, પરલોક અને આયતિમાં ગહિંતાનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે પોતાના અતિચારોની આલોચના અને પ્રતિક્રમણ કરનારે સાધુને ઉપપાત કેવો હોય છે—

“માઈળં માયં કર્દુ આલોહ્યપડિક્કતે” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—માયાવી સાધુ માયા કરીને આલોચના અને પ્રતિક્રમણ દ્વારા જો અતિ-ચારોની શુદ્ધિ કરી લે છે અને આ રીતે આલોચિત અને પ્રતિક્રાન્ત થઈને કાળને અવસર આવતા કાળધર્મ પામી જાય છે, તો સૌધર્મ આદિ દેવ-લોકોમાં દેવની પદ્ધતિ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. તે-જે કોઈ દેવલોકમાં ઉત્પન્ન

કેષુ દેવેષુ સ ઉપવચતે ? इत्याह-तद्यथा-महर्द्धिकेषु यावत् चिरस्थितिकेषु । महर्द्धिकादिविरस्थितिकान्तानां शब्दानामर्था अत्रैव सूत्रे उक्ताः । स आलोचित-
प्रतिक्रान्तः साधुः खलु तत्र=महर्द्धिकादि चिरस्थितिकान्तदेवेषु देवो भवति ।
कीदृशो देवोः भवति ? इत्याह-‘ महर्द्धि’ इत्यादि । स देवस्तत्र महर्द्धिको
यावत् चिरस्थितिको भवति । तथा-स देवस्तत्र-हारविराजितवक्षाः-हारेण विरा-
जितं वक्षः=उरो यस्य स तथा-हार सुशोभितवक्षस्थलः, कटकत्रुटितस्तम्भितभुजः-
कटकानि=तलयाः, त्रुटितानि=बाह्यभरणविशेषाः, तैः स्तम्भितौ=स्तम्भीभूतौ
भुजौ यस्य स तथा-वल्यत्रुटितसुशोभितबाहुरित्यर्थः । तथा-अङ्गदकुण्डलमृष्टग-
ण्डतलकर्णपीठधारी-अङ्गदे कुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठे च धरति यः स तथा-
इति विग्रहः । तत्र-अङ्गदे=केयूरे-बाहुभूषणविशेषौ, कुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठे-
मृष्टे=मृष्टे गण्डतले=कपोलतले याभ्यां ते मृष्टगण्डतले, कर्णौ पीठे=आसने ययोस्ते

ઉત્પન્ન હોતા હે, તો મહર્દ્ધિક દેવોમેં યાવત્ ચિરસ્થિતિક દેવોમેં ઉત્પન્ન
હોતા હે, મહર્દ્ધિક પદસે લેકર ચિરસ્થિતિક તકકે પદોંકા અર્થ ઇસી
સૂત્રમેં પહિલે પ્રકટ કર દિયા હે, મહર્દ્ધિક યાવત્ ચિરસ્થિતિક દેવોમેં
દેવ હુઆ ખી વહ માયાવી સાધુ એસા વૈસા દેવ નહીં હોતા હે-કિન્તુ
“ હારવિરાજિતવક્ષાઃ ” વહ એસા દેવ હોતા હે, કિ જિસકા વક્ષસ્થલ
હારસે સુશોભિત હોતા રહતા હે, દોનોં ભુજાઈ જિસકી-વલયોંસે એવં
ત્રુટિતોંસે-આભરણ વિશેષોંસે-સુશોભિત હોતી રહતી હૈં, બાહુઓંકે
ભૂષણ વિશેષરૂપ કેયૂરોંકો એવં કપોલતલોંકો ઘર્ષિત કરનેવાલે કાનમેં
ધારણ કિયે કુણ્ડલોંકો જો ધારણ કિયે રહતા હે, અથવા-જો કેયૂરોંકો
કુણ્ડલોંકો, ચિકને કપોલતલોંકો એવં કર્ણપીઠોંકો-કાનકે આભરણ
વિશેષોંકો-ધારણ કિયે હુઈ રહતા હે, યહાં પ્રથમ વિગ્રહમેં એસા કહા

થાય છે ત્યાં કોઈ સામાન્ય દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થતો નથી, પરંતુ મહર્દ્ધિક
મહાદ્યુતિક આદિ વિશેષભૂતી યુક્ત ચિરસ્થિતિક દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. મહ
ર્દ્ધિકથી લઇને ચિરસ્થિતિક સુધીના પદોનો અર્થ આ સૂત્રમાં જ આગળ
સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. “ હારવિરાજિતવક્ષાઃ ” દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થયેલા
તેનું વક્ષસ્થલ હારથી સુશોભિત રહે છે, તેની બન્ને ભુજાઓ ઠડાં અને ત્રુટિ-
તોથી (આભરણ વિશેષોથી) વિભૂષિત હોય છે, બાહુઓના ભૂષણ વિશેષ રૂપ
કેયૂરોને તે ધારણ કરે છે, કપોલતલો સાથે ઘસાતાં કુંડલોને તેણે બન્ને ઠણીમાં
ધારણ કરેલા હોય છે. અથવા-તે દેવ કેયૂરોને, કુંડલોને સુલાયમ કપોલતલોને
અને ઠણીપિંડોને-કાનના આભરણ વિશેષોને ધારણ કરે છે.

કર્ણપીઠે, મૃદ્ગગ્ઢતલે ચ તે કર્ણપીઠે ચ તે કુણ્ડલે ચેતિ તથા, અત્ર કુણ્ડલ-
શબ્દસ્ય પૂર્વનિપાત આર્ષત્વાત્ । યદ્વા-ગ્ઢતલે ચ કર્ણપીઠે ચ ગ્ઢતલકર્ણપી-
ઠાનિ, કુણ્ડલેન મૃદ્ગાનિ=મૃદ્ગાનિ ચ યાનિ ગ્ઢતલકર્ણપીઠાનિ તાનિ કુણ્ડલ-
મૃદ્ગગ્ઢતલકર્ણપીઠાનીતિ । અથવા-અહ્નદે=કેયૂરે, કુણ્ડલે, મૃદ્ગગ્ઢતલે=ચિ-
ક્કણકપોલતલે, કર્ણપીઠે=કર્ણાભરણવિશેષૌ ચ ધરતિ યઃ સ તથેતિ । અત્ર પ્રથમ-
વિગ્રહે-કેયૂરવાન્ કપોલઘર્ષકકર્ણસ્થિતકુણ્ડલવાંશ્ચેત્યર્થઃ । દ્વિતીયે-કેયૂરવા
કુણ્ડલમૃદ્ગકપોલકર્ણવાંશ્ચેત્યર્થઃ તૃતીયે-કેયૂરવાન્ કુણ્ડલવાન્ ચિક્કણકપોલ
વાન્ કર્ણાભરણવાંશ્ચેત્યર્થઃ । તથા-વિચિત્રહસ્તાભરણઃ=વિચિત્રાણિ=અનેકવિ-
ધાનિ હસ્તાભરણાનિ=મુદ્રિકાદીનિ યસ્ય સ તથા-પરિધૃતવિવિધમુદ્રિકાદિરૂપ-
હસ્તાભરણંત્યર્થઃ । તથા-વિવિધવસ્ત્રાભરણઃ-વિવિત્રાણિ વસ્ત્રાણિ આભરણાનિ ચ
યસ્ય સ તથા-વિવિધવસ્ત્રવાન્ વિવિધાભરણવાંશ્ચેત્યર્થઃ । યદ્વા-વિચિત્રાણિ વસ્ત્ર-
રૂપાણ્યાભરણાનિ યસ્ય સ તથા વિવિધવસ્ત્રધારીત્યર્થઃ । અથવા-'વિચિત્રાવસ્થા-
ભરણાનિ' इतिच्छाया । વિચિત્રાણિ અવસ્થાભરણાનિ=અવસ્થોચિતાનિ ભૂષણાનિ

है कि वह देव केयूरवाला होता है, कपोलोंको घर्षण करनेवाले कर्ण-
स्थित कुण्डलवाला होता है, द्वितीय विग्रहमें ऐसा कहा गया है, कि
वह देव केयूरवाला होता है, और कुण्डलसे मृष्ट कपोलोंवाला और
कानोंवाला होता है, तथा-तृतीय विग्रहमें ऐसा कहा गया है कि वह
देव केयूरवाला होता है, कुण्डलवाला होता है, चिकने कपोलोंवाला
होता है, और कर्णाभरणवाला होता है, विविध मुद्रिका आदि रूप
हस्ताभरणोंको वह पहिरे रहता है, विविध वस्त्रोंको एवं आभरणोंको
वह धारण किये रहता है, अथवा-विविध वस्त्ररूप आभरणोंको वह
पहिरे रहता है, अथवा-अवस्थानुरूप विविध आभूषणोंको वह धारण

અહીં પહેલા વિગ્રહમાં એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે તે દેવ કેયૂરવાળો
હોય છે અને કપોલ પ્રદેશની સાથે ઘર્ષિત થનારા કણ્ઠકુંડળોવાળો હોય છે,
બીજા વિગ્રહમાં એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે તે દેવ કેયૂરવાળો હોય છે, અને
કુંડળો વડે મૃદ્ગ કપોલોવાળો હોય છે. ત્રીજા વિગ્રહમાં એવું કહેવામાં આવ્યું
છે કે તે દેવ કેયૂરવાળો હોય છે, કુંડળોવાળો હોય છે, સુલાયમ કપોલોવાળો
હોય છે. અને કાનના આભૂષણો વાળો હોય છે. વિવિધ મુદ્રિકા આદિ રૂપ હસ્તાભ-
રણોને તે ધારણ કરનારો હોય છે અને વિવિધ વસ્ત્રોને તથા આભરણોને
તે ધારણ કરનારો હોય છે, વિવિધ વસ્ત્રરૂપ આભરણોને તે પહેરતો
હોય છે. અથવા પોતાની અવસ્થાને અનુરૂપ વિવિધ આભૂષણોને
તે ધારણ કરતો હોય છે, વિવિધ માલાઓ જે તેના મુકુટરૂપ હોય છે અથવા

યસ્ય સ તથા, અવસ્થાનુરૂપવિવિધાભૂષણધારક इत्यर्थः । तथा-विचित्रमाला-
 मौलिः-विचित्रा माला=पुष्पमाला मौलिः=मुकुटं च यस्य स तथा, यद्वा-विचित्र-
 मालानां मौलिः=शेखरः शिरोभूषणं यस्य स तथा, अथवा-विचित्रमाला मौली=
 शिरसि यस्य स तथेति । तथा-कल्याणकपवरवस्त्रपरिहितः-कल्याणकानि=
 मङ्गल्यानि वस्त्राणि परिहितानि=परिधृतानि येन स तथा, अथवा-कल्याणकव-
 वस्त्राणि=माङ्गलिकवस्त्राणि परिहित=परिधृतः, परिधृतोत्तमवस्त्र इत्यर्थः । तथा-
 कल्याणकपवरगन्धमाल्यानुलेपन धरः, तत्र-गन्धः=गन्धद्रव्यं, मालयं=माला, अनु-
 लेपनं=चन्दनादिविलेपनं, एतेषां द्वन्द्वे गन्धमाल्यानुलेपनानि, कल्याणकानि=
 मङ्गल्यानि प्रवराणि=श्रेष्ठानि च यानि गन्धमाल्यानुलेपनानि तेषां धरः=धारकः,
 मङ्गलावहश्रेष्ठगन्धमाल्यानुलेपनधारीत्यर्थः । तथा-भास्वरशरीरः=देदीप्यमान-
 देहः, प्रभम्बवनमालाधरः-प्रभम्बा=ऋम्बायमाना दीर्घा या वनमाला=माल्यविशेष-
 रूपाभरणं, तस्या धरः=धारकश्च भवति । एवंविधः स आलोचितप्रतिक्रान्त-
 साधुजीवो दिव्येन-दिविभवेन-स्वर्गीयेण गन्धेन, दिव्येन रसेन=रसेनेव रसेन
 अनुरागेणेत्यर्थः, दिव्येन स्पर्शेन, दिव्येन संघातेन=वज्रशृङ्गभनाराचात्मकेन संहन-
 नेन, दिव्येन संस्थानेन समचतुरस्रात्मकेन, दिव्यया ऋद्धया=स्वर्गसम्बन्धिन्या

ક્રિયે રહતા હૈ, વિવિધ માલાઈ હી ડસકી સુકૂટ રૂપ હોતી હૈ, અથવા
 અનેક પ્રકારકી માલાઓંકા ઘના હુઆ ડસકા મૌલિ-શિરોભૂષણ હોતા
 હૈ । અથવા ડસકે મસ્તક પર અનેક પ્રકારકી માલાઈ સજી રહતી હૈ ।
 વહ સદા માંગલિક વસ્ત્ર પહિરે રહતા હૈ, ડસકે શરીર પર સદા સુગન્ધ
 માલાઈ ઇંધં ચન્દનાદિ સુગન્ધિત દ્રવ્યોંકા વિલેપન લગા રહતા હૈ, ડસકા
 શરીર દેદીપ્યમાન રહતા હૈ । વહ લમ્બી માલ્ય વિશેષ રૂપ વનમાલાકો
 ધારક હોતા હૈ, ઇસા વહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત સાધુજીવ સ્વર્ગીય
 ગન્ધસે, સ્વર્ગીય રસસે-અનુરાગ રસસે-દિવ્ય સ્પર્શસે દિવ્ય સંઘાતસે
 વજ્રશૃંગભનારાચાત્મક સંહનનસે-દિવ્ય સમચતુરસ્ર સંસ્થાનસે, સ્વર્ગીય

અનેક માલાઓમાંથી નિર્મિત થયેલું તેનું શિરોભૂષણ હોય છે, અથવા તેના
 મસ્તક પર અનેક પ્રકારની માલાઓ વિરાજતી હોય છે. તે સદા માંગલિક વસ્ત્રો
 ધારણ કરે છે, તેના શરીર પર સુગન્ધયુક્ત માલાઓ શોભતી હોય છે, અને ચન્દનાદિ
 સુગન્ધિત દ્રવ્યોનું વિલેપન થતું હોય છે. તે કારણે તેનું શરીર દેદીપ્યમાન
 રહે છે. તે લાંબી લાંબી વનમાલાઓને ધારણ કરે છે એવો તે આલોચિત,
 પ્રતિક્રાન્ત સાધુનો દેવપર્યાયમાં ઉત્પન્ન થયેલો જીવ, સ્વર્ગીય ગન્ધ વડે, સ્વર્ગીય
 રસ વડે (અનુરાગ રસ વડે), દિવ્ય સ્પર્શ વડે, વજ્રશૃંગભનારાચાત્મક દિવ્ય
 સંહનન વડે, દિવ્ય સમચતુરસ્ર સંસ્થાન વડે, સ્વર્ગીય વિમાનાદિ રૂપ ઋદ્ધિ વડે,

વિમાનાદિ સમ્પત્તયા, દિવ્યયા ઘૃત્યા=શારીરિકશોભયા, દિવ્યયા પ્રભયા=અલંકાર-
કાન્ત્યા, દિવ્યયા છાયા=પ્રતિવિમ્બેન, દિવ્યયા અર્ચ્યા=શરીરનિર્ગતતેજોજ્વા-
લયા, દિવ્યેન તેજસા=શરીરકાન્ત્યા, દિવ્યયા લેશ્યા=અન્તઃપરિણામિન્યા
શુક્લાદિ રૂપયા દશ દિશઃ ઉદ્યોતયન્=સ્થૂલવસ્તુદર્શનતઃ પ્રકાશયન્, પ્રભાસ-
યન્=સૂક્ષ્મવસ્તુપદર્શનતથ પ્રકાશયન્, અથા-સમાનાર્થમપિ શબ્દદ્વયમુત્કર્ષાતિશય-
ઘોતનાર્થમુક્તમ્, તતથ-અતિશયેન પ્રકાશયન્, તથા-મહતા-વિશાલેન અહતના-
ટયગીતવાદિતતન્ત્રી તલ તાલત્રુટિત ઘન મૃદંગ પટુ પ્રવાદિતરવેણ-અહતઃ = અવિચ્છિ-
ન્નો યો નાટ્યગીતસ્ય=નાટ્યેન=નૃત્યેન યુક્તં યદ ગીતં તસ્ય, તથા-વાદિતતન્ત્રી-
તલ તાલત્રુટિતાનાં-વાદિતાનિ=શબ્દિતાનિ યાનિ તન્ત્રી=વીણા ચ તલૌ=હસ્તતલૌ
ચ તાલાઃ=કાંસિકાશ્ચ, ત્રુટિતાનિ ચ=તૂર્યાણિ પટહાદીનિ વા તાનિ તથોક્તાનિ

વિમાનાદિરૂપ ઋદ્ધિસે, દિવ્ય ઘૃતિસે, શારીરિક શોભાસે, દિવ્ય અલં-
કારોંકી કાન્તિરૂપ પ્રભાસે, દિવ્ય પ્રતિવિમ્બસે, દિવ્ય શરીર નિર્ગત
તેજોજ્વાલાસે, દિવ્ય શરીર કાન્તિસે, અન્તઃપરિણામિની શુક્લાદિ
રૂપ દિવ્ય લેશ્યાસે દશ દિશાઓંકો પ્રકાશિત કરતા હુઆ એવં અતિશય
રૂપસે પ્રભાસિત કરતાહુઆ, વિશાલ એસે અહત-અવિચ્છિન્ન નાટ્યગીત
વાદિત્ર તન્ત્રી તાલ ત્રુટિત ઘન મૃદંગકે પટુ પ્રવાદિત રવપૂર્વક દિવ્ય ભોગ-
ભોગોંકો ભોગતા રહતાહૈ. અહત શબ્દકા અર્થ અવિચ્છિન્ન હૈ, ઓર યહ
રવકા વિશેષણ હૈ, નાટ્યગીત શબ્દકા અર્થહૈ નૃત્ય યુક્ત, ગીત, વાદિત્ર
શબ્દકા અર્થ વજોયે ગયે, તન્ત્રી શબ્દકા અર્થહૈ વીણા, તલ શબ્દકા અર્થહૈ
હસ્તતાલ, તાલ શબ્દકા અર્થ હૈ કાંસે આદિકી આવાજ, ત્રુટિત શબ્દકા

દિવ્ય ઘૃતિ (શારીરિક શોભા) વડે, દિવ્ય અલંકારોની કાન્તિ રૂપ પ્રભાવડે,
દિવ્ય પ્રતિબિમ્બ વડે, શરીર નિર્ગત દિવ્ય તેજોજ્વાલા વડે, દિવ્ય શરીર-
કાન્તિ વડે, અને અન્તઃપરિણામિની શુક્લાદિ રૂપ દિવ્ય લેશ્યા વડે હસે
દિશાઓંને પ્રકાશિત કરતો થકો અને અતિશય રૂપથી પ્રભાસિત કરતો થકો.
દિવ્ય નાટ્ય ગીતોનો તથા નિયુષ્ઠ કલાકારો દ્વારા બળવવામાં આવતા તંત્રી,
તાલ ત્રુટિત, ઘન મૃદંગ આદિ વાદ્યોના મધુર ધ્વનિની સાથે દિવ્ય ભોગોપ-
ભોગોનો ઉપભોગ કરતો રહે છે.

અહત એટલે અવિચ્છિન્ન નાટ્યગીત અને નૃત્ય યુક્ત ગીત, વાદિત
એટલે કે વગાડવામાં આવતાં. વાદ્યો તંત્રી પદ વીણાના અર્થમાં, તલ પદ
હસ્ત તાલના અર્થમાં તાલ શબ્દ કાંસા આદિના અવાજના અર્થમાં ત્રુટિત
શબ્દ હાલ વિગેરે વાદ્યોના અર્થમાં અને ઘનમૃદંગ પદ પડમ આદિ

તેષામ્, તથા-ઘનમૃદંગપટુપ્રવાદિતસ્ય = ઘનઃ=ગમ્મીરધ્વનિકર્તૃત્વસાદૃશ્યેન
 મેઘતુલ્યો યો મૃદંગઃ સ ઘનમૃદંગઃ, પટુના=વાદનચતુરેણ પુરુષેણ પ્રવાદિતો યો
 ઘનમૃદંગઃ સ તથા, અત્ર વિશેષણસ્ય પરિણાત આર્પણત્વાત્, તસ્ય તથાભૂતસ્ત ચ
 યો સ્વઃ=શબ્દસ્તેન-નાટ્યગીતાદીનામત્રિચ્છિન્ન મહાસ્વરેણ હેતુભૂતેન દિવ્યાન્=
 સ્વર્ગીયાન્ ભોગભોગાન્=પ્રચુરાન્ શબ્દાદિકાન્ ભોગાન્, ભોગાર્હાન્ વા શબ્દા-
 દિકાન્ ભોગાન્ શુક્ત્તાનો વિહરતિ । યાઽપિ ચ તસ્ય વાહ્યાભ્યન્તરિકા પરિષદ
 ભવતિ, સાઽપિ ચ તમ્ આદ્રિયતે, પરિજાનાતિ, મહાર્હેણ આસનેન ચ તમ્ ઉપનિ-
 મન્ત્રયતિ । તથા-ઋચિદ્ દેવસમાયાં કિંચિદ્વિષયાં ભાષામપિ ભાષમાણસ્ય પ્રજ્ઞા-
 પ્યતઃ પ્રરૂપયતશ્ચ તસ્ય ભાષણપ્રવર્તનાય ચત્તારઃ પશ્ચ વા દેવા અનુક્તાઃ=કેના-

અર્થ છે પટલ આદિ વાદિત્ર, ઘનમૃદંગકા અર્થ છે વાદલોંકે જૈસી આવાજ
 કરનેવાલા મૃદંગ તબલા, ઓર પટુપ્રવાદિત શબ્દકા અર્થ છે, વાદન
 ક્રિયામેં ચતુર પુરુષ દ્વારા વજાયા ગયા । ભોગભોગઃશબ્દકા અર્થ છે, પ્રચુર
 શબ્દાદિક ભોગ અથવા ભોગકે યોગ્ય શબ્દાદિક ભોગ । જો હસ દેવકી
 વાહ્ય પરિષદ એવં આભ્યન્તરિક પરિષદ છે, વહ મી હસકા આદર કરતી
 છે, હસે અપના સ્વામીરુપસે સ્વીકાર કરતી છે, ઓર મહાર્હ આસનસે
 હસે ઉપનિમન્ત્રિત કરતી છે, અર્થાત્ ઘડે ૨ દેવોંકે વૈઠને યોગ્ય આસન
 પર હસે બિઠાતી છે, તથા કિસી મી દેવકી સમામેં જય વહ કિસી
 વિષયકો લેકર ભાષણ કરતા છે, યાવત્-કિસી વિષયકી પ્રજ્ઞાપના
 કરતા છે, પ્રરૂપણા કરતા છે-તો વિના કહે હી ૪-૫ દેવ યાદે હોકર

વાહિત્રોના અર્થમાં વપરાયેલ છે. વાહોની જેવી ગજના થાય છે, એવો
 અવાજ કરનારાં મૃદંગ, તબલાં, આદિને 'પણ ઘનમૃદંગ કહે છે. "પટુ
 પ્રવાદિત" એટલે વાહો વગાડવામાં નિપુણ પુરુષો દ્વારા વગાડવામાં આવતાં.
 ભોગ પદ પ્રચુર શબ્દાદિક ભોગોના અર્થમાં અહીં પ્રયુક્ત થયેલ છે.

આ દેવની જે-બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિષદ હોય છે, તે પણ તેનો
 આદર કરે છે, તેને પોતાના સ્વામી રૂપે સ્વીકારે છે અને મોટા મોટા દેવોંને
 બેસતા થે.ગ્ય આસન પર તેને બેસાડે છે તથા જ્યારે તે દેવોંની કોઈ પણ
 સભામાં કોઈ પણ વિષયને અતુલક્ષીને સામાન્ય રૂપે કહે છે, વિશેષ રૂપે કહે
 છે, યુક્તિપ્રયુક્તિઓ દ્વારા પોતાના વિષયની પ્રજ્ઞાપના કરે છે અને પ્રરૂપણા
 કરે છે, ત્યારે કોઈની પણ સૂચના થયા વિના ચાર પાંચ દેવોં બિલા થઈને

સુધાંટોકા સ્થા ૭ ૮ સૂ. ૧૦ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત માયાવિનંત્રાય તે પ્રગલ્ભનમ્ ૫૩

ડપ્યપ્રેરિતા એવ અભ્યુત્પિષ્ઠન્તિ=ઊર્ધ્વી ભવન્તિ, વદન્તિ ચ-હે દેવ ! વહુ ભાષતાં
વહુ ભાષતામ્ અભિમતમિદં ભવદીયં ભાષણમિતિ । સૂ. ૯ ॥

ઇત્યમાલોચિત પ્રતિક્રાન્ત સાધુ જીવસ્ય ઉપપાતાગર્હિત ત્વમુક્તમ્ । અથ તસ્ય
આયતિઃ=ઉત્પત્તિઃ કીદશી ભવતીતિ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્—સે ણં તઓ દેવલોગાઓ આડકલ્લણ ભવંકલ્લણં
ઠિડ્કલ્લણં અણંતરં ચયં ચડિત્તા ઇહેવ માણુસસાં ભવે જાઈં
ઈમાઈં કુલાઈં ભવંતિ અઢાઈં જાવ વહુજણસસ અપરિભૂયાઈં, તહ-
પગારેસુ કુલેસુ પુમત્તાણ પચ્ચાયાઈ । સે ણં તત્થ પુમે ભવઈ--
સુરૂવે સુવન્ને સુગંધે સુરસે સુફાસે ઇદ્દે કંતે જાવ મળામે અહી-
ણસસરે જાવ મળામસસરે આણ્જવયણપચ્ચાયાણ । જાવિ ય સે
તત્થ બાહિરબંતરિયા પરિસા ભવઈ, સા વિ ય ણં આઢાઈ જાવ
વહું અજ્જઉત્તે ! ભાસડ-વહું અજ્જઉત્તે ! ભાસડ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

છાયા—સ સ્વલ્લુ તતો દેવલોકાત્ આયુઃક્ષયેણ ભવક્ષયેણ સ્થિતિક્ષયેણ અનં-
ન્તરં ચયં ત્યક્ત્વા ઇહૈવ માનુષ્યકે ભવે યાનિ ઇમાનિ કુલાનિ ભવન્તિ—આદ્યંચાનિ
યાવદ્ વહુજનસ્ય અપરિભૂતાનિ, તથાપ્રકારેષુ કુલેષુ પુસ્તયા પ્રત્યાયાતિ । સ સ્વલ્લુ
તત્ર પુમાન્ ભવતિ—સુરૂપઃ સુવર્ણઃ સુગન્ધઃ સુરસઃ સુસ્પર્શઃ ઇષ્ટઃ કાન્તો યાવદ્
મન આમઃ, અહીનસ્વરો યાવદ્ મન આમસ્વરઃ આદેયવચનપ્રત્યાયાતઃ । યાડપિ
ચ તસ્ય તત્ર વાહ્યાભ્યન્તરિકા પરિવદ્ ભવતિ, સાડપિ ચ તમ્ આદિયંતે યાવદ્
વહુ આર્યપુત્ર ! ભાષતામ્—વહુ આર્યપુત્ર ! ભાષતામ્ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

એસા કહતે હૈં કિ હે દેવ ! આપ ઓર કહિયે ઓર કહિયે—આપકા
યહ કથન સબકો વહુતહી અધિક રુચિકર હો રહા હૈ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

હસ પ્રકાર આલોચિત એવં પ્રતિક્રાન્ત સાધુ જીવકે ઉપપાતકો
અગર્હિત અથ સૂત્રકાર યહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ હસકી આયતિ—ઉત્પત્તિ

એવી વિનંતિ કરે છે કે “હજી આપ વધારે બોલો, થોડા વધુ સમય સુધી
આપનું ભાષણ ચાલુ રાખો અમને આપની વાત ઘણી જ રુચિકર લાગે છે.

અ લોચિત અને પ્રતિક્રાન્ત સાધુનો ઉપપાત અવગર્હિત હોય છે, એ
વાતનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે તેની આયતિ

ટીકા—‘ સે ણં તઓ ’ ઇત્યાદિ—

સ આલોચિતપ્રતિક્રાન્ત સાધુજીવઃ સ્વલુ તતો દેવલોકાત્ આયુઃ—સ્થિતિભવ-
ક્ષયેણ અનન્તરમ્=આયુઃ સ્થિતિભવક્ષયસમન્તરમેવ ચયં ત્યક્ત્વા ફૈવ=અસ્મિ-
ન્નેવ માનુષ્યકે ભવે=મનુષ્યલોકે યાનિ હમાનિ વક્ષ્યમાણાનિ કુલાનિ ભવન્તિ,
તથાપ્રકારેષુ કુલેષુ પુસ્તયા પ્રત્યાયાતિ=ઉત્પન્નતે । કાનિ તાનિ કુલાનિ ?
ઇત્યાહ—‘ અહ્વાઈ ’ ઇત્યાદિ । તત્ર-આઢ્યાનિ=સમૃદ્ધાનિ, યાવત્કરણાત્—
“ દિત્તાઈ વિત્થિન્નવિઝલભવણસયણાસણજાણવાહ્ણાઈં વહુધળવહુજાયરૂવ-
રયયાઈં આઓગપઓગસંપઉત્તાઈં વિચ્છહિયપરમત્તપાણાઈં વહુદાસીદાસગોમ-
હિસગવેલગપ્પમૂયાઈં ” છાયા—દીપ્તાનિ વિસ્તીર્ણવિપુલભવનશયનાસનયાનવા-
હનાનિ વહુધનવહુજાતરૂપરજતાનિ આયોગપ્રયોગસમ્પ્રયુક્તાનિ વિચ્છર્દિતપ્રચુર-
મત્તપાનાનિ વહુદાસીદાસગોમહિપગવેલરૂપમૂતાનિ ” ઇતિ પદાનિ સંગૃહ્યન્તે ।

કેસી હોતી હૈ—

“ સે ણં તઓ દેવલોગાઓ ” ઇત્યાદિ । સૂત્ર ૪ ॥

ટીકાર્થ—વહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત સાધુ જીવ ઉસ દેવલોકસે
આયુકે ક્ષયકે, સ્થિતિકે ક્ષયકે એવં ભવકે દેવસંબંધી ક્ષયકે અનન્તરહી
દેવશરીરકો છોડકર હસી મનુષ્ય ભવમેં જો યે કુલહેં—ઉન કુલોમેં પુરુષ
રૂપસે ઉત્પન્ન હોના હૈ, ઉન કુલોંકે નામ હસ પ્રકારસે હૈ—જૈસે આઢ્ય
સમૃદ્ધ યાવત્ વહુજન દ્વારામી અપરિભૂત યહાં—યાવત્ શબ્દસે—“ દિત્તાઈં
વિત્થિન્નવિઝલભવણસયણાસણજાણવાહ્ણાઈં, વહુધળવહુજાયરૂપ
રયયાઈં આઓગપઓગસંપઉત્તાઈં, વિચ્છહિયપરમત્તપાણાઈં, વહુ
દાસીદાસગોમહિસગવેલગપ્પમૂયાઈં ” હસ પાઠકા સંગ્રહ હુઆ

પણ અગર્હિત જ હેય છે—“ સે ણં તઓ દેવલોગાઓ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—તે આલોચિત અને પ્રતિક્રાન્ત સાધુ કે જે સૌધર્માદિ કોઈ એક દેવ-
લોકમાં સંબંધી તેના આયુનો ક્ષય કરીને સ્થિતિનો ક્ષય કરીને અને ભવનો
ક્ષય કરીને, દેવલોકમાંથી અધીને નીચે દર્શાવેલાં કુળોમાંથી કોઈ પણ એક
ઉત્તમ કુળમાં મનુષ્ય રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે

અહીં અઢ્ય (સમૃદ્ધ) થી લઈને બહુજન દ્વારા પણ અપરિભૂત કુળ
પર્યન્તના કુળો ગૃહીત થયાં છે. અહીં ‘પર્યન્ત’ના પદ દ્વારા નીચેનાં સૂત્રપાઠને
અહણ કરવાનો છે—

“ દિત્તાઈ વિત્થિન્નવિઝલભવણસયણાસણજાણવાહ્ણાઈં, વહુધળવહુ
જાયરૂવરયયાઈં આઓગપઓગસંપઉત્તાઈં, વિચ્છહિયપરમત્તપાણાઈં, વહુ-
દાસીદાસગોમહિસ-ગવેલગપ્પમૂયાઈં ” અ સૂત્રપાઠનો અર્થ નીચે પ્રમાણે થાય છે—

તત્ર-દીપ્તાનિ=લોકપ્રસિદ્ધાનિ, 'દસાનિ' इति च्छायापक्षे-दर्पवन्ति=धर्मगौरव
सम्पन्नानि, तथा-विस्तीर्णविपुलभवन शयनासनयानवाहनानि विस्तीर्णानि=
विस्तृतानि विपुलानि=प्रचुराणि भवनानि=गृहाणि शयनानि=पर्यङ्कादीनि आस-
नानि=सिंहासनादोनि यानानि=रथादीनि वाहनानि=अश्वादीनि च येषां तानि
तथाभूतानि, तथा-बहुधनबहुजातरूपरजतानि-बहूनि=प्रचुराणि धनानि=
गणिमधरिमादिरूपाणि बहूनि च जातरूपाणि-सुवर्णानि रजतानि=रूप्याणि च
येषां तानि तथोक्तानि, तथा-आयोगप्रयोग संप्रयुक्तानि-आयोगेन=द्विगुणत्रिगु-
णादिलाभेन द्रव्यस्य यः प्रयोगः=अधमर्णेभ्यो दानं तत्र सम्प्रयुक्तानि=व्यापारि-
तानि, तेन वा सम्प्रयुक्तानि=संगतानि यानि तानि तथाभूतानि, तथा-विच्छ-
र्दितप्रचुरभक्तगानानि-विच्छर्दिते=बहुजनभोजनावशिष्टतया विक्षिप्ते प्रचुरे भक्त-
पाने येषु तानि तथोक्तानि, तथा-बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि-
दास्यश्च दासाश्च-दासीदासम्-बहू=प्रचुरं दासीदासं येषु तानि-बहुदासीदासानि,

है, इसका अर्थ इस प्रकारसे है-लोक प्रसिद्ध जो कुल होते हैं वे दस-
कुल हैं-अथवा-धर्मके गौरवसे संपन्न जो कुल हैं वे दसकुल हैं, उन
कुलोंमें तथा-बड़े २ अनेक गृह अनेक पर्यङ्क आदि, सिंहासन आदि,
रथादि यान, अश्वादि वाहनवाले जो कुल हैं, उन कुलोंमें, तथा-प्रचुर
गणिम, धरिम, आदिरूप धनवाले प्रचुर सुवर्णवाले प्रचुर रजतवाले,
तथा आयोग प्रयोगको लेकर द्रव्यको व्यापारित करनेवाले, तथा विच्छ-
र्दित प्रचुर-भक्तपानवाले, तथा-बहु दासी, दास गोमहिष, एवं गवेलक
आदिवाले, कुलोंमें जन्म लेताहै, द्विगुण त्रिगुण आदिके लाभसे द्रव्यको
कर्जके रूपमें देना इसका नाम आयोग है, जिन घरोंमें अनेक जन
भोजन करते हैं और भोजन करनेके बाद अधिक प्रमाणमें बचे ऐसा
अन्नको यहां "विच्छर्दितप्रचुरभक्तपान" शब्दसे प्रकट किये गयेहैं, जिन

लोक प्रसिद्ध જે કુળો હોય છે તેને દસકુળ કહે છે અથવા ધર્મના ગૌરવ સંપન્નથી
જે કુળો હોય છે, તેમને દસકુળો કહે છે. એવા દસકુળમાં તે પુત્ર રૂપે ઉત્પન્ન થાય
છે. મોટાં મોટાં અનેક ઘરો, ખૂરસી, પદાંગ આદિ આસનો તથા સિંહાસનો,
સ્થાદિ યાન, અશ્વાદિ વાહનો, ઇત્યાદિથી યુક્ત જે કુળો હોય છે, તેમાં, તથા
પ્રચુર ગણિમ, ધરિમ અ.દિ રૂપ ધનસંપત્તિવાળાં, પ્રચુર સુવર્ણવાળાં, પ્રચુર
રજત (ચાંદી) વાળાં, આયોગ પ્રયોગ આદિની અપેક્ષાએ દ્રવ્યને વ્યાપારિત
કરનારા (ધીરધાર કરનારા), તથા વિચ્છર્દિત વિપુલ આહાર પાનવાળાં, તથા
બહુ દાસદાસીથી યુક્ત, ગાયો, ભેંસો, ખરેં, ઘેટા આદિથી યુક્ત કુળોમાં

તથા-ગાવો મહિષ્યો ગવેલઠાઃ=મેષાશ્ચ પ્રભૂતાઃ=પ્રચુરા યેષુ તાનિ-ગોમહિષગવે-
લરુપ્રભૂતાનિ, વહુદાસીદાસાનિ ચ તાનિ ગોમહિષગવેલરુપ્રભૂતાનિ ચેતિ-વહુ
દાસીદાસગોમહિષગવેલરુપ્રભૂતાનિ - પ્રચુરદાસીદાસગોમહિષમેપયુક્તાનીત્યર્થઃ ।
તથા-વહુજનસ્ય=જનસમુદાયસ્ય અપરિભૂતાનિ=પરામવરદિતાનીતિ । एवं વિધાનિ
યાનિ કુલાનિ ભવન્તિ, તેષુ કુલેષુ સ પુસ્તયા પ્રત્યાયાતિ । સ સ્વલ્લ તત્ર=
આદ્યાદિ વિશેષણવિશિષ્ટેષુ કુલેષુ પુમાન્=પુરુષો ભવતિ । સ તત્ર કીદૃશઃ
પુરુષો ભવતિ ? इत्याह-‘ સુરુવે ’ इत्यादि । સુરુપાદિશબ્દાનામર્થાઃ દૂરુપાદિ
વૈપરીત્યેન ભાવનીયાઃ । તત્રોત્પન્નસ્ય ચ તસ્ય યાઽપિ વાહ્યાભ્યન્તરિકા પરિપદ્

કુલોંમેં અનેક દાસીદાસ હોતે હેં એમે કુલોંમેં તથા-જિન કુલોંમેં ગાય,
મેંસ એવં મેષ પ્રચુર માત્રામેં હોતે હેં, એસે કુલોંમેં વે જન્મ લેતે હેં ।
તથા-જો કુલ અનેક જનોં દ્વારા મી પરામૂત નહીં હો સકતે હેં એસે
કુલોંમેં મી વહ પુત્ર રુપસે જન્મ લેના હે । કન્યા રુપસે જન્મ નહીં લેના
હે । પુત્ર રુપસે વહ જન્મ હસ પ્રકારકા હોના હે-જૈસે કિ વહ સુરુપ-
અઞ્છે રુપવાલા હોતા હે, સુકર્ણ હોના હે-અઞ્છે કાનોંવાલા હોતા હે,
સુગન્ધ-સુગન્ધિત શરીરવાલા હોતા હે, સુરસ-સુરસ શરીરવાલા હોતા હે
હે, સુસ્પર્શ-અઞ્છે સ્પર્શ શરીરવાલા હોતા હે, ઇષ્ટ હોતા હે, કાન્ત
હોતા હે, યાવત્ મન આમ હોતા હે, અહીન સ્વરવાલા હોતા હે, યાવત્ મન
આમ સ્વરવાલા હોતા હે, ઓર આદેય વચનવાલા હોતા હે, ઇન સુરુપાદિ

પુત્ર રૂપે તે જન્મ ધારણ કરે છે. એવડો અને ત્રેવડો લાભ થાય એવી રીતે
દ્રવ્યનું ધીરાણ કરતું તેનું નામ આયોગ પ્રયોગ છે. જે ઘરોમાં અનેક માણસો
જન્મે છે અને તેમણે લોજન કરી લીધા બાદ પણ અનેક માણસો જન્મી શકે
એટલું લોજન વધે છે, તે પ્રકારનું કુટુંબ અહીં “ વિચ્છર્દિત
પ્રચુરમક્તપાન ” આ શબ્દો દ્વારા ગૃહીત થયું છે એવાં જ કુટુંબમાં તે પુત્ર
રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે તે કન્યારૂપે જન્મ લેતા નથી.

હવે તે કેવા પુત્રરૂપે જન્મ લે છે, તે વાત પ્રકટ કરવામાં આવે છે—
તે સુરૂપ (ઘણો જ રૂપાળો હોય છે, સુકર્ણ (સુંદર કાનવાળો) હોય છે,
સુગન્ધયુક્ત શરીરવાળો હોય છે, (સુરસ શરીરવાળો) હોય છે, સુસ્પર્શ
(સુંદર સ્પર્શવાળો) હોય છે, ઇષ્ટ હોય છે, કાન્ત હોય છે, પ્રિય હોય
છે, મનોહર હોય છે. મનઆમ હોય છે, અહીનસ્વરવાળો હોય છે ઇષ્ટ-કાન્ત
-પ્રિય-મનોહર અને મનઆમ સ્વરવાળો હોય છે, તથા આદેયવચનવાળો હોય
છે. હરૂપ આદિ શબ્દોનો અર્થ આ સૂત્રમાં આગળ આપ્યોમાં આવેલ છે. અહીં

“લહુયાલ્હાઈયજળણં, અપ્પરનિયત્તિ અજ્જવં સોહી ।

દુક્કરકરણં આઢા, નિસ્સલ્લ ચે વ સોહિ ગુણા ॥ ૧ ॥”

છાયા—લહુનાહ્લાદાદિકજનનમ્ આત્મપરનિયન્તૃતા આર્જવં શોધિઃ ।

દુષ્કરકરણમ્ આદરો નિશ્ચલ્યત્વં ચૈવ શોધિગુણાઃ ॥૧॥ઈતિ ॥ સૂં ૧૦ ॥

યે હિ આલોચનાદિકં કુર્વન્તિ તે સંવરવન્તો ભવન્તિ, અતઃ સંવરં, તદ્વિપ-
ર્યયેનાસંવરં ચ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્—અટ્ટવિહે સંવરે પળ્લણત્તે, તં જહા-સોહંદિય સંવરે ૧
જાવ ફાસિંદિયંસંવરે ૫ મળસંવરે ૬ વહસંવરે ૭ કાયસંવરે ૮।
અટ્ટવિહે અસંવરે પળ્લણત્તે, તં જહા-સોહંદિય અસંવરે ૧ જાવ કાય
અસંવરે ૮ ॥ સૂં ૧૧ ॥

છાયા—અટ્ટવિધઃ સંવરઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—શ્રોત્રેન્દ્રિયસંવરો ૧ યાવત્ સ્પર્શે-
ન્દ્રિયસંવરઃ ૫ મનઃ સંવરઃ ૬ વાકસંવરઃ ૭ કાયસંવરઃ ૮। અટ્ટવિધોઽસંવરઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ,
તથા—શ્રોત્રેન્દ્રિયાસંવરો યાવત્ કાયાસંવરઃ ॥ સૂં ૧૧ ॥

ટીકા—‘અટ્ટવિહે’ ઇત્યાદિ—

સંવરઃ—સંવરણં સંવરઃ, સ દ્રવ્યભાવભેદાદ દ્વિવિધઃ । તત્ર—દ્રવ્યતો જલમધ્ય-

“લહુયાલ્હાઈયજળણં” ઇત્યાદિ ।

લહુતા, આલ્હાદ આદિ જનકતા, આત્મ પરનિયન્તૃતા, આર્જવ,
દુષ્કર કરણતા, આદર પ્રાપ્તિ, એવં નિશ્ચલ્યતા યે સર્વ શોધિ કે
ગુણ હૈં ॥ સૂં ૧૦ ॥

જો આલોચના આદિ કરતે હૈં વે સંવરચાલે હોતે હૈં અતઃ અવ
સૂત્રકાર સંવર ઓર સંવરસે વિપરીત અસંવર નિરૂપણ કરતે હૈં—

“અટ્ટવિહે સંવરે પળ્લણત્તે” ઇત્યાદિ ॥

“લહુયાલ્હાઈય જળણં” ઇત્યાદિ—

લહુતા, આલ્હાદજનકતા, આત્મ નિયંત્રણ, આર્જવ, દુષ્કર કરણતા,
આદર પ્રાપ્તિ, અને નિશ્ચલ્યતા, આ બધાં આલોચના રૂપ વિશુદ્ધિના ગુણો
કહ્યા છે. ॥ સૂ. ૧૦ ॥

જે જીવે આલોચના, પ્રતિક્રમણ આદિ તેઓ સંવરવાળા હોય છે, તેથી
હવે સૂત્રકાર સંવરનું અને તેનાથી વિપરીત એવા અસંવરનું નિરૂપણ કરે છે—

“અટ્ટવિહે સંવરે પળ્લણત્તે” ઇત્યાદિ—

મતનાવાદેરનવરતપ્રવિશજ્જલનાં છિદ્રાણાં તથાવિષદ્રવ્યેણ સ્થગનં સંવરઃ । ભાવ-
તસ્તુ જીવદ્રોણમાસ્રત્કર્મજલનામિન્દ્રિયાદિચ્છિદ્રાણાં સમિત્યાદિના નિરોધનં
સંવરઃ । તત્ર ભાવસંવરઃ શ્રોત્રેન્દ્રિયસંવરાદિભેદેન અષ્ટવિધો વૌચ્યઃ । તદ્વિપરીતોઽ-
સંવરોઽપ્યષ્ટવિધો વિજ્ઞેય ઇતિ ॥ સૂ ૧૧ ॥

અનન્તરં કાયસંવર ઉક્તઃ । તદ્ઘટકઃ કાયસ્તુ અષ્ટસ્પર્શો ભવતીતિ સ્પર્શ-
સ્યાષ્ટવિધત્વમાહ—

મૂલમ્—અટ્ટુ ફાસા પળણત્તા, તં જહા—કવ્વલ્લે ૧ મઝ્ઞ ૨ ગરૂણ
૩ લહુણ ૪ સીણ ૫ ડાસિળી ૬ નિલ્લે ૭ લુલ્લે ૮ ॥ સૂ ૧૨ ॥

ટીકાર્થ—સંવર નામ રોકનેકા હૈ, યહ સંવર દ્રવ્ય સંવર ઓર ભાવ
સંવરકે ભેદસે દો પ્રકારકા હોતા હૈ, જલકે બીચમૈ પતિન નાવમૈ અન-
વરત છિદ્રોસે આનેવાલે પાનીકે રોકનેરૂપે ઉન છિદ્રોકો કિસી દ્રવ્યસે
બંદ કર દેના હસકા નામ દ્રવ્ય સંવર હૈ, તથા જીવ રૂપ નૌકામૈ ઇન્દ્રિ-
યાદિકોં દ્વારા આનેવાલે કર્મોંકે કારણભૂત ઉન ઇન્દ્રિયાદિ દ્વારોંકા
સમિતિ આદિ દ્વારા બંદ કર દેના હસકા નામ ભાવસંવર હૈ । ઇનમૈસે
જો ભાવસંવર હૈ, વહ શ્રોત્રેન્દ્રિયસંવર આદિકે ભેદસે આઠ પ્રકારકા
કહા ગયા હૈ—અસંવર સંવરસે વિપરીત હોતા હૈ—અતઃ અસંવર બી
આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જો હસ પ્રકારસે હૈ—શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંવર
૧, ચક્ષુઇન્દ્રિય અસંવર ૨, ગ્રાણેન્દ્રિય અસંવર ૩, રસનેન્દ્રિય અસંવર ૪,
સ્પર્શનેન્દ્રિય અસંવર ૫, મન અસંવર ૬, વચન અસંવર ૭, ઓર કાય
અસંવર ૮ ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

સંવર એટલે રોકવું તે. સંવરના મુખ્ય બે ભેદ પડે છે—(૧) દ્રવ્યસંવર
અને (૨) ભાવસંવર. પાણીની અંદર તરતી હોડી પડેલા છિદ્ર દ્વારા તેમાં
પ્રવેશતા પાણીને અટકાવવા માટે તે હોડીમાં પડેલા છિદ્રને કોઈ પેણુ દ્રવ્ય
વડે બંધ કરી દેવું તેનું નામ સંવર છે. જીવ રૂપ નૌકામાં ઇન્દ્રિયાદિકો આદિ
દ્વારા આવનારાં કર્મોના કારણભૂત તે ઇન્દ્રિયાદિ દ્વારાને સમિતિ આદિ દ્વારા
બંધ કરી દેવાં, તેનું નામ ભાવસંવર છે. ભાવસંવરના શ્રોત્રેન્દ્રિય સંવર આદિ
આઠ ભેદ પડે છે.

સંવરથી વિપરીત સ્વરૂપવાળો અસંવર હોય છે. તેના પેણુ નીચે પ્રમાણે
આઠ પ્રકાર પડે છે—(૧) શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંવર, (૨) ચક્ષુઇન્દ્રિય અસંવર, (૩)
ગ્રાણેન્દ્રિય અસંવર, (૪) રસનેન્દ્રિય અસંવર, (૫) સ્પર્શેન્દ્રિય અસંવર, (૬)
મન અસંવર (૭) વચન અસંવર અને (૮) કાય અસંવર ॥ સૂ. ૧૧ ॥

છાયા—અષ્ટ સ્પર્શોઃ પ્રજ્ઞાતાઃ, તથા—કર્કશઃ ૧, મૃદુકઃ ૨ ગુરુકઃ ૩ લઘુકઃ ૪ શીતઃ ૫ ઉષ્ણઃ ૬ સ્નિગ્ધઃ ૭ રુક્ષઃ ૮ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

ટીકા—‘ અદૃ કાસા ’ ઇત્યાદિ—

ઘ્યાસ્યા સ્પષ્ટા ॥ સૂ. ૧૨ ॥

સ્પર્શાશ્ચ ઉક્ત સંખ્યકા એવેતિ લોકસ્થિતિરિતિ લોકસ્થિતિમંદ્રવિધત્વેના—

શૂલ્ક—અદૃવિહા લોગદ્વિદ્ પળ્લન્તા, તં જહા-આગાસપર્દ-
ટ્ટિષ વાણ, ૧ વાયપદટ્ટિષ ઉદહી ૨, એવં જહા છઢાળે જાવ
જીવા કમ્મપદટ્ટિયા ૬, અજીવા જીવસંગહિયા ૭ જીવા કમ્મ-
સંગહિયા ૮ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

છાયા—અષ્ટવિધા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞાતા, તથા—આકાશપ્રતિષ્ઠિતો વાતઃ ૧, વાતપ્રતિષ્ઠિતઃ ઉદધિઃ ૨, એવં યથા પદ્ધ સ્થાને યાવત્ જીવાઃ કર્મપ્રતિષ્ઠિતાઃ ૬, અજીવાજીવસંગૃહીતાઃ ૭, જીવા કર્મસંગૃહીતાઃ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

અન્તર્મે કાયકા અસંવર સૂત્રમે કહા ગયા હૈ અતઃ લક્ષ અસંવરમે જો કાય હૈ, વહ કાય આઠ સ્પર્શવાલા હોતા હૈ ઇસ વાતકો અબ સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હૈ—“ અદૃ કાસા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ

સ્પર્શ આઠ કહે ગયે હૈ—જૈસે—કર્કશ સ્પર્શ ૧, મૃદુકસ્પર્શ ૨, ગુરુક સ્પર્શ ૩, લઘુકસ્પર્શ ૪, શીતસ્પર્શ ૫, ઉષ્ણસ્પર્શ ૬, સ્નિગ્ધસ્પર્શ ૭, ઓર રુક્ષસ્પર્શ ૮ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

સ્પર્શ આઠ હી હોતે હૈ—એસી લોકની સ્થિતિ હૈ—અતઃ અબ સૂત્રકાર લોકની સ્થિતિમે અષ્ટ પ્રકારતાકા કથન કરતે હૈ—

આગલા સૂત્રને અન્તે કાય અસંવરનો ઉલ્લેખ થયો છે તે અસંવરથી યુક્ત જે કાય છે, તે કાય આઠ સ્પર્શોથી યુક્ત હોય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથેના આ પ્રકારના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર સ્પર્શની પ્રરૂપણા કરે છે—

“ અદૃ કાસા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

સ્પર્શના આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) કર્કશ સ્પર્શ, (૨) મૃદુ સ્પર્શ, (૩) ગુરુ સ્પર્શ, (૪) શીત સ્પર્શ, (૫) ઉષ્ણ સ્પર્શ, (૬) સ્નિગ્ધ સ્પર્શ અને રુક્ષ સ્પર્શ. ॥ સૂ. ૧૩ ॥

સ્પર્શ આઠ પ્રકારનાં જ હોય છે, એવી લોકની સ્થિતિ છે. તેથી હવે સૂત્રકારની લોકની સ્થિતિમાં અષ્ટવિધતાનું નિરૂપણ કરે છે—

ટીકા—‘ અદ્વિહા ’ इत्यादि—

લોકસ્થિતિ: લોકસ્ય=ક્ષેત્રલક્ષણસ્ય સ્થિતિ: =વ્યવસ્થા અષ્ટવિધા પ્રજ્ઞતા, તથા-આકાશપ્રતિષ્ઠિતો વાત: ૧, વાતપ્રતિષ્ઠિત ઉદધિ: =ઘનોદધિ: ૨, એવમ્=અનેન પ્રકારેણ યથા ષષ્ઠ સ્થાને=ષષ્ઠ સ્થાનકવત્ અત્રાઽપિ ‘ જીવા કમ્મપઈદ્ધિયા ’ इति યાવત્ સ્થાનાનિ વિભાવનીયાનિ । તાનિ હિ—‘ ઉદહીપઈદ્ધિયા પુઢવી ૩, પુઢવિ પઈદ્ધિયા તસા થાવરા પાળા ૪, અજીવા જીવપઈદ્ધિયા ૫, જીવા કમ્મપઈદ્ધિયા ૬ ” છાયા—ઉદધિપ્રતિષ્ઠિતા પૃથિવી ૩, પૃથિવી પ્રતિષ્ઠિતા ત્રસા: સ્થાવરા: પ્રાણા: ૪, અજીવા જીવપ્રતિષ્ઠિતા: ૫, જીવા: કર્મપ્રતિષ્ઠિતા ૬ इति । एषा व्याख्या षष्ठ स्थाने गता । तथा-अजीवा: =धर्मा-धर्माकाशपुद्गलास्तिकायाद्वा समयलक्षणा:, जीवसंगृहीता:-जीवै: =प्राणिभि: संगृहीता: =स्वीकृता: तद्विना तेषां व्यवहारासंभवात् ७ । तथा-जीवा: =प्राणिन: कर्मसंगृहीता: =कर्मभि: =ज्ञानावरणादिभि: संगृहीता: =बद्धा: ८ इति ।

“ અદ્વિહા લોગદ્વિર્દ ” इत्यादि

ટીકાર્થ-લોકની સ્થિતિ આઠ પ્રકારની કહી गई है-जैसे-आकाश प्रतिष्ठित वात १, वातप्रतिष्ठित उदधि २, घनोदधि इस प्रकारसे जैसे कथन छठे स्थानमें किया गया है, वैसा ही कथन यहां पर भी “ जीवा कम्मपइद्विया ” तक जान लेना चाहिये, वे स्थान इस प्रकारसे हैं-“ उदही पइद्विया पुढवी ३, पुढवि पइद्विया तसा थावरा ४, अजीवा जीव पइद्विया ५, जीवा कम्मपइद्विया ६, ” इन पदोंकी व्याख्या ६ छठे स्थानमें की जा चुकी है, शेष दो स्थान इस प्रकारसे हैं-“ अजीवा जीव संगृहीता: ७, जीवा: कर्मसंगृहीता: ८ ॥ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और अद्धा समय ये सब अजीव जीव संगृहीत हैं-क्योंकि इनके बिना उनका व्यवहार नहीं चलना है-एवं जीव प्राणी-ज्ञानावरणीय आदि कसों से बद्ध है ८.

“ અદ્વિહા લોગદ્વિર્દ ” इत्यादि

ટીકાર્થ-લોકની સ્થિતિ આઠ પ્રકારની કહી છે—(૧) આકાશ પ્રતિષ્ઠિત વાત, (૨) વાત પ્રતિષ્ઠિત ઉદધિ, (૩) ઘનોદધિ પ્રતિષ્ઠિત પૃથ્વી એજ પ્રમાણે જેવું કથન છઠ્ઠા સ્થાનમાં કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ “ જીવા કમ્મપઈદ્ધિયા ” આ પદ પર્યન્તનું કથન પણ અહીં અહીં થવું જોઈએ. ત્યાં આ પ્રમાણે કથન થયું છે—“ ઉદહી પઈદ્ધિયા પુઢવી ૩, પુઢવિ પઈદ્ધિયા તસા થાવરા ૪, અજીવાજીવ પઈદ્ધિયા ૫, જીવા કમ્મપઈદ્ધિયા ૬, આ પદોની વ્યાખ્યા છઠ્ઠા સ્થાનમાં આપવામાં આવી છે. આકીના બે સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે—“ અજીવા જીવ સંગ્રહીતા: ૭, જીવા: કર્મસંગ્રહીતા: ૮ ” ધર્માસ્તિકાય, અધર્માસ્તિકાય, આકાશાસ્તિકાય, પુદ્ગલાસ્તિકાય અને અદ્ધા સમય (કાળ), આ બધાં અજીવ જીવ સંગ્રહીત છે,

નન્વત્ર સૂત્ર પઠ્યપદે “ જીવાઃ કર્મપ્રતિષ્ઠિતાઃ ” इत्युक्तम्, अष्टमे तु “ जीवाः कर्मसंगृहीताः ” इति । कोऽनयोर्भेदः ? इति चेत्, आह—पठ्यपदे जीवोपग्राहकत्वेन कर्मण आधोरत्वं विवक्षितम्, इदं तु तस्यैव जीवबन्धकता विवक्षितेति ॥ सू० १३ ॥
 लोकस्थित्यादिकं गणी एव प्रवर्त्तीति गणिसम्पदमष्ट स्थानत्वेनाह—

मूलम्—अष्टविधा गणिसंपया पण्यत्ता, तं जहा—आचार-संपया १, सुयसंपया २, सरीरसंपया ३ वयणसंपया ४, वाय-णासंपया ५, मइसंपया ६, पओगसंपया ७, संगहपरिणना नाम अट्टमा ॥ सू० १४ ॥

છાયા—અષ્ટવિધા ગણિસમ્પત્ પ્રજ્ઞાતા, તથા—આચારસમ્પત્ ૧, શ્રુત-

શંકા—इस सूत्रमें छठे पदमें “ जीवाः कर्म प्रतिष्ठिताः ” ऐसा कहा गया है, सो इन दोनों प्रकारके कथनोंमें क्या भेद है ?

उत्तर—छठे पदमें जीवोपग्राहक होनेसे जीवमें कर्म की आधारता विवक्षित है, और ८ वें पदमें उसमें जीवबन्धकता विवक्षित है ॥ सू० १३ ॥

लोकस्थिति आदिको गणीही कहता है—अतः अब सूत्रकार गणि-सम्पदाका कथन आठ स्थानोंसे करते हैं—

“ अष्टविधा गणिसंपया पण्यत्ता ” इत्यादि ॥

टीકાર્થ—જ્ઞાનાદિ ગુણોંકે સમૂહકા નામ, અથવા—સાધુ સમુદાયકા નામ, અથવા—પ્રભૂન પ્રતાપકા નામ ગણ હૈ, યહ ગણ જિસકો હોતા હૈ,

કારણ કે તેમના વિના તેમનો વ્યવહાર ચાલતો નથી, અને જોવા જ્ઞાનાવરણીય અતિ કર્મોથી બદ્ધ છે.

શંકા—આ સૂત્રના છઠ્ઠા પદમાં “ જીવાઃ કર્મપ્રતિષ્ઠાઃ ” આ પ્રકારનું કથન થયું છે; તો તે બન્ને કથન વચ્ચે શો તફાવત છે ?

ઉત્તર—જીવોપગ્રાહક હોવાને કારણે છઠ્ઠા પદમાં જીવમાં કર્મની આધારતા વિવક્ષિત થઈ છે, અને આઠમાં પદમાં તેમાં જીવબન્ધકતા વિવક્ષિત થઈ છે. ॥ સૂ. ૧૩ ॥

લોકસ્થિતિ આદિની પ્રજ્ઞપણા ગણી જ કરે છે, તેથી હવે સૂત્રકાર ગણિ-સમ્પદાના આઠ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ અટ્ટવિદ્યા ગણિસંપયા પણ્યત્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જ્ઞાનાદિ ગુણોના સમૂહનું નામ, અથવા—સાધુસમુદાયનું નામ ગણ છે. અથવા વિપુલ પ્રતાપનું નામ ગણ છે આ ગણ જેને હોય છે તેનું

સંપત્ ૨, શરીરસંપત્ ૩, વચનસંપત્ ૪, વાચના સંપત્ ૫, મતિસંપત્ ૬, પ્રયોગસંપત્ ૭, સંગ્રહપરિજ્ઞા નામ અષ્ટમી ૮ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ટીકા—‘ અઠ્ઠવિદા ગણિસંપત્યા ’ इत्यादि—

ગણિસંપત્-ગણ:=જ્ઞાનાદિગુણાનાં સમૂહઃ સાધુસમુદાયઃ પ્રધૂતપ્રતાપો વા, સોઽસ્ત્યસ્યેતિ ગણી=આચાર્યઃ, તસ્ય સંપત્તિવ=રત્નાદિધનમિત્ર સંપત્ત=સમૃદ્ધિઃ, સા અઠ્ઠવિદા=અઠ્ઠપ્રકારા પ્રજ્ઞતા, તથા-આચારસંપત્-આચરણમ્ આચારઃ= વીતરાગપ્રણીતાચરણમ્, આ=મર્યાદાયાં ચરણં=ચારઃ, મર્યાદયા કાલનિયમાદિલક્ષણયા વા ચારઃ, આચારઃ, સ જ્ઞાનદર્શનચારિત્રતપોવીર્યલક્ષણઃ પञ्चधा, યદ્વા-આ=મર્યાદયા ચારો=વિહાર આચારઃ, મોક્ષાર્થમનુષ્ઠાનવિશેષો વા, જ્ઞાનાદિવિષયકમનુષ્ઠાનં વા । આચાર્યતે ગુણવૃદ્ધયા इत्याचारः साधुजनाचरितम्, યદ્વા

वह गणी है, ऐसा वह गणी आचार्यरूप होता है, ऐसे उस गणीकी जो रत्नादि धनके समान सम्पत्ति है, वह आठ प्रकारकी कही गई है-जैसे-आचार सम्पत् १, आचरणका नाम आचार है-यह आचार वीतराग प्रणीत ज्ञानादि आचाररूप होता है, आचारमें जो ‘आ’ है, वह मर्यादा अर्थमें आया है, काल विषय आदि रूप मर्यादाके अनुसार जो चार चरण है, वह आचार है, यह आचार ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, तप, एवं वीर्य रूपसे पांच प्रकारका होता है, अथवा-मर्यादाके अनुसार जो विहार है, वह आचार है, अथवा-मोक्षके लिये जो अनुष्ठान विशेष है, या ज्ञानादि विषयक जो अनुष्ठान है, वह आचार है, ऐसा वह आचार साधुजनके द्वारा आचरित आचरण विशेषरूप होता है, अथवा-शिष्ट जनोंके आचरणके अनुसार जो ज्ञानादिकोंके सेवनकी

નામ ગણી છે. એવા તે ગણી આચાર્ય રૂપ જ હોય છે. તે ગણીની જે રત્નાદિ ધનસમાન સંપત્તિ હોય છે, તેનું નામ ગણી સંપત્તિ છે તે ગણીસંપત્તિના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આચાર સંપત્ આચરણને આચાર કહે છે આ આચાર વીતરાગ પ્રણીત જ્ઞાનાદિ આચાર રૂપ હોય છે. આચારમાં જે ‘ આ ’ ઉપસર્ગ વપરાયો છે તે મર્યાદાના અર્થમાં વપરાયો છે. કાળ, નિયમ આદિ રૂપ મર્યાદા પ્રમણે જે ચાર (ચરણ) છે, તેનું નામ આચાર છે. તે આચાર જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, તપ અને વીર્યરૂપ પાંચ પ્રકારવાળો કહ્યો છે. અથવા-મર્યાદા અનુસાર જે વિહાર છે તેનું નામ આચાર છે અથવા-મોક્ષને નિમિત્તે જે અનુષ્ઠાન વિશેષ છે અથવા જ્ઞાનાદિ વિષયક જે અનુષ્ઠાન છે તેનું નામ આચાર છે. એવા તે આચાર સાધુજનો દ્વારા આચરિત આચરણ વિશેષ

શિષ્ટાચારતો જ્ઞાનાદિ સેવનવિધિઃ, સ એવ-સમ્પદિવ સમ્પત્ત્=સમૃદ્ધિઃ । યદ્વા-
 આચારઃ=આચારાન્નમૂત્રાણ્યં પ્રથમમજ્જમ્, અસ્વાધ્યયનેન હિ જ્ઞાનાદિપશ્ચવિધા-
 ચારઃ પરિજ્ઞાતો ભવતિ, તત્પ્રતિપાદિતાનુષ્ઠેયાચરણમેવ સમ્પદિવ સમ્પત્ ॥ ૧ ॥
 શ્રુતસમ્પત્-શ્રુતમ્=આગમઃ, સ એવ સમ્પદિવ સમ્પત્ત્=સમૃદ્ધિઃ ૨। શરીરસમ્પત્-
 શરીરં=કાયસ્તદેવ સમ્પદિવ સમ્પત્ત્=રૂપલાવણ્યારોહપરિણાહસ્થિરસંહનનત્વાદિ-
 વિશિષ્ટલક્ષણા ૩। વચનસમ્પત્-વચનં=સર્વવ્યવહારહેતુવાગ્વ્યાપારઃ, તદેવ સમ્પ-
 દિવ સમ્પત્ત્=આદેય સત્ય-પ્રિય-હિત-મિતાદિલક્ષણા ૪। વાચનાસમ્પત્-વાચના=

વિધિ હૈ, વહ આચાર હૈ, યહ આચારહી સમ્પત્તિકે જૈસી જિસકી
 સંપત્તિ હૈ વહ આચારસંપત્ત્ હૈ, અથવા-આચારાન્નમૂત્ર નામકા જો
 પ્રથમ મજ્જમ હૈ, વહ આચાર હૈ, હિસકે અધ્યયનસે જ્ઞાનાદિરૂપ પાંચ
 પ્રકારકા આચાર પરિજ્ઞાત હોતા હૈ, ઉસ આચારાન્ન દ્વારા પ્રતિપાદિત
 અનુષ્ઠેયકા આચરણ હી સમ્પત્તિકે સમાન સમ્પત્ત્ હૈ, યહ પહલી
 સંપદા હૈ ? શ્રુત નામ આગમકા હૈ, યહ આગમહી સમ્પત્ત્કે સમાન જો
 સમ્પત્ત્હૈ વહ શ્રુત સમ્પત્ત્હૈ । યહ દૂસરી સંપદાહૈ ૨ શરીર નામ કાયકા
 હૈ, યહ કાય હી રૂપ, લાવણ્ય, આરોહ-ઉચ્ચત્વ પરિણાહ વિશાલતા
 સ્થિર સંહનનત્વાદિ રૂપસે જો સમ્પત્ત્કી તરહ સંપત્ત્ હૈ વહ-
 શરીર સંપત્ત્હૈ, ૩ સમસ્ત વ્યવહારકા હેતુભૂત જો વચન વ્યાપાર હૈ વહ
 સમ્પત્તિકે જૈસે સમ્પત્તિરૂપ હોનેકે કારણ વચન સંપત્ત્રૂપસે કહા ગયા

૩૫ હે.ય છે. અથવા શિષ્ટજનોના અચરણ પ્રમાણેનો જે જ્ઞાનાદિકોના સેવનનો
 વિધિ છે તેનું નામ આચાર છે આ આચાર જ જેમની સંપત્તિ હોય છે.
 તેમને આચાર સંપત્ કહે છે. અથવા આચારાંગ સૂત્ર નામનું જે પહેલું અંગ છે,
 તેનું નામ પણ આચાર છે. તેને અધ્યયનને લીધે જ્ઞાનાદિ ૩૫ પાંચ પ્રકારના
 આચારનું પરિજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે. તે આચારાંગ દ્વારા પ્રતિપાદિત અનુષ્ઠાનોનું
 આચરણ જ ધનાદિ સંપત્તિના જેવું ગણાય છે તે કારણે તે આચારને ગણી
 સંપત્તિ ૩૫ કહેલ છે. (૨) શ્રુત સંપત્-આગમોને શ્રુત કહે છે તે આગમોને
 સંપત્તિસમાન ગણવામાં આવ્યા છે. ગણી શ્રુતસંપત્ ૩૫ સંપત્તિથી યુક્ત હોય છે.

શરીર સંપત્-કાયને શરીર કહે છે. ૩૫, લાવણ્ય, આરોહ, પરિણાહ,
 સ્થિર સંહનન આદિ ૩૫ કાયની સંપત્તિથી જે યુક્ત હોય છે તેને શરીર
 સંપત્ કહે છે. ગણી શરીર ૩૫ સંપત્તિથી પણ સંપન્ન હોય છે

(૪) વચન સંપત્-સમસ્ત વ્યવહારના હેતુ ૩૫ જે વાગ્વ્યાપાર છે

ગુરુમુખાત્ શ્રુતસ્ય સ્ફુટતયા પઠનં, સૈવ સમ્પદિવ સમ્પત્=શ્રવણરમણીયત્વાદિ વિશિષ્ટલક્ષણા ૫। મતિસમ્પત્-મતિ:=ક્ષિપ્રાવગ્રાહિકાદિલક્ષણા, સૈવ સમ્પદિવ સમ્પત્=હેયોપાદેયવિવેકપટીયસ્ત્વાદિવિશિષ્ટરૂપા ૬। પ્રયોગસમ્પત્-પ્રયોગ:=પ્રયો-
જનમ્-આત્મસામર્થ્ય દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવં વિજ્ઞાય વાદાદિકરણં સ એવ સમ્પદિવ સમ્પત્=લોકોત્તરવાદસામર્થ્યરૂપા ૭। સંગ્રહપરિજ્ઞા-સંગ્રહ:=દ્રવ્યતો વસ્ત્રપાત્રા-
દીનાં, ભાવતોડનેકશાસ્ત્રાપ્તજનેભ્યઃ પદાર્થાનામેકત્રીકરણં, તત્ર પરિજ્ઞા=પરિ-

જ્ઞા ૪। એસી યહ વચન સમ્પદા વચનકો હિત, મિત, સત્ય એવં પ્રિય હોનેકે કારણ હોની હૈ । ગુરુકે મુખસે શ્રુતકા સ્ફુટ રૂપસે પઠના હસકા નામ વાચના હૈ, હસ વાચનાકો જો સમ્પત્કે જૈસી સમ્પદા કહા ગયા હૈ, હસકા કારણ શ્રવણ રમણીયતા આદિકો લેકર કહા ગયા હૈ-મતિ સમ્પત્-શીઘ્રતાકે સાથ જો અવગ્રાહકાદિ રૂપ બુદ્ધિ હૈ, હસકા નામ મતિ હૈ, હસ મતિકો જો સમ્પત્કે જૈસી સમ્પત્તિ કહા ગયા હૈ, હસકા કારણ હેય ઓર ઉપાદેયભૂત પદાર્થોં મેં વિવેક કરનેમેં હસકા પદ્વી(ચતુરાઈ) હોના હૈ ૬, પ્રયોગ સંપદા-દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાલ એવં ભાવકો જાનકર વાદાદિ કરનેરૂપ જો આત્મ સામર્થ્ય હૈ, વહ પ્રયોગ હૈ, હસ પ્રયોગકો જો સમ્પત્કે સમાન સમ્પત્ કહા ગયા હૈ-હસકા કારણ હસમેં વાદ કરનેકા લોકો-
ત્તર સામર્થ્યકા કારણ હોના હૈ । સંગ્રહપરિજ્ઞા-દ્રવ્યકી અપેક્ષા અનેક શાસ્ત્ર તથા આસજનોંસે પદાર્થોંકા એકત્રિત કરના હસકા નામ સંગ્રહ

તે પશુ સંપત્તિના જેવો જ હોવાને કારણે અહીં વચનને પશુ સંપત્તિ રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલું છે. જ્યારે વચન હિત, મિત, સત્ય અને પ્રિય હોય ત્યારે જ વચન સંપત્ સંભવી શકે છે.

(૫) વાચના સંપત્-ગુરુને શ્રુતે શ્રુતને સ્પષ્ટ રૂપે શીખવું તેનું નામ વાચના છે. શ્રવણ રમણીયતા આદિ કારણોને લીધે તે વાચનાને પશુ સંપત્તિ સમાન ગણીને વાચના સંપત્ કહ્યા છે.

(૬) મતિસંપત્-શીઘ્રતા પૂર્વક કોઈ પણ પ્રશ્નને અવગ્રહણ કરનારી જે બુદ્ધિ છે તેનું નામ મતિ છે. તેને પશુ એક પ્રકારની સંપત્તિ જ કહેવાનું કારણ એ છે કે હેય અને ઉપાદેયનો વિવેક કરાવવામાં એ મતિ જ મહદરૂપ બને છે,

(૭) પ્રયોગ સંપત્-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવને જાણીને વાદાદિ કરવા રૂપ જે આત્મ સામર્થ્ય છે તેનું નામ પ્રયોગ છે. આ પ્રયોગને જે સંપત્તિના સમાન ગણાવવામાં આવ્યો છે, તેનું કારણ એ છે કે પ્રયોગ સંપત્માં પુરુષને વાદાવગ્રાહ કરવાનું લોકોત્તર સામર્થ્ય હોય છે.

જ્ઞાન-વિચક્ષણતા, અષ્ટમી=અષ્ટાનાં પૂરણી સમ્પત્ ૮॥ ઇતિ । આચારસમ્પદા-
દીનાં વિસ્તૃતસ્વરૂપં દશાશ્રુતસ્કન્ધસ્ય ચતુર્થેઽધ્યયનેઽસ્મત્કૃતમુનિહર્ષિણી
ટીકાયાં વિલોકનીયમ્ । ઇતિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ગુણિનો હિ ગુણરત્નનિધાનમૂતા ઇતિ નિધાનપ્રસ્તાવાન્મહાનિધિ સમ્બન્ધમેકં
સૂત્રમાહ—

મૂલમ્—एगमेगे णं महानिही अट्चक्रवालपट्टाणे अट्ट-
जोयणाइं उञ्जं उच्चत्तेणं पण्णते ॥ सू० १५ ॥

છાયા—एकैकः खलु महानिधिरष्टचक्रवालप्रतिष्ठानः अष्टयोजनानि
ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन प्रज्ञप्तः ॥ सू० १५ ॥

ટીકા—‘ एगमेगे णं ’ इत्यादि—

चक्रवर्तिनां नव महानिधयो भवन्ति, तत्र खलु एकैको महानिधिः अष्ट

है, इस संग्रहमें जो विचक्षणता है, वह संग्रहपरिज्ञा है, इन आचार
सम्पत् आदिके विस्तृत स्वरूपको अच्छी तरहसे जाननेवालोंको दशा-
श्रुत स्कन्धके चतुर्थ अध्ययनमें हमारे द्वारा की गई मुनितोषिणी टीका
देखनी चाहिये ॥ सूत्र १४ ॥

ગુણીજન ગુણરૂપી રત્નોંકે સ્વજાને હોતે હેં, હસ કારણ નિધાનકે
પ્રવાસકો લેકર અષ્ટ સૂત્રકાર મહાનિધિસે સમ્બન્ધિત હસ એક સૂત્રકા
કથન કરતે હેં—“ एगमेगेणं महानिही ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—चक्रवर्तियोंके नौ महानिधियां होती है, सो उनमें एक

(૮) સંગ્રહ પરિજ્ઞા—દ્રવ્યની અપેક્ષાએ વસ્તુપાત્રાદિને એકત્ર કરવા અને
ભાવની અપેક્ષાએ અનેક શાસ્ત્રો તથા આમજનો (શિષ્યો)ને એકત્રિત કરવા
તેનું નામ સંગ્રહ છે. આ સંગ્રહ કરવામાં જે વિચક્ષણતાની જરૂર પડે છે
તેને સંગ્રહ પરિજ્ઞા કહે છે.

આ આચારસંપત્ આદિ આઠ સંપત્તિઓનું વિસ્તૃત વિવેચન દશાશ્રુત
સ્કન્ધના ચોથા અધ્યયનની મુનિહર્ષિણી ટીકામાં કરવામાં આવ્યું છે. તે આ વિષયનું
વિસ્તૃત સ્વરૂપ જણાવતી ઈચ્છાવાળા પાઠકોએ તે ટીકા વાંચી જવી ॥ સૂ. ૧૪-૧૧

શુણીજનો શુણ્ણપી રત્નોના નિધાન (ભંડાર) જેવાં હોય છે, આ
પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર મહાનિધિઓના સ્વરૂપનું
નિરૂપણ કરે છે—“ एगमेगेणं महानिही ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—चक्रवर्तीઓના નવ મહાનિધિઓ કહ્યા છે. તે પ્રત્યેક મહાનિધિ

ચક્રવાલપ્રતિષ્ઠાનઃ—અષ્ટ ચક્રવાલેષુ=અષ્ટચક્રેષુ પ્રતિષ્ઠાનમ્=પ્રતિષ્ઠા યસ્ય સ
તથાધૂતઃ—અષ્ટ ચક્રેષુ પ્રતિષ્ઠિતો મઝ્જુષાકારઃ અષ્ટયોજનાનિ ઝર્ધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેન
પ્રજ્ઞપ્તઃ । મહાનિધિસ્વરૂપં ચેદમ્—

“ નવ જોયણવિત્થિળ્લા, બારસદીઠા સમૂસિયા અદ્ધ ।

જક્કલસહસ્રપરિવુડા, ચક્રદ્વપદ્વિયા નવત્રિ ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—નવ યોજનવિસ્તીર્ણા, (વિષ્કમ્ભયુક્તા) દ્વાદશદીર્ઘા, (આયામયુક્તા) સમુ-
ચ્છિતા અષ્ટ ।

યક્ષસહસ્રપરિવૃતાશ્ચક્રાષ્ટપ્રતિષ્ઠિતા નવાપિ ॥ ૧ ॥ इति ॥ सू० १५ ॥

इत्थं द्रव्यनिधिमुक्त्वा सम्प्रति भावनिधिमाह—

મૂલમ્—અદ્ધ સમિર્દો પળ્લતાઓ, તે જહા-ઇરિયાસે-
મિર્દ ૧, માસાસમિર્દ ૨, ઇસળાસમિર્દ ૩, આયાળમંડમત્તાનિ-
ક્કલેવળાસમિર્દ ૪, ઉચ્ચારપાસવળલેલજલ્લસિંધાળપરિટ્ટાવળિ-
યાસમિર્દ ૫ મળગુત્તી ૬, વયગુત્તી ૭ કાયગુત્તી ૮ ॥ સૂ ૦ ૧૬ ॥

एक जो महानिधि है, वह अष्ट चक्रोंमें है, प्रतिष्ठान जिसका ऐसी होती है, अष्ट चक्रोंमें प्रतिष्ठित वह मञ्जूषाकार निधि आठ योजनकी ऊँची होती है, महानिधिका स्वरूप इस प्रकारसे कहा गया है—

“ नव जोयणवित्थिण्णा ” इत्यादि ।

ये नौ ही महानिधियां नौ २ योजनके विष्कम्भसे (चोडाइ) युक्त हैं, योजनके आयामसे सहित हैं, आठ २ योजनकी ऊँचाईवाली हैं । एकर हजार यक्ष इनकी रक्षा करनेवाले हैं । और आठ चक्रों पर प्रतिष्ठित हैं ॥ सू० १५ ॥

इस प्रकार द्रव्य निधिका कथन कर अब सूत्रकार भावनिधिका कथन करते हैं—“ अद्वसमिर्दो पणत्ताओ ” इत्यादि ॥

અષ્ટચક્ર પ્રતિષ્ઠિત હોય છે. અષ્ટચક્ર પ્રતિષ્ઠિત તે મંજૂષાકાર નિધિ આઠ યોજન-
ઊંચી હોય છે. મહાનિધિ સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે —

“ નવ જોયણવિત્થિળ્લા ” ઇત્યાદિ—

તે પ્રત્યેક મહાનિધિનો વિષ્કંભ નવ-નવ યોજનનો, આયામ વિસ્તાર સહિત છે. ઊંચાઈ આઠ-આઠ યોજનની હોય છે.

એક-એક હજાર યક્ષ તે પ્રત્યેક મહાનિધિની રક્ષા કરતા હોય છે અને તે પ્રત્યેક મહાનિધિ આઠ એકો પર પ્રતિષ્ઠિત છે. ॥ સૂ. ૧૫ ॥

આ પ્રમાણે દ્રવ્યનિધિનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર ભાવનિધિનું નિરૂપણ કરે છે—

છાયા—અષ્ટ સમિતયઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્યથા—ઈર્ધાસમિતિઃ ૧, આપાસમિતિઃ ૨, ષ્ણગાસમિતિઃ ૩, આદાનભાળ્ડમાત્રનિક્ષેપણાસમિતિઃ ૪, ઉચ્ચારપ્રસ્રવણલેલજલ્લશિઙ્ઘાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતિઃ ૫, મનોગુપ્તિઃ ૬, વાગ્ગુપ્તિઃ ૭ કાયગુપ્તિઃ ૮ ।
॥ સુ૦ ૧૬ ॥

ટીકા—‘ અઠ્ઠ સમિર્ઘો ’ इत्यादि—

સમિતયઃ—સમ્=સમ્યક્, એકીભાવેન વા इतयः ૭ શોભનૈકાગ્રપરિણામવેષ્ટાઃ
યદ્વા—સં=સંગતા इतयः=પટ્ટતયઃ—સમિતયઃ=પ્રાણિપરિતાપપરિજિહીર્ષયા સમ્યક્પ્ર-
વૃત્તયઃ, તા-અષ્ટવિધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્યથા—ઈર્ધાસમિતિઃ—ઈરણમીર્યા=ગમનં, તત્ર યા
સમિતિઃ=સમ્યગેકીભાવેન વા રાગદ્વેપરાદિત્યેન પ્રવર્તનં—પ્રત્નરતરસદ્સકરકર-
નિકરપ્રકાશિતાસુ દિશાસુ પદાર્થાવેક્ષણક્ષમે ચ ક્ષુપિ મનુષ્યરથચક્રતુરગચુરશ્રુણ-

ટીકાર્થ—સમિતિયાં આઠ કહી ગઈ હૈં, જૈસે—ઈર્ધાસમિતિ ૧, આપા સમિતિ ૨, ષ્ણગા સમિતિ ૩, આદાનભાળ્ડમાત્રનિક્ષેપણા સમિતિ ૪, ઉચ્ચારપ્રસ્રવણલેલજલ્લશિઙ્ઘાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતિ ૫, મનોગુપ્તિ ૬, વાગ્ગુપ્તિ ૭, ઔર કાયગુપ્તિ ૮, એકીભાવરૂપસે જો શોભન એકાગ્ર પરિણામકી ચેષ્ટાઈ હૈં, વે અથવા—પ્રાણિયોંકો પરિતાપ કરનેકી પ્રવૃત્તિકો છોડનેકી ઇચ્છાસે જો સમ્યક્ પ્રવૃત્તિયાં હૈં વે સમિતિયાં હૈં । વે સમિતિયાં પૂર્વોક્ત રૂપસે જો આઠ પ્રકારકી કહી ગઈ હૈં—સો ઉનકા તાત્પર્ય એસા હૈ, કિ જય સૂર્યકે પ્રત્નરતર કિરણોંસે દિશાઈ પ્રકાશિત હોના વે ઔર આંખોંમેં બી પદાર્થાવલોકન કરનેકી ક્ષમતા અચ્છી તરહસે આ જાવે તવ મનુષ્ય રથચક્ર, તુરગ ચુર, इनसे

ટીકાર્થ—“ અઠ્ઠ સમિર્ઘો પળ્ળત્તાઓ ” इत्यादि—

નીચે પ્રમાણે આઠ સમિતિઓ કહી છે—(૧) ઈર્ધાસમિતિ, (૨) આપા સમિતિ, (૩) ષ્ણગા સમિતિ, (૪) આદાનભાળ્ડમાત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ, (૫) ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ લેલ જલ્લ શિઙ્ઘાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ, (૬) મનોગુપ્તિ, (૭) વાગ્ગુપ્તિ અને (૮) કાયગુપ્તિ.

એકીભાવ રૂપે (એકાગ્ર ભાવપૂર્વકની) જે શોભન એકાગ્રપરિણામની ચેષ્ટાઓ છે તેમને સમિતિ કહે છે. અથવા જીવેને પરિતાપ કરવાની પ્રવૃત્તિને છોડવાની ઇચ્છાપૂર્વક જે સમ્યક્ પ્રવૃત્તિઓ કરવામાં આવે છે, તેમનું નામ સમિતિઓ છે. હવે તેના આઠ પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

(૧) ઈર્ધાસમિતિ—જ્યારે સૂર્યના પ્રત્નરતર કિરણો વડે દિશાઓ પ્રકાશિત થવા માંડે, અને હરેકે હરેક વસ્તુને આંખો વડે ધરાધર જોઈ શકાય એવા પ્રકાર બધે બ્યાપી જાય, જ્યારે મનુષ્યોના ચાલવાથી, રથચક્ર અને અશ્વાદિના

તુરાવાદૌ પ્રાસુકમાર્ગે તદેકતાનમનસો મુનેઃ શનૈર્વિન્યસ્તચરણસ્ય સહ્કુચિતનિજ-
પૂર્વાપરગાત્રસ્ય પુરતો યુગમાત્રદૃષ્ટ્યા ચેષ્ટનમિતિ યાવત્ ૧। ભાષાસમિતિઃ-
ભાષા=વચનં, તસ્યાં સમિતિઃ-ભાષાસમિતિઃ-કાર્કશ્યાદિરહિત-હિતમિત-પ્રાણિ-
મર્દનવર્જિતસ્પ્રીતમૃદુભાષણવ્યવહારઃ ૨। એષણાસમિતિઃ-એષણા=ગવેષણા-ઉદ્ગ-
માદિદોષવર્જનરૂપા ગ્રહણેષણા પરિભોગેષણાદિલક્ષણા ચ, તત્ર સમિતિરેષણા-

તુષાર આદિ જિસ પરસે ક્ષુણ્ણ હો ચુકા હૈ, ઓર હસીસે જો પ્રાસુક
હો ગયા હૈ, એસે રાસ્તે પર આગેકી યુગ પ્રમાણ ભૂમિકા અવલોકન કરતે
હુએ એકાગ્ર મનવાલે મુનિકા કિ જિસને અપના પૂર્વ અપર સંકુચિત
કર લિયા હૈ, જો ધીરે ર ચલતા હૈ વહ ઈર્ષ્યા સમિતિ હૈ, તાત્પર્ય હસ
કથનકા કેવલ યહી હૈ કિ કિસી ભી જન્તુકો કલેશ ન હો હસ તરહસે
સાવધાની પૂર્વક ચલના હી ઈર્ષ્યા સમિતિ હૈ, સત્ય, હિતકારી, પરિમિત ઓર
અસત્ય રહિત વચન બોલના હસકા નામ ભાષાસમિતિ હૈ, ભાષા શબ્દકા
અર્થ વચન હૈ, વચનમેં જો સમિતિ હૈ વહ ભાષા સમિતિ હૈ, ભાષામેં,
વચનમેં સમિતતા તમી આસકની હૈ, કિ જવ વહ કર્કશ આદિ દોષસે
રહિત હો, અર્થાત્ હિત મિત એવં પ્રિય હો પ્રાણિમર્દન રહિત હો, મૃદુ
હો, એષણા સમિતિ-જીવન યાત્રામેં આવશ્યક એસે નિર્દોષ સાધનોકો
જુટાનેમેં સાવધાનીપૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરના એષણા સમિતિ હૈ, એષણા નામ

હાલકા વડે ઝાકળ આદિ જેના પરથી વિદીન થઈ ગયું હોય અને તે કારણે
પ્રાસુક થઈ ગયો હોય એવા રસ્તા પર સામેની યુગપ્રમાણ (યુગસરી પ્રમાણ)
ભૂમિનું અવલોકન કરતાં કરતાં જેણે પોતાના પૂર્વ અપર સંકુચિત કરી લીધો
છે એવા એકાગ્ર મનવાળા મુનિનું જે જતના પૂર્વક ધીરે ધીરે ચાલવાનું થાય
છે, તેનું નામ ઈર્ષ્યાસમિતિ છે. આ કથનનો સારાંશ નીચે પ્રમાણે છે-કોઈ
પણ જન્તુને કલેશ ન થાય એ પ્રમાણે સાવધાની પૂર્વક ચાલવું તેનું નામ
જે ઈર્ષ્યાસમિતિ છે.

(૨) ભાષાસમિતિ-સત્ય, હિતકારી, પરિમિત અને પ્રિય વચન બોલવા
તેનું નામ ભાષાસમિતિ છે. ભાષા શબ્દનો અર્થ વચન થાય છે આ વચનમાં
જે સમિતિ છે તેનું નામ ભાષાસમિતિ છે. વચનમાં સમિતતા ત્યારે જ
આવે છે કે જ્યારે તે હિત, મિત અને પ્રિય હોય છે, કર્કશતા આદિ દોષથી
રહિત હોય છે-મૃદુ હોય છે અને પ્રાણિમર્દનથી રહિત હોય છે.

(૩) એષણા સમિતિ-જીવનયાત્રા માટે આવશ્યક હોય એવાં સાધનોની
પ્રાપ્તિ કરવા માટે સાવધાની પૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરવી તેનું નામ એષણાસમિતિ

સમિતિ:-મિક્ષાગતેન મુનિના સોપયોગં નવકોટિવિશુદ્ધમિક્ષાગ્રહણમ્ ૩। આદાન-
 માણ્ડમાત્રનિક્ષેપણાસમિતિ:-માણ્ડમાત્રયોરાદાને નિક્ષેપણાયાં ચ સમિતિ: ૪।
 ઉચ્ચારપ્રસ્રવણચેલજલ્લ શિઙ્વાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતિ:-ઉચ્ચાર:=પુરીષં, પ્રસ્રવણં=
 મૂત્રં, ચેલ:=*લેષ્મા, જલ્લ:=દેહમલં, શિઙ્વાણં=નાસામલં, તેષાં પરિષ્ઠાપનિકા=
 વ્યુત્સર્જનં, તદ્વિષયા સમિતિ: ૫। મનોગુપ્તિ:-મનસઃ કુશલત્વે પ્રવૃત્તિ: ૬।
 વાયુગુપ્તિ:-વચસઃકુશલત્વે પ્રવૃત્તિ: ૭। કાયગુપ્તિ:-કાયસ્ય સ્થાનાદિષુ કુશલત્વેન
 પ્રવૃત્તિ: ૮ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

ગવેષણા કરનેકા હૈ, યહ ગવેષણા ઉદ્ગમાદિ દોષોંકે છોડનેરુપ ગ્રહણે-
 ષણારુપ એવં પરિભોગેષણાદિ રુપ હોની હૈ, હિસ એષણામેં જો સમિતિ
 હૈ, વહો એષણાસમિતિ હૈ । હિસકા તાત્પર્ય કેવલ યહી હૈ, કિ મિક્ષાકે
 લિયે ગયે હુએ મુનિ દ્વારા જો ઉપયોગ યુક્ત હોકર નવ કોટિસે વિશુદ્ધ
 આહારકા ગ્રહણ કરના એષણા સમિતિ હૈ । માણ્ડ માત્રકે ડઠાનેમેં એવં
 ધરનેમેં જો સમિતિ હૈ, વહ આદાન માણ્ડમાત્રનિક્ષેપણા સમિતિ હૈ,
 ઉચ્ચાર-પુરીષ-પ્રસ્રવણ-મૂત્ર, ચેલ-*લેષ્મા, જલ્લ-દેહમલ શિઙ્વાણ-
 નાસામલ, હિન સબકે વિસર્જનમેં જો સમિતિ હૈ, વહ ઉચ્ચારપ્રસ્રવણ,
 ચેલ-જલ્લ શિઙ્વાણપરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ હૈ, મનકી કુશલતામેં જો
 પ્રવૃત્તિ હૈ, વહ મનોગુપ્તિ હૈ, વચનકી કુશલતામેં જો પ્રવૃત્તિ હૈ, વહ
 વચનગુપ્તિ હૈ, કાયકી સ્થાન આદિકોમેં જો કુશલતા રુપસે પ્રવૃત્તિહૈ
 વહ કાયગુપ્તિ હૈ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

છે. એષણા એટલે ગવેષણા. તે ઉદ્ગમાદિ દોષોને છોડવા રૂપ, ગ્રહણેષણા
 રૂપ અને પરિભોગેષણા આદિ રૂપ હોય છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે
 છે-મિક્ષાપ્રાપ્તિને માટે નીકળેલા મુનિ દ્વારા જે ઉપયોગ યુક્ત થઈને નવ પ્રકારે
 વિશુદ્ધ આહારનું ગ્રહણ થાય છે તેનું નામ એષણા સમિતિ છે.

(૪) ભાંડમાત્રને જતના પૂર્વક ઉઠાવવા અને મૂકવા તેનું નામ આદાન
 ભાંડમાત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ છે.

(૫) ઉચ્ચાર (મળ), પ્રસ્રવણ (મૂત્ર), ચેલ (કફ), જલ્લ (શરીરનો મેલ)
 શિઙ્વાણ (નાકમાંથી નીકળતો ચીકણો પદાર્થ), આ બધાનું જતના પૂર્વક વિસર્જન
 કરવું તેનું નામ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ચેલ જલ્લ-શિઙ્વાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે.

(૬) મનોગુપ્તિ-મનની કુશલતા પૂર્વકની જે પ્રવૃત્તિ છે તેનું નામ
 મનોગુપ્તિ છે. (૭) વચનની કુશલતા પૂર્વકની જે પ્રવૃત્તિ છે તેનું નામ વચન-
 ગુપ્તિ છે. (૮) કાયની સ્થાન આદિકોમાં જે કુશલતા રૂપ પ્રવૃત્તિ છે તેનું
 નામ કાયગુપ્તિ છે. ॥ સૂ. ૧૬ ॥

સમિતિષુ અતિચારે જાતે આલોચના દીયતે इत्यालोचनाचार्यस्य आलोचक-
साधोः प्रायश्चित्तस्य च स्वरूपमभिधातुमाह—

મૂલમ્—અટ્ટહિં ઠાણેહિં સંપન્ને અળગારે અરિહઙ્ગ આલોચના
પડિચ્છિત્તણ, તં જહા—આચારવં ૧ ઓહારવં ૨ વવહારવં ૩
ઓવીલણ ૪ પકુવણ ૫ અપરિસ્સાઈ ૬ નિજાવણ ૭ અવાય-
દંસી ૮ અટ્ટહિં ઠાણેહિં સંપન્ને અળગારે અરિહઙ્ગ અત્તદોસમા-
લોહત્તણ, તં જહા—જાડસંપન્ને ૧, કુલસંપન્ને ૨, વિણયસંપન્ને ૩,
ળાણસંપન્ને ૪, દંસણસંપન્ને ૫, ચરિત્તસંપન્ને ૬, સ્વંતે ૭, દંતે
૮ અટ્ટવિહે પાયચ્છિત્તે પળ્ળત્તે તં જહા—આલોચનારિહે ૧,
પડિક્કમળારિહે ૨, તદુભયારિહે ૩, વિવેગારિહે ૪, વિડસગ્ગા-
રિહે ૫, તવારિહે ૬, છેયારિહે ૭, મૂલારિહે ૮ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

છાયા—અષ્ટમિઃ સ્થાનૈઃ સમ્પન્નોડનગારઃ અર્હતિ આલોચનાઃ પ્રત્યેષ્ઠુમ્,
તથથા—આચારવાન્ ૧ અવધારવાન્ ૨, વ્યવહારવાન્ ૩, અપવીડકઃ ૪, પ્રકા-
રકઃ ૫, અપરિસ્સાવી ૬ નિર્યાપકઃ ૭, અપાયદર્શી ૮ અષ્ટમિઃ સ્થાનૈઃ સમ્પ-
ન્નોડનગારઃ અર્હતિ આત્મદોષમાલોચયિતુમ્, તથથા—જાતિસમ્પન્નઃ ૧, કુલ-
સંપન્નઃ ૨, વિનયસમ્પન્નઃ ૩ જ્ઞાનસમ્પન્નઃ ૪, દર્શનસમ્પન્નઃ ૫, ચારિત્રસમ્પન્નઃ
૬, શાન્તઃ ૭, દાન્તઃ ૮ અષ્ટવિધં પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથથા—આલોચનાર્હમ્
૧, પ્રતિક્રમળાર્હમ્ ૨, તદુભયાર્હમ્ ૩, વિવેકાર્હમ્ ૪, વ્યુત્સર્ગાર્હમ્ ૫ તપોડર્હમ્
૬, છેદાર્હમ્ ૭, મૂલાર્હમ્ ૮ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

ટીકા—‘અટ્ટહિં ઠાણેહિં’ इत्यादि—

अष्टमिः स्थानैः=गुणैः सम्पन्नोऽनगारः अर्हति=योग्यो भवति आलोचनाः=

સમિતિયોમેં અતિચારકે હોને પર આલોચના દી જાતી હૈ, અતઃ
અવ સૂત્રકાર આલોચનાચાર્યકા, આલોચકસાધુકા ઓર પ્રાયશ્ચિત્તકા
સ્વરૂપ કહતેહૈ—“અટ્ટહિં ઠાણેહિં સંપન્ને અળગારે” इत्यादि॥

ન્યારે સમિતિએ ના પાલનમાં અતિચાર લાગી જાય છે. ત્યારે આલોચના
અપાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આલોચનાચાર્યના, આલોચના કરનાર અને
પ્રાયશ્ચિત્તના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે. “અટ્ટહિં ઠાણેહિં સંપન્ને અળગારે” इत्यादि—

आलोचकेन श्राव्यमाणान् अतिचारान् प्रत्येष्टुं=ग्रहीतुं-श्रोतुमित्यर्थः, तद्यथा-
आचारवान्-आचारः=ज्ञानादि पञ्चविधः, सोऽस्ति परिज्ञाने आसेवनेन च यस्य स
तथा-ज्ञानादि पञ्चविधाचारज्ञस्तदासेवकश्च १, अवधारवान्-अवधारः=अवधार-
णम्-आलोचकेन आलोच्यमानानामतिचाराणां निश्चयकरणं, सोऽस्त्यस्येति तथा-
अतिचारप्रकारनिर्णायक-इत्यर्थः । उक्तं चात्र—

“आयारवमायारं, पंचविहं गुणइ जो य आयरइ ।

ओहारवमवहारे, आलोइतस्त सव्वंति ॥ १ ॥”

छाया—आचारवान् आचारं पञ्चविधं जानाति यश्च आचरति ।

अवधारवान् अवधारयति आलोचयतः सर्वमिति ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

तथा-व्यवहारवान्=आगमश्रुताज्ञाधारणाजीतलक्षणानां पञ्चानां व्यवहा-
रांगमभिज्ञः ३। अपव्रीडकः-अपव्रीडयति=अपगतव्रीडं-विगतलज्जं करोति य

टीकार्थ—आठ गुणोंसे संपन्न अनगार आलोचकके द्वारा सुनाये
गये अतिचारोंको सुननेके योग्य होता है, वे आठ गुण इस प्रकारसे
हैं—जो आचारवान् होता है—पांच प्रकारके आचरका-ज्ञानाचारका दर्श-
नाचारका चारित्राचारका तप आचारका और वीर्याचारका-ज्ञाता होता
है, और उनका पालन करनेवाला होता है, जो अवधारवान् (धारणा-
बुद्धि वाला) होता है—आलोचकके द्वारा आलोच्यमान अतिचारोंका
निश्चय करना सो अवधारण है, यह अवधारण जिसके होता है, वह
अवधारणवान् है, यह अवधारणवान् अतिचारोंके प्रकारका निर्णायक
होता है, उक्तं च—‘आयारवमायारं’ इत्यादि

जो व्यवहारवान् होता है—आगम व्यवहार, श्रुत व्यवहार, आज्ञा
व्यवहार, धारणा व्यवहार और जीन व्यवहार इन पांच प्रकारके व्यव-
हारोंका जो जाननेवाला होता है, वह व्यवहारवान् है, जो अपव्रीडक

टीकार्थ—नीचेना आठ गुणोथी युक्त डोय ओवो अणुगार आलोचकना द्वारा
प्रकट करवाभां आवेदा अनित्यरेने सांख्यवाने योग्य-गणाय छे—ने अणुगार
आचारवान् डोय छे—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तप आचार अने
वीर्याचारने ज्ञाता डोय छे अने ते आचारोनु पालन करनारे डोय छे, ने
अणुगार अवधारवान् डोय छे, (आलोचकना आलोच्यमान अतिचारोने निश्चय
करवे तेनु नाम अवधारण छे ने अणुगारभां आ अवधारणुने सहल व डोय
छे तेने अवधारणवान् कडे छे, ते अवधारणवान् अणुगार अतिचारोना प्रकारने
निर्णायक डोय छे)

“आयारवमायार” इत्यादि ने व्यवहारवान् डोय छे (आगम व्यवहार, श्रुतव्यव-

આલોચમાનં સાધું સઃ । યો હિ લજ્જયા સમ્યગ્નાલોચમાનં સાધું સમ્યક્ સર્વ-
માલોચયતિ સોઽપત્રીડકો બોધ્યઃ । ઉક્તં ચ--

“ વવહારવં વવહારં આગમમાર્ગે ઉ-ગુણં પંચવિહં ।

ઓવીલુવગૂહંતં, જહ આલોપ્પહંતં સવ્વં ॥ ૧ ॥ ”

છાયા--વ્યવહારવાન્ વ્યવહારમ્ આગમાદિં તુ જાનાતિ પંચવિધમ્ ।

અપત્રીડ-ઉપગૂહંતં યથા આલોચયતિ તત્સર્વમ્ ॥ ૧ ॥ ”

અર્થ ભાવ--યસ્તુ આગમાદિકં પંચવિધં વ્યવહારં જાનાતિ સ વ્યવહારવા-
નિત્યુચ્યતે । તથા-યઃ સ્વાતિચારમ્ ઉપગૂહંતં=નિહનુવાનં સાધું તથાવિધયા
યુક્તયા તત્સર્વમતિચારજાતમાલોચયતિ, સોઽપત્રીડઃ=અપત્રીડક ઇત્યુચ્યતે ઇતિ
૪ ॥ પ્રકારકઃ--આલોચનાનન્તરં યોઽતિચારવતઃ સાધોઃ શુદ્ધિકારકઃ સઃ । તેદુક્તમ્-

“ આલોચ્યમ્મિ સોર્હિ, જો કારાવેદ્ સો પંકુવ્વઓ ”

હોતા હૈ--આલોચના કરનેવાલે સાધુકો જો લજ્જા રહિત કરતા હૈ, વહ
અપત્રીડક હૈ, અર્થાત્-જો લજ્જાકે વશસે અચ્છી તરહ આલોચના
નહીં કરતા હૈ, એસે સાધુસે જો સમ્યક્ પ્રકારસે સવ આલોચના કરા
લેતા હૈ, વહ અપત્રીડક હૈ-તદુક્ત--“વવહારવં વવહારં” ઇત્યાદિ ।

જો આગમાદિ રૂપ પાંચ પ્રકારકે વ્યવહારકો અચ્છી તરહસે જાનતા
હૈ, વહ વ્યવહારવાન્ કહા જાતા હૈ, તથા-જો અપને અતિચારોંકો છુપાતા
હૈ, ડસસે જો યુક્તિસે ડન અતિચારોંકી આલોચના કરવા લેતા હૈ,
વહ અપત્રીડક હૈ, જો પ્રકારક હોતા હૈ-આલોચનાકે વાદ જો અતિ-
ચારવાલે સાધુકી શુદ્ધિ કરનેવાલા હોતા હૈ, વહ પ્રકારકહૈ કહોં મીહૈ-

હાર, આજ્ઞા વ્યવહાર, ધારણા વ્યવહાર અને છત વ્યવહારને જે બોણુકાર
હોય છે તેને વ્યવહારવાન્ કહે છે), જે અણુગાર અપત્રીડક હોય છે (આલોચના
કરનાર સાધુને જે લબ્બા (સંકેત) રહિત કરે છે, તેને અપત્રીડક કહે છે.
એટલે કે જે અતિચાર યુક્ત સાધુ લબ્બાને કારણે સારી રીતે આલોચના કરતા
નથી એવા સાધુને સમજાવીને સમ્યક્ પ્રકારે જે આલોચના કરાવી દે છે તેને
અપત્રીડક કહે છે.) કહ્યું પણ છે કે--“વવહારવં વવહારં” ઇત્યાદિ.

જે આગમાદિ રૂપ પાંચ પ્રકારના વ્યવહારને સારી રીતે બોણું છે, તેને
વ્યવહારવાન્ કહે છે. એવા સાધુઓ પોતાના અતિચારને યુક્તિપ્રયુક્તિ પૂર્વક
સમજાવીને તેમના અતિચારોની આલોચના કરાવનાર સાધુને અપત્રીડક કહે છે.

જે અણુગાર પ્રકારક હોય છે (આલોચના કર્યા બાદ અતિચારવાળા
સાધુની શુદ્ધિ કરાવનાર હોય છે તેને પ્રકારક કહે છે. કહ્યું પણ છે કે--“ આલો-

છાયા—આલોચિતે શોધિં યઃ કારયતિ સ પ્રકારકઃ—ઇતિ ॥ ૫ ॥

અપરિસ્ત્રાવી—પરિસ્ત્રવતીત્યેવં શીલઃ પરિસ્ત્રાવી, ન તથા—અપરિસ્ત્રાવી—આલો-
ચક દોષાણામન્યેભ્યોઽકથનશીલઃ, તદુક્તમ્—

“ જો અન્નસ્સ ડ દોસે, ન કહેઈં ય અપરિસાઈં સો હોઈ ”

છાયા—યઃ અન્યસ્ય તુ દોષાન્ ન કથયતિ ચ અપરિસ્ત્રાવી સ ભવતિ । ઇતિ ॥ ૬ ॥

નિર્યાપકઃ—નિર્યાપયતિ—તથાવિધયાં યુક્તયા ગુર્વપિ પ્રાયશ્ચિત્તં શિષ્યેણ નિર્વા-
હયતિ યઃ સઃ, તથા । તદુક્તમ્—

“ નિજ્જવઓ તહ કુણઈં, નિવ્વહઈં જેણ પચ્છિત્તં ”

છાયા—નિર્યાપકસ્તથા કરોતિ નિર્વહતિ યેન પ્રાયશ્ચિત્તમ્—ઇતિ ॥ ૭ ॥

તથા—અપાયદર્શી—અપાયાન્=અનર્થાન્ પરચતીત્યેવં શીલઃ,—દુર્ભિક્ષદૌર્બલ્યા-
દિકૃતશિષ્યચિત્તમજ્ઞનિર્વાહાદિરૂપાનર્થદર્શી । યદ્વા—સમ્યગ્નાલોચિતશિષ્યેભ્યો
દુર્લભત્રોધિકૃત્વાદિકાન્ અનર્થાન્ દર્શયતિ યઃ સ તથા ।

તદુક્તમ્—“ દુર્ભિક્ષદુર્બલાઈં, હહલોણ જાણણ અવાણ ડ ।

દંસેઈં ય પરલોણ, દુલ્લહ્વોહિત્તિ સંસારે ॥ ૧ ॥ ”

“ આલોહ્યમ્મિ સોહિં ” ઇત્યાદિ ।

જો અપરિસ્ત્રાવી હોતા હૈ—આલોચકકે દોષોંકો જો દૂસરોંસે નહીં
કહતા હૈ, વહ અપરિસ્ત્રાવી હૈ કહા ભી હૈ—

“ જો અન્નસ્સ ડ દોસે ” ઇત્યાદિ ।

જો નિર્યાપક હોતા હૈ—જો યુક્તિસે પ્રદત્ત ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્તકી ભી
શિષ્યકે દ્વારા પાલન કરા લેતા હૈ વહ નિર્યાપક હૈ કહા ભી હૈ—

“ નિજ્જવઓ તહ કુણઈં ” ઇત્યાદિ ।

જો અપાયદર્શી હોતા હૈ—યદિ શિષ્ય અચ્છી તરહસે આલોચના
આદિ નહીં કરતા હૈ, તો ડંસે ઘોધિ આદિકી પ્રાપ્તિ હોના દુર્લભ હૈ,

હ્યમ્મિ સોહિં ” ઇત્યાદિ), જે અપરિસ્ત્રાવી હોય છે (આલોચકના દોષોને જે
અન્યની પાસે પ્રકટ કરતો નથી તેને અપરિસ્ત્રાવી કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ જો
અન્નસ્સ ડ દોસે ” ઇત્યાદિ), જે નિર્યાપક હોય છે (જે પ્રદત્ત ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્તનું
પણ યુક્તિપૂર્વક શિષ્ય પાસે પાલન કરાવવાને સમર્થ હોય છે, તેને નિર્યા-
પક કહે છે કહ્યું પણ છે કે “ નિજ્જવઓ તહ કુણઈં ” ઇત્યાદિ), જે અપા-
યદર્શી હોય છે (જે શિષ્ય સમ્યક્ રીતે આલોચના આદિ કરે નહીં તો તેને
ઘોધિ આદિની પ્રાપ્તિ થવાનું દુર્લભ બની જશે, ઇત્યાદિ અનર્થોનું શિષ્યને

છાયા—દુર્ભિક્ષદૌર્બલ્યાદીન્ન હલોકે જાનાતિ અપાયંસ્તુ ।

દર્શયતિ ચ પરલોકે દુર્લભબોધિત્વં સંસારે ॥ ૧ ॥ ઇતિ । ૮ ॥

અત્ર ગુણેષુ નિર્દેષ્ટવ્યેષુ ગુણિનો નિર્દેશો ગુણગુણિનોરમેદમાશ્રિત્ય બોધ્યઃ ।
 એવમગ્રેડપિ ।

હત્યાદિ અનર્થોંકો જો ડન્હેં દિશ્વાનેકે સ્વભાવવાલા હોતા હૈ, વહ અપાય દર્શી હૈ કહા ખી હૈ—“ દુર્ભિક્ષદુર્બલાઈ ” હત્યાદિ ।

શિષ્યકો યદિ અચ્છી તરહસે ભિક્ષા આદિકી પ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ, વહ દુર્બલ હો સકતા હૈ, દુર્બલતા આનેસે ડસકા ચિત્ત ભંગ ખી હો સકતા હૈ, ચિત્તભંગ હો જોનેસે ફિર ડસકા નિર્વાહ હોના કઠિન હો સકતા હૈ, હસ તરહસે જો શિષ્યજનોંકે લિયે અપાયકા દિશ્વાનેવાલા હોતા હૈ વહ અપાયદર્શી હૈ ।

યહાં ગુણોંકે નિર્દેશ હોનેકા પ્રકરણ થા, પરન્તુ ગુણીકા નિર્દેશ કિયા ગયા હૈ, વહ ગુણ ગુણીમેં અમેદકો લેકર કિયા ગયા હૈ, હસી પ્રકારસે આગે ખી સમજ્ઞ લેના ચાહિયે.

ભાન કરાવવાના સામર્થ્યવાળા અણુગારને અપાયદર્શી કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—
 દુર્ભિક્ષદુર્બલાઈ ” ઇત્યાદિ)

શિષ્યને જે સારી રીતે ભિક્ષા આદિની પ્રાપ્તિ થતી નથી, તે તેનામાં દુર્બલ પણ આવી જાય છે. દુર્બલતા આવી જવાને કારણે તેનામાં માનસિક અસ્થિરતા આવી જવાનો પણ સંભવ રહે છે. માનસિક અસ્થિરતા આવી જાય તે તેને માટે પોતાનો નિર્વાહ ચલાવવાનું પણ કઠણ થઈ જાય છે. આ પ્રકારે જે આચાર્ય આદિ શિષ્યજનોને અપાય દર્શાવનારો હોય છે તેને અપાયદર્શી કહે છે. આ રીતે પોતાના અતિચારોની આલોચના કરવા માગતા આલોચક દ્વારા પોતાના જે અતિચારો પ્રકટ કરવાના હોય, તે અતિચારો સાંભળવાને પાત્ર એજ અણુગારને ગણી શકાય છે, કે જેનામાં નીચેના આઠ ગુણોનો સંદ્ભાવ હોય છે—(૧) તે આચારવાન હોવો જોઈએ, (૨) તે અવધારવાન હોવો જોઈએ (૩) તે વ્યવહારવાન હોવો જોઈએ (૪) તે અપત્રીક હોવો જોઈએ (૫) તે પ્રકારક હોવો જોઈએ, (૬) તે અપરિસ્ત્રાવી હોવો જોઈએ. (૭) તે નિર્ધાપક હોવો જોઈએ અને (૮) તે અપાયદર્શી હોવો જોઈએ. આ બધાં પદોનો અર્થ ઉપર ક્ષપ્ત કરવામાં આવ્યો છે.

અહીં ગુણોનો નિર્દેશ થવો જોઈતો હતો, પરન્તુ ગુણ અને ગુણીમાં અભેદનો ઉપચાર કરીને અહીં ગુણીનો નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે. એજ પ્રમાણે આગળ પણ સમજવાનું છે.

સ્થમાલોચનાદાતુર્ગુણાનુક્ત્રા સમ્પ્રતિ આલોચકસ્ય ગુણાનાહ—‘અદૃહિ’
 इत्यादि ।

અષ્ટભિઃ સ્થાનૈઃ=ગુણૈર્યુક્તોડનગારોડૃહિતિ આત્મદોષમ્=સ્વાપરાધમ્ આલો-
 ચયિતુમ્, તથા—જાતિસમ્પન્નઃ—જાતિઃ=માતૃકો વંશઃ, તેન સમ્પન્નઃ=યુક્તઃ ॥૧॥
 કુલસમ્પન્નઃ—કુલં=પૈતૃકો વંશઃ, તેન સમ્પન્નઃ ૨। એવંવિધઃ, પુરુષઃ પ્રાયોડકૃત્ય-
 મેવ ન કરોતિ, યદિ કથંચિત્ કરોતિ તતઃ પશ્ચાત્તાપત્તમ્ સ આલોચયત્યેવેતિ
 “ જાતિસમ્પન્નઃ કુલસમ્પન્નઃ ” ઇતિ સ્થાનદ્વયમુક્તમ્ । તદુક્તમ્—

“ જાડકુલસંપન્નો, પાયમકિંચં ન સેવશ્ચ કિંચિ ।

આસેવિજ્ઞ પચ્છા, તગુણો સમ્પમાલો ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—જાતિકુલસમ્પન્નઃ પ્રાયઃ અકૃત્યં ન સેવતે કિંચિત્ ।

આસેવ્ય પશ્ચાત્તદ્ગુણતઃ સમ્પમાલોચયતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

इस प्रकारसे आलोचना दाताके गुणोंका कथन कर अथ सूत्रकार
 आलोचकके गुणोंका कथन करते हैं—“ अदृहि ” इत्यादि—

આઠ ગુણોસે યુક્ત અનગાર અપને અપરાધરૂપ દોષોંકી આલોચના
 કરનેકે યોગ્ય હોતા હૈ—વે આઠ ગુણ હસ પ્રકારસે હૈ—જાતિ સંપન્ન ૧—
 જો માતૃકવંશ રૂપ જાતિસે યુક્ત હોતાહૈ, વહ અપને અપરાધરૂપ દોષોંકી
 આલોચના કરનેકે યોગ્ય હોતાહૈ ૧—હસી પ્રકારસે જો કુલ સંપન્ન હોતા
 હૈ—પૈતૃક વંશસે યુક્ત હોતા હૈ એસા પુરુષ પ્રાયઃ અકૃત્યહી નહીં કરતા—
 હૈ—યદિ કથંચિત્ વહ કરતા ખી હૈ તો વહ પશ્ચાત્તાપસેં તેસ હોકર ઇન

આ પ્રકારે આલોચના દાતાના ગુણોનું વર્ણન નિરૂપણ કરીને ઉર્વે
 સૂત્રકાર આલોચકના ગુણોનું નિરૂપણ કરે છે—

“અદૃહિ” ઇત્યાદિ—નીચે દર્શાવેલા આઠ ગુણોથી સંપન્ન હોય એવા
 અણુગાર પોતાના અપરાધરૂપ દોષોની આલોચના કરવાને યોગ્ય ગણાય છે.—
 (૧) જાતિ સંપન્ન, (૨) કુલ સંપન્ન, (૩) વિનય સંપન્ન, (૪) જ્ઞાન સંપન્ન
 (૫) દર્શન સંપન્ન (૬) ચારિત્ર સંપન્ન, (૭) ક્ષાન્ત અને (૮) દાન્ત.

જાતિ સંપન્ન—ઉત્તમ માતૃવંશ યુક્તને જાતિ સંપન્ન કહે છે. કુલ સંપન્ન—
 ઉત્તમ પિતૃવંશથી સંપન્ન હોય એવાને કુલ સંપન્ન કહે છે. જાતિ સંપન્ન અને
 કુલ સંપન્ન સાધુ, સામાન્ય રીતે અકૃત્ય કરતા નથી. કદાચ તેનાથી કોઈ અકૃત્ય
 સેવન થઈ જાય છે, તો પશ્ચાત્તાપ રૂપી અગ્નિથી તેનું મન તપ થઈ જાય છે,
 અને તે પોતાના દોષની આલોચના અવશ્ય કરી જ લે છે. આ પ્રકારે જાતિ

તથા-વિનયસમ્પન્નઃ=વિનીતઃ, एवंविधः शिष्योऽनायासेनैव सर्वमालोचयति
૩। જ્ઞાનસમ્પન્નઃ=જ્ઞાનવાન, एतादृशो मुनिर्दोषविपाकं प्रायश्चित्तं चाऽनायासेना-
वगच्छति । तदुक्तम्—

“ नाणेण उ संपन्नो, दोषविनाशं वियाणितं घोरं ।

आलोपइ सुहचिय, पायच्छित्तं च अवगच्छे ॥ ૧ ॥

છાયા—જ્ઞાનેન તુ સમ્પન્નો દોષવિપાકં વિજ્ઞાય ઘોરમ્ ।

आलोचयति सुखमेव प्रायश्चित्तं च अवगच्छति ॥૧॥ इति ॥૪॥

દોષોંકી આલોચના કરતા હી હૈ, હસ તરહ જાતિ સંપન્ન ઓર કુલ
સંપન્ન યે દો સ્થાન કહેહૈં કહા બીહૈ—“ જાહ કુલસમ્પન્નો ” હત્યાદિ ।
इसका अर्थ स्पष्ट है--

વિનય સંપન્ન--જો વિનીત હોતા હૈ, એસા શિષ્ય વિના કિસીકે
કહે સુને શાન્તિસે અપને અતિચારોંકી આલોચના કરતાહૈ । ૩।

જ્ઞાન સંપન્ન--જો શિષ્ય જ્ઞાનવાલા હોતા હૈ, એસા વહ મુનિ શિષ્ય,
દોષ વિપાકવાલે પ્રાયશ્ચિત્ત અનાયાસસેહી જાન લેતા હૈ ૪। કહા બીહૈ--
“ નાણેણ ઉ સંપન્નો ” હત્યાદિ ।

જો શિષ્ય સમ્યગ્જ્ઞાનસે યુક્ત હોતા હૈ, વહ વાત ખલીભાંતિ જાનૂતા
હૈ, કિ લગે હુએ દોષોંકા વિપાક ભયંકર ફલદાતા હોતા હૈ, અતઃ
इन दोषोंकी शुद्धि केवल एक प्रायश्चित्तसेही होतीहै, इसलिये वह उनकी
આલોચના કરતા હૈ, ઓર દિયા હુઆ પ્રાયશ્ચિત્તકો અચ્છી તરહસે
સ્વીકાર કર લેતા હૈ.

સંપન્ન અને કુલસંપન્ન સાધુને અહીં આલોચના કરવાને પાત્ર ગણાવ્યો છે.
કહ્યું પણ છે કે--“ જાહકુલસંપન્નો ” ઇત્યાદિ. તેનો અર્થ સ્પષ્ટ છે.

વિનય સંપન્ન--જે સાધુ વિનીત હોય છે, તે કોઈ ન કહે તો પણ
શાન્તિથી પોતાના અતિચારોની આલોચના કરે છે.

જ્ઞાનસંપન્ન--જે શિષ્ય (સાધુ) જ્ઞાનસંપન્ન હોય છે, તે દોષવિપાક-
પ્રાયશ્ચિત્તને અનાયાસે જ બાણી લે છે. કહ્યું પણ છે કે--

“ નાણેણ ઉ સંપન્નો ” ઇત્યાદિ --

જે સાધુ સમ્યગ્જ્ઞાનથી યુક્ત હોય છે, તે આ વાત ઘણી જ સારી
રીતે બાણી શકે છે કે--પોતાને જે અતિચારો લાગે છે, તેનો વિપાક લયંકર
ફલદાતા હોય છે, તે બાણે છે કે તે દોષો ગુરુની સમક્ષ પ્રકટ કરીને યોગ્ય
પ્રાયશ્ચિત્ત લેવાથી જ તેમની શુદ્ધિ થઈ શકે છે તેથી તે પોતાના દોષોને ગુરુ
સમક્ષ પ્રકટ કરવા રૂપ આલોચના પણ કરે છે અને ગુરુ દ્વારા જે પ્રાયશ્ચિત્ત
આપવામાં આવે, તેનો પણ સમ્યક્ રૂપે સ્વીકાર કરે છે.

દર્શનસમ્પન્નઃ=શ્રદ્ધાવાન્ એવં ત્રિયઃ પુરુષઃ ‘દોષા અનર્થકરાઃ’ इति શ્રદ્ધત્તે ॥ ૬ ॥ ચારિત્રસમ્પન્નઃ=ક્રિયાવાન્, સ ચ ભૂયસ્તમપરાધં ન કરોતિ, સમ્યગ્-
લોચયતિ, પ્રાયશ્ચિત્તં ચ નિર્વાહયતિ । તદુક્તમ્—

“સુદ્ધો તદ્વત્તિ સમ્મં, સદ્દર્શં દંયણેણ સંપન્નો ।

ચરણેણ ડ સંપન્નો, ન કુણ્ઙ મુજ્જો તમવરાહં ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—સુદ્ધસ્તયેતિ સમ્યક્, શ્રદ્ધત્તે દર્શનેન સમ્પન્નઃ ।

ચરણેન ડ સમ્પન્નો, ન કરોતિ ભૂયસ્તમપરાધમ્ ॥ ૧ ॥ इति ॥ ૬ ॥

ક્ષાન્તઃ=ક્ષમાશીલઃ, એતાદૃશ આચાર્યૈઃ કઠોર વચનેનોક્તોડપિ ન કદાચિ-
દપિ ચેતસિ રોષમાવહતિ । તદુક્તમ્—

“સ્વંતો આચરિણ્ઙિ, ફરુષં મણિઓવિ ન વિ રુસે । ”

છાયા—ક્ષાન્ત આચાર્યૈઃ પરુષં મણિતોડપિ નાપિ રુષ્યેત્—इति ॥ ૭ ॥

દર્શન સંપન્ન—જો શિષ્ય શ્રદ્ધાવાલા હોતા હૈ, એસા વહ શિષ્ય
“દોષ અનર્થકર હોતેહૈ ” હસ વાનકે ડર દઢ શ્રદ્ધાવાલા હોતા હૈ. ૬

ચારિત્ર સંપન્ન—જો શિષ્ય ચારિત્ર સમ્પન્ન હોતા હૈ, ક્રિયાવાલા
હોતા હૈ ડસ અપરાધાકી અઢઢી તરહસે આલોચના કરતા હૈ, ઓર
ગૃહીત પ્રાયશ્ચિત્તકા નિર્વાહ કરતા ૬ હૈ કહા મી હૈ—

“સુદ્ધો તદ્વત્તિ સમ્મં ” इत्यादि ।

ક્ષાન્ત—જો શિષ્ય ક્ષમાશીલ હોતા હૈ, વહ આચાર્યકે દ્વારા કઠોર
વચન કહે જાને પર મી અવને ચિત્તમેં રોષ નહીં લાતાહૈ ૭ કહા મીહૈ—

“સ્વંતો આચરિણ્ઙિ ” इत्यादि ।

દર્શન સંપન્ન—જે શિષ્ય શ્રદ્ધાવાળો હોય છે, તેને ઓ વાત પ્રત્યે દઢ શ્રદ્ધા
હોય છે કે “દોષ અનર્થકર હોય છે.”

ચારિત્ર સંપન્ન—જે શિષ્ય ચારિત્ર સંપન્ન હોય છે—ક્રિયાવાળો હોય છે—તે
ફરી ઓવો અપરાધ કરતો નથી. તે પોતાના અતિચારોની સારી આલોચના
કરે છે અને તે અતિચારોની વિશુદ્ધિ માટે જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામાં આવ્યું હોય
છે, તેનું સારી રીતે પાલન કરે છે કહ્યું પણ છે કે—

“સુદ્ધો તદ્વત્તિ સમ્મં ” इत्यादि.

ક્ષાન્ત—જે શિષ્ય ક્ષમાશીલ હોય છે, તે આચાર્ય દ્વારા કઠોર વચનો
કહેવામાં આવે તો પણ પોતાના મનમાં રોષ કરતો નથી. કહ્યું પણ છે કે—

“સ્વંતો આચરિણ્ઙિ ” इत्यादि

તથા-દાન્તઃ=નિગૃહીતેન્દ્રિયઃ, અયં હિ દત્તં પ્રાયશ્ચિત્તં વોહું સમર્થો ભવતિ ।
તદુક્તમ્—“ દંતો સમત્યો વોહું પચ્છિત્તં જમિહ દિજ્જપ તસ્સ ” ।

છાયા--દાન્તઃ સમર્થો વોહું પ્રાયશ્ચિત્તં યદિહ દીયતે તસ્મૈ-ઇતિ ॥ ૮ ॥

ઇત્યમાલોચકગુણાનુક્તયા સમ્પતિ તત્કૃતાનિ પ્રાયશ્ચિત્તાનિ અટ્ટસ્થાનત્વેન પ્રરૂપયિતુમાહ—‘ અટ્ટવિહે ’ ઇત્યાદિ ।

પ્રાયશ્ચિત્તમ્—‘ પ્રાયશ્ચિત્ત ’ શબ્દોપરાધે તત્કલ્પ્યો ચ દૃશ્યતે । અત્ર અપ-
રાધોડ્યો વિજ્ઞેયઃ, તત્તથ પ્રાયશ્ચિત્તમ્=અપરાધઃ અષ્ટવિધં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-
આલોચનાર્હમ્-આલોચનાઃ=નિવેદના, તદ્વક્ષણં શુદ્ધિમર્હતિ યાવત્ ૧ । પ્રતિક્રમણા-

દાન્ત--જો શિષ્ય ઇન્દ્રિયોંકા નિગ્રહ કરનેવાલા હોતા હૈ-વહ દિયે
હુપ પ્રાયશ્ચિત્ત કો વહન કરનેકે લિયે સમર્થ હોના હૈ ૮ કહા મી હૈ--

“ દંતો સમત્યો વોહું ” ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રકારસે આલોચકકે ગુણોંકો કહકર અથ સૂત્રકાર ઉનકે
દ્વારા કિયે ગયે પ્રાયશ્ચિત્તોંકો આઠ સ્થાનોંસે પ્રરૂપણા કરતે હૈન--“ અટ્ટવિહે ”
ઇત્યાદિ--“ પ્રાયશ્ચિત્ત ” યહ શબ્દ અપરાધ ઓર ઉસકી શુદ્ધિમેં વ્યવહર
હુઆ દેખા જાતા હૈ, યહાં અપરાધ અર્થ પ્રાયશ્ચિત્ત શબ્દકા પ્રયોગમેં
હુઆ હૈ હસ તરહ પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ અપરાધ આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ--

જો પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચનારૂપ નિવેદનાસે શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતા હૈ, વહ
આલોચનાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ, જો પ્રાયશ્ચિત્ત મિથ્યાદુષ્કૃતિ (મિચ્છામિ દુક્કંડ)
દેનેસે શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતા હૈ, વહ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રતિક્રમણાર્હ હૈ ૨, જો પ્રાય-

દાન્ત--જે શિષ્ય ઇન્દ્રિયોના નિગ્રહ કરનારો હોય છે તેને દાન્ત કહે છે.
એવો શિષ્ય તેને જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામાં આવ્યું હોય, તેને વહન કરવાને
સમર્થ હોય છે. કહું પણ છે કે દંતો સમત્યો વોહું ” ઇત્યાદિ.

આ પ્રમાણે આલોચકના ગુણોનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર તેના દ્વારા
કરાયેલા પ્રાયશ્ચિત્તોના આઠ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે--

“ અટ્ટવિહે ” ઇત્યાદિ.

“ પ્રાયશ્ચિત્ત ” આ પદ અપરાધ અને તેની શુદ્ધિના અર્થોનું વાચક છે.
એટલે કે અહીં પ્રાયશ્ચિત્ત પદ અપરાધના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયું છે. આ રીતે
પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ અપરાધના આઠ પ્રકારો અહીં પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે--

(૧) અલોચનાર્હ--જે પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચના રૂપ નિવેદન માત્રથી જ શુદ્ધ
થઈ જવાને યોગ્ય હોય છે, તેને આલોચનાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૨) પ્રતિક્રમણાર્હ--જે પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રતિક્રમણ દ્વારા-મિથ્યા દુષ્કૃતિ દેવા
માત્રથી શુદ્ધિને યોગ્ય હોય છે તેને પ્રતિક્રમણાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

હર્ષ-પ્રતિક્રમણમ્=મિથ્યાકૃત્, તદર્હતિ ચત્ત ૨। તદુભયાર્હમ્-આલોચના પ્રતિ-
ક્રમણેત્યુભયાર્હમ્ ૩। વિવેકાર્હમ્-વિવેકઃ=અશુદ્ધભક્તાદિત્યાગરૂપઃ, તદર્હમ્ ૪।
વ્યુત્સર્ગાર્હમ્-વ્યુત્સર્ગઃ=કાયોત્સર્ગઃ, તદર્હમ્ ૫। તપોર્હમ્-તપઃ=નિર્વિકૃતિકાદિ-
રૂપં, તદર્હમ્ ૬। છેદાર્હમ્-છેદઃ=પ્રવ્રજ્યા પર્યાયસ્ય લઘૂકરણં, તદર્હમ્ ૭। તથા-
મૂલાર્હમ્-મૂલમ્=મહાવ્રતારોપણમ્, તદર્હ પ્રાયશ્ચિત્તમ્ ૮ ॥ ઇતિ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

જાત્યાદિ મદેષુ સત્સુ જના આલોચનાયાં ન પ્રવર્તન્તે, ઇતિ મદાન્ અષ્ટસ્થાન-
ત્વેન નિરૂપયતિ--

મૂલમ્-અટ્ટ મયટ્ટાણા પણણત્તા, તં જહા-જાહમણ ૧, કુલ-
મણ ૨, બલમણ ૩, રૂવમણ ૪, તવમણ ૫, સુધમણ ૬, લાભ-
મણ ૭, ઇસ્સરિયમણ ૮ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

શ્ચિત્ત આલોચના એવં પ્રતિક્રમણસે શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતાહૈ, વહ તદુભયાર્હ
પ્રાયશ્ચિત્તહૈ, જો પ્રાયશ્ચિત્ત અશુદ્ધ ભક્ત (આહાર)ભાદિકે ત્યાગસે શુદ્ધિકે
યોગ્ય હોતા હૈ, વહ વિવેકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ, જો પ્રાયશ્ચિત્ત કાયોત્સર્ગસે
શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતા હૈ, વહ વ્યુત્સર્ગાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ । જો પ્રાયશ્ચિત્ત
તપસ્યાસે શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતા હૈ, વહ તપોર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ । જો પ્રાય-
શ્ચિત્ત પ્રવ્રજ્યા પર્યાયકે છેદ કરનેસે શુદ્ધિકે યોગ્ય હોતાહૈ, વહ છેદાર્હ પ્રાય-
શ્ચિત્તહૈ, જો મહાવ્રતારોપણકે યોગ્ય હોતાહૈ, વહ મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્તહૈ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

(૩) તદુભયાર્હ-જે પ્રાયશ્ચિત્ત આલોચના અને પ્રતિક્રમણ, બન્ને દ્વારા
શુદ્ધિને યોગ્ય હોય છે તેને તદુભયાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૪) વિવેકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત-જે પ્રાયશ્ચિત્ત અશુદ્ધ આહાર આદિના ત્યાગ વડે
શુદ્ધિને પાત્ર હોય છે, તેને વિવેકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૫) વ્યુત્સર્ગાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત-જે પ્રાયશ્ચિત્ત કાયોત્સર્ગ દ્વારા શુદ્ધિને યોગ્ય
હોય છે, તેને વ્યુત્સર્ગાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૬) તપર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત-જે પ્રાયશ્ચિત્ત તપસ્યા દ્વારા શુદ્ધિને યોગ્ય હોય
તેને તપર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૭) છેદાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રવ્રજ્યા પર્યાયના છેદન દ્વારા શુદ્ધિને યોગ્ય હોય
છે, તેને છેદાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

(૮) મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત-મહાવ્રતારોપણને યોગ્ય જે પ્રાયશ્ચિત્ત હોય છે,
તેને મૂલાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે. ॥ સૂ. ૧૭ ॥

છાયા—અષ્ટ મદસ્થાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—જાતિમદઃ ૧, કુલમદઃ ૨, બલમદઃ ૩, રૂપમદઃ ૪, તપોમદઃ ૫, શ્રુતમદઃ ૬, લાભમદઃ ૭, ऐश्वर्यमदઃ ૮ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

ટીકા—‘અઠ મયદ્વાળા’ ઇત્યાદિ—

મદસ્થાનાનિ=મદભેદાઃ અષ્ટ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—જાતિમદ ઇત્યાદિ । વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । જાત્યાદિમદેષુ સત્સુ પ્રાણિનિ હલોકે ઉન્મત્તા દુઃખિતાશ્ચ ભવન્તિ, પરલોકે ચ હીનજાત્યાદિકાઃ । તદુક્તમ્—

“જાત્યાદિમદોન્મત્તઃ, પિશાચવદ્ ભવતિ દુઃખિતશ્ચેહ ।

જાત્યાદિ હીનતાં પરભવે ચ નિઃસંશયં લભતે ॥ ૧ ॥” ઇતિ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

જાત્યાદિ મદોંકે હોને પર મનુષ્ય આ એવનામે પ્રવૃત્તિ નહીં કરતે હૈં હસલિયે અથ સૂત્રકાર મદોંકાં આઠ સ્થાન રૂપસે નિરૂપણ કરતે હૈં—

“અઠ મયદ્વાળા પળ્લત્તા” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—આઠ મદકે ભેદ કહે ગયે હૈં—જૈસે—જાતિમદ, કુલમદ, બલમદ, રૂપમદ, તપમદ, શ્રુતમદ, લાભમદ ઓર ऐश्वर्यમદ જાત્યાદિ મદોંકે હોને પર પ્રાણી હસ લોકમે ઉન્મત્ત ઓર દુઃખિત હોતે હૈં એવં પરલોકમે હીન જાતિ આદિવાલે હોતે હૈં—કહા મી હૈ—

“જાત્યાદિ મદોન્મત્તઃ” ઇત્યાદિ ।

જાતિમદ આદિ મદોંસે ઉન્મત્ત હુઆ વ્યક્તિ હસ લોકમે પિશાચ કી તરહ હોતા હૈ ઓર વહ સદા દુઃખિત બના રહતા હૈ, તથા—પરભવમે વહ નિશ્ચયસે જાતિ આદિકી હીનતા ચાલા હોતા હૈ ॥ સૂત્ર-૧૮ ॥

જાત્યાદિ મદોંકો જે મનુષ્યમાં સદ્ભાવ હોય છે તે મનુષ્ય જ આલોચના આદિ કરતો નથી. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર આઠ પ્રકારના મદનું પ્રતિપાદન કરે છે—

“અઠ મયદ્વાળો પળ્લત્તા” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—મદના આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) જાતિમદ, (૨) કુલમદ, (૩) બલમદ (૪) રૂપમદ, (૫) તપમદ, (૬) શ્રુતમદ, (૭) લાભમદ અને (૮) ऐश्वર્યમદ. જ્યારે માણસમાં જાત્યાદિ મદોંકો સદ્ભાવ હોય છે, ત્યારે માણસ આ લોકમાં ઉન્મત્ત અને દુઃખી થાય છે, અને પરલોકમાં પણ હીનજાતિ આદિની પ્રાપ્તિ કરે છે. કથું પણ છે કે—“જાત્યાદિ મદોન્મત્તઃ” ઇત્યાદિ—

જાતિ આદિ મદો વડે ઉન્મત્ત બનેલો મનુષ્ય આ લોકમાં પિશાચ જેવો બની જાય છે, અને તે સદા દુઃખ જ ભોગવતો રહે છે. તથા પરલવમાં પણ તે જાતિ આદિની હીનતા પ્રાપ્ત કરીને દુઃખ જ પામતો રહે છે. ॥ સૂ. ૧૮ ॥

અનન્તરસૂત્રે શ્રુતમદઃ પ્રોક્તઃ, વાદિનશ્ચ પ્રાયરતદ્વન્તો ભવન્તીતિ વાદિવિશે-
પાન્ અષ્ટ સ્થાનત્વેનાહ—

મૂલસૂ—અટ્ટ અકિરિયાવાર્દ પળ્લન્તા, તં જહા—એગાવાર્દ ૧,
અળેગાવાર્દ ૨, મિયવાર્દ ૩, નિમ્મિયવાર્દ ૪, સાયવાર્દ ૫, સમુ-
ચ્છેયવાર્દ ૬, ણિયાવાર્દ ૭ ણસંતિ પરલોગવાર્દ ૮ ॥ સૂ૦૧૧ ॥

છાયા—અષ્ટ અક્રિયાવાદિનઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા—એકવાદી ૧, અનેકવાદી
૨, મિતવાદી ૩, નિર્મિતવાદી ૪, સાતવાદી ૫, સમુચ્છેદવાદી ૬, નિત્યવાદી
૭, ન શાન્તિપરલોકવાદી ૮ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

ટીકા—“ અટ્ટ અકિરિયાવાર્દ ” इत्यादि—

અક્રિયાવાદીનઃ—ક્રિયા=સકલપદાર્થાન્વિતા અસ્તીતિરૂપા, સત્ર અયથાર્થતયા
કુત્સિતા—અક્રિયા, નવઃ કુત્સિતાર્થત્વસ્યોક્તત્વાત્, તામ્ અક્રિયાં વદન્તીત્યેવં

ऊपरके सूत्रमें श्रुतमद कहा गया है यह श्रुतमद जो वादीजन
होतेहैं, उनको प्रायः करके होताहै, अतः अय सूत्रकार वादि विशेषोंकी
प्ररूपणा करते हैं—“ अट्ट अकिरियावार्द पण्णत्ता ” इत्यादी ॥

टीकार्थ—अक्रियावादी आठ कहे गयेहैं—जैसे—एकवादी १, અનેકવાદી ૨,
મિતવાદી ૩, નિર્મિતવાદી ૪, સાત વાદી ૫, સમુચ્છેદવાદી ૬, નિત્ય-
વાદી ૭ ન શાન્તિ પરલોકવાદી ૮ સકલ પદાર્થોંમેં અન્વય રૂપસે રહી
હુઈ “ અસ્તિ ” ऐसी जो क्रिया है यह अयथार्थ होनेसे कुत्सित है—
यहां नञ् कुत्सित अर्थका कहनेवाला है इस क्रियाको—अस्तिरूप
क्रियाको—इस तरह कुत्सितरूपसे कहनेका जिनका स्वभाव है वे अक्रि-

ઉપરના સૂત્રમાં શ્રુતમદ નામનો એક પ્રકાર બતાવવામાં આવ્યો છે.
વાદીજનોમાં સામાન્ય રીતે શ્રુતમદનો સદ્ભાવ હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર
વાદી વિશેષોની આઠ સ્થાનોની અપેક્ષાએ પ્રરૂપણા કરે છે—

“ અટ્ટ અકિરિયાવાર્દ પળ્લન્તા ” इत्यादि—(સૂ. ૧૩)

ટીકાર્થ—આઠ અક્રિયાવાદી કહ્યા છે—(૧) એકવાદી (૨) અનેકવાદી, (૩) મિત-
વાદી, (૪) નિર્મિતવાદી, (૫) સાતવાદી સમુચ્છેદવાદી, (૭) નિત્યવાદી અને (૮)
ન શાન્તિ પરલોકવાદી.

સકળ પદાર્થોમાં અન્વય રૂપે રહેલી “અસ્તિ” એવી જે ક્રિયા તે અયથાર્થ
હોવાથી કુત્સિત છે—અહીં નञ् કુત્સિત અર્થનો વાચક છે—અસ્તિ રૂપ ક્રિયાને—આ
પ્રમાણે કુત્સિત રૂપે કહેવાનો જેમનો સ્વભાવ છે, તેમને અક્રિયાવાદી કહે છે.

શીલા અક્રિયાવાદિનઃ—વસ્તુનામનેકાન્તાત્મકત્વં વાસ્તવિકં સ્વરૂપમનુપાદાય તદૈ-
કાન્તિકસ્વરૂપપ્રતિષ્ઠારો નાસ્તિકાઃ । એકાન્તવાદિન એતે વસ્તુતઃ પરલોકસાધ-
કક્રિયામપિ ન વદન્તિ, અતસ્તદભિમતપદાર્થસત્તાર્યા પરલોકસાધકક્રિયાયા
અનુપપત્તિરિતિ તેઽક્રિયાવાદિન એવેતિ । તેઽક્રિયાવાદિનઃ—અષ્ટ સંખ્યકાઃ
પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—

એકવાદી—એક એવ આત્માદિપદાર્થ ઇતિ વદતીત્યેવં શીલઃ । ‘ એગાવાઈ ’
ઇત્યત્ર પ્રાકૃતત્વાદ દીર્ઘઃ । એકવાદિમતં ચેત્થમ્ । તત્ર કશ્ચિદ્ ભૂતાત્મવાદી ।
તન્મતં ચેદમ્—

“ એક એવ હિ ભૂતાત્મા, ભૂતે ભૂતે વ્યવસ્થિતઃ ।

એકધા વહુધા ચૈવ, દૃશ્યતે જલચન્દ્રશ્ચ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

યાવાદ હૈં—યે અક્રિયાવાદી નાસ્તિક હૈં, કયોંકિ યે વસ્તુકા સ્વરૂપ જો
અનેકાત્મક હૈં ઉસે નહીં માનતે હૈં કિન્તુ એકાન્તાત્મકહી વસ્તુકા સ્વરૂપ
માનતેહૈં, યે એકાન્તવાદ વસ્તુતઃ પરલોક સાધક ક્રિયાકો ભી નહીં માનતે
હૈં, હસલિયે હનકેદ્વારા અભિમત(માનાહુવા)પદાર્થ સત્તામૈં પરલોક સાધક
ક્રિયાકી અનુપપત્તિ હૈં, ડસકા સદ્ભાવ સિદ્ધ નહીં હોતા હૈં, હસ તરહ
યે અક્રિયાવાદીહી હૈં, યે અક્રિયાવાદી જો પૂર્વોક્તરૂપસે આઠ પ્રકારકે
કહે ગયે હૈં—ડનકા અભિપ્રાય એસા હૈં—એકહી આત્માદિ પદાર્થ હૈં એસી
માન્યતા જિનકી હૈં વે એકવાદી હૈં—એકવાદકા મત હસ પ્રકારસે હૈં—
હસ એકવાદીમૈં જો ભૂતાત્મવાદી હૈં, ડસકા મન્તવ્ય એસા હૈં—

“ એક એવહિ ભૂતાત્મા ” ઇત્યાદિ ।

પ્રત્યેક ભૂતમૈં(પ્રાણીમૈં)એકહી ભૂતાત્મા વ્યવસ્થિતહૈં, વહ એક ભૂતાત્માહી

તે અક્રિયાવાદીઓ નાસ્તિક છે, કારણ કે વસ્તુનું જે અનેકાત્મક સ્વરૂપ છે, તેને
તેઓ માનતા નથી, પરંતુ વસ્તુના એકાન્તાત્મક સ્વરૂપને જ તેઓ માને છે આ
એકાન્તવાદ વસ્તુતઃ પરલોક સાધક ક્રિયાને પણ માનતો નથી. તેમના દ્વારા અભિમત
પદાર્થ સત્તામાં પરલોક સાધક ક્રિયાની અનુપપત્તિ છે. તેનો સદ્ભાવ સિદ્ધ થતો નથી
આ રીતે તેઓ અક્રિયાવાદી જ છે. હવે તે અક્રિયાવાદીઓના આઠ પ્રકારોનું
સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—“ એક જ આત્માદિ પદાર્થ છે, ” આ પ્રકારની
જેમની માન્યતા છે તેમને એકવાદી કહે છે. એકવાદીની માન્યતા આ પ્રકારની
છે—તે એકવાદીઓમાં જે ભૂતાત્મવાદી છે, તેનું મંતવ્ય એવું છે કે—

“ એક એવ હિ ભૂતાત્મા ” ઇત્યાદિ—

પ્રત્યેક ભૂતમાં એક જ ભૂતાત્મા વ્યવસ્થિત (વિદ્યમાન) છે. તે એક

एवम् — पुरुषाद्वैतवादि — शब्दाद्वैतवादि — सामान्याद्वैतवादिप्रभृतिमतानि विज्ञेयानि । इत्थमात्मनः पुरुषस्य शब्दस्य सामान्यस्य चैक्यवादिना मेषामनेकत्वेन अनेकचैक्यवादिनः । एते हि आत्माद्यतिरिक्तान् सतोऽपि पदार्थान् न स्वीकुर्वन्ति । आत्मादीनामैकान्तिकमेकत्वं युक्त्या न सिध्यति । अत एवामक्रियावादित्वमिति । १ ।

अनेकवादी—पदार्थानां कथंविदेकत्वे सत्यप्येकान्तस्तदनेकत्ववादी । अयं हि प्रमाणतः पदार्थानां परस्परविलक्षणत्वाद् रूपत्वेन रूपमिव परस्परविलक्षणानेव पदार्थान् मनुते । इत्थं चात्रारयाभिमतम्—यदि पदार्थानामेकत्वं स्यात्तर्हि जलचन्द्रकी तरह एक प्रकारका और अनेक प्रकारका दिग्वलाई देता है, इस प्रकार पुरुषाद्वैत, शब्दाद्वैत, सामान्याद्वैत-वादी आदि मत भी इस एकवादीके मनमेंहीहैं । इस तरह आत्माको पुरुष को, शब्दको और सामान्य को एक माननेवाले होनेसे ये एकत्ववादी ही अनेक प्रकारके एकत्ववादी हैं । ये एकवादी आत्मादिसे अतिरिक्त विद्यमान भी पदार्थोंको स्वीकार नहीं करते हैं, आत्मादिकोंमें एकान्तिक एकत्व युक्तिसे सिद्ध नहीं होगा है, इसलिये इनमें अक्रियावादिता है, पदार्थोंमें कथंचित् एकत्व होने पर भी एकान्ततः इनकी अनेकता कहनेवाला अनेकवादी हैं, यह अनेकवादी प्रमाणसे पदार्थोंमें परस्पर विलक्षणता होनेके कारण रूपत्वसे रूपकी तरह परस्परमें उन पदार्थोंमें भिन्नताही मानता है । उसका मत इस प्रकारसे है—यदि पदार्थोंमें एकता हो तो जीव,

બૂતાત્મા જ જલચન્દ્રની જેમ એક પ્રકારનો અને અનેક પ્રકારનો દેખાય છે. એજ પ્રમાણે પુરુષાદ્વૈત, શબ્દાદ્વૈત, સામાન્યાદ્વૈત, આદિ મતવાદીઓના મતને પણ એકવાદી જ કહેવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે આત્માને, પુરુષને, શબ્દને અને સામાન્યને એક માનનારા હોવાને કારણે તે એકત્વવાદીઓના જ અનેક પ્રકાર પડે છે. તે એકવાદી આત્માદિ સિવાયના વિદ્યમાન પદાર્થોનો પણ સ્વીકાર કરતા નથી, આત્માદિકોમાં એકાન્તિક એકત્વ યુક્તિ દ્વારા સિદ્ધ થતું નથી, તેથી તેમને અક્રિયાવાદી કહ્યા છે. પદાર્થોમાં અમુક દૃષ્ટિએ એકત્વ હોવા છતાં પણ એકાન્તતઃ તેમની અનેકતાનું પ્રતિપાદન કરનારા લોકોને અનેકવાદી કહે છે. આ અનેકવાદી પ્રમાણની અપેક્ષાએ પદાર્થોમાં પરસ્પર વિલક્ષણતા હોવાને કારણે તે પદાર્થોમાં ભિન્નતા જ માને છે. જેમ કે એક વસ્તુ કરતાં બીજી વસ્તુના રૂપમાં ભિન્નતા જણાય છે, તે કારણે તેઓ તે પદાર્થોમાં ભિન્નતાને જ સ્વીકારે છે. તેમની માન્યતા આ પ્રકારની છે જો પદાર્થોમાં એકતા હોત તો જીવ

જીવાજીવવદ્મુક્તસુખિતદુઃખિતાનામેકત્વં પ્રસજ્જેત । તતથ સુકૃતદુષ્કૃતયોઃ
ફલસ્ય વૈલક્ષણ્યાભાવાદ્ દીક્ષાદૌ પ્રાણિનાં પ્રવૃત્તિર્ન સ્યાત્ । તથા-સામાન્ય-
કત્વવાદિમતમપ્યેવં દુપયતિ-સામાન્યમાશ્રિત્ય ચૈઃ પદાર્થાનામેકત્વં ત્રિવશિતં,
તન્ન યુજ્યતે, સામાન્યસ્ય વિશેષેભ્યો ભેદાભેદાભ્યાં વક્તુમશક્ત્વાદિતિ । એવ-
મવયવી અવયવેભ્યો, ધર્મીધર્મેભ્યશ્ચ ભેદાભેદાભ્યાં વક્તુમશક્યમ્ ઇતિ । એવમયં
પદાર્થાનામેકાન્તતોડનેકત્વમભ્યુપગચ્છતિ । અક્રિયાવાદિત્વં ચાસ્ય પદાર્થાનાં

અજીવ, વદ્, મુક્ત, સુખિત, એવં દુઃખિત પ્રાણિયોર્મેં એકતા હોનેકા
પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોતા હૈ, હસ તરહસે જવ સમસ્ત પદાર્થોર્મેં એકતા આજા-
વેગી ફિર સુકૃત એવં દુષ્કૃતને ફલમેં જો ભિન્નતા દેખી જાતી હૈ-વહ
નહીં દેખી જાવેગી-અતઃ હનકે ફલકી વિલક્ષણતાકે અભાવસે દીક્ષા-
દિકમેં પ્રાણિયોર્કી પ્રવૃત્તિ નહીં હોગી તથા યહ અનેકવાદી સામાન્યકી
અપેક્ષાસે જો એકત્વવાદીકા મત હૈ, હસે ભી હસ પ્રકારસે દૂષિત
કરતા હૈ-વહ કહતા હૈ કિ જો સામાન્યકો અશ્રિત કરકે પદાર્થોર્મેં
એકતાકા કથન કરતે હૈં વહ હનકા કથન હસલિયે ઠીક નહીં હૈ કિ
સામાન્ય વિશેષોર્સે ભિન્ન એવં વિશેષોર્સે અભિન્ન નહીં સઘતા હૈ-
યહ ઘાત કહનેસે અશક્ય હો જાની હૈ, કિ સામાન્ય વિશેષોર્સે ભિન્ન
હૈં-યા સામાન્ય વિશેષોર્સે અભિન્ન હૈં । હસી તરહ અવયવી અવયવોર્સે
ધર્મી ધર્મોર્સે, ભિન્ન હૈં યા અભિન્ન હૈં ? યહી ઘાત ભી નહીં કહી જા

અજીવ વદ્, મુક્ત, સુખી અને દુઃખી જીવોમાં પણ એકતા માનવાને પ્રસંગ
પ્રાપ્ત થાત. આ પ્રકારે જો સમસ્ત પદાર્થોમાં એકતા આવી જાય, તો સુકૃત
અને દુષ્કૃતના ફલમાં જે ભિન્નતા જોવામાં આવે છે, તે જોવામાં આવે જ નહીં
અને જો તેમના ફલની વિલક્ષણતા જ ન રહે, તો દીક્ષાદિક દેવાની પ્રવૃત્તિને
જ જીવોમાં અભાવ રહેવા માંડે.

સામાન્યની અપેક્ષાએ એકત્વવાદીઓનો જે મત છે, તેને પણ આ અનેક
વાદીઓ આ પ્રકારે દૂષિત કરાવે છે—

તેઓ એવું કહે છે કે જે લોકો સામાન્યને આશ્રિત કરીને પદાર્થોમાં
એકતાનું પ્રતિપાદન કરે છે, તેમનું તે કથન એ કારણે ખરું નથી કે સામાન્ય
વિશેષો કરતાં ભિન્ન હોવાનું અથવા અભિન્ન હોવાનું સિદ્ધ થઈ શકતું નથી—
સામાન્ય વિશેષોથી ભિન્ન છે, અથવા સામાન્ય વિશેષોથી અભિન્ન છે એ વાત જ
અશક્ય લાગે છે. એજ પ્રમાણે અવયવી અવયવોથી, અને ધર્મી ધર્મોથી
ભિન્ન છે કે અભિન્ન છે, તે પણ કહી શકાય તેમ નથી. તે કારણે તે અનેક
વાદી પદાર્થોમાં એકાન્તતાઃ (સંપૂર્ણતઃ) અનેકતા જ માને આ અનેકવાદીને

કથંચિદેકત્વે સંભવત્યપિ એકાન્તતોડનેકત્વનિરૂપણાદિતિ । સામાન્યસ્ય સર્વથા નિષેધો યોડનેન કૃતઃ, સ પદાર્થાનામભેદજ્ઞાનસ્યાડનુભવસિદ્ધય્યાડસંગતઃ । યદિ સર્વથા સામાન્યાભાવઃ સ્યાત્ તર્હિ અભેદજ્ઞાનાભિગ્રાનમેવ ન સ્યાત્ । એવં ચ પદાર્થાનાં સર્વથા વૈરુદ્ધક્ષણ્યેન એકપરમાણુમન્તરેણ સર્વેષામપરમાણુત્વમેવ પ્રસજ્જેત । તથા-અવયવિનં ધર્મિણં ચાન્તરેણ પ્રતિનિયતાવયવધર્મવ્યવસ્થા નોપપન્નેત । અતઃ સામાન્યસ્ય ધર્મિણોડવયવિનશ્ચ સદ્ભાવો મન્તવ્ય એવં । એવાં સદ્ભાવે ભેદાભેદ-વિકલ્પદૂષણં યદુક્તં, તત્સ્યાદ્વાદમત્તલભ્ય સમાધેયમિતિ ૨ । 'અણેગાવાર્દ' હત્યત્ર દીર્ઘમાર્ષત્વાત્ ૨ ।

સકતી હૈ, હસલિયે યહ અનેકવાદો. પદાર્થોંમેં એકાન્તતઃ અનેકનાહી માનતા હૈ । હસ અનેકવાદીમેં અક્રિયવાદિતા હસ કારણ આતી હૈ કિ પદાર્થોંમેં કથંચિત્ એકના સંભવિત હોતી હૈ, ફિર ભી યહ ડસ એકતાકો નહીં માનતા હૈ, ઓર એકાન્ત રૂપ સે અનેકનાકાહી વહાં નિરૂપણ કરતા હૈ । સામાન્યકા સર્વથા નિષેધ જો હસને કિયા હૈ વહ પદાર્થોંમેં અભેદ જ્ઞાન અનુભવસે સિદ્ધ હોનેકે કારણ અસંગતહી હૈ । યદિ સર્વથા સામાન્યકા અભાવ માના જાવે તો અભેદજ્ઞનાકા કથનહી નહીં હો સકતા હૈ । હસ તરહ પદાર્થોંમેં સર્વથા ભિન્નતા હોનેસે એક પરમાણુકે વિના સમસ્ત પદાર્થોંમેં અપરમાણુતાકી હી પ્રસક્તિ હોગી, તથા અવયવીકે વિના એવં ધર્મીકે વિના પ્રતિનિયત અવયવકી ઓર ધર્મકી વ્યવસ્થા નહીં હો સકતી હૈ, હસલિયે સામાન્યકા ધર્મીકા ઓર અવયવીકા સદ્ભાવ માનનાહી ચાહિયે । હનકે સદ્ભાવમેં ભેદાભેદરૂપ વિકલ્પ કરકે

અક્રિયાવાદી કહેવાનું કારણ એ છે કે પદાર્થોમાં કયારેક એકતા સંભવિત પણ હોઈ શકે છે; છતાં પણ તેઓ તે એકતાને માનતા નથી, અને એકાન્ત રૂપે અનેકતાનું જ પ્રતિપાદન કરે છે. તેમણે સામાન્યનો જે સર્વથા નિષેધ કર્યો છે તે વાત અસંગત જ લાગે છે કારણ કે-પદાર્થોમાં અભેદજ્ઞાન અનુભવથી સિદ્ધ થાય છે. જો સર્વથા સામાન્યનો અભાવ માનવામાં આવે તો 'અભેદજ્ઞાનનું' કથન જ થઈ શકે નહીં. આ રીતે પદાર્થોમાં સર્વથા ભિન્નતા હોવાથી એક પરમાણુ સિવાયના સદ્ભાવ પદાર્થોમાં અપરમાણુતા માનવાનો જ પ્રસંગ પ્રાપ્ત થશે. તથા અવયવી વગર અને ધર્મી વગર પ્રતિનિયત અવયવની અને ધર્મની વ્યવસ્થા થઈ શકતી નથી. તેથી સામાન્યનો, ધર્મીનો અને અવયવીનો સદ્ભાવ માનવો જ જોઈએ. તેમના સદ્ભાવને લીધે ભેદાભેદ રૂપ વિકલ્પ કરીને જે દૂષિતતા

મિતવાદી—મિતાન્=પરિમિતાન્ જીવાન્ વદતીત્યેવં શીલઃ । જીવાના-
મનન્તાનન્તત્વેઽપિ પરિમિતાનેવ જીવાન્ મનુતે इति પરિમિતજીવવાદી । અથવા-
મિતમ્=અઙ્ગુષ્ઠપર્વમાત્રં શ્યામાકતણ્ડુલમાત્રં વા જીવં વદતીત્યેવં શીલઃ । યો જીવમ્
અસંખ્યેયપ્રદેશાત્મકતયા અઙ્ગુલાસંખ્યેયમાગાદારમ્ય યાવલ્લોકમાપૂરયતીત્યે-
વમનિયતપ્રમાણતયાત્રાઽપરિમિતમપિ અઙ્ગુષ્ઠપર્વમાત્રત્વેન શ્યામાકતણ્ડુલમાત્રત્વેન
વા પરિમિતં વદતિ સઃ । યદ્વા-મિતં=પરિમિતં સપ્તદ્વીપસમુદ્રાત્મકતયા તદ્વૈપરી-
ત્યેનાઽપિ લોકં વદતિ યઃ સ મિતવાદી-અયમપિ વસ્તુતત્ત્વનિષેધક इत्यस्याઽપ્ય-
ક્રિયાવાદિત્વમિતિ । ૩।

જો દૂષણ દિયે ગયે હૈં उनका परिहार स्याद्वाद् मतको अवलम्बन करनेसे
हो जाता है ।

મિતવાદી--અનન્તાનન્ત જીવ હોને પર ખી ઉન્હેં પરિમિત કહનેકે
જો સ્વભાવવાલા હોતા હૈ, વહ મિતવાદીહૈ, અથવા અંગુષ્ઠકે પર્વ બરાબર
યા શ્યામાક તણ્ડુલકે બરાબર જો જીવકો માનતા હૈ, વહ મિતવાદી
હૈ-તાત્પર્ય ઇસકા એસા હૈ, કિ જીવ અસંખ્યાન પ્રદેશોવાલા હૈ, ઇસસે
વહ અઙ્ગુલકે અસંખ્યાતવે ભાગસે લેકર યાવત્ સમ્પૂર્ણ લોકકો
વ્યાપ્ત કર લેતા હૈ, ઇસ કારણ અપરિમિત હૈ, ફિર ખી જો ઉસે અંગુષ્ઠ
પર્વ બરાબર યા શ્યામાક તણ્ડુલ બરાબર માન કર પરિમિત કહનેવાલા
પરિમિતવાદી કહા ગયા હૈ, અથવા-જો ઇસ લોકકો સપ્તદ્વીપ સમુ-
દ્રાત્મક રૂપસે પરિમિત કહતા હૈ, વહ મિતવાદી હૈ, યહ મિતવાદી ખી
વસ્તુતત્ત્વકા નિષેધક હૈ, ઇસલિયે ઇસે ખી અક્રિયાવાદી કહા ગયા હૈ,

કશવવામાં આવી છે, તેનું સ્યાદ્વાદ મતનો આધાર લેવાથી નિવારણ (ખંડન)
થઈ જાય છે.

મિતવાદી—અનન્તાનન્ત જીવોનો સદ્ભાવ હોવા છતાં પણ તેમને જેઓ
પરિમિત કહે છે તેમને મિતવાદી કહે છે. અથવા અંગુષ્ઠના પર્વ બરાબર અથવા
શ્યામાક ચોખાના બરાબર જેવો જીવને માને છે, તેમને મિતવાદી કહે છે.
આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જીવ અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળો છે, તેથી
તે આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગથી લઈને સંપૂર્ણ લોકપ્રમાણ ક્ષેત્રને વ્યાપ્ત કરી
લે છે, અને તે કારણે તે અપરિમિત જ છે, છતાં પણ તેને અંગુષ્ઠ પર્વ બરાબર
અથવા શ્યામાક-સામાના ચોખા બરાબર માનીને પરિમિત કહેનારાને પરિમિ-
તવાદી કહે છે, અથવા-જે લોકને સાત દ્વીપ સમુદ્રાત્મક રૂપે પરિમિત કહે છે,
તેને મિતવાદી કહે છે. આ મિતવાદી પણ વસ્તુતત્ત્વનો નિષેધક છે, તેથી તેને
પણ અક્રિયાવાદી કહેવામાં આવે છે.

નિર્મિતવાદી-નિર્મિતમ્=ઈશ્વરબ્રહ્મપુરુષાદિના રચિતં લોકં વદતીતિ નિર્મિ-
તવાદી-લોકસ્યેશ્વરાદિકૃતત્વવાદી । ઉક્તં ચ તન્મતાનુમારિભિઃ—

“ આસીદિદં તમોભૂત, -મમજ્ઞાતમલક્ષણમ્ ।

અપતર્ક્યમવિજ્ઞેયં, પ્રસુપ્તમિવ સર્વતઃ ॥૧॥

તસ્મિન્નેઠાર્ણવીભૂતે, નષ્ટસ્થાવરજન્મમે ।

નષ્ટામરનરેચૈવ, પ્રણટોરગરાક્ષસે ॥૨॥

કેવલં ગહરીભૂતે, મહાભૂતત્રિવર્જિતે ।

અચિન્ત્યાત્મા ત્રિશુસ્તત્ર, શ્યાનસ્તપ્યતે તપઃ ॥ ૩ ॥

તત્ર તસ્ય શ્યાનસ્ય, નાભેઃ પદ્મં ત્રિનિર્ગતમ્ ।

તરુણરવિમળલિપ્તં, દ્વયં કાશ્ચનકર્ણિકમ્ ॥ ૪ ॥

નિર્મિતવાદી-ઇસ લોકોનો ઈશ્વરને યા બ્રહ્માને યા રૂપ વિશેષને બનાયા
હૈ, એસા જો કહતા હૈ, વહ નિર્મિતવાદી હૈ, નિર્મિતવાદીકે મતકા
અનુસરણ કરનેવાલોંકા એસા કહના હૈ—

“ આસીદિદં તમોભૂત ” इत्यादि ।

इन श्लोकोंका भाव ऐसा है, कि पहिले यह अन्धकार रूप था.
स्थावर जीव और त्रस जीव तथा मनुष्य देवता उरग एवं राक्षस
इसमें कुछ भी नहीं थे पंच महाभूत भी इसमें नहीं थे, यह तो एक
विशाल खड्डेके रूपमें था, इसमें अचिन्त्य स्वरूपवाले परमात्मा सोते
२ तप कर रहे थे ॥ १-३॥ उसकी नाभिमेंसे एक कमल निकला इसकी
कर्णिका (कली) कांचन-सुवर्ण की थी ॥ ४ ॥ मध्याह्न सूर्यके मण्डलके

નિર્મિતવાદી—“ આ લોકનું ઈશ્વરે અથવા બ્રહ્માએ અથવા કોઈ વિશિષ્ટ
પુરુષે સર્જન કર્યું છે. ” આ પ્રકારની માન્યતા ધરાવનાર લોકોને નિર્મિતવાદી
કહે છે. નિર્મિતવાદીના મતને અનુસરના લોકો એવું કહે છે કે—

“ આસીદિદં તમોભૂત ” इत्यादि.

આ શ્લોકોનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-પહેલાં આ લોક અંધકારમય હતો.
તેમાં સ્થાવર જીવો, ત્રસજીવો, મનુષ્યો, દેવો, ઉરગો, રાક્ષસો આદિ કોઈ પણ
જીવો ન હતાં. તેમાં પંચ મહાભૂતોનો પણ સદ્ભાવ ન હતો. આ લોક એક
વિશાળ ખાડા રૂપે જ હતો. તેમાં અચિન્ત્ય સ્વરૂપવાળા પરમાત્મા સૂતાં સૂતાં
તપ કરી રહ્યા હતા ॥ ૧-૩ ॥ તે પરમાત્માની નાભિમાંથી એક કમલ નીકળ્યું,
તેની પાંખડીઓ સુવર્ણની હતી. ॥ ૪ ॥

તસ્મિન્ પત્રે તુ ભગવાન્, દણ્ડી યજ્ઞોપવીતસંયુક્તઃ ।

બ્રહ્મા તત્રોત્પન્નસ્તેન જગન્માતરઃ સૃષ્ટાઃ ॥ ૫ ॥

અદિતિઃ સુરસંઘાનાં દિતિરસુરાણાં મનુર્મનુષ્યાણામ્ ।

વિનતા વિહજ્જમાનાં માતા વિશ્વપ્રકારાણામ્ ॥ ૬ ॥

કદ્રુઃ સરીસૃપાણાં સુલસા માતા તુ નાગજાતીનામ્ ।

સુરભિશ્ચતુષ્પદાના મિલા પુનઃ સર્વવીજાનામ્ ॥ ૭ ॥ ” ઇતિ ।

અર્થે ચ જગતઃ કર્તૃમત્ત્વમેવ સાધયતિ-જગત્ સબુદ્ધિકર્તૃકં સંસ્થાનવ-
ત્વાદ ઘટવદિતિ । અનેનાનુમાનેન સંસ્થાનવતો ઘટસ્ય કર્તા કુલાલ इव સંસ્થાન-
વતોઽસ્ય જગતઃ કર્તા ઈશ્વરાદિઃ સિદ્ધો ભવતીતિ । અત્રોચ્યતે-જગતો યદીશ્વ-

સમાન યહ કમલ ચમકીલા-તેજસ્વી થા, ઉસ કમલમેં દણ્ડ યુક્ત તથા
જનેઝસે યુક્ત બ્રહ્મા ઉત્પન્ન હુએ. ડન બ્રહ્માને જગત્કી માતાએ બનાઈ
॥૫॥ સુરોંકી માતા અદિતિ બનાઈ, અસુરોંકી દિતિ બનાઈ, મનુષ્યોંકી
માતા મનુ બનાઈ પક્ષિયોંકી માતા વિનતા બનાઈ ॥૬॥ સરીસૃપોં (સર્પોં)
કી માતા કદ્રુ બનાઈ, નાગોંકી માતા સુલસા બનાઈ, ચતુષ્પદોંકી માતા
સુરભિ બનાઈ, ઓર સર્વ વીજોંકી જાતા હલા બનાઈ ॥૭॥

યહ જગત્ કિસી ન કિસીકે દ્વારા ક્રિયા ગયા હૈ-બનાયા ગયા
હૈ-હસ બાતકો યે નિર્મિતવાદી હસ પ્રકારસે સિદ્ધ કરતે હૈ-જિસ
પ્રકાર ઘટ સંસ્થાનવાલા હોનેકે કારણ કિસી ન કિસી સબુદ્ધિક-
(વિશેષ બુદ્ધિવાલા) કર્તાકે દ્વારા-કુમ્ભકારકે દ્વારા-બનાયા ગયા
હૈ, ડસી પ્રકારસે યહ જગત્ બી કિસી ન કિસી બુદ્ધિમાન્ કર્તાકે
દ્વારા બનાયા ગયા હૈ-ક્યોંકિ યહ બી સંસ્થાનવાલા હૈ, જો હસકા
કર્તા હૈ, વહી ઈશ્વર હૈ ।

મધ્યાહ્નના સૂર્યમંડળ સમાન તે કમલ તેજસ્વી હંતું. તે કમલમાંથી દંડ
તથા જનોઈની યુક્ત એવાં પ્રજ્ઞા ઉત્પન્ન થયા. તે પ્રજ્ઞાએ જગતની માતાઓનું
નિર્માણ કર્યું ॥ ૫ ॥ તેમણે સુરોની માતા અદિતિનું, અસુરોની માતા દિતિનું
મનુષ્યોની માતા મનુનું, પક્ષીઓની માતા વિનતાનું, સર્પોની માતા કદ્રુનું,
નાગોની માતા સુલસાનું, ચતુષ્પદોની માતા સુરભિનું અને સર્વ બીજોની
માતા ધિતાનું સર્જન કર્યું ॥ ૬-૭ ॥

આ જગતનું સર્જન કોઈને કોઈ વડે અવશ્ય કરાયેલું છે, આ પ્રકારની
માન્યતાને આ નિર્મિતવાદીઓ આ પ્રકારની દલીલ વડે સિદ્ધ કરે છે-જેમ ઘડો
સંસ્થાનવાળો (આકારવાળો) હોવાથી કોઈને કોઈ વિશેષ બુદ્ધિ સંપન્ન કર્તા દ્વારા
-કુંભાર દ્વારા બનાવાયો છે એજ પ્રમાણે આ જગત્ પણ કોઈને કોઈ બુદ્ધિ-

રાદિ કર્તૃકત્વમુક્તં, તન્ન સંભવતિ, ઘટાદેરપીશ્વરકર્તૃકત્વેન સિદ્ધૌ કુલાલાદિકાર-
કૌવૈયર્થ્યપ્રગજ્ઞાત્ । કિં ચાસ્તુ કુલાલાદિ ઘટાદેઃ કર્તા, તથાઽપિ ઘટકર્તૃકુલાલ-
વજ્રગત્કર્તુરપ્યનીશ્વરત્વમાપન્નેત । કિંચ-ઈશ્વરસ્ય શરીરિત્વાભાવેન જગત્પ્રતિ
કારણત્વમેવ ન સ્યાત્ । યદિ સોઽપિ શરીરી, તર્હિ તચ્છરીરસ્યાપિ ક.ન્તરેણ
માન્યમ્ , एवं तस्यापि कर्त्रन्तरेणेत्यनवस्थां प्रसज्जेत, अत ईश्वरकर्तृकत्वं जगतो

इस पर सिद्धान्तवादीका उत्तर ऐसा है-कि निर्मितवादीने जो
ऐसा कहा है, कि यह जगत् बुद्धिमान् कर्तारूप ईश्वरके द्वारा बनाया
गया है-सो यह कथन उसको संभवित नहीं होता है, क्योंकि इस
प्रकारके कथनसे घटादिमें भी ईश्वर कर्तृकत्वकी सिद्धिका प्रसङ्ग प्राप्त
होता है, और ऐसा प्रसङ्ग प्राप्त होनेसे उनमें जो कुम्भकार कर्तृकता
है, उसमें व्यर्थापत्ति आतीहै, खैर-यदि हम इस बातको मान भी लें कि
घटादिकोंका कर्ता कुम्भकार है, तो फिर इससे तो यह बातही सधेगी
कि घटके कर्ता कुम्भकारकी तरह जगतका कर्ता ईश्वर भी अनीश्वर
ही हो जावेगा और ईश्वरका शरीर तो है नहीं-अतः शरीरके अभावमें
वह जगत्के प्रति कारण ही नहीं बन सकताहै, यदि उसे शरीर सहित
मान लिया जावे तो फिर यहां ऐसा प्रश्न उपस्थित होता है, कि उसके
शरीरका बनानेवाला भी कोई न कोई दूसरा कर्ता होना चाहिये, और
जो इसके शरीरका बनानेवाला कर्ता होगा-उसके भी शरीरका बना

शाणी કર્તાદ્વારા બનાવવામાં આવ્યું છે, કારણ કે તે સંસ્થાન (આધાર) વાળું
છે. ઇશ્વર જ તેનો કર્તા (સર્જક) છે.

તેમની આ માન્યતાની વિરુદ્ધમાં સિદ્ધાન્તવાદીઓની દલીલ આ પ્રમાણે છે-
નિર્મિતવાદીઓ એવું જે માને છે કે આ જગત બુદ્ધિમાન કર્તારૂપ ઇશ્વરે જ
બનાવ્યું છે, તે વાત માની શકાય એવી નથી. કારણ કે આ પ્રકારના કથનને
માનવામાં આવે તો ઘટાદિ (ઘડા વગેરે)માં પણ ઇશ્વર કર્તૃકત્વ માનવાનો પ્રસંગ
પ્રાપ્ત થશે એટલે ઘડાનો કર્તા પણ ઇશ્વરને જ માનવો પડશે, અને તેમાં જે કુંભકાર
ના કર્તાપણાનું-કર્તૃકતાનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તેને પણ વ્યર્થ માનવાનો
પ્રસંગ પ્રાપ્ત થશે. કહાન્ય આપણે એ વાતને માની લઈએ કે ઘડાનો કર્તા કુંભાર
છે, તો એવું માનવાનો પ્રસંગ પણ પ્રાપ્ત થશે કે ઘડાદિના કર્તા કુંભારની જેમ
જગતનો કર્તા ઇશ્વર પણ અનીશ્વર જ હોઈ શકે વળી ઇશ્વરને શરીર તો હોતું
નથી, તેથી શરીરના અભાવને લીધે તે જગતના નિર્માણમાં કારણભૂત પણ કેવી
રીતે બની શકે! જે તેને શરીર યુક્ત માનવામાં આવે તો એવો પ્રશ્ન ઉદ્ભ-
વશે કે તેના શરીરનો બનાવનાર પણ કોઈને કોઈ બીજો કર્તા હોવો જ જોઈએ!
અને ઇશ્વરના શરીરનો જે કર્તા હશે તે કર્તાના શરીરનો પણ બનાવનારો કોઈ

ન સિદ્ધયતિ, અપિ તુ જગદેતાદૃશમેવ સર્વદાડડપીત્, અતએવોક્તમ્—“ ન કદા-
ચિદનીદૃશં જગત્ ” ઇતિ । इत्थमाप्तवचनानुमानाभ्यामकृत्रिमत्वेन सिद्धस्यास्य
जगतोऽकृत्रिमतां निषेधनादस्याक्रियावादित्वमिति ॥ ४ ॥

તથા—સાતવાદી—સાત=મુખમેવાસેવનીયં નત્વસાતં=તપોબ્રહ્મચર્યાદિકમિતિ
વદતીત્યેવં શીલઃ । तथाहि—सातवादिनो मते सुखार्थिनां सातमेवानुशीलनीयं
न तु तपोब्रह्मचर्यादिरूपमसातम् । न हि असातेन कदाचिदपि सातमुत्पत्तुं
नेवाला कोई तीसरा होगा—इस प्रकारसे कर्त्रन्तरके(अन्यकर्त्ता) माननेसे
मूलमें क्षति करनेवाली अनवस्थाका प्रसङ्ग प्राप्त होता है, अतः यही मानना
चाहिये कि जगतमें ईश्वर कर्तृकता सिद्ध नहीं होती है, किन्तु जगत
तो जैसा है, वैसा ही सर्वदासे था, इसीलिये ऐसा कहा गया है, कि
“ न कदाचित् अनीदृशं जगत् ” । इस प्रकारका कथन करनेवालेमें
अक्रियावादिता इसलिये प्रकट की गई है कि आप्तवचन और प्रका-
रके अनुमानसे जगतमें अकृत्रिमता ही सिद्ध की गई है फिर भी
इसने उस अकृत्रिमताका निषेध किया है ४ ।

સાતવાદી—જો इस बातको कहता है कि सात—सुखही सेवन
करने योग्य है—असात रूप तप, ब्रह्मचर्य आदिक सेवन करने योग्य
नहीं हैं, इस सातवादीके मतमें सुखार्थीको सात ही अनुशीलनीय है,
तप ब्रह्मचर्यादि रूप असात अनुशीलनीय नहीं हैं, क्योंकि असातरूप

ગોળે કતાં હશે ! આ પ્રમાણે કર્ત્રન્તરને માનવાથી મૂળમાં જ ક્ષતિકરનારી અન-
વસ્થાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાય છે. તેથી એવું જ માનવું પડશે કે જગતમાં કોઈ
ઈશ્વર કર્તૃકતા સિદ્ધ થતી નથી, પરન્તુ જગત તો એવું છે એવું જ અનાદિ
કાળથી હતું. તેથી જ એવું કહેવામાં આવ્યું છે કે—“ ન કદાચિત્ અનીદૃશં જગત્ ”
જગતના કર્તા તરીકે ઈશ્વરને માનનારના કથનમાં અક્રિયાવાદિતા તે કારણે પ્રકટ
કરવામાં આવી છે કે આપ્તવચન અને બીજા અનુમાનો દ્વારા જગતમાં અકૃત્રિમતા
જ સિદ્ધ કરવામાં આવી છે, છતાં પણ નિર્મિતાવાદીઓએ આ અકૃત્રિમતાનો
જ નિષેધ કર્યો છે.

સાતવાદી—સાત એટલે સુખ, જે લોકોની એવી માન્યતા છે કે સુખ
જ સેવન કરવા યોગ્ય છે—અપ્રાત રૂપ તપ, બ્રહ્મચર્ય આદિ સેવન કરવા યોગ્ય
નથી, તેમને સાતવાદી કહે છે. આ સાતવાદીઓ એવું કહે છે કે સુખાર્થીઓને
માટે સાત (સુખ) જ અનુશીલનીય છે, તપ, બ્રહ્મચર્ય આદિ રૂપ અસાત
અનુશીલનીય નથી, કારણ કે અસાતરૂપ બ્રહ્મચર્યાદિ દ્વારા કદી પણ

શક્યેત, કારણાનુગુણત્વાત્ કાર્યસ્ય । દૃશ્યતે હિ લોકેઽપિ કારણાનુગુણમેવ કાર્યમ્, યથા-શુક્લૈસ્તન્તુભિરાલ્બ્યઃ પટઃ શુક્લ એવ ન તુ રક્તઃ । એવં સુતાનુશીલેન સુખમેવ ભવતિ ન તુ દુઃખમિતિ । અક્રિયાવાદિત્વં ચાસ્ય-સંયમતપસોર્દુઃસ્વત્વેના-શ્ચુપગમાત્ । વસ્તુતસ્તુ સંયમસ્તપશ્ચેતિદ્વયં પરમાર્થિકપશ્ચમરૂપં પારમાર્થિકસુખરૂપં ચ અતસ્તત્કાર્યં મોક્ષેઽપિ કારણાનુગુણત્વમેવેતિ ॥ ૫ ॥

તથા—સમુચ્છેદવાદી-સમુચ્છેદ=પ્રતિક્ષણં નિરન્વયનાશં વદતિ યઃ સ તથા-ક્ષણિકવાદીત્યર્થઃ । એતન્મતે સર્વસ્ય-વસ્તુનઃ-પ્રતિક્ષણં નિરન્વયનાશો ભવતિ ।

બ્રહ્મચર્યાદિ દ્વારા કદાચિત્ ભી સાત ઉત્પન્ન નહીં ક્રિયા જા સકતા હૈ, ક્યોંકિ કાર્યકારણકે અનુસાર હી હોતાં હૈ, લોકમેં ભી કારણકે અનુસારહી કાર્ય દેખા જાતા હૈ, જૈસે-શુક્લપટ શુક્લ તન્તુઓં દ્વારા હી ઉત્પન્ન ક્રિયા જાતા હૈ, લાલ પટ ઉત્પન્ન નહીં ક્રિયા જાતા હૈ, ઇસી તરહસે સુખકે અનુશીલનસે સુખહી હોતા હૈ, દુઃખ નહીં હોતા હૈ, ઇસ સાતવાદીમેં અક્રિયાવાદિતા ઇસલિયે હૈં, કિ યહ સંયમ એવં તપકો દુઃખ રૂપસે સ્વીકાર કરતા હૈ, સંયમ ઓર તપ યે દોનોં વાસ્તવમેં પ્રશમ રૂપ હૈ, ઓર વાસ્તવિક સુખ રૂપ હૈ, ઇસલિયે ઇસ કાર્યરૂપ મોક્ષમેં ભી પ્રશમ રૂપતા ઓર વાસ્તવિક સુખરૂપતા હૈ ।

સમુચ્છેદવાદી—જો પ્રતિક્ષણ નિરન્વય વસ્તુકે નાશ હોનેકા કથન કરતા હૈ, વહ સમુચ્છેદવાદ હૈં, ઇસકા દૂસરા નામ ક્ષણિકવાદી ભી હૈ, ઇસકે મતમેં પ્રત્યેક વસ્તુકા પ્રત્યેક ક્ષણમેં નિરન્વય નાશ હોતા રહતા હૈ—યહ અપને અભિમતકો સિદ્ધ કરનેમેં ઇસ પ્રકારકી યુક્તિકો

સાત (સુખ) ઉત્પન્ન થતું નથી. તેઓ એવી દલીલ કરે છે કે કાર્ય કારણાનુસાર જ થાય છે—કોઈમાં પણ કારણને અનુસાર કાર્ય જ જોવામાં આવે છે. જેમ સફેદ તંતુઓમાંથી જ સફેદ વસ્ત્ર નિર્માણ થાય છે—લાલ તંતુઓમાંથી સફેદ વસ્ત્ર બનાવી શકાતું નથી, એજ પ્રમાણે સુખના અનુશીલનથી જ સુખની ઉત્પત્તિ થાય છે—દુઃખની ઉત્પત્તિ થતી નથી. આ સાતવાદીઓમાં અક્રિયાવાદિપણ, એ કારણે પ્રગટ કરવામાં આવ્યું છે કે—આ સાતવાદીઓ સંયમ અને તપનો દુઃખરૂપે સ્વીકાર કરે છે. સંયમ અને તપ તો વાસ્તવિક રૂપે પ્રશમરૂપ છે અને વાસ્તવિક સુખરૂપ છે. તેથી આ કાર્ય રૂપ મોક્ષમાં પણ પ્રશમરૂપતા અને વાસ્તવિક સુખરૂપતા છે.

સમુચ્છેદવાદી—જે પ્રતિક્ષણ નિરન્વય વસ્તુનો નાશ થતો રહેતો હોવાનું માને છે તેમને સમુચ્છેદવાદી કહે છે. તેમનું ખીજું નામ ક્ષણિકવાદી પણ છે. તેઓ એવું માને છે કે પ્રત્યેક વસ્તુનો પ્રત્યેક ક્ષણે નિરન્વય નાશ થતો રહે છે,

સ્વમતસાધનેડસૌ એવં યુક્તિમાશ્રયતે, તથાહિ-વસ્તુનઃ સત્તા કાર્યકારિત્વેન સિધ્યતિ. યદિ કાર્યકારિત્વેડપિ વસ્તુનઃ સત્તા ભવેત્ તદા સ્વરવિષાણસ્યાપિ સત્ત્વમાપદ્યેત. કાર્યકારિત્વેન સિદ્ધં વસ્તુ નિત્યત્વેનાપિ વક્તુમશ્કયમ્. નિત્યત્વે હિ ક્રમેણ કાર્યોત્પત્તિર્ન સ્યાત્. ન હિ નિત્યં વસ્તુ ક્રમેણ કાર્યં કર્તું શક્નોતિ તન્નિત્યત્વૈકસ્વભાવતયા એકકાર્યાનન્તરમન્યકાર્યકરણાભાવઃ પ્રસજ્જેત, તતશ્ચ કાલાન્તરભાવિ સકલકાર્યાણામભાવઃ પ્રસજ્જેત. યદિ ચ નિત્યસ્યાદિવસ્તુનઃ પ્રતિક્ષણં સ્વભાવાન્તરોત્પત્ત્યા સકલકાર્યકારિત્વં સ્યાત્, તતશ્ચ તસ્ય નિયત્વમેવો-
 ડપસ્થિત કરતા હૈં-વસ્તુકી સત્તા વસ્તુકો કાર્યકારી હોનેસે સિદ્ધ હોતી હૈ, વસ્તુ કુછ ભી કાર્ય ન કરે ઓર ફિર ભી ડસકી સત્તા સ્વીકાર કી જાવે તો ફિર સ્વરવિષાણકી જો ભી સત્તા માનની ચાહિયે, જો કાર્યકારી હોનેસે વસ્તુ સિદ્ધ હોતી હૈં-યહ વસ્તુ નિત્ય નહીં હો સકતી હૈ-ક્યોંકિ નિત્ય જો વસ્તુ હોતી હૈ વહ ન ક્રમસે કાર્યકર સકતી હૈ, ઓર ન અક્રમસે યુગપત્ રૂપસે-કાર્ય કર સકતી હૈ ક્યોંકિ નિત્ય જો હોતા હૈ, વહ એક સ્વભાવવાલા હોતા હૈ, એક સ્વભાવવાલા હોનેસે વહ નિત્યરૂપ કારણ એક કાર્ય કરનેકે વાદ અન્ય કાર્ય કરનેવાલા હો નહીં સકતા હૈ-ક્યોંકિ ઇસ સ્થિતિમેં ડસમેં સ્વભાવકી ભિન્નતા આ જાતી હૈ, જો અનિત્યતાકી સાધક હોતી હૈ. ઇસલિયે યહ માનના પડેગા કિ નિત્ય કારણ કાલાન્તર ભાવી સકલ કાર્યોંકા કર્તા ન હો સકનેકે કારણ કાર્યકારી ન હોનેસે અવસ્તુરૂપહી હૈ, ડસકી સત્તા

તેઓ પોતાની આ માન્યતાને પુરવાર કરવાને માટે આ પ્રકારની દલીલોનો આધાર લે છે—વસ્તુની સત્તા (વિદ્યમાનતા) વસ્તુ કાર્યકારી હોવાને કારણે સિદ્ધ થાય છે. વસ્તુ કોઈ પણ કાર્ય ન કરે છતાં પણ તેની સત્તા સ્વીકારવી એ તો ગર્હભને પણ શિંગડાં હોવાની વાત સ્વીકારવા જેવું છે. એ કાર્યકારી હોવાને લીધે જ વસ્તુની સત્તા સિદ્ધ થતી હોય, તો વસ્તુ નિત્ય હોઈ શકે નહીં, કારણ કે જે વસ્તુ નિત્ય હોય છે તે ક્રમપૂર્વક પણ કાર્ય કરી શકતી નથી અને અક્રમપૂર્વક -યુગપત્રૂપે-પણ કાર્ય કરી શકતી નથી, કારણ કે જે નિત્ય હોય છે તે એક સ્વભાવવાળી હોય છે, એક સ્વભાવવાળું હોવાથી તે નિત્ય રૂપ કારણ એક કાર્ય કર્યા બાદ અન્ય કાર્ય કરનારું હોઈ શકતું નથી, કારણ કે આ સ્થિતિમાં તેમાં સ્વભાવલિપ્તતા આવી જાય છે, જે અનિત્યતાની સાધક હોય છે. તેથી એ માનવું પડશે કે નિત્યકારણ કાલાન્તરભાવી સકલ કાર્યોંકા કર્તા ન હોઈ શકવાને કારણે કાર્યકારી ન હોવાથી અવસ્તુરૂપ જ છે. તેની સત્તા સિદ્ધ થતી નથી.

ચિહ્નયેત । અથ યૌગપદ્ધેન સકલકાર્યકારિત્વમભિમતં તદ્વ્યયુક્તમેવ, યૌગપદ્ધેન સકલકાર્યકારિત્વાભાવસ્ય પ્રત્યક્ષેણોપલભ્યાત્ । इत्थं च क्षणिकस्यैव वस्तुनः कार्य-
कारित्वमुपपन्नमिति । एवमयं समुच्छेदवादी ' सर्वं वस्तु क्षणिकम् ' इति
मन्यते । न चैतन्मतं युक्तियुक्तम्-वस्तूनां क्षणिकत्वेहि परलोको न सिध्यति,

સિદ્ધ નહીં होती है यदि " कालान्तरभावी कार्योका वह नित्य कारण
कर्ता होता है, " यह बात माननेके लिये उसमें स्वभावान्तरोत्पत्तिका
कथन किया जावे-तो फिर इस तरहसे उसमें नित्यताका ही विघात
हो जाता है-क्योंकि स्वभावान्तरोत्पाद ही अनित्यताका साधक होता
है, यदि कहा जावे कि नित्य कारण एक साथही सकल कारणोंका
करनेवाला होता है-तो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि एक ही
कालमें सकल कार्यों के करनेका अभाव उसमें प्रत्यक्षसेही देखनेमें आता
है, तथा-यदि वह एकही कालमें सकल कार्योंको कर लेता है, तो
फिर वह अपर कालमें क्या करेगा? कुछ नहीं करेगा, इस तरह अर्थ
क्रियाकारी नहीं होनेके कारण उसमें अवस्तुताकी प्रसक्ति हो जावेगी
अतः यह मानना चाहिये कि जो वस्तु क्षणिक है, वही कार्यकारी है,
क्योंकि क्षणिक वस्तुमेंही कार्यकारित्व बनता है, इस तरहसे यह समु-
च्छेदवादी " सर्वं वस्तु क्षणिकम् " ऐसा मानता है, इस प्रकारका इस
क्षणिकवादीका यह मत युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि वस्तुको जब क्षणिक

ને " કાલાન્તરભાવી કાર્યોનાં તે નિત્યકારણ કર્તા હોય છે, " આ વાત માનવાને
માટે તેમાં સ્વભાવાન્તરોત્પત્તિનું કથન કરવામાં આવે તો આ પ્રકારની માન્ય-
તાને લીધે તો તેમાં નિત્યતાનો જ વિઘાત થઈ જાય છે, કારણ કે સ્વભાવા-
ન્તરોત્પાદ જ ગતિ અનિત્યતાનો સાધક થાય છે. ને એવું કહેવામાં આવે કે-
નિત્ય કારણ એક સાથે જ સકલ કાર્યોને કરનારું હોય છે, તો એ પ્રકારનું
કથન પણ યોગ્ય નથી, કારણ કે એક જ કાળમાં સકલ કાર્યો કરવાનો અભાવ
તેમાં પ્રત્યક્ષરૂપે જ જોવામાં આવે છે. તથા ને તે એક જ કાળમાં સકલ કાર્યો
કરી લેતું હોય, તો તે અપર કાળમાં શું કરશે? કંઈ પણ નહીં કરે ! આ
રીતે અર્થ ક્રિયાકારી નહીં હોવાથી તેમાં અવસ્તુતા જ માનવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત
થશે. તેથી એવું માનવું પડશે કે જે વસ્તુ ક્ષણિક હોય છે, એજ કાર્યકારી
હોય છે કારણ કે ક્ષણિક વસ્તુમાં જ કાર્યકારિત્વ સંભવી શકે છે. આ પ્રકારે
સમુચ્છેદવાદી માને છે કે " સર્વં વસ્તુ ક્ષણિકમ્ " " બધી વસ્તુઓ ક્ષણિક છે. "

ફલાર્થિનાં ચ ક્રિયાસુ પ્રગુચ્છિરપિ ન સ્યાત્ । તથા-જનાનાં સકલક્રિયાસુ પ્રવૃત્તિઃ પ્રયોજનક્રવાક્યાદ્ ભવતિ । વાક્યં ચ અસંખ્યેયસમયસમ્મવ્યનેકવર્ણાત્મકમ્ । તત્તુ ક્ષણિકવાદે ન નિષ્પવતે, વર્ણસ્ય ક્ષણવિનાશિત્વાત્ । તતશ્ચ સકલવ્યવહારી-
ચ્છેદઃ સ્યાત્ । તથા ચૈકાન્તતઃ ક્ષણિકાત્ કુલાલાદેઃ સકાશાદર્થક્રિયાડપિ નો ધટેત્ । અતઃ સમુચ્છેદવાદિનાં મતમસમીચીનમ્ । વસ્તુતસ્તુ સકલં વસ્તુ પર્યાયતઃ સમુચ્છેદવત્, દ્રવ્યતસ્તુ ન તથેતિ પ્રતિપત્તવ્યમિતિ અક્રિયાવાદિત્વં ચાસ્ય વસ્તુ-
નામેકાન્તતઃ ક્ષણિકત્વાભ્યુપગમેનેતિ ॥ ૬ ॥

માના જાવેગા-તો ફિર પરલોકકી સિદ્ધિ નહીં હો સકતી હૈ, ઓર જો ફલાર્થી હૈં ડનકી ક્રિયામેં પ્રવૃત્તિ ભી નહીં હો સકતી હૈ, યહ દેખા જાતા હૈ, કિ મનુષ્યોંકી સકલ ક્રિયાઓમેં પ્રવૃત્તિ પ્રયોજક વાક્યસે હોતી હૈ, ઓર પ્રયોજક વાક્ય જો હોતા હૈ, વહ અસંખ્યાત સમયભાવી અનેક વર્ણાત્મક હોતા હૈ, પરન્તુ યહ બાત ક્ષણિકવાદમેં નહીં બનતી હૈ, ક્યોંકિ ક્ષણિકવાદમેં વર્ણ ક્ષણવિનાશી માના ગયા હૈ, અતઃ પ્રયો-
જક વાક્યકે અભાવમેં સકલ વ્યવહારકે ઉચ્છેદ હોનેકા પ્રસન્ન સ્વતઃ પ્રાપ્ત હો જાતાહૈ, તથા કુલાલ-કુમ્ભાર આદિ ભી જવ ક્ષણિકહૈ, તો ફિર ડનસે અર્થ ક્રિયા ભી નહીં હો સકતી હૈ, હસલિયે યહ માનના ચાહિયે કિ સમુચ્છેદવાદીકા મત અસમીચીન હૈં અર્થાત્ ઠીક નહીં હૈ । વાસ્ત-
વિક દૃષ્ટિસે વિચાર ક્રિયા જાવે તો યહી બાત પ્રતીતિ કોટિમેં આતી હૈ, કિ પ્રત્યેક વસ્તુ પર્યાય દૃષ્ટિસે વહ, ક્ષણ વિનશ્વર હૈ ઓર દ્રવ્યદૃષ્ટિ સે વહ ક્ષણવિનશ્વર નહીં હૈ, ઇન સમુચ્છેદવાદિયોંમેં અક્રિયાવાદિતા હસ કારણસેહૈ કિ યે એકાન્ત રૂપસે પ્રત્યેક વસ્તુકો ક્ષણવિનશ્વર માનતે હૈ.

આ પ્રકારનો ક્ષણિકવાદીઓનો મત યુક્તિયુક્ત લાગતો નથી. જો વસ્તુને ક્ષણિક માનવામાં આવે તો પરલોકની સિદ્ધિ પણ સંભવી શકે નહીં, અને દેહાર્થી વ્યક્તિ ઓની ક્રિયામાં પ્રવૃત્તિ પણ સંભવી શકે નહીં. એવું જોવામાં આવે છે કે મનુષ્યોની સકળ ક્રિયાઓમાં પ્રવૃત્તિ પ્રયોજકવાક્ય વડે જ થઈ શકે છે. તે પ્રયોજકવાક્ય અસંખ્યાત સમયભાવી અનેક વર્ણાત્મક જ હોય છે. પરન્તુ આ પ્રકારની વાત ક્ષણિકવાદમાં સંભવી શકતી નથી, કારણ કે ક્ષણિકવાદમાં વર્ણને ક્ષણવિનાશી માનવામાં આવ્યો છે, તેથી પ્રયોજક વાક્યના અભાવમાં સકલ વ્યવહારનો ઉચ્છેદ થવાનો પ્રસંગ આપોઆપ પ્રાપ્ત થઈ જાય છે. તથા કુંભાર આદિ પણ જો ક્ષણિક જ હોય, તો તેમના દ્વારા અર્થક્રિયા પણ થઈ શકે નહીં તેથી એવું જ માનવું જોઈએ કે સમુચ્છેદવાદીનો મત પણ ખરાબર નથી. વાસ્તવિક દૃષ્ટિએ જોવામાં આવે તો એ વાતની પ્રતીતિ થાય છે કે પ્રત્યેક વસ્તુ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ ક્ષણવિનશ્વર નથી, પણ પર્યાયની અપેક્ષાએ ક્ષણવિનશ્વર છે. આ સમુચ્છેદ

તથા—નિયતવાદી—નિયત=નિત્ય વસ્તુ વદતીત્યેવંશીલઃ—લોકનિત્યત્વવાદીત્યર્થઃ । एतन्मते उत्पादविनाशौ तु आविर्भावतिरोभावरूपौ । आविर्भावश्च सत एव भवति नासतः । असतोऽपि यद्याविर्भावः स्यात्तर्हि शशविपाणमपि आविर्मवेत् । तथा नैव सतः सर्वथा विनाशो भवति घटस्येव । न हि सर्वथा घटो विनष्टो भवति, अपि तु अविनશ्वरे स्वकारणे तिरोभवति । ननु घटकारणस्य कपालद्वयस्यापि विनाशो दृश्यते, कथं स तत्र तिरोभवतीति चेद् आह—न हि घटं

નિયતવાદી—હસકા દૂસરા નામ લોક નિત્યવાદી બી હૈ—યહ પ્રત્યેક વસ્તુકો સર્વથા નિત્યહી માનતા હૈ હસકે મતમેં ઉત્પાદ વિનાશ આવિર્ભાવ તિરોભાવ રૂપ માને ગયે હૈ, આવિર્ભાવ સત્કાહી હોતા હૈ, અસત્કા નહીં હોતા, અસત્કા બી યદિ આવિર્ભાવ હો તો શશવિપાણકા બી આવિર્ભાવ હોના ચાહિયે, ઘટકી તરહ સત્કા સર્વથા વિનાશ નહીં હોતા હૈ, કિન્તુ હસકા તિરોભાવ હોતા હૈ, જિસ પ્રકાર ઘટ અપને અવિનશ્વર કારણમેં તિરોભૂત હો જાતા હૈ, હસી પ્રકાર પ્રત્યેક સત્ પદાર્થ બી અપને અવિનશ્વર કારણમેં તિરોભૂત હો જાતા હૈ હસીકા નામ વિનાશ હૈ ।

શંકા—ઘટકે કારણભૂત જો કપાલ દ્વય હૈ, હનકા બી તો વિનાશ દેખા જાતા હૈ, ફિર આપ યહ કૈસે કહતે હૈં કિ ઘટ અપને કારણભૂત કપાલ દ્વયમેં તિરોભૂત હો જાતા હૈ ।

વાદીએ માં અક્રિયાવાદિતા માનવાનું કારણ એ છે કે 'તેઓ એકાન્તરૂપે પ્રત્યેક વસ્તુને ક્ષણવિનશ્વર માને છે.

નિયતવાદી—નિયતવાદીનું 'જીજુ' નામ લોક નિત્યવાદી' પણ છે. તેઓ પ્રત્યેક વસ્તુને સર્વથા નિત્ય જ માને છે. તેમના મતમાં તો ઉત્પાદ, વિનાશ, આવિર્ભાવ તિરોભાવ રૂપ માનવામાં આવ્યા છે. આવિર્ભાવ સત્નો જ થાય છે—અસત્નો થતો નથી. જો અસત્નો પણ આવિર્ભાવ થતો હોય, તો સસલાને શિંગડાંનો પણ આવિર્ભાવ થવો જોઈએ જેમ ઘટ (ઘડા)નો સર્વથા વિનાશ થતો નથી એજ પ્રમાણે સત્નો પણ સર્વથા વિનાશ થતો નથી, પણ તેનો તિરોભાવ થાય છે જે પ્રમાણે ઘડો પોતાના અવિનશ્વર કારણમાં તિરોભૂત થઈ જાય છે એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક સત્ પદાર્થ પણ પોતાના અવિનશ્વર કારણમાં તિરોભૂત થઈ જાય છે, તેનું નામ જ વિનાશ છે.

શંકા—ઘટના કારણભૂત જે કપાલદ્વય (જે ફડાસિયાં) છે તેમનો પણ વિનાશ થતો જોવામાં આવે છે. છતાં પણ આપ એવું શા કારણે કહો છો કે ઘટ પોતાના કારણભૂત કપાલદ્વયમાં તિરોભૂતિ થઈ જાય છે ?

પ્રતિ પરમાર્થતઃ કપાલદ્વયસ્ય કારણત્વમ્, અપિ તુ મૃદ એવ । મૃદેવ હિ કપાલા-
દ્યવસ્થાભિર્ઘટરૂપેણ પરિણમતે, અતઃ કપાલાદ્યવસ્થા ન પારમાર્થિકી, અપિ તુ મૃદ-
વસ્થૈવ પારમાર્થિકી સા નિત્યૈવેતિ । તત્ત્વશ્ચ યથા ઘટઃ સ્વકારણે મૃદિ તિરોમ-
વતિ, તદ્દેવ સર્વેઽપિ પદાર્થાઃ સ્વકારણેષ્વેવ તિરોમવન્તીતિ સર્વથા નિત્યો લોક
ઇતિ ત્તન્મતમસમીચીનમ્, તથાહિ-લોકો યદ્યેકાન્તતો નિત્યઃ સ્યાત્તતસ્તસ્ય
સ્થિરૈકરૂપત્વં સ્યાત્ । એવં ચ સકલક્રિયાવિલોપઃ પ્રસજ્જેત । ન ચૈવં ભવતિ ।
અક્રિયાવાદિત્વં ચાસ્ય લોકસ્યૈકાન્તતો નિત્યત્વસ્વીકારાદિતિ ॥ ૭ ॥

ઉત્તર—ઘટકે પ્રતિ વાસ્તવિકરૂપસે કપાલ દ્વયમેં કારણતા નહીં
કિન્તુ ઘટકે પ્રતિ કારણતા તો મિટ્ટીમેં હી હૈં, મિટ્ટીહી કપાલ આદિ
અવસ્થાઓસે ગુજરતી હુઈ ઘટરૂપસે પરિણમ જાતી હૈ, હસલિયે કપાલ
આદિ અવસ્થા પારમાર્થિકી નહીં હૈ, પારમાર્થિકી તો મૃદવસ્થા (મિટ્ટીકી
અવસ્થા) હી હૈ, ઓર વહ નિત્યહી હૈ, હસલિયે જિસ પ્રકાર ઘટ અપને
કારણરૂપ મૃત્તિકામેં તિરોભૂત હો જાતા હૈ, ઊસી પ્રકારસે સમસ્ત
પદાર્થ અપને કારણોમેંહી તિરોભૂત હો જાતે હૈં । હસ તરહ લોક સર્વથા
નિત્ય હૈ એસા યહ નિયતવાદીકા મત અસમીચીન હૈં, ક્યોંકિ-લોક
યદિ એકાન્તતઃ નિત્ય માના જાવે તો હસસે ઊસમેં સ્થિર એકરૂપતા આવેગી
અતઃ સકલ ક્રિયાઓંકા વિલોપ હોનેકા પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોગા પરન્તુ એસા
તો નહીં હસમેં અક્રિયાવાદિતા હસ કારણસે આઈ હૈ, કિ યહ લોકકો
સર્વથા નિત્ય રૂપસે સ્વીકાર કરતા-હૈ ।

ઉત્તર—વાસ્તવિકરૂપે-તો ઘટના નિર્માણમાં કપાલદ્વય કારણભૂત બનતાં નથી,
પરન્તુ માટી જ તેમાં કારણભૂત બને છે. માટી જ કપાલાદિ અવસ્થાઓમાંથી પસાર
થતી થતી ઘટ રૂપે પરિણમી જાય છે. તેથી કપાલાદિ અવસ્થા પારમાર્થિકી નથી.
પારમાર્થિકી તો મૃદવસ્થા (માટીની અવસ્થા) જ છે, અને એજ નિત્ય છે. તેથી
જે પ્રકારે ઘટ પોતાના કારણરૂપ માટીમાં તિરોભૂત થઈ જાય છે, એજ પ્રમ ભ્રુ
સમસ્ત પદાર્થ પોતાના કારણોમાં જ તિરોભૂત થઈ જાય છે. આ પ્રકારે લોક સર્વથા
નિત્ય છે, એવો નિયતવાદીનો મત બરાબર નથી, કારણ કે લોકને જો એકાન્તરૂપે
નિત્ય માનવામાં આવે, તો તેમાં સ્થિર એકરૂપતા જ આવી જશે. તેથી સકલ
ક્રિયાઓનો લોપ થઈ જવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થશે. એવું તો છે નહીં. આ મત
લોકને સર્વથા નિત્યરૂપે સ્વીકારે છે, તે કારણેજ આ મતમાં અક્રિયાવાદિતા પ્રકટ થાય છે.

તથા—નશાન્તિપરલોકવાદી—ન વિચિત્રે શાન્તિઃ=મોક્ષઃ પરલોકો=જન્માન્તરં ચેતિ વદતિ યઃ સ તથા—ભૌતિકવાદી ચાર્વાકઃ । અયં હિ—પ્રત્યક્ષમેવ પ્રમાણત્વેનાભ્યુપગચ્છતિ । પ્રત્યક્ષપ્રમાણાવિષયત્વાच्च खरविषाणवदात्मनोऽभावं मनुते । આત્મનોડમાવાદેવૈતન્યમતે નાસ્તિ પુણ્યપાપલક્ષણં કર્મ, નાસ્તિ પરલોકો, ન ચાસ્તિ મોક્ષઃ । યદેતશ્ચૈતન્યમુપલક્ષ્યતે, ન તદાત્મા, અપિ તુ ભૂતધર્મઃઈતિ । એતન્યમતે પુણ્યપાપજન્મમોક્ષાદિમાત્રાત્ ક્રિયાયાં પ્રાણિનામપ્રવૃત્તિઃ સ્યાત્ । અતઃ સુસ્પષ્ટમેવાસ્યાક્રિયાવાદિત્વમ્ । યચ્ચાયં પ્રત્યક્ષપ્રમાણાનુપલબ્ધ્યાડડત્મનોડસત્ત્વં મનુતે,

ન શાન્તિ પરલોકવાદી—જો મોક્ષ એવં પરલોક જન્માન્તરકો નહીં માનતા હૈ, વહ ભૌતિકવાદી ચાર્વાક ન શાન્તિ પરલોકવાદી હૈ, યહ એક પ્રત્યક્ષકોહી પ્રમાણ રૂપસે માનતા હૈ, પ્રત્યક્ષ પ્રમાણકા અવિષય હોનેસે યહ આત્માકો યરવિષાણકી તરહ અભાવ રૂપ માનતા હૈ, અર્થાત્ યહ આત્માકા અભાવ માનતા હૈ, આત્માકે અભાવ હોનેસેહી હસકે મનમેં પુણ્ય પાપ રૂપ કર્મ મી નહીં માને ગયે હૈ, પરલોકકા અસ્તિત્વ મી નહીં માના ગયા હૈ, ઓર ન મોક્ષકા સદ્ભાવ હી માના ગયા હૈ, યહ તો ચૈતન્ય પ્રતીત હોતા હૈ, વહ આત્મા નહીં હૈ, કિન્તુ ભૂતકા એક ધર્મ હૈ । પુણ્ય, પાપ, જન્મ એવં મોક્ષ આદિકે અભાવ હોનેસે ક્રિયામેં પ્રાણિયોંકી પ્રવૃત્તિ નહીં માની ગઈ હૈ, હસ તરહ હસમેં અક્રિયાવાદિતા સુસ્પષ્ટહી હૈ, હસને જો પ્રત્યક્ષ પ્રમાણસે ઉપલબ્ધ ન

ન શાન્તિ પરલોકવાદી—જે લોકો મોક્ષમાં અને પરલોકમાં (જન્માન્તરમાં) માનતા નથી, તેમને ભૌતિકવાદી કહે છે ચાર્વાકવાદી ન શાન્તિ પરલોકવાદી છે. તેઓ એક માત્ર પ્રત્યક્ષ પ્રમાણના વિષયરૂપ નહીં હોવાને કારણે તેઓ આત્માના અસ્તિત્વને જ માનતા નથી. જેમ ગર્દભને શિંગડાં હોવાની વાત માની ન શકાય એવી છે, એજ પ્રમાણે તેમની માન્યતા પ્રમાણે આત્માનો સદ્ભાવ હોવાની વાત પણ માની શકાય એવી નથી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે તેઓ આત્માનો અભાવ માને છે. તે કારણે તેઓ 'પાપકર્મ' અને 'પુણ્યકર્મ'માં પણ માનતા નથી, પરલોકના અસ્તિત્વમાં પણ તેઓ માનતા નથી, મોક્ષના સદ્ભાવની વાત પણ તેઓ સ્વીકારતા નથી. ચૈત્યન્યની પ્રતીતિ થાય છે, તો અમારૂંપ નથી પણ ભૂતના એક ધર્મરૂપ છે. પુણ્ય, પાપ, જન્મ અને મોક્ષ આદિનો તેઓ અભાવ માને છે, તે કારણે આ મતવાળા ક્રિયામાં પ્રાણીઓથી પ્રવૃત્તિ હોવી જ જોઈએ, એવું માનતા નથી. આ પ્રકારે આ મતમાં અક્રિયાવાદિતા સુસ્પષ્ટ રૂપે દેખાઈ આવે.

ન તત્ સંગતમ્, યતઃ પ્રત્યક્ષાદ્યપ્રવૃત્ત્યાઽઽત્મનો નિરાકરણમશક્યમ્ । ન હિ પ્રત્યક્ષાદ્યપ્રવૃત્ત્યા વસ્તુનઃ સર્વથા અસત્ત્વં ભવતિ । તથા સતિ દેશાન્તરસ્થવસ્તુ-
નોઽસત્ત્વાપત્તેઃ અતઃ પ્રત્યક્ષતોઽનુપલભ્યમાનસ્યાઽપ્યાત્મનઃ સત્ત્વમસ્ત્યેવ । કિં
ચાગમવિશેષતોઽપ્યાત્મનઃ સત્ત્વં સિદ્ધમેવેતિ । યદપિ ચૈતન્યસ્ય ભૂતધર્મતા પ્રોક્તા,
સાપ્યસંગતા, વિવક્ષિતભૂતભાવેઽપિ જાતિસ્મરણાદિ દર્શનાદિતિ ॥ ૮ ॥

एवमेतेऽष्टावक्रियावादिनो दिङ्मात्रेणोपदर्शिताः । विशेषजिज्ञासुभिरेवन्म-
तान्यन्यतो विज्ञेयानीति ॥ सू० १९ ॥

હોનેકે કારણ આત્માકી અસત્તા સ્વીકાર કી હૈ, સો એસી યહ માન્યતા
ઉસકી ઉચિત નહીં હૈ, ક્યોંકિ પ્રત્યક્ષ આદિકી અપ્રવૃત્તિ હોનેકે કારણ
આત્માકા નિરાકારણ અશક્ય હૈ । ક્યોંકિ પ્રત્યક્ષાદિકી અપ્રવૃત્તિસે
વસ્તુકા સર્વથા અસત્ત્વ સાધિત નહીં હોતા હૈ, યદિ એસા હોને લગે
તો દેશાન્તરસ્થ વસ્તુકે અસત્ત્વકી આપત્તિ હોતી હૈ, હસલિયે એસા
માનના ચાહિયે કિ આત્મા યદ્યપિ હન્દ્રિય પ્રત્યક્ષસે અનુપલભ્યમાન હૈ,
ફિર મી ઉસકા અભાવ નહીં હૈ—કિન્તુ વહ સત્ત્વ વિશિષ્ટહી હૈ, કિંચ—
આગમ વિશેષસે મી આત્માકા અસ્તિત્વ સિદ્ધ હોતા હૈ, તુમને જો
આત્મા—ચૈતન્યકો ભૂતકા ધર્મ કહા હૈ, સો યહ કહના મી સંગત નહીં
હૈ, ક્યોંકિ વિવક્ષિતભૂત કે અભાવમેં મી જાતિસ્મરણાદિ દેખે જાતે
હે । હસ પ્રકારસે યે આઠ અક્રિયાવાદી સંક્ષેપ માત્રસે યહાં દિશલાયે
ગયે હે—વિશેષ જિજ્ઞાસુઓંકો હનકે મત અન્ય સિદ્ધાન્તગ્રન્થોંસે જાન
લેના ચાહિયે ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

છે. તેઓ પ્રત્યક્ષ પ્રમાણના અભાવને લીધે આત્માની અસત્તામાં જે માને છે,
તે તેમની માન્યતા બરાબર નથી કારણ કે પ્રત્યક્ષ આદિની અપ્રવૃત્તિ હોવાને
કારણે આત્માનું નિરાકરણ અશક્ય છે. કારણ કે પ્રત્યક્ષ આદિની અપ્રવૃત્તિ
વડે વસ્તુનું સર્વથા અસત્ત્વ (અવિદ્યમાનપણું) સાબિત થતું નથી. જો એવું
જ માની લેવામાં આવે તો દેશાન્તરગત વસ્તુના અસત્ત્વને માનવાનો પણ પ્રસંગ
પ્રાપ્ત થશે. તેથી એવું માનવું જોઈએ કે આત્મા જો કે હન્દ્રિય પ્રત્યક્ષ વડે
અનુપલબ્યમાન (અપ્રાપ્યકારી) છે, છતાં પણ તેનો અભાવ નથી—પરંતુ તેમો
સદ્ભાવ જ છે. કારણ કે આગમવિશેષને આધારે પણ આત્માનું અસ્તિત્વ સિદ્ધ
થાય છે. આ મતમાં માનનાર આત્મા—ચૈતન્યને જે ભૂતના ધર્મરૂપ
કહે છે તે કથન પણ સંગત લાગતું નથી, કારણ કે વિવક્ષિત ભૂતના અભાવમાં
પણ જાતિસ્મરણ આદિ જોવામાં આવે છે. આ પ્રકારે અહીં આ આઠ પ્રકારના
અક્રિયાવાદીઓનું સંક્ષિપ્તમાં નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે. આ વિષયમાં વધુ
જાણવાની ઇચ્છાવાળા પાઠકોએ અન્ય સિદ્ધાન્ત ગ્રન્થોમાંથી આ મતો વિશે
વિશેષ માહિતી મેળવી લેવી. ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એતે ચ વાદિનઃ પાપશાસ્ત્રજ્ઞાનસંપન્ના इति पापशास्त्राण्यष्टस्थानत्वेन प्राह—
 મૂલમ્—અદ્ભુવિદે મહાનિમિત્તે પળગત્તે, તં જહા—ભોમે ૧,
 ઉપાણ ૨, સુવિળે ૩, અંતલિલ્લે ૪, અંગે ૫, સરે ૬, લલ્લલ્લે ૭
 વંજળે ૮ ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

છાયા—અદ્ભુવિદે મહાનિમિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તત્રથા—ભોમમ્ ૧, ઔત્પાનમ્ ૨,
 સ્વાપ્નમ્ ૩, આન્તરીક્ષમ્ ૪, આઙ્ગમ્ ૫, સ્વરઃ ૬, લક્ષણં ૭, વ્યજ્ઞનમ્ ૮ ॥
 ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

ટીકા—‘અદ્ભુવિદે’ इत्यादि—

મહાનિમિત્તમ્—મૂલમાદ્યવ્યાનામ્ અતીન્દ્રિયમાદ્યાનાં પરિજ્ઞાને નિમિત્તં=
 હેતુર્યત્તદ્ નિમિત્તં, તત્પ્રતિપાદકશાસ્ત્રમપિ નિમિત્તમ્, તત્પ્રત્યેકં સૂત્રવૃત્તિવાર્તિ-
 કતઃ ક્રમેણ સહસ્રલક્ષકોટિપ્રમાણમિતિ કૃત્વા મહત્, મહત્ચ તન્નિમિત્તં ચેતિ

યે વાદી પાપશાસ્ત્ર જ્ઞાનસે સંપન્ન હોતે હૈં હસ કારણ અચ સૂત્રકાર
 પાપશાસ્ત્રોંકા કથન આઠ સ્થાનરૂપસે કરતે હૈં—

“અદ્ભુવિદે મહાનિમિત્તે પળગત્તે” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—મહા નિમિત્ત આઠ પ્રકારકો કહ્યા ગયા હૈં—જૈસે ભોમ ૧, ઔ-
 ત્પાતં ૨, સ્વાપ્ન ૩, આન્તરીક્ષ ૪, આઙ્ગ ૫, સ્વર ૬, લક્ષણ ૭, ઔર વ્યજ્ઞન
 ૮, જો શાસ્ત્ર અતીત વર્તમાન ઔર ભવિષ્યત્કાલ સમ્બન્ધી અતીન્દ્રિય
 પદાર્થોંકે પરિજ્ઞાનમેં નિમિત્ત હોતા હૈં, વહ નિમિત્ત હૈં, હસ નિમિત્તકા
 પ્રતિપાદક જો શાસ્ત્ર હૈં, વહ ભી નિમિત્ત હૈં, યહ નિમિત્ત મૂલ પ્રત્યક્ષ
 શાસ્ત્ર સૂત્ર, વૃત્તિ ઔવં વાર્તિકની અપેક્ષા ક્રમશઃ સહસ્ર લક્ષ કોટિ
 પ્રમાણ હૈં. હસી અભિપ્રાયસે હસે ‘મહત્’ હસ શબ્દસે વિશેષિત કિયાહૈં,

ઉપરના સૂત્રમાં આઠ પ્રકારના અક્રિયાવાદીઓની પ્રશ્નશ્રુ કરવામાં આવી
 તેઓ પાપશાસ્ત્રના જ્ઞાનથી સંપન્ન હોય છે. તે કારણે હવે સૂત્રકાર આઠ સ્થાન
 રૂપે પાપશાસ્ત્રોત્તુ’ નિરૂપણ કરે છે—

મહા નિમિત્તના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ભોમ, (૨)
 ઔત્પાત, (૩) સ્વાપ્ન, (૪) આન્તરીક્ષ, (૫) આંગ, (૬) સ્વર (૭) લક્ષણ
 અને (૮) વ્યજ્ઞન.

મૂલ, વર્તમાન અને ભવિષ્યકાળ સંબન્ધી અતીન્દ્રિય પદાર્થોના પરિજ્ઞાનમાં
 નિમિત્તમૂલ થાય છે તેને નિમિત્ત કહે છે. આ નિમિત્તનું પ્રતિપાદક જે શાસ્ત્ર
 છે તેને નિમિત્તશાસ્ત્ર કહે છે. આ નિમિત્ત પ્રત્યક્ષ શાસ્ત્ર સૂત્ર, વૃત્તિ અને
 વાર્તિકની અપેક્ષાએ ક્રમશઃ સહસ્રલક્ષકોટિ પ્રમાણ છે. એજ પ્રમાણથી તેને

મહાનિમિત્તમ્, તત્ અષ્ટવિધ પ્રજ્ઞસમ્, તદ્યથા-ભૌમમિત્યાદિ । તત્ર-ભૌમ=ભૂમિ વિકારો ભૂકમ્પાદિકં, તન્નિરૂપકં શાસ્ત્રનપિ ભૌમમેવ । યથા—

“ શબ્દેન મહતા ભૂમિર્યદા રસતિ કમ્પતે ।

સેનાપતિરમાત્યશ્ચ રાજા રાજ્યં ચ પીડયતે ” ॥૧॥ इत्यादि ॥१॥

ઔત્પાતમ્-ઉત્પાતઃ=મજ્જારુધિરવૃષ્ટિયાદિઃ, તત્ફલમ્બુવક શાસ્ત્રમ્ ।

તથાહિ-“ મજ્જાનિ રુધિરાસ્થીનિ, ધાન્યાગારાન્ વશાસ્તથા ।

મથવા વર્ષતે યત્ર, મયં વિદ્યાચ્ચતુર્વિધમ્ ॥ ”

યહ મહા નિમિત્ત શાસ્ત્ર પૂર્વોક્ત રૂપસે જો આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, ઉસકા તાત્પર્યાર્થ એસા હૈ, જો શાસ્ત્ર ભૂકમ્પાદિ રૂપ ભૂમિકે વિકારકા નિરૂપક હોતા હૈ, વહ ભૌમ હૈ જૈસે--‘ શબ્દેન મહતા ભૂમિઃ’” હત્યાદિ ।

જઞ ભૂમિમેં કમ્પન હોતા હૈ, ઔર થડા શબ્દ હો તો ઉસકા ફલ યહ હૈ, કિ સેનાપતિકો અમાત્યકો, રાજાકો ઔર રાજ્યકો થડી ભારી પીડા હોતી હૈ, ઔત્પાત-મજ્જા, રુધિર, વૃષ્ટિ આદિરૂપ ઉત્પાતકે ફલકા સૂચક જો શાસ્ત્ર હૈ, વહ ઔત્પાત શાસ્ત્ર હૈ જૈસે--“ મજ્જાનિ-રુધિરાસ્થીનિ ’ હત્યાદિ ।

જિસ દેશમેં ઈન્દ્ર મજ્જાકો રુધિરકો અસ્થિકો ધાન્યાગારકો ચર્ચકો વરસાના હૈ, વહાં પર સેનાપતિકો, અમાત્યકો રાજાકો રાષ્ટ્રકો મય હોતા હૈ એસા જાનના ચાહિયે ।

‘મહત્’ મહા વિશેષણ લગાડનામા આબુ’ છે. તે મહાનિમિત્ત શાસ્ત્રના આઠ પ્રકારોનું સ્વરૂપ હવે સમજાવવામાં આવે છે—

જે શાસ્ત્ર ભૂકંપ આદિ રૂપ ભૂમિના વિકારોનું નિરૂપક હોય છે તેને ભૌમ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ શબ્દેન મહતા ભૂમિઃ ” ઇત્યાદિ—

જે ધરતીકંપ થાય અને સાથે સાથે ભૂમિમાંથી ઘણા ભારે અવાજ (કડાક) થાય, તો તેના ફલસ્વરૂપે સેનાપતિ, અમાત્ય, રાજા અને રાજ્યને કંઈ ભારે આફત આવી પડે છે

ઔત્પાત—મજ્જા, રુધિરવૃષ્ટિ આદિ રૂપ ઉત્પાતના આગમનની સૂચક જે વસ્તુઓ બને છે, તેમનું ક્ષણ દર્શાવનારું જે શાસ્ત્ર છે, તેને ઔત્પત્તશાસ્ત્ર કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ મજ્જાનિ રુધિરાસ્થીનિ ”

જે દેશમાં ઈન્દ્ર મજ્જાની, લે હીની, હાડકાંથી, ધાન્યાગારની કે ચર્ચીની વૃષ્ટિ વરસાવે છે, ત્યાંના રાજા, અમાત્ય, સેનાપતિ અને રાષ્ટ્ર ઉપર ભય આવી પડે છે.

ચતુર્વિધં મયમિતિ સેનાપત્યમાત્યરાજરાપ્દૂલક્ષણમ્ ॥ ૨ ॥ સ્વાપ્નમ્—

સ્વપ્નસ્ય શુભાશુભસૂચકં શાસ્ત્રમ્ । યથા—

“ મૂત્રં વા કુરુતે સ્વપ્ને, પુરીપં વાઽતિલોદ્ધિતમ્ ।

પત્તિબુદ્ધ્યેત્તદા કથિલ્લમતે સોઽર્થનાશનમ્ ॥૧॥ ” ઇતિ ॥૧॥

આન્તરીક્ષમ્—અન્તરીક્ષં = ગગનમ્, તત્ર મન્વમાન્તરીક્ષમ્ = ગન્ધર્વનગરાદિ

તત્કલ્પમાશુભફલસૂચકં શાસ્ત્રમપ્યાન્તરીક્ષમ્ । યથા—

“ કપિલં સસ્યઘાતાય માઙ્ગિષ્ઠં દરણં ગવામ્ ।

અવ્યક્તવર્ણં કુરુતે, વલક્ષોભં ન સંશયઃ ॥ ૧ ॥

ગન્ધર્વનગરં સ્તિગ્ધં, સપ્રાકારં સતોરણમ્ ।

સૌમ્યાં દિશં સમાશ્રિત્ય, રાત્રસ્તદ્વિજયાવદમ્ ॥ ૨ ॥ ” ઇત્યાદિ ॥૪॥

સ્વપ્નકે શુભ અશુભકા સૂચક જો શાસ્ત્ર હૈં વહ સ્વાપ્નશાસ્ત્ર હૈં જૈસે—“ મૂત્રં વા કુરુતે સ્વપ્ને ” ઇત્યાદિ ।

જો મનુષ્ય સ્વપ્નમેં પિશાય કરતા હૈં, અથવા ઉચાર કરતા હૈં, ઔર વાદમેં જગ જાતા હૈં, તો ઉસે હસકા ફલ અર્થકે વિનાશ હોને રૂપ હોતા હૈં ।

આન્તરીક્ષ—ગન્ધર્વનગર આદિકે શુભ ઔર અશુભકા સૂચક જો શાસ્ત્ર હૈં વહ અન્તરીક્ષ હૈં જૈસે—“ કપિલં સસ્યઘાતાય ” ઇત્યાદિ ।

જવ (લાલ) કપિલ વર્ણકા હોતા હૈં—તવ ઉસસે અનાજકો નુકસામ હોતા હૈં, ઔર જવ વહ સંજીઠેકે રંગ જૈસા હોતા હૈં, તો ઉસ સમય ગાયોંકી ચોરી હોતી હૈં, તથા જવ વહ અવ્યક્ત વર્ણવાલા હોતા હૈં, તો વહ વલકા

સ્વપ્નના શુભ અને અશુભ ફળને દર્શાવનારું જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ સ્વાપ્નશાસ્ત્ર છે કહ્યું પણ છે કે—“ મૂત્ર વા કુરુતે સ્વપ્ને ” ઇત્યાદિ—

જે માણસને પેશાબ થઈ જવાનું કે ઝાડો થઈ જવાનું સ્વપ્ન આવે છે, અને આ પ્રકારનું સ્વપ્ન આવ્યા બાદ જો તે માણસ બગી બાથ છે, તો તેના ધનના વિનાશરૂપ ફળની તેને પ્રાપ્તિ થાય છે.

આન્તરીક્ષ—ગન્ધર્વ નગર આદિના શુભાશુભનું સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ આન્તરીક્ષ છે કહ્યું પણ છે કે—

“ કપિલં સસ્ય ઘાતાય ” ઇત્યાદિ

બ્યારે તે (ગન્ધર્વ નગર) કપિલવર્ણના હોય છે ત્યારે તેનાથી અનાજને નુકસાન થાય છે અને બ્યારે તે મંજીઠના રંગનો હોય છે ત્યારે ગાયોની ચોરી થાય છે અને બ્યારે તે અવ્યક્તવર્ણવાળા હોય છે, ત્યારે બલનો વિનાશ કર્તા

આઙ્ગમ્-અઙ્ગ=શરીરાવયવઃ, તદ્વિકારઃ અઙ્ગ=શિરઃ સ્ફુરણાદિ, તત્ફલસૂચકં શાસ્ત્રમપ્યાઙ્ગમ્ । યથા—

“ દક્ષિણપાર્શ્વે સ્પન્દનમભિધાસ્યે તત્ફલં સ્ત્રિયા વામે ।

પૃથિવીલાભઃ શિરસિ, સ્થાનવિવૃદ્ધિર્લલાટે સ્યાત્ ॥૧॥ ” ઇત્યાદિ ॥૫॥

સ્વરઃ-પઙ્ગાદિઃ સ્વરશબ્દેનોચ્યતે, તત્ફલપ્રતિપાદકં શાસ્ત્રમપિ સ્વરઃ ।

યથા—

“ સવ્જેગ લઙ્મઈ વિત્તિ, ક્યં ચ ન વિણસસઃ ।

ગાવો મિત્તા ય પુત્તા ય, નારીણં ચેવ વલ્લમો ॥ ૧ ॥ ”

વિનાશકર્તા હોતા હૈ, તથા જવ વહ સ્નિગ્ધ, પ્રાકાર સહિત એવં તોરણ સહિત હોતા હૈ તો વહ ઉત્તર દિશામેં રાજાકી વિજયકા સૂચક હોતા હૈ।

આઙ્ગ-શરીરકે અવયવકા નામ અઙ્ગ હૈ, હસ અઙ્ગકા જો વિકાર હૈ-જૈસે શિરકા સ્ફુરણ આદિ હોના, હસકે ફલકા સૂચક શાસ્ત્ર હૈ વહ આઙ્ગ હૈ જૈસે-“ દક્ષિણપાર્શ્વે સ્પન્દનં ” ઇત્યાદિ।

દક્ષિણપાર્શ્વ ભાગમેં યદિ સ્ફુરણ હોતા હૈ, તો વહ હસે પૃથિવીકે લાભ હોનેકા સૂચક હોતા હૈ, હસી તરહસે વહ સ્ત્રીકે વામ ભાગમેં હો તો હસકો ભી વહ પૃથિવીકે લાભ હોનેકા સૂચક હોતા હૈ, તથા શિરમેં યદિ સ્ફુરણ હોતા હૈ, તો વહ ભી પૃથિવીકે લાભ હોનેકા સૂચક હોતા હૈ, ઓર યદિ વહ સ્ફુરણ હસકે લલાટમેં હોતા હૈ, તો વહ હસકે સ્થાનકી વૃદ્ધિકા સૂચક હોતા હૈ ।

સ્વર--પઙ્ગ આદિ સ્વરોકે ફલકા પ્રતિપાદક જો શાસ્ત્ર હૈ વહ સ્વર હૈ જૈસે--“ સવ્જેગ લઙ્મઈ વિત્તિ ” ઇત્યાદિ ।

નીવડે છે અને ન્યારે તે સ્નિગ્ધ, પ્રાકાર (કોટ) સહિત તોરણ સહિત હોય છે, ન્યારે તે ઉત્તર દિશાના રાજાના વિજયના સૂચક સમજવા.

આંગ-શરીરના અવયવનું નામ આંગ છે. આંગનાં જે વિકાર છે (જેમ કે શિરનું સ્ફુરણ આદિ થવું) તે વિકારનાં ફલનું સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તેને ‘આ ગ’ કહે છે જેમ કે—“દક્ષિણપાર્શ્વે સ્પન્દનં” ઇત્યાદિ—

શીનું જમણું આંગ જો ફરકે, તો તેને પૃથ્વીનો લાભ થશે એમ સમજવું એજ પ્રમાણે તેનું ડાબું આંગ ફરકે તો પણ તેને પૃથ્વીનો લાભ થશે એમ સમજવું. જો તેના શિરમા સ્ફુરણ (ફરવાની ક્રિયા થાય તો પણ તેને પૃથ્વીનો લાભ થશે એમ સમજવું. જો તેના લલાટમાં સ્ફુરણ થાય તો તેના સ્થાનની વૃદ્ધિ થશે એમ સમજવું.

સ્વર પઙ્ગ આદિ સ્વરોના ફલનું પ્રતિપાદન કરનારું જે શાસ્ત્ર છે, તેને સ્વર કહે છે, કહ્યું પણ છે કે—“સવ્જેગ લઙ્મઈ વિત્તિ” ઇત્યાદિ—

છાયા—પદ્મજેન લભતે વૃત્તિ કૃતં ચ ન વિનશ્યતિ ।

ગા મિત્રાણિ ચ પુત્રાંશ્ચ નારીણાં ચૈવ વલ્લભઃ ॥ ૧ ॥ इत्यादि ।

एवं सर्वस्वरफलमनुयोगद्वारसूत्रस्य मत्कृतायामनुयोगचन्द्रिकाटीकायां,
तथाऽत्रैव सूत्रे सप्तमस्थाने त्रिलोकनीयम् ।

अथवा—शकुनरुत शुभाशुभसूचकं शास्त्रं स्वरः । यथा—

“ विविचिविसदो पुन्नो, सामाए सुल्लिसुलि धन्नो उ ।

चेरी चेरी दित्तो, विक्कुत्तो लाम हेउत्ति ॥ १ ॥ ”

છાયા—વિવિચિવિ શબ્દઃ પૂર્ણ, શ્યામાયાઃ (પક્ષિવિશેષસ્ય) સુલ્લિસુલ્લિ (શબ્દઃ)
ધન્યસ્તુ ।

चेरी चेरी (शब्द) दीप्तः, ‘ विक्कु ’ इति (शब्दः) लाम हेतुरिति
॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ७ ॥

પદ્મજ સ્વરસે મનુષ્ય આજીવિકા પ્રાપ્ત કર લેના હૈ, ઔર उसका
कृत कार्य कभी नष्ट नहीं होता है, उसे अनेक गायोंकी मित्रोंकी और
पुत्रोंकी प्राप्ति होती है, और वह अनेक स्त्रियोंका वल्लभ होता है ।

इसी तरहसे और भी स्वरोंका फल मेरे द्वारा कृत अनुयोगद्वार
चन्द्रिका टीकामें तथा इसी सूत्रमें सप्तम स्थानमें देग्न लेना चाहिये
अथवा पक्षियोंके शब्दोंके शुभ और अशुभका सूचक शास्त्र है वह
स्वर है जैसे—“ विविचिविसदो पुन्नो ” इत्यादि ।

श्यामा—पक्षि विशेषका विविचि विशब्द पूर्णताका सूचक
होता है, सुलि सुलि शब्द धान्यका सूचक होता है, चेरी चेरी शब्द
दीप्तिका सूचक होता है, और चिक्कु यह शब्द लामका हेतु होता है ।

પદ્મજ સ્વર વડે માણસ પોતાની આજીવિકા પ્રાપ્ત કરી શકે છે, તેને
કોઈ પણ કાર્યમાં નિષ્ફળતા મળતી નથી, તેને અનેક ગાયો, મિત્રો અને
પુત્રોની પ્રાપ્તિ થાય છે. તે અનેક સ્ત્રીઓનો પ્રિયતમ બને છે.

એજ પ્રમાણે ખીલ' સ્વરોના ફલનું પ્રતિપાદન અનુયોગદ્વાર સૂત્રની
અનુયોગદ્વારચન્દ્રિકા ન મની ટીકામાં કરવામાં આવ્યું છે, તો ત્યાંથી વાંચી
લેવું આજ સૂત્રના સાતમાં સ્થાનમાં પણ સ્વરો વિષે ઘણી માહિતી આપવામાં
આવી છે. અથવા પક્ષીઓના સુરનું શુભ અને અશુભ ફલ દર્શાવનાર જે
શાસ્ત્ર છે, તેને સ્વર કહે છે, જેમ કે—“ વિવિચિવિસદો પુન્નો ” ઇત્યાદિ—
શ્યામા (પક્ષી વિશેષ) નો વિવિચિ વિશબ્દ પૂર્ણતાનો સૂચક હોય છે,
'સુલિસુલિ' શબ્દ ધાન્યનો સૂચક હોય છે, 'ચેરીચેરી' શબ્દ દીપ્તિનો સૂચક
હોય છે અને 'ચિક્કુ' શબ્દ લાભનો સૂચક હોય છે.

લક્ષણં સ્ત્રી પુરુષાદીનામ્, યથા--

“ અસ્થિબ્ધર્થાઃ સુખં માસે, ત્વચિ મોગાઃ, સ્ત્રિયોઽક્ષિણુ ।

ગતૌ યાનં, સ્વરે ચાજ્ઞા, સર્વે સત્ત્વે પ્રતિષ્ઠિતમ્ ॥૧॥ इत्यादि ॥७॥

તથા-વ્યજ્ઞનં=મપાદિ, યથા-“ લલાટકેશઃ પ્રમુત્વાય ” इत्यादि । ८ ॥

॥ સૂ ૨૦ ॥

एतानि च शास्त्राणि वचनविभक्तियोगेनाभिधेयप्रतिपादकानि भवन्तीति वचनविभक्तिस्वरूपमाह--

મૂલમ્-અટ્ટવિહા વયણવિભક્તી પળણત્તા, તં જહા-નિદેસે પઢમા હોઈ, વિઙ્યા ઉવણસણે । તઙ્યા કરણમ્મિકયા ચઉત્થી સંપદાવણે ॥ ૧ ॥ પંચમી ય અવાયાણે, છટ્ટી સસ્સામિ વાયણે । સત્તમી સંનિહાણત્થે અટ્ટમી આમંતણી ભવે ॥ ૨ ॥ તત્થ પઢમા વિભક્તી નિદેસે સો ઇમો અહં વત્તિ ૧ । વિઙ્યા ઉળ ઉવણસે ભળ કુળ વ ઇમં વ તં વત્તિ ૨ ॥ ૩ ॥ તઙ્યા કરણમ્મિ કયા ણીયં ચ કયં ચ તેણ વ મણ વા ૩ । હંદિ ણમો સાહાણ હવંહ ચઉત્થી પયાણમ્મિ ૪ ॥ ૪ ॥ અવળય ણિળહસુ તત્તો ઇત્તોત્તિ વ પંચમી અવાયાણે ૫ । છટ્ટી તસ્સ ઇમસ્સ વ ગયસ્સ વા સામિ

લક્ષણ--સ્ત્રી एवं पुरुष आदि लक्षणोंका शुभाशुभ सूचक शास्त्र है, वह लक्षणशास्त्र है जैसे--

“ અસ્થિબ્ધર્થાઃ સુસં માસે ” इत्यादि ।

व्यञ्जन--तिल मषा आदिकोंका नाम व्यञ्जन है जैसे--ललाटकेशः प्रमुत्वाय ” इत्यादि ८ ॥ सूत्र २० ॥

લક્ષણુ-સ્ત્રી અને પુરુષ-વિગેરેના લક્ષણોનું શુભ અશુભ બતાવનારું જે શાસ્ત્ર છે.

“ અસ્થિબ્ધર્થાઃ સુસંમાસે ” ઇત્યાદિ--

વ્યંજન શરીર પરનાં તલ, મસ આદિને વ્યંજન કહે છે,

જેમ કે “ લલાટકેશઃ પ્રમુત્વાય ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર. ૨૦ ॥

સંબંધે ૬ ॥ ૫ ॥ હવે પુનઃ સત્તમી તન્નિમિમ્મિ આહારકાલભાવે
ય ૧। આમંત્રણી ભવે અટ્ટમી ડ જહ હેજ્જુવાણત્તિ ૮॥૬॥સૂ૦૨૦॥

છાયા—અટ્ટવિધા વચનવિમક્તિઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથયા—નિર્દેશે પ્રથમા ભવતિ ૧,
દ્વિતીયા ઉપદેશને ૨। તૃતીયા કરણે કૃતા ૩, ચતુર્થી સંગ્રહાપને ૪ ॥૨॥ પચ્ચમી
ચ અપાદાને ૫, પઠ્ઠી સ્વસ્થામિ વાચને ૭। સપ્તમી સન્નિધાનાર્થે ૭, અટ્ટમી આમ-
ન્ત્રણી ભવેત્ ૮ ॥ ૨ ॥ તત્ર પ્રથમા વિમક્તિનિર્દેશે સઃ અયમ્ અહં વેતિ ૧।
દ્વિતીયા પુનરુપદેશે ધન કુરુ વા ઇદં વા તદ્વેતિ ૨ ॥ ૩ ॥ તૃતીયા કરણે કૃતા
નીતં ચ કૃતં ચ તેન વા મયા વા ૩। હન્દિ નમઃ સ્વાઘાયૈ ભવતિ ચતુર્થી પ્રદાને
૪ ॥૪॥ અપનય ગૃહાણ તત્ત ઇત્ત ઇતિ વા પચ્ચમી ૫। પઠ્ઠી તસ્ય અસ્ય વા ગતસ્ય
વા સ્વામિ સમ્બન્ધે ૬ ॥૫॥ ભવતિ પુનઃ સપ્તમી તદસ્મિન્ આધારકાલભાવે ચ
૭। આમન્ત્રણી ભવેત્ અટ્ટમી તુ યથા હે યુવન્નિતિ ॥૬॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

ટીકા—“ અટ્ટવિહા ઇત્યાદિ—

વચનવિમક્તિઃ—ઉચ્ચપન્તે ઇતિ વચનાનિ=પદાનિ, વિમજ્જયતે=પ્રકટીક્રિયતે
કર્તૃત્વ કર્મત્વાદિરુપોડયોડનયેતિ વિમક્તિઃ, વચનાનાં—વિમક્તિઃ, વચનવિમક્તિઃ—
પ્રથમાદિકા પ્રાતિપદિકવિમક્તિઃ અટ્ટવિધા પ્રજ્ઞપ્તા, તથયા—નિર્દેશે—પ્રાતિપદિકા-

યે શાસ્ત્ર વચન વિમક્તિકે યોગસે અભિધેયકે પ્રતિપાદક હોતે હૈં—
હસલિયે અથ સૂત્રકાર વચન વિમક્તિકે સ્વરૂપકા કથન કરતે હૈં—

“ અટ્ટવિહા વચનવિમક્તી પળ્લપ્તા ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—જો કહે જાતે હૈં—બોલે જાતે હૈં—વે વચનહૈં, વચનોંકા દૂસરા નામ
પદ હૈ, તથા કર્તૃત્વ કર્મત્વ આદિરૂપ અર્થ જિસકે દ્વારા પ્રકટ ક્રિયા
જાતા હૈ, વહ વિમક્તિ હૈ, વચનોંકો જો વિમક્તિ હૈ, વહ વચન વિમક્તિ
હૈ, પ્રથમા આદિક જો પ્રાતિપદિક વિમક્તિ હૈ, વહ આઠ પ્રકારકો કહી

આ શાસ્ત્રો વચન વિલક્ષિતના યોગથી અભિધેયનું પ્રતિપાદન કરનારાં
હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર વચન વિલક્ષિતના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે—

“ અટ્ટવિહા વચનવિમક્તી પળ્લપ્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જે બોલનામાં આવે છે—કહેવામાં આવે છે—તેનું નામ વચન છે. વચનોતું
બીજું નામ પદ છે, કર્તા, કર્મ આદિ રૂપ અર્થ જેના દ્વારા પ્રકટ કરવામાં
આવે છે, તેનું નામ વચનવિલક્ષિત છે. પંડેલી, બીજી, ત્રીજી આદિ જે પ્રતિ

ર્થમાત્રસ્ય પ્રતિપાદનં નિર્દેશસ્તસ્મિન્ પ્રથમા વિભક્તિઃ ભવતિ ॥૧॥ ઉપદેશને અન્ય-
તમક્રિયાયાં પ્રવર્તનેચ્છોત્પાદને યથા ‘ ધર્મંકુરુ’ ઇત્યાદૌ દ્વિતીયા વિભક્તિ
ભવતિ ॥૧॥ ‘ ઉપદેશનમ્ ’ ઇત્યુપલક્ષણમ્ । તેન ગ્રામં ગચ્છતીત્યાદૌ ઉપદેશનમ-
ન્તરેણાપિ દ્વિતીયા ભવતિ ॥૨॥ કરણે-તૃતીયા વિભક્તિ ભવતિ । અત્ર કરણ-
શબ્દસ્તન્ત્રેણ નિર્દિષ્ટઃ । તેનાત્ર કર્ત્તરિ=ક્રિયાયા સ્વાતન્ત્ર્યેણ વિવક્ષિતેડર્થે દેવદ-
ત્તાદૌ, કરણે=ક્રિયાસિદ્ધૌ પ્રકૃષ્ટોપકારકે ચ તૃતીયા વિભક્તિ ભવતિ । કરોતીતિ
કરણં ‘ કૃત્યલ્યુટો बहुलम् ’ इति बाहुलकात् कर्त्तरिल्युट् । क्रियतेऽनेनेति कर-

ગઈ હૈ, પ્રાતિપદિક અર્થ યાત્રકા જો પ્રતિપાદન હૈ, વહ નિર્દેશ હૈ,
હસ નિર્દેશમેં પ્રથમા વિભક્તિ હોતી હૈ, ઉપદેશનમેં-અન્યતમ ક્રિયામેં
પ્રવૃત્તિ કરાનેમેં એવં ઇચ્છાકે ઉત્પાદન કરાનેમેં દ્વિતીયા વિભક્તિ હોતી
હૈ જૈસે-તુમ ધર્મ કરો ઇત્યાદિ ઉપદેશન યહ ઉપલક્ષણ હૈ અતઃ
“ ગ્રામં ગચ્છતિ ” ઇત્યાદિમેં ઉપદેશનકે વિનાં બી દ્વિતીયા હુઈ હૈ,
કરણમેં તૃતીયા વિભક્તિ હાતી હૈ, યહાં કરગ શબ્દ તન્ત્રસે નિર્દિષ્ટ
હુઆ હૈ, હસસે કર્તામેં-ક્રિયામેં સ્વતન્ત્ર રૂપસે વિવક્ષિત હુએ દેવદત્ત
આદિમેં એવં કરણમેં ક્રિયાકી સિદ્ધિમેં પ્રકૃષ્ટ ઉપકારકમેં તૃતીયા વિભક્તિ
હોતી હૈ, જો ક્રિયા કરતા હૈ ડસકા કામ કરણ હૈ, કર્તા અર્થમેં બી
“ કૃત્યલ્યુટો बहुलम् ” હસસે લ્યુટકા વિધાન હોતા હૈ, અથવા ક્રિયા
જિસકે દ્વારા કી જોની હૈ, વહ કરણ હૈ, હસ અર્થમેં “ કરણે લ્યુટ ”
હસ સૂત્રસે લ્યુટકા વિધાન હૈ તાત્પર્ય યહ હૈ કિ કર્તા ઓર કરણ

પદિક વિભક્તિઆ છે તે આઠ પ્રકારની કહી છે પ્રાતિપદિક અર્થમાત્રનું જે
પ્રતિપાદન છે, તેનું નામ નિર્દેશ છે. પહેલી વિભક્તિ નિર્દેશાર્થે વપરાય છે.
બીજી વિભક્તિ ઉપદેશનના અર્થમાં-અન્યતમ ક્રિયામાં પ્રવૃત્ત કરાવવામાં અને
ઇચ્છાનું ઉત્પાદન કરાવવામાં-વપરાય છે. ગુજરતીમાં કર્માર્થે બીજી વિભક્તિ
વપરાય છે જેમ કે “ તમે ધર્મ કરો ” આ વાક્યમાં ‘ ધર્મ ’ પદ બીજી
વિભક્તિમાં વપરાય છે. ઉપદેશન વિના પણ બીજી વિભક્તિનો પ્રયોગ થાય છે.
જેમ કે-“ ગ્રામં ગચ્છતિ ” આ વાક્યમાં ‘ ગ્રામમ્ ’ આ પદ બીજી વિભક્તિમાં
વપરાયું છે. જેમ કે “ તે અપૂર્થી ક્ષણ કાપે છે ” આ વાક્યમાં અપૂ પદ કરણ્યુર્થે
ત્રીજી વિભક્તિમાં છે. કર્તા અર્થે પણ ત્રીજી વિભક્તિ વપરાય છે જેમ કે ‘ રામે
રાવણને માર્યો ’ આ વાક્યમાં રામ પદ કર્તા અર્થે ત્રીજી વિભક્તિમાં વપરાયું
છે. કર્તામાં-ક્રિયામાં સ્વતન્ત્ર રૂપે વિવક્ષિત થયેલા દેવદત્ત આદિમાં અને કરણમાં
-ક્રિયાની સિદ્ધિમાં પ્રકૃષ્ટ ઉપકારકમાં ત્રીજી વિભક્તિનો પ્રયોગ થાય છે. જે ક્રિયા

ળમ્, કરણે લ્યુટ્ ॥૩॥ સંપ્રદાપને-તંપ્રદાને=દાનસ્ય કર્મણા યોઽભિપ્રેતસ્તસ્મિન્
 ચતુર્થી વિભક્તિ ભવતિ ॥૪॥ અપાદાને=અપાયાવધિભૂતે પશ્ચમી વિભક્તિ ભવતિ
 ॥૫॥ સ્વ સ્વામિવાચને-સ્વં=મૃત્યાદિ, સ્વામી=રાજાદિઃ, તયોર્વાચને=તત્સમ્બન્ધ-
 પ્રતિપાદને ષષ્ઠી વિભક્તિ ભવતિ ॥૬॥ સન્નિધાનાર્થે-સન્નિધીયતે=આધીયતે યસ્મિ-
 રતત્ સન્નિધાનમ્=આધારઃ, તસ્મિન્નર્થે વાચ્યે સપ્તમી વિભક્તિ ભવતિ ૭। તથા-
 અષ્ટમી=સમ્બોધનવિભક્તિઃઆમન્ત્રણી=અભિમુખી કરણાર્થા ભવતિ ॥૮॥ इत्थं
 सामान्येनोक्त्वा सम्प्रति सोदाहरणमाह-तत्र अष्टसु वचनविभक्तिषु । निर्देशे
 प्रथमा विभक्ति भवति । यथा-'सः, त्वम्, अहं वेति १। उपदेशे पुनर्द्वितीया

इन दोनों अर्थोंमें ल्युट् प्रत्ययका विघात होता है दानके कर्मके द्वारा
 जो अभिप्रेत होता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है अपाय-विश्लेषका
 जो अवधिभूत होता है उसमें पंचमी विभक्ति होती है स्वस्वामि-
 सम्बन्धके कथनमें षष्ठी विभक्ति होती है। स्व शब्दसे मृत्यादि और
 स्वामी शब्दसे राजा आदिका ग्रहण हुआ है, सन्निधान अर्थमें आधा-
 रमें-सप्तमी विभक्ति होती है, तथा संबोधनमें-किसी मनुष्यको अपनी
 ओर करनेमें-संबोधन विभक्ति होती है, इस प्रकार सामान्यसे कथन
 करके अब सूत्रकार इन विभक्तियोंको दृष्टान्त देकर समझाते हैं,
 जैसे-“ सः अयम् अहंवा ” यह निर्देशमें प्रथमा विभक्ति हुई है,
 “ भग, कुरु, इदंवा तद्वा ” यह उपदेशमें द्वितीया विभक्ति है,
 इसको तात्पर्य ऐसा है कि-यह प्रत्यक्षभूत जो कार्य है, उसे तुम करो,

કરે છે તેનું નામ કરણુ છે. આ અથવા ક્રિયા જેના દ્વારા કરાય છે તેનું નામ
 કરણુ છે આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે કરણુ અને કર્તા અને બંને અર્થે
 ત્રીજી વિભક્તિ વપરાય છે જેને દાન અપાય છે તે પદને ચોથી વિભક્તિમાં
 વપરાય છે. જેમ કે “ રાજા બ્રાહ્મણને દાન આપે છે. ” આ વાક્યમાં
 ‘બ્રાહ્મણને’ ચોથી વિભક્તિ સંપ્રદાન અર્થે વપરાય છે.

અપાય-(વિશ્લેષ)ની અવધિ બતાવવા માટે પંચમી વિભક્તિ વપરાય
 છે. સ્વસ્વામી સંબંધના કથનમાં છઠી વિભક્તિ વપરાય છે. સ્વ શબ્દ વડે
 ભૂત્યાદિ (નોકર આકરો) અને સ્વામી શબ્દ વડે રાજા આદિ ગ્રહણ થયા છે.
 સન્નિધાન (આધાર અથવા અધિકરણ) અર્થે સાતમી વિભક્તિ વપરાય છે.
 સંબોધન કરવામાં સંબોધન વિભક્તિ વપરાય છે. હવે સૂત્રકાર દૃષ્ટાન્તો ૧૨।
 આઠે વિભક્તિઓનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે-“ સઃ અયં અહ વા ” અહીં નિર્દેશાર્થે
 પહેલી વિભક્તિનો પ્રયોગ થયો છે. “ ભગ, કુરુ ઇદં વા તદ્વા ” અહીં
 ઉપદેશાર્થે બીજી વિભક્તિનો પ્રયોગ થયો છે. આ વાક્યનો ભાવાર્થ નીચે-પ્રમાણુ છે

વિભક્તિ ભવતિ । યથા=મળ કુરુ-ઇદં વા, તદ્વેતિ-‘ ઇદં=પ્રત્યક્ષં યચ્છૂતં તદ્ મળ, ઇદં પ્રત્યક્ષં કાર્યં કુરુ, તત્=પરોક્ષં વા યચ્છૂતં તદ્ મળ, તત્=પરોક્ષં કાર્યં વા કુરુ ઇતિ ૨ । તૃતીયા વિભક્તિઃ કરણે=કર્તૃરિ કરણે ચ ભવતિ । યથા- કદા નીતં ચ કૃતં ચ તેન વા મયા વેતિ । કર્તૃરીદમુદાહરણમ્ । કરણેતુ ‘ રથેન યાતિ ’ ઇત્યાદિકં સ્વબુદ્ધ્યા વિભાવનીયમ્ ૩ । પ્રદાને=સંપ્રદાને ચતુર્થી વિભક્તિ ભવતિ । યથા-‘ હન્દિ ! નમઃ સ્વાહાયૈ ’ ઇતિ । ‘ હન્દિ ’ ઇતિ કોમલામન્ત્રણે ૪ । અપા-દાને પંચમી ભવતિ । યથા-અપનય ગૃહાણ એતસ્માદિતો વેતિ ૫ । સ્વામિસમ્બન્ધે=સ્વ-સ્વામિભાવસમ્બન્ધે વાચ્યે ષષ્ઠી ભવતિ । યથા-‘ ગતસ્ય તસ્ય, ગતસ્ય અસ્ય વા ઇદમસ્તિ ’ ઇતિ ૬ । આધારકાલભાવે=આધારે કાલે ભાવે ચ સપ્તમી ભવતિ । યથા-તન્ અસ્મિન્નિતિ । ‘ અસ્મિન્ કુણ્ડાદૌ તદ્ બદરાદિકં તિષ્ઠતિ ’-ઇત્યર્થઃ । અત્રાધારે સપ્તમી બોધ્યા । કાલે યથા-‘ મધૌ રમતે, ’ ભાવે તુ-

પદો, તથા યહ પ્રત્યક્ષભૂત જો કાર્ય હૈ તુમ કરો અથવા-પરોક્ષભૂત જો શ્રુત હૈ, ઉસે તુમ પદો, તથા-પરોક્ષભૂત જો કાર્ય હૈ, ઉસે તુમ કરો યહ શ્રુતમેં એવં કાર્યમેં દ્વિતીયા વિભક્તિ હુઈ હૈ, “કદા નીતં ચ કૃતં ચ તેન વા મયા વા” યહ કર્નામેં તૃતીયા વિભક્તિ હુઈ હૈ, કરણમેં તૃતીયા વિભક્તિ “રથેન યાતિ” હસ પ્રકારસે હૈ, હસી તરહસે ઓર ભી ઉદાહરણ અપની બુદ્ધિસે સમજ લેના ચહિયે “હન્દિ ! નમઃ સ્વાહાયૈ” યહ સંપ્રદાનમેં ચતુર્થી વિભક્તિ હુઈ હૈ “હન્દિ !” યહ પ્રયોગ કોમલા મન્ત્રણમેં હુમા હૈ । “અપનય, ગૃહાણ, એતસ્માત્ હતો વેતિ” યહ અપા-દાનમેં પંચમી વિભક્તિ હુઈ હૈ “ગતસ્ય તસ્ય ગતસ્ય અસ્ય વા ઇદં અસ્તિ” યહ સ્વસ્વામિસમ્બન્ધમેં ષષ્ઠી વિભક્તિ હુઈ હૈ “અસ્મિન્

“આ પ્રત્યક્ષભૂત જે શ્રુત છે તેને તમે લખો તથા આ પ્રત્યક્ષભૂત જે કાર્ય છે તે તમે કરો. અથવા પરોક્ષભૂત જે શ્રુત છે તેને તમે લખો તથા પરોક્ષ-ભૂત જે કાર્ય છે તે તમે કરો” અહીં શ્રુત અને કાર્ય, આ બે પદો બીજી વિલક્ષિતમાં વપરાયાં છે “કદા નીતં કૃતં ચ તેન વા મયા વા” અહીં કર્તા અર્થે ત્રીજી વિલક્ષિત છે. “રથેન યાતિ” અહીં કરણ અર્થે ત્રીજી વિલક્ષિત છે. “હન્દિ ! નમઃ સ્વાહાયૈ” અહીં સંપ્રદાન અર્થે ચોથી વિલક્ષિતનો પ્રયોગ થયો છે. “હન્દિ !” આ પદ કોમલ આમન્ત્રણને માટે પ્રયુક્ત થયું છે “અપનય, ગૃહાણ, એતસ્માત્ હતોવેતિ” અપાદાન અર્થે પાંચમી વિલક્ષિતનો પ્રયોગ થયો છે. “ગતસ્ય તસ્ય ગતસ્ય અસ્ય વા ઇદં અસ્તિ” અહીં સ્વસ્વામિસંબંધના અર્થમાં છઠી વિલક્ષિત વપરાઈ છે. “અસ્મિન્ કુણ્ડાદૌ બદરાદિકં અસ્તિ” અહીં

‘ચારિત્રેઽવતિષ્ઠતે’ ઇતિ ૭ આમન્ત્રણે તુ-અષ્ટમી વિભક્તિ ભવતિ । યથા-
હે યુવન્નિતિ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

વચનવિભક્તિયુક્તશાસ્ત્રસંસ્કૃતવુદ્ધય*છદ્મસ્થા અદૃશ્યાનર્થાન્ ન સાક્ષાત્કુ-
ર્વન્તિ, કેવલિનસ્તુ સાક્ષાત્કુર્વન્તિ, ઇતિ તાનેર્થાન્ અષ્ટ સ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્—અદ્વ ઠાળાઈં છઠમત્થેળં સઠ્ઠભાવેળં ણ જાળાઈ ણ
પાસઈ, તં જહા--ધમ્મસ્થિકાયં ૧ જાવ ગંધં ૭ વાયં ૮। ઇયાણિ
ચેવ ઉપ્પન્નનાળદંસળધરે અરહા જિળે કેવલી જાળાઈ પાસઈ
જાવ ગંધં ૭ વાયં ૮ ॥ સૂ. ૨૨ ॥

છાયા—અષ્ટ સ્થાનાનિ છદ્મસ્થાઃ સ્વલુ સર્વ ભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ, તથા-
ધર્માસ્થિકાયં ૧ યાવદ્ ગન્ધ ૭ વાતમ્ ૮। એતાનિ એવ ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનધરઃ
અર્હન્ જિનઃ કેવલી જાનાતિ પશ્યતિ યાવદ્ ગન્ધં વાતમ્ ॥ સૂ. ૨૨ ॥

ટીકા—‘અદ્વ ઠાળાઈં’ ઇત્યાદિ—

છદ્મસ્થઃ—અવધિજ્ઞાનમનઃપર્યવજ્ઞાનવર્જિતો મુનિઃ અષ્ટ સ્થાનાનિ સર્વભાવેન=
કુળ્હાદૌ બદરાદિકં અસ્તિ ” યહ આધારમેં સસમી હુઈ હૈ, “મઘૌરમતે”
યહ કાલમેં સસમી હુઈ હૈ “ચારિત્રેઽવતિષ્ઠતે” યહ ભાવમેં સસમી
હુઈ હૈ “હે યુવન્” ઇત્યાદિ યહ આમન્ત્રણમેં અષ્ટમી વિભક્તિ હુઈ હૈ સૂ. ૨૧

વચન વિભક્તિસે યુક્ત શાસ્ત્રસે સંસ્કૃત હુએ વુદ્ધિવાલે છદ્મસ્થ
અદૃશ્ય પદાર્થોંકો સાક્ષાત્ રૂપસે નહીં જાનતે હૈ, ઇન્હેં તો કેવલીહી
જાનતે હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર ઇન્હી પદાર્થોંકા આઠ સ્થાનરૂપસે કથન
કરતે હૈ—“અદ્વ ઠાળાઈં છઠમત્થેળં સઠ્ઠભાવેળં” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—અવધિજ્ઞાન એવં મનઃ પર્યવજ્ઞાનસે રહિત હુઆ છદ્મસ્થ

અધિકરણાર્થે સાતમી વિભક્તિ છે, “મઘૌ રમતે” અડી કાળના અર્થમાં સાતમી
વિભક્તિનો પ્રયોગ થયો છે. “ચારિત્રેઽવતિષ્ઠતે” અડી લાવના અર્થમાં
સાતમી વિભક્તિનો પ્રયોગ થયો છે.

‘હે યુવન્’ અડી સંબોધનાર્થે આઠમી વિભક્તિનો પ્રયોગ થયો છે. ॥ સૂ. ૨૧ ॥
વચન વિભક્તિથી યુક્ત શાસ્ત્રો વડે સંપન્ન હોય એવા બુદ્ધિશાળી છદ્મસ્થો
અદૃશ્ય પદાર્થોને સાક્ષાત્ રૂપે બાળી શકે છે એજ વાતની સૂત્રકાર હવે પ્રરૂપણા
કરે છે—“અદ્વ ઠાળાઈં છઠમત્થેળં સઠ્ઠભાવેળં” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—અવધિજ્ઞાન અને મનઃપર્યવજ્ઞાનથી રહિત એવો છદ્મસ્થ મુનિ નીચેનાં

સાક્ષાત્કારેણ ન જાનાતિ, ન પશ્યતિ, તદ્વથા-ધર્માસ્તિકાયં સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ ૧, યાવત્પદેન-અધર્માસ્તિકાયમ્ ૨, આકાશાસ્તિકાયમ્ ૩, જીવમ-શરીરપ્રતિબદ્ધમ્ ૪, પરમાણુપુદ્ગલં ૫ શબ્દં ૬ ચ સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ ગન્ધં ૭ વાતં ૮ ચ સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ ।

જિનસ્તુ એતાન્યષ્ટૌ સ્થાનાનિ સાક્ષાત્કારેણ જાનાતિ પશ્યતીત્યાહ-‘એયા-ણિચેવ’ ઇત્યાદિ । અસ્ય સૂત્રસ્ય વિસ્તરતો વ્યાખ્યા પશ્ચમસ્થાનસ્ય દ્વિતીયો-દેશે દ્રષ્ટવ્યા ॥ સૂ. ૨૨ ॥

જિનઃ સર્વજ્ઞત્વાદ્ ધર્માસ્તિકાયાદિવત્ આયુર્વેદમપિ જાનાતીત્યાયુર્વેદમષ્ટ-સ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્—અટ્ટવિદ્દે આઠવેણ પપ્પગત્તે, તં જહા--કોમારભિચ્ચે
૧, કાયતિગિચ્છા ૨, સાલાઇયં ૩, સલ્લહત્તા ૪, જંગોલી ૫,
ભૂયવિજ્ઞા ૬, સ્વારતંતે ૭, રસાયણે ૮ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

મુનિ આઠ સ્થાનોંકો સર્વભાવ સાક્ષાત્ રૂપસે નહીં જાનતા હૈ, નહીં દેખતા હૈ, વે આઠ સ્થાન યે હૈ—ધર્માસ્તિકાય યાવત્ વાત અર્થાત્ છદ્મસ્થ-જન ધર્માસ્તિકાયકો સર્વ ભાવસે નહીં જાનતા હૈ, નહીં દેખતા હૈ, યહાં યાવત્પદસે-અધર્માસ્તિકાયકો, આકાશાસ્તિકાયકો, અશરીર પ્રતિ-બદ્ધ જીવકો, પરમાણુ પુદ્ગલકો, એવં શબ્દકો વહ છદ્મસ્થ સર્વભાવસે નહીં જાનતા હૈ, ઓર નહીં દેખતા હૈ, ઇસી તરહ વહ ગન્ધકો ઓર વાતકો બી સર્વ ભાવસે નહીં જાનતા હૈ, ઓર નહીં દેખતા હૈ પરન્તુ જો જિન હૈ વે આઠ સ્થાનોંકો સાક્ષાત્ રૂપસે જાનતે હૈ ઓર દેખતે હૈ । ઇસ સૂત્રકી વ્યાખ્યા વિસ્તારસે પંચમ સ્થાનકે દ્વિતીય ઉદ્દેશમેં દેખ લેના ચાહિયે ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

જિન સર્વજ્ઞ હોતે હૈ, ઇસસે વે ધર્માસ્તિકાયાદિકોંકી તરહ આયુ-

આઠ સ્થાનોંકે સર્વભાવે (સાક્ષાત્ રૂપે) જાણતો પણ નથી—

(૧) ધર્માસ્તિકાય, (૨) અધર્માસ્તિકાય, (૩) આકાશાસ્તિકાય, (૪) અશરીર પ્રતિબદ્ધ જીવ, (૫) પરમાણુ પુદ્ગલ, (૬) શબ્દ, (૭) ગન્ધ અને (૮) વાયુ.

પરન્તુ કેવળજ્ઞાની જિન આ આઠ સ્થાનોંકે સાક્ષાત્ રૂપે જાણે છે અને દેખે છે આ સૂત્રમાં આવતા પદોની વ્યાખ્યા પાંચમાં સ્થાનના બીજા ઉદ્દેશમાં આપવામાં આવી છે તો ત્યાંથી વાંચી લેવી. ॥ સૂ. ૨૨ ॥

જિન સર્વજ્ઞ હોય છે. તેથી તેઓ ધર્માસ્તિકાય આદિકોંકી જેમ આયુ-

છાયા—અષ્ટવિધઃ આયુર્વેદઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—કૌમારભૃત્યમ્ ૧, કાયચિકિત્સા ૨, શાલાક્રયં ૩, શલ્ય હત્યા ૪, જઙ્ગોલી ૫, ભૂતવિદ્યા ૬, ક્ષારતન્ત્રં ૭, રસાયનમ્ ૮ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટવિદે આઠ્ઠવેષ ’ ઇત્યાદિ—

આયુર્વેદઃ—આયુઃ=જીવિતકાલઃ, તદ્ વિદન્તિ=જાનન્તિ—રક્ષિતુમનુભવન્તિ, તદ્વિન્દિન્તિ=લભન્તે વા તદ્વિચ્છેદકવ્યાધિપ્રતીકારાત્ સર્પાદ્યુપક્રમરક્ષણેન યેન યતો યસ્મિન્ સતિ વા સ આયુર્વેદઃ, અથવા—આયુઃ=જીવિતં, તદ્વિન્દન્તિ=વ્યાધિભ્યસ્તદ્રક્ષણવિધિં જાનાતિ, પૂર્ણં વા તદ્ વિન્દન્તિ=લભન્તે તદુક્તપથ્યા-હારાધાસેવનતો યેન યતો યસ્મિન્ સતિ વા સ આયુર્વેદ=વૈદ્યકશાસ્ત્રે, સ ચ અષ્ટ-

વેદકો ભી જાનતે હૈં હસલિયે અવ સૂત્રકાર આયુર્વેદકા કથન આઠ સ્થાનોંસે કરતે હૈં—“ અટ્ટવિદે આઠ્ઠવેષ પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ આયુ નામ જીવિત કાલકાહૈ, હસ જીવિતકો જિસકે દ્વારા અથવા જિસસે યા જિસકે હોને પર મનુષ્ય જાનતે હૈં વહ આયુર્વેદ હૈ, હમારે જીવનકી રક્ષા કિસ તરહસે હો સકની હૈ, વ્યાધિકા પ્રતીકાર કૈસે હોના હૈ, સર્પાદિકે ઉપદ્રવસે રક્ષા કૈસે હોની હૈ, ઇત્યાદિ જીવનકે રક્ષાકે ઉપાયોંકા મનુષ્ય જિસકે દ્વારા યા જિસકે વલસે યા જિસકે બોધ હોને પર જાન લેતા હૈ, વહ આયુર્વેદ હૈ, અથવા—જિસકે દ્વારા યા જિસસે યા જિસકે બોધ હોને પર જો મનુષ્ય જીવનકો વ્યાધિસે સુરક્ષિત હોકર આનન્દસે વ્યતીત કરતે હૈં, ઉસકે રક્ષણકી વિધિકો જાનતે હૈં અથવા પથપ્રાહાર આદિકે સેવનસે જો પૂર્ણ જીવ પ્રાપ્ત કરતે હૈં વહ આયુર્વેદ હૈ, આયુર્વેદકા દૂસરા નામ વૈદ્યકશાસ્ત્ર ભી હૈ, યહ

વેદને પશુ જાણુતા હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આયુર્વેદના આઠ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે. “ અટ્ટવિદે આઠ્ઠવેષ પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જીવિતકાળને આયુ કહે છે જેના દ્વારા અથવા જેના સદ્ભાવને લીધે મનુષ્ય આ જીવિતને જાણે છે, તે શાસ્ત્રનું નામ આયુર્વેદ છે આપણા જીવનનું રક્ષણ કેવી રીતે થઈ શકે. રોગોનો સામનો કેવી રીતે થઈ શકે, સર્પાદિકોનું ઉપદ્રવથી જીવનની રક્ષા કેવી રીતે કરી શકાય, ઇત્યાદિ બાબતોને લોકો જે શાસ્ત્રની મદદથી, જે શાસ્ત્રને આધારે અથવા જે શાસ્ત્રના અભ્યાસથી જાણી શકે છે તે શાસ્ત્રનું નામ આયુર્વેદ છે અથવા જે શાસ્ત્રના દ્વારા જે શાસ્ત્રના બોધ દ્વારા મનુષ્ય વ્યાધિઓનો પ્રતીકાર કરીને પોતાના જીવનને તંદુરસ્તી પૂર્વક આનંદથી વ્યતીત કરે છે અને તેના રક્ષણની વિધિને જાણે છે, અથવા પથ્યાહાર આદિના સેવન દ્વારા પૂર્ણ તંદુરસ્ત જીવન પ્રાપ્ત કરે છે, તે શાસ્ત્રનું નામ

વિધ. પ્રજ્ઞપ્તઃ । તદ્વથા-કૌમારભૃત્યં-કુમારાઃ=બાલકાઃ, તેવાં ભૃતિઃ=પોષણં, તત્ર સાધુ-કૌમારભૃત્યમ્-કુમારપોષણનિમિત્તસ્ય ગત્વાદિ દુગ્ધસ્ય સંશોધનાર્થં માતુઃ સ્તન્યસ્ય દુષ્ટત્વશૂન્યત્વકારકવ્યાધીનામુપશમનાર્થં ચ યચ્છાસ્ત્વં તદિતિ પ્રથમો ભેદઃ ॥૧॥ કાયચિકિત્સા-કાયસ્ય ચિકિત્સાયાઃ=વ્યાધિપતીકારસ્ય પ્રતિ-પાદકં શાસ્ત્રમ્ । અત્ર દ્વિ-શરીરસંસ્થિતાનાં જ્વરાતિસારરક્તશાયોન્માદપ્રમેહ કુઠ્ઠાદીનાં શમનાર્થાં ઉપાયાઃ પ્રદર્શ્યન્તે-इति દ્વિતીયઃ ॥૨॥ શાલાક્યમ્-શલા-કાયાઃ કર્મે શાલાક્યમ્, તત્પ્રતિપાદકં શાસ્ત્રમપિ તદેવ । શલાકયા યત્ શ્રવણ-

આયુર્વેદ આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ-જૈસે-કૌમારભૃત્ય ૧, કાય ચિકિત્સા ૨, શાલાક્ય ૩, શલ્યહત્યા ૪, જઙ્ઘોલી ૫, ભૂતવિદ્યા ૬, ક્ષારતન્ત્ર ૭, ઔર રસાયન ૮। જો આયુર્વેદ બાલકોંકે ભરણપોષણમેં સાધુ હોતા હૈ, વહ કૌમારભૃત્ય હૈ, તાત્પર્ય યહ હૈ કિ કુમારકે પોષ-ણમેં નિમિત્ત જો ગત્વાદિકા દુગ્ધ હૈ, ઉસ દુગ્ધકે સંશોધનકે લિયે એવં માતાકે દૂધકો સ્વરાચ કરનેવાલી યા માતાકે દૂધકો સુખાં દેનેવાલી વ્યાધિપોંકી શાન્તિકે નિમિત્ત જો શાસ્ત્ર હૈ વહ કૌમારભૃત્ય હૈ ૧, કાયચિકિત્સા-કાયકી ચિકિત્સાકા પ્રતિપાદક જો શાસ્ત્ર હૈ વહ કાયચિકિત્સા શાસ્ત્ર હૈ, ઇસ શાસ્ત્રમેં કાયકો-શરીરકો-કષ્ટ દેનેવાલી વ્યાધિયોંકા જૈસા જ્વરકા અતિસારકા રક્તશોધકા ઉન્માદકા કુઠ્ઠ આદિ રોગોંકે-ઉપશમનકા પ્રતીકાર- કહા ગયા હૈ, શલાકાકા જો

આયુર્વેદના છે. તેનું બીજું નામ વૈદકશાસ્ત્ર છે. આ આયુર્વેદના નીચે પ્રમાણે અઠ પ્રકાર છે—(૧) કૌમારભૃત્ય, (૨) કાયચિકિત્સા, (૩) શાલાક્ય, (૪) શલ્ય-હત્યા, (૫) જઙ્ઘોલી, (૬) ભૂતવિદ્યા, (૭) ક્ષારતન્ત્ર, અને (૮) રસાયન.

કૌમારભૃત્ય-જે આયુર્વેદ બાલકોના ભરણપોષણથી સારી સારી વિધિ બતાવે છે, તેનું નામ કૌમારભૃત્ય છે. બાલકોના પોષણને માટે ઉપયોગી એવા ગાય આદિના દૂધના સંશોધનની વિધિ તથા માતાના દૂધના સંશોધનની વિધિ આ શાસ્ત્ર બતાવે છે. માતાના સ્તનમાંથી દૂધને સૂકવી નાખનારી જે વ્યાધિઓ થાય છે તેમના શમનનો ઇલાજ આ શાસ્ત્રમાં બતાવવામાં આવ્યો છે.

(૨) કાયચિકિત્સા-શરીરની ચિકિત્સાને લગતું જે શાસ્ત્ર છે તેને કાય-ચિકિત્સાશાસ્ત્ર કહે છે. આ શાસ્ત્રમાં જ્વર, અતિસાર આદિ વ્યાધિઓના તથા કોઠ, રક્તપિત્ત, રક્તશુદ્ધિ, ઉન્માદ આદિના પ્રતીકારના-ઉપશમનના ઇલાજો બતાવવામાં આવ્યા છે.

(૩) શાલાક્ય-શલાકા (લોહાનો સળીઓ)નું જે કાર્ય છે, તે શાલાક્ય છે. (સળીઆને ગરમ કરીને અમુક ભાગોમા ડામ દેવાથી અમુક રોગો મટે

વદનનયનઘ્રાણાદીનાં રોગાપનયનં ભવતિ તદુપાયોઽત્ર પ્રદર્શ્યતે, इति तृतीयः।
 શલ્યહત્યા - શલ્યસ્ય = શરીરપ્રવિષ્ટશરાદિશલ્યસ્ય હત્યા = હનનમ્ - ઉદ્ધરણં -
 શલ્યહત્યા, તત્પ્રતિપાદકં શાસ્ત્રમપિ શલ્યહત્યેત્યુચ્યતે, इति चतुर्थः। જજ્ઞોલી=
 વિષવિઘાતતન્ત્રમ્ ।

અત્ર-સર્પકીટલૂનાદષ્ટવિષવિઘાતાર્થાં વિવિધવિષસંયોગશમનાર્થા-
 શ્રોપાયા પ્રદર્શ્યન્તે, इति पञ्चमः। ભૂતવિદ્યા-ભૂતાદીનાં નિગ્રહોપાયા વિદ્યન્તે=
 જ્ઞાયન્તે યયા સા । અત્ર હિ-દેવાસુરગન્ધર્વયક્ષરક્ષઃ પિતૃપિશાચનાગગ્રહાદિ
 જનિતોપદ્રવપ્રશમનાર્થં શાન્તિકર્મ પ્રભૃતિ નિર્દિશ્યતે इति षष्ठः। ક્ષારતન્ત્રમ્-

કાર્યં હૈ, वह शालक्य है, इस कर्मका प्रतिपादक जो शास्त्र है, वह
 શાલક્ય હૈ इस शास्त्रमें शलाई द्वारा श्रवणके वदनके नयनके एवं
 ઘ્રાણ આદિકે રોગોંકો દૂર કરનેકે ઉપાય પ્રકટ કિયે ગયે હૈ, शल्य-
 હત્યા-इस शास्त्र द्वारा शरीरमें प्रविष्ट हुए शर आदिको बाहर निका-
 लनेका उपाय प्रकट किया गया है, જજ્ઞોલી-इस शास्त्रमें विविध प्रका-
 रके विषोंको शमन करनेके उपाय किये गये हैं, जैसे सर्प दष्ट, कीट
 दष्ट और लूना दष्ट व्यक्तिके विषको नष्ट करनेके तथा और भी
 અનેક પ્રકારકે વિષસંયોગકો શમન કરનેકે ઉપાય દિશ્વલાયે ગયે હૈ ।
 ભૂતવિદ્યા-इस विद्या द्वारा भूत आदिकोंके निग्रहके उपाय प्रकट किये
 હૈ-अर्थात् भूत आदिकोंका निग्रह कैसे किया जाता है, ये सब बातें
 इस विद्या द्वारा जानी जाती हैं, यहां देव, असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस,
 પિતૃ, પિશાચ, एवं नाग, ग्रह आदि जनित उपद्रवोंके प्रशमनके लिये

છે). આ શલાકા વડે રોગનો પ્રતીકાર કરવાના ઇલાજો બતાવનારું જે શાસ્ત્ર
 છે તેને શાલક્ય કહે છે. આ શાસ્ત્રમાં કાન, નાક, આંખ અને મુખના રોગોનો
 સળીઓ દ્વારા ઇલાજ કરવાના માર્ગો બતાવ્યા છે.

(૩) શલ્યહત્યા-શરીરમાં ખૂંપી ગયેલા તીર આદિને બહાર કાઢવાના
 ઉપાયો જે શાસ્ત્રમાં બતાવ્યા છે, તે શાસ્ત્રતું નામ શલ્યહત્યા છે

(૪) જજ્ઞોલી-આ શાસ્ત્રમાં વિવિધ પ્રકારના વિષોના ઉપશમનના ઇલાજો
 બતાવ્યા છે. જેમ કે સર્પદંસ, વીંછીનો દંસ, વ્યક્તિના વિષને ઉતારવાની રીત
 આ શાસ્ત્રમાં બતાવી છે.

(૬) ભૂતવિદ્યા-આ વિદ્યા દ્વારા ભૂત આદિના નિગ્રહના ઉપાય પ્રકટ
 કરવામાં આવ્યા છે. એટલે કે ભૂત, દેવ, અસુર ગન્ધર્વ, યક્ષ, રાક્ષસ, પિતૃ,
 પિશાચ, ગ્રહ, નાગ અદિ જનિત ઉપદ્રવોના શમન માટે શાન્તિકર્મ આદિ ઉપાય
 આ શાસ્ત્રમાં બતાવ્યા છે.

ક્ષરણં ક્ષારઃ=વીર્યક્ષરણં, તત્પતિરોધનોપાયપ્રતિપાદકં યત્તન્ત્રં-શાસ્ત્રં ક્ષારતન્ત્ર-
મિતિ સપ્તમઃ । તથા-રસાયનમ્-રસઃ=અમૃતરસઃ વયઃ રથાપનાર્થમ્ આયુર્મેધાજનકો
રોગાપહરણસમર્થશ્ચ ઔષધિવિશેષઃ, તસ્ય અયનં=પ્રાપ્તિઃ-રસાયનમ્, તત્પતિ-
પાદકં શાસ્ત્રમપિ રસાયનમ્ । અથવા-રસસ્ય=અમૃતરસસ્ય અયનં=જ્ઞાનં યતસ્તદ્ર-
સાયનમ્ । રસસ્ય=અમૃતરસસ્ય અયનમિવ=મૃદમિવ વા યત્તદ રસાયનમિતિ
અપ્તમો ભેદઃ ॥ સૂ ૨૩ ॥

રસાયન પ્રભાવેણ જનો દેવવદ્ નિરુપક્રમાયુષ્કો ભવતીતિ નિરુપક્રમાયુષ્કાણાં
શક્રાદિદેવાનામગ્રમહિષીરષ્ટસ્થાનત્વેનાદ —

મૂલમ્—સક્લસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરત્નો અટ્ટ અગ્ગમહિ-
સીઓ પન્નત્તાઓ, તં જહા-પડમા ૧, સિવા ૨, સતી ૩, અંજૂ
૪, અમલા ૫, અચ્છરા ૬, ણવમિયા ૭ રોહિણી ૮ । ૧ । ર્હિસા-
ણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરત્નો અટ્ટઅગ્ગમહિસીઓ પન્નત્તાઓ, તં
શાન્તિકર્મ આદિ દિલ્લાયે ગયે હૈં । ક્ષારતન્ત્ર-હસ તન્ત્રમેં વીર્યકો
પ્રસ્થલિત હો જાનેકે નિરોધકા ઉપાય પ્રદર્શિત ક્રિયા ગયા હૈ, રસાયન-
રસ નામ અમૃત રસકા હૈ-વયકો સ્થાપન કરનેકે લિયે યથાવત્ રચનેકે
લિયે આયુકી વૃદ્ધિકા કરનેવાલા એવ મેધાકી વૃદ્ધિકા કરનેવાલા તથા
રોગકે અપહરણ કરનેમેં શક્તિશાલી એસા જો ઔષધિ વિશેષ હૈ-
હસ ઔષધિ વિશેષકી પ્રાપ્તિકા પ્રતિપાદક જો શાસ્ત્ર હૈ, વહ રસાયન
હૈ, અથવા અમૃત રસકા જ્ઞાન જિસસે હોતા હૈ વહ રસાયન હૈ, અથવા
જો અમૃત રસકે ઘરકે જૈસા હોના હૈ, વહ રસાયન હૈ, એસા યહ
આઠવાં ભેદ હૈ ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

(૭) ક્ષારતન્ત્ર-આ શાસ્ત્રમાં વીર્યનું સ્ખલન થઈ જતું અટકાવવાના
ઉપાયો બતાવ્યા છે.

(૮) રસાયન-અમૃતરસનું નામ રસ છે, સદા યુવાન રહેવા માટે-વૃદ્ધ-
ત્વના નિરોધ માટે, આયુષ્યની વૃદ્ધિ માટે મેધા (બુદ્ધિ પ્રતિભા)ની વૃદ્ધિ
માટે જે શાસ્ત્રમાં હતાં બતાવ્યા છે તે શાસ્ત્રનું નામ રસાયન શાસ્ત્ર છે. એટલે
કે આ શાસ્ત્રમાં એવા ઔષધોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે કે જેનાં દ્વારા
નિત્ય યૌવન આદિની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે. અથવા અમૃતરસનું જ્ઞાન, જે શાસ્ત્રના
અભ્યાસથી પ્રાપ્ત થાય છે તે શાસ્ત્રનું નામ રસાયનશાસ્ત્ર છે. અથવા તે અમૃત-
રસના ઘર જેવું હોય છે. એવો આ આઠમો ભેદ સમજવો ॥ સૂ. ૨૩ ॥

જહા-કળહા ૧, કળહરાઈ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિત્યા ૪, વસુ
૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭, વસુન્ધરા ૮ । ૨ । સક્રસ્ય ણં
દેવિંદસ્ય દેવરત્નો સોમસ્ય મહારત્નો અદૃઅગ્ગમહિસીઓ પન્ન-
ત્તાઓ । ૩ । ઈસાણસ્ય ણં દેવિંદસ્ય દેવરત્નો વેસમાણસ્ય
મહારત્નો અદૃઅગ્ગમહિસીઓ પળ્લન્તાઓ । ૪ ॥ સૂ૦ ૨૪ ॥

છાયા—શક્રસ્ય સ્વલુ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય અદૃ અગ્ગમહિષ્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—પદ્મા ૧, શિવા ૨, સતી ૩, અન્જૂ ૪, અમલા ૫, અપ્સરા ૬, નવમિકા
૭, રોહિણી ૮ । ૧ । ઈશાનસ્ય સ્વલુ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય અદૃ અગ્ગમહિષ્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિઃ ૨, રામરક્ષિતા ૪, વસુઃ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુ-
મિત્રા ૭, વસુન્ધરા ૮ । ૨ । શક્રસ્ય સ્વલુ દેવરાજસ્ય સોમસ્ય મહારાજસ્ય અદૃ

રસાયનકે પ્રભાવસે મનુષ્ય દેવકી તરહ નિરુપક્રમ આયુવાલા
હોતા હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર નિરુપક્રમ આયુવાલે શક્રાદિ દેવોંકી
અગ્ગમહિષિયોંકા કથન ઓઠ સ્થાનોંસે કહતે હૈ—

“ સક્રસ્ય ણં દેવિંદસ્ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રકી આઠ અગ્ગમહિષિયા કહી ગઈ
હૈ. ડનકે નામ ઇસ પ્રકારસે હૈ—પદ્મા ૧, શિવા ૨, સતી ૩, અન્જૂ ૪,
અમલા ૫, અપ્સરા ૭, નવમિકા ૭, ઓર રોહિણી ૮ । દેવેન્દ્ર દેવરાજ
ઈશાનકી આઠ અગ્ગમહિષિયાં કહી ગઈ હૈ—ડનકે નામ ઇસ પ્રકારસે
હૈ—કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિતા, વસુ ૫, વસુગુપ્તા
૬, વસુમિત્રા ૭, ઓર વસુન્ધરા ૮ । દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રકે લોકપાલ

રસાયનના પ્રભાવથી માણસ દેવના જેવા નિરુપક્રમ અ.યુવાણા બને છે.
તેથી હવે સૂત્રકાર નિરુપક્રમ આયુવાળા શક્રાદિની અગ્ગમહિષિઓનું આઠ
સ્થાનની અપેક્ષાએ કથન કરે છે. “સક્રસ્ય ણં દેવિંદસ્ય” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રને આઠ અગ્ગમહિષિઓ છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે
છે—(૧) પદ્મા, (૨) શિવા, (૩) સતી, (૪) અન્જૂ, (૫) અમલા, (૬) અપ્સરા,
(૭) નવમિકા અને (૮) રોહિણી.

દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનને આઠ અગ્ગમહિષિઓ છે. તેમનાં નામ નીચે
પ્રમાણે છે—(૧) કૃષ્ણા, (૨) કૃષ્ણરાજિ, (૩) રામા, (૪) રામરક્ષિતા, (૫) વસુ,
(૬) વસુગુપ્તા, (૭) વસુમિત્રા અને (૮) વસુન્ધરા. દેવેન્દ્ર દેવરાજ શક્રના લોક-

અગ્રમહિષ્યઃ પ્રજ્ઞતાઃ ૧૩। ईशानस्य खलु देवेन्द्रस्य देवराजस्य वैश्रमणस्य महाराजस्य अष्ट अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः ॥ १४॥ सू० २४ ॥

ટીકા—‘ સક્સ પં ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાख्या સુગમા ॥ સૂ० ૨૪ ॥

મહાગ્રહા અપિ દેવા એવ, અતસ્તાનષ્ટવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્-અટ્ટ મહગ્ગહા પળ્લતા, તં જહા-ચંદે ૧, સૂરે ૨, સુકે ૩ બુહે ૪ બહસ્સઈ ૫, અંગારે ૬, સર્ણિચરે ૭ કેઝ ૮ ॥સૂ०૨૫॥

છાયા--અષ્ટ મહાગ્રહાઃ પ્રજ્ઞતાઃ તથા-ચન્દ્રઃ ૧, સૂરઃ ૨, શુક્રઃ ૩ બુધઃ ૪ વૃહસ્પતિઃ ૫ અન્નારઃ ૬, શનૈશ્વરઃ ૭, કેતુઃ ૮ ॥મૂ० ૨૫॥

ટીકા--‘ અટ્ટ મહગ્ગહા ’ ઇત્યાદિ—

મહાગ્રહાઃ મહાન્તથ તે ગ્રહાશ્વેતિ તથા, મનુષ્યતિરશ્વામુપધાતાનુગ્રહકારિત્વાત્ તે ચ ચન્દ્રાદિભેદેન અષ્ટવિધા વોધ્યા ઇતિ ॥ સૂ० ૨૫ ॥

જો સોમ મહારાજ હૈ, ડનકી આઠ અગ્રમહિષિયાં કહી ગઈ હૈં ઇસી પ્રકારસે દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાન લોકપાલ જો વૈશ્રવણ મહારાજ હૈં, ડનકી આઠ અગ્રમહિષિયાં કહી ગઈ હૈં ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

મહાગ્રહ મી દેવહી હોતે હૈં-અનઃ અચ સૂત્રકાર ડનકી આઠ પ્રકારતાકા કથન કરતે હૈં—“ અટ્ટ મહગ્ગહા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—મહાગ્રહ આઠ કહે ગયે હૈં, જૈસે-ચન્દ્ર ૧, સૂર્ય ૨, શુક્ર ૩, બુધ ૪, વૃહસ્પતિ ૫, અન્નાર ૬, શનૈશ્વર ૭ ઓર કેતુ ૮। મનુષ્ય એવં તિર્યશ્ચોકે ઉપધાત એવં અનુગ્રહકારી હોનેસે ઇન્હે મહાગ્રહ કહા ગયા હૈ ॥૨૫॥

પાલ સોમ મહારાજને આઠ અગ્રમહિષીઓ છે. એજ પ્રકારે દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનના લોકપાલ વૈશ્રમણ મહારાજને આઠ અગ્રમહિષીઓ છે. ॥ સૂ. ૨૪ ॥

મહાગ્રહો પણ દેવો જ છે. તેથી હવે સૂત્રકાર તેમના આ પ્રકારેનું કથન કરે છે—“ અટ્ટ મહગ્ગહા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ

આઠ મહાગ્રહો કહ્યા છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ચન્દ્ર, (૨) સૂર્ય, (૩) શુક્ર, (૪) બુધ, (૫) વૃહસ્પતિ (શુર) (૬) અન્નાર (મંગળ), (૭) શનૈશ્વર (શની) અને (૮) કેતુ. તેઓ મનુષ્યો અને તિર્યંચોને ઉપધાત અને અનુગ્રહકારી હોય છે, તેથી જ તેમને મહાગ્રહો કહ્યા છે. ॥ સૂ. ૨૫ ॥

મહાગ્રહાશ્ચ મનુષ્યાણાં તિરસ્થાં ચોપવાતાનુગ્રહ કારિણો વાદરવનસ્પતીના મુપ-
વાતાદિ કારકત્વેન મવન્તીતિ વાદરવનસ્પતીન અપ્ટસ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્—અટ્ટવિહા તળવળસ્સઙ્કાહ્યા પળ્લન્તા, તં જહા—મૂલે ૧,
કંદે ૨, સ્વંધે ૩, તથા ૪, સાલે ૫ પ્રવાલે ૬ પત્તે ૭, પુષ્પે ૮ ॥ સૂ. ૦ ૨૬ ॥

છાયા—અટ્ટવિહાસ્તૃળ વનસ્પતિકાયાિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—મૂલં ૧ કન્દઃ ૨,
સ્કન્ધઃ ૩ ત્વક્ ૪ શાલા ૫ પ્રવાલઃ ૬, પત્રમ્ ૭ પુષ્પમ્ ૮ ॥ સૂ. ૦ ૨૬ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટવિહા ’ इत्यादि—

તૃળવનસ્પતિકાયાિકાઃ=વાદરવનસ્પતયઃ અટ્ટવિહાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—
મૂલમિત્યાદિ । તત્ર-મૂલમ્ = પ્રસિદ્ધમ્, કન્દઃ = સ્કન્ધસ્યાધોભાગઃ,
સ્કન્ધઃ=સ્થુલમિતિ પ્રસિદ્ધમ્, ત્વક્=છલ્લી શાલા=શાલા, પ્રવાલોઽઙ્કુરઃ પરં
પુષ્પં ચ પ્રસિદ્ધમિતિ ॥ સૂ. ૦ ૨૬ ॥

મનુષ્ય ઓર તિર્યંશ્ચોકે ઉપવાત ઓર અનુગ્રહકારી યે મહાગ્રહ
વાદર વનસ્પતિયોંકે ભી ઉપવાતિકારક હોનેસે મહાગ્રહ રૂપસે પ્રસિદ્ધ
હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર વાદર વનસ્પતિયોંકી અષ્ટ પ્રકારતાકા કથન કરતેહૈં

“ અટ્ટવિહ તળવળસ્સઙ્કાહ્યા પળ્લન્તા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—તૃળરૂપ વાદર વનસ્પતિકાયાિક આઠ પ્રકારકે કહે ગયે
હૈં, જૈસે—મૂલ ૧, કન્દ ૨, સ્કન્દ ૩, ત્વક્ ૪, શાલા ૫, પ્રવાલ ૬, પત્ર
૭ ઓર પુષ્પ ૮ । તૃળ વનસ્પતિકાયાિકસે યહાં પર વાદર વનસ્પતિકાયાિક
લિયે ગયેહૈં, યે મૂલાદિકે ભેદસે વનસ્પતિકાયાજો આઠ પ્રકારકે કહે ગયે
હૈં—उनका तात्पर्य ऐसा है—मूल नाम जड़ का है, स्कन्धके अधोभागका नाम

મનુષ્યો અને તિર્યંચોને ઉપવાત અને અનુગ્રહકારી એવા મહાગ્રહો
વાદર વનસ્પતિકાયાિકોને પણ ઉપવાતિકારક પૂર્વ સૂત્ર માથેના આ પ્રકારના સંખ-
ધને લીધે હવે સૂત્રકાર—વાદર વનસ્પતિકોના આઠ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ અટ્ટવિહ તળવળસ્સઙ્કાહ્યા પળ્લન્તા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—તૃળરૂપ વાદર વનસ્પતિકાયાિકના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) મૂળ, (૨) કન્દ, (૩) સ્કન્દ, (૪) ત્વક્, (૫) શાલા, (૬) પ્રવાલ, (૭)
પત્ર અને (૮) પુષ્પ. અહીં તૃળવનસ્પતિકાયાિક એટલે વાદરવનસ્પતિકાયાિક
સમજવા લેઈએ. તેના મૂળ આદિ આઠ પ્રકારોનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

વનસ્પતિકાયાિકનો જમીનમાં રહેલો ભાગ મૂળને નામે ઓળખાય છે.
થડના અધોભાગને કન્દ કહે છે. થડને સ્કન્ધ કહે છે. છાલને ત્વક્ કહે છે.

વાદરવનસ્પતીનાશ્રિત્ય ચતુરિન્દ્રિયાદયો जीवास्तिष्ठन्ति, तेषामविराधनया संयमो विराधनयाचाऽसंयमो भवतीति चतुरिन्द्रियजीवानाश्रित्य संयमममंयमं च प्रत्येकमष्टस्थानत्वेनाह—

મૂલમ્—ચતુરિન્દ્રિયા ણં जीवा असमारममाणस्य अट्टविहे संजमे कज्जइ, तं जहा—चक्खुमयाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवई १, चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ २। एवं जाव फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ ७, फासामएण दुक्खेण असंजोएत्ता भवइ ८॥ चउरिन्दियाणं जीवा समारममाणस्त अट्टविहे असंजमे कज्जइ, तं जहा—चक्खूमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ, १ चक्खूमएण दुक्खेणं संजोएत्ता भवइ २। एवं जाव फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ ७, फासमएणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवइ ८ ॥ સૂ૦ ૨૭ ॥

છાયા—ચતુરિન્દ્રિયાન્ ચલુ जीवान् असमारममाणस्य अष्टविधः संयमः क्रियते, तद्यथा—चक्षुर्मयात् सौख्यात् अव्यपरोपयिता भवति १, चक्षुर्मयेन दुःखेन असंयोजयिता भवति २, एवं यावत् स्पर्शमयात् सौख्यात् अव्यपरोपयिता भवति ७, स्पर्शमयेन दुःखेन असंयोजयिता भवति ८॥ चतुरिन्द्रियान् ચલુ जीवान् समारममाणस्य अष्टविधोऽसंयमः क्रियते, तद्यथा—चक्षुर्मयात् सौख्यात् व्यपरो-पयिता भवति १, चक्षुर्मयेन दुःखेन संયોજયિતા ભવતિ ૨। एवं यावत् स्पर्शमयात् सौख्याद् व्यपरोपयिता भवति ७, स्पर्शमयेन दुःखेन संયોજયિતા ભવતિ ૮ ॥ સૂ૦ ૨૭ ॥

કન્દહૈ, તનાકા નામ સ્કન્ધહૈ, છલ્લી-છાલકા નામ ત્વક્હૈ, શાલાકા નામ શાલાહૈ અકુરકા નામ પ્રવાલહૈ પત્ર ઓર પુષ્પ યે તો પ્રસિદ્ધ હીહૈ ॥સૂ૨૬॥

વાદર વનસ્પતિયોંકે આશ્રિત ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવ રહતે હૈં, હનકી વિરાધના નહીં કરનેસે સંયમ ઓર વિરાધના કરનેસે અસંયમ

શાખાને શાલા કહે છે. અકુરને (કોપળને) પ્રવાલ કહે છે. પાનને પત્ર કહે છે. અને ફૂલને પુષ્પ કહે છે. ॥ સૂ. ૨૬ ॥

બાહર વનસ્પતિયોનો આશ્રય કરીને ચતુરિન્દ્રિય જીવો રહેલા હોય છે. તેમની વિરાધના નહીં કરવાથી સંયમ અને વિરાધના કરવાથી અસંયમ થાય

ટીકા—‘ ચરિન્દિયાણં ’ इत्यादि—

चतुरिन्द्रियान् जीवान् असमारभमाणस्य=अव्यापादयतीजनस्य अष्टविधः= अष्ट प्रकारकः संयमः क्रियते=भवति, तद्यथा-चक्षुर्मयात् सौख्यात् चतुरिन्द्रियान् जीवान् अव्यवरोपयिता=अपृथक्कर्त्ता भवतीति प्रथमः । अत एव-चक्षुर्मयेन दुःखेन तान् असंयोजयिता भवतीति द्वितीयः । एवम्-अमुना प्रकारेण अग्रेऽपि विभावनीयम् । तत्र-यावत्पदेन-घ्राणरसनयो ग्रहणम्, तथाहि-घ्राणमयात् सौख्यात् अव्यवरोपयिता भवतीति तृतीयः, अतएव-घ्राणमयेन दुःखेन असंयोजयिता भवतीति चतुर्थः । रसनेन्द्रियमयात् सौख्यात् अव्यवरोपयिता भवतीति पञ्चमः ।

होता है, इसलिये अब सूत्रकार चौहन्द्रिय जीवोंको आश्रित करके संयम और असंयमके प्रत्येकके आठ भेदोंका निरूपण करते हैं—

“ चरिन्दिયા ણં જીવા ” इत्यादि ॥

टीकार्थ—चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना नहीं करनेवालेको आठ प्रकारका संयम होता है, जैसे जो चौहन्द्रिय जीवोंका अव्यवरोपयिता होता है, अर्थात् चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना नहीं करता है वह चक्षु सम्बन्धी उसके सुखका नाशक नहीं होता है, इसलिये वह चक्षुर्मय दुःखसे उसे संयुक्त करनेवाला नहीं होता है, इसी तरहसे आगे भी समझ लेना चाहिये, यहां यावत्पदसे घ्राण और रसनाका ग्रहण हुआ है, चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना नहीं करनेवाला मनुष्य घ्राणके सुखसे उनका वियोक्ता नहीं होता है, अतः वह घ्राणमय दुःखसे उन्हें संयुक्त करनेवाला नहीं होता है, इसी तरहवह रसनेन्द्रिय सम्बन्धी सुखसे अव्यवरोपयिता अविराधक होता है, इसीलिये

છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ચતુરિન્દ્રિય જીવોને અનુલક્ષીને સંયમ અને અસંયમના આઠ આઠ ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે “ ચરિન્દિયાણં જીવા ” इत्यादि

टीकार्थ—चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना नहीं करना एव वडे आठ प्रकारना संयमनुं पालन थाय छे (१) जे चौहन्द्रिय जीवोना अव्यवरोपायिता (प्राणोनी हिंसा न करनारे) होय छे, ते तेमने चक्षुर्न्द्रिय संभंधी सुभथी वंचित करनारे होतो नथी, (२) ते तेमने चक्षुर्न्द्रिय संभंधी दुःभथी संयुक्त करनारे होतो नथी. ओज प्रमाणे आगण पणु समजवुं ओटले के अहीं घ्राण, रसना અને स्पर्शेन्द्रिय विषयक आलापके पणु उपर सुश्रवण समज लेवा जेम के....(३) चौहन्द्रिय जीवोनी विराधना नकीं करना तेमने घ्राणेन्द्रियना सुभथी वंचित करतो नथी. (४) ते तेमने घ्राणेन्द्रियना दुःभथी संयुक्त करतो नथी. (५) ते तेमने रसनेन्द्रिय संभंधी सुभथी वंचित करनारे होतो नथी (६) ते तेमने रसनेन्द्रियमय दुःभथी संयुक्त

अत एव रसनेन्द्रियमयेन दुःखेन असंयोजयिता भवतीति पट्टः । तथा-स्पर्शमयात् सौख्यात् अव्यपरोपयिता भवतीति सप्तमः, अत एव-स्पर्शमयेन दुःखेन असंयोजयिता भवतीत्यष्टमः ॥

तथा-चतुरिन्द्रियान् जीवान् समारभमाणस्य=व्यापादयतो जनस्य अष्टविधोऽसंयमः प्रज्ञप्तः, तद्यथा-चक्षुर्मयात् सौख्याद् व्यपरोपयिता=पृथक्कर्त्ता भवतीति प्रथमः । अतएव चक्षुर्मयेन दुःखेन संयोजयिता भवतीति द्वितीयः । अतएव घ्राणरसनस्पर्शेन्द्रियानाश्रित्य पट्ट भेदा बोध्या इति ॥सू० २७॥

संयमासंयमौ च सूक्ष्मजीवानप्याश्रित्य भवतीति सूक्ष्मजीवानष्ट स्थानत्वेनाह-

मूलम्-अष्ट सुहुमा पणत्ता, तं जहा-पाणसुहुमे २, बीय-सुहुमे ३, हरियसुहुमे ४, पुष्पसुहुमे ५, अंडसुहुमे ६, लेण-सुहुमे ७, सिणेहसुहुमे ८ ॥ सू० २८ ॥

छाया-अष्ट सूक्ष्माणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-पाणसूक्ष्मम् १, पनकसूक्ष्मम् २, बीजसूक्ष्मम् ३, हरितसूक्ष्मम् ४, पुष्पसूक्ष्मम् ५, अण्डसूक्ष्मम् ६, लयन-सूक्ष्मम् ७, स्नेहसूक्ष्मम् ८ ॥ सू० २८ ॥

वह रसनेन्द्रिय दुःखसे असंयुक्त करनेवाला होता है, तथा जो चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना नहीं करता है, वह स्पर्शेन्द्रिय सुखसे उन्हें वंचित नहीं करता है, अतः वह स्पर्शनेन्द्रियके दुःखसे उन्हें संयुक्त नहीं करता है, ऐसा यह आठवां स्थान है ।

इससे विरुद्ध जो चौहन्द्रिय जीवोंकी विराधना करता है, वह मनुष्य आठ प्रकारके असंयमका पात्र होता है-जैसे-वह चक्षु सम्बन्धी उनके सुखका व्यपरोपयिता होता है, अत एव वह उन्हें चक्षु सम्बन्धी दुःखसे संयुक्त करनेवाला होता है, इसी प्रकारसे घ्राण रसन स्पर्शनइन इन्द्रियोंको आश्रित करके ६ भेद असंयमके बना लेना चाहिये ॥सू० २७॥

करनारे। डोतो नथी (७) ते तेमने रसेन्द्रियना सुअथी वंचित करनारे। डोतो नथी. (८) ते तेमने स्पर्शेन्द्रियना दुअथी संयुक्त करनारे। डोतो नथी.

चौहन्द्रिय जियेनी विराधना करनारे जिय आठ प्रकारना असंयमने पात्र जने छे-(१) तेमनी विराधना करनारे भाषुस तेमना अक्षुधन्द्रिय संयंधी सुअने। नाशकर्ता जने छे. (२) ते तेमने अक्षुसंयंधी दुअथी संयुक्त करनारे। डोय छे. जेज प्रभाणु घ्राणु, रसना स्पर्शेन्द्रियने। आश्रय लधने असंयमना भीज्जं छ लेहोतुं कथन पणु करवुं जेधजे. ॥ सू २७ ॥

ટીકા—‘ અદૃ સુહુમા ’ इत्यादि—

સૂક્ષ્માણિ-અદૃ સંખ્યકાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-પ્રાણસૂક્ષ્મમ્ પ્રાણઃ=પ્રાણી તદ્રૂપં સૂક્ષ્મમ્ । યઃ પ્રાણી સંચરમાણ એન લક્ષ્યતે ન તુ સ્થિતઃ, સ કુન્થ્યાદિકઃ પ્રાણસૂક્ષ્મમ્, इत्युच्यते ॥ ૧ ॥ પનકસૂક્ષ્મમ્-પનકઃ=વર્ષાકાલે ભૂમિકાષ્ઠાદૌ સમુત્પન્નઃ પञ्चवर्णः ‘ ફૂલન ’ इति भाषा प्रसिद्धः, જીવવિશેષઃ, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મમ્ ॥ ૨ ॥ વીજસૂક્ષ્મમ્-વીજ શાલ્યાદિ તુષ્ણુત્વં યતોઽદ્ભુરઃ સમુત્પન્નતે, વીજં ચ તત્ સૂક્ષ્મ ચેતિ વીજસૂક્ષ્મમ્, इति ॥ ૩ ॥ હરિતસૂક્ષ્મમ્-હરિતઃ=ઉત્પદ્યમાનો નવીનો

સંયમ ઓર અસંયમ સૂક્ષ્મ જીવોંકો મી આશ્રિત કરકે હોતે હૈં, અવ સૂત્રકાર સૂક્ષ્મ જીવોંકા આઠ સ્થાનસે કથન કરતે હૈં—

“ અદૃ સુહુમા પળ્ળતા ” इत्यादि ॥

સૂત્રાર્થ-સૂક્ષ્મ આઠ કહે ગયે હૈં-જૈસે-પ્રાણ સૂક્ષ્મ ૧, પનક સૂક્ષ્મ ૨, વીજ સૂક્ષ્મ ૩, હરિત સૂક્ષ્મ ૪, પુષ્પસૂક્ષ્મ ૫, અંડસૂક્ષ્મ ૬, લયનસૂક્ષ્મ ૭, ઓર સ્નેહ સૂક્ષ્મ ૮ ।

ટીકાર્થ-યહાં પ્રથમ એદમે પ્રાણસે પ્રાણવાલા જીવ ગૃહીત હુઆહૈ, જો પ્રાણી ચલને પરહી દિશ્વલાઈ દેતા હૈ, સ્થિત હોને પર નહીં એસા કુન્થુ આદિક જીવ પ્રાણસૂક્ષ્મ જીવ હૈં, પનક જીવ-વર્ષાકાલમે ભૂમિ કાષ્ઠ આદિકે ઝાર જો પાંચ વર્ણકી ફૂલન હો જાતી હૈ, પનક જીવ હૈ, જિસ વીજસે અદ્ભુર ઉત્પન્ન હોતા હૈ, એસા વહ વીજ વીજ સૂક્ષ્મ જીવ હૈ, જો જીવ જમીનમે ભૂમિકેજૈસાહી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, ઓર અપની કાન્તિસે

સૂક્ષ્મ જીવોને આશ્રિત કરીને પણ માણસ સંયમ કે અસંયમ સેવી શકે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર સૂક્ષ્મ જીવોનું આઠ સ્થાનની અપેક્ષાએ કથન કરે છે..

“ અદૃ સુહુમા પળ્ળતા ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ-સૂક્ષ્મ જીવોના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે-(૧)પ્રાણસૂક્ષ્મ, (૨) પનકસૂક્ષ્મ, (૩) બીજસૂક્ષ્મ, (૪) હરિતસૂક્ષ્મ, (૫) પુષ્પસૂક્ષ્મ, (૬) અંડસૂક્ષ્મ, (૭) લયનસૂક્ષ્મ અને (૮) સ્નેહસૂક્ષ્મ.

ટીકાર્થ-અહીં પહેલા ભેદમાં પ્રાણ પદ વડે પ્રાણવાળો જીવ ગૃહીત થયો છે. જે જીવો હવનચલન કરે ત્યારે જ દેખાય છે, જ્યારે બેઠાં હોય છે ત્યારે દેખાતા નથી એવા કુન્થુ આદિ જીવોને પ્રાણસૂક્ષ્મ કહે છે.

પનકજીવ-ચોમાસામાં જમીન, કાષ્ઠ આદિની ઉપર જે પાંચ વર્ણની કૂગ થાય છે તે પનકજીવ રૂપ સમજવી.

બીજસૂક્ષ્મ-જે બીજમાંથી અંકુર ઉત્પન્ન થાય છે, તે બીજસૂક્ષ્મ જીવ રૂપ માનવામાં આવે છે.

ભૂમિતુલ્યઃ કાન્તિમત્તયા દુર્લભ્યો વનસ્પતિઃ, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મં હરિતસૂક્ષ્મ્ इति ॥૪॥
 પુષ્પસૂક્ષ્મમ્-પુષ્પમ્=ઉદુમ્બરાદિ પુષ્પમ્, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મમ્-પુષ્પસૂક્ષ્મમ્ ॥૫॥ અણ્ડ-
 સૂક્ષ્મમ્-અણ્ડમ્=મક્ષિકા-પિપીલિકા-ગૃહગોધિકા-કૃકલાસાઘણ્ડકં તદેવ
 સૂક્ષ્મમ્ इति ॥૬॥ લયનસૂક્ષ્મમ્-લયનમ્=સત્ત્વાનામાશ્રયઃ કીટિકાનગરાદિઃ
 યત્ર કીટિકાઃ સૂક્ષ્માશ્રાન્યે જીવાસ્તિષ્ઠન્તિ તદિતિ, તદેવ સૂક્ષ્મમ્-લયનસૂક્ષ્મમ્
 કીટિકાનગરાદિ હિ પૃથિવ્યાદિવત્પતિમાસમાનં જીવત્વેન દુર્લભ્યં ભવતીતિ
 વોધ્યમ્ ॥૭॥ તથા-સ્નેહસૂક્ષ્મમ્-સ્નેહઃ=અવશ્યાયહિમમહિકાદિ રૂપઃ, સ એવ
 સૂક્ષ્મમ્-इति ૮ ॥ સુ૦ ૨૮ ॥

અલગ પ્રતીત નહીં હોતા હૈ, એસા જો વનસ્પતિ વિશેષરૂપ જીવ હૈ, વહ
 હરિતસૂક્ષ્મ જીવ હૈ, ઉદુમ્બરાદિકે પુષ્પરૂપ જો જીવ હૈ, વહ પુષ્પસૂક્ષ્મ-
 જીવ હૈ, મક્ષિકા, પિપીલિકા, ગૃહગોધિકા-વિસમરા એવં ગિરગિટ
 આદિકા જો અણ્ડક હૈ, વહ અણ્ડસૂક્ષ્મ જીવ હૈ, સત્ત્વોંકા આશ્રયભૂત
 જો કીટિકા નગરાદિ હૈ, કિ જહાં પર કીટિકાઈ તથા અન્ય ઔર ખી
 સૂક્ષ્મ જીવ આશ્રિત રહતે હૈં વહ લયનસૂક્ષ્મ જીવ હૈ, યે કીટિકાન-
 ગરાદિ પૃથિવી આંદિકી તરહ પ્રતીત હોતે હૈં. પર વે જીવ રૂપસે માલૂમ
 નહીં પડતે હૈં. અવશ્યાય-વર્ફ, હિમ, મહિકા આદિરૂપ સ્નેહ હોતા
 હૈ, યહ સ્નેહહી સૂક્ષ્મ જીવરૂપ હોતા હૈ, ॥ મૂત્ર ૨૮ ॥

હરિતસૂક્ષ્મ-જે ભવનો વણું ભૂમિના વણું જેવો જ હોય છે, અને જે
 ચોતાની કાન્તિ વડે અલગ લાગતો નથી, એવા વનસ્પતિ વિશેષ રૂપ ભવને
 હરિતસૂક્ષ્મભવ કહે છે.

પુષ્પસૂક્ષ્મ ભવ-ઉમરડા વિગેરેના પુષ્પ રૂપ જે ભવ હોય છે તેને પુષ્પ-
 સૂક્ષ્મ ભવ કહે છે.

અંડસૂક્ષ્મ ભવ-માખી. કીડી, ગરોળી, કાંચડા આદિના જે ઇંડાં હોય છે
 તેમને અંડસૂક્ષ્મ ભવો કહે છે.

લયનસૂક્ષ્મ ભવ-સત્ત્વોના આશ્રય સ્થાનરૂપ જે કીટિકા નગરાદિ (કીડિયારાં)
 હોય છે અને જ્યાં કીડાઓ અને અન્ય સૂક્ષ્મ ભવો રહેતા હોય છે, તેને લયન-
 સૂક્ષ્મ ભવ કહે છે. તેઓ પૃથ્વીના જેવાં જ લાગે છે, પરંતુ તેઓ ભવ
 રૂપ લાગતા નથી.

સ્નેહસૂક્ષ્મ-ખરફ, હિમ, ધુમસ આદિ રૂપ સ્નેહ હોય છે. તે સ્નેહને
 જ-સ્નેહસૂક્ષ્મ ભવ રૂપ સમજવા ॥ સૂ ૨૮ ॥

ટીકાર્થ—ચતુરન્ત (ચાર અન્તવાળી) પૃથ્વીના ચક્રવર્તી રાજા ભરતના આઠ પુરુષો. યુગ અન્તર રહિત થઈને સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, પરિનિવૃત્ત અને સમસ્ત દુઃખોનો નાશ કરનારા બન્યા હતા. તે આઠ પુરુષોનાં નામ નીચે પ્રમાણે હતાં.—(૧) આદિત્યચંદ્ર, (૨) મહાયજ્ઞ, (૩) અતિથા, (૪) મહાથા, (૫) તેજોવીર્ય, (૬) કીર્તીવીર્ય, (૭) હંડવીર્ય અને (૮) જલવીર્ય. ચાર સંમુદ્ર (પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તર

અષ્ટ સંલયકાનિ પુરુષ યુગાનિ-પુરુષાયુગાત્રીવ=કાલવિશેષા इव क्रमवृत्तिवात्
પુરુષયુગાનિ-પુરુષપરમ્પરાઃ અનુવદ્ધમ્=અન્તરરહિતં સિદ્ધાનિ=કૃતકૃત્યાનિ યાવ-
ત્પદેન-‘બુદ્ધાનિ મુક્તાનિ પરિનિર્વૃતાનિ’ इत्येषां संग्रहः । તત્ર-બુદ્ધાનિ=વિમલ
કેવલાલોકેન જ્ઞાતસકલલોકાલોકાનિ, મુક્તાનિ=સર્વકર્મભ્યો મુક્તાનિ, પરિ-
નિર્વૃતાનિ=સમસ્તકર્મકૃતવિકારરહિતત્વેન સ્વસ્થીભૂતાનિ, સર્વદુઃખપ્રહીણાનિ=
સમસ્તક્લેશાન્તકારીણિ ચ જાતાનિ । તાનિ કાનિ । इत्याह-तद्यथा-आदित्य-
यशा महायशा इत्यादि ॥ सू० २९ ॥

उत्तर और दक्षिण दिशाके चार समुद्रही है, अन्त-मर्यादा-जिसके
ऐसी पृथिवीके ६-खण्डोंवाले पूर्ण भरत क्षेत्रके अधिपति राजा महाराज
थे अतः वे चक्रवर्ती थे यहां पुरुषोंको जो युगके जैसा कहा गया है,
वह क्रम वृत्तिवाले होनेसे कहा गया है, अन्तररहित होनेके कारण
अनुवद्द कहा गया है । सिद्ध हुए हैं इसका तात्पर्य ऐसा है कि कृत-
कृत्य हुए हैं जिन्हें कोई भी कार्य करना बाकी नहीं रहता है, वे कृतकृत्य
कहलाते हैं । विमल केवल ज्ञानरूपी आलोकसे प्रकाशजो सकल लोक और
अलोकके ज्ञाता द्रष्टा हो जाते हैं वे बुद्ध कहलाते हैं । जो सकल
कर्मोंसे सर्वथा रहित हो जाते हैं वे मुक्त कहलाते हैं । जो समस्त
कर्मकृत-विकारोंसे रहित होकर-स्वस्थीभूत शीतलीभूत हो जाते हैं वे
परिनिर्वृत कहलाते हैं । जो समस्त क्लेशोंको शान्त कर देते हैं वे सर्व
दुःख प्रहीण कहलाते हैं ॥ सूत्र २९ ॥

અને દક્ષિણ દિશાના ચાર સમુદ્રો) જ જેનો અન્ત (મર્યાદા) છે એવી પૃથ્વીના
-છ ખંડોવાળા ભરતક્ષેત્રના-અધિપતિ હોવાને કારણે ભરત ચક્રવર્તીને ચતુરન્ત
પૃથ્વીના ચક્રવર્તી કહેવામાં આવ્યા છે. ક્રમવૃત્તિવાળા હોવાને કારણે અહીં
પુરુષોને યુગ સમાન કહેવામાં આવ્યા છે. અન્તર રહિત હોવાને કારણે અનુ-
વદ્ધ કહ્યા છે. આ આઠ પુરુષો સિદ્ધ થયા છે એટલે કે તેઓ કૃતકૃત્ય થઈ
ગયા છે જેમને કોઈ પણ કાર્ય કરવાનું બાકી રહ્યું હોતું નથી તેમને કૃતકૃત્ય
થયેલા કહેવાય છે વિમલ કેવળજ્ઞાન રૂપી આલોક વડે જેઓ સકલ લોક અને
અલોકને બાણી દેખી શકે છે તેમને બુદ્ધ કહે છે. જેમનાં સકલ કર્મોનાં સર્વથા
ક્ષય થઈ ગયો હોય છે તેમને મુક્ત કહે છે જેઓ સમસ્ત કર્મકૃત વિકારોથી
રહિત થઈને શારીરિક અને માનસિક પરિણામોથી રહિત થઈને શીતલીભૂત-
થઈ ગયા હોય છે તેમને પરિનિર્વૃત કહે છે, કે જે સત્રાગા કલેશો શાંત થઈ ગયા
હોય છે, જેમણે સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત કરી નાખ્યો છે તેમને સર્વદુઃખ પ્રહીણ
(સમસ્ત દુઃખોના અન્તકર્તા) કહે છે. ॥ સૂ. ૨૯ ॥

संयमवतोऽधिकारात्संयमवतामेव अष्टस्थानत्वेन नामान्याह—

मूलम्—पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठगणा
अट्ठगणहरा होत्था, तं जहा-सुभे १ य, सुभघोसे २ य वसिट्ठे
३, वंभयारि ४ य, सोमे ५, सिरिधरे ६, चैव, वीरभदे ७,
जसे ८ इइ ॥ १ ॥ सू० ३० ॥

छाया—पार्श्वस्य खलु अर्हतः पुरुषादानीयस्य अष्ट गणा अष्ट गणधरा
अभवन्, तद्यथा—शुभश्च १, शुभघोषश्च २, वशिष्ठो ३, ब्रह्मचारी ४ च । सोमः ५,
श्रीधरश्चैव ६, वीरभद्रो ७, यश ८ इति ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘पासस्स णं’ इत्यादि—

पुरुषादानीयस्य=पुरुषैराश्रणीयस्य अर्हतः पार्श्वस्य खलु अष्टगणाः, तन्नाम-
काश्च अष्ट गणधरा अभवन्, तद्यथा—शुभः शुभघोष इत्यादि ॥ सू० ३० ॥

गणधराश्च दर्शनवन्तो भवन्तीति दर्शनं निरूपयितुमाह—

मूलम्—अट्ठविहे दंसणे पणत्ते, तं जहा-सम्मदंसणे १,
मिच्छदंसणे २, सम्मामिच्छदंसणे ३, चक्खुदंसणे ४ अचक्खु-
दंसणे ५, ओहिदंसणे ६, केवलदंसणे ७, सुविणदंसणे ८ ॥ सू० ३१ ॥

अथ सूत्रकार संयमवालेके अधिकारको लेकर संयमवालोंके ही
आठ स्थान रूपसे नामोंको कहते हैं—

“पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स” इत्यादि ॥ सूत्र० २४ ॥

टीकार्थ—पुरुषादानीय-पुरुषों द्वारा आश्रयणीय अर्हन्त पार्श्वके
आठ गण (गच्छ) और आठ गणनायक हुए हैं—उनके नाम इसप्रकारसे
हैं—शुभ १, शुभघोष २, वशिष्ठ ३, ब्रह्मचारी ४, सोम ५, श्रीधर ६,
वीरभद्र ७, और यश ८ ॥ सूत्र ३० ॥

इवे सूत्रकार संयमना अधिकार साथे सुसंगत एवां संयमी एवेतु
आठ स्थान इपे कथन करे छे—

“पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स” इत्यादि —

टीकार्थ—पुरुषादानीय (पुरुषों द्वारा आश्रयणीय) अर्हत पार्श्वनाथना आठ गण
अने आठ गणनायक इतां. तेमनां नाम आ प्रमाणे इतां—(१) शुभ, (२) शुभघोष,
(३) वशिष्ठ, (४) ब्रह्मचारी, (५) सोम, (६) श्रीधर, (७) वीरभद्र अने यश. ॥ सू. ३० ॥

છાયા—અદ્વિધં દર્શનં પ્રજ્ઞસમ્, તથા—સમ્યગ્દર્શનમ્ ૧, મિથ્યાદર્શનં ૨, સમ્યગ્મિથ્યાદર્શનં ચક્ષુર્દર્શનમ્ ૪, અચક્ષુર્દર્શનમ્ ૫, અવધિદર્શનં ૬, કેવલદર્શનં ૭, સ્વપ્નદર્શનમ્ ૮ ॥ સૂ. ૩૧ ॥

ટીકા—‘અદ્વિધે દંસણે’ इत्यादि—

अस्य सूत्रस्य व्याख्या सप्तमस्थानकस्य सप्तविंशतितमसूत्रे गता, जिज्ञासु-
मिस्तत एव बोध्या । नवरं—स्वप्नदर्शनम्=स्वापक्रियाऽनुगतार्थविकल्पस्यानुभव-
नम् । स्वप्नदर्शनस्य अचक्षुर्दर्शनान्तर्भावेऽपि स्वापावस्थारूपोपाधिमाश्रित्य भेदो
विवक्षित इति ॥ सू. ३१ ॥

गणधर दर्शनवाले होते हैं—इसलिये अब सूत्रकार दर्शनका निरू-
पण करते हैं—“अद्विधे दंसणे पणत्ते” इत्यादि ॥

टीकार्थ—दर्शन आठ प्रकारका कहा गया है, जैसे—सम्यग्दर्शन
१, मिथ्यादर्शन २, सम्यग्मिथ्यादर्शन ३, चक्षुर्दर्शन ४, अचक्षुर्दर्शन
५, अवधिदर्शन ६, केवल दर्शन ७, और स्वप्नदर्शन ८ ।

इस सूत्रकी व्याख्या सप्तम स्थानकके सत्ताईसवें सूत्रमें की जा-
चुकी है, अतः जिज्ञासुओंको यह वही से देख लेना चाहिये स्वाप(सोना)
क्रियासे अनुगत जो अर्थ विकल्पका अनुभव है उसका नाम स्वप्न-
दर्शन है, यद्यपि यह स्वप्नदर्शन अचक्षुर्दर्शनमें अन्तर्भूत हो जाता है,
फिर भी स्वापावस्था (सोनेकी अवस्था) रूप उपाधिको आश्रित करके
वह भेदरूपसे विवक्षित हुआ है ॥ सूत्र ३१ ॥

गણधर दर्शनवाળા હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દર્શનનું નિરૂપણ કરે છે—

“અદ્વિધે દંસણે પણત્તે” इत्यादि—

टीकार्थ—दर्शनना नीचे प्रमाणे आठ प्रकार कहा है—(१) सम्यग्दर्शन (२)
मिथ्यादर्शन, (३) सम्यग्मिथ्यादर्शन, (४) चक्षुर्दर्शन, (५) अचक्षुर्दर्शन, (६)
अवधिदर्शन, (७) केवलदर्शन अने (८) स्वप्नदर्शन.

આ સૂત્રમાં આવતાં પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સ્થાનના સત્યાવીસમાં
સૂત્રમાં આપવામાં આવી છે. તેા જિજ્ઞાસુ પાઠકે એ તે વ્યાખ્યા ત્યાંથી વાંચી લેવી.
સુતાવસ્થામાં જે અર્થ વિકલ્પનો અનુભવ થાય છે તેનું નામ સ્વપ્નદર્શન
છે. જે કે સ્વપ્ન દર્શનનો અચક્ષુર્દર્શનમાં સમાવેશ કરી શકાય છે, છતાં પણ
સુતાવસ્થા રૂપ ઉપાધિને આધારે અહીં તેને અલગ ભેદ રૂપે ગણાવવામાં
આવેલ છે. ॥ સૂ. ૩૧ ॥

સમ્યગ્દર્શનાદેશ સ્થિતિપ્રમાણમૌપમ્યાદ્યા ભવતીતિ તામાહ--

મૂલમ્-અટુવિહે અદ્ધોવમિષ્ણ પળ્લન્તે, તં જહા-પલિઓવમે
૧, સાગરોવમે ૨, ઉત્સપ્પિણી ૩, ઓસપ્પિણી ૪, પોગ્ગલપરિ-
યટ્ઠે ૫, તીયદ્ધા ૬, અનાગયદ્ધા ૭, સવ્વદ્ધા ૮ ॥ સૂ. ૩૨ ॥

છાયા--અષ્ટવિધમ્ અદ્ધૌપમ્યં પ્રજ્ઞન્તમ્, તથા-પલ્યોપમં ૧, સાગરો-
પમમ્ ૨, ઉત્સર્પિણી ૩, અવસર્પિણી ૪, પુદ્ગલપરિવર્ત્તઃ ૫, અતીતાદ્ધા ૬, અના-
ગતાદ્ધા ૭, સર્વાદ્ધા ૮ ॥ સૂ. ૩૨ ॥

ટીકા--' અટુવિહે ' इत्यादि--

અદ્ધૌપમ્યમ્-ઉપમૈવ ઔપમ્યં-પલ્યાદિરૂપમ્, તત્પ્રધાના અદ્ધા-અદ્ધૌપમ્યમ્ ।
રાજદન્તાદિત્વાદદ્ધાશબ્દસ્ય પૂર્વનિષાતઃ ।

તત્ત્વ અષ્ટવિધં પ્રજ્ઞન્તમ્, તથા-પલ્યોપમમ્-પલ્યેન ઉપમા યત્ર કાલે પરિમા-
ણતો મતિ સ કાલઃ-પલ્યોપમમ્ । નપુંમકત્વં રુઢિતો વોધ્યમ્ ૧ । एवं सागरो-

સમ્યગ્દર્શનાદિકી સ્થિતિકા પ્રમાણ ઔપમ્યાદ્યાસે હોતા હૈ, હસ-
લિયે સૂત્રકાર અથ ઉસકા નિરૂપણ કરતે હૈ--

“ અટુવિહે અદ્ધોવમિષ્ણ પળ્લન્તે ” इत्योदि ॥

ટીકાર્થ--અદ્ધૌપમ્યકાલ આઠ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, જૈસે-પલ્યો-
પમ ૧, સાગરોપમ ૨, ઉત્સર્પિણી ૩, અવસર્પિણી ૪, પુદ્ગલપરિવર્ત ૫,
અતીતાદ્ધા ૬, અનાગતાદ્ધા ૭, ઔર સર્વાદ્ધા ૮ ।

ઉપમાહી ઔપમ્ય હૈ, યહ ઔપમ્ય પલ્યાદિરૂપ હોતાં હૈ, હસ પલ્યાદિ
રૂપ પ્રધાનતાવાલા જો અદ્ધા-કાલ હૈ, વહ અદ્ધૌપમ્ય હૈ, યહ અદ્ધૌપમ્ય
જો પલ્યોપમ આદિકે ભેદસે આઠ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, ઉસકા તાત્પર્ય
એસા હૈ કિ જિસ કાલમેં પરિમાણકી અપેક્ષાસે પલ્ય દ્વારા ઉપમા દી
જાતી હૈ, એસા વહ કાલ પલ્યોપમ હૈ, હસી તરહસે સાગરોપમકે

સમ્યગ્ દર્શન વિગેરેની સ્થિતિનું પ્રમાણ ઔપમ્યાદ્ધા (ઉપમાકાળ) વડે
જાણી શકાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ઔપમ્યાદ્ધાના આઠ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે--

“ અટુવિહે અદ્ધોવમિષ્ણ પળ્લન્તે ” इत्यादि--

ટીકાર્થ--અદ્ધૌપમ્ય (ઉપમા કાળ) આઠ પ્રકારનો કહ્યો છે. તે પ્રકારો નીચે
પ્રમાણે છે. (૧) પલ્યોપમ, (૨) સાગરોપમ, (૩) ઉત્સર્પિણી, (૪) અવસર્પિણી, (૫)
પુદ્ગલ પરિવર્ત, (૬) અતીતાદ્ધા, (૭) અનાગતાદ્ધા, અને (૮) સર્વાદ્ધા.

જે કાળને ઉપમા દ્વારા જ સમજી શકાય છે તેને ઔપમ્યાદ્ધા કહે છે.
પદ્યાદિ રૂપ પ્રધાનતાવાળો જે અદ્ધા (કાળ) છે, તેનું નામ અદ્ધૌપમ્ય છે.

પલ્યોપમ--જે કાળનું માપ પલ્યની ઉપમા દ્વારા જાણી શકાય છે,
એવા કાળનું નામ પલ્યોપમ કાળ છે. એક ચોજન સાંખા, એક ચોજન

પમપિ વોધ્યમ્ ૨। તથા-ઉત્સર્પિણી-ઉત્સર્પન્તિ=વર્ધન્તે શુભા ભાવા અસ્યામિત્તિ-
ઉત્સર્પિણી-દશસાગરોપમકોટાકોટીપરિમાણઃ શુભભાવવર્ધકોઽશુભભાવહાનિકા-
રકઃ કાલભેદઃ ૩। અવસર્પિણી-અવસર્પન્તિ=હીના ભવન્તિ શુભા ભાવા
અસ્યામિત્યવસર્પિણી-દશસાગરોપમકોટાકોટીપરિમાણોઽશુભભાવવર્ધકઃ શુભભા-
વહાનિકારકઃ કાલભેદઃ ૪। તથા-પુદ્ગલપરિવર્તઃ-પુદ્ગલાનાં=રુપિદ્રવ્યાણામ્
આહારકવર્જિતાનામૌદારિકાદિપ્રકારેણ એકજીવાપેક્ષયા પરિવર્તનં=સામસ્ત્યેન
સ્પર્શઃ-સમીલનં પુદ્ગલપરિવર્તઃ, સ ચ યાવતાંકાલેન ભવતિ સ કાલોઽપિ પુદ્ગલ-
પરિવર્તઃ । સ ચાયં કાલોઽનન્તોત્સર્પિણીરુપઃ ૫। તથા-અતીતાદ્ધા-અતીતઃ-

સમ્બન્ધમેં મી જાનના ચાહિયે જિસ કાલમેં શુભ ભાવોંકી વૃદ્ધિ હોતી
હૈ, યહ ઉત્સર્પિણી કાલ હૈ, યહ ઉત્સર્પિણી કાલ ૧૦ કોટાકોટી સાગ-
રોપમકી હોતી હૈ, શુભ ભાવકા વર્ધક હોતા હૈ, એવં અશુભ ભાવકા
હાનિકારક હોતા હૈ, અવસર્પિણી કાલ મી ૧૦ કોટાકોટી સાગરોપમકી
હોતી હૈ, ઇસમેં અશુભ ભાવોંકી વૃદ્ધિ હોતી હૈ, ઓર શુભ ભાવોંકી
હાનિ હોતી હૈ । આહારક વર્જિત રુપી દ્રવ્યોંકો ઔદારિક આદિ પ્રકારસે
ગ્રહણ કરનેવાલે એક જીવકી અપેક્ષાસે જો ઉનકા સમ્પૂર્ણ રુપસે સ્પર્શ
હૈ, વહ પુદ્ગલ પરિવર્ત હૈ, યહ પુદ્ગલ પરિવર્ત જિતને કાલમેં હોતા હૈ,
વહ કાલ મી પુદ્ગલ પરિવર્ત રુપ કહા ગયા હૈ, યહ પુદ્ગલ પરિવર્ત રુપ
કાલ અનન્ત ઉત્સર્પિણી ઓર અનન્ત અવસર્પિણી રુપ હોતા હૈ, અતીત

-પડેાળા અને એક યોજન ઊંડા ખાડામાં જુગલીયાના ખાલ ઠાંસી ઠાંસીને ભરવામાં
આવે પછી તેમાંથી સો સો વર્ષે એક એક ખાલ કાઢતાં કાઢતાં તે આખો ખાડો
ખાત્તી થતાં જોટલા કાળ વ્યતીત થાય છે, તેટલા કાળને પલ્લેપમ કાળ કહે
છે-એજ પ્રમાણે સાગરોપમ કાળ ત્રિષે પણ સમજવું. ૧૦ કોટાકોટી સાગરો-
પમ પ્રમાણ ઉત્સર્પિણી કાળ હોય છે. આ કાળમાં શુભ ભાવોની વૃદ્ધિ થાય
અને અશુભ ભાવોની હાનિ થાય છે અવસર્પિણીકાળ પણ ૧૦ કોટાકોટી સાગરો-
પમ પ્રમાણ હોય છે આ કાળમાં અશુદ્ધ(અશુભ)ભાવોની વૃદ્ધિ અને શુભ ભાવોની
હાનિ થાય છે. આહારકવર્જિત રૂપી દ્રવ્યોને ઔદારિક આદિ પ્રકારે ગ્રહણ કરનાર
એક જીવની અપેક્ષાએ જે તેમને સંપૂર્ણ રૂપે સ્પર્શ ધારણ કરે છે, તેનું નામ
પુદ્ગલપરિવર્ત છે. આ પુદ્ગલ પરિવર્ત જોટલા કાળમાં થાય છે તેટલા કાળને પણ
પુદ્ગલ પરિવર્ત કાળ કહેવાય છે. તે પુદ્ગલ પરિવર્તકાળ અનન્ત ઉત્સર્પિણી અને
અવસર્પિણીકાળરૂપે હોય છે. અતીત(ભૂતકાલિન)પુદ્ગલપરાવર્તનું નામ અતીતાદ્ધા

પુદ્ગલપરાવર્ત્તઃ ૬। અનાગતાદ્વા-આગામી પુદ્ગલપરાવર્ત્તઃ ૭। તથા-સર્વાદ્વા= અતીતાનાગતવર્ત્તમાનકાલસ્વરૂપોઽકાલભેદઃ । इत्यष्टावुपमाकालभेदाः । समयदि-
शीर्षप्रहेलिकान्ता अनुपमाकालभेदा बोध्या इति ॥ सू० ૩૨ ॥

કાલાધિકારાત્સંપતિ કાલમાશ્રિત્ય મૂત્રાન્તરમાહ—

મૂલમ્—અરહઓ ણં અરિટ્ટનેમિસ્સ જાવ અટ્ટમાઓ પુરિ-
સજુગાઓ જુગંતકરભૂમી દુવાસપરિયાણ અંતમકાસી ॥સૂ૦૩૩॥

છાયા—અર્હતઃ खलु अरिष्टनेमेर्यावत् अष्टम पुरुषयुगं युगान्तकरभूमिः
द्विवर्षपर्याये अन्तमकार्षुः ॥ सू० ૩૩ ॥

ટીકા—‘અરહઓ ણં’ इत्यादि—

અર્હતઃ खलु अरिष्टनेमेः अष्टमं पुरुषयुगम्=अष्टपुरुषकालं यावत् युगा-
न्तकरभूमिः—युगस्य=पुरुषलक्षणकालस्यापेक्षया अन्तकराणां=भवान्तकारिणां

પુદ્ગલપરાવર્ત્તકા નામ અતીતાદ્વાહૈ, આગામી પુદ્ગલપરાવર્ત્તકા નામ અના-
ગતાદ્વા હૈ इसका विशेष वर्णन अनुत्तरोपपातिक सूत्रके तीसरे वर्गकी
अर्थ बोधिनी टीकाके पुद्गलपरावर्तप्रकरणमें देखलेवे तथा-अतीत
अनागत एवं वर्तमान काल स्वरूप जो अद्वाकाल भेद है, वह
सर्वाद्वा है, ये आठ उपमा कालके भेद हैं। तथा-समयसे लेकर शीर्ष
प्रहेलिका अनुपमा कालके भेद हैं ऐसा जानना चाहिये ॥ सूत्र ३२ ॥

કાલકે અધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકારકા કથન કરતે હૈ—

“અરહઓ ણં અરિટ્ટનેમિસ્સ ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—‘आवीसवे’ अर्हन्त अरिष्टनेमिके आठवे पुरुष युग तक
आठ पुरुषकाल तक—युगान्तकर भूमि युगके—पुरुष कालकी अपेक्षासे
‘अन्तकरो’की—‘भवान्तकरा’की—भूमि काल थी. तात्पर्य यह है कि अरि-

छे.आगामी पुद्गल परावर्तनुं नाम अनागताद्वाछे. आनुं विशेष वधुं न अनु-
त्तरोपपातिक सूत्रना त्रीण वर्गनी अर्थबोधिनी टीकाना पुद्गलपरावर्त प्रकरणभां
लोर्ध लेवुं तथा अतीत, अनागत, अने वर्तमानकाण स्वरूप ने अद्वाकाण
लेह छे तेने सर्वाद्वा कहे छे. आ प्रमाणे उपमा-काणना आठ लेह थाय छे. अनु-
पमा काणना समयथी लधने शीर्षप्रहेलिक पर्यन्तना अनेक लेहो थाय छे, जेभ
समजवुं ॥ सू ३२ ॥

કાળનો અધિકાર અહી રહ્યો છે, તે કારણે હવે સૂત્રકાર અતીત કાળમાં
સિદ્ધ પદની પ્રાપ્તિ કરનારા અરિષ્ટનેમિના આઠ શિષ્યોનું કથન કરે છે—

“અરહઓ ણં અરિટ્ટનેમિસ્સ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—आवीसभां तीर्थं कर अरिष्टनेमिना आठभां पुरुष युग सुधी—आठ पुरुष
काण सुधी युगान्तकर भूमि (ते युगनां पुरुषोनी अपेक्षाये अन्तकरोनी-लवा
न्तकरोनी भूमि) હતી, આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—અરિષ્ટ નેમિના

भूमिः=काळ आसीत् । अयं भावः-अरिष्टनेमेः शिष्य प्रशिष्यं-क्रमेण अष्टौ पुरुषान् यावत्साधवो मुक्तिगता न तु ततः परत इति । तथा प्रसङ्गात्पर्यायाऽपेक्षयाऽप्यन्तरभूमिमाह-तस्य भगवतो द्विवर्षपर्याये=वर्षद्वयात्मके केवलिपर्यायेऽतीते सति बहवः साधवः अन्तम्-जन्मजरामरणरूपभवस्य अवसानम् अकार्षुः=कृतवन्त इति ॥ सू० ३३ ॥

तीर्थकरवक्तव्यताधिकाराद् भगवता महावीरेण प्रवाजितान् अष्टौ राज्ञः प्ररूपयितुमाह--

मूलम्-समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ट रायाणो मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पद्वाइया, त जहा-वीरंगय १ वीरजसे २ संजय ३ एणिज्जए य रायरिसी ४। सेय ५ सिवे ६ उदायणे ७ तह संखे कासिवद्धणे ८ ॥ सू० ३४ ॥

छाया--श्रमणेन भगवता महावीरेण अष्टौ राजानो मुण्डान् भावयित्वा आगारात् अनगारितां प्रवाजिताः, तद्यथा-वीराङ्गदः १, वीरयशः २, संजयः ३, पण्यकश्च राजऋषिः ४, श्वेतः ५, शिव ६, उदायनः ७, तथा शङ्खः । काशि-वद्धनः ८ ॥ सू० ३३ ॥

टीका--'समणेणं' इत्यादि--

श्रमणेन भगवता महावीरेण अष्टौ राजानः मुण्डान्=मुण्डितान् भावयित्वा=कृत्वा आगारात् अनगारितां प्रवाजिताः=दीक्षिताः । ते राजानः के ? इत्याह--

ष्टनेमिके शिष्य प्रशिष्य तत्र क्रमशः आठ पुरुष तत्र मुनि मुक्ति गये इसके बादमें नहीं गये तथा जब उन भगवान्की दो वर्ष की केवलि पर्याय व्यतीत हो गई तब अनेक साधुओंने जन्म जरा मरण रूप भवका अन्त किया अर्थात् मोक्ष गये ॥ सू० ३३ ॥

तीर्थकरकी वक्तव्यताके अधिकारसे अब सूत्रकार भगवान् महावीरके द्वारा प्रव्रजित हुए आठ राजाओंकी प्ररूपणा करते हैं--

"समणेणं भगवया महावीरेणं" इत्यादि ॥

टीकार्थ--श्रमण भगवान् महावीरने आठ राजाओंको मुण्डित करके आगारावस्थासे अनगारावस्थामें दीक्षित किया है, जिन आठ

शिष्य प्रशिष्य वज्रे क्रमशः आठ पुरुषो सुधीना मुनिओ मुक्त थया हुता-त्यारणाद थयेला मुनिओमां मुक्ति प्राप्त करवाने। आ क्रम आलु रद्धो न हुतो। न्यारे अरिष्ठनेमिनी जे वर्षानी केवलिपर्याय व्यतीत थय गय तयारे अनेक साधुओओ जन्म, जरा अने मरणरूप लवाने। अन्त करी नाथ्यो हुतो। ॥सू० ३३॥

आगला सूत्रमां तीर्थकरनी वात करी पूर्वसूत्र साथे आ प्रकारना सम्बन्धने लधने हुवे सूत्रकार महावीर प्रभुनी समीपे प्रव्रज्या अंगीकार

તેઘથા-વીરાઙ્ગદઃ ઇત્યાદિ । તત્ર-‘વીરાઙ્ગદો વીરયશઃ સંજયઃ’ ઇતિ ત્રયોઽપિ રાજાનઃ પ્રસિદ્ધાઃ ॥૩॥ એણેયક રાજકૃષિસ્તુ કેનકાર્ધજનપદસ્થ શ્વેતામ્બી નગરી અપર નામ શ્વેતવિકા, તસ્યા મર્તુઃ પ્રદેશિનામ્નઃશ્રમણોપાસકસ્ય સ્વકીયઃ । એણેયકઃ ઇતિ તસ્ય ગોત્રાભિધાનમ્ ॥૪॥ *શ્વેતઃ=આમલકનગર્યાઃ સ્વામી । યત્ર નગર્યાં સૂર્યામ્નો દેવઃ સૌધર્મ દેવલોકાદ્ ભગવતો મહાવીરસ્ય વન્દનાર્થમવતીર્ણોઽભવત્ ॥૫॥ શિવઃ-અયં હિ હસ્તિનાપુરનૃપ એકદશ મનસ્યચિન્તયત્, યદહં પ્રત્યહં હિરણ્યાદિના વૃદ્ધિ-

રાજાઓનો દીક્ષિત ક્રિયા હૈં-उनके नाम इस प्रकारसे है-वीराङ्गद १, वीरयश २, संजय ३, ऐण्येयक राजकृषि ४, श्वेत ५, शिव ६, उदायन ७, तथा शङ्ख-काशिवर्द्धन ८ इनमें वीराङ्गद, वीरयश और संजय ये तो प्रसिद्ध ही हैं। ऐण्येयक राजकृषि जो केनकार्धजनपदस्थ श्वेताम्बी नगरीके जिसका दूसरा नाम श्वेतविका है, उसका स्वामी प्रदेशी नामका श्रमणोपासक था उसका आत्मीयजन (कौटुम्बिक) थे ऐण्येयक ऐसा यह गोत्राभिधान है । श्वेत-ये आमलक नगरीके स्वामी थे, इस नगरीमें सूर्याभ देव सौधर्म देवलोकसे भगवान् महावीरको वन्दनाके लिये अवतीर्ण (आया) हुआ था, शिव-ये हस्तिनापुरके राजा थे एक दिन इन्होंने मनमें ऐसा विचार किया कि मेरे यहाँ दिन प्रतिदिन हिरण्य आदिकी बढ़ोत्तरी हो रही है-किसी भी वस्तुकी कमी नहीं है-तो यह

કરનારા આઠ રાજાઓની પ્રરૂપણા કરે છે-

“સમ ણં ભગવયા મહાવીરે ણં” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—નીચેના આઠ રાજાઓએ શ્રમણુ લગવાન મહાવીરની પાસે મુન્ડિત થઇને ગૃહસ્થાવસ્થાના ત્યાગપૂર્વક અણુગારાવસ્થા અંગીકાર કરી હતી-એટલે કે મહાવીર પ્રભુએ તેમને પ્રવર્ણિત કર્યા હતા-(૧) વીરાંગદ, (૨) વીરયશ, (૩) સંજય, એણેયક રાજકૃષિ, (૪) શ્વેત, (૫) શિવ, (૬) ઉદાયન અને (૮) શંખ-કાશિવર્દ્ધન તેમાં વિરાંગદ, વીરયશ અને સંજયની વાત તો પ્રસિદ્ધ છે. એણેયક રાજકૃષિ-કેતકાર્ધજનપદમાં જે શ્વેતામ્બી અથવા શ્વેતવિકા નામની નગરી હતી, તેનો સ્વામી પ્રદેશી નામનો શ્રમણોપાસક હતો. તે પ્રદેશીના આત્મીયજન એણેયક રાજર્ષિ હતા. એણેયક તેમનું ગોત્ર હતું તેથી તેમને અહીં એણેયક કહ્યા છે.

શ્વેત-તેઓ આમલક નગરીના રાજા હતા. તે નગરીમાં જ્યારે મહાવીર પ્રભુ પધારે છે ત્યારે સૂર્યાભ નામનો દેવ સૌધર્મકલ્પમાંથી તેમને વંદણા કરવા માટે આવે છે.

શિવ-તે હસ્તિનાપુરનો રાજા હતો. તેને એક દિવસે એવો વિચાર આવ્યો કે પૂર્વજન્મના યુષ્કર્મોના પ્રભાવથી મારે ત્યાં ચાંદી, સોનું, રત્ન ધન

પુપગચ્છામિ, તદસ્તિ મમ પ્રાક્તનપુણ્યકર્મણઃ ફલમ્, અતો મયા ભૂયસ્તદર્થં યત્નો વિધેયઃ । એવં વિચાર્ય સ પુત્રં રાજ્યે સંસ્થાપ્ય કૃતસકલકૃત્યો દિક્પ્રોક્ષિત-તાપસતયા પ્રવ્રજિતઃ । તતઃ સ પૃષ્ઠઞ્ઠેન તપશ્ચરન્, આતાપનાં કુર્વન્, શીર્ણ-પત્રાદિના પારયંશ્ચ, વિભજ્ઞજ્ઞાનં લબ્ધવાન્ । તેન વિભજ્ઞજ્ઞાનેન સ સન્ત લોકાન્ સપ્તસમુદ્રાંશ્ચ દૃષ્ટવાન્ । તદર્શનેન ‘ મમ દિવ્યં જ્ઞાનમુત્પન્ન ’—મિતિ મન્વાનો જનપદમાગત્ય ગ્રામનગરાદિષુ વહૂન્ જનાન્ સ્ત્રોપલબ્ધં તત્ત્વં ગ્રાહિતવાન્ । તસ્મિન્નેવ સમયે સપરિવારો ભગવાન્ મહાવીરો ગ્રામાનુગ્રામં વિહરંસ્તત્ર સમાગતઃ ।

મેરે પૂર્વજન્મકે પુણ્ય કર્મકા હી પ્રભાવ હૈ, ફલ હૈ, ફસલિયે અબ મુજે પુનઃ એસાહી પ્રયત્ન કરતે રહના ચાહિયે—કિ જિસસે મેરા યહ પુણ્ય ક્ષીણ ન હોને પાવે મુજે યહી સાધન સામગ્રી પ્રાપ્ત હોતી રહે એસા વિચાર કર ઉસને પુત્રકો રાજ્યકા અધિપતિ બના દિયા ઓર સ્વયં દિક્પ્રોક્ષિત તાપસરૂપસે (!) દીક્ષિત હો ગયા, ષષ્ઠ ષષ્ઠકી (બેલેબેલેકી) તપસ્યા કરતે હુએ એવં આતાપના લેતે હુએ તથા—જીર્ણ પાત્રદિકોંસે પારણા કરતે હુએ ઉસને વિભજ્ઞજ્ઞાન પ્રાપ્ત કર લિયા ફસલિયે વિભજ્ઞ જ્ઞાનસે ઉસને સાત લોકોંકો એવં સાત સમુદ્રોંકો દેખા । ઉનકો દેખનેસે મુજે દિવ્ય જ્ઞાન ઉત્પન્ન હુઆહૈ, એસા સમજ્ઞકર ઉસને જનપદમેં (દેશ) આકર ગ્રામ નગર આદિકોંમેં અનેક મનુષ્યોંકો અપને દ્વારા ઉપલબ્ધ તત્ત્વ ગ્રહણ કરવાયા ઉસી સમય સપરિ-વાર ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતે હુએ ભગવાન્ મહાવીર વહાં શ્વેતાંબિકા નગ-

ધાન્ય આદિની વૃદ્ધિ થતી જાય છે. મારે ત્યાં કોઈ પણ વસ્તુની કમી નથી. તો મારે ફરી એવો પ્રયત્ન કરવો જોઈએ કે જેથી ફરીને મારું આ પુણ્ય ક્ષીણ ન થઈ જાય. આ પ્રકારનો સંકલ્પ ફરીને તેણે પોતાના પુત્રને રાજ્યનો અધિપતિ બનાવી દીધો. ત્યાર બાદ તે દિક્પ્રોક્ષિત તાપસ રૂપે દીક્ષિત થઈ ગયો (શિવ રાજર્ષિના આ તપત્ત્વ વિસ્તાર પૂર્વકત્ત્વં વર્ણુન ભગવતી સૂત્રમાંથી લેવું) છઠ્ઠને પારણે છઠ્ઠની તપસ્યા કરતા અને આતાપના લેતા અને પારણાને દિવસે કોઈ એક જ દિશામાંથી એકઠા કરેલાં જીર્ણ પાત્ર, ફલ આદિ વડે પારણા કરતાં એવાં તે શિવરાજર્ષિને કોઈ એક દિવસે વિભંજજ્ઞાન પ્રાપ્ત થઈ ગયું. તે વિભંજ-જ્ઞાનના પ્રભાવથી તેણે સાત લોક અને સાત સમુદ્ર જોયાં. તેથી તેને એમ લાગ્યું કે મને દિવ્યજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થઈ છે. ત્યાર બાદ જનપદમાં આવીને તેણે ગામ, નગરાદિમાં ફરીફરીને એવી પ્રજ્ઞપણા કરવા માંડી કે સાત જ સમુદ્રો છે—અસંખ્યાત દ્વીપસમુદ્રો નથી. જ્યારે શિવરાજર્ષિ હસ્તિનાપુરમાં આ પ્રકારની પ્રજ્ઞપણા કરી રહ્યો હતો, ત્યારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પોતાના શિષ્ય સમુદાય સાથે ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા થકા હસ્તિનાપુર નગરમાં પધાર્યા

गौतमश्च भिक्षायां गतो बहुजन मुखात् शिवोपदिष्टं तत्त्वं श्रुतवान् । स च भगवत्समीपमागत्य शिवोपदिष्टां प्ररूपणां भगवन्तं श्रावयित्वा तद्याथार्थ्यविषये पृष्ठवान् । भगवांस्त्वसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् प्ररूपितवान् । भगवत्प्ररूपणां जन मुखादाकर्ण्य स्वदर्शने जातशङ्कः शिवो भगवत्समीपे जगाम । भगवाँश्च तन्मनोगतं भावं तस्मै प्रोक्तवान् । ततश्च स महावीरे संजातसर्वज्ञत्वविश्वासो दृढभक्तिसंयुतो भगवत्समीपे प्रव्रजितः । ततः स एकादशाङ्गान्यधीत्य कालक्रमेण सिद्धो बुद्धो मुक्तः परिनिवृत्तः सर्वदुःखात्प्रहीणश्चेति ॥६॥

तथा-उदायनः,-अयं हि-सिन्धुसौवीरादीनां षोडशानां जनपदानां, रीमेंआ पहुँचे गौतम भिक्षाके लिपे गये, उन्होंने अनेक मनुष्योंसे शिवोपदिष्ट तत्त्वकी बात सुनी जब भिक्षा लेकर वे आये तो भगवान् के पास आकर उन्होंने शिवोपदिष्ट प्ररूपणा भगवान् को सुनाई और सुनाकर उसके विषय याथार्थ्य क्या है, ऐसा पूछा-भगवान् ने असंख्यात द्वीपसमुद्रोंकी प्ररूपणाकी भगवान् की प्ररूपणाको जनके मुखसे सुनकर अपने दर्शनमें शंकायुक्त हुआ वह शिव तापस भगवान् के पास आया, भगवान् ने उसके मनोगत भावको उससे कहा-तो उसे भगवान् महावीरके ऊपर "ये सर्वज्ञ है" ऐसा विश्वास हो गया और वह उनके प्रति दृढ भक्तिवाला होकर उन्हींके पास दीक्षित हो गया ११ अङ्गोंका उसने अध्ययन किया अन्तमें वह सिद्ध, बुद्ध, मुक्त परिनिवृत्त और समस्त दुःखोंसे रहित होगया उदायन-यह सिन्धु सौवीर आदि सोलह जनपदोंका वीतभय

महावीर प्रभुना शिष्य गौतम स्वामीये हस्तिनापुरमां गोथरी भाटे इरतां इरतां शिवराजर्षि द्वारा प्ररूपित उपर्युक्त तत्त्व विषयक बात सांभली लिखा बडोरीने आब्या भाद तेमणे महावीर प्रभुने आ बात कही संभलणावी अने आ भावतमां यथार्थ बात शी छे ते जलुवानी धर्या प्रकट करी. लगवाने कहूं के असंख्यात द्वीपसमुद्रो छे. लोको द्वारा महावीर प्रभुनी आ प्रकारनी प्ररूपणानी बात सांभलीने शिवराजर्षिनुं मन शंकाथी युक्त थयुं. तेथी ते श्रमणु लगवान महावीरनी पासे आब्यो. महावीर प्रभुये तेना मनोगत लावेने जलु लधने अवे सयोठ थुलासो कथो के जेथी शिवराजर्षिने महावीर प्रभु प्रत्ये संपूर्ण श्रद्धा उत्पन्न थय. तेणे तेमने सर्वज्ञ मान्या अने तेणे तेमनी पासे प्रमन्या अंगीकार लीधी. तेणे अगियार अंगोनो अब्यास कथो. अनेक आकरा तप करीने अन्ते सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिवृत्त अने समस्त दुःखोथी रहित थय गयो.

વીતભયપ્રમુખાનાં ત્રિપષ્ટચધિકત્રિશતાનાં નગરાણાં, દશાર્નાં ચ મુકુટબદ્ધાનાં રાજામધિપતિઃ । શ્રમણોપાસકોઽયં રાજા ઉજ્જયિનીમવરુદ્ધ્ય સ્વપરબલસમક્ષં રણકર્મકુશલતયા રણભૂમૌ કરિવરપૃષ્ઠાચ્ચણ્ડપ્રધોતનમ્ અધો નિપાત્ય નિઘૃહી- તવાન્, ' અયં દાસીપતિ '—રિતિ તલ્લલાટપટ્ટં ચાઙ્કિતવાન્ ।

તથા—' મમ તનૂજોઽયમભિજિદ્રાજ્યશ્રિયા પ્રાપ્તમદઃ કુગતિં મા યાતુ "ઈતિ સ્નેહ-નિવદ્ધ માનસોઽભિજિતે રાજ્યમદત્ત્વા સ્વભાગિનેયાય કેશિને રાજ્યમદાત્ । સ્વયં ભગવતો મહાવીરસ્ય સન્નિધૌ મુણ્ડિતો ભૂત્વા પ્રવ્રજિતઃ । પ્રવ્રજ્યાગ્રહણા- નન્તરં ભૂમણ્ડલે વિહરન્ કદાચિત્ સ્વનગર્યાં સમાગતઃ । તત્ર સમુત્પન્નરોગઃ સ આદિ ૩૩૬ નગરોંકા એવં ૧૦ મુકુટબદ્ધ રાજાઓંકા અધિપતિ થા, શ્રમણોપાસક હસ રાજાને ઉજ્જયિની પર ચઢાઈ કરકે અપને સૈન્ય ઓર પરં સૈન્યકે સમક્ષ રણભૂમિમેં હાથીકે ડપર બેઠે હુએ ચ્ચણ્ડપ્રધોતન રાજાકો હાથીકી પીઠકે ડપરસે દેખતે ૨ હી નીચે ગિરા દિયા થા ઓર ડસે બન્દી બના લિયા થા. એસા યહ રણ કાર્યમેં કુશલ થા ઓર " યહ દાસી પતિ હૈ " એસા પટ્ટ ડસકે લલાટ પર અઙ્કિત કર દિયા થા. તથા મેરા પુત્ર અભિજિત્ રાજ્યશ્રીકો પ્રાપ્ત કર લેગા તો વહ મદોન્મત્ત હોકર કુગતિમેં ચલા જાવેગા—અતઃ એસા ન હો હસ અભિપ્રાયસે 'ડસને અભિજિત્ પુત્રકો રાજ્ય નહીં દિયા ઓર અપને ભાનેજ કેશિકો રાજ્ય દે દિયા એવં સ્વયં ભગવાન્કે સમીપ મુણ્ડિત હોકર પ્રવ્રજિત હો ગયા । પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણકે અનન્તર હી વહ ભૂમિમણ્ડલમેં વિહાર કરને

ઉદાયન-તે સિન્ધુ સૌવીર આદિ ૧૬ જનપદોનો, વીતભય આદિ ૩૩૬ નગરોનો અને ૧૦ મુકુટબદ્ધ રાજાઓનો અધિપતિ હતો. તે શ્રમણોપાસક (શ્રાવક) હતો. ઉદાયન રાજા ઘણો જ શૂરવીર હતો. તેણે ઉજ્જયિની નગરી પર ચડાઈ કરીને, પોતાના અને દુશ્મનના સૈન્યની સમક્ષ જ ચંડપ્રધોત રાજાને હાથીની પીઠ પરથી નીચે નાખીને પોતાનો કેદી બનાવી દીધો હતો. ત્યાર બાદ તેણે ચંડપ્રધોતના કપાળમાં એવાં લખાણવાળા પટ્ટો બંધાવ્યો હતો કે " આ દાસીપતિ છે. " ત્યાર બાદ તે ભાગવતી દીક્ષા અંગીકાર કરવાનો વિચાર કરે છે તે વખતે તેના મનમાં એવો વિચાર આવે છે કે જો મારા પુત્ર અભિજિતને રાજ્યશ્રી સોંપીશ તો તે મદોન્મત્ત થઈ જઈને દુર્ગતિમાં ચાલ્યો જશે. તે કારણે તેણે પોતાના પુત્ર અભિજિતને રાજ્ય નહીં સોંપતા પોતાના ભાણેજ કેશીને રાજ્ય સોંપ્યું. ત્યાર બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પાસે મુંડિત થઈને તેણે પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરી. ત્યાર બાદ તે ભૂમિમંડલમાં વિહાર કરવા

વૈદ્યાનુમત્યા દધિ બુધ્ધુજે । इतश्च केशी मनस्येवमचिन्तयत्—अयं मम राज्यापजि-
हीर्षं रोगच्छलेनात्रास्ते, अतो मयाऽयं शत्रुं विनाशनीयः । एवं विचार्य स
तस्मै भिक्षायां सविषं दधि ददौ । तेनासौ कालं गतः । इत्थमुदायनमुनौ काल-
गतिं गते तद्गुणाकृष्टेन केन चिद् देवेन तदीयशय्यातरकुम्भकारगृहं मुत्तवा
सर्वं नगरं पापाणपातेन विध्वंसितमिति ॥७॥

કાશિવર્દનઃ—કાશીનગર્યા વૃદ્ધિકરઃ શઙ્ખો નામાષ્ટમો રાજેતિ ॥૮॥ સૂ૦ ૩૪॥

लगा बिहार करते २ वह किसी एक समय अपनी नगरीमें आया, वहाँ
उसे रोग हो गया सो वैद्योंकी सलाहसे उसने दहीका उपयोग करना
प्रारम्भ कर दिया इधर केशीने अपने मनमें ऐसा विचार किया—यह
मुझसे राज्य छीनना चाहता है, सो रोगका बहाना लेकर यहाँ आया
है, और ठहरा हुआ है, इसलिये इस दृष्टिसे यह मेरा शत्रु है—अतः
इसका विनाश मुझे अवश्य कर देना चाहिये । ऐसा विचार कर उसने
उस मुनि उदायनके लिये भिक्षामें विष सहित दही दे दिया, इससे
वह मर गया इस प्रकार उदायन मुनिके मर जाने पर उसके गुणानु
रागी किसी देवने उसके शय्यातर कुम्भकारके घरको छोड़कर समस्त
नगरका विध्वंस पत्थरकी वर्षासे कर दिया ।

કાશિવર્દન—કાશી નગરીની વૃદ્ધિ કરનેવાલા શઙ્ખનામકા આઠવાં
રાજો હુઆ છે ॥ સૂત્ર ૩૪ ॥

લાગ્યો. આ પ્રમાણે શ્રામ નગરાદિમાં વિચરતાં વિચરતાં કોઇ એક સમયે તે
પોતાની નગરીમાં આવી પહોંચ્યો. ત્યાં આવ્યા બાદ તેને કોઈ રોગ લાગૂ પડ્યો.
વૈદ્યોની સલાહથી તેણે આહારમાં દહીંનો ઉપયોગ શરૂ કર્યો. હવે તેના લાભેજ
કેશી રાજાને એવો સંદેહ ઉત્પન્ન થયો કે ઉદાયન મારી પાસેથી રાજ્ય પકાવી
લેવા માગે છે, અને તેથી જ તે રોગની સારવાર કરવાના બહાને નગરમાં આવ્યો છે.
તે કારણે જ તે આ નગરને છોડવા માગતો નથી. તેથી તે મારો શત્રુ છે. મારે
કોઈ પણ રીતે તેનો નાશ કરવો જોઈએ. આ પ્રકારના વિચારથી પ્રેરાઈને
તેણે મુનિ ઉદાયનને વિવશુક્ત દહીં વહેરાવ્યું. તે દહીં ખાવાથી તે મરણ
પામ્યો. આ પ્રકારે ઉદાયન મુનિની હત્યા થઈ જવાથી તેના શુણ્ણાનુરાગી કોઈ
દેવે કેશીના આખા નગર પર પત્થરની વૃષ્ટિ કરીને નગરનો નાશ કર્યો. મુનિ
ઉદાયનને રહેવાને માટે આશ્રયસ્થાન અર્પણ કરનાર એક કુંભારનું ઘર જ આ
વૃષ્ટિથી બચી ગયું.

કાશિવર્દન—કાશી નગરીની વૃદ્ધિ કરનારો શંખ નામનો એક રાજા થઇ
ગયો. તે પણ મહાવીર પ્રભુ પાસે પ્રવ્રજિત થયો હતો. ॥ સૂ. ૩૪ ॥

एते वीराङ्गदादयो मनोज्ञेऽमनोज्ञे चाहारादौ समवृत्तय इत्प्राहारस्वरूपमाह—
मूलम्—अट्टविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा--मणुण्णे असणे
पाणे खाइमे साइमे, अमणुण्णे जाव साइमे ॥ सू० ३५ ॥

छाया—अष्टविध आहारः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—मनोज्ञम् अशनं पानं खादिमं
स्वादिमम्, अमनोज्ञं यावत् स्वादिमम् ॥ सू० ३५ ॥

टीका—‘ अट्टविहे आहारे ’ इत्यादि—

आहारो मनोज्ञामनोज्ञभेदेन द्विविधः । तत्र प्रत्येकमशनादिभेदेन चतु-
र्विध इत्यष्टात्राहारभेदा इति ॥ सू० ૩૫ ॥

यथाऽऽहारद्रव्याणि रसपरिणामविशिष्टानि मनोज्ञान्यमनोज्ञानि च भवन्ति,
तथैव क्षेत्रविशेषा अपि पुद्गलगतवर्णपरिणामविशेषवत्त्वेन मनोज्ञा अमनोज्ञाश्च

ये वीરાङ્ગદક આદિ મનોજ્ઞ એવં અમનોજ્ઞ આહાર આદિમેં સમવૃત્તિ-
વાલે થે અતઃ અવ સૂત્રકાર આહારકે સ્વરૂપકા કથન કરતે હૈં—

“ અટ્ટવિહે આહારે પણ્ણત્તે ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—મનોજ્ઞ ઓર અમનોજ્ઞકે ભેદસે આહાર દો પ્રકારકા કહા
ગયાહૈ, इनमें अशन आदिके भेदसे आहार चार-चार प्रकारका है, इस
तरहसे आहारका आठ भेद हो जाते हैं ॥ सू० ૩૫ ॥

जिस प्रकार इस परिणाम विशिष्ट आहार द्रव्य, मनोज्ञ और
अमनोज्ञ होते हैं उसी तरहसे क्षेत्र विशेष भी पुद्गलगत वर्णरूप
परिणाम विशेषवाले होनेसे मनोज्ञ और अमनोज्ञ होते हैं—अतः अब
सूत्रकार कृष्णराजि नामक अमनोज्ञ क्षेत्र विशेषोंकी प्ररूपणा करते हैं—

પૂર્વસૂત્રમાં વીરાંગદક આદિની વાત કરવામાં આવી છે. તેઓ મનોજ્ઞ અને
અમનોજ્ઞ આહારાદિમાં સમવૃત્તિવાળા હતા. તેથી હવે સૂત્રકાર આહારના
સ્વરૂપનું કથન કરે છે—“ અટ્ટવિહે આહારે પણ્ણત્તે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—આહારના મુખ્ય બે પ્રકાર પડે છે—(૧) મનોજ્ઞ અને (૨) અમનોજ્ઞ.
મનોજ્ઞ અમનોજ્ઞ આહારના નીચે પ્રમાણે ચાર-ચાર પ્રકાર પડે છે—અશન, પાન,
પ્રાથ, સ્વાદ્ય. આ રીતે બન્નેના મળીને કુલ આઠ ભેદો થઈ જાય છે. ॥ સૂ ૩૫ ॥

જેવી રીતે રસપરિણામ વિશિષ્ટ આહાર દ્રવ્ય મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ
હોય છે, એજ પ્રમાણે ક્ષેત્રવિશેષો પણ પુદ્ગલગત વર્ણરૂપ પરિણામ વિશેષ
વાળાં હોવાથી મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર કૃષ્ણરાજિ
નામના અમનોજ્ઞ ક્ષેત્રવિશેષોની પ્રરૂપણા કરે છે—

भवन्तीत्यमनोज्ञान् कृष्णराज्यमिधानान् क्षेत्रविशेषान् प्ररूपयितुमाह—

मूलम्--उष्णिं सणकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए
 कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ णं अक्खाडगसमचउरंससंठाण-
 संठियाओ अट्ठ कणहराईओ पण्णत्ताओ, तं जहा-पुरत्थिमेण
 दो कणहराईओ, दाहिणेणं दो कणहराईओ, पच्चत्थिमेणं दो
 कणहराईओ, उत्तरेणं दो कणहराईओ । पुरत्थिमा अब्भंतरे
 कणहराई पच्चत्थिमगं बाहिरं कणहराईं पुट्ठा, पच्चत्थिमा अब्भं-
 तरे कणहराई दाहिणबाहिरं कणहराई पुट्ठा दाहिणा अब्भं-
 तरे कण्णराई पच्चत्थिमगं बाहिरं कण्णराईं पुट्ठा पच्चत्थिमा
 अब्भंतरे कणहराई उत्तरं बाहिरं कणहराईं पुट्ठा, उत्तरा अब्भंतरे
 कणहराई पुरत्थिमं बाहिरं कणहराईं पुट्ठा । पुरत्थिमपच्चत्थि-
 मिच्छाओ बाहिराओ दो कणहराईओ छलंसाओ । उत्तरदाहि-
 णाओ बाहिराओ दो कणहराईओ तंसाओ । सत्थाओवि अब्भं-
 तरकणहराईओ चउरंसाओ ॥ १ ॥ एयासि णं अट्ठण्हं कणहरा-
 ईणं अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा-कणहराई वा, मेहराई
 वा, मघाई वा, माघवईइ वा, वायफलिहेइ वा, वायपलिकखो-
 भेइ वा, देवफलिहेइ वा, देवपलिकखोभेइ वा ॥ २ ॥ एयासि
 णं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंतियविमाणा पण्णत्ता, तं जहा-
 अच्ची १, अच्चिमाली २, वइरोयणे ३, पमंकरे ४, चंदाभे
 ५, सूरामे ६, सुपइट्ठाभे ७ अग्गिच्चामे ८ ॥ ३ ॥ एएसु णं
 अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतियदेवा पण्णत्ता, तं
 जहा-सारसाय १ माइच्चा २, वण्ही ३, वरुणा ४ य गइतोया

૫, ય । તુસિયા ૬ અવાચાહા ૭, અગ્નિચ્ચા ૮, ચેવ બોદ્ધવા
॥ ૪ ॥ ઇષ્ણિ પં અદ્વૃષ્ણં લોગંતિયદેવાણં અજહણમણુક્ષો-
સેણ અદ્વ સામરોવમાઈં ઠિઈં પગગન્તા ॥ સૂ. ૩૬ ॥

છાયા—ઉપરિ સનત્કુમારમાહેન્દ્રયોઃ કલ્પયો, અધો વ્રહ્મલોકે કલ્પે રિષ્ટ-
વિમાનઃ પ્રસ્તટઃ, (તસ્ય) અધઃ સ્વલુ અક્ષવાટકવમદતુરસસંસ્થાનસંસ્થિતા અદ્વ
કૃષ્ણરાજયઃ પ્રજ્ઞસાઃ, તદ્યથા—પૌરસ્ત્યે સ્વલુ દ્વે કૃષ્ણરાજી દક્ષિણે સ્વલુ દ્વે કૃષ્ણ-
રાજી, પાશ્ચાન્ત્યે સ્વલુ દ્વે કૃષ્ણરાજી. ઉત્તરે સ્વલુ દ્વે કૃષ્ણરાજી । પૌરસ્ત્યા આશ્વ-
ન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ દાક્ષિણાત્યાં વાઘ્યાં કૃષ્ણરાજિં સ્પૃષ્ટા, દાક્ષિણાત્યા આશ્વન્તરા
કૃષ્ણરાજિઃ પાશ્ચાત્યાં વાઘ્યાં કૃષ્ણરાજિં સ્પૃષ્ટા. પાશ્ચાત્યા આશ્વન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ
ઉત્તરીયાં વાઘ્યાં કૃષ્ણરાજિં સ્પૃષ્ટા, ઉત્તરીયા—પ્રશ્નન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ પૌરસ્ત્યાં
વાઘ્યાં કૃષ્ણરાજિં સ્પૃષ્ટા । પૌરસ્ત્યપાશ્ચાત્યે વાઘ્યે દ્વે કૃષ્ણરાજી પડસે । ઉત્તરીય-
દક્ષિણાત્યે વાઘ્યે દ્વે કૃષ્ણરાજી વ્યસે । સર્વાં અપિ આશ્વન્તરકૃષ્ણરાજયશ્ચતુરસાઃ
॥ ૧ ॥ એતાસાં સ્વલુ અટાનાં કૃષ્ણરાજીનામ્ અટશ્ચ અપકાશાન્તરેષુ અટૌ લોકા-
ન્તિકવિમાનાનિ પ્રજ્ઞયાનિ, તદ્યથા—મર્ચિઃ ૧, અર્ચિર્માલિઃ ૨, વૈરોચનમ્ ૩,
પ્રમદ્ભૂમ્ ૪, ચન્દ્રામમ્ ૫, સૂરામમ્ ૬, તુષિતિષ્ઠામમ્ ૭, આગ્નેયામમ્ ૮ ॥ ૩ ॥
એતેષુ સ્વલુ અટમુ લોકાન્તિકવિમાનેષુ અટવિધા લોકાન્તિકા દેવાઃ પ્રજ્ઞસાઃ,
તદ્યથા—સારસ્વતા આદિત્યા વહ્નયો વરુણાશ્ચ ગર્દનોદાશ્ચ । તુષિતા અવ્યાઘાધા
આગ્નેયાશ્ચૈવ બોદ્ધવ્યાઃ ॥ ૪ ॥

એતેષાં સ્વલુ અટાનાં લોકાન્તિકદેવાનામ્ અજઘન્યાનુત્કર્ષેણ અટૌ સામરો-
પમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞસાઃ ૫ ॥ સૂ. ૩૬ ॥

ટીકા—‘ ઊર્ણિ ’ ઇત્યાદિ—

સનત્કુમારમાહેન્દ્રયોઃ કલ્પયોઃ ઉપરિ=ઉપરિષ્ટાદ્ વ્રહ્મલોકે કલ્પે રિષ્ટ-
વિમાનઃ પ્રસ્તટો વિચિત્રે । તસ્ય ‘ હેઠ્ઠિ ’ તિ=અધઃ=અધસ્તાત્ અત્ર સ્વલુ અક્ષ-

“ ઊર્ણિ સર્ગકુમારમાર્હિદાણં કલ્પાણં ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—સનત્કુમાર માહેન્દ્ર કલ્પલોકે ઝર વ્રહ્મલોક કલ્પમે રિષ્ટ

“ ઊર્ણિ સર્ગકુમારમાર્હિદાણં કલ્પાણં ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સનત્કુમાર અને માહેન્દ્ર કલ્પોની ઉપર જે બ્રહ્મલોક કલ્પ છે તેમાં રિષ્ટ-

વાટકસમચતુરસ્રસંસ્થાનસંસ્થિતાઃ - અક્ષવાટકાઃ='અઘાડા' इति लोके प्रसिद्धः, तद्वत् समचतुरस्रेण संस्थानेन=आकारेण संस्थिताः=विद्यमानाः अष्टौ कृष्णराजयःकृष्णवर्णपुद्गलवङ्कतयः प्रज्ञमाः । कृष्णगजियुक्तक्षेत्रविशेषा अपि कृष्णराजयः प्रोच्यन्ते इति बोध्यम् । ताः कृष्णराजयो यथा व्यवस्थितास्तथा प्रदर्शयति-'तं जहा-पुरस्थिमे ण' इत्यादि ।

પૌરસ્ત્યે=પૂર્વદિશમામે સ્વતુ દે કૃષ્ણરાજી ભવતઃ । એવ દક્ષિણપશ્ચિમોત્તરેષુ દિશમામેષ્વપિ ક્રમેણ દે દે કૃષ્ણરાજી બોધ્યે । તત્ર પૌરસ્ત્યા=પૂર્વદિશમવા અભ્ય-ન્તરા=અન્તરાલવર્તિની કૃષ્ણરાજિઃ દાક્ષિણાત્યાં વાહ્યાં કૃષ્ણરાજિ સ્પૃષ્ટા=સંલગ્ના । તથા-દાક્ષિણાત્યા અભ્યન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ પાશ્ચાત્યાં વાહ્યાં કૃષ્ણરાજિ સ્પૃષ્ટા । પાશ્ચાત્યા અભ્યન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ-ઉત્તરીયાં વાહ્યાં કૃષ્ણરાજિ સ્પૃષ્ટા । ઉત્તરીયા ચ અભ્યન્તરા કૃષ્ણરાજિઃ-ઉત્તરીયાં વાહ્યાં કૃષ્ણરાજિ સ્પૃષ્ટા । ઉત્તરીયા ચ અભ્ય-ન્તરા-કૃષ્ણરાજિઃ પૌરસ્ત્યાં વાહ્યાં કૃષ્ણરાજિ સ્પૃષ્ટેતિ । વાહ્યાઅભ્યન્તરભેદભિન્નાસુ

ચિમાન નામકા પ્રસ્તર હૈ, ડમકે નીચે અઘાડેને જૈસી રામચૌકોર આકારવાલી-આઠ કૃષ્ણ વર્ણવાલે પુદ્ગલોંકી પંક્તિયાં (ગાંજી) ફલી ગઈહૈ । કૃષ્ણરાજિસે યુક્ત ક્ષેત્ર વિશેષ મી કૃષ્ણરાજી કહા ગયા હૈ । યે કૃષ્ણ રાજિયાં હસ પ્રકારસે હૈ-પૂર્વ દિશામેં દો કૃષ્ણરાજિયાં હૈ, દક્ષિણ દિશામેં દો કૃષ્ણરાજિયાં હૈ ! પશ્ચિમ દિશામેં દો કૃષ્ણ રાજિયાં હૈ । એવં ઉત્તર દિશામેં દો કૃષ્ણરાજિયાં હૈ । પૂર્વ દિશાકી મીતરી કૃષ્ણ-રાજિ દક્ષિણ દિશાકી વાહિરી કૃષ્ણરાજિકો સ્પર્શતીહૈ । દક્ષિણ દિશાકી મીતરી કૃષ્ણરાજી પશ્ચિમદિશાકી વાહિરી કૃષ્ણરાજીકો સ્પર્શતીહૈ । પશ્ચિમ દિશાકી મીતરી કૃષ્ણરાજિ ઉત્તર દિશાકી વાહિરી કૃષ્ણરાજિકો સ્પર્શતીહૈ, એવં ઉત્તરદિશાકી મીતરી કૃષ્ણરાજિ પૂર્વ દિશાકી વાહિરી કૃષ્ણરાજિકો સ્પર્શતી હૈ, પૂર્વ દિશાકો એવં પશ્ચિમ દિશાકી વાહિરી દો કૃષ્ણરાજિયાં

વિમાન નામનો પ્રસ્તર છે તેની નીચે અઘાડાના જેવી સમચોરમ આકારવાળી, કૃષ્ણવર્ણવાળાં પુદ્ગલોની આઠ રાજિઓ (પંક્તિઓ) છે. કૃષ્ણરાજિથી યુક્ત ક્ષેત્રવિશેષને પણ અહીં કૃષ્ણરાજિ કહેવામાં આવેલ છે. તે કૃષ્ણરાજિઓ આ પ્રમાણે છે-પૂર્વ દિશામાં બે, દક્ષિણ બે, પશ્ચિમ દિશામાં બે અને ઉત્તર દિશામાં બે કૃષ્ણરાજિઓ આવેલી છે. પૂર્વ દિશાની બે અંદર બે કૃષ્ણરાજિ છે તે દક્ષિણ દિશાની બહારની કૃષ્ણરાજિનો સ્પર્શ કરે છે દક્ષિણ દિશાની અંદરની કૃષ્ણરાજિ પશ્ચિમ દિશાની બહારની કૃષ્ણરાજિનો સ્પર્શ કરે છે પશ્ચિમ દિશાની બે અંદરની કૃષ્ણરાજિ છે તે ઉત્તર દિશાની બાહ્ય કૃષ્ણરાજિને સ્પર્શ છે. ઉત્તર દિશાની બે અંદરની કૃષ્ણરાજિ છે તે પૂર્વ દિશાની બાહ્ય કૃષ્ણરાજિને સ્પર્શ છે પૂર્વ દિશાની અને પશ્ચિમ દિશાની બે બાહ્ય કૃષ્ણરાજિઓ છે ખૂણવાળી છે,

एतासु कृष्णराजिषु पौरस्त्यं पाश्चात्यं चैनद् बाह्यं कृष्णराजिद्वयं पडसं=पट-
कोणम् । उत्तरीयं दक्षिणात्यं चैनद् बाह्यं कृष्णराजिद्वयं त्र्यसं=त्रिकोण ।
तथा-आभ्यन्तरभागस्थिताश्चतस्रोऽपि कृष्णराजयः चतुरस्राः=चतुष्कोणा बोध्या
इति ॥१॥ इत्थं कृष्णराजीनां स्थानानि स्वरूपाणि चाभिधाय सम्प्रति तासां
नामान्यभिधातुमाह-‘ एयामिणं ’ इत्यादि ।

एतासामष्टानां कृष्णराजीनां नामान्यष्टौ प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-कृष्णराजिरिति
वा १, मेघराजिरिति वा २, मघेति वा ३, माघवतीति वा ४, वातपरिघेति वा
५, वातप्रतिक्षोभ इति वा ६, देवपरिघ इति वा ७, देवप्रतिक्षोभ इति वा ८,
इति । इतिस्त्वत्र स्वरूपोपदर्शनार्थः । चेति त्रिकूलार्थः । तत्र-कृष्णराजिः-
कृष्णपुद्गलस्वरूपत्वात् १। मेघराजिः-मेघराजिरिव कृष्णत्वात् २। तथा=मघा मघा-
नाम षष्ठो पृथिवी तद्वदतिकृष्णत्वात् ३। माघवती-माघवती नाम सप्तमी पृथिवी,
तद्वदतिकृष्णत्वात् ४। वातपरिघः-वातस्य गमनपरिघात् ५। वातप्रतिक्षोभः-

છ કોનોંવાલી હૈં । ઉત્તર એવં દક્ષિણ દિશાની દો બાહિરી કૃષ્ણ રાજિયાં
ત્રિકોણ હૈં તથા સમસ્ત ખીતરી કૃષ્ણ રાજિયાં ચૌકોર હૈં । इन आठ
कृष्णराजियोंके आठ नाम इस प्रकारसे हैं-कृष्णराजि १, मेघराजि
२, मेघ ३, मेघवती ४, वातपरिघा ५, वातप्रतिक्षोभ ६, देवपरिघ ७,
और देवप्रतिक्षोभ ८। इनमें कृष्णराजि ऐसा नाम कृष्ण पुद्गल रूप
होनेसे है, मेघराजि ऐसा नाम मेघराजिके जैसी कृष्ण होनेसे है,
मघाराजि ऐसा नाम मघा नामके छठे नरकके जैसी अति कृष्ण होनेसे
है, माघवती ऐसा नाम माघवती नामक सातवीं पृथिवीसे भी अधिक
कृष्ण होनेके कारणसे है, वायुके गमनका परिघान करनेके कारण
वातपरिघ ऐसा नाम है, वातको क्षोभजनक होनेसे वातप्रतिक्षोभ
ऐसा नाम है, देवपरिघ ऐसा नाम देवोंको भयका उत्पादक होनेसे

ઉત્તર અને દક્ષિણ દિશાની બે બાહ્ય કૃષ્ણરાજિઓ ત્રિકોણાકાર છે, તથા
અંદરની બધી કૃષ્ણરાજિઓ ચતુષ્કોણ છે આ આઠ કૃષ્ણરાજિઓનાં આઠ
નામો નીચે પ્રમાણે છે-(૧) કૃષ્ણરાજી, (૨) મેઘરાજી, (૩) મઘારાજી, (૪)
માઘવતી, (૫) વાતપરિઘ, (૬) વાતપ્રતિક્ષોભ, (૭) દેવપરિઘ અને (૮) દેવપ્રતિક્ષોભ
તે રાજિઓ કૃષ્ણ પુદ્ગલ રૂપ હોવાથી તેમનું નામ કૃષ્ણરાજીઓ છે. તેઓ
મેઘરાજીના જેવા કૃષ્ણ વર્ણવાળી હોવાથી તેમનું નામ મેઘરાજી પડ્યું છે.
મઘા નામની છઠી નરકના જેવી અતિ કૃષ્ણ હોવાને કારણે તેમનું નામ મઘા-
રાજી પડ્યું છે-માઘવતી નામની સાતમી નરક પૃથ્વી કરતાં પણ અધિક
કૃષ્ણ વર્ણવાળી હોવાને કારણે તેનું ચૈત્યું નામ માઘવતી છે. વાયુના ગમનમાં
પ્રતિઘાત (અવરોધ) ઉત્પન્ન કરનાર હોવાને કારણે તેનું પાંચમું નામ વાત
પરિઘ છે વાયુને માટે ક્ષોભજનક હોવાને કારણે તેનું છઠ્ઠું નામ વાતપ્રતિ
ક્ષોભ છે. દેવોમાં ભય ઉત્પન્ન કરનારી હોવાને કારણે તેનું સાતમું નામ દેવ

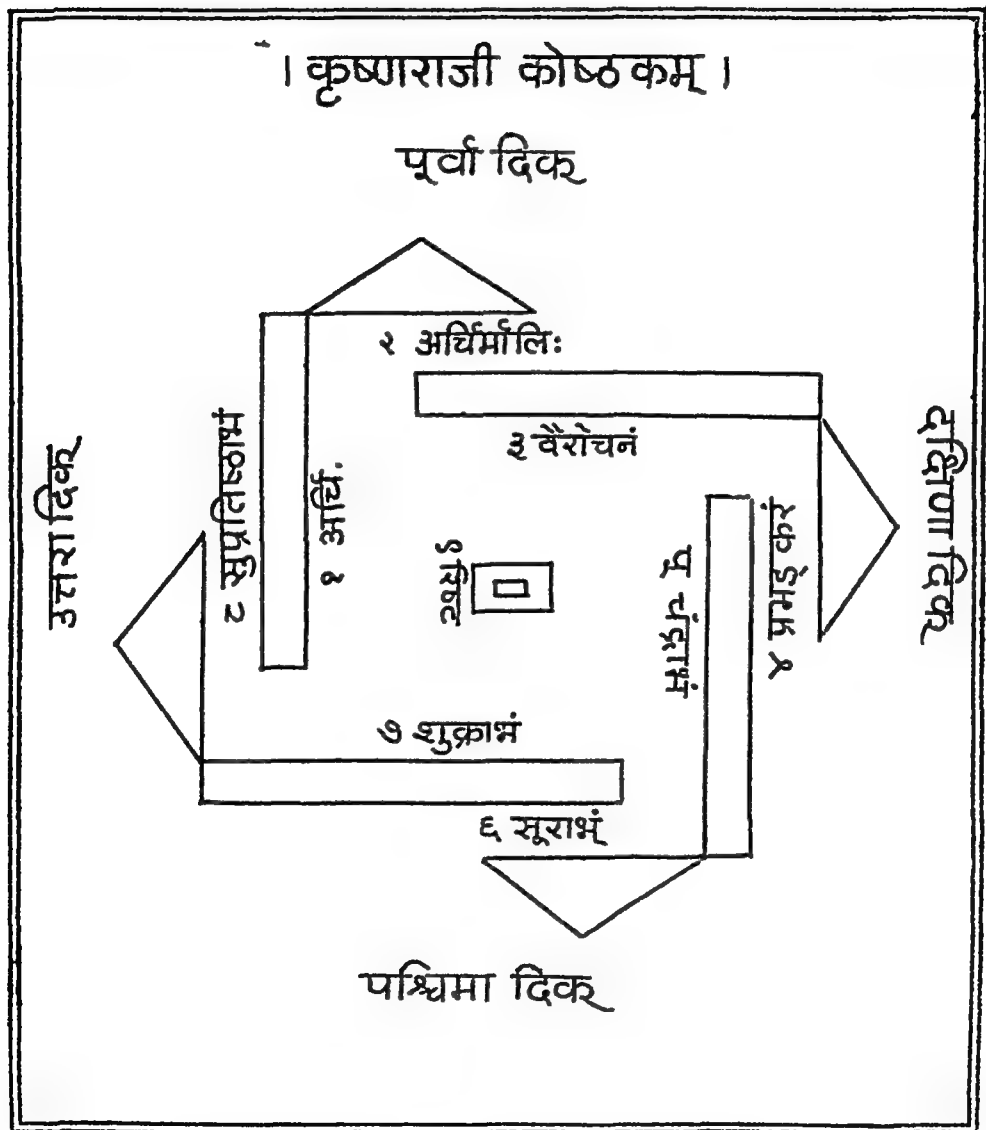
વાતસ્ય ક્ષોભજનકત્વાત્ ૬। દેવપરિઘઃ=દેવાનાં મયોત્પાદકત્વેન ગમનવિધાત-
હેતુત્વાત્ ૭। દેવપ્રતિક્ષોમઃ-દેવાનાં ક્ષોભજનકત્વાદિતિ ૮ ॥૮॥

પ્રતાસામટાનાં કૃષ્ણરાજીનામટસુ અવકાશાન્તરેષુ=રાજિદ્વયમધ્ય ભાગેષુ
અષ્ટ લોકાન્તિકવિમાનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, તથા-અર્ચિઃ ૧, અર્ચિર્માલિઃ ૨ इत्यादि।
તત્ર-અર્ચિર્લોકાન્તિકવિમાનં પૂર્વદિગ્વર્તિન્યા આભ્યન્તરકૃષ્ણરાજ્યા અગ્રવર્તિ
૧। અર્ચિર્માલિવિમાનં પૂર્વયોઃ કૃષ્ણરાજ્યોર્મધ્યવર્તિ ૨। વૈરોચનં દક્ષિણદિગ્વ-
ર્તિન્યા આભ્યન્તર-કૃષ્ણરાજ્યા અગ્રવર્તિ ૩। પ્રમદ્ધરં દક્ષિણયોઃ કૃષ્ણરાજ્યો-
ર્મધ્યવર્તિ ૪। ચન્દ્રામં પશ્ચિમદિગ્વર્તિન્યા આભ્યન્તરકૃષ્ણરાજ્યા અગ્રવર્તિ ૫।
સુરામં પશ્ચિમયોઃ કૃષ્ણરાજ્યોર્મધ્યવર્તિ ૬। સુપ્રતિષ્ઠામ્ ઉત્તરદિગ્વર્તિન્યા:

હૈ, તથા દેવપ્રતિક્ષોમ એસા નામ દેવોંકો ક્ષોભજનક હોનેસે હૈ। इन
आठ कृष्णराजियोंके अष्ट अवकाशान्तरोंमें दो राजिके मध्य भागोंमें
आठ लोकान्तिक विमान कहे गये हैं-जैसे-अर्चि १, अर्चिर्माली २,
इनमें जो अर्चि नामका लोकान्तिक विमान है वह पूर्वदिग्वर्तिनी
आभ्यन्तर कृष्णराजिके अग्रवर्ती है, अर्चिर्माली नामका जो लोका-
न्तिक विमानहै वह पूर्वकीकृष्णराजियोंके मध्यवर्ती है, वैरोचन नामका
जो लोकान्तिक विमान है, वह दक्षिणदिग्वर्तिनी आभ्यन्तर कृष्ण
राजोंके अग्रवर्ती है, प्रमद्वर नामका जो लोकान्तिक विमान है, वह
दक्षिणकी कृष्ण राजियोंके मध्यवर्ती है, चन्द्राम नामका जो लोकान्तिक
विमान है, वह पश्चिम दिग्वर्तिनी आभ्यन्तर कृष्णराजिके अग्रवर्ती है
सुराम नामका जो लोकान्तिक विमान है-यह पश्चिमकी कृष्णराजियोंके

પરિઘ છે. દેવોમાં ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરનારી હોવાને કારણે તેનું આક્રમ્યું નામ દેવ
પ્રતિક્ષોમ પડ્યું છે. આ આઠ કૃષ્ણરાજિઓના આઠ અવકાશાન્તરોમાં (એ
રાજિની વચ્ચેનો ભાગ અહીં અવકાશાન્તરોથી ગ્રહણ થયે છે) આઠ લોકાન્તિક
વિમાનો ઠહ્યાં છે તે લોકાન્તિક વિમાનોનાં નામ અર્ચિ, અર્ચિર્માલી અદિ છે.
અર્ચિ નામનું લોકાન્તિક વિમાન પૂર્વદિશાની આભ્યન્તર કૃષ્ણરાજિને અગ્રવર્તી
છે. અર્ચિર્માલી નામનું લોકાન્તિક વિમાન પૂર્વની કૃષ્ણરાજિઓના મધ્ય ભાગે
આવેલું છે. વૈરોચન નામનું ત્રીજું લોકાન્તિક વિમાન દક્ષિણ દિશાની આભ્યન્તર
કૃષ્ણરાજિને અગ્રવર્તી છે પ્રમદ્ધર નામનું ચોથું લોકાન્તિક વિમાન દક્ષિણની
કૃષ્ણરાજિઓની વચ્ચે આવેલું છે. ચન્દ્રપ્રભ નામનું પાંચમું લોકાન્તિક વિમાન
પશ્ચિમ દિશાની આભ્યન્તર કૃષ્ણરાજિને અગ્રવર્તી છે. સુરાલ નામનું છઠ્ઠું
લોકાન્તિક વિમાન પશ્ચિમની કૃષ્ણરાજિઓની વચ્ચે આવેલું છે. સુપ્રતિષ્ઠાલ

पृष्ठ १३२-३३ में कहा हुआ कृष्णराजीका कोष्ठक



पृष्ठ १३२-३३ में बताया हुआ कृष्णराजी कोष्ठक

આભ્યન્તરકૃષ્ણરાજ્યા અગ્રવર્તિ ૭। તથા-આગ્નેયામં વિમાનમ્ ઉત્તરયોઃ કૃષ્ણરાજ્યો-
ર્મધ્યવર્તિ ૮। એતાસાં કૃષ્ણરાજીનાં વહુમધ્યદેગભાગે રિષ્ટામપિ વિમાનમસ્તિ પરન્તુ
અષ્ટસ્થાનકાનુરોધાત્તન્નાત્ર વિચિન્નમિતિ । એત્કોષ્ટકં પૃથક્ષત્રે દ્રષ્ટવ્યમ્ । ઈતિ
॥૩॥ એતેષુ અષ્ટમૃ ઓકાન્તિકવિમાનેષુ અષ્ટવિધા લોકાન્તિકદેવાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા-
સારસ્વતા આદિત્યા ઇત્યાદિ । તત્ર-અર્ચિર્વિમાને સારસ્વતાઃ ૧, અર્ચિર્માલિ-
વિમાને આદિત્યાઃ ૨, વૈરોચન વિમાને વહ્નયઃ ૩, પ્રખલ્લરે વરુણાઃ ૪, ચન્દ્રામે
ગર્દતોયા ૫, ઘૃણામે તુષિતાઃ ૬, સુપ્રતિષ્ઠામે અગ્ન્યાયાધાઃ ૭, આગ્નેયાષ્ટ્રે ચ
આગ્નેયાઃ ૮ ઇતિ રિષ્ટામે તુ રિષ્ટા દેશ બોધ્યાઃ ઇતિ ॥૪॥ એતેષાં સારસ્વત
પ્રમૃતીનામષ્ટાનામપિ લોકાન્તિકદેવાનામ્ જગન્મ્યોત્કર્ષેણ અષ્ટ સાગરોપમાણિ
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા ॥ મૂ. ૩૬ ॥

મધ્યવર્તી હૈ, સુપ્રતિષ્ઠામ નામકા જો લોકાન્તિક વિમાન હૈ વહ
ઉત્તર દિગ્વર્તી અભ્યન્તર કૃષ્ણરાજીને અગ્રવર્તી હૈ, તથા-આગ્નેયામ
નામકા જો લોકાન્તિક વિમાન હૈ, વહ ઉત્તરકી દો કૃષ્ણરાજીયોંકે
મધ્યવર્તી હૈ, इन कृष्णराजियोंके बहु मध्य देशभागमें रिष्टांम
नामका विमान है, परन्तु-यहां आठ स्थानकोंके अनुगोधसे उसकी
विवक्षा नहीं हुई है-इसका कोष्ठक अलग पत्रमें दिखाया है सो
वहांसे देख लेवे—

इन आठ लोकान्तिक विमानोंमें आठ प्रकारके लोकान्तिक देव
रहते हैं, उनके नाम इस प्रकारसे हैं-सारस्वत १, आदित्य २, वह्नि ३,
वरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित ६, अग्न्यायाध ७, और आग्नेय ८ इन
सभी लोकान्तिक देवोंकी जगन्म्य एवं उत्कृष्ट दोनों प्रकारकी आयु
आठ सागरोपमकी कही गई है ॥ सूत्र ३६॥

નામનુ લોકાન્તિક વિમાન ઉત્તર દિશાની આભ્યન્તર કૃષ્ણરાજીને અગ્રવર્તી છે.
આગ્નેયામ નામનું અઠમું લોકાન્તિક વિમાન ઉત્તરથી ગાન્ને કૃષ્ણરાજીઓની
મધ્યમાં આવેલું છે. આ કૃષ્ણરાજીઓના બહુમધ્ય દેશ ભાગમાં રિષ્ટામ
નામનું વિમાન છે. પરન્તુ અહીં આઠ સ્થાનકોનો અધિકાર ચાલતો હોવાથી અહીં
તેનું વર્ણન કર્યું નથી. આ લોકાન્તિક વિમાનોનું સ્થાન બતાવતી આકૃતિ આ સાથેના
પેજમાં બતાવવામાં આવી છે-આ આઠ લોકાન્તિક વિમાને માં આઠ પ્રકારના લોકા-
ન્તિક દેવો રહે છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે-(૧) સારસ્વત, (૨) આદિત્ય
(૩) વહ્નિ, (૪) વરુણ, (૫) ગર્દતોય, (૬) તુષિત (૭) અગ્ન્યાયાધ અને (૮)
આગ્નેય. આ સઘળા લોકાન્તિક દેવોનું જગન્મ્ય અને ઉત્કૃષ્ટ આ બન્ને પ્રકારનું
આયુષ્ય આઠ સાગરોપમનું કહ્યું છે. ॥ સૂ. ૩૬॥

કૃષ્ણરાજયો હિ ઊર્ધ્વલોકસ્ય મધ્યમાગસ્થિતા ઇતિ મધ્યમાગપ્રસ્તાવાદ્
ધર્માદીનાં ચતુર્ગામ્ એકૈકસ્ય મધ્યમાગમ્ અટસ્થાનત્રેન પ્રત્યપયિતુમાઃ—

સૂત્ર—અટ્ઠ ધર્મસ્થિતિકાયમજ્જપણ્ણસા પળ્ણત્તા । અટ્ઠ અધ-
ર્મસ્થિતિકાયમજ્જપણ્ણસા પળ્ણત્તા । एवं चेव अट्ठ आणासत्थि-
कायमज्जपण्णसा पण्णत्ता । एवं चेव अट्ठ जीवमज्जपण्णसा
पण्णत्ता ॥ सू० ३७ ॥

છાયા—અટ્ઠ ધર્માસ્થિકાયમધ્યપ્રદેશાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । અટ્ઠ અધર્માસ્થિકાય-
મધ્યપ્રદેશાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । एवमेव अट्ठ आकाशास्तिकायमध्यप्रदेशाः प्रज्ञताः ।
एवमेव अट्ठ जीवमध्यप्रदेशाः प्रज्ञताः ॥ सू० ३७ ॥

ટીકા—‘અટ્ઠ ધર્મસ્થિકાય’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નરમ્-ધર્માધર્માજ્ઞાનાં મધ્યપ્રદેશા રુચકલ્પાઃ ।
जीवस्यापि कैरलिसमुद्धाते रुचकस्या एव मध्यप्रदेशाः, अन्यदा यथास्थिता
एवाण्टौ मध्यप्रदेशा इति ॥ सू० ३७ ॥

ચે કૃષ્ણરાજિયાં ઊર્ધ્વલોકકે મધ્ય ભાગમેં સ્થિત હેં, હસલિયે
અવ સૂત્રકાર મધ્ય ભાગકે પ્રસ્તાવકો લેકર ધર્માદિકચારોંકે એક એકકે
મધ્ય ભાગકા કથન આઠ સ્થાન રૂપસે કરતે હેં—

“અટ્ઠ ધર્મસ્થિકાયમજ્જપણ્ણસા પળ્ણત્તા” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—ધર્માસ્થિકાયકે મધ્ય પ્રદેશ આઠ કહે ગયે હેં, અધર્મા-
સ્થિકાયકે મધ્યપ્રદેશ આઠ કહે ગયે હેં । આકાશાસ્થિકાયકે મધ્ય
પ્રદેશ આઠ કહે ગયે હેં । જીવકે મધ્યપ્રદેશ આઠ કહે ગયે હેં । ધર્મા-
સ્થિકાય અધર્માસ્થિકાય ઔર આકાશાસ્થિકાયકે જો મધ્યપ્રદેશ હેં
વે રુચક રૂપ હેં । જીવ જય કેવલિ સમુદ્યાન કરના હૈ, તવ उसका भी
मध्य प्रदेश रुचकस्थही होते हैं । अन्य कालमें आठ मध्यप्रदेश यथा-
स्थित ही होते रहते हैं ॥ सूत्र ३७ ॥

આ કૃષ્ણરાજિઓ ઉર્ધ્વલોકના મધ્ય ભાગમ આવેલી છે પૂર્વસૂત્ર સાથે
આ પ્રકારના સંબંધને લઇનેકવે સૂત્રકાર ધર્માસ્થિકાય આદિ ચાર અસ્થિકાયના
મધ્ય ભાગનું કથન કરે છે—“અટ્ઠ ધર્મસ્થિકાયમજ્જપણ્ણસા પળ્ણત્તા” ઇત્યાદિ—
ટીકાર્થ—ધર્માસ્થિકાયનાં મધ્યપ્રદેશ આઠ કહ્યા છે અધર્માસ્થિકાયના મધ્યપ્રદેશ આઠ
કહ્યા છે આકાશસ્થિકાયના મધ્યપ્રદેશ આઠ કહ્યા છે જીવના મધ્યપ્રદેશ આઠ
કહ્યા છે ધર્માસ્થિકાય, અધર્માસ્થિકાય અને આકાશાસ્થિકાયના જે મધ્યપ્રદેશો
છે તે રૂચકરૂપ છે જીવ જ્યારે કેવલિસમુદ્ધાત કરે છે ત્યારે તેના મધ્યપ્રદેશો
પણ રૂચકરૂપ જ હોય છે અન્યકાળે આઠ મધ્યપ્રદેશો યથાસ્થિત જ રહે છે । સૂ ૩૭

જીવમધ્યપ્રદેશાદિપ્રરૂપકાશ્ચ તીર્થકરા इति तीर्थकरवक्तव्यतां सूत्र-
द्वयेनाह —

મૂલમ્—અરહંતા પં મહાપદમે અદ્વ રાયાણો મુંડા ભાવિત્તા
અગારાઓ અનગારિયં પદ્માવેસ્સહ, તં જહા-પડમં ૧, પડમ-
ગુસ્મં ૨, નલિગં ૩, નલિગગુસ્મં ૪, પટપદ્મયં ૫, ધણુદ્ધયં
૬, કનકરથં ૭ મરત્તં ૮ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

છાયા—અર્હન્ત્વલુ મહાપદ્મઃ અષ્ટૌ રાજ્ઞો મુણ્ડાન્ ભાવયિત્વા અગારાત્
અનગારિતાં પ્રજ્ઞાજયિષ્યતિ, તથા—પદ્મ ૧, પદ્મગુલ્મં ૨, નલિનં ૩, નલિનપદ્મં
૪, પદ્મધ્વજં ૫, ધનુર્ધ્વજં ૬, કનકરથં ૭, મરતયુ ૮ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

ટીકા—‘ અરહંતાણં ’ इत्यादि—

મહાપદ્મઃ અર્હન્ત-ભવિષ્ય દુત્સર્પિણ્યાં મહાપદ્મ નામા ભવિષ્યતીર્થકરઃ શ્રેણિક
જીવઃ સ્વલુ અષ્ટૌ રાજ્ઞો મુણ્ડાન્ ભાવયિત્વા=કૃત્વા અગારાત્ અનગારિતાં પ્રજ્ઞા-
જયિષ્યતિ, તથા—પદ્મઃ :પદ્મગુલ્મમિત્યાદિ । પદ્માદયોડન પ્રજ્ઞાજનક્રિયાયાઃ
કર્મત્વેન વિવક્ષિતત્વાદ્ દ્વિતીયાન્તત્વેન નિર્દિષ્ટા इति ॥ સૂ. ૩૮ ॥

જીવકે મધ્યપ્રદેશ આદિકે પ્રરૂપક તીર્થકર હોતે હૈં, હસલિયે અવ
સૂત્રકાર તીર્થકરકી વક્તવ્યતા દો સૂત્રસે કારતે હૈં—

“ અરહંતાણં મહાપડમે અદ્વ રાયાણો ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—મહાપદ્મ અર્હન્ત આઠ રાજાઓંકો મુણ્ડિત કરકે અગા-
રાવસ્થાસે અનગારાવસ્થામેં દીક્ષિત કરેંગે. એન આઠ રાજાઓંકે નામ
હમ પ્રકારસે હૈં—પદ્મ ૧, પદ્મગુલ્મ ૨, નલિન ૩, નલિનપદ્મ ૪, પદ્મ-
ધ્વજ ૫, ધનુર્ધ્વજ ૬ કનકરથ ૭, ઓર મરત ૮ એ મહાપદ્મ અર્હન્ત
શ્રેણિકકે જીવહૈં ઓર એ ભવિષ્યત્ ઉત્સર્પિણીમેં તીર્થકરહોંગે ॥ સૂ. ૩૮ ॥

જીવના મધ્યપ્રદેશો આદિના પ્રરૂપક તીર્થકરો જ હોય છે. તેથી હવે
સૂત્રકાર એ સૂત્રો દ્વારા તીર્થકરોની વક્તવ્યતાનું પ્રતિપાદન કરે છે—“અરહંતાણં
મહાપડમે અદ્વરાયાણો” इत्यादि—(સૂ. ૩૮)

ટીકાર્થ—મહાપદ્મ અર્હન્ત આઠ રાજાઓને મુણ્ડિત કરીને અગારાવસ્થાના ત્યાગ
પૂર્વક અનગારાવસ્થાની દીક્ષા આપશે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧)
પદ્મ, (૨) પદ્મગુલ્મ, (૩) નલિન, (૪) નલિનપદ્મ, (૫) પદ્મધ્વજ, (૬) ધનુર્ધ્વજ,
(૭) કનકરથ અને (૮) મરત. આ મહાપદ્મ અર્હન્ત આગામી ઉત્સર્પિણીમાં
તીર્થકર થશે, તેઓ શ્રેણિક રાજાના જીવરૂપ છે. ॥ સૂ. ૩૮ ॥

तथा—

मूलम्—कणहस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिस्सीओ अग्गहओ णं अग्गिणोमिस्स अंतिए सुण्डा भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयाओ सिद्धाओ जाव सव्वदुक्खपहीणाओ, तंजहा- पउ-मान्दई १, गोरी २, गंधारी ३, लक्खणा ४, सुत्तीमा ५, जंवंदई ६, सच्चमामा ७, रुप्पिणी ८ कणहग्गमहिस्सीओ ॥ सू० ३९ ॥

छाया—कृष्णस्य खलु वासुदेवस्य अष्टौ अग्रमहिष्यः अर्हन्तः खलु अरिष्ट-नेमेरन्तिके मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिताः सिद्धाः यावत् सर्वदुःख-प्रहीणाः, तद्यथा—पद्मावती १, गौरी २, गान्धारी ३, लक्ष्मणा ४, सुषीमा ५, जाम्बवती ६ सत्यभामा ७ः रुक्मिणी ८ कृष्णाग्रमहिष्यः ॥ सू० ३९ ॥

टीका—‘ कणहस्स णं ’ इत्यादि—

कृष्णवासुदेवस्य अष्टौ अग्रमहिष्यः=इष्टराज्ञः अर्हदरिष्टनेमिमविधे मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिताः, सिद्धाः—कृतकृत्याः, यावत्पदेन—‘ बुद्धाः मुक्ताः परिनिवृत्ताः ’ इत्येषां पदानां संग्रहः, तत्र—बुद्धाः=विमलकेवलाङ्गोकेन ज्ञान-

“ कणहस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिस्सीओ ” इत्यादि ॥

टीकार्थ—कृष्ण वासुदेवकी आठ पट्टरानियां अर्हन्त अरिष्टनेमिके पास मुण्डित होकर अगारावस्थाले अनगारावस्थामें दीक्षित हुई हैं। ये सब सिद्ध यावत् सर्व दुःखोंसे प्रहीण हैं। उनके नाम इस प्रकारसे हैं—

पद्मावती १, गौरी २, गान्धारी ३, लक्ष्मणा ४, सुषीमा ५, जाम्बवती ६, सत्यभामा ७, और रुक्मिणी ८ निद्ध शब्दका अर्थ कृष्णकृत्य होना है, यहां यावत्पदसे “ बुद्धाः मुक्ताः परिनिवृत्ताः ” इन पदोंका

“ कणहस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिस्सीओ ” इत्यादि

टीकार्थ—कृष्णवासुदेवकी आठ पट्टरानियाँ अर्हन्त अरिष्टनेमिनी पास मुण्डित थर्डने अगारावस्थाना त्यागपूर्वक अनगरावस्थानी दीक्षा दीधी હતી. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે હતાં—(૧) પદ્માવતી, (૨) ગૌરી, (૩) ગાન્ધારી, (૪) લક્ષ્મણા, (૫) સુષીમા, (૬) જામ્બવતી. સત્યભામા. અને (૮) રુક્મિણી, તે આઠે સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, પરિનિવૃત્ત અને સમસ્ત દુઃખોથી રહિત થઈ ગઈ.

હવે સિદ્ધ આદિ પદોનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે. સિદ્ધ થઈ જવું. એટલે કોઈપણ કાર્ય કરવાનું બાકી ન રહેવું. બુદ્ધ એટલે વિમલ કેવળજ્ઞાન

સકલલોકાલોકઃ, મુક્તાઃ=સર્વકર્મભ્યો રહિતાઃ પરિનિર્વૃતાઃ=સમસ્તકર્મકૃતવિકાર-
રહિતત્વેન સ્વસ્થીભૂતાઃ, અતએવ-સર્વદુઃખપ્રહીણાઃ=સમસ્તક્લેશાન્તકરા જાતાઃ।
તાઃ કૃષ્ણાગ્રમહિષ્યો હિ પજ્ઞાવતી ગૌરી ગાન્ધાર્યાદયો બોધ્યાઃ । અમુમેવાર્થમુપ-
દર્શયિતુમાહ-‘ તં જહા=પડમાવડે, ગૌરી ’ ઇત્યાદિ । આસાં ચરિતાનિ અન્તકૃદ-
શાસ્ત્રસૂત્રે વર્ણિતાનિ, જિજ્ઞાસુમિસ્તત એવ બોધ્યાનીતિ ॥ સૂ. ૩૧ ॥

એતાઃ કૃષ્ણાગ્રમહિષ્યઃ પજ્ઞાવત્યાદયો વીર્યાંત્ સિદ્ધાઃ વીર્યાણિ ચ વીર્યપ્રવાદ-
પૂર્વેઽભિધીયન્તે । અતો વીર્યપ્રવાદપૂર્વસ્વરૂપં પ્રતિપાદયતિ—

મૂલમ્—વીરિયપુન્વસ્સ ણં અટ્ટ વત્થૂ અટ્ટ ચૂલિયાવત્થૂ ॥ સૂ. ૪૦ ॥

છાયા—વીર્યપૂર્વસ્ય ચલુ અટ્ટી વસ્તુનિ અટ્ટ ચૂલિકાવસ્તુનિ ॥ સૂ. ૪૦ ॥

ટીકા—‘ વીરિયપુન્વસ્સ ણં ’ ઇત્યાદિ—

વીર્યપ્રવાદનામકસ્ય તૃતીયપૂર્વસ્ય વસ્તુનિ=અધ્યયનવિશેષા અટ્ટો ભવન્તિ ।
યયા-આચારાજ્ઞે શાસ્ત્રપરિજ્ઞાદીન્યધ્યયનાનિ તથા લઘુપ્રાયશ્ચિત્ત-ગુરુપ્રાયશ્ચિત્તા-

સંગ્રહ હુઆ હૈ, બુદ્ધ શબ્દકા અર્થ વિમલ કેવલજ્ઞાન રૂપ આલોકસે
સકલ લોક ઓર અલોકકા જાનના હૈ, મુક્ત શબ્દકા અર્થ સકલ
કર્મોસે રહિત હોના હૈ પરિનિર્વૃત શબ્દકા અર્થ સમસ્ત કાર્યકૃત વિકા-
રસે રહિત હોકર સ્વસ્થીભૂત હોના હૈ, સર્વ દુઃખ પ્રહીણ શબ્દકા અર્થ સમસ્ત
ક્લેશોંકા અન્તકર દેના હૈ, જન રાણિયોંકા ચારિત્ર અન્તકૃદશાસ્ત્ર સૂત્રમેં
વર્ણિત હૈ અત એવ જિજ્ઞાસુજનોંકો વહીંસે જાન લેના ચાહિયે । સૂ. ૩૧ ।

એ કૃષ્ણકી અગ્રમહિષિયાં વીર્યસે સિદ્ધ હુઈ હૈં, વીર્યકા વર્ણન વીર્ય
પ્રવાદ પૂર્વમેં કિયા ગયા હૈ, ઇસલિયે અબ સૂત્રકાર વીર્યપ્રવાદપૂર્વકા
સ્વરૂપ કહતે હૈં—“ વીરિયપુન્વસ્સ ણં અટ્ટ વત્થૂ ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—વીર્યપ્રવાદ નામક તૃતીય પૂર્વકી મૂલ વસ્તુએ—અધ્યયન

વડે સકલ લોક અને અલોકને જાણનાર. મુક્ત એટલે સમસ્ત કર્મોથી રહિત
થયેલો એવ. પરિનિર્વૃત એટલે કર્મકૃત વિકારોથી રહિત બનીને સ્વસ્થી ભૂત
(શીતલીભૂત-સમસ્ત પરિતાપોથી છૂટિ જવું) સર્વદુઃખ પ્રહીણ એટલે
સઘળા કલેશોને અન્ત કરનાર. આ આઠેના ચરિત્રનું વર્ણન અન્તકૃદશાસ્ત્રમાં
વર્ણવેલું છે, તે જિજ્ઞાસુઓએ તે શાસ્ત્રમાંથી તે વાંચી લેવું. ॥ સૂ. ૩૬ ॥

કૃષ્ણવાસુદેવની તે અગ્રમહિષીઓ પોતાના વીર્યના પ્રમાવથી સિદ્ધ પદ
પામી હતી. વીર્યપ્રવાહપૂર્વમાં વીર્યનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે, તેથી હવે
સૂત્રકાર વીર્યપ્રવાહ પૂર્વના સ્વરૂપનું વર્ણન કરે છે—

“ વીરિયપુન્વસ્સ ણં અટ્ટ વત્થૂ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—વીર્યપ્રવાહ નામના ત્રીજા પૂર્વની મૂલ વસ્તુઓ-અધ્યયન વિશેષો આઠ

રોપણા-પ્રાયશ્ચિત્તરૂપાણિ આચારાગ્રાણિ ભવન્તિ, તથૈવાત્રાપિ વસ્તૂનિ ચૂલિકા
વસ્તૂનિ ચ બોધ્યાનીતિ ॥ સૂ. ૪૦ ॥

વસ્તુવીર્યદેવ ગતિર્ભવતીતિ ગતિમષ્ટવિધત્વેનાદ -

મૂલમ્--અટ્ટગૃહો પપ્પણત્તાઓ, તંજહા--નિરયગર્હ ૧, તિરિય-
ગર્હ ૨, મણુયગર્હ ૩ દેવગર્હ ૪ સિદ્ધિગર્હ ૫, ગુરુગર્હ ૬, પળો-
લ્લળગર્હ ૭, પબ્મારગર્હ ૮ ॥ સૂ. ૪૧ ॥

છાયા-અષ્ટ ગતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથયા-નિરયગતિઃ ૧, તિર્યગગતિઃ ૨, મનુજગતિઃ ૩,
દેવગતિઃ ૪, સિદ્ધિગતિઃ ૫, ગુરુગતિઃ ૬, પ્રણોદનગતિ ૭, પ્રાગ્મારગતિઃ ૮ ॥ સૂ. ૩૫ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટ ગર્હો ’ इत्यादि—

ગતયઃ=ગમનક્રિયાઃ અષ્ટ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથયા-નિરયગતિઃ-નરકે ગમનં ૧,
તિર્યગગતિઃ-તિરશ્ચિ=તિર્યગ્યોનો ગમનમ્ ૨, મનુજગતિઃ=મનુષ્યયોનો ગમનમ્ ૩,

વિશેષ આઠ હૈં ઓર ચૂલિકા વસ્તુઈં મી આઠ હૈં । જિસ પ્રકારસે આચા-
રાંગ સૂત્રમૈં પરિજ્ઞા આદિ અધ્યયન હૈ, તથા લઘુ પ્રાયશ્ચિત્ત, ગુરુ
પ્રાયશ્ચિત્ત એવં આરોપણા પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપ આચારાગ્રા હૈં, ઇસી પ્રકારસે
યહાં પરમી વસ્તુઈં એવં ચૂલિકા વસ્તુઈં હૈં એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ. ૪૦ ॥

વસ્તુ વીર્યસેહી ગતિ હોની હૈ, હસલિયે અપ સૂત્રકાર આઠ ભેદ
રૂપસે ગતિકા વર્ણન કરતે હૈં--“ અટ્ટ ગૃહો પપ્પણત્તાઓ ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ--ગમન ક્રિયા રૂપ ગતિયાં આઠ કહી ગઈ હૈં-જૈસે-નિરય
ગતિ ૧, તિર્યગગતિ ૨, મનુજગતિ ૩, દેવગતિ ૪, સિદ્ધિગતિ ૫,
ગુરુગતિ ૬, પ્રણોદનગતિ ૭, ઓર પ્રાગ્માર ગતિ ૮ નરકમૈં જાના
હસકા નામ નિરય ગતિ હૈ, તિર્યગ્ ચ યોનિમૈં જાના હસકા નામ તિર્ય-

છે, અને ચૂલિકા વસ્તુઓ પણ આઠ છે, જેવી રીતે આચારાંગ સૂત્રમાં પરિજ્ઞા
આદિ અધ્યયન છે તથા લઘુ પ્રાયશ્ચિત્ત ગુરુપ્રાયશ્ચિત્ત અને આરોપણા પ્રાય-
શ્ચિત્ત રૂપ આચારાગ્રા છે, એજ પ્રમાણે અહીં પણ વસ્તુઓ અને ચૂલિકા વસ્તુઓ
અને ચૂલિકાઓ છે એમ સમજવું. ॥ સૂ. ૪૦ ॥

તિર્યગ્ રૂપ વસ્તુ વડે જ ગતિ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આઠ ભેદ-રૂપે
ગતિનું વર્ણન કરે છે--“ અટ્ટ ગૃહો પપ્પણત્તાઓ ” इत्यादि--(સૂ. ૩૫)

ટીકાર્થ--ગમનક્રિયા રૂપ ગતિઓ આઠ કહી છે--(૧) નિરયગતિ, (૨) તિર્યગ્ગતિ,
(૩) મનુજગતિ, (૪) દેવગતિ, (૫) સિદ્ધિગતિ, (૬) ગુરુગતિ, (૭) પ્રણોદનગતિ
અને (૮) પ્રાગ્મારગતિ. નરકમાં જવું તેનું નામ નિરયગતિ છે. તિર્યગ્માં જવું

देवगतिः=देवयोनौ गमनम् ४, सिद्धिगतिः—सिद्धौ गतिः सिद्धिगत्यां गमनमित्यर्थः ५,
गुरुगतिः—गुरुशब्दो भावपरः, ततश्च गुरुणा—गौरवेण=ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्स्वभावेन या
परमाण्वादीनां स्वभावतो गतिः सा गुरुगतिः ६, प्रणोदनगतिः—प्रणोदनेन=प्रेरणेन
या गतिः सा, यथा बाणादीनाम् ७ तथा—प्राग्भारगतिः—प्राग्भारेण=ईषदवनत्या या
गतिः सा । यथा—द्रव्यान्तराक्रान्तस्य नावादेः ॥ सू० ४१ ॥

गतिप्रस्तावाद् गतिभङ्गादिनद्यधिष्ठात्रीणां देवीनां द्वीपस्वरूपमाह—

मूलम्—गंगा सिंधु रक्ता रक्तवर्द्ध देवाणां दीवा अट्ट अट्ट

जोयणाइं आयामविक्खंभेणं पणत्ता ॥ सू० ४२ ॥

छाया—गङ्गा सिन्धुः रक्ता रक्तवती देवीनां द्वीपा अष्टाष्टयोजनानि
आयामविक्खंभेण प्रज्ञप्ताः ॥ सू० ४२ ॥

टीका—‘गंगा सिंधु’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा । नवरं—गङ्गादयो भरतैरवतनयः । एतत्समो न नामान एव
गति है, मनुष्य योनिमें जाना इसका नाम मनुष्य गति है, देवयोनिमें
जाना इसका नाम देवगति है, सिद्धिमें जाना इसका नाम सिद्धिगति
है, गुरु शब्द यहां भाव परक है अतः ऊर्ध्व, अधः तिर्यक्, स्वभावसे
जो परमाणु आदिकोंकी स्वभावतः गति होती है वह गुरु गति है ६,
प्रेरणासे जो गति होती है, वह प्रणोदन गति है जैसे बाण आदिकोंकी
गति ईषद् अवनतिसे जो गति हो ी वह प्राग्भार गति है, जैसे—
द्रव्यान्तरसे आक्रान्त नाव आदिक ॥ सूत्र ४१ ॥

गतिके प्रस्तावको लेकर अब प्रकार गतिवाली आदि नदियोंकी
अधिष्ठात्री देवियोंके द्वीपका स्वरूप कहते हैं—

तेनुं नाम तिर्यग्गति छे मनुष्ययोनिमां ज्वुं तेनुं नाम मनुजगति छे, देवयोनिमां
ज्वुं तेनुं नाम देवगति छे, सिद्धेमां ज्वुं तेनुं नाम सिद्धगति छे, गुरु शब्द
अधीं भावपरक छे, तेथी उर्ध्व, अधः तिर्यक् इये जे परमाणु आदिकेनी
स्वाभाविक गति थाय छे तेनुं नाम गुरुगति छे, प्रेरणा वडे जे गति थाय छे ते
गतिनुं नाम प्रणोदनगति छे, जेम के बाण आदिकेनी गति धषद् अवनति
द्वारा जे गति थय छे ते गतिनुं नाम प्राग्भार गति छे, जेम के द्रव्यान्तरथी
आक्रान्त नाव (डोडी) आदिनी गति ॥ सू ४२ ॥

गति विषयक सूत्रनुं कथन करीने डेवे सूत्रकार गतिवाणी नदीओनी
अधिष्ठात्री देवीओना निवासस्थान इय द्वीपोना स्वइपनुं कथन करे छे

તદધિષ્ઠાત્ર્યો દેવ્યઃ । આસાં નિવાસદ્વીપા ગઙ્ગા પ્રપાતાદિકુણ્ડમધ્યવર્તિનો
બોધ્યા इति ॥ સૂ. ૪૨ ॥

દ્વીપાધિકારાદન્તરદ્વીપાનાદ—

મૂલમ્—ઉકામુહમેહમુહવિજ્જુમુહવિજ્જુદંત દીવા ણ

અટ્ટઠ જોયણસયાઈ આયામવિક્કમ્મેણં પણ્ણત્તા ॥ સૂ. ૪૩ ॥

છાયા—ઉલ્કામુલ્ક-મેઘમુલ્ક-વિદ્યુન્મુલ્ક-વિદ્યુદન્ત દ્વીપાઃ સ્વલ્પ દ્વીપા અષ્ટાષ્ટ
યોજનશતાનિ આયામવિક્કમ્મેણ પ્રજ્ઞાતાઃ ॥ સૂ. ૪૩ ॥

ટીકા—‘ ઉકામુહ ’ इत्यादि—

હિમવતઃ શિખરિણશ્ચ વર્ષધરપર્વતસ્ય પૂર્વયોરપરયોશ્ચ દંષ્ટ્રયોઃ પ્રત્યેક
દંષ્ટ્રાયાં સ્થિતેષુ સપ્તસુ સપ્તસ્વન્તરદ્વીપેષુ પષ્ટત્વેન પ્રથિતાનામ્ ઉલ્કામુલ્કદ્વીપ—

“ ગંગા સિંધુ રક્તા રક્તવર્હ દેવાણ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—ગંગા, સિન્ધુ, રક્તા એવં રક્તવતી દેવિયોંકે દ્વીપ આયામ
ઔર વિક્કમ્મસે આઠ ૨ યોજનકે કહે ગયે હૈં યે ગંગા આદિક નદિયાં
અરત પેરવતકી નદિયાં હૈં જૈસે इन नदियोंके नाम हૈં હસી તરહકે
નામ इनकी अधिष्ठात्री देवियोंके हૈં । इनके निवास द्वीप प्रपात आदि
कुण्डके मध्यमें हૈं ॥ સૂત્ર ૪૨ ॥

અવ સૂત્રકાર દ્વીપાધિકારકો લેકર અન્તરદ્વીપોંકા કથન કરતે હૈં—

“ ઉકામુહમેહમુહ વિજ્જુમુહ ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—હિમપાત્ પર્વત એવં શિખરી પર્વતકી પૂર્વ અપર દંષ્ટ્રામેંસે પ્રત્યેક
દંષ્ટ્રામેં સ્થિત સાત ૨ અન્તર દ્વીપોમેં છઠે રૂપસે પ્રસિદ્ધ ઉલ્કામુલ્ક દ્વીપ

“ ગંગા સિંધુ રક્તા રક્તવર્હ દેવાણ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—ગંગા સિંધુ, રક્તા અને રક્તવતી આ આરે દેવીઓના નિવાસ સ્થાન
રૂપ દ્વીપોનો આયામ અને વિક્કમ્મ આઠ આઠ યોજનનો કહ્યો છે. ગંગા આદિ
નદીઓ ભરત અને ઔરવત ક્ષેત્રની નદીઓ છે. તે નદીઓનાં જેવાં નામે છે
એવાં જ તેમની અધિષ્ઠાત્રી દેવીઓનાં નામે છે, તેમના નિવાસદ્વીપ પ્રપાત
આદિ કુંડની મધ્યમાં છે ॥ સૂ. ૪૨ ॥

આગલા સૂત્રમાં દ્વીપોનું વર્ણન કર્યું. હવે સૂત્રકાર અન્તરદ્વીપોનું
વર્ણન કરે છે—“ ઉકામુહમેહમુહવિજ્જુમુહ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—હિમવાન્ પર્વત અને શિખરી પર્વતની પૂર્વ અપર દંષ્ટ્રાઓમાંની પ્રત્યેક
દંષ્ટ્રામાં સ્થિત સાત સાત અન્તર દ્વીપોમાં છઠ્ઠા રૂપે પ્રસિદ્ધ ઉલ્કામુલ્ક દ્વીપ,

મેઘમુખદ્વીપ-વિદ્યુન્મુખદ્વીપ-વિદ્યુદન્તદ્વીપ નામકાનાં દ્વીપાનાં પ્રત્યેકદ્વીપઃ
આયામવિષ્કમ્ભમાનેન અષ્ટાષ્ટ શતયોજનપ્રમાણઃ પ્રજ્ઞપ્ત ઇતિ ॥ સૂ. ૪૩ ॥

દ્વીપાધિકારાદેવ દ્વીપપરિભ્રમ્ય કાલોદસમુદ્રસ્ય માનમાખ્યાતુમાહ—
મૂલમ્—કાલોર્ણ ણં સમુદ્રે અટ્ટ જોયણસયસહસ્સાઈં ચક્ર-
વાલવિક્ષ્વમેણં પપ્પણત્તે ॥ સૂ. ૪૪ ॥

છાયા—કાલોદઃ સમુદ્રઃ અષ્ટૌ યોજનશતસહસ્રાણિ ચક્રવાલવિક્ષ્વમેણ
પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥ સૂ. ૪૪ ॥

ટીકા—‘કાલોર્ણ ણં’ ઇત્યાદિ—

કાલોદનામા સમુદ્રઃ સ્વલ્પ અષ્ટૌ યોજનશતસહસ્રાણિ=અષ્ટ લક્ષ યોજનાનિ
ચક્રવાલવિક્ષ્વમેણ=ચક્રવદ્ ગોલાકારેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥ સૂ. ૪૪ ॥

દ્વીપાધિકારાત્ પુષ્કરાદ્વદ્વીપમાનમાહ—

મૂલમ્—અબ્મંતરપુષ્કરદ્વે ણં અટ્ટજોયણસયસહસ્સાઈં ચક્ર-
વાલવિક્ષ્વમેણં પપ્પણત્તે । એવં બાહિરપુષ્કરદ્વેવિ ॥ સૂ. ૪૫ ॥

મેઘમુખ દ્વીપ, વિદ્યુન્મુખ દ્વીપ ઓર વિદ્યુદન્ત દ્વીપ इन દ્વીપોંકે બીચમેં
જો પ્રત્યેક દ્વીપ હૈ વહ આયામ એવં વિષ્કમ્ભસે ૮૦૦ સૌ ૮૦૦ સૌ
યોજન પ્રમાણકા હૈ ॥ સૂ. ૪૩ ॥

દ્વીપાધિકારકો લેકર હી દ્વીપકી પરિભ્રમ્ય જો કાલોદસમુદ્ર
હૈ ઉસકા પ્રમાણ હસ પ્રકારસે હૈ ।

“કાલોર્ણ સમુદ્રે અટ્ટજોયણ” ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—કાલોદ સમુદ્ર ચક્રવાલવિક્ષ્વમેણની અપેક્ષા આઠ લાખ
યોજનકા કહા ગયા હૈ, ચક્રવાલવિક્ષ્વમેણકા તાત્પર્ય હૈ ચક્રકી તરહ
ગોલાકાર વિસ્તારકો ચક્રવાલ કહા જાતા હૈ ॥ સૂ. ૪૪ ॥

મેઘમુખદ્વીપ, વિદ્યુન્મુખ દ્વીપ અને વિદ્યુદન્ત દ્વીપ નામના પ્રત્યેક દ્વીપનો
આયામ અને વિષ્કંભ ૮૦૦-૮૦૦ યોજન પ્રમાણ કહ્યો છે. ॥ સૂ. ૪૩ ॥

દ્વીપોનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દ્વીપોની પરિભ્ર-
મ્ય (ચારે બાજુ વિસ્તીર્ણ) કાલોદસમુદ્રના પ્રમાણનું કથન કરે છે.

“કાલોર્ણ સમુદ્રે અટ્ટ જોયણ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—કાલોદસમુદ્રના ચક્રવાલ વિષ્કંભ આઠ લાખ યોજનનો કહ્યો છે. ચક્રના
બેવો ગોલાકાર વિસ્તારને ચક્રવાલ કહેવામાં આવે છે. ॥ સૂ. ૪૪ ॥

છાયા—અભ્યંતરપુષ્કાર્દ્ધં સ્વલુ અષ્ટૌ યોજનશતપદસ્રાણિ ચક્રવાલ-
વિષ્કમ્ભેગ પ્રજ્ઞસમ્ । एवं वाह्य करार्द्धमपि ॥ सू० ४५ ॥

ટીકા—‘અભ્યંતર પુષ્કલરદ્ધેણ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ સૂ० ૪૫ ॥

પુષ્કાર્દ્ધં ચ ચક્રવર્તિનોઽપિ મન્વતીતિ તદ્રત્નવિશેષમ્ અષ્ટસ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્—एगमेगस्स णं रत्नो चाउरंतचक्रवट्टिस्स अट्ट
सौवर्णिण ए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसि ए अट्टकाणि ए
अधिकरणि संठि ए ॥ सू० ४६ ॥

છાયા—एकैकस्य स्वलु राज्ञ आतुरन्तचक्रवर्त्तिनः अष्ट सौवर्णिकं काकिणी
रत्नं पद् तलं द्वादशाक्षिकम् अष्ट कर्गिकम् अधिकरणो संस्थितम् ॥ सू० ४६ ॥

ટીકા—‘एगमेगस्स णं’ ઇત્યાદિ—

एकैकस्य स्वलु राज्ञश्चातुरन्तचक्रवर्त्तिनः काकिणीरत्नम् अष्ट सौवर्णि-

द्वीपके अधिकारको लेकर अब सूत्रकार पुष्करार्ध द्वीपके प्रमाणका
कथन करते हैं—“अभ्यंतरपुष्कलरद्वेण” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—અભ્યંતર પુષ્કાર્ધ ચક્રવાલ વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા આઠ
યોજનકા કહા ગયાહૈ । इसी तरहसे बाह्य पुष्करार्धका भी चक्रवाल
विष्कम્भकी अपेक्षा आठ लाख प्रमाण जानना चाहिये ॥ सूत्र ४५ ॥

પુષ્કાર્દ્ધમે ચક્રવર્તીં ભીં હોતે હૈં, અતઃ અવ સૂત્રકાર હસકે
રત્ન વિશેષકા આઠ સ્થાનોંસે કથન કરતે હૈં—

“एगमेगस्स णं रत्नो चाउरंतचक्रवट्टिस्स” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—एक एक चातुरन्तचक्रवर्ती राजाका काकिणी रत्न

द्वीपाना अधिकार वाली रह्यो छे, तेथी सूत्रकार पुष्करार्ध द्वीपना
प्रमाणनुं कथन करे छे—“अभ्यंतरपुष्कलरद्वेण” इत्यादि—

ટીકાર્થ—અભ્યંતર પુષ્કાર્ધ ચક્રવાલ વિષ્કમ્ભની અપેક્ષાએ આઠ લાખ યોજન
પ્રમાણુ છે. એજ પ્રમાણુ બાહ્ય પુષ્કાર્ધનો ચક્રવાલ વિષ્કમ્ભે પણ આઠ લાખ
યોજનનો સમજવો. ॥ સૂ. ૪૫ ॥

પુષ્કાર્ધમાં ચક્રવર્તીઓ પણ હોય છે. તેમના કાકિણી નામના રત્ન વિશે-
યોનું હવે સૂત્રકાર કથન કરે છે—

“एगमेगस्स णं रत्नो चाउरंत चक्रवट्टिस्स” इत्यादि—

ટીકાર્થ—प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजानुं ककिली रत्न आठ सुवर्णुं प्रमाणु

કમ્-અષ્ટ સુવર્ણમાનમ્ પદ્મ તલમ્-પદ્મ તલા=મધ્યભાગા यस્ય તત્તથા-પદ્મ તલ
યુક્તઃ દ્વાદશાસ્રિકમ્=દ્વાદશ અસ્રયઃ=કોણા यस્ય તત્તથા-દ્વાદશકોણયુક્તમ્,
અષ્ટકર્ણિકમ્-અષ્ટૌ કર્ણિકાઃ=કોણવિભાગા यस્ય તત્તથા, કોણાષ્ટવિભાગો-
પેતમ્, અધિકરણે સંસ્થિતમ્-અધિકરણી=' ઇરણ ' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધં સુવર્ણ-
કારોપકરણં, તદ્વત્ સંસ્થિતમ્=અધિકરણી સંસ્થાનેન સંસ્થિતં ચ પ્રજ્ઞમ્=અભિહિતં
જિનૈરિતિ । સુવર્ણમાનંત્વેન વિજ્ઞેયમ્, તથાદિ-વત્વારિ મધુરતુળફલાન્યેકઃ
શ્વેતસર્પપઃ, પોડશશ્વેત સર્પપા એકં ધાન્યમાષફલમ્ દ્વે ધાન્યમાષફલે એકા
ગુજ્ઞા, પશ્ચ ગુજ્ઞાઃ-એકઃ કર્મમાષકઃ, પોડશકર્મમાષા એકં સુવર્ણમિતિ ।
एतानि मधुरतुलफलादीनि मानानि भरतचक्रवर्तिकालिकानि विज्ञेयानि,
सर्वेषां चक्रवर्तिनां काकिणीरत्नस्य तुल्यमानत्वात् । अत्र ' एगमेगस्स ' इति

વજનમેં આઠ સુવર્ણ પ્રમાણ હોતા હૈ ૬ તલોંવાલા હોતા હૈ, ૧૨ કોનોં
વાલા હોતા હૈ ૮ કોનોંકે વિભાગોંવાલા હોતા હૈ, ઓર જૈસા આકાર
અધિકરણી-ઇરણકા હોતા હૈ વૈસા આકારવાલા હોતા હૈ, સુવર્ણકા
પ્રમાણ હમ પ્રકારસે કહા ગયા હૈ-ચાર મધુર તુળ ફલોંકા એક શ્વેત
સર્પપ-સરસોંકા એક દાના હોતા હૈ ૧૬ શ્વેત સર્પપોંકા એક ધાન્યમાષ
ફલ હોતા હૈ, દો ધાન્યમાષક ફલોંકી એક ગુજ્ઞા-રત્ની હોતી હૈ, ૫
રત્નિયોંકા એક કર્મમાષક હોના હૈ, એવં ૧૬ કર્મમાષકોંકા એક સુવર્ણ
હોતા હૈ, એ મધુર તુળ ફલાદિ રૂપ જો પ્રમાણ યહાં પ્રકટ કિયે ગયે
હૈ વે ભરત ચક્રવર્તીકે જમાનેકે લેના ચાહિયે ક્યોંકિ સમસ્ત ચક્ર-
વર્તિયોંકા જો કાકિણી રત્ન હોના હૈ, ઉસકા પ્રમાણ એક સા હોતા હૈ,
યહાં પર " એગમેગસ્સ " એસા જો પદ કહા ગયા હૈ, વહ હસ વાતકો

વજનનું હોય છે. તે રત્નને ૬ સપાટી હોય છે, ૧૨ ખૂણા હોય છે અને ૮ ખૂણાના
વિભાગો હોય છે તેનો આકાર અધિકરણી (એકલુ) ના જેવો હોય છે. સુવર્ણ
પ્રમાણ વજનનો અર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે-ચાર મધુર તુળફલોંનું વજન
સરસવના એક સફેદ દાણા જેટલું થાય છે ૧૬ સોળ સરસવના દાણાનું વજન
એક ધાન્યમાષ ફલ (અંકદના દાણા) જેટલું બે ધાન્યમાષ ફલોની એક રતી
(ચણાઈ થાય છે) ૫ રતીનો એક કર્મમાષક (વાલ) થાય છે અને ૧૬
કર્મમાષકોનો એક સુવર્ણ થાય છે આ મધુરતુળફલાદિ રૂપ જે પ્રમાણ અહીં
પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે, તે પ્રમાણ ભરત ચક્રવર્તીના જમાનામાં પ્રચલિત હતું.
સમસ્ત ચક્રવર્તીઓના કાકિણી રત્નોનું પ્રમાણ ઉપર દર્શાવ્યા પ્રમાણે જ હોય
છે. " એગમેગસ્સ " આ પદ દ્વારા એજ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે સમસ્ત

પદં સર્વેષાં ચક્રવર્તિનાં કાકિણીરત્નં ભવતીતિ સૂચનાર્થમ્ । ‘રત્નો’ ઇતિ પદં મૂર્ધાભિષિક્તત્વબોધનાર્થમ્ । ‘ચાતુરંત-ચક્રવદ્દિસ’ ઇતિ પદં પદ્મચંદ્રમાર-તાદિક્ષેત્રાધિપતિત્વમૂચનાર્થમિતિ ॥ સૂ. ૪૬ ॥

इदं च काकिणीरत्नं चतुरङ्गुलप्रमाणं । चतुरंगुलपमाणा सुवर्णवरकागिणी ज्ञेया’ इति वचनात् । तथा योजनमानमपि अङ्गुलप्रमाणेनैव निष्पद्यते, अतो-ऽङ्गुलप्रमाणनिष्पन्नं योजनमानमाह—

मूलम्—मागहस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणु सहस्साइं णिहत्ते
पणणत्ते ॥ सू. ४७ ॥

छाया—मागधस्य खलु योजनस्य अष्ट धनुसहस्राणि निधत्तं मङ्गलम्
॥ सू. ४७ ॥

સૂચિત કરનેકે લિયે કહા ગયા હૈ કિ સમસ્ત ચક્રવર્તિયોકે કાકિણી રત્ન હોતા હૈ “ રત્નો ” યહ પદ યહ પ્રકટ કરતા હૈ કિ મૂર્ધાભિષિક્ત રાજા હોતે હૈ । “ ચાતુરંતચક્રવદ્દિસ ” યહ પદ યહ પ્રકટ કરતા હૈ કિ જો ચક્રવર્તી હોતા હૈ, વદ ભરતાદિ ક્ષેત્રોંકા પૂર્ણ અધિપતિ હોતા હૈ, અર્થાત્ છ ચંદ્રકે નાથ હોતે હૈ ॥ સૂ. ૪૬ ॥

यह काकिणी रत्न चार अङ्गुल प्रमाणका होता है—जैसा कि “चतुरंगुलपमाणा सुवर्णवरकागिणी ज्ञेया” यह कहा गया है, तथा योजनका प्रमाण भी अङ्गुलके प्रमाणसे बनता है, अतः अब सूत्र-कार अङ्गुलके प्रमाणसे निष्पन्न हुए योजनके प्रमाणको प्रकट करते हैं।

ચક્રવર્તીઓની કાકિણી રત્નનું પ્રમાણ એક સરખું હોય છે, અને પ્રત્યેક ચક્રવર્તી પાસે કાકિણી રત્ન અવશ્ય હોય છે. “ રત્નો ” આ પદ એ વાત સૂચિત કરે છે કે મસ્તક પર સુક્રૂટ ધારણ કરનાર સામાન્ય રાજા તો ઘણા હોય છે—તેમની પાસે કાકિણી રત્ન હોતું નથી, પણ “ચાતુરંત ચક્રવદ્દિસ” ચાતુરંત ચક્રવર્તી પાસે જ તે રત્ન હોય છે. ચક્રવર્તી રાજા તો ભરતાદિ ક્ષેત્રોનો સર્વોપરી શાસક હોય છે. એટલે છ ખંડોનો અધિપતિ હોય છે. ॥ સૂ. ૪૬ ॥

ઉપરના સૂત્રમાં જે કાકિણી રત્નની વાત કરી તે ચાર આંગળ-પ્રમાણ હોય છે. એજ વાત “ચતુરંગુલ પમાણા સુવર્ણવરકાગિણી જ્ઞેયા” આ સૂત્રમાં કહેવામાં આવી છે. ચોજનનું પ્રમાણ પણ આંગળના પ્રમાણ આધારે જ નક્કી થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આંગળલના પ્રમાણને આધારે નિષ્પન્ન થતાં ચોજન

ટીકા—‘ માગહસ્સ ણં ’ ઇત્યાદિ—

માગધસ્ય=મગધદેશભવસ્ય સ્વલુ યોજનસ્ય=અધ્વમાનવિશેષસ્ય અષ્ટ ધનુ-
સ્સહસ્રાણિ=અષ્ટસહસ્રસંખ્યકાનિ ધનૂર્ણિ નિધત્તં=નિકાચિતં નિશ્ચિતં પ્રમાણં
પ્રજ્ઞપ્તમિતિ । इदं च प्रमाणं परमाण्वादिना क्रमेण विज्ञेयम् ।

તદુક્તમ્—“ પરમાણૂ તસરેણૂ રહરેણૂ અગ્ગયં ચ વાલસ્સ ।

લિક્ખવા જૂયા ય જવો અટ્ટ ગુણવિવહિયા કમસો ॥૧॥”

છાયા—પરમાણુસસરેણૂ રથરેણુરગ્રંચ વાલસ્ય ।

લિક્ષા યુકા ચ યવોઽષ્ટગુણ વિવહિતાઃ ક્રમશઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

અયમર્થઃ—પરમાણુઃ=અનન્તાનન્તાનાં સૂક્ષ્મપરમાણૂનાં સમુદાયઃ । અયં ચૈકો-
વ્યાવહારિકઃ પરમાણુરિતિ ઋધ્વરેણ્વાદિ ભેદા અપિ અનેનૈવ સંગૃહીતા બોધ્યાઃ ।
સ પરમાણુરષ્ટભિર્ગુણિતસસરેણુઃ—ત્રસ્યતિ=ગચ્છતિ પૌરસ્ત્યાદિ વાયુપ્રેરિતો યઃ
સ ઇતિ । ત્રસરેણુરષ્ટગુણિતો રથરેણુઃ=રથગમનોત્ત્વાતો ભવતિ । રથરેણુરષ્ટ-
ગુણિત એકં વાલાગ્રં ભવતિ । અષ્ટૌ વાલાગ્રાણિ એકા લિક્ષા, અષ્ટૌ લિક્ષા એકા

“ માગહસ્સ ણં જોયણસ્સ અટ્ટ ધણુસહસ્સાઈ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—મગધ દેશકે યોજનકા પ્રમાણ આઠ હજાર ધનુષકા કહા ગયા
હૈ, यह प्रमाण परमाणु आदिके प्रमाण क्रमसे होता है—परमाणु आदिका
प्रमाण इस प्रकारसे है—“ परमाणू तसरेणू रहरेणू ” इत्यादि ।

અનન્તાનન્ત સૂક્ષ્મ પરમાણુઓંકા સમુદાય રૂપ એક પરમાણુ હોતા
હૈ, यह एक व्यावहारिक परमाणु है, ऊर्ध्वरेणु आदि भेद भी इसीसे
संगृहीत हो जाते हैं । आठ परमाणुओंसे गुणित एक त्रसरेणु होता
है, आठ गुणा त्रसरेणु एक रथरेणु होता है यह रथरेणु रथके चलनेसे
उत्त्वात होता है । अष्ट गुणित रथरेणुका एक वालाग्र होता है, आठ

પ્રમાણુનું નિરૂપણ કરે છે. ‘ માગહસ્સ ણં જોયણસ્સ અટ્ટ ધણુસહસ્સાઈ ’ ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—મગધ દેશના યોજનનું પ્રમાણ ૮૦૦૦ ધનુષનું ઠલું છે. તે પ્રમાણ
પરમાણુ આદિના પ્રમાણક્રમ વડે નક્કી થાય છે. પરમાણુ આદિનું પ્રમાણ
નીચે પ્રમાણે સમજવું.—“ પરમાણૂ તસરેણૂ ” ઇત્યાદિ—અનન્તાનન્ત સૂક્ષ્મ
પરમાણુઓના સમુદાય ૩૫ એક પરમાણુ હોય છે આ એક
વ્યાવહારિક પરમાણુ છે ઉર્ધ્વરેણુ આદિ ભેદ પણ તેના દ્વારા જ ગૃહીત થઇ
બને છે. આઠ પરમાણુઓનો એક ત્રસરેણુ થાય છે. એવા આઠ ત્રસરેણુનો એક
રથરેણુ બને છે. રથ આલતી વખતે જે ધૂળ ઊડે છે તેને રથરેણુ કહે છે. એવા
આઠ રથરેણુનો બાલાગ્ર હોય છે. આઠ બાલાગ્રોથી એક લિક્ષા (લીખ) થાય

યૂકા, અષ્ટૌ યૂકા એકો યવઃ, ઇતિ । તથા—અષ્ટૌ યવૌ એકમઙ્ગુલમ્ ચતુર્વિંશતિરઙ્ગુલાનિ એકો હસ્તઃ, ચત્વારો હસ્તા એકં ધનુઃ, દ્વિમહસ્રધનુંપિ એકં ગવ્યૂતમ્, ચત્વારિ ગવ્યૂતાનિ એકં યોજનમિતિ । ઇતિ માગધં યોજનમાનમ્ । માગધગ્રહ-
ણાત્ યસ્મિન્ દેશે પોઢશભિર્ધનુશ્ચતૈર્ગવ્યૂતં ભવતિ તત્ર ચતુઃશતાધિક પદ્મ
સહસ્રૈ (૬૪૦૦) ધનુભિરેકં યોજનં ભવતીતિ ॥ સૂ૦ ૪૭ ॥

યોજનપ્રસ્તાવાદષ્ટયોજનપ્રમાણાન્ જમ્બવમ્ભૃતીન્ નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—જંબૂ ણં સુદંસણા અટ્ટ જોયણાઈં ઉડ્ઢં ઉચ્ચત્તેણં
બહુમજ્જદેસમાણ અટ્ટ જોયણાઈં વિક્ખંભેણં, માતિરેગાઈં અટ્ટ-
જોયણાઈં સઠ્ઠગ્ગેણં પળ્લન્તા ૧। કૂડસાસલિઃ ણં અટ્ટ જોયણાઈં
एवं चैव २। तिमिसगुहा णं अट्ट जौयणाईं उड्ढं उच्चत्तेणं
एवं चैव ३। खंडप्पवायगुहा णं अट्ट जौयणाईं उड्ढं उच्चत्तेणं
एवं चैव ४ ॥ સૂ૦ ૪૮ ॥

બાલાગ્રોંકી એક લિક્ષા હોનીહૈ આઠ લિક્ષાઓંકી એક યૂકા (જૂં) હોતી હૈ
આઠ યૂકાઓંકા એક યવ હોતા હૈ, આઠ યવોંકા એક અંગુલ હોતા
હૈ ૨૪ અંગુલોંકા એક હાથ હોતા હૈ ચાર હાથકા એક ધનુષ હોતા હૈ,
દો હજાર ધનુષકા એક ગવ્યૂત કોશ હોતા હૈ, ઓર ચાર ગવ્યૂતોંકા
એક યોજન હોતા હૈ । એસા યહ માગધ દેશ પ્રસિદ્ધ યોજનકા પ્રમાણ હૈ ।
“માગધ” કે ગ્રહણસે જિસ દેશમેં ૧૬૦૦ સૌ ધનુષકા એક ગવ્યૂત હોતા
હૈ, વહાં ૬૪૦૦ ધનુષકા એક યોજન હોતા હૈ, એસા સમજના ચાહિયેસૂ૦ ૪૧।

યોજનકે પ્રસ્તાવકો લેકર અથ સૂત્રકાર ઓઠ યોજન પ્રમાણવાલે

છે અને આઠ લિક્ષાની એક યૂકા (જૂ) થાય છે. આઠ યૂકાઓ મળીને એક
યવ થાય છે. આઠ યવોનો એક આંગળ થાય છે ૨૪ આંગળનો ૧ હાથ થાય
છે અને ચાર હાથ મળીને એક ધનુષ થાય છે બે હજાર ધનુષનો એક કોશ
(ગવ્યૂત) થાય છે અને ચાર કોશનો એક યોજન બને છે. મગધ દેશમાં
યોજનનું આ પ્રકારનું પ્રમાણ ચાલે છે. “માગધ” આ પદ દ્વારા આ પ્રમાણ મગ-
ધમાં જ પ્રચલિત છે, એમ કહેવામાં આવ્યું છે. જે દેશમાં ૧૬૦૦ ધનુષનો એક
ગવ્યૂત (કોશ) થાય છે, તે દેશમાં ૬૪૦૦ ધનુષનો યોજન ગણવો જોઈએ ॥ સૂ. ૪૧ ॥
યોજનની પ્રમાણ કરવામાં આવી. હવે સૂત્રકાર આઠ યોજનના પ્રમાણ

છાયા—જમ્બૂ સ્વલુ સુદર્શના અષ્ટ યોજનાનિ ઋધ્વમ્ ઉચ્ચત્વેન, વહુમધ્ય-
દેશભાગે અષ્ટયોજનાનિ વિષ્કમ્ભેન, સાતિરેકાણિ અષ્ટ યોજનાનિ સર્વાગ્રેણ
પ્રજ્ઞપ્તા ૧। કૂટશાલ્મલી સ્વલુ અષ્ટ યોજનાનિ એવમેવ ૨। તિમિસ્રગુહા સ્વલુ અષ્ટ
યોજનાનિ ઋધ્વમુચ્ચત્વેન એવમેવ ૪ ॥સૂ ૦ ૪૮॥

ટીકા—‘ જંબૂ ણં ’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂઃ—જમ્બૂ નામકો વૃક્ષવિશેષઃ, તદાકારા સર્વ રત્નમયી યા સાડપિ જમ્બૂ
સ્વચ્ચતે, તદધિષ્ઠિતત્વાદેવાયં જમ્બૂદ્વીપોઽભિધીયતે, સે યં જમ્બૂઃ સુદર્શનાડપર-
નામ્ના વ્યવહ્રિયતે । અત્યાઃ સુદર્શનાયા જમ્બ્વાઃ સ્થિતિરેવં વિજ્ઞેયા, તથાહિ—
ઉત્તરકુરુણાં પૂર્વાર્ધે મહાનદ્યાઃ પૂર્વે પશ્ચશતયોજનાયામવિષ્કમ્ભસ્ય દ્વાદશયોજન
મધ્યભાગસ્ય ક્રમશઃ ઉચ્છાયપરિહાપ્યા પર્યન્તભાગે દ્વિગવ્યૂતોચ્છ્રિતસ્ય, દ્વિગ-
વ્યૂતોચ્છ્રિતાભિઃ પશ્ચશતધનુર્વિસ્તીર્ણાભિઃ પન્નવરવેદિકાભિઃ પરિક્ષિપ્તસ્ય,
જમ્બૂ આદિકોંકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

“ જંબૂ ણં સુદંસણા અટ્ટ જોયણાં ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જમ્બૂ યહ વૃક્ષ વિશેષકા નામ હૈં, હસકે આકારવાલી
જો સર્વ રત્નમયી પૃથિવી હૈ વહ ભી જમ્બૂ એસી કહી જાતી હૈ, હસ
જમ્બૂસે યુક્ત હોનેકે કારણ યહ દ્વીપ જમ્બૂદ્વીપ કહા ગયા હૈ, હસ
જમ્બૂ કી જિસકા દૂસરાં નામ સુદર્શના હૈ, સ્થિતિ હસ પ્રકારસે હૈ,
ઉત્તર કુરુકે પૂર્વાર્ધમેં સ્થિત શીતા મહાનદીકે પૂર્વમેં પાંચસૌ યોજનકે
આયામ વિષ્કમ્ભવાલી એક પીઠ હૈ। યહ પીઠ ૧૨ યોજનકે મધ્ય ભાગ-
વાલી હૈ એવં ક્રમશઃ ઉચ્છાયકી—ઝંચેપનેકી હીનતાસે પર્યન્ત ભાગમેં
દ્વિગવ્યૂતિ પ્રમાણ ઝંચીહૈં, તથા—યહ દ્વિગવ્યૂતિ પ્રમાણ ઝંચી એવં પાંચસૌ

વાળા જમ્બૂ આદિકાનું નિરૂપણ કરે છે—

“ જંબૂ ણં સુદંસણા અટ્ટ જોયણાં ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ જંબૂ ’ આ નામનું એક વૃક્ષ થાય છે. તે જંબૂના આકારવાળી જે
સર્વરત્નમયી પૃથ્વી છે તેને પણ જંબૂ કહેવામાં આવે છે. આ જંબૂથી સુક્ત
જે દ્વીપ છે તે દ્વીપને જંબૂદ્વીપ કહે છે. આ જંબૂનું બીજું નામ સુદર્શના
છે. તેની સ્થિતિ આ પ્રમાણે છે—ઉત્તર કુરુના પૂર્વાર્ધમાં આવેલી શીતા મહા
નદીની પૂર્વે ૫૦૦ યોજનના આયામ અને વિષ્કંભવાળી એક પીઠ ૧૨ યોજનના
મધ્યભાગવાળી છે મધ્યભાગથી છેડા તરફ જતાં તેની ઉંચાઈ ક્રમશઃ ઘટતાં
ઘટતાં છેડાના ભાગમાં જે ગવ્યૂતિ (કોશ) પ્રમાણ થઈ જાય છે તે જે ગવ્યૂતિ
પ્રમાણ ઉંચાઈની અને ૫૦૦ ધનુષપ્રમાણ વિસ્તારવાળી એક પન્નવરવેદિકાથી

દ્વિગવ્યૂતોચ્છ્રિતૈઃ સચ્છત્રતોરણૈશ્ચતુર્દ્વારૈર્યુક્તસ્ય પીઠસ્ય મધ્યભાગે ચતુર્યોજનોચ્છ્રિતા
અષ્ટ યોજનાયામવિષ્કમ્ભા મણિપીઠિકા વ્યવસ્થિતા । તસ્યાં મણિપીઠિકાયાં દ્વાદ-
શવેદિકા ગુપ્તાં સુદર્શના જમ્બૂઃ પ્રતિષ્ઠિતા વોધ્યેતિ । સેયં સુદર્શનાજમ્બૂઃ અષ્ટ
યોજનાનિ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્વેન, વહુમધ્યદેશભાગે-શાખા વિસ્તારદેશે અષ્ટ યોજનાનિ
વિષ્કમ્ભેણ, તથા-સાતિરેકાણિ=અતિરેકયુક્તાનિ-ઉદ્વેધગવ્યૂતિદ્વયેનાધિકાનિ અષ્ટ
યોજનાનિ સર્વાગ્રેણ=સર્વપરિમાણેન પ્રજ્ઞપ્તેતિ । અત્ર પૂર્વાદિષુ ચત્તમૃષુ દિક્ષુ
ચતસ્રઃ શાખાઃ સન્તિ । તદ્વત્તવ્યતા અન્યતોઽવસેયેતિ । ૧। પચમેવ દેવકુરુપશ્ચિ-

ધનુષ પ્રમાણ એસી પદ્મવરવેદિકાસે પરિક્ષિતહૈ, તથા દ્વિગવ્યૂતિ પ્રમાણ
ઁચે એવં છત્ર તોરણ સહિત એસે ચાર દ્વારોસે યુક્ત હૈ । ઠીક હસ
પીઠકે મધ્ય ભાગમેં ચાર યોજન ઁંચી એક મણિપીઠિકા હૈ, હસકા
આયામ ઓર વિષ્કમ્ભ આઠ યોજનકા હૈ, હસ મણિપીઠિકાકે ડપર
યહ સુદર્શના જમ્બૂ વ્યવસ્થિત હૈ, યહ ૧૨ વેદિકાઓંસે સુરક્ષિત હૈ,
યહ સુદર્શના જમ્બૂ આઠ યોજનકા ઁંચા હૈ તથા શાખાઓંકે વિસ્તાર-
વાલે પ્રદેશમેં વહુ મધ્યદેશ ભાગમેં આઠ યોજનકા હૈ, તથા કુછ અધિક
આઠ યોજન સર્વાગ્રસે હૈ । સર્વાગ્રસે યહાં સર્વ પ્રમાણ લિયા ગયા હૈ,
અતઃ યહાં કુછ અધિકતા એસા જો કહા ગયા હૈ, વહ દો કોસકે
ઉદ્વેધ (ગહરાઈ-ઁંડાઈ) કી અપેક્ષાસે કહા ગયા હૈ, હસ તરહ યહ
જમ્બૂ સર્વ પ્રમાણકી અપેક્ષા દો કોસ સે અધિક આઠ યોજનકા
હૈ એસા વાચ્યાર્થ સમજના ચાહિયે । યહાં પૂર્વાદિ ચારોં દિશા-
ઓંમેં ચાર શાખાઈ હૈ । હનકી વત્તવ્યતા અન્ય શાસ્ત્રોંસે સમજ

પરિક્ષિત છે, તથા ગવ્યૂતિપ્રમાણ ઊંચા અને છત્રતોરણોથી યુક્ત ચાર દ્વારોથી
યુક્ત છે. તે પીઠના બરાબર મધ્ય ભાગમાં ચાર યોજન ઊંચી એક મણિપીઠિકા
છે. તેની લંબાઈ અને પહોળાઈ આઠ યોજનની છે. તે મણિપીઠિકાની ઉપર
આ સુદર્શના જંબૂ વ્યવસ્થિત (આવેલો) છે. તે બાર વેદિકાઓ વડે સુરક્ષિત
છે. આ સુદર્શના જંબૂ આઠ યોજન ઊંચો છે, તથા શાખાઓના વિસ્તરવાળા
પ્રદેશમાં બહુ મધ્ય દેશ ભાગમાં આઠ યોજનનો તેનો વિષ્કંભ છે, તથા સર્વાંગની
અપેક્ષાએ આઠ યોજન કરતાં સહે-અધિક પ્રમાણવાળો છે. 'સર્વાંગ' આ પદ
વડે અહીં સર્વપ્રમાણ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. બે ગવ્યૂતિપ્રમાણ ઉદ્વેધની
અપેક્ષાએ અહીં આ અધિકતા ગ્રહણ કરવામાં આવી છે. આ રીતે આ જંબૂ
સર્વપ્રમાણની અપેક્ષાએ આઠ યોજન કરતાં બે ગવ્યૂતિપ્રમાણ અધિક પ્રમાણ
વાળો છે. એવો વાચ્યાર્થ અહીં સમજવો જોઈએ. અહીં પૂર્વાદિ ચારે દિશાઓમાં
ચાર શાખાઓ છે. તેમની વત્તવ્યતા અન્ય ગ્રંથોમાંથી બાણી લેવી જોઈએ.

मार्द्धे स्थितस्य भवनपतिदेवविशेषसुवर्णकुमारावासस्य कूटशाल्मलिद्रुमस्यापि प्रमाणं बोध्यम् २। तिमिस्रगुहायाः खण्डप्रपातगुहायाश्चापि प्रमाणमेवमेव बोध्यम् ३-४ ॥ सू० ४८ ॥

एते पूर्वेक्ता जम्बूद्वीपादयः पदार्था जम्बूद्वीपे भवन्तीति जम्बूद्वीपाधिका-
रात्तदगतवस्तुनि प्ररूपयितुमाह--

मूलम्-जंबू मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महानईए उभओ कूले अट्ट वक्खारपव्वया पणत्ता, तं जहा-चित्त-
कूडे १, पम्हकूडे २, नलिणकूडे ३, एगसेले ४, तिकूडे ५, वेस-
मणकूडे ६, अंजणे ७, मायजंणे ८ ॥१॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं
सीयोयाए महानईए उभओ कूले अट्ट वक्खारपव्वया पणत्ता,
तंजहा-अंकावई १, पम्हावई २, आसीविसे ३ सुहावहे ४, चंद-
पव्वए ५, सूरपव्वए ६, णागपव्वए ७, देवपव्वए ८ ॥ २॥ जंबू
मंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महानईए उत्तरेणं अट्ट चक्खवट्ठिविजया
पणत्ता, तंजहा-कच्छे १, सुकच्छे २, महाकच्छे ३, कच्छगावई
४, आवत्ते ५, जाव पुक्खलावई ८ ॥८॥ जंबू मंदरपुरत्थिमेणं
सीयाए महानईए दाहिणेणं अट्ट चक्खवट्ठिविजया पणत्ता, तंजहा-
बच्छे १ सुवच्छे २, जाव मंगलावई ॥४॥ जंबू मंदरपच्चत्थिमेणं
सीयोदा महानईए दाहिणेणं अट्ट चक्खवट्ठिविजया पणत्ता तंजहा-
पम्हे १, जाव सलिलावई ८ ॥५॥ जंबू मंदर पच्चत्थिमेणं सीयो-

लेनी चाहिये इसी तरहसे देवकुरुके पश्चिमार्धमें स्थित जो कूटशाल्मलि
द्रुम है कि जो भवनपति देव विशेष सुवर्णकुमारका आवासभूत है,
उसका भी प्रमाण जानना चाहिये । तिमिस्र गुहाका और खण्ड प्रपात
गुहाका भी प्रमाण इसी तरहका समझना चाहिये ॥ सूत्र ४८ ॥

भवनपति देवविशेष सुवर्णकुमारना निवासस्थान इयं ये कूट शाल्मलि वृक्ष देव-
कुरुना पश्चिमार्धभां आवेष्टुं छे, तेनुं प्रमाणं पणु आ सुदर्शना ज'यूना प्रमाणं
सुज्जं ज' समज्जुं तिमिस्रगुहानुं अने अ'उप्रपातगुहानुं प्रमाणं पणु अट्टु'
ज' समज्जुं. ॥ सू. ४८ ॥

याए महानईए उत्तरेणं अट्ट चक्रवाट्टिविजया पणत्ता, तंजहा-
 वप्पे १, सुवप्पे २ जाव गंधिलावई ॥ ८॥६॥ जंबूमंदरपुरत्थि-
 मेणं सीयाए महानईए उत्तरेणं अट्ट रायहाणीओ पणत्ताओ,
 तंजहा-खेमा १, खेमपुरी २, चेव जाव पुंडरीगिणी ८ ॥७॥
 जंबू मंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महानईए दाहिणेणं अट्ट राय-
 हाणीओ पणत्ताओ, तं जहा-सुसीमा १, कुंडला २, चेव जाव
 रयणसंचया ८ ॥ ८ ॥ जंबू मंदरपच्चत्थिमेणं सी योयाए महा-
 नईए दाहिणेणं अट्ट रायहाणीओ पणत्ताओ, तं जहा-आस-
 पुरा १ जाव वीयसोगा ॥९॥ जंबू मंदरपच्चत्थिमेणं सीयोयाए
 महानईए उत्तरेणं अट्ट रायहाणीओ पणत्ताओ, तं जहा-विजया
 १, वेजयंती २ जाव अउज्झा ८ ॥ १० ॥ सू० ४९ ॥

छाया—जम्बू मन्दरस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये सीताया महानद्या उभयतः कूले
 अष्टौ वक्षस्कारपर्वताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—चित्रकूटः १, पक्ष्मकूटः २, नलिनकूटः
 ३, एकशैलः ४, त्रिकूटः ५, वैश्रमणकूटः ६, अज्जनः ७, मातृजनः ८ ॥ १ ॥
 जम्बू मन्दरपाश्चात्ये शीतोदाया महानद्या उभयतः कूले अष्टौ वक्षस्कारपर्वताः
 प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—अङ्गावती १, पक्ष्मावती २, आशीविपः ३, सुखावहः ४ चन्द्र-
 पर्वतः ५, सूरपर्वतः ६, नागपर्वतः ७, देवपर्वतः ८ ॥ २ ॥ जम्बूमन्दरपौरस्त्ये
 शीताया महानद्या उत्तरे अष्टौ चक्रवर्त्तिविजयाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—कच्छः १,
 सुकच्छः २, महाकच्छः ३, कच्छकावती ४, आवर्त्तः ५, यावत् पुष्कलावती ८
 ॥ ३ ॥ जम्बूमन्दर पौरस्त्ये शीताया महानद्याः दक्षिणे अष्टौ चक्रवर्त्तिविजयाः
 प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—वत्सः १, सुवत्सः २, यावत् मङ्गलावती ८ ॥ ४ ॥ जम्बू मन्दर
 पाश्चात्ये शीतोदा महानद्या दक्षिणे अष्टौ चक्रवर्त्तिविजयाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—
 पक्ष्मो १ यावत् सलिलावती ८ ॥ ५ ॥ जम्बू मन्दरपाश्चात्यार्द्धे शीतोदाया
 महानद्या उत्तरे अष्टौ चक्रवर्त्तिविजयाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—वप्रः १, सुवप्रो २,
 यावद् गन्धिलावती ८ ॥ ६ ॥ जम्बू मन्दरपौरस्त्ये शीताया महानद्या उत्तरे
 अष्टौ राजधान्यः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षेमा १, क्षेमपुरी २, चैव यावत् पुण्डरीकिणी
 ८ ॥ ७ ॥ जम्बू मन्दरपौरस्त्ये शीताया महानद्या दक्षिणे अष्टौ राजधान्यः प्रज्ञप्ताः,

તથા-સુધીમા ૧, કુણ્ડલા ૨, ચૈવ યાવદ રત્નસંચયા ૮ ॥ ૮ ॥ જમ્બૂ મન્દર-
પાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે અષ્ટૌ રાજધાન્ય પ્રજ્ઞપ્તા, તથા-અશ્વપુરી
૧, યાવત્ વીતશોકા ૮॥૯॥ જમ્બૂ મન્દરપાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે અષ્ટૌ
રાજધાન્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-વિજયા ૧, વૈજયન્તીરયાવત્ અયોધ્યા ૮॥૧૦॥ સુ ૦ ૪૩॥

ટીકા--‘ જંબૂ મંદરત્સ ’ इत्यादि—

વ્યાખ્યા સુગમા । નવરમ્-આઘમવાન્તરમૂત્રદ્વયં વક્ષસ્કારપર્વતવિષયકમ્ ।
તતશ્ચત્વાર્યન્તરમૂત્રાણિ ચક્રવર્તિ વિજયવિષયકાણિ । તત્ર કચ્છાદિઘટિતે પ્રથ-

યે પૂર્વોક્ત જમ્બૂવૃક્ષ આદિ પદાર્થ જમ્બૂદ્વીપમેં હૈં, હસલિયે અથ
સૂત્રકાર જમ્બૂદ્વીપકે અધિકારકો લેકર જમ્બૂદ્વીપગત અન્ય વસ્તુઓંકી
પ્રરૂપણા કરતે હૈં--“ જંબૂ મંદરત્સ પવ્વયસ્સ પુરત્થિમેળં સીયાં ૧ इत्यादि ।

ટીકાર્થ--જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકી પૂર્વ દિશામેં સીતા મહાનદીકે
દોનોં તટ પર આઠ વક્ષસ્કાર પર્વત કહે ગયે હૈં--જૈસે-ચિત્રકૂટ ૧, પદ્મ
કૂટ ૨, નલિન કૂટ ૩, એકશૈલ ૪, ત્રિકૂટ ૫, વૈશ્રમણકૂટ ૬, અન્જ ૭,
એવં માતઙ્ગન જમ્બૂમન્દરકે પાશ્ચાત્યમેં શીતોદા મહાનદીકે દોનોં તટ પર
આઠ વક્ષસ્કાર પર્વત કહે ગયે હૈં । જૈસે-અઙ્કાવતી ૧, પદ્માવતી ૨,
આશીવિષ ૩, સુખાવહ ૪, ચન્દ્ર પર્વત ૫, સૂર પર્વત ૬, નાગ પર્વત ૭
ઔર દેવ પર્વત ૮ જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકી પૂર્વદિશામેં શીતા
મહાનદીકે ઉત્તરમેં આઠ ચક્રવર્તિ વિજય કહે ગયે હૈં । ઉનકે નામ
હસ પ્રકારસે હૈં-કચ્છ ૧, સુકચ્છ ૨, મહાકચ્છ ૩, કચ્છકાવતી ૪,

પૂર્વોક્ત જંબૂવૃક્ષ આદિ પદાર્થ જંબૂદ્વીપમાં આવેલાં છે તેથી હવે સૂત્રકાર
જંબૂદ્વીપમાં આવેલી અન્ય વસ્તુઓંનું આઠ સ્થાનની અપેક્ષાએ કથન કરે છે--

“ જંબૂ મંદરત્સ પવ્વયસ્સ પુરત્થિમેળં સીયાં ૧ ” इत्यादि

ટીકાર્થ--જંબૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં શીતા મહાનદીના
બન્ને તટ પર આઠ વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે. (૧)
ચિત્રકૂટ, (૨) પદ્મકૂટ, (૩) નલિનકૂટ, (૪) એકશૈલ (૫) ત્રિકૂટ, (૬) વૈશ્રમણકૂટ,
(૭) અન્જન અને (૮) માતઙ્ગન. જંબૂદ્વીપમાં મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં
આવેલી શીતાદા મહાનદીના બન્ને તટ પર આઠ વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે.
તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે--(૧) અંકાવતી, (૨) પદ્માવતી, (૩) આશીવિષ,
(૪) સુખાવહ, (૫) ચન્દ્રપર્વત, (૬) સૂરપર્વત, (૭) નાગપર્વત અને (૮) દેવ-
પર્વત. જંબૂદ્વીપના મન્દરપર્વતની પૂર્વદિશામાં મહાનદીની ઉત્તરે આઠ ચક્રવર્તી
તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે--(૧) કચ્છ, (૨) સુકચ્છ, (૩) મહાકચ્છ, (૪) કચ્છ-

મેઽવાન્તરમૂત્રે યાવત્પદેન—“ મંગલાવતે, પુષ્કલે ” છાયા—મંગલાવતે: પુષ્કલ:—
 ઇતિ નામદ્વયં ગ્રાહ્યમ્ । વત્સાદિ ઘટિતે દ્વિતીયે—‘ મહાવન્દ્રે, વન્દ્રાવર્દે, રમ્મે,
 રમ્મણ, રમણિજ્જે’ છાયા—મહાવત્સો, વત્સકો, રમ્મો, રમ્મ્યકો, રમણીય:—ઇતિ પચ્ચ
 નામાનિ ગ્રાહ્યાણિ । પદ્માદિ ઘટિતે તૃતીયે—‘ સુપદ્મે, મહાપદ્મે, પદ્માવર્દે, સંસ્થે,
 નલિને, કુમુદે’ છાયા—સુપદ્મ:, મહાપદ્મ:, પદ્મવતી, શંખ:, નલિન: કુમુદ:—
 ઇતિ ષડ્ નામાનિ ગ્રાહ્યાણિ । વપ્રાદિ ઘટિતે—ચતુર્થેતુ—યાવત્પદેન—‘ મહાવપ્તે,
 વપ્પાવર્દે, વગ્નુ, સુવગ્નુ, ગંધિલે ’ છાયા—મહાવપ્ર:, વપ્રાવતી, વલ્ગુ, સુવલ્ગુ,
 ગન્ધિલ:—ઇતિ પચ્ચ નામાનિ ગ્રાહ્યાણિ । ઇતિ ।

આવર્ત ૫, યાવત્ પુષ્કલાવતી ૮ યહાં યાવત્ શબ્દસે મંગલાવર્તે ઓર
 પુષ્કલ યે દો ચક્રવર્તિ વિજય ગૃહીત હુએ હૈં । જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર
 પર્વતની દિશામેં શીતા મહાનદીની દક્ષિણ દિશામેં આઠ ચક્રવર્તિ
 વિજય કહે ગયે હૈં—उनके नाम इस प्रकारसे हैं—वत्स १, सुवत्स २,
 यावत् मङ्गलावती यहां यावत्पदसे महावत्स, वत्सक, रम्यक
 और रमणीय ये पांच चक्रवर्ति विजय गृहीत हुए हैं । जम्बूद्वीपस्थित
 मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें शीतोदा महानदीकी दक्षिण दिशामें
 आठ चक्रवर्ति विजय कहे गये हैं—वे ऐसे हैं—पद्म यावत् सलिलावती
 ८ यहां यावत्पदसे “ सुपद्म, महापद्म, पद्मवती, शंख, नलिन और
 कुमुद ” इन चक्रवर्ति विजयोंका ग्रहण है ५, जम्बूद्वीपस्थित मन्दर
 पर्वतकी पश्चिम दिशामें शीतोदा महानदीके उत्तरमें आठ चक्रवर्ति
 विजय कहे गये हैं—जैसे—वप्र, सुवप्र यावत् गन्धिलावती यहां यावत्
 पदसे “ महावप्र, वप्रावती वल्गु, सुवल्गु, गन्धिल ” इनका ग्रहण

કાવતી, (૫) આવર્ત, (૬) મંગલાવર્ત (૭) પુષ્કલ અને (૮) પુષ્કલાવતી.
 જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં આવેલી શીતા મહાનદીની
 દક્ષિણ દિશામાં આઠ ચક્રવર્તી વિજય આવેલાં છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે
 છે—(૧) વત્સ, (૨) સુવત્સ, (૩) મહાવત્સ, (૪) વત્સક, (૫) રમ્યક, (૬) રમણીય
 (૭) મંગલ હરી (મંગલ) અને (૮) મંગલાવતી. જમ્બૂદ્વીપ મન્દર પર્વતની
 પશ્ચિમ દિશામાં વહેતી શીતોદા મહાનદીની દક્ષિણ દિશામાં આઠ ચક્રવર્તી વિજય
 આવેલાં છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) પદ્મ, (૨) સુપદ્મ, (૩) મહા
 પદ્મ, (૪) પદ્મવતી, (૫) શંખ, (૬) નલિન, (૭) કુમુદ અને (૮) સલિલાવતી.
 જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં વહેતી શીતોદા મહાનદીની ઉત્તરે
 આઠ ચક્રવર્તી વિજય આવેલાં છે. તેમનાં નામો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) વપ્ર, (૨)
 સુવપ્ર, (૩) મહાવપ્ર, (૪) વપ્રાવતી, (૫) વલ્ગુ, (૬) સુવલ્ગુ, (૭) ગન્ધિલ અને

चक्रवर्त्तिविजयास्तु क्षेत्रविभागाः—येषु यान् वा चक्रवर्त्तिनो विजयन्त इति । ततश्चत्वार्ययान्तरमूत्राणि राजधानीविषयकाणि । तत्र क्षेमादि घटिते प्रथमेऽवान्तरमूत्रे यावत्पदेन—‘अरिष्टा, रिष्टावर्ई, खड्गी, मञ्जूषा, ऋषभपुरी—इति पञ्च नामानि ग्राह्याणि । सुषीमादि घटिते द्वितीये—‘अपराजिता, प्रहंकरा, अंकावर्ई, पद्मावर्ई, सुभा ’—छाया-अपराजिता, प्रमङ्गरा, अङ्गावती, पद्मावती, शुभा, इति पञ्च नामानि ग्राह्याणि । तथा—अश्वपुर्यादि घटिते तृतीये—‘सीहपुरा,—महापुरा, विजयपुरा, अवरानिया, अवरा, असोमा ’ छाया—सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता अवरा, अशोका,—इति पङ्क्ति नामानि ग्राह्याणि । विजयादि घटिते चतु-

हुआ है, जम्बूद्वीप स्थित मन्दर पर्वतकी पूर्व दिशामें शीता शीतामहानदीके उत्तरमें आठ राजधानियाँ कही गई हैं—जो इस प्रकारसे हैं—क्षेमा १, क्षेमपुरी २, यावत् पुण्डरीकिणी ७ यहाँ यावत् पदसे “अरिष्टा रिष्टावती, खड्गी, मञ्जूषा, ऋषभपुरी” इनका संग्रह हुआ है ७ जम्बू मन्दरकी पूर्व दिशामें शीता महानदीकी दक्षिण दिशामें आठ राजधानियाँ कही गई हैं—जो इस प्रकारसे हैं सुषीमा १ कुण्डला २ यावत् रणसंचय ८ यहाँ यावत् पदसे “अपराजिता, प्रमङ्गरा, अङ्गावती, पद्मावती, शुभा” इनका संग्रह हुआ है ८ जम्बू मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें शीतोदा महानदीकी दक्षिण दिशामें आठ राजधानियाँ कही गई हैं जैसे—अश्वपुरी १ यावत् वीतशोका ९ यहाँ यावत् पदसे “विहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता अपरा, अशोका” इनका संग्रह हुआ है जम्बू मन्दर पर्वतकी पश्चिम दिशामें शीतोदा

(८) गन्धिस्तावती जम्बूद्वीपमां आवेला मन्दर पर्वतनी पूर्व दिशामां शीता महा नदीनी उत्तरे आठ राजधानीयो आवेली छे तेमनां नाम नीचे प्रमाणे छे—
(१) क्षेमा, (२) क्षेमपुरी, (३) अरिष्टा. (४) रिष्टावती, (५) खड्गी, (६) मञ्जूषा, (७) ऋषभपुरी अने पुण्डरीकिणी जम्बूद्वीपना मन्दर पर्वतनी पूर्व दिशामां शीता महानदीनी दक्षिण दिशामां नीचे दर्शावेली आठ राजधानीयो आवेली छे—(१) सुषीमा, (२) कुण्डला, (३) अपराजिता, (४) प्रमङ्करा, (५) अङ्गवती, (६) पद्मावती, (७) शुभा अने (८) रणसंचय जम्बूद्वीपमां आवेला मन्दर पर्वतनी पश्चिम दिशामां शीतोदा महानदीनी दक्षिण दिशामां नीचे प्रमाणे आठ राजधानीयो छे—(१) अश्वपुरी, (२) सिंहपुरी, (३) महापुरी, (४) विजयपुरी, (५) अपराजिता (३) अपरा (७) अशोका अने (८) वीतशोका. जम्बूद्वीपना मन्दर पर्वतनी पश्चिम दिशामां शीतोदा महानदीनी उत्तर दिशामां आठ राजधानीयो

થેતુ યાત્રકરણાત્—‘ જયન્તી, અપરાજિતા, ચક્રપુરી, જ્વહાપુરી, અવધ્યા, ઇતિ પશ્ચ નામાનિ ગ્રાહ્યાનિ । एताःक्षेमादयो राजधान्यो नव योजनविस्तारा द्वादश योजनायामाः, कच्छादि विजयेषु प्रवहमाणानां शीतादिनदीनां समीपवर्त्ति खण्ड त्रयमध्यखण्डस्थिता बोध्या इति ॥ सू० ૪૯ ॥

एतासु राजधानीषु तीर्थकरादयः संभवन्तीति तीर्थकरादीन् अष्ट स्थान-
त्वेन प्ररूपयति—

મૂલમ્--જંબૂ મંદરપુરતિથિમેળં સીયાણ મહાળર્ણવ ઉત્તરેણં
ઉક્રોસપણ અટ્ટ અરહંતા અટ્ટ ચક્રવટી અટ્ટ વલદેવા અટ્ટ વાસુ-
દેવા ઉપ્પાજિંસુ વા ઉપ્પજંતિવા ઉપ્પાજિસ્સંતિ વા ૧। જંબૂ મંદર-
પુરતિથિમેળં સીયાણ મહાળર્ણવ દાહિળેણં ઉક્રોસપણ એવં ચેવ
૨। જંબૂ મંદરપચ્ચતિથિમેળં સીઓયાણ મહાળર્ણવ દાહિળેણં
ઉક્રોસપણ એવં ચેવં ૩। એવં ઉત્તરેણવિ ૪ ॥ સૂ૦ ૫૦ ॥

છાયા—જમ્બૂ મન્દરપૌરસ્ત્યે શીતાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે ઉત્કર્ષપદે અટ્ટો
અર્હનઃ અટ્ટો ચક્રાત્તિનઃ અટ્ટો વલદેવા અટ્ટો વાસુદેવા ઉદપચન્ત વા ઉત્પચન્ત વા
ઉત્પચન્તે વા ઉત્પત્સ્યન્તે વા ૧। જમ્બૂ મન્દરપૌરસ્ત્યે—શીતાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે
ઉત્કર્ષપદે એવમેવ ૨। જમ્બૂ મન્દરપાશ્વાત્યે ગોનોદાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે ઉત્ક-
ર્ષપદે એવમેવ ૩। એવમુત્તરેઽપિ ॥ સુ૦ ૫૦ ॥

મહાનદીકે ઉત્તરમેં આઠ રાજધાનિયાં કહી ગઈ હેં—જેસે વિજયા ૧
વૈજયન્તી યાત્રત્ અયોધ્યા ૮ ૧૦ યહાં યાત્રત્ જાન્દસે ‘ જયન્તી, અપ-
રાજિતા, ચક્રપુરી, જ્વહાપુરી, અવધ્યા ” इनका संग्रह हुआ है। ये
क्षेमादिक राजधानियां नौ योजनकी विस्तारवाली है और १२ योज-
नकी लम्बी हैं। कच्छादिक विजयोमें बहती हुई शीतादि नदियोंके
समीपवर्ती खण्डत्रयके मध्यखण्डोंमें स्थित हैं ॥ सूत्र ४९ ॥

છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે, -(૧) વિજયા, (૨) વૈજયન્તી, (૩) જયન્તી,
(૪) અપરાજિતા, (૫) ચક્રપુરી, (૬) જ્વહાપુરી, અવધ્યા અને (૮) અયોધ્યા.
આ ક્ષેમા આદિ રાજધાનીઓ નવ યોજનના વિસ્તારવાળી (પહોળી) અને ૧૨
યોજન લાંબી છે તેઓ કચ્છાદિક વિજયોમાં વહેતી શીતાદિ નદીઓની પાસેના
ત્રણ ખંડોના મધ્યખંડોમાં આવેલી છે ॥ સૂ. ૪૯ ॥

ટીકા—‘જંબૂ મંદરપુરસ્થિમેળ’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂ મન્દરપૌરસ્ત્યે—જમ્બૂ દ્વીપસ્થ—મન્દરપર્વતસ્ય પૂર્વદિગ્ભાગે શીતાયા મહાનદ્યાશ્ચ ઉત્તરે યાઃ કચ્છાદિચક્રવર્તિં વિજયસ્થિતાઃ ક્ષેમાદયો રાજધાન્ય-સ્તત્ર ઉત્કર્ષપદે અષ્ટૌ અર્હન્તઃ, અષ્ટૌ ચક્રવર્તિનઃ, અષ્ટૌ બલદેવાઃ, અષ્ટૌ વાસુદે-વાશ્ચ ઉત્પન્નાઃ વા ઉત્પદ્યન્તે વા, ઉત્પત્સ્યન્તે વેતિ ૧। તથા—જમ્બૂ મન્દરસ્ય પૂર્વ-ભાગે શીતાયા મહાનદ્યાશ્ચ દક્ષિણે ભાગે યાઃ વત્સાદિ ચક્રવર્તિં વિજયસ્થિતાઃ સુષમાદયો રાજધાન્યસ્તત્રાપિ ઉત્કર્ષપદે એવમેવ—પૂર્વવદેવ અષ્ટૌ અર્હચ્ચક્રવર્ત્યા-દયો બોધ્યાઃ ૨। તથા—જમ્બૂ મન્દરસ્ય પશ્ચિમે ભાગે શીતોદાયા મહાનાદ્યાશ્ચ

इन राजधानियोंमें तीर्थंकर आदि होते हैं इसलिये अब सूत्रकार तीर्थंकर आदिकोंकी प्ररूपणा आठ स्थानसे करते हैं—

“जंबू मंदरपुरस्थिमेण सीयाए ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દર પર્વતકે પૂર્વ દિગ્ભાગમેં એવં શીતા મહા નદીકે ઉત્તરમેં જો કચ્છાદિક ચક્રવર્તિં વિજયોમેં સ્થિત ક્ષેમાદિક રાજધાનિયાં હેં ડનમેં ઉત્કૃષ્ટસે આઠ અર્હન્ત, આઠ ચક્રવર્તી આઠ બલદેવ ઓર આઠ વાસુદેવ ઉત્પન્ન હુએ હેં ઉત્પન્ન હોતે હેં ઓર ઉત્પન્ન હોંગે તથા—જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દર પર્વતકે પૂર્વ ભાગમેં ઓર શીતા મહાનદીકે દક્ષિણ ભાગમેં જો વત્સાદિક ચક્રવર્તિં વિજયસ્થિત સુષમા-દિક રાજધાનિયાં હેં—ડનમેં સી ઉત્કૃષ્ટસે આઠ અર્હન્ત ચક્રવર્તી આદિ ઉત્પન્ન હુએ હેં ઓર ઉત્પન્ન હોંગે ૨ તથા—જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકે પશ્ચિમ ભાગમેં ઓર શીતોદા મહાનદીકે દક્ષિણ ભાગમેં જો પદ્માદિ

આ રાજધાનીઓમાં તીર્થંકર આદિ થતાં હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર તીર્થંકર વગેરેની આઠ સ્થાનની અપેક્ષાએ પ્રરૂપણા કરે છે—

“જંબૂ મંદરપુરસ્થિમેળ સીયાએ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જંબૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં જે શીતા મહાનદી વહે છે તેની ઉત્તરે જે કચ્છાદિક ચક્રવર્તિં વિજયો આવેલાં છે તેમાં આવેલી ક્ષેમાદિક રાજધાનીઓમાં વધારેમાં વધારે આઠ અર્હન્તો, આઠ ચક્રવર્તીઓ, આઠ બલદેવો અને આઠ વાસુદેવો ઉત્પન્ન થયા હતા, ઉત્પન્ન થાય છે અને ઉત્પન્ન થશે ૧૨। તથા જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં શીતા મહાનદીના દક્ષિણ ભાગમાં વત્સાદિક ચક્રવર્તિં વિજયમાં આવેલી જે સુષમાદિક રાજધાનીઓ છે તેમાં પણ વધારેમાં વધારે આઠ અર્હન્ત આઠ ચક્રવર્તી આદિ ઉત્પન્ન થયા હતા ઉત્પન્ન થાય છે અને ઉત્પન્ન થશે ૧૩। તથા જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં શીતોદા મહાનદીના દક્ષિણ ભાગમાં આવેલા ચક્રવર્તિં વિજયમાં આવેલી

દક્ષિણે ભાગે યાઃ પશ્ચિમાદિ ચક્રવર્તિ વિજયસ્થિતા અશ્વપુર્યાદયો રાજધાન્યસ્ત-
ત્રાપિ ઉત્કર્ષપદે એવમેવ=પૂર્વવદેવ અષ્ટાષ્ટ અર્હન્તચક્રવર્ત્યાદયો વોધ્યાઃ ૩। તથા-
જમ્બૂ મન્દરસ્ય પશ્ચિમે ભાગે શીતોદાયા મહાનદ્યાશ્ચ ઉત્તરે ભાગે યા વપ્રાદિચક્રર્તિ
વિજયસ્થિતા વિજયાદયા રાજધાન્યસ્તત્રાપિ પૂર્વવદેવ અષ્ટાષ્ટ અર્હન્તચક્રવર્ત્યાદયો
વોધ્યા इति । અત્રેદં વોધ્યમ્-એકૈકસ્મિન્ વિજયે એકૈકસ્ય અર્હત ઉત્પત્ત્યા દ્વાત્રિ-
શદ્વિજયેષુ સમકાલં દ્વાત્રિશતીર્થકરા ભવન્તિ । ચક્રવર્તિનો બલદેવા વાસુદેવાશ્ચ
ઉત્કર્ષત એકકાલેઽષ્ટાવિંશતિરેવ ભવન્તિ, યત એષુ વિજયેષુ જગન્યતશ્ચત્વારો વાસુ-
દેવાશ્ચત્વારશ્ચક્રવર્તિનો ભવનન્ત્યેવ ચક્રવર્તિનો વાસુદેવાશ્ચ એકસ્મિન્ ક્ષેત્રે એક-

ચક્રવર્તિ વિજયસ્થિત અશ્વપુરી આદિ રાજધાનિયાં હૈંં ઉનમેંં બી ઉત્કૃષ્ટસે
આઠ ૨ અર્હન્ત ચક્રવર્તી આદિ ઉત્પન્ન હુએ હૈંં ઉત્પન્ન હોતે હૈંં ઓર
ભવિષ્યતમેંં બી ઉત્પન્ન હોંગે ૩ તથા જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકે
પશ્ચિમ ભાગમેંં ઓર શીતોદા મહાનદીસે ઉત્તર ભાગમેંં જો વપ્રાદિક
ચક્રવર્તિ વિજયસ્થિત વિજયાદિક રાજધાનિયાં હૈંં ઉનમેંં બી આઠ ૨
અર્હન્ત ચક્રવર્તિ આદિ ઉત્કૃષ્ટ રૂપસે ઉત્પન્ન હુએ હૈંં, ઉત્પન્ન હોતે હૈંં
ઓર ઉત્પન્ન હોંગે યહાંં પર એસા જાનના ચાહિયે-એક એક વિજયમેંં
એક ૨ અર્હન્તકી ઉત્પત્તિ હોનેસે ૩૨ વિજયોમેંં એક સાથે ૩૨ તીર્થકર
હોતે હૈંં । તથા-ચક્રવર્તી બલદેવ, ઓર વાસુદેવ ઉત્કૃષ્ટસે એક કાલમેંં
૨૮ હી હોતે હૈંં-કયોંકિ હન વિજયોમેંં જગન્યસે ચાર વાસુદેવ, ચાર
ચક્રવર્તી હોતે હૈંં । ચક્રવર્તી ઓર વાસુદેવ એક ક્ષેત્રમેંં એક કાલમેંં

અશ્વપુરી આદિ જે રાજધાનીઓ છે તેમાં પણ વધારેમાં વધારે આઠ અર્હન્તો
આઠ ચક્રવર્તી આદિ ઉત્પન્ન થયા હતા, ઉત્પન્ન થાય છે અને ઉત્પન્ન થશે.
તથા જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં શીતોદા મહાનદીના ઉત્તર
ભાગમાં આવેલા વપ્રાદિક જે ચક્રવર્તિ વિજયો છે તેમાં આવેલા વિજયાદિક
રાજધાનીઓમાં પણ ભૂતકાળમાં વધારેમાં વધારે આઠ અર્હન્તો, આઠ ચક્રવર્તીઓ
આદિ ઉત્પન્ન થયા હતા, વર્તમાનમાં પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને ભવિષ્યમાં પણ
ઉત્પન્ન થશે । ૪। અહીંં એવું સમજવું જોઈએ કે એક એક વિજયમાં એક
એક અર્હન્તની ઉત્પત્તિ થતી હોવાથી ૩૨ વિજયોમાં એક સાથે ૩૨ તીર્થ-
કરો હોય છે. તથા ચક્રવર્તી, બલદેવ અને વાસુદેવ એક જ કાળમાં વધારેમાં
વધારે ૨૮ જ હોય છે, કારણ કે તે વિજયોમાં ઓછામાં ઓછા ચાર વાસુદેવ
અને ચાર ચક્રવર્તી તો અવશ્ય હોય જ છે. એક ક્ષેત્રમાં એક જ કાળે ચક્રવર્તી
અને વાસુદેવ-બન્નેનો સદ્ભાવ હોતો નથી. તેથી ચક્રવર્તી અને વાસુદેવોની જે

કાલે ન મન્તીતિ ચક્રવર્તિનાં વાસુદેવાનાં ચ અષ્ટાવિંશતિસંખ્યકત્વમ્ । બલદેવાશ્ચ વાસુદેવસહચરિતા । इति बलदेवानामपि अष्टाविंशति संख्यकत्वमिति ॥ સૂ. ૫૦ ॥

અથ દીર્ઘવૈતાઢ્યાદીન્ અષ્ટસ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્--જંબૂ મંદરપુરત્થિમેણં સીયાણ મહાનર્હણ ઉત્તરેણં
અટ્ટ દીહવેયઢ્યા, અટ્ટ તિમિસગુહાઓ, અટ્ટ ધ્વંડપવાયગુહાઓ,
અટ્ટ કથમાલગા દેવા, અટ્ટ નટ્ટમાલગા દેવા, અટ્ટ ગંગાકુંડા,
અટ્ટ સિંધુકુંડા, અટ્ટ ગંગાઓ, અટ્ટ સિંધૂઓ, અટ્ટ ઉસમકૂડા,
પવ્વયા, અટ્ટ ઉસમકૂડા દેવા પળ્લન્તા ૧ । જંબૂ મંદરપુરત્થિમેણં
સીયાણ મહાનર્હણ દાહિણેણં અટ્ટ દીહવેયઢ્યા, એવં ચેવ જાવ
અટ્ટ ઉસમકૂડા દેવા પળ્લન્તા, નવરમેત્થ રત્તા રત્તાવર્હઓ તાસિં
ચેવ કુંડા ૨ । જંબૂ મંદરપચ્ચત્થિમેણં સીયોયાણ મહાનર્હણ
દાહિણેણં અટ્ટ દીહવેયઢ્યા જાવ અટ્ટ નટ્ટમાલગા દેવા અટ્ટ
ગંગાકુંડા અટ્ટ સિંધુકુંડા અટ્ટ ગંગાઓ અટ્ટ સિંધૂઓ અટ્ટ ઉસ-
મકૂડા પવ્વયા અટ્ટ ઉસમકૂડા દેવા પળ્લન્તા ૩ । જંબૂ મંદર-
પચ્ચત્થિમેણં સીયોયાણ મહાનર્હણ ઉત્તરેણં અટ્ટ દીહવેયઢ્યા જાવ
અટ્ટ નટ્ટમાલગા દેવા અટ્ટ રત્તાકુંડા અટ્ટ રત્તાવર્હ કુંડા અટ્ટ
રત્તાઓ જાવ અટ્ટ ઉસમકૂડા દેવા પળ્લન્તા ૪ ॥ સૂ. ૫૧ ॥

છાયા—જમ્બૂ મન્દર પૌરસ્ત્યે શીતાયા મહાનઢ્યા ઉત્તરે અષ્ટૌ દીર્ઘવૈતાઢ્યાઃ
અષ્ટૌ તિમિસ્રગુહાઃ અષ્ટૌ ધ્વંડપ્રપાતગુહાઃ અષ્ટૌ કૃતમાલકા દેવાઃ અષ્ટૌ નાટ્ય-

નહીં હોતે હૈં ઇસલિયે ચક્રવર્તિયોં એવં વાસુદેવોંકી ૨૮ સંખ્યામેં કોઈ
બાધા નહીં આતી હૈ તથા-બલદેવ વાસુદેવ સહચરિત હોતે હૈં અતઃ
બલદેવોંકી ઢી ૨૮ સંખ્યા હોનેમેં કોઈ બાધા નહીં આની હૈ ॥ સૂ. ૫૦ ॥

૨૮ ની સંખ્યા કહી છે તેના મેળ મળી જાય છે. તથા બલદેવ અને વાસુ-
દેવ સહચરિત હોય છે, તેથી બળદેવોની સંખ્યા પણ ૨૮ ની જ થાય છે. ॥ સૂ. ૫૦ ॥

માલકા દેવાઃ અઘ્ટૌ ગઙ્ગાકુણ્ડાનિ અઘ્ટૌ સિન્ધુકુણ્ડાનિ, અઘ્ટૌ ગઙ્ગાઃ અઘ્ટૌ સિન્ધવઃ અઘ્ટૌ ઋષભકૂટાઃ પર્વતાઃ અઘ્ટૌ ઋષભકૂટા દેવાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ ૧। જમ્બૂમન્દર-પૌરસ્ત્યે શીતાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે અઘ્ટૌ દીર્ઘવૈતાઢ્ય યાવત્ ઋષભકૂટા દેવાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ । નવરમત્ર રક્તા રક્તાવત્યઃ, તાસામેવ કુણ્ડાનિ ૨। જમ્બૂ મન્દર-પાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે અઘ્ટૌ દીર્ઘવૈતાઢ્ય યાવત્ અઘ્ટૌ નાટ્યમાલકા

અવ સૂત્રકાર દીર્ઘવૈતાઢ્ય આદિકોંકી પ્રરૂપણા આઠ સ્થાન રૂપસે કરતે હૈં—

“ જંબૂ મંદરપુરત્થિમેણં સીયાએ મહાનર્દે ” ઇત્યાદિ ।

સૂત્રાર્થ—જંબૂદ્વીપસ્થિતમન્દરપર્વતકી પૂર્વ દિશામેં એવં શીતા મહાનદીકે ઉત્તરમેં આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય આઠ તિમિસ્રગુહા, આઠ સ્વપાત ગુહા, આઠ કૃતમાલક દેવ, આઠ નાટ્યમાલક દેવ આઠ ગઙ્ગા કુણ્ડ, આઠ સિન્ધુ કુણ્ડ, આઠ ગઙ્ગા આઠ સિન્ધુ, આઠ ઋષભકૂટદેવ કહે ગયે હૈં । ૧। જમ્બૂ મન્દરકી પૂર્વ દિશામેં એવં શીતા મહાનદીકો દક્ષિણદિશામેં આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય પર્વત એવં આઠ ઋષભકૂટ દેવ કહે ગયે હૈં । વિશેષ—યહાં પર રક્તા ઓર રક્તાવતી નદિયાં હૈં ઓર ઉન્હીંકે કુણ્ડ હૈં । ૨। જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દર પર્વતકી પશ્ચિમ દિશામેં ઓર શીતોદા મહાનદીકે દક્ષિણમેં આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય યાવત્ આઠ

હવે સૂત્રકાર દીર્ઘવૈતાઢ્ય આદિકોંકી પ્રરૂપણા આઠ સ્થાન રૂપે કરે છે—

“ જંબૂ મંદરપુરત્થિમેણં સીયાએ મહાનર્દે ” ઇત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ—જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં જે શીતા મહાનદી વહે છે તેની ઉત્તર દિશામાં આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય, આઠ તિમિસ્રગુહા, આઠ અંડપ્રપાત ગુહા, આઠ કૃતમાલક દેવ, આઠ નાટ્યમાલક દેવ, આઠ ગંગાકુંડ, આઠ સિન્ધુકુંડ, આઠ ગંગા, આઠ સિન્ધુ, આઠ ઋષભકૂટ પર્વત, અને આઠ ઋષભકૂટ દેવ કહ્યા છે । ૧। જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં જે શીતા મહાનદી વહે છે તેની દક્ષિણ દિશામાં પણ આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય પર્વતથી લઈને આઠ ઋષભકૂટ દેવ પર્યન્તની ઉપર્યુક્ત વસ્તુઓ કહી છે. વિશેષમાં ત્યાં રક્તા અને રક્તાવતી નદીઓ અને તેમના કુંડો છે । ૨। જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં જે શીતોદા મહાનદી વહે છે તેની દક્ષિણ દિશામાં દીર્ઘ વૈતાઢ્યથી લઈને આઠ નાટ્યમાલક દેવો આઠ ગંગાકુંડ, આઠ સિન્ધુકુંડ, આઠ ગંગા આઠ સિન્ધુ આઠ ઋષભકૂટ પર્વત અને આઠ ઋષભકૂટ દેવો પર્યન્તના ઉપર્યુક્ત પદાર્થોંકે. (૩) જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં જે શીતોદા મહાનદી વહે

દેવા અષ્ટૌ ગઙ્ગાકુણ્ડાનિ અષ્ટૌ સિન્ધુકુણ્ડાનિ અષ્ટૌ ગઙ્ગાઃ, અષ્ટૌ સિન્ધવઃ ઋષભકૂટ
પર્વતાઃ અષ્ટૌ ઋષભકૂટા દેવાઃ પ્રજ્ઞતાઃ ૩। જમ્બૂ મન્દરપાશ્ચાત્યે શીતોદાયા મહાનદ્યા
ઉત્તરે અષ્ટૌ દીર્ઘવૈતાઢ્યા યાવત્ નાટ્યમાલકા દેવા અષ્ટૌ રક્તા કુણ્ડાનિ અષ્ટૌ
રક્તાવતી કુણ્ડાનિ અષ્ટૌ રક્તાઃ યાવત્ અષ્ટૌ ઋષભકૂટા દેવા પ્રજ્ઞતાઃ ૪। મુ. ૧

ટીકા—‘ જમ્બૂ મંદર પુરસ્થિમેણ ’ इत्यादि—

જમ્બૂ મન્દરસ્ય પૂર્વે શીતાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે અષ્ટૌ સંખ્યકા દીર્ઘવૈતાઢ્યા-
દયો વોધ્યાઃ । ‘ દીર્ઘવૈતાઢ્ય ’ इत्यत्र दीर्घेति विशेषणं वर्तुलवैताढ्य व्यव
च्छेदार्थम् अष्टसु दीर्घवैताढ्येषु प्रत्येकवैताढ्ये एका तिमिस्रगुहाः एका खण्ड-
प्रपातगुहा चास्ति । अतोऽष्टौ तिमिस्रगुहा अष्टौ खण्डप्रपातगुहा बोध्याः । अष्टौ

નાટ્ય માલક દેવ, આઠ ગઙ્ગાકુણ્ડ, આઠ સિન્ધુકુણ્ડ, આઠ ગઙ્ગા,
આઠ સિન્ધુ, આઠ ઋષભકૂટ પર્વત, ઓર આઠ ઋષભકૂટ દેવ કહે ગયે
હैं । ૩। જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દરપર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં ઓર શીતોદા
મહાનદીકે ઉત્તરમાં આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય પર્વત યાવત્ આઠ નાટ્યમાલક
દેવ, આઠ રક્તાકુણ્ડ, આઠ રક્તાવતી કુણ્ડ, આઠ રક્તા, યાવત્ આઠ
ઋષભકૂટ કહે ગયે હैं ।

ટીકાર્થ—જમ્બૂ મન્દરકે પૂર્વમાં શીતામહાનદીકે ઉત્તરમાં આઠ ૨ દીર્ઘ-
વૈતાઢ્ય આદિ કહે ગયે હैं યહાં “દીર્ઘવૈતાઢ્ય”માં જો દીર્ઘ વિશેષણ હૈ
વહ વર્તુલ વૈતાઢ્યની નિવૃત્તિકે લિપે હૈ આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્યોમાંસે પ્રત્યેક
દીર્ઘવૈતાઢ્યમાં એક તિમિસ્ર ગુહા હૈ ઓર એક ખણ્ડપ્રપાત ગુહા હૈ
અતઃ આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્યોની આઠ તિમિસ્રગુહાઈ ઓર આઠ ખણ્ડ પ્રપાત

છે, તેની ઉત્તરે આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય પર્વતથી લઈને આઠ નાટ્યમાલક દેવો,
આઠ રક્તાકુણ્ડ, આઠ રક્તાવતી કુણ્ડ, આઠ રક્તા ઇત્યાદિ આઠ ઋષભકૂટ
દેવો પર્યન્તની ઉપર્યુક્ત વસ્તુઓ છે । ૪। જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની
પૂર્વમાં શીતા મહાનદીની ઉત્તરે આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્ય આદિ હોવાનું જે કથન
કરવામાં આવ્યું છે, તેમાં વૈતાઢ્ય પર્વતોની આગળ જે ‘દીર્ઘ’ વિશેષણ
લગાડવામાં આવ્યું છે તે વર્તુલ વૈતાઢ્યની નિવૃત્તિને માટે લગાડવામાં આવ્યું
છે. આઠ દીર્ઘ વૈતાઢ્યોમાના પ્રત્યેક દીર્ઘ વૈતાઢ્યમાં એક તિમિસ્રગુહા અને
એક ખણ્ડપ્રપાતગુહા છે. આ રીતે આઠ દીર્ઘવૈતાઢ્યની કુલ આઠ તિમિસ્ર
ગુહાઓ અને આઠ ખણ્ડપ્રપાત ગુહાઓ થઈ જાય છે. જે આઠ

કૃતમાલકા દેવા અષ્ટાનાં તિમિસ્રગૃહાનામધિષ્ઠાયકાઃ, અષ્ટૌ નાટ્યમાલકાશ્ચ
અષ્ટાનાં સ્વપ્નપ્રપાતગૃહાનામધિષ્ઠાયકા વૉધ્યાઃ । નીલવદ્વર્પધરપર્વતસ્ય દક્ષિણ-
મેઘલાસ્થિતાનિ પશ્ચિયોજનાયામવિષ્કમ્ભાણિ મધ્યસ્થિતગજ્ઞાદેવી ભવન-
સહિતદ્વીપયુક્તાનિ તિસ્રપુ દિક્ષુ વાહ્યાભ્યન્તરદ્વારયુક્તાનિ અષ્ટૌ ગજ્ઞાકુણ્ડાનિ
સન્તિ । एतेषामષ્ટાનાં ગજ્ઞાકુણ્ડાનાં પ્રત્યેકં દક્ષિણવહિર્દ્વારિત એકૈકા ગજ્ઞાનદી
વિનિર્ગમ્યતીત્યષ્ટૌ ગજ્ઞાનદ્યૌ ભવન્તિ । एता अष्टावपि गज्ज्ञानद्यौ विजयान् विभ-
जन्त्यो भरतगज्ज्ञावत् शीतामनुप्रविशन्तीति । एवं मध्यस्थितसिन्धुदेवी
ભવનપહિનદ્વીપયુક્તાનિ સિન્ધુકુણ્ડાન્યપિ વૉધ્યાનિ । एतेषां कुण्डानां દક્ષિણ-

ગુફાઈ હો જાતી હૈં । આઠ કૃતમાલક દેવ હૈં એ આઠ તિમિસ્ર ગુફાઓંકે
અધિષ્ઠાયક હૈં । આઠ નાટ્યમાલક દેવ હૈં—એ આઠ સ્વપ્નપ્રપાત ગુફા-
ઓંકે અધિષ્ઠાયક હૈં । નીલવદ્વર્પધરકીદક્ષિણ મેઘલા પર સ્થિત
આઠ ગજ્ઞાકુણ્ડ હૈં । એ ગજ્ઞાકુણ્ડ ૬૦ યોજનકા આયામવિષ્કમ્ભ-
વાલે હૈં—અર્થાત્ લમ્બે ચૌડે હૈં । इनके मध्यमें जो द्वीप हैं—ये द्वीप गज्ज्ञा
દેવીકે ભવનોંસે યુક્ત હૈં । એ ત્રણ દિશાઓંમૈં હૈં । वाह्य और आभ्य-
ન્तर द्वारोंसे ये युक्त हैं । इन आठ गज्ज्ञा कुण्डोंमेंसे प्रत्येक कुण्डके
દક્ષિણ દિશા સમ્બન્ધી વાહ્ય દ્વારસે એક એક ગજ્ઞા નદી નિકલી હૈં,
इस तरह आठ गंगा नदियां हो जाती हैं । ये आठों गंगा नदियां
વિજયોંકા વિભાગ કરતી હુઈ ભરતકી ગંગાકી તરહ શીતા નદીમૈં
પ્રવેશ કરતી હૈં । इसी तरहसे सिन्धु कुण्ड भी जानना चाहिये. इन
सिन्धु कुण्डोंके बीचमें द्वीप हैं, जो सिन्धु देवीके भवनोंसे युक्त हैं ।

કૃતમાલક દેવો છે, તેઓ આઠ તિમિસ્ર ગુફાઓના અધિષ્ઠાપકો છે. જે
આઠ નાટ્યમાલક દેવો કહ્યાં છે તેઓ આઠ ખંડપ્રપાત ગુફાઓના અધિષ્ઠાપકો
છે. નીલવત્ વર્ષધરની દક્ષિણ મેઘલા પર આઠ ગંગાકુંડ આવેલા છે. તે ગંગા
કુંડોની લંબાઈ તથા પહોળાઈ ૬૦ યોજનની કહી છે તેમની વચ્ચે દ્વીપો છે
તે દ્વીપો ગંગાદેવીના ભવનોથી યુક્ત છે. તે ત્રણ દિશાઓમાં છે અને બાહ્ય
તથા આભ્યન્તર દ્વારોથી યુક્ત છે આ આઠ ગંગાકુંડોમાંના પ્રત્યેક કુંડની દક્ષિણ
દિશાના બહાર દ્વારમાંથી એક એક ગંગા નદી નીકળે છે. આ રીતે કુલ
આઠ ગંગા નદીઓ થાય છે. તે આઠે ગંગા નદીઓ વિજયો (ચક્રવર્તી
વિજયક્ષેત્રો)ને વિભાગ કરતી થકી ભરતક્ષેત્રની ગંગા નદીની જેમ
શીતા નદીમાં પ્રવેશ કરે છે, એજ પ્રમાણે આઠ સિન્ધુકુંડ વિષે પણ સમજવું.
તે સિન્ધુ કુંડોની વચ્ચે દ્વીપો છે. તે દ્વીપો સિન્ધુદેવીના ભવનોથી યુક્ત છે તે
કુંડોના દક્ષિણ દિશાના બાહ્ય દ્વારમાંથી આઠ સિન્ધુ નદીઓ નીકળે છે, અને

વદિદ્વારતોઽષ્ટો સિન્ધુનદ્યો વિનિર્ગત્ય વિજયાન વિમજન્ત્યઃ શીતામનુપવિશન્તીતિ ।
ઋષભકૂટાઃ પર્વતા અષ્ટૌ, અષ્ટાસ્વપિ નિજયેષુ તદ્ભાવાત્ । ત એતે ઋષભકૂટા
પર્વતા વર્ષધરપર્વતપ્રત્યાસન્ના મ્લેચ્છસ્વળ્ડત્રયમધ્યસ્વળ્ડત્રિત્તિનઃ સર્વેષુ વિજ-
યેષુ ભરતેષુ ઐરવતેષુ ચ ભવન્તિ । એતત્પ્રમાણં ચેત્યમભિહિતમ્—

“ સર્વેવિ ઉસભકૂડા, ઉવિવદ્ધા અઢુ જોયના હોતિ ।

વારસ અઢ્ય ચરો, મૂલે મજ્જુવરિ વિત્થિળ્લા ॥૧૧”

છાયા—સર્વેઽપિ ઋષભકૂટા ઉદ્ધિદ્ધા અઢુ યોજનાનિ ભવન્તિ ।

દ્વાદશ અષ્ટૌ ચ ચત્વારો મૂલે મધ્યે ઉપરિ વિસ્તીર્ણાઃ ॥૧૧૥ ઇતિ ।

અયમર્થઃ—સર્વેઽપિઋષભકૂટપર્વતા અષ્ટૌ યોજનાનિ ઉદ્ધિદ્ધાઃ=ઉન્નતા
વોધ્યાઃ । મૂલે દ્વાદશ મધ્યે અષ્ટૌ ઉપરિ ચ ચત્વારિ યોજનાનિ વિસ્તીર્ણાં વોધ્યા
ઇતિ । એતત્કૂટનિવાસિનો દેશા અપિ ઋષભકૂટનામ્ના ઉચ્યન્તે, તે તુ અઢ-
સંખ્યકા વોધ્યા ઇતિ ॥૧૧૥ તથા—જમ્બૂ મન્દરસ્પ પૂર્વે શીતાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે-

इन कुण्डोंके दक्षिण बाह्य द्वारसे आठ सिन्धु नदियां निकलकर विज-
योंका विभाग करती हैं, और शीता नदीमें प्रवेश करती हैं । ऋषभ-
कूट पर्वत आठ हैं—क्योंकि आठोंही विजयोंमें इनका सद्भाव है । ये
ऋषभकूट पर्वत वर्षधर पर्वतोंके पासमें हैं, और तीन म्लेच्छ खण्डोंके
मध्य खण्डोंमें स्थित हैं । ये समस्त विजयोंमें भरतोंमें और ऐरवत
क्षेत्रोंमें होते हैं । इनका प्रमाण इस प्रकारसे कहा गया है—

‘ सव्वे वि उसभकूडा ’ इत्यादि ।

ये समस्त ऋषभकूट पर्वत आठ योजन ऊंचे हैं । मूलमें १२ योजन
मध्यमें आठ योजन, और ऊपरमें चार योजन विस्तारवाले हैं । इन
कूटों पर निवास करनेवाले देव भी ऋषभकूट नामसे कहे जाते हैं ।

વિજયેના વિભાગ કરતી થકી શીતા મહાનદીમાં પ્રવેશ કરે છે. ઋષભકૂટ
પર્વતો આઠ છે, કારણ કે આઠે વિજયોમાં એક એક ઋષભકૂટ પર્વત હોય
છે. તે ઋષભકૂટ પર્વતો વર્ષધર પર્વતોની પાસે આવેલા છે, અને ત્રણ મ્લેચ્છ
ખંડોના મધ્યખંડોમાં સ્થિત છે. સમસ્ત વિજયે માં, ભરતોમાં અને ઐરવત
ક્ષેત્રોમાં તેમનો સદ્ભાવ નીચે મુજબ છે—

“ સર્વે વિ ઉસભકૂડા ” ઇત્યાદિ—તે સમસ્ત ઋષભકૂટ પર્વતો આઠ આઠ
યોજન ઊંચા છે. તેમનો વિસ્તર મૂળભાગમાં ૧૨ યોજન, મધ્ય ભાગ આઠ યોજન
અને ટોચ ૪ યોજનનો છે. તે કૂટો પર નિવાસ કરનારા દેવોનું નામ પણ ઋષભકૂટ
દેવો છે. ઋષભકૂટ દેવો પણ આઠ જ છે. જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વમાં જે

૬પિ અષ્ટાષ્ટસંખ્યકાદોર્ધવૈતાલ્યાદયો વોધ્યાઃ । નવરમ્-અત્ર ગજ્ઞાકુણ્ડસ્થાને રક્તાકુણ્ડાનિ સિન્ધુકુણ્ડસ્થાને રક્તાવતીકુણ્ડાનિ ચ વોધ્યાનિ । રક્તાકુણ્ડાધિષ્ઠાત્ર્યો દેવ્યો રક્તાઃ, રક્તાવતીકુણ્ડાધિષ્ઠાત્ર્યો દેવ્યશ્ચ રક્તાવત્યો વોધ્યાઃ । તથા-ગજ્ઞાનદીસ્થાને રક્તાનદ્યઃ સિન્ધુનદી સ્થાને રક્તાવત્યો નદ્યો વોધ્યા ઇતિ ॥૨॥ તથા-જમ્બૂ મન્દરસ્ય પશ્ચિમે શીતોદાયા મહાનદ્યા દક્ષિણે અષ્ટાષ્ટસંખ્યકા દોર્ધવૈતાલ્યા યાવદ્ નાટ્યમાલકા દેવા ગજ્ઞાકુણ્ડાનિ ગજ્ઞાઃ સિન્ધવઃ ઋષભકૂટપર્વતાઃ ઋષભકૂટા દેવાશ્ચ વોધ્યાઃ ॥૩॥ તથા-જમ્બૂ મન્દરસ્ય પશ્ચિમે શીતોદાયા મહાનદ્યા ઉત્તરે અષ્ટાષ્ટસંખ્યકા દોર્ધવૈતાલ્યા યાવદ્ નાટ્યમાલકા દેવા રક્તાકુણ્ડાનિ રક્તાવતી કુણ્ડાનિ રક્તા રક્તાવત્ય ઋષભકૂટપર્વતા ઋષભકૂટા દેવાશ્ચ વોધ્યાઃ ૪ ઇતિ ॥ સૂ૦ ૫૧ ॥

યે ઋષભકૂટ આઠ હૈં ॥૧॥ તથા-જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકે પૂર્વમેં ઓર શીતા મહાનદીકે દક્ષિણમેં બી આઠ ૨ દોર્ધ વૈતાલ્ય આદિક હૈં । વિશેષ-યહાં ગંગા કુણ્ડકે સ્થાનમેં રક્તાકુણ્ડ ઓર સિન્ધુકુણ્ડકે સ્થાનમેં રક્તાવતી કુણ્ડ હૈં એસા જાનના ચાહિયે. રક્તાકુણ્ડ કી અધિષ્ઠાત્રી દેવિયાંહૈં વે રક્તાવતીહૈં તથા-ગંગા નદીકે સ્થાનમેં રક્તા નદિયાં, નદીકે સ્થાનમેં રક્તાવતી નદિયાં હૈં એસા જાનના ચાહિયે ૨ તથા-જમ્બૂમન્દરકે પશ્ચિમમેં ઓર શીતોદા મહાનદીકે દક્ષિણમેં આઠ ૨ દોર્ધવૈતાલ્ય યાવત્ નાટ્યમાલક દેવ, ગંગાકુણ્ડ, સિન્ધુકુણ્ડ, ગંગા નદિયાં સિન્ધુનદિયાં, ઋષભકૂટ પર્વત ઓર ઋષભકૂટ દેવ હૈં એસા જાનના ચાહિયે ૩ તથા-જમ્બૂમન્દરકે પશ્ચિમમેં ઓર શીતોદા મહાનદીકે ઉત્તરમેં આઠ ૨ દોર્ધવૈતાલ્ય યાવત્ નાટ્યમાલક દેવ, રક્તાકુણ્ડ

શીતા મહાનદી વહે છે તેની દક્ષિણ દિશામાં પણ આઠ દોર્ધ વૈતાલ્ય આદિ પૂર્વોક્ત વસ્તુઓ છે. વધારામાં ત્યાં ગંગાકુંડને બદલે રક્તાકુંડ છે અને સિન્ધુકુંડને બદલે રક્તાવતીકુંડ છે, એમ સમજવું. રક્તાકુંડની અધિષ્ઠાત્રી જે દેવીઓ છે તેમનું નામ છે. રક્તાવતી દેવીઓ છે. ત્યાં ગંગાને બદલે રક્તા અને સિન્ધુને બદલે રક્તાવતી નદીઓ છે, એમ સમજવું. જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમમાં જે શીતોદા મહાનદી વહે છે તેની દક્ષિણમાં પણ આઠ આઠ દોર્ધ વૈતાલ્ય પર્વત નાટ્યમાલક દેવો, ગંગાકુંડો, સિન્ધુકુંડો, ગંગા નદીઓ, સિન્ધુ નદીઓ, ઋષભકૂટ પર્વતો અને ઋષભકૂટ દેવો છે, એમ સમજવું જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમમાં જે શીતોદા નામની મહાનદી વહે છે તેની ઉત્તર દિશામાં પણ આઠ આઠ દોર્ધવૈતાલ્ય પર્વતો નાટ્યમાલક દેવો, રક્તાકુંડો, રક્તાવતીકુંડો, રક્તા નદીઓ, રક્તાવતી નદીઓ, ઋષભકૂટ પર્વતો અને ઋષભકૂટ દેવો છે, એમ સમજવું બેધઓ. ॥ ૩ ૫૧ ॥

ઇત્યં જમ્બૂ મન્દરસ્થાન્ પદાર્થાન્ નિરૂપ્ય સમ્પ્રતિ તસ્યૈવ ચૂલિકામણ-
સ્થાનત્વેનાહ —

મૂલમ્—મન્દરચૂલિયા ણં બહુમજ્જદેસમાણ અટ્ટ જોયણાં
વિકલ્લંભેણ પપ્પણત્તા ॥ સૂ ૫૨ ॥

છાયા—મન્દરચૂલિકા સ્થલુ વહુમધ્યદેશભાગે અટ્ટૌ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ
પ્રજ્ઞપ્તા ॥ સૂ ૫૨ ॥

ટીકા—‘ મન્દરચૂલિયાણં ’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा ॥ सू ५२ ॥

અનન્તરં જમ્બૂદ્વીપરૂપક્ષેત્રગતાઃ પદાર્થા ઉક્તાઃ, સમ્પ્રતિ ક્ષેત્રસાધર્મ્યાદ્ ધાત-
કીલ્પણાદિસ્થપદાર્થાન્ નિરૂપયતિ—

મૂલમ્--ધાયઙ્સંડદીવે પુરત્થિમદ્દેણં ધાયઙ્ગુલ્લે અટ્ટ જોય-
ણાં ઉટ્ટુ ઉચ્ચત્તેણં, બહુમજ્જદેસમાણ અટ્ટ જોયણાં વિકલ્લંભેણં,
સાઙ્ગેગાં અટ્ટ જોયણાં સવ્વગ્ગેણં પપ્પણત્તા ૧। एवं धायङ्गु-
ल्लाओ आठवेत्ता सच्चवे जंबूदीववत्तवया भाणियव्वा जाव
रक्तावती कुण्ड, रक्ता, रक्तावती नदियां ऋषभकूट पर्वत और ऋषभ-
कूट देव हैं ऐसा जानना चाहिये ४-॥ सू ५१ ॥

હસ પ્રકારસે જમ્બૂમન્દરસ્થ પદાર્થોંકા નિરૂપણ કરકે અબ સૂત્રકાર
ઁસકી ચૂલિકાકા આઠ સ્થાનરૂપસે કથન કરતે હેં—

“ મન્દરચૂલિયાણં બહુમજ્જદેસમાણ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—મન્દરકી ચૂલિકા બહુમધ્યદેશભાગમેં વિષ્કમ્ભકી
અપેક્ષા આઠ યોજનકી કહી ગઈ હૈ ॥ સૂ ૫૨ ॥

આ પ્રકારે જમ્બૂદ્વીપની વસ્તુઓનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર મન્દરની
ચૂલિકાઓનું આઠ સ્થાન રૂપે નિરૂપણ કરે છે—

“ મન્દરચૂલિયાણં બહુમજ્જદેસમાણ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—મન્દર પર્વતની ચૂલિકાઓનો વિષ્કંભ (વિસ્તાર) બહુમધ્યદેશ ભાગમાં
આઠ આઠ યોજનનો કલ્પો છે. ॥ સૂ ૫૨ ॥

મંદરચૂલિયત્તિ ૨। એવં પચ્ચત્થિમદ્દેવિ મહાધાયઙ્ગુસ્સાઓ
આઢવેત્તા જાવ મંદરચૂલિયત્તિ ૩, એવં પુક્કરવરદીવદ્ધુપુરત્થિ-
મદ્દેવિ પટમરુક્કાઓ આઢવેત્તા જાવ મંદરચૂલિયત્તિ ૪। એવં
પુક્કરવરદીવદ્ધુપચ્ચત્થિમદ્દેવિ મહાપટમરુક્કાઓ જાવ મંદર-
ચૂલિયત્તિ ૫ ॥ સૂ. ૫૩ ॥

છાયા—ધાતકીલ્ખણદ્વીપે પૌરસ્ત્યાર્દે ધાતકીવૃક્ષઃ અઠૌ યોજનાનિ ઝર્વ-
મુચ્ચત્ત્વેન, વહુમધ્યદેશમાગે અઠૌ યોજનાનિ વિષ્કમ્મેણ, સાતિરેકાણિ અઠૌ
યોજનાનિ સર્વાગ્રેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ ૧। એવં ધાતકીવૃક્ષાત્ આરભ્ય સચૈવ જમ્બૂદ્વીપવક્ત-
વ્યતા મણિતવ્યા યાવત્ મંદરચૂલિકેતિ ૨। એવં પાશ્ચાત્યાર્દેઽપિ મહાધાતકી-
વૃક્ષાદારભ્ય યાવત્ મંદરચૂલિકેતિ ૩। એવં પુક્કરવરદ્વીપાર્દેપૌરસ્ત્યાર્દેઽપિ
પન્નવૃક્ષાદારભ્ય યાવદ્ મંદરચૂલિકેતિ ૪। એવં પુષ્કરવરદ્વીપાર્દેપાશ્ચાત્યાર્દેપિ
મહાપન્નવૃક્ષાદ્ યાવદ્ મંદરચૂલિકેતિ ॥ સુ. ૫૩ ॥

ટીકા—“ ધાયઙ્ગુસંઢે ” ઇત્યાદિ—

યથા જમ્બૂદ્વીપે જમ્બૂવૃક્ષાદારભ્ય મંદરચૂલિકાન્તા વિષયા ઉક્તાસ્તથૈવ
ધાતકીલ્ખણાદિષ્વપિ વૌધ્યાઃ । ધાતકીવૃક્ષાદારભ્ય મંદરચૂલિકાન્તાઃ પદાર્થો
વૌધ્યાઃ । તથા—ધાતકીલ્ખણસ્થ પાશ્ચાત્યાર્દે મહાધાતકીવૃક્ષાદારભ્ય, પુષ્કર-

હસ પ્રકારસે જમ્બૂદ્વીપ રૂપ ક્ષેત્રમેં રહે હુણ પદાર્થોંકા નિરૂપણ
કર અબ સૂત્રકાર ક્ષેત્રકે સાધર્મ્યકો લેકર ધાતકીલ્ખણાદિમેં સ્થિત
પદાર્થોંકા નિરૂપણ કરતે હૈ—“ ધાયઙ્ગુસંઢ દીવે પુરત્થિમદ્દેણ ” ઇત્યાદિ।

ટીકર્થ—જિસ પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપમેં જમ્બૂ વૃક્ષસે લેકર મંદરચૂલિકા
તક સમસ્ત પદાર્થ કહે ગયેહેં, ડસી તરહ ધાતકીલ્ખણ આદિ દ્વીપોંમેં મી
વે જાતના ચાહિયે. અર્થાત્ ધાતકી વૃક્ષસે લેકર મંદરચૂલિકા તક
સમસ્ત પદાર્થ યહાં પર મી કથિત કર લેના ચાહિયે. તથા—ધાતકી-

આ પ્રકારે જમ્બૂદ્વીપ રૂપ ક્ષેત્રમાં આવેલા પદાર્થોનું નિરૂપણ કરીને હવે
સૂત્રકાર ક્ષેત્રના સાધર્મ્યને લીધે ધાતકીલ્ખણાદિમાં રહેલા પદાર્થોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ ધાયઙ્ગુસંઢ દીવે પુરત્થિમદ્દેણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકર્થ—એવી રીતે જમ્બૂદ્વીપમાં જમ્બૂવૃક્ષથી લઈને મંદર ચૂલિકા પર્યન્તના
સમસ્ત પૂર્વોક્ત પદાર્થોનો સદ્ભાવ છે, એજ પ્રમાણે ધાતકીલ્ખણ આદિ દ્વીપોમાં
પણ એ બધા પદાર્થોનો સદ્ભાવ છે. એટલે કે ધાતકીલ્ખણના પૂર્વાર્ધમાં ધાતકી

વરદ્વીપાર્દ્ધપૌરસ્ત્યાર્દ્ધે પદ્મવૃક્ષાદારમ્બ, પુષ્કરવરદ્વીપાર્દ્ધપાશ્ચાત્યાર્દ્ધે મહાપદ્મ-
વૃક્ષાદારમ્બ મન્દરચૂલિકાન્તાઃ પદાર્થાં બોધ્યાઃ । ધાતકયાદિ વૃક્ષાણાં પ્રમાણ-
દિકં જમ્બૂવૃક્ષવદ્ બોધ્યમ્ ।

તદુક્તમ્—

“ જો મણિઓ જંબૂએ વિઠી ડ સો વેવ હોઈ એસિં ।

દેવકુરાસુ સામલિવૃક્ષા જહ જંબૂદીવમ્મિ ॥૧॥ ”

છાયા—યો મણિતો જમ્બૂ વિધિસ્તુ સ એવ ભવતિ એતેષામ્ ।

દેવકુરાસુ શાલ્મલિવૃક્ષા યથા જમ્બૂદ્વીપે ॥૧॥ હિતિ ॥મૂ ૦ ૫૩ ॥

ચ્વળકે પાશ્ચાત્યાર્દ્ધમે—પશ્ચિમાર્ધમે મહાધાતકી વૃક્ષસે લેકર, પુષ્કરવર
દ્વીપાર્ધકે પૌરસ્ત્યાર્ધમે પદ્મવૃક્ષસે લેકર એવં પુષ્કરવરદ્વીપાર્ધકે પાશ્ચા-
ત્યાર્દ્ધમે મહા પદ્મવૃક્ષસે લેકર મન્દરચૂલિકા તકકે સમસ્ત પદાર્થ
કહ લેનાં ચાહિયે. ધાતકી આદિ વૃક્ષોંકા પ્રમાણ આદિ સઘ જમ્બૂવૃક્ષકી
તરહ જાનનાં ચાહિયે. તદુક્તમ્—“ જો મણિઓ જંબૂએ ” ઇત્યાદિ ।

જો વિધિ જમ્બૂવૃક્ષકી કહી ગઈ હૈ વહી વિધિ જનકી કહની
ચાહિયે । મેઢ્ઠ હતનાહી હૈ કિ જમ્બૂદ્વીપમે જમ્બૂવૃક્ષ હૈં ઓર દેવકુરઓમે
શાલ્મલી વૃક્ષ હૈં ॥૧॥

જિસ પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપમે જમ્બૂવૃક્ષ હૈં ડસી પ્રકાર દેવકુરમે શાલ્મ-
લિવૃક્ષ હૈં ॥ સૂત્ર ૫૩ ॥

વૃક્ષની લઈને મન્દરચૂલિકા પર્યન્તના ઉપર્યુક્ત બધા પદાર્થો છે, એમ સમજવું
જોઈએ. તથા ધાતકીખંડના પશ્ચિમાર્ધમાં પણ મહાધાતકી વૃક્ષને લઈને ઉપર્યુક્ત
બધાં પદાર્થોના સદ્ભાવ સમજવો. એજ પ્રમાણે પુષ્કરવર દ્વીપાર્ધના પૂર્વાર્ધમાં
પણ પદ્મવૃક્ષથી લઈને મન્દર ચૂલિકા પર્યન્તના પદાર્થોના સદ્ભાવ સમજવો. એજ
પ્રમાણે પુષ્કરવર દ્વીપાર્ધમાં પશ્ચિમાર્ધમાં પણ મહાપદ્મવૃક્ષથી લઈને મન્દર ચૂલિકા
પર્યન્તના પદાર્થોના સદ્ભાવ સમજવો. ધાતકીવૃક્ષ આદિ સમસ્ત પદાર્થોનું પ્રમાણ
આગલા સૂત્રમાં જંબૂવૃક્ષ આદિનું જે પ્રમાણ બતાવ્યું છે તે પ્રમાણે જ સમજવું.
કહ્યું પણ છે કે—“ જો મણિઓ જંબૂએ ” ઇત્યાદિ.

એટલે કે જંબૂવૃક્ષનું જેવું વર્ણન કર્યું છે, એવું જ વર્ણન ધાતકીવૃક્ષ
અને પદ્મવૃક્ષનું થવું જોઈએ જંબૂદ્વીપના ઉપર્યુક્ત પદાર્થોના વર્ણન પ્રમાણે
જ ધાતકીખંડાદિના ઉપર્યુક્ત પદાર્થોનું વર્ણન સમજવું. અહીં તે કથન કરતાં
એટલો જ તક્ષવત છે કે જંબૂદ્વીપમાં જંબૂવૃક્ષ છે અને દેવકુરઓમાં
શાલ્મલી વૃક્ષ છે. ॥ સૂ. ૫૩ ॥

ક્ષેત્રાધિકારાત્પુનરપિ જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગતાન્ પદાર્થાન્ પ્રાહ--

મૂલમ્—જંબૂદીવે દીવે મંદરે પઞ્ચથ ભદ્રશાલવણે અટ્ટ દિસા,
હસ્તિકૂડા પપ્પણ્ણત્તા, તં જહા-પડમુત્તર ૧, નીલવંતે ૨, સુહસ્તિ
૩, અંજનાગિરી ૪, કુમુદ ૫, પલાશક ૬, અવતંસ ૭ અટ્ટમથ
રોચનાગિરી ૮॥ જંબૂદીવસ્સ ણં દીવસ્સ જગતી અટ્ટ જોયણાં
વિવલ્લંભેણં પપ્પણ્ણત્તા ॥ સૂ. ૫૪ ॥

છાયા— જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મંદરે પર્વતે ભદ્રશાલવણે અષ્ટૌ દિગ્હસ્તિકૂટાનિ
પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્વથા—પશ્ચોત્તરઃ ૧, નીલવાન્ ૨; સુહસ્તી ૩, અંજનાગિરિઃ ૪,
કુમુદશ્ચ ૫, પલાશકઃ ૬, અવતંસઃ ૭ અટ્ટમકો રોચનાગિરિઃ ૮। જમ્બૂદ્વીપસ્ય
સ્વલુ દ્વીપસ્ય જગતી અષ્ટૌ યોજનાનિ . ઊર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન વહુમધ્યદેશભાગે અષ્ટૌ
યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥ સૂ. ૫૪ ॥

ટીકા—જંબૂદીવે દીવે ” ઇત્યાદિ—

જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે=મધ્યજમ્બૂદ્વીપે મંદરપર્વતસ્ય ચતુર્દિગ્વર્તિભદ્રશાલવણે

ક્ષેત્રાધિકારકો લેકરહી પુનઃ સૂત્રકાર જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગત પદાર્થોંકા કથન કરતે હૈં ‘ જંબૂ દીવે દીવે મંદરે પઞ્ચથ ॥

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ નામકે મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમેં મંદર પર્વતકી ચારોં દિશા-
ઓંમેં રહે હુએ ભદ્રશાલ વનમેં શીતા શીતોદા इन दो महानदियोंके
तट पर आठ दिग्हस्तिकूट कहें गये हैं ! ये कूट पूर्वादि चारों दिशा-
ओंमें हस्तिके आकारके जैसे हैं—अतः इन्हें दिग्हस्ति कूट कहा गया
है । उनके नाम इस प्रकारसे हैं—पश्चोत्तर १, नीलवान् २, सुहस्ती ३,
अंजनागिरि ४, कुमुद ५, पलाशक ६, अवतंस ७, एवं आठवां रोचन-

ક્ષેત્રાધિકાર ચાલી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર જંબૂદ્વીપમાં આવેલા બીજાં
પદાર્થોંનું નિરૂપણ કરે છે—“ જંબૂદીવે દીવે મંદરે પઞ્ચથ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જંબૂદ્વીપ નામના મધ્ય જંબૂદ્વીપમાં મંદર પર્વતની ચારે દિશાઓમાં
આવેલા ભદ્રશાલ વનમાં શીતા અને શીતોદા મહાનદીઓના તટ પર આઠ
દિગ્હસ્તિકૂટ કહ્યા છે. આ કૂટ પૂર્વાદિ ચારે દિશાઓમાં હાથીના જેવાં આકારથી
બાપેલા હોવાને કારણે તેમને દિગ્હસ્તિકૂટ કહેવામાં આવ્યા છે. તેમનાં નામ
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) પશ્ચોત્તર, (૨) નીલવાન્, (૩) સુહસ્તી, (૪) અંજનાગિરિ,
(૫) કુમુદ, (૬) પલાશક, (૭) અવતંસ, અને (૮) રોચનાગિરિ.

શીતાશીતોદયોર્મહાનઘોરુભયકુલવર્તીનિ અષ્ટૌ=અષ્ટસંખ્યકાનિ દિગ્દશિકૂટાનિ= દિશુ=પૂર્વાદિષુ હસ્ત્યાકારાણિ કૂટાનિ મજ્જપ્તાનિ તથા-પશ્ચોત્તરં इत्यादि । તથા-જમ્બૂદ્વીપાભિધાનસ્ય મધ્યજમ્બૂદ્વીપસ્ય જગતી=વેદિકાધારભૂતા પાલી ઝર્ધ્વમુચ્ચત્વેન અષ્ટૌ યોજનાનિ बहुमध्यदेशभागे विष्कम्भेण च अष्टौ योजनानि મજ્જપ્તા ॥ इति ॥ સૂ ૫૪ ॥

સમ્પ્રતિ કૂટાનિ નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્-જંબૂદ્વીવે દીવે મંદરસ્સ પઠ્વયમ્સ દાહિણેણં મહાંહિ-
મવંતે વાસહરપઠ્વણ અટ્ટ કૂડા પળ્લણ્ણા, તં જહા-સિદ્ધે ૧,
મહાહિમવંતે ૨ હિમવંતે ૩ રોહિતે ૪ હરીકૂડે ૫ હરિકંતે ૬
હરિવાસે ૭ વેરુલિણ ૮ ચેવકૂડા ૩ ॥૧॥ જંબૂમંદરઉત્તરેણં રુપ્પિમ્મિ
વાસહરપઠ્વણ અટ્ટ કૂડા પળ્લણ્ણા, તં જહા-સિદ્ધે ૧ ય રુપ્પી ૨
રમ્મગ ૩ નરકંતા ૪ બુદ્ધિ ૫ રુપ્પકૂડે ૬ ય । હિરણ્ણવણ ૭
મણિકંચણે ૮ ય રુપ્પિમ્મિ કૂડા ૩ ॥૨॥ જંબૂ મંદરપુરત્થિમેણં
રુયગવરે પઠ્વણ અટ્ટ કૂડા પળ્લણ્ણા, તં જહા-રિટ્ઠે ૧ તવણિજે ૨
કંચણ ૩ રયય ૪ દિસાસોત્થિણ ૫ પલંબે ૬ ય । અંજણ ૭
અંજણપુલ્લ ૮ રુયગસ્સ પુરત્થિમે કૂડા । તત્થ ણં અટ્ટ દિસા-
કુમારિમહત્તરિયાઓ મહિઢ્ઢિયાઓ જાવ પલિઓવમઢ્ઢિઙ્ઘાઓ
પરિવસંતિ, તં જહા-ખંદુત્તરા ૧ ય ખંદા ૨ આખંદા ૩ ખંદિ-
વદ્ધના ૫ । વિજયા ૫ ય વેજયંતી ૬, જયંતી ૭ અપરાઙ્ઘા

ગિરિ ૮. હસ જમ્બૂદ્વીપકી જગતી-વેદિકાકી આધારભૂત પાલી-આઠ
યોજનકી ઝૂંચી છે તથા મધ્ય ભાગમેં વહ વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા આઠ
યોજનકી છે ॥ સૂ ૫૪ ॥

આ જંબૂદ્વીપ નામના મધ્ય જંબૂદ્વીપની જગતી (વેદિકાની આધારભૂત
પાળ-દીવાલ) આઠ યોજન ઊંચી છે, તથા તેના મધ્યભાગે આઠ યોજનના
વિષ્કંભ (પહોળાઈ) વાળી છે. ॥ સૂ. ૫૪ ॥

८ ॥३॥ जंबू मंदरदाहिणेणं रुयगवरे पवण अट्ट कूडा पणणत्ता
तं जहा-कणए १ कंचणे २ पउमे ३ नलिणे ४ ससि ५ दिवा-
यरे ६ चेव । वेसमणे ७ वेरुलिए ९ रुयगस्स उदाहिणे कूडा ॥
तत्थ णं अट्ट दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिद्धियाओ जाव
पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति, तं जहा-समाहारा १, सुप-
इण्णा २, सुप्पबुद्धा ३, जसोहरा ४। लच्छिवई ५ सेसवई ६
चित्तगुत्ता ७ वसुंधरा ९ ॥ ४ ॥ जंबू मंदरपच्चत्थिमे रुयगवरे
पवण अट्टकुडा पणणत्ता, तं जहा-सोत्थिए १ य असोहे २ य
हिमवं ३ मंदरे ४ तहा । रुअगे ५ रुयगुत्तमे ६ चंदे ७, अट्टमे
य सुदंसणे ८॥ तत्थ णं अट्ट दिसाकुमारि महत्तरियाओ महि-
द्धियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति, तं जहा-इला-
देवी १, सुरादेवी ३, पुढवी ३, पउमावई ४। एगनासा ५ णव-
मिया ६, सीया ७ भद्दा ८ य अट्टमा ॥५॥ जंबू मंदरउत्तरे
रुयगवरे पवण अट्ट कूडा पणणत्ता, तं जहा-रयणे १ रयणुच्चए
२ य, सठवरयण ३ रयणसंचए ४ चेव । विजए ५ य वेजयंते ६
जयंते ७ अपराइए ८॥ तत्थ णं अट्ट दिसाकुमारिमहत्तरियाओ
महिद्धियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति, तं जहा-
अलंबुसा १ मियकेसी २ पोंडरिगी ३ य वारुणी ४। आसाय ५
सवगा ६ चेव सिरी ७ हिरी ९ चेव उत्तरओ ॥६॥ अट्ट अहे-
लोगवत्थवाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पणणत्ताओ, तं जहा-
भोगंकरा १ भोगवई ३ सुभोगा ३ भोगमालिणी ४। सुवच्छा ५

वच्छामिता ६ य, वारिसेणा ७ बलाहगा ९ । ७। अट्ट उड्डलोग-
वत्थवाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मेघंकरा १ मेघवई २ सुमेघा ३, मेघमालिणी ४। तोयधारा ५
विचिता ६ य पुप्फमाला ७ अणिंदिया ९ । सू० ५५ ।

छाया—जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणे महाहिमवति वर्षधरप-
र्वते अष्टौ कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सिद्धो १ महाहिमवान् २ हिमवान् ३
रोहिता ४ हीकूटम् ५। हरिकान्ता ६ हरिवर्ष ७ वैडूर्य ८ चैत्र कूटानि तु ॥ १॥
जम्बू मन्दरोत्तरे रुक्मिणि वर्षधरपर्वते अष्टौ कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—सिद्धश्च १
रुक्मी २ रम्यको ३ नरकान्ता ४ बुद्धी ५ रुचककूटश्च ६। हैरण्यवतं ७ मणि-
काञ्चनं ८ च रुक्मिणि कूटानि तु ॥ २ ॥ जम्बूमन्दरपौरस्त्ये रुचकवरे पर्वते
अष्ट कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—रिष्टं १ तपनीयं २ काञ्चनं ३ रजत दिशांसौ-
वस्तिकं ७ प्रलम्बं ६ च । अञ्जनम् ७ अञ्जनपुलकं ८ रुचकस्य पौरस्त्ये
कूटानि ॥ तत्र खलु अष्ट दिक्कुमारीमहत्तरिका महर्द्धिका यावत् पल्योपमस्थि-
तिकाः परिवसन्ति, तद्यथा—नन्दोत्तरा १ च नन्दा २ आनन्दा ३ नन्दिवर्द्धना
४। विजया ८ च वैजयन्ती ८ जयन्ती ७ अपराजिता ८ ॥ ३ ॥ जम्बूमन्दर-
दक्षिणे रुचकवरे पर्वते अष्ट कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—कनकं १ काञ्चनं २ पद्मं
३ नङ्गिनं ४ शशी ७ दिवाकरश्चैव ६। वैश्रमणो ७ वैडूर्य ८ रुचकस्य दक्षिणे
कूटानि । तत्र खलु अष्ट दिशाकुमारी महत्तरिकाः महर्द्धिका यावत् पल्योपम-
स्थितिकाः परिवसन्ति, तद्यथा—समाहारा १, सुप्रदत्ता २, सुप्रबुद्धा ३, यशोधरा
४, । लक्ष्मीवती ८, शेषवती ८, चित्रगुप्ता ७, वसुन्धरा ८ ॥ ४ ॥ जम्बूमन्दर-
पाश्चात्ये रुचकवरे पर्वते अष्ट कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—स्वस्तिकश्च १, अमो-
हश्च २ हिमवान् ३, मन्दरस्तथा ४। रुचको ५ रुचकोत्तम ७ श्रन्द्रः ७, अष्टमश्च
सुदर्शनः ८। तत्र खलु अष्ट दिक्कुमारीमहत्तरिका महर्द्धिका यावत् पल्योपम-
स्थितिकाः परिवसन्ति, तद्यथा—इलादेवी १ सुरादेवी २, पृथिवी ३ पद्मावती ४।
एकनासा ५ नवमिका ६ सीता ७ भद्रा ८ च अष्टमी ॥ ५ ॥ जम्बूमन्दरोत्तरे
रुचकवरे पर्वते अष्टौ कूटानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—रत्नं १ रत्नोच्चयश्च २ सर्वरत्नं
३ रत्नसंचयश्चैव ४। विजयश्च ५ वैजयन्तो ६ जयन्तः ७ अपराजितः ८ ॥ तत्र
खलु अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिका महर्द्धिका यावत्पल्योपमस्थितिकाः परिवसन्ति,
तद्यथा—अलम्बुषा १, मितकेशी २ पुण्डरीकिणी ३ च वारुणी ४। आशा ५ च

સર્વંગા ૬ ચૈવ શ્રીઃ ૭ હ્રીશ્ચૈ ૮ ઉત્તરતઃ ॥ ૭ ॥ અઘૌં અધોઞોકવાસ્તવ્યા
દિવકુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-મોગદ્ધરા ૧ મોગવતી ૨, સુમોગા ૩,
મોગમાલિની ૪। સુવત્સા ૫ વત્સમિત્રા ૬, ચ, વારિપેળા ૭ વઝાહકા ૮ ॥ ૭ ॥
અઘૌં ઊર્ધ્વલોકવાસ્તવ્યા દિવકુમારીમહત્તરિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-મેઘદ્ધરા ૧ મેઘ-
વતી ૨, સુમેઘા ૩, મેઘમાલિની ૪। તોયધારા ૫ વિચિત્રા ૬, ચ, પુષ્પમાલા ૭
અનિન્દિતા ૮ ॥ સૂ ૫૬ ॥

ટીકા—‘ જંબુદીવે દીવે ’ इत्यादि—

જમ્બૂદ્વીપનામક મધ્યજમ્બૂદ્વીપે સ્થિતસ્ય મન્દરપર્વતસ્ય દક્ષિણદિશિ યો
મહાહિમવાન્ વર્ષધરપર્વતોઽસ્તિ, તસ્મિન્ વર્ષધરપર્વતે અષ્ટકૂટાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ,
તથથા-સિદ્ધો ૧ મહાહિમવાન્ ૨ इत्यादि। તત્ર સિદ્ધસ્ય દેવવિશેષસ્ય આયત-
નોપલક્ષિતં ચત્કૂટં તત્સિદ્ધકૂટં बोध्यम् १। इदं कूटं प्राच्या दिशि विज्ञेयम्।
તતઃ ક્રમેણ પશ્ચિમદિશિ વર્તમાનાનિ મહાહિમવદાદિકૂટાનિ વિજ્ઞેયાનિ। તત્ર

अथ सूत्रकार कूटोक्ता निरूपण करते हैं—

“ જંબુદીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ ” इत्यादि

ટીકાર્થ-જમ્બૂદ્વીપ નામકે મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમે સ્થિત મન્દર પર્વતકી દક્ષિણ
દિશામેં જો મહા હિમવાન્ વર્ષધર પર્વત હૈ, ઉસ વર્ષધર પર્વત પર
આઠ કૂટ કહે ગયે હૈં । ઉનકે નામ હસ પ્રકારલે હૈં-સિદ્ધ ૧, મહા
હિમવાન્ ૨, હિમવાન્ ૩, રોહિતા ૪, હ્રીકૂટ ૫, હરિકાન્ત ૬, હરિવર્ષ
૭, ઓર વૈદૂર્યકૂટ હનમેં જો કૂટ સિદ્ધ-દેવ વિશેષકે આયતનસે ઉપ-
લક્ષિત હૈ, વહ સિદ્ધ કૂટ હૈ, યહ કૂટ પ્રાચી દિશામેં-પૂર્વ દિશામેં હૈ,
હસકે બાદ ક્રમશઃ પશ્ચિમ આદિ દિશાઓમેં વર્તમાન મહા હિમવાન
કૂટ હૈ-યહ મહા હિમવાન કૂટ મહા હિમવાન પર્વતકા નાયક જો દેવ
હૈ ઉસ દેવકે આવાસસે યુક્ત હૈ । હિમવત્કૂટ હૈમવતવર્ષકા જો

હવે સૂત્રકાર કૂટોક્તું નિરૂપણ કરે છે—

“ જંબુદીવે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ-જમ્બૂદ્વીપ નામના મધ્ય જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની દક્ષિણદિશામાં
જે મહાહિમવાન્ વર્ષધર પર્વત છે, તે વર્ષધર પર્વત પર આઠ કૂટો કહ્યા છે.
તેમના નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) મહાહિમવાન્, (૩) હિમવાન્,
(૪) રોહિત, (૫) હ્રીકૂટ, (૬) હરિકાન્ત, (૭) હરિવર્ષ અને વૈદૂર્યકૂટ. સિદ્ધકૂટ
નામનું જે કૂટ છે તે સિદ્ધ દેવ વિશેષના આવાસથી યુક્ત છે. તે પૂર્વ દિશામાં
આવેલું છે, ત્યારબાદ પશ્ચિમ આદિ દિશામાં મહાહિમવાન્ આદિ કૂટો અનુક્રમે
આવેલા છે. મહાહિમવાન્ પર્વતનો અધિષ્ઠાતા જે દેવ છે તે દેવના આવાસથી

મહાહિમવત્કૂટ મહાહિમવત્પર્વતનાયકદેવાવાસયુક્તં ત્રિજ્ઞેયમ્ ૨। હિમવત્કૂટં
 હૈમવતવર્ષસ્વામિદેવાવાસયુક્તમ્ ૩। રોહિતકૂટં રોહિતાશ્વનદીદેવ્યધિષ્ઠિતમ્
 ૪। હ્રીકૂટમ્-એતત્કૂટસ્થ મહાપદ્માશ્વયજ્ઞદ્રુનિવાસિ હ્રીનામકદેવ્યધિષ્ઠિતમ્ ॥ ૪ ॥
 હરિકાન્તાકૂટમ્-હરિકાન્તાનામ નદી દેવતાધિષ્ઠિતમ્ ॥ ૫ ॥ હરિવર્ષકૂટમ્-
 હરિવર્ષનામકદેવાધિષ્ઠિતમ્ ॥ ૭ ॥ તથા-વૈદૂર્યકૂટમ્-વૈદૂર્યદેવાધિષ્ઠિતં કૂટં
 બોધ્યમિતિ ૮ ॥ ૧ ॥ તથા-જમ્બૂમન્દરસ્ય ઉત્તરસ્યાં-દિશિ રુક્મિણિ વર્ષધર-
 પર્વતે અષ્ટૌ કૂટાનિ પ્રાપ્તાનિ, તથા-સિદ્ધો રુક્મીત્યાદિ । એતાનિ સિદ્ધાદીનિ
 કૂટાનિ સિદ્ધાદિતત્તદેવાધિષ્ઠિતાનિ બોધ્યાનીતિ ॥ ૨ ॥ કૂટાધિકારાત્ સમ્પ્રતિ
 જમ્બૂદ્વીપપ્રાકારભૂતસ્ય રુચકદ્વીપવર્તિનો વલયાકારસ્ય રુચક પર્વતસ્ય ચતુર્દિગ્વ-

સ્વામી દેવ હૈ એ દેવકે આવાસસે યુક્ત હૈ । રોહિતકૂટ-રોહિતા નામકી
 નદીકી જો દેવી હૈ એ દેવીસે અધિષ્ઠિત હૈ । હરિકાન્તા કૂટ-હરિકાન્તા
 નામકી નદીકી જો દેવી હૈ એ દેવીસે અધિષ્ઠિત હૈ । હરિવર્ષ કૂટ-
 વર્ષકે નાયક દેવસે અધિષ્ઠિત હૈ તથા-વૈદૂર્ય જો કૂટ હૈ વહ વૈદૂર્ય
 નામક દેવસે અધિષ્ઠિત હૈ ૮ તથા-જમ્બૂ મન્દરકી ઉત્તર દિશામેં જો
 રુક્મિ વર્ષધર પર્વત હૈ એ પર્વત પર આઠ કૂટ કહે ગયે હૈ-જૈસે-સિદ્ધ
 ૧, રુક્મી ૨, રમ્યક ૩, નરકાન્તા ૪, બુદ્ધિ ૫, રુક્મકૂટ ૬, હૈરણ્યવત ૭, ઔર
 મણિકાશ્વન યે સિદ્ધાદિ કૂટ સિદ્ધાદિ નામકે ૮ દેવોંસે અધિષ્ઠિત હૈ

કૂટકે અધિકારકો લેકર અથ સુવ્રકાર જમ્બૂદ્વીપકા પ્રાકાર ભૂત
 એવં રુચક દ્વીપવર્તી જો વલયાકાર રુચક પર્વત હૈ, એ પર્વતકી ચારોં

યુક્ત મહાહિમવાન કૂટ છે હૈમવત પર્વના અધિષ્ઠાતા દેવના આવાસથી યુક્ત
 જે કૂટ છે તેનું નામ હિમવત્કૂટ છે. રોહિતા નામની નદીની અધિષ્ઠાત્રી દેવીના
 આવાસથી યુક્ત જે કૂટ છે તેનું નામ રોહિતકૂટ છે. હરિકાન્તા નામની નદીની
 જે દેવી છે તે દેવી વડે અધિષ્ઠિત જે કૂટ છે તેનું નામ હરિકાન્તા કૂટ છે.
 હરિવર્ષના નાયક દેવ વડે અધિષ્ઠિત જે કૂટ છે તેનું નામ હરિવર્ષકૂટ છે. વૈદૂર્ય
 નામના દેવ વડે અધિષ્ઠિત જે કૂટ છે તેનું નામ વૈદૂર્યકૂટ છે. જમ્બૂદ્વીપના
 મન્દર પર્વતની ઉત્તર દિશામાં જે રુક્મિ નામનો વર્ષધર પર્વત છે તે પર્વત
 પર આઠ કૂટ કહ્યાં છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) રુક્મી,
 (૩) રમ્યક, (૪) નરકાન્તા, (૫) બુદ્ધિ, (૬) રુક્મકૂટ, (૭) હૈરણ્યવત અને
 (૮) મણિકાશ્વન. તે સિદ્ધાદિ કૂટ સિદ્ધાદિ નામના દેવો વડે અધિષ્ઠિત છે.
 કૂટનો અધિકાર આલી રહ્યો છે, તેથી હવે સુવ્રકાર જમ્બૂદ્વીપના પ્રાકાર (કોટ)
 ૩૫ અને રુચક દ્વીપવર્તી જે વલયાકાર રુચક પર્વત છે તે પર્વતની આરે

તીર્થિ કૂટાનિ તન્નિવાસિનાં દિક્કુમારીશ્ચ અષ્ટસ્થાનત્વેનાદ-‘જંબૂમંદરપૌરસ્થિમેળ’
 इत्यादि । जम्बूमन्दरपूरस्यां दिशि रुचकवरपर्वते अष्टौ रुचककूटानि प्रज्ञ-
 प्तानि, तद्यथा-रिष्टं १, तपनीयं २ काञ्चन ३ मित्यादि । एषु अष्टसु रुचक-
 कूटेषु महर्द्धिकाः=विशिष्टभवनपरिवारादियुक्ताः, यावत्पदेन - ‘महज्जुइया,
 महाबला, महाजसा, महासौख्या, महानुभागा, इति, छाया-महाद्युतिका,
 महाबला, महायशसो, महासौख्या, महानुभागाः-इत्येतानि पदानि ग्राह्याणि ।
 महाद्युतिकाः=विशिष्टशरीराभरणादिप्रभाभास्वराः, महाबलाः=विशेषबलश-
 लिन्यः, महायशसः=विशिष्टकीर्त्तिपत्यः, महासौख्याः=विशिष्टसुखसम्पन्नाः,
 महानुभागाः=अचिन्त्यप्रभावयुक्ताः, पल्योपमस्थितिकाः=पल्योपमायुक्ता अष्टौ
 दिक्कुमारीमहत्तरिकाः=प्रधानतमा दिक्कुमार्यः परिवसन्ति, तद्यथा-नन्दोत्तरा

दिशाओंमें रहे हुए कूटोंका और उनमें रही हुई दिक्कुमारियोंका
 कथन आठ स्थानरूपसे करते हैं-“ जम्बू मन्दरपौरस्त्ये ” इत्यादि-
 जम्बूद्वीपस्थ जो मन्दर पर्वत है उस पर्वतकी पूर्व दिशामें जो रुचकवर
 पर्वत है उस पर्वत पर आठ रुचक कूट कहे गये हैं-जैसे-रिष्ट १,
 तपनीय २, काञ्चन ३, रजत ४, दिशासौवस्तिक ५, प्रलम्ब ६, अञ्जन
 ७ और अञ्जनपुलक ८ इन आठ रुचक कूटोंमें महर्द्धिक विशिष्ट भवन
 एवं परिवार आदिरूप ऋद्धिवाली, यावत्-महाद्युतिवाली विशिष्ट
 शरीराभरणादि प्रभासे भास्वर महा बलवाली विशेष बलसंपन्न
 महा यशवाली-विशिष्ट कीर्त्तिसंपन्न, महा सौख्यवाली-विशिष्ट सुख
 सहित, महानुभागयुक्त-अचिन्त्यप्रभाववाली एवं एक पल्योपमकी
 स्थितिवाली ऐसी आठ दिक्कुमारी महत्तरिकाएँ-प्रधानतम दिक्कुमा-

दिशाओंમાં આવેલાં કૂટોનું તથા તે કૂટોમાં રહેલી દિક્કુમારીઓનું આઠ સ્થાન
 રૂપે નિરૂપણ કરે છે-“ જંબૂમંદરપૌરસ્થ્યે ” ઇત્યાદિ-

જંબૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં જે રુચકવર પર્વત છે તે પર્વત
 પર આઠ રુચક કૂટ કહ્યાં છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) રિષ્ટ, (૨)
 તપનીય, (૩) કાંચન, (૪) રજત, (૫) દિશાસૌવસ્તિક, (૬) પ્રલમ્બ, (૭) અંજન
 અને (૮) અંજનપુલક. આ આઠ રુચકકૂટોમાં મહર્દ્ધિક (વિશિષ્ટ ભવન અને
 પરિવાર આદિરૂપ ઋદ્ધિવાળી), મહાદ્યુતિવાળી (શરીરાભરણુ આદિની પ્રભાથી
 દેવીપ્રમાન) મહાબલસંપન્ન (વિશેષ બલથી યુક્ત) મહા યશસંપન્ન (વિશિષ્ટ
 કીર્તિસંપન્ન) મહા સૌખ્ય સંપન્ન (વિશિષ્ટ સુખસંપન્ન) અને મહાનુભાગ
 સંપન્ન (અતિશય પ્રભાવવાળી). એક પલ્યોપમની સ્થિતિવાળી આઠ મહત્તરિકા
 દિક્કુમારીઓ (પ્રધાનતમ દિક્કુમારીઓ) રહે છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે

નન્દા-ઇત્યાદિ । તત્ર-રિષ્ટકૂટવાસિની નન્દોત્તરા ૧, તપનીયકૂટવાસિની નન્દા ૨, કાશ્ચનકૂટવાસિની આનન્દા ૩, રજતકૂટવાસિની નન્દિવર્દના ૪, દિશાસૌ-વસ્તિકકૂટવાસિની વિજયા ૫, પ્રલમ્બકૂટવાસિની વૈજયન્તી ૬, અઙ્ગનકૂટવાસિની જયન્તી ૭, અઙ્ગનપુલકકૂટવાસિની અપરાજિતા ૮ । एता नन्दोत्तराद्या दिक्कुमार्या भगवतोऽर्हतो जन्मनि दर्पणहस्ता गायन्त्यो भगवन्तं पर्युपासते, इति ॥ ३ ॥
તથા-જમ્બૂ મન્દરસ્ય દક્ષિણદિશિ રુચકવરપર્વતે અષ્ટૌ રુચકકૂટાનિ પ્રાપ્તાનિ,

રિકાપૈં રહતી હૈં, उनके नाम इस प्रकारसे हैं-नन्दोत्तरा १, नन्दा २, आनन्दा ३, नन्दिवर्दना ४, विजया ५, वैजयन्ती ७ और अपराजिता ८ इनमें मन्दोत्तरा रिष्टकूट पर रहती है, नन्दा तपनीय कूट पर रहती है, आनन्दा काश्चन कूट पर रहती है, नन्दिवर्दना रजत कूट पर रहती है विजया दिशासौवस्तिक कूट पर रहती है, वैजयन्ती प्रलम्बकूट पर रहती है, जयन्ती अङ्गनकूट पर रहती है, और अपराजिता अङ्गनपुलक कूट पर रहती है । ये नन्दोत्तरा आदि दिक्कुमारियां भगवान् अर्हन्तके जन्मकालमें हाथोंमें दर्पण लिये हुए गाती रहती हैं, और भगवान्की पर्युपासनामें लगी रहती हैं ३ ।

તથા--જમ્બૂ મન્દરકી દક્ષિણ દિશામાં જો રુચકવર પર્વત હૈ, उस पर्वत पर आठ रुचककूट कहे गये हैं-उनका नाम इस प्रकारसे है-कनक १, काश्चन २, पद्म ३, नलिन ४, शशी ५, दिवाकर ६, वैश्रवण ७, एवं वैदूर्य इन कनकादि आठोंही कूटों पर महर्द्धिक याचत् पत्यो-

છે-(૧) નન્દોત્તરા, (૨) નન્દા, (૩) આનન્દા, નન્દિવર્દના. (૫) વિજયા, (૬) વૈજયન્તી, (૭) જયન્તી (૮) અપરાજિતા.

નન્દોત્તરા નામની દિક્કુમારી રિષ્ટકૂટ પર રહે છે, નન્દા તપનીય કૂટ પર રહે છે, આનન્દા કાશ્ચન કૂટ પર રહે છે, નન્દિવર્દના રજતકૂટ પર રહે છે, વિજયા દિશાસૌવસ્તિક કૂટ પર રહે છે. વૈજયન્તી પ્રલમ્બકૂટ પર રહે છે, જયન્તી અંગનકૂટ પર રહે છે અને અપરાજિતા અંગનપુલકકૂટ પર રહે છે. આ નન્દોત્તરા આદિ દિક્કુમારીઓ ભગવાન અર્હન્તના જન્મકાળે હાથોમાં દર્પણ લઈને ગીતો ગાય છે અને ભગવાનની પર્યુપાસના કરવા લાગી છે । ૩ તથા જમ્બૂદ્રીપના મન્દર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં જે રુચકવર પર્વત છે તે પર્વત પર આઠ રુચકકૂટ કહ્યા છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે-(૧) કનક, (૨) કાશ્ચન, (૩) પદ્મ, (૪) નલિન, (૫) શશી, (૬) દિવાકર, (૭) વૈશ્રવણ, અને (૮) વૈદૂર્ય. આ કનકાદિ આઠ કૂટો પર મહર્દ્ધિકથી

તથા—કનક કાશ્ચનમ્—ઇતિ । તત્ર—કનકાદિષુ અષ્ટાસ્યપિ કૂટુપ મહર્દિકા યા-
ત્પલ્લોપમસ્થિતિકા અષ્ટૌ દિક્કુમારીમહત્તરિકાઃ પરિવસન્તિ, તથા—સમાહારા
સુપદત્તા—ઇત્યાદિ । તત્ર—કનકકૂટવાસિની સમાહારા ૧, કાશ્ચનકૂટવાસિની સુપ-
દત્તા ૨, પદ્મકૂટવાસિની સુપ્રબુદ્ધા ૩, નલિનકૂટવાસિની યશોધરા ૪, શશિકૂટ-
વાસિની લક્ષ્મીવતી ૫, દિવાકરકૂટવાસિની શેષવતી ૬, વૈશ્રવણકૂટવાસિની
ચિત્રગુપ્તા ૭ વૈદૂર્યકૂટવાસિની વસુન્ધરા ૮ । एताः समाहाराद्या दिक्कुमार्यो
भगवतोऽर्हतो जन्ममहोत्सवे भृङ्गारहस्ता गायन्त्यो भगवन्तं पर्युपासन्ते. इति
॥ ४ ॥ तथा—जम्बूमन्दरस्य पश्चिमदिशि रुचकवरपर्वते अष्टौ रुचककूटानि प्रज-

पमक्षी स्थितिवाली आठ दिक्कुमारी महत्तरिकाएँ रहती हैं । उनके
नाम इस प्रकारसे हैं—समाहारा १, सुप्रदत्ता २, सुप्रबुद्धा ३, यशोधरा
४, लक्ष्मीवती ५, शेषवती ६, चित्रगुप्ता ७ और वसुन्धरा ८ इनमें
कनककूट पर समाहारा दिक्कुमारिका रहती है, काश्वनकूट पर सुप्रदत्ता
दिक्कुमारिका रहती है, पद्मकूट पर सुप्रबुद्धा देवी रहती है, नलिन कूट
पर यशोधरादेवी रहती है, शशिकूट पर लक्ष्मीवती दिक्कुमारिका रहती
है दिवातरकूट पर शेषवती दिक्कुमारिका रहती है, वैश्रवणकूट पर चित्र-
गुप्तादिक्कुमारिका रहती है, और वसुन्धरा वैदूर्यकूट पर रहती है ये समा-
हारादिक दिक्कुमारिकाएँ भगवान् अर्हन्त के जन्ममहोत्सवमें भृङ्गारोंको
(झारी) हाथमें लेकर गाना गाती हैं, और भगवान् की पर्युपासना करती हैं
तथा—जम्बूस्थित मन्दर पर्वत की पश्चिम दिशामें जो रुचकवर पर्वत है

લઈને મહાપ્રભાવસંપન્ન પર્યન્તના પૂર્વોક્ત વિશેષભોથી યુક્ત અને એક પદ્યો-
પમ્પની સ્થિતિવાળી આઠ મહત્તરિકા (પ્રધાનતમ) દિક્કુમારીઓ નિવાસ કરે છે.
તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સમાહારા, (૨) સુપ્રદત્તા, (૩) સુપ્રબુદ્ધા,
(૪) યશોધરા, (૫) લક્ષ્મીવતી, (૬) શેષવતી, (૭) ચિત્રગુપ્તા, અને (૮) વસુ-
ન્ધરા. કનકકૂટ પર સમાહારા દિક્કુમારી, કાશ્ચનકૂટ પર સુપ્રદત્તા, દિક્કુમારી,
પદ્મકૂટ પર સુપ્રબુદ્ધા દિક્કુમારી, નલિનકૂટ પર યશોધરા દિક્કુમારી, શશીકૂટ પર
લક્ષ્મીવતી દિક્કુમારી, દિવાકરકૂટ પર શેષવતી દિક્કુમારી, વૈશ્રવણકૂટ પર ચિત્રા-
ગુપ્તા દિક્કુમારી અને વૈદૂર્યકૂટ પર વસુન્ધરા દિક્કુમારી નિવાસ કરે છે. આ
સમાહારા અદિ આઠે દિક્કુમારીઓ ભગવાન અર્હન્તના જન્મ મહોત્સવમાં
ભૃંગારો હાથમાં લઈને ગીતો ગાય છે અને ભગવાનની પર્યુપાસના કરે છે. ૪૪
તથા જમ્બૂદ્વીપના મન્દર પર્વતની પશ્ચિમ દિશામાં જે રુચકવર પર્વત છે તે

પ્રાણિ, તથા—સ્વસ્તિકા, અમોહ—ઇત્યાદિ । તત્ર—સ્વાસ્તિકાદિષુ કૂટ્ટેષુ મહર્દિકા યાવત્પલયોપમસ્થિતિકા અષ્ટી દિક્કુમારીમહત્તરિકાઃ પરિવસન્તિ, તથા—ઇલા-
દેવી સુરાદેવીત્યાદિ । તત્ર—સ્વસ્તિકાકૂટવાસિની ઇલાદેવી ૧, અમોહકૂટવાસિની
સુરાદેવી ૨, હિમવત્કૂટવાસિની પૃથિવીદેવી ૩, મન્દરકૂટવાસિની પદ્માવતી દેવી
૪, રુચકકૂટવાસિની એકનાસાદેવી ૫, રુચકોત્તમકૂટવાસિની નવમિકા દેવી ૬,
ચન્દ્રકૂટવાસિની સીતાદેવી ૭, સુદર્શનકૂટવાસિની ભદ્રાદેવી ૮ । એતા ઇલાદેવ્યા-
દયો દિક્કુમાર્યો ભગવત્તોઽર્હતો જન્મમહોત્સવે તાલવૃન્તહસ્તા ગાયન્ત્યો ભગવન્તં
પર્યુપાસતે, ઇતિ ॥ ૯ ॥ તથા—જમ્બૂમન્દરસ્ય ઉત્તરસ્યાં દિશિ રુચકવરપર્વતે અષ્ટૌ

ઉસ પર્વત પર આઠ રુચક કૂટ કહે ગયે છે । इनके नाम इस प्रकारसे
हैं—स्वस्तिक १, अमोह २, हिमवान् ३, मन्दर ४, रुचक ५, रुचकोत्तम
६, चन्द्र ७, और सुदर्शन ८ इन आठों कूटों पर आठ दिक्कुमारिकाएँ
जो महर्दिक यावत् पल्योपमकी स्थितिवाली हैं, रहती हैं । इनके नाम
इस प्रकारसे हैं—इलादेवी १, सुरादेवी २, पृथिवी ३, पद्मावती ४,
एकनासा ५ नवमिका ६ सीता ७ और आठवीं भद्रा इनमें जो इलादेवी
है, वह स्वस्तिक कूट पर रहती है । सुरादेवी अमोह कूट पर रहती है,
पृथिवी देवी हिमवत् कूट पर रहती है, पद्मावती देवी मन्दरकूट पर
रहती है एकनासा देवी रुचककूट पर रहती है नवमिका देवी रुचको-
त्तम कूट पर रहती है, सीतादेवी चन्द्रकूट पर रहती हैं, भद्रादेवी
सुदर्शन कूट पर रहती है ये इला आदि देवियां भगवान् अर्हन्तके
जन्म महोत्सव पर तालवृन्त बीजना हाथमें लेकर गाना गाती हैं और
भगवान की पर्युपासना करती है । ५ । तथा—जम्बूद्वीपस्थित मन्दर

પર્વત પર આઠ રુચકકૂટ કહ્યાં છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્વસ્તિક,
(૨) અમોહ, (૩) હિમવાન્, (૪) મન્દર, (૫) રુચક, (૬) રુચકોત્તમ, (૭) ચન્દ્ર,
અને (૮) સુદર્શન. તે આઠે કૂટે પર મહર્દિક આદિ પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળી
અને એક પલ્યોપમની સ્થિતિવાળી આઠ દિક્કુમારીઓ વસે છે. તેમનાં નામ
આ પ્રમાણે છે—(૧) ઇલાદેવી, (૨) સુરાદેવી, (૩) પૃથિવી. (૪) પદ્માવતી, (૫)
એકનાસા, (૬) નવમિકા, (૭) સીતા અને ભદ્રા. ઇલાદેવી સ્વસ્તિકકૂટ પર,
સુરાદેવી અમોહકૂટ પર, પૃથિવીદેવી હિમવત્કૂટ પર, પદ્માદેવી મન્દરકૂટ પર,
એકનાસાદેવી રુચકકૂટ પર, નવમિકાદેવી રુચકોત્તમકૂટ પર, સીતાદેવી ચન્દ્રકૂટ
પર અને ભદ્રાદેવી સુદર્શનકૂટ પર નિવાસ કરે છે. આ ઇલા આદિ આઠે દિક્કુ-
મારિકાઓ અર્હન્ત ભગવાનના જન્મમહોત્સવના સમયે હાથમાં તાલવૃન્ત
(વીજળો) લઈને ગીતો ગાય છે અને ભગવાનની પર્યુપાસના કરે છે. ૫ ।

કૂટાનિ મજ્જમાનિ, તથા—રત્ન રત્નોચ્ચય इत्यादि । —-રત્નાદિપુ કૂટ્ટેષુ મહર્દિકા
યાવત્પલ્યોપમસ્થિતિકા અઘ્રૌ દિવકુમારીમહત્તરિકાઃ પરિવસન્તિ, તથા—અલ-
મ્બુપા, મિતકેશીત્યાદિ । તત્ર—રત્નકૂટવાસિની અલમ્બુપાદેવી ૧, રત્નોચ્ચયકૂટ-
વાસિની મિતકેશી દેવી ૨, સર્વરત્નકૂટવાસિની પુણ્ડરીકિણી દેવી ૩, રત્નસંચય-
કૂટવાસિની વારુણીદેવી ૪, વિજયકૂટવાસિની આશાદેવી ૫, વૈજયન્તકૂટવાસિની
સર્વગાદેવી ૬, જયન્તકૂટવાસિની શ્રી દેવી ૭ અપરાજિતકૂટવાસિની હ્રી દેવી
૮ । एता अलम्बुपाद्या दिक्कुमार्यो भगवतोर्हतो जन्ममहोत्सवे चामरहस्ता गायन्त्यो
भगवन्तं पर्युपासते, इति ॥ ९ ॥ दिक्कुमार्यधिकारात् ऊर्ध्वाधोलोकस्थिता दिक्कु-

પર્વત પર આઠ કૂટ કહે ગયે હૈં—જૈસે—રત્ન ૧ રત્નોચ્ચય ૨, સર્વરત્ન
૩, રત્નસંચય ૪, વિજય ૫, વૈજયન્ત ૬, જયન્ત ૭ ઓર અપરાજિત ૮
इन रत्नादि कूटों पर महर्दिक यावत् एक पल्योपमकी स्थितिवाली
आठ दिक्कुमारिका महत्तरिकाएँ रहती हैं इनके नाम इस प्रकारसे
हैं—अलम्बुपा १, मितकेशी २, पुण्डरीकिणी ३, वारुणी ४, आशा ५,
सर्वगा ६, श्री ७, और ह्री ८ इनमें रत्नकूटवासिनी अलम्बुपा देवी
है, १ रत्नोच्चय कूट वासिनी मितकेशीदेवी है २ सर्वरत्न कूट वासिनी
पुण्डरीकिणी देवी है ३, रत्नकूटसंचय वासिनी वारुणी देवी है ४, विज-
यकूट वासिनी आशादेवी है ५, वैजयन्तकूट वासिनी सर्वगा देवी है,
जयन्तकूट वासिनी श्री देवी है ७ और अपराजितकूट वासिनी ह्री
देवी है ८ ये अलम्बुपा आदि देवियां भगवान् अर्हन् जन्म महोत्सव

તથા જ બુદ્ધીપના મન્દર પર્વતની ઉત્તર દિશામાં જે રુચકવર પર્વત છે, તે પર્વત
પર આઠ કૂટ છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) રત્ન, (૨) રત્નોચ્ચય, (૩)
સર્વરત્ન, (૪) રત્નસંચય, (૫) વિજય, (૬) વૈજયન્ત, (૭) જયન્ત અને (૮)
અપરાજિતા. આઠ રત્નાદિક કૂટો પર મહર્દિક આદિ પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળી
અને એક પદ્મોપમની સ્થિતિવાળી આઠ મહત્તરિકા દિક્કુમારીઓ વસે છે. તેમનાં
નામ આ પ્રમાણે છે.—

(૧) અલમ્બુપા—આ દેવીનું નિવાસસ્થાન રત્નકૂટ છે. (૨) મિતકેશી—આ
દેવી રત્નોચ્ચયકૂટ પર વસે છે. (૩) પુણ્ડરીકિણી—આ દિક્કુમારી સર્વરત્નકૂટ
પર વસે છે. (૪) વારુણી—આ દેવી રત્નસંચય કૂટ પર વસે છે. (૫) આશા—
આ દેવી વિજયકૂટ પર વસે છે. (૬) સર્વગા—આ દેવી વૈજયન્તકૂટ પર વસે
છે. (૭) શ્રી:—આ દેવી જયન્તકૂટ પર વસે છે અને (૮) હ્રીદેવી—આ દેવીઓ
અપરાજિતકૂટ પર વસે છે આ અલમ્બુપા આદિ આઠ દેવીઓ ભગવાન અર્હંતના

મારીરષ્ઠસ્થાનત્વેનાહ—‘ અદ્વ અહેલોગવત્થન્વાઓ ’ इत्यादि । अधोलोकवा-
स्तव्याः=अधोलोकवासिन्योऽष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—भोगङ्कुरा
भोगवतीत्यादि । तत्र—भोगङ्कुरा भोगवतीदेव्यौ सौमनसपर्वतवासिन्यौ, सुभोगा-
भोग मालिनीदेव्यौ गन्धमादनपर्वतवासिन्यौ; सुवत्सावत्समित्रादेव्यौ विद्युत्प्र-
भपर्वतवासिन्यौ, वारिषेणाबलाहकादेव्यौ माल्यवत्पर्वतवासिन्यौ । तदुक्तम्—

“ सोमणसगंधमायणविज्जुण्णममालवंतवासीओ ।

अद्वदिसि देवयाओ, वत्थन्वाओ अहे लोए ॥ १ ॥”

છાયા—સૌમનસગન્ધમાદન વિદ્યુત્પ્રભમાલ્યવદ્વાસિન્યઃ ।

અષ્ટ દિગ્દેવતા વાસ્તવ્યા અધોલોકે ॥ ૧ ॥ इति ।

કે સમય ચામરોંકો હાથોંમેં લેકર ગાના ગાતી હૈં ઓર ભગવાંની
સેવા કરતી હૈં । ૬। દિક્કુમારિકાઓંકે અધિકારકો લેકર અષ્ટ સૂત્રકાર
ઉર્ધ્વલોક એવં અધોલોકમેં સ્થિત જો દિક્કુમારિકાં હૈં ડનકા આઠ
સ્થાન રૂપસે કથન કરતે હૈં—“ અદ્વ અહેલોગવત્થન્વાઓ ” इत्यादि ।

અધોલોકમેં આઠ કુમારિકાઓંકા નિવાસ કહા ગયા હૈ—ડનકે
નામ હસ પ્રકારસે હૈ—ભોગકુરા ૧, ભોગવતી ૨, સુભોગા ૩, ભોગ-
માલિની ૪, સુવત્સા ૫, વત્સમિત્રા ૬, વારિષેણા ૭ ઓર બલાહકા ૮
હનમેં ભોગકુરા ઓર ભોગવતી યે દો દેવિયાં સૌમનસ પર્વત પર રહતી
હૈ, સુભોગા ઓર ભોગમાલિની યે દો દેવિયાં ગન્ધમાદન પર્વત પર
રહતી હૈ સુવત્સા ઓર વત્સમિત્રા યે દો દેવિયાં વિદ્યુત્પ્રભ પર્વત પર
રહતી હૈ વારિષેણા ઓર બલાહકા યે દો દેવિયાં મૌલ્ય પર્વત પર રહતી
હૈ—કહા ઓ હૈ—“ સોમણસ ગંધમાયણ ” इत्यादि ।

જન્મમહોત્સવના સમયે હાથમાં આમરો લઈને ગીતો ગાય છે અને ભગવાનની
સેવા કરે છે. ૧૬।

દિક્કુમારીઓનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તેથી હવે સૂત્રકાર ઉર્ધ્વલોકમાં તથા
અધોલોકમાં રહેતી દિક્કુમારીઓનું આઠ સ્થાન રૂપે નિરૂપણ કરે છે—

“ અદ્વ અહેલોગવત્થન્વાઓ ” ઇત્યાદિ—

ટીકા—અધોલોકમાં આઠદિક્કુમારીઓ વસે છે તેમનાં નામો નીચેપ્રમાણે છે—

(૧) ભોગકુરા, અને (૨) ભોગવતી—આ બે દેવીઓ સૌમનસ પર્વત પર
રહે છે. (૩) સુભોગા અને (૪) ભોગમાલિની—આ બે દેવીઓ ગન્ધમાદન પર્વત
પર રહે છે, (૫) સુવત્સા અને (૬) વત્સમિત્રા—આ બે દેવીઓ વિદ્યુત્પ્રભ પર્વત
પર રહે છે. (૭) વારિષેણા અને (૮) બલાહકા—આ બે દેવીઓ મૌલ્ય પર્વત
પર રહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ સોમણસગંધમાયણ ” ઇત્યાદિ—

एता भोगङ्कराद्या अष्टौ दिक्कुमार्यो भगवतोऽर्हतो जन्मभवनैः संवर्त्तकपवना-
दिकं कुर्वन्तीति बोध्यम् ॥ ७ ॥ तथा—ऊर्ध्वलोकवास्तव्याः=ऊर्ध्वलोकवासिन्यो-
ऽष्टौ दिक्कुमार्यः प्रकृताः, तद्यथा—मेघङ्करा मेघनतीत्यादि । एता मेघङ्करादयो-
ऽष्टावपि देव्यो नन्दनकूटवासिन्यो बोध्याः । तदुक्तम्—

“ णंदणवणकूडेसु एयाओ उड्डुलोगवत्थव्वाउ ” ।

छाया—नन्दनवनकूटेषु एता ऊर्ध्वलोकवास्तव्या इति ॥

मेघङ्करादयोऽष्टावपि दिक्कुमार्योऽभ्रवर्द्धकादिकं कुर्वन्तीति । सर्वा अपि
दिक्कुमार्यो भवनपतिदेव्यो बोध्याः ॥ सू० ५५ ॥

अनन्तरं दिक्कुमार्योऽष्टस्थानत्वेन निरूपिताः । दिक्कुमार्यश्च देवजातीया
हति देवानां कल्पान्, देवेन्द्रान्, देवेन्द्रविमानानि चाह —

मूलम्—अट्ट कप्पा तिरियमिस्सोववन्नगा पणत्ता. तं जहा-
सोहस्मे जाव सहस्सारे ॥ १ ॥ एएसु णं अट्टसु कप्पेसु अट्ट

ये भोगङ्करादिक आठ दिक्कुमारिकाएँ भगवान अर्हन्तके जन्म-
भवनमें संवर्त्तक पवन आदिक करते हैं, ऐसा जानना चाहिये ७ तथा—
ऊर्ध्वलोकमें रहनेवाली जो आठ दिक्कुमारिकाएँ हैं वे इस प्रकारसे
हैं—मेघङ्करा-१, मेघवती २, सुमेधा ३, मेघमालिनी ४, तोयधरा ५,
विचित्रा ६, पुष्पमाला ७, और अनिन्दिता ८ ये मेघङ्करा आदि आठों
ही देवियां नन्दनकूटवासिनी हैं कहा भी हैं—

“ णंदणवणकूडेसु ” इत्यादि ।

ये मेघङ्करादिक आठोंही दिक्कुमारिकाएँ अभ्रवर्द्धल अर्थात् आका-
शमें बादल करती हैं आदि करती हैं ये सब दिक्कुमारिकाएँ भवनपति
देवियां हैं ॥ सू० ५५ ॥

આ ભોગંકરા આદિ આઠે દિક્કુમારીઓ ભગવાન અર્હન્તના જન્મભવનમાં
સંવર્ત્તક પવન આદિ કરે છે, તેમ સમજવું. ૧૭૮

ઉર્ધ્વલોકમાં નિવાસ કરનારી આઠ દિક્કુમારીઓનાં નામ નીચે પ્રમાણે
કહ્યા છે—(૧) મેઘંકરા, (૨) મેઘવતી, (૩) સુમેધા, (૪) મેઘમાલિની, (૫)
તોયધરા, (૬) વિચિત્રા, (૭) પુષ્પમાલા અને (૮) અનિન્દિતા આ આઠે દેવીઓ
નન્દનકૂટ પર નિવાસ કરે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ ણંદણવણકૂડેસુ ” ઇત્યાદિ

આ આઠે દિક્કુમારીઓ અભ્રવર્દલ આદિ કરે છે આ અષ્ટી દિક્કુમારિ-
કાઓ ભવનપતિ નિકાયની દેવીઓ છે. ॥ સૂ. ૫૫ ॥

ઈંદા પળ્લતા, ત જહા-સકે જાવ સહસ્રારે ॥ ૨ ॥ એણિ
ળં અટ્ટપહં ઈંદાળં અટ્ટ પરિયાણિયા વિમાળા પળ્લતા, તં જહા-
પાલણ ૧, પુપ્પણ ૨, સોમળસે ૩, સિરિવચ્છે ૪, ણંદાવત્તે ૫,
કામકમે ૬, પીઠ્ઠમળે ૭ વિમલે ૮ ॥ ૩ ॥ સૂ ૦ ૫૬ ॥

છાયા—અષ્ટૌ કલ્પાઃ તિર્યઙ્મિશ્રોપપન્નકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—સૌધર્મો
યાવત્ સહસ્રારઃ ॥ ૧ ॥ એતેષુ ચ્ચલુ અષ્ટસુ કલ્પેષુ અષ્ટૌ ઈન્દ્રાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—શક્રો યાવત્ સહસ્રારઃ ॥ ૨ ॥ એતેષાં ચ્ચલુ અષ્ટાનામિન્દ્રાણામ્ અષ્ટૌ પરિ-
યાનિકાનિ વિમાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—પાલકં ૧, પુષ્પકં ૨, સૌમનસં ૩,
શ્રીવત્સં ૪, નન્દાર્વત્ ૫ કામકમં ૬ પ્રીતિમનઃ ૭ વિમલમ્ ૮ ॥ ૩ ॥ સૂ ૦ ૫૬ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટ કલ્પા ’ ઇત્યાદિ—

તિર્યઙ્મિશ્રોપપન્નકાઃ—અષ્ટસુ દેવલોકેષુ તિર્યઙ્શ્ચોડ્ડ્યુત્પન્નતે ઇતિ તિર્યગ્મિ-
શ્રિશ્રાસ્તિર્યગ્મિશ્રાઃ—સતિર્યઙ્શ્ચો મનુષ્યા ઉપપન્નાઃ—દેવતયા જ્ઞાતા યેષુ તે તથા.

હસ પ્રકાર દિક્કુમારિકાઓંકા નિરૂપણ આઠ સ્થાન રૂપસે કરકે
અવ સૂત્રકાર દિક્કુમારિકાઓંકો દેવજાતીય હોનેસે દેવોંકે કલ્પોંકા
દેવેન્દ્રોંકા ઓર દેવેન્દ્ર વિમાનોંકા કથન કરતે હૈં—

“ અટ્ટકલ્પા તિરિયમિસ્સોવવન્નગા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તિર્યઙ્શ્ચ એવં મનુષ્ય જિન કલ્પોંમેં દેવ રૂપસે ઉત્પન્ન હોતેહૈં એસે
આઠ કલ્પ કહે ગયે હૈં—અનેકે નામ હસ પ્રકારસે હૈં—સૌધર્મ કલ્પ યાવત્
સહસ્રાર કલ્પ ૧ ।

હન્ આઠ કલ્પોંમેં આઠ ઈન્દ્ર કહે ગયે હૈં—જેસે—શક્ર યાવત્
સહસ્રાર હન આઠ ઈન્દ્રોંકે આઠ પારિયાનિક વિમાન કહે ગયે હૈં—

આગલા સૂત્રમાં સૂત્રકારે દિક્કુમારિકાઓનું નિરૂપણ કર્યું. દિક્કુમારી-
ઓને પણ દેવજાતિમાં જ ગણાવી શકાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર-દેવોના કલ્પોનું
દેવેન્દ્રોનું અને દેવેન્દ્ર વિમાનોનું આઠ સ્થાન રૂપે કથન કરે છે—

“ અટ્ટ કલ્પા તિરિયમિસ્સોવવન્નગા પળ્લતા ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—જે કલ્પોમાં તિર્યંચો અને મનુષ્યો દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, એવાં
કલ્પોઆઠ કહ્યાં છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—સૌધર્મ કલ્પથી લઈને સહસ્રાર
કલ્પ પર્યન્તના આઠ કલ્પો અહીં ગ્રહણ કરવા જોઈએ. તે આઠ કલ્પોના
આઠ ઇન્દ્રો કહ્યા છે તેમનાં નામ—શક્રથી લઈને સહસ્રાર પર્યન્તના આઠ
ઇન્દ્રોના નામો અહિંયાં ગ્રહણ કરવા જોઈએ. તે આઠ કલ્પોના આઠ ઇન્દ્રોના
આઠ પારિયાનિક વિમાન છે તે વિમાનોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—

ભૂતાઃ કલ્પા અષ્ટૌ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-સૌધર્મો યાવત્-સંહસ્રારંતિ । એપામણ્ડાનાં તિર્યંકમિશ્રોપપન્નકત્વં તત્રોત્પન્નાનાં પૂર્વમવાપેક્ષયા વોધ્યમિતિ ॥ ૧ ॥ તથા-એતેષુ અષ્ટસુ કલ્પેષુ શક્રાદિસહસ્રારપર્યન્તા અષ્ટૌ ઇન્દ્રા વોધ્યા ઇતિ ॥ ૨ ॥ તથા-એતેષાં શક્રાદિસહસ્રારાન્તાનામિન્દ્રાણાં પારિયાનિકાનિ-પરિયાયતે=ગમ્યતે ચૈસ્તાનિ પારિયાનામિ, તાન્યેવ પારિયાનિકાનિ, ચદ્વા-પરિયાનં=ગમનં પ્રયોજનં યેષાં તાનિ પારિયાનિકાનિ-યાનકારકાભિયોગિકપાલકાદિદેવૈર્જિનદર્શનાદ્યર્થકૃતાનિ વિમાનાનિ અષ્ટૌ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા-પાલકં પુષ્પકમિત્યાદિ ॥ સૂ. ૫૬ ॥

उनके नाम इस प्रकारसे हैं-पालक १, पुष्पक २, सौमनस ३ श्रीवत्स ४ नन्दावर्त्त ५ कामरस ६ प्रीतिमन ७ और विमल ८ यहां प्रथम यावत् शब्दसे " ऐशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक एवं महाशुक " इन देवलोंकोका ग्रहण हुआ है जो नाम इन कल्पोंके हैं-वेही नाम उनके इन्द्रोंके हैं सौधर्म कल्पके इन्द्रका नाम शक्र है। इन आठ कल्पोंमें जो तिर्यङ् मिश्रोपपन्नकनां कही गई है वह वहां पर उत्पन्न हुआके पूर्व भवकी अपेक्षासे कही गई है। इन्द्र जिन विमानोंमें बैठकर भगवानके दर्शनोंको आता जाता रहता है वे पारियानिक विमान हैं। इन विमानोंकी रचना आभियोगिक (नौकर देव) जातिके देव करते हैं। भगवानके पाँचों कल्याणकोमें इन्द्र इन विमानोंमें बैठकर जाता है। ये विमान आठ कहे गये हैं ॥ सू० ५६ ॥

(૧) પાલક, (૨) પુષ્પક, (૩) સૌમનસ, (૪) શ્રીવત્સ, (૫) નન્દાવર્ત (૬) કામરસ, (૭) પ્રીતિમન અને (૮) વિમલ. આ સૂત્રમાં પહેલા 'પર્યન્ત' પદ દ્વારા નીચેનાં કલ્પોનાં નામ ગ્રહણ કરાયા છે-ઐશાન, સનત્કુમાર, માહેન્દ્ર, બ્રહ્મલોક, લાન્તક અને મહાશુક. આ કલ્પોના ઇન્દ્રોનાં નામ પણ કલ્પોનાં નામ જેવાં જ છે. સૌધર્મ કલ્પના ઇન્દ્રનું નામ 'શક્ર' છે.

આ આઠ કલ્પોમાં જે તિર્યંગ મિશ્રોપપન્નકતા કહેવામાં આવી છે, તે ત્યાં ઉત્પન્ન થયેલા દેવોના પૂર્વભવની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવી છે, તે ત્યાં ઉત્પન્ન થયેલા દેવોના પૂર્વભવની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવેલ છે. એટલે કે તિર્યંગ અને મનુષ્યભવનું આયુષ્ય પૂરું કરીને જીવે. ઉત્પન્ન થતા હોય છે. જે વિમાનમાં બેસીને ઇન્દ્ર અહંત ભગવાનના દર્શન કરવા માટે જાય છે અને દર્શન કરીને પાછા ફરે છે, તે વિમાનનું નામ પારિયાનિક વિમાન છે. આ વિમાનોની રચના આભિયોગિક (નોકર જાતિના દેવો) કરે છે. ભગવાન અહંતના પાંચે કલ્યાણકોમાં જવા માટે ઇન્દ્ર આ વિમાનનો ઉપયોગ કરે છે. એવાં પારિયાનિક વિમાનો આઠ કહ્યા છે. ॥ સૂ. ૫૬ ॥

દેવત્વં ચ જીવાસ્તપશ્વરણાત્માપ્નુવન્તીતિ તપોવિશેષમેવાહ—

મૂલમ્—અટ્ટમિયાણં મિક્ખુપડિમા ચડસઢીય રાઙ્ગિણ્હિં
દોહિય અઢાસીણ્હિં મિક્ખાસણ્હિં અહાસુત્તં જાવ અણુપાલિ-
યાવિ ભવઙ્ગ ॥ સૂ. ૫૭ ॥

છાયા—અષ્ટાષ્ટમિકા સલ્લ મિક્ખુપતિમા ચતુષ્ષષ્ટયા રાત્રિન્દિવૈર્દ્વાભ્યાં
ચ અષ્ટાશીત્યા મિક્ષાશતાભ્યાં યથાસૂત્રં યાવત્ અનુપાલિતાઽપિ ભવતિ । સૂ. ૫૧।

ટીકા—‘ અટ્ટમિયાણં ’ इत्यादि—

અષ્ટાષ્ટમિકા—અષ્ટૌ અષ્ટમાનિ દિનાનિ યસ્યાં સા તથાભૂતા—મિક્ખુપતિમા=
સાધુનામભિગ્રહવિશેષઃ ચતુષ્ષષ્ટયા=ચતુષ્ષષ્ટિસંખ્યકૈ રાત્રિન્દિવૈઃ=અહોરાત્રૈઃ,
દ્વાભ્યાં ચ અષ્ટાશીત્યા મિક્ષાશતાભ્યામ્=અષ્ટાશીત્યધિકદ્વિશતસંખ્યાભિર્ભક્ત-

‘ જીવ દેવત્વ પદોંકો તપસ્યાસે પ્રાપ્ત કરતે હૈં ’ અતઃ અથ સૂત્રકાર
તપોવિશેષકા કથન કરતે હૈં—

“ અટ્ટમિયાણં મિક્ખુપડિયા ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—આઠ અષ્ટકોં દ્વારા આરાધના કરને યોગ્યમિક્ખુ પ્રતિમા ૬૪
રાતદિનોંકી ૨૮૮મિક્ષાઓંસે સૂત્રકે અનુસાર યાવત્ અનુપાલિત હોતી હૈ।

તાત્પર્ય હસ કથનકા હસ પ્રકારસે હૈ—સાધુજનોંકા જો અભિગ્રહ
વિશેષ હૈ વહી મિક્ખુપતિમા રૂપસે યહાં પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ યદપિ
હસ મિક્ખુ પ્રતિમામેં પ્રથમ અષ્ટકકે પ્રથમ દિનસે લેકર આઠવેં દિન
તક ભક્તકી એવં પાનીકી એક એક દત્તિકી વૃદ્ધિકે અનુસાર આઠવેં
દિન ૮ દત્તિયાં પાનીકી ઓર ૮ દત્તિયાં અન્નકી હો જાતી હૈં અર્થાત્

અથ તપસ્થાના પ્રભાવથી દેવ પર્યાયની પ્રાપ્તિ કરે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર
તપો વિશેષનું કથન કરે છે—“ અટ્ટમિયાણં મિક્ખુપડિમા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—આઠ અષ્ટકોં દ્વારા આરાધના કરવા યોગ્ય મિક્ખુપ્રતિમા ૬૪
રાતદિનોની ૨૮૮ મિક્ષાઓ વડે સૂત્ર અનુસાર આરાધિત થાય છે—

આ સૂત્રનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—સાધુઓના અભિગ્રહ વિશેષને
જ અહીં મિક્ખુપ્રતિમા રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. આ મિક્ખુપ્રતિમાની
આરાધના કરનાર સાધુ પહેલા અષ્ટક (આઠ દિન) માં પહેલા દિવસથી લઈને
આઠમા દિવસ સુધી એક એક દત્તિ આહારની અને એક એક દત્તિ પાણીની
વધારતાં વધારતાં આઠમે દિવસે, આઠ દત્તિ આહારની અને આઠ દત્તિ
પાણીની ગ્રહણ કરે છે. એટલે કે પ્રથમ અષ્ટકના પહેલા દિવસે એક

દત્તિમિથ્ર યથામૂર્ત્ય=સૂત્રનિર્દિષ્ટવિધ્યનુસાર, યાવત્પદેન-‘અહાક્રમ્પ અહામમ્પ અહાતત્ત્વં અહામમ્પ કાણં ફાસિયા પાન્નિયા સોહિયા તોગિયા કિટ્ટિયા આરા-
હિયા આણા’ છાયા--યથાકલ્પં યથામાર્ગં યથાતત્ત્વં યથાસામ્યં કાયેન ગૃપ્ટા
પાલિતા શોધિતા તીરિતા કીર્તિતા આરાધિતા આજ્ઞયા-इति संग्रहः, તત્ત્વ-યથા
કલ્પં-કલ્પં=સ્થવિરાદિકલ્પમ્ અનતિક્રમ્ય-કલ્પાનુસારમિત્યર્થઃ, યથામાર્ગં=
જ્ઞાનદર્શન-ચારિત્રલક્ષણમોક્ષમાર્ગનતિક્રમેણ ક્ષયોપશમમાવાનતિક્રમેણ વા, યથા-
તત્ત્વં=તત્ત્વાનતિક્રમેણ, ‘યથાતથ્યમ્’ इतिच्छायापक्षे-સત્યાનુસારં, યથાસામ્યં=
સમમાવમનતિક્રમ્ય-સુષ્ટુપરારેણ કર્મનિર્જરણમાવનયેત્યર્થઃ, કાયેન=ગીરેણ
સ્પૃષ્ટા=ત્રુચિતકાલે સવિધિયદ્વિગ્નાત્, ન તુ મનોરથમાત્રેણ, પાન્નિયા-વારં વાર-
મુપયોગેન તત્પરતયા પાલનાવિપયીકૃતાઃ શોધિતા પારણકુદિને ગુર્યાદિ દત્તાવ-
શિષ્ટભોજનાત્, અતિવારપદ્મજ્ઞાલનાદ્ વા, તીરિતા-ર્ણેઽપિ તદ્વર્ગો મ્બલકા-
લાવરથાનાત્, કીર્તિતા-પારણાદિને-‘અયમયં ચ અભિગ્રહવિશેષઃ કૃત્વ આસીત્
અસ્યાં પ્રતિમાયાં, સચારાધિત્વ એવાધુના, પારિતપ્રતિમોઽહ’-મિતિ ગૃહસમથં
કીર્તનાત્, એવ ચ આરાધિતા=એભિઃ સમસ્તૈઃ પ્રકારૈર્નિર્દિષ્ટાં નીત્તા, અત એવ-
આજ્ઞયા=જિનાત્તયા અનુવાજિતાઽપિ ભવતીતિ । અત્રેદં બોધ્યમ્-પ્રથમાષ્ટકમયમ-
દિવસે એકા દત્તિ ભક્તરય એકા પાનકસ્ય, દ્વિતીયે દિવસે દ્વે દત્તી ભક્તસ્ય દ્વે
પાનકસ્ય, તૃતીયે તિસ્રો દત્તયો ભક્તસ્ય તિસ્રઃ પાનકસ્ય, इत्येवं क्रमेण प्रति-

પ્રથમ અષ્ટકકે પ્રથમ દિવસમેં એક દત્તિ ભક્તની ઓર એક દત્તિ પાનીની,
દ્વિતીય દિન ૨ દત્તિ ભક્તની ઓર ૨ દત્તિયાં પાનીની, ત્રીસરા દિનમેં
૩ દત્તિયાં અન્નની ઓર ૩ દત્તિયાં પાનીની, ચતુર્ય દિન ચાર દત્તિયાં
ભક્તની ઓર ચાર દત્તિયાં પાનીની, પાંચવેં દિન પાંચ દત્તિયાં ભક્તની
ઓર પાંચ દત્તિયાં પાનીની, છઠે દિન ૬ દત્તિયાં ભક્તની ઓર છઠ
દત્તિયાં પાનીની ૭વેં દિન, દત્તિયાં ભક્તની ઓર ૭ દત્તિયાં
પાનીની એવં આઠવેં દિન ૮ દત્તિયાં ભક્તની આઠ દત્તિયાં
પાનીની હસ પ્રકારસે યે સત્ત્વ દત્તિયાં ભક્ત ઓર પાનીની, પ્રથમ અષ્ટકમેં

દત્તિ આહારની અને એક દત્તિ પાણીની, બીજે દિવસે બે દત્તિ આહારની અને
બે દત્તિ પાણીની ત્રીજે દિવસે ત્રણ દત્તિ આહારની અને ત્રણ દત્તિ પાણીની, ચોથે
દિવસે ચાર દત્તિ આહારની અને ચાર દત્તિ પાણીની, પાંચમે દિવસે પાંચ દત્તિ
આહારની અને પાંચ દત્તિ પાણીની છઠ્ઠે દિવસે છ દત્તિ આહારની અને છ
દત્તિ પાણીની, સાતમે દિવસે સાત દત્તિ આહારની અને સાત દત્તિ પાણીની, અને
આઠમે દિવસે આઠ દત્તિ આહારની અને આઠ દત્તિ પાણીની થકલુ કદે-છ.

દિનમેકૈકદત્તિષ્ટદ્વયાઽષ્ટમે દિવસે અષ્ઠૌ દત્તયો ભક્તસ્ય અષ્ઠૌ દત્તયઃ પાનક-
સ્યેત્યેકસ્મિન્નષ્ટકે પદ્ત્રિંશદ્દત્તયો ભક્તસ્ય પદ્ત્રિંશદ્દત્તયઃ પાનકસ્ય ચ મદન્તિ ।
અંવં ક્રમેણૈવ દ્વિતીયાદિષ્વપ્યષ્ટકેષુ પ્રત્યેકમષ્ટકે પદ્ત્રિંશત્પદ્ત્રિંશદ્દત્તયો ભક્ત-
પાનયો વૉન્ધ્યા ઇતિ અષ્ટસ્વપ્યષ્ટકેષુ અષ્ટાશીત્યધિકે દ્વેશતે ભક્તસ્ય દત્તયઃ,
તાવત્ય એવ પાનકસ્ય, પરન્તુત્ર પાનકસ્ય દત્તયોઽવિવક્ષિતા વોધ્યાઃ । યદ્વા-
પ્રથમેઽષ્ટકે પ્રતિદિવસમેકૈકા દત્તિર્ભક્તસ્ય એકૈકા પાનકસ્ય, દ્વિતીયેઽષ્ટકે
પ્રતિદિવસં દ્વે દ્વે દત્તો ભક્તસ્ય, દ્વે દ્વે પાનકસ્ય, અંવં ક્રમેણ પ્રત્યષ્ટકે એકૈકા

૩૬-૩૬ હોતી હૈં, હસી ક્રમસે દ્વિતીય આદિ અષ્ટકોંમેંસે પ્રત્યેક અષ્ટકમેં
છત્તીસ ભક્તકી ૩૬ પાનીકી દત્તિયાં હોતી હૈ, હસ ક્રમસે હન સચકા
જોડ ૨૮૮-૨૮૮ હોતા હૈ, પરન્તુ યહાં પર જો ૨૮૮ ભિક્ષાઓંસે વહ
અનુપાલિત હોતી હૈ એસા જો કહા ગયા હૈ, વહ કેવલ ભક્તકી દત્તિ-
યોંકો લેકર હી કહા ગયા હૈ પાનીકી દત્તિયોંકો લેકર નહીં.
કયોંકિ યહાં પર ડનકી વિવક્ષા નહીં હુઈ હૈ, યદ્વા-પ્રથમ અષ્ટકમેં
પ્રતિદિન એક એક દત્તિ ભક્તકી ઓર એક ૨ દત્તિ પાનીકી દ્વિતીય
અષ્ટકમેં ૨-૨ દત્તિયાં ભક્તકી ઓર ૨-૨ દત્તિયાં પાનીકી, તૃતીય-
અષ્ટકમેં પ્રતિદિન ૩-૩ દત્તિયાં ભક્તકી ઓર ૩-૩ દત્તિયાં પાનીકી,
ચતુર્થ અષ્ટકમેં પ્રતિદિન ૪-૪ દત્તિયાં ભક્તકી ઓર ચાર-ચાર દત્તિયાં
પાનીકી, પંચમ અષ્ટકમેં ૫-૫ દત્તિયાં ભક્તકી ઓર ૫-૫ દત્તિયાં

. આ રીતે પહેલા અષ્ટકમાં બધી મળીને આહારની ૩૬ દત્તિઓ અને પાણીની
પણ ૩૬ દત્તિઓ થાય છે. આ રીતે આઠે અષ્ટકમાં આહારની કુલ ૩૬ x ૮
= ૨૮૮ દત્તિઓ અને પાણીની પણ ૨૮૮ દત્તિઓ થાય છે. આ રીતે આહાર
અને પાણીની કુલ દત્તિઓ ૨૮૮ + ૨૮૮ = ૫૭૬ થાય છે. અહીં સૂત્રમાં એવું
જે કહેવામાં આવ્યું છે કે ૨૮૮ ભિક્ષાઓ વડે આ પ્રતિમાની આરાધના થાય
છે, તે માત્ર દત્તિઓને અનુલક્ષીને જ કહેવામાં આવ્યું છે-પાણીની દત્તિઓને
અહીં ગણતરીમાં લેવામાં આવી નથી, કારણ કે અહીં પાણીની દત્તિઓની
વિવક્ષા કરવામાં આવી નથી.

અથવા પ્રથમ અષ્ટકમાં (આઠ દિવસમાં) દરરોજ એક એક દત્તિ આહાર-
ની અને એક એક દત્તિ પાણીની, બીજા અષ્ટકમાં પ્રતિદિન બળે દત્તિ
આહારની અને બળે દત્તિ પાણીની, ત્રીજા અષ્ટકમાં પ્રતિદિન ત્રણત્રણ
દત્તિ આહારની અને ત્રણ ત્રણ દત્તિ પાણીની ચોથા અષ્ટકમાં પ્રતિદિન ચાર
ચાર દત્તિ આહારની અને ચાર ચાર દત્તિ પાણીની, પાંચમાં અષ્ટકમાં પ્રતિ
દિન પાંચ પાંચ દત્તિ આહારની અને પાંચ પાંચ દત્તિ પાણીની, છઠ્ઠા અષ્ટ-

દત્તિવૃદ્ધ્યાઽષ્ટમેઽષ્ટકે પ્રતિદિવસમષ્ટૌ દત્તયો ભક્તસ્ય અષ્ટૌ દત્તયઃ પાનકસ્ય
ચ ભવન્તીતિ । અત્ર પક્ષેઽપિ ભક્તપાનદત્તિસંખ્યાઃ પૂર્વોક્તા एव । પાનકદત્તયોઽ-
ગ્રાઽપ્યવિવક્ષિતા બોધ્યા इति ॥ મૂં ૫૭ ॥

તપોઽનુષ્ઠાયકાશ્ચ જીવા એવેતિ જીવાધિકારાત્ સર્વજીવાનાહ—

મૂલમ્—અટ્ટવિહા સંસારસમાવન્નગા જીવા પળ્લન્તા, તં
જહા—પઢમસમયનેરહયા ૧, અપઢમસમયનેરહયા ૨, એવં જાવ
અપઢમસમય દેવા ૮ ॥ ૧ ॥ અટ્ટવિહા સઘ્વજીવા પળ્લન્તા, તં
જહા—નેરહયા ૧, તિરિક્ખજોણિયા ૨, તિરિક્ખજોણિણીઓ ૩,
મળ્ણુસ્સા ૪, મળ્ણુસ્સીઓ ૫, દેવા ૬, દેવીઓ ૭, સિદ્ધા ૧૩ ॥
અહવા—અટ્ટવિહા સઘ્વજીવા પળ્લન્તા, તં જહા—આભિંણિબોહિ-
યણાણી ૧ જાવ કેવલનાણી ૪ મહ્ અન્નાણી ૬, સુયઅન્નાણી
૭, વિભંગણાણી ૮ ॥ ૩ ॥ સૂં ૫૮ ॥

પાનીકી, છઠે અષ્ટકમેં છ-છ દત્તિયાં પ્રતિદિન ભક્તકી ઓર છ-છ
દત્તિયાં પાનીકી સાતવેં અષ્ટકમેં ૭-૭ દત્તિયાં પ્રતિદિન ભક્તકી ઓર
૭-૭ દત્તિયાં પાનીકી એવં આઠવેં અષ્ટકમેં ૮-૮ દત્તિયાં પ્રતિદિન ભક્તકી
ઓર ૮-૮ દત્તિયાં પાનીકી હસ પ્રકારસે મી ૨૮૮ દત્તિયાં પાનીકી ઓર
૨૮૮ દત્તિયાં ભક્તકી હો જાતીહેં । હસ પ્રકારકે કથનમેં પ્રથમ અષ્ટકકી
૮ દત્તિયાં દોનોંકી હોતીહેં, દ્વિતીય અષ્ટકકી ૧૬ દત્તિયાં હોતીહેં, તૃતીય
અષ્ટકકી ૨૪ દત્તિયાં હોતીહેં ચતુર્થ અષ્ટકકી ૩૨ દત્તિયાં હોતીહેં
પંચમ અષ્ટકકી ૪૦ દત્તિયાં હોતીહેં । છઠે અષ્ટકકી ૪૮ દત્તિયાં હોતી
હેં ૭ વેં અષ્ટકકી ૫૬ દત્તિયાં હોતીહેં ઓર આઠવેં અષ્ટકકી ૬૪ દત્તિયાં
હોતીહેં હન સઘ્વકા જોડ ૨૮૮ હો જાતા હૈ, હસ તરહકે કથનમેં મી
પાનીકી દત્તિયોંકી વિવક્ષા નહીં કી ગઈ હૈ ॥ સૂત્ર ૫૭ ॥

ક્રમાં પ્રતિદિન છ-છદત્તિ આહારની અને છ-છ દત્તિ પાણીની, સાતમાં અષ્ટકમાં
પ્રતિદિન સાત સાત દત્તિ આહારની અને સાત સાત દત્તિ પાણીની અને આઠમાં
અષ્ટકમાં પ્રતિદિન આઠઆઠ દત્તિ આહારની અને આઠ આઠ દત્તિ પાણીની ગ્રહણ
કરવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે પહેલા અષ્ટકની કુલ ૮, બીજા અષ્ટકની કુલ ૧૬,
ત્રીજા અષ્ટકની કુલ ૨૪, ચોથા અષ્ટકની કુલ ૩૨, પાંચમાં અષ્ટકની કુલ ૪૦,
છઠ્ઠા અષ્ટકની કુલ ૪૮, સાતમા અષ્ટકની કુલ ૫૬ અને આઠમાં અષ્ટકની કુલ
૬૪ દત્તિઓ થાય છે. આ રીતે આઠે અષ્ટકની મજીને આહારની કુલ ૨૮૮
દત્તિઓ થાય છે. આ પ્રકારના કથનમાં પણ પાણીની ૨૮૮ દત્તિઓની વિવક્ષા
થઈ નથી એમ સમજવું. ॥ સૂ. ૫૭ ॥

છાયા--અષ્ટવિધાઃ સંસારસમાપન્નકા જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-પ્રથમસમય-
નૈરયિકાઃ ૧, અપ્રથમસમયનૈરયિકાઃ ૨, एवं यावत् अप्रथमसमयदेवाः ૮ ॥ ૧ ॥
અષ્ટવિધાઃ સર્વજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-નૈરયિકાઃ ૧, તિર્યગ્યોનિકાઃ ૨, તિર્ય-
ગ્યોનિકાઃ ૩, મનુષ્યાઃ ૪, મનુષ્યઃ ૫, દેવાઃ ૬ દેવ્યઃ ૭, સિદ્ધાઃ ૮ ॥ ૨ ॥
અથવા-અષ્ટવિધાઃ સર્વજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-આભિનિવોધિકજ્ઞાની ૧ યાવત્
કેવલજ્ઞાની ૫ મત્યજ્ઞાની ૬, શ્રુતાજ્ઞાની ૭, વિભક્તજ્ઞાની ૮ ॥ સૂ ૦ ૫૮ ॥

તપકા અનુઠાન કરનેવાંલા જીવ હી હોતે હૈં હસલિલે જીવકે
અધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકાર સર્વ જીવોંકા કથત કરતે હૈં—

“ અઢ્ઢવિહા સંસારસમાવન્નગા જીવા પળ્ળત્તા ” હત્યાદિ

સૂત્રાર્થ-સંસાર સમાપન્નક જીવ આઠ પ્રકારકે કહે ગયેહૈં । જૈસે પ્રથમ
સમય નૈરયિક ૧, અપ્રથમ સમય નૈરયિક ૨, પ્રથમ સમય તિર્યગ્યોનિક
૩, અપ્રથમસમયતિર્યગ્યોનિક ૪, પ્રથમસમયમનુષ્ય ૫, અપ્રથમ-
સમયમનુષ્ય ૬ પ્રથમસમયદેવ ૭ ઓર અપ્રથમસમય દેવ ૮ (૧)
સમસ્ત જીવ આઠ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં જૈસે-નૈરયિક ૧ તિર્યગ્યોનિક
૨ તિર્યગ્યોનિકા ૩ મનુષ્ય ૪ માનુષી ૫ દેવ ૬ દેવિયાં ૭ एवं सिद्ध ૮
અથવા સર્વ જીવઆઠ પ્રકારકે કહે ગયેહૈં જૈસે-આભિનિવોધિકજ્ઞાની ૧
યાવત્ કેવલજ્ઞાની ૫, મત્યજ્ઞાની ૬, શ્રુતાજ્ઞાની ૭ ઓર વિભક્તજ્ઞાની ૮

તપત્તુ અનુઠાન હવેા દ્વારા જ થાય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના
સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર સમસ્ત હવેાનું આઠ સ્થાન રૂપે કથન કરે છે—

“ અઢ્ઢવિહા સંસારસમાવન્નગા જીવા પળ્ળત્તા ” હત્યાદિ—

સૂત્રાર્થ-સંસાર સમાપન્નક હવેાના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧)
પ્રથમ સમય નૈરયિક, (૨) અપ્રથમ સમય નૈરયિક, (૩) પ્રથમ સમય તિર્ય-
ગ્યોનિક, (૪) અપ્રથમ સમય તિર્યગ્યોનિક, (૫) પ્રથમ સમય મનુષ્ય (૬)
અપ્રથમ સમય મનુષ્ય. (૭) પ્રથમ સમય દેવ, અને (૮) અપ્રથમ સમય દેવ.

સમસ્ત હવેાના આ પ્રમાણે પણ આઠ પ્રકાર પડે છે—(૧) નૈરયિક,
(૨) તિર્યંચ, (૩) તિર્યંચિણી. (૪) મનુષ્ય, (૫) માનુષી (સ્ત્રી), (૬) દેવો,
(૭) દેવીઓ અને (૮) સિદ્ધો.

સમસ્ત હવેાના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર પણ પડે છે—(૧) આભિનિવો-
ધિકજ્ઞાની (૨) શ્રુતજ્ઞાની અને અવધિજ્ઞાની, (૪) મનઃપર્યયજ્ઞાની, (૫) કેવલજ્ઞાની,
(૬) મત્યજ્ઞાની, (૭) શ્રુતાજ્ઞાની અને (૮) વિભંગજ્ઞાની.

ટીકા--‘અષ્ટવિદ્યા’ હત્યાદિ--

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નવરં-પ્રથમસમયનૈરયિકાઃ=નૈરયિકત્વસ્ય પ્રથમે સમયે વર્તમાનાઃ । તદ્ભિન્નાસ્તુ અપ્રથમસમયનૈરયિકાઃ । એવમેવ પ્રથમસમયતિર્યગ્ચો-
નિકાદ્યપ્રથમસમયદેવાન્તા અપિ વોધ્યાઃ । અત્ર-યાવત્પદેન-‘પ્રથમસમયતિર્ય-
ગ્ચોનિકાઃ, અપ્રથમસમયતિર્યગ્ચોનિકાઃ, પ્રથમસમયમનુષ્યાઃ, અપ્રથમસમયમનુષ્યાઃ
પ્રથમસમયદેવાઃ’ इति पदानां संग्रहः ॥ १ ॥ तथा-सर्वजीवाः-सर्वे च ते
जीवाश्चेति, संसारिणः सिद्धाश्चेत्यर्थः । ते जीवा अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-
नैरयिका इत्यादि । तत्र-नैरयिका इत्येको भेदः । स्त्रीपुरुषभेदेन द्वौ तिर्यग्भेदौ ।
एवमेव द्वौ मनुष्यभेदौ, द्वौ देवभेदौ, एकश्च सिद्धभेद इति ॥ २ ॥ अथवा-प्रका-
रान्तरेण सर्वजीवा अष्टविधा वोध्याः । ते हि-आभिनिवोधिकज्ञानी १, श्रुत-

ટીકાર્થ-નૈરયિક અવસ્થાકે પ્રથમ સમયમે વર્તમાન જો જીવહેં વે પ્રથમ
સમય નૈરયિક હેં ૧ ઓર इनसे भिन्न जो जीव हैं वे अप्रथम समय
नैरयिक हैं । इसी तरहसे प्रथमसमयतिर्यग्योनिक, अप्रथमसमय
तिर्यग्योनिक आदि जीव भी समझ लेना चाहिये इस प्रकारसे भी
समस्त जीव आठ प्रकारके कहे गये हैं-जैसे नैरयिक यह एकही भेद
है इसमें पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ये दो लिङ्ग नहीं होते हैं । स्त्रीलिङ्ग
तिर्यञ्च और पुल्लिङ्ग पुरुष-तिर्यञ्चके भेदसे तिर्यञ्चके दो भेद हैं इसी
तरहसे स्त्रीलिङ्ग मनुष्य और पुल्लिङ्ग पुरुष-मनुष्यके भेदसे मनुष्यके
दो भेद हैं इसी तरह स्त्री देव और पुल्लिङ्ग देवके भेदसे देवके दो
भेद होते हैं इस प्रकारसे यहाँ तक सात भेद हो जाते हैं और एक

ટીકાર્થ-હવે પ્રથમ સમય નૈરયિક આદિનો ભાવાર્થ સમજાવવામાં આવે છે-જે
ભવ નૈરયિક અવસ્થાના પ્રથમ સમયમાં વર્તમાન હોય છે તેને પ્રથમ સમય
નૈરયિક કહે છે તે સિવાયના જે નારકો હોય છે તેમને અપ્રથમ સમય નૈર-
યિક કહે છે. એજ પ્રમાણે પ્રથમ સમય તિર્યગ્ચોનિક, અપ્રથમ સમય તિર્ય
ગ્ચોનિક આદિ ભવો વિષે પણ સમજવું.

ખીજી રીતે સમસ્ત ભવોના જે આઠ ભેદો કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ
નીચે પ્રમાણે છે.

નૈરયિકોમાં નરજાતિ અને નારી જાતિ રૂપ ભેદો હોતા નથી. બધાં
નૈરયિકો નપુંસકલિંગના (નાન્યેતર જાતિના) જ હોય છે. તિર્યગ્ચોમાં નરજાતિ
અને નારીજાતિ રૂપ બે ભેદો હોય છે. મનુષ્યોમાં પણ નરજાતિ અને નારી-
જાતિ રૂપ બે ભેદો હોય છે. એજ પ્રમાણે દેવોમાં પણ નર અને નારીજાતિ
રૂપ ભેદો (દેવો અને દેવીઓ) હોય છે. સિદ્ધ ભવોમાં નરજાતિ અને નારી

જ્ઞાની ૨, અધિજ્ઞાની ૩ મનઃપર્યવજ્ઞાની ૪, કેવલજ્ઞાની ૫, મત્યજ્ઞાની ૬, શ્રુતા-
જ્ઞાની ૭, વિમજ્જ્ઞાનીતિ ૮ ॥ સૂ ૦ ૫૭ ॥

અનન્તરસૂત્રે જ્ઞાનિન ઉક્તાઃ, તે ચ સંયમયુક્તા અપિ ભવન્તીતિ સંયમમષ્ટ-
સ્થાનત્વેનાહ—

મૂલમ્—અષ્ટવિદ્ધે સંજમે પળળત્તે, તં જહા-પઢમસમયસુહુ-
મસંપરાયસરાગસંજમે ૧, અપઢમસમયસુહુમસંપરાયસરાગસં-
જમે ૨, પઢમસમયવાદરસંપરાયસંજમે ૩, અપઢમસમયવાદર-
સંપરાયસંજમે ૪, પઢમસમયઊવસંતકસાયવીયરાગસંજમે ૫,
અપઢમસમયઊવસંતકસાયવીયરાગસંજમે ૬, પઢમસમયક્ષીણ-
કસાયવીયરાગસંજમે ૭, અપઢમસમયક્ષીણકસાયવીયરાગસં-
જમે ૮ ॥ સૂ ૦ ૫૮ ॥

છાશા—અષ્ટવિધઃ સંયમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પ્રથમસમયસૂક્ષ્મસમ્પરાયસરાગ-
સંયમઃ ૧, અપ્રથમસમયસૂક્ષ્મસંપરાયસરાગસંયમઃ ૨, પ્રથમસમયવાદરસંપરાયસં-
યમઃ ૩, અપ્રથમસમયવાદરસંપરાયસંયમઃ ૪, પ્રથમસમયોપશાન્તકપાયવીતરાગ-
સંયમઃ ૫, અપ્રથમસમયોપશાન્તકપાયવીતરાગસંયમઃ ૬, પ્રથમસમયક્ષીણકપાય-
વીતરાગસંયમઃ ૭, અપ્રથમસમયક્ષીણકપાયવીતરાગસંયમઃ ૮ ॥ સૂ ૦ ૫૮ ॥

સિદ્ધ જીવ મિલાકર જીવકે આઠ ભેદ હો જાતેહૈ અથવા—પૂર્વોક્ત રૂપસે
આભિનિબોધિક જ્ઞાની આદિકે ભેદસે જીવકે આઠ ભેદ કહે ગયેહૈ સૂ. ૫૨

અનન્તર સૂત્રમેં જો જ્ઞાની જીવ કહે ગયે હૈં વે સંયમ યુક્ત મી
હોતે હૈં—ઈસલિયે અંબ સૂત્રકાર આઠ સ્થાનક રૂપસે સંયમકા કથન

૩૫ લેદો હોતા નથી, તે કારણે તેમનો એક જ લેદ કહ્યો છે. આ રીતે
સમસ્ત જીવોના કુલ આઠ લેદ પડે છે.

પૂર્વોક્ત ૩૫ આભિનિબોધિક જ્ઞાની (મતિજ્ઞાની) આદિનો લેદથી પણ
જીવોના આઠ પ્રકાર પડે છે. ॥ સૂ ૫૨ ॥

આગલા સૂત્રમાં જ્ઞાની જીવોની વાત કરવામાં આવી. જ્ઞાની જીવો સંયમ
યુક્ત પણ હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર આઠ સ્થાનક ૩૫ સંયમયુ-
ક્તિરૂપ કરે છે.

ટીકા—‘ અદ્વિહે સંજમે ’ ઇત્યાદિ—

સંયમઃ=ચારિત્ર, સ સરાગવીતરાગભેદન દ્વિવિધઃ । તત્ર-સરાગસંયમઃ
સૂક્ષ્મસમ્પરાયવાદરસમ્પરાયભેદન દ્વિવિધઃ । દ્વિવિધોઽપ્યયં પ્રથમસમયાપ્રથમસમય-
ભેદન દ્વિવિધ ઇતિ ચતુર્વિધઃ સરાગસંયમઃ । તથા વીતરાગસંયમોઽપિ ઉપશાન્ત-
કષાયક્ષીણકષાયભેદન દ્વિવિધઃ । દ્વિવિધોઽપ્યયં પ્રથમસમયાપ્રથમસમયભેદન

કરતે હૈં—“ અદ્વિહે સંજમે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-સંયમ આઠ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ-જૈસે-પ્રથમસમય સૂક્ષ્મ-
સમ્પરાયસરાગસંયમ ૧, અપ્રથમસમયસૂક્ષ્મસંપરાયસરાગ સંયમ ૨ પ્રથમ-
સમયવાદરસંપરાયસરાગસંયમ ૩, અપ્રથમસમયવાદરસમ્પરાયસરાગ-
સંયમ ૪, પ્રથમસમય ઉપશાન્તકષાય વીતરાગસંયમ ૫ અપ્રથમસમય
ઉપશાન્તકષાયવીતરાગસંયમ ૬ પ્રથમસમયક્ષીણકષાયવીતરાગ સંયમ
૭ एवं અપ્રથમસમયક્ષીણકષાયવીતરાગસંયમ ૮ ।

સંયમ નામ ચારિત્રકા હૈ । યહ સરાગ ઓર વીતરાગકે ભેદસે
દો પ્રકારકા હોતા હૈ । હનમેં જો સરાગસંયમ હૈ વહ સૂક્ષ્મસાંપરાય
ઓર વાદરસાંપરાયકે ભેદસે દો પ્રકાર હૈ । દોનોં પ્રકારકા યહ સંયમ
પ્રથમસમય ઓર અપ્રથમસમયકે ભેદસે દો દો પ્રકારકા કહા ગયા
હૈ । હસ તરહ સરાગસંયમ ચાર પ્રકારકા હો જાતા હૈ । તથા-વીતરાગ
સંયમ મી ઉપશાન્તકષાય ઓર ક્ષીણકષાયકે ભેદસે દો તરહકા
હૈ । યહ મી દોનોં પ્રકારકા સંયમ પ્રથમસમય ઓર અપ્રથમસમયકે

“ અદ્વિહે સંજમે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-સંયમના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પ્રથમ સમય સૂક્ષ્મ
સમ્પરાય સરાગ સંયમ, (૨) અપ્રથમ સમય સૂક્ષ્મ સમ્પરાય સરાગ સંયમ,
(૩) પ્રથમ સમય વાદર સંપરાયસરાગ સંયમ, (૪) અપ્રથમ સમય વાદર સંપરાય
સરાગસંયમ, (૫) પ્રથમ સમય ઉપશાન્ત કષાય વીતરાગ સંયમ (૬) અપ્રથમ સમય
ઉપશાન્ત કષાય વીતરાગ સંયમ, (૭) પ્રથમ સમય ક્ષીણ કષાય વીતરાગ
સંયમ અને (૮) અપ્રથમ સમય ક્ષીણકષાય વીતરાગ સંયમ.

સંયમ ઓઠલે ચારિત્ર. તેના મુખ્ય બે ભેદ છે—(૧) સરાગ સંયમ અને
(૨) વીતરાગ સંયમ. તેમાંના બે સરાગ સંયમ છે તેના બે ભેદ પડે છે—(૧)
સૂક્ષ્મ સાંપરાય અને (૨) વાદર સાંપરાય. આ બંને પ્રકારના સંયમના પ્રથમ
સમય અને અપ્રથમ સમયના ભેદથી બળ્ળે પ્રકાર કહ્યા છે. આ રીતે સરાગ
સંયમના ચાર પ્રકાર થઈ જાય છે. વીતરાગ સંયમના પણ ઉપશાન્ત કષાય
અને ક્ષીણકષાય નામના બે ભેદ પડે છે. આ બંને પ્રકારના સંયમના પણ

દ્વિવિધ इति चतुर्विधो वीतरागसंयमः । इत्थमष्टविधः संयमः प्रज्ञप्तः । अष्टविध-
त्वमेवाह-तद्यथा-इत्यादिना । तत्र-प्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागसंयमः-प्रथमः
समयः प्राप्तौ यस्य स तथा, तथा-सूक्ष्मः-कृशः-संपरायः=संज्वलनलोभलक्षणो
वेद्यमानो यस्मिन् स तथा, तथा-रागेण=अभिष्वङ्गलक्षणेन सहितः स सरागः,
एतद्विशेषणत्रयविशिष्टो यः संयमः स तथेति प्रथमः । द्वितीयभेदोप्येवमेव ।
नवरं-प्रथमसमयस्थानेऽत्राप्रथमसमयः । एतौ द्वावपि भेदौ श्रेणीद्वयापेक्षया
यद्यपि पुनर्द्विभेदाविति चत्वारो भेदा भवन्ति तथापि श्रेणीद्वयापेक्षं भेदद्वयं नो
विवक्षितमिति द्वावेव भेदावत्रोक्तौ, इति ॥ २ ॥ तथा-प्रथमसमयवादरसंपराय-

भेદસે દો પ્રકારકા હો જાતા હૈ इस तरह वीतराग संयम चार प्रकारका
हो जाता है । इस तरह दोनोंकी चतुष्प्रकारता मिलाकर संयमको आठ
प्रकारका कहा गया है । जो संयम रागसे युक्त हो, तथा जिसकी प्राप्तिमें
एक समय हो एवं जिसमें संज्वलन लोभरूप कषाय विद्यमान हो
रहो हो ऐसा इन तीन विशेषणोंवाला जो संयम है वह प्रथम समय
सूक्ष्मसंपरायसरागसंयम है द्वितीय भेद भी ऐसा ही है, परन्तु
यहां पर प्रथमसमयके स्थानमें अप्रथमसमय कहा गया है । ये दोनों
भेद भी दो श्रेणीकी अपेक्षासे यद्यपि दो दो भेदवाले और हो जाते
हैं-इस प्रकारसे इनके चार भेद हो जाते हैं-परन्तु इन भेदोंकी यहां
पर विवक्षा नहीं हुई है । अतः दो भेद ही यहां प्रकट किये गये हैं । २।

પ્રથમ સમય અને અપ્રથમ સમયના ભેદથી બળ્લે પ્રકાર પડે છે. આ રીતે
વીતરાગ સંયમના પશુ ચાર પ્રકાર થઈ બીય છે. આ પ્રકારે બન્નેના ચાર ચાર
પ્રકારો મળીને સંયમના કુલ આઠ પ્રકારો પડે છે. હવે આ દરેક પ્રકારના
સંયમનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે.

પ્રથમ સમય સૂક્ષ્મ સંપરાય સરાગ સંયમ—જે સંયમ રાગથી યુક્ત
હોય છે, જેની પ્રાપ્તિમાં એક સમય થતો હોય છે અને જેમાં સંજ્વલન
લોભરૂપ કષાય વેદ્યમાન થઈ રહ્યો હોય છે, એવાં આ ત્રણ વિશેષણોવાળા
સંયમને પ્રથમ સમયસૂક્ષ્મ સંપરાય કહે છે બીજો ભેદ પશુ ઉપર્યુક્ત
લક્ષણોવાળો જ છે, પરન્તુ અહીં પ્રથમ સમયને બદલે અપ્રથમ સમય કહેવો
જોઈએ. આ બન્ને ભેદો પશુ શ્રેણીદ્વયની અપેક્ષાએ બળ્લે ભેદોથી યુક્ત છે,
અને તે કારણે તે બન્નેના ચાર ભેદ પડે છે, પરન્તુ અહીં તે ભેદોનું વર્ણન
કરવામાં આવ્યું નથી. અહીં તે ભેદો જ પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. ૨।

સંયમ:-પ્રથમસમય:-પ્રથમસમયોપલબ્ધિકાઃ, વાદરસમ્પરાય:-વાદરાઃ = સ્થૂલાઃ
 સમ્પરાયાઃ=સંજ્વલનક્રોધાદયો યસ્મિન્ સ તથાભૂતથ ચઃ સંયમઃ. સ ઇતિ તૃતીયો
 ભેદઃ । ચતુર્થસ્તુ-અપ્રથમસમયવાદરસમ્પરાયસંયમ ઇતિ । एतौ द्वावपि भेदौ श्रेणि-
 द्वयापेक्षया यद्यपि पुनर्द्विभेदाविति चत्वारो भेदा भवन्ति, तथापि श्रेणीद्वया-
 पेक्षं भेदद्वयं नो विवक्षितमिति द्वावेवात्र भेदौ भवत इति । तथा-उपशान्तकषाय-
 क्षीणकषायरूपश्रेणीद्वयापेक्षया वीतरागसंयमो द्विविधः । द्विविधोऽप्ययं प्रथमसम-
 याप्रथमसमयभेदेन द्विविध इति चतुर्विधो वीतराग 'यमः । तमेवाह-प्रथमसमयो-
 पशान्तकषायवीतरागसंयम इत्यादिना ॥ सू० ५८ ॥

જિસ સંયમમે સંજ્વલનકષાય આદિક સ્થૂલ છે, ઓર જિસકી પ્રાપ્તિમે પ્રથમ સમય વાદર સંપરાયસંયમ છે । તથા-ચતુર્થ સંયમ અપ્રથમ સમયવાદરસમ્પરાય સંયમ છે એ દોનોં મી સંયમ દો શ્રેણીકી અપેક્ષાસે યદ્યપિ દો દો ભેદવાલે ઓર હો જાતે હૈ-પર શ્રેણિ દ્વયાપેક્ષા ભેદોંકી યહાં વિવક્ષા નહીં હુઈ છે ફક્તલિયે એ દોહી ભેદ પ્રકટ કિયે ગયે હૈ । તથા-ઉપશાન્તકષાય એવં ક્ષીણકષાય રૂપ શ્રેણી દ્વયકી અપેક્ષાસે વીતરાગ સંયમ મી દો પ્રકારકા હોતા છે યહ દોનોં મી પ્રકારકા સંયમ પ્રથમસમય ઓર અપ્રથમસમયકે ભેદસે દો દો પ્રકારકા હો જાતા હૈ, ફક્ત તરહ વીતરાગ સંયમ ચાર પ્રકારકા પ્રકટ કિયા ગયા છે । યહી બાત 'પ્રથમસમયોપશાન્તકષાયવીતરાગસંયમઃ' ઇત્યાદિ દ્વારા કહી ગઈ હૈ ॥ સૂ० ૫૮ ॥

સંયમી જીવ પૃથિવીકે જગર હોતે હૈ અતઃ અવ સૂત્રકાર આઠ

પ્રથમ બાદર સંપરાય સંયમ-જે સંયમમાં સંજ્વલન કષાય આદિ સ્થૂલ હોય છે અને જેની પ્રાપ્તિમાં પ્રથમ સમય હોય એવો જે સંયમ છે તેનું નામ પ્રથમ સમય બાદર સંપરાય સંયમ છે. તથા એથો ભેદ અપ્રથમ સમય બાદર સંપરાય સંયમ છે. આ બંને સંયમના પણ શ્રેણીદ્વયની અપેક્ષાએ ભેદોની વિવક્ષા થઈ નથી, તેથી અહીં ઉપર્યુક્ત બે ભેદો જ પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે.

તથા-ઉપશાન્ત કષાય અને ક્ષીણ કષાય રૂપ શ્રેણીદ્વયની અપેક્ષાએ વીતરાગ સંયમ પણ બે પ્રકારનો કહ્યો છે આ બંને પ્રકારના સંયમના પણ પ્રથમ સમય અને અપ્રથમ સમય નામના બળે ભેદો પડે છે. આ રીતે વીતરાગ સંયમના કુલ ચાર ભેદ પડે છે. એજ વાત સૂત્રકારે "પ્રથમસમયોપશાન્ત-કષાયવીતરાગસંયમઃ" ઇત્યાદિ સૂત્રપદ દ્વારા પ્રકટ કરી છે. ॥ સૂ ૫૮ ॥

સંયમી એવો પૃથ્વીની ઉપર હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આઠ ભેદ

સંયમિનશ્ચ પૃથિવ્યુપરિ ભવન્તીતિ પૃથિવીમષ્ટવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—અટ્ટ પુઢવીઓ પળણત્તાઓ, તં જહા—રયળપ્પમા ૧
જાવ અહે સત્તમા ૭, ઈસિપબ્ભારા ૮ ॥ સૂ. ૬૯ ॥

છાયા—અષ્ટ પૃથિવ્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—રત્નપ્રમા ૧ યાવત્ અધઃ સપ્તમી ૭
ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા ૮ ॥ સૂ. ૫૯ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટ પુઢવીઓ ’ इत्यादि—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ સૂ. ૫૯ ॥

પ્રક્રાન્તાયા ઈષ્ટપ્રાગ્ભારપૃથિવ્યાપ્રમાણઃ નામાનિ વાહ—

મૂલમ્—ઈસિપબ્ભારાણ પાં પુઢવીણ બહુમઞ્જ્ઞદેસમાણ અટ્ટ-
જોયણિણ સ્વેત્તે અટ્ટ જોયણાઈં વાહલ્લેણં પળણત્તે ॥ ૧ ॥ ઈસિ-
પબ્ભારાણ પાં પુઢવીણ અટ્ટ નામધેજ્ઞા ભવંતિ, તં જહા—ઈસીઈ
વા ૧, ઈસિપબ્ભારાઈ વા ૨, તણૂઈ વા ૩, તણુનણૂઈ વા ૪,
સિદ્ધીઈ વા ૫, સિદ્ધાલણૂઈ વા ૬, મુત્તીઈ વા ૭, મુત્તાલણૂઈ
વા ૮ ॥ ૨ ॥ સૂ. ૬૦ ॥

છાયા—ઈષ્ટપ્રાગ્ભારાયાઃ સ્વલ્પ પૃથિવ્યા બહુમધ્યદેશભાગે અષ્ટયોજનિકં ક્ષેત્રમ્
અષ્ટ યોજનાનિ વાહલ્લેયેન પ્રજ્ઞપ્તમ્ ॥ ૧ ॥ ઈષ્ટપ્રાગ્ભારાયાઃ સ્વલ્પ પૃથિવ્યા
અષ્ટૌ નામધેયાનિ ભવન્તિ, તથા—ઈષ્ટ્ इति वा, ઈષ્ટપ્રાગ્ભારેતિ વા, ૨, તન્નુ-
રિતિ વા ૩, તન્નુતન્નુ રિતિ વા ૪, સિદ્ધિરિતિ વા ૫, સિદ્ધાલય इति વા ૬,
મુક્તિરિતિ વા, ૭, મુક્તાલય इति વા ૮ ॥ ૨ ॥ સૂ. ૬૦ ॥

બેદ રૂપસે પૃથિવીકા કથન કરતે હૈં—

“ અટ્ટ પુઢવીઓ પળણત્તાઓ ” इत्यादि

સૂત્રાર્થ—પૃથિવિયાં આઠ કહી ગઈહૈં—જૈસે—રત્નપ્રમા ૧, યાવત્ અધઃ-
સપ્તમી ૭ ઓર આઠવીં ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા ૮ હસકી વ્યાખ્યા સ્પષ્ટહૈ ॥ સૂ. ૫૯ ॥

પ્રક્રાન્ત ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથિવીકા પ્રમાણ એવં ઉસકે નામોંકા કથન

इषे पृथ्वीनुं कथन करे छे—“ अट्ट पुढवीओ पण्णत्ताओ ” इत्यादि—

સૂત્રાર્થ—પૃથ્વીઓ આઠ કહી છે રત્નપ્રમાથી લઈને અધઃસપ્તમી પર્યન્તની સાત
પૃથ્વીઓ અને આઠમી ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથ્વી આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સુગમ છે. [સૂ. ૫૯]
આગલા સૂત્રમાં જે ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથ્વી નામનો પ્રકાર કહ્યો તેનું પ્રમાણ

ટીકા—‘ઈસિપ્ત્ત્મારાણ ણં’ ઇત્યાદિ—

ઈષ્ટપ્રાગ્ભારાનામકૃત્થિવ્યા વહુમધ્યદેશભાગે અષ્ટયોજનિકમ્=અષ્ટયો-
જનાત્મકં ક્ષેત્રમ્ અષ્ટ યોજનાનિ વાહત્યેન=સ્થૌલ્યેન પ્રજ્ઞપ્તમિતિ ॥ ૧ ॥ તથા—
ઈષ્ટપ્રાગ્ભારાયાઃ પૃથિવ્યા અષ્ટૌ નામધેયાનિ=નામાનિ ભવન્તિ, તથા—ઈષદિતિ
વેત્યાદિ । તન્ન—ઈષદિતિ રત્નપ્રભાપેક્ષયા ઈષત્ત્વા ॥ ૧ ॥ ઈષ્ટપ્રાગ્ભારેતિ—
પ્રાગ્ભારસ્ય=ઉચ્છ્રાયાદિલક્ષણસ્ય રત્નપ્રભાપેક્ષયા લઘુત્વાત્ ॥ ૨ ॥ તથા—તન્નુ-
રિતિ પ્રતલત્વાત્ ॥ ૩ ॥ તથા—તનુતનુરિતિ અતિપ્રતલત્વાત્ ॥ ૪ ॥ સિદ્ધિરિતિ
તદુપરિ સિદ્ધ્યમાનત્વાત્ ॥ ૫ ॥ સિદ્ધાલય ઇતિ સિદ્ધિનિવાસસ્થાનસામીપ્યાત્

સૂત્રકાર હસ પ્રકારસે કરતે હૈં—“ઈસિપ્ત્ત્મારાણ ણં પુઢવીણ” ઇત્યાદિ
ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથિવીકે વહુમધ્યદેશભાગમૈં આઠ યોજન પ્રમાણકા
ક્ષેત્ર કહા ગયા હૈ, યહ આઠ યોજનકા સ્થૂલ (મોટા)હૈ હસ ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા
પૃથિવીકે આઠ નામ હૈં । જો હસ પ્રકારસે હૈં । ઈષત્ ૧, ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા
૨, તનુ ૩, તનુ તનુ ૪ સિદ્ધિ ૫, સિદ્ધાલય ૬. મુક્તિ ૭, ઓર મુક્તાલય ૮
ટીકાર્થ—હસ ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથિવીકાજો ઈષત્ એસા નામ કહા ગયાહૈ,
વહ રત્નપ્રભાકી અપેક્ષા કમ હોનેસે કહા ગયા હૈ, તથા ઈષત્ પ્રાગ્ભારા
એસા જો નામ કહા ગયા હૈ, વહ રત્નપ્રભા આદિકી અપેક્ષા હસકા
ઉચ્છ્રાય—ઝંચાઈ આદિ રૂપ પ્રાગ્ભાર લઘુ હોનેસે કહા ગયા હૈ, પ્રતલ
હોનેસે તનુ એસા હસકા નામ કહા ગયા હૈ, અતિ પ્રતલ વહુત પતલી
હોનેસે તનુ તનુ એસા હસકા નામ કહા ગયા હૈ, હસકે ડપર જીવ
સિદ્ધ હો જાતે હૈં, હમસે હસકા નામ સિદ્ધિ એસા કહા ગયા હૈ । યહ

તથા તેના નામોને હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—

“ઈસિપ્ત્ત્મારાણ પુઢવીણ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથ્વીના વહુ મધ્યદેશભાગમાં આઠ યોજન પ્રમાણનું
ક્ષેત્ર કહ્યું છે. તે આઠ યોજનનું સ્થૂલ છે. ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા પૃથ્વીના આઠ નામો
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ઈષત્, (૨) ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા, (૩) તનુ, (૪) તનુતનુ, (૫)
સિદ્ધિ, (૬) સિદ્ધાલય, (૭) મુક્તિ, અને (૮) મુક્તાલય.

રત્નપ્રભા પૃથ્વી કરતાં નાની હોવાને કારણે તેનું નામ ઈષત્ પડ્યું છે.
રત્નપ્રભા આદિ પૃથ્વીઓ કરતાં બિંચાઈ આદિ રૂપ પ્રાગ્ભાર (પ્રમાણ)ની અપે-
ક્ષાએ તે લઘુ હોવાને કારણે તેનું બીજું નામ ઈષ્ટપ્રાગ્ભારા છે. પ્રતલ (પાતળી)
હોવાને કારણે તેનું ત્રીજું નામ તનુ છે. ‘વણી જ પ્રતલ હોવાને કારણે તેનું
ચોથું નામ તનુતનુ છે. ત્યાં જનાર શુવ સિદ્ધ થઈ જાય છે તેથી તેનું નામ

॥ ૬ ॥ મુક્તિરિતિ તદુપરિ સકલકર્મભ્યો જીવાનાં મુચ્યમાનત્વાત્ ॥ ૭ ॥ મુક્તા-
લય ઇતિ મુક્તિનિવાસસ્થાનસામીપ્યાત્ ॥ ૮ ॥ અત્ર સર્વત્ર ' ઇતિ ' શબ્દઃ સ્વરૂપ-
નિર્દેશે ' વે ' તિ વિકલ્પાર્થે ॥ સૂ ૦ ૬૧ ॥

શુભાનુષ્ઠાનેષુ યે પ્રમાદરહિતા ભવન્તિ, ત એવ સિદ્ધિમાજો ભવન્તીતિ શુભા-
નુષ્ઠાનાનિ અષ્ટવિધત્વેનાદ--

મૂલમ્—અઢહિં ઠાળૈહિં સમ્મં સંઘડિયવં જડયવં પરક્કમિ-
યવં, અસ્સિ ચ ણં અટ્ટે ણો પમાણયવં ભવઈ, તં જહા—અસુ-
યાણં ધમ્માણં સમ્મં સુણણયાણ અબ્ભુટ્ટેયવં ભવઈ ૧, સુયાણં
ધમ્માણં ઓગિણહણયાણ ઉવધારણયાણ અબ્ભુટ્ટેયવં ભવઈ ૨,
પાવાણં કમ્માણં સંજમેણં અકરણયાણ અબ્ભુટ્ટેયવં ભવઈ ૩,
પોરાણાણં કમ્માણં તવસા વિગિંચણયાણ વિસોહણયાણ અબ્ભુ-
ટ્ટેયવં ભવઈ ૪, અસંગિહીયપરિયણસ્સ સંગિણહણયાણ અબ્ભુ-
ટ્ટેયવં ભવઈ ૫, સેહં આયારગોયરગહણયાણ અબ્ભુટ્ટેયવં ભવઈ
૬, ગિલાણસ્સ અગિલાણ વેયાવચ્ચકરણયાણ અબ્ભુટ્ટેયવં
ભવઈ ૭, સાહમ્મિયાણં અધિગરણંસિ ઉપ્પણંસિ તત્થ અણિ-

સિદ્ધાલયકે પાસ હૈ, હસસે હસે સિદ્ધાલય એસા કહા ગયા હૈ, મુક્તિ
એસા જો નામ હસકા કહા ગયા હૈ હસકા કારણ યહ હૈ કિ હસકે
ઝપર સકલ કર્મોસે જીવ રહિત બનતે હૈં । તથા—મુક્તાલય એસા જો
હસકા નામાન્તર કહા ગયા હૈ, સો હસકા કારણ એસા હૈ કિ યહ
મુક્ત જીવોંકે નિવાસસ્થાનકે પાસ હૈ, યહાં સર્વત્ર “ ઇતિ ” શબ્દ સ્વરૂપ
નિર્દેશમેં એવં “ વા ” યહ શબ્દ વિકલ્પ અર્થમેં હૈ ॥ સૂ ૦ ૬૧ ॥

સિદ્ધિ પડયું છે તે સિદ્ધાલયની પાસે છે—અથવા ત્યાં સિદ્ધ જીવોના નિવાસ
સ્થાન રૂપ સિદ્ધશિલા આવેલી છે તેથી તેનું છટ્ટું નામ સિદ્ધાલય છે. સકલ
કર્મોથી રહિત થયેલા મુક્ત જીવો ત્યાં રહે છે તેથી તેનું નામ મુક્તિ છે. તે
મુક્ત જીવોનાં નિવાસ સ્થાનની પાસે હોવાથી તેનું નામ મુક્તાલય છે. આ
સૂત્રમાં જ્યાં જ્યાં “ ઇતિ ” શબ્દનો પ્રયોગ થયો છે તે સ્વરૂપના નિર્દેશને
માટે થયો છે અને “ વા ” પદનો પ્રયોગ વિકલ્પાર્થે થયો છે. ॥ સૂ. ૬૧ ॥

સ્મિયોવસ્મિઓ અપકલ્પગાહી મજ્જતથભાવભૂષ કહણુ સાહ-
મિયા અપ્પસદ્દા અપ્પસંજ્ઞા અપ્પતુમંતુમા ઉવસામણયાણ
અભ્યુદ્દેયવ્વં ભવઈ ૮ ॥ સૂ. ૬૨ ॥

છાયા—અણ્ણ સ્થાનેષુ સમ્યક્ સંઘટિતવ્યં યતિતવ્યં પરાક્રમિતવ્યં અસ્મિથ સ્વલ્લ
અર્થે નો પ્રમાદયિતવ્યં ભવતિ, તદ્વથા—અશ્રુતાનાં ધર્મીનાં સમ્યક્ શ્રવણતાયૈ
અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ ૧, શ્રુતાનાં ધર્મીનામ્ અવગ્રહણતાયૈ ઉપધારણતાયૈ અભ્યુ-
ત્થાતવ્યં ભવતિ ૨, પાપાનાં કર્મણો સંયમેન અકરણતાયૈ અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ
૩, પુરાણાનાં કર્મણાં તપસા વિવેચનતાયૈ વિશોધનતાયૈ અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ ૪,
અસંગૃહીતપરિજનસ્ય સંગ્રહણતાયૈ અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ ૫, જૈક્ષમ્ આચારગોચર-
ગ્રહણતાયૈ અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ ૬, ગ્લાતસ્ય અગ્લાન્ના વૈયાટ્યકરણતાયૈ અભ્યુ-
ત્થાતવ્યં ભવતિ ૭, સાધર્મિકાણામ્ અધિકરણે ઉત્પન્ને તત્ર અનિશ્ચિતોપાશ્ચિતો-
પશગ્રાહી મધ્યસ્થભાવભૂતઃ કથંનુ સાધર્મિકા અલ્પશબ્દા અલ્પજ્ઞા અલ્પતુમ-
ન્તુમા ઉપશમનતાયૈ અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતિ ૮ ॥ સુ. ૬૨ ॥

ટીકા—‘ અદ્ઢહિ ઠાણેહિ ’ इत्यादि—

સાધુમિઃ અણ્ણ સ્થાનેષુ=વસ્તુષુ સમ્યક્ સંઘટિતવ્યમ્=અપ્રાપ્તેષુ તેષુ
યોગઃ કર્તવ્યઃ, સમ્યક્ યતિતવ્યમ્=પ્રાપ્તેષુ તેષુ તદવિનાશાર્થં પ્રયત્નઃ કાર્યઃ,
સમ્યક્ પરાક્રમિતવ્યમ્=શક્તિક્ષયેऽપિ તદ્રક્ષણે પરાક્રમઃ=પ્રકૃપ્તોત્સાહઃ કર્તવ્યઃ,

શુભ અનુઠાનોમેં જો જીવ પ્રમાદ રહિત હોતે હિં—વે હી સિદ્ધિકો
પ્રાપ્ત કરતે હિં, ‘અનઃ અવ મૂત્રકાર શુભ અનુઠાનોંઠા કવન આઠ રૂપસે
કરતે હિં—‘ અદ્ઢહિ ઠાણેહિ સમ્મં સંઘડિયવ્વં ’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—સાધુ પુરુષોંકો આઠ સ્થાનોંમેં—આઠ વસ્તુઓંમેં અઠ્ઠી તરહસે
યોગ કરનાં ચાહિયે—उनकी अप्राप्तिमें प्राप्त करनेका प्रयत्न करना
चाहिये—और जब वे प्राप्त हो जावें तो उनकी अविनाशिताके निमित्त
प्रयत्न करना चाहिये शक्ति नहीं रहे तब भी उनकी रक्षा करनेमें

જે શુભ પ્રમાદનો ત્યાગ કરીને શુભ અનુઠાનોમાં રત રહે છે, એ શુભ
જ સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર શુભ અનુઠાનોનું આઠ સ્થાન રૂપે
કથન કરે છે—‘ અદ્ઢહિ ઠાણેહિ સમ્મં સંઘડિયવ્વં ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—સાધુઓએ નીચેની આઠ વસ્તુઓનો સારી રીતે યોગ કરવો જોઈએ
એટલે કે જો તેમની પ્રાપ્તિ ન થઈ હોય તો તેમને પ્રાપ્ત કરવાનો પ્રયત્ન કરવો
જોઈએ, અને જો તેની પ્રાપ્તિ થઈ જાય તો તેમને નાશ ન થાય તે માટે

तथा-अस्मिन्=वक्ष्यमाणे अष्टकस्थानरूपेऽर्थे खलु नो प्रमादयितव्यं=न कदा-
चिदपि प्रमादः कर्त्तव्यो भवति । तान्येवाष्टौ स्थानान्याह-तद्यथा-अश्रुता-
नाम्=अकृतश्रवणविषयाणां धर्माणां=श्रुतभेदानां सम्यक् श्रवणतायै=श्रवणाय
अभ्युत्थातव्यम्=उद्यमः कर्त्तव्यो भवतीति प्रथमः । श्रुतानां=कृतश्रवणविषयाणां
धर्माणाम् अवग्रहणतायै=मनोविषयीकरणाय उपधारणतायै=अविच्युतिस्मृतिवास-
नाविषयीकरणाय च अभ्युत्थातव्यं भवतीति द्वितीयः । पापानां=प्राणातिपाता-
दिलक्षणानां कर्मणां संयमेन=संयमद्वारा अरुणतायै=अनुष्ठानाय अभ्युत्थातव्यं
भवतीति तृतीयः । पुराणानां=पुराकृतानां कर्मणां तपसा=तपोद्वारा विवेचनतायै=
निर्जरणाय विशोधनतायै=आत्मनः कलङ्कस्य दूरीकरणाय च अभ्युत्थातव्यं भव-

प्रकृष्ट उत्साह रखना चाहिये तथा इन आठ स्थानोंमें कभी भी प्रमाद
नहीं करना चाहिये वे ८ स्थान इस प्रकारसे हैं-जिन श्रुतभेदोंको
कभी नहीं सुना है, उन श्रुतभेदोंको अच्छी तरहसे सुननेके लिये
प्रयत्नशाली होना ऐसा यह प्रथम स्थान है, जिन श्रुतधर्मोंको अच्छी
तरहसे सुन लिया है, वे मनमें अच्छी तरहसे जम जावे उनकी
च्युति, स्मृति एवं वासना रूप बनी रहे-इसके लिये प्रयत्नशील बने
रहना ऐसा यह द्वितीय स्थान है, प्राणातिपात आदि रूप पाप कर्मों का
संयम द्वारा अनुष्ठान हो-विनाश होना रहे-इसके लिये अच्छी तरहसे
यत्नशील बने रहना-यह तृतीय स्थान है-पूर्वोपाजित कर्मों की तपस्या
द्वारा निर्जरा होती रहे और आत्मासे कर्म मग्न रूप कलङ्क दूर होता रहे
इसके लिये सदा प्रयत्नशील बने रहना यह चतुर्थ स्थान है, जो अभी

प्रयत्न करने लगे। शक्ति न रहे तो पण तेमनी रक्षा भाटे भूषण है तमाडे
राभवे। जेधजे तथा आ अ ठ स्थानोभां-अ ठ भाणतोभां निद्रकुत्र प्रमद
करवे। जेधजे नहीं। ते अ ठ स्थानो नीचे प्रमाणे छे-

(१) जे श्रुतलेहेतुं कही पणश्रवण कथुं नथी। ते श्रुत लेहेतुं सारीरीते
श्रवण करवाने प्रयत्नशील रहेवुं जेधजे।

(२) जे श्रुतलेहेतुं सारी रीते श्रवण थण थूकथुं डोय, तेमनी विस्मृति
न थाय-मनमां दृढताथी तेमनी स्थापना थण जय, तेमनी अविच्युति, स्मृति
अने वासनाइय धारणा टकी रहे ते भाटे साधुजनो जे प्रयत्नशील रहेवुं जेधजे

(३) प्राणुतिपात आदिइय पापधर्मोना संयम द्वारा विनाश थतो रहे
ते भाटे तेमणे भूषण प्रयत्नशील रहेवुं जेधजे।

(४) पूर्वोपाजित कर्मोनी तपस्या द्वा २ ३-आत्मानो उपर
लागेले। कर्ममल इय काद्वर दूर थनो रहे-
शील रहेवुं जेधजे

तीति चतुर्थः । असंगृहीतपरिजनस्य-असंगृहीतस्य=अस्वीकृतस्य परिजनस्य=शिष्यवर्गस्य संग्रहणतायै=स्वीकरणाय अभ्युत्थातव्यं भवतीति पञ्चमः । आचार-गोचरग्रहणतायै-आचारो=ज्ञानादिविषयः पञ्चविधः, गोचरो=भिक्षाचर्याप्रतिलेखनादिस्तयोर्ग्रहणतायै=शिक्षणाय शैक्षं=सद्यः प्रवृजितं शिष्यं प्रति अभ्युत्थातव्यं भवति । इति षष्ठः ॥ ग्लानस्य=व्याधियुक्तस्य अग्लान्या=अखेदेन वैयावृत्यकरण-तायै=वैयावृत्यकरणाय अभ्युत्थातव्यं भवतीति सप्तमः । साधर्मिकाणां=साधूनाम् अधिकरणे=कलह उत्पन्ने सति तत्र=साधुषु यः अनिश्रितोपाश्रितः-निश्रितं=रागः उपाश्रितं=द्वेषः, तद्द्वयं नास्ति यस्य स तथा-रागद्वेषरहित इत्यर्थः, यद्वा-निश्रितम्=आहाराद्यभिलाषः उपाश्रितं=शिष्यकुलाद्यपेक्षा, तद्द्वयं नास्ति यस्य स तथा-आहाराद्यभिलाष-शिष्यकुलाद्यपेक्षारहित इत्यर्थः, अत्र एव-अपक्षपाती-पक्षं=शास्त्रविरुद्धं न गृह्णातोत्येवं शीलः अत्र एव च-मध्यस्थभावभूतः=माध्यस्थ्यं प्राप्तो भवति, तेन साधुना कथं=केन प्रकारेण 'नु' इति चित्कं, ममैते साध-

तक शिष्य मण्डलीमें नहीं आये हैं उन्हें शिष्य मंडलीमें लानेका प्रयत्न करना यह पाँचवां स्थान है, ज्ञानादि रूप पांच प्रकारके आचारको एवं भिक्षाचर्या, प्रतिलेखनादिको शिष्यजनको जो नवीन दीक्षित हुआ है, ग्रहण करानेमें सदा प्रयत्न करना यह छठा स्थान है, संघमें जो ग्लान साधु हैं-व्याधियुक्त मुनिजन हैं उनकी बिना खेदके वैयावृत्ति करनेकी इच्छा रखना यह सातवां स्थान है, एवं साधर्मिक साधुजनोंमें जब कलह उत्पन्न हो जावे तो रागद्वेष रहित होकर-अथवा आहार आदिकी अभिलाषा और शिष्यकुल आदिकी अपेक्षा रहित होकर बिना किसी पक्षपातके मध्यस्थ भावयुक्त बनकर उस

(५) જેઓ હજી સુધી શિષ્યમંડળમાં સામેલ થયા ન હોય તેમને તેમાં લાવવાનો પ્રયત્ન કરવો જોઈએ.

(૬) જ્ઞાનાદિ રૂપ પાંચ પ્રકારના આચારો, તથા ભિક્ષાચર્યાના નિયમો પ્રતિલેખના આદિનું શિષ્યજનોને-ખાસ કરીને નવદીક્ષિત શિષ્યોને ગ્રહણ કરાવવું જોઈએ. તેમને આ બધાં નિયમોની શિક્ષા આપવાને તેમણે પ્રયત્ન-શીલ રહેવું જોઈએ.

(૭) સંઘમાં જે ગ્લાન (વ્યાધિ યુક્ત) સાધુઓ હોય તેમનું બિલકુલ ખેદ વિના વૈયાવૃત્ત્ય કરવાને તેમણે સદા પ્રયત્નશીલ રહેવું જોઈએ.

(૮) સાધર્મિક સાધુઓમાં બ્યારે કલહ ઉત્પન્ન થાય ત્યારે રાગદ્વેષથી રહિત થઈને-અથવા આહારાદિ અભિલાષાથી શિષ્ય સમુદાય અંદીની ઇચ્છાથી રહિત થઈને, કોઈ પણ વ્યક્તિ તરફ પક્ષપાત કર્યા વિના-મધ્યસ્થ ભાવયુક્ત

મિત્રિકા: સાધવ: અલ્પશબ્દા: = રાટી રહિતા:, અલ્પશબ્દા: = કલહરહિતા:, અલ્પ-
તુમન્તુમા: = ક્રોધકૃતમનોવિકારરહિતા ભવેયુરિતિ ચિન્તયતા કલહસ્ય ઉપશમન-
તાયૈ = શમનાય અભ્યુત્થાતવ્યં ભવતીત્યષ્ટમો ભેદ: । સૂ. ૬૨ ।

इत्थं ये प्रमादरहिता भवन्ति ते देवलोकगामिनोऽपि भवन्तीति देवलोक-
विशेषविमानान्यष्टस्थानत्वेनाह—

मूलम्—महासुकसहस्रारेषु णं कप्पेसु विमाणा अट्ट
जोयणसयाइं उट्ठं उच्चत्तेणं पणत्ता ॥ सू. ६३ ॥

छाया—महाशुकसहस्रारयोः खलु कल्पयोः विमानानि अष्टयोजनशतानि
ऊर्ध्वमुच्चत्वेन प्रज्ञप्तानि ॥ सू. ६३ ॥

टीका—‘ महासुकसहस्रारेषु णं ’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा ॥ सू. ६३ ॥

સાધુકો “ એ મેરે સાધર્મિક સાધુ રાટી (રાડ-કલહ) રહિત એવં
ક્રોધકૃત મનોવિકારસે રહિત કૈસે હો इस प्रकारके विचारसे कलह
प्रशमनके लिये प्रयत्न करना यह आठवां स्थान है सू. ६२।

इस प्रकारसे जो प्रमाद रहित होते हैं, वे देवलोक गामी भी होते
हैं अब सूत्रकार देवलोक विशेषके विमानोंका कथन आठ स्थान रूपसे
करते हैं—“ महासुकसहस्रारेषु णं कप्पेसु ” इत्यादि ॥

टीकार્थ—महाशुक और सहस्रार कल्पोंमें विमानोंकी ऊँचाई आठसौ
योजनकी कही गई है ॥ सूत्र ६३ ॥

બનીને “ આ મારા સાધર્મિક સાધુઓ કલહ રહિત તથા કલહ જન્ય ક્રોધાદિ
મનોવિકારોથી કેવી રીતે રહિત બને, ” એવા શુભ વિચારથી પ્રેરાઇને કલહના
શમનને માટે પ્રયત્ન કરવા જોઇએ.

સાધુજનોએ આ આઠ બાબતોમાં ખિલકુલ પ્રમાદ સેવવો જોઇએ નહીં. સૂ. ૬૨।

ઉપર્યુક્ત આઠ સ્થાનોની અપેક્ષાએ જે જીવો પ્રમાદ રહિત બનીને પ્રયત્ન
શીલ રહે છે, તેઓ દેવલોકમાં પણ ગમન કરે છે તેથી હવે સૂત્રકાર દેવલોક
વિશેષનાં આઠ સ્થાનરૂપે કથન કરે છે.

“ महासुकसहस्रारेषु णं कप्पेसु ” इत्यदि—

મહાશુક અને સહસ્રારકલ્પોનાં વિમાનોની ઊંચાઈ ૮૦૦ યોજનની
કહી છે. ॥સૂ. ૬૩ ॥

કેચિદ્ વાદિનોઽનન્તરોક્તદેવલોકવિમાનવા સિભિરપિ વિજિતા ન ભવન્તીતિ તાનષ્ટસંખ્યકત્વેનાહ--

મૂલમ્-અરહઓ ણં અરિદ્વળેમિસ્સ અદ્ધ સથા વાઈણં સદેવમણ્યાસુરાણ પરિણાણ વાદે અપરાઙ્યાણં ઉક્કોસિયા વાહસંપયા હુત્થા ॥ સૂ૦ ૬૪ ॥

છાયા--અર્હતઃ સ્વદ્ધ અરિષ્ટનેમેઃ અષ્ટૌ શતાનિ વાદિનાં સદેવમણ્યાસુરાયાં પરિપદિ વાદેઽપરાજિતાનામ્ ઉત્કૃષ્ટા વાદિસમ્પન્ન અમવત્ ॥ સૂ૦ ૬૪ ॥

ટીકા--'અરહઓ ણં' इत्यादि--

व्याख्यास्पष्टा ॥ सू० ६४ ॥

મગવતોઽર્હતોઽરિષ્ટનેમેરેતેષુ શિષ્યેષુ મધ્યે કશ્ચિત્ કેવલી ભૂત્વા વેદનીયાદિચતુષ્ટયકર્મસ્થિતીનામાયુકર્મસ્થિત્યા સમીકરણાર્થં કેવલિસમુદ્ધાતં કૃત્વાનિતિ

કિતનેક વાદી અનન્તરોક્ત દેવલોક વિમાનમેં રહે હુણ દેવોં દ્વારોં મી વિજિત નહીં હોતે હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર ઉન્હીંકા આઠ સ્થાનરૂપસે કથન કરતે હૈં--"અરહઓ ણં અરિદ્વળેમિસ્સ" इत्यादि ॥

ટીકાર્થ--અર્હન્ત અરિષ્ટનેમિકે આઠસૌ વાદ સદેવમણ્યાસુરપરિણદામેં વાદમેં અપરાજિત હુણ અતઃ એસીં ઉનકીં ઉત્કૃષ્ટ વાદિ સમ્પત્તી ॥ સૂ. ૬૪ ॥

મગવાન અર્હન્ત અરિષ્ટનેમિકે હન શિષ્યોંકે વીચમેં કોઈ શિષ્ય એસા મી હુઆ હૈ, જિસને કેવલી હોકર વેદનીયાદિ ચાર અઘાતિયા કર્મોંની સ્થિતિકો આયુકર્મની સ્થિતિકે વરાવર કરનેકે લિયે કેવલિ

આગલા સૂત્રમાં દેવલોકના વિમાનોની વાત કરી કેટલાક વાદી એવાં જ્ઞાની હોય છે કે દેવલોકના વિમાનોમાં રહેતા દેવો પણ તેમને પરાજિત કરી શકતા નથી. તેથી હવે સૂત્રકાર આઠ સ્થાનરૂપે એવાં વાદીઓનું નિરૂપણ કરે છે--

‘અરહઓ ણં અરિદ્વળેમિસ્સ’ इत्यादि--

ટીકાર્થ--અર્હન્ત અરિષ્ટનેમીની ઉત્કૃષ્ટ વાદિસંપત્તિ ૮૦૦ ની હતી. કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે અર્હન્ત અરિષ્ટનેમિના ૮૦૦ શિષ્યો એટલા બધાં જ્ઞાની અને વાદવિવાદમાં નિપુણ હતા કે દેવો અને મનુષ્યોની પરિણામમાંથી કોઈ પણ દેવ કે મનુષ્ય તેમને વાદમાં પરાજિત કરી શકવાને સમર્થ નહતા ॥ સૂ. ૬૪ ॥

મગવાન અર્હન્ત અરિષ્ટનેમિના આ શિષ્યસમુદાયમાં કેાઇ કેાઇ એવાં શિષ્યો પણ હતાં કે જેમણે કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને વેદનીય આદિ ચાર અઘાતિયા કર્મોની સ્થિતિને આયુકર્મની સ્થિતિની બરાબર કરવા માટે કેવલિસમુદ્ધાત

કેવલિ સમુદ્ધાતમાહ- -

મૂલમ્—અટ્ટસમઇએ કેવલિસમુગ્ધાએ પળ્લત્તે, તં જહા-
પઢમે સમએ દંડં કરેઈ ૧, બીએ સમએ કવાડં કરેઈ ૨, તદ્દએ
સમએ મંથાનં કરેઈ ૩, ચતુથે સમએ લોગં પૂરેઈ ૪, પંચમે
સમએ લોગં પડિસાહરઈ ૫, છઠ્ઠે સમએ મંથં પડિસાહરઈ ૬,
સત્તમે સમએ કવાડં પડિસાહરઈ ૭, અટ્ટમે સમએ દંડં પડિ-
સાહરઈ ૮ ॥ સૂ ૦ ૬૫ ॥

છાયા—અષ્ટસામાયિકઃ કેવલિસમુદ્ધાતઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથથા—પ્રથમે સમયે
દણ્ડં કરોતિ ૧, દ્વિતીયે સમયે કપાટં કરોતિ ૨, તૃતીયે સમયે મન્યાનં કરોતિ
૩, ચતુર્થે સમયે લોકં પૂરયતિ ૪, પચ્ચમે સમયે લોકં પ્રતિસંહરતિ ૫, પષ્ઠે
સમયે મન્યાનં પ્રતિસંહરતિ ૬, સપ્તમે સમયે કપાટં પ્રતિસંહરતિ ૭, અષ્ટમે
સમયે દણ્ડં પ્રતિસંહરતિ ॥ સૂ ૦ ૬૫ ॥

ટીકા—‘ અટ્ટ સમઇએ ’ इत्यादि—

કેવલિસમુદ્ધાતઃ—કેવલિનઃ અન્તર્મુહૂર્ત્તમાવિપરમપદસ્ય સમુદ્ધાતઃ=
કર્મનિર્જરણાર્થ વ્યાપારવિશેષઃ અષ્ટસામાયિકઃ—અષ્ટૌ સમયા યસ્મિન્ સોઽષ્ટ-
સમયઃ, સ એવાષ્ટસામાયિકઃ—અષ્ટસમયપ્રમાણઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ! તથથા—પ્રથમે સમયે
સમુદ્ધાત ક્રિયા હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર હસી કેવલિસમુદ્ધાતકા કથન
કરતે હૈ—“ અટ્ટ સમઇએ કેવલિસમુગ્ધાએ પળ્લત્તે ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—જિસે અન્તર્મુહૂર્ત્તકે વાદ પરમપદકી પ્રાપ્તિ હોનેવાલી
હૈ, હસકા નામ કેવલિ હૈ, કેવલિકા જો સમુદ્ધાત હૈ, વહ કેવલિ સમુ-
દ્ધાત હૈ, યહ કેવલિસમુદ્ધાત કર્મનિર્જરાકે લિયે વ્યાપારવિશેષરૂપ
માના ગયા હૈ, ઓર યહ આઠ સમયકી સ્થિતિવાલા કહા ગયા હૈ,

કર્થો હતો. તેથી હવે સૂત્રકાર એજ કેવલિસમુદ્ધાતનું આઠ સ્થાન રૂપે
નિરૂપણ કરે છે—અટ્ટ સમઇએ કેવલિસમુગ્ધાએ પળ્લત્તે ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—જેમને અન્તર્મુહૂર્ત્ત બાદ પરમપદની પ્રાપ્તિ થવાની છે. એવા કેવળજ્ઞાનીને
કેવલી કહે છે. તે કેવલીનો જે સમુદ્ધાત છે તેને કેવલિસમુદ્ધાત કહે છે
કર્મની નિર્જરા માટેના વ્યાપાર વિશેષ રૂપ આ સમુદ્ધાત હોય છે. તે કેવલિ-

દણ્ડં કરોતીત્યાદિ । અર્થ ભાવઃ—સમુદ્ધાતં કર્તું પ્રવૃત્તઃ કેવલી અન્તર્મુહૂર્તપ્રમા-
ણમ્ ઉદીરણાવલિકાયાં કર્મપ્રક્ષેપવ્યાપારરૂપમાવર્જીકરણં કરોતિ । તતઃ સમુ-
દ્ધાતં કરોતિ । તત્ર પ્રથમે સમયે કેવલી સ્વશરીરવિષ્કમ્ભમ્ ઝઘર્વાધશ્ચ આયત-
સુખયતોઽપિ લોકાન્તગામિનં જીવપ્રદેશસદ્ધાતં જ્ઞાનાભોગતો દણ્ડમિવ કરોતિ ।
દ્વિતીયે સમયે તુ તમેવ દણ્ડં પૂર્વાપરદિગ્દ્વયે પ્રસાર્ય પાર્શ્વતો લોકાન્તગામિક-
પાટમિવ કરોતિ । તૃતીયે સમયે તદેવ કપાટં દક્ષિણોત્તરદિગ્દ્વયે પ્રસાર્ય લોકા-
ન્તગામિનં મન્થાનમિવ કરોતિ । મન્થાનકરણસમકાલમેવ લોકો વહુશઃ પૂરિતો
ભવતિ । તતશ્ચતુર્થે સમયે લોકં પૂરયતિ, एवं च समग्रोऽपि लोकः पूरितो भव-

કેવલિસમુદ્ધાતમે પ્રથમ સમયમે કેવલિ આત્મપ્રદેશોનો દણ્ડરૂપ કરતે
હિં. તાત્પર્ય યહ હૈ—સમુદ્ધાત ક્રિયામે પ્રવૃત્ત હુએ કેવલિ અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ
આવર્જીકરણ કરતે હિં, યહ આવર્જીકરણ ઉદીરણાવલિકામે કર્મકે
પ્રક્ષેપ કરનેકે વ્યાપાર રૂપ હોના હૈ । ઇસકે વાદ વે સમુદ્ધાત કરતે હિં—
પ્રથમ સમયમે કેવલી જીવપ્રદેશ સંઘાતકો જ્ઞાનાભોગસે દણ્ડકે જૈસા
કરતે હિં । યહ દણ્ડ અપને શરીરકે જૈસાકે જૈસા ચોડા હોતા હૈ,
અવં ડપર નીચે તક લમ્બા હોતા હૈ, અવં દોનોં તરફસે લોકાન્તગામી
હોતા હૈ, દ્વિતીય સમયમે ફિર વે ડસી દણ્ડકો પૂવં પશ્ચિમ દોનોં
દિશાઓમેં પસાર કર પાર્શ્વસે લોકાન્તગામી કપાટકે જૈસા કરતે હૈ ।
તૃતીય સમયમે વે ડસી કપાટકો દક્ષિણ ઉત્તર દો દિશામેં પસાર કર
લોકાન્તગામી મન્થાકે સમાન કરતે હિં । મન્થા નામ રઈકા હૈ । મન્થાકે
કરનેકે સમકાલમેં હી લોક વહુત અધિક રૂપમેં પૂરિત હો જાતા હૈ,

સમુદ્ધાત આઠ સમયની સ્થિતિવાળો કહ્યો છે કેવલિસમુદ્ધાતના પ્રથમ સમયમાં
કેવલી આત્મપ્રદેશને દંડરૂપ કરે છે. આ કથનનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે—

સમુદ્ધાત ક્રિયામાં પ્રવૃત્ત થયેલા કેવલી અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ આવર્જીકરણ
કરે છે. ઉદીરણાવલિકામાં કર્મને પ્રક્ષેપ કરવાના વ્યાપાર રૂપ આ આવર્જીકરણ
હોય છે ત્યાર બાદ તેઓ સમુદ્ધાત કરે છે. પ્રથમ સમયમાં કેવલી જીવ પ્રદેશ
સંઘાતને જ્ઞાનાભોગ વડે દંડના જેવો કરે છે. તે દંડ ચોતાના શરીર
જેવો પડોળો હોય છે અને ઉપરથી નીચે સુધી (શિરથી પગ સુધી)
લાંબો હોય છે. અને બન્ને તરફથી લોકાન્તગામી હોય છે. બીજા સમયમાં
તેઓ એજ દંડને પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશામાં ફેલાવીને લોકાન્તગામી કમાડના
જેવો કરે છે. ત્રીજા સમયમાં તેઓ એજ કમાડને દક્ષિણ અને ઉત્તર દિશામાં
ફેલાવીને લોકાન્તગામી મન્થાન (વલોણા)ના જેવો કરે છે. આ મન્થાન દંડ
કરવાના સમયમાં જ લોક વધુ બરે આંશે તો પૂરિત થઈ જાય છે,

તીતિ । તદનન્તરં પશ્ચમે સમયે લોકં પ્રતિસંહરતિ=સકર્મકાન્ જીવપ્રદેશાન્ સઙ્કો-
ચયતિ, તતઃ પષ્ઠે સમયે બહુતરસઙ્કોચાત્ મન્થાનં પ્રતિસંહરતિ । તતઃ સપ્તમે
સમયે કપાટં દણ્ડે પ્રતિસંહરતિ । તતોઽષ્ટમે સમયે દણ્ડં પ્રતિસંહરતિ । एवं ચ
સમુદ્ઘાતકર્તા કેવલી શરીરસ્થો ભવતીતિ । અત્રેદં બોધ્યમ્-સમુદ્ઘાતગતઃ
કેવલી પ્રયોજનાભાવાદ્ મનોયોગં વાગ્યોગં ચ ન યુનક્તિ । કાયયોગં તુ યુનક્તિ ।
કાયયોગં યુજ્ઞાનઃ કેવલી ઔદારિકશરીરકાયયોગં યુનક્તિ, ઔદારિકમિશ્ર-
શરીરકાયયોગં યુનક્તિ, કાર્મણશરીરકાયયોગં ચ યુનક્તિ । તત્ર-ઔદારિક-
શરીરકાયયોગઃ પ્રથમાષ્ટમસમયયોર્બોધ્યઃ । ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગો

ચતુર્થ સમયમેં વે લોકકો પૂર્ણ રૂપસે ખર દેતે હૈં, હસ તરહ આત્મ-
પ્રદેશોં દ્વારા સમગ્ર લોક પૂરિત હો જાતા હૈ । હસકે બાદ પાંચવેં સમ-
યમેં વે સમગ્ર જીવપ્રદેશોંકો સંકુચિત કરતે હૈં, છઠ્ઠે સમયમેં બહુતર
જીવપ્રદેશોંકે સંકુચિત હો જાનેસે મન્થાનકો સંકોચ કરતે હૈં, સાતવેં
સમયમેં કપાટકા દણ્ડમેં સંકોચ કરતે હૈં । ઓર આઠવેં સમયમેં
દણ્ડકા સંકોચ કરતે હૈં । હસ પ્રકારકે સમુદ્ઘાતકા કર્તા કેવલિ શરી-
રસ્થ હી બને રહતે હૈં । યહાં એસા સમજના ચાહિયે, સમુદ્ઘાત કેવલી
પ્રયોજનકે અભાવ હો જાનેસે મનોયોગ ઓર વાગ્યોગકા વ્યાપાર તો
નહીં કરતા હૈ, કિન્તુ કાયયોગકા વ્યાપાર કરતા હૈ । કાયયોગકા
વ્યાપાર કરતે હુએ ખી વે કેવલી ઔદારિકશરીરકાયયોગકા
ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગ ઓર કાર્મણશરીરકાયયોગકા વ્યાપાર
કરતે હૈં, ઔદારિકશરીરકાયયોગ પ્રથમસમય એવં અષ્ટમ

થોથા સમયમાં તેઓ લોકને પૂર્ણ રૂપે ભરી દે છે. આ રીતે આત્મ-
પ્રદેશો દ્વારા સમગ્ર લોક સંપૂર્ણ રૂપે ભરાઈ જાય છે.

પાંચમાં સમયમાં તેઓ જીવપ્રદેશોને સઘળા સંકુચિત કરે છે. છઠ્ઠા
સમયમાં ઘણાંખરા જીવપ્રદેશો સંકુચિત થઈ જવાથી તેઓ મન્થાનને સંકુચિત
કરે છે અને આઠમા સમયમાં કપાટને ઢંડ રૂપે સંકુચિત કરી નાખે છે આ
પ્રકારનો સમુદ્ઘાત કરનાર કેવલી શરીરસ્થ જ ચાલુ રહે છે. અહીં એવું સમજવું
બોધ્ય છે કે સમુદ્ઘાત કરનારા કેવલી પ્રયોજનનો અભાવ થઈ જવાને કારણે
અને વાગ્યોગનો વ્યાપાર તો કરતા નથી, પરંતુ કાયયોગનો વ્યાપાર કરે છે.
કાયયોગનો વ્યાપાર કરતા તે કેવલી ઔદારિક શરીર કાયયોગનો, ઔદારિક
મિશ્રશરીર કાયયોગનો અને કાર્મણ શરીર કાયયોગનો જ વ્યાપાર કરે છે.
ઔદારિકશરીર કાયયોગ પ્રથમ સમયમાં અને આઠમાં સમયમાં થાય છે.

દ્વિતીયપૃષ્ઠપાત્નસમયેષુ, કાર્મણશરીરકાયયોગસ્તુ તૃતીયચતુર્થપૃષ્ઠપાત્નસમયેષુ । તૃતીયચતુર્થપૃષ્ઠપાત્નસમયેષુ તુ સમુદ્ધાતકર્તા કેવલી નિયમાત્ અનાહારકો ભવ-
તીતિ । તદુક્તમ્—

“ઔદારિકપ્રયોક્તા પ્રથમાષ્ટમસમયયો રસાશિષ્ઠઃ ।

મિશ્રૌદારિકયોક્તા સપ્તમપૃષ્ઠ દ્વિતીયેષુ ॥ ૧ ॥

કાર્મણશરીરયોગી, ચતુર્થકે પૃષ્ઠકે તૃતીયે ચ ।

સમયત્રયે ચ તસ્મિન્, ભવત્યનાહારકો નિયમાત્ ॥૨॥” ઇતિ ॥સૂ. ૬૫॥

અનન્તરસૂત્રે કેવલિસમુદ્ધાતવત્કવ્યતોક્તા, કેવલિનથ મુક્તિમાત્રો
ભવન્તિ । અથ યે કેવલિમિત્રા ગુણવન્તસ્તે તુ દેવત્વેન સમુત્પન્નને ઇતિ દેવ-

સમયમેં હોતા હૈ, ઔદારિકમિશ્રશરીરકાયયોગ દ્વિતીયસમયમેં
છઢે સમયમેં એવં સાતવેં સમયમેં હોતા હૈ, ઔર કાર્મણશરીરકાય-
યોગ તૃતીય સમયમેં, ચતુર્થ સમયમેં પંચમ સમયમેં હોતાહૈ । તૃતીય ચતુર્થ
પંચમ સમયમેં સમુદ્ધાત કર્તાકેવલી નિયમસે અનાહારક હોતા હૈ ।
તદુક્તમ્—“ઔદારિકપ્રયોક્તા” ઇત્યાદિ ।

પ્રથમ સમયમેં ઔર અષ્ટમ સમયમેં ઔદારિક શરીર કાયયોગ
હોતા હૈ, છઢે સાતવેં ઔર દ્વિતીય સમયમેં મિશ્ર ઔદારિક શરીર
કાયયોગ હોતા હૈ ॥૧॥

તૃતીય, ચતુર્થ ઔર પાંચવેં સમયમેં કાર્મણ શરીર કાયયોગ હોતા
હૈ, ઇન્હીં તૃતીય, ચતુર્થ પાંચવેં સમયમેં કેવલી અનાહારક રહતે હૈં
॥ ૨ ॥ સૂત્ર ૬૫ ॥

અનન્તર સૂત્રમેં કેવલિસમુદ્ધાતકી વત્કવ્યતા કહી ગઈ હૈ । કેવલી
મુક્તિગામી હોતે હૈં, પરન્તુ જો કેવલિસે મિન્ન હોતે હૈં ઔર ગુણવાન

ઔદારિક મિશ્ર શરીર કાયયોગ ળીજ સમયમાં છટકા સમયમાં અને સાતમાં
સમયમાં થાય છે, અને કાર્મણ શરીર કાયયોગ ત્રીજ સમયમાં, ચોથા સમયમાં
અને પાંચમાં સમયમાં હોય છે. ત્રીજ ચોથા અને પાંચમાં સમયમાં સમુદ્ધાત કર્તા
કેવલી નિયમથી જ અનાહારક હોય છે. કહું પણ છે કે —“ઔદારિકપ્રયોક્તા” ઇત્યાદિ

“પ્રથમ સમયમાં અને આઠમાં સમયમાં ઔદારિક શરીર કાયયોગ થાય
છે, છટકા; સાતમાં અને ળીજ સમયમાં મિશ્રઔદારિક-શરીર કાયયોગ થાય
છે. ૧૧ ત્રીજ, ચોથા અને પાંચમાં સમયમાં કાર્મણ શરીર કાયયોગ થાય છે.
એજ ત્રીજ, ચોથા અને પાંચમાં સમયમાં કેવલી અનાહારક રહે છે. ॥ સૂ. ૬૫ ॥

આગલા સૂત્રમાં કેવલિ સમુદ્ધાતનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. કેવલી તો
મુક્તિગામી હોય છે પરન્તુ કેવલી સિવાયના જે ગુણવાન હોય છે, તેઓ

વક્તવ્યતામાહ--

મૂલમ્-સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ અટ્ટ સયા અણુ-
ત્તરોવવાહ્યાણં દેવાણં ગઙ્ગકલ્લાણાણં ઠિઙ્ગકલ્લાણાણં આગમેસિ-
મહાણં ઉક્કોસિયા અણુત્તરોવવાહ્યસંપયા હોત્થા ॥ સૂં ૬૬ ॥

છાયા--શ્રમણરયે સ્વલ્પ ભગવતો મહાવીરસ્ય અષ્ટ શતાનિ અનુત્તરોપપાતિ-
કાનાં દેવાનાં ગતિકલ્યાણાનાં સ્થિતિકલ્યાણાનામ્ આગમિષ્યદ્ભદ્રાણામ્ ઉત્કૃષ્ટા-
અનુત્તરોપપાતિકસમ્પદોઽભવન્ ॥ સૂં ૬૬ ॥

ટીકા--' સમણસ્સ ણં ' इत्यादि--

શ્રમણસ્ય સ્વલ્પ ભગવતો મહાવીરસ્ય અનુત્તરોપપાતિકાનાં દેવાનામ્=અનુત્ત-
રોપપાતિકત્વેન ઉત્પત્સ્યમાનાનાં દ્રવ્યદેવાનાં, કીદશાનામેષામ્? इत्याह-ગતિ
કલ્યાણાનામ્=ગતિ:=દેવગતિરૂપા કલ્યાણં યેષાં તે તથા-તેષામ્-અનુત્તરોપપાતિ-
કદેવગતિરૂપકલ્યાણમાજામ્, સ્થિતિકલ્યાણાનામ્-સ્થિતિ:=ત્રયસ્ત્રિંશત્સાગરોપ-
મરૂપાઽનુત્તરોપપાતિકદેવલોકે સ્થિતિર્યેષાં તે તથા તેષામ્ તથા-આગમિષ્યદ્ભદ્રા-
હોતે હૈં વે તો દેવલોકમેં દેવરૂપસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર
દેવ વક્તવ્યતાકા કથન કરતે હૈં--

“ સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ અટ્ટસયા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરકે આઠસૌ શિષ્ય એસે થે, જિન્હે અનુ-
ત્તરોપપાતિક દેવલોકસે ચઢન હોનેકે વાદ મુક્તિ પ્રાપ્ત હોતી હૈ। યે આઠસૌ
શિષ્ય દ્રવ્ય દેવરૂપસે કહે ગયે હૈં । “ ગતિકલ્યાણ ” વિશેષણસે
હન્હે ઇસલિયે વિશેષિત ક્રિયા ગયા હૈ, કિ દેવગતિ રૂપ કલ્યાણ
હન્હે પ્રાપ્ત હોતા હૈ, “ સ્થિતિ કલ્યાણ ” સે યહ પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ,
કિ ૩૩ સાગરોપમ રૂપ સ્થિતિકે યે ભોક્તા હોગે । “ આગમેસિમ-

તો દેવલોકમાં દેવરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આઠ સ્થાન રૂપે
દેવોનું નિરૂપણ કરે છે--“ સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ અટ્ટ સયા ” इत्यादि
ટીકાર્થ- શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના આઠ સૌ શિષ્યો અનુપ્પ ભવ સંબંધી આયુષ્ય
પૂર્ણ કરીને અનુત્તરોપપાતિક દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થા છે ત્યાથી અર્ચીને તેઓ
છેલ્લો ભવ કરીને મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે. તે આઠ સૌ શિષ્યોને અહીં દ્રવ્ય દેવ
રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. “ ગતિકલ્યાણ ” તેમને ‘ ગતિકલ્યાણ ’ વિશેષણ
લગાડવાનું કારણ એ છે કે દેવગતિ રૂપ કલ્યાણની તેમને પ્રાપ્તિ થઈ છે.
“ સ્થિતિ કલ્યાણ ” આ પદનો અહીં પ્રયોગ થવાનું કારણ એ છે કે તેઓ
૩૩ સાગરોપમ પ્રમાણ સ્થિતિના ત્યાં ભોક્તા બનવાના છે. “ આગમેસિમહાણ ”

ગામ્-અનુત્તરોપપાતિકદેવલોકાચ્ચવનનન્તરમ્ આગમિષ્યતિ કાલે મદ્રં=મોક્ષ-
રૂપં કલ્યાણં યેષાં તે તથા તેષામ્-અનુત્તરોપપાનિકદેવલોકાચ્ચવનનન્તરં
મુક્તિ પ્રાપ્સ્યમાનાનાં શિષ્યાણામ્ અટ્ટ શતાનિ અનુત્તરોપપાતિકસમ્પદઃ અભવ-
ન્નિતિ ॥ સૂ. ૬૬ ॥

તીર્થંક્રુરા દેવસેવ્યા અતएव દેવસ્વરૂપમાહ—

મૂલમ્—અટ્ટવિહા વાળમંતરા દેવા પળ્લન્તા, તં જહા--પિસાયા
૧ ભૂયા ૨ જક્ષ્વા ૩ રક્ષસા ૪ કિન્નરા ૫ કિંપુરિસા ૬ મહો-
રગા ૭ ગંધર્વા ॥ ૧ ॥ ઇસિ ણં અટ્ટપ્પહં વાળમંતરદેવાણં
અટ્ટ ચેદ્ધયરુક્ષા પળ્લન્તા, તં જહા--કલંવો ૧ ય પિસાયાણં
વટો જક્ષાણચેદ્ધયં ૨ તુલસી ભૂયાણં ભવે ૩, રક્ષસાણં
ચ કંડઓ ૪ ॥ ૧ ॥ અસોઓ કિન્નરાણં ચ ૫, કિંપુરિસાણ ય ચંપઓ
૬ નાગરુક્ષો ભુયંગાણં ૭, ગંધર્વાણ ચ તેદુઓ ૮ ॥ ૨ ॥ સૂ. ૬૭ ॥

છાયા—અટ્ટવિધા વ્યન્તરા દેવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—પિશાચો. ૧, ભૂતાઃ
૨, યક્ષાઃ ૩, રાક્ષસાઃ ૪, કિન્નરાઃ ૫, કિમ્પુરુપાઃ ૬, મહોરગાઃ ૭, ગન્ધર્વાઃ
૮ ॥ ૧ ॥ ઇતેષાં સ્વલ્પ અટ્ટાનાં વ્યન્તરદેવાનામ્ અટ્ટો ચૈત્યવૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—કદમ્બશ્ચ પિશાચાનાં ૧, વટો યક્ષાણાં ચૈત્યમ્ ૨ તુલસી ભૂતાનાં ભવેત્
૩, રાક્ષસાનાં ચ કાળકઃ ૪ ॥ ૧ ॥ અશોકઃ કિન્નરાણાં ચ ૫, કિમ્પુરુપાણાં
ચ ચમ્પકઃ ૬ નાગવૃક્ષો ભુજંગાનાં ૭ ગન્ધર્વાણાં ચ તિન્દુકઃ ૮ ॥ ૨ ॥ સૂ. ૬૮ ॥

દાણં ” પદસે યહ પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ, કિ અનુત્તરોપપાતિક દેવલોકસે
ચવન હોનેકે બાદ યે આગામી કાલમેં-હસી ભવમેં મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેંગે. સૂ. ૬૦ ॥

તીર્થંકર દેવસેવ્ય હોતે હૈં, અતઃ અય સૂત્રકાર દેવસ્વરૂપકા કથન
કરતે હૈં—“ અટ્ટવિહા વાળમંતરા દેવા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ

આ પદના પ્રયોગ દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે અનુત્તરોપપાતિક
દેવલોકમાંથી ન્યવન થયા બાદ તેઓ આગામી કાળમાં-એજ ભવમાં-મુક્તિ
પ્રાપ્ત કરવાના છે. ॥ સૂ. ૬૬ ॥

તીર્થંકરોની દેવો દ્વારા પણ પથુ પાસના કરાય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર
દેવસ્વરૂપનું આઠ સ્થાન રૂપે કથન કરે છે—

“ અટ્ટવિહા વાળમંતરા દેવા પળ્લન્તા ” ઇત્યાદિ—

ટીકા—‘ અટ્ટવિહા ’ ઇત્યાદિ—

પિશાચાદયોઽષ્ટૌ વ્યન્તરા દેવા બોધ્યાઃ ॥ ૧ ॥ एतेषां पिशाचादीनाम्
अष्टानां व्यन्तरदेवानाम् अष्टौ चैत्यवृक्षाः=मणिपीठिकोपरिवर्त्तिनः सर्वरत्नमया
उपरिच्छत्रध्वजादिभिरलङ्कृताः सुधर्मादिसभानामग्रतः स्थिता आवासवृक्षाः
प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—कदम्बश्च पिशाचानामित्यादि । अर्थः स्पष्टः । नवरं—भुजङ्गा
महोरगा बोध्या इति ॥ सू० ६६ ॥

ટીકાર્થ—વ્યન્તર દેવ આઠ પ્રકારકે કહે ગયે છે—જैसे—પિશાચ
૧, ભૂત ૨, યક્ષ ૩, રાક્ષસ ૪, કિન્નર ૫, કિમ્પુરુષ ૬, મહોરગ ૭,
और गन्धर्व ८, इन आठ व्यन्तर देवोंके आठ चैत्यवृक्ष कहे गये हैं—
जैसे—पिशाचोंका कदम्ब १, यक्षोंका वट २, भूतोंका तुलसी ३, राक्ष-
सोंका कण्डक ४, किन्नरोंका अशोक ५, किम्पुरुषोंका चम्पक ६, भुज-
ङ्गोंका नागवृक्ष ७, और गन्धर्वोंका तिन्दुक ८ इस प्रकारसे ये आठ चैत्य-
वृक्ष हैं । ये आठों चैत्यवृक्ष मणिपीठिकाके ऊपर रहे हुए हैं । ये
सब सर्वरत्नमय हैं, ऊपरमें ये छत्र ध्वजा आदिकोंसे अलङ्कृत हैं,
सुधर्मादि सभाओंके आगे ये स्थित हैं । और ये आवास वृक्ष हैं ।
सुजङ्गसे महोरग कहे गये हैं ॥ सू० ६७ ॥

ટીકાર્થ—વ્યન્તર દેવોના નીચે પ્રમાણે આઠ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) પિશાચ, (૨)
ભૂત, (૨) યક્ષ, (૪) રાક્ષસ, (૫) કિન્નર, (૬) કિંપુરુષ, (૭) મહોરગ,
અને (૮) ગન્ધર્વ.

આ આઠ વ્યન્તર દેવોના આઠ ચૈત્યવૃક્ષો કહ્યાં છે. તે નામ નીચે પ્રમાણે
છે—(૧) પિશાચોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ કદમ્બ છે. (૨) યક્ષોના ચૈત્યવૃક્ષનું
નામ વટ છે. (૩) ભૂતોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ તુલસી છે. (૪) રાક્ષસોના
ચૈત્યવૃક્ષનું નામ કંડક છે. (૫) કિન્નરોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ અશોક છે, (૬)
કિપુરુષોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ ચંપક છે. (૭) ભુજંગોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ નાગવૃક્ષ
છે અને (૮) ગન્ધર્વોના ચૈત્યવૃક્ષનું નામ તિન્દુક છે. આ પ્રકારે આ
આઠ પ્રકારના વ્યન્તરોના આઠ ચૈત્યવૃક્ષો છે. તે આઠ ચૈત્યવૃક્ષો મણિપીઠિકાની
ઉપર જાંલાં છે. તેઓ સર્વરત્નમય છે. તેમની ઉપરનો ભાગ છત્ર, ધ્વજા આદિકો
વડે વિભૂષિત છે. તે ચૈત્યવૃક્ષો સુધર્માદિ સભાઓની આગળ ઉભેલાં છે અને
તેઓ આવાસવૃક્ષો છે. આ સૂત્રમાં ભુજંગ પદ વડે મહોરગ નામનો વ્યન્તરોનો
સાંતરો પ્રકાર ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂ. ૬૬ ॥

દેવપ્રસન્નાત્ જ્યોતિષ્કદેવસ્વરૂપમાહ—

મૂલમ્-इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ट जोयणंसए उड्डमबाहाए सूरविमाणे चारं चरेइ ॥ सू० ६८ ॥

છાયા—અસ્યાં રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યા વહુસમરમણીયાદ્ ભૂમિભાગાત્ અટ્ટ-યોજનશતાનિ ઊર્ધ્વમ્ અવાધયા સુરવિમાનં ચારં ચરતિ ॥ સુ૦ ૬૮ ॥

ટીકા—‘ इमीसे रयणप्पभाए ’ इत्यादि—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા ॥ સૂ૦ ૬૮ ॥

મૂલમ્-अट्ट नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं प्रमदं जोगं जोएत्ति, तं जहा--कत्तिया १, रोहिणी २, पुणवसु ३, महा ४, चित्ता ५, विसाहा ६, अणुराधा ७, जेह्ठा ८ ॥ सू० ६९ ॥

છાયા—अष्टौ नक्षत्राणि चन्द्रेण सार्द्धं प्रमदं योगं योजयन्ति, तद्यथा-कृत्तिका १, रोहिणी २, पुनर्वसु ३, मघा ४, चित्रा ५, विशाखा ६, अनुराधा ७, ज्येष्ठा ८ । सू० ६८ ॥

દેવ પ્રસન્નકો લેકર અવ સૂત્રકાર જ્યોતિષ્ક દેવકે સ્વરૂપકા કથન કરતે હૈં “ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ” इत्यादि ॥

इस रत्नप्रभा पृथिवीके बहुसमरमणीय भूमिभागसे आठसौ योजन ऊपर सूर विमानकी गति है ॥ सू० ६८ ॥

“ अट्ट नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—आठ नक्षत्र चन्द्रके साथ प्रमद योगसे युक्त होते हैं—जैसे-कृत्तिका १, रोहिणी २, पुनर्वसु ३, मघा ४, चित्रा ५, विशाखा ६,

આગલા સૂત્રમાં દેવવિશેષાનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું હવે સૂત્રકાર જ્યોતિષ્ક દેવેના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે—

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ” इत्यादि—

આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના બહુસમરમણીય ભૂમિભાગથી ૮૦૦ યોજનની ઊંચાઈએ સૂર્યનું વિમાન કોઈ પણ પ્રકારની રોકાવટ વિના ગતિ કરે છે. ॥સૂ. ૬૮॥

“ अट्ट नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—आठ नक्षत्रो चन्द्रनी साथे प्रमद योगથી युक्त હેય છે. તે નક્ષત્રોનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) કૃત્તિકા, (૨) રોહિણી, (૩) પુનર્વસુ, (૪) મઘા, (૫) ચિત્રા, (૬) વિશાખા, (૭) અનુરાધા અને (૮) જ્યેષ્ઠા.

ટીકા—‘અદ્ નવસ્વત્તા’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નવરં-પ્રમદો-યોગઃ=ચન્દ્રેણ સહ સ્પર્શલક્ષણો યોગ ઇતિ ।
અયં યોગઃ કદાચિદેવ, ન તુ સર્વદા । તદુક્તમ્—

“ પુનર્વસુરોહિણિ ચિત્તા મહજેદ્વુરાહકિત્તિયવિસાહા ।

ચંદ્રસ્ય ઉભયજોગા ”

છાંયા—પુનર્વસુરોહિણી ચિત્રા મધ્યા ઝ્યેષ્ઠાનુરાધાકૃત્તિકા વિશાખાઃ ।

ચન્દ્રસ્ય ઉભયયોગાઃ ઇતિ । એતાનિ નક્ષત્રાણિ ચન્દ્રસ્ય ઉભયયોગાનિ=
દક્ષિણોત્તરરૂપોભયપાર્શ્વે યુજ્યમાનાનિ ભવન્તિ । અતસ્તાનિ કદાચિત્ પ્રમદયોગી
ન્યપિ ભવન્તીતિ, માવઃ, એતત્ફલં ચેદમ્—“ એતેષામુત્તરગા ગ્રહાઃ સુમિક્ષાય
ચન્દ્રમા નિતરામ્ (સુમિક્ષાય) ” ઇતિ ॥ સુ. ૬૯ ॥

અનુરાધા ૭ ઓર ઝ્યેષ્ઠા ૮ ચન્દ્રકે સાથ સ્પર્શ હોના હસકા નામ પ્રમદ
યોગ હૈ, યહ યોગ કદાચિત્ હોના હૈ સર્વદા નહીં હોના । કહા મી હૈ ।

“ પુનર્વસુ રોહિણી ચિત્તા ” ઇત્યાદિ ।

હસ કથનકે અનુસાર ચન્દ્રકે ઉભય યોગ હોતે હૈ—અર્થાત્ પુનર્વસુ
આદિ નક્ષત્ર ચન્દ્રકે દક્ષિણ ઉત્તર રૂપ ઉભય પાર્શ્વમેં યોગવાલે હોતે
હૈ । હસલિયે વે કદાચિત્ પ્રમદ યોગવાલે મી હોતે હૈ । હનકા ફલ
“ એતેષામુત્તરગા ગ્રહાઃ સુમિક્ષાય ચન્દ્રમા નિતરાં સુમિક્ષાય ” હસ
કથનકે અનુસાર એસા પ્રકટ કિયા ગયા હૈ, પુનર્વસુ આદિ નક્ષત્ર ચન્દ્ર-
માસે ઉત્તરમેં રહે તો સુમિક્ષ હોતા હૈ ॥ સુ. ૬૯ ॥

દેવ નિવાસકે અધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકાર દેવનિવાસભૂત
જો જમ્બૂદ્વીપ આદિક હૈં હનકા દ્વારસૂત્ર કહતે હૈં—

ચન્દ્રની સાથે સ્પર્શ થવો તેનું નામ પ્રમદયોગ છે. આ પ્રકારનો યોગ
ક્યારેક જ સંભવી શકે છે.—કાયમ સંભવતો નથી કહ્યું પણ છે કે—“ પુનર્વસુ
રોહિણી ચિત્તા ” ઇત્યાદિ.

આ કથન અનુસાર ચન્દ્રના ઉભયયોગ થાય છે. એટલે કે પુનર્વસુ આદિ
નક્ષત્ર ચન્દ્રના દક્ષિણ ઉત્તર રૂપ બન્ને પાર્શ્વોમાં યોગવાળાં હોય છે.
તેથી તેઓ ક્યારેક પ્રમદ યોગવાળા પણ હોય છે. “ એતેષામુત્તરગા
ગ્રહાઃ સુમિક્ષાય ચંદ્રમા નિતરાં સુમિક્ષાય ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા તેમનું ફલ આપ્યું
છે—પુનર્વસુ આદિ નક્ષત્રો ચન્દ્રમાની ઉત્તરમાં રહે તો સુમિક્ષ (સુકાળ)
રૂપ ફળની પ્રાપ્તિ થાય છે. ॥ સુ. ૬૯ ॥

દેવનિવાસનો અધિકાર આવી રહ્યો છે. છેથી હવે સૂત્રકાર દેવનિવાસભૂત
જે જમ્બૂદ્વીપ આદિ ક્ષેત્રો છે તેમનાં દ્વારોનું નિરૂપણ કરે છે—

દેવનિવાસાધિકારાદ્ દેવનિવાસભૂતજમ્બૂદ્વીપાદિદ્વારસૂત્રમાહ--

મૂલમ્-જંબુદ્વીવસ્સ ણં દીવસ્સ દારા અટ્ટ જોયણાં ડહું
ઉચ્ચત્તેણં પળણત્તા ૧। સબ્વેસિંપિ દીવસમુદ્દાણં દારા અટ્ટ જોય-
ણાં ડહું અચ્ચત્તેણં પળણત્તા । ૨ । સૂ૦ ૭૦ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપસ્ય खलु द्वीपस्य द्वाराणि अष्ट योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन
प्रज्ञप्तानि १। सर्वेषामपि द्वीपसमुद्राणां द्वाराणि अष्ट योजनानि ऊर्ध्वम् उच्चत्वेन
प्रज्ञप्तानि २ ॥ सू० ७० ॥

ટીકા--‘ જંબુદ્વીવસ્સ ણં ’ इत्यादि--

व्याख्या स्पष्टा । सू० ७० ॥

દેવાધિકારાદ્ યત્કર્મવશાઞ્જીવા દેવત્વં યાન્તિ તાનિ કર્માણ્યાહ--

મૂલમ્-પુરિસવેયાણિજ્જસ્સ ણં કમ્મસ્સ જહન્નેણં અટ્ટ સંવ-
ચ્છરાં ઠિર્ઠિ પળણત્તા ૧। જસોકિત્તિનામયસ્સ ણં કમ્મસ્સ જહ
ણેણં અટ્ટ મુહુત્તાં બંધઠિર્ઠિ પળણત્તા ૨। ઉચ્ચગોયસ્સ ણં
કમ્મસ્સ એવં ચેવ ૩ ॥ સૂ૦ ૭૧ ॥

છાયા—પુરુષવેદનીયસ્ય खलु कर्मणो जघन्येन अष्टौ संवत्सरान् स्थितिः
प्रज्ञप्ता १। यशः कीर्त्तिनामकस्य खलु कर्मणो जघन्येन अष्ट मुहूर्त्तान् बन्धस्थितिः
प्रज्ञप्ता २। उच्चगोत्रस्य खलु कर्मण एवमेव ३ ॥ सू० ७१ ॥

“ જંબુદ્વીવસ્સ ણં દીવસ્સ દારા ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—જંબુદ્વીપ નામકા જો મધ્યદ્વીપ હૈ, ઉસકે દ્વાર ડહાઈમેં આઠ
યોજનકે કહે ગયે હૈં ૧। સમસ્ત દ્વીપ સમુદ્રોંકે દ્વાર હસી પ્રકારસે આઠ
૨ યોજનકે ડહાઈ કહે ગયે હૈં ॥ સૂત્ર ૭૦ ॥

દેવ અધિકારકો લેકર હી અવ સૂત્રકાર જિસ કર્મકે વશસે જીવ

“ જંબુદ્વીવસ્સ દારા ” ध्यादि—(सू. ६४)

ટીકાર્થ—जम्बूद्वीप नामको जे मध्यद्वीप छे तेना द्वारोनी ठांयाँ आठ
योजननी कही छे. समस्त द्वीपसमुद्रोनां द्वारो पण्. ञ्. प्रमाणे आठ आठ योजन
ठांयां कही छे. ॥ सू. ७०. ॥

દેવનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર જે કર્મોના પ્રભાવથી
જીવ દેવત્વની પ્રાપ્તિ કરે છે તે કર્મોનું કથન કરે છે--

ટીકા—‘ પુરુષવેયણિજ્જસ્સ ’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा ॥ सू० ७१ ॥

कर्माधिकारात्तन्निबन्धनकुलकोटिसूत्रमाह—

मूलम्--तेइंदियाणं अट्ट जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयस-
हस्सा पणत्ता । सू० ७२ ॥

छाया—त्रीन्द्रियाणाम् अष्टौ जाति कुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञ-
प्तानि ॥ सू० ७२ ॥

ટીકા—‘ તેઈંદિયાણં ’ इत्यादि—

त्रीन्द्रियाणां जीवानाम् अष्टसंख्यकानि जातियोनिप्रमुखकुलकोटिशतसह-
स्राणि-जातौ=त्रीन्द्रियजातौ या योनिप्रमुखाः=द्विलक्षं ख्यकत्रीन्द्रियोत्पत्तिस्थान-
देवत्वको प्राप्त करते हैं उन कर्मों का कथन करते हैं—

“ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स ” इत्यादि

टीकार्थ—पुरुष वेदनीय कर्मकी स्थिति जघन्य आठ वर्षकी कही गई
है, यशः कीर्ति नामक कर्मकी बन्ध स्थिति जघन्यसे आठ मुहूर्त्तकी कही
गई है । उच्चगोत्र कर्मकी भी बन्ध स्थिति आठही मुहूर्त्त कही गई
है ॥ सूत्र ७१ ॥

कर्मके अधिकारको लेकर अब सूत्रकार उसके कारणभूत कुल-
कोटि-सूत्रका कथन करते हैं—

“ ते इंदियाणं अट्ट जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा ” इत्योदि
टीकार्थ—तेइन्द्रिय जीवोंकी तेइन्द्रिय जानिमें जो दो लाख योजनियां—उत्प-
त्तिस्थान कही गई है उनसे उत्पन्न जो कुल कोटियां है वे आठ लाख

“ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स ” इत्यादि—

टीકાર્થ—પુરુષ વેદનીય કર્મની જઘન્ય (ઓછામાં ઓછી) સ્થિતિ આઠ વર્ષની
કહી છે યશઃકીર્તિ નામના કર્મની બન્ધસ્થિતિ પણ જઘન્યની અપેક્ષાએ આઠ
મુહૂર્તની કહી છે, ઉચ્ચગોત્રકર્મની બન્ધ સ્થિતિ આઠ જ મુહૂર્તની કહી છે । સૂ ૭૧ ।

કર્મનો અધિકાર આવી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર તેના કારણભૂત કુલકોટિ
સૂત્રનું કથન કરે છે “ તેઈંદિયાણં અટ્ટ જાઈ કુલકોડી જોણીપમુહસયસહસ્સા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તેઈન્દ્રિય જીવોની તેઈન્દ્રિય જાતિમાં જે બે લાખ યોનીઓ (ઉત્પત્તિ
સ્થળોનીઓ) કહી છે, તેમાં ઉત્પન્ન થયેલી એવી જ કુલ કોટીઓ છે તેમની સંખ્યા
આઠ લાખની કહી છે, કારણ કે એક જ યોનીમાં અનેક કુલકોટીઓ હોય છે.

દ્વારકાઃ કુલકોટયસ્તાસાં શતસહસ્રાણિ=લક્ષાણિ પ્રજ્ઞાસાનિ=પ્રરૂપિતાનિ । અયં
ભાવઃ--ત્રીન્દ્રિયજાતૌ યા યોનયઃ=દ્વિલક્ષસંખ્યકાનિ ઉત્પત્તિસ્થાનાનિ તત્પ્રમવા-
યાઃ કુલકોટયસ્તા અષ્ટલક્ષસંખ્યકા બોધ્યા इति । एकस्यामपि योनौ अनेककु-
लानि संभवन्ति । यथा-गोमयरूपायामेकस्यां योनौ विचित्राकाराः कृम्यादय
उत्पद्यन्ते, अतोऽष्टलक्षसंख्यकाः कुलकोटयो भवन्तीति । 'जोणिपमुह' इति
विशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वादिति ॥ सू० ७२ ॥

ત્રીન્દ્રિયાશ્ચ કર્મપુદ્ગલચયાદિસત્ત્વે એવ ભવન્તીતિ ચયાદીનાહ--

મૂલમ્--જીવા ણં અદ્દટ્ટાણણિવ્વત્તિણ પોગ્ગલે પાવકમ્મત્તાણ
ચિણિંસુ વા ચિણંતિ વા ચિણિસ્સંતિ વા, તં જહા--પદમસમય-
નૈરહય નિવ્વત્તિણ જાવ અપદમસમયદેવનિવ્વત્તિણ । एवं--
ચિણ ઉવચિણ જાવ નિજ્જરા ચેવ । અદ્દ પણસિયા સંધા અણંતા
પણંત્તા । અદ્દ પણસોગાઢા પોગ્ગલા અણંતા પણંત્તા જાવ
અદ્દુગુણલુલ્લા પોગ્ગલા અણંતા પણંત્તા । सू० ७३ ॥

॥ અદ્દમં ઠાણં સમ્મતં ॥ ૮ ॥

છાયા--જીવાઃ સ્વલ્પ અષ્ટસ્થાનનિર્વર્તિતાન્ પુદ્ગલાન્ પાપકર્મત્વયા અચિ-
ન્વન્ વા ચિન્વન્તિ વા ચેત્સ્યન્તિ વા, તથા--પ્રથમસમયનૈરયિકનિર્વર્તિતાન્
હૈં । क्योंकि एक भी योनिमें अनेक कुलकोटियां होती हैं जैसे एक
ही गोमय रूप योनिमें विचित्र आकारवाले कृमि उत्पन्न हो जाते हैं ।
इसलिये इनकी तेइन्द्रिय जीवों की कुलकोटियां आठ लाख कही
गई है ॥ सूत्र ७२ ॥

કર્મ પુદ્ગલોંકે ચયાદિ સત્ત્વ હોને પર હી તેહન્દ્રિય જીવ હોતે હૈં--
અનઃ અવ સૂત્રકાર ચયાદિકોંકા કથન કરતે હૈં--

એમ કે--એક જ ગોમય રૂપ યોનીમાં વિચિત્ર આકારવાળા કૃમિ ઉત્પન્ન થઈ
જાય છે તે કારણે તેમની (ત્રીન્દ્રિય જીવોની) કુલકોટીઓ આઠ લાખ કહેવામાં
આવી છે. ॥ સં. ૭૨ ॥

કર્મપુદ્ગલોના ચયાદિ સત્ત્વને સદ્ભાવ હોય તો જ તેહન્દ્રિય જીવો
ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ચયાદિકોંકાનું નિરૂપણ કરે છે--

यावत् अमथमसमयदेवनिर्वर्तितान् । एवं चय उपचयो यावद् निर्जरा चैव ।
अष्टप्रदेशिकाः स्फुन्धाः अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । अष्ट प्रदेशावगाढाः पुद्गला अनन्ताः
प्रज्ञप्ता यावत् अष्टगुणरूक्षाः पुद्गला अनन्ताः प्रज्ञप्ताः ॥ सू ० ७३ ॥

॥ अष्टमं स्थानं समाप्तम् ॥ ८ ॥

टीका—‘ जीवा ण ’ इत्यादि—

जीवा ज्ञानावरणीयाद्यस्थानैर्निर्वर्तितान् पुद्गलान् पापकर्मतया ‘चिणिंस्तु
चिणंति चिणिस्संति ’ ‘अचिन्वन् वा ’ उपादुः भूतकाले पुद्गलानां चयमुपादा-
नमकार्पुः, चिन्वन्ति वा वर्त्तमानकाले चयं कुर्वन्ति, भविष्यत्काले चयं
करिष्यन्ति वा । एतद् तेषां पुद्गलानामुपचयं, बन्धम्, उदीरणं, वेदनं
निर्जरणं च अकार्पुः कुर्वन्ति, करिष्यन्ति वेति भावः । तत्र चयः—पुद्गला-
नामुपादानम्, उपचयस्तेषां परिपोषणम्, बन्धः—बन्धनम्, उदीरणम्—इन्द्रि-

“ जीवाणं अट्टट्ठाण णिन्वत्तिण पोगगले ” इत्यादि ॥

टीकार्थ—जीवोंने ज्ञानावरणीय आदि आठ स्थानोंसे निर्वर्तित पुद्गलोंका
पापकर्म रूपसे चय—उपादान—अर्थात् ग्रहण किया है, अब भी वे उनका
उपादान करते हैं और आगे भी वे ऐसाही करेंगे। इसी प्रकार पुद्गलोंका
उपचय अर्थात् परिपोषण बन्ध बांधना, उदीरण—इन्द्रियोंसे खींचकर
दलिकोंका उद्धारमें लाना, वेदन—अनुभव करना, और निर्जरा—आत्म-

“ जीवाणं अट्टट्ठाणणिन्वत्तिण पोगगले ” इत्यादि—

टीकार्थ—જીવોએ જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ સ્થાનોથી નિવર્તિત પુદ્ગલોનો
પાપકર્મ રૂપથી ચય—ઉપાદાન અર્થાત્ ગ્રહણ કર્યો છે. વર્તમાનમાં પણ તેઓ તે
ઉપાદાન કરે છે. અને ભવિષ્યમાં પણ તેઓ તેનો ચય કરશે. એજ રીતે પુદ્ગલ-
લોનો ઉપચય અર્થાત્ પરિપોષણ—બાંધ બાંધવો, ઉદીરણ—ઇન્દ્રિયોથી ખેંચીને
દલિકોનો ઉદ્ધારમાં લાવવા વેદન—અનુભવ કરવો. અને નિર્જરા—આત્મપ્રદેશથી

યૈરાકુળકર્મદલિકાનામુદયે પ્રાપ્તમ્, વેદનમ્-અતુભવકરણમ્, નિર્જરણમ્
આત્મપ્રદેશેભ્યસ્તેષાં પૃથક્કરણમ્ । इत्यादि । शेषं सुगममिति ॥ सू० ७३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-मसिद्धवाचक-पञ्चदशमापा-कलितललितक-

लापालापक प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्री शाहू-

लत्रपति - कोल्हापुरराजप्रदत्त-जैनशास्त्राचार्य-पदभूषित-कोल्हापुर

राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य - जैनधर्मदिवाकर-पूज्य

श्री घासीलालत्रति-विरचितायां स्थानाङ्गसूत्रस्य

सुधाख्यायां व्याख्यायां अष्टमं स्थानं

सम्पूर्णम् ॥ ८ ॥

પ્રદેશોંસે પરિશાટન અલગ કરના, જીવોંને જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ
સ્થાનોંસે નિવર્તિત પુદ્ગલોંકા ચય, ઉપચય, બન્ધ, ઉદીરણ, વેદન ઓર
નિર્જરા યે સઘ પૂર્વ કાલમેં કિયે હૈં, વર્તમાનમેં કરતે હૈં ઓર અનાગત
કાલમેં કરેંગે । इत्यादि शेष व्याख्या सुगम है ॥ सू० ७३ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ
રચિત “ સ્થાનાંગ સૂત્ર ” કી સુધા નામકી વ્યાખ્યાકે આઠવાં સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૮ ॥

પરિશાટન-અલગ કરવું. જીવોંને જ્ઞાનાવરણીય વિગેરે આઠ સ્થાનોથી નિવર્તિત
પુદ્ગલોંને ચય ઉપચય બન્ધ, ઉદીરણ, વેદન અને નિર્જરા આ બધા પહેલાં
કર્યો છે. વર્તમાનમાં કરે છે, અને ભવિષ્ય કાળમાં કરશે. ॥ સૂ. ૭૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“સ્થાનાંગ સૂત્ર” ની સુધા નામની ટીકામાં આઠમું સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૮ ॥

અથ નવમં સ્થાનમ્ પ્રારમ્ભ્યતે--

પૂર્વમષ્ટમં સ્થાનમુક્તં, સમ્પ્રતિ સંખ્યાક્રમાડ્ઽગતં નવમં સ્થાનં પ્રારમ્ભ્યતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયં સમ્બન્ધઃ--તથાહિ-પૂર્વસ્મિન્ સ્થાને જીવાદિ ધર્મા ઉક્તાઃ, હાપિ ત એવ પ્રતિપાદ્યન્તે इत्येवं સમ્બન્ધેનાડ્ઽયાતસ્યાસ્યેદં પ્રથમં સૂત્રમ્ । તસ્ય ચ પૂર્વસૂત્રેણ સહાયં સમ્બન્ધઃ--તથાહિ-પૂર્વસૂત્રે પુદ્ગલા ઉક્તાઃ, તદ્વિશેષોદયાચ્ચ કશ્ચિરૂહામણ્યં પ્રાપ્તોડ્પિ ધર્માચાર્યાદીનાં પ્રત્યનીકતાં કરોતિ, તં ચ સાંભોગિકં વિસમ્ભોગિકં કુર્વન્તમપરઃ સુશ્રમણો જિનાજ્ઞાં નાતિક્રામ્યતીતિ પ્રદર્શયિતુમાહ--

મૂશ્મ--નવહિં ઠાળેહિં સમણે ણિગંથે સંભોઈયં વિસંભો-
ઈયં કરેમાળે ણાઙ્કમઙ્, તં જહા--આયરિયપહિણીયં ૧, ઉવજ્ઞા-

નવવે સ્થાનકા પ્રારંભ--

इसके पहिले आठवां स्थान कहा जा चुका है, अब संख्या क्रमा-
नुसार नौवां स्थान प्रारम्भ होता है, इसका पूर्वके साथ ऐसा सम्बन्ध
है कि पूर्वस्थानमें जो जीवादि आठ स्थानसे धर्म कहे गये हैं, सो यहां पर
भी उनकाही कथन किया जायगा--तथा पूर्वके सूत्रके साथ ऐसा सम्बन्ध
है कि पूर्वसूत्रमें पुद्गल कहे गये हैं--सो इन पुद्गलोंके उदयसे कोई जीव
श्रामण्य पर्यायको प्राप्त होने पर भी अपने धर्माचार्यके प्रति विरुद्ध
व्यवहार कर देता है, इसलिये उस सांभोगिकको विसंभोगिक करता
हुआ कोई दूसरा श्रमण जिनाज्ञाका उल्लङ्घनकर्ता नहीं होता है, यही
बात अब सूत्र कार सर्व प्रथम प्रकट करते हैं--

નવમા સ્થાનનો પ્રારંભ--

આઠમું સ્થાન પૂરું થયું. હવે ક્રમપ્રાપ્ત નવમા સ્થાનનો પ્રારંભ થાય છે
તેનો પૂર્વસ્થાન સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે--પૂર્વસ્થાનમાં જીવાદિ ધર્મનું કથન
કરવામાં આવ્યું છે, આ નવમા સ્થાનમાં પણ તેમનું જ કથન કરવામાં આવશે.
આઠમા સ્થાનના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ સ્થાનના પહેલા સૂત્રનો આ પ્રકારનો
સંબંધ છે--આઠમા સ્થાનના છેલ્લા સૂત્રમાં પુદ્ગલોનું કથન કરવામાં આવ્યું
છે. તે પુદ્ગલોના ઉદયથી કોઈ જીવ શ્રામણ્યપર્યાય પ્રાપ્ત કરેલ હોવા છતાં
પણ પોતાના ધર્માચાર્ય પ્રત્યે વિરુદ્ધ વર્તન બતાવે છે. એવા સાંભોગિક સાધુને
વિસાંભોગિક બહિર કરનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાતો નથી. એજ વાતનું
સૂત્રકારે આ સ્થાનના પહેલા સૂત્રમાં પ્રતિપાદન કર્યું છે.

યપડિણીયં ૨, થેરપડિણીયં ૩, કુલપડિણીયં ૪, ગણપડિણીયં ૫, સંઘપડિણીયં ૬, ણાણપડિણીયં ૭, દંસણપડિણીયં ૮, ચરિત્તપડિણીયં ૯ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

છાયા--નવમિઃ સ્થાનૈઃ શ્રમણો નિર્ગ્રન્થઃ સાંભોગિકં વિસમ્ભોગિકં કુર્વન્ નાતિક્રામતિ, તથથા-આચાર્યપ્રત્યનીકમ્ ૧, ઉપાધ્યાયપ્રત્યનીકમ્ ૨, સ્થવિરપ્રત્યનીકમ્ ૩, કુલપ્રત્યનીકમ્ ૪, ગણપ્રત્યનીકમ્ ૫, સંઘપ્રત્યનીકમ્ ૬, જ્ઞાનપ્રત્યનીકમ્ ૭, દર્શનપ્રત્યનીકમ્ ૮, ચારિત્રપ્રત્યનીકમ્ ૯ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા--' નવહિં ઠાણેહિં ' इत्यादि--

નવમિઃ-અનુપદં વક્ષ્યમાણૈઃ સ્થાનૈઃ નિર્ગ્રન્થઃ શ્રમણઃ સાંભોગિકં-સંભોગઃ-સમાનસમાચારાણાં સાધુનામેકત્ર પરસ્પરપ્રવધ્યાદિદાનાઽઽદાનવ્યવહારઃ સોઽસ્ત્યસ્યેતિ સામ્ભોગિકઃ, સ એવ સામ્ભોગિકસ્તં સામ્ભોગિકં શ્રમણં વિસમ્ભોગિકં સમ્ભોગવર્જિતં કુર્વન્ નાતિક્રામતિ-જિનાજ્ઞાં નોલ્લઙ્ઘયતિ, તાન્યેવ સ્થાનાનિ પ્રદર્શયતિ--" તં જહે ' ત્યાદિ સ્પષ્ટમ્ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

" નવહિં ઠાણેહિં સમણે ગિમંથે સંભોજ્યં વિસંભોજ્યં " इत्यादि सू० १
ટીકાર્થ-નૌ સ્થાનોંકો લેકર શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ સાંભોગિક સાધુકો સમાન સમાચારીવાલે સાધુમોંકા એકત્ર પરસ્પરમેં ઉપધિ આદિકે લેને દેને રૂપ વ્યવહારવાલે સાધુકો વિસમ્ભોગિક-સમ્ભોગવર્જિત કરતા હુઆ જિનાજ્ઞાકા ઉલ્લંઘન નહીં કરતાહૈ વે નૌ સ્થાન હસ પ્રકારસેહૈ-જોસાંભોગિક સાધુ આચાર્યકે પ્રત્યનીક-વિરુદ્ધ હોતા હૈ ઉપાધ્યાયકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ સ્થવિરકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ, કુલકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ, ગણકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ, સંઘકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ, જ્ઞાનકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ, દર્શનકે પ્રત્યનીક હોતા હૈ ઓર ચરિત્રકે પ્રત્યનીક હોતાહૈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

" નવહિં ઠાણેહિં સમણે ગિમંથે સંભોજ્યં વિસંભોજ્યં " इत्यादि--

ટીકાર્થ-સમાન સમાચારીવાળા સાધુઓને-પરસ્પરના ઉપધિ આદિ લેવા દેવાને વ્યવહાર હોય એવા સાધુઓને-સાંભોગિક સાધુઓ કહે છે. નીચેનાં નવ કારણો ને લીધે કોઈ પણ સંભોગિક સાધુને વિસંભોગિક બંહેર કરનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનો વિરાધક ગણાતો નથી. (૧) જો કોઈ સાંભોગિક સાધુ આચાર્ય પ્રત્યનીક હોય (વિરોધી, દ્વેષી, અથવા દુશ્મનાવટ રાખનારને પ્રત્યનીક કહે છે.), (૨) જો કોઈ સાધુઉપાધ્યાય પ્રત્યનીક હોય, (૩) સ્થવિરપ્રત્યનીક હોય, (૪) કુલ પ્રત્યનીક હોય, (૫) ગણ પ્રત્યનીક હોય, (૬) સંઘ પ્રત્યનીક હોય, (૭) જ્ઞાન પ્રત્યનીક હોય, (૮) દર્શન પ્રત્યનીક હોય અને (૯) ચારિત્ર પ્રત્યનીક હોય, તો તેને વિસંભોગિક બંહેર કરનાર સાધુ જિનાજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરતો ગણાતો નથી. ॥ સૂ. ૧ ॥

પૂર્વ જિનાજ્ઞાનતિક્રામકઃ શ્રમણ ઉક્તઃ, સ ચ બ્રહ્મચર્યરત એવ ભવતીતિ બ્રહ્મ-
ચર્ય વિભવતું તત્પ્રતિપાદકાધ્યયનાનિ દર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્--જવ વંમચેરા પળગત્તા, તં જહા--સત્થપરિજ્ઞા ૧,
લોકવિજઓ ૨, જાવ ઉવહાણસુયં ૮ મહાપરિણા ૯ ॥સૂ ૦૨॥

છાયા—નવ બ્રહ્મચર્યાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—શસ્ત્રપરિજ્ઞા ૧, લોકવિજયઃ
૨, યાવત્ ઉપધાનશ્રુતમ્=મહાપરિજ્ઞા ૯ ॥ સૂ ૦ ૨ ॥

ટીકા—“ જવ વંમચેરા ” इत्यादि—

બ્રહ્મચર્યાણિ-કુશલાનુષ્ઠાનાનિ તત્પ્રતિપાદકાધ્યયનાન્યાચારાઙ્ગઃ-પ્રથમશ્રુત-
સ્કન્ધપ્રતિવદ્વાનિ નવ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તાનિ પરિગણયતિ-‘ તં જહે ’ ત્યાદિના,
તથા-શસ્ત્રપરિજ્ઞા-શસ્ત્ર-દ્રવ્યભાવભેદાદનેકવિધં તસ્ય જીવહિંસાનિમિત્તસ્ય

પહિલે જિનાજ્ઞાકા અનતિક્રામક હોતા હૈ, એસા કહા ગયા હૈ, સો
એસા શ્રમણ બ્રહ્મચર્યમેં રતહી હોતા હૈ હસલિયે અવ સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્ય
પ્રતિપાદક અધ્યયનોંકો પ્રકટ કરનેકે લિયે કથન કરતે હૈ—

“ જવ વંમચેરા પળગત્તા ’ इत्यादि । सूत्र २ ॥

ટીકાર્થ-કુશલ અનુષ્ઠાનોંકા નામ બ્રહ્મચર્ય હૈ, इन कुशलानुष्ठान रूप
બ્રહ્મચર્યકેપ્રતિપાદક જો અધ્યયનહૈ-આચારાઙ્ગકે પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધસે પ્રતિ-
ષદ્ધ-જો અધ્યયન હૈં વે નૌ કહે ગયે હૈં-જો હસ પ્રકારસે હૈં-જૈસે-શસ્ત્ર
પરિજ્ઞા ૧, લોકવિજય ૨, યાવત્ ઉપધાનશ્રુત ૮ ઓર મહાપરિજ્ઞા
૯ इनमें जो शस्त्र, द्रव्य और भावके भेदसे दो प्रकारका है, जीव हिंसाके
નિમિત્ત ભૂત શસ્ત્રકા જ્ઞાનપૂર્વક ત્યાગ કરના સો શસ્ત્રપરિજ્ઞા હૈ,
यह शस्त्र परिज्ञा प्रतिपाद्य रूपसे जिस अध्ययनमें है वह अध्ययन भी
“ શસ્ત્રપરિજ્ઞા ” હસ નામસે કહા ગયા હૈ, शत्रुकी तरह रागद्वेष
રૂપ ભાવલોકકા દૂર કરના યહ લોક વિજય હૈ, इस लोकविजयका
પ્રતિપાદક જો અધ્યયન હૈ વહ અધ્યયન મી “ લોકવિજય ” હસ

‘ જિનાજ્ઞાનુ’ ઉલ્લેખન નહીં કરનાર શ્રમણ નિર્થક સદા બ્રહ્મચર્યના પાલ
-નમાં પ્રયત્નશીલ રહે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્યનું પ્રતિપાદન કરનારાં
અધ્યયનોનું નિરૂપણ કરે છે—“ જવ વંમચેરા પળગત્તા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ-કુશલ અનુષ્ઠાનોનું નામ બ્રહ્મચર્ય છે. આચારાંગ સૂત્રના પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધ
રૂપે પ્રતિષદ્ધ જે નવ અધ્યયનો છે તેમાં આ કુશલ અનુષ્ઠાન રૂપ બ્રહ્મચર્યનું
પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું છે. તે નવ અધ્યયનો નીચે પ્રમાણે છે-(૧) શસ્ત્ર-
પરિજ્ઞા, (૨) લોકવિજય (યાવત્) (૮) ઉપધાનશ્રુત, અને (૯) મહાપરિજ્ઞા

પરિજ્ઞા-જ્ઞાનપૂર્વકં પરિહરણં શસ્ત્રપરિજ્ઞા, સા પ્રતિપાદત્વેન યસ્મિન્નધ્યયનેઽસ્તિ તદધ્યયનમપિ શસ્ત્રપરિજ્ઞેતિ વ્યવહિયતે ૧. એવં લોકવિજયઃ-તદાખ્યમધ્યયનમ્ તત્ર લોકસ્ય-રાગદ્વેષલક્ષણસ્ય ભાવલોકસ્ય વિજયઃ-શત્રોરિવ પરાજયઃ-દૂરીકરણં લોકવિજયઃ, તત્પ્રતિપાદકમધ્યયનમપિ લોકવિજયો વ્યપદિશ્યતે ૨, 'યાવત્' ઇતિ પદેન-'સીઓસણિજ્જં ૩, સમ્મત્તં ૪, આવંતી ૫, ધુયં ૬, વિમોહાયણં' ઇત્યેતાનિ સંગ્રાહ્યાનિ, છાયા-શીતોષ્ણીયં ૪, સમ્યક્ત્વં ૫, આવન્તી ૬, ધુતં ૭, વિમોહઃ ૮, તત્ર-શીતોષ્ણીયં-શીતાઃ-અનુકૂલાઃ પરીપદાઃ, ઉષ્ણાઃ-પ્રતિકૂલાઃ પરીપદાઃ, તાનધિકૃત્ય કૃતમધ્યયનં શીતોષ્ણીયમ્ ૩, તથા-'સમ્યક્ત્વમ્ અચલ વિધેયં-કષ્ટતપઃસેવિનાં તાપસાદીનામણિમાથૈશ્વર્યગુણાન્ દૃષ્ટ્વા દષ્ટિ

નામસે કહા ગયા હૈ । યહાં યાવત્પદસે "સીઓસણિજ્જં ૩, સમ્મત્ત ૪ આવંતી ૫, ધુયં ૬ વિમોહાયણં" હન પદોંકા સંગ્રહણ હુઆ હૈ શીત-અનુકૂલ પરીપદ્દ એવં ઉષ્ણ-પ્રતિકૂલ પરીપદ્દ-હન દોનોં પ્રકારકી પરીપદ્દોંકો લેકર જો અધ્યયન કિયા ગયા હૈ, વહ શીતોષ્ણીય અધ્યયન હૈ, ૭ કષ્ટપૂર્વક તપકા સેવન કરનેવાલે તાપસ આદિજનોંકી અણિમા આદિ રૂપ આઠ પ્રકારકે એશ્વર્યરૂપ ગુણોંકો દેખકર દૃષ્ટિમોહ નહીં કરના

અહીં 'યાવત્' પદ વડે "સીઓસણિજ્જં ૩, સમ્મત્ત ૪, આવંતી ૫, ધુયં ૬, વિમોહાયણં." (૩) શીતોષ્ણીયા અધ્યયન, (૪) સમ્યક્ત્વ અધ્યયન, (૫) અવંતી અધ્યયન, (૬) ધુત અધ્યયન અને (૭) વિમોહ અધ્યયન, આ અધ્યયનોને શ્રેષ્ઠ કરવામાં આવ્યાં છે.

(૧) શાસ્ત્રપરિજ્ઞા-શાસ્ત્રના દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ બે ભેદ પડે છે. ભવદ્વિસાના નિમિત્તભૂત શાસ્ત્રને જ્ઞાનપૂર્વક ત્યાગ કરવો તેનું નામ શાસ્ત્રપરિજ્ઞા છે. જે અધ્યયનમાં આ વિષયનું પ્રતિપદન કરવામાં આવ્યું છે તે અધ્યયનમાં પણ અહીં 'શાસ્ત્રપરિજ્ઞા' નામ આપવામાં આવ્યું છે.

(૨) લોકવિજય-શત્રુની જેમ રાગદ્વેષ રૂપ ભાવલોકને દૂર કરવો તેનું નામ લોકવિજય છે. આ લોકવિજયનું પ્રતિપાદન કરનાર જે અધ્યયન છે તેનું નામ પણ અહીં "લોકવિજય" આપવામાં આવ્યું છે.

(૩) શીતોષ્ણીય અધ્યયન-શીત (અનુકૂલ પરીપદ્દ) અને ઉષ્ણ (પ્રતિકૂલ પરીપદ્દ) આ બન્ને પ્રકારના પરીપદ્દો વિષેનું જે અધ્યયન છે તેનું નામ "શીતોષ્ણીય અધ્યયન" છે.

(૪) સમ્યક્ત્વ અધ્યયન-કષ્ટપૂર્વક તપનું સેવન કરનાર તાપસ આદિના અણિમા આદિ રૂપ આઠ પ્રકારના એશ્વર્યરૂપ ગુણોને જોઈને દૃષ્ટિમોહ કરવો

મોહો ન વિધેયઃ ' ઇતિ પ્રતિપાદકમધ્યયનમ્ ૪, આવન્તી-આચારાઙ્ગસ્ય નવબ્રહ્મ-
ચર્યાન્તર્ગતં લોકસારાઘ્યં પશ્ચમમધ્યયનમ્, તત્ત્વ અજ્ઞાનાઘસારનિસ્સારણેન લોક-
સારરત્નત્રયગ્રહણપ્રવળતાપ્રતિપાદકમ્ ૫, ધુતમ્-સજ્ઞાનાં ત્યાગસ્તત્પ્રતિપાદકમધ્ય-
યનમ્ ૬, તથા-વિમોહઃ-મોહોત્પન્નપરીપહોપસર્ગેષુ સત્સુ ચિત્તવ્યાકુલીભાવસ્ત-
સ્મિન્ સતિ તાન્ પરીપહોપસર્ગાન્ ધૈર્યપૂર્વકં સહેતેતિ પ્રતિપાદકમધ્યયનમ્ ૭।
તથાઉપધાનશ્રુતં-શ્રીમહાવીરાઽઽસેવિતસ્યોપધાનસ્ય તીવ્રતપસઃ પ્રતિપાદકં શ્રુતં-

ચાહિયે એસા જો પ્રતિપાદન કરનેવાલા અધ્યયન હૈ, વહ સમ્યક્ત્ત્વ
અધ્યયન હૈ ૮, આચારાઙ્ગકે નવ બ્રહ્મચર્યકે અન્તર્ગત લોકસાર નામકા
જો પાંચવાં અધ્યયન હૈ, વહ " અવંતી " અધ્યયન હૈ ૯। યહ અધ્યયન
અજ્ઞાન આદિરૂપ અસાર વસ્તુકે નિકાલ દેનેકા એવં લોકમેં સારભૂત
જ્ઞાનદર્શન ચારિત્ર તપકા ગ્રહણ કરનેકી ચતુરતાકો પ્રતિપાદક હૈ, સજ્ઞ
પરિગ્રહકે ત્યાગ કરનેકા પ્રતિપાદક જો અધ્યયન હૈ, વહ ધુત અધ્યયન
હૈ ૬ વિમોહ-મોહસે ઉત્પન્ન પરીપહોં ઓર ઉપસર્ગોંકે હો જાને પર જો
ચિત્તમેં વ્યાકુલતાકા ભાવ હોતા હૈ વહ વિમોહ હૈ, હસ વિમોહકે હોને
પર ઊન પરીપહોંકા એવં ઉપસર્ગોંકો ધૈર્યપૂર્વક સહન કરના ચાહિયે
એસા પ્રતિપાદન કરનેવાલા જો અધ્યયન હૈ, વહ વિમોહ અધ્યયન હૈ।
શ્રી મહાવીર સ્વામીસે આસેવિત તીવ્ર તપ રૂપ ઉપધાનકા જો શાસ્ત્ર

ભેઇએ નહીં, આ પ્રકારનું પ્રતિપાદન કરનારું જે પ્રકરણ છે તેનું નામ
"સમ્યક્ત્વ અધ્યયન" છે.

(૫) અવંતી અધ્યયન-આચારાંગના બ્રહ્મચર્ય વિષયક નવ અધ્યયનોમાં
લોકસાર નામનું જે પાંચમું અધ્યયન છે તેનું નામ 'અવંતી' છે. આ અધ્યયનમાં
અજ્ઞાન આદિરૂપ અસાર વસ્તુઓને કાઢી નાખીને જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને
તપને ગ્રહણ કરવાની યોગ્યતા કેવી રીતે આવી શકે, એ વિષયનું પ્રતિપાદન
કરવામાં આવ્યું છે.

(૬) ધુત અધ્યયન-પરિગ્રહના ત્યાગનું પ્રતિપાદન કરનાર જે અધ્યયન
છે તેનું નામ 'ધુત અધ્યયન' છે. (૭) વિમોહ અધ્યયન-મોહ જન્ય પરીપહો
અને ઉપસર્ગોં આવી પડે ત્યારે ચિત્તમાં જે વ્યાકુલતાનો ભાવ પેદા થાય છે
તેનું નામ વિમોહ છે. એવો વિમોહ થાય ત્યારે તે પરીપહો અને ઉપસર્ગોંને
ધૈર્યપૂર્વક સહન કરવા ભેઇએ, એવું પ્રતિપાદન કરનારાના અધ્યયનનું નામ
"વિમોહ અધ્યયન" છે. (૮) ઉપધાનશ્રુત-મહાવીર સ્વામી દ્વારા આસેવિત તીવ્ર
તપ ઉપધાનનું પ્રતિપાદન કરનાર જે શાસ્ત્રરૂપ શ્રુત છે. તેનું નામ 'ઉપધાન-

ગન્ધરૂપમ્=ઉપધાનશ્રુતમ્ ૮, તથા-મહાપરિજ્ઞા મહતી=વૃદ્ધતી પરિજ્ઞા=અન્તક્રિયા-
લક્ષણા સમ્યગ્ વિધેયેતિ પ્રતિપાદકમધ્યયનં મહાપરિજ્ઞાઽભિધાનં વોધ્યમ્ ૯॥સૂ.૦૨॥

। પૂર્વં બ્રહ્મચર્યપ્રતિપાદકાન્યધ્યયનાનિ પ્રોક્તાનિ, તાનિ ચ બ્રહ્મચર્યાણ્યુક્તાનિ,
તાનિ ચ મૈથુનવિરત્યા સમ્પવ્યન્ત ઇતિ કાર્યકારણયોરભેદોપચારાન્મૈથુનવિરતિરૂ-
પાણ્યપિ બ્રહ્મચર્યાણિ ભવન્તીતિ બ્રહ્મચર્યરક્ષાપ્રકારલક્ષણબ્રહ્મચર્યગુપ્તિઃ પ્રાહ—

મૂલમ્-નવ વંભચેરગુત્તીઓ પળણત્તાઓ, તં જહા-વિવિત્તાઈં

સયનાસનાઈં સેવિત્તા ભવઈ, ણો ઇત્થિસંસત્તાઈં ણો પસુસંસ-
ત્તાઈં ણો પંડગસંસત્તાઈં ૧, ણો ઇત્થીણં કહં કહેત્તા ભવઈ ૨,
ણો ઇત્થિટ્ટાણાઈં સેવિત્તા ભવઈ ૩। ણો ઇત્થીણ મિંદિયાઈં મણો-
હરાઈં મણોરમાઈં આલોડિત્તા ણિજ્જાઈત્તા ભવઈ ૪, ણો પળીય-
રસમોઈં ભવઈ ૫, ણો પાળમોયણસ્સ અડમત્તં આહારણ સયા
ભવઈ ૬, ણો પુવ્વરયં પુવ્વકીલિયં સમરેત્તા ભવઈ ૭, ણો સદા-
ણુવાઈં ણો રૂવાણુવાઈં ણો સિલોગાણુવાઈં ૮, ણો સાતસોઽલ્લ-
પલિવલ્લે યાત્તિ ભવઈ ॥ સૂ.૦ ૩ ॥

છાયા—નવ બ્રહ્મચર્યગુપ્તયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-વિવિત્તાનિ શયનાસનાનિ
સેવિતા ભવતિ, નો સ્ત્રીસંસક્તાનિ નો પશુસંસક્તાનિ નો પંડકસસક્તાનિ ૧,
નો સ્ત્રીણાં કથાં કથયિતા ભવતિ ૨, નો સ્ત્રીસ્થાનાનિ સેવિતા ભવતિ ૩, નો
સ્ત્રીણામિન્દ્રિયાણિ મનોહરાણિ મનોરમાણિ આલોકયિતા નિર્ધર્યાંતા ભવતિ ૪, નો
પ્રણીતરસમોગી ભવતિ ૫, નો પાનમોજનસ્ય અતિમાત્રમાહારકઃ સદા ભવતિ
૬, નો પૂર્વરતં પૂર્વકીલિતં સ્મર્યાં ભવતિ ૭, નો શબ્દાનુપાતી નો રૂપાનુપાતી નો
શ્લોકાનુપાતી ૮, નો સાતસૌસ્વ્યપ્રતિવદ્ધશ્ચાપિ ભવતિ ૯ ॥ સૂ.૦ ૩ ॥

રૂપ શ્રુત હૈ વહ ઉપધાન શ્રુત હૈ ૮ મહતી અન્ત ક્રિયારૂપ પરિજ્ઞા અચ્છી
તરહસે વિધેય હૈ, હસકા પ્રતિપાદક જો અધ્યયન હૈ વહ મહા પરિજ્ઞા
અધ્યયન હૈ ॥ સૂત્ર ૨ ॥

શ્રુત' છે. (૯) મહાપરિજ્ઞા અધ્યયન—“મહતી અન્તક્રિયા રૂપ પરિજ્ઞા સારી
રીતે વિધેય છે,” આ વિષયનું પ્રતિપાદન કરનાર જે અધ્યયન છે. તેનું નામ
“મહાપરિજ્ઞા અધ્યયન” છે. ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘ નવવંમચેરગુત્તીઓ ’ ઇત્યાદિ—

બ્રહ્મચર્યગુપ્તયઃ—બ્રહ્મચર્યસ્ય મૈથુનવિરતિવ્રતસ્ય ગુપ્તયઃ—રક્ષાપકારાઃ નવ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—વિવિક્તાનિ—સ્ત્રી—પશુ—પણ્ડકરહિતાનિ શયનાઽઽસનાનિ—સંસારકપીઠરૂપમૃતીનિ, ઉપલક્ષણતયાઽન્યાન્યપિ સ્થાનાદીનિ સેવિતા—તત્સેવનશીલો ભવતિ, તથા—સ્ત્રીસંસક્તાનિ—દેવીનારીતિરશ્ચીલક્ષણસ્ત્રીસહિતાનિ તાનિ નો સેવિતા ભવતિ, તથા—પશુસંસક્તાનિ ગવાદિ સંસર્ગયુતાનિ તાનિ નો સેવિતા ભવતિ, ગવાદિકૃતવિકારદર્શનતો મનોવિકારસમ્ભવાન્, તથા—પણ્ડકસંસક્તાનિ—નપુંસકસંસ-

હસ પ્રકારસે બ્રહ્મચર્યકે પ્રતિપાદક અધ્યયન કહે। હવ અધ્યયનોંકો બ્રહ્મચર્ય નામસે કહા ગયા હૈ યે મૈથુનકી વિરતિસે પાલિત હોતે હૈં, હસ તરહ કાર્ય કારણમેં અભેદકે ઉપચારસે મૈથુન વિરતિરૂપ બ્રહ્મચર્ય હોતા હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્યકી રક્ષાકે પ્રકારભૂત બ્રહ્મચર્ય ગુપ્તિયોંકા કથન કરતે હૈં—“નવ વંમચેરગુત્તીઓ પળ્લતાઓ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—મૈથુનસે વિરમણ હોનેરૂપ બ્રહ્મચર્યકી ગુપ્તિયા રક્ષાકે પ્રકાર—નો કહીં ગઈ હૈં—જૈસે—સ્ત્રી, પશુ, પળ્લકસે રહિત શયનાસનોંકા વસતિ આદિકોંકા તથા—ઉપલક્ષણસે અન્ય અન્ય સ્થાનોંકા જો સેવન કરનેકે સ્વભાવવાલા હોતા હૈ, એવં સ્ત્રી સંસક્ત—દેવી, નારી, તિરશ્ચી રૂપ સ્ત્રી સહિત—હનકે સેવન કરનેકે સ્વભાવવાલા નહીં હોતા હૈ તથા—પશુ સંસક્ત—ગવાદિકે સંસર્ગસે યુક્ત હનકા પ્રતિસેવિત નહીં હોતા હૈ, ક્યોંકિ ગવાદિકૃત વિકારકે દેખનેસે મનોવિકારકે હો જાનેકા સંભવ હો સક્તા હૈ, તથા—પળ્લક સંસક્ત સંસ્તારક આદિકે સેવનસે સ્ત્રી

આ પ્રકારે બ્રહ્મચર્યનું પ્રતિપાદન કરનારાં અધ્યયનો પ્રકટ કરવામાં આવ્યાં
આ અધ્યયનોને બ્રહ્મચર્યને નામે ઓળખાવ્યાં છે મૈથુનની વિરતિ વડે જ બ્રહ્મ
ચર્યનું પાલન થાય છે. આ રીતે કાર્યકરણમાં અભેદના ઉપચારની અપેક્ષાએ
મૈથુનવિરતિ રૂપ બ્રહ્મચર્ય હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્ય ગુપ્તિઓનું
કથન કરે છે “ નવ વંમચેરગુત્તીઓ પળ્લતાઓ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—મૈથુનથી વિરમણ થવા રૂપ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિઓ—(રક્ષાના પ્રકારો) નવ
કહી છે (૧) જે વ્યક્તિ સ્ત્રી, પશુ અને પંડક (નપુંસક)થી રહિત શયનાસનોનું
વસતિ (નિવાસસ્થાન) આદિનું સેવન કરવાના સ્વભાવવાળી હોય છે, એજ
વ્યક્તિ પોતાના બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરી શકે છે. એટલે કે જે વ્યક્તિ
સ્ત્રીસંસક્ત (દેવી, નારી, તિરશ્ચલી આદિના સંસર્ગથી યુક્ત) શય-
નાસન આદિનું સેવન કરતી નથી, પશુસંસક્ત (ગાય અદિ પશુઓના સંસ-
ર્ગથી યુક્ત) શયનાસનાદિનું સેવન કરતી નથી, અને પંડકસંસક્ત (નપુંસકોના

ર્ગ્યુતાનિ તાનિ સેવિતા ન ભવતિ, તત્સંસર્ગે સ્ત્રીવદોપસમ્ભવાત્ ૧, તથા-સ્ત્રીણામ્-પુરુષસાક્ષિત્વરહિતાનાં મધ્યે, ઉપલક્ષણાદ્ એકાકિન્યા અપિ સ્ત્રિયાઃ સમક્ષં પુરુષ-સાક્ષિત્વં વિના કથાં-ધર્મદેશનાદિલક્ષણવાક્યપ્રવચ્છરૂપાં, યદ્વા-જાત્યાદિચતૂરૂપાં કથાં નો કથયિતા-નો વર્ણયિતા ભવતિ ૨, તથા-સ્ત્રીસ્થાનાનિ-સ્ચ્યુપવેશનસ્થા-નાનિ મૂહૂર્ત્તપર્યન્તકાલં સેવિતા ન ભવતિ ૩, તથા-સ્ત્રીણાં મનોહરાણિ-દૃષ્ટિ-પથગતમાત્રાણિ અન્તઃકરણહરણપ્રવણાનિ મનોરમાણિ-દર્શનાનન્તરમનુચિન્તનત-

જેસે-દોષોંકા સદ્ભાવ હોના સંભવિત હો સકતા હૈ, હસલિયે નપુંસક સંસક્ત શયનાસનોંકા (વસતિ આદિકા) જો પ્રતિસેવન કરનેકે સ્વભાવવાલા નહોં હોના હૈ. હસ તરહ બ્રહ્મચર્યકે રક્ષા કરનેકે પ્રકારોંમેંસે યહ એક પ્રકાર યહાં તક પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ, હસકા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ વહી વ્યક્તિ અપને બ્રહ્મચર્યકી નૌ પ્રકારસે રક્ષા કર સકના હૈ, જો હસ પ્રકારકે પ્રથમ પ્રકારકા સેવન કર્તા હોતા હૈ-૧ દૂસરા રક્ષા કા પ્રકાર એસા હૈ-“ જો હ્ત્યીળં કહં કહેત્તા ભવહ ૨ ” સ્ત્રિયોંકે-પુરુષ સાક્ષિત્વસે રહિત સ્ત્રિયોંકે વીચમેં બેઠકર ઉપલક્ષણસે અકેલી ખી સ્ત્રીકે સમક્ષ બેઠકર પુરુષ સાક્ષિત્વકે વિના ધર્મ દેશના રૂપ કથાકા યદ્વા જાત્યાદિ ચાર પ્રકારકી કથાઓંકા વર્ણન કરનેવાલા નહોં હોતા હૈ ૨ “ જો હ્તિથિઠાળાહં સેવિત્તા ભવહ ” જો એક મુહૂર્ત્ત તક, સ્ત્રી જિસ સ્થાન પર બેઠીં હો-ઉસ સ્થાનકા સેવન કરનેવાલા નહોં હોતા હૈ, અર્થાત્

સંસર્ગથી યુક્ત) શયનાસનોનું સેવન કરતી નથી, તેના દ્વારા જ બ્રહ્મચર્યનું પાલન થઈ શકે છે. (ગત્તાદિકૃત વિકાર નજરે પડવાથી મનોવિકાર થઈ જવાનો સંભવ રહે છે. નપુંસકો વડે સેવિત થયેલાં શયનાસનોનો ઉપયોગ કરવાથી પણ મનોવિકાર થઈ જવાનો સંભવ રહે છે તે કારણે એવાં શયનાસનો તથા વસતિને બ્રહ્મચર્ય પ્રતના પાલનમાં બાધક ગણાવવામાં આવ્યાં છે)

(૨) “ જો હ્ત્યીળં કહં કહેત્તા ભવહ ” જે સાધુ સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને (પુરુષોની હાજરી ન હોય અને એકલી સ્ત્રીઓની જ હાજરી હોય એવા સમુદાયની વચ્ચે બેસીને) અથવા કોઈ એક જ સ્ત્રીની સમીપે બેસીને ધર્મોપદેશ આપતો નથી અથવા જાતિ આદિ ચાર પ્રકારની કથાઓનું વર્ણન કરવાના સ્વભાવવાળો હોતો નથી, તેના દ્વારા પોતાના બ્રહ્મચર્ય પ્રતનું સમ્યક્ રીતે પાલન કરી શકાય છે.

(૩) “ જો હ્તિથિઠાળાહં સેવિત્તા ભવહ ” જે સ્થાન પર કોઈ સ્ત્રી બેઠી હોય તે સ્થાનનું સેવન ન કરનાર વ્યક્તિ પોતાના બ્રહ્મચર્ય પ્રતનું પાલન કરી શકે છે.

શ્રિતાહ્લાદકાનિન્દ્રિયાણિ-અક્ષિમુખનાસિકાદીનિ આલોકયિતા-દ્રષ્ટા તથા-
નિર્ધ્યાતા-નિતરાં ચિન્તયિતા ન ભવતિ ૪, તથા નો પ્રણીતરસમોજી-ક્ષરત્સ્નેહ-
વિન્દુમોજનકારી ન ભવતિ ૫, તથા-સ પાનમોજનસ્ય રુક્ષસ્યાપિ અતિમાત્રમ્-
અતિપ્રમાણં-યથા સ્યાત્તથા સદા-નિત્યમહરહ્ इत्यर्थः, આહારક.-આહારકર્તા ન

સ્ત્રી જિસ સ્થાન પર બેઠી હો उस स्थानका एक मुहूर्त्तके बाद ही ब्रह्म-
चर्य व्रतकी रक्षा करनेवालेको सेवन करना चाहिये-तभी ब्रह्मचर्य
व्रतकी रक्षा हो सकती है, इसके पहिले सेवन करनेवाला व्यक्ति अपने
ब्रह्मचर्यकी रक्षा करनेवाला नहीं माना गया है “ णो इत्थीणमिदि-
याहं मणोहराहं मणोरमाहं आलोइत्ता णिज्झाइत्ता भवइ ४ ” तथा
जो स्त्रियोंके देखतेही अन्तःकरणको हरण करनेवाले एवं मनोरम देख-
नेके बाद चिन्तवन करनेसे चित्तको विकार करनेवाले ऐसे अक्षि-मुख
नासिका आदि अवयवोंको देखकर उनका अत्यन्त चिन्तवन करने-
वाला नहीं होता है-जिसके हृदय पर इनका जरा सा भी प्रभाव नहीं
पडता है ४ “ णो पणीयरसमोइ भवइ ” तथा-जो ऐसे भोजनको
कि जिसमेंसे घृतकी बिन्दुएँ बाहर टपकती हों ऐसा सरस आहार
प्रतिदिन करनेवाला नहीं होता है ५ तथा-“ णो पाणभोयणस्स
अहमत्तं आहारए सघा भवइ ” ६ जो रुक्ष भी पान भोजनका

જે સ્થાન પર કોઈ સ્ત્રી બેઠી હોય સ્થાનનો બ્રહ્મચર્યવ્રતધારી પુરુષ એક મુહૂર્ત સુધી
ઉપયોગ કરવો જોઈએ નહીં જો આ પ્રમાણે કરવામાં આવે તો જ તેના બ્રહ્મચર્યવ્રતની
રક્ષા થઈ શકે છે સ્ત્રીએ તે સ્થાનનો ત્યાગ કર્યા બાદ એક મુહૂર્ત પ્રમાણે કાળ વ્યતીત
થયા પહેલાં તે સ્થાનનું સેવન કરનાર પુરુષને પોતાના બ્રહ્મચર્યવ્રતની રક્ષા
કરનારો ગણવામાં આવ્યો નથી. (૪, “ ણો ઇત્થીણમિદિયાહં મણોહરાહં મણોર
માહં આલોહિત્તા ણિજ્ઞાહિત્તા ભવઈ ” જે સાધુ સ્ત્રીઓના મનોરમ અને મનોહર
નયન, મુખ, નાક આદિ અવયવોને જોઈને પોતાના મનમાં તેનું ચિન્તવન કર
નારો હોતો નથી, તે સાધુ જ પોતાના બ્રહ્મચર્યવ્રતનું પાલન કરી શકે છે એટલે
કે સ્ત્રીઓનાં સુંદર અંગો જેના મનને બિલકુલ ચલાયમાન કરી શકતાં નથી
એવો સાધુ જ બ્રહ્મચર્યવ્રતનું પાલન કરી શકે છે. સ્ત્રીઓનાં સુંદર અંગો જોતાં
જ જેનું ચિત્ત ચંચળ બની જાય છે અને જે તે અંગોનું વારંવાર ચિન્તવન
કર્યા કરે છે તેના કારણે પોતાના બ્રહ્મચર્યવ્રતની રક્ષા થઈ શકતી નથી

(૫) “ ણો પણીયરસમોઈ ભવઈ ” જે સાધુ પ્રચુર ધીથી ભરપૂર આહાર
લેતો નથી-જેમાંથી ધી ટપકતું હોય એવો આહાર લેતો નથી, તે સાધુ પોતાના
બ્રહ્મચર્ય વ્રતની રક્ષા કરી શકે છે.

भवति, आहारप्रमाणमुक्तं च—

“ अद्धमसणस्स सव्वं जणस्स कुज्जा दवस्स दो माए ।

वाऊपवियारणद्धा, छुम्मायं ऊणयं कुज्जा ॥ १ ॥ ”

छाया—अर्द्धमशनस्य सव्यञ्जनस्य कुर्याद् द्रवस्य (जलस्य) द्वौ भागौ ।

वायुप्रविचारणार्थं षष्ठं भागमूनकं कुर्यात् ॥ १ ॥ इति ।

अयं भावः—उदरस्थ षड् भागाः—कर्तव्याः । तेषु भागत्रयं सव्यञ्जना-
न्नेन पूरयेत्, भागद्वयं तु जलेन । एकं भागं वायुसंचारणार्थं रिक्तमेव स्थाप-
येदिति । आहारप्रमाणमन्यत्रैवमुक्तम्—

“ अर्द्धमन्नेन सम्पूर्णं, तदर्द्धं तु जलेन वै ।

वायु संचरणार्थं तु, चतुर्थमवशेषयेत् ” ॥ १ ॥ इति ६।

अति मात्रामें नित्य आहारकर्ता नहीं होता है, आहारका प्रमाण
ऐसा कहा गया है—

“ अद्धमसणस्स सव्वं जणस्स ” इत्यादि ।

तात्पर्य यह है—कि उदरके ६ भाग करना चाहिये—इनमें से ३ भाग
तो व्यञ्जन सहित आहारके लिये होता है, दो भाग पानीके लिये होता
है और एक भाग वायुके संचरणके लिये खाली रखना चाहिये

अन्यत्र आहारका प्रमाण ऐसा कहा गया है—

“ अर्द्धमन्नेन सम्पूर्णं ” इत्यादि ।

उदरके चार हिस्सा करना चाहिये—इनमें दो भाग अन्नसे
भरना चाहिये एक भाग जलसे भरना चाहिये एवं एक भाग खाली
रखना चाहिये—

(૬) “જો પાણભોયણસ્સ અદ્ધમત્તં આહારણસયા ભવઈ” એ સાધુ રક્ષ
(દૂધા સૂકા) આહારનું પણ અધિક માત્રામાં નિત્ય સેવન કરતો નથી, તેના
દ્વારા જ પોતાના પ્રહાર્ય મતની રક્ષ થઈ શકે છે સાધુએ કેટલો આહાર લેવો
જોઈએ તે નીચેની ગાથામાં પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે—“ અદ્ધમસણસ્સ સવ્વં
જણસ્સ ” ઇત્યાદિ—

આ ગાથાનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—ઉદરના છ ભાગ કરતાં પછી તેમાંના
ત્રણ ભાગ વ્યંજન સહિત આહારથી ભરવા જોઈએ, બે ભાગ પાણીથી ભરવા
જોઈએ અને એક ભાગ વાયુના સંચરણને માટે ખાલી રાખવો જોઈએ. અન્યત્ર
આહારનું પ્રમાણ આ પ્રકારનું કહ્યું છે—

“ અર્દ્ધમન્નેન સમ્પૂર્ણ ” ઇત્યાદિ—ઉદરના ચાર ભાગ પાડો. તેમાંથી બે ભાગ
અન્ન વડે ભરવા જોઈએ, એક ભાગ પાણી વડે ભરવો જોઈએ અને એક ભાગ
ખાલી રાખવો જોઈએ.

તથા—નો પૂર્વરત્ન-પૂર્વ-ગૃહસ્થાવસ્થાયાં ભવં, રત્ન-કામવાસનાનુભવનં, તથા-પૂર્વક્રોડિતં-પૌર્વકાલિકં સ્ત્રિયા સદ્ ક્રોડનં ચ સ્મર્તા-તદુદયચિન્તનશીલો ન ભવતિ ૭. તથા-નો શબ્દાનુપાતી-શબ્દ-વિષયાભિલાષजनकम्, અનુપતતિ-અનુસરતીત્યેવં શીલસ્તથા ન ભવતિ, એવં રૂપાનુપાતી-રૂપ-સ્વ્યાદિરૂપમ્ અનુપ-તતીત્યેવં શીલસ્તથા સ ન ભવતિ, એવં સ શ્લોકાનુપાતી-યશોઽનુસરણશીલો ન ભવતિ ૮. તથા-સ સાતસૌખ્યપ્રતિવદ્ઃ-સાતાત્-પુણ્યપ્રકૃતેઃ સકાશાત્સૌખ્યં-સુખં વૈષયિકં ગન્ધરસાદ્યનુભવનં સાતસૌખ્યં, તત્ત્વપ્રતિવદ્ઃ-આસક્તો ન ભવતિ ૯ ॥ સૂ ૦ ૩ ॥

“ જો પુવ્વરયં પુવ્વકીલિયં સમરેત્તા ભવહ ૭ ” તથા-ગૃહસ્થાવસ્થામેં જિન કામવાસનાઓંકા સેવન ક્રિયા હો તથા સ્ત્રીકે સાથે જો જો ૨ કામક્રીડાઈં કી હોં-इन दोनोंका जो स्मरण नहीं करता है ૭ “ જો સદ્ગુણવાઈં જો રૂપાણુવાઈં જો સિલોગાણુવાઈં ૮-” તથા-જો શબ્દાનુપાતી-વિષયાભિલાષजनक शब्दका अनुसरण करनेके स्वभाव-वाला नहीं होता है, और न स्त्री आदिके रूपको देखता है, और न जो यशके अनुसरण करनेके स्वभाववाला होता है-“ જો સાત સોકલ-પડિવદ્દે યાવિ ભવહ ૮ ” તથા-જો પુણ્ય પ્રકૃતિકે ઉદયસે જન્ય વૈષ-યિક સુખમેં-ગન્ધ, રસ, આદિકે અનુભવનમેં-આસક્ત નહીં હોતા હૈ, એસા વહ વ્યક્તિ અપને બ્રહ્મચર્યકી રક્ષા કર સકતા હૈ.

તાત્પર્ય હસ કથનકા સંક્ષિપ્તમેં યહી હૈ-કિ જો વ્યક્તિ વિવિક્ત ગયનાસનોંકા સેવન કરતા હૈ, ઓર સ્ત્રી સંસક્ત, પશુ સંસક્ત એવં

(૭) જો પુવ્વરયં પુવ્વકીલિયં સમરેત્તા ભવહ ” ગૃહસ્થાવસ્થાનાં જે કામ ક્રીડાઓનું સેવન કર્યું હોય તથા સ્ત્રીની સાથે જે કામક્રીડા કરી હોય તેનું સ્મરણ નહીં કરનાર સાધુ પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતની રક્ષા કરી શકે છે.

(૮) “ જો સદ્ગુણવાઈં જો રૂપાણુવાઈં જો સિલોગાણુવાઈં ” જે સાધુ શબ્દાનુપાતી (વિષયાભિલાષजनक शब्दनु अनुसरण કરનાર, હોતો નથી, સ્ત્રી આદિના રૂપને દેખવાના સ્વભાવવાળો હોતો નથી, તે સાધુ પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતની રક્ષા કરી શકે છે.

“ જો સાત સોકલપડિવદ્દે યાવિ ભવહ ” જે સાધુ પુણ્યપ્રકૃતિના ઉદયથી જન્ય વૈષયિક સુખમાં (ગન્ધ, રસ, સ્પર્શ આદિના સેવનમાં) આસક્ત થતો નથી તે સાધુ પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતની રક્ષા કરી શકે છે.

આ કથનને સંક્ષિપ્ત સારાશ નીચે પ્રમાણે છે.

જે સાધુ વિવિક્ત (સ્ત્રી આદિના સંસર્ગથી રહિત) શયનાસનોનું સેવન કરે છે

પૂર્વે બ્રહ્મચર્યગુપ્તય ઉક્તા, સમ્પતિ તદ્વિપરીતાબ્રહ્મચર્યાગુપ્તીરાદ—

મૂલમ્—જવ વંધચેર અગુત્તીઓ પળણત્તાઓ, તં જહા-ળો

વિવિત્તાઈં સયળાસળાઈં સેવિત્તા ભવઈ, ઇત્થી સંસત્તાઈં પસુસં
સત્તાઈં પંડગસંસત્તાઈં ૧, ઇત્થીળં કહં કહેત્તા ભવઈ ૨, ઇત્થીળં
ઠાળાઈં સેવિત્તા ભવઈ ૩, ઇત્થીળં ઇંદિયાઈં જાવ નિજ્ઞાઈત્તા
ભવઈ ૪, પળીયરસમોઈ ૫, પાળભોયળસસ અઈમાયમાહારણ સયા
ભવઈ ૬, પુઠ્ઠવરયં પુઠ્ઠવકીલિયં સરિત્તા ભવઈ ૭, સદાળુવાઈં રૂવા-
ળુવાઈં સિલોગાળુવાઈં ૮, સાયાસુવ્રખપડિવઞ્છે યાવિ ભવઈ ૯ સૂ. ૦૪॥

પળક સંસત્ત શયનાસનોંકા (વસતિ આદિના) સેવન નહીં કરતા હૈ, વહી અપને બ્રહ્મચર્યકા રક્ષક હો સકતા હૈ, તથા જો સ્ત્રિયોંકે સમક્ષ ઉનકે સાથ એકાન્તમેં વૈઠકર કથા નહીં કરતા હૈ, ઉનકે ગુપ્તાંગોંકો દેલ્ખનેકા જો પ્રયાસ નહીં કરતા હૈ, ચિત્તકો ચુરાનેવાલે એવં મનકો લુભાનેવાલે ઉનકે અવયવોંકો રાગ ભાવસે જો વિલોકન નહીં કરતા હૈ, સરસમોજન નહીં કરતા હૈ, રૂક્ષ ભી ભોજનકો જો અતિ-માત્રામેં (પ્રમાણસે અધિક) નહીં ખાતા હૈ, પૂર્વમેં સેવિત કિયે કામ-ભોગોંકી જો સ્મરણ નહીં કરતા હૈ, એવં જો વૈષયિક સુખમેં આસક્ત ભાવવાલા નહીં હોતા હૈ. વહી અપને ગૃહીન બ્રહ્મચર્યકી રક્ષા કરનેમેં સાવધાન હોના હૈ, યે હી બ્રહ્મચર્યકી નૌ ગુપ્તિયાં (વાડે) હૈ ॥ સૂ. ૩ ॥

અને શ્રીસંસક્ત, પશુસસક્ત નપુંસક સંસક્ત શયનાસનોનું (શય્યા, આસન આદિનું) સેવન કરતો નથી, એ જ સાધુ પોતાના પ્રદ્યયર્ચનની રક્ષા કરી શકે છે. જે સાધુ શ્રીઓની પાસે એકાન્તમાં બેસીને કથા કરતો નથી, જે સાધુ શ્રીઓના મનોહર અને મનને ડોલાવનારાં અંગો અને ઉપાંગોનું રાગભાવપૂર્વક અવલોકન કરતો નથી, જે સાધુ શ્રીદ્વારા સેવિત સ્થાનનો એક સુદૂત પર્યન્તનો સમય વ્યતીત થયા બાદ જ ઉપયોગ કરે છે, જે ધનાદિથી યુક્ત ભોજન કરતો નથી, જે લૂખો સૂકો આહાર પણ અધિક માત્રામાં લેતો નથી, જે ગૃહસ્થાવસ્થામાં સેવેલાં કામભોગોને યાદ કરતો નથી, અને જે વૈષયિક સુખોમાં આસક્તિથી યુક્ત હોતો નથી એવો સાધુ પોતે ગ્રહણ કરેલા પ્રદ્યયર્ચનનું પાલન કરવાને સમર્થ અને છે. આ નવ સ્થાનોને પ્રદ્યયર્ચનની નવ ગુપ્તિઓ (વાડો) કહી છે. ॥ સૂત્ર-૩ ॥

છાયા— નવ બ્રહ્મચર્યાગુપ્તયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—નો વિવિક્તાનિ શયનાડ્ડ-
સનાનિ સેવિતા ભવતિ, સ્ત્રીસંસક્તાનિ પશુસંસક્તાનિ પળ્ડકસંસક્તાનિ ૧,
સ્ત્રીનાં કથાં કથયિતા ભવતિ ૨, સ્ત્રીનાં સ્થાનાનિ સેવિતા ભવતિ ૩, સ્ત્રીના-
મિન્દ્રિયાણિ યાવત્ નિર્ધર્યાતા ભવતિ ૪, પ્રણીતરસભોજી ૫, પાનભોજનસ્ય
અતિમાત્રમાહારકઃ સદા ભવતિ ૬, પૂર્વરતં પૂર્વક્રીડિતં સ્મર્તા ભવતિ ૭, શબ્દા-
નુપાતી રૂપાનુપાતી શ્લોકાનુપાતી ૮ સાતસૌખ્યપ્રતિવદ્ધશ્ચાપિ ભવતિ ૧ ॥સૂ ૦૪॥

હસ પ્રકારસે બ્રહ્મચર્યકી ગુપ્તિયોંકો કહકર અવ સૂત્રકાર ડનસે
વિપરીત જો બ્રહ્મચર્યકી અગુપ્તિયાં હૈં ડનકા કથન કરતે હૈં—

“ જવ વંભચેરઅગુત્તીઓ પળ્ણત્તાઓ ” હત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪ ॥

ટીકાર્થ—બ્રહ્મચર્યકી અગુપ્તિયાં નૌ કહી ગઈ હૈં—જૈસે જો વિવક્ત શયન
આસનોંકા સેવન કરનેકે સ્વભાવવાલા નહીં હોતે હૈં—સ્ત્રી સંસક્ત પશુ
સંસક્ત ંવં પળ્ડકસંસક્તશયનાસનોંકા સેવન કરનેકે સ્વભાવવાલે હોતે
હૈં ૧ સ્ત્રિયોંકી કથા કરતા હૈ ૨, સ્ત્રિયોંકે સ્થાનોંકા સેવન કરનેકે સ્વભા-
વવાલા હોતા હૈ ૩, સ્ત્રિયોંકી ંન્દ્રિયોંકા યાવત્ જો દેખનેવાલા હોતા હૈ
૪ જો પ્રણીતરસભોજી હોતા હૈ ૫, રુક્ષ ંધી પાન ભોજનકા જો અતિ-
માત્રામૈં ભોજન કરતા હૈ ૬, પૂર્વમૈં ભોગે ગયે કામભોગોંકા ંવં કામ-
ક્રીડાઓંકા જો સ્મરણકર્તા હોતા હૈ ૭, જો શબ્દાનુપાતી રૂપાનુપાતી
ંવં શ્લોકાનુપાતી હોતા હૈ ૮, ંવં સાતા સુખમૈં જો આસક્ત હોતા હૈ

આ પ્રકારે બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિઓનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર તેનાથી
વિપરીત એવી બ્રહ્મચર્યની જે અગુપ્તિઓ છે તેમનું નિરૂપણ કરે છે—

“ જવવંભચેર અગુત્તીઓ પળ્ણત્તાઓ ” ંત્યાદિ—

ટીકાર્થ—બ્રહ્મચર્યની અગુપ્તિઓ નવ કહી છે, તે નીચે પ્રમાણે છે (૧) જે
સાધુ વિવિક્ત (સંસર્ગરહિત)શયનાસનોનું સેવન કરવાના સ્વભાવવાળો હોય છે.
એટલે કે જે સાધુ સ્ત્રીસંસક્ત, પશુસંસક્ત અથવા નપુંસક સંસક્ત શયનાસનોનું
સેવન કરવાના સ્વભાવવાળો હોય છે, (૨) જે સ્ત્રીઓની પાસે એકાન્તમાં કથા
કરતો હોય છે, (૩) જે સ્ત્રીઓ દ્વારા સેવિત સ્થાનનું સેવન કરનારો હોય છે,
(૪) જે સ્ત્રીઓનાં અંગોપાંગોનું રાગ ભાવપૂર્વક નિરીક્ષણ કરનારો હોય છે,
(૫) જે પ્રણીત રસભોજી (દુતાદિ જેમાંથી ટપકતાં હોય એવાં આહાર ખાનાર)
હોય છે, (૬) જે લૂખાસૂકા ભોજનને પણ અધિક માત્રામાં જમનારો હોય છે,
(૭) જે ગૃહસ્થાવસ્થામાં ભોગવેલા કામભોગોનું અને કામક્રીડાઓનું સ્મરણ
કરનારો હોય છે, (૮) જે શબ્દાનુપાતી, રૂપાનુપાતી અને શ્લોકાનુપાતી હોય

ટીકા—‘ જવ બંધવેર અગુત્તીઓ ’ ઇત્યાદિ—

બ્રહ્મચર્યગુપ્તિસૂત્રવત્ સર્વં વૈપરીત્યેન વ્યાખ્યેયમ્ ॥ સૂ. ૪ ॥

પૂર્વં નવગુપ્તિસહિતં બ્રહ્મચર્યમુક્તં, તત્ત્વ જિનૈઃ પ્રજ્ઞપ્તમિતિ પ્રાકૃતસ્થાના-
વતરણદ્વારા જિનવિશેષાવાહ—

મૂલમ્—અભિષંદણાઓ પં અરહઓ સુમર્ઙ અરહા નવહિં
સાગરોપમકોટીસયસહસ્રેહિં વિઙ્કંતેહિં સમુપન્ને ॥ સૂ. ૫ ॥

છાયા—અભિનન્દનાત્ સ્વલુ અર્હતઃ સુમતિરર્હન નવસુ સાગરોપમકોટિશત-
સહસ્રેષુ વ્યતિક્રાન્તેષુ સમુત્પન્નઃ ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘ અભિષંદણાઓ ’ ઇત્યાદિ । સુગમમ્ ॥ સૂ. ૫ ॥

અભિનન્દન—સુમતિજિનાભ્યાં ચ સદ્ભૂતાઃ પદાર્થાઃ પ્રરૂપિતાઃ, તે ચ નવેતિ

૧ ‘વહ’ અપને બ્રહ્મચર્યકી રક્ષા નહીં કર સકતા હૈ, હસ પ્રકારકી યે ૧
બ્રહ્મચર્યકી અગુસિયાં હૈં । પાનકી વ્યાખ્યા બ્રહ્મચર્યસૂત્રમેં પ્રતિપાદિત
ગુસિયોંકે સ્વરૂપસે વિપરીત રૂપમેં કર લેની યાહિયે । સૂ. ૪ ॥

નૌ ગુસિયોં સહિત બ્રહ્મચર્ય હોતા હૈ, એસા જો કહા હૈ, વહ જિનેન્દ્ર
દ્વારા પ્રરૂપિત હી કહા ગયા હૈ હસલિયે અવ સૂત્રકાર પ્રકૃત સ્થાના-
વતરણ દ્વારા દો જિનવિશેષોંકા કથન કરતે હૈ—

“ અભિષંદણાઓ પં અરહઓ ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—અભિનન્દ જિનેન્દ્રસે સુમતિ જિનેન્દ્ર નૌ લાગ્ન સાગરોપમ
કોટિ જવ સમાપ્ત હોં ગયે તવ ઉત્પન્ન હુણ હૈં । સૂ. ૫ ॥

(૯) જે વૈષયિક સુખમાં આસક્ત હોય છે, એવો સાધુ પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતની
રક્ષા કરી શકતો નથી. આ પ્રકારની નવ બ્રહ્મચર્યની અગુપ્તિઓ છે. તેમની
વ્યાખ્યા બ્રહ્મચર્ય સૂત્રનાં પ્રતિપાદિત ગુપ્તિઓના સ્વરૂપ કરતાં વિપરીત રૂપે
સમજી લેવી જોઈએ ॥ સૂ. ૪ ॥

“ નવ ગુપ્તિઓ સહિત બ્રહ્મચર્ય વ્રત હોય છે, ” આ પ્રકારનું સૂત્રકરે
જે કથન કર્યું છે, તે જિનેન્દ્રો દ્વારા પ્રરૂપિત થયેલું છે પૂર્વસૂત્ર સાથે આ
પ્રકારના સંબંધને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર હવેના સૂત્રમાં સ્થાન સાથે સુસંગત એવું
જે જિનેન્દ્ર વિશેષોનું કથન કરે છે—

“ અભિષંદણાઓ પં અરહઓ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—અભિનન્દ જિનેન્દ્ર થઈ ગયા બાદ નવ લાગ્ન સાગરોપમ કોટિ કાળ
પૂરો થયા બાદ સુમતિ જિનેન્દ્ર ઉત્પન્ન થયા હતા. ॥ સૂ. ૫ ॥

તાન્ દર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—નવ સદ્ભાવપયત્થા પળ્લન્તા, તં જહા—જીવા ૧
અજીવા ૨ પુણ્યં ૩ પાવો ૪ આસવો ૫ સંવરો ૬ નિર્જરા ૭
બંધો ૮ મોક્ષો ૯ ॥ સૂ. ૬ ॥

છાયા—નવ સદ્ભાવપદાર્થાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—જીવા ૧ અજીવાઃ ૨ પુણ્યં ૩
પાપમ્ ૪ આસ્રવઃ ૫ સંવરો ૬ નિર્જરા ૭ બંધો ૮ મોક્ષઃ ૯ ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ નવ સદ્ભાવપયત્થા ’ इत्यादि—

સદ્ભાવપદાર્થાઃ—સદ્ભાવઃ—વિચિન્નમાનત્વં તેન પદાર્થાઃ સદ્ભાવપદાર્થાઃ—તત્ત્વભૂત-
પદાર્થાઃ, તે ચ નવ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા—જીવા—અજીવા इत्यादि, વિવરણં પ્રથમસ્થાને
ગતમ્ ॥ સૂ. ૬ ॥

પૂર્વં નવ પદાર્થો ઉક્તાઃ, તત્ર પ્રથમો જીવપદાર્થોઽસ્તીતિ તદ્ભેદ-ગત્યા-
ગત્યવગાહનાસંસારનિર્વર્તનરોગોત્પત્તિનિમિત્તાનિ પ્રતિપાદયિતુમુપન્યસ્યતિ—

મૂલમ્—જાવવિહા સંસારસમાવન્નગા જીવા પળ્લન્તા, તં જહા--
પુઠવિક્કાઙ્ગયા જાવ વળસસઙ્કાઙ્ગયા બેઙ્ગદિયા જાવ પંચિદિયત્તિ ॥ ૧ ॥

અભિનન્દ એવં સુમતિ જિનેન્દ્રને જો સદ્ભૂત પદાર્થ પ્રરૂપિત કિયે
હૈં વે નૌ હૈં, इसी बातको दिखानेके लिये अब सूत्रकार कथन करते हैं—

“ નવ સદ્ભાવપયત્થા પળ્લન્તા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—નૌ જો સદ્ભાવરૂપ પદાર્થ કહે ગયેહૈં વે इस प्रकारसेहैं, जीव
१, अजीव २, पुण्य ३, पाप ४, आस्रव ५, संवर ६ निर्जरा ७, बन्ध ८,
और मोक्ष ९ ।

તત્ત્વભૂત પદાર્થોં કા નામ સદ્ભાવ પદાર્થ હૈં, ये पूर्वोक्त रूपसे नौ
इनका विवरण प्रथम स्थानमें किया जा चुका है ॥ સૂ. ૬ ॥

અભિનન્દ અને સુમતિ જિનેન્દ્રે જે સદ્ભૂત (તત્ત્વરૂપ) પદાર્થો પ્રરૂપિત
કયા છે તે નવ છે. એજ વાત સૂત્રકર નીચેના સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કરે છે—

“ નવ સદ્ભાવ પયત્થા પળ્લન્તા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—સદ્ભાવ રૂપ જે નવ પદાર્થો કહ્યા છે તે નીચે પ્રમાણે છે—(૧) જીવ,
(૨) અજીવ, (૩) પુણ્ય, (૪) પાપ, (૫) આસ્રવ, (૬) સંવર, (૭) નિર્જરા,
(૮) બંધ અને (૯) મોક્ષ.

તત્ત્વભૂત પદાર્થોંનું નામ સદ્ભાવ પદાર્થો છે. ઉપર મુજબ નવ સદ્ભાવ પદાર્થો
છે. તેમનું વિવરણુ પ્રથમ સ્થાનમાં કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

પુઠવિક્કાઇયા ણવગઇયા ણવ આગઇયા પળ્લતા, તં જહા--
 પુઠવિક્કાઇય પુઠવિક્કાઇયસુ ઉવવજ્જમાળે પુઠવિક્કાઇયહિંતો વા
 જાવ પંચિંદિયહિંતો વા ઉવવજ્જેજ્ઞા, સે ચેવળં સે પુઠવિક્કાયત્તં
 વિપ્પજહમાળે પુઠવિક્કાઇયત્તાય જાવ પંચિંદિયત્તાય વા ગચ્છેજ્ઞા
 ૨। એવમાઉકાઇયાવિ ૩ જાવ પંચિંદિયત્તિ । ૧૦ ।

ણવવિહા સવ્વજીવા પળ્લતા, તં જહા-એગિંદિયા ૧ વેહં-
 દિયા ૨ તેહંદિયા ૩ ચત્તરિંદિયા ૪ નેરઇયા ૫ પંચિંદિયત્તિ-
 રિક્ખજોણિયા ૬ મણુસ્સા ૭ દેવા ૮ સિદ્ધા ૯ ૧૧।

અહવા ણવવિહા સવ્વજીવા પળ્લતા, તં જહા-પઠમસમ-
 યણેરઇયા અપઠમસમયણેરઇયા જાવ અપઠમસમયદેવા ૮
 સિદ્ધા ૯ । ૧૨ ।

ણવવિહા સવ્વજીવોગાહના પળ્લતા, તં જહા-પુઠવિક્કા-
 ઇયઓગાહના આઉકાઇયઓગાહના જાવ વળસ્સઇકાઇયઓગા-
 હના વેહંદિયઓગાહના તેહંદિયઓગાહના, ચત્તરિંદિયઓગા-
 હના, પંચિંદિયઓગાહના । ૧૩ ।

જીવા ણં નવહિં ઠાળેહિં સંસારં વત્તિસુ વા વત્તંતિ વા
 વત્તિસ્સંતિ વા, તં જહા-પુઠવિક્કાઇયત્તાય જાવ પંચિંદિયત્તાય ।
 ॥ ૧૪ ॥ સૂ. ૭ ॥

કથિત્ત્વમ્ નો પદાર્થોર્મે પ્રથમ પદાર્થ જીવ હૈં, અતઃ અવ સૂત્રકાર
 હસકે ભેદોંકા ગતિ આગતિકા અવગાહનાકા સંસાર નિર્વર્તનકા એવં

ઉપર્યુક્ત નવ સદ્વાપ પદાર્થોર્માં સૌથી પહેલો પદાર્થ જીવ છે. તેથી હવે
 સૂત્રકાર તેના ભેદોં, ગતિ આગતિ, અવગાહના, સંસાર નિર્વર્તન અને

હોયા--નવવિધાઃ સંસારસમાવજ્ઞકા જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-પૃથિવીકા-
યિકાઃ યાવત્ વનસ્પતિકાયિકાઃ દ્વીન્દ્રિયા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયાઃ । ૧ ।

પૃથિવીકાયિકા નવગતિકા નવાગતિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-પૃથિવીકાયિકાઃ
પૃથિવીકાયિકેષુ ઉત્પદ્યમાનઃ પૃથિવીકાયિકેભ્યો વા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયેભ્યો વા
ઉત્પદ્યેત, સ એવં ચલુ સ પૃથિવીકાયિકાઃ પૃથિવીકાયિકત્વં વિપ્રજહત્ પૃથિવીકા-
યિકત્વયા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયતયા વા ગચ્છે ૨। એવમપ્કાયિકા અપિ ૩, યાવત્
પચ્ચેન્દ્રિયા इति । ૧૦ ।

રોગોત્પત્તિકે નિમિત્તોંકા પ્રતિપાદન કરનેકે લિયે “ જવવિહા સંસાર-
સમાવજ્ઞગા ” ઇત્યાદિ સૂત્રકો કથન કરતે હૈ—

“ જવવિહાસંસારસમાવજ્ઞગા જીવા પળ્ળત્તા ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ--સંસારી જીવ નૌ પ્રકારકે કહે ગયે હૈ--જૈસે પૃથિવીકાયિક
યાવત્ વનસ્પતિકાયિક, દ્વીન્દ્રિય યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિય ૧।

પૃથિવીકાયિક જીવ નવગતિવાલે ઔર નવ આગતિવાલે કહે ગયે
હૈ--જૈસે--પૃથિવીકાયિક જીવ પૃથિવીકાયિકમૈ ઉત્પદ્યમાન હોતા હુઆ
પૃથિવીકાયિકોંસે અથવા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયોંસે આકર ઉત્પન્ન હોના હૈ,
તથા વહી પૃથિવીકાયિક જીવ જવ પૃથિવીકાયિક પર્યાયકો છોડ દેતા હૈ,
તો વહ પૃથિવીકાયિક રૂપસે યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિય રૂપસે ઉત્પન્ન હો સકતાહૈ ૨
इसी तरहसे अप्कાયिक जीवोंके सम्बन्धमें भी यावत् पच्येन्द्रिय जीवोंके
सम्बन्धमें भी कथन कर लेना चाहिये १० ।

રોગોત્પત્તિના નિમિત્તોંકા પ્રતિપાદન કરવા માટે “ જવવિહા સંસાર સમાવજ્ઞગા
જીવા પળ્ળત્તા ” ઇત્યાદિ સૂત્રકું કથન કરે છે--

“ જવવિહા સંસારસમાવજ્ઞગા જીવા પળ્ળત્તા ” ઇત્યાદિ--

ટીકાર્થ--સંસારી જીવોના નીચે પ્રમાણે નવ પ્રકારો કહ્યા છે--

પૃથ્વીકાયિકથી લઈને વનસ્પતિકાયિક પર્યંતના પાંચ પ્રકારો તથા (૬)
દ્વીન્દ્રિય (૭) ત્રીન્દ્રિય, (૮) ચતુરિન્દ્રિય અને (૯) પચ્ચેન્દ્રિય. ૧૧।

પૃથ્વીકાયિક જીવો નવ ગતિવાળા અને નવ આગતિવાળા કહ્યા છે જેમ કે
પૃથ્વીકાયિક જીવ રૂપે ઉત્પન્ન થતો જીવ પૃથ્વીકાયિકથી લઈને પચ્ચેન્દ્રિય પર્યં-
તના જીવોમાંથી અલીને પૃથ્વીકાય જીવ રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. વળી જેજ
પૃથ્વીકાયિક જીવ જ્યારે પૃથ્વીકાયિક પર્યાય છોડી દે છે, ત્યારે પૃથ્વીકાયિકથી
લઈને પચ્ચેન્દ્રિય પર્યંતની કોઈ પણ પર્યાયમાં ઉત્પન્ન થઈ શકે છે । ૨।

જેજ પ્રકારનું કથન અપ્કાયિકથી લઈને પચ્ચેન્દ્રિય પર્યંતના જીવોની
ગતિ અને આગતિ વિષે પણ સમજવું. ૧૧૦।

નવવિધાઃ સર્વજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-એકેન્દ્રિયાઃ ૧, દ્વીન્દ્રિયાઃ ૨, ત્રીન્દ્રિયાઃ ૩ ચતુરિન્દ્રિયાઃ ૪ નૈરયિકાઃ ૫ પચ્ચેન્દ્રિયતિર્થગ્યોત્તિકા ૬ મનુષ્યા ૭ દેવા ૮ સિદ્ધાઃ ૯ । ૧૧ ।

અથવા-નવવિધાઃ સર્વજીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-પ્રથમસમયનૈરયિકાઃ અપ્રથમસમયનૈરયિકા યાવત્ અપ્રથમસમયદેવાઃ સિદ્ધાઃ । ૧૨ ।

નવવિધા સર્વજીવાવગાહના પ્રજ્ઞપ્તા, -તથા-પૃથિવીકાયિકાવગાહના ૧ અપ્કાયિકાવગાહના ૨ યાવત્ વનસ્પતિકાયિકાવગાહના ૫ દ્વીન્દ્રિયાવગાહના ૬ ત્રીન્દ્રિયાવગાહના ૭ ચતુરિન્દ્રિયાવગાહના ૮ પચ્ચેન્દ્રિયાવગાહના ૯ । ૧૩ ।

જીવાઃ સ્વલુ નવમિઃ સ્થાનૈઃ સંસારમ્ અવર્તન્ત વા વર્તન્તે વા વર્તિષ્યન્તે વા, તથા-પૃથિવીકાયિકતયા યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિયતયા । ૧૪ ॥ સૂ. ૭ ॥

સર્વ જીવ નો પ્રકારકે કહે ગયે હૈ-જૈસે એકેન્દ્રિય ૧, દ્વીન્દ્રિય ૨, તેહન્દ્રિય ૪, ચૌહન્દ્રિય ૪, નૈરયિક ૫, પચ્ચેન્દ્રિય તિર્થગ્યોત્તિક ૬, મનુષ્ય ૭ દેવ ૮ ઓર સિદ્ધ ૯-૧૧ ।

અથવા-હસ પ્રકારસે સર્વ જીવ નો પ્રકારકે કહે ગયે હૈ-જૈસે-પ્રથમસમયનૈરયિક ૧ અપ્રથમસમયનૈરયિક ૨, યાવત્ અપ્રથમ દેવ એવં સિદ્ધ ૧૨ ।

સર્વ જીવોંકી અવગાહના નો પ્રકારકી કહો ગઈ હૈ-જૈસે-પૃથિવી-કાયિક અવગાહના ૧, અપ્કાયિક અવગાહના ૨, યાવત્ વનસ્પતિકાયિક અવગાહના ૫, દ્વીન્દ્રિયાવગાહના ૬, ત્રીન્દ્રિયાવગાહના ૭, ચૌહન્દ્રિયાવગાહના ૮ એવં પચ્ચેન્દ્રિયાવગાહના ૯ । ૧૩ ।

સમસ્ત જીવોના નીચે પ્રમાણે નવ પ્રકાર પડે છે-

(૧) એકેન્દ્રિય, (૨) દ્વીન્દ્રિય, (૩) તેહન્દ્રિય, (૪) ચૌહન્દ્રિય, (૫) નૈરયિક, (૬) પચ્ચેન્દ્રિય તિર્થગ્યોત્તિક, (૭) મનુષ્ય, (૮) દેવ અને (૯) સિદ્ધ. ૧૧૧

અથવા-સમસ્ત જીવોના આ પ્રમાણે નવ પ્રકાર પળુ કહ્યા છે-(૧) પ્રથમ સમય નૈરયિક, (૨) અપ્રથમ સમય નૈરયિક, ઇત્યાદિ (૮) અપ્રથમ સમય દેવ અને (૯) સિદ્ધ. ૧૧૨

સમસ્ત સંસારી જીવોની અવગાહના નવ પ્રકારની કહી છે-(૧) પૃથ્વી-કાયિક અવગાહના (૨ થી ૫) અપ્કાયિક અવગાહનાથી લઈને વનસ્પતિકાયિક અવગાહના પર્યંતની ચાર અવગાહના (૬) દ્વીન્દ્રિય અવગાહના, (૭) ત્રીન્દ્રિય અવગાહના, (૮) ચતુરિન્દ્રિય અવગાહના, (૯) પચ્ચેન્દ્રિય અવગાહના. ૧૧૩

ટીકા--‘ જનવિદ્યા સંસારસમાવૃત્તગા ’ ઇત્યાદિ—

સ્પષ્ટમ્ ૧, નવરમ્-પૃથિવીકાયિકાઃ ૧, ‘ યાવત્ ’-પદેન ‘ અપ્કાયિકાઃ ૨, તેજસ્કાયિકાઃ ૩, વાયુકાયિકાઃ ૪, ઇતિ પદત્રયં સંગ્રાહ્યમ્, । તથા વન-સ્પતિકાયિકાઃ ૫, દ્વીન્દ્રિયાઃ ૬, ‘ યાવત્ ’ પદેન-ત્રીન્દ્રિયાઃ ૭, ચતુરિન્દ્રિયાઃ ૮ ઇતિ પદદ્વયં ગ્રાહ્યમ્ । તથા પચ્ચેન્દ્રિયાઃ ૯ । તત્ર પૃથિવીકાયિકાઃ પૃથિવીકાયિકાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તનવગતિકાઃ એવમેવ નવાડગતિકાશ્ચ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-પૃથિવીકાયિકઃ પૃથિવીકાયિકેષૂત્પન્નમાનઃ પૃથિવીકાયિકેભ્યઃ ‘ યાવત્ ’-પદેન-અપ્કાયિકાદિચતુરિન્દ્રિયાન્તપચ્ચમીબહુવચનાન્તપદસપ્તકં વિજ્ઞેયમ્, તથા-પચ્ચે-

પાંચ સ્થાવર ઔર ચાર ત્રસ इन नौ स्थानोंको लेकर जीव पहिले संसारमें रहे । अब भी वे रहते हैं और भविष्यत्कालमें भी वे रहेंगे । वे नौ स्थान इस प्रकारसे हैं-वे पृथिवीकायिक रूपसे यहाँ रहे हैं, रहते हैं और रहेंगे, यावत् वे पञ्चेन्द्रिय रूपसे रहे हैं रहते हैं और रहेंगे १४-७

ટીકાર્થ-હસ સૂત્રકી વ્યાખ્યા સ્પષ્ટહૈ વિશેષ-પૃથિવીકાયિકકે પ્રથમ સૂત્રમેં આગત યાવત્પદસે “અપ્કાયિક ૨ તેજસ્કાયિક ૪ વાયુકાયિક ૪” इन तीन पदोंका ग्रहण हुआ है, तथा द्वितीय यावत्पदसे “ त्रीन्द्रिय ७ चतुरिन्द्रिय ८ ” इन दो पदोंका ग्रहण हुआ है.

પૃથિવીકાયિકસે લેકર પચ્ચેન્દ્રિયાન્ત તકકે ૯ જીવ નવ ગતિક ઔર નવાગતિક હોતે હૈ-જૈસે-પૃથિવીકાયિકોમેં ઉત્પન્ન હોતા હુઆ કોઈ જીવ પૃથિવીકાયિકોસે આકરકે વહાં ઉસ રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ,

..... પાંચ સ્થાવર અને ચાર ત્રસ આ નવ સ્થાનોમાં જીવે ભૂતકાળમાં રહ્યા છે, વર્તમાનમાં રહે છે અને ભવિષ્યમાં પણ રહેશે. તે નવ સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે (૧) તેઓ પૃથ્વીકાયિક રૂપ સ્થાનોમાં રહ્યા હતા, રહે છે અને રહેશે. (૨થી૯) એજ પ્રમાણે તેઓ અપ્કાયિકથી લઇને પચ્ચેન્દ્રિય પર્યાન્તના આઠસ્થાનોમાં પણ ભૂતકાળમાં રહ્યા હતા, વર્તમાનમાં રહે છે અને ભવિષ્યમાં રહેશે ૧૪।

ટીકાર્થ-આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સરળ છે. પહેલા સૂત્રમાં પૃથ્વીકાયિક પર્યાન્તના જીવો ગણાવતી વખતે જે ‘પર્યાન્ત’ પદ વાપર્યું છે તેના દ્વારા અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક અને વાયુકાયિક’ આ ત્રણે પદો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે.

બીજા સૂત્રનું વિવેચન-પૃથ્વીકાયિકને લઇને પચ્ચેન્દ્રિય પર્યાન્તના નવે પ્રકારના જીવો નવ ગતિક અને નવ આગતિક હોય છે એટલે કે પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થતો કોઈક જીવ પૃથ્વીકાયિકોમાંથી આવીને ત્યાં તે રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, અપ્કાયિકોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

ન્દ્રિયેભ્યો વા ઉત્પદ્યેત, સ એવ લલુ સઃ-પૂર્વોક્તઃ પૃથિવીકાયિકઃ પૃથિવીકાયિક-
કત્વં વિવ્રજહત્-ત્યતન પૃથિવીકાયિકતયા 'યાવત્'-પદેન 'અપ્કાયિકાદિચતુ-
રિન્દ્રિયાન્તત્વપ્રત્યયાન્તપ્રત્યેકનૃતીયૈકવચનાન્તપદપટ્કં વિજ્ઞેયમ્, તથા પञ्ચે-
ન્દ્રિયતયા વા ગચ્છેત્ । ઇતિ ૨ ।

અવમપ્કાયિકા અપિ નવગતિકા નવાગતિકા વોધ્યાઃ ૩, 'યાવત્' પદેન
તેજસ્કાયિકાદિ ચતુરિન્દ્રિયાન્ત પ્રથમા વહુવચનાન્તપદપટ્કં ગ્રાહ્યમ્ ૯ તથા પञ्ચે-
ન્દ્રિયાઃ ૧૦ ઇતિ ।

અપ્કાયિકસે આકર વહાં પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ,
તેજસ્કાયિકોસે આકરકે વહાં પૃથ્વીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ,
વાયુકાયિકોસે આકરકે વહાં પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા
હૈ, વનસ્પતિકાયિકોસે આકરકે પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા
હૈ, દો ઇન્દ્રિયોસે આકરકે વહાં પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા
હૈ, તે ઇન્દ્રિયોસે આકરકે વહ વહાં પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો
જાતા હૈ, ચૌ ઇન્દ્રિયોસે આકરકે વહાં વહ પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન
હો જાતા હૈ, હસો તરહસે પંચેન્દ્રિયોસે આકરકે મી કોઈ જીવ પૃથિ-
વીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ, હસી મકાર કોઈ પૃથિવીકાયિક
જીવ મરકર પૃથિવીકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ, અપ્કાયિક
રૂપસે ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ, તેજસ્કાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ,
વાયુકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હો સકતા હૈ, વનસ્પતિકાયિક રૂપસે ઉત્પન્ન
હો સકતા હૈ, દો ઇન્દ્રિયસે લેકર પંચેન્દ્રિય તકમ્ વહ ઉત્પન્ન હો સકતા

તેજસ્કાયિકોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે,
વાયુકાયિકોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. વનસ્પ-
તિકાયિકોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે. દ્વીન્દ્રિ-
યોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, ત્રીન્દ્રિયોમાંથી આવીને
ત્યાં પૃથ્વીકાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, ચતુરિન્દ્રિયોમાંથી આવીને ત્યાં પૃથ્વી-
કાયિક રૂપે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, અને એજ પ્રમાણે પંચેન્દ્રિયોમાંથી આવીને
પણ કોઈક એવ પૃથ્વીકાયિકોમાં ઉત્પન્ન થઈ જાય છે.

એજ પ્રમાણે કોઈ પૃથ્વીકાયિક એવ મરીને પૃથ્વીકાયિક રૂપે પણ ઉત્પન્ન
થાય છે, અપ્કાયિક રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય છે, તેજસ્કાયિક રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય
છે, વાયુકાયિક રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય છે, વનસ્પતિકાયિક પણ રૂપે ઉત્પન્ન થાય
છે, દ્વીન્દ્રિય રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ત્રીન્દ્રિય રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય છે, ચતુ-
રિન્દ્રિય રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય છે, અને પંચેન્દ્રિય રૂપે પણ ઉત્પન્ન થાય

“ નવવિહા સવ્વજીવા ” इत्यादि-स्पष्टम् , नवरं-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः-
पञ्चेन्द्रियाश्च ते तिर्यग्योनिका इत्यर्थः ।

“ અહવા નવવિહા સવ્વજીવા ” इत्यादि, स्पष्टम् , नवरम्-प्रथमसमय-
नैरयिकः-प्रथमः समयः-नैरयिकत्वप्राप्तिसमयो येषां ते प्रथमसमयाः १, ते
च ते नैरयिकाः-नारकास्तथा, एवमप्रथमसमयनैरयिकाः-येषां नैरयिकत्वप्राप्ते
प्रथमः समयो नास्ति ते तथा २,

‘ यावत् ’ पदेन प्रथमसमयपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ३ अप्रथमसमयपञ्चेन्द्रि-
यतिर्यग्योनिकाः ४ प्रथमसमयमनुष्याः ५, अप्रथमसमयमनुष्याः ६, प्रथमसमय-
देवाः ७ इति पदपञ्चकं ग्राह्यम् तथा अप्रथमसमयदेवाः ८, तथा सिद्धाः ९
इति नवविधाः सर्वजीवा बोद्ध्याः । ११ ॥

“ નવવિહા સવ્વજીવોગાહના ” इत्यादि-सर्वजीवावगाहना-अवगाहन्ते-
अवतिष्ठन्ते आसतेऽस्यां जीवा इत्यवगाहना-शरीरं, सा नवविधा, तद्यथा-पृथि-
है ॥२॥ इसी प्रकारसे अप्कायिक जीव भी नव गतिवाले और नव
आगतिवाले हैं, ऐसा समझना चाहिये यहाँ पर यावत् पदसे तेजस्का-
यिकसे लेकर चौहन्द्रिय तकके समस्त पदोंका संग्रह हुआ है ।

“ નવ વિહા સવ્વ જીવા ” इत्यादि सूत्र स्पष्ट है ।

नैरयिक पर्यायकी प्राप्ति का समय जिनका प्रथम समय है, ऐसे
वे प्रथमसमयनैरयिक हैं, इनसे भिन्न अप्रथमसमयनैरयिक हैं ।
यहाँ यावत्पदसे “ प्रथमसमय पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक ३ अप्रथम समय
पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक ४ प्रथमसमय मनुष्य ५ अप्रथमसमयमनुष्य
६, प्रथम समय देव ” इन पांच पदोंका ग्रहण हुआ है ११ ।

છે, પૃથ્વીકાયિકની જેમ અપૂનાયિક જીવો પણ નવ ગતિવાળા અને નવ આગતિ
વાળા હોય છે. એજ પ્રમાણે તેજસ્કાયિકથી લઈને પંચેન્દ્રિય પર્યાન્તના અન્ય
આત પ્રકારના જીવો પણ નવ ગતિવાળા અને નવ આગતિવાળા હોય છે,
એમ સમજવું. જોઈએ.

“ નવ વિહા સવ્વ જીવા ” આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ છે. નૈરયિક પર્યાયની
પાસિને પ્રથમ સમય જેમને ચાલુ છે એવાં નૈરયિકોને પ્રથમ સમય નૈયરિકો
કહે છે, અને તેમના કરતાં બિન્ન એવાં જે નૈરયિકો છે તેમને અપ્રથમ સમય
નૈરયિકો કહે છે. આ સૂત્રમાં વપરાયેલા ‘ પર્યાન્ત ’ પદ દ્વારા “ પ્રથમ સમય
પંચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિક, પ્રથમ સમય મનુષ્ય, અપ્રથમ સમય મનુષ્ય, પ્રથમ
સમય દેવ ” આ પાંચ પદોને ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે. ૧૧૧ ।

વીકારિ ઠાવગાહના-પૃથિવીકાયિકશરીરમ્ ૧ એવમ્પ્રકાયિકાવગાહના ૨, 'યાવત્' પદેન તેજસ્કાયિકાવગાહના ૩, વાયુકાયિકાવગાહના ૪ इति पदद्वयं ज्ञेयम्, તથા-વનસ્પતિકાયિકાવગાહના ૫ દ્વોન્દ્રિયાવગાહના ૬ ત્રીન્દ્રિયાવગાહના ૭ ચતુરિન્દ્રિયાવગાહના ૮ પञ्चेन्द्रियावगाहना ૯। इति ।

“ જીવા નં ” इत्यादि-जीवाः ‘.खलु’-वाक्यालङ्कारे, नवभिः स्थानैः संसारं-भवभ्रमणम् अवर्तन्त,-वृत्तिरत्र कृ धात्वर्थे, तेन अकुर्वन्नित्यर्थः एवमन्य-दपि पदद्वयं करोत्यर्थपरतया विवरणीयम् । तद्यथा-पृथिवीकायिकतया १, ‘यावत्’ पदेन अप्रकायिकतयेत्यादिचतुरिन्द्रियतयेत्यन्तपदसप्तकं ग्राह्यं, तथा पञ्चेन्द्रियतया ९ इति १४ ॥ सू० ७ ॥

જીવાનાં રોગોત્પત્તિનિમિત્તાન્યાહ—

મૂલમ્—જવહિ ઠાળેહિં રોગુપ્પત્તી સિયા, તં જહા-અચ્ચા-સળયાણ ૧, અહિયાસળયાણ ૨, અહિણિદાણ ૩, અહિજાગરિણં ૪, ઉચ્ચારનિરોહેણં ૫, પાસવળણિરોહેણં ૬, અદ્ધાળગમળેણં ૭, ભોયળપડિકૂલયાણ ૮, ઇંદિયતથવિકોવળયાણ ૯ ૧૫।સૂ૦૮॥

હાયા—નાભિઃ સ્થાનૈઃ રોગોત્પત્તિઃ સ્યાત્, તદ્યથા-અત્યશનતયા ૧, અહિ-તાશનતયા ૨, અતિન્દ્રિયા ૩, અતિજાગરિતેન ૪, ઉચ્ચારનિરોધેન ૫, પ્રસ-વળનિરોધેન ૬, અદ્વગમનેન ૭ મોજનપ્રતિકૂલતયા ૮, ઇન્દ્રિયાર્થવિકોપનતયા ૯ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

અવગાહના શબ્દકા અર્થ શરીર હૈ, યહાં યાવત્પદસે તેજસ્કાયિક અવગાહના ૩ વાયુકાયિક અવગાહના ૪ इन दो पदोंका ग्रहण हुआ है

અતઃ જીવોને સંસાર-ભવભ્રમણ ક્રિયા હૈ, કરતે હૈ-કરેંગે इत्यादि रूपसे अर्थ संगति कर लेनी चाहिये यहां यावत्पदसे “अप्रकायिकसे लेकर चौहन्द्रिय तकके ७ पदोंका ग्रहण हुआ है ॥ सूत्र ७ ॥

અવગાહના પદ શરીરના અર્થમાં વપરાયું છે. અવગાહના સૂત્રમાં વપરાયેલા ‘પર્યન્ત’ પદ દ્વારા “ તેજસ્કાયિક અવગાહના અને વાયુકાયિક અવગાહના ”, આ બે પદો ગ્રહણ કરવા બોધાયે.

૧૪માં સૂત્રમાં એ વત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે બોધાયે પૃથ્વીકાયિક આદિ નવે સ્થાનોમાં ભૂતકાળમાં બ્રમણ કર્યું છે, વર્તમાનકાળમાં પણ બ્રમણ કરી રહ્યા છે અને ભવિષ્યમાં પણ બ્રમણ કરશે. આ સૂત્રમાં “ પર્યન્ત ” પદ વડે અપ્રકાયિકથી લઈને ચતુરિન્દ્રિય સુધીના સાતે સ્થાનો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે. ॥ સૂત્ર ૭ ॥

ટીકા—‘ જવહિં ઠાણેહિં રોગુપત્તી ’ इत्यादि—नवभिः स्थानै रोगोत्पत्तिः स्यात्, तद्यथा-अत्यशनतया अति-अतिमात्रम् अशनं-भोजनम् अत्यशनं, तस्य भावोऽत्यशनता, तथाऽत्यशनतया-अप्रमितभोजनेनेत्यर्थः, अत्यशनतयाऽजीर्णतोत्पद्यते, तथा च वायुषकोपादयो नाना रोगा उत्पद्यन्ते इति, अत्र स्वार्थे तत् प्रत्ययः प्राकृतत्वात्, एवमग्रेऽपि, ‘ अच्चासणयाए ’ इत्यत्र प्राकृतत्वादीर्घः १।१। अहिताशनतया-अहितं-प्रतिकूलम् अशनम्-अजीर्णे भोजनमित्यर्थः, अहिताशनं तस्य भावोऽहिताशनता तथा तथेति २। अतिनिद्रया-अधिकशयनेन ३, अतिजागरितेन-अधिकजागरणेन ४, उच्चारनिरोधेन ५, प्रस्रवणनिरोधेन ६, अवगमनेन-दूरमार्गगमनेन ७, भोजनप्रतिकूलतया-प्रकृत्ययोग्य-भोजनेन ८, इन्द्रियार्थविकोपनतया-इन्द्रियार्थाः इन्द्रियाणाम्-अर्थाः-शब्दादयो विषयाः इन्द्रियार्थास्तेषां विकोपनं विपाकः कामविकार इत्यर्थः इन्द्रियार्थविको-

अथ सूत्रकार जीवोंके रोगोत्पत्तिके निमित्तोंका कथन करते हैं—

“ जवहिं ठाणेहिं रोगुपत्ती सिध्या ” इत्यादि ॥ सूत्र ८ ॥

ટીકાર્થ-જીવોંકો નો કારણોંસે રોગોત્પત્તિ હોતી હૈ-વે નો કારણ હસ પ્રકારસે હૈ-અધિક ભોજન કરના યહ પ્રથમ કારણહૈ, દૂસરા કારણ અહિતાશનનાકુપથ્ય આહાર કરના અથવા અધ્યસન અર્થાત્ અજીર્ણ અવસ્થામૈ આહાર કરના-૨ તૈસરા કારણ હૈ-અતિનિદ્રા ૩ ચૌથા કારણ હૈ અતિ જાગરણ ૪, પાંચવાં કારણ હૈ-મરુતા નિરોધ કરના ૫, છઠા-કારણ હૈ-પેશાબકા રોકના ૬, સાનવાં કારણ હૈ વહુત દૂર તક રાસ્તા ચલના, ૭ ખાટવાં કારણ હૈ પ્રકૃતિકે વિરુદ્ધ ભોજન કરના ૮, તથા નૌવાં કારણ હૈ-ઇન્દ્રિયોંકે અર્થ શબ્દાદિકોંકા વિપાક અર્થાત્ કામ વિકારકા ઉત્પન્નહોના, કામ વિકાર-જય ઇન્દ્રિયોંમૈ કામવિકાર હોતા હૈ,

હવે સૂત્રકાર જીવોના રોગોત્પત્તિનાં નિમિત્તો (કારણો)નું નિરૂપણ કરે છે-

“ જવહિં ઠાણેહિં રોગુપત્તી સિધ્યા ” इत्यादि—

ટીકાર્થ-જીવોને રોગની ઉત્પત્તિ થવાનાં નીચે પ્રમાણે નવ કારણો કહ્યાં છે-(૧) અધિક પ્રમાણમાં ભોજન કરવાથી આ કારણે અજીર્ણ થાય છે અને અજીર્ણ થવાથી વાયુપ્રક્રોધ આદિ વિવિધ રોગો થાય છે. (૨) અહિતાશનતા-એટલે કે અપથ્ય આહારનું સેવન અથવા અપચો થયો હોય છતાં ભોજન લેવાથી પણ રોગોત્પત્તિ થાય છે. (૩) અતિનિદ્રા, (૪) અતિ જાગરણ, (૫) મળનો નિરોધ થવાથી, (૬) પેશાબ બંધ થઈ જવાથી, (૭) ઘણા જ લાંબા અંતર સુધી ચાલવાથી, (૮) પ્રકૃતિને અનુકૂળ ન હોય એવો ખોરાક ખાવાથી, અને (૯) કામવિકાર-ઇન્દ્રિયોના અર્થ શબ્દાદિકોના વિકાર-બધાંરે ઇન્દ્રિયોમાં કામવિકાર

પનસ્તસ્ય ભાવદ્વિધ્યાર્થં ચિક્ષોપનતાતયા તથા=દ્વિધ્યાર્થંચિક્ષોપનેત્યર્થઃ ।
કામવિકારકરણાત્ સ્વાદિસંયોગાભિલાપઃ, તસ્માચ્ચ ચિન્તા, તતઃ સ્મરણં,
તતોગુણકીર્તનં, તત ઉદ્વેગસ્તતઃ પ્રલાપઃ તતશ્ચોન્માદાદિરોગોત્પત્તિર્ભવતિ,
યત્ ઉક્તમ્—

“આદાવભિલાપઃ સ્યાચિન્તા તદનન્તરં તતઃ સ્મરણમ્ ।

તદનુ ગુણાનાં કીર્તનમુદ્વેગશ્ચ પ્રલાપશ્ચ ।

ઉન્માદ સ્તદનુ તતોવ્યાધિર્જઙ્ઘતાં તતસ્તતો મરણમ્ ।૧।” ઇતિ ૧ ॥ સૂ. ૮ ॥

પૂર્વં વિષયપ્રાપ્તૌ રોગોત્પત્તિઃ સ્યાત્, અત્યાસક્તાવપિ રાજયક્ષ્માદિ રોગો-
ત્પત્તિઃ સ્યાદિતિ શારીરરોગોત્પત્તિનિમિત્તાનિ પ્રતિપાદિતાનિ સમ્પ્રતિ આન્તર-
રોગકારણભૂતકર્મવિશેષાન્ નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—ગત્રવિદ્ધે દરિસળાવરણિજ્ઞે કમ્મે પપ્પગત્તે, તં જહા--
નિદ્દા ૧, નિદ્દાનિદ્દા ૨, પયલા ૩, પયલાપયલા ૪, થીળગિદ્ધી
૫ ચક્કલુદંસળાવરણે ૬, અચક્કલુદંસળાવરણે ૭, અવધિદંસળા-
વરણે ૮, કેવલદંસળાવરણે ૯ ॥ સૂ. ૯ ॥

તત્રસ્ત્રી આદિકે સંયોગકી અભિલાષા ઉત્પન્ન થોતીહે, ઉસસે ફિર ચિન્તા
હોતી હૈ, ચિન્તાસે સ્મરણ હોતા હૈ, સ્મરણસે ગુણકીર્તન હોતા હૈ—હસસે
ઉદ્વેગ હોતા હૈ, ફિર પ્રલાપ હોતા હૈ, વાદમેં હસસે ઉન્માદ આદિ રોગોંકી
ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, ઉક્ત ચ—“આદાવભિલાપઃ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૮ ॥

હસ તરહ વિષય પ્રાપ્તિમેં રોગોત્પત્તિ હોતી હૈ, અત્યાસક્તિમેં ભી
રાજયક્ષ્માદિ રોગોંકી ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, હસ પ્રકારસે શારીરિક રોગોંકી
ઉત્પત્તિકે કારણોંકા પ્રતિપાદન કર અવ મૂત્રકાર આન્તર રોગકે કારણ
ભૂત કર્મ વિશેષોંકા નિરૂપણ કરતે હૈ—

ઉત્પન્ન થાય છે ત્યાદે સ્ત્રી આદિનાં સંયોગની અભિલાષા ઉત્પન્ન થાય છે, ચિન્તા
દ્વારા સ્મરણ થાય છે, સ્મરણ દ્વારા ગુણકીર્તન થાય છે. તેના દ્વારા ઉદ્વેગ થાય
છે અને તેમાંથી ઉન્માદ આદિ રોગોની ઉત્પત્તિ થાય છે. કહ્યું પણ છે કે—
“આદાવભિલાપઃ” ઇત્યાદિ—॥ સૂત્ર ૮ ॥

આ પ્રકારે વિષયાસક્તિને વીધે રોગોત્પત્તિ થાય છે. અતિશય વિષયા-
સક્ત મનુષ્યોને ક્ષય રોગ આદિ રોગો થતાં હોય છે. આ પ્રકારે શારીરિક
રોગોની ઉત્પત્તિના કારણોનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર આન્તર રોગનાં
કારણો રૂપ કર્મવિશેષોનું નિરૂપણ કરે છે—

છાયા — નવવિધં દર્શનાઽઽવરણીયં કર્મ પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—નિદ્રા ૧ નિદ્રા-
નિદ્રા ૨, પ્રચલા ૩, પ્રચલા પ્રચલા ૪, સ્ત્યાનગૃહ્ણિઃ ૫, ચક્ષુર્દર્શનાઽઽવરણમ્ ૬,
અચક્ષુર્દર્શનાઽઽવરણમ્ ૭, અવધિર્દર્શનાઽઽવરણમ્ ૮, કેવલદર્શનાઽઽવરણમ્ ૯ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

ટીકા—“ જવવિદે દરિસણાવરણિજ્જે ” इत्यादि—दर्शनावरणीयं—दर्शनं—
सामान्यविशेषलक्षणपदार्थेषु सामान्यमात्रग्रहणरूपो बोधः, तस्य आवरणीयम्—
अवृणोतीत्यावरणीयम्—आवरणकारकं कर्म दर्शनाऽऽवरणीयं—दर्शनावरणमित्यर्थः,
तच्च नवविधं प्रज्ञप्तं जिनैरिति, तथ्या—निद्रा नि—नियतं द्राति=चैतन्यं कुत्सि-
तत्त्व—मविस्पष्टत्वं गच्छत्यनयेति निद्रासुखप्रबोधा—स्वापावस्था, यत्र स्वल्पशब्द

“ જવવિદે દરિસણાવરણિજ્જે ” इत्यादि ।

दर्शनावरणीय जो कर्म है, वह नौ प्रकारका जिनेन्द्रदेवने कहा
है—जैसे—निद्रा १ निद्रा निद्रा २ प्रचला ३, प्रचला प्रचला ४, स्त्यान-
गृह्णि ५, चक्षुर्दर्शनावरण ६, अचक्षुर्दर्शनावरण ७, अवधि दर्शनावरण
८ और केवलदर्शनावरण ९ ।

पदार्थ सामान्य विशेषरूप है—इनमें सामान्य मात्रको ग्रहण करने-
वाला जो बोध है, वह दर्शन है. इस दर्शनको आवरण करनेवाला जो
कर्म है, वह दर्शनावरणीय कर्म है, यह दर्शनावरणीय कर्म पूर्वोक्त
रूपसे जो नौ प्रकारका कहा गया है, उसका अर्थ ऐसा है—जिससे
चेतना अविस्पष्टताको प्राप्त कर लेती है उसका नाम निद्रा है ऐसी
वह निद्रा सुखप्रबोध स्वापावस्था (सोने) रूप होती है, इस अवस्थामें

“ જવ વિદે દરિસણાવરણિજ્જે ” इत्यादि—

दर्शनावरणीय कर्मना नव प्रकारजिनेन्द्र देवाये कहा छे ते नव प्रकारे
नीचे प्रमाणे छे—(१) निद्रा, (२) निद्रानिद्रा (३) प्रचला, (४) प्रचला प्रचला,
(५) स्त्यान गृह्णि, (६) चक्षुर्दर्शनावरण, (७) अचक्षुर्दर्शनावरण, (८) अवधि
दर्शनावरण, अने (९) केवलदर्शनावरण

पदार्थ सामान्य विशेषरूप छे. तेमांथी सामान्य मात्रने ग्रहण करना
जे बोध छे तेनुं नाम दर्शन छे. आ दर्शनने आवरण (आच्छादित)
करानुं जे कर्म छे ते कर्मनुं नाम दर्शनावरणीय कर्म छे तेना
निद्रा, निद्रानिद्रा, आदि नव प्रकारे उपर दर्शावनामां आन्या छे. हवे तेमना
अर्थ समझवनामां आवे छे—

जेना द्वारा चेतना अविस्पष्टत्व प्राप्त करी ले छे, ओवी अवस्थानुं नाम
निद्रा छे. ते निद्रा सुખ प्रबोध—स्वापावस्था (निद्रावस्था) इये

માત્રેણાપિ જાગરણં ભવતિ, તદ્વિપાકવેદ્યા કર્મપ્રકૃતિરપિ નિદ્રેત્યુચ્યતે ૧, નિદ્રા-નિદ્રા-નિદ્રાતિશયિની નિદ્રા નિદ્રાનિદ્રા-દુઃખપ્રવોદ્યા સ્વાપાવસ્થા, તદ્વિપાકવેદ્યા કર્મપ્રકૃતિરપિ નિદ્રાનિદ્રેતિ વ્યવહિયતે ૨, પ્રવલા-ઉપવિષ્ટ ઊર્ધ્વસ્થિતો વા પ્રવ-લત્પસ્યામિતિ પ્રવલા, ઉપવિષ્ટસ્યોર્ધ્વસ્થિતસ્ય વા ઘૂર્ણમાનસ્ય સ્વાપાવસ્થા, તાદૃશત્રિપાકવેદ્યા કર્મપ્રકૃતિરપિ પ્રવલેતિ વ્યવદિશ્યતે ૩, પ્રવલાપ્રવલા-પ્રવલાતિ-શયિની પ્રવલા પ્રવલાપ્રવલા, પ્રવલાપ્રવલા ઠિ ચ હ્રુમ્પણાદિ કુર્વતોઽપિ ભવતિ । તદ્વિપાકવેદ્યા કર્મપ્રકૃતિરપિ પ્રવલાપ્રવલા કથ્યતે ૪ । સ્થાનાનુદ્ધિઃ-વહુત્વેન

રહા હુઆ જીવ થોડેસે શબ્દ માત્રસે મી જગ જાતા હૈ, હસ નિદ્રા રૂપ ત્રિપાકસે હી યહ નિદ્રારૂપ પ્રકૃતિ વેદ્ય હોની હૈ, યહ પ્રકૃતિ કર્મની હૈ. હસલિયે હમ કર્મપ્રકૃતિકો મી નિદ્રા હસ રૂપસે કહ દિયા ગયા હૈ, ૧ જો નીંદ પર નીંદ આની હૈ વહ નિદ્રા નિદ્રા હૈ, યહ નિદ્રા નિદ્રા દુઃખ પ્રવોદ્યાસ્વાપાવસ્થા રૂપ હોતી હૈ, અતઃ નિદ્રા નિદ્રારૂપ ત્રિપાકસે વેદ્ય હસ કર્મપ્રકૃતિકો મી નિદ્રા નિદ્રા હસ રૂપસે કહ દિયા ગયા હૈ, બેઠે ૨ યા ચલે ૨ જો નીંદ આ જાતી હૈ, વહ પ્રવલા હૈ, યહ પ્રવલા પ્રકૃતિ હસી પ્રકારકે ત્રિપાકસે વેદ્ય હોતીહૈ, હસલિયે હસ કર્મપ્રકૃતિકો પ્રવલા હમ રૂપસે કહ દિયા ગયા હૈ, જો ચલતે ૨ હી નીંદ આ જાતી હૈ, વહ પ્રવલા પ્રવલા હૈ યહ હસી રૂપ ત્રિપાકસે વેદ્ય હોતી હૈ હસલિયે હસ કર્મપ્રકૃતિકો પ્રવલા પ્રવલા હસ રૂપસે કહા ગયા હૈ, જિસ નિદ્રામેં જાગરિત અવસ્થામેં સોચે હુઆ કામકો કરનેકા સામર્થ્ય હો જાતા હૈ

હોય છે. આ અવસ્થામાં રહેલો જીવ સહેજ અવાજ થતાં જ જાગી જાય છે. આ નિદ્રારૂપ ત્રિપાક વડે જ આ નિદ્રારૂપ પ્રકૃતિ વેદ્ય હોય છે આ પ્રકૃતિ કર્મની એક પ્રકૃતિ રૂપ હોવાથી આ કર્મપ્રકૃતિને પણ નિદ્રાને નામે પ્રકટ કરવામાં આવી છે. નીંદ પર નીંદ (ઉપરાઉપરી નિદ્રા) આવવા રૂપ અવસ્થાનું નામ 'નિદ્રા નિદ્રા' છે. આ નિદ્રાનિદ્રા દુઃખપ્રવોદ્યા સ્વાપાવસ્થારૂપ (નિદ્રાવસ્થા રૂપ) હોય છે. તેથી નિદ્રાનિદ્રા રૂપ ત્રિપાક વડે વેદ્ય આ કર્મપ્રકૃતિને પણ નિદ્રાનિદ્રાને નામે ઓળખવામાં આવેલ છે.

એકાં એકાં અથવા બેમાં બેમાં જે બંધ આવી જાય છે તેને 'પ્રચલા' કહે છે આ પ્રચલાપ્રકૃતિ એજ પ્રકારના ત્રિપાક વડે વેદ્ય હોય છે, તેથી આ કર્મપ્રકૃતિને 'પ્રચલા' કહેવામાં આવે છે.

ચાલતાં ચાલતાં જ જે બંધ આવી જાય છે તે બંધને 'પ્રચલાપ્રચલા' કહે છે. આ પ્રચલાપ્રચલા કર્મપ્રકૃતિને 'પ્રચલાપ્રચલા' કહેવામાં આવે છે.

સદ્ગતં પ્રાપ્તા ગૃહ્ણિ:-અમિકાહૃક્ષા-જાગ્રદવસ્થાયા મનુભૂતવસ્તુસાધનવિષયા
 યસ્યાં સા સ્ત્યાનગૃહ્ણિઃ સ્વાપાવસ્થા, યત્ર હિ જાગ્રદવસ્થાઽનુભૂતમર્થમુત્થાય સાધ-
 યતિ, સા સ્વાપાવસ્થા । ‘સ્ત્યાનર્હિ’-રિતિ પાઠાન્તરમ્, તત્પક્ષે-સ્ત્યાના-
 વિણ્ડીભૂતા ઋદ્ધિઃ-આત્મશક્તિલક્ષણા યસ્યાં સા તથા, યસ્યાં હિ સત્યાં સ્વપ્તુ-
 જનસ્ય વાસુદેવાર્દ્ધવલસદૃશી શક્તિર્મવતિ, યદ્વા-સ્ત્યાના-જડીભૂતા ચૈતન્યર્દ્ધિ-
 યસ્યાં સા તથા, તદ્વિપાકવેદ્યા કર્મપ્રકૃતિરપિ સ્ત્યાનગૃહ્ણિઃ સ્ત્યાનર્હિરિતિ વા
 વ્યપદિશ્યતે ૫। इत्येवं निद्रापञ्चकं दर्शनाऽऽवरणक्षयोपशमवतां दर्शनलब्ध्यावार-
 कत्वेन प्रतिपादितम्, साम्प्रतं यद् दर्शनलब्धीनां लाभं मूलत एवाऽऽवृणोति
 वह स्त્યાनगृह्णि है कहीं २ “ स्त्यानर्हि ” ऐसा भी पाठान्तर है इसका
 अर्थ है कि जिस निद्रामें सोये हुए मनुष्यमें वासुदेवके अर्धबल जैसी
 शक्ति हो जाती है तात्पर्य यह है कि इस निद्रामें सहज बलसे कहीं
 अनेक गुण अधिक बल प्रकट होता है, अथवा-जिसमें चेतना रूप
 ऋद्धि जडीभूत हो जाती है, वह स्त्यानर्हि है इस कर्मप्रकृतिका इसी
 रूपसे विपाक वेद्य होता है-इसलिये इस कर्म प्रकृतिको भी स्त्यान-
 गृह्णि या स्त्यानगृह्णि इस रूपसे कहा गया है, ये निद्रापंचक दर्शना-
 वरणके क्षयोपशमवालोंकी दर्शनलब्धि के आधारक होते हैं । तथा जो
 दर्शनलब्धियोंके लाभको मूलसेही आवृत करते हैं, ऐसे वे दर्शनावरण
 चार हैं-जो इस प्रकारसे हैं-“ चक्षुर्दंसणावरणं ” इत्यादि-चक्षु-
 से जो सामान्यमात्र ग्राही बोध होता है वह चक्षुर्दर्शन है-इस चक्षु-

જાગૃતાવસ્થામાં જે કામ કરવાના વિચાર કરવામાં આવ્યા હોય, તે કામને
 કરી નાખવાનું સામર્થ્ય જે નિદ્રામાં આવી જાય છે તે નિદ્રાનું નામ ‘સ્ત્યાન
 ગૃહ્ણિ’ છે. તેને કોઈ કોઈ જગ્યાએ સ્ત્યાનગૃહ્ણિને બદલે ‘સ્ત્યાનર્હિ’ પણ
 કહેવામાં આવેલ છે. આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે આ નિદ્રાવસ્થામાં સ્વાભાવિક
 બલ કરતાં અનેક ગણું અધિક બળ પ્રકટ થાય છે. અથવા-જેમા ચેતના રૂપ
 ઋદ્ધિ જડીભૂત (કોઈ જડીબુટ્ટી સમાન) થઈ જાય છે, તે નિદ્રાનું નામ સ્ત્યાનર્હિ
 છે. આ કર્મપ્રકૃતિને પણ સ્ત્યાનગૃહ્ણિ અથવા સ્ત્યાનર્હિને નામે ઓળખવામાં
 આવે છે નિદ્રાપંચક (પાંચ પ્રકારની નિદ્રા) દર્શનાવરણના ક્ષયોપશમવાળાઓની
 દર્શનલબ્ધિનું આવરક બને છે તથા દર્શનલબ્ધિઓના લાભને મૂળમાંથી જ
 આવૃત કરનાર દર્શનાવરણના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે-“ચક્ષુર્દમણાવરણ”
 ઇત્યાદિ-(૧) ચક્ષુર્દર્શનાવરણ, (૨) અચક્ષુર્દર્શનાવરણ, (૩) અવધિદર્શનાવરણ
 અને કેવળ દર્શનાવરણ.

તદ્ દર્શનાવરણચતુષ્ટયં ક્રમેઽં દર્શયતિ-‘ચક્ષુર્દર્શનાવરણં’ इत्यादिना, तत्र चक्षुर्दर्शनाऽऽवरणं-चक्षुर्दर्शनं-चक्षुषा दर्शनं सामान्यमात्रग्राही बोधः, तस्याऽऽवरणं चक्षुर्दर्शनाऽऽवरणम् ६, अचक्षुर्दर्शनाऽऽवरणम्-अचक्षुर्दर्शनम्-न चक्षुर-चक्षुः-चक्षुर्भिन्नेन्द्रियचतुष्टयं मनो वा, तेन दर्शनं-सामान्यग्राहिवोधरूपम् अचक्षुर्दर्शनं, तस्याऽऽवरणम्-आवारकम्-अचक्षुर्दर्शनाऽऽवरणम् ७, अवधिदर्शनाऽऽवरणम्-अवधिदर्शनम्-अवधिना-रूपिमर्यादया दर्शनं, यद्वा-अवधिरेव-इन्द्रिय-निरपेक्षसामान्यग्राहि बोध एव दर्शनं-प्रागुक्तलक्ष्यम् अवधिदर्शनं तस्याऽऽवरण-मवधिदर्शनाऽऽवरणम् ८, तथा-केवलदर्शनाऽऽवरणं-केवलदर्शनं-केवलेन-सम्पूर्ण-वस्तुतत्त्वग्राहकबोधविशेषरूपेण यद्दर्शनं सामान्यांशग्रहणं तत् केवलदर्शनं तस्याऽऽवरणम् केवलदर्शनाऽऽवरणम् ९ ॥ सू० ९ ॥

दर्शनका जो आवरण है वह चक्षुर्दर्शनावरण है चक्षुसे भिन्न इन्द्रिय चतुष्टयका नाम अचक्षु है, अथवा मनका नाम अचक्षु है, अचक्षुसे जायमान जो सामान्य ग्राहीबोध है वह अचक्षुर्दर्शन है, इस दर्शनका जो आवरण है वह अचक्षुर्दर्शनावरण है। रूपी पदार्थों का मर्यादासे जो दर्शन है, वह अवधिदर्शन है अथवा-इन्द्रियोंकी अपेक्षाके बिना जो रूपी पदार्थोंका सामान्यग्राही बोध है, वह अवधिदर्शन है, अवधिदर्शनका स्वरूप पहिले प्रकट किया जा चुका है, इसका जो आवरण है, वह अवधिदर्शनावरण है, केवल दर्शन-समस्त वस्तुको ग्रहण करने-वाले केवलज्ञानसे पहिले जो उनके सामान्य अंशका ग्रहण होता है, वह केवलदर्शन है, इस दर्शनका जो आवरण है वह केवलदर्शनावरण है सू० १॥

ચક્ષુ વડે સામાન્યમાત્ર ગ્રાહી બોધ થાય છે તેને ચક્ષુર્દર્શન કહે છે ચક્ષુર્દર્શનનું જે આવરણ છે તેનું નામ ચક્ષુર્દર્શનાવરણ છે. ચક્ષુ સિવાયની ઇન્દ્રિયોને અચક્ષુ કહે છે અથવામનને પણ અચક્ષુ કહે છે. અચક્ષુ વડે જે પદાર્થનો સામાન્ય બોધ થાય છે તેનું નામ અચક્ષુર્દર્શન છે. આ દર્શનનું જે આવરણ છે-તેને આચ્છાદિત કરનાર જે કર્મ છે તેનું નામ અચક્ષુર્દર્શનાવરણ છે. રૂપી પદાર્થોનું મર્યાદાપૂર્વકનું જે દર્શન છે એટલે કે અમુક મર્યાદિત અંતરે અથવા અમુક જ દિશામાં રહેલા રૂપી પદાર્થોનો બોધ થવો તેનું નામ અવધિદર્શન છે. અથવા ઇન્દ્રિયોની મદદ વિના રૂપી પદાર્થોનો જે સામાન્યગ્રાહી બોધ થાય છે તેનું નામ અવધિદર્શન છે. અવધિદર્શનનું સ્વરૂપ આગળ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે તે અવધિદર્શનનું જે આવરણ છે તેને અવધિદર્શનાવરણ કહે છે.

કેવલદર્શન-સમસ્ત વસ્તુઓને ગ્રહણ કરનારા કેવલજ્ઞાનની પહેલાં તેના અંશનું જે ગ્રહણ થાય છે તેનું નામ કેવલદર્શન છે. આ દર્શનનું આવરણ સામાન્ય બનનાર કર્મને કેવલદર્શનાવરણ કહે છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

જીવાનાં કર્મવશાન્નક્ષત્રાદિદેવત્વં તિર્યક્ત્વં મનુષ્યત્વં ચ ભવતીતિ નક્ષત્રા-
દિવક્તવ્યતાપ્રતિવદ્ધં સૂત્રચતુષ્ટયમાહ—

મૂલમ્—અભિર્ઘ્નં ણક્ષત્રે સાઈરેગે નવ મુહુત્તે ચંદ્રેણ
સદ્ધિં જોગં જોણ્ઠ, અમીઠઆઈઆ ણં ણવ નક્ષત્રા ચંદ્રસ્સ
ઉત્તરેણં જોગં જોણ્ઠિ, તં જહા-અભિર્ઘ્નં સવળો ધનિઠ્ઠા જાવ
ભરણી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

છાયા—અભિજિત્ સ્વલુ નક્ષત્રં સાતિરેકાન્નવ મુહૂર્તાન્ ચન્દ્રેણ સાર્દ્ધયોગં
યુનક્તિ । અભિજિદાદીનિ સ્વલુ નવ નક્ષત્રાણિ ચન્દ્રસ્ય ઉત્તરે યોગં યુજ્જન્તિ,
તથા-અભિજિત્ શ્રવણા ધનિષ્ઠા યાવત્ ભરણી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘ અભિર્ઘ્નં ણક્ષત્રે ’ इत्यादि—सुगमम्, नवरम् सातिरेकान्
किञ्चिदधिकान् नव मुहूर्तान् अभिजिन्नक्षत्रं चन्द्रेण सार्द्धं योगं युनक्ति । उत्तरे-
उत्तरस्यां दिशि स्थितानि अभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चन्द्रस्य उत्तरे=उत्तरभागे-
योगं युज्जन्तीति भावः । तानि परिगणयति ‘ तद्यथे ’ त्यादिना, अभिजित् १,
श्रवणा २, धनिष्ठा ३, ‘ यावत् ’-पदेन ‘ शतभिषा ४, पूर्वभाद्रपदा ५, उत्तर-
भाद्रपदा ६ रेचती ७ अश्विनी ८ इत्येतानि पञ्चनक्षत्राणि ग्राह्याणि, तथा भरणी
९, इति नव ॥ सू. १० ॥

जीर्षोके कर्मके वशसे नक्षत्रादि देव पर्याय तिर्यक् पर्याय एवं
मनुष्य पर्याय प्राप्त होती है, अतः अब सूत्रकार नक्षत्रादि वक्तव्यतासे
प्रतिवद्व चारका कथन करते हैं—

“ અભિર્ઘ્નં ણક્ષત્રે સાઈરેગે નવમુહુત્તે ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ-અભિજિત્ નક્ષત્ર કુછ અધિક નૌ મુહૂર્ત્ત તક ચન્દ્રકે યોગવાલા
રહતા હૈ, સ્થિત અભિજિત્ આદિ નૌ નક્ષત્ર ચન્દ્રકે ઉત્તર ભાગમેં યોગ-
વાલે હોતે હૈ । વે નૌ નક્ષત્ર ચે હૈ-અભિજિત્ ૧ શ્રવણ ૨, ધનિષ્ઠા ૩,

ટીકાર્થ-ભવોને કર્મના પ્રભાવથી નક્ષત્રાદિ દેવપર્યાય તિર્યંચ પર્યાય અને મનુષ્ય
પર્યાયની પ્ર.પ્તિ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર નક્ષત્રાદિની વક્તવ્યતાવાળાં ચાર
સૂત્રોનું કથન કરે છે-અભિર્ઘ્નં ણક્ષત્રે સાઈરેગે નવ મુહુત્તે ” इत्यादि—

અભિજિત નક્ષત્ર નવ મુહૂર્ત કરતાં સહેજ અધિક સમય સુધી ચન્દ્રના
યોગવાળું રહે છે. અભિજિત્ આદિ નવ નક્ષત્રો ચન્દ્રના ઉત્તર ભાગમાં યોગ
વાળાં હોય છે. તે નવ નક્ષત્રોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) અભિજિત, (૨)

મૂલમ્—इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणि-
जाओ भूमिभागाओ णवजोयणसयाइं उहुं अवाहाए उवरिल्ले
तारारूपे चारं चरइ ॥ सू० ११ ॥

છાયા—अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद् भूमिभा-
गाव्ययोजनशतानि ऊर्ध्वम् अवाधायाम् उपरितनं तारारूपं चारं चरति ॥ सू० ११ ॥

ટીકા—‘ इमीसे णं ’ इत्यादि—अस्याः खलु रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहु-
समरमणीयात्—बहुः—अत्यन्तो यः समः समतलः, अत एव—रमणीयः—सुशोभनः,
तस्माद् भूमिभागात्—तदपेक्षया न तु पर्वतगर्तापेक्षया नवयोजनशतानि ऊर्ध्वम्—
उपरि अवाधायाम्—अन्तरे—दूरे तारारूपं—तारामण्डलं चारं—भ्रमणं चरति—
करोतीति ॥ सू० ११ ॥

મૂલમ્—जंबुद्वीवे दीवे णवजोयणिघा मच्छा पविसिंसु वा
पविसंति वा पविसिस्संति वा ॥ सु० १२ ॥

છાયા—जम्बूद्वीपे द्वीपे नवयोजनिका मत्स्याः प्राविशन् वा प्रविशन्ति
वा प्रवेक्षयन्ति वा ॥ सू० १२ ॥

શતભિષા ૪, પૂર્વ ભાદ્રપદા ૫, ઉત્તર ભાદ્રપદા ૬, રેવતી ૭, અશ્વિની
૮ ઓર ભરણી ॥ સૂત્ર ૧૦ ॥

“ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—इस रत्नप्रभा पृथिवीके बहुसम-समतलवाले-रमणीय भूमि
भागसे भूमि भागकी अपेक्षासे पर्वत गर्त (खड्डे)की अपेक्षासे नहीं—नौसौ
योजनऊपर दूर तारामण्डल भ्रमण करताहै, अर्थात् इसरत्नप्रभा पृथि-
वीकेसमतल भूमि भागसे९ नौसौ योजन दूर तारा मण्डलहै । सू० ११ ।

શ્રવણ, (૩) ધનિષ્ઠા. (૪) શતભિષા, (૫) પૂર્વભાદ્રપદા, (૬) ઉત્તરભાદ્રપદા,
(૭) રેવતી, (૮) અશ્વિની અને (૯) ભરણી. ॥ સૂત્ર ૧૦ ॥

“ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ” इत्यादि—(सू ११)

ટીકાર્થ—आ रत्नप्रभा पृथ्वीना बहुसम (समतलवाला) रमणीय भागથી ઉપર
—ભૂમિભાગની અપેક્ષાએ પર્વતગર્તની (પર્વતની ખીણની) અપેક્ષાએ નહીં—
નવસો યોજનની ઊંચાઈએ તારામંડલમાં ભ્રમણ કરે છે. એટલે કે આ રત્નપ્રભા
પૃથ્વીના સમતલ ભૂમિભાગથી ૬૦૦ યોજન ઊંચે તારામંડલ આવેલું છે. ।સૂ. ૧૧।

ટીકા--‘ જંબુદ્વીવે ’ इत्यादि—जम्बूद्वीपे-द्वीपे-मध्यजम्बूद्वीपे नवयोजनिका नवयोजनप्रमाणाः मत्स्या प्राविशन् वा प्रविशन्ति वा, प्रवेक्ष्यन्ति वा । यद्यपि लवणसमुद्रे पञ्चशतयोजनायामामत्स्याः भवन्ति, तथापि नदीमुखेषु पृथ्वी-रन्ध्रयोग्यतयैतावन्त एव मत्स्याः प्रवे कुर्वन्ति ॥ सू० १२ ॥

મૂલમ્--જંબુદ્વીવે ણં દીવે ભારહેવાસે ઇમીસે ઓસપ્પિણીણં
ણવં બલદેવવાસુદેવપિયરો હુત્થા, તં જહા--

પયાવઈં ય બંમે ય, રોદ્દે સોમે સિવેદ્ધય ।

મહાસીહે અગ્ગીસીહે, દસરહનવમે ય વસુદેવે ॥ ૧ ॥

इत्तो आढत्तं जहा समवाये निरवसेसं जाव--“ एगा से गवभवसही सिज्झिस्सइ आगमेस्सेणं ” ।

જંબુદ્વીવે દીવે ભારહે વાસે આગમેસ્સાણ ઉસ્સપ્પિણં
નવ બલદેવવાસુદેવ પિયરો ભવિસ્સંતિ, નવ બલદેવવાસ
માયરો ભવિસ્સંતિ, એવં જહા સમવાણ નિરવસેસં જાવ
ભીમસેણ સુર્ગાવે ય અપચ્છિમે ।

“ જંબુદ્વીવે દીવે ણવજોયણિયા મચ્છા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—इम मध्य जंबूद्वीप नामके द्वीपमें नौ योजन/ाणनाले
मत्स्य पहिले प्रविष्ट हुए हैं, अब भी प्रविष्ट होते हैं एवं ३/भी प्रवेश
करेंगे, यद्यपि लवणसमुद्रमें पांचसौ योजनकी लम्बी/लियां होती
हैं—तब भी नदीमुखोंमें पृथ्वीगतरन्ध्र (छिद्र) की यो/से ० इतने
प्रमाणवालेही मत्स्य प्रवेश करते हैं ॥ सू० १२॥

“ જંબુદ્વીવે દીવે ણવજોયણિયા મચ્છા ” इत्यादि. (सू. १२)

ટીકાર્થ—આ મધ્ય જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં નવ યોજન પ્રમાણુવાળાં મત્સ્યો
પહેલાં પ્રવિષ્ટ થયેલાં છે, વર્તમાનમાં પ્રવિષ્ટ થ/છે અને ભવિષ્યમાં પણ પ્રવિષ્ટ
થશે. જે કે લવણસમુદ્રમાં ૫૦૦ યોજન લાંબી માછલીઓ હોય છે, છતાં પણ નદી-
મુખોમાં પૃથ્વીગતરન્ધ્ર (છિદ્ર) ની યોગ્યતા એવી હોય છે કે તેમાં નવ યોજનની
લાંબાઈવાળાં જ મત્સ્યો પ્રવેશ કરી શકે છે. ॥ સૂ. ૧૨ ॥

एए खलु पडिसत्त किर्त्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।

सबे वि चक्रजोही हम्मेहंती सचक्कोहिं ॥ १ ॥ सू० १३ ॥

छाया—जम्बूद्वीपे खलु द्वीपे भारते वर्षे अस्यामवसर्पिण्यां नव बलदेववासु-
देवपितरो बभूवुः, तथा—

प्रजापतिश्च ब्रह्मा च रुद्रः सोमः शिव इति च ।

महासिंहोऽग्निशिखो दशरथो नवमश्च वसुदेवः ॥ १ ॥

इत आरब्धं यथा समवाये निरवशेषं यावद् एका तस्य सगर्भवसतिः सेत्स्यति
आगमिष्यति ।

जम्बूद्वીपे द्वીपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां नव बलदेव-वासुदेव
पितरो भविष्यन्ति, नव बलदेववासुदेवमातरो भविष्यन्ति एवं यथा समवाये
निरवशेषं यावद् महाभीमसेनः मुग्रीवश्च अपश्चिमः ।

एते खलु प्रतिशत्रवः कीर्तिपुरुषाणां वासुदेवानाम् ।

सर्वेऽपि चक्रयोधिनः हनिष्यन्ते स्वचक्रैः ॥ १ ॥ सू० १३ ॥

ટીકા—‘ જંબુદ્વીપે દ્વીપે ’ ઇત્યાદિ—પ્રજાપતિઃ ૧, બ્રહ્મા ૨, રુદ્રઃ ૩,
‘ સોમઃ ૪, શિવઃ ૫, મહાસિંહઃ ૬, અગ્નિશિખઃ , દશરથઃ ૮ વસુદેવઃ ૯ નવમઃ ।
નવ બલદેવવાસુદેવપિતરો વબૂવુઃ । ઇતઃ સૂત્રાદારબ્ધં યથા સમવાયે સમવા-

‘ જંબુદ્વીપે જં દ્વીપે ભારતે વસે ’ ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

પણી—હસ મધ્ય જંબુદ્વીપ નામકે દ્વીપમેં સ્થિત ભરતક્ષેત્રમેં અવસર્પિ-
બલદેવ વાસુદેવકે પિતા હુણ્હે—उनके नाम इस प्रकारसे हैं—

‘ પ્રજાપતિશ્ચ બ્રહ્મા ચ રુદ્રઃ ’ ઇત્યાદિ ।

પ્રજા ૧, બ્રહ્મા ૨, રુદ્ર ૩, સોમ ૪, શિવ ૫, મહાસિંહ ૬,
અગ્નિશિખ ૭, દશરથ ૮ વાસુદેવ ૯ ।

यहांसे नि जैसा समवायाङ्ग सूत्रमें कहा गया है, वैसा ही सब

“ જંબુદ્વીપે દ્વીપે ભારતે વસે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૧૩)

આ મધ્ય જંબુદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રમાં આ અવસર્પિણીમાં નવ બલ-
દેવ અને વાસુદેવોના પિતા બન્યા છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે.

“ પ્રજાપતિ શ્ચ બ્રહ્મા ચ રુદ્રઃ ” ઇત્યાદિ—

(૧) પ્રજાપતિ, (૨) બ્રહ્મા, (૩) રુદ્ર, (૪) સોમ, (૫) શિવ, (૬) મહા-
સિંહ, (૭) અગ્નિશિખ, (૮) દશરથ અને (૯) વાસુદેવ. ત્યાર પછીનું સમસ્ત
કથન સમવાયાંગસૂત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવું.

જસૂત્ર તથા-નિરવશેષ-સર્વ વિશેષમ્ । તત્ત્વાર્થત એવમ્-વાસુદેવબલદેવાનાં નવ માતરો નવ પિતરશ્ચ, તેવામેવ પૂર્વભવનામાનિ, ધર્માચાર્યાઃ, નિદાન-કારણાનિ, પ્રતિશત્રવો ગતયથેતિ સંગ્રાહ્યમ્ । કિમત્રધિ ? इत्याह-‘ જાવ એગાસે ’ इत्यादि गाथापश्चाद्धम् । अत्र यावत्पदसंग्राह्यं गाथा पूर्वार्ध संयोज्य गाथा पश्चाद्धं वक्तव्यम् । तथाहि—

“ અટ્ટંતકડા રામા, ઇકો પુણ વંમલોયકપ્પમ્મિ ।

એગા સે ગબ્મવસહી, સિઙ્ગિસ્સહ આગમેસ્સેણ ” ॥ ૧ ॥

છાયા—અષ્ટાન્તકૃતો રામાઃ, એકઃ પુનર્બ્રહ્મલોકકલ્પે ।

એકા તસ્ય ગર્ભવસતિઃ, સેત્સ્યતિ આગમિષ્યતિ ॥ ૧ ॥ ” इति ।

અર્થ ભાવઃ—અષ્ટ-અષ્ટસંખ્યકા રામાઃ અન્તકૃતઃ=સિદ્ધિ પ્રાપ્તાઃ । એકઃ । નવમો રામઃ—બલરામસ્તુ બ્રહ્મલોકકલ્પે ગતઃ, તસ્ય એકા ગર્ભવસતિ-‘ગર્ભાવાસઃ

યહાં સમગ્ર લેના ચાહિયે—વહ અર્થકી અપેક્ષા એસા હૈ—વાસુદેવ એવં બલદેવ ઇન દોનોંકે માતાપિતા એકહી હોતે હૈ અતઃ નવ વાસુદેવ ઓર નવ બલદેવોંકે નૌ માતાએ ઓર નૌ પિતા હુએ હૈ—ઇનકે પૂર્વભવકે નામ ધર્માચાર્ય નિદાનબંધકે કારણ, પ્રતિશત્રુ, એવં ગતિ યહ સબ યહાં સંગૃ-હીત કર કહ લેના ચાહિયે યહ સબ કથન સમવાચાઙ્ગ સૂત્રમેં “ જાવ એગાસે ” इत्यादि गाथाके पश्चाद्धं तकहै, यहां यावत्पदसे संग्राह्य गाथाके पूर्वार्धको संयुक्त करके गाथाका वह पश्चाद्ध इस प्रकारसे है—

“ અટ્ટંતકડા રામા ” इत्यादि ।

તાત્પર્ય એસા હૈ કિ નૌ બલદેવોંમેંસે એક બલદેવ બ્રહ્મલોક કલ્પમેં ગયા હૈ, બાકીકે ૮ રામ-બલદેવ સિદ્ધિપદકો પ્રાપ્ત હુએ હૈ, જો રામ

વાસુદેવ અને બળદેવ ભાઈઓ હોય છે અને પિતા પણ એક જ હોય છે તેથી નવ વાસુદેવ અને નવ બળદેવની માતાઓ નવ હોય છે અને પિતા પણ નવ હોય છે. તેમના પૂર્વભવનાં નામ, ધર્માચાર્ય, નિદાનબંધનાં કારણો, પ્રતિશત્રુ અને ગતિ, એ બધાનું કથન સમવાચાંગસૂત્રમાં આપ્યા અનુસાર જ અહીં ગ્રહણ કરવું જોઈએ. “ જાવ એગાસે ” इत्यादि गाथाना पश्चाद्धं सुधीनुं કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઈએ. સંગ્રહણી ગાથાના પૂર્વાર્ધ સાથે પશ્ચાદ્ધને જોડવાથી આ પ્રકારનો સૂત્રપાઠ બને છે—

“ અટ્ટંતકડા રામા ” इत्यादि—

આ ગાથાનો ભાવાર્થ એવો છે કે નવ બળદેવોમાનો એક બળદેવ બ્રહ્મ-લોકકલ્પમાં દેવની પર્ચાયે ઉત્પન્ન થયેલ છે, બાકીના આઠ બળદેવે સિદ્ધિપદની

મનુષ્યજન્મ મવિષ્યતિ । તતઃ મ આગમિષ્યતિ કાલે સેત્સ્યતિ-સિદ્ધિં પ્રાપ્સ્ય-
તીતિ । એતદ્વિષયે વિસ્તરતઃ સમવાયાજ્ઞસૂત્રે પ્રતિપાદિતં તતો વિલોકનીયમિતિ ।

“ જંબુદ્વીવે દીવે મારહે ” ઇત્યાદિ—સ્પષ્ટમ્, નવરમ્—આગમ્યુત્સર્પિણી-
સૂત્રે નવચલદેવવાસુદેવપિતરો નવચલદેવવાસુદેવમાતરો મવિષ્યન્તીતિ સમ-
વાયાજ્ઞસૂત્રતોડવસેયા એતત્પ્રત્યયિતુમાહ—‘ એવં જઠા ’ ઇત્યાદિ—એવં યથા સમવાયે
તથા નિરવશેષં—સર્વં વિજ્ઞેયમ્ ‘ કિમવધિ ? ’ ઇત્યાહ—‘ જાન ’ ઇત્યાદિ—યાવત્
—મહાભીમસેનઃ સુગ્રીવથ અપશ્ચિમઃ ’ ઇત્યન્તં વાક્યં વિજ્ઞેયમ્ ।

“ એ એ સ્વલુ ” ઇત્યાદિ—એતે—અનન્તરોક્તાઃ પ્રતિગત્રચઃ નવ—નવસંસ્થયકા
મવિષ્યન્તિ, કેવામિત્યાહ—‘ કિત્તિપુરિભાગ ’ ઇત્યાદિ—કીર્તિપુરુષાણાં—કીર્તિ-

વ્રહ્મલોક કલ્પમેં ગયે હેં વે મી વહાંસે ચવ કર મનુષ્ય જન્મ પા કરકે
આગામી કાલમેં સિદ્ધિપદકે મોક્તા બનેંગે યહ વિષય વિસ્તારસે સમ-
વાયાજ્ઞ સૂત્રમેં પ્રતિપાદિત હુઆ હૈં હસલિયે વહાંસે જાન લેના ચાહિયે.

“ જંબુદ્વીવે દીવે મારહે ” ઇત્યાદિ ।

હસ જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપકે ભરત ક્ષેત્રમેં આગામી ઉત્સર્પિણીમેં
નૌ ચલદેવ—વાસુદેવકે પિતા હોંગે, નૌ ઇનકી માતાઈ હોગી હસ પ્રકા-
રસે જૈસા સમાવાયાજ્ઞ સૂત્રમેં “ મહાભીમસેન એવં સુગ્રીવ ” યહાં તક
જૈસા કહા ગયા હૈં વૈસા સવ કથન યહાં કહ લેના ચાહિવે નૌ વાસુ-
દેવકે પ્રતિ વાસુદેવ નૌ હોંગે યે સવ મી પ્રતિવાસુદેવ ચક્રયોધન
શીલ હોંગે એવં વાસુદેવકે દ્વારા પ્રતિ નિવર્તિત અપને ચક્ર દ્વારા મારે
જાવેંગે અર્થાત્ વાસુદેવ ઓર પ્રતિવાસુદેવકા જવ યુદ્ધ હોના હૈં—તથ

પ્રાપ્તિ કરી છે બ્રહ્મલોક કલ્પમાં દેવની પર્ચાયે ઉત્પન્ન થયેલા એક બળદેવ પણ
ત્યાંથી ચ્યવીને, મનુષ્ય જન્મ પ્રાપ્ત કરીને ભવિષ્ય કાળમાં સિદ્ધિપદને પ્રાપ્ત કરશે.
આ વિષયનું સમવાયાંગસૂત્રમાં વિસ્તારથી પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે, તો ત્યાંથી
આ વિષયની વધુ માહિતી મેળવી લેવી.

“ જંબુદ્વીવે દીવે મારહે ” ઇત્યાદિ—

આ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપના ભરતક્ષેત્રમાં આગામી ઉત્સર્પિણીમાં બલદેવ—
વાસુદેવના નવ પિતા થશે, બલદેવ—વાસુદેવની માતાઓ પણ નવ થશે, ઇત્યાદિ
સમસ્ત કથન સમવાયાંગ સૂત્રમાં કહ્યા અનુસાર જ અહીં પણ ગ્રહણ કરવાનું છે.
“ મહાભીમસેન એવં સુગ્રીવ ” સૂત્રપાઠ પર્યન્તનું સમવાયાંગ સૂત્રમાં આવતું સમસ્ત
કથન અહીં ગ્રહણ કરવું જોઈએ. નવ વાસુદેવોના પ્રતિવાસુદેવ પણ નવ જ થશે.
આ નવે પ્રતિવાસુદેવો ચક્રયોધન શીલ (ચક્ર વડે યુદ્ધ કરનારા) હશે, તેઓ

પ્રધાનપુરુષાણામ્ વાસુદેવાનાં નમ્રપ્રતિશત્રવઃ-પ્રતિવાસુદેવા ભવિષ્યન્તીતિ સમ્બન્ધઃ,
 ' સઘ્વે વિ ' ઇત્યાદિ, એ તે સર્વેઽપિ પ્રતિવાસુદેવાઃ ચક્રયોધિનઃ-ચક્રયોધન-
 શીલાઃ સ્વચક્રૈર્હનિષ્યન્તે-સ્વૈઃ શત્રુમૃતવાસુદેવપ્રતિનિવર્તિતૈશ્ચક્રૈર્ઘાતં પ્રાપ્સ્યન્તીતિ
 ॥ સૂ ૧૩ ॥

મહાપુરુષાધિકારાન્મહાપુરુષવિશેષાણાં ચક્રવર્તિનાં મહાનિધીનાહ—

મૂલમ્--અગમેગે પાં મહાનિહી ણવ જોયણાં વિક્કલંભેણં પળ્લણ્ણે
 અગમેગસ્સ પાં રણ્ણો ચાઉરંતચક્કવાટ્ઠિસ્સ નવ મહાનિહીઓ
 પળ્લણ્ણા, તં જહા-જેસપ્પે ૧, પંડુયણ ૨, પિંગલણ ૩ સઘ્વરયણે
 ૪ મહાપડમે ૫।

કાલે ૬ ય મહાકાલે ૭, માળવગ ૮ મહાનિહી સંલ્લે ૯ ॥૧॥

જેસપ્પાંમિ નિવેસા, ગામાગરનગરપટ્ટણાણં ચ ।

દોળમુહ મહંબાણં, સંધારાણં ગિહાણં ચ ॥ ૨ ॥

ગણિયસ્સ ય વીયાણં, માણુમ્માણસ્સ જં પમાણં ચ ।

ધન્નસ્સ ય વીયાણં, ઉપ્પત્તી પંડુણ મણિયા ॥ ૩ ॥

પ્રતિવાસુદેવ વાસુદેવકો મારનેકે લિયે ચક્ર છોડતા હૈ, વહ ચક્ર ઉન
 પર અપના કોઈ પ્રભાવ નહીં દિલ્લાતા હૈ, ઓર વાપિસ હોકર પ્રતિ-
 વાસુદેવકા હી ઘાત કર દેતા હૈ, એસી સિદ્ધાન્તકો માન્યતા હૈ-હસી
 માન્યતાકો લેકર “ સ્વચક્રૈર્હનિષ્યન્તે ” એસા કહા ગયા હૈ ॥સૂ ૧૩ ॥

વાસુદેવોને મારવાને માટે છોડેલા પણુ વાસુદેવો દ્વારા પાછા વળાયેલાં પોત-
 પોતાનાં જ ચક્રો વડે જ માર્યા જશે.

એટલે કે વાસુદેવ અને પ્રતિવાસુદેવની વચ્ચે જ્યારે યુદ્ધ ચાલુ થાય છે.
 ત્યારે પ્રતિવાસુદેવ વાસુદેવને હણવા માટે પોતાનું ચક્ર તેના તરફ છોડે છે. તે
 ચક્ર વાસુદેવનો વાળ પણુ વાંકો કરી શકતું નથી અને વાસુદેવ પાસેથી પાછું
 કરીને પ્રતિવાસુદેવને જ હણી નાખે છે, આ પ્રકારની સિદ્ધાન્તની માન્યતા છે.
 તેથી જ “ સ્વ ચક્રૈર્હનિષ્યન્તે ” આ પ્રકારનો સૂત્રપાઠ અહીં મૂકવામાં
 આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર. ૧૩ ॥

सद्वा आभरणविही, पुरिसाणं जाय होइ महिलाणं ।
 आसाण य हत्थीण य, पिंगलगनिहिंसिसा भणिया ॥ ४ ॥
 रयणाइं सव्वरयणे, चोदस पवराइं चक्कवट्टिस्स ।
 उप्पज्जंति एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥ ५ ॥
 वत्थण य उप्पत्ती, निप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं ।
 रंगाण य धोयाण य, सव्वा एसा महापउमे ॥ ६ ॥
 काले कालण्णाणं, भव्वपुराणं च तीसु वासेसु ।
 सिप्पसयं कम्माणि य, तिन्नि पयाए हियकराइं ॥ ७ ॥
 लोहस्स य उप्पत्ती, होइ महाकालिआगाराणं च ।
 रूपस्स सुवण्णस्स य, मणिमोत्तिसिलप्पवालाणं ॥ ८ ॥
 जोहाण य उप्पत्ती, आवरणाणं च पहरणाणं च ।
 सव्वा य जुद्धनीई, माणवए दंडनीई च ॥ ९ ॥
 नट्टविही नाडगविही, कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती ।
 संखे महानिहिम्मी, तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥ १० ॥
 चक्कट्ठपइट्ठाणा, अट्ठुस्सेहा, य नवय विक्खंभे ।
 बारसदीहा मंजूससंठिया जण्हवीई मुहे ॥ ११ ॥
 वेरुलियमणिकवाडा, कणगमया विविहरयणपाडिपुन्ना ।
 ससिसूरचक्कलक्खण, अणुसमजुगबाहुवयणा य ॥ १२ ॥
 पलिओवमट्ठिईया, णिहिसरिणामाय तेसु खल्ल देवा ।
 तेसिं ते आवासा, अविकज्जा आहिवच्चा वा ॥ १३ ॥
 एए ते नवनिहओ, पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा ।
 जे वसमुवगच्छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥ १४ ॥ सू० १४ ॥

छाया—एकैकः खलु महानिधिः नव नव योजनानि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः,
एकैकस्य खलु राज्ञः चातुरन्तचक्रवर्तिनः नव महानिधयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—

नैसर्गः १ पाण्डुकः २ पिङ्गलकः ३ सर्वरत्नः ४ महापद्मः ५ ।

कालश्च ६ महाकालः ७ माणवकः ८ महानिधिः शङ्खः ९ ॥ १ ॥

नैसर्गे निवेशाः प्रभाऽऽकरनगरपत्तनानि च ।

द्रोणमुखमण्डम्बानां स्कन्धावाराणां गृहाणां च ॥ २ ॥

गणितस्य च बीजानां मानोन्मानस्य यत् प्रमाणं च ।

धान्यस्य च बीजानामुत्पत्तिः पाण्डुके भणिता ॥ ३ ॥

सर्व आभरणविधिः पुरुषाणां यश्च भवति महिलानाम् ।

अश्वानां च हस्तिनां च पिङ्गलनिधौ स भणितः ॥ ४ ॥

रत्नानि सर्वरत्ने चतुर्दश प्रवराणि चक्रवर्तिनः ।

उत्पद्यन्ते एकेन्द्रियाणि पञ्चेन्द्रियाणि च ॥ ५ ॥

वस्त्राणां च उत्पत्तिः, निष्पत्तिः चैव सर्वभक्तीनाम् ।

रङ्गाणां च धौतानां च सर्वा एषा महापद्मे ॥ ६ ॥

काले कालज्ञानं भव्यपुराणं च त्रिषु वर्षेषु ।

शिल्पशतं कर्माणि च त्रीणि प्रजायाः हितकराणि ॥ ७ ॥

लोहस्य च उत्पत्ति भवति महाकाले आकराणां च ।

रूप्यस्य सुवर्णस्य च मणिमुक्ताशिलाप्रवालानाम् ॥ ८ ॥

योधानां च उत्पत्तिरावरणानां च प्रहरणानाम् ।

सर्वा च युद्धनीति माणवके दण्डनीतिश्च ॥ ९ ॥

नाट्यविधिर्नाटकविधिः काव्यस्य चतुर्विधस्योत्पत्तिः ।

शङ्खमहानिधौ त्रुटिताङ्गाणां च सर्वेषाम् ॥ १० ॥

चक्राष्टप्रतिष्ठानाः अष्टोत्सेधाश्च नव च विष्कम्भाः ।

द्वादशदीर्घाः मञ्जूषासंस्थितिकाः जाह्नव्याः मुखे ॥ ११ ॥

वैडूर्यमणिकपाटाः कनकमयाः विविधरत्नपरिपूर्णाः ।

शशिसूरचक्रलक्षणानु समयुगबाहुवदनाश्च ॥ १२ ॥

पल्योपमस्थितिका निधिसदृङ्नामानश्च तेषु खलु देवाः ।

येषां ते आवासाः अक्रेयाः आधिपत्या वा ॥ १३ ॥

एते ते नवनिधयः प्रभूतधनरत्नसञ्चयसमृद्धाः ।

ये वशमुपगच्छन्ति सर्वेषां चक्रवर्तिनाम् ॥ १४ ॥ सू० १४ ॥

ટીકા—‘ એમમેગે ગં ’ इत्यादि—एकैको महानिधिः नव नव योजनानि विष्कम्भेण-विस्तारेण प्रज्ञप्तः । एकैकस्य खलु राज्ञः चातुरन्तचक्रवर्तिनः नव महानिधयः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-नैसर्पः १, पाण्डुकः २, पिङ्गलकः ३, सर्वरत्नः ४, महापद्मः ५, कालः ६ महाकालः ७ माणवकः ८, महानिधिः शङ्खः ९ एते नव महानिधयः । १ । चक्रवर्तिराज्योपयोगितर्कवस्तूनि नवसु निधिषु सम-वतरन्तीति दर्शयति—‘ जो सप्पमि ’ इत्यादि । प्रथमे नैसर्पे निधौ-नैसर्पो देवः, तदधिष्ठितत्वाग्निधिरपि नैसर्पः, तस्मिन् महानिधौ, एवमग्रेऽपि १, ग्रामाकरनकर पत्तनानां-तत्र-ग्रामः-वृत्तिवेष्ठितः, आकरः-सुवर्णरत्नाद्युत्पत्तिस्थानम्, नक-

મહા પુરુષાધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકાર મહાપુરુષવિશેષ ચક્ર-વર્તિયોંકી મહાનિધિયોંકા કથન કરતે હૈ—

“ એમમેગે ગં મહાનિધી જવ જવ જોયળાઈ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—વિષ્કમ્ભકી(ચોડાઈ)અપેક્ષા એક એક મહાનિધિ નૌ નૌ યોજનકી કહી ગઈ હૈ, એક એક ચાતુરન્ત ચક્રવર્તી રાજાકી નૌ મહાનિધિયાં કહી ગઈ હૈ—વે इस प्रकारसे हैं-नैसर्प १ पाण्डुक २ पिङ्गलक ३ सर्वरत्न ४, महापद्म ५, काल ६ महाकाल ७ माणवक ८ एवं महानिधिः शङ्ख ९ (१) “ जो सप्पमि ” इत्यादि-नै सर्पनिधि नैसर्पदेवसे अधिष्ठित होती है, अतः इस निधिको नै सर्प कहा गया है, इसमें ग्राम, आकर, नगर पत्तन, द्रोणमुष्ण, मडम्भ, स्कन्धावार और गृह इन आठकी स्थापना होती है, जो कांटोकी बाड़से वेष्ठित होता है, उसका नाम ग्राम है १, सुवर्ण एवं रत्न आदिकोंकी उत्पत्तिका जो स्थान होता है, वह आकर है २,

મહાપુરુષોનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તેથી હવે સૂત્રકાર મહાપુરુષ વિશેષ રૂપ ચક્રવર્તીઓના મહાનિધિઓનું કથન કરે છે—

“ એમમેગે ગં મહાનિધી જવ જવ જોયળાઈ ” इत्यादि—(સૂ ૧૪)

ટીકાર્થ—પ્રત્યેક મહાનિધિનો વિષ્કંભ નવ નવ યોજનનો કહ્યો છે પ્રત્યેક ચક્રવર્તી રાજાના નવ નવ મહાનિધિઓ કહ્યા છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણુ છે—(૧) નવ સર્પ, (૨) પાંડુક, (૩) પિંગલક, (૪) સર્વરત્ન, (૫) મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) મહાનિધિશંખ.

“ जो सप्पमि ” इत्यादि—नैसर्पनिधि नैसर्प देव वडे अधिष्ठित होय છે, તે કારણે તે નિધિને નૈસર્પનિધિ કહ્યો છે. તેમાં ગ્રામ, આકર, નગર, પત્તન, દ્રોણમુષ્ણ, મડમ્બ, સ્કન્ધાવાર; અને ગૃહની સ્થાપના કરે છે. કાંટાવાળી વાડથી ઘેરાયેલા સ્થાનને ગ્રામ કહે છે. સુવર્ણ, રત્ન આદિ જે સ્થાનમાં નીકળે છે. તે

રમ્-અઘાદશકરવર્જિતમ્, પત્તન-શકટાદિગમ્યસ્થલમ્, યદ્રા-શકટાદિભિર્નો-
મિર્વા યદ્ગમ્યં તત્ પત્તને, નૌભિરેવ ગમ્યં તુ પટ્ટનમ્ । ઉક્તંચ—

“ પત્તનં શકટૈર્ગમ્યં ઘોટકૈર્નૌભિરેવ ચ ।

નૌભિરેવ તુ યદ્ગમ્યં પટ્ટનં તત્ પ્રચક્ષતે ॥ ૧ ॥ ” इति ।

તથા દ્રોણમુખમહમ્વાતાં-દ્રોણમુલ્લાનિ-જલમ્થઓમયમાર્ગયુક્તાનિ સ્થાનાનિ,
મહમ્વાઃ-સાર્દક્રોશદ્યાન્તર્ગ્રામાન્તરશૂન્યા ગ્રામવિશેષાઃ, તેષાં ચ, પુનઃ સ્કન્ધા-
વારાણાં-કટકનિવેશાનાં મૃદાણાં ચ નિવેશાઃ-સ્થાપનાનિ સન્તિ ॥ ૨ ॥ દ્વિતીયે
પાણ્ડુકે મહાનિધૌ ગણિતસ્ય-ગણિતં-ગણનયા દીયમાનં ગણિમમિત્યર્થઃ, તસ્ય

અઠારહ પ્રકારકે કરસે જો રહિત હોતા હૈ, વહ નકર હૈ ૨, જલ પત્તન,
સ્થલ પત્તન, ઔર ડમય પત્તનકે ભેદસે પત્તન ત્રીન પ્રકારકાં હોતા હૈ
જહાં પર શકટ આદિ પર બૈઠકર જાયા જાતા હૈ, એસે સ્થાનકા નામ
સ્થલ પત્તન હૈ, અથવા શકટ આદિ દ્વારા યા નૌકાઓ દ્વારા જો સ્થાન
જાનેયોગ્ય હોતા હૈ વહ ડમય પત્તન હૈ, તથા-કેવલ નૌકાઓ દ્વારા હી જો
સ્થાન ગમ્ય હોતા હૈ, વહ જલ પટ્ટન હૈ

ઉક્તંચ—“ પત્તનં શકટૈર્ગમ્યં ” इत्यादि ।

સમુદ્રકી વેલા આનેસે જલમાર્ગ ઔર વેલા ન આનેસે સ્થલમાર્ગ
इन दोनों मार्गों से होकर जहाँ जाया जाता है, वह द्रोणमुख
है ५॥ अढाई कोश तक जिसके आसपास कोई दूसरा ग्राम
नहीं होता है, ऐसा वह ग्रामविशेष महम्व है ६, जहाँ पर
छावनी (सेना) पड़ी रहती है उसका नाम स्कन्धावार है ७, मनुष्योंके
निवास स्थानका नामगृह है ८ । “गणियस्स य बीयाणं ” इत्यादि ।

દ્વિતીય જો પાણ્ડુક મહાનિધિ હૈ, હસકા અધિષ્ઠાયક દેવ પાણ્ડુક
है अतः इसीके सम्बन्धसे इसे पाण्डुक महानिधि कहा गया है, इस

સ્થાનને ‘આકર’ કહે છે. ૧૮ પ્રકારનાં કરથી રહિત સ્થાનને નકર (નગર) કહે
છે જલપત્તન સ્થલપત્તન અને ઉભયપત્તનના ભેદથી પત્તન ત્રણ પ્રકારના કહ્યા
છે તેમાં જ્યાં ગડ આદિમાં ખેતીને જઈ શકાય છે એવાં સ્થાનને પત્તન સ્થલ કહે છે
અથવા ગાડા અદિ વાહનો વડે અને નૌકાઓ વડે જ્યાં જઈ શકાય છે તે સ્થાનને
ઉભયપત્તન કહે છે અથવા માત્ર નૌકાઓ દ્વારા જ જ્યાં જઈ શકાય છે તે
સ્થાનને જલપત્તન અથવા પટ્ટન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ પત્તનં શકટૈર્ગમ્યં ” इत्यादि—

સમુદ્રની ભરતી આવવાથી જ્યાં જળમાર્ગે પણ જઈ શકાય છે અને
ભરતી ન આવે ત્યારે સ્થળમાર્ગે જઈ શકાય છે એવાં સ્થાનનું નામ દ્રોણ-
મુખ છે. જે ગ્રામની આસપાસના અઢી ગાઉ સુધીના વિસ્તારમાં ખીજું
કોઈ ગામ હોતું નથી એવાં ગામને મહમ્મ કહે છે. જ્યાં લશ્કરની
છાવણી હોય છે એવાં સ્થાનને સ્કન્ધાવાર કહે છે. મનુષ્યોના નિવાસસ્થાનનું
નામગૃહ છે. “ગણિયસ્સ ય બીયાણં” इत्यादि - ચક્રવર્તીના ખીજા મહાનિધિનું
નામ પાંડુક મહાનિધિ છે. તેનો અધિષ્ઠાતા દેવ પાંડુક હોવાથી તેને મહાનિધિ કહે

દીનારાદિ પૂગીફલાદિ લક્ષણસ્ય, તથા વીજાનાં શાલિયવાદ્યુત્પત્તિકારણભૂ-
તાનાં, તથા માનોન્માનસ્ય-માનં શેટકપસેટિકાદિ તદ્વિષયં.યત્ તદપિ માનં-
ધાન્યાદિમેયં, યદ્વા-મીયતે-પરિમીયતે-इति માનં ધાન્યાદિ, ઉન્માનં-તુલાક-
ર્ષાદિ, તદ્વિષયં યત્ તદપ્યુન્માનં શર્કરાગુડાદિ યદ્ ઉત્તોલ્ય મીયતે તત્, ધરિમ-
મિત્યર્થઃ, તદુભયસ્ય ચ યત્ પ્રમાણં-માનકરણમાધનં તુલાદિકં, તત્ પાણ્ડુકે મણિ-
તમ્ ।, તથા-ધાન્યસ્ય ગ્રીહાદેઃ વીજાનાં-સસ્યનિષ્પત્તિનિમિત્તભૂતાનાં સસ્યવિશે-
ષાણામ્ ઉત્પત્તિશ્ચ પાણ્ડુકે મહાનિધૌ મળિતા-કથિતા ૨ ॥ ૩ ॥ તૃતીયે પિઞ્જ-

પણ્ડુક મહાનિધિમેં ગણિમકા-ગિનકર દિયે જાને યોગ્ય ગણિમપદા-
ર્થકો-દીનાર આદિકા એવં પૂગીફલાદિકા-તથા શાલિ યવ આદિકી
ઉત્પત્તિકે કારણ ભૂત વીજોંકા, તથા માન ઉન્માનકા-સેર પસેરી આદિસે
તૌલને યોગ્ય ધાન્યાદિ રૂપ મેય પદાર્થકા અથવા માન રૂપ ધાન્યાદિકા
ઔર તુલાકર્ષ-તોલા માપા આદિ રૂપ ઉન્માનકે વિકાસભૂત પદાર્થોંકા
અથવા-તૌલને યોગ્ય ગુડ શકર આદિકા-ધરિમકા-જો પ્રમાણ હૈ,
વહ સચ રહતા હૈં, અર્થાત્ इन गणिम धरिम आदि पदार्थोंका वजन
या मापका ज्ञान पण्डुक महानिधिसे होताहै, तथा ग्रीहि आदि धान्यकी
एवं सस्य आदिकी निष्पत्तिके कारणभूत सस्य (धान्य) विशेषोंकी
उत्पत्ति पण्डुक महानिधिमें कही गई है २ “ सर्व आभरणा विधिः ४”

છે આ પાંડુક મહાનિધિમાં ગણીને લેવડદેવડ કરી શકાય એવાં દીનાર આદિ
ધનનો તથા ફલાદિકોનો સફલાવ હોય છે. આ ગણી શકાય એવાં પદાર્થોને
'ગણિમ' કહે છે તથા તેમાં (માણા આદિ વડે માપી શકાય એવાં) પદાર્થોના
પણુ સફલાવ હોય છે શાલિ (ચોખા), જવ આદિની ઉત્પત્તિના કારણભૂત
બીજોનો પણ તેમાં સફલાવ હોય છે. તથા માન ઉન્માનનો પણ તેમાં સફ-
લાવ હોય છે. શેર, પાસેરી, મણીકું આદિ વડે તોળવા યોગ્ય ધાન્યોને મેય
પદાર્થો કહે છે અથવા માણા, પવાલા વગેરે વડે જેનું માપ કાઢી શકાય
છે એવાં પદાર્થોને પણ મેય પદાર્થ કહે છે. તોલા, વાલ, રતી આદિ રૂપ ઉન્મા-
નને વિષયભૂત પદાર્થોના પણ આ નિધિમાં સફલાવ રહે છે. અથવા તોલવાને
પાત્ર ગોળ, સાકર આદિ પદાર્થોના પણ તેમાં સફલાવ રહે છે, તોળી શકાય
એવાં પદાર્થોને ધરિમ કહે છે. આ કથનનું તત્પર્ય એ છે કે ગણિમ, ધરિમ
(ગણી શકાય અને જોખી શકાય) આદિ પદાર્થોના વજનનું અથવા માપનું જ્ઞાન
પાંડુક મહાનિધિ વડે થાય છે. તથા ગ્રીહી આદિ (ચોખા વગેરે) ધાન્યની અને
સસ્ય આદિની ઉત્પત્તિના કારણભૂત સસ્ય (ઘાસ) વિશેષોની ઉત્પત્તિ પાંડુક
મહાનિધિમાં કહી છે.

લકમહાનિધી પુરુષાણાં મહિલાનામશ્વાનાં હસ્તિનાં ચ યઃ સર્વ આભરણવિધિઃ
સ મણિતઃ ૩ ॥ ૪ ॥ ચતુર્થે સર્વરત્ને મહાનિધી ચક્રવર્તિનો યાનિ ચતુર્દશપ્રવ-
રાણિ-શ્રેષ્ઠાણિ રત્નાણિ ભવન્તિ તાનિ ઉત્પન્નંતે તાનિ કીદશાનિ ? इत्याह—
' एकेन्द्रियाणि ' इत्यादि तत्रैकेन्द्रियाणि-एकेन्द्रियजातीनि चक्र १-छत्र २-
दण्ड ३-खड्ग ४-धर्म ५-मणि ६-काकिणी ७ रूपाणिसप्त, तथा-पञ्चेन्द्रि-
याणि-सेनापति १-गाथापति २-वार्धकि ३-पुरोहित ४-स्त्री ५ अश्व ६-गज
७ रूपाणि सप्तैति संकलनया चतुर्दशरत्नानि ४ ॥ ५ ॥ पञ्चमे महा-

પિઙ્ગલ મહાનિધિકા અધિષ્ઠાયક પિઙ્ગલ દેવ હૈ, હસસે હસ મહાનિધિકા
નામ પિઙ્ગલ મહાનિધિ હૈ, હસ પિઙ્ગલ મહાનિધિમેં પુરુષોંકે મહિલાજનોંકે
ઘોટકોં (ઘોડો)કે એવં હાથિયોંકે આભરણોંકી જો સમસ્ત વિધિ હૈ,
વહ પ્રકટ કી ગઈ હૈ, ચતુર્થ જો સર્વરત્ન મહાનિધિ હૈ, હસકા અધિ-
ષ્ઠાયક દેવ સર્વરત્ન હૈ, હસ સમ્બન્ધસે હસ નિધિકા નામ સર્વરત્ન
મહાનિધિ હૈ, હસી તરહસે આગેકી ઓર ખી મહાનિધિકે સમ્બન્ધમેં
જાનનાં ચાહિયે. હસ સર્વરત્ન મહાનિધિમેં ચક્રવર્તીકે જો શ્રેષ્ઠ ૧૪
રત્ન હૈં-એકેન્દ્રિય જાતિ સમ્બન્ધી ૭ રત્ન ઓર પંચેન્દ્રિય જાતિ સમ્બન્ધી
૭ સાત રત્ન-વે ઉત્પન્ન હોતે હૈ-એકેન્દ્રિય જાતિ સંબંધી ૭ સાત રત્ન
હસ પ્રકારસે હૈં-ચક્ર ૧ છત્ર ૨ દણડ ૩, ટ્વડ્ગ ૪, ચર્મ ૫, મણિ ૬ ઓર
કાકિણી ૭ પંચેન્દ્રિય જાતિ સંબંધી ૭ રત્ન હસ પ્રકારસે હૈં-સેનાપતિ
૧, ગાથાપતિ ૬, વાર્ધકિ ૩, પુરોહિત ૪, સ્ત્રી ૫, અશ્વ ૬ ઓર ગજ ૭

“ સર્વઆભરણવિધિ ” પિંગલ મહાનિધિમાં પુરુષોનાં, સ્ત્રીઓનાં, અશ્વોનાં
અને હાથીઓનાં સમસ્ત આભરણો રહેલાં હોય છે.

ચોથા મહાનિધિનો અધિષ્ઠાતા દેવ સર્વરત્ન છે, અને તે નિધિમાં ચક્ર-
વર્તીના ૧૪ શ્રેષ્ઠ રત્નો ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તે નિધિનું નામ સર્વરત્ન મહા
નિધિ છે. એજ પ્રમાણે બાકીના પાંચ નિધિઓનાં નામો વિષે પણ સમજવું.
આ સર્વરત્ન મહાનિધિમાં ચક્રવર્તીના જે ૧૪ શ્રેષ્ઠ રત્નો ઉત્પન્ન થાય છે તેમાંના
૭ રત્નો એકેન્દ્રિય જાતિના અને ૭ રત્નો પંચેન્દ્રિય જાતિના હોય છે. એકેન્દ્રિય
જાતિનાં સાત રત્નો નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે-(૧) ચક્ર, (૨) છત્ર, (૩) દંડ, (૪)
ખડ્ગ, (૫) ચર્મ, (૬) મણિ અને (૭) કાકિણીરત્ન. પંચેન્દ્રિય જાતિના સાત
રત્નો આ પ્રમાણે કહ્યાં છે-(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાથાપતિ, (૩) વાર્ધકિ, (૪)
પુરોહિત, (૫) સ્ત્રી, (૬) અશ્વ અને (૭) ગજ.

નિધૌ-વસ્ત્રાણામ્ ઉત્પત્તિઃ-ઉત્પાદનમ્ તગ્ના-સર્વમક્તીનાં-સર્વાઃ-સર્વપ્રકારકાશ્ચ તા મક્તયઃ-વિચ્છિન્નતયઃ રચનાવિશેષાઃ શુરુમયૂરાદિચિત્રરૂપાશ્ચેતિ સર્વમક્તયસ્તાસાં નિષ્પત્તિઃ-ઉત્પત્તિશ્ચ । કીદશાનાં વસ્ત્રાણામિત્યાહ-રક્ષાણાં-રક્ષયુક્તાનાં, ધૌતાનાં-ક્ષાલિતાનાં વિશુદ્ધાનામિત્યર્થઃ, एषा सर्वा भणिता ५ ॥ ७ ॥

વળે કાલે મહાનિધૌ કાલજ્ઞાનં-શુભાશુભકાલબોધઃ, તસ્માત્ શુભાશુભકાલો જ્ઞાયતે इति भावः, કીદશં કાલજ્ઞાનમિત્યાહ-‘ મઘ્યપુરાણં ’ इत्यादि-त्रिषु वर्षेषु भव्यं भविष्यद्वर्षत्रयमाविशस्तुविषयकं, पुराणं-पुरातनम् अतीतवर्षत्रयगतपुरातनवस्तुविषयकं च शब्दाद् वर्तमानविषयकं च कालज्ञानं जायते । तथा शिल्पशतं-घट १ लोह २ चित्र ३ वस्त्र ४ नापितानां ५ पञ्चानां प्रत्येकं यानि शिल्पानि तानि विंशतिर्विंशतिरितिगुणनात् शिल्पसंख्या शतं तत् वर्तते, तथा-

પાંચમી જો મહાનિધિ મહાપદ્મ છે, उसमें रंगे हुए एवं घोड़े हुए समस्त प्रकारके वस्त्रोंकी एवं शुरु मयूर आदिके चित्र रूप सर्व प्रकारकी रचनाओंकी निष्यस्ति (उत्पत्ति) होती है ५, છઠા જો કાલ મહાનિધિ છે-उसमें शुभ अशुभ कालका ज्ञान होना है-अर्थात् उससे शुभ अशुभ कालका बोध होता है-५, भविष्यत् कालमें तीन वर्षकी आगे होनेवाली वस्तुका ज्ञान होता है, भूतकालमें तीन वर्ष पहिले हो गई वस्तुका ज्ञान होता है, और च शब्दसे वर्तमान सम्बन्धी वस्तुका ज्ञान होता है, यही बात “ भव्यपुराणं च त्रिषु वर्षेषु ” इन पदों द्वारा प्रकट की गई तथा-घट सम्बन्धी २० प्रकारके शिल्प-बनानेकी पद्धतियां, लोह सम्बन्धी २० प्रकारके शिल्प-चित्रके २० प्रकारके शिल्प, वस्त्रके २० प्रकारके शिल्प एवं नापिनोंकेनाईयोंके २० प्रकारके शिल्प, तथा-प्रजाके हितकर-निर्वा.

પાંચમો જે મહાપદ્મનિધિ હોય છે તેમાં રંગેલાં અને ઘોડેલાં સર્વ પ્રકારનાં વસ્ત્રોની અને મોર, પોપટ, આદિના ચિત્ર રૂપ સર્વ પ્રકારની રચનાઓની નિષ્પત્તિ (ઉત્પત્તિ) થાય છે.

છઠ્ઠો જે કાળનિધિ છે તેમાં શુભઅશુભ કાળને બોધ થાય છે. તેના દ્વારા ભવિષ્યમાં ત્રણ વર્ષ પછી બનનારા બનાવનું જ્ઞાન થાય છે, ભૂતકાળના ત્રણ વર્ષ દરમિયાન બનેલા બનાવો બાણી શકાય છે અને “ ચ ” પદ દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે કાલ મહાનિધિ દ્વારા વર્તમાન કાળની વસ્તુઓનો પણ બોધ થાય છે એજ વાત “ ભવ્યપુરાણં ચ ત્રિષુ વર્ષેષુ ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે, તથા ઘટ સંબંધી ૨૦ પ્રકારનાં શિલ્પ-માટીનાં વાસણો બનાવવાની ૨૦ પ્રકારની પદ્ધતિઓ, લોહસંબંધી ૨૦ પ્રકારનાં શિલ્પ, ચિત્રના ૨૦ પ્રકારનાં શિલ્પ, વસ્ત્રના ૨૦ પ્રકારનાં શિલ્પ,

કર્માગિ-કૃષિવાણિજ્યાદીનિ, એતાનિ પ્રજાયા હિતકાગણિ-નિર્વાહાશ્યુદયનિમિ-
ત્તત્વેન શ્રુતસમ્પાદકાનિ ત્રીણિ વસ્તૂનિ-કાલજ્ઞાનશિલ્પકર્મરૂપાણિ સન્તિ ૬ । ૭ ॥
સપ્તમે મહાકાલે નિધૌ લોહસ્ય=ત્રપુમીસકાદેર્ધાતોર્હૃત્યસ્ય-રજતસ્ય, સુવર્ણસ્ય,
મણિમુક્તાશિલાપ્રવાલાનાં-ચન્દ્રકાન્તાદિ મણિમુક્તાફલ-સ્ફટિકાદિશિલા-ચિદ્રુ-
માણાં ચ આકરાણાં=સ્વતીનામ્ ઉત્પત્તિર્ભવતિ ૭ । ૮ ॥ અષ્ટમે માળવકે મહા-
નિધૌ યોધાનાં-મટાનાં, તથા-આવરણાનામ્-કવચાનાં પ્રહરણાનાં-સ્વજ્ઞાદીનાં
ચોત્પત્તિરસ્તિ, તથા-યુદ્ધનીતિઃ-વ્યૂહરચનાદિરૂપા, દળનીતિઃ-અપરાધિનાં
દળકરણપ્રકારઃ ચ વર્તેત્ ૯ । ૯ । નવમે શક્ત્યમહાનિધૌ નાટ્યવિધિઃ-નૃત્યપ્રકારઃ,
તથા-નાટ્યવિધિઃ - ચરિતાનુસારિચેષ્ટાપ્રદર્શનવિધિઃ - અભિનયપ્રકારશ્ચ વર્તેત્,
તથા-ચતુર્વિધસ્ય-ગત્ર-પદ્ય-કથા-ગેયમેદાચ્ચતુષ્પ્રકારસ્ય કાવ્યસ્ય-યદ્વા-

હકે એવં ઉન્નતિકે સાધક ભૂત જો કૃષિ વાણિજ્ય આદિ કર્મ હૈં-વે સર્વ
કાલમહાનિધિમેં મૌજૂર રહતેહૈં ૭। સાતવાં જો મહાકાલ નિધિ હૈં ઉસમેં
લોહકી, ત્રપુ-રાંગેકી, સીસેકી इत्यादि धातुभोंकी-चांदीकी, सोनेकी
મણિ મુક્તા, શિલા પ્રવાલકી ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિયૌંકી મુક્તાફલૌંકી
સ્ફટિક આદિકૌંકી એવં મૂંગા આદિકૌંકી જ્વાનોકી ઉત્પત્તિ જોતી હૈં ૭।
આઠવાં જો માળવક મહાનિધિ હૈં-ઉસમેં મટૌંકી, કવચૌંકી એવં સ્વજ્ઞ
આદિ હથિયારૌંકી ઉત્પત્તિ જોતી હૈં, તથા ઉસમેં વ્યૂહ રચના રૂપ યુદ્ધ
નીતિકા તથા અપરાધિયૌંકો દળ દેનેકે પ્રકાર રૂપ દળ નીતિ કા જ્વાના
જોતી હૈં ૮। નૌવાં જો શક્ત્ય મહાનિધિ હૈં, ઉસમેં નાટ્યવિધિ જોતી હૈં,
નાટ્ય વિધિ જોતી હૈં, ચતુર્વિધ કાવ્યકી ઉત્પત્તિ જોતી હૈં, એવં સમસ્ત

નાઈઓના ૨૦ પ્રકારનાં શિલ્પ, તથા પ્રજાનું હિત સાધનારાં અને ઉન્નતિ સાધનારાં
જે કૃષિ, વાણિજ્ય આદિ કર્મો છે, તે સમજાના મહાનિધિમાં સંકલિત હોય છે.

સાતમા મહાકાળનિધિમાં લોહાની, તાંબાની, સીસાની, ચાલીની, સોનાની,
મણિની, મુક્તાફળની, શિલા પ્રવાલની, ચન્દ્રકાન્ત આદિ મણિઓની, મુક્તાફળોની,
સ્ફટિકાદિકોની, મૂંગા (રત્નવિશેષ) આદિકોની ખાણોની ઉત્પત્તિ થાય છે.

આઠમા-જે માળવક નામનો મહાનિધિ છે. તેમાં ભટ્ટોની, પ્રહરણની અને
ખડ્ગ આદિ રૂપ હથિયારોની ઉત્પત્તિ થાય છે. તથા તેમાં વ્યૂહરચના રૂપ યુદ્ધ
નીતિનો, અને જીનેશ્વરને દંડ દેવારૂપ દંડનીતિનો ખજાનો હોય છે.

નવમા જે શક્ત્ય મહાનિધિ છે તેમાં નાટ્યવિધિ થાય છે, કાવ્યની
ઉત્પત્તિ થાય છે, અને સમસ્ત ત્રુટિતાંગોની ઉત્પત્તિ થાય છે. નૃત્યના
પ્રકારનું નામ નાટ્યવિધિ છે. જે પાઠ લખવાનો હોય તેને અનુરૂપ અભિનય

ધર્માર્થકામમોક્ષલક્ષણા પુરુષાર્થપ્રતિવદ્ધસ્ય ગ્રન્થરૂપસ્ય, યદ્વા-સંસ્કૃતપ્રાકૃતાપ-
શ્ચંશ સંકીર્ણભાષાપ્રતિવદ્ધસ્ય ગ્રન્થરૂપસ્ય, યદ્વા-સમવિષમાર્દ્ધસમવૃત્તવદ્ધસ્ય ગદ્ય-
તયા ચ ગ્રન્થરૂપસ્ય ઉત્પત્તિઃ, તથા-સર્વેષાં ત્રુટિતાજ્ઞાનાં-મૃદંગાદિવાદ્યાનાં
ચોત્પત્તિર્મણિતા ૯ । ૧૦ ॥

કીટશા મહાનિધયઃ ? इत्याह—“ चक्रद्वपड्डाणा ” इत्यादि-चक्रोष्टप्रति-
ष्ठानाः-अष्टचक्रप्रतिष्ठानाः-अष्टसु चक्रेषु प्रतिष्ठानम्-अवस्थानं येषां ते
तथा, प्रत्येकं-निधिश्वक्रव्यूहाष्टकमध्यस्थित इति भावः, प्राकृतत्वादष्टशब्दस्य
परनिपातः, अष्टोत्सेधाः-अष्टौ योजनान्युत्सेधः-उच्छ्रायो येषां ते तथा=अष्ट

ત્રુટિતાજ્ઞોંકી ઉત્પત્તિ હોતી હૈ, નૃત્યકે પ્રકારકા નામ નાટ્યવિધિહૈ, તથા
ચરિતકે અનુસાર ચેષ્ટા પ્રદર્શન કરનેકી વિધિકા નામ નાટક વિધિ હૈ
હસકા દૂસરા નામ અભિનયકે પ્રકારકા દિલ્લાના ખી હૈ, ગદ્યપદ્ય કથા
અવં ગેયકે ભેદસે કાવ્ય ચાર પ્રકારકા હોતા હૈ, અથવા-ધર્મ-અર્થ-કામ
અવં મોક્ષ રૂપ ચતુર્વિધ પુરુષાર્થસે પ્રતિવદ્ધ ગ્રન્થરૂપ કાવ્ય હોતા હૈ,
અથવા-સંસ્કૃત પ્રાકૃત અપભ્રંશ અવં સંકીર્ણ ભાષાસે પ્રતિવદ્ધ ગ્રન્થરૂપ
કાવ્ય હોતા હૈ, અથવા-સમવૃત્ત વિષમવૃત્ત, અર્દ્ધ સમવૃત્ત અવં ગદ્યરૂપ
હોનેસે ગ્રન્થરૂપ કાવ્ય હોતા હૈ, હસકી ઉત્પત્તિ શબ્દ મહાનિધિસે હુઈ
હૈ, તથા-જિતને ખી મૃદંગ આદિ વાદ્ય હૈ, ઝનકી ખી ઉત્પત્તિ હસી શબ્દ
મહાનિધિસે હુઈ હૈ । ૧૦ ।

ये प्रत्येक महानिधियां आठ चक्रोंमें है, अवस्थान जिन्होंका ऐसी
होती है-चक्र व्यूहके अष्टकके मध्यमें स्थित होती हैं । आठ योजनकी
इनकी प्रत्येककी ऊंचाई होती है । और विस्तार इनका नौ योजनका

કરવો-ચેષ્ટાઓનું પ્રદર્શન કરવું-તેનું નામ નાટકવિધિ છે. ગદ્ય, પદ્ય, કથા અને
ગેયના ભેદથી કાવ્યના ચાર પ્રકાર પડે છે. અથવા ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ
રૂપ ચતુર્વિધ પુરુષાર્થથી પ્રતિબદ્ધ અર્થરૂપ કાવ્ય હોય છે. અથવા-સંસ્કૃત,
પ્રાકૃત, અપભ્રંશ અને સંકીર્ણ ભાષા વડે પ્રતિબદ્ધ અર્થરૂપ કાવ્ય હોય છે.
સમવૃત્ત, વિષમવૃત્ત, અર્દ્ધસમવૃત્ત અને ગદ્યરૂપ ચાર પ્રકારનું કાવ્ય હોય છે.
તેની ઉત્પત્તિ શાંખમહાનિધિમાં થઈ છે તથા મૃદંગ આદિ જોટલાં વાદ્યો છે
તેમની ઉત્પત્તિ યજ્ઞ આ શાંખમહાનિધિમાંથી થઈ હોય છે.

આ પ્રત્યેક મહાનિધિ ચક્રવ્યૂહના અષ્ટકની મધ્યમાં રહેલ હોય છે એટલે
કે મધ્યમાં પ્રત્યેક મહાનિધિ હોય છે અને તેની આસપાસ રહેલાં આઠ ચક્રો
તેની રક્ષમા કરતાં હોય છે. આ પ્રત્યેક મહાનિધિની જાંચાઈ આઠ આઠ યોજનની

યોજનોચ્છ્રિતા इत्यर्थः, त्रिष्वङ्गभे-विस्तारे नव योजनानि, द्वादशदीर्घाः-द्वादश-
योजनानि दीर्घाः-आयताः, मञ्जूषासंस्थिताः-मञ्जूषाकारस्थिता । एते नव
महानिधयः क्व भवन्तीत्याह-‘ जण्ढवीर्ह मुहे ’ इति जाह्नव्याः-गङ्गाया महानद्या
मुखे-उद्गमद्वारे भवन्तीति । ११ ।

पुनः कीदृशास्त इत्याह—“ वैरुलियमणिकवाडा ” इत्यादि, वैडूर्यमणि-
कपाटा-वैडूर्यमणिमयकपाटयुक्ताः, कनकमयाः-सुवर्णरचिततया सुवर्णमयाः,
विविधरत्नपरिपूर्णाः-कर्केतनमरकतवैडूर्यवज्रेन्द्रनीलादिनानारत्नसंभृताः, पुनः
शशिसूरचक्रलक्षणानुसमयुगवाहुबदनाः-शशिसूरचक्राण्येव लक्षणानि-चिह्नानि येषां
ते तथा=चन्द्रसूर्यचक्रचिह्नवन्तः, ते च ते अनुसमाः-अनुरूपाः अत्रिषमाश्च ते युग-
वाहुबदनाः-युगः-शकटाङ्गविशेषः ‘जूआ’ इति भाषामसिद्धः, तद्वाकारवृत्तत्वाद्
दीर्घत्वान्च बाह्वो-द्वारशाखावदनेषु मुखेषु-द्वारेषु येषां ते तथाभूताश्च ते तथा-
चक्रसूर्यचक्राङ्कितसमतल-युगवद्वृत्तदीर्घद्वारशाखायुक्तद्वार युक्ता इत्यर्थः । १२ ।

पूर्वमहानिधीनामधिष्ठातृत्वेन देवा सूचिताः, ते देवाः कीदृशाः ? इत्याह-
“ पलिभोवमठिइया ” इत्यादि,-तेषु-महानिधिषु खलु पर्योपमस्थितिकाः-
होता है, एवं १२ योजनकी ये दीर्घ होनी हैं, अर्थात् लम्बी होती हैं ।
तथा-इनका आकार मंजूषाके जैसा है, ये महानिधियां गङ्गा महानदीके
उद्गम द्वारमें होती हैं । ११ ।

ये नौ महानિધિયાં વૈડૂર્ય મણિયોંસે નિર્મિત હુએ કપાટોંસે યુક્ત
હોતી હૈ, સુવર્ણસે રચિત હોનેકે કારણ સુવર્ણમય હોતે હૈ । કર્કેતન,
મરકત, વૈડૂર્ય, વજ્ર, ઇન્દ્રનીલ આદિ નાના રત્નોંસે પરિપૂર્ણ હોતે હૈ ।
શશિ, સૂર્ય એવં ચક્રકે ચિહ્નોંસે યુક્ત હોતે હૈ, સમતલહોતે હૈ, એવં
વિષમતાસે રહિત હોતે હૈ, જુઆંકે જૈસે યે ગોલ એવં લમ્બે હોતે હૈ

હોય છે, પહોળાઈ નવ નવ યોજનની અને લંબાઈ બાર બાર યોજનની હોય છે.
તેમનો આકાર મંજૂષાના જેવો હોય છે. તે મહાનિધિઓ ગંગામહાનદીના
ઉદ્ગમ દ્વારોમાં હોય છે.

તે નવ મહાનિધિઓ વૈડૂર્યમણિઓમાંથી બનાવેલાં કપાટો (કમાડો) થી યુક્ત
હોય છે. અને કર્કેતન, મરકત, વૈડૂર્ય, વજ્ર, ઇન્દ્રનીલ આદિ વિવિધ રત્નોથી પરિ-
પૂર્ણ હોય છે તે મહાનિધિઓ શશિ, સૂર્ય અને ચક્રના ચિહ્નોથી યુક્ત હોય છે,
સમતલ હોય છે અને વિષમતાથી રહિત હોય છે. ધુંગરીના જેવા ગોળ અને
લાંબા હોય છે.

પલ્લોપમાવધિસ્થાયિનઃ, નિધિસદ્દનામાનઃ—નવમહાનિધિનામસદ્દશનામાનો દેવાઃ સન્તિ, યેષાં દેવાનાં તે—પૂર્વોક્તા મહાનિધયઃ અવાસાઃ—નિવાસસ્થાનાનિ સન્તિ । કથમ્ભૂતા અવાસાઃ ? इत्याह—अक्रेयाः—महामर्घ्यत्वात्केनापि क्रेतुमशक्याः, च= पुनः आधिपत्याः—देवाधित्ययुक्ताः सर्वदैव तदधिष्ठानात् देवाधीनत्वादिति । १३।

‘ एष ते ’ इत्यादि—एते—अनन्तरोक्तास्ते—प्रसिद्धा મહાનિધયઃ પ્રભૂતધન-રત્નસમૃદ્ધાઃ—વહુધનરત્નસમૂહેન સમૃદ્ધા=અતિ સમ્પન્નાઃ યે મહાનિધયઃ સર્વેષાં—ચક્રવર્તિનાં વશમ્—અધીનતામ્ ઉપગચ્છન્તિ પ્રાપ્નુવન્તિ इति । १४॥ सू० १४॥

પૂર્વે મહાનિધય ઉક્તાઃ તે ચ ચિત્તવિકાર દુર્ગતિ હેતવ इति શિક્ષિતપ્રસન્ના-ત્તાદૃશવિકૃતીર્નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—ણવ વિગર્હઓ પળ્લણ્ણાઓ, તં જહા—સ્વીરં ૧, દહિ ૨, ણવળીયં ૩, સપ્પિં ૪, તેલં, ૫, ગુલો ૬, મહું ૭, મજ્જં ૮ મંસં ૯ ॥ સૂ૦ ૧૫ ॥

...(1) ૧૨ इन महानिधियोंके अधिष्ठायक जो देवता हैं वे एक पल्लो-पमकी स्थितिवाले होते हैं और जैसा निधियोंका नाम है; वैसा ही नाम उन देवताओंका है, अतः ये महानिधियां अपने २ नामके जैसे नामवाले देवताओंके निवासस्थान रूपहैं । ये निवासस्थान अक्रेयहैं महा कीमतवाले होनेसे किसीकेभी द्वारा खरीदे नहीं जा सकतेहैं तथासदाही देवताओंसे अधिष्ठित होनेके कारण देवोंके आधिपत्यसे युक्त हैं । १३।

ये नौ महानिधियां—बहुत अधिक घना, एवं रत्नोंके समूहसे अति संपन्नहैं। ऐसी ये नौही महानिधियां चक्रवर्तियोंके आधीनता स्वीकार करते हैं—अर्थात् चक्रवर्तियोंको प्राप्त होते हैं ॥ सूत्र १४ ॥

આ મહાનિધિઓના અધિનાયક જે દેવો હોય છે. તેમની એક પલ્લો-પમની સ્થિતિ હોય છે. તે પ્રત્યેક નિધિના નામ જેવાં જ નામવાળા દેવ વડે તે પ્રત્યેક મહાનિધિ અધિષ્ઠિત છે એટલે કે તે મહાનિધિઓની જેવાં જ નામો વાળા દેવો ત્યાં નિવાસ કરે છે. આ મહાનિધિઓ અક્રેય છે એટલે કે તેઓ એટલા બધા કીમતિ છે કે તેમને ખરીદી લેવાનું કાર્ય કોઈ પણ માનવીથી શક્ય બને તેમ નથી. તે મહાનિધિઓ સદા દેવતાઓ વડે અધિષ્ઠિત હોવાને કારણે દેવોના આધિપત્યથી યુક્ત છે.

આ મહાનિધિઓ ઘણા જ ઘાડા છે અને રત્નોના સમૂહથી ચક્રવર્તીઓની અધીનતા સ્વીકારે છે એટલે કે તેમની ચક્રવર્તીઓને પ્રાપ્તિ થાય છે. ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

છાયા—નવવિકૃતયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—ક્ષીરં ૧, દધિ ૨, નવનીત ૩, સર્પિઃ ૪, તૈલં ૫, ગુહઃ ૬, મધુ ૭, મધ ૮, માંસમ્ ૯ ॥ સૂ ૧૫ ॥

ટીકા—“જવ વિગર્હઓ” ઇત્યાદિ—ગુગમમ્ નવરં—વિકૃતયઃ—વિકાર-કારિત્વાદભેદોપચારેણ ક્ષીરાદયો વિકૃતયઃ પ્રોક્તાઃ, તથા—ક્ષીરં—દુગ્ધં તત્ત્વ પશ્ચવિધં યથા—અજાદુગ્ધં ૧ મેષીદુગ્ધં ૨ ગોદુગ્ધં ૩, મહિષીદુગ્ધમ્ ૪ ઉષ્ટ્રી-દુગ્ધમ્ ૫ ઇતિ ભેદાત્ । તથા—દધિ ૨ નવનીતં ૩, સર્પિઃ—ઘૃતં ૪ એતત્ત્રિકં ચતુર્વિધમ્, અજામેષી ગોમહિષીનાં ચત્ત્વરણાં તત્સમ્ભવાત્, ઉષ્ટ્રીણાં તુ તદસમ્ભ-

યે કથિત મહાનિધિયાં ચિત્ત વિકારકી એવં દુર્ગતિકે કારણભૂત હોતી હૈં અતઃ વિકૃતિકે પ્રસજ્ઞકો લેકર અથ સૂત્રકાર હસ પ્રકારકી વિકૃતિયોંકા નિરૂપણ કરતે હૈં—“જવ વિગર્હઓ પળ્લન્તાઓ” ઇત્યાદિ ।

વિકૃતિયાં નૌ કહી ગર્હ હૈં—જૈસે—ક્ષીર (દૂધ) ૧, દધિ ૨, નવનીત ૩, સર્પિ ૪, તૈલ ૫, ગુહ ૬, મધુ ૭, મધ ૮ એવં માંસ ૯ ।

વિકારકારક હોનેસે અભેદકા ઉપચાર કરકે ક્ષીરાદિકોંકો વિકૃતિ રૂપસે ૯ કહા ગયા હૈં ઇનમં ક્ષીર રૂપ જો વિકૃતિ હૈં—વહ પાંચ પ્રકારકી કહી ગર્હ હૈં—જૈસે—અજા દુગ્ધ ૧, મેષી દુગ્ધ ૨, ગો દુગ્ધ ૩, મહિષી—મૈંસ દુગ્ધ ૪, ઓર ઉષ્ટ્ર દુગ્ધ ૫ તથા—દધિ રૂપ વિકૃતિ ૧ નવનીત (મલ્લન) રૂપ વિકૃતિ ૨ એવં સર્પિ-ઘૃત રૂપ વિકૃતિ ૩, યે તીનોં વિકૃતિયોં ચાર

ઉપયુક્ત મહાનિધિઓ ચિત્તવિકારમાં કારણભૂત બને છે અને દુર્ગતિની પ્રાપ્તિ કરાવે છે આ પ્રકારે અહીં વિકાર અથવા વિકૃતિનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થતો હોવાથી હવે સૂત્રકાર તે પ્રકારની વિકૃતિઓનું નિરૂપણ કરે છે—

“જવ વિગર્હઓ પળ્લન્તાઓ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૧૫)

નવ પ્રકારની વિકૃતિઓ કહી છે તે નવ પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) ક્ષીર, (૨) દધિ, (૩) નવનીત, (૪) સર્પિ (ઘી), (૫) તૈલ, (૬) ગોળ, (૭) મધ, (૮) મધ (સુરા) અને (૯) માંસ.

ઉપયુક્ત વસ્તુઓ વિકારકારક હોવાથી વિકારકારક વસ્તુમાં અભેદ માનીને ક્ષીરાદિ વસ્તુઓને પણ અહીં વિકૃતિરૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે.

ક્ષીર (દૂધ) રૂપ જે વિકૃતિ છે તેના પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) અજાદુગ્ધ—અકરીનું દૂધ, (૨) મેષીદુગ્ધ—ઘેટીનું દૂધ, (૩) ગોદુગ્ધ—ગાયનું દૂધ, (૪) મહિષીદુગ્ધ—ભેંસનું દૂધ અને (૫) ઉષ્ટ્રદુગ્ધ—સાંઘણીનું દૂધ.

દધિરૂપ (દહીંરૂપ) વિકૃતિ, નવનીત (માખણ) રૂપ વિકૃતિ, સર્પિરૂપ (ઘીરૂપ) વિકૃતિ, આ ત્રણે વિકૃતિઓના ચાર ચાર પ્રકાર કહ્યા છે, કારણ કે—અજા, મેષી, ગાય અને મહિષીના દૂધમાંથી દહીં, માખણ અને ઘી બને છે. તેથી

વાત, તથા-તૈલ-પ્રસિદ્ધં તદનેકવિધમ્ ૫, ગુહ:-દ્વિવિધ:-દ્રવપિષ્ઠભેદાત્ ૬, મધુ-ત્રિધા-માશ્લિક-કૌન્તિક-ભ્રામરભેદાત્ ૭, મધ્ય-મદિરા, તદ્વિવિધ-કાષ્ઠ-પિષ્ઠભેદાત્ ૮, માંસં ત્રિધા-જલચર-સ્થલચર-સ્થેચરભેદાત્ ૯। ઇતિ નવ વિકૃતયઃ ॥ સૂ૦ ૧૫ ॥

પૂર્વે વિકૃતય ઉક્તાઃ, તાશ્ચ શરીરસ્યોપચયહેતવ ઇતિ શરીરં કિયચ્છિદ્રં ભવતીત્યાહ—

મૂલમ્-ગવ સોયપરિસ્ત્રવા બોંદી પપ્પણ્ણા, તં જહા-દો સોત્તા ૨ દો જૈત્તા ૪ દો ઘાળા ૬ સુહં ૭ પોસે ૮ પાઝ ૯ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

છાયા—નવસ્રોતઃ પરિસ્ત્રવા બોન્દી પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વથા-દ્વે શ્રોત્રે ૨ દ્વે નેત્રે ૪ દ્વે વ્રાણે ૬ મુખં ૭ પોસઃ ૮ પાયુઃ ૯ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

પ્રકારકી કહી ગઈ હૈં—કર્ણોંકિ યે ચારોંહી વિકૃતિયાં અજા, મેહી, ગાય એવં મહિષીકી હોતી હૈ । ઉષ્ટ્રીકે દુગ્ધકી યે દધિ નવનીત એવં સર્પિ યે ત્રીન વિકૃતિયાં નહીં હોતી હૈં । તૈલ રૂપ વિકૃતિ અનેક પ્રકારકી હોતી હૈ, ગુહરૂપ વિકૃતિ દ્રવ એવં પિંડકે ભેદસે દો પ્રકારકી હોતી હૈ મધુરૂપ વિકૃતિ માશ્લિક કૌન્તિક એવં ભ્રામરકે ભેદસે ત્રીન પ્રકારકી હોતી હૈ, કાષ્ઠ ઓર પિષ્ઠકે ભેદસે મધ્ય-મદિરારૂપ વિકૃતિ દો પ્રકારકી હોતી હૈ, માંસરૂપ વિકૃતિ-જલચર સ્થલચર ઓર સ્થેચરકે ભેદસે ત્રીન પ્રકારકી હોતી હૈ હસ પ્રકારસે યે નૌ વિકૃતિયાં હૈં ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

તે ત્રણે વિકૃતિઓના ચાર ચાર પ્રકાર કહ્યા છે. સાંઢણીના દૂધમાંથી દહીં, માખણ અને ઘી બનતા નથી, તે કારણે આ ત્રણે વિકૃતિઓના પાંચ પ્રકારને બદલે ચાર જ પ્રકાર પડે છે.

તેજસ્વ વિકૃતિના અનેક પ્રકાર પડે છે કારણ કે તેલ, મગફળી આદિ અનેક પદાર્થોમાંથી તેલ મળે છે. ગોળરૂપ વિકૃતિના દ્રવ (પ્રવાહી) અને પિંડના ભેદથી બે પ્રકાર પડે છે મધુ (મધ) રૂપ વિકૃતિના ત્રીણે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર પડે છે—(૧) માશ્લિક (મધમાંથીઓળે બનાવેલું મધ), (૨) કોતુક(....) ? અને ત્રીલું ભ્રામર મધ (ભ્રમરીઓળે બનાવેલું મધ). કાષ્ઠ અને પિષ્ઠના ભેદથી મધ્ય (મદિરા) રૂપ વિકૃતિ બે પ્રકારની કહી છે. માંસરૂપ વિકૃતિ જલ-ચર, સ્થલચર અને જેચરના ભેદથી ત્રણ પ્રકારની કહી છે. આ પ્રકારની આ નવ વિકૃતિઓ છે. ॥ સૂ ૧૫ ॥

ઉપર્યુક્ત વિકૃતિઓ શરીરના ઉપચયમાં કારણભૂત બને છે, શરીરમાં

ટીકા—“ જવસોયપરિસ્સવા ” इत्यादि—बोन्दी-शरीरं, तदत्रौदारिक-
मेव ग्राह्यम्, सा च बोन्दी नवस्रोतः परिस्रवा-नवभिः-अनुपदं वक्ष्यमाणैः
स्रोतोभिः=छिद्रैः परिस्रवति-क्षरतीति नवस्रोतः परिस्रवा प्रज्ञ १, तानि नव
स्रोतांसि कानि सन्तीत्याह—‘ तं जहे ’ त्यादि, तद्यथा-द्वे श्रोत्रे-श्रवणेन्द्रिये २,
द्वे नेत्रे ४, द्वे घ्राणे-नासिके ६ मुखं ७ पोसः-भूत्रेन्द्रियम्,= पायुः-गुदम् ९,
इति नवस्रोतांसि ॥ सू० १६ ॥

पूर्वं नवच्छिद्रं शरीरमुक्तं, सम्प्रति तत्साध्यपुण्यभेदानाह—

મૂલમ્—જવવિહે પુણ્ણે પળ્ણત્તે, તં જહા-અન્નપુણ્ણે ૧,
પાણપુણ્ણે ૨, વત્થપુણ્ણે ૩, લેણપુણ્ણે ૪, સ્વયણપુણ્ણે ૫, મળ-
પુણ્ણે ૬, વહ્ણપુણ્ણે ૭, કાયપુણ્ણે ૮ નમોઽકારપુણ્ણે ૯ । સૂ ૦ ૧૭ ॥

છાયા—નવવિધ પુણ્યં પ્રજ્ઞસમ્, તદ્યથા-અન્નપુણ્યં ૧, પાનપુણ્યં ૨, વસ્ત્ર-
પુણ્યં ૩, લયનપુણ્યં ૪ શયનપુણ્યં ૫ મનઃપુણ્યં ૬, વાક્યપુણ્યં ૭, કાયપુણ્યં ૮
નમસ્કારપુણ્યમ્ ૯ ॥ સૂ ૦ ૧૭ ॥

ये कही गई विकृतियां शरीरके उपचयमें कारणरूप होती हैं—
सूत्रकार अब यह प्रकट करते हैं कि शरीरमें कितने छिद्र हैं—

“ જવસોયપરિસ્સવા ” इत्यादि ॥ सूत्र १६ ॥

ટીકાર્થ—યહ ઔદારિક શરીર નો છિદ્રોવાલા કહા ગયા હૈ, “ બોંદી ,’
નામ શરીરકા હૈ શરીરસે યહા ઔદારિકશરીર ગૃહીત હુઆ હૈ, સ્રોત
શબ્દકા અર્થ છિદ્ર હૈ, इन नौ छिद्रोंसे यह औदारिकशरीर बहता रहता
है वे नौ छिद्र इस प्रकारसे हैं—दो श्रोत्र, दो नेत्र, दो घ्राण-नासिका
मुख, भूत्रेन्द्रिय और गुदा इस प्रकारसे ये नौ द्वार हैं । सू० १६ ।

કેટલાંક છિદ્રો હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર તે છિદ્રોની સંખ્યા પ્રકટ કરે છે—

“ જવ સોય પારિસ્સવા ” इत्यादि—(सू. १६)

ટીકાર્થ—આ ઔદારિક શરીર નવ છિદ્રોવાળું કહ્યું છે. “બોંદી” આ પદ શરીરના
અર્થમાં વપરાયું છે અહીં શરીર પદ વડે ઔદારિક શરીરને જ અહણ કરવામાં
આવ્યું છે. ‘સ્રોત’ પદ છિદ્રના અર્થમાં વપરાયું છે ઔદારિક શરીરના નવ
છિદ્ર રૂપ નવ દ્વાર નીચે પ્રમાણે છે—બે શ્રોત્ર (કાન), બે નેત્ર, બે ઘ્રાણ
(નસઠેરાં), મુખ, ભૂત્રેન્દ્રિય અને ગુદા. ॥ સૂત્ર ૧૬ ॥

ટીકા—‘ળવવિહે પુણે’ ઇત્યાદિ—પુનાતિ-પવિત્રીકરોત્યાત્માનમિતિ પુણ્યં-શુભકર્મ નવવિધં મજ્જતમ્ , તથા-અન્નપુણ્યં-સુપાત્રાદન્નદાનજન્યં પુણ્યં-તીર્થંકરનામાદિપુણ્યપ્રકૃતિબન્ધરૂપમ્ ૧, એવં પાનપુણ્યં પાનપાનજનિતં પુણ્યં ૨, તથા-વસ્ત્રપુણ્ય-વસ્ત્રદાનજન્યપુણ્યમ્ ૩ તથા-લયનપુણ્યં-વાસાર્થંસ્થાનદાનજનિત-

હસ પ્રકારસે છિદ્રોવાલે શરીરકો કહકર અવ સૂત્રકાર તત્સાધ્ય પુણ્યકે ભેદોંકા કથન કરતે હૈ—“ ળવ વિહે પુણે પઢગત્તે ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-પુણ્ય નૌ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે-અન્ન પુણ્ય ૧, પાન પુણ્ય ૨ વસ્ત્ર પુણ્ય ૩ લયન પુણ્ય ૪, શયન પુણ્ય ૫, મનઃ પુણ્ય ૬, વાક્ (વચન) પુણ્ય ૬ કાય પુણ્ય ૭ ઓર નમસ્કાર પુણ્ય

જો આત્માકો પવિત્ર કરતા હૈ વહ પુણ્ય હૈ, એસા વહ પુણ્ય શુભ કર્મરૂપ હોતા હૈ, વહ શુભ કર્મરૂપ પુણ્ય પૂર્વોક્ત રૂપસે નૌ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, ડસકા તાત્પર્ય એસા હૈ-સુપાત્ર આદિકોંકો અન્નકા દાન દેના યહ અન્ન પુણ્ય હૈ, કયોંકિ સુપાત્ર આદિકોંકે લિયે આહાર દાન દેનેસે તીર્થંકર નામકર્મ આદિ પુણ્ય પ્રકૃતિયોંત્તા બન્ધ હોના હૈ, ઇસી પ્રકારસે પાનદાન પેય યોગ્ય વસ્તુકે દાન દેનેસે જો પુણ્ય પ્રાપ્ત હોના હૈ, વહ પાન પુણ્ય હૈ, વસ્ત્રોંકે દાન દેનેસે જો પુણ્ય હોતા હૈ વહ વસ્ત્રપુણ્ય હૈ, નિવાસકે લિયે સ્થાનકે દાન દેનેસે જો પુણ્ય હોતા હૈ વહ લયનપુણ્ય

આ પ્રકારે છિદ્રોવાળો શરીરનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર તે શરીર દ્વારા સાધ્ય એવાં પુણ્યના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ ળવવિહે પુણે પઢગત્તે ” ઇત્યાદિ....(સૂ. ૧૭)

ટીકાર્થ-પુણ્યના નીચે પ્રમાણે નવ પ્રકારે કહ્યા છે—(૧) અન્નપુણ્ય (૨) પાનપુણ્ય, (૩) વસ્ત્રપુણ્ય, (૪) લયનપુણ્ય, (૬) મનઃપુણ્ય. (૭) વાક્પુણ્ય, (૮) કાયપુણ્ય અને (૯) નમસ્કારપુણ્ય

જે આત્માને પવિત્ર કરે છે તેનું નામ પુણ્ય છે. એવું તે પુણ્ય શુભકર્મ રૂપ હોય છે. તે શુભકર્મ રૂપ પુણ્યના અન્નપૂર્ણ આદિ નવ પ્રકાર પડે છે. સુપાત્ર આદિકોને અન્નનું દાન દેવું તેનું નામ અન્નપુણ્ય છે, કારણ કે સુપાત્રને અન્નદાન દેવાથી દાતા તીર્થંકર નામકર્મ આદિ પુણ્યપ્રકૃતિઓના બન્ધ કરે છે. પાણી, દૂધ આદિ પેય પદાર્થોનું સુપાત્રને દાન દેવાથી જે પુણ્યની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પુણ્યને પાનપુણ્ય કહે છે.

વસ્ત્રોનું દાન કરવાથી જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે, તેને વસ્ત્રપુણ્ય કહે છે. નિવાસ કરવાને માટે સ્થાનનું દાન કરવાથી જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેનું

પુણ્યમ્ ૪, તથા-શયનપુણ્યં-સંસ્તારકાદિદાનજન્યપુણ્યમ્ ૫ તથા મનઃપુણ્યં-મનસા સદ્ભાવનાભાવિતેન જાયમાનં પુણ્યમ્ ૬, તથા-વાકપુણ્યં-વાચા-સ્વાધ્યાયાદિ પ્રવળયા જાયમાનં પુણ્યમ્ ૭ કાયપુણ્યમ્-કાયેન-શરીરેણ સદેવસાધુગુરુ-શુશ્રૂષાદિ તત્પરેણ જાયમાનં પુણ્યમ્ ૮, તથા-નમસ્કારપુણ્યં-નમસ્કારેણ સદેવગુરુ-સાધુપ્રશ્રુતિપુરુષાણાં પ્રણામેન જાયમાનં પુણ્યમ્ ૯ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

પૂર્વ પુણ્યભેદા ઉક્તાઃ, સમ્પ્રતિ તદ્વિપરીત પાપહેતુનાહ—

મૂલમ્—જાવ પાવસ્માયત્તળા પળજ્ઞા, તં જહા-પાણાઙ્વાણ
૧' મુસાવાણ ૨, જાવ પરિગ્રહે ૫, કોહે ૬, માણે ૭ માયા ૮
લોભે ૯ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

છાયા—નવ પાપસ્થાડયતનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્વથા-પ્રાણાતિપાતઃ ૧, મૃષા-વાદઃ ૨, યાવત્ પરિગ્રહઃ ૫, ક્રોધઃ ૬, માનઃ ૭, માયા ૮ લોભઃ ૯ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

હૈ, સંસ્તારક આદિકે દાન દેનેસે જો પુણ્ય હોતા હૈ, વહ શયન પુણ્ય હૈ, સદ્ભાવનાવાલે મનસે જો પુણ્ય હોતા હૈ, વહ મનઃ પુણ્ય હૈ, સ્વાધ્યાય આદિકે લવલીન હુઈ વાણીસે જો પુણ્ય ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ વાક્ (વચન) પુણ્ય હૈ, તથા સુદેવ, સુધર્મ, એવં સુસાધુકી સેવા આદિમેં તત્પર હુએ શરીરસે જો પુણ્ય ઉત્પન્ન હોતાહૈ વહ કાયપુણ્ય હૈ, તથા સુદેવ એવં સુસાધુ આદિકો નમસ્કાર કરનેસે જો પુણ્ય ઉત્પન્ન હોતા હૈ, વહ નમસ્કાર પુણ્ય હૈ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

હસ પ્રકારસે પુણ્ય ભેદોંકા કથન કર અથ સૂત્રકાર હસ પુણ્યસે વિપરીત પાપકે કારણોંકા કથન કરતે હૈ—

નામ શયનપુણ્ય છે. સંસ્તારક (બિછાનું) આદિનું દાન દેવાથી જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ શયનપુણ્ય છે. સદ્ભાવના ભાવનાના મન વડે જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ મનઃપુણ્ય છે. સ્વાધ્યાય આદિમાં લીન થયેલી વાણી વડે જે પુણ્ય થાય છે તેનું નામ વાકપુણ્ય છે, સુદેવ સુધર્મ અને સુસાધુની સેવા કરવાથી જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ કાયપુણ્ય છે. તથા સુદેવ અને સુસાધુને નમસ્કાર કરવાથી જે પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ નમસ્કાર પુણ્ય છે. ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

આ પ્રકારે પુણ્યના ભેદોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર આ પુણ્ય કરતાં વિપરીત એવાં પાપનાં કારણોનું કથન કરે છે—

ટીકા—‘જવ પાવસે’ ઇત્યાદિ—પાપસ્ય-અશુભપ્રકૃતિરૂપસ્ય આયત-
નાનિ વન્ધકારણાનિ નવ પ્રજ્ઞતાનિ તથા-પ્રાણાતિપાતઃ-પ્રાણિર્હિંસા ૧, મૃષા-
વાદઃ-મિથ્યાવચનમ્ ૨ ‘યાવત્’-પદેન ‘અદત્તાઽઽદાનમ્ મૈથુનમ્’ ઇત્યેતદ્વયં
ગ્રાહ્યમ્ ૪, પરિગ્રહ. ૫, ક્રોધઃ ૬, માનઃ ૭, માયા ૮, લોભશ્ચ ૯ તિ નવ પાપ-
કારણાનિ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

પૂર્વે પાપકારણાન્યુક્તાનિ, તદધિકારાત્ પાપશ્રુતપ્રસજ્ઞાનાહ—

મૂલ્ય-જવવિદે પાવસ્સુયપ્પસંગે પળ્લક્કે, તં જહા-ઉપાણ
૧ નિમિત્તે ૨ મંતે ૩ આદિક્કલ્લ ૪ તિગિચ્છલ્લ ૫, ૧ કલ્લા ૬,
આવરણે ૭, ઽજ્ઞાણે ૮ મિચ્છાપાવયણેતિ ૯ ય ॥ સૂ. ૧૯ ॥

છાયા—નવવિધઃ પાપશ્રુતપ્રસજ્ઞઃ, પ્રજ્ઞતઃ, તથા-ઉત્પાતઃ ૧, નિમિત્તં ૨,
મન્ત્રઃ ૩, આલ્યાયકઃ ૪, ચૈકિત્સિકમ્ ૫, કલ્લા ૭, આવરણમ્ ૭, અજ્ઞાનં ૮,
મિથ્યાવચનમ્ ૯ ઇતિ ચ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

“જવ પાવસ્સાયત્તણા પળ્લક્કા” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

ટીકાર્થ-અશુભ પ્રકૃતિરૂપ પાપકે વન્ધ કારણ નો કહે ગયેહૈં-જેસે-
પ્રાણાતિપાત ૧, મૃષાવાદ ૨, યાવત્ પરિગ્રહ ૫ ક્રોધ ૬, માન ૭, માયા ૮
એવંલોભ ૯ પ્રાણિયોંકી હિંસા કરનેકા નામ પ્રાણાતિપાતહૈ, મિથ્યા વચ-
નકા નામ મૃષાવાદ હૈ, યહાં યાવત્પદસે “અદત્તાદાન, મૈથુન” इन दो
पदोंका संग्रह हुआ है, याकीके पापकारणोंका स्वरूप सुगमहै ॥सू. १८॥

પાપ કારણોંકો કહકર અવ સૂત્રકાર इनके सम्बन्धसे पापश्रुत
प्रसज्ज्ञोंका कथन करते हैं—

“જવવિદે પાવસ્સુયપ્પસંગે પળ્લક્કે” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

“જવ પાવસ્સાયત્તણા પળ્લક્કા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૮)

ટીકાર્થ-અશુભ પ્રકૃતિ રૂપ પાપનો બન્ધ નીચેનાં નવ કારણો વડે બંધાય છે—(૧)
પ્રાણાતિપાત, (૨) મૃષાવાદ, (૩) અદત્તાદાન, (૪) મૈથુન, (૫) પરિગ્રહ, (૬)
ક્રોધ, (૭) માન, (૮) માયા અને (૯) લોભ. પ્રાણીઓની હિંસા કરવી તેનું
નામ પ્રાણાતિપાત છે. અસત્ય વચન બોલવું તેનું નામ મૃષાવાદ છે બાકીનાં
સાતે પદોનો અર્થ સુગમ છે. આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે નવ પાપકારણોનું નિરૂ-
પણ કર્યું છે. ॥ સૂ. ૧૮ ॥

પાપકારણોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર પાપશ્રુત પ્રસંગોનું કથન કરે છે—

“જવ વિદે પાવસ્સુયપ્પસંગે પળ્લક્કે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૯)

ટીકા—‘ નવવિદે પાપસુયે ’ इत्यादि—पापश्रुतप्रसङ्गः—पापस्य जनकं श्रुतं पापश्रुतं, तस्य प्रसङ्गः—आसेवनम्, यद्वा—विस्तारः—सूत्रवृत्तिवार्तिकरूपः पापश्रुतप्रसङ्गः नवविधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—उत्पातः—उत्पन्नमुत्पातः—प्रकृतिविकारः—सहजरुधिरवृष्ट्यादिः, तत्प्रतिपादनपरं श्रुतमपि उपचारादुत्पातशब्दवाच्यम् १ तथा—निमित्तं—अतीतवर्तमानभविष्यत्परिज्ञानोपायभूतशास्त्रम् २ तथा—मन्त्रः—मन्त्रशास्त्रं—जीवोद्धरणगारुडादि ३, तथा—आख्यायकः—मातङ्गविद्या, यदुपदेशाज्जना अतीतादिवृत्तान्तं कथयन्ति ४। तथा—चैकित्सिकं चिकित्सापरम्—आयुर्वेदशास्त्रम्

पाप શ્રુતકા પ્રસંગ-પાપકે જનક શ્રુતકા સેવન અથવા-પાપ શ્રુતકા સૂત્રવૃત્તિ એવં વાર્તિકરૂપ પ્રસંગ નૌ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે-ઉત્પાત ૧, નિમિત્ત ૨, મન્ત્ર ૩, આખ્યાયક ૪, ચૈકિત્સિક ૫, કલા ૬, આવરણ ૭, અજ્ઞાન ૮ ઓર મિથ્યા પ્રવચન ૯ હનમેં પ્રકૃતિકે વિકારકા નામ ઉત્પાત હૈ, ઓર વહ યહાં સ્વભાવતઃ રુધિરકી વૃષ્ટ્યાદિ રૂપ સમજના ચાહિયે હસકા પ્રતિપાદક જો શ્રુત હૈ, વહ બી ઉપચારસે ઉત્પાત શબ્દકા વાચ્ય હુઆ હૈ અતીત, વર્તમાન એવં ભવિષ્યત્કાલકે જ્ઞાન કરાનેમેં ઉપાય ભૂત જો શ્રુત હૈ વહ નિમિત્ત હૈ મન્ત્રશાસ્ત્ર-જીવોદ્ધારણ ગારુડ આદિ મન્ત્ર હૈ-માતઙ્ગવિદ્યા જિસકે ઉપદેશસે મનુષ્ય અતીતકાલ આદિકે વૃત્તાન્તકો કહતે હૈં, વહ આખ્યાયક હૈ ૪ આયુર્વેદ શાસ્ત્રકા નામ ચૈકિ-

પાપશ્રુતના પ્રસંગ-પાપના જનક શ્રુતનું સેવન-અથવા પાપશ્રુતના સૂત્ર-વૃત્તિ અને વાર્તિક રૂપ પ્રસંગ નવ પ્રકારના કહ્યાં છે. તે નવ પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) ઉત્પાત, (૨) નિમિત્ત, (૩) મન્ત્ર, (૪) આખ્યાયક, (૫) ચૈકિત્સિક, (૬) કલા, (૭) અજ્ઞાન અને (૮) મિથ્યાપ્રવચન

ઉત્પાત-પ્રકૃતિમાં થતાં વિકારોનું નામ ઉત્પાત છે અહીં સામાન્ય રીતે રુધિરવૃષ્ટિ આદિ રૂપ વિકારોને ઉત્પાત સમજવા બોધાયે. આ પ્રકારના ઉત્પાતોનું પ્રતિપાદન કરનાર જે શ્રુત છે તેને અહીં ઉત્પાત નામ આપવામાં આવેલ છે.

નિમિત્ત-ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યકાળનું જ્ઞાન કરાવવામાં ઉપયોગી અર્થ પડે એવું જે શ્રુત છે તેનું નામ નિમિત્તશાસ્ત્ર છે

મન્ત્રશાસ્ત્ર-જીવોદ્ધરણ, ગારુડ આદિ મન્ત્રો જે શાસ્ત્રમાં આપવામાં આવ્યા છે, તે શાસ્ત્રનું નામ મન્ત્રશાસ્ત્ર છે

આખ્યાયક-માતંગવિદ્યા આદિ ભૂતકાળ આદિનાં જનાવોને કહેનારી વિદ્યા જે ગ્રંથો દ્વારા શીખી શકાય છે તે ગ્રંથોને આખ્યાયક કહે છે.

ચૈકિત્સિક-આયુર્વેદશાસ્ત્રને ચૈકિત્સિક કહે છે.

૫, તથા-કલા-લેખગણિતપ્રમુખા શકુનસ્તપર્યન્તા દાસપ્રતિવિધા, તત્પ્રતિપાદન-
પાં શ્રુતમપિ કલાષ્ઢવાચ્યં ભવતિ ૭, તથા-આવરણમ્-આગ્રિયતે-આન્છાચ્ચેતે
ગગનમનેતેત્યાવરણં-ભવનપ્રાસાદનગરાદિ. તન્નિર્માણમૂચકં શ્રુતમપિ તથા, વારતું
વિદ્યેત્યર્થઃ ૭, તથા-અજ્ઞાનમ્-અજ્ઞાનમવોધઃ-તજ્જનકં શ્રુતં તથા, લૌકિકશાસ્ત્ર-
ભારત-કાવ્ય નાટકાદિરૂપમ્ ૮, તથા-મિથ્યાપ્રવચનં-બૌદ્ધાદિપરતીર્થિકશાસ-
નમ્ ૨૧. ઇત્યેવં નવ શાસ્ત્રાણિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

ત્તિકં હૈ ૫, કલાઓકા-લેખગણિત આદિસે લેકર શકુનસ્ત તકકી
૭૨ કલાઓકા પ્રતિપાદક જો શાસ્ત્ર હૈ, વહ કલા હૈ, શાસ્ત્રકો જો
કલા કહા ગયા હૈ, વહ ઉનકા પ્રતિપાદક હોનેસે ઉપચારસે કલા રૂપ
કહા હૈં. ગગન જિસકે દ્વારા આન્છાદિત ક્રિયા જાતા હૈ, વહ આવરણ
હૈ-એસા વહ આવરણ ભવન, પ્રાસાદ નગરાદિ રૂપ યહાં લિયા ગયા હૈં,
હન ભવન ઓદિકોકે નિર્માણકા સૂચક જો શ્રુત હૈં, વહ શ્રુત મી યહાં
આવરણ શબ્દકા વાચ્ય હુઆ હૈ. યહ આવરણ શ્રુત વાસ્તુવિદ્યારૂપ
પડતા હૈ. અજ્ઞાન નામ અવોધકા હૈ-જિસસે સમ્યગ્જ્ઞાન નહીં હોતા હૈ,
એસે જો લૌકિક શાસ્ત્રરૂપ ભારત કાવ્ય નાટક આદિ હૈ વે સબ યહાં
અજ્ઞાનસે લિયે ગયે હૈં. બૌદ્ધ આદિ પરતીર્થિક જનોકા જો શાસન
હૈ વહ મિથ્યા પ્રવચન હૈ, હસ પ્રકારસે યે નૌ પાપશ્રુત હૈં ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

કલા-લેખગણિતથી લઈને શકુનસ્ત પર્યન્તની ૭૨ કલાઓનું પ્રતિ-
પાદન કરનાર જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ કલા છે. અહીં શાસ્ત્રને કલા કહેવાનું
કારણ એ છે કે તે શાસ્ત્રમાં કલાઓનું પ્રતિપાદન કરાયું છે. કલા અને કલાનું
પ્રતિપાદન કરનાર શાસ્ત્રમાં અલેદ માનીને અહીં શાસ્ત્રને પણ કલા રૂપે પ્રકટ
કરવામાં આવ્યું છે.

આવરણ-જેના દ્વારા ગગનને આન્છાદિત કરાય છે, એવી વસ્તુઓને
આવરણ કહે છે, અહીં ભવન, પ્રાસાદ અને નગરાદિરૂપ આવરણ ગ્રહણ
કરવાના છે તે ભવન આદિકોના નિર્માણનું સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તે શાસ્ત્રને પણ
અહીં ‘આવરણ’ કહેવામાં આવ્યું છે. તેને વાસ્તુ વિદ્યારૂપ ગણી શકાય.

અજ્ઞાન-જેના વાંચનથી સમ્યગ્જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થતી નથી એવાં લૌકિકશાસ્ત્ર
રૂપ મહાભારત, કાવ્ય, નાટક આદિને અજ્ઞાનશ્રુત રૂપ સમજવા.

મિથ્યાપ્રવચન-બૌદ્ધ આદિને પરતીર્થિક જનોના જે ધર્મશ્રન્થો છે તેમને
મિથ્યાપ્રવચન કહે છે આ પ્રકારના નવ પાપશ્રુત છે. ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

પૂર્વમુત્પાતાદિ શ્રુતાન્યુક્તાનિ, તદ્વિદો નિપુણા ભવન્તીતિ નિપુણપુરુષાનાહ—

મૂલમ્—નવ જોડણિયા વત્થૂ પળણત્તા, તં જહા-સંઘાણે ૧, નિમિત્તે ૨, કાઙ્કય ૩, પોરાણે ૪, પારિહસ્થિય ૫, પરપંડિય ૬, વાઙ્કય ૭, ભૂઙ્કમ્મે ૮, તિગિચ્છિય ૯ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

છાયા—નવ નૈપુણિકાનિ વસ્તૂનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—સંખ્યાનં ૧, નિમિત્તં ૨, કાયિકં ૩, પુરાણઃ ૪, પારિહસ્તિકઃ ૫, પરપણ્ડિતઃ ૬, વાદિકઃ ૭, ભૂતિકર્મ ૮, ચિકિત્સકઃ ૯ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘ નવ જોડણિયા ’ इत्यादि—नैपुणिकानि—निपुणं—सूक्ष्मं ज्ञानं तेन चरन्ति नैपुणिकानि—सूक्ष्मज्ञानवासीणि, यद्वा—निपुणानि—पटूनि तान्येव नैपुणिकानि वस्तूनि—आचार्यादिपुरुषरूपाणि तानि नव प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—संख्यानं—गणितं तज्ज्ञानवान् पुरोऽपि संख्यानपदवाच्यः यद्वा—‘ संघाणे ’ इत्यस्य ‘ संख्याने. ’

ઉત્પાતાદિ આદિ શ્રુતોંકા કથન કર અથ સૂત્રકાર અનેક જાનનેવાલે નિપુણ હોતેહૈં, હસ વાતકો લેકર નિપુણ પુરુષોંકે સ્વરૂપકા કથન કરતેહૈં

“ નવ જોડણિયા વત્થૂ પળણત્તા ” इत्यादि ॥ सूत्र २० ॥

ટીકાર્થ—સૂક્ષ્મ જ્ઞાનસે જો યુક્ત હોતે હૈં વે અથવા જો ચતુર હોતે હૈં વે નૈપુણિક હૈં એસે વે નૈપુણિક આચાર્ય આદિ પુરુષ રૂપ યહાં જાનના ચાહિયે ચે નૈપુણિક નૌ કહે ગયે હૈં—જૈસે—સંઘાત ૧, નિમિત્ત ૨ કાયિક ૩ પુરાણ ૪ પારિહસ્તિક ૫ પરપણ્ડિત ૬ વાદિક ૭ ભૂતિકર્મ ૮ ઔર ચિકિત્સક ૯ ।

સંખ્યાન શબ્દકા અર્થ ગણિત હૈ, હમ ગણિતકા જ્ઞાનશાલી જો પુરુષ હૈ વહ સંખ્યાન હૈ અથવા—“ સંઘાણે ” કી સંસ્કૃત છાયા “ સં-

ઉત્પાત આદિ શ્રુતોનુ' નિરૂપણ કરવામાં આન્યુ' તે શ્રુતોને બાણુનાર નિપુણ હોય છે તેથી હવે સૂત્રકાર નિપુણ પુરુષોના સ્વરૂપનુ' કથન કરે છે.

“ નવ જોડણિયા વત્થૂ પળણત્તા ” इत्यादि... (સૂ. ૨૦)

ટીકાર્થ—જે પુરુષે સૂક્ષ્મજ્ઞાનથી યુક્ત હોય છે તેમને અથવા જેઓ ચતુર હોય છે તેમને નૈપુણિક કહે છે. એવાં તે નૈપુણિકો આચાર્ય આદિ રૂપ સમજવા. નૈપુણિકોના નવ પ્રકાર પડે છે—(૧) સંખ્યાત, (૨) નિમિત્ત, (૩) કાયિક, (૪) પુરાણ, (૫) પારિહસ્તિક, (૬) પરપણ્ડિત, (૭) વાદિક (૮) ભૂતિકર્મ અને (૯) ચિકિત્સક.

સંખ્યાત પદ ગણિતનુ' વાચક છે. આ ગણિતના વિષયમાં જે માણુસ નિપુણ હોય છે તેને ‘ સંખ્યાત ’ કહે છે. અથવા “ સંઘાણે ” આ પદની છાયા

इति सप्तम्यन्ता छाया, तत्पक्षे-संख्याने-गणितरूपविषये प्रथमो निपुण इत्यर्थः, एवं निमित्तादिष्वपि बोध्यम्, निमित्तम् अतीतानागतशुभाशुभसूचकं पुरुषवस्तु २, कायिकं-शारीरिकम्-इडापिङ्गला सुषुम्णादि प्राणतत्त्वनिरूपकम् ३, पुराणः-पुराभवो वृद्ध इत्यर्थः । स च चिरजीवित्वाद् दृष्टवद्विधप्रसङ्गत्वनैपुणिको भवति, यद्वा पुराणं-पुराभववृत्तं शास्त्रविशेषः, तज्ज्ञाता निपुणप्रायो भवति ४, तथा-पारिहस्तिकः-स्वभावनिपुणः सर्वकार्याणां समुचितसमये कर्ता ५, तथा-परपण्डितः-पर-प्रकृष्टः पण्डितः-विज्ञः परपण्डितः-बहुशास्त्रवित्, यद्वा-परः-

ख्याने ” ऐसी भी होती हैं, इस पक्षके जो गणित रूप विषयमें प्रथम निपुण होना है, वह संख्यान है इसी तरहका कथन निमित्त आदि पदोंमें भी जानना चाहिये अतीत अनागत सम्बन्धी शुभ अशुभका सूचक जो पुरुष रूप वस्तु है वह निमित्त है २ इडा, पिंगला एवं सुषुम्णा आदि प्राण तत्त्वका निरूपक जो शारीरिक शास्त्र है, वह कायिक है, इस शास्त्रका जो ज्ञाता है वह कायिक हैं, पुराण शब्दका अर्थ पुराभव-वृद्ध है यह वृद्ध चिरंजीवी होनेके कारण अनेक प्रकारके प्रसङ्गोंका द्रष्टा होता है इसलिये वह नैपुणिक कहा जाता है, अथवा पुराभव-वृत्तिका नाम पुराण है इस इतिहास रूप पुराभव वृत्तिका प्रतिपादक जो शास्त्र विशेष होता है वह भी पुराण शब्द वाच्य होता है इसका जो ज्ञाता हैं वह भी प्रायः निपुण होता है ४, पारिहस्तिक-समस्त कार्योंका समुचित समयमें जो कर्ता होता है, वह भी स्वभावतः

સંખ્યાને ” પણ થાય છે. આ સંસ્કૃત છાયાની દૃષ્ટિએ તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે--ગણિતના જે પ્રથમ નિપુણ થાય છે તેને સંખ્યાન કહે છે એજ પ્રકારનું કથન નિમિત્ત આદિ પદો વિષે પણ સમજવું. અતીત (ભૂત) અને ભવિષ્યકાળ સંબંધ શુભઅશુભનું સૂચક જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ નિમિત્ત છે. તે શાસ્ત્રમાં નિપુણ પુરૂષ માટે નિમિત્તપદ પ્રયુક્ત થયું છે. ઇડા, પિંગલા, સુષુમ્ણા આદિ પ્રાણતત્ત્વનું નિરૂપક જે શારીરિક શાસ્ત્ર છે તેને કાયિક કહે છે. તે શાસ્ત્રમાં નિપુણ હોય એવા પુરુષને પણ કાયિક કહે છે. પુરાણ પદ પુરાભવ (વૃદ્ધ)નું વાચક છે. તે વૃદ્ધ ચિરંજીવી હોવાને કારણે અનેક પ્રકારના પ્રસંગોનો દ્રષ્ટા હોય છે તેથી તેને નૈપુણિક કહેવામાં આવે છે. અથવા પુરા ભવવૃત્તનું--પ્રાચીનપ્રમયના ઇતિહાસનું પ્રતિપાદન કરનાર જે શાસ્ત્ર છે, તેને પુરાણ કહે છે, તે શાસ્ત્રનો જે જ્ઞાતા હોય છે તે પણ સામાન્ય રીતે નિપુણ જ હોય છે પરિહસ્તિક-સમસ્ત કાર્યોને જે સમુચિત સમયમાં પૂરાં કરનારો હોય છે તે પણ સ્વાભાવિક રીતે નિપુણ જ હોય છે તેથી એવી નિપુણ વ્યક્તિને પારિહસ્તિક કહેલ

અન્યઃ મિત્રાદિઃ પણ્ઠિતો યસ્ય સ તથા, સોઽપિ મિત્રાદિપણ્ઠિતજનસંસર્ગાન્નિ-
પુણો મવતિ ૬। તથા-વાદી-વાદલબ્ધિસમ્પન્નઃ, સ ચ પરેણ પરાજિતો ન ભવતિ ।
યદ્વા-વાદી-મન્ત્રવાદી, ધાતુવાદી વા, સ એવ વાદિકઃ, યદ્વા-વાદોઽસ્યાસ્તીતિ
વાદિકઃ ૭। તથા-ભૂતિકર્મ-ભૂત્યા-ભસ્મના, ઉપલક્ષણત્વાન્મૃદા સૂત્રેણ વા કર્મ
ભૂતિકર્મ-વશીકરણાદિ, રક્ષાર્થ વસત્યાદિપરિવેષ્ટનક્રિયા વા, આદિશબ્દાઙ્ગવરા-
દિસ્તમ્ભનપરિગ્રહઃ । તજ્ઞાનનિપુણો મવતિ ૮। તથા-ચૈકિત્સિકઃ-રોગપ્રતિકા-
રકો વૈથ इत्यर्थः । एते न न निपुणा भवन्ति ९ ॥ सू० २० ॥

નિપુણ હોતા હૈ અતઃ એસે નિપુણકો પરિહસ્તિક કહા ગયા હૈ, જો
અસાધારણ વિદ્વાન્ હોતા હૈ, અથવા જિસકે મિત્રાદિજન પણ્ઠિત હોતે
હૈ, ક્યૌંકિ એસા મનુષ્ય મિત્રાદિ પણ્ઠિત જનોંકે સંસર્ગસે નિપુણ હો
જાતા હૈ, ૬ જો વાદ લબ્ધિસે સંપન્ન હોતા હૈ, વહ વાદી હૈ એસા વાદી
પરસે પરાજિત નહીં હોતા હૈ, યદ્વા-વાદી-વાદી મન્ત્રવાદી યા ધાતુવાદી
જો હોના હૈ વહ વાદી હી વાદિક હૈ, અથવા-જિસકે વાદ હૈ વહ
વાદિક હૈ, ભસ્મ લગાકર યા મિટ્ટી શરીરમેં પોતકર યા કિસીકા ગંડા
આદિ બાંધ કર જો દૂસરોંકો વશમેં ક્રિયા જાતા હૈ, યા રક્ષાકે નિમિત્ત
જો વસતિ આદિ સ્થાનોંકો પરિવેષ્ટિત ક્રિયા જાતા હૈ, યા ડવર આદિકો
ગંડા બાંધકર જો રોક દિયા જોતા હૈ વહ સચ ભૂતિકર્મ હૈ, હસ ભૂતિ-
કર્મકે જ્ઞાનવાલા જો વ્યક્તિ હોતા હૈ વહ નિપુણ હોતા હૈ, તથા-જો

છે જે માણસ અસાધારણ વિદ્વાન્ હોય તેને પરપંડિત કહે છે. અથવા જેના
મિત્રાદિજન પંડિત હોય છે તેને પરપંડિત કહે છે, કારણ કે એવો પુરુષ
મિત્રાદિ પંડિતોના સંસર્ગથી નિપુણ બની જાય છે. જે માણસ વાદલબ્ધિથી
સંપન્ન હોય છે તેને વાદી કહે છે; એવો વાદી અન્યના દ્વારા પરાજિત કરાતો
નથી. અથવા-જે મન્ત્રવાદી કે ધાતુવાદી હોય છે એવા વાદીને જ વાદિક કહે
છે. અથવા જે વાદ્યુક્ત છે તેને વાદિક કહે છે. ભસ્મ લગાવીને અથવા શરીર
પર મટીનો દોષ કરીને અથવા કોઈને માદળિયું બાંધીને બીજા માણસોને જે
વશ કરવામાં આવે છે. અથવા રક્ષાને નિમિત્તે જે વસતિ આદિ સ્થાનોને પરિ-
વેષ્ટિત કરવામાં આવે છે, અથવા તાવ આદિને દોરા ધાગા કે માદળિયું બાંધીને
જે શેકવામાં આવે છે, તે સત્રંગી ક્રિયાઓનું નામ ભૂતિકર્મ છે. આ ભૂતિ-
કર્મના જ્ઞાનવાળો માણસ પણ નિપુણ જ હોય છે. રોગનો પ્રતિકાર કરનાર

પૂર્વે નિપુણાઃ પુરુષા ઉક્તાઃ, તે ચ સાધવો ગણાન્તર્ભાવિનો ભવતીતિ ગણા-
નિરૂપયિતુમાદ—

મ્લ્-સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ ણવ ગણા હુત્થા,
તં જહા-ગોદાસેગણે ૧, ઉત્તરવલિસ્સહગણે ૨, ઉદ્દેહગણે ૩,
ચારણગણે ૪, ઉદ્દવાહ્યગણે ૫, વિસ્સવાહ્યગણે ૬, કામદ્વિય-
ગણે ૭, માણવગણે ૮, કોટિયગણે ૯ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

છાયા—શ્રમણસ્ય સ્વલ્લ ભગવતો મહાવીરસ્ય નવ ગણા અમત્તન, તથા-
ગોદાસો ગણઃ ૧, ઉત્તરવલિસ્સહ ગણઃ ૨ ઉદ્દેહગણઃ ૩, ચારણગણઃ ૪, ઉદ્દ-
વાદિકગણઃ ૫, વિશ્વવાદિકગણઃ ૬, કામદ્વિકગણઃ ૭ માનવગણઃ ૮, કોટિક-
ગણઃ ૯ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

ટીકા—“ સમણસ્સ ણં ” इत्यादि—स्वप्, गोदामादयो नव गणाः=
एकवाचनाऽऽचारक्रियायतां समुदायाः सुमतीताः ॥ सू. २१ ॥

રોગકા પ્રતિકાર કરનેવાલા વૈદ્ય હોતા હૈ, વહ બી નિપુણ હોતા હૈ, હસ
પ્રકારસે યે નૌ નિપુણ માને ગયે હૈ ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

યે જૉ નિપુણ પુરુષ નિરૂપિત ક્રિયે ગયે હૈં એસે વે ગણાન્તર્ભાવી
સાધુ હૉતે હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર ગણૉકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

“ સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરકે નૌ ગણ હુએહૈં જૈસે—ગોદાસ ગણ
ઉત્તરવલિસ્સહ ગણ ૨ ઉદ્દેહ ગણ ૩ ચારણ ગણ ૪ ઉદ્દવાદિક ગણ
૫ વિશ્વવાદિક ગણ ૬ કામદ્વિકગણ ૭ માનવ ગણ ૮ ઓર કોટિકગણ ૯

વૈદ્યને ચક્રિત્સક કહે છે. તે પણ નિપુણ જ હોય છે. આ રીતે અહીં નવ
પ્રકારની નિપુણ વ્યક્તિઓ પ્રકટ કરવામાં આવી છે. ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

નિપુણ પુરુષોત્તું નિરૂપણ કરવ માં આન્યું, ગણોની અંદર રહેતા સાધુઓ
પણ નિપુણ જ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ગણોત્તું નિરૂપણ કરે છે—

“ સમણસ્સ ણં ભગવઓ મહાવીરસ્સ ” इत्यादि—(सू. २१)

ટીકાર્થ—શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરના નવ ગણ થયા છે—(૧) ગોદાસગણ, (૨)
ઉત્તરવલિસ્સહ ગણ, (૪) ચારણ ગણ, (૫) ઉદ્દવાદિક ગણ, (૬) વિશ્વવાદિક
ગણ, (૭) કામદ્વિક ગણ, (૮) માનવગણ અને (૯) કોટિક ગણ.

ગોદાસ આદિ આ નવ ગણ એક વાચનાવાળા, એક આચારવાળા અને

પૂર્વં ભગવન્મહાવીરગણા ઉક્તાઃ, તે ચ ભિક્ષાજીવિન ઇતિ ભૈક્ષં નિરૂપયિતુમાહ—
 મ્લમ્—સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં સમણાણં ણિરગંથાણં
 ણવકોડિપરિસુદ્ધે ભિક્ષુએ પણત્તે, તં જહા—ણ હણહ્ ણ હણાવહ્
 હણંતં ણાણુજાણહ્, ણ પયહ્ ણ પયાવેહ્ પયંતં ણાણુજાણહ્, ણ
 કિણહ્ ણ કિણાવેહ્ કિણંતં ણાણુજાણહ્ ॥ સૂ ૦ ૨૨ ॥

છાયા—શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ શ્રમણાનાં નિર્ગ્રન્થાનાં નવકોટિપરિ-
 શુદ્ધ ભૈક્ષ પ્રજ્ઞમ્. તથા—ન હન્તિ ૧ ન ઘાતયતિ ૨ ધનન્તં નાનુજાનાતિ ૩
 ન પચતિ ૪ ન પાચયતિ ૫ પચન્તં નાનુજાનાતિ ૬ ન ક્રીણાતિ ૭ ન ક્રાપયતિ
 ૮ ક્રીણન્તં નાનુજાનાતિ ૯ ॥ સૂ ૦ ૨૨ ॥

ટીકા—“ સમણેણં ભગવયે ” ઇત્યાદિ—સ્પષ્ટમ્, નવરં—નવકોટિપરિશુદ્ધ-
 નવભિઃ કોટિભિઃ—વિભાગઃ પરિશુદ્ધ—નિર્દોષં નવકોટિપરિશુદ્ધં ભૈક્ષં—ભિક્ષાણં
 સમુદ્ધં, પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—સાધુઃ સ્વયમેવ ગોધૂમાદિ દલનેન ન હન્તિ ૧ ન ઘાત-

યે ગોદાસ આદિ નૌ ગણ એક વાચનાવાલે એક આચારવાલે ઓર એક
 ક્રિયાવાલે સાધુજનોંકે સમુદાય રૂપ હોતેહૈં ઓર યે પ્રસિદ્ધ હીહૈં સૂ ૨૧।

કહે ગયે યે મહાવીરકે ગણં ભિક્ષાજીવ હોતે હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર
 ભૈક્ષકા નિરૂપણ કરતે હૈં—“ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને શ્રમણ નિર્ગ્રન્થોંકી ભિક્ષા નૌ
 કોટિસે વિશુદ્ધ કહી ગઈહૈં—સાધુ સ્વયં ગોધૂમ આદિકો દલના નહીં હૈં ઇસ-
 લિયેવહ જીવકા હનન નહીં કરતા હૈં ૧ તથા—વહ ગૃહસ્થ આદિકો ગોધૂમ
 આદિ દલનેકે લિયે પ્રેરિત નહીં કરતા હૈં—ઇસલિયે વહ ઉનસે જીવોંકી

એક ક્રિયાવાળા સાધુઓના સામુદાયરૂપ હોય છે. આ ગણે સુવિખ્યાત હોવાથી
 અહીં તેમનું અધિક વિવેચન કરવામાં આવ્યું નથી. ॥ સૂ ૦ ૨૧ ॥

ઉપર્યુક્ત નવ ગણુ ભિક્ષાશુલી હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ભૈક્ષણું
 નિરૂપણુ કરે છે—“ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૨૨)

ટીકાર્થ—શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરના શ્રમણુ નિર્ગ્રન્થોની ભિક્ષા નવ પ્રકારે
 વિશુદ્ધ હોય છે. તે નવ કોટિ વિશુદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી—(૧) સાધુ પોતે ઘઉં
 આદિને હળે નથી અને તે કારણે તે પોતાના આહાર નિમિત્તે જીવ-હિંસા
 કરતો નથી, (૨) તે ગૃહસ્થ આદિને ઘઉં હળવામું કહેતો નથી. આ રીતે તે
 અન્યની પાસે જીવોની વિરોધના કરાવતો નથી. (૩) આ પ્રકારનું કાર્ય કરનારને

યતિ=પરેણ ગૃહસ્થાદિના ન વિરાધયતિ ૨, ઘનન્તં-વિરાધયન્તં નાનુજાનાતિ-
નાનુમોદયતિ ૩। ન પચતિ-સ્વયં ન રન્ધયતિ ૪, ન ચ પાચયતિ-ગૃહસ્થાદિના
ન રન્ધયતિ ૫ પચન્તં પરં નાનુજાનાતિ ૬, તથા-ન ક્રીણાતિ-સ્વયમ્ અશનવસના-
દિક્રયણં ન કરોતિ ૭, ન ક્રાપયતિ-પરેણાપિ ૮ ક્રીણન્તં પરં નાનુજાનાતિ ૯॥ સૂ. ૨૨॥

પૂર્વં શ્રમણાનાં નવકોટિપરિશુદ્ધં મૈક્ષમુક્તં, તદ્ગ્રાહિણાં કથંચિન્ મોક્ષાભાવે
દેવગતિર્ભવત્યેવેતિ દેવગતિવસ્તુજાતં પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્ -ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરણ્ણો વરુણસ્સ મહા-
રત્તો ણવ અગ્ગમહિસીઓ પપ્પણત્તાઓ ॥ સૂ. ૩૦ ॥

વિરાધના નહીં કરવાતા હૈ ૨ તથા-જો હસ પ્રકારકા કાર્ય કરતે હૈ
उनकी साधुजन अनुमोदना नहीं करते हैं ३ तथा-साधुजन स्वयं भोजन
आदि पकाते है १, अपने निमित्त भोजनादि वे दूसरोंसे पकावते
नहीं हैं २ और न पकानेवालेकी वे अनुमोदना करते हैं ३ इसी
प्रकारसे वे भोजनादिको न स्वयं खरीदवाते हैं १ तथा न अपने
निमित्त परसे भोजनादि खरीदते हैं २ और न भोजनादि खरी-
दनेवालेकी अनुमोदना ही करते हैं ३ इस प्रकार ये नौ कोटियां हैं
मुनिजन जो अशन वसनादि ग्रहण करते हैं-वे नौ कोटियोंसे विशुद्ध
होते हैं ॥ सू. २२ ॥

હસ પ્રકાર શ્રમણ જનોંકી નૌ કોટિસે વિશુદ્ધ મૈક્ષકા કથન કર
अब सूत्रकार यह प्रकट करते हैं कि इस प्रकारके भिक्षको ग्रहण कर-
नेवाले साधुजनोंकी यदि किसी कारणवश मुक्ति न हो तो उनको
देवगति प्राप्त होती हैं अतः वे अब इसी निमित्तसे देवगति सम्बन्धी

તે તેમ કરવાની અનુમોદના દેતો નથી. (૪) સાધુ પોતે આહાર રાંધતો નથી,
(૫) પોતાને માટે ખીજ પાસે ભોજન રંધાવતો નથી અને (૬) ભોજન
રાંધન રની અનુમોદન પણ કરતો નથી. (૭) તે પોતાને માટે આહાર વિગેરે
ખરીદતો નથી (૮) પોતાને માટે ખીજ પાસે ભોજનાદિ ખરીદ કરાવતો નથી
અને (૯) અને પોતાને મટે ભોજનાદિ ખરીદવાની અનુમોદના પણ કરતો નથી.
આ પ્રકારે નવ કોટિ વિશુદ્ધ અશન, વસનાદિ મુનિજનો ગ્રહણ કરે છે. ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

આ પ્રકારે શ્રમણોના નવ કોટિ (નવ પ્રકારના) વિશુદ્ધ ભૈક્ષનું કથન
કરીને હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરે છે કે આ પ્રકારનો વિશુદ્ધ આહાર
કરનાર સાધુ કદાચ કંઈ પણ કારણે ભોક્ષની પ્રાપ્તિ ન કરી શકે તો પણ
તેને દેવગતિની પ્રાપ્તિ તો અવશ્ય થાય જ છે આ પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના
સંબંધને ધ્યાન રાખીને હવે સૂત્રકાર દેવગતિ સંબંધી કેટલીક વસ્તુઓનું નિરૂપણ કરે છે—

છાયા—ઈશાનસ્ય ચલુ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય વરુણસ્ય મહારાજસ્ય-નવ અગ્ર-
મહિષ્યઃ પ્રજ્ઞતાઃ ॥ સૂ ૨૩ ॥

ટીકા—“ ઈસાણસ્સ ણં ” ઇત્યાદિ—સ્પષ્ટમ્ ॥ સૂ ૨૩ ॥

મૂલમ્—ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરન્નો અગ્રમહિસીણં ણવ
પલિઓવમાઈં ઠિઈં પપ્પણત્તા, ઈસાણે કપ્પે ઉક્કોસેણં દેવીણં ણવ
પલિઓવમાઈં ઠિઈં પપ્પણત્તા ॥ સૂ ૨૪ ॥

છાયા—ઈશાનસ્ય ચલુ દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય અગ્રમહિષીણાં નવ પલ્યોપ-
માનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા, ઈશાને કલ્પે ઉત્કર્ષેણ દેવીનાં નવ પલ્યોપમાનિ સ્થિતિઃ
પ્રજ્ઞતા ॥ સૂ ૨૪ ॥

ટીકા—ઈસાણસ્સ ણં ” ઇત્યાદિ—સુગમમ્, નવરમ્ - ઈશાનાગ્રમહિષીણાં
સ્થિતિસ્તુકૃષ્ટેન નવૈવ પલ્યોપમાનિ, તાસાં સપરિગ્રહત્વાત્, જઘન્યેન તુ સાતિરેકં
પલ્યોપમમિતિ । અપરિગૃહીતદેવીનાં તુ જઘન્યેન સાધિકં પલ્યોપમમ્, ઉત્કૃષ્ટેન
સાતિરેકં પચ્ચપચ્ચાશ્તપલ્યોપમાનિ સ્થિતિરિતિ ॥ સૂ ૨૪ ॥

વસ્તુજાતકા કથન કરતે હૈં—

“ ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરણ્ણો ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનકે લોકપાલ જો વરુણ મહારાજહૈં
उनकी अग्रमहिषियां नौ कही गई हैं ॥ सू २३ ॥

“ ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરન્નો ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્રદેવરાજ ઈશાનકી અગ્રમહિષિયોંકી સ્થિતિ નૌ પલ્યોપ
મકીકહી ગઈહૈં ઈશાનકલ્પમેં દેવિયોંકી સ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટસે નૌ પલ્યોપમકી
કહી ગઈ હૈં ઈશાનકલ્પકે ઇન્દ્રકો પરિગૃહીત હોનેકે કારણ અગ્રમહિ-
ષિયોંકી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ નૌ હી પલ્યોપમકી કહી ગઈ હૈં ઔર જઘન્ય

“ ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરણ્ણો ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૨૩)

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્ર, દેવરાય ઇશાનના લોકપાલ વરુણ મહારાજને નવ અગ્રમહિ-
ષીઓ કહી છે. ॥ સૂ ૨૩ ॥

“ ઈસાણસ્સ ણં દેવિંદસ્સ દેવરણ્ણો ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૨૪)

ટીકાર્થ—દેવેન્દ્ર દેવરાય ઇશાનની અગ્રમહિષીઓની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની
કહી છે. ઇશાન કલ્પનિવાસી દેવીઓની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની કહી છે.
ઇશાન કલ્પના ઇન્દ્રની પરિગૃહીત દેવીઓહોવાને કારણે અગ્રમહિષીઓની ઉત્કૃષ્ટ
સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની કહી છે અને તેમની જઘન્ય સ્થિતિ એક પલ્યોપમ

મૂલમ્-નવ દેવનિકાયા પળ્લન્તા, તં જંહા-

સારસ્વત્યામાહૃચ્ચા, વળ્હી વરુણા ય ગર્દતોયા ય ।

તુસિયા અવાવાહા, અગ્નિચ્ચા ચેવ રિષ્ટા ય ॥૧॥સૂ૦૨૫॥

છાયા-નવ દેવનિકાયાઃ પ્રજ્ઞસાઃ તથથા—

સારસ્વતા આદિત્યા વહ્નયઃ વરુણા ગર્દતોયાશ્ચ ।

તુષિતા અવ્યાબાધા આગ્નેયાશ્ચૈવ રિષ્ટાશ્ચ ૧ ॥ ૧૧ ॥ ” સૂ૦ ૨૫ ॥

ટીકા—“ નવ દેવનિકાયા ” इत्यादि—देवनिकायाः नव प्रज्ञसाः, तद्यथा-सारस्वताः १, आदित्याः २, वह्नयः ३, वरुणाः ४, गर्दतोयाः ५, तुषिताः ६, अव्याबाधाः ७, आग्नेयाः ८ रिष्टाश्च । इत्येतेषु पुनरष्टदेवनिकायाः कृष्णराज्यन्तरेष्वष्टासु परिवसन्ति, रिष्टास्तु कृष्णराजिमध्यभागवर्तिनि रिष्टाभविमानप्रस्तटे परिवसन्तीति नव देवनिकायनिवासो ज्ञेयः ॥ सू० २५ ॥

સ્થિતિ-કુછ અધિક એક પલ્યોપમકી કહી ગઈ છે તથા-અપરિગૃહીત દેવિયોંકી જઘન્ય સ્થિતિ કુછ અધિક એક પલ્યોપમકી ઓર ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૫૫ પલ્યોપમકી કહી ગઈ છે ॥ સૂ૦ ૨૪ ॥

“ નવ દેવનિકાયા પળ્લન્તા ” इत्यादि ।

નૌ દેવનિકાય કહે ગયે છે-જેસે-સારસ્વત ૧, આદિત્ય ૨, વહ્નિ ૩ વરુણ ૪ ગર્દતોય ૫, તુષિત ૬, અવ્યાબાધ ૭, આગ્નેય ૮, ઓર રિષ્ટ ૯. આમાં જો અષ્ટ દેવનિકાય છે તે આઠ કૃષ્ણરાજિકે અંતરોમાં રહેતે છે તથા-જો રિષ્ટ છે તે કૃષ્ણરાજિકે મધ્ય ભાગવર્તી રિષ્ટાભવિમાન પ્રસ્તટમાં રહેતે છે. આ પ્રમાણે નવ દેવનિકાયોંકા નિવાસ જાનનાં ચાહિયે ॥ સૂ૦ ૨૫ ॥

કરતાં સહેજ અધિક કહી છે. તથા અપરિગૃહીત દેવીઓની જઘન્ય સ્થિતિ એક પલ્યોપમ કરતાં સહેજ વધુ સમયની અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૫૫ પલ્યોપમની કહી છે. ॥ સૂ. ૨૪ ॥

“ નવ દેવનિકાયા પળ્લન્તા ” इत्यादि—(સૂ. ૨૫)

ટીકાર્થ-નવ દેવનિકાય કહ્યા છે-(૧)સારસ્વત, (૨)આદિત્ય, (૩)વહ્નિ, (૪)વરુણ, (૫)ગર્દતોય, (૬)તુષિત, (૭)અવ્યાબાધ, (૮)આગ્નેય અને (૯)રિષ્ટ. આ નવ દેવનિકાયોંમાંના પહેલા આઠ દેવનિકાય આઠ કૃષ્ણરાજ્યન્તરોમાં છે. તથા એ રિષ્ટ દેવનિકાયના દેવો છે તેઓ કૃષ્ણરાજ્યોની મધ્યમાં આવેલા રિષ્ટાભવિમાન-પ્રસ્તટમાં રહે છે. આ પ્રમાણે નવ દેવનિકાયોના નિવાસસ્થાન વિષે સમજવું ॥ સૂ. ૨૫ ॥

મૂલમ્—અવ્યાવાહાણં દેવાણં ણવ દેવા ણવ દેવસયા
પણ્ણત્તા, एवं अग्निश्चाणवि, एवं रिष्टाणवि ॥ સૂ. ૨૬ ॥

છાયા—અવ્યાવાધાનાં દેવાનાં નવ દેવા નવ દેવશતાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, એવ-
માગ્નેયાનામપિ, एवं रिष्टानामपि ॥ સૂ. ૨૬ ॥

ટીકા—‘ અવ્યાવાહાણં ’ इत्यादि—અવ્યાવાધાનાં—લોકાન્તિકદેવવિશે-
ષાણાં નવદેવા મુખ્યાઃ, નવશતાનિ ચ દેવાઃ સામાન્યાઃ સન્તીતિ । એવમાગ્ને-
યાનાં रिष्टानामपि बोध्याः । अत्र नव स्थानानुरोधात्त्रय एव विवक्षिताः ॥ સૂ. ૨૬ ॥

મૂલમ્—णव गेवेज्जविमाणपत्थडा पण्णत्ता, तं जहा-हेट्ठिम-
हेट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे १, हेट्ठिममज्झिमगेविज्जविमाणप-
त्थडे २, हेट्ठिमउवरिमगेविज्जनिमाणपत्थडे ३, मज्झिमहेट्ठिमगे-
विज्जविमाणपत्थडे ४, मज्झिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे ५,
मज्झिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे ६, उवरिमहेट्ठिमगेविज्जवि-
माणपत्थडे ७, उवरिममज्झिमगेविज्जविमाणपत्थडे ८, उवरि-
मउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे ९। एएसि णं णवण्हं गेविज्जवि-
माणपत्थडाणं णव नामधिज्जा पण्णत्ता, तं जहा-भदे १ सुभदे
२, सुजाए ३, सोमणसे ४, पियदंसणे ५। सुदंसणे ६, अमोहे
७, य सुप्पबुद्धे ८ जसोहरे ॥ १ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

“ અવ્યાવાહાણં ણવ દેવા ” इत्यादि ॥ सूत्र २६ ॥

ટીકાર્થ—લોકાન્તિક દેવ વિશેષ જો અવ્યાવાધ હૈં उनके नौ देव मुख्य हैं
और ९०० सौ जो देव हैं वे सामान्य हैं इसी तरहसे आग्नेयोंके और
रिष्टोंके भी जानना चाहिये यहां नौ स्थानोंके अनुरोधसे तीनही लोक-
पाल विवक्षित हुए हैं ॥ सूत्र २६ ॥

“ અવ્યાવાહાણં ણવ દેવા ” ध्यादि— , २६)

ટીકાર્થ—લોકાન્તિક દેવવિશેષોમાં જે અવ્યાવાધ (ઉપર્યુક્ત સાતમી દેવનિકાયના)
દેવો છે તેમાં નવ મુખ્ય દેવો છે અને ૯૦૦ સામાન્ય દેવો છે. એજ પ્રમાણે
આગ્નેય અને રિષ્ટનિકાયના દેવો વિશે પણ સમજવું. અહીં નવ સ્થાનનો અધિકાર
હોવાથી નવ સ્થાનને અનુરૂપ ત્રણ લોકપાલોની જ વાત કરવામાં આવી છે. ॥ સૂ. ૨૬ ॥

છાયા—નવ ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—અધસ્તનાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૧, અધસ્તનમધ્યમગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૨ અધસ્તનોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૩, મધ્યમાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૪ મધ્યમમધ્યમગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૫, મધ્યમોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૬, ઉપરિતનાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૭, ઉપરિતનમધ્યમગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૮, ઉપરિતનોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટઃ ૯। એતેષાં લલુ નવાનાં ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટાનાં નવ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—ભદ્રઃ ૧, સુભદ્રઃ ૨, સુજાતઃ ૩ સૌમનસઃ ૪ પ્રિયદર્શનઃ ૫, સુદર્શનઃ ૬, અમોઘશ્ચ ૭ સુપ્રબુદ્ધઃ ૮ યશોધરઃ ૯ ॥ ૧ ॥ સૂ. ૨૭ ।

ટીકા—‘જવ ગેવેજ્જે’—ત્યાદિ—સુગમમ્, નવરમ્—પ્રસ્તટઃ—રચનાવિશેષવાનુસમૂહઃ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

“ જવ ગેવેજ્જ વિમાણપત્યહાપણગત્તા ” इत्यादि ॥ सूत्र २७ ॥

ટીકાર્થ—ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ નો કહે ગયેહૈં—જૈસે—અધસ્તનાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ ૧, અધસ્તનમધ્યમ ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટ ૨, અધસ્તનોપરિતનગ્રૈવેયકવિમાન પ્રસ્તટ ૩, મધ્યમાધસ્તનગ્રૈવેયકવિમાન પ્રસ્તટ ૪, મધ્યમમધ્યમગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટ ૫, મધ્યમોપરિતન ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટ ૬, ઉપરિતનાધસ્તન ગ્રૈવેયકવિમાનપ્રસ્તટ ૭, ઉપરિતન મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ ૮, એવં ઉપરિતનોપરિતનગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ ૯, इन नौ ग्रैवेयक विमान प्रस्तटोंके नौ नाम हैं—जैसे—भद्र ૧, સુભદ્ર ૨ સુજાત ૩ સૌમનસ ૪, પ્રિયદર્શન ૫ સુદર્શન ૬ અમોઘ ૭, સુપ્રબુદ્ધ ૮, और यशोधर ૯,

विशेष रचनावाला जो समूह है वह प्रस्तट है ॥ सू. २७ ॥

“ જવ ગેવેજ્જવિમાણપત્યહા પણગત્તા ” इत्यादि—(सू. २७)

ટીકાર્થ—ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તટ નવ કહ્યાછે—(૧) અધસ્તનાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાનપ્રસ્તટ, (૨) અધસ્તન મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૩) અધસ્તનોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૪) મધ્યમાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૫) મધ્યમમધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૬) મધ્યમોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૭) ઉપરિતનાધસ્તન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ, (૮) ઉપરિતન મધ્યમ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ અને (૯) ઉપરિતનોપરિતન ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટ. આ નવ ગ્રૈવેયક વિમાન પ્રસ્તટોનાં નવ નામ નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) ભદ્ર, (૨) સુભદ્ર, (૩) સુજાત, (૪) સૌમનસ, (૫) પ્રિયદર્શન, (૬) સુદર્શન, (૭) અમોઘ, (૮) સુપ્રબુદ્ધ અને (૯) યશોધર.

વિશેષ રચનાવાળો જે સમૂહ છે તેને પ્રસ્તટ કહે છે. ॥ સૂ. ૨૭ ॥

પૂર્વ ગ્રૈવેયકવિમાનાન્યુક્તાનિ, તદ્વાસિનશ્ચાઽઽયુગ્મન્તો ભવન્તીત્યાયુઃપરિ-
ણામભેદાન્ પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—નવવિદ્દે આઠપરિણામે પળ્લન્તે, તં જહા—ગઙ્ગપરિણામે
૧ ગઙ્ગબંધનપરિણામે ૨, ઠિઙ્ગપરિણામે ૩, ઠિઙ્ગબંધનપરિણામે
૪, ડહુંગારવપરિણામે ૫, અહેગારવપરિણામે ૬, તિરિયંગારવપરિ-
ણામે ૭, દીહંગારવપરિણામે ૮, રહસ્તંગારવપરિણામે ૯ ॥ સૂ.૦૨૮ ॥

છાયા—નવવિધ આયુઃ પરિણામઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથથા—ગતિપરિણામઃ ૧, ગતિ-
બન્ધનપરિણામઃ ૨, સ્થિતિપરિણામઃ ૩, સ્થિતિવન્ધનપરિણામઃ ૪, ઊર્ધ્વગૌરવ-
પરિણામઃ ૫, અધોગૌરવપરિણામઃ ૬, તિર્યંગૌરવપરિણામઃ ૭, દીર્ઘગૌરવપરિ-
ણામઃ ૮, હ્રસ્વગૌરવપરિણામઃ ૯ ॥ સૂ. ૨૮ ॥

ટીકા—‘ નવવિદ્દે આઠપરિણામે ’ इत्यादि—आयुः परिणामः—आयुषः—
कर्म प्रकृतिविशेषस्य परिणामः—स्वभाव शक्तिधर्म इति यावत् इत्यायुः परिणामः,
स नवविधः प्रज्ञप्तः तथथा—गतिपरिणामः—गतिदेवादिका, तां तत्तदवस्थानादि-
प्रमाणत्वेन निश्चिता येन स्वभावेनायुर्जीवं प्रापयति स गतिपरिणामः १, तथा—

“ નવવિદ્દે આઠપરિણામે પળ્લન્તે ” इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—કર્મ પ્રકૃતિ વિશેષરૂપ આયુષ્કા પરિણામ સ્વભાવશક્તિ ધર્મ નૌ
પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—જૈસે—ગતિ પરિણામ ૧, ગતિબન્ધન પરિણામ ૨,
સ્થિતિ પરિણામ ૩, સ્થિતિ બન્ધન પરિણામ ૪, ઊર્ધ્વગૌરવ પરિણામ ૫
અધો ગૌરવ પરિણામ ૬, તિર્યંગ ગૌરવપરિણામ ૭, દીર્ઘગૌરવ પરિણામ
૮ ઓર હ્રસ્વ ગૌરવ પરિણામ ૯

ગતિસે યહાં દેવાદિક ગતિ લી ગઈ હૈ, ડસ ૨, ગતિમેં રહને આદિકે
પ્રમાણસે નિશ્ચિત ડસ ૨, દેવાદિગતિકો જિસ સ્વભાવસે આયુ જીવકો

“ નવવિદ્દે આઠપરિણામે પળ્લન્તે ” इत्यादि—(સૂ. ૨૮)

ટીકાર્થ—આઠ કર્મ પ્રકૃતિઓમાંની એક કર્મ પ્રકૃતિનું નામ આયુ છે. તે આયુનું
પરિણામ (સ્વભાવ, શક્તિ, ધર્મ નવ પ્રકારનું) કહ્યું છે. તે નવ પ્રકારોની નીચે
પ્રમાણ છે—(૧) ગતિ પરિણામ, (૨) ગતિબન્ધન પરિણામ, (૩) સ્થિતિ પરિણામ,
(૪) સ્થિતિબન્ધન પરિણામ, (૫) ઊર્ધ્વગૌરવ પરિણામ, (૬) અધોગૌરવ પરિણામ,
(૭) તિર્યંગગૌરવ પરિણામ, (૮) દીર્ઘગૌરવ પરિણામ અને (૯) હ્રસ્વગૌરવ પરિણામ.

ગતિ પરિણામ—અહીં ગતિ પદ દેવાદિ ગતિનું સૂચક છે. તે તે ગતિમાં
(તે દરેક ગતિમાં) રહેવા આદિના પ્રમાણની અપેક્ષાએ નિશ્ચિત એવી તે દેવાદિ

ગતિવન્ધનપરિણામ:-પ્રતિનિયતગતિકર્મવન્ધનનિમિત્તાયુ:-સ્વભાવ:, યથા-નરકા-
 ઽઽયુ: સ્વભાવેન જીવો મનુષ્યતિર્યગગતિનામકર્મવધનાતિ, ન દેવનારકગતિનામકર્મ.
 इति स गतिवन्धनपरिणामः २। तथा-स्थितिपरिणाम:-अन्तर्मुहूर्तादित्रयस्त्रिंश-
 त्सागरोपमानावस्थानरूपाऽऽयु: स्वभावः ३। तथा-स्थितिवन्धनपरिणाम:-
 परमत्रायुगो नियतस्थितिवन्धननिमित्तपूर्वभवाऽऽयु:परिणाम:, यथा-तिर्यगा-
 ઽઽયુ:-પરિણામેન જીવો દેવાઽઽયુષ ઉત્ક્રષ્ટોઽપ્યષ્ટાદશસાગરોપમાણિ સ્થિતિ
 વધનાતિ, તિરશ્ચાં સહસારપર્યન્તગમનાત્ ૪। તથા-ઊર્ધ્વગૌરવપરિણામ:-જીવસ્યો-
 ધ્વદિગ્ગમનનિમિત્તાયુ:-સ્વભાવ:, इह गौरवशब्दो गमनपरः ५। एवमधोगौरव-
 परिणामः ६; तिर्यगौग्वपरिणामः ७, इत्येती बोध्यौ। तथा-दोर्धगौरवपरि-
 પ્રાસ કરતી હૈ, વહ ગતિ પરિણામ હૈ ૧, પ્રતિનિયત ગતિ કર્મકે વન્ધ-
 નકા નિમિત્ત જો આયુ: સ્વભાવ હૈ, વહ ગતિવન્ધન પરિણામ હૈ ૨
 જૈસે-નરકાયુકે સ્વભાવસે જીવ મનુષ્ય ગતિ ઓર તિર્યગ્ ગતિ નામ-
 કર્મકા વન્ધ કરતા હૈ, દેવ ઇવં નારક ગતિ નામકર્મકા વન્ધ
 નહીં કરતા હૈ. અન્તર્મુહૂર્તસે લેકર ૩૩ સાગરોપમ તક અવસ્થાન રૂપ
 જો આયુકા સ્વભાવ હૈ, વહ સ્થિતિ પરિણામ હૈ, તથા-પરભવકી આયુકા
 જો નિયત સ્થિતિ વન્ધન પરિણામ હૈ, જૈસે-તિર્યગાયુકે પરિણામસે જીવ
 દેવાયુકા ઉત્ક્રષ્ટસે મી ૧૮ સાગરોપમકા સ્થિતિવન્ધ કરના હૈ, ક્યોંકિ
 તિર્યગ્ સહસાર દેવલોક તક જાતે હૈં। જીવકા ઊર્ધ્વ દિશામેં ગમનકા
 નિમિત્ત જો આયુ સ્વભાવ હૈ વહ ઊર્ધ્વ ગૌરવ પરિણામ હૈ-યહાં ગૌરવ
 શબ્દકા ગમન પરક હૈ, હસી તરહસે અધો ગૌરવ પરિણામ ઓર

ગતિની પ્રાપ્તિ જે સ્વભાવ વડે આયુ જીવને કરાવે છે તે સ્વભાવનું નામ ગતિ
 પરિણામ છે. જે આયુ:સ્વભાવ પ્રતિનિયત ગતિકર્મના બન્ધનના નિમિત્ત રૂપ હોય
 હોય છે, તેને ગતિબન્ધન પરિણામ કહે છે. જેમ કે નરકાયુના સ્વભાવથી જીવ
 મનુષ્યગતિ અને તિર્યગ્ગતિ નામકર્મના બન્ધ કરે છે, દેવ અને નારક ગતિ
 નામકર્મના બન્ધ કરતો નથી. અન્તર્મુહૂર્તથી લઈને ૩૩ સાગરોપમ પર્યન્તના
 અવસ્થાન (આયુસ્થિતિ) રૂપ જે આયુનો સ્વભાવ છે તેનું નામ સ્થિતિપરિણામ
 છે. તથા-પરભવના આયુષ્યના નિયત સ્થિતિબન્ધનના નિમિત્ત રૂપ જે પૂર્વભવના
 આયુનું પરિણામ છે તેનું નામ સ્થિતિબન્ધન પરિણામ છે જેમ કે તિર્યગ્ આયુના
 પરિણામથી જીવ વધારેમાં વધારે ૧૮ સાગરોપમનો દેવાયુનો સ્થિતિબન્ધ કરે
 છે, કારણ કે તિર્યગ્માંથી મરીને જીવ સહસાર દેવલોક પર્યન્ત જઈ શકે છે.
 જીવના ઉર્ધ્વ દિશામાં ગમનના નિમિત્ત રૂપ જે આયુ સ્વભાવ છે. તેનું નામ
 ઉર્ધ્વ ગૌરવ પરિણામ છે. અહીં ગૌરવ પદ ગમનના અર્થનું વાચક છે. એજ

જામઃ—લોકાન્તાલ્લોકાન્તં યાવદ્દમનાતિશયનિમિત્તભૂતાઽઽયુઃ સ્વભાવઃ ૮, एवं ह्रस्वगौरवपरिणामः ९, सर्वत्र प्राकृतत्वादनुस्वारागमः ॥ सू० २८ ॥

પૂર્વમાયુઃ પરિણામ ઉક્તઃ, તત્રૈવ ચાઽઽયુઃ પરિણામવિશેષે સતિ તપઃસામર્થ્યં ભવતીતિ તપોવિશેષાન્નિરૂપયિતુમાહ—

મૂલમ્—જવ જવમિયા ણં મિલ્લુપડિમા ઇગાસિણ રાહં-
દિણહિં ચડહિં ય પંચુત્તરેહિં મિલ્લુસાસણહિં અહાસુત્તા જાવ
આરાહિયા યાવિ ભવહ ॥ સૂ. ૨૯ ॥

છાયા—નવ નવમિકા સ્વલુ પિલ્લુપ્રતિમા એકાશીત્યા રાત્રિન્દિવૈઃ ચતુર્મિશ્ર પશ્ચોત્તરૈઃ મિલ્લાશતૈઃ. યથામૂત્રં યાવત્ આરાધિતા ચાપિ ભવતિ ॥ સૂ. ૨૯ ॥

ટીકા—‘જવ જવમિયા ણં’ ઇત્યાદિ—નવનવમિકા—નવ-નવ સંખ્યાનિ નવમાનિ દિનાનિ યસ્યાં સા નવનવમિકા—એકાશીતિસંખ્યકદિનવતી ભિક્ષુપ્રતિમા એકાશીત્યારાત્રિન્દિવૈઃ—અહોરાત્રૈઃ સમ્પદ્યતે, તત્ર પ્રથમનવકે પ્રતિદિનમેકા

નિર્યગ્ ગૌરવ પરિણામ મી જાનના ચાહિયે લોકાન્તસે લોકાન્ત તક ગમનકે નિમિત્ત ભૂત જો આયુ સ્વભાવ હૈ વહ દીર્ઘ ગૌરવ પરિણામ હૈ ૮ ઇસી તરહસે હ્રસ્વ ગૌરવ પરિણામ મી જાનના ચાહિયે ।સૂ. ૨૮।

આયુ પરિણામ કહકર અવસૂત્રકાર હસ વિચારસે કિ “આયુ પરિણામ વિશેષ હોને પર તપ સામર્થ્ય હોતા હૈ “ તપ વિશેષોંકા નિરૂપણ કરતે હૈ—‘જવ જવમિયાણં મિલ્લુપડિમા ’ ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

ટીકાર્થ—નૌ સંખ્યક નૌ દિન જિસમેં હોતેહૈ, એસી ૮૧ દિનોંકી ભિક્ષુપ્રતિમા ૮૧ રાત્રિદિનોંમેં પાલિત હોતી હૈ, યહાં પ્રથમ નવકમેં પ્રતિદિન

પ્રમાણે અધોગૌરવ પરિણામ અને તિર્યગ્ ગૌરવ પરિણામ વિષે પશુ સમજવું. લોકાન્તથી લોકાન્ત પર્યન્ત ગમનના અતિશયના નિમિત્તભૂત જે આયુસ્વભાવ છે, તેનું નામ દીર્ઘ ગૌરવ પરિણામ છે. એજ પ્રમાણે હ્રસ્વ ગૌરવ પરિણામના વિષયમાં પશુ સમજવું. ॥ સુ. ૨૮ ॥

આયુપરિણામનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું. આયુપરિણામ વિશેષ હોય ત્યારે જ તપઃસામર્થ્ય સંભવી શકે છે. પૂર્વસૂત્ર સાથેના આ પ્રકારના સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર તપવિશેષોનું નિરૂપણ કરે છે—

‘જવજવમિયાણં મિલ્લુપડિમા’ ઇત્યાદિ—(સ. ૨૯)

ટીકાર્થ—નવ નવ દિનના નવ સમૂહ રૂપે આરાધિત ૨૧ તી ભિક્ષુપ્રતિમાની આરાધના ૮૧ દિનરાતમાં આરાધિત કરાય છે. આ ભિક્ષુપ્રતિમાની આરાધના કરનાર સાધુ

દત્તિઃ પાનકસ્ય એકા ભોજનસ્ય ચેત્યેવમેકોત્તરયા વૃદ્ધયા નવમે નવકે નવ નવ દત્તયઃ, તતથ સર્વસંકલનયા પશ્ચોત્તરૈશ્વનુર્મિર્મિશાશતૈઃ યથાસૂત્ર 'યાવત્' -પદેન 'યથાકલ્પં, યથામાર્ગં, યથાતત્ત્વં, સમ્યક્કાચેન સ્પૃષ્ટા પાલિતા શોભિતા તીરિતા કીર્તિતા' इत्येतानि पदानि ग्राह्याणि, आराधिता चापि भवतीति । एतदर्थस्तु सप्तमस्थानके पञ्चमसूत्रं विलोकनीयः । यद्यपि अन्नपानकदत्तयः सम्मिलिता दशाधिकाष्टशतसंख्यका भवन्ति, तथापीहपानकदत्तिसंख्याया अविवक्षणात् पञ्चाधिकचतुश्शतपरिमितैव (४०५) इति संख्या विवक्षितेति ॥ सू० २९ ॥

एक पानीकी और एक दत्ति आहारकी होती है इस तरहसे एक २ की वृद्धिसे नौवें नवकमें नौ २ दत्तियोंकी संख्या ८१० आठसो दस हो जाती है, परन्तु यहां पानककी दत्तियोंकी संख्या अविवक्षित होनेके कारण भोजनकी कुल दत्तियां ४०५ ही विवक्षित हुई हैं । “ यथा सूत्रं ” पद यह प्रकट करता है कि इस भिक्षु प्रतिमाके पालन करनेकी जैसी विधि शास्त्रमें कही गई है ४०५ दिनोंमें यह वैसीही पालित होती है यावत् पदसे यहां “ यथाकल્पं यथा मार्गं यथातत्त्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता, तीरिता, कीर्तिता ” इन पदोंका ग्रहण हुआ है इन सबका अर्थ सप्तम स्थानकमें—सातवें ठाणेमें पांचवें सूत्रमें देख लेना चाहिये २९ ॥ सूत्र २९ ॥

પ્રથમ નવકમાં (નવ દિવસમાં) દરરોજ એક દત્તિ પાનકની (પ્રવાહીની) અને એક દત્તિ આહારની લે છે. દરેક નવકમાં આહાર અને પાનકની એક એક દત્તિ વધારતા વધારતાં નવમાં નવકમાં તે પ્રતિદિન પાનકની નવ દત્તિઓ અને આહારની નવ દત્તિઓ ગ્રહણ કરે છે. આ રીતે ૮૧ દિવસમાં તે સાધુ આહારની કુલ ૪૦૫ દત્તિઓ ગ્રહણ કરે છે અહીં પાનકની દત્તિઓને ગણાવવામાં આવેલ નથી. (જો આહાર અને પાનક બન્નેની દત્તિઓ ગણાવવામાં આવે તો કુલ ૮૧૦ દત્તિઓ થાય છે.) “ યથાસૂત્ર ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે આ ભિક્ષુપ્રતિમાની આરાધનાની જેવી વિધિ શાસ્ત્રમાં બતાવી છે એવી વિધિ અનુસાર ૮૧ દિવસમાં તેની આરાધના થાય છે. “ યાવત્ ” પદ દ્વારા અહીં “ યથાકલ્પં, યથા માર્ગં, યથાતત્ત્વં સમ્યક્કાચેન, સ્પૃષ્ટા પાલિતા, શોભિતા, તીરિતા, કીર્તિતા ” આ સૂત્રપાઠ ગ્રહણ કરાયેલો છે. આ સૂત્રમાં વપરાયેલાં પદોની વ્યાખ્યા સાતમાં સ્થાનના પાંચમાં સૂત્રમાંથી વાંચી લેવાની સલાહ કરવામાં આવે છે. ॥ સૂ. ૨૯ ॥

પૂર્વે ભિક્ષુપ્રતિમોક્તા સમ્પ્રતિ તત્ર સંઝનાતીચારસ્ય પ્રાયશ્ચિત્તં ભવતીતિ પ્રાયશ્ચિત્તસૂત્રમાહ—

મૂલમ્--જવવિહે પાયચ્છિત્તે પળ્લત્તે, તં જહા-આલોચના-રિહે જાવ મૂલારિહે અળવટ્ટપ્પારિહે ॥ સૂ ૩૦ ॥

છાયા—નવવિધં પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રજ્ઞપ્તમ્ તથા—આલોચનાર્હં યાવત્ મૂલાર્હમ્ ૮ અનવસ્થાપ્યાર્હમ્ ૯ ॥ સૂ ૩૦ ॥

ટીકા—“ જવવિહે પાયચ્છિત્તે ” ઇત્યાદિ—પ્રાયશ્ચિત્તં-પાપવિશોધનં નવ-વિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—આલોચનાર્હમ્-આલોચના-ગુરું પ્રતિ સ્વપાપસ્ય નિવેદનં, તદ્રૂપા શુદ્ધિઃ, તામર્હતીત્યાલોચનાર્હમ્ ૧ એવમન્યત્રાપિ । ‘ યાવત્ ’ પદેન-પ્રતિ-ક્રમણાર્હં ૨, તદુભયાર્હં ૩, વિવેકાર્હં ૪, વ્યુત્સર્ગાર્હં ૫. તપોડર્હં ૬, છેદાર્હં ૭ ઇતિ પદ્મગ્રાહ્યાણિ, તથા—મૂલાર્હમ્ ૮, અનવસ્થાપ્યાર્હમ્ ૯, તત્ર પ્રતિક્રમણં—

હસ પ્રકારકે ભિક્ષુ પ્રતિમોક્તા કથન કરકે અવ સૂત્રકાર ઉસમેં લગે હુએ અતિચારકા પ્રાયશ્ચિત્ત હોતા હૈ, હસ અભિપ્રાયસે પ્રાયશ્ચિત્ત સૂત્રકા કથન કરતે હૈ—“ જવવિહે પાયચ્છિત્તે પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—પાપ વિશોધનકા નામ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ, યહ પાપવિશોધન રૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત નૌ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, વહ હસ પ્રકારસેહૈ—આલોચનાર્હં ૧, યાવત્ મૂલાર્હં ઓર અનવસ્થાપ્યાર્હં ૯, હનમેં ગુરુકે પ્રતિ જો અપને પાપકા નિવેદન હૈ, વહ આલોચનાર્હં હૈ, હસ આલોચના રૂપ શુદ્ધિકે યોગ્ય જો હોતા હૈ વહ આલોચનાર્હં પ્રાયશ્ચિત્તહૈ ૧ હસી પ્રકારસે અન્યત્ર ભી જાનના ચાહિયે યહાં યાવત્પદસે—“ પ્રતિક્રમણાર્હં ૨, તદુભયાર્હં ૩, વિવેકાર્હં ૪ વ્યુત્સર્ગાર્હં ૫, તપોડર્હં ૬, છેદાર્હં ૭ ” હન હહ પ્રાયશ્ચિત્તોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ, મિથ્યા દુષ્કૃત દેના હસકા નામ પ્રતિક્રમણ હૈ,

આ રીતે ભિક્ષુપ્રતિમાનુ કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેમાં લાગેલા અતિચારનું પ્રાયશ્ચિત્ત થાય છે. તે અભિપ્રાયથી પ્રાયશ્ચિત્ત સૂત્રનું કથન કરે છે.

“ જવવિહે પાયચ્છિત્તે પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૩૦)

ટીકાર્થ—પાપવિશોધન (પાપની શુદ્ધિ) નું નામ પ્રાયશ્ચિત્ત છે. તે પાપવિશોધન રૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત નવ પ્રકારનું કહ્યું છે. તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) આલોચનાર્હં, (૨) પ્રતિક્રમણાર્હં, (૩) તદુભયાર્હં, (૪) વિવેકાર્હં (૫) વ્યુત્સર્ગાર્હં, (૬) તપઃઅર્હં (૭) છેદાર્હં, (૮) મૂલાર્હં અને (૯) અનવસ્થાપ્યાર્હં

આલોચનાર્હં-ગુરુની પાસે આલોચના (નિવેદન) કરવાથી જ જે પાપની વિશુદ્ધિ થઈ જાય છે એવા પાપને આલોચનાર્હં પાપ કહે છે, અને એવા પાપના પ્રાયશ્ચિત્તને આલોચનાર્હં પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે, એજ પ્રમાણે આગળ પણ સમજવું.

મિથ્યાદુષ્કૃત્યમ્ ૨, તદુભયમ્-આલોચના-મિથ્યાદુષ્કૃતૈતદ્વયમ્ ૩, વિવેકઃ-
અશુદ્ધભક્તાદિત્યાગઃ ૪, વ્યુત્સર્ગઃ-કાયોત્સર્ગઃ ૫, તપોનિર્વિકૃતિકાદિ ૬, છેદઃ-
પ્રવ્રજ્યાપર્યાયહસ્વીકરણમ્ ૭ મૂલમ્-મહાવ્રતાઽરોપણમ્ ૮, અનવસ્થાપ્ય-કૃતત-
પસો વ્રતાઽરોપણમ્ ૯, इत्येतान्यर्हतीति तत्तद्रूपाणि नव प्रायश्चित्तानि, इह
नवस्थानप्रसङ्गाच्चवैशोक्तानि, दशमं प्रायश्चित्तं तु पाराश्रિકम्, तल्लिङ्गादि भेद-
रूपमिति ॥ सू० ૩૦ ॥

પૂર્વે પ્રાયશ્ચિત્તમુક્તં, તત્ત્વ મરતાદિક્ષેત્રેષ્વેવ ભવતીતિ તદ્વત્ત્વસ્તુવિશેષાન્નિરૂપ-

આલોચના કરના એવં મિથ્યા દુષ્કૃત્ય દેના યે દોનો જહાં હોતે
હૈં એસા વહ પ્રાયશ્ચિત્ત તદુભયાર્હ હૈં, અશુદ્ધ ભક્ત આદિકા ત્યાગ
કરનાં યહ વિવેક હૈં, કાયોત્સર્ગ કરનાં હસકા નામ વ્યુત્સર્ગ હૈં, નિર્વિ-
કૃતિક આદિ તપસ્વર્ગોના નામ તપહૈં, એવં પ્રવ્રજ્યા પર્યાયકા કમ કરના
હસકા નામ છેદ હૈં, મહાવ્રતોંકા આરોપણ કરના યહ મૂલહૈં, તથા-જિસને
તૈયસ્યા કી હૈં એસે પુરુષમેં વ્રતોંકા આરોપણ કરના યહ અનવસ્થાપ્ય હૈં
જો પાપશુદ્ધિ હન ૨ પ્રાયશ્ચિત્તોંકે યોગ્ય હોતી હૈં વહ પ્રતિક્રમણાર્હ તદુ-
ભયાર્હ આદિ પ્રાયશ્ચિત્તહૈં યહાં નવસ્થાનકે પ્રસંગસે નૌ હી પ્રાયશ્ચિત્તકહે
હૈં દશમ પ્રાયશ્ચિત્ત પારાશ્રિક હૈં વહ લિંગાદિ ભેદ રૂપ હોતા હૈં ॥સૂ૦૩૦॥

કથિન યહ પ્રાયશ્ચિત્ત મરતાદિ ક્ષેત્રોંમેંહી હોતા હૈં, અતઃ અવ

મિથ્યા દુષ્કૃત દેવું તેનું નામ પ્રતિક્રમણ છે. આલોચના કરવી અને મિથ્યાદુષ્કૃત
દેવું-આ બન્નેનો જે પ્રાયશ્ચિત્તમાં સદ્ભાવ રહે છે તે પ્રાયશ્ચિત્તને તદુભયાર્હ
પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે.

અશુદ્ધ ભક્ત (આહાર) આદિનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ વિવેક છે. કાયો-
ત્સર્ગ કરવો તેનું નામ વ્યુત્સર્ગ છે. નિર્વિકૃતિક આદિ તપસ્યાઓનું નામ તપ છે.
પ્રવ્રજ્યા પર્યાયમાં ઘટાડો કરવો તેનું નામ છેદ છે. મહાવ્રતેનું આરોપણ કરવું
તેનું નામ મૂળ છે, તથા જેણે તપસ્યા કરી છે એવા પુરુષમાં વ્રતોનું આરોપણ
કરવું તેનું નામ અનવસ્થાપ્ય છે જે પાપશુદ્ધિ ઉપર્યુક્ત પ્રાયશ્ચિત્તોને યોગ્ય
હોય છે, તેમનું જ અહીં આલોચનાર્હ, પ્રતિક્રમણાર્હ, તદુભયાર્હ આદિ નવ
પ્રકારે પ્રતિપદન કરવામાં આવ્યું છે. અહીં નવ સ્થાનનો અધિકાર હોવાથી
નવ પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તોનું જ નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે પ્રાયશ્ચિત્તનો દસમો
પ્રકાર પારાશ્રિક પ્રાયશ્ચિત્ત છે. તે લિંગાદિ ભેદ રૂપ એટલે કે સાધુના રજોહરણ,
વસ્ત્ર આદિનો ત્યાગ કરાવવા રૂપ હોય છે. ॥ સૂ. ૩૦ ॥

ઉપર્યુક્ત પ્રાયશ્ચિત્તોનો સદ્ભાવ ભરતાદિ ક્ષેત્રોમાં જ હોય છે, તેથી હવે

यितुमाह—

मूलम्--जंबू मंदर दाहिणेणं भरहे दीहवेयड्डे णवकूडा पणत्ता,
तं जहा--सिद्धे १ भरहे २ खंडग ३, माणी ४ वेयड्ड ५ पुण्ण ६,
तिमिसगुहा ७ । भरहे ८ वेसमणे ९ य भरहे कूडाण णामाइं ॥१॥

जंबूमंदरदाहिणेणं निसहे वासहरपव्वए णवकूडा पणत्ता, तं जहा-
सिद्धे १, निसहे २ हरिवासे ३ त्रिदेहे ४, हीरी ५ धिइ ६ य
सीओया ७ । अवरत्रिदेहे ८ रुयगे ९ निसहे कूडाण णामाणि ॥१॥

जंबूमंदरपव्वए णंदणवणे णव कूडा पणत्ता, तं जहा-
णंदणे १ मंदरे २ चेव निसहे ३ हेमवते ४ रयय ५ रुयए ६ य ।

सागरचित्ते ७ वइए ८, बलकूडे ९ चेव बोद्धवे ॥ १ ॥

जंबू मालवंतवक्खारपव्वए णवकूडा पणत्ता, तं जहा--

सिद्धे १ य मालवंते २, उत्तरकुरु ३ कच्छ ४ सागरे ५ रयए ६ ।

सीया ७ तह ८ पुण्णणामे ८ हरिस्सहकूडे ९ य बोद्धवे ॥ १ ॥

जंबूमालवंतवक्खारपव्वयकच्छे दीहवेयड्डे णवकूडा पणत्ता, तं जहा-
सिद्धे १ कच्छे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ड ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७ ।

कच्छे ८ वेसमणे य ९ कच्छे कूडाण णामाइं ॥ १ ॥

जंबू मंदरदाहिणेणं सुकच्छे दीहवेयड्डे णवकूडा पणत्ता
तं जहा--सिद्धे १ सुकच्छे २, खंडग ३ माणी ४ वेयड्ड ५ पुण्ण
६ तिमिसगुहा ७ । सुकच्छे ८ वेसमणे ता, सुकच्छि कूडाण-
णामाइं ॥ १ ॥

एवं जाव पोक्खलावयंसि दीहवेयड्डे, एवं वच्छे दीहवेयड्डे
एवं जाव मंगलावइंसि दीहवेयड्डे ।

जंबू मंदरदाहिणेणं विज्जुप्पमे वक्खारपव्वए णवकूडा

पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धे य विज्जुणामे २ देवकुरा ३ पम्ह ४ कणग ५ सोवत्थी ६। सीओया ७ य सजले ८ हरिकूडे ९ चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥

जंबू मंदरदाहिणेणं पम्हे दीहवेयड्डे णवकूडा पण्णत्ता, तं जहा,-सिद्धे १ पम्हे २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ड ५। एवं चेव जाव सलिलावड्ढंमि दीहवेयड्डे, एवं वप्पे दीहवेयड्डे एवं जाव गंधिलावड्ढंमि दीहवेयड्डे नव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धे १ गंधिल २ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ड ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७। गंधिलावड्ड ८ वेसमण ९ कूडाणं होति णामाडं ॥ १ ॥

एवं सव्वेसु दीहवेयड्डेसु दोकूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव, जंबूमंदरेणं उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धे १, निलवंत २ विदेह ३ सीया ४ किच्ची ५ य नारिकंता ६ य। अवरविदेहे रम्मगकूडे ८ उवदंसणे चेव ॥ १ ॥

जंबूमंदर उत्तरेणं एरवए दीहवेयड्डे णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा-सिद्धे २ रयणे १ खंडग ३ माणी ४ वेयड्ड ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७। एरवए ८ वेसमणे ९, एरवए कूडणामाडं ॥ १ ॥ ॥ सू० ३१ ॥

छाया—जम्बूमन्दरदक्षिणे भरते दीर्घवैताढ्ये नव कूटाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सिद्धः १ भरतः २ खण्डकः ३ माणिः ४ वैताढ्यः ५ पूर्णः ६ तिमिस्रगुहा सूत्रकार भरतादि क्षेत्रगत वस्तु विशेषोक्ता निरूपण करते हैं—

“ जंबू मंदरदाहिणेणं ” इत्यादि ।

जम्बू द्वीप स्थित मन्दर पर्वतकी दक्षिण दिशामें रहे हुए भरत

क्षेत्रगत भरतादि क्षेत्रगत वस्तु विशेषोक्तुं निरूपण करे छे—“ जंबू मंदर दाहिणेणं इत्यादि—(स. ३१)

जम्बूद्वीपमां आवेक्षा मन्दर पर्वतनी दक्षिण दिशामां रहेशा भरतक्षेत्रमां

૭। ભરતઃ ૮ વૈશ્રમણઃ ૯ વા ભરતે કૂટાનાં નામાનિ ॥ ૧ ॥

જમ્બૂમન્દરદક્ષિણે નિષધે વર્ષધરપર્વતે નવકૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—સિદ્ધાઃ ૧ નિષધાઃ ૨ હરિવર્ષઃ ૩ વિદેહઃ ૪ હ્રીઃ ૫ ધૃતિઃ ૬ ચ શીતોદા ૭। અપર-વિદેહઃ ૮ રુચકઃ ૯ નિષધે કૂટાનાં નામાનિ ॥ ૧ ॥

જમ્બૂ મન્દરપર્વતે નન્દનવને નવ કૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—નન્દનઃ ૧ મન્દરઃ ૨ ચૈવ નિષધઃ ૩ હિમવાન્ ૪ રજતઃ ૫ રુચકઃ ૬ સાગરચિત્રઃ ૭ વજ્રઃ ૮ બલકૂટઃ ૯ ચૈવ બોદ્ધવ્યઃ ॥ ૧ ॥

જમ્બૂમાલ્યવદ્વક્ષસ્કારપર્વતે નવકૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—સિદ્ધશ્ચ ૧ માલ્યવાન્ ક્ષેત્રમેં જો દીધંવૈનાદય હૈ ઉસ પર નૌ કૂટ કહે ગયે હૈ—વે હસ પ્રકારસે હૈ—સિદ્ધ ૧, ભરત ૨ લ્ખણક ૩, માણિ ૪, વૈતાદય ૫, પૂર્ણ ૬, તિમિસ્ત્રગુહા ૭ ભરત ૮ ઔર વૈશ્રવણ ૯ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દર પર્વતની દક્ષિણ દિશામેં રહે હુએ નિષધ વર્ષધર પર્વત પર નૌ કૂટ કહે ગયેહૈ—વે હસ પ્રકારસે હૈ—સિદ્ધ ૧ નિષધ ૨ હરિવર્ષ ૩ વિદેહ ૪ હ્રી ૫ ધૃતિ ૬ શીતોદા ૭ અપરવિદેહ ૮ રુચક ૯ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપસ્થિત મન્દર પર્વતકે નન્દન વનમેં નૌ કૂટ કહે ગયે હૈ—જો હસ પ્રકારસે હૈ—નન્દન ૧, મન્દર ૨, નિષધ ૩, હિમવાન્ ૪, રજત ૫, રુચક ૬ સાગરચિત્ર ૭ વજ્ર ૮ એવં બલકૂટ ૮ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપકે માલ્યવાન્ વક્ષસ્કાર પર્વત પર નૌ કૂટ કહે ગયે હૈ—જો હસ પ્રકારસે હૈ—

જે વૈતાદય પર્વત છે તેના ઉપર નવ કૂટ છે. તેમનાં નામ આ પ્રમાણે છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) ભરત, (૩) ખંડક, (૪) માણિ, (૫) વૈતાદય. (૬) પૂર્ણ, (૭) તિમિસ્ત્ર ગુહા, (૮) ભરત અને (૯) વૈશ્રમણ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપના મન્દરપર્વતની દક્ષિણદિશામાં રહેલા નિષધ વર્ષધર પર્વત પર નવ કૂટ કહ્યાં છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) નિષધ, (૩) હરિવર્ષ, (૪) વિદેહ, (૫) હ્રી (૬) ધૃતિ, (૭) શીતોદા, (૮) અપરવિદેહ અને (૯) રુચક ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દરપર્વતના નન્દનવનમાં નવ કૂટ કહ્યા છે તેમનાં નામો નીચે પ્રમાણે છે (૧) નન્દન, (૨) મન્દર, (૩) નિષધ, (૪) હિમવાન્, (૫) રજત, (૬) રુચક, (૭) સાગરચિત્ર, (૮) વજ્ર અને (૯) બલકૂટ. ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપના માલ્યવાન્ વક્ષસ્કાર પર્વત પર નવ કૂટ કહ્યાં છે. તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) માલ્યવાન્, (૩) ઉત્તરકુરુ, (૪) કચ્છ, (૫) સાગર,

૨ ઉત્તરકુરુઃ ૩, કચ્છઃ ૪ સાગરઃ ૫ રજતઃ ૬ શીતા ૭ તથા પૂર્ણનામા ૮ હરિસહકૂટથ વોદ્વ્યઃ ॥ ૧ ॥

જમ્બૂ માલ્યવદ્વક્ષસ્કારપર્વતકચ્છે દીર્ઘવૈતાલ્યે નવકૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—
સિદ્ધઃ ૧ કચ્છઃ ૨ સ્વણ્ડકઃ ૩ માણિઃ ૪ વૈતાલ્યઃ ૫ પૂર્ણઃ ૬ તિમિસ્રગુહા ૭
કચ્છઃ ૮ વૈશ્રવણથ ૯ કચ્છે કૂટનામાનિ ॥ ૧ ॥

જમ્બૂમન્દરદક્ષિણે સુકચ્છે દીર્ઘવૈતાલ્યે નવ કૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—સિદ્ધઃ
૧ સુકચ્છઃ ૨ સ્વણ્ડકઃ ૩ માણિઃ ૪ વૈતાલ્યઃ ૫ પૂર્ણઃ ૬ તિમિસ્રગુહા ૭
સુકચ્છઃ ૮ વૈશ્રવણથ ૯ સુકચ્છકૂટનાં નામાનિ ॥ ૧ ॥

एवं यावत् पुष्करावत्यां दीर्घवैताल्ये, एवं वक्षस्के दीर्घवैताल्ये, एवं यावत् मङ्गलावत्यां दीर्घवैताल्ये ।

સિદ્ધ ૧ માલ્યવાન્ ૨ ઉત્તર કુરુ ૩ કચ્છ ૪ સાગર ૫ રજત ૬
શીતા ૭ પૂર્ણનામા ૮ ઓર હરિસહ કૂટ ૯ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત માલ્યવાન્ વક્ષસ્કાર પર્વતને કક્ષમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય
પર નવ કૂટ કહે ગયે છે—જો હસ પ્રકારસે છે—

સિદ્ધ ૧ સુકક્ષ ૨ સ્વંડક ૩ માણિ ૪ વૈતાલ્ય ૬ પૂર્ણ ૬ તિમિસ્ર-
ગુહા ૭ સુકચ્છ ૮ ઓર વૈશ્રવણ ૯ ॥૧॥

इसी तरहसे यावत् पुष्करावतीमें दीर्घवैताल्य पर इसी तरहसे
वक्षस्कारमें दीर्घवैताल्य पर नौ कूट कहे गये हैं । जम्बूद्वीप स्थित
विद्युत्प्रभ नामके वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट कहे गये हैं जो इस प्रका-
रसे हैं—सिद्ध १ पद्म २ खंडक ३ माणि ४ वैताल्य ५ पूर्ण ६,
तिमिस्रगुहा ७, सुकच्छ ८ वैश्रवण ९, इसी तरहसे यावत्

(૧) રજત, (૭) શીતા, પૂર્ણનામા અને (૯) હરિસહકૂટ ॥૧॥

જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા માલ્યવાન્ વક્ષસ્કાર પર્વતની કક્ષમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર
નવ કૂટ કહ્યાં છે. તેમનાં નામો નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) સિદ્ધ, (૨) સુકક્ષ, (૩) ખંડક, (૪) માણિ, (૫) વૈતાલ્ય, (૬) પૂર્ણ,
(૭) તિમિસ્રગુહા (૮) સુકચ્છ અને (૯) વૈશ્રવણ ॥૧॥

એજ પ્રમાણે પુષ્કરાવતી પર્વતના ક્ષેત્રોમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર નવ કૂટો છે એજ
પ્રમાણે વક્ષસ્કારમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર નવ કૂટો છે એજ પ્રમાણે મંગલાવતી પર્વ-
તમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર નવ કૂટો કહ્યા છે. જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા વિદ્યુત્પ્રભ નામના
વક્ષસ્કાર પર્વત પર નવ કૂટ કહ્યાં છે તેમનાં નામો નીચે પ્રમાણે છે—

(૧) સિદ્ધ, (૨) પદ્મ, (૩) ખંડક (૪) માણિ (૫) વૈતાલ્ય પૂર્ણ ૬
તિમિસ્ર ગુહા ૭ સુકચ્છ ૮ વૈશ્રવણ ૯

એજ પ્રમાણે સલિલાવતીમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર નવ કૂટો કહ્યા છે, વપ્રમાં

जम्बू विद्युत्प्रभे दक्षस्कारपर्वते नवकूटाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सिद्धः १ विष्णु-
चामानः २ देवकुरवः ३ पद्मः ४ कनकः ५ स्वस्तिकः ६ शीतोदा ७ च सजलः
८ हरिकूटः ९ चैव बोद्धव्यः ॥ १ ॥

जम्बूमन्दरदक्षिणे पद्मे दीर्घवैताढ्ये नवकूटाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सिद्धः १
पद्मः २ खण्डकः ३ माणिः ४ वैताढ्यः ५ एव चैव यावत् सलिलावत्यां दीर्घ-
वैताढ्ये, एवं यत्र दीर्घवैताढ्ये । एवं यावत् गन्धिलावत्यां दीर्घवैताढ्ये नवकूटाः
प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—

सिद्धाः १ गन्धिलः २ खण्डकः ३ माणिः ४ वैताढ्यः ५ पूर्णः ६ तिमि-
स्रगुहाः ७ गन्धिलावती ८ वैश्रवणः ९ कूटानां भवन्ति नामानि ॥ १ ॥

एवं सर्वेषु दीर्घवैताढ्येषु द्वौ कूटौ सदृशनामकौ, शेषास्तएव ।

जम्बू मन्दरे उत्तरे नीलवति वर्षधरपर्वते नवकूटाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—सिद्धाः
१ नीलवान् २ विदेहः ३ सीता ४ कीर्तिः ५ च हरिकान्ता ६ च । अपरवि-
देहे रम्यककूटः ८ उपदर्शन ९ चैव ॥ १ ॥

सलिलावतीमें दीर्घवैताढ्य पर, इसी तरहसे यत्रमें दीर्घवैताढ्य
पर और इसी तरहसे गन्धिलावतीमें दीर्घ वैताढ्य पर नौ कूट कहे
गये हैं उनके नाम इस प्रकारसे हैं—सिद्ध १ गन्धिल २ खण्डक ३ माणि
४ वैताढ्य ५ पूर्ण ६ तिमिस्र गुहा ७ गन्धिलावती ८ और वैश्रवण ९
॥१॥ इस प्रकारसे समस्त दीर्घवैताढ्योंमें दो कूट समान नामवाले
हैं और बाकीके ऊपरमें कहे हुए जैसे हैं ।

जम्बूद्वीप स्थित मन्दरके उत्तरमें नीलवान् वर्षधरपर्वत पर नौ
कूट कहे गये हैं—जो इस प्रकारसे हैं—सिद्ध १ नीलवान् २ विदेह
३ सीता ४ कीर्ति ५ हरिकान्ता ६ अपर विदेह ७ रम्यककूट ८ और
उपदर्शन ९ ॥१॥

दीर्घवैताढ्य पर नव कूटों कहे हैं और गन्धिलावतीमां पण्ण दीर्घवैताढ्य पर
पण्ण नव कूटों कहे हैं तेमनां नामो नीचे प्रमाणे समझवा—(१) सिद्ध, (२)
गन्धिल (३) षण्डक, (४) माणि, (५) वैताढ्य, (६) पूर्ण, (७) तिमिस्रगुहा,
(८) गन्धिलावती और (९) वैश्रवण. आ प्रकारे समस्त दीर्घवैताढ्योंमां जे
कूट समान नामवाणां छे और णाडीनां कूटोंमां नाम उपर कहे प्रमाणे छे
जम्बूद्वीपमां आवेला मन्दरपर्वतनी उत्तरे नीलवान् वर्षधर पर्वत पर
नव कूट कहे हैं. तेमनां नामो नीचे प्रमाणे छे—

(१) सिद्ध, (२) नीलवान्, (३) विदेह, (४) सीता, (५) कीर्ति, (६)
हरिकान्ता (७) अपरविदेह (८) रम्यक कूट और (९) उपदर्शन ॥१॥

જમ્બૂમન્દરસ્ય ઉત્તરે ઐરવતે દીર્ઘવૈતાઢ્યે નવકૂટાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્વયા-સિદ્ધઃ
૧ રજતઃ ૨ સ્વઙ્કઃ ૩ માણિઃ ૪ વૈતાઢ્ય ૫ પૂર્ણઃ ૬ તિમિસ્રગુહા ૭ ઐરવતઃ
૮ વૈશ્રવણઃ ૯ ઐરવતે કૂટનામાનિ ॥ ૧ ॥ સૂ. ૩૧ ॥

ટીકા—‘ જંબૂ મંદરદાહિણેણ ’ इत्यादि—एषां व्याख्याऽन्यतोऽवसेया
॥ सू. ३१ ॥

પૂર્વ કૂટા ઉક્તાઃ. તે ચ તીર્થઙ્કરૈઃ પ્રરુપિતા इति નવસ્થાનપ્રસન્નાન્નવરત્નિ-
પ્રમાણ જિનવિશેષં નિરૂપયિતુમાદ્—

મૂલમ્—પાસે ણં અરહા પુરિસાદાણીય વજ્જરિસહનારાય
સંઘયણે સમચરસંસંઠાણસંઠિય નવ રયણીઓ ઉહું ઉચ્ચત્તેણં
હુત્થા ॥ સૂ. ૩૨ ॥

છાયા—પાર્શ્વઃસ્વલુ અર્હન્ પુરુષાઽઽદાનીયો વજ્રઋષમનારાચસંહનનઃ સમ-
ચતુઃસસંસ્થાનસંરિથતઃ નવ રત્નયઃ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્વેનાઽઽગ્રીત્ ॥ સૂ. ૩૨ ॥

ટીકા—‘ પાસે ણં અરહા ’ इत्यादि—

પાર્શ્વઃ—પાર્શ્વનાથઃ સ્વલુ અર્હન્—જિનઃ કથંભૂતઃ ? इत्याह—‘ પુરુષાદાનીય ’
इत्यादि—पुरुषैरादानीयः—आश्रयणीयः अतिशयशालित्वात्, पुनः वज्रऋषमनाराच

જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દરકે ઉત્તરમેં ઐરવતમેં દીર્ઘવૈતાઢ્ય પર નૌ
કૂટ કહે ગયે હૈં જો હસ પ્રકારસે હૈં—સિદ્ધ ૧ રજત ૨ સ્વઙ્ક ૩ માણિ
૪ વૈતાઢ્ય ૫ પૂર્ણ ૬ તિમિસ્રગુહા ૭ ઐરવત ૮ ઔર વૈશ્રવણ ૯ ॥૧॥ હસ
સૂત્રકી વ્યાખ્યા અન્ય શાસ્ત્રોંસે જાન લેની ચાહિયે ॥ સૂ. ૩૧॥

યે કથિત કૂટ તીર્થકરોંને કહે ગયે હૈં—અતઃ નવ સ્થાનકે પ્રસન્નસે
નવ રત્નિપ્રમાણ જિન વિશેષકા કથન અવ સૂત્રકાર કરતે હૈં—

“ પાસેણં અરહા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—પાર્શ્વનાથ અર્હન્ત જો કિ પુરુષોંમેં શ્રેષ્ઠહૈં વજ્રઋષમનારાચ સંહન-

જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દરપર્વતની ઉત્તરે ઐરવત ક્ષેત્રના દીર્ઘવૈતાઢ્ય
પર નવ કૂટ કહ્યાં છે—(૧) સિદ્ધ, (૨) રજત, (૩) સ્વઙ્ક, (૪) માણિ, (૫)
વૈતાઢ્ય, (૬) પૂર્ણ (૭) તિમિસ્રગુહા, (૮) ઐરવત અને (૯) વૈશ્રવણ ॥૧॥

આ સૂત્રની વ્યાખ્યા અન્ય શાસ્ત્રોની મદદથી સમજી લેવી. ॥ સૂ. ૩૧ ॥

તીર્થકરો દ્વારા ઉપર્યુક્ત કૂટો પ્રરૂપિત થયેલા છે તેથી સૂત્રકાર નવરત્નિ
પ્રમાણ જિનવિશેષતું (પાર્શ્વનાથ ભગવાનતું) નવ સ્થાનને અનુરૂપ એવું
કથન કરે છે—“ પાસેણં અરહા ’ इत्यादि—(સૂ. ૩૨)

ટીકાર્થ—પાર્શ્વનાથ અર્હન્ત કે જેઓ પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠતા, વજ્રઋષભનારાય સંહનન

સંહનન:-વજ્ર-કીલિકાકારમસ્થિ, ઋષભ:-પરિવેષ્ટનપટ્ટાકૃતિકોઽસ્થિવિશેષ', નારાચમ્-ઉભયતો મર્કટબન્ધઃ, તથા વ-દ્વયોરસ્થનોરુમયતો મર્કટબન્ધનેન વદ્ધયોઃ પટ્ટાઽઽકૃતિના તૃતીયેનાસ્થના પરિવેષ્ટિતયોરુપરિ તદસ્થિત્રયં પુનરપિ દ્વીકર્તું તત્ર નિશ્ચાતં કીલિકાઽઽકારં વજ્રનામકમસ્થિ યત્ર ભવતિ તદ્ વજ્રઋષ-ભનારાચમ્, તત્ સંહનનં સંહન્યન્તે=દ્વી ક્રિયન્તે શરીરપુદ્ગલા અનેનેતિ સંહન-નમ્-અસ્થિનિચયો यस્ય સ વજ્રઋષભનારાચ સંહનનઃ, પુનઃ સમચતુરસ્રસંસ્થાન-

નવાલે એવં સમચતુરસ્રસંસ્થાનવાલે થે, યે ઝંચાઈમેં નૌ રત્નિ અર્થાત્ નૌ હાથકે થે હન્હેં પુરુષાદાનીય હસલિયે કહા ગયા હૈ કિ યે અતિશયોસે ચિરાજિત થે વજ્રઋષભનારાચ સંહનનકા તાત્પર્ય એસા હૈ-કીલિકાકે આકાર જૈસી જો હઢી હોતી હૈ, ઉસકા નામ વજ્ર હૈ પરિવેષ્ટન વજ્રકે આકાર જૈસી જો હઢી હોતી હૈ ઉસકા નામ ઋષભ હૈ ઓર દોનોં તરફસે જો મર્કટ બન્ધ હૈ ઉસકા નામ નારાચ હૈ હસ કથનકા તાત્પર્ય એસા હોતા હૈ, કિ દોનોં તરફ મર્કટ બન્ધનસે બન્ધી હુઈ તથા પટ્ટીકે આકાર જૈસી તૃતીય હઢીસે પરિવેષ્ટિત હુઈ દો હઢિયોંકે ઉપર ઓર બી ત્રીન હઢિયોંકો દૃઢ કરનેકે લિયે કીલિકાકે આકાર જૈસી જો વજ્ર નામક હઢી વિશેષ જહાં પર ગઢી રહતી હૈ વહ વજ્રઋષભ નારાચ સંહનન હૈ, જિસકે દ્વારા શરીર પુદ્ગલ મજબૂત કિયે જાતે હૈ ઉસકા નામ સંહનન હૈ-સંહનનકા દૂસરા નામ અસ્થિયોંકા સમૂહ બી

વાળા હતા અને સમચતુરસ્ર સંસ્થાનવાળા હતા, તેમના શરીરની ઊંચાઈ નવ રત્નપ્રમાણ (નવ હાથની) હતી. તેઓ અતિશયોથી ચિરાજિત હતા, તે કારણે તેમને પુરુષાદાનીય કહ્યા છે.

વજ્રઋષભનારાચ સંહનનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે-કીલિકાના (ખીલીના) આકારનું જે હાડકું હોય છે તેનું નામ વજ્ર છે. પરિવેષ્ટન કરવા માટેના વજ્રના આકારનું જે હાડકું હોય છે તેનું નામ ઋષભ છે, અને બન્ને તરફ જે મર્કટબન્ધ હોય છે તેનું નામ નારાચ છે. આ પ્રકારે વિચાર કરતા વજ્ર ઋષભનારાચ સંહનનનો અર્થ એવો થાય છે કે-બન્ને તરફ મર્કટબન્ધ વડે બાંધેલા તથા પટ્ટીના આકારના ત્રીણ હાડકાથી પરિવેષ્ટિત થયેલા એવા જે હાડકાંઓ ઉપર-આ રીતે તે ત્રણે હાડકાંને દૃઢ કરવાને માટે જે કીલિકા (ખીલી) ના આકારનું વજ્ર નામનું હાડકું જે જગ્યાએ સંધાએલું હોય છે તે જગ્યાનું નામ વજ્રઋષભનારાચ સંહનન છે. જેના દ્વારા શરીરના પુદ્ગલોને મજબૂત કરાય છે તેનું નામ સંહનન છે. અસ્થિઓના સમૂહને પણ સંહનન કહે છે,

સંસ્થિતઃ=પ્રમાઃ=તુલ્યાઃ-અન્યૂનાધિકાઃ ચતુસ્રોડ્ભવો-હસ્તપાદોપર્યધોરૂપાશ્વત્વા-
રોડપિ ત્રિયાગા (શુભલક્ષણોપેનાઃ) યસ્ય (સંસ્થાનસ્ય) તન્ સમચતુરસ્રં-તુલ્યા-
ડ્ભવોદ્ભવરિણાહં, તત્ચ સંસ્થાનમ્=આકારવિશેષ इति સમચતુરસ્રસંસ્થાનં, તેન
સંસ્થિતઃ=યુક્તઃ સમચતુરસ્રસંસ્થાનસંસ્થિતઃ, તથા ઊર્ધ્વમ્ ઉપરિ ઉચ્ચત્વેન-ઉચ્છ્ર-
યેણ નવ રત્નયઃ-હસ્તાઃ-નવહસ્તપરિમિત-પાર્શ્વઃ પ્રચુરાસીત્ ॥ સૂ૦ ૩૨ ॥

પૂર્વં તીર્થંકરવિશેષ ઉક્તઃ, इति તત્પ્રસન્નાન્મહાવીરાશ્ચતીર્થંકરવિશેષસ્ય
શાપને નમઃર્જીવૈસ્તીર્થંકરનામગોત્રમુપાજિતમિતિ પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્-સમણસસ પાં ભગવઓ મહાવીરસસ તિત્થાંસિ ણવહિં
જીવેહિં તિત્થયરનામગોત્તે કમ્મે ણિવ્વત્તિણ, સેણિણં ૧, સુપા-
સેણં ૨, ઉદાહ્વિણા ૩, પોટ્ટિલેણં અણગારેણં ૪, દઢાહ્વિણા ૫,
સંખેણં ૬, સયણં ૭, સુલસાણ સાવિયાણ ૮ રેવડ્ડિણ ૯ ॥ સૂ૦ ૩૩ ॥

હૈ, એસા જિસકા શરીર હોતા હૈ, વહ વજ્રરૂપમનરાચ સંહનનવાલા
હૈ, જિસ આકારમેં ઊપરકે નીચેકે અવયવ, એવં હાથ ઓર પગકે
વિભાગ શુભ લક્ષણોસે યુક્ત હોતે હૈં, કમતી વઢતી નહીં હોતે હૈં એસા
જો શરીરકા આકાર હોતા હૈ વહ સમચતુરસ્રસંસ્થાન હૈં, સમ શબ્દકા
અર્થ તુલ્ય હૈ-શરીરકી અવયવકે ન્યૂનાધિકતાકા નહીં હોના યહી
તુલ્યતા હૈ, એવં ચતુઃશબ્દકા અર્થ ચાર હૈ, ઓર અસ્ત્રિ શબ્દકા અર્થ
હાથ, પૈર, ઊપર નીચેકે વિભાગ હૈં-ઇસ તરહ શરીરકા જો તુલ્ય
આરોહ પરિણાહવાલા આકાર વિશેષ હૈ, વહ સમચતુરસ્ર સંસ્થાન હૈ,
ભગવાન્ પાર્શ્વનાથકે શરીરકા આકાર એસા હી થા ॥ સૂ૦ ૩૨ ॥

પાર્શ્વનાથ ભગવાનનું શરીર આ પ્રકારના સંહનનથી યુક્ત હતું. જે સંસ્થાનમાં
(આકારમાં) શરીરના ઉપરના ભાગનાં અવયવો, નીચેના ભાગનાં અવયવો, તથા
હાથ અને પગરૂપ અવયવો, આ ચારે વિભાગો શુભ લક્ષણથી યુક્ત હોય છે-
સપ્રમાણ હોય છે, એવા શરીરના આકારને સમચતુરસ્રસંસ્થાન કહે છે. સમ
એટલે તુલ્ય (સમાન) અવયવોમાં ન્યૂનાધિકતા ન હોવી-સપ્રમાણતા હોવી
તેનું નામ તુલ્યતા છે. “ચતુઃ” એટલે ચાર. ‘અસ્ત્રિ’ એટલે હાથ, પગ,
શરીરનો ઉપરનો ભાગ અને શરીરનો નીચેનો ભાગ આ રીતે શરીરનો જે
સપ્રમાણ આકારવિશેષ હોય છે તેને સમચતુરસ્રસંસ્થાન કહે છે પાર્શ્વનાથ
ભગવાનનું શરીર આ પ્રકારના આકારવાળું હતું. ॥ સૂ. ૩૨ ॥

છાયા-અમળસ્ય સ્વસ્તુ ભગવતો મહાવીરસ્ય તીર્થે નવભિર્જીવૈસ્તીર્થકરનામગોત્રં
કર્મ નિર્વર્તિતમ્, શ્રેણિકેણ ૧, સુપાર્શ્વેન ૨, ઉદાયિના ૩, પોટ્ટિલેનામનારેણ ૪,
દ્વાડાસ્યુપા ૫, શંખેન ૬, શતકેન ૭ સુલસ્યા શ્રાવિકયા ૮ રેવત્યા ૯ ।મુ ૦૩૩।

ટીકા—‘ સમળસ્સ પં ભગવમ્મો ’ इत्यादि—

અમળસ્ય સ્વસ્તુ ભગવતો મહાવીરસ્ય તીર્થે=શાસને નવભિર્જીવૈઃ તીર્થકરનામ-
ગોત્ર-તીર્થકરત્વનિવચનં નામ તીર્થકરનામ, તત્ત્વ ગોત્રં ચ=કર્મવિશેષશ્ચ
તીર્થકરનામગોત્રં-તદ્ગુણં કર્મ । યદ્વા-તીર્થકરેતિ નામ્ના ગોત્રં-ગોત્રાલ્યં કર્મ
નિર્વર્તિતં-કૃતં સમુપાર્જિતમ્ । તદેવ દર્શયતિ-‘ સેણિણં ’ इत्यादि-શ્રેણિકેન-
રાજગૃહનગરાધિપેન પ્રસિદ્ધેન રાજા તદુપાર્જિતમ્ । એવં સુપાર્શ્વેન-ભગવતો મહા-
વીરસ્ય પિતૃવ્યેન ૨, તથા-ઉદાયિના કોણિકપુત્રેણ શ્રેણિકપ્રપૌત્રેણ ૩ । તથા-
પોટ્ટિલેન-તદાલ્યેન અનગારેણ ૪ । તથા-દ્વાડાસ્યુપા ૫ । તથા-શંખેન ૬ ।

હસ તરહ તીર્થકર વિશેષકા કથન કર અચ સૂત્રકાર હસી પ્રસ-
ન્નસે મહાવીરતીર્થકરકે શાસનમેં જિન નૌ જીર્ણેને તીર્થં કર નામ ગોત્ર
કર્મકા ઉપાર્જન ક્રિયા હૈ, ડનકા નામ પ્રકટ કરનેકે લિયે સૂત્ર કહતે હૈ—

“ સમળસ્સ પં ભગવમ્મો મહાવીરસ્સ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ-અમળ ભગવાન્ મહાવીરકે તીર્થમેં નૌ જીર્ણેને તીર્થં કર નામ
ગોત્રકર્મકા બન્ધ ક્રિયા હૈ, ડનકે નામ હસ પ્રકારસે હૈ—શ્રેણિક ૧ સુપાર્શ્વ
૨, ઉદાયી ૩, પોટ્ટિલ અનગાર ૪, દ્વાડાયુ ૫, શંખ ૬, શતક ૭, શ્રાવિકા
સુલસા ૮, ઔર રેવતી ૯. શ્રેણિક યહ રાજગૃહ નગરકે પ્રસિદ્ધ રાજા
થે સુપાર્શ્વ યે ભગવાન્ મહાવીરકે કાકા થે, ઉદાયી યે શ્રેણિકકે પ્રપૌત્ર

આગલા સૂત્રમા પાર્શ્વનાથ ભગવાન વિષે કેટલુક કથન કરવામાં આવ્યું.
હવે સૂત્રકાર એવી નવ વ્યક્તિઓનાં નામ પ્રકટ કરે છે કે જેમણે મહાવીર
ભગવાનના (તીર્થ કરના) શાસનમાં તીર્થં કર નામગોત્રકર્મનું ઉપાર્જન કર્યું હતું

“ સમળસ્સ પં ભગવમ્મો મહાવીરસ્સ ” इत्यदि—

ટીકાર્થ-અમળ ભગવાન મહાવીરના તીર્થમાં નવ જીર્ણેને તીર્થં કર નામ ગોત્ર
કર્મનો બન્ધ કયો છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) શ્રેણિક, (૨) સુપાર્શ્વ,
(૩) ઉદાયી, (૪) પોટ્ટિલ અણગાર, (૫) દ્વાડાયુ, (૬) શંખ, (૭) શતક, (૮)
શ્રાવિકા સુલસા અને (૯) રેવતી.

શ્રેણિક-તેઓ રાજગૃહ નગરના પ્રસિદ્ધ રાજા થઈ ગયા.

સુપાર્શ્વ-તેઓ મહાવીર પ્રભુના કાકા થતા હતા.

ઉદાયી-તેઓ શ્રેણિકના પ્રપૌત્ર કેણિકના પુત્ર હતા.

तथा शत्रुकेन ८। तथा-सुलसया तदारूपया श्राविकया ७। तथा-रेवत्या-
भगवत् औषवदात्र्या श्राविकया ९। इति ॥ सू० ३३ ॥

पूर्व तीर्थङ्करत्वयोग्या जीवा उक्ताः, सम्पति तु भाविनो मध्यमतीर्थकरान्
केवलिनश्च जीवानाह—

सूत्र- एसणं अज्जो ! कण्हे वासुदेवे १, रामे बलदेवे २,
उदये पेढालपुत्ते ३ पुट्टिले ४, सयए गाहावई ५ दारुए
नियंठे ६, सच्चई नियंठी पुत्ते, ७, सावित्रबुद्धे अंवडे परिवा-
यए ८ अज्जावि णं सुपासा पासावच्चिज्जा ९, आगमेस्साए
उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पन्नवइत्ता सिज्झिहिंति जाव
अंतं कार्हीति ॥ सू० ३४ ॥

छाया—एष खलु आर्याः । कृष्णो वासुदेवः १, रामो बलदेवः २, उदयः
पेढालपुत्रः ३, पुट्टिलः ४, शत्रुको गाथापतिः ५, दारुको निर्ग्रन्थः ६, सन्धकि
निर्ग्रन्थीपुत्रः ८, श्राविकाबुद्धोऽम्बडः परिव्राजकः ८, आर्याऽपि खलु सुपार्श्वा
पार्श्वापत्नीया ९ आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां चातुर्यामं धर्मं प्रज्ञाप्य सेत्स्यन्ति
यावत् अन्तं करिष्यन्ति ॥ सू० ३४ ॥

टीका—‘ एस णं अज्जो ’ इत्यादि—भगवान् महावीरः साधून् संबोध-
एवं कोणिकके पुत्र थे, रेवती यह श्राविका थी इसने भगवान्‌को औष-
धिका दान दिया था ॥ सू० ३३ ।

तीर्थंकरत्वके योग्य जीवोंका कथन कर अब सूत्रकार भावी मध्यम
तीर्थंकरोंका और केवलियोंका कथन करते हैं—

“ एसणं अज्जो कण्हे वासुदेवे ” इत्यादि ।

टीकार्थ—भगवान् महावीर साधुओंको सम्बोधितकरते हुए कहते हैं—

देवती—ते श्राविका हती तेण्हे भगवान् महावीरने माटे औषधिनुं दान
क्युं हतुं ॥ सू० ३३ ॥

तीर्थंकरत्वने माटे योग्य होय जेवां जेवानुं कथन करीने हवे सूत्रकार
मध्यम तीर्थंकरानुं अने केवलीज्जोनुं कथन करे छे—

“ एस ण अज्जो कण्हे वासुदेवे ” इत्यादि—(सू० ३४)

टीकार्थ—भगवान् महावीर साधुज्जोने अनुवक्षीने आ प्रभाण्हे क्युं—“ हे आर्या ।

યતિ-“ હે આર્યા ! એવ-નવમો વાસુદેવાનાં મધ્યે કૃષ્ણો વાસુદેવઃ ૧, તથા-રામો બલદેવઃ કૃષ્ણસ્ય જ્યેષ્ઠો ભ્રાતા ૨, તથા-ઉદકઃ-તન્નામાઽનગારઃ પેઢાલ-પુત્રઃ પાર્શ્વનાથજિનશિષ્યઃ સૂત્રકૃતાઙ્ગદ્વિતીયશ્રુતસ્કન્ધેનાલન્દીયાધ્યયનોક્તઃ, સ ચ રાજગૃહનગરવાહ્યપ્રદેશસ્થાયાસદવયમ્ભૂતાયા નાલન્દાયા એશાન્યાં દિશિ હસ્તિદ્વીપવનસ્પન્ડે વ્યવસ્થિતઃ, સ ચ નાલન્દાવિભાગસ્થં ગૌતમસ્વામિનં સ્વસંદેહં પૃષ્ઠાઽપાસ્તસંશયઃ સન્ ચાતુર્યામધર્મં વિહાય પશ્ચાયામં ધર્મં સ્વીકૃત્વાન્ ૩ તથા-પોદ્દિલઃ-તદાલ્યોઽનગારઃ ૪, તથા-શતકઃ-તદાલ્યો ગાથાપતિઃ

હે આર્યો ! એ નવમેં નારાયણ જો કૃષ્ણ વાસુદેવ હૈં વે, તથા હસકે જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા જો રામ-બલદેવ હૈં વે પેઢાલકે પુત્ર ઉદક, પોદ્દિલ, શતક ગાથાપતિ, દારુક નિર્ગન્થ, નિર્ગન્થી પુત્ર સત્યકિ શ્રાવિકા બુદ્ધ, અરઘડ પરિવ્રાજક, એવં પાર્શ્વપત્નીયા સુપાર્શ્વ આર્યિકા-એ સચ આગામી ઉત્સર્પિણીમેં ચાતુર્યામ ધર્મકી પ્રત્યગા કરકે સિદ્ધિકો પ્રાપ્ત કરેંગે યાવત્ સર્વ દુઃખોંકા અન્ત કરેંગે !

૧ નારાયણોમેંસે કૃષ્ણ વાસુદેવ એ નૌવેં નારાયણ હુએ હૈં બલદેવ એ કૃષ્ણકે ષષ્ઠે ભાઈ હુએ હૈં ઉદક નામકે જો અનગાર હુએ હૈં એ પેઢાલકે પુત્ર એ, પાર્શ્વનાથ ભગવાનકે શિષ્ય એ હનકા વર્ણન સૂત્ર કૃતાઙ્ગકે દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધમેં નાલન્દીય અધ્યયનમેં ક્રિયા ગયા હૈં, એ રાજગૃહનગરકે બાહ્ય પ્રદેશમેં રહી હુઈ નાલન્દાકી ઈશાન દિશામેં વર્તમાન હસ્તિદ્વીપ વનસ્પન્ડમેં રહતે એ હન્હોંને નાલન્દામેં રહે હુએ ગૌતમ સ્વામીસે પૂછ કર અપને સંદેહકો દૂર ક્રિયા થા, ઔર ચાતુર્યામ ધર્મકો છોડકર પંચયામ ધર્મકો ધારણ ક્રિયા થા ૩।

કૃષ્ણ વાસુદેવ નામના જે નવમાં નારાયણ છે તેઓ તથા તેમના મોટાભાઈ બળદેવ, તથા પેઢાલકે પુત્ર ઉદક, તથા પોદ્દિલ, તથા શતક ગાથાપતિ, તથા દારુક નિર્ગન્થ તથા નિર્ગન્થી પુત્ર સત્યકિ તથા શ્રાવિકાબુદ્ધ અરઘડ પરિવ્રાજક તથા પાર્શ્વપત્નીયા સુપાર્શ્વ આર્યિકા, આ નવે વ્યક્તિઓ આગામી ઉત્સર્પિણીમાં ચાતુર્યામ ધર્મની પ્રશ્નણા કરીને સિદ્ધ, બુદ્ધ, મુક્ત, પરિનિર્વૃત્ત અને સમસ્ત દુઃખોના અંત કરનારા થશે.

(૧) નવ નારાયણો (વાસુદેવો)માં નવમાં નારાયણ કૃષ્ણવાસુદેવ થઈ ગયા છે.

(૨) કૃષ્ણના મોટાભાઈનું નામ બળદેવ હતું. (૩) ઉદક નામના જે અણગાર થઈ ગયા તેઓ પેઢાલના પુત્ર હતા તેઓ પાર્શ્વનાથ ભગવાનના શિષ્ય હતા. તેમનું વર્ણન સૂત્રકૃતાંગના બીજા શ્રુત સ્કન્ધના નાલન્દીય નામના અધ્યયનમાં કરનામાં આવ્યું છે. તેઓ રાજગૃહ નગરના બહાર પ્રદેશમાં આવેલા નાલન્દાની ઈશાન દિશામાં આવેલા હસ્તિદ્વીપ નામના વનખંડમાં રહેતા હતા. તેમના મનમાં જે સંદેહ ઉત્પન્ન થયો હતો તેનું નાલદામાં તે સમયે રહેતા ગૌતમ સ્વામીએ નિવારણ કર્યું હતું. તેથી તેમણે ચાતુર્યામ ધર્મનો ત્યાગ કરીને પશ્ચ-

૫, તથા-દારુકો નિર્ગ્રન્થઃ, અયં ચ કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય પુત્રો ભગવતોઽરિષ્ટનેમિના-
થસ્ય શિષ્યોઽનુત્તરોપપાતિકસૂત્રવર્ણિનઃ ૬, તથા-સત્યકિઃ-તદાચ્યો નિર્ગ્રન્થીપુત્રઃ
=સાધ્વીપુત્રઃ, કથં ' સાધ્વ્યા બ્રહ્મચારિણ્યાઃ પુત્રઃ ? ' इति तत्कथैवम्—

ચેટકમહારાજપુત્રી સુજ્યેષ્ઠાનામ્ની જાતસંવેગા પ્રવ્રજિતા, ઉપાશ્રયમધ્યે
આતાપનાં કૃતવતી, इतश्च पेढालनामा कश्चित् परिव्राजको विद्यासिद्धी विद्यादा-
नेच्छुर्गौग्यपुरुषं ब्रह्मचारिणीपुत्रमन्वेपयंस्तत्राऽऽगतः, સુજ્યેષ્ઠાં સાધ્વીમુપાશ્ર-
યામ્યન્તર આતાપયન્તીમવઞ્ચય ધૂમિકાવ્યામોહં કૃત્વા વિદ્યાપ્રભાવાદલક્ષિતો
બીજં નિશ્ચિત્તાન્, તેન તસ્યા ગર્ભો જાતઃ, પુત્રશ્ચાજનિ, તસ્ય સત્યકિરિતિ

દારુક નિર્ગ્રન્થ કૃષ્ણ વાસુદેવકે પુત્ર થે, ઔર ભગવાન્ અરિષ્ટ નેમિ-
નાથ થે, इतका वर्णन अनुत्तरोपपातिक सूत्रमें किया गया है, सत्यकि ये
निर्ग्रन्धी साध्वीके पुत्र कैसे थे। तो इसका उत्तर इस कथासे ऐसा है—

સુજ્યેષ્ઠા નામકી ચેટક મહારાજકી એક પુત્રી થી કિસી નિમિત્ત-
વશ હસે સંસારસે વૈરાગ્ય હો ગયા સો યહ દીક્ષિત હો ગઈ એક દિન કી
વાત હૈ, કિ યહ ઉપાશ્રયમેં આનાપના કર રહી થી હતનેમેં પેઢાલ નામકા
કોઈ પરિવ્રાજક કિ જિસે અનેક વિદ્યાએં સિદ્ધ થી, વિદ્યાદાન દેનેકી
અભિલાષાવાલા હોકર કિસી બ્રહ્મ ચારિણીકે યોગ્ય પુત્રકી શોધ કરતા
હુઆ વહાં આયા.

उसने सुज्येष्ठा साध्वीको उपाश्रयके भीतर आतापना करती
हुई देखा-देखकर उसने धूमिकाव्यामोह (?) करके विद्याके प्रभावसे
अलक्षित रूपमें अपने वीर्यका प्रक्षेप उसकी योनिमें कर दिया, इससे

ય મ ધર્મને અંગીકાર કર્યો હતો (૪) દારુક નિર્ગ્રન્થ-તેઓ કૃષ્ણવાસુદેવના
પુત્ર હતા, અને ભગવાન અરિષ્ટનેમિનાથના શિષ્ય હતા. અનુત્તરોપપાતિક
સૂત્રમાં તેમનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે

(૫) સત્યકી-તેઓ નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીના પુત્ર હતા. બ્રહ્મચારિણી સાધ્વીને
પુત્ર કેવી રીતે હોઈ શકે, એ વાતનો ખુલાસો કરવામાં આવે છે-ચેટક મહા-
રાજાને સુજ્યેષ્ઠા નામની એક પુત્રી હતી તેને કોઈ કારણે સંસાર પર વૈરાગ્ય
આવી ગયો, તેથી તેણે દીક્ષા અંગીકાર કરી, ત્યારબાદ કોઈ એક દિવસે તે
ઉપાશ્રયમાં આતાપના લઈ રહી હતી. ત્યારે પેઢાલ નામનો કોઈ એક પરિ-
વ્રાજક ત્યાં આવ્યો તેણે અનેક વિદ્યાઓ સિદ્ધ કરી હતી તે કોઈ બ્રહ્મચારિણીના
પુત્રને પોતાની આ વિદ્યાઓ શિખવવા માગતો હતો તેણે સુજ્યેષ્ઠા સાધ્વીને ઉપા-
શ્રયમાં આતાપના કરતી નિહાળી તેણે પોતાની વિદ્યાના પ્રભાવથી ધૂમિકાવ્યામોહ
કરીને (અ.રે બાબુ અંધકાર કરી દઈને) અલક્ષિત રૂપે (કોઈને ખબર ન પડે

नाम जातम् । ततः सुज्येष्ठा पुत्रः सात्यकिरेकदा भगवत्समवसरणं गतः, इतश्च कालसन्दीपनामा विद्याधरो भगवन्तं वन्दित्वा पृष्ठवान्-कस्मान्मे भयमिति । भगवान् कथितवान्-एतस्मात् सत्यकेः । ततः कालसन्दीपः सात्यकिमुपेत्यावज्ज-योवाच-‘अरे ! रे ! त्वं मां हनिष्यसि ? इत्युत्तवा स्वस्थानं गतः । तत एकदा तत्पिता पेढालपरित्राजको विद्याधरः, सुज्येष्ठापुत्रं सत्यकिमपहृत्य स्वस्थाने नीतवान्, स्वविद्यां च शिक्षितवान् । अथ स सात्यकिः पञ्चसु पूर्वभग्नेषु रोहिण्या विद्यया मारितः, षष्ठभवे षण्मासावशेषायुरसौ विद्यां नैच्छत् । अस्मिन् सप्तमे उसको गर्भे रह गया । समय पर उसको पुत्र हुआ उसका ‘सात्यकि’ ऐसा नाम रखा गया, धीरे २ बाल्यावस्था पार कर जब वह सनझदार हो गया तो वह एक दिन भगवान् के समवसरणमें गया वहां पर उससे पहिले आये हुए कालसन्दीप नामके विद्याधरने भगवान् को वन्दना करके उनसे पूछा-भगवन् ! मुझे भय किमरो होगा ? भगवान् ने प्रत्युत्तरमें उससे कहा—

तुम्हे सात्यकिसे भय होगा त व कालसन्दीप सात्यकिके पास जाकर उसका तिरस्कार करते हुए बोला-अरे ! रे ! तू क्या मुझे मारेगा ! ऐसा कहकर वह फिर अपने स्थान पर चला गया एक दिन उसका पिता पेढालपरित्राजक विद्याधर सुज्येष्ठा के पुत्र सात्यकिका हरण कर अपने घर पर ले आया, और लाकर उसने उसे अपनी विद्या सिखा दी । सात्यकि पांच पूर्वभवोंमें रोहिणी विद्याद्वारा

ज्येष्ठी रीते) पोतना वीर्यने ते साध्वीनी येनिमां द्वाभल करी दीधुं. तेभी ते साध्वीने गर्भ रक्षो अने त्यार भाद योग्य समये तेथे एक पुत्रने जन्म आये. तेनुं नाम ‘सात्यकी’ राणनामां आये. धीरे धीरे भाव्यावस्था पूरी करीने ज्येष्ठी ते समज्जथे. थये त्यारे ते एक द्विजस भगवानना समवसरणमां ज्ज पछेअये. त्यां कालसन्दीप नामने एक विद्याधर पणु आवेलो हुतो. ते विद्याधरे भगवानने वंदणु करीने आ प्रभाणु पूछथुं-“हे भगवन् ! मारे केनाथी लय पामवे पडशे ?” भगवाने तेने कहुं-“तारे सात्यकीथी लय पामवे पडशे” (सात्यकी तारी हुत्था करशे). भगवानने आ प्रकारने जवाण सांल णीने कालसन्दीप सात्यकी ती पासे ज्जने तेने तिरस्कार करवा लाग्यो-“छोकरा ! शुं तुं मने मारीशकीश !” आ प्रभाणु कहीने ते पोताना निवासस्थान तरङ्ग य द्यो गयो. त्यारमाद केथ एक द्विसे सात्यकीना पिता पेढाल परि माज्जक विद्याधरे सुज्येष्ठा पासेथी सात्यकीनुं अपहरणु कथुं. ते तेने पोताने

મવે તુ સા રોહિણી વિદ્યા સિદ્ધા, તલ્લલાટે વિવરં કૃત્વા તચ્છરીરં પ્રવિષ્ઠા ।
લલાટચ્છિદ્રં ચ દેવેન તૃતીયં નેત્રં કૃતમ્ । સાત્યક્રિઃ સ્વપિતરં પેઢાલપરિવાજકં,
કાલસંદીપં વિદ્યાધરં ચ મારિતવાન્, સ્વયં ચ વિદ્યાધરચક્રવર્તી વખૂવ ७।

તથા--શ્રાવિકા બુદ્ધઃ-બુદ્ધા=જ્ઞાતા શ્રાવિકા-સુલસામિધાના યેન સશ્રાવિકા-
કાબુદ્ધઃ, આર્પત્વાદ્બુદ્ધસ્ય પરપ્રયોગઃ, અમ્બડઃ-તદાલ્યઃ પરિવાજકો વિદ્યાધર-
શ્રમણોપાસકઃ, તત્કથૈવમ્--

ચમ્પાનગરીનિવાસી અમ્બડો વિદ્યાધરઃ શ્રાવકો મહાવીરપ્રભુમમીપે ધર્મં
શ્રુત્વા રાજગૃહં પ્રયાતઃ । સ ચ ભગવતા વહુપત્ત્યોપકારાયોક્તઃ--“ સુલસાશ્રાવિકા

મારા ગયા-અતઃ-ઉસને છટે મવમેં જવ ફિ-ઉસકી આયુ છ માસકી
વાકી રહી-ઇસ વિદ્યાકી-ચાહના કરના છોડ દિયા પરન્તુ-ઇસ સાતવેં
મવમેં-ઉસે-વહ રોહિણી વિદ્યા સિદ્ધ-હો-ગઈ-સો-વહ-ઉસકે-લલાટમેં-છેદ
કરકે-શરીરમેં-પ્રવિષ્ટ-હો-ગઈ-લલાટકે-છેદકો-દેવને-તૃતીય નેત્રકે-રૂપમેં
પરિણમા દિયા-સાત્યક્રિને-અપને-પિતા-પેઢાલપરિવાજકકો-ઔર-કાલ-
સંદીપ વિદ્યાધરકો-માર દિયા-ઔર-સ્વયં વિદ્યાધરોંકા-ચક્રવર્તી-બન-ગયા ७।

અમ્બડકા વિશેષગ જો ‘શ્રાવિકા બુદ્ધ’ દિયા હૈ સો-ઉસ વિષયમેં
કથા-એસી-હૈ-અમ્બડ નામકા-કોઈ-એક વિદ્યાધર-થા,-વહ-ચમ્પાનગરીકા
રહનેવાલા-થા, શ્રાવક-થા, એક-દિનકી-ચાત-હૈ-ફિ-પહ-મહાવીર-પ્રભુકે
પાસ-ધર્મ-સુન-કર-રાજગૃહ-કી-ઔર-જવ-ચલા-તવ-ભગવાન-ને-ઉસસે

ઘેર-લઇ-ગયો. ત્યારબાદ-તેણે-તેને-પોતાની-વિદ્યાએ-શિખરી-દીધી. પાંચ
પૂર્વજનોમાં-સેઢિણી-વિદ્યા-દ્વારા-સાત્યક્રી-ને-મારી-નાખવામાં-આવ્યો-હતો-તેથી
પોતાના-છઠ્ઠા-ભવમાં-જ્યારે-પોતાનું-છ-માસનું-આયુષ્ય-બાકી-રહ્યું-હતું-ત્યારે
તેણે-તે-વિદ્યા-પ્રાપ્ત-કરવાની-અભિલાષા-છોડી-દીધી. પરન્તુ-આ-સાતમા-ભવમાં-
તેને-તે-સેઢિણી-વિદ્યા-સિદ્ધ-થઈ-ગઈ. તે-વિદ્યા-તેના-કપાળમાં-છિદ્ર-પાડીને
તેના-શરીરમાં-દાખલ-થઈ-ગઈ-તેના-કપાળમાં-જે-છિદ્ર-પડ્યું-હતું. તેનું-દેવ
દ્વારા-ત્રીજા-નેત્રમાં-પરિણમન-કરવામાં-આવ્યું. ત્યાર-બાદ-સત્યક્રીએ-તેના-પિતા
પેઢાલ-પરિવાજકને-અને-કાલસંદીપ-વિદ્યાધરને-મારી-નાખ્યા-અને-પોતે
વિદ્યાધરોના-ચક્રવર્તી-બની-ગયો.

(૬) અમ્બડ-અમ્બડને-શ્રાવિકાબુદ્ધ-વિશેષણ-લગાડવામાં-આવ્યું-છે-તેને
વિષે-આ-પ્રકારની-કથા-છે-

અમ્બડ-નામનો-કોઈ-એક-વિદ્યાધર-હતો. તે-અંપા-નગરીમાં-રહેતો-હતો
અને-શ્રમણોપાસક (શ્રાવક) હતો. એક-દિવસ-તે-મહાવીર-પ્રભુના-દર્શન-કરીને
તથા-ધર્મોપદેશ-સાંભળીને-જ્યારે-તે-રાજગૃહ-નગર-તરફ-જવા-ઉપડ્યો, ત્યારે

ધર્માચરણાર્થં નિવેદનીયા ” । તતોઽમ્બડશ્ચિન્તયામાસ—“ અહોસુલસા પુણ્યવર્તી, યા ત્રિલોકીનાથેન ધર્માચરણાર્થં નિવેદ્યતે તસ્યાઃ કઈદ્વગુણો યત્પ્રભાવેણ ભગવતા ધર્માચરણાર્થં નિવેદ્યતે इति તાવદહં તસ્યાઃ સમ્યક્ત્વં પરીક્ષે ” । તતઃ સ પરિવ્રાજકવેષધારી ગત્વા સુલસામુવાચ—‘ આયુષ્મતિ ! તવ ધર્મો ભવિષ્યતીતિ મે ભોજનં ગુરુબુદ્ધ્યા દેહિ ” । તતઃ સુલસોવાચ—યેભ્યો ગુરુબુદ્ધ્યા ભોજનં દીયતે તે વિદિતા एव । તતોઽમ્બડ આકાશે કમલં રચયિત્વા તત્રોપવિશ્ય લોકં વિસ્મા-

અનેકં જીવોંકે ઉપકારકે નિમિત્ત એસા કહા કિ “ તુમ મેરી તરફસે સુલસા શ્રાવિકાકો ધર્માચરણકે લિયે નિવેદન કરના ભગવાનકે દ્વારા ઈસ પ્રકાર કહે જાને પર ઉસને વિચાર કિયા—ઓહ ! સુલસા ઘડી પુણ્યશાલિની હૈ જો ધર્માચરણકે લિયે ત્રિલોકીનાથ ભગવાન દ્વારા પ્રેરિત કી જા રહી હૈ, યા નિવેદિત કી જા રહી હૈ અતઃ મૈં ઈસકે સમ્યક્ત્વકા પરીક્ષણ કરૂં ” એસા વિચાર કરકે ઉસને પરિવ્રાજકકા વેષ ધારણ કર લિયા ઓર સુલસાકે પાસ જાકર વહ કહને લગા— અયુષ્મતિ ! તુમ્હેં બહુત ધર્મ હોગા જો તુમ ગુરુબુદ્ધિસે મેરે લિયે ભોજન પ્રદાન કરોગી તો । તબ ઉસકી એસી વાત સુનકર સુલસા બોલી—મૈં જિન્હેં ગુરુબુદ્ધિસે આહાર દેતી હૂં વે વિદિત હી હૈ, અર્થાત્ ગુરુબુદ્ધિસે તુમકો આહાર નહીં દૂંગી । તબ અમ્બડને આકાશમેં કમલ રચકર ઓર ઉસ પર બેઠકર લોગોંકો આશ્ચર્યમેં ઢાલ દિયા લોકોંને અમ્બડકો

ભગવાન મહાવીરે અનેક જીવોં પર ઉપકાર કરવા નિમિત્તે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું—“ સુલસા શ્રાવિકાને ધર્મધ્યાન કરવાનું મારા તરફથી કહેશો.” ત્યારે મહાવીર પ્રભુએ તે વિદ્યાધરને આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તેના મનમાં એવો વિચાર થયો કે “ સુલસા કેટલી બધી પુણ્યશાલિની છે. ત્રિલોકીનાથ ભગવાનની તેના પ્રત્યે કેવી કૃપાદષ્ટિ છે ! અહો ! ખુદ મહાવીર પ્રભુ તેને ધર્મધ્યાન કરવાની પ્રેરણા આપી રહ્યા છે.” ત્યાર બાદ તેણે વિચાર કર્યો કે સુલસા શ્રાવિકાના સમ્યક્ત્વની મારે કસોટી કરવી જોઈએ. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે પરિવ્રાજકનો વેષ ધારણ કર્યો સુલસાની પાસે જઈને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—“ હે આયુષ્મતિ ! જો તું ગુરુબુદ્ધિથી (મને ગુરુ માનીને) મને ભોજન પ્રદાન કરીશ તો તને ખૂબ જ ધર્મલાભ થશે.” ત્યારે સુલસાએ તેને જવાબ આપ્યો— “ ગુરુબુદ્ધિથી કેાને આહાર પ્રદાન કરવો તે હું જાણું છું.” એટલે કે હું આપને ગુરુબુદ્ધિથી ભોજન પ્રદાન કરી શકીશ નહીં. ત્યારે અમ્બડે પોતાની

પિતૃવાન્, તતોઽમ્બડં લોકો ભોજનાય નિમન્ત્રિતવાન્, સ તુ નૈચ્છત્ । લોકાસ્તં
પ્રપ્રચ્છુઃ-ભગવન્ ! ભવાન્ કસ્ય ભોજનેન માસક્ષમણાન્તે ભાગ્યં સંવર્દ્યિષ્યતિ ?
સ પ્રત્યુવાચ-‘ સુલસાયાઃ ’ ઇતિ । તતો લોકો ગત્વા સુલસાં નિવેદયામાસ-
યથા તવ ગેહં મિશ્નુરયં મોકતુમિચ્છતિ । સુલસોવાચ-ગુરુબુદ્ધયા દાતું નોચિતમ્ ।
તતોલોકોઽમ્બડમુવાચ । સ ચ જ્ઞાતવાન્ સુલસાપરમસમ્યગ્દષ્ટિઃ, સા ચમત્કાર-
દર્શનાપિ ન વિસ્મિતા । તતોઽમ્બડો લોકેન સહ સુલસાગૃહં ગતવાન્ । તત્ર નૈપે-

ભોજનકે લિયે નિમન્ત્રિત ક્રિયા, પરન્તુ ઉસને કિસીકો ભી નિમંત્રણ
સ્વીકાર નહીં ક્રિયા તવ લોકોને ઉસસે પૂછા-ભગવન્ માસક્ષમણકે
અન્તમેં આપ અપને ભોજનસે કિસકે સૌભાગ્યકો સંવર્દિત કરેગે ?
તથ ઉસને કહા-મેં સુલસાકે સૌભાગ્યકા સંવર્દન કરુંગા, ઉસકી
એસી બાત સુનકર લોગોને સુલસાકે પાસ જાકર નિવેદન ક્રિયા-કિ
હે સુલસે ! તુમ વડી સૌભાગ્યશાલિની હો-કયોંકિ યહ મિશ્નુ તુમ્હારે
ઘર પર હી ભોજન કરના ચાહતા હૈ, તવ સુલસાને કહા-મેં ગુરુકી
બુદ્ધિસે તો હસે આહાર દેના નહીં ચાહતી હૂં, તવ લોગોને જાકર અમ્બ-
ડસે કહા-તો વહ સમક્ષ ગયા કિ સુલસા પરમ સમ્યગ્દષ્ટિ જીવ હૈ,
જો મેરે હસ ચમત્કારકો દેખકર ભી આશ્ચર્ય ચકિત નહીં બની તથ
અમ્બડ લોકોંકે સાથ સુલસાંકે ઘર પર સ્વયં ગયા વહાં વહ નૈવેધિકી-

વિધાના પ્રભાવથી આકાશમાં કમળનું નિર્માણ થયું. તે કમલ પર બેસીને તેણે
લોકોને આશ્ચર્યચકિત કરી નાખ્યા. લોકોએ તેને લોજનને માટે આમંત્રણ
આપવા માંડ્યું, પણ તેણે કોઈના આમંત્રણનો સ્વીકાર ન કર્યો. ત્યારે લોકોએ
તેને પૂછ્યું-“ ભગવન્ ! માસખમણને અન્તે આપ કયા ભાગ્યશાળીના હાથને
આહાર ગ્રહણ કરીને તેના સૌભાગ્યની અભિવૃદ્ધિ કરશે ? ” ત્યારે અમ્બડે
જવાબ આપ્યો-“ હું સુલસાને ત્યાંથી આહાર ગ્રહણ કરીને તેના સૌભાગ્યની
અભિવૃદ્ધિ કરીશ. ” તેની આ વાત સાંભળીને લોકોએ સુલસા પાસે જઈને તેને
કહ્યું-“ હે સુલસા ! તું ઘણી ભાગ્યશાળી છે, કારણ કે માસખમણને અન્તે
તે સાધુ તારા ઘરનું લોજન વહોરીને પારણું કરવાનો છે. ” ત્યારે સુલસાએ
કહ્યું-“ હું શુભાવધી (તેને મારો શુભ ગણીને) તેને આહાર પ્રદાન કરવા
માગતી નથી. ” લોકોએ અમ્બડ પાસે જઈને આ વાત તેને કહી સંભળાવી.
ત્યારે તેને ખાતરી થઈ ગઈ કે સુલસા પરમ સમ્યગ્દષ્ટિ જીવ છે. તેથી જ
મારા આ ચમત્કારની પણ તેના ઉપર બિલકુલ અસર થઈ નથી. આ પ્રકારે
સુલસાની કસોટી કરીને તે લોકોની સાથે સુલસાને ઘેર ગયો નૈવેધિકી કરતો

ધિકીં કુર્વન્ પञ્ચનમસ્કારમન્ત્રમુચ્ચારયન્ પ્રવિવેશ, સુલસાડપ્યમ્બડસ્યામ્બુત્યા-
નાદિકશિષ્ટાચારં કૃત્વતી, અમ્બડોડપિ સુલસાં પ્રશંસિતવાન્ ।

યશ્રામ્બડઔપપાતિકોપાક્ષે, 'મહાવિદેહે સેત્સવતિ' इत्येवमभिधीयते
સોડન્યોડમ્બડઃ સમ્ભાવ્યતે ૮। તથા-સુપાર્શ્વ-તદારુયા પાર્શ્વોપત્યીયાપાર્શ્વનાથ
શિષ્યશિષ્યા આર્યાડપિ ૯। एते नव जीवा आगमिष्यन्त्याम् उत्सर्पिण्यां चातु-
र्यामं-चत्वारो यामा-महाव्रतानि यस्मिन् स 'चातुर्यामोधर्मस्तं धर्मं प्रज्ञाप्य-
प्ररूप्य सेत्स्यन्ति-सिद्धिं गमिष्यन्ति, इत्यारभ्य-'यावत्' पदेन 'भोत्स्यन्ते,
मोक्ष्यन्ते, परिनिर्वास्यन्ति, सर्वदुःखानाम्' इतिग्राह्याणि, अन्तं करिष्यन्ति ।
एतेषु केचिन्मध्यमतीर्थङ्करत्वेनोत्पत्स्यन्ते, केचित्त त्केवलित्वेनेति ॥ सू० ३४ ॥

करता हुआ एवं पंचनमस्कारमंत्रका उच्चारण करता हुआ अन्दर
प्रवेश किया सुलसाने भी अम्बडका अभ्युत्थान आदि शिष्टाचार किया
एवं अम्बडने भी सुलसाकी प्रशंसा की—

“ अम्बड महाविदेहमें सिद्धि पद प्राप्त करेगा ” ऐसा जो औप-
पातिक उपाङ्गमें कहा गया है, सो वह कथन इस अम्बडके विषयमें
नहीं कहा गया है, किन्तु वह कथन अन्य अम्बडके विषयमें है ऐसा
प्रतीत होता है ।

सुपार्ष्व—यह आर्यिका थी और पार्ष्वनाथके शिष्यकी शिष्या
थी ये नौ जीव आगामी उत्सर्पिणीमें चार महा व्रतवाले धर्मकी
प्ररूपणा करके सिद्धि पदको प्राप्त करेंगे यहाँ यावत्पदसे “ भोत्स्यन्ते
मोक्ष्यन्ते, परिनिर्वास्यन्ति, सर्वदुःखानाम् ” इन पदोंका ग्रहण हुआ

થકો અને પંચ નમસ્કાર મંત્રનો જાપ કરતો તે તેના ઘરમાં દાખલ થયો.
સુલસાએ પણ અમ્બુત્યાન આદિ શિષ્ટાચાર પૂર્વક તેનો સત્કાર કર્યો. અમ્બડે
પણ સુલસાની ખૂબ જ પ્રશંસા કરી.

“અમ્બડ મહાવિદેહમાં સિદ્ધ પદ પ્રાપ્ત કરશે” આ પ્રકારનું જે કથન
ઔપપાતિક ઉપાંગમાં કરવામાં આવ્યું છે, તે કથન આ અમ્બડને અનુલક્ષીને
કરાયું નથી, પરંતુ તે કથન અન્ય અમ્બડના વિષયમાં કરવામાં આવ્યું
છે. એમ સમજવું.

સુપાર્શ્વ—તે એક આર્યિકા (સાધ્વી) હતી. તેઓ પાર્શ્વનાથ ભગવાનના
શિષ્યની શિષ્યા હતાં.

ઉપર્યુક્ત નવે જીવો આગામી ઉત્સર્પિણીમાં ચર મહાવ્રતવાળા ધર્મની
પ્રરૂપણા કરીને સિદ્ધ થશે. અહીં “યાવત્” પદથી નીચેનો સૂત્રપાઠ ગ્રહણ

પૂર્વે તીર્થદ્વરત્વયોગ્યા જીવા ઉક્તાઃ, તત્ર શ્રેણિકસ્ય તીર્થદ્વરત્વં પ્રદર્શયિ-
તુમાહ—

મૂલમ્—એસ ણં અજો ! સેણિણ રાયા ભિંમસારે કાલ-
માસે કાલં કિચ્ચા ઇમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ સીમંતણ નરણ
ચઠરાસીઈ વાસસહસ્સટ્ઠિણસુ નેરણસુ ણેરણયત્તાણ ઉવવાજિ-
હિતિ । સે ણં તત્થ ણેરણ ભવિસ્સઈ કાલે કાલોભાસે જાવ
પરમકિણ્હે વન્નેણં । સે ણં તત્થ વેયણં વેઈહિઈ ઉજ્જલં જાવ
દુરહિયાસં । સે ણં તઓ નરયાઓ ઉવ્વટ્ટેત્તા આગમેસ્સાણ
ઉસ્સપ્પિણિણ ઇહેવ જંબુદીવે દીવે ભારહે વાસે વેયહુગિરિપાયમુલે
પુંડેસુ જણવણસુ સયદુવારે ણયરે સંમુહસ્સ કુલગરસ્સ ભદ્રાણ
ભારિયાણ કુચ્છિંસિ પુમત્તાણ પચ્ચાયાહિઈં । તણં સા ભદ્રા
ભારિયા નવપહં માસાણં વહુપહિપુણ્ણાણં અદ્ધટ્ટમાણ ય રાઈં-
દિયાણં વીઢકંતાણં સુકુમાલપાણિપાયં અહીણપહિપુણ્ણપંચિંદિય-
સરીરં લક્ખણવંજણગુણોત્તરેયં જાવ સુરૂવં દારગં પયાહિઈ ।
જં રયાણિં ચ ણં સે દારણ પયાહિઈં તં રયાણિં ચ ણં સયદુવારે
ણયરે સન્નિમિત્તરવાહિરણ ભારગ્ગસો ય કુંભગ્ગસો ય પડમવાસે
ય રયણવાસે ય વાસે વાસિહિઈ । તણં તસ્સ દારયસ્સ અમ્મા-
પિયરો એકારસમે દિવસે વીઢકંતે જાવ વારસાહે દિવસે અય-
મેયારૂવં ગોણં ગુણનિપ્પણં નામધિજ્ઞં કાહિંતિ-જમ્હા ણં
અમ્હં ઇમંસિ દારગંસિ જાયંસિ સમાણંસિ સયદુવારે નયરે સન્નિમિ-
ત્તરવાહિરણ ભારગ્ગસો ય કુંભગ્ગસો ય પડમવાસે ય રયણવાસે
હૈ, इनमें कितनेक मध्यम तीर्थंकर रूपसे उत्पन्न होंगे और कितनेक
केवल्लि रूपसे उत्पन्न होंगे ॥ सू० ३४ ॥

થયો છે—બુદ્ધ થશે, મુક્ત થશે, પરિનિવૃત્ત થશે અને સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત
કરશે તેમાંથી કેટલાક મધ્યમ તીર્થંકરો રૂપે ઉત્પન્ન થશે અને કેટલાક કેવળી
રૂપે ઉત્પન્ન થશે. ॥ સૂ. ૩૪ ॥

य वासे बुद्धे तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं
महापउमे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं
काहिति—महापउमेत्ति । तएणं तं महापउमं दारगं अम्मापि-
यरो साइरेगं अट्टवासजायगं जाणित्ता महया रायाभिसेएणं
अभिसिंचिहिति । से णं तत्थ राया भविस्सइ महया हिसवंत
महंतमलयमंदरमहिंदसारे रायवन्नओ जाव रज्जं पसाहेमाणे
विहरिस्सइ, । तएणं तस्स महापउमस्स रत्तो अन्नया कयाइं
दो देवा महिद्धिया महज्जुंइया महब्बलामहाजसा महासोक्खा
सेणाकम्मं काहिति, तं जहा—पुण्णभद्देय १ माणिभद्देय २।
तएणं सयदुवारे नयरे बहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुंविय
इंभसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभियओ अन्नमन्नं सदावेहिति
एवं वइस्संति—जम्हाणं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रत्तो
दो देवा महिद्धिया जाव महासोक्खा सेणाकम्मं करोति, तं जहा—
पुण्णभद्देय माणिभद्देय, तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया महाप-
उमस्स रत्तो दोच्चेवि नामधेजे देवसेणे । तएणं तस्स महाप-
उमस्स दोच्चे वि नामधेजे भविस्सइ देवसेणेत्ति । तएणं तस्स
देवसेणस्स रत्तो अन्नया कयाइं सेए संखतलविमलसान्निगासे
चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिइ । तएणं से देवसेणे राया तं
सैयं संखतलविमलसंनिगासं चउदंनं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे
सयदुवारं नयरं मज्झं मज्झेणं अभिक्खणं २ अइज्जाहिइ य
णिज्जाहि य । तएणं सयदुवारे णयरेबहवे राईसरतलवर जाव
अन्नमन्नं सदाविस्संति, एवं वइस्संति—जम्हाणं देवाणुप्पिया ।

अम्हं देवसेणस्स रत्तो सेए संखतलविमलसंनिगासे षउदंते
हत्थिरयणे समुप्पन्ने तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया । देवसे-
णस्स रत्तो तच्चेवि नामधेज्जे विमलवाहणे । तएणं तस्स
देवसेणस्स रत्तो तच्चेवि णामधेज्जे भविस्सइ विमलवाहणे.

तएणं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्जे
वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अवभणुन्नाए
समाणे उदुंमिसरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगं-
तिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं
मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धन्नाहिं सिवाहिं
मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे २ अभि-
थुवमाणे २ य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय
मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइहिइ । तस्स णं भग-
वंतस्स साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्त-
देहे जे केई उवसग्गा उप्पज्जिस्संति, तं जहा—दिवावा माणुसा
वा तिरिक्खजोणिया वा, ते उपन्ने सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ
तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ । तएणं से भगवं ईरियासमिए
भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंधे
निरुपलेवे जहाभावणाए कंसपाईव मुक्कतोए जाव सुहुयहुया-
सणेविव तेयसा जलंते ।

कंसे संखे जीवे, गगणे वाए य सारए सलिले ।

पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गी य भारंडे ॥ १ ॥

कुंजर वसहे सांहे, नगरया चेव सागरमखोभे ।

चंदे सूरु कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥ २ ॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ, से य पडिबंधे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा--अंडए वा १, पोयएइ वा २, उग्गहेइ वा ३, पग्गहेइ वा ४, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सूइभूए लहुभूए अणप्पगंथे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ । तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं, विहारेणं अज्जवेणं, मद्दवेणं, लाघवेणं, खंतीए, -मुत्तीए, -गुत्तीए, सच्चसंजम-तवगुणसुचारियसोवच्चिय फलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतारियाए वट्टमाणस्स अणंतं अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरणाणदंसणे समुपज्जिहिइ । तएणं से भयवं अरहा जिणे भविस्सइ, केवली सव्वन्नू सव्वदरिस्सीसदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणिस्सइ पासिस्सइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं अवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी भविस्सइ । तं तं कालं मणवयकाइए जोगे वट्टमाणानां सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावेजाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ । तएणं से भयवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरणाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरलोगं अभिसामिच्चा समणानां णिग्गंथाणं

पञ्चमहव्याङ्गं सभावणाङ्गं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे
विहरिस्सइ ॥ सू० ३५ ॥

छाया—एष खलु आर्याः । श्रेणिको राजा भिम्मसारः कालमासे कालं
कृत्वा अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः सीमन्तके नरके चतुरशीतिवर्षसहस्रस्थिति-
केषु नैरयिकेषु नैरयिकतया उत्पत्स्यते । स खलु तत्र नैरयिको भविष्यति कालः
कालावभासः यावत् परमकृष्णो वर्णेन । स खलु तत्र वेदनां वेदयिष्यति—उज्ज्व-
लां यावत् दुरधिसहाय । स खलु तस्मान्नरकात् उद्धृत्य आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पि-
ष्याम् इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे चैतादयगिरिपादमूले पुण्ड्रेषु जनपदेषु
शतद्वारे नगरे संमुचेः कुलकरस्य भद्राया भार्यायाः कुक्षौ पुंस्तया प्रत्यायास्यति ।
ततः खलु सा भद्रा भार्या नवसु मासेषु बहुमतिपूर्णेषु अर्द्धाष्टिमेषु च रात्रिन्दि-
वेषु व्यतिक्रान्तेषु सुकुमारपाणिपादम् अदीनप्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरं लक्षणव्यञ्जन-
गुणोपपेतं यावत् सुरुपं दारकं प्रजनयिष्यति । यस्यां रजनौ च खलु स दारकः
प्रजनिष्यते तस्यां रजनौ च खलु शतद्वारे नगरे साभ्यन्तरवाहके भाराग्रशश्च
कुम्भाग्रशश्च पद्मवर्षश्च रत्नवर्षश्च वर्षो वर्षिष्यति । ततः खलु तस्य दारकस्य
मातापितरौ एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते यावत् द्वादशे दिवसे इदमेतद्रूपं गौणं
गुणनिष्पन्नं नामधेयं करिष्यतः—यस्मात् खलु अस्माकमस्मिन् दारके जाते सति
शतद्वारे नगरे साभ्यन्तरवाहके भाराग्रशश्च कुम्भाग्रशश्च पद्मवर्षश्च रत्नवर्षश्च वर्षो
वृष्टः, तत् भवतु खलु अस्माकमस्य दारकस्य नामधेयं महापद्मः । ततः खलु तस्य
दारकस्य मातापितरौ नामधेयं करिष्यतः महापद्मेति । ततः खलु तं महापद्मं
दारकं मातापितरौ सातिरेकम् अष्टार्षजातकं ज्ञात्वा महता राज्याभिषेकेण अभि-
षेक्ष्यतः । स खलु तत्र राजा भविष्यति, महाहिमहन्मलयमन्दरमहेन्द्रसारः राज-
वर्णकः यावत् राज्यं प्रसाधयन् विहरिष्यति । ततः खलु तस्य महापद्मस्य राज्ञः
अन्यदा कदाचित् द्वौ देवौ महर्दिकौ महाश्रुतिकौ महाबलौ महायशसौ महा-
सौख्यौ सेनाकर्म करिष्यतः, तद्यथा—पूर्णभद्रश्च १, मणिभद्रश्च २ । ततः खलु शत-
द्वारे नगरे बहवो राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापतिसार्थवाह-
प्रभृतयः अन्योन्यं शब्दयिष्यन्ति, एवं वदिष्यन्ति—यस्मात् खलु देवानुप्रियाः ।
अस्माकं महापद्मस्य राज्ञो द्वौ देवौ महर्दिकौ यावत् महासौख्यौ सेनाकर्मकुरुतः,
तद्यथा—पूर्णभद्रश्च मणिभद्रश्च, तद् भवतु खलु अस्माकं देवानुप्रियाः महापद्मस्य-
राज्ञो द्वितीयमपि नामधेयं देवसेनः इति । ततः खलु तस्य महापद्मस्य द्वितीयमपि
नामधेयं भविष्यति । देवसेन इति । ततः खलु तस्य देवसेनस्य राज्ञोऽन्यदा कदा-

चित् श्वेतशङ्खतलविमलसन्निकाशं चतुर्दन्तं हस्तिरत्नं समुत्पत्स्यते । ततः खलु स देवसेनो राजा तं श्वेतं शङ्खतलविमलसन्निकाशं चतुर्दन्तं हस्तिरत्नम् आरूढः सन् शतद्वारं नगरं मध्यमध्येन अभीक्ष्णमभीक्ष्णमतियास्यति च निर्यास्यति च । ततः खलु शतद्वारे नगरे बहवो गजेश्वरतलवर० यावत् अन्योन्यं शब्दयिष्यन्ति, एवं वदिष्यन्ति—यस्मात् खलु देवानुप्रियाः । अस्माकं देवसेनस्य राज्ञः श्वेतं शङ्खतलविमलसन्निकाशं चतुर्दन्तं हस्तिरत्नं समुत्पन्नं तद् भवतु खलु अस्माकं देवानुप्रियाः । देवसेनस्य राज्ञस्तृतीयमपि नामधेयं विमलवाहनः । ततः खलु तस्य देवसेनस्य राज्ञस्तृतीयमपि नामधेयं भविष्यति विमलवाहनः । ततः खलु स विमलवाहनो राजा त्रिंशत् वर्षाणि अगारवासमध्ये उपित्वा मातापितृभ्यां देवत्वगताभ्यां गुरुमहतरैरभ्यनुज्ञातः सन् ऋतौ शरदि संबुद्धः अनुत्तरे मोक्षमार्गे, पुनरपि लोकान्तिकैः जितकल्पिकैः देवैः ताभिः इष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभिर्मनोज्ञाभिः मनोऽमाभिः उदाराभिः कल्याणाभिः धन्याभिः शिवाभिः मङ्गल्याभिः सश्रीकाभिः वाग्भिः अभिनन्द्यमानः अभिनन्द्यमानः अभिष्टूयमानः अभिष्टूयमानश्च बहिः सुभूमिभागे उद्याने एकं देवदूष्यमादाय मुण्डो भूत्वा आगारात् अनगारितां प्रव्रजिष्यति । तस्य खलु भगवतः सातिरेकाणि द्वादशवर्षाणि नित्यं व्युत्सृष्टकाये, त्यक्ते देहे—ये केऽपि उपसर्गा उत्पत्स्यन्ते, तद्यथा—दिव्या वा मानुषा वा तिर्यग्योनिका वा, तानुत्पन्नान् सम्यक् सहिष्यते क्षमिष्यते तितिषिष्यते अध्यासिष्यते । ततः खलु स भगवान् ईर्यासमितो भाषासमितः यावत् गुप्त्रवृक्षवारी अममोऽकिञ्चनश्छिन्नग्रन्थो निरुपलेपः यथा भावनायां कांस्यपात्रीव मुक्ततीयः यावत् सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन् ।

“ कांस्यं शङ्को जीवः, गगनं वातश्च शारदं सकलम् ।

पुष्करपत्रं कुर्मः, विहगः खड्गी च भारण्डः ॥ १ ॥

कुञ्जरः वृषभः सिंहः, नागराजश्चैव सागरोऽक्षोभः ।

चन्द्रः सूरः कनकं, वसुन्धरा चैव सुहुतहुतः ” ॥ २ ॥

नास्ति खलु तस्य भगवतः कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति, स च प्रतिबन्धश्चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—अण्डज इति वा १, पोतज इति वा २, अवग्रहिकइति वा ३, प्रग्रहिकइति वा ४। यां यां दिशमिच्छति तां तां दिशमप्रतिवृद्धः शूचिभूतो लघुभूतः अनात्मग्रन्थः संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरिष्यति । तस्य खलु भगवतः अनुत्तरेण ज्ञानेन अनुत्तरेण दर्शनेन अनुत्तरेण चारित्र्येण पत्रम् आलयेन, विहारेण, आर्जवेन, मार्दवेन लाघवेन क्षान्त्या मुक्त्या गुक्त्या सत्यसंयमतपोगुणसुचरेतरोपचितकृन्ननिर्वाणमार्गेणाऽऽत्मानं भावयतो ध्यानान्तरिकायां वर्तमानस्य

અનન્તમનુત્તરં નિર્વ્યાધાતં નિરાવરણં કૃત્સ્નં પ્રતિપૂર્ણં કેવલચરજ્ઞાનદર્શનં સમુત્પ-
ત્સ્યતે । તતઃ સ્વલુ સ ભગવાન્ અર્હન્ જિનો ભવિષ્યતિ, કેવલી સર્વજ્ઞઃ સર્વદર્શી
સદેવમનુજાસુરસ્ય લોકસ્ય પર્યાયં જ્ઞાસ્યતિ, દ્રક્ષ્યતિ, સર્વલોકે સર્વજીવાનામા-
ગતિં ગતિં સ્થિતિં વ્યવનમુપપાતં તર્કં મનોમાનસિકં શુક્તં પીતં કૃતં પ્રતિસેવિતમાવિ-
ષ્કર્મ રહઃકર્મ અરહાઃ અરહસ્ય ભાગી ભવિષ્યતિ, તં તં કાલં મનોવાકાવિકે યોગે
વર્તમાનાનાં સર્વલોકે સર્વજીવાનાં સર્વમાવાન્ જાનાનઃ પશ્યન્ વિહરિષ્યતિ । તતઃ
સ્વલુ સ ભગવાન્ તેનાનુત્તરેણ કેવલચરજ્ઞાનદર્શનેન સદેવમનુજાસુરલોકમભિસ-
મેત્ય શ્રમણેભ્યો નિર્પન્થેભ્યઃ પશ્ચમહાવ્રતાનિ સમાવનાનિ પૃજીવનિકાયધર્મં
દિશન્ વિહરિષ્યતિ ॥ સૂ૦ ૩૬ ॥

ટીકા— ‘ એસ જં અઙ્ગો ! ’ इत्यादि—ગૌતમાદિસાધૂન્ સંબોધયન્મગવા-
નાહ-આર્યા ! इति=हे आर्याः ! आर्यशब्दस्य सविस्तरव्याख्या उपासकदशा-
ङ्गसूत्रे मत्कृतायामगारसंजीवनीटीकायां विलोकनीया । एषः=अत्रैव त्रयस्त्रि-
शतसूत्रोक्तानां महावीरतीर्थे निर्वर्तिततीर्थकरनामगोत्रकर्मणां नवानां जीवानां

તીર્થંકરત્વ યોગ્ય જીવોંકા કથન કર અથ સૂત્રકાર શ્રેણિકર્મે તીર્થ-
કરતાકા પ્રદર્શન કરનેકે લિયે સૂત્ર કહતે હૈં—

“ એસ જં અઙ્ગો ! સેણિય રાયા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—યહાં ગૌતમાદિ સાધુજનોંકો સંબોધિત કરતે હુએ મગવાન્ કહ
રહેહૈં—હે આર્યો ! આર્ય શબ્દકી યદિ વિસ્તૃત રૂપસે વ્યાખ્યા જાનની હો
તો ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર પર જો મેરે દ્વારા અગાર સંજીવનીટીકા કી
ગઈ હૈં ઉસમેં દેખ લેની ચાહિયે યે મહાવીરકે તીર્થમેં જિન નૌ જીવોંને
તીર્થકર નામગોત્ર કર્મકા ઉપાર્જન કિયા હૈં ઓર હસ વિષયકા કથન
૩૩ વેં સૂત્રમેં ઉપર યહીં પર કિયા જા ચુકા હૈં, ઉન જીવોંકે વીચમેં

આગામી ઝાળમાં જે જીવો તીર્થંકર બનવાના છે તેમનું કથન આગલા
સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું. મહારાજ શ્રેણિકનો જીવ પણ આગામી ઉત્સર્પિણીમાં
તીર્થંકર બનવાનો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર શ્રેણિકનું કથન કરે છે—

“ એસ જં અઙ્ગો ! સેણિય રાયા ” इत्यादि—(સૂ ૩૫)

“ હે આર્યો ! ” આ પ્રકારનું સંબોધન કરીને મહાવીર પ્રભુ ગૌતમાદિ
સાધુઓને આ પ્રમાણે કહે છે—(“ હે આર્યો ” અહીં જે આર્ય પદનો પ્રયોગ
થયો છે તે આર્ય પદની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા ઉપાસક દશાંગ સૂત્રની મેં લખેલી
અગર સંજીવની ટીકામાં આપવામાં આવ્યો છે જે નવ જીવોએ મહાવીર પ્રભુના
તીર્થમાં તીર્થંકર નામ ગોત્રનું ઉપાર્જન કર્યું છે તેમનું પણ ન ૩૩માં સૂત્રમાં

મધ્યે યઃ પ્રથમત્વેનોક્તઃ સઃ, શ્રેણિકોરાજા સ એવ મિમ્મસારઃ—મિમ્મસારાપર-
નામા, કાલમાસે—કાલાવસરે કાલં કૃત્વા અસ્યાઃ રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ સીમ-
ન્તકે—પ્રથમપ્રસ્તુતે મધ્યમાગરથે વૃત્તે પશ્ચચત્વારિંસલ્લક્ષ્યોજનાયામવિષ્કમ્ભે નરકે
ચતુરશીર્તિવર્ષસહસ્રસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષુ નૈરયિકતયા=નારકત્વેનોત્પત્તયતે, સઃ=
શ્રેણિકસ્તત્ર નૈરયિકઃ=નારકો જીવો ભવિષ્યતિ । કીદૃશઃ સ ભવિષ્યતીત્યાદ—
“કાલ” ઇત્યાદિ—સ્વરૂપેણ—કાલઃ પુનઃ કાલાવભાસઃ=તદર્શકાનાં કાલ એવાવ-
ભાસમાનો ભવિષ્યતિ, “યાવત્”—પદેન—‘ગમ્મીરલોમહર્ષઃ, ભીમઃ, ઉદ્દેગજનકઃ
એવાનિ પદાનિ ગ્રાહ્યાણિ, તત્ર—ગમ્મીરલોમહર્ષઃ—ગમ્મીરો મહાન્ લોમહર્ષો ભયવિ-
કારો यस્ય સ તથા, ભીમઃ=વિકરાલઃ, ઉત્ત્રાસકઃ=ત્રાસોત્પાદકઃ, પુનઃ પરમકૃષ્ણઃ

જો સર્વ પ્રથમ રૂપસે ગિનાયે ગયે હૈં વે શ્રેણિક રાજા કિ જિનકા નામ
મિમ્મસાર ખી હૈ કાલ માસમેં કાલ કરકે દસ રત્નપ્રમા પૃથિવીકે
સીમન્તક નરકમેં ૮૪ હજાર વર્ષની સ્થિતિવાલે નૈરયિકોમેં નૈરયિકકી
પર્યાયસે ઉત્પન્ન હોંગે સીમન્તક યહ પ્રથમ પ્રસ્તુત હૈ યહ મધ્ય ભાગમેં
સ્થિત હૈ, ગોલ હૈ ૪૫ લાખ યોજનકા હસકા આયામ ઓર વિષ્કમ્ભ
હૈ, શ્રેણિકકા જીવ વહાં એસા નારક હોગા જો કાલ કૃષ્ણવર્ણવાલા
હોગા, કાલાવભાસ દેખને વાલોંકો કાલેહી રૂપસે પ્રતિ ભાસિત હોગા,
યહાં યાવત્ શબ્દસે “ગમ્મીરલોમહર્ષઃ ભીમઃ ઉદ્દેગજનકઃ” હન
પદોંકાં ગ્રહણ હુઆહૈ, હસસે વહ મહાનહૈ લોમહર્ષ ભય વિકાર જિસકા
એસા હોગા, ભીમ વિકરાલ હોગા, ઉત્ત્રાસક—ત્રાસોત્પાદક હોગા, ઓર
વર્ણસે પરમ કૃષ્ણ હોગા, વહ શ્રેણિક જીવ વહાં એસી પીડાકા વેદના

કરવામાં આવ્યું છે. તે નવ વ્યક્તિઓમાં સૌથી પહેલી વ્યક્તિ શ્રેણિક હતી
છે. તેઓ મગધના મહારાજા અને તેમનું નામ મિનિસાર પણ હતું.)

કાળનો અવસર આવતા કાળધર્મ પામીને તે શ્રેણિક રાજા રત્નપ્રમા
પૃથ્વીના સીમાન્તક નામના ન-કાવાસમાં ૮૪ હજાર વર્ષની આયુસ્થિતિવાળા
નારકોમાં નારકની પર્યાયે ઉત્પન્ન થશે. સીમન્તક નામનું પ્રથમ પ્રસ્તુત છે તે
મધ્યભાગમાં સ્થિત છે અને તેનો આકાર ગોળ છે. તેનો આયામ અને વિષ્કંભ
(લંબાઈ, પહોળાઈ) ૪૫ લાખ યોજનપ્રમાણ છે. શ્રેણિક રાજાને એવ ત્યાં
એવા નરકરૂપે ઉત્પન્ન થશે કે જે કાળા વર્ણવાળો હશે, કાળાવભાસી હશે એટલે
કે દેખનાર પણ કાળરૂપે જ પ્રતિભાસિત થશે. અહીં ‘યાવત્ (પર્યન્ત)’ પદ
પડે “ગમ્મીર, લોમહર્ષ, ભીમઃ ઉદ્દેગજનકઃ” આ પદોને એકલું કરવામાં આવ્યાં
છે. આ પદો દ્વારા એવું પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે તેનો ભયવિકાર મહાન્
હશે, તેનું સ્વરૂપ ભીમ (વિકરાળ) હશે, તેનો દેખાવ ત્રાસજનક હશે, અને

વર્ણનાતિ શ્યામલો મવિષ્યતિ । સઃ-શ્રેણિક જીવઃ તત્ર વેદનાં=પીઠાં વેદયિષ્યતિ= અનુમવિષ્યતિ, કીદૃશીં વેદનાં વેદયિષ્યતિ? इत्याह-“उज्ज्वला-” मित्यादि-उज्ज्वलां-दुःखरूपतया जाज्वल्यमानां सुखेच्छेशेनाऽप्यस्पृष्टां ‘यावत्-पदेन’ ‘विपुलां, प्रगाढां, कटुकां, कर्कशां, चण्डां, दुःखां, दुर्गां, दिव्याम्” इत्येतानि पदानि ग्राह्याणि, तत्र-विपुलां-पुष्कलां शरीरव्यापिनीमित्यर्थः, तथा-प्रगाढां=प्रकृष्टां, कटुकां-कटुकरसजनितां यद्वा-कटुकां-कटुकद्रववदनिष्ठाम्, कर्कशां-कठोरस्पर्शसम्पादितां, यद्वा-कर्कशद्रव्यवत् कठोराम्, चण्डां-वेगवतीं सद्य एव मूर्च्छांकरीम्, दुःखां-सुखादुःखाच्चेति द्विविधवेदनामध्ये दुःखरूपां, दुर्गां=पर्व-तादिदुर्गवद् दुरुल्लङ्घ्यां, दिव्यां=परमाधार्मिकदेवकतां, किं बहुना दुरधिसहां=सोऽमुमशक्यां वेदनां वેદયિષ્યતિ ।

કરેગા-જો ઉજ્જવલ હોગી-દુઃખ રૂપસે જલતી હુઈ હોગી અર્થાત્ સુખકે લેશસે મી જો અસ્પૃષ્ટ હોગી યહોં યાવત્પદસે-વિપુલાં, પ્રગાઢાં, કટુકાં, કર્કશાં, ચણડાં, દુઃખાં, દુર્ગાં, દિવ્યામ્ ” ઇન પદોંકા ગ્રહણ છુઆં હૈ । ઇસસે વહ વિપુલ-પુષ્કલ-શરીર વ્યાપિની વેદનાકો મોગેગા પ્રગાઢ-પ્રકૃષ્ટ વેદનાકો મોગેગા, કટુક-કટુકરસજનિત અથવા-કટુક દ્રવકી તરહ અનિષ્ટ, કર્કશ-કઠોર સ્પર્શસે સમ્પાદિત અથવા-કર્કશ દ્રવ્યકી તરહ કઠોર ચણડ-વેગવાલી અર્થાત્ શીઘ્રહી મૂર્ચ્છિત કર દેનેવાલી, દુઃખ રૂપ, દુર્ગપર્વન આદિ દુર્ગકી તરહ દુરુલ્લઙ્ઘ્ય એવં દિવ્ય-પરમા-ધાર્મિક દેવકૃત એસી વેદનાકો મોગેગા અધિક કયા કહા જાય-વહ એસી વેદનાકો મોગેગા જો સહન કરનેકે લિયે મી ઉસે અશક્ય હોગી.

તેના વળુ પરમ કૃણુ હશે. હવે સત્રકાર એવાત પ્રકટ કરે છે કે શ્રેણિક રાખોનો ભવ ત્યાં કેવી પીઠા ભોગવશે-

“उज्ज्वलां, विपुलां, प्रगाढां, कटुकां, कर्कशां, चण्डां, दुःखां, दुर्गां, दिव्याम्” ते पीडा ઉજ્જવળ હશે-એટલે કે આગના જેવી દગાડનારી હશે, એટલે કે ત્યાં લેશમાત્ર સુખનો પણ સંભવ નહીં હોય તે પીઠા વિપુલ હશે, એટલે કે સમસ્ત શરીરમાં વ્યથા ઉત્પન્ન કરનારી હશે, પ્રગાઢ હશે એટલે કે આખા શરીરમાં ભયંકર વેદના ઉત્પન્ન કરનારી હશે, કટુક હશે એટલે કે કડવા રસના જેવી દુઃખ હાયક અથવા કડવા દ્રવ્યના જેવી અનિષ્ટ હશે, કર્કશ હશે-કઠોર સ્પર્શથી ઉત્પાદિત અથવા કર્કશ દ્રવ્યના જેવી કઠોર હશે, ચંડ હશે-એટલે કે વેગીલી હશે અથવા તુરત જ મૂર્ચ્છિત કરી નાખનારી હશે, દુઃખ રૂપ હશે, પર્વત આદિની જેમ દુરુલ્લઘનીય હશે, અને દિવ્ય હશે. પરમા-ધાર્મિક દેવો વડે તે પીઠા કરાતી હોવાથી તેને દિવ્ય કહી છે. આ પ્રકારની અસહ્ય વેદના તેને તે નરકવાસમાં ભોગવવી પડશે.

“ સે ણં તઓ ” ઇત્યાદિ, સશ્રેણિકજીવસ્તસ્માન્નરકામિસ્થત્યાગામિન્યા-
મૃત્સર્પિણ્યામસ્મિન્નેવ જમ્બૂદ્વીપે ભરતક્ષેત્રે વૈતાલચગિરિપાદમૂળે પુણ્ડ્રજનપદે
શતદ્વારે નગરે સંમુલ્લેઃ કુલકરસ્ય ભદ્રાભાર્યાયાઃ કુક્ષૌ જન્મગ્રહીભ્યતિ । તસ્ય જન્મ-
સમયે તસ્મિન્નગરે ભારાગ્રશઃ=ભારાગ્રપ્રમાણેન, કુમ્ભાગ્રશઃ=અનેકકુમ્ભપરિમાણેન
પુન્જરૂપેણેત્યર્થઃ પશ્વત્વટ્ટિઃ રત્નત્વટ્ટિશ્ચ ભવિષ્યતીત્યતસ્તસ્ય માતાપિતરૌ મહાપણેતિ
નામ કરિભ્યતઃ । સાતિરેકં=કિશ્ચિદધિકમ્ અષ્ટવર્ષીયં તં રાજ્યામિપેક્ષેણામિપેક્ષ્ય-

વહ શ્રેણિક જીવ ઉસ નરકસે નિકલ કર આગામી ઉત્સર્પિણી
કાલમેં હસી જમ્બૂદ્વીપમેં સ્થિત ભરત વર્ષમેં વૈતાલચગિરિકે પાદમૂલમેં
પુણ્ડ્ર જનપદમેં શતદ્વાર નગરમેં સંમુલ્લિકુલકરકી ભદ્રા ભાર્યાકી કુક્ષિમેં
પુત્ર રૂપસે જન્મ ગ્રહણ કરેગા, જબ નૌ માસ ૭। સાત દિનરાત સમાપ્ત
હો જાવેગે તથ વહ ભદ્રાભાર્યા સુકુમાર પાણિપાદવાલે અદ્દીન પ્રતિ-
પૂર્ણ પંચેન્દ્રિય શરીરવાલે, લક્ષણ ગુણોવાલે યાઘત્ સુરૂપવાલે એસે પુત્રકો
ઉત્પન્ન કરેગી જિસ રાત્રિમેં યદ્ દાર ૮ ઉત્પન્ન હોગા ઉસ રાત્રિમેં ઉસ
શતદ્વાર નગરમેં ખીતર ઘાહર ભારાગ્ર પ્રમાણસે એવં કુમ્ભાગ્રપ્રમાણ
અનેક કુમ્ભ પરિમાણસે પુન્જરૂપસે પશ્વવર્ષા ઓર રત્નવર્ષા હોગી ઉસ
દારકકે માતા પિતા જબ ૧૧ વાં દિન સમાપ્ત હો જાવેગા યાઘત્ ૧૨
વાં દિન પ્રારમ્ભ હોગા તથ ઉસ ૧૨ વેં દિનમેં હસ દારકકા હસ વિચા-
રસે હસ પ્રકારકા ગૌણ-ગુણનિષ્પન્ન નામ કરણ કરેંગે કિ જબ હમારા

તે નરકમાંથી નીકળીને શ્રેણિકને ઊવ ક્યાં જશે તે હવે પ્રકટ કરવામાં
આવે છે-તે શ્રેણિક રાત્રિને ઊવ ત્યાંથી નીકળીને આગામી ઉત્સર્પિણી કાગમાં
આ જમ્બૂદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાં વૈતાલચગિરિની તળેટીમાં આવેલા પુન્ડ્ર નામના
જનપદના શતદ્વાર નામના નગરમાં સંમુલ્લિકુલકરની ભદ્રા નામની ભાર્યાની કુખે
પુત્ર રૂપે જન્મ લેશે. ભદ્રાના ગર્ભમાં નવ માસ અને સાડા સાત દિવસ રહીને
તે સુંદર પુત્ર રૂપે જન્મ ધારણ કરશે, તેના હાથ પગ સુકુમાર હશે, તેની પાંચે
ઇન્દ્રિયો પરિપૂર્ણ હશે એટલે કે ખોડખાંપણથી રહિત હશે, તે ઉત્તમ લક્ષણો
અને ગુણોથી યુક્ત હશે અને અત્યંત સૌંદર્યસંપન્ન હશે. જે રાત્રે ભદ્રા આ
પુત્રનો જન્મ આપશે, તે રાત્રે શતદ્વાર નગરમાં અને નગરની બહાર
ભારાગ્રપ્રમાણ અને કુંભાગ્રપ્રમાણ એટલે કે અનેક કુંભ ભરાય એટલા
પક્ષોની અને અનેક રત્નોની વર્ષા થશે. જ્યારે તે પુત્રનો જન્મ
થયાને ૧૧ દિવસ પસાર થઈ જશે અને ખારમો દિવસ ખેસશે ત્યારે તે
ખાળના માતાપિતા તેનો નામકરણ વિધિ કરશે. આ ખાળકના જન્મ સમયે
શતદ્વાર નગરની ઓંઠર અને બહાર ભારાગ્રપ્રમાણ અને કુંભાગ્રપ્રમાણ (અનેક

તથા । સ રાજા કીદશો ભવિષ્યતીત્યાહ—‘ મહ્યા ’ ઇત્યાદિ—‘ રાજવર્ણકઃ ’
 ઇતિ—રાજો વર્ણકઃ—વર્ણનકારકઃ પદસમૂહઃ સ કિમવધિરિત્યાહ—‘ જાવ રઙ્ગ ’
 યાવદ્ રાજ્યં પ્રસાધયન્=કુર્વન્ વિહરિષ્યતીતિ પદપર્યન્તો રાજવર્ણકો ગ્રાહ્યઃ, સ ચ
 સવિસ્તરં જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રે વિલોકનીયઃ ।

“ તણં તસ્સ ” ઇત્યાદિ—તદનન્તરં તત્પુણ્યપ્રભાવાત્ પૂર્ણમદ્રમાણિમદ્રા-
 મિથાનો દ્વૌ દેવૌ ક્રમેણ દક્ષિણોત્તરનિકાયેન્દ્રી સેનાકર્મ=સૈન્યકાર્યં શત્રુવશીક-
 યહ દારક ઉત્પન્ન હુઆ તચ જાતદ્વાર નગરમેં ખીતર વાહર આરાય
 પ્રમાણસે એવં કુમ્ભાગ્ર પ્રમાણસે અનેક કુમ્ભ પ્રમાણસે અર્થાત્ પુંજસ્વસે
 પદ્મવર્ષા એવં રત્નવર્ષા હુઈ હસલિયે હસ હમારે પુત્રકા નામ મહાપદ્મ
 એસા હોના ચાહિયે.

એસા વિચાર કરકે વે ઉસકે માતાપિતા ઉસકા મહાપદ્મ એસા નામ
 કરેંગે, વાદમેં જવ વહ મહાપદ્મદારક કુહ અધિક આઠ વર્ષકા હો જાવેગા
 તચ વે હસકે માતાપિતા ઉસે અધિક આઠ વર્ષકા હુઆ જાનકર ઉસકા
 બડે ભારી ઠાઠવાટસે—ઉત્સવસે ઉસકા રાજ્યાભિષેક કરેંગે વહ વહાંકા
 રાજા હોગા ઉસમેં મહાહિમવાન્, મલય, મન્દર એવં મહેન્દ્રકી જૈસી
 શક્તિકા નિવાસહોગા—હસ પ્રકારસે રાજાકા વર્ણન યહાં પર અન્ય સૂત્રસે
 “વહ રાજ્ય કરેગા” યહાં તરુકા લગા લેના ચાહિયે, । રજાકા વિસ્તાર-
 પૂર્વક વર્ણન જ્ઞાતા ધર્મકથાજ્ઞ સૂત્રમેં કિયા ગયાહૈ, અતઃ વહાંદેવના ચાહિયે
 અન્યદા—કિસી સમય દો મહર્દિક, મરાઘુતિક, મહાબલિષ્ઠ, મહાયશસ્વી,

કુલપ્રમાણુ) એટલે કે પુંજરૂપે પદ્મવર્ષા અને રત્નવર્ષા થઈ હતી. તેથી આ
 પુત્રનું ‘ મહાપદ્મ ’ એવું નામ રાખવું જોઈએ. તે નામ જ શુણ્વસંપન્ન અને
 અર્થસંપન્ન (સાર્થક) થશે. આ વિચારથી પ્રેરાઈને તેઓ તેનું નામ ‘ મહાપદ્મ ’
 રાખશે. બ્યારે મહાપદ્મ આઠ વર્ષનો થશે ત્યારે તેના માતાપિતા ઘણી જ ધામ-
 ધૂમથી તેનો રાજ્યાભિષેક કરાવશે. આ રીતે તે શતદ્વાર નગરનો રાજા બનશે.
 તે મહાપદ્મ રાજા મહા હિમવાન્, મલય, મન્દર અને મહેન્દ્રતા જેવો શક્તિ-
 શાળી થશે ઇત્યાદિ તેની શક્તિ, સમૃદ્ધિ આદિનું વર્ણન અન્ય શાસ્ત્રોમાં
 રાજાઓના વર્ણન પ્રમાણે જ ગ્રહણ થવું જોઈએ. “ તે રાજ્ય કરશે ” આ
 કથન પર્યન્તનું રાજાને લગતું સમસ્ત કથન મહાપદ્મના વિષયમાં પણ
 ગ્રહણ કરવું જોઈએ (જ્ઞાતાધર્મકથાગતું સત્રમાં રાજાનું વર્ણન આપવામાં
 આવ્યું છે). ત્યારબાદ બે મહર્દિક, મહાઘુતિક, મહાબલિષ્ઠ, મહા યશસ્વી
 અને મહા સુખશાળી દેવો તેની સેનાના કાર્યના સંવાહક થશે. તે દેવોનાં

રણરૂપં વ્યાપારં કરિષ્યતઃ । તદ્વિલોચય તન્નગરનિવાસિનો વહવઃ-રાજેશ્વરતલ-
વરમાઢમ્બિકકૌટુમ્બિકેશ્યશ્રેષ્ઠિસેનાપતિસાર્થવાહમ્ભૃતયઃ, તત્ર-રાજાનઃ-
માઢલિકાઃ, ઈશ્વરાઃ=એશ્વર્યસમ્પન્નાઃ, તલવરાઃ=સન્તુષ્ટભૂપાલદત્તપદ્મવન્ધપરિભૂ-
પિતરાજકલ્પાઃ, માઢમ્બિકાઃ=ગ્રામપશ્ચશતીપતયઃ, યદ્વા-સાર્દ્ધક્રોશદ્વયપરિમિત-
પ્રાન્તરૈર્વિચ્છિધવિચ્છિધ સ્થિતાનાં ગ્રામાણામધિપતયઃ, કૌટુમ્બિકાઃ-કુટુમ્બ-
મરણે તત્પરાઃ, યદ્વા-વહુકુટુમ્બપ્રતિપાલકાઃ, હમ્બાઃ-હમો-હસ્તી, તત્પ્રમાણં
દ્રવ્યમર્હન્તીતિ તથા, તે ચ જઘન્ય-મધ્યમોત્કૃષ્ટભેદાત્ત્રિવિધાઃ, તત્ર-જઘન્યા-
હસ્તિપરિમિતમણિમુક્તાપ્રવાલસુવર્ણરજતાદિદ્રવ્યરાશિસ્વામિનઃ- મધ્યમાઃ-હસ્તિ
પરિમિતવન્નમણિ-માણિક્યરાશિસ્વામિનઃ, ઉત્કૃષ્ટાસ્તુ-હસ્તિપરિમિતકેવલવન્નરાશિ
સ્વામિનઃ, શ્રેષ્ઠિનઃ-લક્ષ્મીકૃપાકટાક્ષપ્રત્યક્ષલક્ષ્યમાણ-દ્રવિણલક્ષલક્ષણચિલક્ષણ-
હિરણ્યપદ્મસમલઙ્કૃતમૂર્ધાનો નગરપ્રધાનવ્યવહર્તારઃ, સેનાપતયઃ-ચતુરજ્ઞસેના-
નાયકાઃ, સાર્થવાહાઃ-ગણિમ-ધરિમ-મેય-પરિચ્છેય-રૂપક્રેયવિક્રેયવસ્તુ જાતમા-
દાય લાભેચ્છયા દેશાન્તરાણિ ત્રજતાં સાર્થં=જનસઙ્ગં વાહયન્તિ=યોગ-ક્ષેમાશ્યાં
પરિપાલયન્તીતિ, દીનત્રનોપકારાય મૂલધનં દત્વા તાન્ સમર્ધ્યન્તીતિ તથા,
તત્ર ગણિમમ્-એક-દ્વિ-ત્રિ-ચતુરાદિસંખ્યાક્રમેણ ગણયિત્વા યદ્ દીયતે તદ્ગણિ-
મમ્, તથા-પૂર્ણીફલ-રુદ્રકીફલાદિકમ્, ધરિમં-તુલ્યાઽઽતોલ્ય યદ્ દીયતે તત્
યથા-ત્રીદિ-ચત્ર-લવણસિતાદિ, મેયં-શરાવલઘુભાણડાદિના પરિમાય યદ્ દીયતે
તત્, યથા-દુગ્ધઘૃત-તૈલમ્ભૃતિકમ્, પરિચ્છેયં ચ-પ્રત્યક્ષતો નિકપાદિપરીક્ષયા
યદ્ દીયતે તત્, યથા-મણિમુક્તા-પ્રવાલાઽઽમરણાદિકમ્ । એતે રાજાદયો જનાઃ,
અન્યોઽન્યં મિલ્લિત્વા દેવસેવ્યત્વેન તસ્ય દ્વિતીયં દેવસેનેતિ નામ કરિષ્યન્તિ ।

एवं महा सुखशाली देव इसकी सेनाके कार्यके संवाहक होंगे उनके नाम
पूर्णभद्र और मणिभद्र होंगे यह देखकर उस शतद्वार नगरमें अनेक
राजेश्वर, तलवर, मडम्बिक कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति एवं
सार्थवाह आदि जन परस्परमें दूसरेको बुलायेंगे और फिर ऐसा विचार
करेंगे-हे देवानुप्रियो ! जिस कारण हमारे महापद्म राजाकी सेनाका

નામ પૂર્ણલદ્ર અને મણિલદ્ર હશે. આ પ્રમાણે તેની સેનાઓનું સંચાલન કરતા
દેવોને જોઈને તે શતદ્વાર નગરના અનેક રાજેશ્વરો, તલવરો, મડમ્બિકો, કૌટુ-
મ્બિકો, ઇશ્વરો, શ્રેષ્ઠિઓ, સેનાપતિઓ, સાર્થવાહો આદિ લેગાથઈને એવો
વિચાર કરશે કે “ આપણા મહારાજા મહાપદ્મની સેનાનું સંચાલન પૂર્ણલદ્ર અને
મણિલદ્ર નામના મહાદિક્ષ, મહાધૃતિક, મહાબલિષ્ઠ મહાયશસ્ત્રી અને મહા-
શૂણસંપન્ન દેવો કરે છે. તો હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણા મહારાજા મહાપદ્મનું

તદનન્તરં તસ્યૈકદા ચતુર્દન્તં શ્વેતં શઙ્ખતલવિમલં હસ્તિરત્નં સમુત્પત્સ્યતે તેન
લોકાસ્તસ્ય વિમલવાહનૈતિ તૃતીયં નામ કરિષ્યતિ । તતઃ કિમિત્યાહ—‘ તદ્દેવ
સે વિમલવાહને ” ઇત્યાદિ, તતઃ સ વિમલવાહનો રાજા ત્રિશદ્વર્ષાણિ ગૃહે ઉપિત્વા
સંચાલન કાર્ય મહદ્વિક યાવત્ મહા સૌખ્યશાલી પૂર્ણમદ્ર એવં મણિમદ્ર
યે દો દેવ કર રહે હૈં—અતઃ હમારે મહાપદ્મ રાજાકા દુસરા મી નામ
દેવસેન કયોં ન હો જાવે, હસ પ્રકારકા વિચાર કર વે ઉસકા દુસરા
નામ દેવસેન મી કરેંગે, હસ પ્રકાર જય વહ દેવસેન હસ નામસે પ્રથિન
હો જાવેગા—તવ કુલ સમય વાદ ઉસ દેવસેન રાજાકે યહાં એક હસ્તિ
રત્ન જો વર્ણમેં સફેદ હોગા એવં શંખ તલકે જૈસા વિમલ હોગા ઓર
ચાર દાંતોવાલા હોગા ઉત્પન્ન હોગા વહ દેવસેન રાજા તવ ઉસ શ્વેત-
શંખ તલકે જૈસે વિમલ ચાર દાંતોવાલે હસ્તિરત્ન પર સવાર હોકર
શતદ્વાર નગરમેં વીચોંવીચકે રાસ્તેસે વાર ૨ નિકલેગા તવ શતદ્વાર
નગરમેં અનેક વે રાજેશ્વર તલવર આદિ જન આપસમેં એકત્રિત હોકર
ફિર એસા વિચાર કરેંગે—કિ હે દેવાનુપ્રિયો ! હમારે દેવસેન રાજાકે
યહાં શ્વેત એવં શંખતલકે જૈસા વિમલ ચાર દાંતોવાલા હસ્તિરત્ન ઉત્પન્ન
હુઆ હૈ, તો હસસે હમારે દેવસેન રાજાકા તૃતીય નામ વિમલવાહન
કયોં ન હો જાવે ? હસ પ્રકાર વિચાર કરનેકે વાદ દેવસેન રાજાકા
ત્રીસરા ગામ વિમલવાહન મી હોગા, વે વિમલવાહન રાજા જય ૩૦
વર્ષ તક ઘરમેં રહ ચુકેંગે ઓર અપની આંલોંસેહી અપને માતા પિતાકા

ખીજુ’ નામ દેવસેન શા માટે ન રાખવું ? ” આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેઓ
તેનું ખીજુ’ નામ દેવસેન રાખશે. આ પ્રકારે તેનું દેવસેન નામ પ્રચલિત
થયા બાદ કેટલોક સમય વ્યતીત થયા પછી તેની હસ્તિશાળાની કોઈ એક હાથણી
એક સુંદર હસ્તિરત્નનો જન્મ આપશે. તેનો વર્ણ સફેદ હશે, અને તે શંખતલના
જેવા વિમલ હશે. તે હાથીને ચાર દંતૂશળો હશે. તે શ્વેત શંખતલના જેવા
વિમલ અને ચાર દંતૂશળોવાળા હાથી પર સવાર થઈને તે દેવસેન રાજા
શતદ્વાર નગરના રસ્તાઓ ઉપર થઈને વારંવાર અવરજવર કરશે. તેને એવા
સુંદર હાથી પર બેસીને શતદ્વાર નગરમાં વિચસ્તો બોધને પૂર્વોક્ત રાજેશ્વર,
તલવર આદિ લોકો ફરી એકત્ર થઈને એવા વિચાર કરશે કે “ હે દેવાનુ-
પ્રિયો ! આપણા દેવસેન રાજાને સફેદ વર્ણના, શંખતલ જેવાં વિમલ, ચાર
દંતૂશળવાળા હસ્તિરત્નની પ્રાપ્તિ થઈ છે. તો આપણા દેવસેન રાજાનું ત્રીજું
નામ વિમલવાહન શા માટે ન રાખવું ? ” આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેનું ત્રીજું
નામ વિમલવાહન રાખશે. તેઓ ૩૦ વર્ષ સુધી ગૃહસ્થાવાસમાં રહેશે. ત્યાર
બાદ દેવત્વ પદની જેમણે પ્રાપ્તિ કરી છે એવા તેના માતાપિતા દ્વારા તેને બોધ

मातापित्रोः परलोकगमनानन्तरं गुरुमहत्तरैः गुरवो=गौरवार्हाः, महत्तरा=अति-
शयिमहान्तो वयोवृद्धाः गुरुमहत्तरास्तैः अभ्यनुज्ञातः=भाजस्तः सन् शरदि-
कृतौ अनुत्तरे मोक्षमार्गे सम्बुद्धो भविष्यति । ततः स लोकान्तिकदेवैः इष्टादि-
विशेषणविशिष्टाभिर्वाग्भिरभिनन्द्यमानः २। अभिष्टूयमानः २ सुभूमिभागामिधे
उद्याने दीक्षितो भविष्यति । कीदृशीभिर्वाग्भिरिति-‘ इष्टाहिं ’ इत्यादि ।
इष्टाभिः=वल्लभाभिः, कान्ताभिः=अमिलपिताभिः, प्रियाभिः=प्रेमजनिकाभिः,
मनोज्ञाभिः=मनोहराभिः, मनभामाभिः=हृदयाकर्षिकाभिः=उदात्तादिस्पृष्टशब्दोच्चा-
रणयुक्ताभिः, कल्याणाभिः=कल्याणकारिकाभिः, धन्याभिः प्रशंसनीयाभिः,
शिवाभिः=वाणीदीपवर्जिताभिः, मङ्गल्याभिः=मङ्गलजनिकाभिः, सश्रीकाभिः=
अलङ्कारशोभासम्पन्नाभिरिति । ततस्त्वस्य भगवतः सातिरेकाणि द्वादशवर्षाणि
यावत् कृतकायोत्सर्गे त्यक्तदेहममत्वे सति ‘ जे केइ उवसग्गा ’ इत्यादि-वेकेऽपि
दिव्यादय उपसर्गाः समुत्पत्स्यन्ति तान् सम्पृक् यथा कर्मनिर्जरा भवति तथा

देवलोक देख लेगे-तब देवत्व पदको प्राप्त हुए ? मातापिता द्वारा वे
संबोधित किये जावेगे-गुरु ज्येष्ठजन द्वारा अभ्यनुज्ञान होकर फिर वे
संबुद्ध हुए विमल वाहन शरदऋतुमें अनुत्तर मोक्षमार्गमें लगनेके लिये
जिनकल्पिक लोकान्तिक देवों द्वारा उन इष्ट कान्त प्रिय, मनोज्ञ, मनोऽ-
म, उदार कल्याण स्वरूप, धन्य शिव, मङ्गल विधायक, श्री युक्त ऐसी
वाणीसे बार २ अभिनन्द्यमान एवं २ अभिष्टूयमान होते हुए सुभूमि
भाग नामके उद्यानमें जो नगरसे बाहर होगो पहुंचेगे वहां वे एक देव-
दूतको लेकर एवं मुण्डित होकर आगारावस्थासे अनगारावस्थामें
दीक्षित हो जावेगे.

उन भाग्यशाली विमलवाहन मुनिराजके ऊपर कुछ अधिक १२
वर्ष तक जो कोई भी उपसर्ग आवेगे जाहे वे दिव्य हों, चाहे सनुष्य

अपाशे. संशुद्ध थयेका जेवा ते विमलवाहन गुरुजनोनी-कुटुंबना वयोवृद्ध
जनोनी आशा लधने शरदऋतुमां सर्वश्रेष्ठ भुक्तिमार्गानी आराधना निमित्ते
सुभूमिभाग नामना उद्यानमां जशे. प्रव्रज्या अंगीकार करव ने साटे न्यादे
तेजो ते उद्यान तरङ्ग प्रयाण करशे त्पारे लोकान्तिक देवो धष्ट, कान्त, प्रिय,
मनोज्ञ, मनोम, उदार, कल्याण स्वरूप धन्य, शिव, भगवन्विधायक अने श्रीयुक्त
वाणी पडे वारवार तेमनी प्रशंसा करशे. आ प्रकारे तेमना अलिनहनेो अने
स्तुतिवचनेो जीवतो जीवतो ते शतद्वार नगरनी गडार आवेला सुभूमिभाग
नामना उद्यानमां पडोअशे. त्यां ते जेक देवदूथ (देवद्वारा अपर्ण थयेले वस्त्र)
लधने मुंडित थधने गृहस्थावस्थानो त्याग करीने दीक्षा अंगीकार करशे त्पार
गाह १२ वर्ष सुधी तेमना उपर जे कोई उपसर्गो आनी पडशे आडे देवकृत

सहिष्यते-सुखाद्यविकारकरणेन, क्षमिष्यते क्रोधाभावेन, तितिक्षिष्यते-अदीनभा-
वेन, अध्यासिष्यते=निश्चलभावेन जीवनाऽऽशामरणभयविमग्नतात्वात् । ततः खलु
स भगवान् कीदृशो भविष्यतीत्याह-' इरियासमिष् ' इत्यादि-स्पष्टम्, नवरम्-
अममः=ममत्ववर्जितः अकिञ्चनः=धर्मोपकरणानिरिक्तवस्तुरहितः, छिन्नग्रन्थः=
द्रव्यभावग्रन्थरहितः, अत एव-निरूपलेपः-कर्मबन्धहेतु रागादिद्वेषनवर्जितः,
तथा यथा भावनया=शास्त्रोक्तविशुद्धभावनया भावितः सन् स कांस्यपात्रीव
मुक्ततोयः-मुक्तं=त्यक्तं तोयमिव तोयं संसारबन्धहेतुत्वात्स्नेहो येन स तथा,
यथा कांस्यपात्र्यां पतितमपि तोयं लिप्तं न भवति तथा संसारबन्धहेतुः

कृत्त हों, चाहे तिर्यञ्चों द्वारा कृत्त हों-उन सबको वे अच्छी तरहसे
सहन करेंगे, उनके ऊपर थोड़ा भी क्रोध नहीं करेंगे, सहन करनेमें
वे किसी भी प्रकार की दीनताका प्रदर्शन नहीं करेंगे अङ्गिग भावसे-
उन्हे सहेगे वे ईर्यासमितवान होंगे, भाषा समित होंगे, यावत् गुप्त
ब्रह्मचारी होंगे, अकिञ्चन होंगे, छिन्नग्रन्थ होंगे, उपलेप रहित होंगे, और
शास्त्रोक्त भावनासे अरे हुए वे कांस्यपात्रीकी तरह मुक्ततोय होंगे-
संसारबन्धके हेतुभूत स्नेह भावसे रहित होंगे, एवं घृतादिकी आहु-
तिसे प्रदीप्त अग्निकी तरह तेजसे प्रदीप्त होते हुए ये विहार करेंगे ।

उस विहार अवस्थामें इन्हे कहीं पर भी प्रतिषन्ध-रुकावट नहीं
होगा, या किसी पर भी इनकी आसक्ति नहीं होगी-न अण्डज संबंधी

उपसर्गों (छाये, आड़े भनुष्यकृत उपसर्गों (छाये ते आड़े तिर्य्यकृत उपसर्गों
(छाये) ते उपसर्गोंने ते आग्यशाणी विमलवाहन मुनिराज सहन करशे. उपसर्ग
करनार पर तेज्जो सहेज पणु केध करशे नही, उपसर्गों सहन करती वणते
तेज्जो मिलकुल दीनता नही अतावे, परन्तु तेज्जो अङ्गताथी ते उपसर्गोंने
सहन करशे. तेज्जो धर्मासमित अनशे, भाषासमित अनशे, गुप्तब्रह्मचारी अनशे,
अमम (ममत्वभावथी रहित) अनशे, अकिञ्चन (धर्मोपकरण सिवायनी सामग्रीभी
रहित) थशे, छिन्नग्रन्थ (द्रव्यग्रन्थ अने भावग्रन्थथी रहित) थशे, उपलेप
रहित (रागादि भावद्रूप द्वेषथी रहित) थशे, अने शास्त्रोक्त भावनाथी युक्त
अनेला जेवा ते विमलवाहन मुनिराज कांसाना पात्रना जेवां 'मुक्ततोय'
अनशे-संसारबन्धना कारणरूप स्नेहभावथी रहित अनशे अने धी आदिनी
आहुतिथी प्रदीप्त थयेला असिना समान तेज्जथी प्रदीप्त अनीने विचरशे.

तेमनी आ विहारावस्थामां तेमने कोर्ध पणु प्रकारनी रुकावट थशे नही-
तेज्जो, अप्रतिषन्ध विहार करशे-जेटवे के तेमने कोर्ध पणु वस्तु पर आसक्ति

आसक्ति इन्हें होगी, न पोतज सम्बन्धी आसक्ति इन्हें होगी, और न प्रग्रहिक सम्बन्धी आसक्ति इन्हें होगी ये जिस २ दिशामें जानेको सोचेंगे उस २ दिशामें अप्रतिबद्ध होकर शुचिभूत हुए, लघुभूत हुए, परिग्रह रहित हुए—ये संयम एवं तपसे आत्माको भाविन करते हुए विहार करेंगे, अनुत्तर ज्ञानसे अनुत्तर दर्शनसे अनुत्तर चारित्र्यसे अनुत्तर आलयसे, अनुत्तर विहारसे, अनुत्तर आर्जवसे, अनुत्तर मार्दवसे अनुत्तर लाघवसे, अनुत्तर क्षान्तिसे, अनुत्तर मुक्तिसे, एवं सत्य, संयम तपोगुण की सम्यक् आराधनाके फलभूत निर्वाण मार्गसे अपनी आत्माको भाविन करते हुए उन भगवान् विमलवाहनको ध्यानान्तरिकामें वर्तमान हो जाने पर अनन्त अनुत्तर, निर्व्याधान, निरावरण, कृत्स्न एवं प्रतिपूर्ण ऐसा श्रेष्ठ दर्शन, केवलदर्शन उत्पन्न होगा, तब वे विमलवाहन मुनिराज भगवान् भर्हन् जिन हो जावेंगे उस अवस्थामें वे केवली सर्वज्ञ सर्वदर्शी होकर देव मनुष्य असुर सहित लोककी पर्यायोंको जानेगे, देखेगे सर्व लोकमें सर्व जीवोंकी आगति एवं गतिकी स्थितिकी, चपवनकी, उपपानकी, तर्ककी, मनोमानसिककी मुक्तीकी,

नहीं थाय,—अ ७४ विषयक आसक्ति पणु नहीं थाय, पोतज विषयक आसक्ति पणु नहीं थाय, अवग्रहित (रमेडरण आदि)मां पणु तेमने आसक्ति रडेसे नहीं. जे जे दिशामां जवाने विचार तेओ करे, ते ते दिशामां तेओ अप्रतिबद्ध, शुचिभूत, लघुभूत अने परिग्रह रहित यधने संयम अने तपशी आत्माने लावित करता थका विचरसे अनुत्तर ज्ञान वडे, अनुत्तर दर्शन वडे, अनुत्तर चारित्र वडे, अनुत्तर आलय वडे, अनुत्तर विहार वडे, अनुत्तर आर्जव वडे, अनुत्तर मार्दव वडे, अनुत्तर लाघव वडे, अनुत्तर क्षान्ति वडे, अनुत्तर मुक्ति वडे, अने सत्य संयम अने तपोगुणनी सम्यक् आराधनाना इलङ्घन निर्वाह मार्ग वडे पोताना आत्माने लावित करता जेवां ते विमलवाहन भगवान् ज्यारे ध्यानान्तरिकामां (शुक्लध्यानना गीज पादनी समाप्तिमां) वर्तमान छुंवा त्यारे अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याधात, निरावरण, कृत्स्न अने प्रतिपूर्ण डेवगज्ञान अने डेवगदर्शन उत्पन्न थसे. त्य रथी तेओ छद्मस्थ अणुगारने णदले अहंता जिन भगवान् गनी जशे. आ रीते तेओ डेवगी, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थधने देव, मनुष्य अने असुर आदिथी युज्ज लोकनी पर्यायाने जणी शकसे अने हेभी शकसे समस्त लोकमां सर्वे ज्योनी आगति अने गतिने स्थितिने, चपवनने, उपपानने, तर्कने, मनोलावने मुक्तिने, प्रतिसेवित कर्मने, प्रकट कर्मने

કૃનકો, પ્રતિસેવિનકો, પ્રકટ કર્મકો, રહઃ કર્મકો જાનેંગે ઓર દેલેંગે અતઃ હસલેાં ડનકે લિયે કોઈં ખી વસ્તુ અજ્ઞેય ઓર અદૃશ્ય નહીં રહેગી આગેકે પદોંકા અર્થ સુગમ હૈ ।

પૂર્ણમદ્ર ઓર મણિમદ્ર યે દો ક્રમશઃ દક્ષિણ નિકાયકે એવં ઉત્તર નિકાયકે ઇન્દ્ર હૈં, યે જો ડસકી સેનાકા કાર્ય શત્રુકો વશમેં કરનેકા કામ કરેંગે સો ડસકે પુણ્ય પ્રભાવસે કરેંગે ।

રાજેશ્વર આદિ પદોંકા અર્થ હસ પ્રકારસે હૈ—માળડલિક જો હોતે હૈં—વે રાજા કહલાતે હૈં । એશ્વર્ય સપન્ન જો હોતે હૈં વે ઈશ્વર કહલાતે હૈં । સન્તુષ્ટ હોકર રાજા જિન્હે પદ્મબન્ધ પ્રદાન કરતા હૈ, ઓર જો ડસસે પરિભૂષિત હોતે હૈં, એસે રાજકરુપમનુષ્ય તલવર કહલાતે હૈં—જો પાંચસો ગ્રામકે અધિપતિ હોતે હૈં, વે અથવા ઢાઈ ઢાઈ કોશકે અન્તરસે વસે ગ્રામોંકે જો અધિપતિ હોતે હૈં—વે માડમ્બિક કહલાતે હૈ । જો અપને કુટુમ્બકા ભરણ પોષણ કરનેમેં લગે રહતે હૈં, વે કૌટુમ્બિક કહલાતે હૈં । અથવા—જો અનેક કુટુમ્બોંકા પાલનપોષણ કરતે હૈં—વે કૌટુમ્બિક કહલાતે હૈં । હમ નામ હાથીકા હૈ, હાથી પ્રમાણ દ્રવ્યકે જો અધિપતિ

અને એકાન્ત કર્મને બાણી શકાશે અને દેખી શકાશે કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યા બાદ કોઈ પશ્ચવસ્તુ તેમને માટે અજ્ઞેય કે અદૃશ્ય નહીં રહે, ત્યાર બાદ જે પદો વપરાયાં છે તેનો અર્થ સ્પષ્ટ છે. આ સૂત્રમાં વપરાયેલાં કેટલાંક પદોનો અર્થ હવે સમજાવવામાં આવે છે -

પૂર્ણમદ્ર દક્ષિણ નિકાયનો ઇન્દ્ર છે અને મણિમદ્ર ઉત્તર નિકાયનો ઇન્દ્ર છે. મહાપદ્મના પુણ્યપ્રભાવને લીધે આ બન્ને ઇન્દ્રો તેની સેનાતું સંચાલન કરશે -શત્રુઓને વશ કરશે.

રાજેશ્વર આદિ જે પદો આ વપરાયાં છે, તે પદોનો અર્થ સૂત્રમાં નીચે પ્રમાણે છે—માંડલિક જે હોય છે તેને રાજા કહે છે. ઐશ્વર્ય સંપન્ન વ્યક્તિને ઇશ્વર કહે છે. ઐશ્વર્ય સંપન્ન માંડલિક રાજાને રાજેશ્વર કહે છે.

તલવર—રાજા ખુશી થઈને જેને પદ્મબન્ધપ્રદાન કરે છે, અને તે પદ્મબન્ધથી જે વિભૂષિત હોય છે એવા માણસને તલવર કહે છે.

માંડમ્બિક—૫૦૦ ગામના અધિપતિને માંડમ્બિક કહે છે અથવા અઢીઅઢી કોશને અંતરે વસેલાં ગામોનો જે અધિપતિ હોય છે તેને માંડમ્બિક કહે છે.

કૌટુમ્બિક—પોતાના કુટુંબતું ભરણપોષણ કરવાના કાર્યમાં લીન રહેનાર માણસને કૌટુમ્બિક કહે છે, અથવા અનેક કુટુંબોતું પાલનપોષણ કરનારને કૌટુમ્બિક કહે છે.

હોતે હૈં-વે હમ્ય કહલાતે હૈં, વે જઘન્ય મધ્યમ એવં ઉત્કૃષ્ટકે મેદસે ત્રીન પ્રકારકે હોતે હૈં-જો હસ્તિપ્રમાણ મણિમુક્તા પ્રવાલ સુવર્ણ રજત આદિ દ્રવ્યરાશિકે સ્વામી હોતે હૈં વે જઘન્ય હમ્ય હૈં । જો હસ્તિ પરિમિત વજ્રમણિ, માણિક્ય રાશિકે સ્વામી હોતે હૈં, વે મધ્યમ હમ્ય હૈં । ઓર જો હસ્તિપરિમિત, કેવલ વજ્ર (હિરે) રાશિકેહી સ્વામી હોતે હૈં, વે ઉત્તમ હમ્ય હૈં । જો લક્ષ્મી દેવીકી કૃપાકે કટાક્ષસે સદા નિરીક્ષ્ય માણ બને રહતે હૈં, એવં હસીસે જિનકે ઘરોમં લાઘવોકી વિભૂતિ રહતી હૈ, રાજા જિન્હેં હસી કારણ અપને નગરકા “ નગરસેઠ ” પદ પ્રદાન કરતા હૈ, ઓર હસકા સૂચક જિનકે મસ્તક પર સુવર્ણકા પદ્મ બન્ધ બંધા રહતા હૈ, એસે ભાગ્યશાલીજન શ્રેષ્ઠી કહલાતે હૈં । જો ચતુર રૂઝ સેનાકે નાયક હોતે હૈં વે સેનાપતિ કહલાતે હૈં । જો ગણિમ, ધરિમ, મેય, એવં પરિચ્છેદ્ય રૂપ ક્રેય વિક્રેય વસ્તુઓકો લેકર લાભકી ઇચ્છાસે પરદેશમં વેચનેકે લિયે જાતે હુએ જનસંઘકા યોગ ક્ષેમ દ્વારા પરિપાલન કરતે હૈં, તથા-મૂલધન દેકર જો ઁન્હે સંવર્ધિત કરતે હૈં, વે સાર્થવાહ

ઇલ-હાથીને ઇલ કહે છે. હાથીના વજન બેટલા વજનના દ્રવ્યના બે અધિપતિ હોય છે તેમને ઇલ્ય કહે છે. તેમના જઘન્ય, મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટ, એવાં ત્રણ ભેદ કહ્યા છે. જેમની પાસે હસ્તિપ્રમાણ મણિ, માતિ, પ્રવાલ, સોનું ચાંદી વિગેરે દ્રવ્યનો સમૂહ હોય છે, તેને જઘન્ય ઇલ્ય કહે છે. જેમની પાસે હસ્તિપ્રમાણ ત્રણ મણિ અને મણિકની દ્રવ્યરાશિ હોય છે તેમને મધ્યમ ઇલ્ય કહે છે, જેમની પાસે હસ્તિપ્રમાણ ત્રણ (હીરા) હોય છે તેમને ઉત્કૃષ્ટ ઇલ્ય કહે છે.

શ્રેષ્ઠી-જેમના ઉપર લક્ષ્મીદેવીની સદા કૃપાદષ્ટિ રહે છે, અને તે કારણે જેમના ઘરમાં લાખો રૂપીયા પડ્યા હોય છે અને તે કારણે રાજા જેને નગર શેઠની પદવી એનાયત કરે છે, અને નગરશેઠની પદવીનો સૂચક સુવર્ણનો પદ્મ બન્ધ જેમના મસ્તક ઉપર શોભેલો હોય છે એવા ભાગ્યશાળી પુરુષને શ્રેષ્ઠી પુરુષ કહે છે.

સેનાપતિ-ગજદળ, હથેલ રથદળ અને પાયદળ રૂપ ચતુરંગી સેનાના નાયકને સેનાપતિ કહે છે.

સાર્થવાહ-ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ક્રેય, વિક્રેય વસ્તુઓને લઈને લાભની ઇચ્છાથી પરદેશમાં તેનું વેચાણ કરવા માટે જતારા જનસમૂહનું યોગક્ષેમ દ્વારા પરિપાલન કરનાર તથા પોતાનું ધન તેમને આપીને તેમને સંવર્ધિત કરનારને સાર્થવાહ કહે છે. જે વસ્તુને ગણીને વેચવા કે

કહલાતે હૈં, જો એક દો ત્રીન ચાર આદિ સંખ્યાક્રમસે ગિનકર વસ્તુ દી જાની હૈ, વહ ગણિમ હૈ, જૈસે-ચૂળીફલ (સુપારી) કદલી ફલ આદિ તરાજૂસે તોલકર જો વસ્તુ દી જાની હૈ, વહ ધરિમ હૈં-જૈસે-ત્રીહિ યવ, લશ્મણ, મિશરી આદિ, શરાવદીપક, એવં લઘુમાળક-આદિ દ્વારા જો ખર કરકે પ્રમાણિત કર દી જાતી હૈ વહ વસ્તુ મેય હૈ, જૈસે-દૂધ, ઘૂન, તૈલ આદિ જો વસ્તુ પ્રત્યક્ષમેં કસૌટી આદિ પર કસ કર પરીક્ષા કરકે દી જાતી હૈ, વહ પરિચ્છેદ વસ્તુ હૈ, જૈસે-મણિ, મુક્તા, પ્રવાલ એવં આમરણાદિ વે રાજા આદિ જય જો ડસકા દેવસેન એસા નામ કરનેકે કારણસે હી કરે ગે।

જય વે વિમલવાહન ૩૦ વર્ષ તરુ ઘરમેં રહેંગે ઓર ડનકેહી સમક્ષ ડનકે માતાપિતા પરલોકમેં જાવેંગે તય વે દેવસેન શુભ-ગૌરવાર્હ એસે અપને મહત્તરોંસે-અતિશય મહાન્ વૃદ્ધજનોંસે આજ્ઞા પાકર શરદ્ ઋતુકે નિર્મલ જલ સમાન સર્વશ્રેષ્ઠ મુક્તિમાર્ગમેં સંબુદ્ધ હોંગે,। ડનકે સંબુદ્ધ હોને પર લોકાન્તિક દેવ આકર હૃષ્ટ આદિ વચનોંસે ડનકા વારંર અભિનન્દન કરેંગે, વારંર સંસ્તવન કરેંગે મીઠી વાણિયોંકા નામ હૃષ્ટ

ખરીદવામાં આવે છે એવી વસ્તુને ગણિમ કહે છે દાખલા તરીકે નાજિયેર, સોપારી વગેરે. જે વસ્તુને ત્રાજવા વડે બેળીને અપાય છે તે વસ્તુને ધરિમ કહે છે. જેમકે ચોખા, જવ, મીઠું, સાકર વગેરે. પળી, મણુ, પાત્ર આદિ દ્વારા ભરીને જે વસ્તુ અપાય છે તેને મેય કહે છે. જેમ કે દૂધ ઘી, તેલ વગેરે. જે વસ્તુની કસોટી પથ્થર આદિ વડે પ્રત્યક્ષ કસોટી કરીને લેવા-દેવામાં આવે છે તે વસ્તુને પરિચ્છેદ વસ્તુ કહે છે. જેમ કે મણિ, માતી, પ્રવાલ, આભૂષણો વગેરે. આ રાજેશ્વરોથી લઈને સાર્થવાહ પર્યાન્તના લોકો તેનું નામ દેવસેન પાડશે, કારણ કે દેવો પણ તેની સેનાનું સંચાલન કરતા હશે. દેવો દ્વારા તેની સેના થતી હોવાથી આ નામ રાખવાનું તેમના દ્વારા સૂચન થશે.

હવે વિમલવાહન કેવી રીતે દીક્ષા અંગીકાર કરશે તે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે-વિમલવાહન ૩૦ વર્ષની ઉંમર સુધી ગૃહસ્થાવાસમાં રહેશે, અને ત્યાર બાદ તેના માતાપિતાનું દેવલે કગમન થશે. દેવપર્યાય પામેલા માતાપિતા દ્વારા પ્રતિષ્ઠાધિત થઈને તે દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરશે. શુરુજનોની-માનને પાત્ર વડીલોની અને મહત્તરોની-અતિશય મહાન વયોવૃદ્ધજનોની આજ્ઞા લઈને શરદ્ઋતુમાં તેઓ સર્વશ્રેષ્ઠ મુક્તિમાર્ગે સંબુદ્ધ થશે. તે વખતે લોકાન્તિક દેવો તેની પાસે આવીને ઇષ્ટ આદિ પૂર્વોક્ત વચનો વડે વારંવાર તેને અભિનન્દન આપશે, તેઓ વારંવાર તેની સ્તુતિ કરશે. મીઠાં વચનોને ઇષ્ટવાણી કહે છે.

હૈ, જો મનકો રુચે એસી અભિલાષાકી વિષયમૂત વાણિયોંકા નામ કાન્ત હૈ, જિન વાણિયોંસે પ્રેમ ઉત્પન્ન હો એસી વાણિયોંકા નામ પ્રિય હૈ, મનકા હરણ જિન વાણિયોંસે હો જાતા હૈ, એસી વાણિયોંકા નામ મનોહ્ર હૈ, હૃદયકો આકર્ષિત કરનેવાલી વાણિયોંકા નામ મન આમ હૈ, ઉદાત્ત આદિ સ્પષ્ટ શબ્દોંકે ઉચ્ચારણસે યુક્ત વાણિયોંકા નામ ઉદાર હૈ, કલ્યાણકારક વાણિયોંકા નામ કલ્યાણ હૈ, પ્રશંસનીય વાણિયોંકા નામ ધન્ય હૈ, વાળીકે દોષોંસે વર્જિત વાણિયોંકા નામ શિવ હૈ, મંગલ-જનક વાણિયોંકા નામ મંગલ્ય હૈ, અલંકારોંસે શોભા સંપન્ન વાણિયોંકા નામ સશ્રીક હૈ ।

જપ દેવસેન અનગારાવસ્થામે પ્રવ્રજિત હોંગે તો વે ૧૨ વર્ષ તક કાયોત્સર્ગ કરેંગે, અપની દેહસે મમત્વભાવકા ત્યાગ કર દેંગે, ઔર જો કોઈ મી દેવ આદિક ઉપસર્ગ ઉન પર ઉત્પન્ન હોંગે વે ઉન્હેં જિસ તરહસે કર્મકી નિર્જરા હોતી હૈ, ડસ રૂપસે સહન કરેંગે, ઉનકે સહન કરનેમેં વે અપને સુખાદિમેં કિસી મી પ્રકારકી વિકૃતિ નહીં આને દેંગે યહ વાત “ સહિષ્યતે ” ક્રિયાપદ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ ।

“ ક્ષમિષ્યતે ” પદ દ્વારા યહ પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ, કિ વે ઉન ઉપ-સર્ગોં પર ક્રોધ નહીં કરેંગે “ તિત્તિક્ષિષ્યતે ” હસ પદ દ્વારા યહ પ્રકટ

મનને રુચે એવી વાણીને કાન્તવાણી કહે છે. જે વચનો પ્રિય લાગે તે વચનોને પ્રિય વાણી કહે છે જે વાણી વડે મનનું હરણ થાય—જે વાણી મનને મુગ્ધ કરી નાખે છે એવી વાણીને મનોહ્ર વાણી કહે છે. હૃદયને આકર્ષિત કરનારી વાણીને મનઃઆમ (મનોડમ) વાણી કહે છે. ઉદાત્ત આદિ સ્પષ્ટ શબ્દોના ઉચ્ચારણથી યુક્ત હોય એવી વાણીને ઉદારવાણી કહે છે કલ્યાણકારક વચનોને કલ્યાણવાણી કહે છે. પ્રશંસનીય વાણીને ધન્યવાણી કહે છે. જે વચનોમાં વાણીના કોઈ પણ દોષનો અભાવ હોય છે એવી વાણીને શિવ કહે છે. મંગલજન્યવાણીને મંગલ્ય કહે છે અને અલંકારોથી શોભાસંપન્ન બનેલી વાણીને સશ્રીકવાણી કહે છે. પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કર્યા બાદ ૧૨ વર્ષ સુધી તે દેવસેન (વિમલવાહન) અણગાર કાયોત્સર્ગ કરશે—પોતાના શરીરના મમત્વભાવનો ત્યાગ કરશે, અને ત્યારે તેમની સામે જે કોઈ દેવકૃત, મનુષ્યકૃત અથવા તિર્યચકૃત ઉપસર્ગો આવી પડશે, તેમને સમભાવપૂર્વક સહન કરીને કર્મની નિર્જરા કરશે. “સહિષ્યતે” આ ક્રિયાપદ દ્વારા એ સૂચિત કરવામાં આવ્યું છે કે જ્યારે ઉપસર્ગો આવી પડશે ત્યારે તેઓ પોતાના મુખાદિ પર કોઈ પણ પ્રકારની વિકૃતિ આવવા દીધા વિના તેમને સહન કરશે. “ક્ષમિષ્યતે” આ ક્રિયાપદ દ્વારા એ વાત પ્રકટ

ક્રિયા ગયા છે, કિંવે તે પરીવર્તોને સહન કરનેમેં કિસી મી પ્રકારકા દીનભાવ પ્રદર્શિત નહીં કરેગે “અધ્યાસિષ્યતે” પદ દ્વારા યહ પ્રકટ ક્રિયા ગયા છે, કિંવે જીવનકી આશાસે ંવં મરણકે ભયસે રહિત હોકર તે પરીવર્તોને સહન કરેગે ।

અમન શબ્દકા અર્થ છે, મમત્વસે રહિત હોના, ધર્મોપકરણસે અતિ-રિક્ત અન્ય વસ્તુઓસે રહિત હોના, હસકા નામ અકિશ્ચન છે, દ્રવ્ય-ગ્રન્થ ંર ભાવ ગ્રન્થ હન દોનો ગ્રન્થોસે રહિત હોના વહ છિન્ન ગ્રન્થ છે, નિરુપલેપ શબ્દકા અર્થ છે-કર્મગ્રન્થકે હેતુભૂત જો રાગદ્વેષ ભાવ છે, તે રાગદ્વેષ ભાવરૂપલેપસે વર્જિતહોના યથા ભાવનાકો અર્થછે-શાસ્ત્રોક્ત વિશુદ્ધ ભાવનાસેયુક્ત હોના.યહાં જો “કાંસ્યપાત્રીવ મુક્તતોયઃ” ંસા પદ કહાછે,સો તેકા ભાવ હસ પ્રકારસેછે-કિં જૈસે કાંસેકે પાત્રમેં પતિન મી જલ તેસમેં લિસ નહીં હોનાછે, તેસી પ્રકારસે સંસારકે બન્ધકા હેતુ ભૂત જો સ્નેહ છે, વહ મી તેસમેં લિસ નહીં હોના છે, યહાં યાવત્ શબ્દસે “સંસ્વદ્વનિરંજણે, જીવો દ્વ અપ્પહિયગઈ ગગનમિવ નિરાલંબણે, વાપ

કરવામાં આવી છે કે તેઓ ઉપસર્ગો કરનાર ઉપર ક્રોધ નહીં કરે પણ ક્ષમા ભાવ જ રાખશે “તિતિશ્લિષ્યતે” આ ક્રિયાપદ દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે તેઓ તે પરીવર્તો સહન કરવામાં કોઈ પણ પ્રકારે દીનભાવનું પ્રદર્શન નહીં કરે. “અધ્યાસિષ્યતે” આ ક્રિયાપદ દ્વારા એ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે કે તેઓ જીવનની આશાથી અને મરણના ભયથી રહિત થઈને એ પરીવર્તોને સહન કરશે “અમન”-એટલે મમત્વભાવથી રહિત થવું. રજોહરણ આદિ ધર્મોપકરણો સિવાયની વસ્તુઓથી રહિત હોવું તેનું નામ અકિશ્ચન છે. દ્રવ્ય ગ્રન્થ અને ભાવગ્રન્થ રૂપ બન્ને પ્રકારના ગ્રંથો (બંધનો)થી રહિત હોવું તેનું નામ ‘છિન્નગ્રન્થ છે. કર્મગ્રન્થના કારણરૂપ જે રાગાદિભાવો છે તેનાથી રહિત હોવું તેનું નામ ‘નિરુપલેપતા’ છે. યથાભાવનાથી યુક્ત થવું એટલે શાસ્ત્રોક્ત વિશુદ્ધ ભાવનાથી યુક્ત થવું. અહીં જે “કાંસ્ય-પાત્રીવમુક્તતોયઃ” આ પ્રકારનો સૂત્રપાઠ આપવામાં આવ્યો છે તેનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે સમજવો -જેવી રીતે કાંસાની થાળીમાં પડેલું જળ પણ તેમાં લિપ્ત થતું નથી-તેલના જેવી ચીકણી વસ્તુ જેમ તે કાંસાની થાળીને ચોંટી જાય છે તેમ તે કાંસાના પાત્ર સાથે ચોંટી જતું નથી એજ પ્રમાણે સંસારના બન્ધના હેતુભૂત (કારણ રૂપ) જે સ્નેહ છે તે પણ તેમાં લિપ્ત થતો નથી. અહીં ‘યાવત્’ પદ દ્વારા નીચેનો સૂત્રપાઠ ગ્રહણ કરાયો છે-“ સંસ્વદ્વનિરંજણે, જીવો દ્વ અપ્પહિય-

સ્નેહોઽપિ તસ્મિન્ લિપ્તો ન ભવતિ ' જાવ ' इति यावच्छब्देन—“ સંત્વ ઇવ નિરં-
જણે જીવોત્રિવ અપ્પહિયગઈ ગગણમિવ નિરાલંબણે, વાણ ઇવ નિરાલણ, સાર-
યસલિલં વ સુદ્ધહિયણ પુક્કપત્તં વ નિરુવલેવે, કુમ્મો ઇવ ગુત્તિંદિણ, વિહગ
ઇવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે, સ્વગ્ગિવિસાણમિવ ઇગજાણ, મારંડપક્કલીવ અપ્પમત્તે,
કુંજરે ઇવ સોંડીરે, વસમે ઇવ જાયથામે, સીહે ઇવ દુદ્ધરિસે મંદરે ઇવ અપ્પકંપે;
સાગરે ઇવ અક્કલોમે, ચંદે ઇવ સોમલેસે, સૂરે ઇવ દિત્તતેણ, જચ્ચકળગં પિવ જાય-
રુવે, વસુંધરા ઇવ સવ્વફાસવિસહે ” इति संग्रहः । तत्र-शङ्ख इव निरञ्जनः.
यथा शङ्खे किमप्यञ्जनं स्थितिं न लभते तथैव तस्मिन्ननगारे रागादिर्न तिष्ठति ।
जीव इवाप्रतिहतगतिः—यथा जीवः अव्याहतगत्या सर्वत्र याति तथाऽयमपि
देशनगरादिषु अप्रतिबन्धविहारी । गगनमिवनिरालम्बनः—कुलग्रामनगराद्यालम्ब-

इव निरालण, सारयसलिलं व सुद्धहियण, पुक्कपत्तं व निरुवलेवे કુમ્મો
इवગुत्तिंદિણ, વિહગ ઇવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે સ્વગ્ગિવિસાણમિવ ઇગજાણ,
મારંડ પક્કલીવ અપ્પમત્તે, કુંજરે ઇવ સોંડીરે વસમે ઇવ જાયથામે સીહે
ઇવ દુદ્ધરિસે, મંદરે ઇવ અપ્પકંપે, સાગરે ઇવ અક્કલોમે, ચંદે ઇવ
સોમલેસે, સૂરે ઇવ દિત્તતેણ, જચ્ચકળગં પિવ જાયરુવે વસુંધરા ઇવ
સવ્વફાસવિસહે ” इस पाठका संग्रह हुआ है ।

जिस प्रकार शंखमें कोई भी अंजन ठहरता नहीं है, उसी प्रकारसे
उस अनगरामें रागादि नहीं होंगे, जिस प्रकार जीव अप्रतिहत
गतिसे सर्वत्र जाता है—उसी प्रकारसे यह भी देश नगर आदिकोंमें
अप्रतिबन्ध विहारी होंगे, गगनकी तरह कुल, ग्राम, नगर आदिकोंमें

ગઈ, ગગણમિવ નિરાલંબણે, વાણ ઇવ નિરાલણ, સારયસલિલં વ સુદ્ધહિયણ, પુક્ક
પત્તં વ નિરુવલેવે, કુમ્મો ઇવ ગુત્તિંદિણ, વિહગ ઇવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે સ્વગ્ગિવિસાણ
મિવ ઇગજાણ, મારંડપક્કલીવ અપ્પમત્તે, કુંજરે ઇવ સોંડીરે વસમે ઇવ જાયથામે,
સીહે ઇવ દુદ્ધરિસે, મંદરે ઇવ અપ્પકંપે, સાગરે ઇવ અક્કલોમે, ચંદે ઇવ સોમલેસે,
સૂરે ઇવ દિત્તતેણ, જચ્ચકળગં પિવ જાયરુવે, વસુંધરા ઇવ સવ્વફાસવિસહે ” હવે
આ પદોનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

જેવી રીતે શંખમાં કોઈ પણ અંજન રહી શકતું નથી, એજ પ્રમાણે
તે વિમલવાહન અણુગારમાં પણ રાગાદિ રહેશે નહીં. જેમ જીવ અપ્રતિહત
ગતિથી (કોઈ પણ પ્રકારના અવરોધ રહિત ગતિથી) સર્વત્ર ગમન કરે છે,
તે પ્રમાણે તે અણુગાર પણ ગ્રામ નગર આદિમાં અપ્રતિબંધ વિહારી બનશે.
આકાશની જેમ તેઓ પણ ગ્રામ, નગર આદિકોમાં કોઈ પણ બંધના આલ-

નવર્જિતઃ, વાત इव निरालयः, यथा वातस्य न कुत्रापि गृहं वर्तते तथाऽयमपि
 गृहवर्जितः । शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः, यथा शरदौ मलापगमेन जलं निर्मलं
 भवति तथा रागद्वेषापगमेन निर्मलचित्तः, पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः, यथा कमल-
 पत्रं जलोपरिस्थितिकत्वेन निरुपलेपं भवति, तथा स्वजनविषयमङ्गराहित्येन निरु-
 पलिप्तः । कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः—कच्छपइव असंयमस्थानेभ्यः संग्रतमर्चेन्द्रियः ।
 विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः—परिवारपरित्यागात् नियतवासरहितत्वाच्च प्रतिबन्ध-
 वर्जितः । खड्गगिविषाणमिव एकजातः, खड्गी-आरण्यकःपशुः तस्य शङ्कमेकमेव
 संजायते तथा रागादि सहायवर्जितत्वेन एकीभूतः । भारण्डपक्षीवाप्रम ॥, यथा

આલમ્બન વર્જિત હોંગે, વાયુકી તરહ इसका कहीं पर भी घर नहीं
 होंगे जैसे शरद् ऋतुमें मलके विनाशसे जल निर्मल हो जाता है, उसी
 प्रकार रागद्वेषके चले जानेसे साधु निर्मल चित्तवाला होंगे, जैसे—
 कमलपत्र जलके ऊपर रहता हुआ भी उससे लिप्त नहीं होता है, उसी
 प्रकारसे ये भी स्वजन विषयसङ्ग रहित होंगे, जिस प्रकार कच्छप अपनी
 इन्द्रियोंको अपने अपनेमेंही छिपा लेता है, उसी प्रकारसे ये भी असं-
 यत स्थानोंसे समस्त इन्द्रियोंको संवृत्त करेंगे, पक्षी जिस प्रकार सर्वतो-
 विप्रमुक्त होता है, उसी प्रकार ये भी परिवारके परित्यागसे एवं नियत-
 वाससे रहित होंगे, जिस प्रकार गेंडाका एक ही सींग होता है, उसी
 प्रकार ये भी रागादि रूख सहायसे वर्जित होनेके कारण एकीभूत
 होंगे, भारण्ड पक्षीकी तरह ये सदा अग्रमत्त होंगे, अर्थात् जैसे—

બનની આશાથી રહિત બનીને વિચરશે. વચુની જેમ તેમનું પણ કોઈ નિશ્ચિત
 ઘર નહીં હોય, શરદઋતુમાં મળનો નાશ થઈ જવાથી જેમ જળ નિર્મળ બની
 જાય છે, તેમ રાગદ્વેષ રૂપ મળ દૂર થઈ જવાને કારણે તે અણુગારનું ચિત્ત
 પણ નિર્મળ બની જશે. જેમ પાણીની ઉપર ઉગવ છતાં કમળપત્ર પાણીથી
 બીજાતુ નથી એજ પ્રમાણે તેઓ પણ સંસારીજનોની વચ્ચે રહેવા છતાં
 સંસારની વસ્તુઓમાં આસક્ત નહીં થાય જેમ કાચળો પેતાના અંગોને
 પોતાના શરીરમાંજ સંકેાચી લે છે એજ પ્રમાણે તેઓ પણ અસંયતસ્થાનો
 માંથી સમસ્ત ઇન્દ્રિયોને સંવૃત્ત કરી લેશે જેમ પક્ષી સંપૂર્ણ મુક્ત થઈને
 વિચરે છે એજ પ્રમાણે તેઓ પણ પરિવારનો ત્યાગ કરીને તથા નિયત વાસથી
 રહિત બનીને મુક્તિ હોય વિચરશે. જેમ ગેંડાને એક જ શીંગડું હોય છે તેમ
 તેઓ પણ રાગાદિરૂપ સહાયથી વર્જિત હોવાને કારણે માત્ર એક જ માર્ગની
 નિર્વાણમાર્ગની આરાધનામાં એકાગ્ર બનશે. તેઓ ભારડ પક્ષીની જેમ સદા

હર્ષશોકાદિક્ષોભવર્જિનઃ । ચન્દ્રઽથ સોમલેઽયઃ-અનુપતાપદેતુમનઃ પરિણામધારી ।
 સૂર ઇવ દીપ્તતેજાઃ-દ્રવ્યતઃ શરીરકાન્ત્યા, ભાવતોજ્ઞાનેન, સૂર્યવદેદીપ્યમાનઃ ।
 જાત્યકનકમિવ જાતરૂપઃ-શોધિત સુવર્ણમિવ રાગાદિમલરાહિત્યેન સમુદ્ભૂતતે-
 જસ્કઃ । વસુન્ધરેવ સર્વસ્પર્શવિપદઃ-પૃથ્વીવત્કર્કશકઠોરાદિસ્પર્શાનુકૂલપ્રતિકૂલ-
 પરીષહોપસર્ગાદિસહનશીલ ઇતિ । તથા-સુદ્રુતહૃતાશન ઇવ તેજસા જ્વલન-ઘૃતા-
 ઘાદુતિતર્પિતાગ્નિવત્ તપઃ-સંયમતેજસા દીપ્યમાનો વિહરિષ્યતીતિ ભાવઃ । અત્ર
 સદ્ગ્રહગાથાદ્વયં મૂલે વર્તતે, તથાહિ-“ કંસે સંલે ” ઇત્યાદિ । પુનઃ કિમિત્યાહ-

આદિરૂપસે રહિત હોંગે, ચન્દ્રકે સમાન વહ સોમલેઽયાચાલે હોંગે-
 અનુપતાપકે હેતુભૂત મનઃ પરિણામકા ધારક હોંગે, સૂર્યકે સમાન વહ
 દીપ્ત તેજચાલે હોંગે-દ્રવ્યની અપેક્ષા વહ શરીર કાન્તિસે એવં ભાવની
 અપેક્ષા જ્ઞાનસે દેદીપ્યમાન હોંગે । શોધિત સુવર્ણકે સમાન વહ રાગાદિ
 મલસે રહિત હોનેકે કારણ સમુદ્ભૂત તેજયુક્ત હોંગે । પૃથ્વીનીકે સમાન
 વહ કર્કશ, કઠોર આદિ સ્પર્શોંકો એવં અનુકૂલ પ્રતિકૂલ પરીષહ ઓર
 ઉપસર્ગોંકો સહન કરનેકે સ્વભાવચાલે હોંગે, તથા-ઘૃતાદિકની આદુ-
 તિસે તર્પિત છુઈ અગ્નિની સમાન વહ સર્વદા તપ એવં સંયમકે તેજસે
 દીપ્યમાન હોતે હુએ વિચરેંગે, હસી પ્રકારસે હોંકર દેવસેન અનગાર
 મી વિચરણા કરેંગે યહાં મૂલમેં જો યેદો-“ કંસે સંલે ” ઇત્યાદિ ગાથાઈ

એટલે કે હર્ષ, શોક આદિ રૂપ ક્ષોભથી તેઓ વિહીન હશે. ચન્દ્રના સમાન
 સૌમ્ય દેશ્યાવાળા હશે-તેઓ અનુપતાપ રૂપ મનઃપરિણામના ધારક હશે તેઓ
 સૂર્યના જેવા દીપ્ત તેજવાળા હશે એટલે કે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શારીરિક કાન્તિથી
 અને ભાવથી અપેક્ષાએ જ્ઞાનથી દેદીપ્યમાન હશે. જેવી રીતે શોધિત સુવર્ણમાં
 મેલ આદિ રૂપ અશુદ્ધિને અમાવ હોવાને કારણે ચળખાટ હોય છે તેમ રાગાદિ
 મળને અમાવ થઈ જવાને કારણે તેઓ નિર્માળ તેજથી દેદીપ્યમાન થશે. પૃથ્વીની
 જેમ તેઓ સહનશીલ હશે એટલે કે કર્કશ, કઠોર આદિ સ્પર્શોંને તથા
 અનુકૂળ તથા પ્રતિકૂળ પરીષદોને સહન કરવાના સ્વભાવવાળા હશે. અગ્નિમાં
 ઘૃતાદિની આદુતિ આપવાથી જેમ અગ્નિ વધુ પ્રજ્વલિત થાય છે તેમ તેઓ
 પણ સદા તપ અને સંયમના તેજથી દેદીપ્યમાન થશે આ પ્રકારે સંયમ અને
 તપથી પેતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિમલવાહન અણુગાર ૧૨ વર્ષ પર્થત
 છન્દસ્થ રૂપ વિચરશે.

અહીં મૂળમાં જે “ કંસે સંલે ” ઇત્યાદિ-ઇત્યાદિ એ ગાવાઓ આપી છે.
 તેમને અર્થ પણ ઉપર દર્શાવ્યા પ્રમાણે જ છે.

‘ નત્થિયં ’ इत्यादि—नास्ति=न भविष्यति खलु तस्य भगवत एतादृशः पक्षो, यत् कुत्रापि तस्य प्रतिबन्धः आसक्ति भवति—भवेदित्यर्थः । स चतुर्विधः—‘अण्ड-एइ वा ’ इत्यादि—अण्डज इति वा, तत्र-अण्डज-हंसमयूरादिः ‘ ममायं हंसादि-रिति प्रतिबन्धरहितः यद्वा-अण्डजं=पट्टमूत्रजं वस्त्रादिकम्—इदं वस्त्रादिकं ममेति भावनावर्जितः १। पोतजः—हस्तादिः, तत्र न प्रतिबन्धः एवं पोतके=बालके, अथवा पोतके कार्पासिकवस्त्रेऽपि विज्ञेयम् २। अवग्रहिकम्—अवग्रहोऽस्यातीति—

हैं—उनका भी अर्थ ऐसा ही है ... “ नत्थिणं ” इत्यादि उस भगवान्‌का ऐसा पक्ष नहीं होगा कि जिससे उसकी कहीं पर भी आसक्ति हो जाय । आसक्ति चार प्रकारकी जो कही गई है, उसका अभिप्राय ऐसा है—अण्डेसे उत्पन्न हुए जो हंस मयूर आदि पक्षी हैं वे अण्डज हैं—ये हंस मयूर आदि मेरे हैं ये जो आसक्ति हैं, वह अण्डज आसक्ति होंगे उस आसक्तिसे वह रहिन होंगे अथवा—पट्टमूत्रसे जो वस्त्रादिक उत्पन्न होते हैं, बनाये जाते हैं—वे अण्डज हैं—इस अण्डज—निर्मित वस्त्रमें ये मेरे हैं ऐसी भावनासे वर्जित होना वह अण्डजासक्ति विहीनता है, इस आसक्तिसे रहित होंगे, पोतज नाम हस्ती आदिका है, इसमें जो प्रतिबन्ध रहित है, वह पोतजासक्ति विहीनता है, अथवा—“ पोषण्णवा ” की संस्कृत छाया “ पोतके वा ” ऐसी भी होती है—इस पक्षमें उसकी बालकमें अथवा कार्पासिक वस्त्रमें—सूती कपड़ेमें उसे प्रतिबन्ध नहीं

“ नत्थिणं ” इत्यादि—આ પ્રકારે વિચરતાં વિમલવાહન અણુગારમાં કેાઇ પણ વસ્તુ પ્રત્યે આસક્તિ નહીં રહે. આસક્તિ ચાર પ્રકારની કહી છે—(૧) અંડજ આસક્તિ—ઈંડામાંથી ઉત્પન્ન થતાં હંસ, મોર-આદિ જીવોને અંડજ કહે છે. આ હંસ, મયૂર આદિ પક્ષીઓ મારાં છે, આ પ્રમાણે માનવું તેનું નામ અંડજ આસક્તિ છે આ પ્રકારની આસક્તિથી તેઓ રહિત હશે અથવા—સૂત્ર (દોરા) માંથી જે વસ્ત્રાદિક બનાવવામાં આવે છે તેમનું નામ અંડજ છે. આ અંડજ નિર્મિત વસ્ત્રોમાં મમત્વભાવ ન રાખવો તેનું નામ અંડજ આસક્તિ વિહીનતા છે. (૨) પોતજ આસક્તિ—હાથી, ગાય, આદિ જીવોને પોતજ કહે છે. તે જીવો પ્રત્યે આસક્તિ રાખવી તેનું નામ પોતજ આસક્તિ છે, ને વિમલવાહન અણુગાર પોત જ આસક્તિથી રહિત હશે. અથવા—“ પોષણ્ણવા ” આ પદની સંસ્કૃત છાયા “ પોતકે વા ” થાય છે. આ સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થશે—બાલકમાં અથવા સૂતરાઉ વસ્ત્રમાં તેમને આસક્તિ નહીં રહે. (૩) પ્રથહિક આસક્તિ—રમેહરણ, સદેરક

અવગ્રહિક:-વસતિપીઠફલકાદિ:, પ્રગ્રહિક:-પ્રકર્ષેણ ગ્રહોડસ્યેતિ-ઔધિકગુપક-
રણજાતે રજોહરણસદોરકમુખવસ્ત્રિકાદિકં, તયોઃ પ્રશસ્તાપ્રશસ્તવિષયે હર્ષશોક-
વર્જિત: ૩-૪। ‘ જં ણં ’ ઇત્યાદિ-યાં યાં દિશં વિહર્તુમિચ્છતિ તાં તાં દિશં
પ્રત્યપ્રતિબદ્ધઃ, શુચિભૂત:-ભાવશુદ્ધિયા, લઘુભૂત:-અલ્પોપધિકત્વેન ગૌરવત્યાગેન
ચ, અનાત્મગ્રન્થ:-‘ અ ’ ઇતિ-અવિદ્યમાન આત્મનઃ સમ્બન્ધી ગ્રન્થઃ=હિરણ્યાદિ-
ર્યસ્યેતિ, યદ્વા-અનલ્પગ્રન્થ ઇતિચ્છાયા, તત્પક્ષે-વહાગમવાન્, યદ્વા-‘ અણુપ-
ગંથે ’ ઇતિ ષાઠઃ, તસ્ય અણુપગ્રન્થઃ ઇતિચ્છાયા, તત્પક્ષે-અનુ-અનુરૂપમ્-વિરતે-
રોચિત્યેન પ્ર-પ્રકર્ષેણ ગ્રન્થઃ-શાસ્ત્રં યસ્યેતિ, વીતરાગશાસ્ત્રસમ્પન્ન ઇત્યર્થઃ, एता-
દશઃ સન્ સંયમેન તપસાડડત્માનં ભાવયમાનો વિહરિષ્યતીતિ । પુનશ્ચ ‘ તસ્સ ણં ’
ઇત્યાદિ-તસ્ય ચલુ ભગવતઃ અનુત્તરેણ જ્ઞાનદર્શનચારિત્રેણ એવમ્-અનુત્તરેણ આલ-
હોગા જિજ્ઞાસકો ગ્રહણ આવશ્યક હોતા હૈ, એસે રજોહરણ સદોરક મુખ-

વસ્ત્રિકા આદિક પ્રગ્રહિકહૈ-इनके प्रशस्तअप्रशस्त विषयमें उसे हर्ष एवं
शोक नहीं होंगे ૩-૪ “ જં ણં ” ઇત્યાદિ-जिस जिस दिशामें वह विहार
करना चाहेगा, उस उस दिशामें अप्रतिबद्ध हुए भावशुद्धिसे युक्त हुए,
अल्प उपधिवाला होनेसे एवं गौरवका त्यागी होनेसे लघुभूत हुए
अनात्म ग्रन्थ-निज सम्बन्धी ग्रन्थसे हिरण्यादि परिग्रहसे रहित हुए
अथवा-अनल्प ग्रन्थ हुए-यहुश्रुत हुए-आगमका अधिक रूपमें ज्ञाता
हुए-अथवा “ अणुपगंथे ” अनुपग्रन्थ हुए-वीतरागके शास्त्रसे संपन्न
हुए ऐसा वह देवसेन अनगार संयम और तपसे आत्माको भाविन
करते हुए विचरण करेंगे पुनश्च—

“ તસ્સ ણં ” ઇત્યાદિ-उस भगवान् देवसेन अनगारके अनुत्तर-
असाधरण-ज्ञान दर्शन चारित्रसे एवं अनुत्तर-वसति रूप आलयेसे,

મુહુપત્તી આદિ ઉપકરણો સાધુ માટે આવશ્યક ગણાય છે તે ધર્મોપકરણોને
પ્રત્યહિક કહે છે. તેમના પ્રશસ્ત અને અપ્રશસ્ત વિષયમાં હર્ષ અને શોક ન
કરવો તેનું નામ પ્રત્યહિત આસક્તિનો ત્યાગ છે. તે વિમલવાવન અણુગાર
પ્રત્યહિક સંક્રિતી ત્યાગ રહિત બનશે.

“ જં ણં ” ઇત્યદિ-તેઓ જે દિશામાં વિચરવાની ઇચ્છા કરશે તે દિશામાં
અપ્રતિબદ્ધ (ભાવ શુદ્ધિથી યુક્ત) થઈને, લઘુભૂત (અલ્પઉપધિવાળા અને ગૌરવના
ત્યાગી હોવાને કારણે હળવા) થઈને, અનાત્મગ્રન્થ (સોના, આદિના પરિગ્રહથી
રહિત) થઈને, (આગમના અતિશય જ્ઞાતા) થઈને અથવા “ અણુપગંથે ” અનુ
પ્રગ્રન્થ (વીતરાગના શાસ્ત્રથી સંપન્ન) થઈને, સંયમ અને તપથી આત્માને
ભાવિત કરતા વિચરશે.

“ તસ્સ ણં ” ઇત્યાદિ-આ પ્રકારે ૧૨ વર્ષ સુધી સંયમ અને સમગ્ર

येन=वसतिरूपेण, अनुत्तरेण विहारेण एकरात्रादिना, एवम्-अनुत्तरेण-आर्जव-मार्दव-लाघव-क्षान्ति-मुक्तिरूपेण, तथा-सत्य-संयम-तपोगुणसुचरितसोप-चित्तफलपरिनिर्वाणमार्गेण, तत्र सत्य संयमतपोगुणा सुचरिताः=सम्यगाराधिताः, सोपचिताः, उत्कर्षतां प्राप्ताः, त एव 'फल' चि फलप्रधानः परिनिर्वाणमार्गः=मोक्षमार्गस्तेन आत्मानं भाग्यमानस्य ध्यानान्तरिकायां-ध्यानयो-शुक्लध्या-नस्य द्वितीयतृतीयपादरूपयोः अन्तरं मध्यं ध्यानान्तरं, तदेव ध्यानान्तरिका, तस्यां-शुक्लध्यानद्वितीयपादस्य समाप्ता तृतीयपादस्य चासंप्राप्ता इत्यर्थः वर्त-मानस्य अनन्तमनुत्तरं निर्व्याघातं निरावरणं कृत्स्नं प्रतिपूर्णं केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पत्स्यते । पुनश्च-‘तएणं से’ इत्यादि-ततः खलु स भगवान् जिनः केवली सर्वज्ञः सर्वदर्शी भविष्यति । ततश्च स देवमनुजामुररूपस्य लोकस्य पर्यायं, किं

अनुत्तर विहारसे-इसी प्रकार आर्जव मार्दव-लाघव क्षान्ति-मुक्ति (निर्लोभता)से, तथा-सम्यक् रूपसे आराधित एवं उत्कर्षताको प्राप्त ऐसे सत्य, संयम एवं तप गुणोंसे एवं फलप्रधान मुक्ति मार्गसे आत्माको भाविन करते हुए उन देवसेन अनगारको जब वे ध्यानान्तरिकामें-शुक्ल ध्यानके द्वितीय तृतीय पादके मध्यरूप ध्यानान्तरिकामें-शुक्लध्यानके द्वितीय पादकी समाप्तिमें और तृतीय पादकी असंप्राप्तिमें-वर्तमान होंगे तब उन्हें अनन्त अनुत्तर निर्व्याघात, निरावरण, कृत्स्न, एवं प्रतिपूर्ण सर्वोत्कृष्ट केवल ज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न होंगे ।

“तएणं से” तब ये देवसेन अनगार भगवान् अर्हन्त जिन

आराधना कर्था जाह ते विमलवाहन अणुगारने देवणज्ञान देवणदर्शननी प्राप्ति थशे अेज वातनुं हवे लंणाणुथी विवेचन करवाभां आवे छे-

ते विमलवाहन अणुगार अनुत्तर (असाधारण) ज्ञान, दर्शन अने आरित्रथी, अनुत्तर वसति (उपाश्रय) रूप आलयथी अनुत्तर विहारथी अने आर्जव, मार्दव, लाघव, क्षान्ति, मुक्ति (निर्लोभता) आदि वडे, तथा सम्यक् प्रकारे आराधित अने उत्कृष्टता युक्त संयम अने तपथी तथा इलप्रधान मुक्तिमार्गथी आत्माने भाविन थका विचरसे आ प्रकारे विचरता अेवा ते ते अणुगार न्यारे ध्यानान्तरिकाभां (शुक्लध्यानना द्वितीय तृतीयपादना मध्य भाग रूप ध्यानान्तरिकाभां-अष्टवे के शुक्ल ध्यानना द्वितीय पादनी समाप्तिमां अने तृतीय पादनी असमाप्तिमां) स्थित हशे त्यारे तेमने अनन्त, अनुत्तर, निर्व्याघात, निरावरण, कृत्स्न अने अनिपूष्य, सर्वोत्कृष्ट देवणज्ञान उत्पन्न थशे.

“तएणं से” त्याहे ते देवसेन (विमलवाहन) अणुगार भगवात अर्हन्त

बहुना सर्वलोके सर्वजीवानाम् आगत्यादिकं यावत् प्रतिसेवितं, तथा-आविष्कर्म=प्रकटकर्म,—रहः कर्म=एकान्तकर्म च ज्ञास्यति दर्शिष्यति च । स अर्हन् अरहस्य-भागी भविष्यति न तस्य किञ्चिद्गुप्तं भविष्यतीत्यर्थः । शेषं सुगमम् ॥ सू० ३५ ॥

मूलम्—से जहाणमए अज्जो ! मए णिग्गंथाणं एगे आरंभट्ठाणे पणत्ते, एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पणत्तेवेहिइ । से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं दुविहे बंधणे पणत्ते, तं जहा-पेज्ज-बंधणे दोसबंधणे, एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पणत्तेवेहिइ तं जहा-पेज्जबंधणं च । दोसबंधणं च । से जहाणामए अज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडा पणत्ता, तं जहा-मणदंडे वइदंडे कायदंडे, एवामेव महापउमेवि समणाणं णिग्गंथाणं तओ दंडे पणत्तेवेहिइ, तं जहा-मणोदंडं वइदंडं कायदंडं । से जहाणामए-एएणं अभि-लावेणं चत्तारि कसाया पणत्ता, तं जहा-कोहकसाए १ माण-कसाए २ मायाकसाए ३, लोहकसाए ४। पंचकामगुणे पणत्ते, तं जहा-सदे १ रूवे २ रसे ३ गंधे ४ फासे ५। छज्जीवणिकाया पणत्ता, तं जहा-पुढविकाइया जाव तसकाइया, एवामेव जाव

केवली सर्वज्ञ सर्वदर्शी हो जावेगे एवं देव मनुज और असुर रूप लोककी पर्यायको, किं बहुना सर्व लोकमें सर्व जीवोंके आगत्यादिकको यावत् प्रतिसेवित कर्म तथा प्रकट कर्म, एवं एकान्त कर्मके ज्ञाता और द्रष्टा हो जावेगे, इस तरह उनके लिये संसारकी कोई भी वस्तु अरहस्य-अज्ञेय नहीं रहेगी ॥ सू० ३५ ॥

जिन देवकी सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थछ जशे. त्यार णाद तेओ देव, मनुष्य अने असुर इप दोऊनी पर्यायने अने समस्त लोकमां सर्व जिवोनी आगति आदिने ज्ञाणी शकशे अने देखी शकशे. अछी “ आदि ” पद द्वारा प्रकट कर्म पर्यन्तत्वं पूर्वोक्त अधुं तेओ ज्ञाणी-देखी शकशे ओम समजवु संसारनी केछ प्रष्ट वस्तु तेमने भाटे अज्ञेय के अदृष्ट नहीं रहे. ॥ सू. ३५ ॥

તસકાઈએ । જે જહાણામએ યાણં અભિલાવેણં સત્ત મયટ્ટાણા
પણત્તા, એવામેવ મહાપડમેવિ અરહા સમણાણં નિગ્ગંથાણં
સત્ત મયટ્ટાણે પન્નવેહિઈ ! એવં અટ્ટમયટ્ટાણે, ણવંબંમચેરગુત્તીઓ,
દસવિહે સમણધમ્મે, એવં જાવ તેત્તોસં આસાયણાઉત્તિ । સે જહા-
નામએ અજ્જો ! મએ સમણાણં નિગ્ગંથાણં નગ્ગભાવે મુંડભાવે
અપહાએ અદંતવળે અચ્છત્તએ અણુવાણહએ મૂમિસેજ્જા ફલગ-
સેજ્જા કટ્ટસેટ્ટા કેસલોએ બંમચેરવાસે જાવ પરઘરપવેસે જાવ
લદ્ધાવલદ્ધવિત્તીઓ પણત્તાઓ, એવામેવ મહાપડમેઽવિ અરહા
સમણાણં નિગ્ગંથાણં નગ્ગભાવં જાવ લદ્ધાવલદ્ધવિત્તીઓ પણ-
વેહિઈ । સે જહાણામએ અજ્જો ! મએ સમણાણં નિગ્ગંથાણં
આહાકમ્મિએ વા ઉદ્દેસિએ વા મીસજાએ વા અજ્જોયરએ વા
પુઙ્ગાએ વા પામિચ્ચએ વા અચ્છેજ્જેવા, અણિસિદ્ધે વા અભિ-
હદે વા કંતારમત્તે વા દુઘ્મિચ્છલમત્તે વા ગિલાણમત્તે વા વદ્ધ-
લિયામત્તે વા પાહુણમત્તે વા મૂલભોયણે વા કંદભોયણે વા
બીયભોયણે વા હરિયભોયણે વા પડિસિદ્ધે, એવામેવ મહાપડ-
મેઽવિ અરહા સમણાણં નિગ્ગંથાણં આધાકમ્મિયં વા જાવ
હરિયભોયણં વા પડિસેહિસ્સઈ । સે જહાણામએ અજ્જો ! મએ
સમણાણં નિગ્ગંથાણં પંચમહવ્વઈએ સપડિક્કમણે અચ્ચેલએ ધમ્મે
પણત્તે, એવામેવ મહાપડમેઽવિ અરહા સમણાણં નિગ્ગંથાણં

“ સે જહાણામએ અજ્જો ” इत्योदि ।

इस सूत्रकी व्याख्या सुगम है,

“ एगे आरंभट्टाणे ” प्रमादयोग रूप एक आरम्भ स्थानकी प्रज्ञा-
पना करेगे । शेष सुगम है ॥ सूत्र ३६ ॥

“ સે જહાણામએ અજ્જો ! ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૩૬)

આ સૂત્રની વ્યાખ્યા સરળ છે. “ એગે આરંભટ્ટાણે ” પ્રમાદ-યોગ રૂપ એક
આરંભસ્થાનની પ્રજ્ઞાપના તેઓ કરશે બાકીના કથનનો અર્થ સરળ છે ॥ સૂત્ર ૩૬ ॥

पंचमहव्वइयं जाव अचेलगं धम्मं पणवेहिइ । से जहाणामए अज्जो ! मए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे साव-
गधम्मं पणत्ते, एवामेव महापउमेऽवि अरहा पंचाणुव्वइयं
जाव सावगधम्मं पणविस्सइ । से जहाणामए अज्जो । मए
समणाणं सेज्जातरपिंडे वा रायपिंडे वा पडिसिद्धे, एवामेव
महापउमेऽवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सेज्जायरपिंडं वा
रायपिंडं वा पडिसोहिस्सइ । से जहाणामए अज्जो ! मम णव
गणा एगारसगणधरा एवामेव महापउमस्सवि अरिहओ णव
गणा एगारस गणधरा भविस्संति । से जहाणामए अज्जो !
अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव
पव्वइए, दुवालससंवच्छराइं तेरसपक्खच्छउमत्थपरियागं
पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरि-
यागं पाउणित्ता बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता
बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिसं जाव सव्वदुक्खा-
णमंतंकरिस्सं, एवामेव महापउमेऽवि अरहातीसं वासाइं अगा-
रवासमज्झे वसित्ता जाव पव्विहिइ, दुवालससंवच्छराइं जाव
बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिइ जाव सव्वदु-
क्खाणमंतं काहिई—

“ जं सीलसमायारो, अरहा तित्थंकरो महावीरो ।

तस्सील समायारो होहिइ अरहा महापउमे ॥१॥”सू०३६॥

॥ इय महापउमचरियं समत्तं ॥

इस ऊपरके सूत्रमें महापद्म जिन कहे गये हैं । उनके महावीर
स्वामीकी तरह उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र जन्मादिके प्रसङ्ग समयमें था,
अतः अब सूत्रकार नक्षत्र विशेषोंका निरूपण करते हैं—

आगला ये सूत्रमां आगामी उत्तरपिष्ठीमां यनारा मडापद्म जिनेश्वर विषे
कडेवाभां आयु. मडावीर स्वामीना जन्मादि वपते जेम उत्तरा श्राव्णुनी नक्षत्र
आल्लुं डतुं, तेम मडापद्म जिनेश्वरना जन्मादिना समये उत्तराश्राव्णुनी नक्षत्र

छाया—तद् यथा नामकम्-आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्य एकमा-
रम्भस्थानं प्रज्ञप्तम्, एवमेव महापद्मोऽपि अर्हन् श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्य एकमार-
म्भस्थानं प्रज्ञापयिष्यति । तद् यथानामकम्-आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्र-
न्थेभ्यो द्विविधं बन्धनं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा—प्रेमबन्धनं च द्वेषबन्धनं च एवमेव महाप-
द्मोऽपि अर्हन् श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यो द्विविधं बन्धनं प्रज्ञापयिष्यति, तद्यथा—
प्रेमबन्धनं च द्वेषबन्धनं च । तद् यथा नामकम्-आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्र-
न्थेभ्यस्त्रयोदण्डाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—मनोदण्डः १ वाग्दण्डः २ कायदण्डः ३
एवमेव महापद्मोऽपि श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यस्त्रीन् दण्डान् प्रज्ञापयिष्यति, तद्यथा—
मनोदण्डं वाग्दण्डं कायदण्डम् । तद्यथा—नामकम्-एतेन अभिलापेन चत्वारः
कपायाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्रोधकषायः १, मानकषायः २, मायाकषायः ३,
लोभकषायः ४। पञ्च कामगुणः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—शब्दः १, रूपं २, रसः ३,
गन्धः ४ स्पर्शः ५। षड्जीविकायाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—पृथिवीकायिकाः १ यावत्
त्रसकायिकाः ६। एवमेव यावत् त्रसकायिकान् । तद् यथानामकम्-एतेनाभिला-
पेन सप्तभयस्थानानि प्रज्ञप्तानि, एवमेव महापद्मोऽप्यर्हन् श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यः
सप्त भयस्थानानि प्रज्ञापयिष्यति । एवमष्ट मदस्थानानि, नव ब्रह्मचर्यगुप्तीः,
दशविधान् श्रमणधर्मान् एवं यावत् त्रयस्त्रिंशत्तमाशातना इति । तद् यथानामकम्-
आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यो नग्नभावः, मुण्डभावः अस्नानकम्, अदन्त-
धावनम्, अच्छत्रकम्, अनुपानत्कम्, भूमिशय्या, फलकशय्या, काष्ठशय्या, केश-
लोचः, ब्रह्मचर्यवासः, परगृहप्रवेशः, यावत् लब्धापलब्धवृत्तयः प्रज्ञप्ताः, एव-
मेव महापद्मोऽपि अर्हन् श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यो नग्नभावं यावत् लब्धापलब्धवृत्तीः
प्रज्ञापयिष्यति । तद् यथानामकम्-आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्य आधा-
कर्मिकं वा औद्देशिकं वा मिश्रजातं वा अध्यवपूरकं वा पूतिकं वा क्रीतं वा मामि-
त्यकं वा आच्छेद्यं वा अनिष्टं वा अभ्याहृतं वा कान्तारमक्तं वा, दुर्मिक्षमक्तं
वा ग्लानमक्तं वा वार्दलिकमक्तं वा प्राद्युगमक्तं वा मूलभोजनं वा कन्दभोजनं
वा फलभोजनं वा बीजभोजनं वा हरितभोजनं वा प्रतिपिष्टम् एवमेव महापद्मो-
ऽपि अर्हन् श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्य आचारुर्मिकं वा यावत् हरितभोजनं वा प्रति-
पेधिष्यति । तद् यथानामकम्-आर्याः । मया श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यः पञ्चमहा-
व्रतिकः सप्ततिक्कमणः अचेलको धर्मः प्रज्ञप्तः एवमेव महापद्मोऽपि अर्हन् श्रमणेभ्यो
निर्ग्रन्थेभ्यः पञ्चमहाव्रतिकं यावत् अचेलकं धर्मं प्रज्ञापयिष्यति । तद् यथानाम-
कम्-आर्याः । मया पञ्चाणुव्रतिकः सप्तशिश्राव्रतिकः द्वादशविधः श्रावकधर्मः
प्रज्ञप्ताः, एवमेव महापद्मोऽपि अर्हन् पञ्चाणुव्रतिकं यावत् श्रावकधर्मं प्रज्ञापयि-

વ્યતિ । તદ્યથાનામકમ્-આર્યાઃ । મયા શ્રમણેભ્યો નિર્ગ્રન્થેભ્યઃ શય્યાતરપિઠો વા રાજપિઠો વા પ્રતિપિઠઃ, એવમેવ મહાપદ્મોઽપિ અર્હન્ શ્રમણેભ્યો નિર્ગ્રન્થેભ્યઃ શય્યાતરપિઠં વા રાજપિઠં વા પ્રતિપેઢિષ્યતિ । તદ્ યથાનામકમ્-આર્યાઃ । મમ નવ ગણા એકાદશ ગણધરાઃ એવમેવ મહાપદ્મસ્યાપિ અર્હન્ નવ ગણા એકાદશ ગણધરા ભવિષ્યન્તિ । તદ્યથાનામકમ્-આર્યાઃ । અહં ત્રિંશતં વર્ષાણિ અગારવાસમધ્યે ઉપિત્વા મુળ્હો ભૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ, દ્વાદશસંવત્સરાન્ ત્રયોદશપક્ષાન્ છન્નસ્થપર્યાયં પાલયિત્વા ત્રયોદશભિઃ પક્ષૈઃ ઝનકાનિ ત્રિંશતં વર્ષાણિ કેવલિપર્યાયં પાલયિત્વા દ્વિચત્વારિંશતં વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાયં પાલયિત્વા દ્વાસપ્તતિં વર્ષાણિ સર્વાયુઃ પાલયિત્વા સેત્સ્યામિ યાવત્ સર્વદુઃસ્વાનામન્તં કરિષ્યામિ એવમેવ મહાપદ્મોઽપિ અર્હન્ ત્રિંશતં વર્ષાણિ અગારવાસમધ્યે ઉપિત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિષ્યતિ, દ્વાદશસંવત્સરાન્ યાવત્ દ્વાસપ્તતિં વર્ષાણિ સર્વાયુઃ પાલયિત્વા સેત્સ્યતિ યાવત્ સર્વદુઃસ્વાનામન્તં કરિષ્યતિ—(સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામિનં પ્રાહ—)

“ યચ્છીલ સમાચારોઽર્હન્ તીર્થઙ્કરો મહાવીરઃ ।

તચ્છીલસમાચારો ભવિષ્યતિ અર્હન્ મહાપદ્મઃ ॥૧॥ સૂ૦ ૩૬ ॥

॥ ઇતિ મહાપદ્મચરિત્ર સમાપ્તમ્ ॥

ટીકા—તથા—‘ સે જહાણામૅ ’ ઇત્યાદિ, સુગમં, નવરમ્—‘ એમે આરંભ-દ્વાણે ’ ઇતિ—એકમારમ્મસ્થાનં—પ્રમાદયોગલક્ષણં પ્રજ્ઞાપયિષ્યતિ । શેષં સુગમમ્ ॥ ॥ સૂ૦ ૩૬ ॥

પૂર્વં મહાપદ્મજિન ઉક્તઃ, તસ્ય ચ મહાવીર સ્વામિન ઇવોત્તરફાલ્ગુની નક્ષત્ર જન્માદિ પ્રસન્નોઽસ્તીતિ નક્ષત્ર વિશેષાન્નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—જવ જવલ્લતા ચંદ્રસ પચ્છંભાગા પળ્લતા, તં જહા-અભિર્ઇ ૧ સવળો ૨ ધણિઢ્ઠા ૩ રેવર્ઇ ૪ અસિણિ ૫ મગ્ગશિર ૬ પુસો ૭। હત્થોચિત્તા ય તહા, પચ્છંભાગા જવ હવંતિ। ૧સૂ૦૩૭॥

“ જવ જવલ્લતા ચંદ્રસ પચ્છંભાગા, ’ ઇત્યાદિ ।

નૌ નક્ષત્ર ચન્દ્રકે પૃથ્ઠ ભાગમેં સ્થિત કહે ગયે હૈં । ચન્દ્રમા નૌ નક્ષત્રોંકો અતિક્રમ કરકે પીઠ દેકર ઓગતા હૈ ।

ટીકાર્થ—જે નક્ષત્ર યે હૈં—અભિજિત્ ૧, શ્રવણ ૨, ધનિષ્ઠા ૩, રેવતી ૪, અશ્વિની ૫, મૃગશિર ૬, પુષ્ય ૭, હસ્ત ૮ ઓર ચિત્રા ૯ ॥ સૂ૦ ૩૭॥

આલતું હતું. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર નક્ષત્ર વિશેષોતું નિરૂપણ કરે છે—“ જવ જવલ્લતા ચંદ્રસ પચ્છંભાગા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૭)

ટીકાર્થ—નવ નક્ષત્ર ચન્દ્રના પૃષ્ઠ ભાગમાં સ્થિત કહ્યા છે. ચન્દ્રમાં નવ નક્ષત્રોને અતિક્રમ કરીને પીઠ દર્શને લોગવે છે એટલે કે આ નવ નક્ષત્રો ચન્દ્રની પાછળ રહેલાં છે—(૧) અભિજિત્, (૨) શ્રવણ, (૩) ધનિષ્ઠા, (૪) રેવતી, (૫) અશ્વિની, (૬) મૃગશીર્ષ, (૭) પુષ્ય, (૮) હસ્ત અને (૯) ચિત્રા ॥ સૂત્ર ૩૭ ॥

છાયા—નવ નક્ષત્રાણિ ચન્દ્રસ્ય પશ્ચાદ્ધાગાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદ્યથા—અભિજિત્ ૧, શ્રવણં ૨, ધનિષ્ઠા ૩ રેવતી ૪ અશ્વિની ૫ મૃગશિરઃ ૬ પુષ્યઃ ૭। હસ્તઃ ૮ ચિત્રા ૯ ચ તથા પશ્ચાદ્ધાગાનિ નવ ભવન્તિ ॥ ૧ ॥ સૂ. ૩૬ ॥

ટીકા—“ ણવ ણક્ષત્તા ” ઇત્યાદિ,—નવ—અનુપદં વક્ષ્યમાણાનિ નવસંખ્યકાનિ નક્ષત્રાણિ ચન્દ્રસ્ય પશ્ચાદ્ધાગાનિ—પૃષ્ઠમાગસ્થિતાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, નવનક્ષત્રાણિ ચન્દ્રોઽતિક્રમ્ય પૃષ્ઠં દર્શ્યાં મુદ્ધુઃ ઇતિ ભાવઃ, તદ્યથા—અભિજિદિત્યાદિ સુગમમ્ ॥ સૂ. ૩૭ ॥

પૂર્વે નક્ષત્રવિશેષા ઉક્તાઃ, તે ચ વિમાનયુક્તા ભવન્તીતિ વિમાનપ્રસજ્ઞા કલ્પવિશેષગતવિમાનસંખ્યાપ્રમાણમાહ—

મૂલમ્—આણયપાણય આરણચ્યુણ્ણસુ વિમાણા ણવ જોયણસયાઈં ઉઢું ઉચ્ચત્તેણં પપ્પણત્તા ॥ સૂ. ૩૮ ॥

છાયા—આનત—પ્રાણતારણાચ્યુતેષુ કલ્પેષુ વિમાનાનિ નવયોજનશતાનિ ઝર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન પ્રજ્ઞપ્તાનિ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

ટીકા—“ આણયપાણયે ”—ત્યાદિ—સુગમમ્ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

ઉક્ત યે નક્ષત્ર વિશેષ વિમાન યુક્ત હોતે હૈં—અતઃ વિમાનકે પ્રસજ્ઞસે એવ સૂત્રકાર કલ્પ વિશેષગત વિમાન સંખ્યાકા પ્રમાણ કહતે હૈં—

“ આણયપાણયઆરણચ્યુણ્ણસુ ” ઇત્યાદિ ।

આરણ, પ્રાણત, આરણ એવં અચ્યુત, इन कल्पोंमें विमान नौ योजनके ऊंचे कहे गये हैं ॥ સૂ. ૩૮ ॥

વિમાન વિશેષોંકી ઝંચાઈકે પ્રસજ્ઞસે એવ સૂત્રકાર કુલ વિશેષકી ઝંચાઈકા કથન કરતે હૈં—“ વિમલવાહણેણં કુલગરે ” ઇત્યાદિ ।

વિમલ વાહન કુલકર નૌ સૌ ધનુષકે ઝંચે થે ॥ સૂ. ૩૯ ॥

આગલા સૂત્રમાં નક્ષત્રાની વાત કરી. નક્ષત્ર વિશેષોમાં વિમાનોનો સદ્ભાવ હોય છે. વિમાનોનો પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ હોવાથી હવે સૂત્રકાર આ નવમાં સ્થાન સાથે સુસંગત એવું કલ્પવિશેષગત વિમાનોનું કથન કરે છે—“ આણયપાણયઆરણચ્યુણ્ણસુ ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૮)

આનત, પ્રાણુત, આરણ અને અચ્યુત, આ ચાર કલ્પોમાં જે વિમાનો છે તેમની ઊંચાઈ નવ યોજનની કહી છે. ॥ સૂત્ર ૩૮ ॥

વિમાન વિશેષોની ઊંચાઈનું કથન કરીને સૂત્રકાર કુલકર વિશેષની ઊંચાઈનું કથન કરે છે—વિમલવાહણેણં કુલગરે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૯)

વિમલવાહન કુલકર ૬૦૦ ધનુષપ્રમાણુ ઊંચા હતા. (સૂ. ૩૯)

પૂર્વે વિમાનવિશેષાણામુચ્ચત્વમુક્તમ્, इति उच्चत्वप्रसङ्गात् कुलकरविशेषस्यो-
च्चत्वमाह—

મૂલમ્—વિમલવાહને ણં કુલગરે ણવ ધણુસયાઈં ઉહું ઉચ્ચ
ત્તેગં હોત્થા ॥ સૂ. ૩૯ ॥

છાયા—વિમલવાહનઃ સ્વલુ કુલકરઃ નવધનુઃ શતાનિ ઋધ્વમુચ્ચત્વેન આસીત
॥ સૂ. ૩૯ ॥

ટીકા—‘ વિમલવાહને ણં ’ इत्यादि—‘ सुगमम् ॥ सू. ३९ ॥

પૂર્વે કુલકરવિશેષ ઉક્તઃ, તત્પ્રસંગાત્ કુલકરવિશેષેઽક્રમણે તીર્થં પ્રવ-
ર્તિતમિત્યાહ—

મૂલત્—ઉસમેણં અરહયા કોસલિણં, इमीसे ओसपिणीए
णवहिं सागरोपमकोडाकोडीहिं विईकंताहिं तित्थे पवत्तिए
॥ सू. ४० ॥

કુલકર વિશેષકે પ્રસંગકો લેકર અથ સૂત્રકાર કુલ વિશેષ ઋષભને
તીર્થકી પ્રવૃત્તિકી હસ વિષયકા કથન કરતે હૈં—

“ ઉસમેણં અરહયા કોસલિણં ” इत्यादि ।

કોશલ દેશમેં જન્મે હુએ ઋષભ અર્હન્તને હસ અવસર્પિણી કાલમેં
નૌ સાગરોપમ કોડાકોડીકે સમાસ જાને પર તીર્થકી પ્રવૃત્તિ કી ॥ સૂ. ૪૦ ॥

ઋષભ કુલકરને તીર્થકી પ્રવૃત્તિ કી એસા કહા સો યે કુલકર
મનુષ્ય હી હોતે હૈં, અતઃ અથ સૂત્રકાર હસી પ્રસંગસે અન્તરદ્વીપજ
મનુષ્યોંકે ક્ષેત્રકા પ્રમાણ કહતે હૈં—“ ઘણદંતલઢ્ઢંન ” इत्यादि ।

કુલ કર વિશેષની ઉચાધનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર કુલકર વિશેષ
ઋષભદેવે તીર્થની જે પ્રવૃત્તિ કરી હતી તેનું નિરૂપણ કરે છે—

“ ઉસમેણ અરહયા કોસલિણં ” इत्यादि—(સૂ. ૪૦)

કોશલ દેશમાં ઉત્પન્ન થયેલા ઋષભદેવ અહીં તે આ અવસર્પિણી કાળની
નવ સાગરોપમ કોડી કે ટી સમાસ થઈ ગયા બાદ તીર્થની પ્રવૃત્તિ
કરી હતી. ॥ સૂ. ૪૦ ॥

આગલા સૂત્રમાં એવું કહેવામાં આવ્યું કે ઋષભ કુલકરે તીર્થની પ્રવૃત્તિ
કરી. તે કુલકર મનુષ્ય જ હોય છે પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લઈને
હવે સૂત્રકર અન્તરદ્વીપજ મનુષ્યોના ક્ષેત્રનું પ્રમાણ કહે છે—

“ ઘણદંત લઢ્ઢંન ” इत्यादि—(સૂ. ૪૧)

છાયા—ઋષભેણ અર્હતા કૌશલિકેન અર્યા અવસર્પિण्या નવસુ સાગરોપમ-
કોટીકોટિષુ વ્યતિક્રાન્તાસુ તીર્થં પ્રવર્તિતમ્ ॥ સૂ. ૪૦ ॥

ટીકા—“ ઉસમેણં અરહા ” इत्यादि—सुगमम्, नवरम्—कौशलिकेन कौ-
शलाख्यदेशभवेन ॥ सू. ४० ॥

પૂર્વવૃષભકુલકરપ્રવર્તિતં તીર્થમિત્યાહ, -સ ચ કુલકરો મનુષ્ય इत्यन्तरद्वी-
पजमनुष्यक्षेत्रप्रमाणं दर्शयितुमाह—

મૂલમ્—घणदंतलट्टदंतगूढदंतसुद्धदंतदीवाणं दीवा
णवणवजोयणसयाइं आयामविष्वम्भेणं पणत्ता ॥ सू ४१ ॥

છાયા—घनदन्तलट्टदन्तगूढदन्तशुद्धदन्तः द्वीपाः खलु द्वीपा नव नव योज-
नशतानि आयामविष्वम्भेण प्रज्ञप्ताः ॥ सू. ४१ ॥

સૂત્રકા અર્થ સુગમ હૈ—घनदन्त १, लट्टदन्त २, गूढदन्त ३, एवं
शुद्धदन्त ये चार अन्तर द्वीप हैं । ये प्रत्येक अन्तर द्वीप आयाम एवं
विष्वम्भकी अपेक्षा नौ नौ सौ योजनके ऊंचे हैं ॥ सूत्र ४१ ॥

નૌ નૌ સૌ યોજન પ્રમાણવાળે અન્તર દ્વીપ હૈ, એસા કહંકર અથ
સૂત્રકાર સમભૂમિ આગસે ડપર નૌ સૌ યોજનકે ખીતર ચલનેવાળે
ગ્રહવિશેષકી વિધિકા પ્રમાણ કહતે હૈ—

“ सुक्रस्स णं महागहस्स णव वीहिओ ” इत्यादि ।

શુક્ર મહાગ્રહકી નૌ વીધિયાં કહી ગઈ હૈ—जैसे—हयवीथि १, गज-
वीथि २, नागवीथि ३, वृषभवीथि ४, गोवीथि ५, उरगवीथि ५ अज-
वीथि ७, मृगवीथि ८ और वैश्वानरवीथि ९ ।

સૂત્રનો અર્થ સુગમ છે. ઘનદન્ત, લટ્ટદન્ત, ગૂઢદન્ત અને શુદ્ધદન્ત આ
ચાર અન્તરદ્વીપ છે. તે પ્રત્યેક અન્તરદ્વીપનો આયામ (લંબાઈ) અને વિષ્વંભ
(પહોળાઈ) ૬૦૦-૬૦૦ યોજનની કહી છે. ॥ સૂ. ૪૧ ॥

નવસો યોજનના પ્રમાણવાળા અન્તર દ્વીપોની વાત કરીને હવે સૂત્રકાર
સમભૂમિભાગથી ઉપર ૬૦૦ યોજનપ્રમાણ ભૂમિ ધર્મી નીચે ગમન કરનારા ગ્રહ
વિશેષની વીથિના પ્રમાણનું કથન કરે છે—

“ सुक्रस्स णं महागहस्स णव वीहिओ ” इत्यादि—(सू. ४२)

શુક્ર મહાગ્રહની નવ વીથિઓ (માર્ગો) કહી છે—जैसे—(१) हयवीथि,
(२) गजवीथि, (३) नागवीथि, (४) वृषभवीथि, (५) गोवीथि, (६) उरगवीथि,
(७) अजवीथि, (८) मृगवीथि, અને (९) वैश्वानरवीथि.

ટીકા—‘ ઘણદંતે ’ ઇત્યાદિ—સુગમમ્, નવરં-ઘનદન્તઃ ૧ લઘુદન્તઃ ૨, ગૂઢદન્તઃ ૩, શુદ્ધદન્તઃ, इमे चत्वारोऽप्यन्तरद्वीपाः प्रत्येकं नव नव योजनशतानि आयामविष्कम्भेण-दैर्घ्यविस्तारेण પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥ સૂ૦ ૪૧ ॥

પૂર્વમન્તરદ્વીપા નવનવ યોજનશતપ્રમાણા ઉક્તા ઇતિ સમભૂમિભાગાદુપ-
રિષ્ટાન્નવયોજનશતાભ્યન્તરચારિણો ગ્રહવિશેષસ્ય વીથિપ્રમાણમાહ—

મૂલમ્—સુક્રસ્સ ણં મહાગ્રહસ્સ ણવ વીહિઓ પળ્ળત્તાઓ, તં
જહા, હયવીહી ૧, ગયવીહી ૨, ણાગવીહી ૩, વસહવીહી ૪,
ગોવીહી ૫, ઉરગવીહી ૬, અયવીહી ૭; મિયવીહી ૮,
વેસાળરવીહી ॥ સૂ૦ ૪૨ ॥

છાયા—શુક્રસ્ય સ્વલુ મહાગ્રહસ્ય નવવીથયઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથથા-હયવીથિઃ
૧, ગજવીથિઃ ૨, નાગવીથિઃ ૩, વૃષભવીથિઃ ૪, ગોવીથિઃ ૫, ઉરગવીથિઃ ૬,
અજવીથિઃ ૭, મૃગવીથિઃ ૮, વૈશ્વાનરવીથિઃ ૯ ॥ સૂ૦ ૪૨ ॥

વીથિ શબ્દકા અર્થ હૈ માર્ગ-ક્ષેત્ર વિભાગ, યે વીથિયાં પ્રાયઃ ત્રીન ૨
નક્ષત્રોલે હોતી હૈ ॥ સૂત્ર ૪૨ ॥

વીથિ વિશેષમેં ચલનેસે શુક્ર આદિ ગ્રહ મનુષ્ય આદિકોંકા અનુ-
ગ્રહ એવં નિગ્રહ કરતે હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર દ્રવ્યાદિ સામગ્રીકે નિમિ-
ત્તસે કર્મોંકે ઉદયાદિકે સદ્ભાવકો લેકર કર્મ સ્વરૂપકા અવ સૂત્રકાર
કથન કરતે હૈ—“ ણવવિહે નોકસાયવેયણિજ્જે કર્મમે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ ॥

નો કષાય વેદનીય કર્મ નો પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—સ્રી
વેદ ૧, પુરુષ વેદ ૨, નપુંસક વેદ ૩, હાસ્ય ૪, રતિ ૫, અરતિ ૬, ભય
૭, શોક ૮ ઓર જુગુપ્સા ૯ ॥

વીથિ એટલે ભાગ અથવા ક્ષેત્રવિભાગ. આ વીથિઓ સામાન્ય રીતે
ત્રણ ત્રણ નક્ષત્રો વડે થાય છે. ॥ સૂત્ર ૪૨ ॥

વીથિ વિશેષમાં ચાલવાથી શુક્ર આદિ ગ્રહો મનુષ્ય આદિકોં પર, અનુ-
ગ્રહ અને નિગ્રહ કરે છે. તેથી સૂત્રકાર દ્રવ્યાદિ સામગ્રીના નિમિત્ત વડે
કર્મોના ઉદયાદિના સદ્ભાવને લઈને કર્મસ્વરૂપનું કથન કરે છે—

“ ણવવિહે નોકસાયવેયણિજ્જે કર્મમે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૩)

નો કષાય વેદનીય કર્મના નીચે પ્રમાણે નવ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) સ્રીવેદ,
(૨) પુરુષવેદ, (૩) નપુંસકવેદ, (૪) હાસ્ય, (૫) રતિ, (૬) અરતિ, (૭) ભય
(૮) શોક અને (૯) જુગુપ્સા.

ટીકા—‘સુક્રસ્ય ણં મહાગહસ્સે’—ત્યાદિ—શુક્રસ્ય—તદાખ્યસ્ય મહાગ્ર-
હસ્ય નવવીથયઃ—માર્ગાઃ ક્ષેત્રવિભાગરૂપાઃ, પ્રાયસ્ત્રિભિસ્ત્રિભિર્નક્ષત્રૈર્ભવન્તિ, તાઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—હયત્રીઞ્પાદયો નવવીથયઃ પ્રસિદ્ધાઃ ॥ સૂ ૦ ૪૨ ॥

વીથિવિશેષચારેણ શુક્રાદયો ગ્રહા મનુષ્યાદીનનુગૃહ્યન્ત્યુપધ્નન્તિ ચેતિ દ્રવ્યાદિ
સામગ્ર્યા કર્મણામુદયાદિ સદ્ભાવાદિતિ કર્મસ્વરૂપમાહ—

મૂલમ્—જાવવિદે નો કસાયવેદનીયજ્ઞે કર્મમે પળ્લપ્તે, તં
જહા—‘ઇતિથિવેદ ૧, પુરિસવેદ ૨, જપુંસગવેદ ૩, હાસે ૪, રઈ
૫, અરઈ ૬, મયે ૭, સોગે ૮ દુગુંછા ૯ ॥ સૂ ૦ ૪૩ ॥

છાય—નવવિધ નો કપાયવેદનીયં કર્મ પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્યથા—સ્ત્રીવેદઃ ૧,
પુરુષવેદઃ ૨, નપુંસકવેદઃ ૩, હાસ્યં ૪, રતિઃ ૫, અરતિઃ ૬, મયં ૭ શોકઃ
૮ જુગપ્સા ॥ સૂ ૦ ૪૩ ॥

યહાં “નો” શબ્દ સહચરકે અર્થમેં હૈ, અતઃ કષાયોંકે જો સહચર
હૈ, વે નોકષાય હૈ “કષાય નોવેદનીય” એસા પાઠ હોના ચાહિયે
થો, પર એલા ન હોકર જો [કષાયવેદનીય પાઠ હુઆ હૈ, વહ નો
કષાય રૂપસે જો કર્મ વેદિત ક્રિયા જાતા હૈ, વહ નોકષાય વેદનીય હૈ
અવશિષ્ટ પાઠ સુગમ હૈ ॥ સૂ ૦ ૪૩ ॥

ઉક્ત કર્મકે અધીન હુએ જીવ નાના કુલકોટિયોંમેં ઉત્પન્ન હોતે
હૈ—અતઃ અબ સૂત્રકાર કુલકોટિયોંકા કથન કરતે હૈ—

“ચતુરિંદિયાણં જાવ જાહ કુલકોટી” ઇત્યાદિ ।

નો ઇન્દ્રિય જીવોંકી કુલકોટિ સંખ્યા ૯ લાખ કહી ગઈ હૈ, સુજ-

અહીં “નો” શબ્દ સહચરના અર્થમાં વપરાયો છે. તેથી કષાયોના જે
સહચર છે તેમને નોકષાય રૂપ સમજવા જોઈએ. “કષાય નો વેદનીય” એવો
પાઠ આપવામાં આવ્યો છે, તેનો શબ્દ આર્થ હેવાથી તેનો પૂર્વનિપાત (પૂર્વ
મૂલવની ક્રિયા) કરી નાખવાને લીધે આપવામાં આવેલ છે. નોકષાય રૂપે જે
કર્મનું વેદન કરવામાં આવે છે તે કર્મને નોકષાય વેદનીય કહે છે. બાકીનો
પાઠ સુગમ છે. ॥ સૂત્ર ૪૩ ॥

ઉપર્યુક્ત કર્મના પ્રભાવથી જીવ અનેક કુલ કોટિઓમાં ઉત્પન્ન થાય છે.
તેથી હવે સૂત્રકાર લોકોટિઓનું કથન કરે છે—

“ચતુરિંદિયાણં જાવ જાહ કુલકોટી” ઇત્યાદિ—(સ. ૪૪)

ચતુરિન્દ્રિય જીવોની કુલકોટિ સંખ્યા નવ લાખ કહી છે. બુદ્ધપરિસપ્ત

ટીકા—‘જવિદે જોકમાયવેયણિજ્જે’ ઇત્યાદિ—નો કપાયવેદનીય-
કપાયાણાં—નો=સહચરા નો કપાયાઃ નો શબ્દસ્ય સહચરાર્થકત્વાદુક્તાર્થઃ, ‘કપાય
નો વેદનીયં’ ઇતિ વક્તવ્યે નો શબ્દસ્ય આર્પત્વાત્પૂર્વનિપાતશ્ચ । નો કપાયતયા
વેદ્યતે યત્કર્મ તત્-નોકપાયવેદનીયમ્ । શેષં સુગમમ્ ॥ સૂ૦ ૪૩ ॥

પૂર્વં કર્પોક્તં, તદ્વશર્તિનશ્ચ જીવા નાનાકુલકોટિપુ સમુત્પન્નન્ત ઇતિ કુલકોટીઃ
પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્-ચતુરિંદિયાણં જવ જાઙ્કુલકોટી જોણિપ્પમુહસય-
સહસ્સા પળ્લન્તા મુજપરિસર્પથલચરપંચિંદિયતિરિચ્ચજોણિ-
યાણં જવ જાઙ્કુલકોટિજોણિપ્પમુહસયસહસ્સા પળ્લન્તા ॥ સૂ૦ ૪૪ ॥

છાયા—ચતુરિન્દ્રિયાણાં જવ જાતિકુલકોટિયોનિપ્રમુલ્લશતસહસ્રાણિ
પ્રજ્ઞપ્તાનિ, મુજપરિસર્પથલચરપંચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં જવ જાતિકુલકોટી-
યોનિપ્રમુલ્લશતસહસ્રાણિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ ॥ સૂ૦ ૪૪ ॥

પરિસર્પથલચર તિર્યગ્યોની કુલકોટિ સંખ્યા નૌ લાલ્લ કહી ગઈ છે ।
હસ સૂત્રની વ્યાખ્યા સ્પષ્ટ છે ॥ સૂ૦ ૪૪ ॥

“જીવાણં જવદ્વાણિજવત્તિપ્” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—જીવોને નૌ સ્થાનોમાં મિથ્યાત્વ આદિ કારણોસે ઉપાર્જિત પુદ્ગ-
લોંકાકર્મ દલિકોંકા પાપ કર્મ રૂપસે સંગ્રહ ક્રિયાઈ, વર્તમાનમાં જે એસા
કરતે છે, ઓર ભવિષ્યત્કાલમાં મી જે એસા હી કરેજે, જે નૌ સ્થાન
હસ પ્રકારસે હૈં—પૃથ્વીકાય, યાવત્ પંચેન્દ્રિય યહોં યાવત્ત્વદસે—“અપ્-
કાય, તેજસ્કાય, વાયુકાય, ઓર વનસ્પતિકાય । તથા—દો હન્દ્રિય, તેહ-
ન્દ્રિય, એવં ચૌહન્દ્રિય” હન સચકા ગ્રહણ હુમા છે ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

સ્થલચર તિર્યગ્યોની કુલકોટિસંખ્યા નવ લાળ કહી છે. આ સૂત્રની વ્યાખ્યા
સ્પષ્ટ છે. ॥ સૂત્ર ૪૪ ॥

“જીવાણં જવદ્વાણિજવત્તિપ્” ઇત્યાદિ—(સ. ૪૫)

ટીકાર્થ—જીવોને નવ સ્થાનોમાં મિથ્યાત્વ આદિ કારણો ઉપાર્જિત પુદ્ગલોનો
—કર્મદલિકોનો પાપકર્મ રૂપે યથા (સંગ્રહ) કર્યો છે, વર્તમાનમાં પણ તેઓ
તેમનો યથા કરતા જ રહેશે તે નવ સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે—(૧) પૃથ્વીકાય,
(૨) અપ્કાય, (૩) તેજસ્કાય, (૪) વાયુકાય (૫) વનસ્પતિકાય, (૬) દ્વીન્દ્રિય,
(૭) ત્રીન્દ્રિય, (૮) ચતુરિન્દ્રિય અને (૯) પંચેન્દ્રિય. ॥ સ. ૪૫ ॥

ટીકા—‘ ચરિંદિયાણં ’ इत्यादि— स्पष्टम् ॥ सू० ४४ ॥

પૂર્વે કર્મવશવર્તિજીવાનાં કુલકોટિરૂક્તા, તદ્વતાશ્ચ જીવાઃ કર્મચિન્વન્તીતિ પ્રદર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—જીવા ણં ણવદ્દાણાણિવત્તિણ પોગ્ગલે પાવકમ્મત્તાણ ચિર્ણિસુ વા ૩ પુઠ્ઠવિકાઙ્ગયણિવત્તિણ જાવ પંચિંદિયણિવત્તિણ, એવં ચિણ ઉવચિણ જાવ ણિજ્જરાચેવ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

છાયા—જીવાઃ खलु नवस्थाननिर्वर्तितान् पुद्गलान् पापकर्मतया अचिन्वन् वा ३ पृथिवीकायिकनिर्वर्तितान् यावत् पञ्चेन्द्रियनिर्वर्तितान् एवं चिण उपचिण यावत् निर्जराचैव ॥ सू० ४५ ॥

ટીકા—‘ જીવા ણં ’ इत्यादि—जीवाः खलु नवस्थाननिर्वर्तितान्-नवसु स्थानेषु निर्वर्तितान्-मिथ्यात्वादिभिरुपार्जितान् पुद्गलान्=कर्मदलिकान् पाप-कर्मतया अचिन्वन् ३। तद्देगाह-पृथिवीकायनिर्वर्तितान् यावत्, यावत्पदेन-अप्तेजो वायुवनस्पतिकाय-द्वित्रिचतुरिन्द्रियनिर्वर्तितान्, इति सप्तस्थानानि संग्राह्याणि, तथा पञ्चेन्द्रियनिर्वर्तितान्। शेषं सुगमम् ॥ सू० ४५ ॥

પૂર્વે કર્મપુદ્ગલચયનાદ્યુક્તમિતિ પુદ્ગલપ્રસ્તાવાત્ પુદ્ગલાન્નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—ણવ પણ્ણિયા સંધા અણંતા પણ્ણત્તા, ણવપ્પણ્ણસો-ગાઢા પોગ્ગલા અણંતા પણ્ણત્તા, જાવ ણવગુણલુક્કલા પોગ્ગલા અણંતા પણ્ણત્તા ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

॥ इय णवसं ठाणं समत्तं ॥

કર્મ પુદ્ગલોંકે ચયન આદિકા કથન કર અથ સૂત્રકાર પુદ્ગલકે પ્રસ્તાવકો લેકર પુદ્ગલોંકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

“ ણવ પણ્ણિયા સંધા અણંતા પણ્ણત્તા ” इत्यादि ।

नौ प्रदेशोंवाले स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं, नौ प्रदेशोंमें अवगाढ

કર્મપુદ્ગલોના ચય આદિનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તેની સાથે સુસંગત એવું પુદ્ગલોનું નિરૂપણ કરે છે—

णव पण्णिया संधा अणंता ” इत्यादि—(स. ४६)

નવ પ્રદેશોવાળા સ્કન્ધ અનન્ત કહ્યા છે. નવ પ્રદેશોમાં અવગાઢ (રહેલાં)

છાયા--નવ પ્રદેશિકાઃ સ્કન્ધાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, નવપ્રદેશાવગાવા
પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ યાવત્ નવગુણરુક્ષાઃ પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તા ॥ સૂ. ૪૬ ॥

॥ इति नवमं स्थानं समाप्तम् ॥ ९ ॥

टीका--“ णव पएसिया ” इत्यादि--सुगमम् ॥ सू० ४६ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषा-कलितललितक-
लापालापक प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक श्री शाहू-
छत्रपति - कोल्हापुरराजप्रदत्त-जैनशास्त्राचार्य-पदभूषित-कोल्हापुर
राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य - जैनधर्मदिवाकर-पूज्य
श्री घासीलालव्रति-विरचितायां स्थानाङ्गसूत्रस्य
सुधाख्यायां व्याख्यायां नवमं स्थानं
सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥

પુદ્ગલ અનન્ત યાવત્ કહે ગયે હૈં, યાવત્ નવગુણ રુક્ષ પુદ્ગલ અનન્ત કહે
ગયે હૈં ॥ સૂત્ર ૪૬ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ
રચિત “ સ્થાનાંગ સૂત્ર ” ની સુધા નામની વ્યાખ્યાના નવવાં સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

પુદ્ગલ અનન્ત કહ્યાં છે. (યાવત્) નવ ગણાં રુક્ષ પુદ્ગલ અનન્ત કહ્યાં છે સૂ. ૪૬.
શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“સ્થાનાંગ સૂત્ર” ની સુધા નામની ટીકામાં નવમું સ્થાન
સમાપ્ત ॥ ૯ ॥

અથ દશમંસ્થાનમ્ પ્રારમ્ભતે—

ઉક્તં નવમં સ્થાનમ્ । સમ્પ્રતિ સંખ્યાક્રમપ્રાપ્તં દશમં સ્થાનમાહ । અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ—અનન્તરસ્થાને જીવા અજીવાશ્ચ નવ સંખ્યકત્વેનોક્તાઃ, इह तु तएव दशसंख्यकत्वेन प्ररूप्यन्ते, इत्येवं—સમ્બન્ધેનાયાતસ્ય અસ્ય સ્થાન-સ્યેદમાદિમં સૂત્રમ્—

તથા—અસ્ય ચ અનન્તરસ્થાનાન્તિમસૂત્રેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ—અનન્તર સ્થાનાન્તે હિ નવગુણરૂક્ષાઃ પુદ્ગલા અનન્તત્વેનોક્તા. તે ચ અસંખ્યેયપ્રદેશાત્મકે લોકે વ્યાપ્તા ભવન્તીતિ તેષાં લોકસ્થિતિરિતિ લોકસ્થિતિમસ્ય સ્થાનસ્ય પ્રથમ-સૂત્રે પ્રાહ—

॥ દશવેં સ્થાનકા પ્રારમ્ભ ॥

નૌર્વાં સ્થાન કહા—અચ સંખ્યા ક્રમસે પ્રાપ્ત દશર્વાં સ્થાન કહા જાતા, હૈ હસકા પૂર્વ સ્થાનકે સાથ સમ્બન્ધ એસા હૈ—નૌવેં સ્થાનમેં જીવ ઓર અજીવ નૌકી સંખ્યા રૂપસે પ્રતિપાદિત કિયે ગયે હૈં—વે હી યહાં દશવેં સ્થાનમેં દશકી સંખ્યા રૂપસે પ્રતિપાદિત કિયે જાવેં ગે તથા—હસ સ્થાનકા નૌવેં સ્થાનકે અન્તિમ સૂત્રકે સાથ સમ્બન્ધ એસા હૈ, કિ હસ સ્થાનકે અન્તમેં નૌ ગુણવાલે રૂક્ષ પુદ્ગલ અનન્ત કહે ગયે હૈં સો વે પુદ્ગલ અસં-ખ્યાત પ્રદેશાત્મક લોકમેં વ્યાપ્ત હૈં, એસી હનકી લોકસ્થિતિ હૈ હસી લોકસ્થિતિકો સૂત્રકાર હસ સ્થાનકે પ્રથમ સૂત્રમેં પ્રકટ કર રહે હૈં—

દશમા સ્થાનનો પ્રારંભ

નવમાં સ્થાનની પ્રરૂપણા પૂરી કરીને હવે સૂત્રકાર દસમાં સ્થાનની પ્રરૂ-પણાનો પ્રારંભ કરે છે. નવમા સ્થાન સાથે આ દસમાં સ્થાનનો સંબંધ આ પ્રકારનો છે—નવમાં સ્થાનમાં જીવ અને અજીવનું નવ સ્થાનોની દૃષ્ટિએ પ્રતિ-પાદન કરાયું છે. આ દસમાં સ્થાનમાં દસ સ્થાનોની અપેક્ષાએ તેમનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવશે. નવમાં સ્થાનના છેલ્લા સૂત્ર સાથે આ સ્થાનના પહેલા સૂત્રનો સંબંધ આ પ્રકારનો છે—નવમાં સ્થાનના અન્તિમ સૂત્રમાં નવ ગણાં રૂક્ષ ગુણુવાળાં પુદ્ગલો અનંત કહ્યાં છે. તે પુદ્ગલો અસંખ્યાત પ્રદેશોવાળા લોકમાં વ્યાપ્ત છે—આ પ્રકારની તેમની લોકસ્થિતિ છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આ સ્થાનના પહેલા સૂત્રમાં તે લોકસ્થિતિનું નિરૂપણ કરે છે—

मूलम्—दसविहा लोगट्टिई पणत्ता, तं जहा—जणं जीवा
 उदाइत्ता उदाइत्ता तत्थेव तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायंति,
 एवं एगा लोगट्टिई पणत्ता १। जणं जीवाणं सया समियं
 पावे कस्मिं कज्जइ, एवं पेगा लोगट्टिई पणत्ता २। जणं
 जीवा णं सया समियं मोहणिज्जे पावे कस्मिं कज्जइ एवं-
 पेगा लोगट्टिई पणत्ता ३। ण एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सइ
 वा जं—जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीवा भवि-
 स्संति, एवंपेगा लोगट्टिई पणत्ता ४। ण एवं भूयं वा भव्वं
 वा भविस्सइ वा जं--तस्मा पाणा वोच्छिज्जिस्संति थावरा पाणा
 भविस्संति, थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्संति तस्मा पाणा भवि-
 स्संति वा, एवंपेगा लोगट्टिई पणत्ता ५। ण एवं भूयं वा
 भव्वं वा भविस्सइ वा जं--लोके अलोके भविस्सइ, अलोके
 लोके भविस्सइ, एवंपेगा लोगट्टिई पणत्ता ६। ण एवं भूयं
 वा भव्वं वा भविस्सइ वा जं--लोए अलोए पविसिस्सइ, अलोए
 लोए पविसिस्सइ, एवं पेगा लोगट्टिई पणत्ता ७। जाव ताव
 लोके ताव ताव जीवा, जावं ताव जीवा ताव ताव लोके, एवं-
 पेगा लोगट्टिई पणत्ता ८। जावं ताव जीवाण य पोग्गलाण
 य गइपरियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोए ताव ताव
 जीवाणं य पोग्गलाण य गइपरियाए, एवंपेगा लोगट्टिई
 पणत्ता ९। सव्वेसु वि णं लोगंतेसु अबद्धपासपुट्ठा पोग्गला

લુપ્તતાએ કજ્જંતિ, જે ણં જીવા ય પોગ્ગલા ય નો સંચા-
યંતિ બહિયા લોગંતા ગમણયાએ, એવં પેગાલોગટ્ટિઈ પળ્લન્તા
૧૦ ॥ સૂ. ૧ ॥

છાયા—દશવિધા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથા—યત્તલુ જીવા અપદ્રાય
અપદ્રાય તત્રૈવ તત્રૈવ ભૂયો ભૂયઃ પ્રત્યાયાન્તિ. એવમ્ એકા લોકસ્થિતિઃ—પ્રજ્ઞપ્તા
૧। યત્ત લુ જીવાનાં સદા સમિતં પાપં કર્મ ક્રિયતે, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ
પ્રજ્ઞપ્તા ૨। યત્ત લુ જીવાનાં સદા સમિતં મોહનીયં પાપં કર્મ ક્રિયતે, એવમપ્યેકા
લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૩। ન એવં ભૂતં વા ભવ્યં વા ભવિષ્યતિ વા યત્—જીવા
અજીવા ભવિષ્યન્તિ, અજીવા વા જીવા ભવિષ્યન્તિ, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ
પ્રજ્ઞપ્તા ૪। ન એવં ભૂતં વા ભવ્યં વા ભવિષ્યન્તિ વા યત્—ત્રસાઃ પ્રાણા વ્યુચ્છેત્સ્ય-
ન્તિ સ્થાવરાઃ પ્રાણા ભવિષ્યન્તિ, સ્થાવરાઃ પ્રાણા વ્યુચ્છેત્સ્યન્તિ ત્રસાઃ પ્રાણા
ભવિષ્યન્તિ વા, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૫। ન એવં ભૂતં વા ભવ્યં વા
ભવિષ્યતિ વા યત્—લોકઃ અલોકો ભવિષ્યતિ, અલોકો લોકો ભવિષ્યતિ, એવમ-
પ્યેકા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૬। ન એવં ભૂતં વા ભવ્યં વા ભવિષ્યતિ વા યત્—
લોકોઽલોકે પ્રવેક્ષ્યતિ, અલોકો વા લોકે પ્રવેક્ષ્યતિ, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ
પ્રજ્ઞપ્તા ૭। યાવત્ તાવદ્ લોકઃ તાવત્ તાવદ્ જીવાઃ, યાવત્ તાવદ્ જીવાઃ
તાવત્ તાવદ્ લોકઃ, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૮। યાવત્ તાવદ્ જીવાનાં
ચ પુદ્ગલાનાં ચ ગતિપર્યાયઃ તાવત્ તાવદ્ લોકઃ, યાવત્ તાવદ્ લોકઃ તાવત્
તાવદ્ જીવાનાં ચ પુદ્ગલાનાં ચ ગતિપર્યાયઃ, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા
૯। સર્વેષ્વપિ લુ લોકાન્તેષુ અવદ્વપાર્શ્વસ્પૃષ્ઠાઃ પુદ્ગલા રુક્ષતયા ક્રિયન્તે, યે
લુ જીવાશ્ચ પુદ્ગલાશ્ચ નો શક્નુવન્તિ વહિર્લોકાન્તાદ્ ગમનાયે, એવમપ્યેકા લોક-
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૧૦ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—‘દસવિહા લોગટ્ટિઈ’ इत्यादि—

લોકસ્થિતિઃ—લોકસ્ય=પશ્ચાસ્તિકાયાત્મકસ્ય સ્થિતિઃ=સ્વભાવઃ લુ દશ
વિધા પ્રજ્ઞપ્તા । દશવિધત્વમેવાહ—યત્ત લુ જીવા અપદ્રાય અપદ્રાય=મૃત્વા મૃત્વા

“દસવિહા લોગટ્ટિઈ પળ્લન્તા” इत्यादि ॥ सूत्र १ ॥

ટીકાર્થ—પંચ અસ્તિકાય રૂપ હસ લોકકી સ્થિતિ સ્વભાવ દશ પ્રકારકી
કહી ગઈ હૈ, જો હસ પ્રકારસે હૈ—જીવ બાર ૨ મરકર લોકરૂપ દેશમેં

“દસવિદ્ લોગટ્ટિઈ પળ્લન્તા” इत्यादि—(सू. १)

ટીકાર્થ—પંચ અસ્તિકાયરૂપ આ લોકની સ્થિતિ (લોકનો સ્વભાવ) હસ પ્રકારની
કહી છે, જે આ પ્રમાણે છે—(૧) જીવો વારંવાર મરીને લોકરૂપ દેશમાં અથવા

તત્રૈવ તત્રૈવ=લોકદેશે ગતૌ યોનૌ જાતૌ કુલે વા સાન્તરં નિન્તરં વા ઔચિત્યેન
 ભૂયો ભૂયઃ=પુનઃ પુનઃ પ્રત્યાયાન્તિ=ઉત્પદ્યન્તે, એવમ્=અમુના પ્રકારેણ એકા લોક-
 સ્થિતિ ભવતીતિ પ્રથમો ભેદઃ ૧। તથા-યત્ સ્વલુ જીવાનાં સદા=પ્રવાહનોડનાઘ-
 પર્યવસિતં કાલં સમિતં=નિરન્તરં પાપં=મોક્ષવિવાતહેતુત્વાત્ પાપમયં કર્મ=જ્ઞાનાવ-
 રણીયાદ્યવિધં ક્રિયતે=વધ્યતે વદ્ધં ભવતિ, એવમ્પ્રેકા=અપરા-દ્વિતીયા લોક-
 સ્થિતિ ભવતીતિ દ્વિતીયો ભેદઃ ૨। તથા-યત્ સ્વલુ જીવાનાં સદા સમિતં મોહ-
 નીયં-મોહનીયસ્ય પ્રાધાન્યેન મોહનીયં મોહનીયાગ્રવિધં પાપં કર્મ ક્રિયતે=વધ્યતે
 -વદ્ધં ભવતિ, એવમ્=અનેન પ્રકારેણાપિ એકા=અપરા-તૃતીયા લોકસ્થિતિ ભવ-
 તીતિ તૃતીયો ભેદઃ ૩। તથા-ન એવં ભૂતં વા ભવ્યં વા ભવિષ્યતિ વા-કાલત્રયે-
 ઽપ્યેવમસંભવિ, યત્-જીવા અજીવા ભવિષ્યન્તિ, અજીવા વા જીવા ભવિષ્યન્તિ,
 ન કદાચિદપિ જીવા અજીવત્વમાપન્ના ભવિષ્યન્તિ, નાપિ કદાચિત્ અજીવા જીવ-

અથવા ગતિમેં અથવા જાતિમેં અથવા કુલમેં વાર વાર સાન્તર રૂપસે
 યા નિરન્તર રૂપસે ઉત્પન્ન હોતે રહતે હૈં, હસ પ્રકારસે યહ પહિલી
 લોકસ્થિતિ કહી ગઈ હૈ, યહ હસકા પ્રથમ ભેદ હૈ ૧, દ્વિતીય લોક-
 સ્થિતિ એસી હૈ, જીવોંકે સદા-પ્રવાહકી અપેક્ષા અનાદિ અનન્તકાલ
 તક-નિરન્તર મોક્ષકે વિઘાતકા હેતુ હોનેસે પાપ-જ્ઞાનાવરણ આદિ
 આઠ પ્રકારકા પાપમય કર્મવદ્ધ હોતા રહતા હૈ ૨। તીસરી લોકસ્થિતિ
 એસી હૈ-જીવોંકે આદિ અનન્ત કાલ તક નિરન્તર મોહનીયકી પ્રધા-
 નતા લેકર મોહનીય આદિ આઠ પ્રકારકા પાપકર્મ વંધતા રહતા હૈ
 ૩। ચૌથી લોકસ્થિતિ એસી હૈ—

યહ વાત ન હુઈ હૈ, ન હોગી ન હો રહી હૈ અર્થાત્ કાલ ત્રયમેં
 બી યહ અસંભવ હૈ કિ જીવ અજીવ હો જાવેં અજીવ જીવ હો જાવેં

ગતિમાં અથવા જાતિમાં અથવા કુલમાં વારંવાર સાન્તરરૂપે કે નિરન્તરરૂપે ઉત્પન્ન
 થતાં રહે છે. આ પ્રકારની પહેલી લોકસ્થિતિ કહી છે (૨) બીજી લોકસ્થિતિ
 આ પ્રકારની છે-જીવો દ્વારા સદા-પ્રવાહની અપેક્ષાએ અનાદિ અનન્તકાળ સુધી
 -નિરન્તર મોક્ષના વિઘાતક પાપકર્મોરૂપ જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારનાં પાપ
 કર્મોનો બંધ થતો રહે છે. (૩) ત્રીજી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-જીવો દ્વારા
 અનન્તકાળ સુધી નિરન્તર મોહનીય કર્મની પ્રધાનતાને લીધે મોહનીય આઠ
 પ્રકારનાં પાપકર્મોનો બંધ થતો રહે છે. (૪) ચોથી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની
 છે-ત્રણે કાળમાં એવું કદી બન્યું નથી, બનતું નથી અને બનવાનું પણ નથી
 એટલે કે એ વાત બિલકલ અસંભવિત છે કે જીવ અજીવ બની બંધ અને

ત્વમાપન્ના ભવિષ્યન્તીતિ માત્રઃ, એવમપ્યેકા લોકસ્થિતિ ભવતીતિ ચતુર્થો ભેદઃ
 ૪। તથા-ન ચ કાલત્રયેડપ્યેવં સંભવિ યત્, ત્રસાઃ પ્રાણા વ્યુચ્છેત્સ્યન્તિ=ત્રસપ્રા-
 નિનો વિનષ્ટા ભવિષ્યન્તિ કેવલં સ્થાવરા પ્રાણા ભવિષ્યન્તિ=સ્થાસ્યન્તિ, અથવા-
 સ્થાવરાઃ પ્રાણા વ્યુચ્છેત્સ્યન્તિ કેવલં ત્રસાઃ પ્રાણા એવ સ્થાસ્યન્તીતિ । એવમપ્યેકા
 લોકસ્થિતિ ભવતીતિ પશ્ચમો ભેદઃ ૫। તથા-ન ચ કાલત્રયેડપ્યેવં સંભવિ, યત્-
 લોકઃ અલોકો ભવિષ્યતિ=અલોકત્વેન પરિણતો ભવિષ્યતિ, અલોકો વા લોકો
 ભવિષ્યતિ=લોકત્વેન પરિણતો ભવિષ્યતિ, ક્યેવમપિ એકા લોકસ્થિતિ ભવતીતિ
 ષષ્ઠો ભેદઃ ૬। તથા-ન ચૈવંકાલત્રયેડપિ સંભવિ, યત્-લોકઃ અલોકે પ્રવેશ્યતિ=
 સમાવિષ્ટો ભવિષ્યતિ, અલોકો વા લોકે સમાવિષ્ટો ભવિષ્યતીતિ, એવમપિ એકા
 લોકસ્થિતિ ભવતીતિ સપ્તમો ભેદઃ ૭। તથા-યાવત્ લોકઃ તાવત્ જીવાઃ-
 યાવતિ ક્ષેત્રે લોકવ્યપદેશો ભવતિ તાવતિ ક્ષેત્રે જીવાઃ, યાવત્ જીવાઃ-યાવતિ

કયોંકિ કમી મી જીવ અજીવ રૂપતાકો ઓર અજીવ જીવ રૂપતાકો
 પ્રાપ્ત નહીં હો સકતે હૈં ૪। પાંચવીં લોકસ્થિતિ હસ પ્રકારસે હૈ-એસા
 ત્રિકાલમૈં મી નહીં હો સકતાહૈ, કિ હસ લોકમૈં ત્રસ પ્રાણિયોંકા વ્યુચ્છેદ
 હો જાવે, ઓર કેવલ સ્થવર પ્રાણિયોંકાહી સજ્ઞાવચના રહે ૫। છઠી લોક
 સ્થિતિ એસી હૈ, યહ વાત મી કાલ ત્રયમૈં સર્વથા અસંભવ હૈ, કિ લોક
 અલોક રૂપસે પરિણમ જાવે ઓર અલોક લોક રૂપસે પરિણમ જાવે ૬।
 સાતવીં લોકસ્થિતિ એસી હૈ-યહ વાત મી કાલ ત્રયમૈં સંભવિત નહીં હો
 સકની હૈ કિ લોકકા પ્રવેશ આ લોકમૈં હો જાવે ઓર આલોકકા પ્રવેશ
 લોકમૈં હો જાવે ૭। આઠવીં લોકસ્થિતિ એસી હૈ-જિતને ક્ષેત્રમૈં લોકકા વ્યપ-

અભવ ભવ બની બન્ય એટલે કે ભવ કદી પણ અભવ રૂપતાને પ્રાપ્ત કરતો
 નથી. (૫) પાંચમી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-ત્રણે કાળમાં એવું કદી સંભવી
 શકતું નથી કે આ લોકમાંથી ત્રસ ભવેનો વ્યુચ્છેદ (સંદતર નાશ થઈ બન્ય
 અને માત્ર સ્થાવર ભવેનો જ સદ્ભાવ રહે.—

(૬) છઠ્ઠી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-લોક અલોક રૂપે પરિભ્રમન પામી
 બન્ય, અને અલોક લોક રૂપે પરિભ્રમી બન્ય, એવી વાત પણ ત્રણે કાળમાં બની
 નથી, એટલે કે એ વાત પણ સર્વથા અસંભવિત છે.

(૭) સાતમી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-એ વાત પણ ત્રણે કાળમાં
 કદી સંભવી શકવાની નથી કે લોકને અલોકમાં પ્રવેશ થઈ બન્ય અને અલોકને
 પ્રવેશ લોકમાં થઈ બન્ય.

આઠમી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-એટલા ક્ષેત્રમાં લોકને વ્યપદેશ થાય

ક્ષેત્રે જીવાઃ તાવત્ લોકઃ=તાવતિ ક્ષેત્રે લોકવ્યપદેશઃ, इत्येवमपि एका लोक-
स्थितिरिति अष्टमो भेदः ८। अत्र भेदे 'जाव ताव, ताव ताव' इत्येवं यदुक्तं,
तद् वाक्यविन्याससौष्ठवार्थम् । एवमग्रेऽपि । तथा-यावति क्ષेत्रे जीवानां पुद्ग-
लानां च गतिपर्यायः, तावति क्ષेत्रे लोकोव्यपदेशः, यावति क्ષेत्रे च लोकोव्यप-
देशस्तावति क्ષेत्रे जीवानां पुद्गलानां च गतिपर्यायः, इत्येवमपि एका लोकस्थिति
भवतीति नवमो भेदः ९। तथा-सर्वेऽपि लोकान्तेषु खलु=निश्चयेन अवद्वयार्थ-
स्पृष्टाः-वद्धाः=गाढसंश्लिष्टा पार्श्वस्पृष्टा=स्पृष्टमात्राश्च न ये ते तथा, रूक्ष
द्रव्यान्तरेण सह गाढसंश्लेषपार्श्वस्पर्शाभ्यां रहिता इत्यर्थः, द्रव्यान्तरसम्पर्काद-

देश होता है-उतनेमें जीव हैं, और जितने क्षेत्रमें जीव हैं उतने क्षेत्रमें
लोक है ८। नौवीं लोकस्थिति ऐसी है-इस भेदमें जो "जाव, ताव,
ताव, ताव," ऐसे पदोंका प्रयोग हुआ है, वह वाक्यविन्यासकी
सुन्दरताके लिये हुआ है, इसी प्रकारसे आगे भी समझना चाहिये
नौवीं लोकस्थिति ऐसी है-जितने क्षेत्रमें जीवों और पुद्गलोंकी गतिरूप
पर्याय हैं उतने क्षेत्रमें लोक व्यपदेश है, उतने क्षेत्रमें जीवोंकी एवं
पुद्गलोंकी गति पर्याय है ९, दशवीं लोकस्थिति ऐसी है-समस्त लोका-
न्तोंमें निश्चयसे पुद्गल अवद्व पार्श्वस्पृष्ट हैं-अर्थात् नवे गाढ रूपसे
संश्लिष्ट हैं और न स्पृष्ट मात्र हैं-इस तरहसे वे पुद्गल रूक्ष द्रव्या-
न्तरके साथ गाढसंश्लेष और पार्श्वस्पर्श इन दोनोंसे रहित
हैं, तात्पर्य यह है कि वे यद्यपि द्रव्यान्तरके संपर्कसे असंजात रूक्ष

છે-જેટલા ક્ષેત્રને લોકને નામે ઓળખવામાં આવે છે, એટલાં ક્ષેત્રમાં જીવોનું
અસ્તિત્વ છે અને જેટલાં ક્ષેત્રમાં જીવોનું અસ્તિત્વ છે એટલાં જ ક્ષેત્રમાં લોક છે.

(૯) નવમી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-(આ લેદમાં જે "જાવ તાવ,
તાવ, તાવ" આ પદોનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે તે વાક્યવિન્યાસની સુંદર-
તાને માટે કરવામાં આવ્યો છે. એજ પ્રમાણે આગળ પણ સમજવું) જેટલાં
ક્ષેત્રમાં જીવો અને પુદ્ગલોની ગતિરૂપ પર્યાય છે એટલાં ક્ષેત્રમાં લોકવ્યપદેશ
(લોક શબ્દનો પ્રયોગ) છે અને જેટલાં ક્ષેત્રમાં લોકવ્યપદેશ છે એટલાં ક્ષેત્રમાં
જીવોની અને પુદ્ગલોની ગતિપર્યાય છે.

(૧૦) દસમી લોકસ્થિતિ આ પ્રકારની છે-સમસ્ત લોકાન્તોમાં પુદ્ગલો
અવદ્વપાર્શ્વસ્પૃષ્ટ જ છે. એટલે કે તેઓ ગાઢ રૂપે સંશ્લિષ્ટ પણ નથી અને
માત્ર નામના જ સ્પૃષ્ટ પણ નથી. આ પ્રકારે તે પુદ્ગલો રૂક્ષ દ્રવ્યાન્તરની
સાથે ગાઢ સંશ્લેષ અને પાર્શ્વસ્પર્શ આ બંનેથી રહિત છે. આ કથનનો

સંજાતરુક્ષપરિણામાઃ સન્ત ઇતિ ભાવઃ, પુદ્ગલાઃ સ્વભાવાત્ રુક્ષતયા ક્રિયન્તે= પરિણતા ભવન્તિ, અથવા-સર્વેષ્વપિ લોકાન્તેષુ સ્વભાવતો યા રુક્ષતા ભવતિ તથા તે પુદ્ગલા=અબદ્ધપાર્શ્વસ્પૃષ્ટાઃ=પરસ્પરમસંબદ્ધાઃ ક્રિયન્તે, તત્ર ગત્વા વિકીર્ણા ભવન્તીત્યર્થઃ । તે સર્વયા ન વિકીર્ણા ભવન્તી કિન્તુ તાવદેવ વિકીર્ણા ભવન્તિ યેન જીવાઃ=કર્મપુદ્ગલસહિતાઃ, પુદ્ગલાશ્ચ પરમાણ્વાદયો લોકાન્તાદ્ બહિર્ગમનતાયૈ= બહિર્ગન્તું નો શક્નુવન્તિ । એવમપિ એકા લોકસ્થિતિર્ભવતીતિ દશમો બેદઃ ૧૦ ॥ સૂ ૧ ॥

લોકસ્થિતિવશાદેવ પુરુષેણ પ્રોચ્યમાનાઃ શબ્દપુદ્ગલા લોકાન્તે ગચ્છન્તીતિ પ્રસ્તાવાચ્છબ્દભેદાનાહ—

મૂલમ્—દસવિદ્દે સદે પળ્લન્તે, તં જહા -નીહારિ ૧ પિંડિમે ૨ લુક્ષ્વે ૩ મિન્ને ૪ જજ્જરિણ ૫ ઇય ૬ રહસ્સે ૭ પુહુત્તે ૮ ય, કાકલી ૯ ચિંચિણિસ્સરે ૧૦ ॥ સૂ ૨ ॥

પરિણામવાલે હૈં—કર્ણોકિ વે સ્વભાવસેહી રુક્ષ રૂપસે પરિણત હોતે હૈ, અથવા—સમસ્ત બી લોકાન્તોંમેં જો સ્વભાવસે રુક્ષતા હોની હૈ, ડસસે વે પુદ્ગલ અબદ્ધ પાર્શ્વ સ્પૃષ્ટ-પરસ્પરમેં અસમ્બદ્ધ કિયે જાતે હૈં—અર્થાન્ વહાં જાકર વે વિકીર્ણ (વિચ્છર) જાતે હૈ—વે વહાં સર્વથા વિકીર્ણ નહીં હોતે હૈં, કિન્તુ ડતનેહી વિકીર્ણ હોતે હૈં કિ જિસસે કર્મપુદ્ગલ સહિત ઓર પુદ્ગલ પરમાણુ આદિ લોકાન્તસે વાહર જાનેકે લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હૈં ॥ સૂત્ર ૧ ॥

લોકસ્થિતિકે વશસે પુરુષ દ્વારા ઉચ્ચરિત શબ્દપુદ્ગલ લોકાન્તમેં જાતે હૈં, ઇસ પ્રસ્તાવસે અબ સૂત્રકાર શબ્દભેદોંકા કથન કરતે હૈં—

ભાવાર્થ એ છે કે તે પુદ્ગલો બે કે દ્રવ્યાન્તરના સંપર્કથી અસંજાત રુક્ષ પરિણામવાળાં છે, કારણ કે તેઓ સ્વભાવતઃ જ રસ રૂપે પરિણત થાય છે, અથવા સમસ્ત લોકાન્તોમાં બે સ્વભાવથી જ રુક્ષતા હોય છે તેના વડે તે પુદ્ગલો અબદ્ધપાર્શ્વસ્પૃષ્ટ-પરસ્પરમાં અસંબદ્ધ-કરાય છે એટલે કે ત્યાં જઈને તેઓ વિકીર્ણ થઈ જાય છે. અર્થાત્ વેરાઈ જાય છે તેઓ ત્યાં સંપૂર્ણ વિકીર્ણ થતાં નથી. પરન્તુ એટલાં જ વિકીર્ણ થાય છે. કે જેટલાં વિકીર્ણ થવાને લીધે કર્મપુદ્ગલ અને પરમાણુપુદ્ગલઆદિ લોકાન્તમાંથી બહાર જવાને માટે સમર્થ બની શકે નહીં. સૂ ૧।

લોકસ્થિતિ (લોક સ્વભાવ) એવો છે કે પુરુષ દ્વારા ઉચ્ચારિત શબ્દપુદ્ગલો લોકાન્તમાં જાય છે. આ પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર શબ્દભેદોંકા કથન કરે છે—દસવિદ્દે સદે પળ્લન્તે ઇત્યાદિ (સૂ ૨)

છાયા—દશવિધઃ શબ્દઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—નિર્હારી ૧ પિણ્ડમો ૨ રુક્ષઃ
૩ ભિન્નો ૪ જર્જરિત ૫ ઇતિ । દીર્ઘો ૬ હ્રસ્વઃ ૭ પૃથક્ત્વં ૮ કાકળી ૯
કિક્કિળીસ્વરઃ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ટીકા—‘દસવિહે સદે’ ઇત્યાદિ

શબ્દઃ=શ્રોત્રેન્દ્રિયગ્રાહ્યનિયતક્રમવર્ણાત્મકો ધ્વનિઃ દશવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—
‘નિર્હારી’ ઇત્યાદિ । તત્ર—નિર્હારી—ઘંટાશબ્દવત્ ઘોષયુક્તઃ શબ્દઃ ૧, પિણ્ડમઃ
—પિણ્ડેન નિર્વૃત્તઃ—ઢક્કાદિશબ્દવત્ ઘોષવર્જિતઃ શબ્દઃ ૨, રુક્ષઃ—કાકાદિશબ્દ-
વત્ ૩, ભિન્નઃ—કુષ્ઠાદિરોગોપહતશબ્દવત્ ૪, જર્જરિતઃ—સતન્ત્રીકકરટિકાદિવાદ્ય-

“દસવિહે સદે પળણ્ણે” ઇત્યાદિ । સૂત્ર ૨ ॥

મૂલાર્થ—શબ્દ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, જૈસે—નિર્હારી ૧, પિણ્ડમ ૨,
રુક્ષ ૩ ભિન્ન ૪, જર્જરિત ૫, દીર્ઘ ૬, હ્રસ્વ ૭, પૃથક્ત્વ ૮ કાકળી ૯
એવં કિક્કિળી સ્વર ૧૦ ।

ટીકાર્થ—શ્રોત્રેન્દ્રિય દ્વારા ગ્રાહ્ય જો નિયતક્રમ વર્ણવાલા ધ્વનિહૈ, ઉસકા
નામ શબ્દ હૈ, યહ જો નિર્હારી આદિકે ભેદસે ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા
હૈ, સો ઉસકા અર્થ હસ પ્રકારસે હૈ—જૈસે—ઘંટા શબ્દ હોતા હૈ, હસી
પ્રકારકા જો શબ્દ ઘોષસે યુક્ત હોતા હૈ વહ નિર્હારી શબ્દ હૈ, ઢક્કા
આદિકે શબ્દકી તરહ જો શબ્દ ઘોષસે રહિત હોતા હૈ વહ પિણ્ડમ
શબ્દ હૈ કાક આદિકે શબ્દકી તરહ જો શબ્દ હોતા હૈ, વહ રુક્ષ હૈ,
કુષ્ઠ આદિ રોગસે ઉપહત પ્રાણીકે શબ્દકી તરહ જો શબ્દ હોતા હૈ,
વહ ભિન્ન શબ્દ હૈ, તન્ત્રીક—વીણાસહિત કરટિક (૧) આદિ વાદ્યકે

મૂલાર્થ—શબ્દના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) નિર્હારી (૨) પિંડિમ,
(૩) રુક્ષ, (૪) ભિન્ન, (૫) જર્જરિત, (૬) દીર્ઘ, (૭) હ્રસ્વ, (૮) પૃથક્ત્વ (૯)
કાકળી અને (૧૦) કિક્કિળી.

ટીકાર્થ—શ્રોત્રેન્દ્રિય દ્વારા ગ્રાહ્ય જો નિયતક્રમવર્ણવાળો ધ્વનિ હોય છે તેનું નામ
શબ્દ છે. હવે આ દસે પ્રકારના શબ્દોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

ઘંટના અવાજ જેવો જે ધ્વનિ થાય છે તે ધ્વનિને નિર્હારી શબ્દ કહે
છે. આ શબ્દ ઘોષથી યુક્ત હોય છે. મોટા ઢોલ, નગારાં આદિના અવાજની
જેમ જે શબ્દઘોષથી રહિત હોય છે તેને “પિંડિમ શબ્દ” કહે છે. કાગડા
આદિના અવાજ જેવો જે અવાજ હોય છે તેને “રુક્ષશબ્દ” કહે છે. કુષ્ઠ
રોગ આદિથી પીડિત હોવાના અવાજ જેવો જે અવાજ હોય
છે તે અવાજને ‘ભિન્નશબ્દ’ કહે છે. તન્ત્રીક (તારવાળાં વાદ્યોને

શબ્દવત્ ૫, दीर्घः-दीर्घवर्णाश्रितः 'आ' इत्यादि शब्दवत् दूरतः श्रवणीयो वा मेघादिशब्दवत् ६, ह्रस्वः-ह्रस्ववर्णाश्रयः 'अ' इत्यादि शब्दवत्, समीपतः श्रवणीयो वा वीणादि शब्दवत् ७, पृथक्त्वः=नानातुर्यादिद्रव्यसंयोगे युग्मशब्दादि शब्दतुल्यो यः शब्दः ८, काकली-सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनिः, तत्तुल्यो यः शब्दः ९। तथा-किङ्किणीस्वरः-किङ्किणी=क्षुद्रघण्टिका तस्याः स्वरो=ध्वनिः, तत्सदृशो यः शब्दः १० ॥ सू० २ ॥

શબ્દકી तरह जो शब्द होता है, वह जर्जरित शब्द है "आ" इत्यादि दीर्घ वर्णकी तरह जो शब्द दीर्घ वर्णके आश्रित होता है, वह दीर्घ शब्द है, अथवा जो शब्द मेघ आदिके शब्दकी तरह दूरसे सुनने योग्य होता है वह दीर्घ शब्द है "आ" इत्यादि शब्दकी तरह जो वीणादिके शब्दकी तरह समीपसेही सुनने योग्य होता है, वह ह्रस्व शब्द है अनेक तुर्यादि द्रव्यके संयोगमें नाना प्रकारके वादित्रोंके संयोगमें युग्म शब्दादिके शब्दके जैसा जो शब्द होता है वह पृथक्त्व शब्द है, तथा-सूक्ष्म कण्ठसे गाई गई जो गीत ध्वनि है वह काकली है, इस काकलीके तुल्य जो शब्द है वह काकली शब्द है, क्षुद्र घण्टिका नाम किङ्किणी है, इस किङ्किणीकी ध्वनिके जैसा शब्द है वह किङ्किणी स्वर है ॥ सूत्र २ ॥

તાંત્રીક કહે છે) કરટિકા આદિ વાદના અવાજ જેવો જે અવાજ હોય છે તેને 'જર્જરિત શબ્દ' કહે છે. "આ" આદિ દીર્ઘ વર્ણના ઉચ્ચારણની જેમ જે શબ્દ દીર્ઘવર્ણવાળો હોવાને કારે દીર્ઘ ઉચ્ચારવાળો હોય છે તેને 'દીર્ઘશબ્દ' કહે છે. અથવા જે અવાજ મેઘ આદિના અવાજની જેમ દૂરથી શ્રવણ કરવાને યોગ્ય હોય છે તે અવાજને "દીર્ઘશબ્દ" કહે છે. "અ, ઇ" ઇત્યાદિના ઉચ્ચારનની જેમ જે શબ્દ હ્રસ્વવર્ણવાળાં અક્ષરને કારણે હ્રસ્વ ઉચ્ચારવાળો હોય છે તેને 'હ્રસ્વશબ્દ' કહે છે અથવા વીણા આદિના સૂરની જેમ જે સૂર સમીપમાંથી જ સાંભળવા યોગ્ય હોય છે તેને 'હ્રસ્વશબ્દ' કહે છે. અનેક તુરી આદિ વાજિત્રેના સંયોગથી-વિવિધ પ્રકરનાં વાજિત્રેના સંયોગથી-યમક શબ્દાદિના ધ્વનિ જેવો જે ધ્વનિ થાય છે તેનું નામ "પૃથક્ત્વશબ્દ" છે. સૂક્ષ્મ કંઠ વડે ગવાતાં ગીતનો જે ધ્વનિ હોય છે તેને 'કાકલી શબ્દ' કહે છે. નાની ઘંટડીને કિંકિણી કહે છે. તે કિંકિણીના ધ્વનિ જેવા અવાજને "કિંકિણી સ્વર" કહે છે. ॥ સૂત્ર ૨ ॥

શબ્દના ઉપર્યુક્ત ૧૦ લેહો શ્રવણેન્દ્રિય દ્વારા ગ્રાહ્ય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર કાળભેદને અનુસરીને ઇન્દ્રિયાર્થોનું કથન કરે છે-

अनन्तरक्षूत्रे शब्द भेदा उक्ताः, शब्दश्च इन्द्रियार्थ इति कालभेदेन इन्द्रिया-
र्थानाह—

मूलम्--दस इंदियत्था तीया पणत्ता, तं जहा-देसेण वि एगे
सद्दाइं सुणिंसु, सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिंसु, देसेणवि एगे
रूवाइं पासिंसु, सव्वेणवि एगे रूवाइं पासिंसु । एवं गंधाइं
रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेसु ॥ १ ॥
दस इंदियत्था पडुप्पन्ना पणत्ता, तं जहा-देसेणवि एगे
सद्दाइं सुणोति, सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणोति, एवं जाव फासाइं
पडिसंवेदोति ॥ २ ॥ दस इंदियत्था अणागया पणत्ता, तं जहा-
देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिरसंति, सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिरसंति।
एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदेससंति ॥ सू० ३ ॥

छाया—दश इन्द्रियार्था अतीताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-देशेनापि एके शब्दान्
अश्रृण्वन्, सर्वेणापि एके शब्दान् अश्रृण्वन्, देशेनापि एके रूपाणि अपश्यन्,
सर्वेणापि एके रूपाणि अपश्यन् । एवं गन्धान् रसान् स्पर्शान् यावत् सर्वेणापि
एके स्पर्शान् प्रति समवेदयन् ॥ १ ॥ दश इन्द्रियार्थाः प्रत्युत्पन्नाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-
देशेनापि एके शब्दान् श्रृण्वन्ति, सर्वेणापि एके शब्दान् श्रृण्वन्ति । एवं यावत्
स्पर्शान् प्रतिसंवेदयन्ति ॥ २ ॥ दश इन्द्रियार्था अनागताः प्रतप्ताः, तद्यथा-
देशेनापि एके शब्दान् श्रोष्यन्ति, सर्वेणापि एके शब्दान् श्रोष्यन्ति । एवं यावत्
सर्वेणापि एके स्पर्शान् प्रतिसंवेदयिष्यन्ति । ३ ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘दस इंदियत्था’ इत्यादि—

अतीताः=भूतकालिका इन्द्रियार्थाः=इन्द्रियविषयाः पदार्थाः दशसंख्यकाः
प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-देशेनापि=विवक्षितशब्दसमूहापेक्षया देशतोऽपि काँश्चित् शब्दान्

कहे गये ये शब्द भेद श्रवणेन्द्रियके विषय होते हैं, अतः अत्र
सूत्रकार काल भेदसे इन्द्रियार्थों का कथन करते हैं—

“दस इंदियत्था तीया पणत्ता” इत्यादि ।

टीकार्थ-भूतकालिक इन्द्रियार्थ दश कहे गये हैं जैसे कोई एक पुरुष ऐसे

“दस इंदियत्था तीया पणत्ता” इत्यादि—(सू ३)

टीकार्थ-भूतकालिक इन्द्रियार्थ दस कहा छे. ते दस प्रकार नीचे प्रमाणे समझवा-

एके अशृण्वन्=श्रुतवन्तः, तथा-एके सर्वेणापि=समुदायेनापि शब्दान् अशृण्वन्=श्रुतवन्तः । इन्द्रियापेक्षया देशतः=श्रोत्रेन्द्रियेण एके शब्दान् अशृण्वन्, सम्भिन्न-श्रोतालब्धिद्युक्तावस्थायामेके सर्वतः=सर्वैरिन्द्रियैः शब्दान् अशृण्वन् । अथवा-देशतः=एकेन कर्णेन सर्वतः=उभाभ्यामपि कर्णाभ्याम् । तथा-एके देशेनापि रूपाणि अशृण्वन्=दृष्टवन्तः, सर्वेणापि=सर्वतोऽपि चैके रूपाण्यवश्यम् । एवम्=अनेन प्रकारेण देशतः सर्वतश्च गन्धान् रसान् स्पर्शान् एके समवेदयन्=अनुभूत-

हुए हैं जिन्होंने विवक्षित शब्द समूहकी अपेक्षा एक देशसे कितनेक शब्दोंको सुना है, कई एक ऐसे हुए हैं, जिन्होंने समुदाय रूपसे भी शब्दोंको सुना है, तात्पर्य इस कथनका ऐसा है कि जिनको संभिन्न-श्रोतालब्धि हो गईहैं उन्होंने उस अवस्थामें समस्त इन्द्रियां से शब्दोंको सुना है और जिन्हे यह लब्धि नहीं हुई है उन्होंने इन्द्रियोंकी अपेक्षासे केवल एक श्रोत्रेन्द्रियसेही शब्दोंको सुना है अथवा-देशतः शब्दका अर्थ एक कान है और सर्वतः का अर्थ दो कान हैं, तथा कितनेक पुरुषोंने एक कानसे शब्दादिकोंको सुना है और कितनेकोने उन्हें दोनों कानोंसे सुना है ऐसा भी इसका अर्थ हो सकता है, इसी तरहसे कितनेक पुरुषोंने भूत कालमें एक देशसे भी रूपोंका अवलोकन किया है और पुरुषोंने सर्वदेशसे भी रूपोंका अवलोकन किया है, इसी प्रकारसे देश और सर्व रूपसे गन्धोंका, रसोंका, स्पर्शोंका कितनेक पुरुषोंने अनुभवन किया है (१) इसी

કેટલાક પુરુષો એવા થયાં છે કે જેમણે વિવક્ષિત શબ્દ સમૂહની અપેક્ષાએ એક દેશ (ભાગ)રૂપે કેટલાક શબ્દોને સાંભળ્યા છે. કેટલાક પુરુષો એવા થયાં છે કે જેમણે સમુદાયરૂપે પણ શબ્દોને સાંભળ્યા છે આ કથનને ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-જેમને સંલિપ્ત શ્રોતાલબ્ધિ થઈ ગઈ છે તેમણે તે અવસ્થામાં સમસ્ત ઇન્દ્રિયો વડે શબ્દોને સાંભળ્યા છે અને જેમને તે લબ્ધિ પ્રાપ્ત થઈ નથી તેમણે ઇન્દ્રિયોની અપેક્ષાએ માત્ર શ્રોત્રેન્દ્રિય વડે જ શબ્દોને સાંભળ્યા છે અથવા દેશતઃ એટલે એક કાન વડે અને સર્વતઃ એટલે બે કાન, વડે આ અર્થની દૃષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો અહીં આ સૂત્રપાઠને અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-કેટલાક પુરુષોએ એક કાનથી શબ્દ દિકોને સાંભળ્યા છે અને કેટલાક પુરુષોએ બંને કાન વડે શબ્દાદિકોને સાંભળ્યા છે. એજ પ્રમાણે કેટલાક પુરુષોએ ભૂતકાળમાં એક દેશથી પણ રૂપોતે અવલોકન કર્યું છે અને કેટલાક પુરુષોએ ભૂતકાળમાં સર્વદેશથી (સર્વદેશતઃ) પણ રૂપોતે અવલોકન કર્યું છે. એજ પ્રમાણે ભૂતકાળમાં કેટલાક પુરુષોએ દેશ અને સર્વ રૂપે ગન્ધોતું, રસોતું અને સ્પર્શોતું અનુભવન કર્યું છે (૧)

વન્ત ઇતિ ॥ ૧ ॥ તથા-પ્રત્યુત્પન્નાઃ=વર્તમાનકાલિકા ઇન્દ્રિયાર્થા અપિદશ સંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ તદ્વથા-દેશેનાપિ એકે શબ્દાન્ શ્રુણ્વન્તિ । સર્વેનાપ્યેકે શબ્દાન્ શ્રુણ્વન્તિ । તથા-કેચિત્ દેશતઃ સર્વતશ્ચાપિ રૂપાણિ પશ્યન્તિ । એવમેવ કેચિત્ દેશતઃ સર્વતોઽપિ ચ ગન્ધાન્ રસાન્ સ્પર્શાન્ સંવેદયન્તિ=અનુભવન્તિ ॥ ૨ ॥ તથા-અનાગતા =ભવિષ્યત્કાલિકા ઇન્દ્રિયાર્થા દશસંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્વથા-દેશતઃ સર્વતોઽપિ ચૈકે શબ્દાન્ શ્રોણ્યન્તિ । દેશતઃ સર્વતશ્ચૈકે રૂપાણિ દ્રક્ષ્યન્તિ । દેશતઃ સર્વતશ્ચૈકે ગન્ધાન્ રસાન્ સ્પર્શાન્ સંવેદયિષ્યન્તિ ॥ ૩ ॥ ઇતિ ॥ સૂ. ૦૩ ॥

તરહસે વર્તમાનકાલિક ઇન્દ્રિયાર્થાં ભી દશ સંખ્યાચાલે કહે ગયે હૈ જૈસે-દેશસે ભી કિતનેક શબ્દોંકો સુનતે હૈં ઓર સર્વદેશસે ભી કિતનેક દેશ ઓર સર્વ રૂપસે ભી રૂપોંકો દેખતે હૈં હસી તરહસે કિતને દેશસે ઓર સર્વ રૂપસે ભી ગન્ધોંકો, રસોંકો, ઓર સ્પર્શોંકો અનુ-ભવિત કરતે હૈં । ભવિષ્યત્કાલિક ઇન્દ્રિયાર્થાં ભી હસી તરહસે ૧૦ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં જૈસે-દેશમે ભી ઓર સર્વ રૂપસે ભી કિતનેક પુરુષ શબ્દોંકો સુનેગે । દેશસે ઓર સર્વ રૂપસે ભી કિતનેક રૂપોંકો દેખેગે, દેશસે ઓર સર્વ રૂપસે ભી કિતનેક ગન્ધોંકા, રસોંકા ઓર સ્પર્શોંકા સંવેદન કરેગે । હસ સૂત્રકા તાત્પર્ય કેવલ યહી હૈ કિ પાંચ ઇન્દ્રિયોંકે જો પાંચ વિષય કહે ગયે હૈં-उनके मूलभूत वर्तमान और

એજ પ્રમાણે વર્તમાનકાલિક ઇન્દ્રિયાર્થાં પણ દસ કહ્યા છે. જેમ કે કેટલાક પુરુષો દેશરૂપ શબ્દોને સાંભળે છે અને કેટલાક સર્વતઃ (‘સર્વરૂપે’) પણ શબ્દોને સાંભળે છે. કેટલાક દેશતઃ રૂપોને દેખે છે અને કેટલાક સર્વતઃ રૂપોને દેખે છે કેટલાક દેશરૂપે ગંધોનું અનુભવન કરે છે અને કેટલાક સર્વરૂપે ગંધોનું અનુભવન કરે છે એ જ રીતે કેટલાક દેશ રૂપે રસોનું અને કેટલાક સર્વ રૂપે રસોનું અનુભવન કરે છે. કેટલાક દેશ રૂપે સ્પર્શોનું અને કેટલાક સર્વરૂપે સ્પર્શોનું અનુભવન કરે છે. (૨)

ભવિષ્યકાલિક ઇન્દ્રિયાર્થાં પણ એજ પ્રમાણે દસ પ્રકારના કહ્યા છે. જેમ કે-કેટલાક લોકો દેશ રૂપે શબ્દોને સાંભળશે અને કેટલાક સર્વ રૂપે શબ્દોને સાંભળશે. કેટલાક દેશ રૂપે રૂપોનું અવલોકન કરશે અને કેટલાક સર્વ રૂપે રૂપોનું અવલોકન કરશે કેટલાક દેશ રૂપે ગંધોનું અનુભવન કરશે અને કેટલાક દેશ રૂપે અને કેટલાક સર્વ રૂપે રસોનું અનુભવન કરશે. કેટલાક દેશ રૂપે અને કેટલાક સર્વ રૂપે સ્પર્શોનું સંવેદન કરશે. આ સૂત્રનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે.

પાંચ ઇન્દ્રિયોના પાંચ વિષય કહ્યા છે. જેમ કે શ્રોત્રેન્દ્રિયનો વિષય શબ્દોનું શ્રવણ કરવાનો છે. ભૂતકાળ, વર્તમાન કાળ અને ભવિષ્યકાળની અપે-

इन्द्रियविषयीभूताः पदार्थाः पुद्गलधर्मा इति पुद्गलस्वरूपमाह—

एतत्-दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोगले चलेज्जा, तं जहा—
आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा १, परिणामिज्जमाणे वा चलेज्जा
२, उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा ३, निस्ससिज्जमाणे वा
चलेज्जा ४, वेइज्जमाणे वा चलेज्जा ५, णिज्जरिज्जमाणे वा
चलेज्जा ६, विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा ७, परियारिज्जमाणे
वा चलेज्जा ८, जक्खाइट्टे वा चलेज्जा ९, वायपरिगए वा
चलेज्जा १० ॥ सू० ४ ॥

छाया—दशभिः स्थानैरच्छिन्नः पुद्गलः चलेत्, तद्यथा—आह्रियमाणो वा
चलेत् १, परिणम्यमानो वा चलेत् २, उद्भवस्यमानो वा चलेत् ३, निःश्वस्य-
मानो वा चलेत् ४, वेद्यमानो वा चलेत् ५, निर्जीर्यमाणो वा चलेत् ६, विक्रिय-
माणो वा चलेत् ७, परिचार्यमाणो वा चलेत् ८, यक्षात्रिष्टो वा चलेत् ९, वात-
परिगतो वा चलेत् १० ॥ सू० ४ ॥

भविष्यत् कालकी अपेक्षा लेकर ५-५-ही भेद किये गये हैं और
इन पांचके एकदेशसे और सर्वदेशसे अपनी २ इन्द्रियों द्वारा ग्रहण
करनेकी अपेक्षा दो दो भेद कर दिये गये हैं, इस तरह भूतकालिक
इन्द्रियार्थ १० प्रकारके और भविष्यत्कालिक इन्द्रियार्थ १० प्रकारके
हो जाते हैं ॥ सूत्र ३ ॥

इन्द्रियोंके विषयभूत जो पदार्थ हैं, वे पुद्गलोंके धर्म हैं अतः अब
सूत्रकार पुद्गलका स्वरूप कहते हैं—

“ दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोगले ” इत्यादि ।

ક્ષાએ તેમના વિચાર કરવામાં આવે તો પ્રત્યેક કાળની અપેક્ષાએ તેમના પાંચ
—પાંચ ભેદ પડે છે. તે પાંચ ઇન્દ્રિયાર્થોની એક દેશ રૂપે અને સર્વ દેશ રૂપે
પોતપોતાની ઇન્દ્રિયો દ્વારા ગ્રહણ કરવાની અપેક્ષાએ બધાં ભેદ પડી જાય છે.
આ રીતે ભૂતકાલિક ઇન્દ્રિયાર્થ ૧૦ પ્રકારના, વર્તમાનકાલિક ઇન્દ્રિયાર્થ પણ
દસ પ્રકારના થઈ જાય છે. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

ઇન્દ્રિયોના વિષયભૂત જે પદાર્થો છે તેઓ પુદ્ગલોના ધર્મ રૂપ છે. તેથી
હવે સૂત્રકાર પુદ્ગલના સ્વરૂપનું નિરૂપણ કરે છે.

“ દસહિં ઠાણેહિં અચ્છિન્ને પોગલે ” ઇત્યાદિ—(સુ. ૪)

ટીકા—‘દસર્હિ ઠાળેર્હિ’ .ઇત્યાદિ—

દશમિઃ સ્થાનૈઃ=કારણૈઃ અચ્છિન્નઃ=અપૃથગ્ભૂતઃ-શરીરે વિવક્ષિતસ્કન્ધે વા સમ્બદ્ધઃ પુદ્ગલઃ ચલેત્=સ્થાનાન્તરે ગચ્છેત્, તથા-આહ્રિયમાણઃ=સ્વાધ્યાયમાણઃ પુદ્ગલઃ ચલેત્ ૧। પરિણમ્યમાણઃ=જઠરાગ્નિના પરિણતિમાપવમાનો વા પુદ્ગલઃ ચલેત્ ૨। ઉચ્છ્વાસ્યમાનો વા પુદ્ગલઃ=ઉચ્છ્વાસવાયુપુદ્ગલઃ ચલેત્ ૩। નિઃશ્વસ્યમાનો વા પુદ્ગલઃ=નિઃશ્વાસપુદ્ગલઃ ચલેત્ ૪। વેધમાણઃ=અનુભૂયમાનો વા પુદ્ગલઃ=કર્મપુદ્ગલઃ ચલેત્ ૫। નિર્જીર્યમાણો દેશતઃ ક્ષીયમાણો વા પુદ્ગલઃ=કર્મપુદ્ગલઃ ચલેત્ ૬।

ટીકાર્થ-દશ કારણોસે અચ્છિન્ન-અપૃથગ્ભૂત શરીરમેં અથવા વિવક્ષિત સ્કન્ધમેં સમ્બદ્ધ પુદ્ગલ સ્થાનાન્તરમેં જા સકતા હૈ, વે દશ કારણ હસ પ્રકારસે હૈ-इनमें एक कारण है-जो खाया गया पुद्गल होता है वह एक स्थानसे दूसरे स्थानमें जा सकता है, दूसरा कारण ऐसा है जो परिणम्यमान-जठराग्निसे परिणतिको प्राप्त हुआ-पुद्गल होता है, वह एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जा सकता है, तीसरा कारण ऐसा है-उच्छ्वास्यमान पुद्गल जो उच्छ्वास वायुरूप पुद्गल होता है वह एक स्थानसे दूसरे स्थान जा सकता है। चतुर्थ कारण ऐसा है-जो निःश्वस्यमान पुद्गल होता है-निःश्वास वायुरूप पुद्गल होता है, वह एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जा सकता है, पांचवां कारण ऐसा है-जो वेद्यमान पुद्गल अनुभूयमान कर्म पुद्गल होता है वह एक स्थानसे दूसरे स्थान पर जा सकता है, छठा कारण ऐसा है, जो पुद्गल निर्जीर्यमाण होता है-एकदेशसे क्षीयमाण होता है, वह एकस्थानसे दूसरे

ટીકાર્થ-દશ કારણોને કીધે અચ્છિન્ન-અલગ નહીં પડેલું-શરીરમાં અથવા અમુક સ્કન્ધમાં સંબદ્ધ હોય એવું પુદ્ગલ સ્થાનાન્તરમાં જઈ શકે છે. તે દસ કારણો નીચે પ્રમાણે છે-

(૧) આહાર રૂપે ગ્રહણ કરાયેલું પુદ્ગલ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. (૨) જે પરિણમ્યમાન (જઠરાગ્નિ વડે પરિણતિને પામેલું) પુદ્ગલ હોય છે તે પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. (૩) ઉચ્છ્વાસ્યમાન પુદ્ગલ (જે ઉચ્છ્વાસના વાયુરૂપ પુદ્ગલ હોય છે તે) પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. (૪) નિઃશ્વસ્યમાન પુદ્ગલ (નિઃશ્વાસ વાયુરૂપ પુદ્ગલ) પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને ગમન કરી શકે છે. (૫) જે વેધમાન પુદ્ગલ (અનુભૂયમાન કર્મપુદ્ગલ) હોય તે પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. (૬) જે પુદ્ગલો નિર્જીર્યમાન હોય છે-એક દેશથી ક્ષીયમાણ હોય છે-તે એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ

વિક્રિયમાણઃ=વૈક્રિયશરીરત્વેન પરિણમ્યમાનો વા પુદ્ગલઃ ચલેત્ ૭। પરિચાર્ય-
માર્ણઃ=મૈથુનસંજ્ઞયા વિપયીક્રિયમાણો વા પુદ્ગલઃ=શુક્રપુદ્ગલાદિઃ ચલેત્ ૮। યક્ષા-
વિષ્ટઃ=ભૂતાઘધિષ્ઠિતો વા પુદ્ગલશ્ચલેત્ ૯। વાતપરિગતઃ-દેહગતવાયુપ્રેરિતો વા
પુદ્ગલઃ ચલેત્ ૧૦ ॥ 'વા' શબ્દઃ સર્વત્ર વિકલપાર્થઃ । યદ્વા-'આહરિજ્જમાણે'
इत्यादौ सर्वत्र सप्तम्यन्तता बोध्या । ततश्च-आह्रियमाणे=आहारे भुज्यमाने
सति पुद्गलश्चलेत् १। परिणम्यमाणे=जठराग्निना भोजने खलरसभावेन परिणति-
मापयमाणे वा पुद्गलश्चलेत् २। उच्छ्वस्यमाणे=उदरवातेन उच्छ्वसिते क्रियमाणे
वा ३, निःश्वस्यमाणे=उदरवातेन निःश्वसिते क्रियमाणे वा ४, वेद्यमाणे=अनु-
भूयमाणे वा कर्मणि ५, निर्जीर्यमाणे=देशतः क्षीयमाणे वा कर्मणि ६, वैक्रिय-
लब्धिमता विक्रियमाणे शरीरे वा ७, परिचर्यमाणे=संभुज्यमाने स्त्रीशरीरादौ पुद्गलः=
शुक्र पुद्गलः ८, यक्षाविष्टे सति पुरुषे पुद्गलः=तच्छरीरलक्षणः. ९। वातपरिगते
वा=वातेन व्याप्ते शरीरे, वातवातेन वा उत्क्षिप्ते शरीरे पुद्गलः चलेदिति १०॥सू. ४॥

સ્થાન પર જા સકતા હૈ, સાતવાં કારણ એસા હૈ-જો વિક્રિયમાણ પુદ્ગલ
હોતા હૈ, વૈક્રિયશરીર પરિણતિકો માસ હોતા હુઆ પુદ્ગલ હોતા હૈ-
વહ એક સ્થાનસે દૂસરે સ્થાન પર જા સકતા હૈ, આઠવાં કારણ એસા
હૈ જો પરિચાર્યમાણ પુદ્ગલ હોતા હૈ મૈથુનસંજ્ઞાસે વિપય ક્રિયા જાતા
પુદ્ગલ હોતા હૈ, અર્થાત્ વીર્યરૂપ પુદ્ગલ હોતા હૈ વહ એક સ્થાનસે દૂસરે
સ્થાન પર જા સકતા હૈ, નૌવાં કારણ એસા હૈ, જો પુદ્ગલ યક્ષાવિષ્ટ હોતા
હૈ ભૂત આદિસે અધિષ્ઠિત હોતા હૈ વહ એક સ્થાનસે દૂસરે સ્થાન પર
ચલાયમાન હોતા હૈ ઔર દશવાં કારણ એસા હૈ કિ જો પુદ્ગલ વાત
પરિગત હોતા હૈ-દેહગતવાયુસે પ્રેરિત હોતા હૈ, વહ એક સ્થાનસે દૂસરે
સ્થાન ચલાયમાન હો સકતા હૈ ॥ સૂત્ર ૪ ॥

શકે છે. (૭) જે વિક્રિયમાણ પુદ્ગલ હોય છે-વૈક્રિય શરીરરૂપ પરિણતિને પામેલું
પુદ્ગલ હોય છે, તે પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. (૮) જે
પરિચાર્યમાણ પુદ્ગલ હોય છે, એટલે કે જે મૈથુનક્રિયા દ્વારા જન્ય પુદ્ગલ
હોય છે અથવા જે વીર્યરૂપ પુદ્ગલ હોય છે તે પણ એક સ્થાનેથી બીજે
સ્થાને જઈ શકે છે (૯) યક્ષાવિષ્ટ પુદ્ગલ ભૂતાદિ વડે અધિષ્ઠિત હોય એવું
પુદ્ગલ પણ ચલાયમાન થાય છે એટલે કે એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે.

(૧૦) જે પુદ્ગલ વાતપરિણત હોય છે-દેહગત વાયુથી પ્રેરિત હોય છે.
તે પણ એક સ્થાનેથી બીજે સ્થાને જઈ શકે છે. ॥ સૂત્ર ૪ ॥

पुद्गलधर्मान् इन्द्रियार्थानाश्रित्य क्रोधोत्पत्तिर्भवतीति पुद्गलाधिकारात्तामेव दशविधत्वेनाह—

मूलम्—दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया, तं जहा—मणु-
न्नाइं मे सदफरिसरसरूवगंधाइमवहरिंसु १, अमणुन्नाइं मे
सदफरिसरसरूवगंधाइमुवहरिंसु २, मणुन्नाइं मे सदफरिस-
रसरूवगंधाइं अवहरइ ३, अमणुन्नाइं मे सदफरिसरसरूव-
गंधाइं उवहरइ ४, मणुण्णाइं मे सदफरिस रसरूवगंधाइं अव-
हरिस्सइ ५, अमणुन्नाइं मे सदफरिसरसरूवगंधाइं उवहरि-
स्सइ ६, मणुण्णाइं मे सद जाव गंधाइं अवहरिंसु वा अवहरइ
अवहरिस्सइ ७, अमणुण्णाइं मे सद जाव उवहरिंसु वा उवह-
रइ उवहरिस्सइ ८, मणुण्णामणुण्णाइं राइ जाव अवहरिंसु
अवहरइ अवहरिस्सइ उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ ९, अहं
च णं आयरिय उवज्झायाणं सम्मं वट्ठामि ममं च णं आयरिय-
उवज्झाया मिच्छं पडिवन्ना १० ॥ सू० ५ ॥

छाया—दशभिः स्थानैः क्रोधोत्पत्तिः स्यात्, तद्यथा—मनोज्ञान् मे शब्द-
स्पर्शरसरूपगन्धान् अपाहोषीत् १, अमनोज्ञान् मे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् उपा-
होषीत् २, मनोज्ञान् मे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् अपहरति ३, अमनोज्ञान् मे
शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् उपहरति ४, मनोज्ञान् मे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान्
अपहरिष्यति ५, अमनोज्ञान् मे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् उपहरिष्यति ६। मनो-
ज्ञान् मे शब्द यावद् गन्धान् अपाहोषीद् वा अपहरति अपहरिष्यति ७, अमनो-
ज्ञान् शब्द यावद् गन्धान् उपाहोषीद् वा उपहरति उपहरिष्यति ८, मनोज्ञामनो-
ज्ञान् शब्द यावत् अपाहोषीत् अपहरति अपहरिष्यति, उपाहोषीत् उपहरति उप-
हरिष्यति ९, अहं च खलु आचार्योपाध्यायानां सम्यग्बुद्धे मां च खलु आचा-
र्योपाध्याया मिथ्या प्रतिपन्नाः १० ॥ सू० ५ ॥

ટીકા—‘ દમહિં ઠાળેહિં ’ ઇત્યાદિ—

દશમિઃ સ્થાનૈઃ=કારણૈઃ ક્રોધોત્પત્તિઃ સ્યાત્, તદ્વથા-અયં પુરુષો મે=મમ મનોજ્ઞાન્ શબ્દસ્પર્શરસરૂપગન્ધાન્ અપાહાર્પીત્=અપહૃતવાન્ ઇતિ પ્રથમં ક્રોધોત્પત્તિસ્થાનમ્ ૧। અયં મમ અમનોજ્ઞાન્ શબ્દાદીન્ ઉપાહાર્પીત્=મહ્યમ્ અમનોજ્ઞાન્ શબ્દાદીન્ સમર્પિતવાન્ ઇતિ દ્વિતીયમ્ ૨। एवं वर्तमानकालिकमविष्यत्कालिकौ मनोज्ञामनोज्ञशब्दादिविषयकापहारोपहारावाश्रित्य चत्वारि स्थानानीति उक्तद्वय-संयोजनेन षट्क्रोधोत्पत्तिस्थानानि ६। तथा-कालत्रयेऽप्येककर्तृक मनोज्ञशब्दादि विषयकापहारमाश्रित्य सप्तमम् ७। कालत्रयेऽप्येककर्तृकम् अमनोज्ञशब्दादिविष-

इन्द्रियोके विषयभूत पुद्गल धर्मों को आश्रित करके क्रोधकी उत्पत्ति होती है अतः इसी अभिप्रायको लेकर अब सूत्रकार उसीका दशविध रूपसे कथन करते हैं—“दसहिं ठाणेहिं को हुप्पत्ती सिचा” इत्यादि ॥ सूत्र २ ॥ टીकाथ—दश कारणोंसे क्रोधकी उत्पत्ति होती है वे दश स्थान इस प्रकारसे हैं—जैसे इस पुरुषने मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गन्धोंका अपहरण किया था १ इस पुरुषने मुझे अमनोज्ञ शब्दादिकोंको सम-र्पित किया था २ इसी प्रकारसे वर्तमानकालिक और भविष्यत्कालिक मनोज्ञ-अमनोज्ञ शब्दादि विषयक अपहार और उपहारको आश्रित करके चार स्थान बना लेना चाहिये, इनमें पूर्वोक्त स्थान द्वयके संयोग करनेसे क्रोधोत्पत्तिके ये ६ स्थान हो जाते हैं । तथा-कालत्रयमें भी एक कर्तृक मनोज्ञ शब्दादि विषयक अपहारको आश्रित करके सप्तम

ઇન્દ્રિયોના વિષયભૂત પુદ્ગલ ધર્મોના આશ્રય લઈને ક્રોધની ઉત્પત્તિ થાય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લઈને હવે સૂત્રકાર ક્રોધની ઉત્પત્તિના દશ કારણોનું નિરૂપણ કરે છે—“દસહિં ઠાળેહિં કોહુપત્તી સિચા” ઇત્યાદિ (સૂ. ૫) ટીકાર્થ—દશ કારણોને લીધે ક્રોધની ઉત્પત્તિ થાય છે. તે દશ કારણો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) આ પુરુષે મારાં મનોજ્ઞ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગન્ધનું હરણ કરાવ્યું હતું (૨) આ પુરુષે મને અમનોજ્ઞ શબ્દાદિકો સમર્પિત કર્યા હતા. એજ પ્રકારે વર્તમાનકાલિક અને ભવિષ્યકાલિક મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ શબ્દાદિ વિષયક અપહાર અને ઉપહારનો આશ્રય લઈને બીજાં ચાર કારણોનું કથન કરી શકાય. પૂર્વોક્ત બે કારણો સાથે આ ચાર કારણોનો સંયોગ કરવાથી ક્રોધોત્પત્તિનાં ૬ સ્થાનો (કારણો)નું પ્રતિપાદન અહીં સુધીમાં પૂરું થાય છે.

ત્રણે કાળમાં કર્તૃક (કારણ) મનોજ્ઞ શબ્દાદિ વિષયક એક અપહારનો (તેનાથી વંચિત કરવાની ક્રિયાનો) જ આશ્રય લઈને સાતમું સ્થાન (કારણ)

યકષ્ણુપહારમાશ્રિત્ય ચાષ્ઠમ્ ૭। તથા—કાલત્રયેऽપ્યેકકર્તૃકૌ મનોજ્ઞાપનોજ્ઞશબ્દાદિ વિષયરૂપહારોપહારાવાશ્રિત્ય નવમમ્ ૯। તથા—અહં ચ સ્વલુ આચાર્યોપાધ્યાયાનાં વિષયે સમ્યગ્=યાથાતથ્યેન વર્તે=પ્રતિપત્તિમાન્ ભવામિ, પરન્તુ માં પ્રતિ આચાર્યોપાધ્યાયા મિથ્યા=વૈપરીત્યેન પ્રતિપન્ના ઇતિ દશમં ક્રોધોત્પત્તિસ્થાનમ્ ॥ સૂ. ૦૫ ॥

ક્રોધોત્પત્તિસ્તુ સંયમિનાં ન ભવતીતિ સંયમાન્, તત્પ્રતિપક્ષભૂતાન્ અસંયમાન્ તથા સંવરાન્ તદ્વિરુદ્ધાન્ અસંવરાંશ્ચ પ્રાહ—

મૂલમ્—દસવિહે સંજમે પળ્લણત્તે, તં જહા—પુઠવિકાઙ્ગયસંજમે ૧, જાવ વળસ્સઙ્કાઙ્ગયસંજમે ૫ વેઙ્ગિયસંજમે ૬, તેઙ્ગિયસંજમે ૭, ચડિરિયસંજમે ૮, પંચિરિયસંજમે ૯, અજીવકાયસંજમે ૧૦ । ૧ । દસવિહે અસંજમે પળ્લણત્તે, તં જહા—પુઠવિકાઙ્ગયઅસંજમે ૧, આઝકાઙ્ગયઅસંજમે ૨, તેઝકાઙ્ગયઅસંજમે ૩ વાઝકાઙ્ગયઅસંજમે ૪, વળસ્સઙ્કાઙ્ગયઅસંજમે ૫, જાવ અજીવકાયઅસંજમે ૧૦ । ૨ । દસવિહે સંવરે પળ્લણત્તે, તં જહા—સોઙ્ગિય-

સ્થાન હો જાતા હૈ, તથા કાલત્રયમેં મી એક કર્તૃક અમનોજ્ઞ શબ્દાદિક વિષયક ઉપહારકો આશ્રિત કરકે આઠવાં સ્થાન હો જાતાહૈ ૮ તથા—કાલત્રયમેં મી એકકર્તૃક મનોજ્ઞ ઓર અમનોજ્ઞ શબ્દોદિ વિષયક અપહાર એવં ઉપહારકો આશ્રિત કરકે નૌવાં સ્થાન હો જાતા હૈ તથા દશવાં સ્થાન એસા હૈ કિ મેં તો આચાર્ય ઉપાધ્યાયોકે વિષયમેં સમ્યક્રૂપસે પ્રતિપત્તિવાલા રહતા હૂં પરન્તુ વે મેરે પ્રતિ વિપરીત રૂપ સેહી બને રહતે હૈ—એસા યહ દશવાં ક્રોધોત્પત્તિકો સ્થાન હૈ ॥ સૂત્ર ૫ ॥

નક્કી થઈ જાય છે. ત્રણે કાળમાં કર્તૃક અમનોજ્ઞ શબ્દોદિ વિષય ઉપર (તેનો સંયોગ કરાવવાની ક્રિયા)નો આશ્રય લીધે આઠમું સ્થાન (કારણ) નક્કી કરી શકાય છે. તેથી ત્રણે કાળમાં કર્તૃક એક મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ શબ્દોદિ વિષયક અપહાર અને ઉપહારનો આશ્રય લીધે ક્રોધોત્પત્તિનું નવમું સ્થાન (કારણ) નક્કી કરી શકાય છે. હમમું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—કોઈ વ્યક્તિ એવી માન્યતા સેવની હોય છે કે હું તો આચાર્ય અને ઉપાધ્યાયો પ્રત્યે સમ્યક્ વર્તન રાખું છું—તેમનો આદર કરું છું, પણ તેઓ મારા પ્રત્યે વિપરીત રૂપે જ વર્તે છે. આ પ્રકારના કારણને લીધે પણ ક્રોધની ઉત્પત્તિ થાય છે. ॥ સૂત્ર-૫ ॥

સંવરે ૧, જાવ ફાસિંદિયસંવરે ૫, મણસંવરે ૬, વયસંવરે ૭, કાયસંવરે ૮, ઉવગરણસંવરે ૯, સૂઈકુસગસંવરે ૧૦ । ૩ । દસ-વિહે અસંવરે પળ્લત્તે, તં જહા-સોઈંદિયઅસંવરે, જાવ સૂચીકુ-સગઅસંવરે ૪ ॥ સૂ ૬ ॥

છાયા—દશવિધઃ સંયમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પૃથ્વીકાયિકસંયમઃ ૧, યાવદ્-વનસ્પતિકાયિકસંયમઃ ૫, દ્વીન્દ્રિયસંયમઃ ૬, ત્રીન્દ્રિયસંયમઃ ૭, ચતુરિન્દ્રિયસં-યમઃ ૮, પંચેન્દ્રિયસંયમઃ ૯, અજીવકાયસંયમઃ ૧૦ । ૧ । દશવિધોઽસંયમઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—પૃથ્વીકાયિકાસંયમઃ ૧, અપ્કાયિકાસંયમઃ ૨, તેજસ્કાયિકા-સંયમઃ ૩, વાયુકાયિકાસંયમઃ ૪, વનસ્પતિકાયિકાસંયમઃ ૫, યાવત્ અજી-

ક્રોધકી ઉત્પત્તિ સંયમી જીવોંકો નહીં હોની હૈ અતઃ સૂત્રકાર સંયમકા, સંયમસે વિરુદ્ધ અસંયમકા તથા સંવરકા ઓર સંવરવિરુદ્ધ અસંવરકો કથન કરતેહે—“દસવિહે સંજમે પળ્લત્તા” હત્યાદિ ॥સૂત્ર ૬॥

સૂત્રાર્થ—સંયમ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ જૈસે—પૃથિવીકાયિક સંયમ ૧, યાવત્ વનસ્પતિકાયિક સંયમ ૫, દ્વીન્દ્રિય સંયમ ૬, ત્રીન્દ્રિય સંયમ ૭, ચતુરિન્દ્રિય સંયમ ૮ પંચેન્દ્રિય સંયમ ૯ એવં અજીવકાય સંયમ ૧૦ અસંયમ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે—પૃથિવીકાયિક અસંયમ ૧ અપ્કાયિક અસંયમ ૨ તેજસ્કાયિક અસંયમ ૩, વાયુકાયિક અસંયમ ૪ વનસ્પતિકાયિક અસંયમ ૫, યાવત્ અજીવકાય

આગલા સૂત્રમાં ક્રોધોત્પત્તિનાં કારણોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આંયુઃ સંયમી જીવો ક્રોધ કરતા નથી. તેથી સંયમના, સંયમથી વિપરીત એવા અસંયમના, સંવરના તથા સંવરથી વિરુદ્ધ એવાં અસંવરના લેહોનું સૂત્રકાર નિરૂપણ કરે છે—

“દસવિહે સંજમે પળ્લત્ત” ઇત્યાદિ—(સૂ ૬)

સૂત્રાર્થ—સંયમના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે

(૧) પૃથ્વીકાયિક સંયમ (૨ થી ૫) અપ્કાયિકથી લઈને વનસ્પતિ કાયિક સંયમ પર્યન્તના ચાર પ્રકારો. (૬ થી ૯) દ્વીન્દ્રિય સંયમથી લઈને પંચેન્દ્રિય સંયમ પર્યન્તના ચાર પ્રકારો અને (૧૦) અજીવકાય સંયમ.

અસંયમના પણ નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે.—

(૧) પૃથ્વીકાયિક અસંયમ, (૨) અપ્કાયિક અસંયમ, (૩) તેજસ્કાયિક અસંયમ, (૪) વાયુકાયિક અસંયમ, વનસ્પતિકાયિક અસંયમ (૬ થી ૯)

ઘ્ર્ણાયાસંવરઃ ૧૦ । ૨ । દશવિધઃ સંવરઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્વથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયસંવરો યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિયસંવરઃ ૫ મનઃસંવરઃ ૬, વાક્સંવરઃ ૭, કાયસંવરઃ ૮, ઉપકરણસંવરઃ ૯, સૂચીકુશાગ્રસંવરઃ ૧૦ । ૩ । દશવિધઃ અસંવરઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્વથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયાસંવરો, યાવત્ સૂચીકુશાગ્રાસંવરઃ ॥ મૂ० ૬ ॥

અસંવર ૧૦-૨ સમ્બર ૧૦ પ્રકારના કહા ગયા હૈ જૈસે-શ્રોત્રેન્દ્રિય સંવર ૧ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય સંવર ૫ મનઃસંવર ૬, વાક્ સંવર ૭, કાયસંવર ૮ ઉપકરણસંવર ૯ એવં સૂચીકુશાગ્રસંવર ૧૦ (૩)

અસંવર ૧૦ પ્રકારના કહા ગયા હૈ જૈસે-શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંવર યાવત્ સૂચીકુશાગ્ર અસંવર ૧૦ ।

ઉપકરણ સંવર-પરિમાણસે અધિક એવં અકલ્પનીય વસ્ત્ર પાત્ર આદિકોંકા જો ગ્રહણ નહીં કરના અથવા-કૈંછે હુણ વસ્ત્રાદિ ઉપકરણોંકા એકઠા કરનાં યહ ઉપકરણ સંવર હૈ, યહ ઔપધિક ઉપકરણકી અપેક્ષાસે તથા-સૂચીકે અગ્રભાગ ઘરાંવર યા કુશકે-અગ્રભાગ ઘરાંવર ખી વસ્તુકા યતનાકે સાથ ગ્રહણ કરના ઔર યતનાકે સાથ રલ્લના યહ સૂચીકુશાગ્રસંવર હૈ, યહાં દશ મેદોંમેં અન્તિમ દો ઉપકરણસંવર

દ્વીન્દ્રિય અસંયમથી લઈને પંચેન્દ્રિય અસંયમ પર્યન્તના ચાર પ્રકારો (૧૦) અશુલ્કાય અસંયમ.

સંવરના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે. (૧ થી ૫) શ્રોત્રેન્દ્રિય સંવર થી લઈને સ્પર્શેન્દ્રિય સંવર સુધીના પાંચ પ્રકારો, (૬) મન સંવર, (૭) વક્ષસંવર, (૮) કાયસંવર, (૯) ઉપકરણસંવર અને (૧૦) સૂચીકુશાગ્રસંવર.

અસંવરના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકારો કહ્યા છે-શ્રોત્રેન્દ્રિય અસંવરથી લઈને સૂચીકુશાગ્રઅસંવર પર્યન્તના ઉપર્યુક્ત દસ પ્રકારો અહીં ગ્રહણ કરવા જોઈએ.

ઉપકરણ સંવરનો અર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે-પરિમાણથી અધિક અને અકલ્પનીય વસ્ત્ર, પાત્ર આદિ ગ્રહણ ન કરવા તેનું નામ ઉપકરણ સંવર છે. અથવા ફેલાયેલા (વિખરાયેલાં) વસ્ત્ર દ્વિ ઉપકરણોને એકઠાં કરવા તેનું નામ ઉપકરણ સંવર છે. ઔપધિક ઉપકરણોના પ્રમાણને મર્યાદિત કરવાથી ઉપકરણ સંવર થાય છે.

સૂચીકુશાગ્ર સંવર-સોય અથવા દહાંની આણી પર રહી શકે એટલી અલ્પ પ્રમાણ વસ્તુને પણ યતનાપૂર્વક નીચે મૂકવી તેનું નામ સૂચીકુશાગ્ર સંવર છે.

ટીકા—‘ દસવિહે ’ इत्यादि—

ઘ્નાસ્થા રપ્ઠા, નવરમ્-ઉપકરણસંવર:-પરિમાણાધિક્રમ્ય અકલ્પનીયસ્ય ચ વસ્તુનાદેશગ્રહણરૂપો, વિપ્રજીર્ણસ્ય વસ્તુઅપકરણસ્ય સંવરણં વા । અયં ચૌધ્રિ-કોપકરણાપેક્ષઃ । તથા-સૂચીકુશાગ્રસંવર:-સૂચ્યગ્રકુશાગ્રમાત્રસ્યાપિ વસ્તુનો યત-નયાઽઽદાનં નિષ્કેષઃ સઃ । અત્ર દક્ષસુ મેદેપુ અન્તિમૌ ઉપકરણસંવર-સૂચીકુશા-ગ્રસંવરરૂપૌ દ્વૌ મેદૌ યતનયા આદાનનિષ્કેષણરૂપૌ દ્રવ્યવિષયકાવિતિ । એતદ્વિ-પરીતશ્ચ દશવિધોઽસંયમો बोध्यः ॥ સૂ. ૬ ॥

અસંવરો દશવિધત્વેનોક્તઃ । અથ તસ્યૈવ વિશેષમાહ—

મૂલમ્—‘ દસહિં ઠાણેહિં અહમંતીઙ થંમિજ્જા, તં જહા-જાહમણ વા, કુલમણ વા, જાત્વ ઇસ્સરિયમણ વા ૮, ણાગ-સુવણ્ણા વા મે અંતિયં હવ્વમાગચ્છંતિ ૯, પુરિસધમ્માઓ વા મે ઉત્તરિણ અહોહિણ ણાણંસણે સમુપ્પન્ને ॥ સૂ. ૭ ॥

છાયા—દશમિઃ સ્થાનૈઃ અહમંતીતિ રતઙ્ગનીયાત્, તથા-જાતિમદેન વા, કુલમદેન વા, યાવત્ એશ્વર્યમદેન વા ૮ નાગસુવર્ણા વા મે અન્તિકં હવ્યમાગચ્છન્તિ ૯, પુરુષધર્માદ વા મે ઔત્તરિકમ્ યથાવધિકં જ્ઞાનદર્શનં સમુત્પન્નમ્ ૧૦ ॥ મૂ. ૭ ॥

ટીકા—‘ દસહિં ઠાણેહિં ’ इत्यादि—

દશમિઃ સ્થાનૈર્જનઃ અહમંતી-અન્તઃ=જાત્યાદિપ્રકર્યપર્યન્તઃ, સોઽસ્ત્યસ્યેતિ-અન્તી, અદમેવ અન્તી-અહમંતી-અદમેવ જાત્યાદિના ઉત્તમોઽસ્મીતિ કૃત્વા સ્તમ્ભી ઔર સૂચીકુશાગ્ર સંવર યે મેદ દ્રવ્યવિષયક હૈ તથા-ઇનસે વિપરીત ૧૦ પ્રકારકા અસંયમ હોના હૈ ॥ સૂત્ર ૬ ॥

અવ સૂત્રકાર કથિત ૧૦ પ્રકારકે અસંવરકે વિષયમેં વિશેષ કથન કરતે હૈ—“ દસહિં ઠાણેહિં અહમંતીઙ થંમિજ્જા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—દશ સ્થાનોનો લેઠર મનુષ્યમેંહી જાતિ આદિસે ઉત્તમ હૂં હસ પ્રકારસે મનુષ્યારી હોના હૈ, યહ મન્નશબ્દકા અર્થ જાતિ આદિકા

અહીં જે હસ લેદોને ણનાવવામાં આવ્યા છે. તેમાંના છેલ્લા બે લેદો (ઉપ-કરણ સંવર અને સૂચીકુશાગ્રસંવર દ્રવ્યવિષયક છે. અસંવરના હસ લેદો સંવરના હસ લેદો કરતાં વિપરીત સ્વરૂપવાળા હોય છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

આગલા સૂત્રમાં ૧૦ પ્રકારના અસંવરો પ્રકટ કરવામાં આવ્યા. હવે સૂત્રકાર તે અસંવરના વિષયમાં વિશેષ કથન કરે છે—

“ દસહિં ઠાણેહિં અહમંતીઙ થંમિજ્જા ” इत्यादि—(સૂ. ૭)

ટીકાર્થ—“હું જાતિ આદિની અપેક્ષાએ ‘શ્રેષ્ઠ છું,’ આ પ્રકારે ગર્વ કરવો

ભાત્=મહાકારી મહેત્ । કૈઃ સ્થાનૈ ? इत्याह-तद्यथा-जातिमदेन जातिः=विशुद्धो
 भातृवंशः, तस्य मदोऽहङ्कारस्तेन १, कुलमदेन-कुलं=पैतृको वंशः, तस्य मदस्तेन
 , यावत्पदेन-‘वलमएण रुवमएण सुयमएण तवमएण लाभमएण’-लाया-
 लमदेन रूपमदेन श्रुतमदेन तपोमदेन लाभमदेन-इत्येषां संग्रहः । ‘वा’ शब्दा-
 द्वादि मदेष्वपि योजनीयाः । अर्थः रपटः । तथा-ऐश्वर्यमदेन-वैभवप्रभुता-

અર્થ છે, યહ પ્રકરણ જિસકે હોના હૈ, વહ અન્તી હૈ, મેં હી અન્તી હૂં
 જાતિ આદિસે ઉત્તમ હૂં એસા જિસકો મર્વ હોના હૈ વહ અહમન્તી હૈ
 એસા અહમન્તી જીવ હન દશ સ્થાનોંકે કારણસે હોના હૈ-અનમેં એક
 સ્થાન હૈ જાતિમદ ૧ વિશુદ્ધ માતૃવંશકા નામ જાનિ હૈ હસકા જો
 મદ-અહંકાર હૈ વહ જાતિમદ હૈ, હસ જાતિમદકો લેકર મનુષ્ય
 મહમન્તી હોના હૈ ૧ દૂસરા સ્થાન હૈ-કુલમદ-પૈતૃકવંશકા નામ
 કુલ હૈ, હસ કુલકા જો મદ અહંકાર હૈ વહ કુલમદ હૈ, યહાં યાવ-
 પદસે-“વલમણ, રુવમણ, સુયમણ, તવમણ, લાભમણ”
 ન પદોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ “વા” શબ્દોંકા યોગ બલાદિ મદોંમેં મી
 ગા લેના ચાહિયે, હન પદોંકા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ, હસ પ્રકારસે યે યહાં
 ૭ સ્થાન હો જાતે હૈ, ૮ વાં સ્થાન એશ્વર્ય મદ હૈ, વૈભવકા યા
 મુતાકા મદ કરના યહ એશ્વર્ય મદ હૈ, હસ મદ રૂપ કારણકો
 કેકર મી મનુષ્ય અહમન્તી હોના હૈ, નાગકુમાર એવં સુપર્ણકુમાર

તેનું નામ ‘અહમ્’ અથવા અભિમાન છે. અહમ્ + અન્તી = અહમન્તી
 “હું અન્તી છું” એટલે કે જાતિ આદિની અપેક્ષાએ હું શ્રેષ્ઠ છું. આ પ્રકારનો
 અહંકાર કરનારને ‘અહમન્તી’ કહે છે. આ પ્રકારના અહમન્તીના નીચે પ્રમાણે
 ૧૦ પ્રકાર પડે છે-

(૧) જાતિમદ-માતૃવંશને જાતિ કહે છે. “હું વિશુદ્ધ માતૃવંશમાં ઉત્પન્ન
 થયો છું,” આ પ્રકારનો જાતિનો મદ કરવાથી માણસ અહમન્તી બને છે.

(૨) કુલમદ-પિતૃવંશને કુળ કહે છે. “હું વિશુદ્ધ કુળમાં ઉત્પન્ન થયો
 છું,” આ પ્રકારનો મદ કરવો તેનું નામ કુળમદ છે. એવો મદ કરનાર
 માણસ પણ અહમન્તી (અહંકારી) ગણાય છે. અહીં ‘યાવત્’ પદથીનીચેનો
 સૂત્રપાઠ ગ્રહણ થયો છે-“વલમણ, રુવમણ, સુયમણ, તવમણ, લાભમણ”

(૩) જાતમદ, (૪) રૂપમદ, (૫) શ્રુતમદ, (૬) તપમદ અને (૭) લાભમદ, આ
 મદોને કારણે પણ માણસ અહંકારી બને છે. આ પદોનો અર્થ સમજી શકાય
 એવો છે હવે અહંકારના બાકીનાં ત્રણ સ્થાનો પ્રકટ કરવામાં આવે છે-(૮)
 એશ્વર્યમદ-પોતાનો વૈભવ ધણો જ છે એવો મદ પણ માણસને થાય છે અને
 તે કારણે પણ તે અહંકારી બને છે. (૯) લબ્ધિમદ-“મારી પાસે એવી લબ્ધિ

દિમદેન ૮, અથા-નામસુપર્ણા:-નામકુમારાઃ સુપર્ણકુમારાશ્ચ સમ અન્તિકં= સન્નિધિં હવ્યમ્=શીઘ્રમ્ આગચ્છન્તિ, અહો મે લઙ્ઘિરિતિ માવનયા યો મદસ્તેન ૯। તથા-પુરુષધર્માન્-પુરુષાણાં=સાધારણપુરુષાણાં ધર્મો=જ્ઞાનપર્યાયલક્ષણસ્તસ્માત્-તદ્દેક્ષયા ઔત્તરિકમ્-ઉત્તરમેવ ઔત્તરિકમ્-મધાનમ્ યથાવધિકમ્=યાવત્પરિમિતં જ્ઞાનદર્શનં તાવત્પરિમિતં સર્વં મે સમુત્પન્નમિતિ હેતોર્યો મદસ્તેનેતિ ૧૦ ॥મૂ૦૭॥

જાત્યાદિમદવિપરીતશ્ચ સમાધિરિતિ સમાર્થિ તદ્વિપરીતમ્ અસમાર્થિં ચાહ—

મૂલમ્—દસવિહા સમાહી પષ્ણત્તા, તં જહા—પાળાઢવાયવે-
રમણે ૧, મુસાવાયવેરમણે ૨, અદિજ્ઞાદાનવેરમણે ૩, મેહુણવેર-
મણે ૪, પરિગ્ગહવેરમણે ૫, ઈરિયાસમિર્ઙ ૬, માસાસમિર્ઙ ૭,
ણસળાસમિર્ઙ ૮, આયાળભાંડમત્તનિક્કલેવળાસમિર્ઙ ૯, ઉચ્ચાર-
પાસવળલેલજલ્હિસિંઘાળગપરિટ્ઠાવળિયાસમિર્ઙ ૧૦ । ૧ । દસ-
વિહા અસમાહી પષ્ણત્તા, તં જહા—પાળાઢવાય જાવં પરિગ્ગહે
ઈરિયાસમિર્ઙ જાવં ઉચ્ચારપાસવળલેલજલ્હિસિંઘાળગપરિટ્ઠા-
વળિયા અસમિર્ઙ ૨ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

મેરે પાસ બહુન જટ્ટી આ જાતે હૈં એસી સુજ્ઞમેં લઙ્ઘિ હૈ સો હસ
ભાવનાસે ખી મનુવ્ય અહમન્તો હોતા હૈ, યહ ૯ વાં સ્થાન હૈ,
૧૦ વાં સ્થાન એસા હૈ કિ સવાર પુરુષોંકા જો જ્ઞાનપર્યાયલ્પ ધર્મ હૈ,
હસતી અપેક્ષા સુજ્ઞમેં જ્ઞાન અધિક હૈ, અર્થાન્ જ્ઞાન ઓર દર્શન જિતના
ઉત્પન્ન હોના ચાહિયં ઉતના સુજ્ઞે ઉત્પન્ન હો ચુકા હૈ હસ પ્રકારકે મદસે
ખી મનુવ્ય અહમન્તો હોતા હૈ ॥ સૂત્ર ૭ ॥

છે કે નાગકુમાર અને સુપર્ણકુમાર પણ મારી પાસે બ્યારે હું ધારુ' ત્યારે પુરત
જ આવી જાય છે" આ પ્રકારના મદને લઙ્ઘિમદ કહે છે. આ મદને કારણે
પણ માણસ અકંકારી અને છે. હસઅં સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે. સાધાર
પુરુષો કરતાં પણ મેં વધારે જ્ઞાનદર્શનની પ્રાપ્તિ કરી છે અથવા જ્ઞાન અને
દર્શન બેટલું ઉત્પન્ન થયું બેઠબે, તેટલું મારામાં ઉત્પન્ન થયું ગયું છે, આ
પ્રકારનો મદ કરવાથી પણ માણસ અકમન્તી થયું જાય છે ॥ સૂત્ર ૭ ॥

છાયા—દશવિધઃ સમાધિઃ પ્રજ્ઞસઃ, તથા—પ્રાણાતિપાતવિરમણં ૧, મૃષા-
વાદવિરમણ ૨, અદત્તાદાનવિરમણ ૩, મૈથુનવિરમણ ૪, પરિગ્રહવિરમણ ૫,
ઈર્યાસમિતિઃ ૬, ભાષાસમિતિઃ ૭, અપનાસમિતિઃ ૮ આદાનલાઙ્કામત્રનિષ્કે-
પણાસમિતિઃ ૯, ઉચ્ચારપ્રસંગશ્લેષજલ્લશિષ્ટાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતિઃ ૧૦
૧૧। દશવિધોઽસમાધિઃ પ્રજ્ઞતઃ, તથા—પ્રાણાતિપાતો યાવત્ પરિગ્રહઃ, ઈર્યા-
સમિતિર્યાવત્ ઉચ્ચારપ્રસંગશ્લેષજલ્લશિષ્ટાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતિઃ ૨। સૂ. ૮।

ટીકા—‘દસવિહા’ ઇત્યાદિ—

સમાધિઃ—સમાધાનં સમાધિઃ—સમતા—સામાન્યતો રાગાદ્યનામઃ । સ ચ ઉપા-
ધિભેદાત્ પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિરૂપો દશવિધો बोध्य इति १। समाधिनिपरीतो-
ઽસમાધિરપિ પ્રાણાતિપાતાદિભેદેન દશવિધો बोध्य इति २ ॥ સૂ. ૮ ॥

જાત્યાદિ મદોસે વિપરીત સમાધિ હોતી હૈ, અતઃ અથ સૂત્રકાર
સમાધિકા ઓર ડસલે વિપરીત અસમાધિકા કથન કરતે હૈ—

“દસવિહા સમાહી પળ્લતા” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—સામાન્ય રૂપસે રાગાદિકોના અભાવ હોના ઇસ તા નામ સમાધિ
હૈ, યહ ઉપાધિ ભેદસે પ્રાણાતિપાતવિરમણ આદિરૂપ દસ પ્રકારકી
હોતી હૈ, જો ઇસ પ્રકારસે હૈ—પ્રાણાતિપાતવિરમણ ૧, મૃષાવાદવિર-
મણ ૨, અદત્તાદાન વિરમણ ૩, મૈથુનવિરમણ ૪, પરિગ્રહવિરમણ ૫
ઈર્યાસમિતિ ૬, ભાષા સમિતિ ૭, અપના સમિતિ ૮ આદાન લાઙ્કામત્ર-
નિષ્કેપણા સમિતિ ૯ ઓર ઉચ્ચારપ્રસંગશ્લેષજલ્લશિષ્ટાણપરિ-
ષ્ઠાપનિકા સમિતિ ૧૦ અસમાધિ ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ જૈસે—પ્રાણા-

જાત્યાદિ મદોસી વિપરીત સમાધિ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર સમાધિના
ભેદોનું કથન કરે છે અને ત્યારબાદ સમાધિથી વિપરીત એવી અસમાધિના
ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે—“દસવિહા સમાહી પળ્લતા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૮)

ટીકાર્થ—સામાન્ય રૂપે રાગાદિકોના અભાવ હોવાને તેનું નામ સમાધિ છે. ઉપાધિ-
ભેદની અપેક્ષાએ તે સમાધિના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર પડે છે—(૧) પ્રાણાતિપાત
વિરમણ, (૨) મૃષાવાદ વિરમણ, (૩) અદત્તાદાન વિરમણ, (૪) મૈથુન વિરમણ,
(૫) પરિગ્રહ વિરમણ, (૬) ઈર્યાસમિતિ, (૭) ભાષાસમિતિ, (૮) અપનાસમિતિ,
(૯) આદાનલાઙ્કામત્રનિષ્કેપણા સમિતિ, અને (૧૦) ઉચ્ચારપ્રસંગશ્લેષ
જલ્લશિષ્ટાણ પરિષ્ઠાપનિકા સમિતિ.

અસમાધિના પણ દસ પ્રકાર પડે છે. તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—(૧
થી ૫) પ્રાણાતિપાતથી લઈને પરિગ્રહ પર્યન્તના પાંચ પ્રકારો. (૬) ઈર્યાઅસમિતિ

સમાધેરાશ્રયઃ સુપ્રવ્રજ્યા, અસમાધેરાશ્રયશ્ચ દુષ્પ્રવ્રજ્યા, इति सामान्यतः
પ્રવ્રજ્યાં દશવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—દસવિહા પવ્વજ્ઞા પળગત્તા, તં જહા—છંદા ૧ રોષા
૨ પરિજુળના ૩ સુવિળા ૪ પહિસ્સુયા ૫ ચેવ । સારણિયા ૬
રોગિણિયા ૭ અનાહિયા ૮, દેવસંજ્ઞસી ૯ । વચ્છાણુવંધિયા ૧૦ ॥ સૂ ૦૧ ॥

છાયા—દશવિધા પ્રવ્રજ્યા પ્રજ્ઞપ્તા, તથા—છન્દા ૧ રોષા ૨ પરિજૂના ૩,
સ્વપ્ના ૪, પ્રતિશ્રુતા ૫ ચેવ । સ્મારણિકા ૬, રોગિણિકા ૭, અનાદતા ૮,
દેવસંજ્ઞસિ ૯ । વત્સાનુવંધિકા ૧૦ ॥ સૂ ૦૧ ॥

ટીકા—‘ દસવિહા ’ इत्यादि—

પ્રવ્રજ્યા—પ્રવ્રજનં પ્રવ્રજ્યા—સાવચ વ્યાપારધિરમગલક્ષણા દશવિધા—પ્રજ્ઞપ્તાઃ,
તથા—છન્દા—છન્દોઽભિપાનઃ, સ ચ સ્વકીયઃ પરકીયશ્ચેતિ, તદ્વશાદ્ યા પ્રવ્રજ્યા
તિપાન યાવત્ પરિચહ ર્દયાં અસમિતિ યાવત્ ઉચ્ચારપ્રસ્તવગ્છેષ્મ
જલ્લશિઙ્ગાણ પરિષ્ઠાપનિકા અસમિતિ ॥ સૂત્ર ૮ ॥

સમાધિકો આશ્રયમૂત સુપ્રવ્રજ્યા હોતી હૈ, ઓર અસમાધિકી
આશ્રયમૂત દુષ્પ્રવ્રજ્યા હોતી હૈ અનઃ અવ સૂત્રકાર સામાન્ય રૂપસે
પ્રવ્રજ્યાકા દશવિધ રૂપસે કથન કરતે હૈ—

“ દસવિહા પવ્વજ્ઞા પળગત્તા ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—સાવચ વ્યાપારસે રહિન હોના—સાવચ કર્મ કરનેકા પરિત્યાગ
કરના ઇસકા નામ પ્રવ્રજ્યા હૈ, યદ્ પ્રવ્રજ્યા દશ પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ જૈસે—
છન્દા ૧ રોષા ૨, પરિજૂના ૩, સ્વપ્ના ૪ પ્રતિશ્રુતા ૫ સ્મારણિકા ૬
રોગિણિકા ૭ અનાદતા ૮ દેવસંજ્ઞસિ ૯ ઓર વત્સાનુવંધિકા ૧૦

(૭) ભાષાઅસમિતિ, (૮) એષણાઅસમિતિ, (૯) આદાનભાંડમત્ર નિશ્ચેષણાઅસમિતિ,
અને (૧૦) ઉચ્ચારપ્રસ્તવ—સ્ત્રોતમજ્જલશિઙ્ગાણ પરિષ્ઠાપનિકા અસમિતિ. । સૂ ૮ ।

સુપ્રવ્રજ્યાનો આધાર સમાધિ પર રહે છે અને અસમાધિને કારણે પ્રવ્ર-
જ્યા દુષ્પ્રવ્રજ્યા રૂપ બની જાય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લીધે
હવે સૂત્રકાર પ્રવ્રજ્યાના દસ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિહા પવ્વજ્ઞા પળગત્તા ” इत्यदि—(સૂ ૯)

ટીકાર્થ—સાવચ વ્યાપારોથી નિવૃત્ત થવું. સાવચ કૃત્યોનો પરિત્યાગ કરવો તેનું
નામ પ્રવ્રજ્યા છે. તે પ્રવ્રજ્યાના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) છન્દા,
(૨) રોષા, (૩) પરિજૂના, (૪) સ્વપ્ના, (૫) પ્રતિશ્રુતા, (૬) સ્મારણિકા, (૭)
રોગિણિકા, (૮) અનાદતા, (૯) દેવ સંજ્ઞસિ, અને (૧૦) વત્સાનુવંધિકા.

સા । તત્ર સ્વક્રીયાધિમાનવશાદ્ યથા-ભગવતા સહ વાદાર્થમાગતસ્ય ગૌતમાદેઃ ।
 પરક્રીયાધિમાગવશાદ્ યથા-ભ્રાતૃવશાદ્ ભવદત્તસ્યેતિ ૧ । રોપારોપવશાદ્ યા સા,
 યથા-શિવભૂતેઃ ૨ । પરિઘૂના દારિદ્ર્યાશાદ્ યા સા, યથા-કાઠહારકસ્ય ૩ ।
 સ્વપ્નાધ્વપ્નાત્ સ્વપ્ને વા યા પ્રવ્રજ્યા સા, યથા-પુષ્પચૂઝાયાઃ ૪ । પ્રતિશ્રુતા-
 પ્રતિશ્રુતાત્=પ્રતિજ્ઞાવશાદ્ યા સા, યથા-શાલિભદ્રમગિનીપતેર્ધન્યરય ૫ । સ્માર-

જો પ્રવ્રજ્યા સ્વક્રીય યા પરક્રીય અભિપ્રાયકે વશસે ધારણ કી જાતી
 હૈ વહ છંદા પ્રવ્રજ્યા હૈ જૈસે સ્વક્રીય અભિપ્રાયકે વશસે ભગવાન્ સાથ-
 વાદ વિવાદ કરનેકે લિયે આયે હુએ ગૌતમાદિને ધારણ કી હૈ પરક્રીય
 અભિપ્રાયકે વશસે જૈસે ભવદત્તને ભ્રાતાકે વશસે પ્રવ્રજ્યા ધારણ કી
 હૈ ૧ જો પ્રવ્રજ્યા શિવભૂતિકી તરહ રોપકે વશસે ધારણ કી જાતી હૈ
 વહ રોપા પ્રવ્રજ્યા હૈ ૨ પરિઘૂન શબ્દકા અર્થ હૈ દારિદ્ર્ય કાઠહારકકી
 તરહ જા પ્રવ્રજ્યા દારિદ્ર્યકે વશસે ગ્રહણ કી જાતી હૈ વહ પરિઘૂના
 પ્રવ્રજ્યા હૈ ૩ સ્વપ્નસે અથવા-સ્વપ્નમેં જો પ્રવ્રજ્યા પુષ્પચૂઝા કી તરહ
 ધારણ કી જાતી હૈ વહ પ્રવ્રજ્યા સ્વપ્ન હૈ ૪ શાલિભદ્રકે બહનોઈ ધન્યકી
 તરહ પ્રવ્રજ્યા પ્રતિજ્ઞાકે વશસે ધારણ કી જાતી હૈ વહ પ્રતિશ્રુત હૈ ૫

જે પ્રવ્રજ્યા પોતાના અથવા પરક્રીય અભિપ્રાયને આધારે ધારણ કરાય
 છે તે પ્રવ્રજ્યાને છંદા પ્રવ્રજ્યા કહે છે. જેમ કે ભગવાન મહાવીરની સાથે
 વાદવિવાદ કરવા આવેલા ગૌતમાદિએ જે પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરી હતી તે
 સ્વક્રીય અભિપ્રાયને કારણે અંગીકાર કરી હતી. ભવદત્તે જે પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર
 કરી હતી તે પોતાના ભાઈના અભિપ્રાયને કારણે અંગીકાર કરી હતી આ રીતે
 સ્વક્રીય અથવા પરક્રીય અભિપ્રાયથી પ્રેરઈને જે દીક્ષા અંગીકાર કરવામાં આવે
 છે તેને છંદા પ્રવ્રજ્યા કહે છે.

(૨) રોપ-રોપને કારણે જે પ્રવ્રજ્યા ધારણ કરાય છે તે પ્રવ્રજ્યાનું નામ
 રોપાપ્રવ્રજ્યા છે. જેમ કે શિવભૂતિએ રોપને કારણે પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરી
 હતી. તેથી તે પ્રવ્રજ્યાને રોપા પ્રવ્રજ્યા કહી શકાય.

(૩) પરિઘૂન એટલે દારિદ્ર્ય કાઠકારકની જેમ જે પ્રવ્રજ્યા દારિદ્ર્યને
 કારણે લેવામાં આવે છે તેને પરિઘૂના પ્રવ્રજ્યા કહે છે.

(૪) કોઈ વિશિષ્ટ સ્વપ્નને કારણે અથવા પુષ્પચૂઝાની જેમ સ્વપ્નમાં જે
 પ્રવ્રજ્યા ધારણ કરવામાં આવે છે તેને સ્વપ્ના પ્રવ્રજ્યા કહે છે.

(૫) શાલિભદ્રના બનેલી ધન્યની જેમ જે પ્રવ્રજ્યા પ્રતિજ્ઞાને કારણે ધારણ
 કરાય છે તે પ્રવ્રજ્યાને પ્રતિશ્રુત પ્રવ્રજ્યા કહે છે.

ણિકા-સ્મારણાદ યા સા, યથા-મલ્લિનાથ સ્મારિતપૂર્વમવાનાં પ્રતિબુદ્ધ્યાદીનાં
પણાં ધૂપાનામ્ ૬। રોગિણિકા-રોગ આલમ્બનનયા વિધતે યસ્યાં સા રોગિણી,
સૈવ રોગિણિકા, યથા-સનત્કુમારસ્ય ૭। અનાદતા-અનાદતાત્=અનાદરાદ્દેતોઃ
યા પ્રવ્રજ્યા સા, યથા નન્દિષેણસ્ય ૮। દેવસંજ્ઞસિઃ-દેવસ્ય સંજ્ઞાત્યા=દેવકૃતપ્રતિ-
બોધનેન યા સા, યથા-મેતાર્યાદેઃ ૯। તથા-વત્સાનુવન્ધિકા-વત્સા=પુત્રઃ, તસ્ય
અનુવન્ધઃ=સ્નેહો હેતુર્યસ્યાં સા, યથા-વૈરસ્વામિમાતુઃ ૧૦ ઇતિ ॥ સૂ ૧ ॥

પ્રવ્રજ્યાવાનેવ શ્રમણધર્માધિકારી ભવતીતિ શ્રમણધર્માન્ દશવિધત્વેનાહ—

મૂળમ્--દસવિધે સમણધર્મમે પળણત્તે, તં જહા--શ્વંતી ૧ મુત્તી
૨ અઙ્ગલે ૩, મહલે ૪, લાઘવે ૫, સચ્ચે ૬, સંજમે ૭, તવે
૮, વિયાણ ૯, બંધચેરવાસે ૧૦ ॥ સૂ ૧૦ ॥

જો પ્રવ્રજ્યા મલ્લિનાથકે દ્વારા સ્મરણ કરાયા ગયા હૈ પૂર્વમવ જિન્હોંકો
એસે પ્રતિબુદ્ધ હુણ ૬ રાજાઓંકી તરહ સ્મરણસે ગ્રહણ કી જાતી હૈ વહ
સ્મારણિકા પ્રવ્રજ્યા હૈ ૬ સનત્કુમારકી તરહ જો પ્રવ્રજ્યા રોગકે કારણ
ગ્રહણ કી જાતી હૈ વહ રોગિણિકા પ્રવ્રજ્યા હૈ ૭ નન્દિષેણ કી જૈસે
જો પ્રવ્રજ્યા અનાદરકે કારણ કી જાતી હૈ વહ અનાદતા પ્રવ્રજ્યા હૈ ૮
મેતાર્ય આદિંહી તરહ જો પ્રવ્રજ્યા દેવકૃત પ્રતિબોધનકે વશસે ધારણ
કી જાતી હૈ વહ પ્રવ્રજ્યા દેવસંજ્ઞસિ પ્રવ્રજ્યા હૈ ૯ જો પ્રવ્રજ્યા વૈર
સ્વામીકી માતાકી તરહ પુત્રકે સ્નેહકે વશસે ધારણ કી જાતી હૈ વહ
વત્સાનુવન્ધિકા પ્રવ્રજ્યા હૈ ૧૦ ॥ સૂત્ર ૧ ॥

(૬) જે પ્રવ્રજ્યા પૂર્વભવ આદિના સ્મરણને કારણે ધારણ કરાય છે તે
પ્રવ્રજ્યાને સ્મારણિકા પ્રવ્રજ્યા કહે છે. મલ્લિનાથ ભગવાન દ્વારા જે છ રાજાઓને
પૂર્વભવનું સ્મરણ કરાવવામાં આવ્યું હતું તે રાજાઓની પ્રવ્રજ્યાને સ્મારણિકા
પ્રવ્રજ્યા કહી શકાય (૭) સનત્કુમારની જેમ જે પ્રવ્રજ્યા રોગને કારણે ગ્રહણ
કરાય છે તે પ્રવ્રજ્યાને રોગિણિકા પ્રવ્રજ્યા કહે છે. (૮) નન્દિષેણની જેમ
જે પ્રવ્રજ્યા અનાદરને કારણે લેવામાં આવે છે તે પ્રવ્રજ્યાને અનાદતા
પ્રવ્રજ્યા કહે છે.

(૯) મેતાર્ય આદિની જેમ જે પ્રવ્રજ્યા દેવકૃત પ્રતિબોધથી પ્રેરાઈને લેવામાં
આવે છે તે પ્રવ્રજ્યાને દેવસંજ્ઞસિ પ્રવ્રજ્યા કહે છે. (૧૦) વૈર સ્વામીની માતા
જેમ જે પ્રવ્રજ્યા પુત્ર પ્રત્યેના સ્નેહને કારણે લેવામાં આવે છે તે પ્રવ્રજ્યાને
વત્સાનુવન્ધિપ્રવ્રજ્યા કહે છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

છાયા—દશવિધઃ શ્રમણધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ, તથા—ક્ષાન્તિઃ ૧. મુક્તિઃ ૨, આર્જવં ૩, માર્દવં ૪, લાઘવં ૫, સત્યં ૬, સંયમઃ ૭, તપઃ ૮, ત્યાગઃ ૯, બ્રહ્મચર્યવાસઃ ૧૦ ॥ ૧૦ ॥ ૧૦ ॥

ટીકા—‘દસવિધે’ इत्यादि—

શ્રમણધર્મો દશપ્રકારકઃ પ્રોક્તઃ, તથાહિ-ક્ષાન્તિઃ = નિન્દાદિશ્રવણેઽપિ ક્રોધ-ત્યાગઃ ૧, મુક્તિઃ = વાહ્યાભ્યન્નરવસ્તુષુ લોભપરિત્યાગઃ ૨, આર્જવમ્ = માયાત્યગઃ ૩, માર્દવં = માનપરિત્યાગઃ ૪, લાઘવમ્ = દ્રવ્યનોઽસ્થોપધિતા, ભાવનો ક્રદ્ધિ, રસ જ્ઞાતરૂપ ગૌરવત્રયત્યાગઃ ૫, સત્યમ્ = સત્યવાદિત્યાગ ૬, સંયમઃ = પ્રાણાતિપાતાદિ-વિરમણમ્ ૭, તપઃ = તપતિઃ = દહતિ અષ્ટપ્રકારકં કર્મેતિ તપઃ = તપશ્ચર્યા ૮, ત્યાગઃ =

પ્રજ્ઞાચાલાહી શ્રમણ ધર્મ તા અધિકારી હોના હૈ અતઃ અવ સૂત્ર-કાર શ્રમણધર્મોંકા દશ પ્રકારસે વર્ણન કરતે હૈ —

“દસવિધે સમણધર્મે પળજ્ઞે” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રમણ ધર્મ ૧૦ પ્રકારકા કરા ગયાહૈ—જોસે—ક્ષાન્તિ ૧ મુક્તિ ૨ આર્જવ ૩ માર્દવ ૪ લાઘવ ૫ સત્ય ૬ સંયમ ૭ તપ ૮ ત્યાગ ૯ ઓર બ્રહ્મચર્ય વાસ ૧૦ ।

નિન્દા આદિકે સુનને પર ઓ ક્રોધ નહોં કરના ક્ષાન્તિ હૈ ૧ વાહ્ય આભ્યન્નર વસ્તુઓંમે લોભકા પરિત્યાગ કરના હસકો નામ મુક્તિ હૈ ૨ માયા (કપટ)કા ત્યાગ કરના આર્જવહૈ ૩ માનકા પરિત્યાગ કરના માર્દવ હૈ ૪ દ્રવ્યકો અપેક્ષા અરુપ ઉપધિ રલ્લના ઓર ભાવકો અપેક્ષા ક્રદ્ધિ, રસ જ્ઞાના ગૌરવ ત્રયકા ત્યાગ કરના લાઘવહૈ ૫ સત્ય બોલના સત્યહૈ ૬ પ્રાણા-તિપાત આદિકા ત્યાગ કરનો સંયમ હૈ ૭ આઠ પ્રકારકે કર્મોંકો જો

પ્રત્યેકયાયુક્ત વ્યક્તિ જ શ્રમણધર્મની અધિકારી થઈ શકે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર શ્રમણધર્મોના દસ પ્રકારોનું વર્ણન કરે છે.

“દસવિધે સમણધર્મે પળજ્ઞે” इत्यादि—(સૂ. ૧૦)

ટીકાર્થ—શ્રમણધર્મ દસ પ્રકારના કલા છે—(૧) ક્ષાન્તિ, (૨) મુક્તિ, (૩) આર્જવ, (૪) માર્દવ, (૫) લાઘવ, (૬) સત્ય, (૭) સંયમ, (૮) તપ, (૯) ત્યાગ અને (૧૦) બ્રહ્મચર્યવાસ.

પોતાની નિન્દા થતી સાંભળવાથી પણ ક્રોધ ન કરવો અથવા પોતાનું અહિંત કરનાર પ્રત્યે પણ ક્ષમાજ્ઞાવ રખવો તેનું નામ ક્ષાન્તિ છે. બાહ્ય અને આભ્યન્તર વસ્તુઓ પ્રત્યેના લોભનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ મુક્તિ છે. માયા (કપટ)નો ત્યાગ કરવો તેનું નામ આર્જવ છે. માનનો પરિત્યાગ કરવો તેનું નામ માર્દવ છે. દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અરુપ ઉપધિ (ઉપકરણો) રાખવી અને ભાવની અપેક્ષાએ ગૌરવત્રયનો ત્યાગ કરવો તેનું નામ લાઘવ છે. સત્ય બોલવું તેનું નામ સત્ય છે. પ્રાણાતિપાત આદિના ત્યાગનું નામ સંયમ છે. આઠ પ્રકારના

સંમોગિમુનિભ્યો ભક્તાદીનાં દાનમ્ ૯, બ્રહ્મચર્યવાસઃ=બ્રહ્મચર્યેણાવસ્થાનમ્ ૧૦
॥ સૂ. ૧૦ ॥

વૈયાવૃત્યમપિ શ્રમણધર્મ એવેતિ વૈયાવૃત્યં દશવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્--દસવિધે વૈયાવચ્ચે પળ્લન્તે, તં જહા--આચરિયવૈયા-
વચ્ચે ૧, ઉવજ્ઞાયવૈયાવચ્ચે ૨, થેરવૈયાવચ્ચે ૩, તવસ્મિવૈયા-
વચ્ચે ૪, ગિલાણવૈયાવચ્ચે ૫, સેહવૈયાવચ્ચે ૬, કુલવૈયાવચ્ચે ૭,
ગણવૈયાવચ્ચે ૮, સંઘવૈયાવચ્ચે ૯, સાહન્મિયવૈયાવચ્ચે ૧૦ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

છાયા—દશવિધં વૈયાવૃત્યં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—આચાર્યવૈયાવૃત્યમ્ ૧, ઉપાધ્યા-
યવૈયાવૃત્યમ્ ૨, સ્થવિરવૈયાવૃત્યમ્ ૩, તપસ્વિવૈયાવૃત્યમ્ ૪, ગ્લાનવૈયાવૃત્યમ્ ૫,
શૈક્ષવૈયાવૃત્યમ્ ૬, કુલવૈયાવૃત્યમ્ ૭, ગણવૈયાવૃત્યમ્ ૮, સંઘવૈયાવૃત્યમ્ ૯ સાધ-
ર્મિકવૈયાવૃત્યમ્ ૧૧ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

ટીકા—‘દસવિધે વૈયાવચ્ચે’ इत्यादि—

વૈયાવૃત્યમ્—વ્યાવૃત્તસ્ય=શુભવ્યાપારવતો ભાવઃ કર્મ વા વૈયાવૃત્યમ્—ભક્તા-
દિર્મિર્મોપગ્રહકારિવસ્તુમિરુપગ્રહત્તરણમ્ । અથવા—વૈયાવૃત્યમ્—વ્યાવૃત્તસ્ય ભાવઃ
જલાતા હૈ વહ તપ હૈ ૮ સંમોગિ મુનિજનોંકે લિધે ભક્તાદિકા દેના
ત્યાગ હૈ ૯ તથા બ્રહ્મચર્યસે રહના નામ બ્રહ્મચર્યવાસ ૧૦ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

વૈયાવૃત્ય ધર્મ શ્રમણ ધર્મ હી હૈ અતઃ અથ સૂત્રકાર વૈયાવૃત્યકા વર્ણન
દશ પ્રકારસે કરતે હૈ—‘દસવિધે વૈયાવચ્ચે પળ્લન્તે’ इत्यादि ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકાર્થ—શુભ વ્યાપારવાલેકા જો ભાવ અથવા કર્મ હૈ વહ વૈયાવૃત્ય હૈ—
ધર્મોપગ્રહકારી વસ્તુ રૂપ ભક્ત આદિ દ્વારા ગ્લાન આદિ સાધુજનોંકી
સહાયતા ઉનકી સેવા કરના વહ વૈયાવૃત્ય હૈ અથવા—વ્યાવૃત્ત (સેવા)કા

કર્મોને જે બાળી નાખે છે તેને તપ કહે છે. સાંભોગિક મુનિઓને આહારાદિ
આપવા તેનું નામ બ્રહ્મચર્યવાસ છે ॥ સૂ. ૧૦ ॥

વૈયાવૃત્ય પણ શ્રમણધર્મ જ ગણાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર વૈયાવૃત્યના દસ
પ્રકારોનું વર્ણન કરે છે—‘દસવિધે વૈયાવચ્ચે પળ્લન્તે’ इत्यादि—(સૂ. ૧૧)

ટીકાર્થ—શુભ વ્યાપારવાળાનો જે ભાવ અથવા તેનું જે કર્મ હોય છે તેનું નામ
વૈયાવૃત્ય છે. ધર્મોપગ્રહકારી વસ્તુરૂપ ભક્ત (આહાર) આદિ દ્વારા ગ્લાન (ખીમાર,
અશક્ત) આદિ સાધુઓની સેવા કરવી તેનું નામ વૈયાવૃત્ય છે. તે અથવા વ્યાવૃત્ત

કર્મવેતિ, પૃષોદરાદિત્વાચ્છિદ્ધિઃ, અર્થસ્તુ સ એવ । તદ્વૈયાવૃત્ત્યં દશવિધં પ્રજ્ઞસમ્, તદ્વથા-આચાર્યવૈયાવૃત્ત્યમિત્યાદિ । આચાર્યાદીનામર્થઃ સ્પષ્ટઃ । નવમ્-સાધર્મિકાઃ-સમાનો ધર્મઃ સધર્મઃ, તેન ચરન્તીતિ સાધર્મિકાઃ=સાધવ્યં ઇતિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

વૈયાવૃત્ત્યં ચ જીવધર્મ ઇતિ જીવપરિણામાનાહ—

મૂલમ્—દસવિધે જીવપરિણામે પળળત્તે, તં જહા-ગૃપ-રિણામે ૧; ઇન્દ્રિયપરિણામે ૨, કસાયપરિણામે ૩, લેસાપરિણામે ૪, જોગપરિણામે ૫, ઉવ્રઓગપરિણામે ૬, ણાણપરિણામે ૭, દંસ-નપરિણામે ૮, ચરિત્તપરિણામે ૯, વેદપરિણામે ૧૦ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

છાયા—દશવિધો જીવપરિણામઃ પ્રજ્ઞસમ્, તદ્વથા-ગતિપરિણામઃ ૧, ઇન્દ્રિય-પરિણામઃ ૨, ક્ષપાયપરિણામઃ ૩, લેક્ષ્યાપરિણામઃ ૪, યોગપરિણામઃ ૫, ઉપયો-ગપરિણામઃ ૬, જ્ઞાનપરિણામઃ ૭, દર્શનપરિણામઃ ૮ ચારિત્રપરિણામઃ ૯, વેદ-પરિણામઃ ૧૦ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

જો આવ અથવા કર્મ હૈ વૈયાવૃત્ત્ય હૈ, યહ વૈયાવૃત્ત્ય આચાર્ય વૈયાવૃત્ત્ય ૧ ઉપાધ્યાય વૈયાવૃત્ત્ય ૨ સ્થવિર વૈયાવૃત્ત્ય ૩ તપસ્વી વૈયાવૃત્ત્ય ૪ ગ્લાન વૈયાવૃત્ત્ય ૫ શૈક્ષ વૈયાવૃત્ત્ય ૬ કુલ વૈયાવૃત્ત્ય ૭ ગણ વૈયાવૃત્ત્ય ૮ સંઘ વૈયાવૃત્ત્ય ૯ ઓર સાધર્મિક વૈયાવૃત્ત્યકે ભેદસે ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, આચાર્ય આદિકૌંકા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ સમાન ધર્મકા નામ સધર્મ હૈ, હસ સમાન ધર્મસે રહતે હૈં હસ સમાન ધર્મવાલે જો હોતે હૈં વે સાધર્મિક હૈં એસે સાધર્મિક સાધુ હોતે હૈં । સૂ. ૧૧ ।

(સેવા)નો જે ભાવ છે અથવા સેવાનું જે કાર્ય છે તેનું નામ વૈયાવૃત્ત્ય છે. તે વૈયાવૃત્ત્યના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર પડે છે—(૧) આચાર્ય વૈયાવૃત્ત્ય, (૨) ઉપા-ધ્યાય વૈયાવૃત્ત્ય, (૩) સ્થવિર વૈયાવૃત્ત્ય, (૪) તપસ્વી વૈયાવૃત્ત્ય, (૫) ગ્લાન વૈયા-વૃત્ત્ય, (૬) શૈક્ષ વૈયાવૃત્ત્ય, (૭) કુલ વૈયાવૃત્ત્ય, (૮) ગણ વૈયાવૃત્ત્ય, (૯) સંઘ વૈયાવૃત્ત્ય અને (૧૦) સાધર્મિક વૈયાવૃત્ત્ય.

પહેલાં નવ પ્રકારોનો અર્થ આજ ગ્રંથમાં આગળ આપવામાં આવેલ છે. સમાન ધર્મનું નામ સધર્મ છે. સમાન ધર્મથી રહેનારા અથવા સમાન સધર્મવાળા જે સાધુઓ હોય છે તેમને સાધર્મિક કહે છે તેમના વૈયાવૃત્ત્યને સાધર્મિક વૈયાવૃત્ત્ય કહે છે. ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

ટીકા—‘ દસવિહે જીવપરિણામે ’ इत्यादि—

जीवपरिणामः—परिणमनं परिणामः, स च द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनयमतेन द्विविधः । तत्र-द्रव्यार्थिकनयमतेन—यद् द्रव्यं कथंचित् सदेव उत्तरपर्यायरूपं धर्मान्तरं गच्छति । तत्र द्रव्ये पूर्वपर्यायस्य सर्वथाऽवस्थानमपि नो भवति, न चाप्येकान्तेन विनाशो भवति । तदुक्तम्—

“ परिणामोऽर्थान्तरगमनं न च सर्वथा व्यवस्थानम् ।

न च सर्वथा विनाशः, परिणामस्तद्विद्वामिष्टः ॥ १ ॥ ” इति ।

वैयावृत्य यह जीव धर्म है अनः अत्र सूत्रकार जीव परिणामोंका कथन करते हैं—“दसविहे जीव परिणामे पणत्ते” इत्यादि ।

टीकार्थ—जीव परिणमन रूप परिणाम दस प्रकारका कहा गया है जैसे— गतिपरिणाम १ इन्द्रियपरिणाम २ कषायपरिणाम ३ लेश्यापरिणाम ४ योगपरिणाम ५ उपयोगपरिणाम ६ ज्ञान परिणाम ७ दर्शन परिणाम ८ चारित्रपरिणाम ९ और वेदनापरिणाम १०

परिणमन रूप परिणाम द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयके मतसे दो प्रकारका होता है, जो द्रव्य किसी अपेक्षासे अपना अस्तित्व रखता हुआ उत्तर पर्याय रूप धर्मान्तरको प्राप्त करता है—धारण करता है वह द्रव्यार्थिक नय मतानुसार परिणमन है इस विवक्षाके अनुसार द्रव्यमें पूर्वपर्यायका सर्वथा अवस्थान भी नहीं होता है और एकान्ततः उसका विनाश भी नहीं होता है तदुक्तम्—

वैयावृत्य અવધર્મરૂપ છે. તેથી હવે સૂત્રકાર અવપરિણામોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિહે જીવપરિણામે પણત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૧૨)

ટીકાર્થ—અવ પરિણમનરૂપ પરિણામ દસ પ્રકારનું કહ્યું છે. તે દસ પ્રકારે નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ગતિપરિણામ, (૨) ઇન્દ્રિયપરિણામ, (૩) કષાયપરિણામ, (૪) લેશ્યાપરિણામ, (૫) યોગપરિણામ, (૬) ઉપયોગપરિણામ. (૭) જ્ઞાનપરિણામ, (૮) દર્શનપરિણામ, (૯) ચારિત્રપરિણામ અને (૧૦) વેદનાપરિણામ.

પરિણમનરૂપ પરિણામના બે પ્રકાર પડે છે—(૧) દ્રવ્યાર્થિક નયની માન્યતા પ્રમાણેનું પરિણમન અને પર્યાયાર્થિક નયની માન્યતા પ્રમાણેનું પરિણમન.

જે દ્રવ્ય કોઈ અપેક્ષાએ (રીતે) પોતાનું અસ્તિત્વ ટકાવી રાખીને ઉત્તર પર્યાયરૂપ ધર્માન્તરને ધારણ કરે છે, તે પ્રકારના પરિણમનને દ્રવ્યાર્થિક નયની માન્યતા પ્રમાણેનું પરિણમન કહે છે.

આ કથન અનુસાર દ્રવ્યમાં પૂર્વપર્યાયનું સર્વથા અવસ્થાન (અસ્તિત્વ) પણ હોતું નથી અને તેના સંપૂર્ણતઃ નાશ પણ થતો નથી. કહ્યું પણ છે કે—

પર્યાયાર્થિકનયમતેન તુ-પૂર્વસત્પર્યાયાપેક્ષયા વિનાશઃ, ઉત્તરેણ ચાસતા પર્યાયેણ પ્રાદુર્ભાવઃ । તદુક્તમ્—

“ પરિણામો હ્યર્થાન્તરગમનં ” इत्यादि।

તાત્પર્ય इसका ऐसा है कि एक पर्यायसे दूसरी पर्यायका होना द्रव्यमेंही होना है, क्योंकि पर्यायोंका आधार द्रव्य है, अतः द्रव्य जब एक पर्यायका परित्याग करता हुआ पर्यायान्तरको प्राप्त करता है उस अवस्थामें वह द्रव्य अपने मौलिक रूपसे नष्ट नहीं होता है, प्रथम पर्यायमें जैसा अस्तित्व था वैसाही उसका रूप अस्तित्व पर्यायान्तरमें रहता है, इसलिये अर्थान्तरगमन ही परिणामहै, द्रव्यका सदा एकसी स्थितिमें रहना यह परिणाम नहीं है, इस अवस्थामें भी पूर्वपर्यायका उस द्रव्यमें सर्वथा विनाश भी नहीं होता है, और उसका सर्वथा अवस्थान भी नहीं रहता है क्योंकि जब एक पर्यायसे द्वितीय पर्यायमें प्रवृत्ति होती है तो वह प्रथम पर्याय उस द्रव्यमें अन्तर्हित (छिप) हो जाती है—यही उसका प्रथम पर्यायसे रहित होना है.

पर्यायार्थिक नयके अंशानुसार जब द्रव्यमें उत्तर पर्यायका उत्पाद होता है, तो यह उत्तर पर्याय उस द्रव्यमें असत् होती है, और इसका

“ પરિણામો હ્યર્થાન્તરગમનં ” इत्यादि—

આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—એક પર્યાયમાંથી બીજી પર્યાયમાં પરિણમન થવાની વાત દ્રવ્યમાં જ સંભવી શકે છે, કારણ કે પર્યાયોના આધાર રૂપ દ્રવ્ય હોય છે. તેથી જ્યારે એક પર્યાયનો પરિત્યાગ કરીને પર્યાયાન્તર (અન્યપર્યાય)ને ધારણ કરે છે ત્યારે તે દ્રવ્યના મૌલિક રૂપનો નાશ થતો નથી. પૂર્વપર્યાયમાં તેનું જેવું અસ્તિત્વ હતું એવું જ તેનું અસ્તિત્વ પર્યાયાન્તરમાં પણ ટકી રહે છે. તેથી અર્થાન્તરગમન જ પરિણામ છે,—દ્રવ્યનું સદા એક સરખી સ્થિતિમાં રહેવું તેનું નામ પરિણામ (પરિણમન) નથી. આ અવસ્થામાં પણ પૂર્વપર્યાયનો તે દ્રવ્યમાં સર્વથા વિનાશ પણ થતો નથી અને તેનું સર્વથા અવસ્થાન પણ રહેતું નથી, કારણ કે જ્યારે કોઈ એક પર્યાયમાં જ્યારે તે દ્રવ્યનું પરિણમન થાય છે, ત્યારે તે પૂર્વપર્યાય દ્રવ્યમાં અન્તર્હિત થઈ જાય છે—એજ તેનું પ્રથમ પર્યાયથી રહિત થવાનું કાર્ય (પરિણમન) છે.

પર્યાયાર્થિક નયની માન્યતા આ પ્રકારની છે—જ્યારે દ્રવ્યમાં ઉત્તરપર્યાયનો ઉત્પાદ (ઉત્પત્તિ) થાય છે, ત્યારે તો તે દ્રવ્યમાં તે ઉત્તર પર્યાય અસત્ (અવિદ્યમાન) હોય છે અને તેનો તેમાં ઉત્પાદ થાય છે, તેથી આ ઉત્તરપર્યાયની

“ સત્પર્યયેણ નાશઃ, પ્રાદુર્ભાવોઽસતા ચ પર્યયતઃ ।

દ્રવ્યાનાં પરિણામઃ પ્રોક્તઃ સ્વલુ પર્યયનયસ્ય ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

જીવસ્ય પરિણામઃ-જીવપરિણામઃ । અયં પ્રયોગકૃતઃ । સ ચાયં જીવપરિ-
ણામો દશવિધઃ પ્રજ્ઞતઃ । તથાદિ-ગતિપરિણામઃ-ગતિઃ-ગતિનામકર્મોદયાનાર-
કાદિવ્યપદેશહેતુઃ, તદ્વૃષઃ પરિણામઃ । અયં પરિણામસ્ય નારકાદિભેદેન ચતુર્વિધો
ભવક્ષયાવધિકો બોદ્યવ્ય ઇતિ ॥ ૧ ॥ તથા-ઇન્દ્રિયપરિણામઃ-ઇન્દ્રિયાણ્યેવ પરિ-
ણામઃ-ઇન્દ્રિયરૂપો જીવપરિણામઃ । સ ચાયં શ્રોત્રાદિભેદેન પશ્ચવિધઃ । ૨ । તથા-
કષાયપરિણામઃ-કષાયરૂપઃ પરિણામઃ । અયં ચ ક્રોધાદિ ભેદેન ચતુર્વિધઃ । ૩ ।

ઉસમેં ઉત્પાદ હોતા હૈ-અતઃ હસ ઉત્તર પર્યાયકી અપેક્ષાસે દ્રવ્યકા
ઉત્પાદ ઓર વર્તમાનમેં સત્ પર્યાયકી અપેક્ષાસે ઉસકા વિનાશ હોતા હૈ-
તદુક્તમ્-“ સત્પર્યયેણ નાશઃ ” ઇત્યાદિ ।

જીવકા જો પરિણામ હૈ વહ જીવ પરિણામ પ્રયોગ કૃત હોતા હૈ
વહ જો દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, ઉસકા તાત્પર્ય હસ પ્રકારસે હૈ-
ગતિનામકર્મકે ઉદયસે જો જીવ, જીવમેં નારક આદિ રૂપ વ્યપદેશ
હોતા હૈ વહ ગતિપરિણામ હૈ, યહ પરિણામ નારક આદિકે ભેદસે
ચાર પ્રકારકા હોતા હૈ, ઓર યહ ગતિપરિણામ જબ તક ભવકા ક્ષય
નહીં હોતા હૈ-તવ તક જીવમેં રહતા હૈ, દ્રવ્યેન્દ્રિય એવં ભાવેન્દ્રિય રૂપ
જીવકા પરિણામ હૈ વહ ઇન્દ્રિય પરિણામ હૈ, યહ ઇન્દ્રિય પરિણામ શ્રોત્રા-
દિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા હોતા હૈ કષાય રૂપ જો જીવકા પરિણામ
હૈ, વહ કષાય પરિણામ હૈ, યહ ક્રોધાદિકે ભેદસે ચાર પ્રકારકા હોતા

અપેક્ષાએ દ્રવ્યનો ઉત્પાદ અને વર્તમાનમાં સત્ (વિદ્યમાન) પર્યાયની અપેક્ષાએ
તેનો વિનાશ થાય છે. કહું પણ છે કે-“ સત્પર્યયેણ નાશઃ ” ઇત્યાદિ—

જીવનું જે પરિણામ છે તે જીવપરિણામ પ્રયોગકૃત હોય છે. તેના જે
દસ પ્રકારો કહ્યા છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-ગતિનામકર્મના ઉદ-
યથી જીવમાં નારક આદિરૂપ જે ઓળખવામાં આવે છે-તેનું નામ ગતિપરિ-
ણામ છે તે ગતિપરિણામના નારક આદિ ચાર ભેદ પડે છે જ્યાં સુધી જીવનો
ક્ષય થતો નથી, ત્યાં સુધી જીવમાં આ ગતિપરિણામનો સદ્ભાવ રહે છે.

દ્રવ્યેન્દ્રિય અને ભાવેન્દ્રિય રૂપ જીવનું પરિણામ છે તેને ઇન્દ્રિયપરિણામ
કહે છે. તે ઇન્દ્રિયપરિણામ શ્રોત્રાદિના ભેદથી પાંચ પ્રકારનું છે-

કષાયરૂપ જે જીવનું પરિણામ છે તેને કષાયપરિણામ કહે છે. તે ક્રોધાદિના
ભેદથી ચાર પ્રકારનું હોય છે.

તથા-લેશ્યાપરિણામ:-લેશ્યા-લેશ્યારૂપ: પરિણામ: । અયં ચ-કૃષ્ણાદિભેદેન પદ્ધિઃ । ૪ । તથા-યોગપરિણામ:-યોગો=વ્યાપાર:, સ એવ પરિણામ: । અયં ચ-મનોવાકાયભેદેન ત્રિવિધ: । ૫ । ઉપયોગપરિણામ:-ઉપયુજ્યતે=વસ્તુપરિચ્છેદં પ્રતિ વ્યાપાર્યતે ઇત્યુપયોગ:, વૌધરૂપો જીવસ્ય તત્ત્વભૂતો વ્યાપાર:, તદ્વપ: પરિણામ: । અયં ચ સાકારાનાકારભેદેન દ્વિવિધ: । ૬ ॥ જ્ઞાનપરિણામ:-જ્ઞાનરૂપ: પરિણામ: । અયં ચ-આભિનિવોધિકાદિભેદેન પચ્ચવિધ: । યદ્યપિ મિથ્યાદૃષ્ટે-જ્ઞાનત્વેન પ્રસિદ્ધાનિ મત્યજ્ઞાનશ્રુતાજ્ઞાનવિમજ્જ્ઞાનાનિ અજ્ઞાનપરિણામત્વેન અજ્ઞાનાન્યેવ, તથાપિ વિશેષગ્રહણતાધર્મ્યાંત્ તાન્યપ્યત્ર જ્ઞાનપરિણામગ્રહણેનૈવ ગૃહીતા-

હૈ । લેશ્યા રૂપ જો જીવકા પરિણામ હૈ વહ લેશ્યા પરિણામ હૈ, યહ કૃષ્ણલેશ્યા આદિ રૂપસે ૬ પ્રકારકા હોતા હૈ, યોગ રૂપ જો જીવકા પરિણામ હૈ, વહ યોગ પરિણામ હૈ, યહ યોગ પરિણામ મન વચન વંદ કાયકે ભેદસે ત્રીન પ્રકારકાહૈ વસ્તુકો જાનનેકે પ્રતિ જો જીવકા વ્યાપાર હોતા હૈ, વહ ઉપયોગ હૈ, યહ ઉપયોગ યહાં વૌધરૂપ લિયો ગયા હૈ, હસ ઉપયોગ રૂપ જો વ્યાપાર જીવકા હોતા હૈ, વહ ઉપયોગ પરિણામહૈ યહ સાકાર ઔર અનાકારકે ભેદસે દો પ્રકાર હોતા હૈ ૬ જ્ઞાન રૂપ જો જીવકા પરિણામ હૈ વહ જ્ઞાન પરિણામહૈ, યહ જ્ઞાન પરિણામ આભિ નિવોધિક આદિકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ, યદ્યપિ મિથ્યા-દૃષ્ટિ જીવકે જ્ઞાન રૂપસે પ્રસિદ્ધ મત્યજ્ઞાન, શ્રુતાજ્ઞાન, એવં વિમજ્જ્ઞાન અજ્ઞાન રૂપ પરિણામવાલે હોનેસે અજ્ઞાનહી હૈં, તો મી વિશેષ ગ્રહણકે સાધર્મ્યકો લેકર વે મી યહ જ્ઞાન પરિણામકે ગ્રહણસે ગૃહીત હુવ હૈં,

લેશ્યારૂપ જે જીવનું પરિણામ છે તેનું નામ લેશ્યાપરિણામ છે તેના કૃષ્ણલેશ્યા આદિ રૂપ છ પ્રકાર કહ્યા છે.

યોગરૂપ જે જીવનું પરિણામ છે તેને યોગપરિણામ કહે છે મન:યોગ, વચનયોગ અને કાયયોગના ભેદથી તે યોગપરિણામ ત્રણ પ્રકારનું કહ્યું છે. વસ્તુને જાણવાને માટે જીવ જે વ્યાપાર (પ્રવૃત્તિ) કરે છે, તેનું નામ ઉપયોગ રૂપ જે વ્યાપાર હોય છે તેને ઉપયોગ પરિણામ કહે છે. તેના સાકાર અને અનાકાર એવા બે ભેદો છે.

જ્ઞાનરૂપ જે જીવનું પરિણામ છે તેને જ્ઞાનપરિણામ કહે છે. તે જ્ઞાન પરિણામના આભિનિવોધિક આદિ પાંચ પ્રકાર છે જો કે મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવના જ્ઞાન રૂપે પ્રસિદ્ધ મત્યજ્ઞાન, શ્રુતાજ્ઞાન, અને વિમજ્જ્ઞાન, આ ત્રણે અજ્ઞાનરૂપ પરિણામવાળાં હોવાથી અજ્ઞાનરૂપ જ કહેાય છે, છતાં પણ વિશેષ શ્રદ્ધાના સાધર્મ્યને

નીતિવોદ્ધમ્ ॥ ૭ ॥ દર્શનપરિણામઃ-દર્શન=શ્રદ્ધાનમ્, તદ્રૂપપરિણામઃ । અયં ચ-
સમ્યક્ત્વ-મિથ્યાત્વ-મિશ્ર-ભેદાત્ ત્રિવિધઃ ॥ ૮ ॥ ચારિત્રપરિણામઃ-ચારિત્ર=
ક્રિયા, તદ્રૂપઃ પરિણામઃ । અયં ચ સામાયિકાદિભેદાત્ પञ्ચવિધઃ ॥ ૯ ॥ તથા-
વેદપરિણામઃ-વેદરૂપઃ પરિણામઃ । અયં ચ-સ્ત્રીપુંનપુંસકભેદેન ત્રિવિધઃ ॥ ૧૦ ॥
અત્ર ગતિપરિણામઇન્દ્રિયપરિણામઃ, इत्यादિક्रमेण यो निर्देशः कृतस्तात्रायं हेतुः-
ગતિપરિણામે સત્યેવ ઇન્દ્રિયાદિપરિણામાઃ સંભવન્તિ, અતઃ પ્રથમં સ નિર્દિષ્ટઃ ।
ગતિપરિણામાનન્તરં પ્રથમતઃ ઇન્દ્રિયપરિણામ એવ ભવતીતિ-ઇન્દ્રિયપરિણામ
ઉક્તઃ । ઇન્દ્રિયપરિણામે સતિ ઇષ્ટાનિષ્ટવિષયસમ્બન્ધઃ, તતથ રાગદ્વેષૌ સમ્યુત્પદ્યેતે

ऐसा जानना चाहिये दर्शन रूप जो जीवका परिणाम है वह दर्शन
परिणाम है-यह दर्शन परिणाम सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और मिश्रके भेदसे
तीन प्रकारका है, चारित्र शब्दका अर्थ क्रिया है, इस क्रिया रूप जो
जीवका परिणाम है, वह चारित्र परिणाम है, यह सामायिक आदिके
भेदसे पांच प्रकारका है, वेद रूप जो जीवका परिणाम है वह वेद परि-
णाम है, यह स्त्रीवेद पुंवेद और नपुंसक वेदसे तीन प्रकारका है गति
परिणाम इन्द्रिय परिणाम इत्यादि क्रमसे जो निर्देश किया गया है,
उसमें यह कारण कि गतिपरिणामके होने पर ही इन्द्रियादि परिणाम
होते हैं, इसी कारण उसका प्रथम निर्देश हुआ है, गतिपरिणामके
अनन्तर प्रथमतः इन्द्रिय परिणाम ही होता है-इस कारण उसके बाद
उसका निर्देश हुआ है, इन्द्रिय परिणामके होने पर इष्ट अनिष्ट विष-
यका सम्बन्ध होता है, इससे रागद्वेष उत्पन्न होते हैं इस कारण उसके

લીધે તેઓ પણ જ્ઞાનપરિણામના શ્રદ્ધાથી જ ગૃહીત થયાં છે, એમ સમજવું
જોઈએ. દર્શનરૂપ જીવનું જે પરિણામ છે તેને દર્શનપરિણામ કહે છે. તે દર્શન
-પરિણામના સમ્યક્ત્વ, મિથ્યાત્વ અને મિશ્રરૂપ ત્રણ ભેદ કહ્યા છે ચારિત્રનો
અર્થ ક્રિયારૂપ જે જીવનું પરિણામ છે તેને ચારિત્રપરિણામ કહે છે. તે
સામાયિક આદિના ભેદથી પાંચ પ્રકારનું હોય છે. વેદ રૂપ જીવનું જે પરિણામ
છે તેને વેદપરિણામ કહે છે. તેના નીચે પ્રમાણે ત્રણ પ્રકાર છે. સ્ત્રીવેદ, પુંવેદ
અને નપુંસકવેદ.

આથી જીવના પરિણામનો ગતિપરિણામ, ઇન્દ્રિયપરિણામ, સંભવી શકે છે.
આ કારણે સૌથી પહેલાં ગતિપરિણામનો નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે. ગતિ-
પરિણામ પછી સૌથી ઇન્દ્રિયપરિણામ જ થાય છે, તે કારણે ગતિપરિણામનો
નિર્દેશ કરીને ત્યારબાદ ઇન્દ્રિયપરિણામનો નિર્દેશ કરાયો છે ઇન્દ્રિયપરિણામનો
સદ્ભાવ હોય તો જ ઈષ્ટ અને અનિષ્ટ વિષયનો સંબંધ થાય છે, અને તે
કારણે જ રાગદ્વેષ ઉત્પન્ન થાય છે. તે કારણે ઇન્દ્રિયપરિણામનો નિર્દેશ કર્યો

इति कषायपरिणामः । कषायपरिणामे सति लेश्या परिणमतीति लेश्यापरिणामः । ननु कषाये परिणते सति लेश्यापरिणामो भवतीति यदुक्तं, तत्र का युक्तिः ? इति चेत्, आह-क्षीणकषायस्य लेश्यापरिणति भवति, न तु क्षीणलेश्यास्य कषायपरिणामः । अत एव क्षीणकषायस्य देशोनपूर्वकोटि यावत् शुक्ल-लेश्यापरिणति भवति ? यदुक्तम्—

“ सुदुत्तद्वं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।

नवहिं वरिसेहिं ऊण, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ १ ॥ ”

बाद कषाय परिणाम कहा है, कषाय परिणामके होने पर ही लेश्या परिणाम होता है इस कारण उसके बाद लेश्या परिणाम कहा है ।

शंका—कषाय परिणामके होने पर लेश्या परिणाम होता है ऐसा जो तुम कह रहे हो इसमें युक्ति क्या है ?

उत्तर—क्षीण कषायवाले जीवको लेश्या परिणति होती है परन्तु जो क्षीण लेश्यावाला जीव है, उसके कषाय परिणाम नहीं होता है तात्पर्य इस कथनको ऐसा है कि क्षीण कषायवालेको बारहवां गुण-स्थान होता है और वहां लेश्या परिणाम भी होता है परन्तु जब लेश्या क्षीण हो जाती है ऐसे १४ वें गुणस्थानवाले जीव को कषाय परिणाम नहीं होता है । इसी कारण क्षीण कषायवालेकी शुक्ल लेश्या परिणति देशोन पूर्वकोटि तक होती है । तदुक्तम्—

“ सुदुत्तद्वं तु जहन्ना ” इत्यादि ।

બાદ કષાયપરિણામનો નિર્દેશ કરવ માં આવ્યો છે કષાયપરિણામનું અસ્તિત્વ હોય તો જ લેશ્યાપરિણામ સંભવી શકે છે, તે કારણે ત્યારબાદ લેશ્યાપરિણામનો નિર્દેશ કરાયો છે.

શંકા—આપ એવું કઈ દલીલને આધારે કહો છો કે કષાયપરિણામ હોય ત્યાં જ લેશ્યાપરિણામ સંભવી શકે છે ?

ઉત્તર—ક્ષીણકષાયવાળા જીવોમાં લેશ્યાપરિણત હોય છે, પરન્તુ જે ક્ષીણ લેશ્યાવાળો જીવ છે તેમાં કષાયપરિણામ હોતું નથી. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—મારમાં ગુણુસ્થાનવર્તી જીવ ક્ષીણકષાયવાળો હોય છે, ત્યાં લેશ્યાપરિણામનો પણ સદ્ભાવ હોય છે. પરન્તુ જ્યાં લેશ્યા ક્ષીણ થઈ જાય છે એવાં ૧૪માં ગુણુસ્થાનવાળા જીવમાં કષાયપરિણામનો સદ્ભાવ હોતો નથી. એજ કારણે ક્ષીણકષાયવાળાની શુક્લલેશ્યા પરિણતિ દેશોન પૂર્વ કોટિ પર્યન્ત હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—“ સુદુત્તદ્વં તુ જહન્ના ” ઇત્યાદિ—

છાયા—મુહુર્ત્તાર્ધં તુ, જઘન્યા ઉત્કૃષ્ટા ભવતિ પૂર્વકોટયઃ ।

નવમિર્વર્ષસ્થના, જ્ઞાતવ્યા શુક્લલેશ્યાયાઃ ॥ इति ।

અતઃ એવ—કષાયપરિણામાનન્તરં લેશ્યાપરિણામ ઉક્તઃ । અયં લેશ્યાપરિણામો યોગપરિણામે સત્યેવ ભવતિ । યતો વિરુદ્ધયોગસ્ય લેશ્યાપરિણામોઽપગચ્છતિ । અતઃ એવોક્તમ્—“ સમુચ્છિન્નક્રિયં ધ્યાનમલેશ્યસ્ય ભવતી—તિ, અતો લેશ્યાપરિણામાનન્તરં યોગપરિણામ ઉક્તઃ । સંસારિણાં ચ યોગપરિણામે સત્યુપયોગપરિણામો ભવતીતિ યોગપરિણામાનન્તરમુપયોગપરિણામ ઉક્તઃ । સતિ ચોપયોગપરિણામે જ્ઞાનપરિણામ इति જ્ઞાનપરિણામઃ । સતિ ચ જ્ઞાનપરિણામે સમ્યક્ત્વાદિપ-

હસીલિયે કષાય પરિણામકે અનન્તર લેશ્યા પરિણામ કહા ગયા હૈ યહ લેશ્યા પરિણામ યોગ પરિણામકે હોને પર હી હોના હૈ, કયોંકિ જિસ્કો યોગકા વિયોગ હો ગયા હૈ એસે જીવકા ૧૪ વે ગુણસ્થાનવાલે જીવકા—લેશ્યા પરિણામ દૂર હો જાતા હૈ । હસલિયે કહા ગયા હૈ—“ સમુચ્છિન્નક્રિયં ધ્યાનમલેશ્યસ્ય ભવતિ ” સમુચ્છિન્ન ક્રિયાવાલા ધ્યાન અલેશ્યા જીવકો હોતા હૈ, હસ કારણ લેશ્યા પરિણામકે અનન્તર યોગ પરિણામ કહા ગયા હૈ, સંસારી જીવોંકે યોગ પરિણામ હોને પર ઉપયોગ પરિણામ હોતા હૈ—હસલિયે યોગ પરિણામકે અનન્તર ઉપયોગ પરિણામ કહા ગયા હૈ, ઉપયોગ પરિણામકે હોને પર જ્ઞાન પરિણામ હોતા હૈ, હસલિયે ઉસ્કે બાદ જ્ઞાન પરિણામ કહા ગયા હૈ, જ્ઞાનપરિણામકે હોને પર જીવકી સમ્યક્ત્વાદિરૂપ પરિણતિ હોતી હૈ, હસલિયે ઉસ્કે અનન્તર દર્શન પરિણામ કહા ગયા હૈ, સમ્યક્ત્વકે હોને પર

તે કારણે કષાય પરિણામનો નિર્દેશ કર્યા બાદ લેશ્યાપરિણામનો નિર્દેશ કરાયો છે. યોગપરિણામનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે જ લેશ્યાપરિણામનો સદ્ભાવ રહે છે; કારણ કે જેના યોગનો નિરોધ થઈ ગયો છે એવાં જીવનું—૧૪મા ગુણસ્થાનવાળા જીવનું—લેશ્યાપરિણામ દૂર થઈ જાય છે. તેથી જ એવું કહ્યું છે કે

“સમુચ્છિન્નક્રિય ધ્યાનમલેશ્યસ્ય ભવતિ” સમુચ્છિન્ન ક્રિયાવાળું ધ્યાન અલેશ્ય જીવમાં હોય છે.” આ કારણે લેશ્યાપરિણામનો નિર્દેશ કર્યા પછી યોગપરિણામનો નિર્દેશ કરાયો છે.

સંસારી જીવમાં યોગપરિણામ હોય ત્યારે જ ઉપયોગ પરિણામનો પણ સદ્ભાવ રહે છે, તેથી યોગપરિણામનું કથન કર્યા બાદ ઉપયોગ પરિણામનો સદ્ભાવ હોય તો જ જ્ઞાનપરિણામનો સદ્ભાવ રહે છે. તેથી ઉપયોગપરિણામ પછી જ્ઞાનપરિણામનો નિર્દેશ કરાયો છે.

જ્ઞાનપરિણામનો સદ્ભાવ હોય તો જ જીવમાં સમ્યક્ત્વ આદિરૂપ પરિણતિ
સ્થાન—૪૬

રિણતિરિતિ દર્શનપરિણામઃ । સતિ ચ સમ્યક્ત્વે ચારિત્રમિતિ તત્પરિણામ ઉક્તઃ । સ્વ્યાદિવેદપરિણામે સતિ ચારિત્રપરિણામો ભવતિ, ન તુ ચારિત્રપરિણામે સતિ વેદપરિણામઃ । યતોઽવેદકસ્યાપિ યથાસ્થ્યાત્ત્વાચારિત્રપરિણામો દૃષ્ટ ઇતિ ચારિત્રપરિણામનન્તરં વેદપરિણામ ઉક્ત ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

ઇત્યં જીવપરિણામો દશવિધત્વેનોક્તઃ । સમ્પ્રતિ જીવવિપરીતાનામજીવાનાં પરિણામં દશવિધત્વેનાહ—

મૂલ્ય—દસવિધે અજીવપરિણામે પળળત્તે, તં જહા-વંધ-
ણપરિણામે ૧, ગતિપરિણામે ૨, સંસ્થાણપરિણામે ૩, ભેદપરિ-
ણામે ૪, વર્ણપરિણામે ૫, ગંધપરિણામે ૬, રસપરિણામે ૭,
ફાસપરિણામે ૮, અગુરુલઘુપરિણામે ૯, સદ્ધપરિણામે ૧૦ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

છાયા—દશવિધોઽજીવપરિણામઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—વન્ધનપરિણામઃ ૧, ગતિ-
પરિણામઃ ૨, સંસ્થાનપરિણામઃ ૩, ભેદપરિણામઃ ૪, વર્ણપરિણામઃ ૫, ગન્ધપ-
રિણામઃ ૬, રસપરિણામઃ ૭, સ્પર્શપરિણામ ૮, અગુરુલઘુપરિણામઃ ૯, શબ્દપરિ-
ણામઃ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

ચારિત્ર હોતા હૈ, હસલિયે ઉસકે વાદ ચારિત્ર પરિણામ કહા ગયા હૈ, છત્રી આદિ રૂપ વેદ પરિણામકે હોને પર ચારિત્ર પરિણામ હોતા હૈ, ન કિ ચારિત્ર પરિણામ હોને પર વેદપરિણામ હોતા હૈ, ક્યોંકિ અવેદકકો મી યથાસ્થ્યાત્ત્વા ચારિત્ર પરિણામ દેલા ગયા હૈ, હનલિયે ચારિત્ર પરિણામકે અનન્તર વેદ પરિણામ કહા ગયા હૈ । સૂ૦ ૧૨ ॥

હોઈ શકે છે, તે કારણે જ્ઞાનપરિણામનું કથન કરીને ત્યારબાદ દર્શનપરિણામનું કથન કરવામાં આવ્યું છે.

સમ્યક્ત્વેના સદ્ભાવ હોય ત્યારે જ ચારિત્રનો સદ્ભાવ રહે છે, તે કારણે દર્શનપરિણામનો નિર્દેશ કર્યા પછી ચારિત્ર પરિણામનો નિર્દેશ થયો છે. શ્રી આદિત્ય વેદપરિણામનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે જ ચારિત્રપરિણામનો સદ્ભાવ રહે છે. ચારિત્રપરિણામનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે વેદપરિણામનો સદ્ભાવ રહે છે, એવી વાત શક્ય નથી, કારણ કે અવેદકમાં પણ યથાખ્યાત (શાસ્ત્રોક્ત) ચારિત્રપરિણામ જોવામાં આવે છે. તે કારણે ચારિત્રપરિણામનું કથન કર્યા પછી વેદપરિણામનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

ટીકા—‘ દસવિદે ’ इत्यादि—

અજીવપરિણામઃ—અજીવાઃ=પુદ્ગલાઃ, તેવાં પરિણામો દશવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—
બન્ધનપરિણામઃ—બન્ધનં=પુદ્ગલાનાં સંયોગઃ, સ એવ પરિણામઃ । વિષમમાત્રાનાં
સ્નિગ્ધાનાં ચ રુક્ષાણાં ચ પુદ્ગલાનાં સંયોગરૂપઃ પરિણામઃ इत्यर्थः અત્રેદં વોધ્યમ્—
સમગુણસ્નિગ્ધસ્ય પુદ્ગલસ્ય સમગુણસ્નિગ્ધેન, સમગુણરુક્ષસ્ય પુદ્ગલસ્ય ચ સમગુણ-
રુક્ષેણ પુદ્ગલેન સંયોગો ન ભવતિ । અપિ તુ વિષમમાત્રાણાં સ્નિગ્ધાનાં રુક્ષાણાં

इस प्रकारसे जीवका परिणाम दश प्रकारका कहा अब सूत्रकार जीवसे विपरीत अजीवोंके परिणामका दशविध रूपसे कथन करते हैं—

“ दसविदे अजीवपरिणामे पण्णत्ते ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—પુદ્ગલ રૂપ અજીવોંકા પરિણામ દશ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ જૈસે—
બન્ધન પરિણામ ૧, ગતિપરિણામ ૨, સંસ્થાનપરિણામ ૩ ભેદપરિ-
ણામ ૪ વર્ણ પરિણામ ૫, ગન્ધપરિણામ ૬, રસપરિણામ ૭, સ્પર્શ
પરિણામ ૮ અગુરુલઘુ પરિણામ ૯ એવં શબ્દ પરિણામ ૧૦

પુદ્ગલોંકા જો સંયોગહૈ, વહ બન્ધન હૈ—इस बन्धन रूप जो परिणामहै वह बन्धन परिणामहै। यह परिणाम विषम मात्रावाले स्निग्ध पुद्गलोंका एव रुक्ष पुद्गलोंका संयोगरूप होताहै यह इस प्रकारसे जानना चाहिये—सम-
गुण स्निग्धवाले पुद्गलका समगुण स्निग्धवाले पुद्गलके साथ समगुण
रुक्षवाले पुद्गलका समगुण रुक्षवाले पुद्गलके साथ संयोग नहीं होता

પૂર્વસૂત્રનાં જીવના દસ પ્રકારના પરિણામનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે. હવે સૂત્રકાર જીવથી વિપરીત એવા અજીવના દસ પ્રકારના પરિણામનું નિરૂપણ કરે છે—इसविदे अजीवपरिणामे पण्णत्ते ” इत्यादि—(સૂ. ૧૩)

ટીકાર્થ—પુદ્ગલરૂપ અજીવોંકા પરિણામ દસ પ્રકારનું કહ્યું છે તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) બન્ધન પરિણામ, (૨) ગતિ પરિણામ, (૩) સંસ્થાન પરિણામ (૪) ભેદ પરિણામ, (૫) વર્ણ પરિણામ, (૬) ગન્ધ પરિણામ, (૭) રસ પરિણામ, (૮) સ્પર્શ પરિણામ, (૯) અગુરુ-લઘુ પરિણામ અને (૧૦) શબ્દ પરિણામ

પુદ્ગલોના જે સંયોગ છે તેનું નામ બન્ધન છે. તે બન્ધનરૂપ જે પરિણામ છે તેને બન્ધન પરિણામ કહે છે. તે બન્ધનરૂપ વિષમમાત્રાવાળાં સ્નિગ્ધ પુદ્ગલોના અને રુક્ષ પુદ્ગલોનાં સંયોગરૂપ હોય છે. આ સંયોગ આ પ્રકારે થાય છે—સમગુણ સ્નિગ્ધતાવાળા પુદ્ગલોના સમગુણ સ્નિગ્ધતાવાળા પુદ્ગલ સાથે સંયોગ થતો નથી અને સમગુણ રુક્ષ પુદ્ગલોના રુક્ષ પુદ્ગલ સાથે સંયોગ થતો નથી. પરંતુ વિષમમાત્રાવાળાં સ્નિગ્ધ

ચ પુદ્ગલાનાં સંયોગો ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ સમનિદ્વાય વંધો, ન હોઈ સમલુક્ષયાય વિ ન હોઈ ।

વેમાયનિદ્વલુક્ષત્તણેણ વંધો ડ સંધાણં ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—સમસ્તિગ્ધતયા વન્ધો ન ભવતિ સમરુક્ષતયાઽપિ ન ભવતિ ।

વિમાત્રસ્તિગ્ધરુક્ષત્વેન વન્ધસ્તુ સ્કન્ધાનામ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥

વિષમમાત્રાણાં પુદ્ગલાનાં સંયોગો ભવતીતિ યદુક્તમ્, યત્ર માત્રાવૈષમ્યમેવં

હૈ, કિન્તુ વિષમ માત્રાવાલે હી સ્તિગ્ધોંકા ઓર રુક્ષોંકા સ્તિગ્ધ પુદ્ગલોંકે સાથ ઓર રુક્ષ પુદ્ગલોંકે સાથ વન્ધ હોના હૈ તદુક્તમ્—

“ સમનિદ્વાય વંધો ” ઇત્યાદિ ।

તાત્પર્ય યહી હૈ કિ વિષમ સ્તિગ્ધ રુક્ષ ગુણવાલે પુદ્ગલોંકાહી વન્ધ હોના હૈ—સમ ગુણવાલે સ્તિગ્ધ રુક્ષ પુદ્ગલોંકા વન્ધ નહીં હોના હૈ યદિ સ્તિગ્ધ ગુણવાલે પરમાણુ સમાન હૈં તો ડનકા વન્ધ અન્ય સમાન સ્તિગ્ધ ગુણવાલે પરમાણુઓંકે સાથ નહીં હોના ઓર ન સમાન રુક્ષ ગુણવાલે પરમાણુઓંકે સાથ હોના હસી તરહસે રુક્ષ ગુણવાલે પરમાણુ સમાન હૈં તો ડનકા ડી વન્ધ અન્ય સમાન રુક્ષ ગુણવાલે પરમાણુઓંકે સાથ નહીં હોના ઓર ન અન્ય સમાન સ્તિગ્ધ ગુણવાલે પરમાણુઓંકે સાથ હોના વન્ધ હોનેકે લિયે વિષમ ગુણતા કારણ હોની હૈ, વહ વિષમતા દ્રવ્યધિકતાસે લી ગઈ હૈ ।

પુદ્ગલોનો અને રુક્ષ પુદ્ગલોનો સ્તિગ્ધપુદ્ગલોની સાથે અને રુક્ષ પુદ્ગલોની સાથે સંયોગ (બન્ધ) થઈ શકે છે. કહું પણ છે કે—

“ સમનિદ્વાય વંધો ” ઇત્યાદિ—

આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે વિષમ સ્તિગ્ધ રુક્ષ ગુણવાળાં પુદ્ગલોનો જ બન્ધ થાય છે—સમગુણવાળા (સમાન માત્રામાં) સ્તિગ્ધરુક્ષ પુદ્ગલોનો બન્ધ થઈ શકતો નથી. જો સ્તિગ્ધ ગુણવાળાં પરમાણુ સમ ન હોય તો તેમનો બન્ધ અન્ય સમાન સ્તિગ્ધ ગુણવાળાં પરમાણુઓની સાથે પણ થશે નહીં અને સમાન રુક્ષ ગુણવાળાં પરમાણુઓની સાથે પણ થશે નહીં. એજ પ્રમાણે જો રુક્ષગુણવાળાં પુદ્ગલો સમાન હોય તો તેમનો બન્ધ પણ અન્ય સમાન રુક્ષ ગુણવાળાં પરમાણુઓની સાથે પણ થશે નહીં અને અન્ય સમાન સ્તિગ્ધગુણવાળાં પરમાણુઓની સાથે પણ થશે નહીં. બન્ધ થવાને માટે વિષમ માત્રામાં સ્તિગ્ધ પુદ્ગલોનો દ્રવ્યધિક સ્તિગ્ધ રુક્ષ ગુણતા હોવી આવશ્યક ગણાય છે. તે વિષમતા

બોધ્યમ્—સ્નિગ્ધસ્ય પુદ્ગલસ્ય દ્વિકાધિકેન સ્નિગ્ધેન પુદ્ગલેન, રૂક્ષસ્ય પુદ્ગલસ્ય ચ દ્વિકાધિકેન રૂક્ષેણ પુદ્ગલેન સંયોગઃ । સ્નિગ્ધરૂક્ષયોસ્તુ પુદ્ગલયોઃ જઘન્યવર્જઃ સમો વિષમો વા બન્ધો ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ નિદ્વસ્સ નિદ્વેણ દુહાહિણં, લુક્ખસ્સ લુક્ખેણ દુહાહિણં ।

નિદ્વસ્સ લુક્ખેણ ઉવેહ વંધો, જહન્નવજ્જો વિસમો સમો વા ॥૧॥ ”

સ્નિગ્ધ પુદ્ગલકા દ્વયધિક સ્નિગ્ધ પુદ્ગલકે સાથ સંયોગ હોતા હૈ, જઘન્ય ગુણવાલે યદિ સ્નિગ્ધ ઓર રૂક્ષ પુદ્ગલ હૈ તો ઉન્નકા બંધ નહીં હોતા હૈ, સમગુણવાલોંકા બંધ નહીં હોતા હૈ પરન્તુ દ્વયધિક સમગુણવાલોંકા ઓર વિષમ ગુણવાલોંકા બંધ હોતા હૈ । તદુક્તમ્—

“ નિદ્વસ્સ નિદ્વેણ દુહાહિણં ” इत्यादि ।

તાત્પર્ય યહ હૈ કિ એક તરફ દો ગુણ અધિક સ્નિગ્ધ પરમાણુ હૈ, ઓર દૂસરી તરફ ૪ ગુણવાલે સ્નિગ્ધકે પરમાણુ હૈ, તો હનકા બંધ હો જાવેગા । પરન્તુ યદિ એક તરફ ૧ ગુણવાલા સ્નિગ્ધકા પરમાણુ હૈ તો હનકા બંધ નહીં હોગા ક્યોંકિ જઘન્ય ગુણવાલોંકો બંધ હોનેકા નિષેધ કિયા ગયાહૈ હસી પ્રકાર ૪ ગુણવાલે સ્નિગ્ધ પરમાણુઓંકા ઓર ૪ ગુણવાલે રૂક્ષ પરમાણુઓંકા અથવા સ્નિગ્ધ પરમાણુઓંકા આપસમેં બંધ

દ્વયધિકતાવાળી હોવી બેઠબે. એટલે કે સ્નિગ્ધ પુદ્ગલનો દ્વયધિક સ્નિગ્ધ પુદ્ગલની સાથે સંયોગ થઈ શકે છે, અને રૂક્ષ પુદ્ગલનો દ્વયધિક રૂક્ષ પુદ્ગલની સાથે સંયોગ થઈ શકે છે. જઘન્ય ગુણવાળા સ્નિગ્ધ પુદ્ગલનો એટલે કે ઓછામાં ઓછી સ્નિગ્ધતાવાળા પુદ્ગલોનો ઓછામાં ઓછી રૂક્ષતાવાળા પુદ્ગલની સાથે બંધ (સંયોગ) થઈ શકતો નથી. સમગુણવાળાં (સમમાત્રામાં સ્નિગ્ધતા અથવા રૂક્ષતાવાળા) પુદ્ગલોનો બંધ થતો નથી, પરન્તુ દ્વયધિક સમગુણવાળાં પુદ્ગલોનો અને વિષમ ગુણવાળાં પુદ્ગલોનો બંધ થાય છે. કહું પણ છે કે—

“ નિદ્વસ્સ નિદ્વેણ દુહાહિણં ” ઇત્ય દિ—

આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—ધારો કે એક તરફ બે ગણી સ્નિગ્ધતાવાળાં પરમાણુઓ હોય અને બીજી તરફ ચાર ગણી સ્નિગ્ધતાવાળા પરમાણુ હોય, તો તેમનો બંધ થઈ જશે. પરન્તુ જો એક તરફ એક ગણી સ્નિગ્ધતાવાળું પરમાણુ હોય, તો તેમનો બંધ નહીં થાય, કારણ કે જઘન્ય ગુણવાળાં (ઓછામાં ઓછા પ્રમાણની સ્નિગ્ધતા કે રૂક્ષતાના ગુણવાળા) પરમાણુઓના બંધનો નિષેધ કહ્યો છે. એજ પ્રમાણે ચાર ગણી સ્નિગ્ધતાવાળા પરમાણુઓ અને ચાર ગણી રૂક્ષતાવાળાં પરમાણુઓનો બંધ પણ એક બીજા

છાયા—સ્નિગ્ધસ્ય સ્નિગ્ધેન દ્વિકાધિકેન રુક્ષસ્ય રુક્ષેણ દ્વિકાધિકેન ।

સ્નિગ્ધસ્ય રુક્ષેણ ઉપૈતિ બન્ધો જઘન્યવર્જો વિપમઃ સમો વા ॥૧॥

इति प्रथमो भेदः ।

તથા—ગતિપરિણામઃ । અયં દ્વિવિધઃ—સ્પૃશદ્ગતિપરિણામઃ અસ્પૃશદ્ગતિપરિણામઃ । તત્ર—યેન પરિણામેન પુદ્ગલઃ પ્રયત્નવિશેષમાશ્રિત્ય ક્ષેત્રપ્રદેશાન્ સ્પૃશન્ ગચ્છતિ સ પરિણામઃ સ્પૃશદ્ગતિપરિણામઃ । તથા—યેન પરિણામેન પુદ્ગલઃ પ્રયત્નવિશેષમાશ્રિત્ય ક્ષેત્રપ્રદેશાન્ અસ્પૃશન્નેવ ગચ્છતિ સ પરિણામઃ અસ્પૃશદ્ગતિપરિણામઃ । ગતિમદ્ દ્રવ્યાણાં પ્રયત્નભેદ ઉપલભ્યતે एव । अतः प्रयत्नभेदेन परिणाम-

नहीं होगा क्योंकि सम गुणोंवाला बन्ध नहीं होता है, इस तरह दो गुण अधिक स्निग्धका स्निग्धके साथ और रुक्षका स्निग्धके साथ बंध होता है इस प्रकारका यह प्रथम भेद है (१)

ગતિ પરિણામ સ્પૃશદ્ગતિ પરિણામ ઓર અસ્પૃશદ્ગતિ પરિણામકે ભેદસે દો પ્રકારકા હૈ, इनमें जिस परिणामसे पुद्गल प्रयत्न विशेषको आश्रित करके क्षेत्र प्रदेशोंको छूता हुआ जाता है वह परिणाम स्पृश-दगतिपरिणाम है तथा—जिस परिणामसे पुद्गल प्रयत्न विशेषको आश्रित करके क्षेत्र प्रदेशोंको नहीं छूता हुआ ही चलता है, ऐसा वह परिणाम अस्पृशदगतिपरिणाम है, गतिवाले जो द्रव्य होते हैं उनमें प्रयत्न भेद पाया ही जाना है, इसलिये प्रयत्न भेदसे परिणाममें भेद

સાથે થતો નથી, ચારગણી સ્નિગ્ધતાવાળાં પરમાણુઓનો ચાર ગણી સ્નિગ્ધતાવાળાં અન્ય પરમાણુઓ સાથે પણ બન્ધ થતો નથી, કારણ કે સમગુણુવાળાં પરમાણુઓનો બન્ધ થઈ શકતો નથી.

આ રીતે અહીં એવો નિયમ સમજવો કે બે ગણી અધિક સ્નિગ્ધતાવાળા પરમાણુઓનો સ્નિગ્ધની સાથે, રૂક્ષનો રૂક્ષની સાથે, બે ગણાં અધિક સ્નિગ્ધનો રૂક્ષની સાથે અને રૂક્ષનો સ્નિગ્ધની સાથે બન્ધ—સંયોગ થાય છે. આ પ્રકારનો આ પહેલો ભેદ છે.

ગતિપરિણામના બે પ્રકાર છે—(૧) સ્પૃશદ્ગતિ પરિણામ, (૨) અસ્પૃશદ્ગતિ પરિણામ.—

બે પરિણામ વડે પુદ્ગલ પ્રયત્ન વિશેષનો આશ્રય લઈને ક્ષેત્રપ્રદેશોને સ્પર્શતું સ્પર્શતું આદ્યું જાય છે તે પરિણામને સ્પૃશદ્ગતિ પરિણામ કહે છે. બે પરિણામ વડે પુદ્ગલ પ્રયત્નવિશેષનો આશ્રય લઈને ક્ષેત્રપ્રદેશોનો સ્પર્શ કર્યા વિના આદ્યું જાય છે તે પરિણામને અસ્પૃશદ્ગતિ પરિણામ કહે છે. બે દ્રવ્યો ગતિવાળાં હોય છે તેઓમાં પ્રયત્નભેદ તો બેવામાં આવે જ છે; તેથી

ભેદો ભવત્યેવ । દૃશ્યતેચ અત્યુચ્ચપ્રાસાદસ્થિતપુરુષૈકકાલપ્રક્ષિપ્તાનાં પાપા-
ગાનાં પતને કાલભેદઃ, તથા-સમભૂમિગતપુરુષપ્રક્ષિપ્તાનાં સતતગતિપ્રવૃત્તાનાં
લોષ્ટાદીનાં દેશાન્તરપ્રાપ્તિકાલભેદશ્ચ, અતઃ સમ્ભાવ્યતે એવં દ્વિવિધોઽપિ ગતિપરિ-
ણામઃ । અથવા-લઘુ ગુરુ ભેદાદ્ દ્વિવિધોઽયં ગતિપરિણામઃ, इति द्वितीयः । तथा-
સંસ્થાનપરિણામઃ-સંસ્થાન-પરિમણ્ડલ-વૃત્ત-ત્ર્યસ્ર-ચતુરસ્રાયતલક્ષણં, તદ્રૂપઃ પરિ-
ણામઃ । અયં પરિમણ્ડલાદિ ભેદેન પञ्चविधः । इति तृतीयः । तथा-ભેદપરિણામઃ
-ભેદરૂપઃ પરિણામઃ । અયં खण्डभेद-प्रतर-भेदानुतटभेद-चूर्णभेदो-त्करिका-

હોતા હો છે । યહ બાન તો પ્રત્યક્ષતે દેખનેમેં આતી છે કિ બહુન ઝંચે
પ્રાસાદ પરસે સ્વહે હુએ અજેક પુરુષો દ્વારા એકહી સમયમેં જો પાષાણ
સ્વણ્ડ પ્રક્ષિપ્ત કિયે જાતે હૈં, ડનકે ગિરનેમેં કાલભેદ હોતા હૈં તથા
इसी तरहसे समभूमिमें खड़े हुए पुरुषों द्वारा-જો પાપાણ સ્વણ્ડ
પેંકે જાતે હૈં, બે યજ્યપિ એક સી ગતિસે ચલતે હૈં ફિર ખી એસે ડન
પાષાણોંકી દેશાન્તર પ્રાપ્તિમેં કાલભેદ દેસા જાતા હૈં, અથવા-ગુરુ ઓર
લઘુ કે ભેદસે ખી ગતિપરિણામ ડો પ્રકારકા હોતા હૈં--

સંસ્થાન પરિણામ--સંસ્થાન નામ આકાર હૈં, યહ આકાર, પરિ-
મણ્ડલ, વૃત્ત, ત્ર્યસ્ર, ચતુરસ્ર ઓર આયત રૂપસે અજેક પ્રકારકા હોતા
હૈં, અર્થાત્ પાંચ પ્રકારકા હોતા હૈં, ઇસ તરહ સંસ્થાન રૂપ જો પરિણામ
હૈં, વહ સંસ્થાન પરિણામ હૈં, તથા-ભેદ રૂપ જો પરિણામ હૈં વહ ભેદ
પરિણામ હૈં યહ ભેદ પરિણામ - खण्डभेद प्रतरभेद,

પ્રયતનભેદને લઈને પરિણામમાં ભેદ પડી જાય છે. એ વાત તો પ્રત્યક્ષ જોવામાં
આવે છે કે કોઈ જાયા મકાનની અગાશીમાં જીલેલાં અનેક માણસો દ્વારા એક
જ સમયે જો અનેક પથ્થરો નીચે ફેંકવામાં આવે તો તે પથ્થરો એકી સાથે
જમીન પર પડતાં નથી પણ તેમનાં પતનના કાળમાં તફાવત જોવામાં આવે
છે. એજ પ્રમાણે સમતલ ભૂમિ પર જીલેલાં અનેક માણસો દ્વારા જો પથ્થરો
ફેંકવામાં આવે છે તેઓ જો કે એકધારી ગતિથી આગળ વધે છે, છતાં પણ
દેશાન્તર પ્રાપ્તિમાં કાળભેદ જોવામાં આવે છે. અથવા-ગુરુ અને લઘુના ભેદથી
પણ ગતિપરિણામ બે પ્રકારનું કહ્યું છે.

સંસ્થાન પરિણામ--સંસ્થાન એટલે આકાર તે આકારના નીચે પ્રમાણે પાંચ
પ્રકાર છે--પરિમંડલ, વૃત્ત ત્ર્યસ્ર, ચતુરસ્ર અને આયત. આ રીતે સંસ્થાન રૂપ
જો પરિણામ છે તેને સંસ્થાનપરિણામ કહે છે.

ભેદપરિણામ--ભેદ રૂપ જો પરિણામ છે તેને ભેદ પરિણામ કહે છે. તે
ભેદપરિણામના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે--ખંડભેદ, પ્રતરભેદ, અનુતટ
ભેદ, ચૂર્ણભેદ અને ઉત્કરિકાભેદ.

મેદેન પञ્ચવિધઃ । તત્ર-લ્પ્વંદભેદો-યથા સ્નિગ્ધમૃત્પિણ્ડસ્ય ૧, પ્રતરભેદો-યથા મેઘ-સમૂહસ્ય ૨ અનુતટભેદો-યથા-વંગસ્ય ૩, ચૂર્ણભેદઃ પ્રતીનઃ ૪ ઉત્કરિકાભેદો યથા સમુત્કીર્યમાણપ્રસ્થકસ્ય ૫। इति चतुर्यो भेदः । तथा-वर्णपरिणामः-वर्ण-रूपः परिणामः । वर्णः कृष्ण-नील-पीत-रक्त-श्वेत भेदात् पञ्चविधः, अतस्तत्परि-णामोऽपि पञ्चविधो बोध्यः । इति पञ्चमः । गन्धपरिणामः-गन्धरूपः परिणामः । गन्धः सुरभिदुरभिभेदाद् द्विविधः, अतस्तत्परिणामोऽपि द्विविधो बोध्य इति षष्ठः । रसपरिणामः-रसरूपः परिणामः । अयं च मधुरादि भेदात्तञ्चविधः ।

અનુતટ ભેદ, ચૂર્ણ ભેદ ઓર ઉત્કરિકા ભેદસે પાંચ પ્રકારકા હોના હૈ । ઇનમેં ફેંકે ગયે મૃત્પિણ્ડકે જો ઢુકડે ૨ હો જાતે હૈં વહ લ્પ્વંદભેદ હૈ । મેઘ સમૂહકે જો સ્વતઃ ઢુકડે ૨ હો જાતેહૈં વહ પ્રતર ભેદ હૈ । વાંસકા જો ભેદ હૈ વહ અનુતટ ભેદ હૈ, ચૂર્ણ રૂપ જો ભેદ હૈ વહ ચૂર્ણભેદ હૈ । સમુત્કીર્યમાણ પ્રસ્થ કે જો ભેદ હૈં વહ ઉત્કરિકા ભેદ હૈં વર્ણ પરિણામ વર્ણ રૂપ જો પરિણામ હૈ, વહ વર્ણપરિણામ હૈ, વર્ણ, કૃષ્ણ-નીલ, પીત, રક્ત એવં શ્વેતકે ભેદસે પાંચ પ્રકારકા હોના હૈ, હસલિયે વર્ણકા પરિણામ બી પાંચ પ્રકારકા હોના હૈ ।

ગન્ધ પરિણામ-ગન્ધ રૂપ જો પરિણામ હૈ, વહ ગન્ધ પરિણામ હૈ સુરભિ ઓર દુરભિકે ભેદસે ગન્ધ દો પ્રકાર હૈ હસલિયે ગન્ધ પરિણામ બી દો પ્રકારકા હોના હૈ, રસ રૂપ જો પરિણામ હૈ, વહ રસ પરિણામ

માટીના ઢક્ષને ફેંકવાથી તેના જે ઢુકડે ઢુકડા થાય છે તેને ખંડભેદ કહે છે. મેઘસમૂહના જે સ્વતઃ (આપમેળે) ઢુકડે ઢુકડા થઈ જાય છે તેને પ્રતરભેદ કહે છે. વાંસ ફાટવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને અનુતટભેદ કહે છે, કોઈ પણ વસ્તુનો તદ્દન ભૂકો થઈ જવો તેનું નામ ચૂર્ણભેદ છે. પકાડના ભેદનની જે ક્રિયા થાય છે તેરે ઉત્કરિકા ભેદ કહે છે.

વર્ણ પરિણામ-વર્ણરૂપ જે પરિણામ છે તેને વર્ણપરિણામ કહે છે. તે વર્ણપરિણામના નીચે પ્રમાણે પાંચ પ્રકાર કહ્યા છે-કૃષ્ણ, નીલ, પીત, રક્ત અને શ્વેત.

ગન્ધપરિણામ-ગન્ધરૂપ જે પરિણામ છે તેને ગન્ધપરિણામ કહે છે. ગન્ધના બે પ્રકાર છે-(૧) સુરભિ અને (૨) દુર્ભિ. તેથી ગન્ધપરિણામના પણ સુરભિ ગન્ધપરિણામ અને દુર્ભિગન્ધપરિણામ નામના બે ભેદ પડે છે.

રસપરિણામ-રસરૂપ જે પરિણામ છે તેને રસપરિણામ કહે છે. રસના મધુરાદિ પાંચ પ્રકાર છે, તેથી રસપરિણામના પણ પાંચ પ્રકાર પડે છે.

इति सप्तमः । स्पर्शपरिणामः—स्पर्शरूपः परिणामः । अगं च—मृदुकठिनादिभेदेन
अष्टविधः, इत्यष्टमः । अगुरुलघुपरिणामः—गुरु=अधोगमनस्वभावं लघु=ऊर्ध्वगम-
नस्वभावम्, उभयोर्द्वन्द्वे गुरुलघु, न तथा यद् द्रव्यं तत् अगुरुलघु=भाषामनः
कर्मद्रव्यादि, तदेवपरिणामः—परिणामतद्वयतोरभेदात्—अगुरुलघुपरिणामः । एत
द्ग्रहणेन एतद्विपरीतो गुरुलघुपरिणामोऽपि गृह्यते इति बोध्यम् । तत्र—विवक्षया
गुरु, विवक्षया च लघु यद् द्रव्यं तद् गुरुलघु=भौदारिकादि, स्थूलतरमित्यर्थः,
तद्रूपः परिणामः—परिणामपरिणामतोरभेदाद् गुरुलघुपरिणामः । इदं अगुरुलघु-
गुरुलघु भेदेन निश्चयनयमाश्रित्य द्विविधमपि, व्यवहारतथतुर्विधम् । तत्र—गुरु
है. यह रस तिक्त कटु कषाय भस्म (खट्टा) मधुरके भेदसे पाँच प्रकार-
रका होता हैं, स्पर्श रूप जो परिणाम है वह स्पर्शपरिणाम है, स्पर्श
शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष कर्कश कठोर, गुरु लघुके भेदसे आठ प्रकारका है।

अगुरु लघु परिणाम—अधोगमन स्वभावका नाम गुरु है, तथा-
ऊर्ध्वगमन स्वभावका नाम लघु है, जो द्रव्य न गुरु स्वभाववाला होता
है, और न लघु स्वभाववाला होता है ऐसा वह द्रव्य अगुरु-लघु स्वरूप
माना गया है, भाषा, मन, कर्म आदि रूप जो द्रव्य है वह अगुरु लघु
रूप होता है, इस अगुरु लघुरूप जो परिणाम है, वह अगुरु लघु परि-
णाम है, यद्यपि अगुरु लघु गुण माना गया है, और गुण होनेसे यह
द्रव्याश्रित होता है, परन्तु यहां जो द्रव्यको अगुरु लघुरूप कहा गया
है वह परिणाम और परिणामी द्रव्यमें अभेदके उपचारसे ही कहा
गया है, यहां अगुरु लघुके ग्रहणसे इससे विपरीत जो गुरु लघु परि-

સ્પર્શપરિણામ—સ્પર્શરૂપ પરિણામને સ્પર્શપરિણામ કહે છે સ્પર્શના મૃદુ,
કઠિન આદિ આઠ પ્રકાર છે, તેથી સ્પર્શપરિણામના પણ આઠ પ્રકાર પડે છે.

અગુરુ લઘુપરિણામ—જે દ્રવ્ય ગુરુ સ્વભાવવાળું પણ હોતું નથી
અને લઘુસ્વભાવવાળું પણ હોતું નથી. એવાં દ્રવ્યને અગુરુ-
લઘુરૂપ ગણવામાં આવે છે. ભાષા, મન, કર્મ આદિ રૂપ દ્રવ્ય
હોય છે તે અગુરુલઘુરૂપ હોય છે. આ અગુરુલઘુરૂપ જે પરિણામ છે તેનું નામ
અગુરુલઘુપરિણામ છે. જો કે અગુરુલઘુને ગુણ માનવામાં આવેલ છે અને ગુણ
રૂપ હોવાને લીધે તે દ્રવ્યાશ્રિત હોય છે, પરન્તુ અહીં જે દ્રવ્યને અગુરુલઘુ
રૂપ કહેવામાં આવ્યું છે તે પરિણામ અને પરિણામી દ્રવ્યમાં અભેદનો ઉપ-
ચારની અપેક્ષાએ જ કહેવામાં આવ્યું છે. અહીં અગુરુલઘુના ગ્રહણને લીધે

કમ્-અધોગમનસ્વભાવં વજ્રાદિ, લઘુકમ્=ઉર્ધ્વગમનસ્વભાવં દીપશિલાદિ, ગુરુ-
 ઘુકમ્=તિર્યંગામિ વાયુઝ્યોતિષ્કવિમાનાદિ, અગુરુઘુકમ્=આકાશાદિતિ નવમો
 ભેદઃ । તથા-શબ્દપરિણામઃ-શબ્દરૂપઃ પરિણામઃ, શબ્દશ્ચ શુભાશુભભેદેન દ્વિવિધ-
 િતિ શબ્દપરિણામોઽપિ દ્વિવિધો વોધ્ય ઇતિ દશમો ભેદઃ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

ણામ હૈ, વહ બી ગૃહીત હુમા હૈ, વિવક્ષાવશ જો દ્રવ્ય ગુરુ હોના હૈ,
 વહ દ્રવ્ય ગુરુ હૈ, ઔર વિવક્ષા વશ જો દ્રવ્ય લઘુ હોના હૈ વહ દ્રવ્ય
 લઘુ હૈ, ऐसा वह गुरु लघु औदारिक आदि द्रव्यरूप होता है,
 क्योंकि गुरु लघु द्रव्य स्थूलतर होता है, इस गुरुलघु रूप जो परिणाम
 है, वह गुरु लघु परिणाम है, यहां परिणाम और परिणामवालेमें अभेद
 सम्बन्धसे गुरु लघु परिणाम कहा गया है यह अगुरु लघु परिणाम
 और गुरु लघु परिणाम इस प्रकारके भेद निश्चयनके मतानुसार दो
 प्रकारका होता है, फिर भी व्यवहारके अनुसार चार प्रकारका है,
 इनमें अधोगमन स्वभाववाला गुरु होता है, जैसे वज्रादि द्रव्य, ऊर्ध्व
 गमन स्वभाववाला लघु होता है जैसे दीपशिखा आदि, गुरु लघु
 स्वभाववाला गुरु लघु होता है, जैसे-तिर्यंगामी वायु एवं ज्योतिष्क
 विमान आदि एवं अगुरु लघु आकाश आदि द्रव्य होते हैं। शब्द
 रूप जो परिणाम है, वह शब्द परिणाम हैं, शुभ और अशुभके भेदसे

તેનાથી વિપરીત જે ગુરુલઘુ પરિણામ છે, તેને પણ પ્રકૃષ્ટ કરવું જોઈએ. જે
 દ્રવ્યની ગુરુ દ્રવ્ય રૂપે વિવક્ષા થાય છે, તે દ્રવ્ય ગુરુ હોય છે અને જે દ્રવ્યની લઘુદ્રવ્ય
 રૂપે વિવક્ષા થાય છે, તે દ્રવ્ય લઘુ હોય છે. એવું તે ગુરુલઘુ દ્રવ્ય ઔદારિક આદિ દ્રવ્ય-
 રૂપ હોય છે. કારણ કે ગુરુલઘુ દ્રવ્ય સ્થૂલતર હોય છે આ ગુરુલઘુ રૂ. જે પરિણામ છે
 તેને ગુરુલઘુ પરિણામ કહે છે. અહીં પરિણામ અને પરિણામવાળામાં અભેદ
 સંબંધની અપેક્ષા એ આ પરિણામને ગુરુલઘુ પરિણામ કહેવામાં આવ્યું છે. નિશ્ચય
 નયની માન્યતા પ્રમાણે અગુરુલઘુ પરિણામ અને ગુરુલઘુ પરિણામ રૂપ બે ભેદ પડે
 છે, છતાં પણ વ્યવહાર નયની માન્યતા અનુસાર તેના ચાર પ્રકાર પડે છે. જેમ
 કે અધોગમનના સ્વભાવવાળું દ્રવ્ય ગુરુક હોય છે. વજ્રાદિ દ્રવ્યને આ કારણે
 ગુરુક કહી શકાય. ઉર્ધ્વગમનના સ્વભાવવાળું દ્રવ્ય લઘુક હોય છે જેમ કે દીપ
 શિખાને લઘુક કહી શકાય

ગુરુલઘુ સ્વભાવવાળા દ્રવ્યને ગુરુલઘુક કહે છે જેમ કે તિર્યંગામી વાયુ,
 જ્યોતિષ્ક વિમાન આદિ.—આકાશ આદિ દ્રવ્ય અગુરુલઘુક હોય છે.

શબ્દપરિણામ-શબ્દરૂપ જે પરિણામ હોય છે તેને શબ્દપરિણામ કહે છે.
 શબ્દના બે ભેદ પડે છે-(૧) શુભશબ્દ અને (૨) અશુભશબ્દ તેથી શબ્દપરિણામ

અજીવપરિણામોઽધિકૃત્ત્વેતિ પુદ્ગલલક્ષણાજીવપરિણામમ્ અન્તરીક્ષલક્ષણા-
જીવપરિણામં આશ્રિત્ય અસ્વાધ્યાયિકં નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—દસવિદ્દે અંતલિલિખણે અસજ્ઞાદૃષ્ટિ પળળત્તે, તં
જહા—ઉલ્કાવાણ ૧, દિસિદાહે ૨, ગર્જિણ ૩, વિજ્જુણ ૪, નિર્ગ્વાણ
૫, જુયણ ૬, જન્નલાલિત્તે ૭, ધૂમિયા ૮, મહિયા ૯, રયડ-
ગ્વાણ ૧૦। દસવિદ્દે ઓરાલિણે અસજ્ઞાણે પળળત્તે, તં જહા—
અટ્ટિ ૧, મંસં ૨, સોળિણ ૩, અસુહસામંતે ૪, સુસાણસામંતે ૫,
ચંદોવરાગે ૬, સૂરોવરાગે ૭, પડળે ૮, રાયવુગ્ગહે ૯, ઉવસ્સ-
યસ્સ અંતો ઓરાલિણે સરીરગે ૧૦ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ઢાયા—દશવિધમ્ આન્તરીક્ષિકમ્ અસ્વાધ્યાયિકં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વથા—ઉલ્કા-
પાતઃ ૧, દિગ્દાહઃ ૨, ગર્જિતમ્ ૩, વિદ્યુત્ ૪, નિર્ઘાતઃ ૫, યૂપકમ્ ૬, યક્ષા-
દીપ્તમ્ ૭, ધૂમિકા ૮, મિહિકા ૯, રજડદ્વાતઃ ૧૦। દશવિધમ્ ઔદારિકમ્
અસ્વાધ્યાયિકં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તદ્વગ—અસ્થિ ૧, માંસમ્ ૨, શોણિતમ્ ૩, અશુચિ-
સામન્તમ્ ૪, રક્તશાનસામન્તમ્ ૫, ચંદ્રોપરાગઃ ૬, સૂર્યોપરાગઃ ૭, પતનં ૮,
રાજવ્યુદ્ગ્રહઃ ૯, ઉપાશ્રયસ્થાન્તઃ ઔદારિકં શરીરકમ્ ૧૦ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ટીકા—‘દસવિદ્દે અંતલિલિખણે’ ઇત્યાદિ—

આન્તરીક્ષિકમ્—અન્તરીક્ષમ્=આકાશં, તત્ત મત્તયાન્તરીક્ષિકમ્—અસ્વાધ્યાયિ-
કમ્—અસ્વાધ્યાયઃ=વઠિતમૂલપાઠસ્થાવર્તનમસ્તિ યસ્મિન્સ્તત્ત્વ સ્વાધ્યાયિકં, ન સ્વા-

શબ્દ દો પ્રકારકા હોતા હૈં, હસલિયે શબ્દ પરિણામ મી દો પ્રકારકા
હોતા કહા ગયા હૈં હસ તરહસે યહ અજીવ પરિણામ ૧૦ પ્રકારકા
કહા ગયા હૈં ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

અજીવ પરિણામકે અધિકારકા લેકર અબ સૂત્રકાર પુદ્ગલ રૂપ
અજીવકે પરિણામકો ઓર અન્તરીક્ષરૂપ અજીવકે પરિણામકો આશ્રિત
કરકે અસ્વાધ્યાયિકકા નિરૂપણ કરતે હૈં—

ના બે પ્રકાર પડે છે. આ રીતે અજીવપરિણામના દસ પ્રકારનું સ્પષ્ટીકરણ અહીં
સમાપ્ત થાય છે. ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

પૂર્વસૂત્રમાં અજીવપરિણામનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર
પુદ્ગલરૂપ અજીવના પરિણામને અને અન્તરીક્ષરૂપ અજીવના પરિણામને આધારે
અસ્વાધ્યાયિકોનું નિરૂપણ કરે છે—

ધ્યાયિકમ્-અસ્વાધ્યાયિકમ્-સ્વાધ્યાયસ્યાકરણકારણં દશવિધં પ્રણપ્તમ્, તથા-
'ઉલ્કાપાતઃ' इत्यादि । तत्र-उल्कापानः=तारापतनम्, अत्र प्रहरपर्यन्तमस्वा-
ध्यायः । भूकम्पोऽप्यत्रैव संगृहीत इति प्रथमः । दिग्दाहः-पूर्वादिकायां दिशि
छिन्नमूलोदाहः=प्रज्वलनं दिग्दाहः । कस्यांचिद्दिशि महानगरप्रज्वलनमिव
उपरि प्रकाशः, अथस्तादन्धकारः । अत्र च यावदिशोऽरुणिमा तावदस्वाध्यायः ।

“દસવિદ્દે અંતલિક્ષિણ પળગત્તે” इत्यादि ॥ सूत्र १४ ॥

આન્તરીક્ષિક અસ્વાધ્યાયિક દશ પ્રકારના કહા ગયા છે જેસે-ઉલ્કા-
પાત ૧, દિગ્દાહ ૨, ગર્જિત ૩, વિદ્યુત્ ૪, નિર્ઘાત ૫ ચૂપક ૬ યજ્ઞાદીપ્ત
૭ ધૂમિકા ૮ મિહિકા ૯ ઓર રજ ઉદ્ઘાત ૧૦ ।

અન્તરીક્ષ નામ આકાશના છે, હસમેં જો હોતા છે વહ આન્તરીક્ષિક
છે, પઠિત મૂલપાઠના આવર્તન કરના યહ સ્વાધ્યાય છે, યહ સ્વાધ્યાય
જિસમેં હોના છે, વહ સ્વાધ્યાયિક છે, ઓર યહ જિસમેં નહીં હોના છે
વહ અસ્વાધ્યાયિક છે, અર્થાત્ આકાશસે સમ્બન્ધ રાખ્તેવાલી હન દશ
બાતોમેં સ્વાધ્યાય કરના વર્જિત છે, તારાના પતન હોના યહ ઉલ્કાપાત
છે-ઉલ્કાપાતકે સમય ૧ પ્રહર તક સ્વાધ્યાય કરના નિષિદ્ધ છે ભૂકમ્પ
યહીં પર અન્તર્બૂત હો જાતા છે પૂર્વાદિ દિશાઓમેં છિન્નમૂલવાળા જો
દાહ-પ્રજ્વલન હોતા છે વહ દિગ્દાહ છે કિસી દિશામેં મહાનગરકે જલ

“દસવિદ્દે અંતલિક્ષિણ પળગત્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૪)

અન્તરીક્ષિક (અકાશ સાથે સંબંધ રાખનારાં) અસ્વાધ્યાયિક (સ્વાધ્યાય
કરવાનો નિષેધ હોય એવી બાબતો હસ પ્રકારના કહ્યા છે. જેમ કે (૧) ઉલ્કાપાત
(૨) દિગ્દાહ, (૩) ગર્જિત, (૪) વિદ્યુત, (૫) નિર્ઘાત, (૬) ચૂપક, (૭) યજ્ઞાદીપ્ત,
(૮) ધૂમિકા, (૯) મિહિકા અને (૧૦) રજઉદ્ઘાત.

અન્તરીક્ષ એટલે આકાશ. આકાશમાં જે હોય છે તેને આન્તરીક્ષિક કહે
છે. શીખેલા મૂલપાઠનું આવર્તન (પુનરાવર્તન) કરવું તેનું નામ સ્વાધ્યાય છે.
તે સ્વાધ્યાય જે કાળમાં થાય છે તે કાળને સ્વાધ્યાયિક કહે છે. જ્યારે તે સ્વા-
ધ્યાય કરી શકતો નથી તે કાળને અસ્વાધ્યાયિક કહે છે આકાશ સાથે સંબંધ
ધરાવતી નીચેની હસ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ કરમાવ્યો છે.

(૧) ઉલ્કાપાત-તારાનું પતન થવું તેનું નામ ઉલ્કાપાત છે. ઉલ્કાપાત
થાય ત્યારથી એક પ્રહર સુધી સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. ભૂકમ્પનો પણ
આ કારણમાં જ સમાવેશ થઈ જાય છે.

(૨) દિગ્દાહ-પૂર્વાદિ દિશાઓમાં જે છિન્નમૂલવાળું પ્રજ્વલન થાય છે તેને
દિગ્દાહ કહે છે. કેટલીક વખત કોઈ મહાનગરને આગ લાગી હોય એવી રીતે

इति द्वितीयः । गर्जितम्=मेघगर्जितम् । आर्द्रादि स्वातिपर्यन्तदशनक्षत्राणि विहाय
अन्यनक्षत्रेषु मेघस्य गर्जने प्रहरमात्रमस्वाध्यायः । इति तृतीयः । विद्युत्=विद्युतो
विद्योतनम् । अत्रापि पूर्ववत् प्रहरपर्यन्तमस्वाध्यायः इति चतुर्थः । निर्घात =
साभ्रनिरभ्र वा व्योम्नि व्यन्तरकृतो महागर्जितसमो ध्वनिः । अत्र चतस्रः अष्टौ,
द्वादश वा प्रहरान् यावदस्वाध्यायः इति पञ्चमः । यूपक-सन्ध्याप्रभाचन्द्रप्रमथोर्मिश्र-
त्नम्, स च शुक्लपक्षप्रतिपद द्वितीयातृतीयाल्पेषु त्रिषु दिनेषु भवति । तत्र च

નેકી તરફ ઊપર પ્રકાશ ઓર નીચે અન્ધકાર દિશ્વલાઈ દેતા હૈ વહી
દિગ્દાહ હૈ, યહાં પર જવ તક દિશામેં લલાઈ રહતી હૈં તથ તક અસ્વાધ્યાય
કહા ગયા હૈ, ગર્જિત સે યહાં મેઘ ગર્જિત લિયા ગયા હૈ, આર્દ્રાસે લેકર
સ્વાતિ નક્ષત્ર તક દશ નક્ષત્રોં તો છોડકર અન્ય નક્ષત્રોંમેં મેઘકે ગર્જન
હોને પર પ્રહર માત્રકો અસ્વાધ્યાય કહો ગયા હૈ વિજલીકા ચમકના-
યહ વિદ્યુત્ હૈ, યહાં પર ખી એક પ્રહરકા અસ્વાધ્યાય કહા ગયા હૈં ચાહે
આકાશમેં બાદર છાપે હોં, ચાહે ન છાપે હો ઉસ સમય આકાશમેં જો
વ્યન્તરદેવકૃત જો મહા ગર્જનાકી જૈસી ધ્વનિ હોતી હૈ વહ નિર્ઘાત
હૈ, એસી અવસ્થામેં ચાર પ્રહર તક, આઠ પ્રહર તક અથવા ૧૨ પ્રહર તક
અસ્વાધ્યાય કાલ કહા ગયા હૈ, સન્ધ્યાકી પ્રભા ઓર ચંદ્રકી પ્રભા इन
દોનોંકી પ્રભાકા જો મિશ્રગ હૈ વહ યુપક હૈ, યહ શુક્લ પક્ષકી પ્રતિ-
પદાકો દ્વિતીયાકો ઓર તૃતીયાકો હોતા હૈ इन दिनोंमें चन्द्र सन्ध्या-

ઉપર પ્રકાશ અને નીચે અન્ધકાર નજરે પડે છે. તેનું નામ જ દિગ્દાહ છે. જ્યાં
સુધી તે દિશામાં રતાશ દેખાતી બંધ ન થાય ત્યાં સુધી સ્વાધ્યાય
કરવો જોઈએ નહીં.

(૩) ગર્જિત-આ પદ મેઘગર્જનાનું વાચક છે. આ આર્દ્રા નક્ષત્રથી લઇને
સ્વાતિ પર્યન્તના હસ નક્ષત્રો સિવાયના નક્ષત્રોમાં જ્યારે મેઘગર્જના સંભળાય
ત્યારે એક પ્રહર સુધી સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ છે.

વિદ્યુત-વિજળીનો અમકારો થાય ત્યારે પણ એક પ્રહર સુધી સ્વાધ્યાયનો
નિષેધ કરમાવ્યો છે.

નિર્ઘાત-આકાશ વાદળાઓથી ઘેરાયેલું હોય કે ઘેરાયેલું ન હોય એવી
સ્થિતિમાં આકાશમાં વ્યન્તર દેવકૃત જે મહાગર્જના જેવો અવાજ-કડાકા જેવો
અવાજ-થાય છે તેનું નામ નિર્ઘાત છે એવો કડાકો થાય ત્યારે પણ ચાર પ્રહર
સુધીનો, આઠ પ્રહર સુધીનો અને બાર પ્રહર સુધીનો અસ્વાધ્યાય કળ સમજવો.

યુપક-સન્ધ્યાના તેજનું અને ચન્દ્રના તેજનું જે મિશ્રણ હોય છે તેનું
નામ યુપક છે. આ પ્રકારનું યુપક શુક્લપક્ષની પડવે, ખીજ અને ત્રીજની

ચન્દ્રઃ સન્ધ્યાગત ઈતિ દેતોઃ સન્ધ્યા ન જ્ઞાયતે, સન્ધ્યાપ્રભાવન્દ્રપ્રભયોર્મિશ્રિત ત્વાત્ । અયં ચ લોકે ‘વાલચન્દ્ર’ ઇતિ નામ્ના પ્રસિદ્ધઃ । અર રજનીમુલ્લપદર- માત્રપદ્યાધ્યાયઃ । ઇતિ પષ્ઠઃ । યન્નાદીપ્તમ્=રક્તસ્યાં દિગિ અન્તરાડન્તરા દશ્ય- માનો વિદ્યુત્સદૃશઃ પ્રકાશઃ । અત્ર યાવત્તદર્શનં તાવદસ્વાધ્યાયઃ । ઇતિ સપ્તમઃ । ધૂમિકા=ધૂમાકારા ‘ધૂંઅર’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધા । ઇયં યાવત્ગતતિ તાવદસ્વા- ધ્યાયઃ । ઇત્યષ્ટમઃ । મિહિકા=જલકણસહિતા ધૂમિકૌ । ઇયં યાવત્તિષ્ઠતિ તાવ- દસ્વાધ્યાયો બોધ્યઃ । ઇતિ નવમઃ । ધૂમિકામિહિકૃપોઃ પાતસ્તુ કાર્ત્તિકાદિપુ ગર્ભવાસેષુ ભવતીતિ બોધ્યમ્ । તથા-રજડદ્વાતઃ-ચનાદિપ્રેણયા ગગને સમ-

ગત હોના છે. આ કારણ સન્ધ્યા માલુન નહીં હોતી છે ક્યોંકિ સન્ધ્યા પ્રભા અને ચન્દ્રમા એ દોનોં મિશ્રિત હો જાતી છે । “વાલચન્દ્ર” આ નામસે યહ ચૂરક લોકમેં પ્રસિદ્ધ છે, યહાં પર રજની મુલ્લસે રક્ત પ્રહર તક અસ્વાધ્યાય કાલ કહા ગયા છે । રક્ત દિશામેં ચીચ ૨ મેં જો વિદ્યુત્ જેવા પ્રકાશ પ્રતીત હોના છે વહ પક્ષરીત છે, જય તક વહ પ્રકાશ દિલ- લાઈ દેના છે તચતક અસ્વાધ્યાયકાલ કહા ગયા છે, આકાશમેં જો ધૂમાંકે જોની ધૂર દિલલાઈ દેતી છે વહ ધૂમિકા છે યહ ધૂમિકા જય તક ગિરતી છે તય તક અસ્વાધ્યાય કાલ કહા ગયા છે, જલકણ સહિત ધૂમિકાની મિહિકા કહલાતી છે-યહ મિહિકા જય તક રહતી છે તય તક અસ્વાધ્યાય કાલ કહા ગયા છે, ધૂમિકા એવં મિહિકા આ દોનોંકા પાત કાર્તિક આદિ

તિથિએ થાય છે. આ તિથિઓમાં ચન્દ્ર સન્ધ્યાગત હોય છે, તે કારણે સન્ધ્યા નજરે પડતી નથી, કારણ કે ત્યારે ચન્દ્રપ્રભા અને સન્ધ્યાપ્રભાનું મિશ્રણ થઈ જાય છે. આ ચૂપક લોકમાં “વાલચન્દ્ર”ના નામથી પ્રસિદ્ધ છે. ત્યારે રાત્રિના પ્રથમ એક પ્રહર સુધીના સમયને અસ્વાધ્યાય કાળ કહ્યો છે.

યક્ષદીપ્ત-કોઈ એક દિશામાં રહી રહીને જે વિજળી જેવો પ્રકાશ દેખાય છે તેને યક્ષદીપ્ત કહે છે. જ્યાં સુધી તે પ્રકાશ દેખાયા કરે ત્યાં સુધીના સમયને અસ્વાધ્યાયકાળ કહ્યો છે.

ધૂમિકા-આકાશમાં ધુમાડાના જેવી જે ધૂળ દેખાય છે તેને ધૂમિકા કહે છે. તે ધૂમિકા રૂપ રજ જ્યાં સુધી ખર્યા કરતી હોય ત્યાં સુધીના કાળને અસ્વા- ધ્યાય કાળ કહ્યો છે.

મિહિકા-જલકણ સહિતની ધૂમિકાને મિહિકા કહે છે. જ્યાં સુધી આ મિહિકાનું અસ્તિત્વ રહે ત્યાં સુધીના કાળને અસ્વાધ્યાયકાળ કહ્યો છે. ધૂમિકા-

ન્તાદ્ રેણુવ્યાપનમ્ । અત્રાસ્વાધ્યાયો યાવદ્રજાઃ ઉદઘાતસ્તાવદ્ વોધ્યઃ । इति दशमो भेदः । इति दशविधमान्तरीक्षिकमस्वाध्यायिकमिति ।

તથા-ઔદારિકમ્-ઉદારં=મનુષ્યપશ્ચેન્દ્રિયતિર્યક્શરીરં, તસ્યેદમૌદારિકમ્-મનુષ્યપશ્ચેન્દ્રિયતિર્યક્શરીરમાશ્રિત્ય જાતમ્ અસ્વાધ્યાયિકં દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા-‘અઢ્ઠિમંપં’ इत्यादि । अस्थिमांसशोणितानि प्रतीतानि । तत्र-पश्चेन्द्रियतिर्यक्त्वाम् अस्थिमांसशोणितानि द्रव्यतोऽस्वाध्यायिकानि । उपलक्षणाच्चर्मपि गृह्यते, तत्र-चर्मपि द्रव्यतोऽस्वाध्यायिकं भवति । उक्तं च—

गर्भ मासोमें होता है । तथा-रज उद्घात पवन आदिकी प्रेरणासे जो धूलि आकाशमें व्याप्त हो जानी है वह रज उद्घात है, यह उद्घात जब तक रहता है, तब तक अस्वाध्याय काल कहा गया है । इस तरहसे यह १० प्रकारका अन्तरीक्षिक अस्वाध्याय काल कहा गया है ।

મનુષ્ય એવં પંચેન્દ્રિય તિર્યક્ષ્ણકા જો શરીર છે વહ ઉદાર છે, યહ ઉદાર હી ઔદારિક છે, હસ ઔદારિક શરીરકો લેકર જો અસ્વાધ્યાયિક હૈ, વહ બી દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે-અસ્થિ ૧ માંસ ૨ શોણિત ૩ અશુચિ સામન્ત ૪, ક્ષમશાનસામન્ત ૫, ચન્દ્રોપરાગ ૬, સૂર્યોપરાગ ૭ પતન (રાજમરણ) ૮ રાજવ્યુદ્ગ્રહ ૯ એવં ઉપાશ્રયસ્યાન્ત ઔદારિક પશ્ચેન્દ્રિય કા જીવ રહિત શરીરક ૧૦ પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યક્ષ્ણકે અસ્થિ માંસ ઔર શોણિત ચે સબ દ્રવ્યકી અપેક્ષા અસ્વાધ્યાયિક હૈ, યહાં ઉપલક્ષણસે ચર્મકા બી ગ્રહણ હુઆ હૈ

પાત અને મિહિકાપાત કારતક આદિ ગર્ભ મહિનાઓમાં જ થાય છે.

રજઉદ્ઘાત-પવન આદિને કારણે જે ધૂળ આકાશમાં જાયે ચડે છે અને આખું આકાશ તેનાથી આવૃષ્ટાદિત થઈ જાય છે ત્યારે રજઉદ્ઘાત થયો કહેવાય છે. જ્યાં સુધી તે રજઉદ્ઘાત રહે ત્યાં સુધીના કાળને અસ્વાધ્યાયકાળ કહ્યો છે.

આ પ્રમાણે દસ પ્રકારના આન્તરીક્ષિક અસ્વાધ્યાયકાળ કહ્યા છે—

મનુષ્ય અને પશ્ચેન્દ્રિયતિર્યક્ષ્ણકા શરીરને ઔદારિક શરીર કહે છે. તે ઔદારિક શરીર વિષયક નીચે બતાવેલી દસ પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં એટલે કે ઔદારિક શરીરસંબંધી નીચેનાં કારણો જ્યાં રે ઉદ્ભવે તે કાળને અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો—(૧) અસ્થિ, (૨) માંસ, (૩) શોણિત, (૪) અશુચિસામન્ત, (૫) ક્ષમશાનસામન્ત, (૬) ચન્દ્રોપરાગ, (૭) સૂર્યોપરાગ, (૮) પતન, (૯) રાજવ્યુદ્ગ્રહ અને (૧૦) ઉપાશ્રયસ્યાન્તઃ ઔદારિક શરીરક.

પશ્ચેન્દ્રિય તિર્યક્ષ્ણકાનાં અસ્થિ, માંસ અને શોણિત, આ ત્રણે પદાર્થો દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અસ્વાધ્યાયિકો છે, અહીં ઉપલક્ષણથી ચર્મને પણ ગ્રહણ કરવું જોઈએ.

“ સોણિયમંસં ચર્મં અદ્ધિ ત્રિ ય હોંતિ ચત્તારિ ” ।

છાયા—શોણિતં માંસં ચર્મં અસ્થ્યપિ ચ ભવન્તિ ચત્તારિ । इति ।

ક્ષેત્રનો મનુષ્યકલેવરે શતદસ્તાભ્યન્તરે, તિર્યક્ ગરીરે પષ્ટિહસ્તાભ્યન્તરે । કાલતો યાવત્કાલં દૃશ્યતે તાવત્ । યાવતો મનસાડપ્પપઠનમિતિ । મનુષ્યાણામ્ અસ્થિ-ચર્મ-માંસ-શોણિતાનિ દ્રવ્યતોડસ્વાધ્યાયિકાનિ ભવન્તિ । ક્ષેત્રનઃ-અસ્થિ હસ્તશતાભ્યન્તરે પતિતમસ્વાધ્યાયિકં ભવતિ । અથ તત્સ્થાનમગ્નિક્રામેન ધ્યાતં

હસલિયે ચર્મં બી દ્રવ્યકી અપેક્ષા અસ્વાધ્યાયિકા છે । અર્થા ૧. હનકી ઉપસ્થિતિમેં સ્વાધ્યાય નહીં ક્રિયા જાના છે, અતઃ એ અસ્વાધ્યાય કરનેકે કારણ હૈં । ઉક્તંચ—“ સોણિયમંસં ચર્મં ” इत्यादि ।

ક્ષેત્રની અપેક્ષા મનુષ્યકા કલેવર ચદિ સૌ હાથકે ખીતર ૨ મેં વિચ-માનહૈ તો વહ સ્વાધ્યાયકે નહીં કરનેકાં કારણહૈ તથા તિર્યક્ષપંચેન્દ્રિયકાં શરીર ચદિ સાઠ છાથકે ખીતર ૨ હૈ તો વહ બી સ્વાધ્યાયકે નહીં કરને મેં કારણ હૈ, કાલકી અપેક્ષા જિતને કાલ તક વહ દિખલાઈ દેતા રહતા હૈ, ઉતને કાલ તક વહ સ્વાધ્યાયકે નહીં કરનેમેં કારણ હૈ, ભાવકી અપેક્ષા ઉસ સમય મનસે બી ઉસકા પઠન નહીં ક્રિયા જાતા હૈ, મનુષ્યોકે અસ્થિ, ચર્મ, માંસ એવં શોણિત એ સવ દ્રવ્યકી અપેક્ષા અસ્વાધ્યાયિકા હૈ, ક્ષેત્રની અપેક્ષા ચદિ એ ૧૦૦ હાથકે ખીતર ૨ મૌજુદ હૈં તો એ અસ્વાધ્યાયકે કરનેમેં કારણ હૈં ।

જેઈએ. જેટલે કે ચર્મં પણ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અસ્વાધ્યાયિક જ છે. જેટલે કે અસ્થિ, માંસ, રુધિર અને ચર્મની જ્યાં ઉપસ્થિતિ (વિદ્યમાનતા) હોય, ત્યાં સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. જેટલે જ તેમને અસ્વાધ્યાયના કારણે રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. કહું પણ છે કે—“ સોણિયમંસં ચર્મં ” इत्यादि.

ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ જો મનુષ્યનું શબ્દ ૧૦૦ હાથ સુધીના અંતરે પડેલું, હોય તો સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. જો તિર્યંચનું કલેવર સાઠ હાથ સુધીના અંતરે પડેલું હોય તો જ્યાં સુધી તે કલેવરને ત્યાંથી દૂર કરવામાં ન આવે ત્યાં સુધીનો કાળ અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો. કાળની અપેક્ષાએ ત્રિચાર કરવામાં આવે, તો જેટલા કાળ સુધી તે નજરે દેખાતું રહે તેટલા કાળ સુધી સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. ભાવની અપેક્ષાએ જેટલા સમય પર્યંત તે પાઠનું મનમાં પણ પડન કરવું જોઈએ નહીં. મનુષ્યોનાં અસ્થિ, માંસ, ચર્મ અને શેષિતને દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અસ્વાધ્યાયિક કહ્યા છે ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ જો તે ૧૦૦ હાથના અંતર સુધીમાં પડેલાં હોય તો સ્વાધ્યાય નહીં કરવામાં કારણભૂત બને છે પરંતુ જ્યાં તે અસ્થિ આદિ અસ્વાધ્યાયિકો પડ્યાં હોય તે સ્થાનને પાણીથી ઘોળને સાફ

પાનીયપ્રવાહેણ વા ધૌતં-તદા અસ્વાધ્યાયો ન ભવતિ । ચર્મમાંસશોણિતાનિ તુ હસ્ત-
શતાભ્યન્તરે સ્થિતાનિ યદિ ભવન્તિ તદા સ્વાધ્યાયો ન કલ્પતે । કાલતો યાવ-
ત્કાલં તિષ્ઠન્તિ તાવદસ્વાધ્યાયઃ । યદિ કરયાશ્ચિત્ સપ્તગૃહાભ્યન્તરે પ્રસૂતાયા
દારકો જાતસ્તદા સપ્ત દિનાન્યસ્વાધ્યાયઃ, અષ્ટમે દિવસે સ્વાધ્યાયઃ કર્તવ્યઃ ।
અથ દારિકા જાતા, તર્હિ તસ્યાં જાતાયામઘૌ દિનાન્યસ્વાધ્યાયઃ, નવમે દિને
સ્વાધ્યાયઃ કલ્પતે इति ભેદત્રયમ્ । અશુચિ સામન્તમ્-અશુચીનામ્=અપવિત્રાણામ્,
ઉચ્ચારાદીનાં સામન્તં=સામીપ્યમ્ અસ્વાધ્યાયિકં ભવતિ । ઉચ્ચારાદિષુ ઘ્રાણા-
લોકવિપયેષુ સત્સુ અસ્વાધ્યાયો बोध्यः । इति ચતુર્થો ભેદઃ । રૂપશાનસામન્તમ્=

હાં યદિ યે જિસ સ્થાનમેં પડે હોં વહ સ્થાન યદિ પાનીસે ઘોકર
સાફ કર દિયા ગયા હોં યા વહાં અગ્નિ જલાકર उस स्थानकी शुद्धि
કર દી ગઈ હોં તો ऐसी स्थितिमें वह स्थान अस्वाध्यायका कारण नहीं
બનતા है, चर्म, मांस, शोणित यदि सौ हाथके भीतर २ स्थित हैं तब
स्वाध्याय नहीं करना चाहिये, कालकी अपेक्षा ये चीजे जितने समय
तक पड़ी रहती हैं-उतने समय तक अस्वाध्याय कहा गया है, यदि
किसी सात घरके भीतर २ में बच्चा उत्पन्न हुआ है, तो सात
दिन तक अस्वाध्याय कहा गया है, और यदि उसको लडकी उत्पन्न
हुई है तो आठ दिन तक अस्वाध्याय काल कहा गया है नौवें दिन
स्वाध्याय करना कहा गया है, अशुचिसामन्त--अशुचि पदार्थोंका
उच्चार आदि अपवित्र चीजोंका-सद्भाव यदि पासमें हो-और वे घ्राण

કરી નાખવામાં આવે અથવા તે સ્થાન પર અગ્નિ સળગાવીને શુદ્ધિ કરવામાં
આવે, તો એવી પરિસ્થિતિમાં તે સ્થાન અસ્વાધ્યાયને યોગ્ય રહેતું નથી, પણ
સ્વાધ્યાયને યોગ્ય બની જાય છે. અસ્થિ, માંસ, ચર્મ, શોષિત આદિ ચીજો
સ્વાધ્યાય કરનાર વ્યક્તિથી ૧૦૦ હાથ સુધીને અંતરે હોય તો તેણે સ્વાધ્યાય
કરવો જોઈએ નહીં કાળની અપેક્ષાએ વિચાર કરવામાં આવે તો જેટલા સમય
સુધી તે ચીજો ત્યાં પડી હોય, તેટલા સમયને અસ્વાધ્યાયકાળ ગણવો જોઈએ
ઉપાશ્રયની સમીપના સાત ઘર સુધીના ક્ષેત્રમાં કોઈ સ્ત્રીએ પુત્રનો જન્મ આપ્યો
હોય તો જન્મકાળથી સાત દિવસ સુધીનો અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો અને જો કોઈ
સ્ત્રીએ પુત્રીનો જન્મ આપ્યો હોય તો આઠ દિવસ સુધીનો અસ્વાધ્યાયકાળ
ગણવો. નવમાં દિવસે સ્વાધ્યાય કરી શકાય છે.

અશુચિ સામન્ત-અશુચિ પદાર્થ એટલે મળ, મૂત્ર આદિ અપવિત્ર પદાર્થ
સ્થા ૦-૫૦

શ્મશાનસામીપ્યમ્ અસ્વાધ્યાયિકં ભવતિ । અત્ર અસ્વાધ્યાયો યાવત્ શ્મશાનં
જ્વલિતં દૃશ્યતે તાવદ્ બોધ્ય इति પશ્ચમો ભેદઃ । ચન્દ્રોપરાગઃ=ચન્દ્રગ્રહણમ્ અસ્વા-
ધ્યાયિકો ભવતિ । અત્ર સ્વલ્પગ્રાસે ચતુષ્પદરમાત્રમસ્વાધ્યાયઃ, તતોઽધિકગ્રાસે
અષ્ટપદરપર્યન્તમ્, સર્વગ્રાસે દ્વાદશપદરપર્યન્ત મિતિ પશ્ચો ભેદઃ । સૂર્યોપરાગઃ=સૂર્યગ્ર-
હણમસ્વાધ્યાયિકો ભવતિ । એવં સૂર્યગ્રહણે સ્વલ્પગ્રાસેઽષ્ટપદરપર્યન્તમ્,
તતોઽધિકગ્રાસે દ્વાદશઃ સર્વગ્રાસે પોઢશપદરાત્ યાવદસ્વાધ્યાયઃ । इति સપ્તમઃ ।

આદિ હન્દિયોંકે વિષય હો રહે હોં તો એસી સ્થિતિમેં બી સ્વાધ્યાય
કરના વર્જિત હૈ, ઇસી પકારસે યદિ શ્મશાનકી સમીપતા હો તો બી
વહાં સ્વાધ્યાય કરના વર્જિત હૈ, ઇસ તા તાત્પર્ય એસા હૈ કિ જવ તક
શ્મશાન જ્વલિત હોતા હુઆ પ્રનીત હોતા રહતા હૈ—તવ તકહી સ્વાધ્યાય
કરના વર્જિત સમજના ચાહિયે ।

ચન્દ્રાપરાગ—જય તક ચન્દ્રગ્રહણ હો રહા હો તવ ત ત બી સ્વાધ્યાય
કરના વર્જિત કહા ગયા હૈ, યદિ ચન્દ્ર ગ્રહણમેં ચન્દ્રમાકા ગ્રાસ સ્વલ્પ
હો તો ઉસ અવસ્થામેં ચાર પ્રહર તકકા અસ્વાધ્યાય કહા ગયા હૈ, ઓર
યદિ ઇસસે અધિક ગ્રાસ હો તો ઉસ અવસ્થામેં આઠ પ્રહરકા અસ્વાધ્યાય
કાલ કહા ગયા હૈ ઓર યદિ સર્વ ગ્રાસ હો તો ઉસ અવસ્થામેં બારહ પ્રહરકા
અસ્વાધ્યાય કાલ કહા ગયા હૈ, ઇસી તરહસે સૂર્ય ગ્રહણમેં બી અસ્વા-
ધ્યાય કાલ કહા ગયા હૈ, અલ્પ ગ્રાસ મેં આઠ ઉસસે અધિક ગ્રાસમેં
બારહ એવં સર્વ ગ્રાસ અવસ્થામેં સોલહ પ્રહરકા અસ્વાધ્યાય કાલ જાનના

એવાં અશુચિ પદાર્થોં સમીપમાં પડેલાં હોય અથવા તેમની દુર્ગંધનો ગ્રાણુ-
ન્દ્રિય દ્વારા અનુભવ થતો હોય, તો એવી સ્થિતિમાં પંથુ સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ છે.

શ્મશાન સામન્ત—શ્મશાનની સમીપમાં પથુ સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ છે.
અહીં એવો અર્થ ગ્રહણ કરવાનો છે કે જ્યાં સુધી શ્મશાનમાં કોઈ શબનો
અગ્નિદાહ ચાલુ હોય ત્યાં સુધી—એટલે કે શ્મશાનનો અગ્નિ દષ્ટિગોચર થતો
હોય ત્યાં સુધી સ્વાધ્યાય કરવો ભેઈએ નહીં.

ચન્દ્રોપરાગ—જ્યાં સુધી ચન્દ્રગ્રહણ ચાલુ હોય ત્યાં સુધી પથુ સ્વાધ્યાય
કરવાનો નિષેધ છે જો ચન્દ્રગ્રહણ વખતે ચન્દ્રનો સ્વલ્પગ્રાસ હોય તો તે અવ-
સ્થામાં ચાર પ્રહર પર્યન્તનો અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો. જો અધિકગ્રાસ હોય તો
આઠ પ્રહરપર્યન્તનો અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો અને જ્યારે સર્વગ્રાસ થયો હોય
ત્યારે બાર પ્રહર સુધીનો અસ્વાધ્યાય કાળ સમજવો.

સૂર્યોપરાગ—સૂર્યગ્રહણ વખતે પથુ સ્વાધ્યાયનો નિષેધ ફરમાવ્યો છે.
અલ્પગ્રાસમાં આઠ, તેથી અધિકગ્રાસમાં બાર અને સર્વગ્રાસ અવસ્થામાં સોળ
પ્રહરનો અસ્વાધ્યાયકાળ સમજવો.

પતનમ્-મરણં રાજાદીનામ્ । તત્-રાજમરણે યાવત્સિંહાસનારુઢોડપરો રાજા ન ભવતિ તાવદસ્વાધ્યાયો ભાતિ । एवं यथासंभवादन्यविषयेऽपि अस्वाध्यायोऽन्य तोऽवसेय, इत्यष्टमः । राजव्युद्ग्रहः-राज्ञां व्युद्ग्रहः=संग्रामः अस्वाध्यायिको भवति । अत्रास्वाध્યાयो यत्र क्षेत्रे यावद्राजયુદ્ધं તાવદસ્વાધ્યાયો વોધ્યઃ, इति नवमो भेदः । तथा-उपाश्रयस्य अन्तः=मध्ये वर्त्तमानम् औदारिकं मनुष्यादि सम्बन्धिगरीरकं यदि भवति तदा अस्वाध्यायिकं भवति । परिष्ठापिते तु तस्मिन् तत् स्थानं शुद्धं भवतीति दशमो भेदः । अस्वाध्यायविषये विशेषजिज्ञासुभि-

चाहिये इसी प्रकारसे जब राजा आदिकोंका पतन-मरण हो जाता है तो उस अवस्था तक अस्वाध्याय काल कहा गया है कि जब तक दूसरा राजा नहीं हो जाता है इसी तरहसे यथासंभव अन्य विषयमें अस्वाध्याय काल अन्य शास्त्रोंसे जान लेना चाहिये इसी प्रकारसे राजाओंमें जब संग्राम छिड़ जाता है तो वह भी अस्वाध्यायका हेतु हो जाता है अर्थात् जिस क्षेत्रमें जब तक राजयुद्ध हो रहा है तब तक वहां अस्वाध्याय काल है, ऐसा समझना चाहिये.

तथा-मनुष्य सम्बन्धी मृत शरीर जब तक उपाश्रयके भीतर मौजूद रहता है, तब तक स्वाध्याय करना वर्जित है, परन्तु जब वह शरीर परिष्ठापित हो जाता है तो वह स्थान शुद्ध हो जाता है, और अवस्थामें स्वाध्याय वर्जित नहीं होता है । अस्वाध्यायके विषयमें विशेष जिज्ञा-

પતન-જ્યારે કોઈ રાજા આદિનું મરણ થાય ત્યારે પણ સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ છે. જ્યાં સુધી બીજા રાજાની વરણી ન થાય ત્યાં સુધીના અસ્વાધ્યાય કાળ આ સ્થિતિમાં સમજવો. એવી જ અન્ય પરિસ્થિતિમાં અસ્વાધ્યાયકાળ કેટલો કહ્યો છે તે અન્ય શાસ્ત્રે મથી બાણી લેવું

રાજવ્યુદ્ગ્રહ-એ રાજાએ વચ્ચેના યુદ્ધને રાજવ્યુદ્ગ્રહ કહે છે. આ રીતે જ્યારે યુદ્ધ ચાલતું હોય, ત્યારે પણ સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ ફરમાવ્યો છે. જે ક્ષેત્રમાં જ્યાં સુધી આ રાજવ્યુદ્ગ્રહ ચાલતો હોય ત્યાં સુધીના કાળને અસ્વાધ્યાયકાળ ગણવો જોઈએ દસમો અસ્વાધ્યાયકાળ નીચે પ્રમાણે કહ્યો છે-

જ્યાં સુધી મનુષ્યનું મૃતશરીર ઉપાશ્રયમાં પડ્યું હોય ત્યાં સુધી સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ નહીં. પરન્તુ જ્યારે ત્યાંથી તે મૃતશરીરને બહાર લઈ જવામાં આવે છે ત્યારે તે સ્થાન શુદ્ધ થઈ જાય છે; તેથી ત્યાર બાદ સ્વાધ્યાય કરવાનો નિષેધ નથી.

અસ્વાધ્યાયકાળના વિષયમાં વિશેષ બાણવાની જિજ્ઞાસાવાળા પાઠકોએ

અન્યત્ર દ્રષ્ટવ્યમિતિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

અનન્તરસૂત્રે પચ્ચેન્દ્રિયશરીરમસ્વાધ્યાયાદિકં ભવતીત્યુક્તમ્ । પચ્ચેન્દ્રિયોધિકા-
સદાશ્રિતં સંયમમસંયમં ચ પ્રાહ—

મૂળ—પંચિન્દ્રિયાણાં જીવા અસમારભમાણસ્સ દસવિહે
સંજમે કજ્જહુ,—તં જહા—સોયામયાઓ સોઝલાઓ અવવરોવેત્તા
ભવહ્ ૧, સોયામણ્ણ દુઃખેણં અસંજોણ્ણા ભવહ્ ૨, એવં જાવ
ફાસામણ્ણં દુઃખેણં અસંજોણ્ણા ભવહ્ ૧૦। એવં અસંજમો વિ
ભણિયદ્ધો ॥ સૂ. ૧૫ ॥

છાયા—પચ્ચેન્દ્રિયાન્ સ્વલુ જીવાન્ અસમારભમાણસ્ય દશવિધઃ સંયમઃ
ક્રિયતે, તથા—શ્રોત્રમયાત્ સૌખ્યાત્ અવ્યપરોપયિતા ભવતિ ૧, શ્રોત્રમયેણ
દુઃખેન અસંયોજયિતા ભવતિ ૨, એવં યાવત્ સ્પર્શમયેન દુઃખેન અસંયોજયિતા
ભવતિ ૧૦। ઇત્થમસંયમોડપિ ભણિતવ્યઃ ૧૦ ॥ સૂ. ૧૫ ॥

ટીકા—‘પંચિન્દ્રિયાણં’ ઇત્યાદિ—

પચ્ચેન્દ્રિયાન્ જીવાન્ સ્વલુ અસમારભમાણસ્ય=અવ્યાપાદયતો દશવિધઃ સંયમઃ
ક્રિયતે=ભવતિ, તથા—શ્રોત્રમયાન્ સૌખ્યાત્ અવ્યપરોપયિતા=અપૃથક્કર્તા ભવતિ—
સુઓંકો અન્યત્ર દેશ લેના ચાહિયે ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

પચ્ચેન્દ્રિય શરીર અસ્વાધ્યાયિક હોના હૈ, એસા ઝરકે સૂત્રમેં કહકર
અવ સૂત્રકાર પચ્ચેન્દ્રિયકે અધિકાર કો લેકર યહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ
इनके आश्रित जो संयम और असंयम है वह इस प्रकारसे १० प्रकारका
होता है—“पंचिन्द्रिया णं जीवा असमारभमाणस्स” इत्यादि ॥ सू. १५ ॥
ટીકાર્થ—પંચેન્દ્રિય જીવોંકો વિરાધના નહીં કરનેવાલે મનુષ્યકો દશ પ્રકા-

અન્યત્ર લેઈ લેજુ. ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

પૂર્વસૂત્રમાં પચ્ચેન્દ્રિયના કલેષરને અસ્વાધ્યાયિક રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું
હવે પચ્ચેન્દ્રિયાશ્રિત સંયમ અને અસંયમનું નિરૂપણ કરવામાં આવે છે.

પંચિન્દ્રિયાણાં જીવા અસમારભમાણસ્સ ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૫) -

ટીકાર્થ—પચ્ચેન્દ્રિય જીવોની વિરાધના ન કરનાર જીવ દ્વારા દસ પ્રકારના સંયમનું

इति प्रथमो भेदः । तथा-श्रोत्रमयेण दुःखेन असंयोजयिता भवतीति द्वितीयो भेदः । एवमेव चक्षुष्माणरसनस्पर्शेन्द्रियाणां प्रत्येकमाश्रित्य द्वौ द्वौ भेदौ बोध्यौ । एतदेव सूचयितुमाह-‘ एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ ’ इति । इत्थं दशभेदा भवन्तीति । एतद्विपरीत्येनासंयमस्यापि दश भेदा भवन्ति । ते श्रोत्रमयात् सौख्यात् व्यपरोपयिता भवति ?, तथा श्रोत्रमयेण दुःखेन संयोज-
रका संयम होता है जैसे-श्रोत्रेन्द्रियके सुखसे वह उसका अपृथक् कर्ता होता है ।

श्रोत्रेन्द्रियके दुःखसे वह उसका असंयोजयिता होना है २ इसी प्रकारसे चक्षुहन्द्रिय, घ्राणहन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय इनमेंसे प्रत्येक इन्द्रियको आश्रित करके दो दो भेद बना कर पूर्वोक्त रूपसे कहना चाहिये ।

इस प्रकार कहनेसे संयमका १० वां भेद “ वह स्पर्शमय दुःखसे उसका असंयोजिना होता है ” यह आ जाता है, यही बान एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं ” इत्यादि सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है ।

इस संयमके विपरीत असंयम होता है-अतः असंयमके भी १० भेद होते हैं-जो इस प्रकारसे हैं—

जो संयमी जीव नहीं होता है, असंयमी होता है वह श्रोत्रमय सुखसे उसका व्यपरोपिता होता है ?

પાલન થાય છે. તે દસ પ્રકારે નીચે પ્રમાણે છે-(૧) તે તેને શ્રોત્રેન્દ્રિયના સુખથી વંચિત કરવાનું પાપકૃત્ય કરતો નથી. (૨) તે તેને શ્રોત્રેન્દ્રિય વિષયક હુખથી યુક્ત કરતો નથી. એજ પ્રમાણે ચક્ષુઘન્દ્રિય, ઘ્રાણેન્દ્રિય, રસનેન્દ્રિય અને સ્પર્શેન્દ્રિય વિષયક બખત્રે પ્રકારે પણ શ્રોત્રેન્દ્રિયવિષયક બે પ્રકારે જેવાં જ સમજ લેવા. આ પ્રકારે સંયમના છેલ્લા બે ભેદ નીચે પડશે-(૬) તે તેને સ્પર્શમય સુખથી વંચિત કરનારો બનતો નથી (૧૦) તે તેને સ્પર્શમય દુઃખને સંયોગ કર્તા બનતો નથી. એજ વાત “ એવં જાવ ફાસામણં દુક્ખેણં ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરવામાં આવી છે.

આ સંયમથી વિપરીત અસંયમ હોય છે. હવે સૂત્રકાર તે અસંયમના દસ પ્રકારો પ્રકટ-કરે છે-જે જીવ સંયમી હોતો નથી તેને અસંયમી કહે છે. તે દસ પ્રકારે જીવોની વિરાધના કરતો હોય છે, તેથી અસંયમના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર પડે છે-

(૧) અસંયમી જીવ શ્રોત્રેન્દ્રિયવિષયક સુખથી પંચેન્દ્રિય જીવને વંચિત

વિતા મળતી ૨, ઇત્યાદિક્રમેગ વિજ્ઞેયઃ । એતદેવ સૂચયિતુમાહ—‘ એવં અસંજમો વિ ભાણિયવ્વો ’ ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૫ ॥

સંયમાસંયમૌ પૂર્વં પ્રરૂપિતૌ, તદધિકારાત્ તદ્વિષયાણિ સૂક્ષ્માણિ પ્રાહ—

મૂલમ્—દસ સુહુમા પળગત્તા, તં જહા-પાણસુહુમે ૧, પળ-ગસુહુમે ૨, જાત્ર સિળેહસુહુમે ૮, ગણિયસુહુમે ૯, મંગસુહુમે ૧૦ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

છાયા—દશ સૂક્ષ્માણિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા—પ્રાણસૂક્ષ્મમ્ ૧, પનકસૂક્ષ્મમ્ ૨, યાવત્ સ્નેહસૂક્ષ્મમ્ ૮, ગણિતસૂક્ષ્મમ્ ૯ મજ્જસૂક્ષ્મમ્ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

ટીકા—‘ દસ સુહુમા ’ ઇત્યાદિ—

સૂક્ષ્માણિ વસ્તુનિ દશસંલ્પકાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા—પ્રાણસૂક્ષ્મમ્ ઇત્યાદિ । તત્ર—પ્રાણસૂક્ષ્મમ્—પ્રાણઃ=પ્રાણી તદ્રૂપં સૂક્ષ્મમ્ । યઃ પ્રાણી સંવરન્નેવ ઉપલક્ષ્યતે

તથા—ઓત્રમય દુઃખસે ડસકા સંયોજયિતા હોતા હૈ ૨ ઇત્યાદિ ક્રમસે યહાં પર અસંયમકો પ્રકટ કરનેકે લિયે કથન કર લેના ચાહિયે યહી વાન “ એવં અસંજમો વિ ભાણિયવ્વો ” હસ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

હસ પ્રકારસે સંયમ ઓર અસંયમકી પ્રરૂપણા કરકે અવ સૂત્રકાર હસી અધિકારકો લેકર તદ્વિષયક સૂક્ષ્મોંકા કથન કરતે હૈ—

“ દસ સુહુમા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૧૬ ॥

ટીકાર્થ—સૂક્ષ્મ દશ કહે ગયેહૈ—જૈસે—પ્રાણસૂક્ષ્મ ૧ પનકસૂક્ષ્મ ૨ યાવત્ સ્નેહસૂક્ષ્મ ૮ ગણિતસૂક્ષ્મ ૯ ઓર મજ્જસૂક્ષ્મ ૧૦

કરે છે (૨) અસંયમી જીવ શ્રોત્રેન્દ્રિય વિષયક દુઃખને તેને સંયોગ કરાવનાર બને છે. એજ પ્રમાણે બાકીની ચારે ઇન્દ્રિયોના સુખથી તેમને વંચિત કરવા રૂપ ચાર બીજા લેદો અને દુઃખથી યુક્ત કરવા રૂપ ચાર લેદો મળીને અસંયમના કુલ દસ લેદ થાય છે. એજ વાત “ એવં અસંજમો વિ ભાણિયવ્વો ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે. ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

આ પ્રકારે સંયમ અને અસંયમની પ્રરૂપણા કરીને હવે સૂત્રકાર એજ વિષય સાથે સુસંગત એવાં સૂક્ષ્મ જીવોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસ સુહુમા પળગત્તા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૬)

ટીકાર્થ—સૂક્ષ્મ જીવોના દસ પ્રકારો નીચે પ્રમાણે પડે છે (૧ થી ૮) પ્રાણસૂક્ષ્મથી લઈને સ્નેહસૂક્ષ્મ પર્યંતના આઠ પ્રકારો, (૯) ગણિતસૂક્ષ્મ અને (૧૦) ભંગસૂક્ષ્મ.

ન તુ સ્થિતઃ, સ કુન્થાદિકઃ પ્રાણસૂક્ષ્મમ્ ॥ ૧ ॥ પનકસૂક્ષ્મમ્-પનકઃ=વર્ષા-
કાલે ભૂમિકાષ્ઠાદૌ સમુત્પન્નઃ પશ્ચવર્ગઃ ‘ફૂલન’ ઇતિ માપાગસિદ્ધો જીવવિશેષઃ,
તદ્રૂપં સૂક્ષ્મમ્ । યાવત્પદેન-“ વીયસુહુમે ૩ હરિયસુહુમે ૪, પુષ્પસુહુમે ૫, અંડ-
સુહુમે ૬ લેણસુહુમે ૭, છાયા-વીજસૂક્ષ્મં ૩, હરિતસૂક્ષ્મં ૪, પુષ્પસૂક્ષ્મમ્ ૫,
અણ્ડસૂક્ષ્મમ્ ૬, લયનસૂક્ષ્મમ્ ૭, इत्येतानि पदानि=સંગ્રાહ્યાણિ । તત્ર-વીજસૂ-
ક્ષ્મમ્ વીજં=શાલ્યાદિતુષ્પુત્રં, યતોઽંકુરઃ સમુત્પત્યતે, વીજરૂપં સૂક્ષ્મં-નીજસૂક્ષ્મમ્
ઇતિ ॥ ૩ ॥ હરિતસૂક્ષ્મમ્-હરિતઃ=ઉત્પત્તમાનો નવીનો ભૂમિતુલ્યવર્ણતઃ દુર્લભ્યો
વનસ્પતિઃ, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મં હરિતસૂક્ષ્મમિતિ ॥ ૪ ॥ પુષ્પસૂક્ષ્મમ્-પુષ્પમ્=ઉદુમ્બરાદિ

સૂક્ષ્મ વસ્તુએ દશ કહી ગઈ છે જે-જે પ્રાણી ચલના હુઆ હી
દિશ્વલાઈ દેના હૈ, અર્થાત્-જો ચલને પર હી પ્રતીત હોતા હૈ-સ્થિત હોને
પર પ્રતીત નહીં હોતા હૈ વહ પ્રાણસૂક્ષ્મ-પ્રાણિરૂપ સૂક્ષ્મ વસ્તુ હૈ-
જે-જે કુન્થુ આદિક જીવ, વર્ષાકાલમેં જો ભૂમિકાષ્ઠ આદિમેં ઉત્પન્ન
હો જાતેં હૈં એસી ફૂલનકા નામ પનક હૈ, હમ પનક રૂપ જો સૂક્ષ્મ
વસ્તુ હૈ-વહ પનક સૂક્ષ્મહૈં યહ પનક પાંચ વર્ગકા હોતાહૈં ૨ યહાં યાવત્
પદસે “ વીયસુહુમે ૩ હરિયસુહુમે ૪ પુષ્પસુહુમે ૫ લેણસુહુમે ” યહ
પાઠ સંગ્રહીત હુઆ હૈ વીજ રૂપ જો સૂક્ષ્મ હૈં વહ વીજસૂક્ષ્મ હૈં-જિસસે
અંકુર ઉત્પન્ન હોતા હૈં વહ વીજસૂક્ષ્મ હોતા હૈં, હરિત રૂપ જો સૂક્ષ્મ
હૈં વહ હરિતસૂક્ષ્મ હૈં યહ હરિતસૂક્ષ્મ એક પ્રકારકી વનસ્પતિ વિશેષ

સૂક્ષ્મ જીવોના ઇત્ય પ્રકારોનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

(૧) પ્રાણસૂક્ષ્મ-જે જીવો ચાલતાં હોય ત્યારે જ નજરે પડે છે એવાં
જીવોને પ્રાણસૂક્ષ્મ કહે છે. પ્રાણ એટલે પ્રાણી અથવા જીવ. અને સૂક્ષ્મ એટલે
ખારીક આ બ્યુત્પત્તિ અનુસાર “ પ્રાણિ (જીવ) રૂપ સૂક્ષ્મ વસ્તુને ‘પ્રાણસૂક્ષ્મ’
કહે છે. જેમ કે કુન્થુ (કુથવા) વગેરે જીવો.

(૨) પનકસૂક્ષ્મ-વર્ષાઋતુમાં જમીન, કાષ્ઠ આદિ પર જે પંચવર્ણી દીલ
કુગ થાય છે તેને પનક કહે છે. આ પનકરૂપ જે સૂક્ષ્મ વસ્તુ છે તેનું
નામ પનકસૂક્ષ્મ છે

પ્રાણસૂક્ષ્મ પછી જે ‘યાવત્’ પદનો પ્રયોગ થયો છે તેના દ્વારા “પનક
સૂક્ષ્મ, બીજસૂક્ષ્મ, હરિતસૂક્ષ્મ, પુષ્પસૂક્ષ્મ, અંડસૂક્ષ્મ અને લયનસૂક્ષ્મ” આ
પ્રકારોનો સંગ્રહ થયો છે.

(૩) બીજસૂક્ષ્મ-જેમાંથી અંકુર ઉત્પન્ન થાય છે તેને બીજ કહે છે. આ
બીજરૂપ જે સૂક્ષ્મ વસ્તુ છે તેને બીજસૂક્ષ્મ કહે છે.

(૪) હરિતસૂક્ષ્મ-હરિતરૂપ જે સૂક્ષ્મ છે તેને હરિતસૂક્ષ્મ કહે છે. આ
હરિતસૂક્ષ્મ એક પ્રકારની વનસ્પતિવિશેષરૂપ હોય છે. તે જ્યારે નવીન રૂપે

પુષ્પામ્, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મં-પુષ્પસૂક્ષ્મમિતિ ॥ ૫ ॥ અણ્ડસૂક્ષ્મમ્-અણ્ડમ્=મક્ષિકા-
પિપીલિકા-ગૃહગોધિકા-કુકલાસાધણ્ડકં, તદેવ સૂક્ષ્મમ્ इति ॥ ૬ ॥ લયનસૂ-
ક્ષ્મમ્-લયનં=સત્ત્વાનામાશ્રયઃ-કીટનગરાદિ, યત્ર કીટિકાઃ સૂક્ષ્માશ્ચાન્યે જીવા-
સ્તિષ્ઠન્તિ તદિતિ, તદેવ સૂક્ષ્મમ્ લયનસૂક્ષ્મમ્ । કીટિકાનગરાદિ હિ પૃથિવ્યા-
દિવત્પ્રતિભાસમાનં જીવત્વેન દુર્લક્ષ્યં ભવતીતિ વોધ્યમ્ ॥ ૭ ॥ તથા-સ્નેહસૂ-
ક્ષ્મમ્-સ્નેહઃ=અવશ્યાય-હિમ-મહિકાદિરુપઃ, તદ્રૂપં સૂક્ષ્મં સ્નેહસૂક્ષ્મમ્ इति ॥ ૮ ॥

રૂપ હોતા હૈં ઓર યહ જવ નવીન રૂપમેં ઉત્પન્ન હોતા હૈં તથા હસકા
વર્ણ ભૂમિકે વર્ણ જૈસા હોતા હૈં, અતઃ ઉસ સમય યહ ભૂમિસે પૃથક્
પ્રતીતિમેં નહીં આતા હૈં-પુષ્પ રૂપ જો સૂક્ષ્મ હૈં વહ પુષ્પસૂક્ષ્મ હૈં એસા
યહ પુષ્પસૂક્ષ્મ ઉદુમ્બર આદિકે પુષ્પ રૂપ હોતા હૈં અણ્ડ રૂપ જો સૂક્ષ્મ
હૈં વહ અણ્ડ સૂક્ષ્મ હૈં એસા યહ અણ્ડસૂક્ષ્મ-મક્ષિકા, પિપીલિકા, ગૃહ
ગોધિકા, કુકલાસ ગિરગિટ આદિકે અણ્ડરૂપ હોતાહૈં સર્વોકે આશ્ર-
યભૂત જો કીટ નગર હૈં ઉસકા નામ લયન હૈં હસ લયનમેં સૂક્ષ્મ કીટિ-
કાઉં ઓર સૂક્ષ્મ જીવ રહતે હૈં અતઃ હસ લયન રૂપ સૂક્ષ્મ હૈં કીટિ
કાનગરાદિ પૃથિવી આદિકો તરહ પ્રતીત હોતા હૈં ઓર યહ સજીવ
હૈં, હસ રૂપસે વડી કઠિનાઈસે પ્રતીતિ કોટિમેં આતા હૈં સ્નેહ રૂપ જો
સૂક્ષ્મ હૈં વહ સ્નેહસૂક્ષ્મ હૈં અવશ્યાય-બર્ફ, હિમ એવં મહિકા આદિ

ઉત્પન્ન થાય છે, ત્યારે તેના વર્ણ ભૂમિનાવર્ણ જેવો હોય છે, તે કારણે તે
ભૂમિથી અલગ કોઈ વસ્તુ રૂપે દેખાતાં નથી.

(૫) પુષ્પસૂક્ષ્મ-પુષ્પરૂપ જે સૂક્ષ્મ છે તેને પુષ્પસૂક્ષ્મ કહે છે. ઉદુમ્બર
(ઉમરડા) આદિના ફૂલને પુષ્પસૂક્ષ્મ એવ કહી શકાય.

(૬) અંડ (ઈંડાં) રૂપ જે સૂક્ષ્મ છે તેને અંડસૂક્ષ્મ કહે છે. તે માખી,
કીડી, ગરૌણી, કાંચીડા આદિનાં ઈંડાંરૂપ હોય છે.

લયનસૂક્ષ્મ-કીડિયારાંને લયન કહે છે. તેમાં કીડી આદિ સૂક્ષ્મ એવા રહે
છે. તેથી તેને લયનસૂક્ષ્મ કહે છે. આ કીડિયારાં આદિ પૃથ્વીના જેવાં જ લાગે
છે, અને “આ સંભવ છે” એવું સમજતાં ઘણી જ મુશ્કેલી ખડી થાય છે.
-તે સંભવ છે એવી ખાતરી સરલતાથી થતી નથી.

સ્નેહસૂક્ષ્મ-સ્નેહરૂપ જે સૂક્ષ્મ છે તેને સ્નેહસૂક્ષ્મ કહે છે. બરફ, હિમ,
ધ્રુમસ, ઝાકળ, આદિ રૂપ તે સ્નેહસૂક્ષ્મ હોય છે.

गणित-सूक्ष्म-गणित-संख्यान-सङ्कलनादि, तदेव सूक्ष्मं सूक्ष्मबुद्धिभिर्निर्ज्ञेयमिति
गणितसूक्ष्ममिति ॥ ९ ॥ तथा भङ्गसूक्ष्मम्-भङ्गाः=भेदा-वस्तुविकल्पाः, एत-
त्सूक्ष्मं-भङ्गसूक्ष्ममिति । सूक्ष्मताचास्य भजनीयपदानां बाहुल्ये गहनभावेन
सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वादिति १० ॥ सू० १६-॥

गणितसूक्ष्ममित्युक्तं, सम्प्रति तद्विषयविशेषभूतानि ज्ञानमंदर इत्यादि-
 रभ्यः एवं कुंडलवरे.त्रि. इति पर्यन्तं सूत्राणि प्ररूपयति—

मूळम्-जंबूमंदरदाहिणेणं गंगासिंधुमहानईओ दस महा-
नईओ समप्पेति, तं जहा-जउणा १, सरऊ २, आदी ३,
कोसी ४, मही ५, सिंधू ६, विवच्छा ७, विभासा ८, एरावई
९, चंदभागा १० ॥ जंबूमंदर उत्तरेण रत्तारत्तवईओ महानईओ
दस महानईओ समप्पेति, तं जहां-किण्हा १, महाकिण्हा २,
नीला ३, महानीला ४, तीरा ५, महातीरा ६, इन्दा ७, इन्द्र-
सेणा ८, वारिसेणा ९, महाभोगा १० ॥ सू० १७ ॥

ऐसा रूप स्नेह होता है, जो गणितसूक्ष्म बुद्धिवालोंके द्वारा विज्ञेय होता है, ऐसा वह सङ्कलन-व्यवकलन आदि गणित-गणितसूक्ष्म है, वस्तुविकल्पांका नाम भङ्ग है इन भङ्गों रूप जो सूक्ष्म है वह भङ्गसूक्ष्म है भङ्गोंमें जो सूक्ष्मता कही गई है वह भजनीय पदोंकी बहुलतामें गहन भावकों लेकर सूक्ष्म बुद्धिवालों द्वारा गम्य होनेके कारणसे कही गई है ॥ सू० १६ ॥

अब सूत्रकार गणितसूक्ष्मके विषयभूत "जंबू, मंदूर", यहांसे लेकर "एवं कुण्डलवरे वि" यहां तकके सूत्रोंका कथन करते हैं—

‘ગણિતસૂક્ષ્મ-જે’ ગણિત’ સૂક્ષ્મ બુદ્ધિવાળાં જીવો દ્વારા સમજી શકાય એવું હોય છે-એવું’ તે સંકલન-વ્યવકલન આદિ જે ગણિત છે તેને ગણિતસૂક્ષ્મ કહે છે.

૧. ભંગસૂક્ષ્મ-વસ્તુવિકલ્પોત્તુ' નામ ભંગ છે. તે ભંગો (વિકલ્પો) રૂપ
જે સૂક્ષ્મ છે તેને ભંગસૂક્ષ્મ કહે છે. ભંગોમાં જે સૂક્ષ્મતા કહી છે, તે ભજનીય
(વૈકલ્પિક) પદ્ધતી બહુલતામાં ગહત ભાવને લઈને સૂક્ષ્મબુદ્ધિવાળા ગમ્ય
હોવાને કારણે કહી છે. ॥ સૂ. ૧૬ ॥

હવે સૂત્રકાર, ગણિતપૂજ્યના વિષયરૂપ-“જંખૂમંદર”થી લઇને-“પ્રવં-
કુંડલવરે વિ” ‘કુંડલવર’ પર્યન્તનાં સૂત્રોનું કથન કરે છે-

છાયા—જમ્બૂમંદરદક્ષિણે ગંગાસિન્ધુ મહાનદી દશ મહાનદ્યઃ સમર્પયન્તિ, તથા—યમુના ૧ સરયુઃ ૨, આદી ૩, કૌશિકી ૪, મદી ૫, સિન્ધુ ૬ વિવત્સા ૭, વિમાસા ૮, પેરાવતી ૯ ચન્દ્રભાગા ૧૦ ॥ જમ્બૂમંદરોત્તરે રક્તારક્તવત્યૌ મહાનદ્યૌ દશ મહાનદ્યઃ સમર્પયન્તિ, તથા—કૃષ્ણા ૧, મહાકૃષ્ણા ૨, નીલા ૩, મહાનીલા ૪, તીરા ૫, મહાતીરા ૬, ઇન્દ્રા ૭, ઇન્દ્રસેના ૮, વારિષેણા ૯, મહા-ભોગા ૧૦ ॥ સૂ ૧૭ ॥

ટીકા—‘ જમ્બૂમંદરદાહિણેણ ’ इत्यादि—

જમ્બૂમંદરદક્ષિણે—જમ્બૂદ્વીપસ્ય મેરુપર્વતસ્ય દક્ષિણસ્યાં દિશિ ગંગા સિન્ધુ મહાનદ્યૌ=ગંગામહાનદીં સિન્ધુમહાનદી ચ દશ મહાનદ્યઃ આત્માનં સમર્પયન્તિ=સંગમયન્તિ, તથા—યમુના સરયુરિત્યાદિ । તથા—જમ્બૂમંદરોત્તરે=જમ્બૂદ્વીપસ્ય મેરુપર્વતસ્યોત્તરસ્યાં દિશિ રક્તા રક્તવત્યૌ મહાનદ્યૌ=રક્તામહાનદીં રક્તવતીં મહાનદીં ચ દશ મહાનદ્યઃ આત્માનં સમર્પયન્તિ=સંગમયન્તિ, તથા—કૃષ્ણા, મહાકૃષ્ણા इत्यादि ॥ સૂ ૧૭ ॥

“ જમ્બૂ મંદરદાહિણેણ ગંગાસિન્ધુ મહાનદીઓ इत्यादि ॥ સૂ ૧૭ ॥

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપસ્ય મેરુ પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં ગંગા મહાનદીમાં એવં સિન્ધુ મહાનદીમાં દશ મહાનદિયાં મિલી છે—જો આ પ્રકારે છે—યમુના ૧ સરયુ ૨ આદી ૩ કૌશિકી ૪ મદી ૫ સિન્ધુ ૬ વિવત્સા ૭ વિમાસા ૮, પેરાવતી ૯ અને ચન્દ્રભાગા ૧૦ તથા જમ્બૂ દ્વીપસ્ય મેરુ પર્વતની ઉત્તર દિશામાં રક્તા અને રક્તવતી આ બે મહાનદિયોમાં દશ મહા નદિયાં મિલી છે જેવે—કૃષ્ણા ૧, મહાકૃષ્ણા ૨ નીલા ૩, મહાનીલા ૪ તીરા ૫, મહાતીરા ૬, ઇન્દ્રા ૭, ઇન્દ્રસેના ૮ વારિષેણા ૯ અને મહા-ભોગા ૧૦ ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

જમ્બૂ મંદરદાહિણેણ ગંગાસિન્ધુ મહાનદીઓ ” इत्यादि—(સૂ ૧૭)

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપસ્ય મેરુ પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં જે ગંગા અને સિન્ધુ નામની મહાનદીઓ મળે છે તેમને નીચે દર્શાવેલી દસ મહાનદીઓ મળે છે—(૧) યમુના (૨) સરયુ, (૩) આદી, (૪) કૌશિકી, (૫) મદી, (૬) સિન્ધુ (૭) વિવત્સા, (૮) વિમાસા, (૯) પેરાવતી અને (૧૦) ચન્દ્રભાગા.

જમ્બૂદ્વીપસ્ય મેરુ પર્વતની ઉત્તર દિશામાં જે રક્તા અને રક્તાવતી નામની બે મહાનદીઓ છે, તે નદીઓને આ દસ મહાનદીઓ મળે છે—(૧) કૃષ્ણા, (૨) મહાકૃષ્ણા, (૩) નીલા, (૪) મહાનીલા, (૫) તીરા, (૬) મહાતીરા, (૭) ઇન્દ્રા, (૮) ઇન્દ્રસેના, (૯) વારિષેણા અને (૧૦) મહા ભોગા. ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

મૂલ્કમ્--જંબુદ્વીવે દીવે ભરહે વાસે દસ રાયહાળીઓ પળણત્તાઓ, તં જહા-ચંપા ૧ મથુરા ૨, વાણારસી ૩, ચ સાવત્થી ૪, તહ ચ સાણ્યં ૫। હસ્થિનપુર ૬, કંપિલ્લં ૭। મિહિલા ૮, કોસંબિ ૯ રાયગિહં ૧૦। ણ્યાસુ ણં દસ રાયહાળીસુ દસ રાયાળો મુંડા ભવેત્તા જાવ પવ્વડયા, તં જહા--ભરહે ૧ સાગરો ૨, મઘવં ૩, સણંકુમારો ૪, સંતી ૫, કુંથુ ૬, અરે ૭, મહાપટમે ૮ હરિસેળો ૯ જયણામે ૧૦ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષે દશ રાજધાન્યઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-ચમ્પા ૧ મથુરા ૨ વારાણસી ૩ ચ, શ્રાવસ્તી ૪ તથા ચ સાકેતમ્ ૫। હસ્તિનાપુરં ૬ કામ્પિલ્યં ૭, મિથિલા ૮ કૌશામ્બી ૯, રાજગૃહમ્ ૧૦। ણ્યાસુ સ્વલુ દશરાજ ધાનીષુ દશરાજાનો મુગ્ધા ભૂત્વા યાવત્ પ્રવ્રજિતાઃ, તથા-ભરતઃ ૧ સાગરો ૨ મઘવા ૩ સનત્કુમારઃ ૪ શાન્તિઃ ૫, કુન્થુઃ ૬, અરઃ ૭, મહાપદ્મઃ ૮ હરિ-ષેળો ૯ જયનામા ૧૦ ॥ સૂ. ૧૮

ટીકા—‘ જંબુદ્વીવે દાવે ’ ઇત્યાદિ—

જમ્બૂદ્વીપાભિધાનદ્વીપસ્થે દક્ષિણભરતે વર્ષે દશ રાજધાન્યઃ—રાજાનો ધીયન્તે=સ્થાપ્યન્તે—અભિષિચ્યન્તે યાસુ તા રાજધાન્યઃ—જનપદાનાં પ્રધાનનગર્યઃ

“ જંબુદ્વીવે દીવે ભરહે વાસે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત ભરત વર્ષમેં-દશ રાજધાનિયાં કહી ગઈહૈં—જૈસે-ચમ્પા ૧ મથુરા ૨ વારાણસી ૩ શ્રાવસ્તી ૪ સાકેત ૫ હસ્તિનાપુર ૬ કામ્પિલ્ય ૭ મિથિલા ૮ કૌશામ્બી ૯ ઓર રાજગૃહ ૧૦ જિનમેં રાજા-ઓંકા અભિષેક હોના હૈ વે રાજધાની કહલાની હૈં, ચે રાજધાનો જન-પદોંકી પ્રધાન નગરી રૂપ હોતી હૈં । અહ્ન જનપદકી રાજધાની ચમ્પા થી

“ જંબુદ્વીવે દીવે ભરહે વાસે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૧૮)

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતવર્ષમાં દસ રાજધાનીઓ આવેલી છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે.

(૧) ચંપા, (૨) મથુરા, (૩) વારાણસી, (૪) શ્રાવસ્તી, (૫) સાકેત, (૬) હસ્તિનાપુર, (૭) કાંપિલ્ય, (૮) મિથિલા, (૯) કૌશામ્બી અને (૧૦) રાજગૃહ. જે નગરોમાં રાજાઓને અભિષેક થાય છે, તે નગરોને રાજધાનીઓ કહે છે. રાજધાની જનપદની મુખ્ય નગરીરૂપ હોય છે. અંગ જનપદની રાજધાની ચંપા

પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-ચમ્પા, મથુરા इत्यादि । तत्र-चम्पा-अङ्गजनपदस्य राजधानी
 १, मथुरा शूरसेनजनपदस्य २, वाराणसी काशीराजजनपदस्य ३, श्रावस्तीकुणा-
 लायाः ४, साकेतम्-अयोध्या, सा च कोसलदेशस्य ५, हस्तिनापुरम्-कुरुजन-
 पदस्य ६, काम्पिल्यं पञ्चालस्य ७, मिथिलां त्रिदेहस्य ८, कौशाम्बीवत्सदेशस्य
 ९, राजगृहम्-मगधस्य । अत्रैता राजधान्यो दश स्थानान्कानुरोधेनोक्ताः । वस्तुतस्तु
 सार्द्धपञ्चविंशतौ आर्यजनपदेषु पञ्चविंशतो राजधान्यो भवन्तीति । तथा-एतासु
 दशसु राजधानीषु मध्येऽन्यतमासु राजधानीषु दश राजानो मुण्डा भूत्वा अगारात्
 अनगारितां प्रव्रजिताः, तथैव-भरतः सगर इत्यादि । तत्र भरतसगरौ साकेते

સૂરસેન જનપદકી રાજધાની મથુરા થી, કાશી જનપદકી રાજધાની
 વારાણસી થી, કુળાલકી રાજધાની શ્રાવસ્તી થી, અયોધ્યા-સાકેત
 રાજધાની કોસલ દેશકી થી, કુરુજનપદકી રાજધાની હસ્તિનાપુર થી,
 પંચાલકી રાજધાની કામ્પિલ્ય થી, ત્રિદેહકી રાજધાની મિથિલા થી,
 વત્સદેશકી રાજધાની કૌશામ્બી થી, ઓર મગધ દેશકી રાજધાની
 રાજગૃહ નગર થી, યહાં દશ સ્થાનકોંકે અનુરોધસે હોયે ૧૦ રાજ-
 ધાનિયાં કહી ગઈ હૈં । વૈસે તો ૨૬ “આર્ય જનપદોંમે” ૨૬ રાજધાનિયાં
 હૈં । તથા-इन १० राजधानियोंमेंसे-किन्हीं राजधानियोंमें इन दश
 राजाओंने मुण्डित होकर अगारावस्थासे अनगारितावस्थाको धारण
 किया है, उनके नाम-इस प्रकारसे हैं-भरत १, सगर २ मधवा ३
 सनत्कुमार ४, शान्ति ५, कुन्धु ६ और ७ महपद्म ८ हरिषेण ९ और

નગરી હતી, સૂરસેન જનપદની રાજધાની મથુરામાં હતી, કાશી જનપદની રાજ-
 ધાની વારાણસીમાં હતી, કુળાલ જનપદની રાજધાની શ્રાવસ્તી હતી, કોસલ
 દેશની રાજધાની અયોધ્યા (સાકેત) નામની નગરી હતી, પંચાલની રાજધાની
 કામ્પિલ્યમાં હતી, કુરુજનપદની રાજધાની હસ્તિનાપુરમાં હતી, વત્સદેશની રાજ-
 ધાની કૌશામ્બી નગરીમાં હતી, ત્રિદેહની રાજધાની મિથિલામાં હતી અને મગધની
 રાજધાની રાજગૃહ નગરમાં હતી. અહીં દસ સ્થાનની પ્રજ્ઞપણ આત્મી રહી છે
 તેથી દસ રાજધાનીઓનાં નામો જ અહીં આપવામાં આવ્યાં છે. આમ તો ૨૫
 આર્યજનપદોની ૨૬ રાજધાનીઓ હતી.

ઉપર્યુક્ત દસ રાજધાનીઓમાંની કોઈ પણ રાજધાનીઓમાંથી મુકિત થઈને
 ગૃહસ્થાવસ્થાના પરિયાગપૂર્વક અણગારાવસ્થા ધારણ કરનાર દસ રાજાઓનાં
 નામ નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે-(૧) ભરત, (૨) સગર, (૩) મધવા, (૪) સન-
 ત્કુમાર, (૫) શાન્તિ, (૬) કુન્ધુ, (૭) અર, (૮) મહાપદ્મ, (૯) હરિષેણ અને
 (૧૦) જયનાભા. આ દસ રાજાઓમાંના ભરત અને સગર સાકેતમાં પ્રવ્રજ્યાં

પ્રવ્રજિતૌ, મધવા શ્રાવસ્ત્યામ્, સનત્કુમારઃ શાન્તિઃ કુન્થુરોમહાપદ્મશ્ચ હસ્તિનાપુરે,
 હરિષેણઃ કામ્પિલ્યે, જયનામૌ ચ રાજગૃહે । પૂર્વોક્તાસુ 'દશસુ' રાજધાનીષુ 'દશ-
 રાજાનઃ' ક્રમતો નૌ વાચ્યાઃ, શાસ્ત્રાન્તરવિરોધાત્ । અતएવાત્ર 'દશરાજધાનીષુ'
 'ઇત્યસ્ય' 'દશરાજધાનીષુ મધ્યે'ડન્યતમાસુ 'રાજધાનીષુ' 'ઇત્યર્થઃ કૃતઃ'ઇતિ ॥ સુ ૧૮ ॥

મૂલ્ય-જંબુદ્વીપે દ્વીપે મંદરે પવણ દસજોયણસયાઈ ઉદ્ધે-
 હેળાં, ધરણિતલે દસજોયણસહસ્સાઈ વિક્કખંભેળાં, ઉવરિં દસ
 જોયણસયાઈ વિક્કખંભેળાં, દસદસાઈ જોયણસહસ્સાઈ સવગ્ગેળાં
 પણત્તે ॥ સૂ ૦ ૧૯ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મંદરઃ પર્વતો દશ યોજનશતાનિ ઉદ્ધેધેન, ધરણિ-
 તલે દશ યોજનસહસ્રાણિ વિષ્ક્રમ્મેણ, ઉપરિ દશ યોજનશતાનિ વિષ્ક્રમ્મેણ,
 દશદશકાનિ યોજનસહસ્રાણિ સર્વાગ્રેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥ સૂ ૦ ૧૯ ॥

જય હનમે-ભરત સગર-યે દો સાકેતમે પ્રવ્રજિત હુએ હૈ- । મધવા
 શ્રાવસ્તીમે પ્રવ્રજિત હુઆ હૈ. સનત્કુમાર, શાન્તિ, કુન્થુ, અર, ઔર
 મહાપદ્મ. યે હસ્તિનાપુરમે પ્રવ્રજિત હુએ હૈ । હરિષેણ કામ્પિલ્યમે
 પ્રવ્રજિત હુઆ હૈ, ઔર રાજગૃહમે જયનામકે તીર્થકર પ્રવ્રજિત
 હુએ હૈ. 'હન' પૂર્વોક્ત રાજધાનિયોકે યે ૧૦ રાજા ક્રમશઃ નહીં
 કહના વ્યોકિ શાસ્ત્રાન્તરસે એસા કથન કરનેમે વિરોધ આતા હૈ,
 હસીલિયે યહાં "દશ રાજધાનીષુ" હસ પાઠકા અર્થ-"દશ રાજ-
 ધાનિયોમે સે કિન્હી ૨ રાજધાનિયોમે" એસા અર્થ કિયા ગયાહૈ ॥ સુ. ૧૮ ॥

લીધી હતી. મધવાએ શ્રાવસ્તીમાં અને સનત્કુમાર શાન્તિ, કુન્થુ, અર અને
 મહાપદ્મે હસ્તિનાપુરમાં પ્રવ્રજ્યા લીધી હતી. હરિષેણે કામ્પિલ્યમાં અને જય-
 નામના તીર્થકરે રાજગૃહ નગરમાં પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરી હતી. ઉપર્યુક્ત
 ૧૦ રાજધાનીઓમાં ઉપર્યુક્ત ૧૦ રાજાઓએ ક્રમશઃ પ્રવ્રજ્યા લીધી હતી,
 એવું કથન કરવું જોઈએ નહીં કેમકે-એવું કથન કરવામાં શાસ્ત્રોક્ત કથન
 કરતાં વિપરીત કથન કરવાનો દોષ લાગે છે તે કારણે અહીં "દશ રાજધાનીષુ"
 આ સૂત્રપાઠનો અર્થ આ પ્રમાણે કરવો જોઈએ-

"દસ રાજધાનીઓમાંની કોઈ પણ રાજધાનીઓમાં" કયાં રાજાએ કઈ
 રાજધાનીમાં લીધા લીધી હતી, તે વાત પણ ઉપર પ્રકટ કરવામાં આવી છે,
 તેથી આ સૂત્રપાઠનો અર્થ સ્પષ્ટ થઈ જાય છે. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

ટીકા—‘ જંબુદ્વીવે દીવે ’ इत्यादि—

जम्बूद्वीपाभिवद्वीपस्थो मन्दरः पर्वतो दश योजनशतानि=एकमहस्रयोजनानि उद्वेधेन=भूम्यन्तर्गतेन भागेन । धरणिनले दश योजनसहस्राणि=दशसहस्रयोजनानि विष्कम्भेण=पृथुत्वेन । उपरि=पण्डकवने दशयोजनशतानि=एकसहस्रयोजनानि विष्कम्भेण । सर्वाग्नेण=सर्वपरिमाणेन च दशदशकानि-दशभिर्गुणितानि दशकानि योजनसहस्राणि-लक्षयोजनानि प्रज्ञप्तः । मेरोः समग्रं परिमाणं लक्षयोजनात्मकं बोध्यमित्यर्थः ॥ सू० १९ ॥

મૂળ- જંબુદ્વીવે દીવે મંદરસ્ત પઠ્વયસ્ત વહુમઞ્જદેસમાણ
इमीसेरयणप्पभाण पुढवीण उवरिमहेट्टिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं
अट्ठपएसिए रुयगे पणगत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसासो
पवहंति, तं जहा-पुरत्थिमा १, पुरत्थिमदाहिणा २, दाहिणा
३, दाहिगयच्चत्थिमा ४, पच्चत्थिमा ५, पच्चत्थिमुत्तरा ६, उत्तरा
७, उत्तरपुरत्थिमा ८, उड्ढा ९ अहो १० । एएसि णं दसण्हं
दिसाणं दस नामधिजा पणगत्ता, तं जहा-इंदा १ अग्गीई २
जमा ३ णेरई ४ वारुणी ५ य वायवा ६। सोमा ७ ईसाणावि
८ य विमला ९ तमा १० य बोद्धवा ॥ सू० २० ॥

“ જંબુદ્વીવે દીવે મંદરે પઠ્વર ” इत्यादि ॥ सूत्र १९ ॥

ટીકાર્થ-જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપમાં રહ્યા હુઆ જો સુમેરુ પર્વતનું, વહુ એક હજાર યોજન તો જમીનને મીનર હૈ, તથા ભૂમિકે ઝપર ૧૦ હજારકા ચૌડા હૈ, ઓર પણ્ડકવનમાં એક હજાર યોજનકા હૈ, હસ તરહ વહુ સર્વ પ્રમાણકી અપેક્ષા દશ ગુણિત દશ હજાર યોજનકા હૈ, અર્થાત્ ૧ લાખ યોજનકા હૈ ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

“ જંબુદ્વીવે દીવે મંદરે પઠ્વર ” इत्यादि-(सू १८)

ટીકાર્થ-જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં જે મંદર (સુમેરુ) પર્વત છે, તે તેની પહોળાઈ ૧૦ હજાર યોજનની છે, અને પંડકવનમાં તેનો વિસ્તાર એક હજાર યોજનનો છે આ રીતે સર્વ પ્રમાણની અપેક્ષાએ તેનું પ્રમાણ દસ હજાર યોજન કરતાં ૧૦ ગણું-એટલે કે એક લાખ યોજનપ્રમાણ છે. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય बहुमध्यदेशभागे अस्याः रत्न-
प्रभायाः पृथिव्या उपरितनाधस्तनयोः क्षुल्लकप्रतरयोः अत्र खलु अष्ट प्रदेशिको
रुचकः प्रज्ञप्तः । यतः खलु इमा दश दिशः प्रवहन्ति, तद्यथा—पौरस्त्या १, पौर-
स्त्यदक्षिणा २, दक्षिणा ३ दक्षिणपाश्चात्या ४ पाश्चात्योत्तरा ६, उत्तरा ७ उत्तर-
पौरस्त्या ८, ऊर्ध्वा ९ अधः १०। एतासां खलु दशानां दिशां दशनामधेयानि
प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—एन्द्री १, आग्नेयी २ यामी ३, नैर्ऋती ४, वरुणी ५ च वाय
व्या ६। सौम्या ७ ऐशानी ८ अपि च त्रिमला ९, तमा १९ च वोद्धव्या । सू. २०॥

ટીકા—' જંબુદ્વીપે દીપે ' इत्यादि—

जम्बूद्वीपाभिध्वद्वीपस्थस्य मन्दरस्य पर्वतस्य बहुमध्यदेशभागे स्थिताया
अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या उपरितनाधस्तनयोः क्षुल्लकप्रतरयोः—क्षुल्लकौ=
सर्वप्रतरापेक्षया ह्रस्वौ, तयोरुपरितनानामधस्तनानां च प्रतराणां वर्द्धमानतरत्वात्,
तौ च तौ प्रतरौ तयोः खलु अष्ट प्रदेशिकः—प्रष्टौ च ते प्रदेशास्त्रेति—अष्टप्रदेशाः,
ते सन्त्यस्य इत्यष्टप्रदेशिकः—उपरितने प्रतरे गोस्तनाकाराश्चत्वारः प्रदेशाः, अध-

“ જંબુદ્વીપે દીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય ” इत्यादि ॥ सू. २० ॥

ટીકાર્થ—જમ્બુદ્વીપકે દ્વીપમેં રહે હુએ મન્દર પર્વતકે बहुमध्यदेशभागमें
स्थित इस रत्नप्रभा पृथिवी नामके द्वीपमें रहे हुए मन्दरपर्वतके बहु
मध्यमें स्थित इस रत्नप्रभा पृथिवीके उपरितन अधस्तन दो क्षुल्लक
प्रतरमें आठ प्रदेशिक रुचक कहा गया है, तात्पर्य यह है कि मन्दर
पर्वतके ठीक मध्य भागमें स्थित जो यह रत्नप्रभा पृथिवी है उस
पृथिवीके ऊपरके एवं नीचेके जो क्षुल्लक प्रतर हैं—इनमें ऊपरके क्षुल्लक
प्रतरमें गोस्तनाकार चार प्रदेश एवं नीचेके प्रतरमें भी चार प्रदेश

जंબુદ્વીપે દીપે મન્દરસ્ય પર્વતસ્ય ” इत्यादि—(सू. २०)

ટીકાર્થ—જંબુદ્વીપ નામના દ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતના बहुमध्यदेश भागમાં
स्थित આ रत्नप्रभा पृथ्वीના ઉપરિતન અને अधस्तन બે क्षुल्लक (ह्रस्व)
प्रतरोंમાં आठ प्रदेशिक रुचक कहा છે. આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—

મન્દર પર્વતના ઘરાબર મધ્યભાગમાં બે રત્નપ્રભા પૃથ્વી આવેલી છે તે
પૃથ્વીનું ઉપરનું અને નીચેનું બે क्षुल्लक प्रतर છે (આ રીતે બે બે क्षुल्लक
प्रतरों છે) તેમાં કુલ આઠ રુચકાકાર પ્રદેશો છે. ગાયના આંચળને રુચક કહે
છે ગાયનાં આંચળના બેવા આકારને રુચકાકાર કહે છે. એવાં ચાર રુચકાકાર
પ્રદેશો ઉપરના પ્રતરમાં છે અને ચાર રુચકાકાર પ્રદેશો નીચેના પ્રતરમાં છે.
આ રીતે ત્યાં કુલ આઠ રુચકાકાર પ્રદેશો આવેલા છે, ત્યાં ઉપરના તથા

સ્તનેઽપિ ચત્તાર इति अष्टप्रदेशिको रुचकः प्रज्ञप्तः । यतो रुचकात् खलु इमाः=
 वक्ष्यमाणा दश दिशाः प्राहन्ति=वर्तन्ते । तद्यथा-पौरस्त्या १ पौरस्त्यदक्षिणा
 २ इत्यादि । एतासां दशानां दिशां दश नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-ऐन्द्री १,
 आग्नेयी २ इत्यादि । तत्र-विमला-तमोरहितत्वेन निर्मलत्वात् ऊर्ध्वदिगिति ।
 तमा-अन्धकारयु कत्वेन रात्रितुल्यत्वात्, अधोदिगिति ॥ सू० २० ॥

इस तरहसे अष्ट प्रदेशिक रुचक कहा गया है, ऊपरके और नीचेके, क्षुल्लक प्रतरो सिवाय जो ऊपर नीचे के ओर प्रतर हैं, वे वर्द्धमान प्रतर हैं, इसलिये इनकी अपेक्षा ऊपर नीचेके वे ही प्रतर लिये गये हैं जो सर्व प्रतरोंकी अपेक्षा क्षुल्लक हूस्व हैं, ऐसे ये क्षुल्लक प्रतर ऊपरके और नीचेके ये दोही हैं, इनमें ही अष्ट-प्रदेशिक रुचक कहा गया है इस रुचकसे ये दश दिशाएँ बनती हैं- पूर्व १ पूर्व दक्षिण २ दक्षिण ३ दक्षिण पाश्चात्य ४, पाश्चात्य ५, पाश्चा-त्योत्तर ६, उत्तर ७, उत्तर पाश्चात्य ८, ऊर्ध्व ९ और अधः १०

इन दश दिशाओंके ये १० नाम कहे गये हैं जैसे-ऐन्द्री १ आग्नेयी २ यामी ३, नैर्ऋती ४, वारुणी ५, वायव्य ६, सौम्य ७, ऐशानी ८, विमला ९, और तमा १० इनमें ऊर्ध्व दिशाका नाम विमला इसलिये कहा गया है, कि वह तमो-रहित होनेसे निर्मल है, अधो दिशाका नाम तमा इसलिये कहा गया है, कि वह अन्धकार युक्त होनेसे रात्रिके तुल्य है ॥ सूत्र-२०-॥

નીચેના ક્ષુલ્લક પ્રતરો સિવાયના જે પ્રતરો છે તેઓ વર્દ્ધમાન (દીર્ઘ) પ્રતરો છે. ઉપર અને નીચેના પ્રતરો તેમના કરતાં ક્ષુલ્લક (હ્રસ્વ) છે. આ રીતે સૌથી ક્ષુલ્લક જે પ્રતરો જ છે તેમાંનું એક ઉપર છે, અને બીજું નીચે છે. તે જે ક્ષુલ્લક પ્રતરોમાં જ આઠ રુચકાકાર પ્રદેશો છે, તે રુચકાકાર આઠ પ્રદેશોને અહીં અષ્ટપ્રદેશકા રુચક કહેવામાં આવ્યા છે. આ રુચકને આધારે જ ૧૦ દિશાઓ બને છે. તે દસ દિશાઓનાં નામ નીચે પ્રમાણે કહ્યા છે-(૧) પૂર્વ, (૨) પૂર્વદક્ષિણ, (૩) દક્ષિણ, (૪) દક્ષિણપશ્ચિમ (નૈઋત્ય), (૫) પશ્ચિમ, (૬) પશ્ચિમોત્તર (વાયવ્ય), (૭) ઉત્તર, (૮) ઉત્તરપૂર્વ (દિશાન), (૯) ઉર્ધ્વ અને (૧૦) અધઃ આ દસ દિશાઓનાં નીચે પ્રમાણે દસ નામ પણ કહ્યા છે-(૧) એન્દ્રી, (૨) આગ્નેયી, (૩) યામી (૪) નૈર્ઋતી, (૫) વારુણી, (૬) વાયવ્ય, (૭) સૌમ્ય, (૮) એશાની, (૯) વિમલા અને (૧૦) તમા.

ઉર્ધ્વ દિશા અધકાર રહિત હોવાને કારણે નિર્મળ હોવાથી તેનું નામ વિમલા છે. અધોદિશા અધકાર યુક્ત હોવાથી રાત્રિસમાન છે તે કારણે તેને “તમા” કહી છે. ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

मूलम्—लवणस्त णं समुद्रस्त दस जोयणसहस्साइं गोतिर्य-
विरहिण खेत्ते पणत्ते । लवणस्त णं समुद्रस्त दसजोयण-
सहस्साइं उदगमाले पणत्ते । सव्वे त्रि णं महापायाला दस
दसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पणत्ता, मूले दस जोयणसह-
स्साइं विक्खंभेणं पणत्ता, बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए
सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पणत्ता, उवरिं
मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पणत्ता । तेसि णं
महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ समां दस जोयणस-
याइं बाहल्लेणं पणत्ता । सव्वे त्रि णं खुद्रा पायाला दसजोयण-
सयाइं उव्वेहेणं पणत्ता, मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं
पणत्ता, बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दसजोयण-
सयाइं विक्खंभेणं पणत्ता, उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं
विक्खंभेणं पणत्ता । तेसि णं खुद्रपायालाणं कुड्डा सव्ववइरा-
मया सव्वत्थसमा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पणत्ता ॥ सू० २१ ॥

छाया—लवणस्य खलु समुद्रस्य दश योजनसहस्राणि गोतीर्थविरहितं
क्षेत्रं प्रज्ञप्तम् । लवणस्य खलु समुद्रस्य दश योजनसहस्राणि उदकमाला प्रज्ञप्ता !
सर्वेऽपि खलु महापाताला दश दशकानि योजनसहस्राणि उद्वेगेन प्रज्ञप्ताः, मूले
दश योजनसहस्राणि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः, बहुमध्यदेशभागे एकरूपदेशिकया
श्रेण्या दशदशकानि योजनसहस्राणि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः, उपरि मुखमूले दशयो-
जनसहस्राणि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः । तेषां खलु महापातालानां कुड्यानि सर्वव-
ज्रमयाणि सर्वत्र समानि दशयोजनशतानि बाहल्येन प्रज्ञप्तानि । सर्वेऽपि खलु खुद्राः
पातालाः दश योजनशतानि उद्वेगेन प्रज्ञप्ताः, मूले दशदशकानि योजनानि विष्कम्भेण,
प्रज्ञप्ता बहुमध्यदेशभागे एकरूपदेशिकया श्रेण्या दश योजनशतानि विष्कम्भेण
प्रज्ञप्ताः, उपरि मुखमूले दशदशकानि योजनानि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः । तेषां खलु
खुद्रपातालानां कुड्यानि सर्ववज्रमयाणि सर्वत्र समानि दश योजनानि बाहल्येन
प्रज्ञप्तानि ॥ सू० २१ ॥

ટીકા—‘લવણસ્સ ણં’ ઇત્યાદિ—

લવણસ્ય ચલુ સમુદ્રસ્ય ગોતીર્થવિરહિતં-ગાં તીર્થમ્ - તડાગાદૌ અવતરણ-
ભૂમિઃ-ગોતીર્થમ્, તદ્વદ્ યત્તદપિ ગોતીર્થમિ-યુન્યતે, તતો વિરહિતમ્-અર્થાત્
સમં યત્ત ક્ષેત્રં તદ્ દશયોજનસહસ્રં પ્રત્પત્તમ્। इदं च पूर्वभागतः पश्चिमभाग-
तश्च पञ्चनवतियोजनसहस्रपरिमितां गोतीर्थरूपां भूमिं विहाय मध्ये स्थितं
ક્ષેત્રં बोध्यमिति । लवणस्य चलु समुद्रस्य मध्यभागादुत्थिता उदकमाला=उदक-
शिखा-वेका दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भेण=पृथुत्वेन प्रज्ञप्ता । उच्चैस्त्वेन तु
पोडशसहस्राणि बोध्येति । तथा-सर्वेऽपि=पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु सद्भावाच्चत्वा-
रोऽपि महापातालाः=चलयामुखकेयूरयूपकेश्वरनामानो महापातालकलशाः दशदश-
कानि-दशगुणितानि दशकानि योजनसहस्राणि=लक्षयोजनानि उद्वेगेन=गाम्भी-

“લવણસ્સ ણં સમુદ્રસ્સ દસજોયણસહસ્સાઈ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

ટીકાર્થ-લવણ સમુદ્રકા ગોતીર્થસે રહિત ક્ષેત્ર-ક્ષેત્રસમ દશ હજાર
યોજન કહા ગયાહૈ, ગાય આદિકૉકો તાલાવ આદિમ્ ઉતરનેકી જો ભૂમિ
હોતી હૈ વહ ગોતીર્થ હૈ, હસ ગોતીર્થસે રહિત જો ક્ષેત્ર હૈ, વહ સમક્ષેત્ર
હૈ, યહ સમક્ષેત્ર પૂર્વ ભાગસે ઓર પશ્ચિમ ભાગ ૧૫ હજાર યોજનકી
ગોતીર્થ રૂપ ભૂમિકો છાડકર મધ્યમ્ સ્થિત હૈ, લવણસમુદ્રકી મધ્ય
ભાગસે ડઠી હુઈ ઉદકવેલા વિષ્કમ્મકી અપેક્ષા દશ હજાર યોજનકી
કહી ગઈ હૈ, તથા હસકી ઝંચાઈ ૧૬ હજાર યોજનકી કહી ગઈ હૈ,
તથા પૂર્વાદિ ચારોં દિશાઓંમ્ જો ઇક ઇક પાતાલ કલશહૈ, હસ તરહસે
જો ચાર પાતાલ કલશ હૈ-કિ જિનકે નામ ચલયામુખ, કેયૂર ચૂપક
ઔર હૈશ્વરહૈ, ઉદ્વેગકી અપેક્ષા-ગંભીરતાકી અપેક્ષા-ઇક ૨લાખ યોજનકે

“લવણસ્સ ણં સમુદ્રસ્સ દસજોયણસહસ્સાઈ” ઇત્યાદિ—(સ. ૨૧)

ટીકાર્થ-‘લવણસમુદ્રનું’ ગોતીર્થથી રહિત ક્ષેત્ર-સમક્ષેત્ર-દસ હજાર યોજનનું કહ્યું
છે. ગાય આદિકોને તળાવ આદિ જળાશયોમાં ઉતરવાની જે ભૂમિ હોય છે તેને
ગોતીર્થ કહે છે. આ ગોતીર્થથી રહિત જે ક્ષેત્ર છે તેને સમક્ષેત્ર કહે છે. પૂર્વની
૮૫ હજાર યોજન પ્રમાણ અને પશ્ચિમની ૮૫ હજાર યોજન પ્રમાણ ગોતીર્થરૂપ
ભૂમિને છોડી દેતાં બાકીનું જે ૧૦ હજાર યોજન પ્રમાણ સમક્ષેત્ર છે તેને અહીં
ગોતીર્થથી રહિત ક્ષેત્ર રૂપ કહ્યું છે. લવણસમુદ્રના મધ્યભાગમાંથી ઉત્પન્ન થતી
ઉદકવેલા (પાણીની ભરતી) વિષ્કંભની અપેક્ષાએ દસ હજાર યોજન પ્રમાણ કહી
છે, તથા તેની ઊંચાઈ ૧૬ હજાર યોજનની કહી છે તથા પૂર્વાદિ દિશાઓમાં
જે એક એક પાતાલ કલશ છે તેમના ઉદ્વેગ (ઊંડાઈ) એક એક લખ યોજનની
કહી છે. એવાં ચાર પાતાલ કલશ છે. તેમનાં નામ વલયામુખ, કેયૂર, ચૂપક

યેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । મૂલે=મૂલભાગે ચૈતે મહાપાતાલ દશયોજનસહસ્રાણિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । તથા-મૂલવિષ્કમ્ભાદુમયત એકૈકપ્રદેશવૃદ્ધ્યા, વિસ્તરં ગચ્છતાં યા એકપ્રદેશિકા શ્રેણિસ્તયા, એતે બહુમધ્યદેશભાગે દશદશકાનિ યોજનસહસ્રાણિ=લક્ષયોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । અથવા-એકપ્રદેશિકાયાઃ શ્રેણ્યા બહુમધ્યદેશભાગે=અત્યન્તમધ્યભાગે દશદશકાનિ યોજનસહસ્રાણિ=લક્ષયોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । इत्थं मूले मध्ये च विष्कम्भतो महापातालप्रमाणमभिधाय सम्प्रति उपरितनभागमादाय विष्कम्भनस्तत्प्रमाणमाह-‘ उपरि ’ इत्यादि । उपरि=उपरितनभागे मुखमूले=मुखप्रदेशे दश योजनसहस्राणि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः । तेषां खलु महापातालकलशानां कूड्यानि=भित्तयः सर्ववज्रमयाणि=वर्षात्प्रना वज्रमयाणि सर्वत्र समानि=तुल्यानि, बाह्येन=स्थौल्येन दश योजनशतानि=एक सह-

કહે ગયે હૈં । મૂલ ભાગમેં इनका विष्कम्भ दश हजार योजनका है, एवं बहु मध्यदेश भागमें इनका विष्कम्भ मूल भागकी अपेक्षा दोनों तरफ एक एक प्रदेशकी वृद्धिसे वृद्धि होता है, वही श्रेणि वृद्धि है, अथवा-एक एक प्रदेशवाली श्रेणीके बहुमध्य देश भागमें बिलकुल मध्य भागमें-ये एक लाख योजनके विस्तारवाले कहे गये हैं । इस तरह मूलमें और मध्यमें कहकर अब सूत्रकार उपरितन भागको लेकर विष्कम्भकी अपेक्षा उसका प्रमाण कहते हैं-“ उपरि ” इत्यादि-इन महापाताल कलशोंका मुखके मूलमें मुख प्रदेशमें दश हजार योजनका विष्कम्भ कहा गया है, इन महापाताल कलशोंकी भित्तियां हैं-वे वज्रमय हैं, और सर्वत्र समान हैं, अर्थात् इनकी मोटाई

અને ઈશ્વર છે. મૂલ ભાગમાં તેમનો વિષ્કંભ (વિસ્તાર) દસ હજાર યોજનનો છે. બન્ને બાજુના મૂળભાગથી એક એક પ્રદેશની વૃદ્ધિ થતાં થતાં તે પાતાળ કળશોના બરાબર મધ્યભાગનો વિસ્તાર એક એક લાખ યોજનનો થઈ જાય છે. એક એક પ્રદેશની જે વૃદ્ધિ છે તેનું નામ શ્રેણિવૃદ્ધિ છે અથવા-એક પ્રદેશ વાળ શ્રેણીના બહુમધ્યદેશભાગમાં-તેન મધ્યભાગમાં-તે કળશોનો વિસ્તાર એક એક લાખ યોજનનો કહ્યો છે. આ રીતે તે મહાપાતાલ કલશોના મૂલભાગ અને મધ્યભાગના વિસ્તારનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તે મહાપાતાલ કલશોના ઉપરિતન ભાગના વિષ્કંભનું પ્રમાણ પ્રકટ કરે છે-“ ઉવરિ ” ઈત્યાદિ-

તે મહાપાતાલ કળશોના મુખપ્રદેશોનો વિસ્તાર દસ દસ હજાર યોજનનો કહ્યો છે. આ પાતાળકળશોની જે ભીંતો છે તે સંપૂર્ણ રૂપે વજ્રમય છે અને તેની બાડાઈ એક સરખી છે. તે ભીંતોની બાડાઈ એક હજાર યોજનપ્રમાણ છે. આ પ્રમાણે

સયોજનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ । इत्थं महापातालकलशानभिधाय सम्प्रति क्षुद्रपातालक-
लशानाह—‘ सन्वे वि णं खुदा पायाला ’ इत्यादि । सर्वेऽपि खलु क्षुद्राः=महापा-
तालकलशापेक्षया लघवः पायालाः=पातालकलशा दशयोजनशतानि=एकसहस्रयो-
जनानि प्रज्ञप्ताः । अथवा—एकप्रदेशिकायाः श्रेण्या बहुमध्यदेशभागे विष्कम्भेण
दशयोजनशतानि प्रज्ञप्ताः । तथा—उरि=उपरितनभागे सुखमूले=सुखप्रदेशे विष्क-
म्भेण दशशतकानि योजनानि=शतयोजनानि विष्कम्भेण प्रज्ञप्ताः । तेषां खलु
क्षुद्रपातालकलशानां कुड्यानि सर्वात्मना वज्रमयाणि सर्वत्र समानि बाह्येन दश-
योजनानि प्रज्ञप्तानि ॥ सू० २१ ॥

૧ હજાર યોજનકી હૈ इस प्रकार महापातालकलशोंके सम्बन्धमें
कथन करके अब सूत्रकार क्षुद्रपाताल कलशोंके सम्बन्धमें कथन करते हैं
“ सन्वे वि णं खुदा पायाला ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ-મહાપાતાલ કલશોંકી અપેક્ષા જો છોટે ૨ પાતાલકલશ હૈ-
વે ગમ્ભીરતાકી અપેક્ષા એક હજાર યોજનકે કહે ગયેહૈ । મૂલમેં યે ક્ષુદ્ર
પાતાલ કલશ વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા ૧૦૦ યોજનકે કહે ગયે હૈ । તથા
મૂલકે વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા દોનોં તરફ એક ૨ પ્રદેશકી વૃદ્ધિસે જો
इनका मध्य भाग का विष्कम्भ है वह एक हजार योजनका है, अथवा
एक प्रदेशिक श्रेणिके बहुमध्य देशमें इन का जो विष्कम्भ है वह एक
हजार योजनका है, तथा-सुख प्रदेशमें जो इनका विष्कम्भ है-वह सौ
योजनका है, इन क्षुद्रपाताल कलशोंकी जो भित्तियां हैं वे वज्रमय
है और सर्वत्र समानहैं—अर्थात् इनकी मोटाई दश योजनकीहै ॥सू. २१॥

મહાપાતાલકળશેા વિષે કથન કરીને ‘ હવે સૂત્રકાર ક્ષુદ્ર પાતાલકળશેાનું’
વર્ણન કરે છે—“ સન્વે વિ ણં ખુદા પાયાલા ” ઇત્યાદિ—

મહાપાતાલ કળશેા કરતાં નાનાં જે પાતાલ કળશેા છે તેમનો ઉદ્દેશ (હેતુ)
એક એક હજાર યોજનની કહી છે. તે ક્ષુદ્ર પાતાલ કળશેાના મૂળભાગનો (તળિયાને)
વિસ્તાર ૧૦૦-૧૦૦ યોજનનો કહ્યો છે. તેની બન્ને તરફથી એક એક પ્રદેશની
વૃદ્ધિ થતાં થતાં તેમના મધ્યભાગનો વિસ્તાર એક એક હજાર યોજનનો થાય
છે. અથવા એક પ્રદેશિક શ્રેણિના મિલકુવ મધ્ય ભાગમાં તે પ્રત્યેક ક્ષુદ્રપાતાલ
કળશેાનો વિસ્તાર ૧૦૦૦ યોજનનો છે તે કળશેાના મુખપ્રદેશેાનો વિસ્તાર ૧૦૦
-૧૦૦ યોજનનો કહ્યો છે. આ ક્ષુદ્ર પાતાલ કળશેાની ભીંતો સર્વત્ર એક સરખી
મહી છે અને એકલા વજ્રની જ બનેલી છે તેમની ભીંતોની જાડાઈ દસ યોજનની
કહી છે. ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

मूलम्—धायइसंडगा णं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं,
धरणितले देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरि दस
जोयणसयाइं विक्खंभेणं पणत्ता । पुक्खरवरदीवच्चगा णं
मंदरा दस जोयणसयाइं एवं चेव ॥ सू० २२ ॥

छाया—धातकीवण्डगौ खलु मन्दरौ दशयोजनशतानि उद्वेधेन, धरणिनले
देशोनानि दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भेण, उपरि दशयोजनशतानि विष्कम्भेण
मङ्गप्तौ । पुष्करवरद्वीपार्द्धकौ खलु मन्दरौ दश योजनशतानि एवमेव ॥सू०२२॥

टीका—‘ धायइसडगा ’ इत्यादि—

धातकीखण्डगौ-धातकीखण्डक्षेत्रस्थितौ मन्दरौ-पूर्वपश्चिमभागस्थितौ
मेरुपर्वतौ प्रत्येकम्-एकैकमेरुपर्वतः उद्वेधेन-दीर्घत्वमधिकृत्यान्तःप्रवेशापेक्षया
भूम्यन्तर्गतभागो न दशयोजनशतानि-एकसहस्रयोजनपरिमित इत्यर्थः ।
तथा धरणीतले-भूम्यन्तरिभागे विष्कम्भेण देशोनानि देशतः षड् योजनशतरूपात्
ऊनानि-न्यूनानि दशसहस्रयोजनानि चतुर्नवतिशतयोजनपरिमितः मूले पश्चन-
वतिशतयोजनप्रमाणत्वात् उपरि भागे शिखरप्रदेशे विष्कम्भेण सहस्रयोज-
नानि एकसहस्रयोजनपरिमित इत्यर्थः एकैको उच्चवत्वेन चतुरशीतिसहस्र-
योजनपरिमितो वर्तते एव प्रमाणौ पूर्वपश्चिममेरुपर्वतौ प्रज्ञप्तौ । 'पुक्वरवर-

“ धायइसंडगा णं मंदरा ” इत्यादि ॥ सूत्र २२ ॥

टीका—घातकी खण्ड क्षेत्रमें स्थित जो पूर्व एवं पश्चिम सम्बन्धी दो मेरु पर्वत हैं वे प्रत्येक उद्वेग (गहराई) भूमिके अन्दर रहे हुए भाग की अपेक्षा १ एक हजार योजन के हैं, अर्थात् इनका एक हजार योजन का भाग भूमि में अदृश्य है, तथा जमीन के ऊपर इनका विष्कम्भ कुछ कम दस हजार योजन का है तथा ऊपर में इनका विष्कम्भ १ हजार योजन का है पुष्क-

“ ધાયદ્સંડગા ણં મંદરા ” ઇત્યાદિ—(સ્ક. ૨૨)

ટીકાર્થ—ધાતકી ખંડની પાના પૂર્વ ભાગમાં એક મેરુ પર્વત છે અને પશ્ચિમ-ભાગમાં પણ એક મેરુ પર્વત છે તે બન્ને પર્વતોનો ઉદ્ભવ—ભૂમિમાં રહેલો ભાગ—એક એક હજાર યોજન પ્રમાણુ છે. એટલે કે આ બન્ને મેરુ પર્વતોનો એક એક હજાર યોજન પ્રમાણુ ભાગ ભૂમિની અદર રહેલો હોવાથી અદશ્ય છે—જમીનની ઉપર તેમનો વિષ્કંભ દસ હજાર યોજન કરતાં કંઈક ન્યૂન છે, અને ઉપરિતત ભાગમાં તેનો વિષ્કંભ એક હજાર યોજનનો છે. પુષ્કરવરદ્વીપા-ધના બે મન્દર (મેરુ) પર્વતોનું કથન પણ ધાતકી ખંડના મેરુ પર્વતોના

દીવદ્વગાળં' इत्यादि पुष्करवरद्वीपार्द्धगतौ अपि मन्दरौ दशयोजनशतानि उद्वेगेन, इत्यादि, एवमेव धातकीखण्डमन्दरवदेव विज्ञेयौ ॥

उक्तञ्च—'धायइसंडे मेरु, चुलसीइसइस्स ऊसिया दोवि ।

ओगाढा य सहस्सं, होति य सिहरंमि वित्थिण्णा ॥१॥ मूले पणनउइसया, चउ-
णउइसया य होति धरणियले ॥ " इति छाया-धातकी खण्डे मेरु चतुरशीति
सहस्राणि उच्छिन्नौ द्वावपि । अवगाढौ च सहस्रं, भरतश्च शिवरे विस्तीर्णौ ॥१॥ मूले
पञ्चनवतिशतानि चतुर्नवतिशतानि च भवन्ति धरणितले इति ॥ सू० २२ ॥

मूलम्—सव्वे वि णं વટ્ટવેયદ્વુપવ્વયા દસ જોયણસયાઈં ઉઢું
ઉચ્ચત્તેણં, દસ ગાઉયસયાઈં ઉવેહેણં સવ્વત્થ સમા પહ્લગસંઠાણ-
સંઠિયા, દસજોયણસયાઈં વિક્કલંભેણં પળ્લગ્ગા ॥ સૂ० ૨૩ ॥

छाया—सर्वेऽपि खलु वृत्तवैताढ्यपर्वता दशयोजनशतानि ऊर्ध्वमुच्चवत्त्वेन,
दशगव्यूतशतानि उद्वेगेन, सर्वत्र समाः पर्यकसंस्थानसंस्थिताः, दशयोजन-
शतानि विक्रम्भेण प्रज्ञप्ताः ॥ सू० २२ ॥

टीका—'सव्वे वि णं' इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा । नवरं—सर्वेऽपि विंशतिसंख्यका अपि वृत्तवैताढ्यपर्वताः ।
विंशतिसंख्यकत्वमेतेषां—पञ्चसु हैमवतेषु पञ्चानां शब्दापातिनां, पञ्चसु ऐरण्यव-
तेषु पञ्चानां विकटापातिनां, पञ्चसु हरिवर्षेषु पञ्चानां गन्धापातिनां, पञ्चसु रम्य-
कवर्षेषु पञ्चानां माल्यवतां च सद्भावादिति । 'वृत्तवैताढ्य' इत्यत्र वृत्तेति विशेष-
णं दीर्घवैताढ्यव्यवच्छेदार्थम् ॥ सू० २३ ॥

रवर द्वीपार्धमें भी दो मन्दर पर्वतोंका कथन इसी प्रकारसे है, यही बात
“पुष्करवरदीवद्वगालं मंदरा” इत्यादि सूत्र पाठसे प्रकट की गई है ॥ सू. २२ ॥

“सव्वे वि णं વટ્ટવેયદ્વુપવ્વયા” इत्यादि ॥ सूत्र २३ ॥

टीकार्थ—समस्त वृत्त वैताढ्य पर्वत २० कहे गये हैं—क्योंकि पांच हैमवतोंमें
५ शब्दापाती हैं, पांच ऐरण्यवतोंमें पांच विकटापाती हैं पांच हरिवर्षोंमें
पांच गन्धापाती हैं, और पांच रम्यक क्षेत्रोंमें पांच माल्यवान् हैं ।

કથન અનુસાર જ સમજવું એજ વાત “પુષ્કરવરદીવદ્વગાળં મંદરા” ઇત્યાદિ
સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરવામાં આવી છે ॥ સૂ. ૨૨ ॥

“સવ્વે વિ ણં વટ્ટવેયદ્વુપવ્વયા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૨૩)

ટીકાર્થ—વૃત્તવૈતાઢ્ય પર્વતોની કુલ સંખ્યા ૨૦ નીકળી છે, કારણ કે પાંચ હૈમ-
વતોમાં પાંચ શબ્દાપાતી છે, પાંચ ઐરણ્યવતોમાં પાંચ વિકટાપાતી છે પાંચ હરિ-
વર્ષોમાં પાંચ ગન્ધાપાતી છે, અને પાંચ રમ્યકક્ષેત્રોમાં પાંચ માલ્યવાન્ છે.

મૂલમ્-જંબુદ્વીવે દીવે દસ છેત્તા પળ્લન્તા, તં જહા-ભરહે ૧, એરવં ૨, હૈમવં ૩, હૈરણ્યવં (એરણ્યવં) ૪, હરિવસ્સે ૫, રમ્યગવસ્સે ૬, પુઞ્વવિદેહે ૭। અવરવિદેહે ૮ દેવકુરા ૯ ઉત્તર-કુરા ૧૦ ॥ સૂ ૦ ૨૪ ॥

છાયા—જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે દશક્ષેત્રાણિ પ્રજ્ઞાનિ, તથા—ભરતમ્ ૧, એરવતં ૨, હૈમવતં ૩, હૈરણ્યવતં (એરણ્યવતં) ૪, હરિવર્ષ, ૫, રમ્યકવર્ષ ૬. પૂર્વવિદેહઃ ૭ અપરવિદેહઃ ૮ દેવકુરવઃ ૯, ઉત્તરકુરવઃ ૧૦ ॥ સૂ ૦ ૨૪ ॥

ટીકા—‘જંબુદ્વીવે દીવે’ इत्यादि—

व्याख्या स्पष्टा ॥ सू ० २४ ॥

મૂલમ્-માણુસુત્તરે ણં પઞ્વણ મૂલે દસવાવીસે જોયણસણ વિક્કમ્મેણં પળ્લન્તે ॥ સુ ૦ ૨૫ ॥

છાયા—માણુપોત્તરઃ સ્વલુ પર્વતો મૂલે દશ દ્વાવિંશતિં યોજનાનિ વિક્કમ્મેણ પ્રજ્ઞંસઃ ॥ સૂ ૦ ૨૫ ॥

વૈતાલ્યોમેં જો “વૃત્ત” (ગોલ) એસા વિશેષણ દિયા હૈ વહ દીર્ઘ વૈતાલ્યપર્વતકી નિવૃત્તિકે લિયે દિયા હૈ ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

“જંબુદ્વીવે દીવે દસ છેત્તા પળ્લન્તા” इत्यादि ॥ २४ ॥

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ નામકે દ્વીપમેં ૧૦ ક્ષેત્ર કહે ગયેહેં । જૈસે—ભરત ૧, એરવત ૨, હૈમવત ૩, હૈરણ્યવત ૪, હરિવર્ષ ૫, રમ્યક વર્ષ ૬, પૂર્વ વિદેહ ૭, અપર વિદેહ ૮, દેવકુરુ ૯, ઓર ઉત્તર કુરુ ૧૦ ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

“માણુસુત્તરેણં પઞ્વણ મૂલે” इत्यादि २५ ॥

ટીકાર્થ—માણુપોત્તરપર્વત મૂલમેં વિક્કમ્મકી અપેક્ષા એક હજાર ૨૨ યોજ-

વૈતાલ્યોની આગળ જે “વૃત્ત” વિશેષણ લગાડવામાં આવ્યું છે તે દીર્ઘવૈતાલ્યપર્વતોની નિવૃત્તિને માટે લગાડવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

“જંબુદ્વીવે દીવે દસ છેત્તા પળ્લન્તા” ઈત્ય દિ—

ટીકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ૧૦ ક્ષેત્ર કહ્યાં છે. તે ૧૦ ક્ષેત્રોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ભરત, (૨) એરવત (૩) હૈમવત, (૪) હૈરણ્યવત, (૫) હરિવર્ષ, (૬) રમ્યકવર્ષ, (૭) પૂર્વવિદેહ (૮) અપરવિદેહ, દેવકુરુ અને (૧૦) ઉત્તરકુરુ ॥ સૂત્ર ૨૪ ॥

ટીકા—‘ માણુસુત્તરે ણં ’ ઇત્યાદિ—

માણુસુત્તરઃ=અર્ધતૃતીયદ્વીપમર્યાદાકારકઃ ચક્રપાલપર્વતો મૂળે=મૂલ
ભાગે દશ દ્વાવિંશતિ યોજનશતાનિ=દ્વાવિંશત્યધિકાનિ એકસહસ્રયોજનાનિ વિષ્ક-
મ્મેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥ સૂ. ૨૫ ॥

મૂળ—સઠ્ઠેવિ ણં અંજળગપઠ્ઠવયા દસ જોયણસયાઈં ઉઠ્ઠે
હેણં મૂળે દસ જોયણસહસ્તાઈં વિઠ્ઠલંમેણં, ઉઠ્ઠરિં દસ જોયણ-
સયાઈં વિઠ્ઠલંમેણં પળળત્તા । સઠ્ઠે વિ ણં દહિમુહપઠ્ઠવયા દસ
જોયણસયાઈં ઉઠ્ઠેહેણં સઠ્ઠતથસમા પલ્લગસંઠાણસંઠિયા દસ
જોયણસહસ્તાઈં વિઠ્ઠલંમેણં પળળત્તા । સઠ્ઠે વિ ણં રઙ્કરપઠ્ઠવયા
દસ જોયણસયાઈં ઉઠ્ઠં ઉઠ્ઠચત્તેણં, દસ ગાઠયસયાઈં ઉઠ્ઠેહેણં,
સઠ્ઠતથ સમા જલ્લરીસંઠાણસંઠિયા દસજોયણસહસ્તાઈં વિઠ્ઠલં-
મેણં પળળત્તા ॥ સૂ. ૨૬ ॥

છોયા—સર્વેઽપિ ધ્વજનકપર્વતા દશ યોજનશતાનિ ઉદ્ધેધેન, મૂળે દશ
યોજનસહસ્રાણિ વિષ્કમ્મેણ, ઉપરિ દશયોજનશતાનિ વિષ્કમ્મેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ।
સર્વેઽપિ ધ્વજનકપર્વતા દશયોજનશતાનિ ઉદ્ધેધેન સર્વત્ર સમાઃ પલ્લક-
સંસ્થાનસંસ્થિતા દશયોજનસહસ્રાણિ વિષ્કમ્મેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । સર્વેઽપિ ધ્વજનક-
પર્વતા દશયોજન શતાનિ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્તેન, દશગઘ્યુતશતાનિ ઉદ્ધેધેન, સર્વત્ર
સમા જલ્લરી સંસ્થાનસંસ્થિતા દશયોજનસહસ્રાણિ વિષ્કમ્મેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥સૂ. ૨૬॥

ટીકા—‘ સઠ્ઠે વિ ણં ’ ઇત્યાદિ—

અજ્ઞાનકપર્વતા—નન્દીશ્વરદ્વીપસ્ય પૂર્વદક્ષિણપશ્ચિમોત્તરરૂપેષુ ચતુર્ણુ વિશ્વ
નકા કહા ગયા હૈ ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

“ સઠ્ઠે વિ ણં અંજળગપઠ્ઠવયા ” ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—નન્દીશ્વર દ્વીપકી પૂર્વ પશ્ચિમ ઉત્તર ઓર દક્ષિણ રૂપ ચારોં દિશા-

“ માણુસુત્તરેણં પઠ્ઠવ મૂળે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૨૫)

માણુસુત્તર પર્વતના મૂળભાગનો વિસ્તાર એક હજાર બાવીશ યોજનનો

હશે છે. ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

સઠ્ઠે વિ ણં અંજળગપઠ્ઠવયા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૨૬)

ચત્વારો શ્યામવર્ણા પર્વતાઃ । તેષાં મધ્યે एकैकस्य पर्वतस्य चतुर्दिक्षु चतस्रश्च-
तस्रः पुष्करिण्यः सन्ति, तथाहि-पूर्वदिक् स्थितस्याञ्जनपर्वतस्य चतुर्दिक्षु नन्दो-
त्तरा नन्दाऽऽनन्दा नन्दिवर्धनाभिधाश्चतस्रः पुष्करिण्यः ४, दक्षिणदिक्स्थितस्या-
ञ्जनपर्वतस्य चतुर्दिक्षु भद्रा विशाला कुमुदा-पुण्डरिकिणीनामन्यश्चतस्रः पुष्करिण्यः
८ । पश्चिमदिक् स्थितस्याञ्जनपर्वतस्य चतुर्दिक्षु नन्दिपेणा-अमोघा-गोस्तूपा-
सुदर्शनाभिधाश्चतस्रः पुष्करिण्यः १२ । उत्तरदिक्स्थितस्याञ्जनपर्वतस्य चतुर्दिक्षु
विजया-वैजयन्ती-जयन्तपराजिताभिधाश्चतस्रः पुष्करिण्यः १६ सन्ति । आसु
षोडशसु पुष्करिणीषु प्रत्येकस्यां पुष्करिणामेवैको दधिमुखपर्वत इति षोडश-
ओंमें चार શ્યામવર્ણકે પર્વત કહે ગયે હૈં उनके मध्यमें एक एक पर्व-
तकी चारों दिशाओंमें चार २ पुष्करिणियां (गोल बावडियां) हैं-जैसे-
पूर्व दिशामें स्थित जो अंजन पर्वत है, उसकी चार दिशाओंमें नन्दो-
त्तरा १, नन्दा २, आनन्दा ३, और नन्दिवर्धना इस नौवकी चार पुष्क-
रिणियां हैं । दक्षिण दिशामें स्थित जो अंजनपर्वत है उसकी चार
दिशाओंमें भद्रा १, विशाला २, कुमुदा ३, और पुण्डरिकिणी ४ ये
चार पुष्करिणियां हैं । पश्चिम दिशामें स्थित जो अंजन पर्वत है, उसकी
चार दिशाओंमें नन्दिपेग १, अमोघा २, गोस्तूपा ३, एवं सुदर्शना
४, ये चार पुष्करिणियां हैं । उत्तर दिशामें स्थित जो अंजन पर्वत है
उसकी चार दिशाओंमें विजया, वैजयन्ती, जयन्ती और अपराजिता
ये चार पुष्करिणियां हैं । इन १६ पुष्करिणियोंमेंसे प्रत्येक पुष्करिणीमें
एक एक दधिमुख पर्वत हैं, इस तरहसे १६ दधिमुख पर्वत हैं । नन्दी-

નન્દીશ્વર પર્વતની પૂર્વ, પશ્ચિમ, ઉત્તર અને દક્ષિણરૂપ ચારે દિશાઓમાં
ચાર શ્યામવર્ણના પર્વતની ચારે દિશાઓમાં ચાર ચાર અંજન પર્વતો કહેલા છે
તે તે દરેક શ્યામવર્ણના પર્વતની ચારે દિશાઓમાં ચાર ચાર પુષ્કરિણીઓ
(ગોળાકારની વાવો) છે. પૂર્વ દિશામાં જે અંજનપર્વત છે તેની ચારે દિશાઓમાં
ચાર પુષ્કરિણીઓ છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) નન્દોત્તરા, (૨) નન્દા,
(૩) આનન્દા અને (૪) નન્દિવર્ધના. દક્ષિણ દિશામાં જે અંજનપર્વત છે તેની
ચારે દિશાઓમાં ભદ્રા, વિશાલા, કુમુદા અને પુન્ડરિકિણી નામની ચાર પુષ્કરિ-
ણીઓ છે. પશ્ચિમ દિશામાં જે અંજનપર્વત છે તેની ચારે દિશાઓમાં નન્દિ-
પેણા, અમોઘા, ગોસ્તૂપા અને સુદર્શના નામની ચાર પુષ્કરિણીઓ છે. ઉત્તર
દિશામાં જે અંજન પર્વત છે તેની ચારે દિશાઓમાં વિજયા, વૈજયન્તી, જયન્તી
અને અપરાજિતા નામની ચાર પુષ્કરિણીઓ છે. આ રીતે ૧૬ પુષ્કરિણીઓ

સંખ્યકાઃ દધિમુખપર્વતાઃ । રતિકરપર્વતાઃ=નન્દીશ્વરદ્વીપે વિદિગ્વ્યવસ્થિતાશ્વતુઃ
સ્થાનકપ્રોક્તાશ્વત્વારઃ પર્વતાઃ । इति ॥ ૦ ૨૬ ॥

મૂલમ્—રુચકવરે પાં પઠ્વણ દસ જોયણસયાઈં ડઢેહેળં,
મૂલે દસ જોયણસહસ્તાઈં વિષ્ણુખંભેળં, ઉવરિં દસ જોયણસયાઈં
વિષ્ણુખંભેળં પપણત્તે । एवं कुंडलवरे वि ॥ सू० ૨૭ ॥

છાયા--રુચકવરઃ સ્વલુ પર્વતો દશ યોજનશતાનિ ઉદ્દેધેન, મૂલે દશ યોજન-
સહસ્રાણિ વિષ્ણુખંભેળ, ઉપરિ દશ યોજનશતાનિ વિષ્ણુખંભેળ પ્રજ્ઞપ્તઃ । एवं कुण्डल-
वरोऽपि ॥ सू० ૨૭ ॥

શ્વર દ્વીપમેં વિદિશાઓમેં ચાર સ્થાનમેં કહે ગયે ચાર જો પર્વત હૈં વે
રતિકર પર્વત હૈં । इन समस्त अञ्जनक पर्वनोंका जमीनके भीतर १
हजार योजन प्रमाण भाग हैं मूलमें इनका विष्कम्भ १० हजार योज-
नका है । अब दधिमुख पर्वत उद्देश (गहराई)की अपेक्षा १ हजार
योजन प्रमाण हैं । ये सब सर्वत्र सम हैं । इनका आकार पल्यकके
आकार जैसा है, इन सबका विस्तार १० हजार योजनका है, प्रत्येक रति-
कर पर्वत १० दस दस हजार योजनके ऊंचे कहे गये हैं । उसका उद्देश एक
हजार गव्यून (दो हजार कोश)का है, ये सर्वत्र सम हैं, इनका आकार
झालरके आकार जैसा है, इनका विष्कम्भ दश हजार योजनका है २६

છે. તે પ્રત્યેક પુન્કરિણીમાં એક એક દધિમુખ પર્વત છે. આ રીતે કુલ ૧૬
દધિમુખ પર્વતો છે. નન્દીશ્વર પર્વતની વિદિશાઓમાં (ઇશાન, અગ્નિ આદિ
ચાર ખૂણે) એક એક રતિકર પર્વત છે. આ રીતે ચારે વિદિશામાં કુલ ચાર-
રતિકર પર્વતો આવેલા છે.

ઉપર્યુક્ત ચારે અંજનક પર્વતોનો ઉદ્દેધ (જમીનની અંદર રહેલો ભાગ)
એક હજાર યોજનપ્રમાણ છે મૂળમાં (તળેટીમાં) તેમનો વિષ્કંભ (વિસ્તાર)
દસ હજાર યોજનનો છે અને ટેચ પરનો તેમનો વિસ્તાર એક હજાર યોજનનો
છે. ઉપર્યુક્ત ૧૬ દધિમુખ પર્વતોમાંના પ્રત્યેક દધિમુખ પર્વતનો ઉદ્દેગ એક
હજાર યોજનનો છે. અને મૂળથી મુખ સુધીનો તેમનો વિસ્તાર એક સરખો
—દસ દસ હજાર યોજનનો છે. આ કારણે તે પ્રત્યેકના આકાર પદ્યંક (પદાંગ)
ના જેવો છે. પ્રત્યેક રતિકર પર્વત દસ હજાર યોજન ઉંચાઈવાળો છે—
પ્રત્યેક રતિકર પર્વતનો ઉદ્દેધ એક હજાર ગવ્યૂન (બે હજાર કોસ) પ્રમાણ છે. તે
સર્વત્ર સમપ્રમાણ છે—એટલે કે મૂળભાગથી ટેચ ભાગ પર્યન્તનો તેમનો વિસ્તાર
૧૦-૧૦ હજાર યોજનનો છે. તેમનો આકાર ઝાલરના જેવો છે. ॥ सूत्र २६ ॥

ટીકા—‘ રુચગવરે ણં ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નગરમ્ રુચકવરઃ=રુચકનામા ત્રયોદશ દ્વીપવર્તી ચક્રવાલ-
પર્વતઃ । કુણ્ડલવરવક્તવ્યતાઽપિ રુચકવરવક્તવ્યતાવદ્ બોધ્યા । કુણ્ડલવરઃ=
एकादशद्वीपवर्ती कण्डलनामा चक्रवालपर्वत इति ॥ सू० २७ ॥

अनन्तरं गणितानुयोग उक्तः । सम्प्रति द्रव्यानुयोगस्वरूपं समेदमाह—

મૂલમ્—દસવિહે દવિયાણુઓમે પળગત્તે, તં જહા—દવિયા-
ણુઓમે ૧, માડયાણુઓમે ૨, ઇગટ્ટિયાણુઓમે ૩, કરણાણુ-
ઓમે ૪, અપિયાણપિય ૫, માવિયામાવિય ૬, બાહિરાબાહિરે
૭, સાસયાસાસય ૮, તહ ણાણે ૯, અતહણાણે ૧૦॥ સૂ. ૨૮ ॥

“ રુચગવરેણં પઞ્ચ દસજોયણસયાઈ ” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

ટીકાર્થ—રુચકવર પર્વત ઉદ્ધેધ (ગહરાઈ)ની અપેક્ષા એક હજાર યોજનકા
હૈ, મૂલમેં હસકા વિષ્કમ્ભ ૧૦ હજાર યોજનકા હૈ, તથા ઊપરમેં હસકા
વિષ્કમ્ભ ૧ હજાર યોજનકા હૈ, હસી તરહકા વર્ણન કુણ્ડલવર દ્વીપકા
મી જાનના ચાહિયે ।

यह रुचकवर पर्वत रुचक नामका जो तेरहवां द्वीप है, उसमें रहा
हुआ है यह गोल है—कीटके आकार जैसा है कुण्डलवर पर्वतकी वक्त-
व्यता भी रुचकवर पर्वतकी वक्तव्यताकी जैसी जाननी चाहिये यह
कुण्डलवर पर्वत ११ वां जो द्वीप है, उसमें रहा हुआ है और यह भी
प्राकारके जैसा गोल है इसलिये रुचकवर और कुण्डलवर ये दोनों
पर्वत चक्रवाल पर्वत कहे गये हैं ॥ सूत्र २७ ॥

“ રુચગવરેણં પઞ્ચ દસજોયણસયાઈ ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૨૭)

ટીકાર્થ—રુચકવર પર્વતનો ઉદ્ધેધ (જમીનની અંદરનો અદૃશ્ય ભાગ) એક હજાર
યોજનનો છે. મૂળભાગમાં તેનો વિષ્કભ દસ હજાર યોજનનો અને ઉપરના
ભાગમાં એક હજાર યોજનનો છે. એવું જ વર્ણન કુંડલવર પર્વતના
વિષયમાં પણ સમજવું

રુચક નામનો જે તેરમો દ્વીપ છે તેમાં રુચકવર પર્વત આવેલો છે તે
ગોળ છે અને કોટના જેવા આકારનો છે કુંડલવર પર્વતનું વર્ણન પણ રુચકવર
જેવું જ સમજવું આ કુંડલવર પર્વત અગિયારમો જે દ્વીપ છે તેમાં આવેલો છે.
તેનો આકાર પણ પ્રાકાર—(કોટ)ના જેવો ગોળ છે. આ બન્ને પર્વતો (રુચકવર
અને કુંડલવર પર્વતો) ગોળાકારના હોવાથી તેમને ચક્રવાલ પર્વતો કહ્યા છે ॥ સૂ. ૨૭ ॥

છાયા—દસવિધો દ્રવ્યાનુયોગઃ પ્રજ્ઞતઃ તદ્વથા-દ્રવ્યાનુયોગઃ ૧, માતૃકાનુ-
યોગઃ ૨, એકાર્થિકાનુયોગઃ ૩, કરણાનુયોગઃ ૪, અર્પિતાનર્પિત ૫, ભાવિતા-
ભાવિત ૬, વાહ્યાવાહ્ય ૭, શાશ્વતાશાશ્વત ૮, તથાજ્ઞાન ૯, અતથાજ્ઞાન ૧૦ ॥ સૂ. ૨૮ ॥

ટીકા—‘દસવિધે’ इत्यादि—

અનુયુજ્યતે=અનુરૂપતા અનુકૂળતા યા ભગવદુક્તાર્થેન સહ સંવધ્યતે इति-
અનુયોગઃ=ભગવદ્વાપિતાર્થતો ન્યૂનાધિકવિપરીતભાવવૈલક્ષણપરિજિતો ગણધારક-
ત્વકપ્રતિપાદનલક્ષણો વ્યાપાર इति । અનુયોગો વ્યાખ્યાનમિતિ ચૈકાર્થકૌ ।

હસ પ્રકારસે ગણિતાનુયોગકા કથન કર અથ સૂત્રકાર સમેદ
દ્રવ્યાનુયોગકા કથન કરતે હૈ—

“દસવિધે દ્વિયાણુભોગે પળગત્તે” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૨૮ ॥

ટીકાર્થ—દ્રવ્યાનુયોગ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે-દ્રવ્યાનુયોગ ૧, માતૃ-
કાનુયોગ ૨, એકાર્થિકાનુયોગ ૩, કરણાનુયોગ ૪, અર્પિતાનર્પિત ૫,
ભાવિતાભાવિત ૬, વાહ્યાવાહ્ય ૭, શાશ્વતાશાશ્વત ૮ તથાજ્ઞાન ૯
ઔર અતથાજ્ઞાન ૧૦,

ગગનરો દ્વારા ક્રિયા જો પ્રતિપાદન રૂપ વ્યાપાર ભગવદ્વારા પ્રતિ-
પાદિત અર્થસે ન્યૂનતાસે અધિકતાસે એવં વિપરીત ભાવસે રહિત હોતા
હૈ, વહી અનુયોગ હૈ, નાત્પર્ય હસકા યહ હૈ, કિ ભગવાનને ત્રિસ અર્થકા
પ્રતિપાદન ત્રિયા હૈ, ડનીસે મેલ સ્થાનેવાલા જો ગણધરોંકા કથન હૈ
યહી અનુયોગ હૈ, અનુયોગ એવં વ્યાખ્યાન યે દોનોં શબ્દ એક અર્થવાલે

આ પ્રકારે ગણિતાનુયોગનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર સભેઃ દ્રવ્યાનુયોગનું
કથન કરે છે—“દસવિધે દ્વિયાણુભોગે પળગત્તે” इत्यादि—(સૂ. ૨૮)

ટીકાર્થ—દ્રવ્યાનુયોગ હસ પ્રકારનો કહ્યો છે—(૧) દ્રવ્યાનુયોગ, (૨) માતૃકાનુયોગ
(૩) એકાર્થિકાનુયોગ, (૪) કરણાનુયોગ, (૫) અર્પિતાનર્પિત, (૬) ભાવિતાભાવિત,
(૭) વાહ્યાવાહ્ય, (૮) શાશ્વતાશાશ્વત, (૯) તથાજ્ઞાન અને (૧૦) અતથાજ્ઞાન.

ગણધરો દ્વારા કરાયેલા પ્રતિપાદનરૂપ વ્યાપારમાં તીર્થ કર ભગવાનો દ્વારા
પ્રતિપાદિત અર્થની અપેક્ષાએ ન્યૂનતા પણ હોતી નથી, અધિકતા પણ હોતી
નથી અને વિપરીત ભાવનો પણ સદ્ભાવ હોતો નથી. એટલે કે ભગવાને જે
અર્થનું પ્રતિપાદન કર્યું હોય છે તેની સાથે સુસંગત અને સુમેળયુક્ત જ ગણ-
ધરોનું કથન હોય છે. તે પ્રકારના ત્રિનેદ્ર ભગવાનોના કથન સાથેના સુમેળ
યુક્ત એવા ગણધરોના કથનનું નામ અનુયોગ છે અનુયોગ અને વ્યાખ્યાન આ

અનુયોગશબ્દસ્ય વિસ્તરતો વ્યાખ્યા ઉપાસકદશાઙ્ગસ્ય મત્કૃતાયામગાર્ધર્મ-
સંજીવનીટીકાયાં વિલોકનીયા । અયં ચાનુયોગઃ-ચરણકરણાનુયોગઃ=ધર્મકથા-
નુયોગઃ-ગણિતાનુયોગઃ-દ્રવ્યાનુયોગભેદાચતુર્વિધાઃ । તત્ર-દ્રવ્યાનુયોગઃ-દ્રવ્યસ્ય=
જીવાદેરનુયોગો=વિચારઃ । સ ચ દ્રવ્યાનુયોગ માતૃકાનુયોગાદિ ભેદેન દશત્રિધઃ ।
તત્ર-દ્રવ્યાનુયોગઃ=જીવાદેર્દ્રવ્યત્વવિચારણા, યથા-દ્રવતિ=ગચ્છતિ-પ્રાપ્નોતિ
તાંસ્તાન્ પર્યાયાનિતિ દ્રવ્યમ્, દ્રૂયતે=ગમ્યતે-પ્રાપ્યતે તૈસ્તૈઃ પર્યાયૈરિતિ વા
દ્રવ્યમ્=ગુણપર્યાયવાન્ પદાર્થઃ । એવમ્ભૂતશ્ચ જીવોઽસ્તિ, યતસ્તસ્મિન્ સહભાવિનો
જ્ઞાનાદયો ગુણાઃ સન્તિ, તદભાવે તુ જીવત્વમેવ ન સ્યાત્ । પર્યાયા અપિ તસ્મિન્

હૈ । અનુયોગ શબ્દની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા ઉપાસકદશાઙ્ગની જો અગાર
ધર્મ સંજીવની ટીકા હૈ, ઉસમૈં કી ગઈ હૈ-અતઃ જિજ્ઞાસુઓં વહાંસે
હસ વિષયકી વ્યાખ્યા દેખ લેની ચાહિયે, યહ અનુયોગ ચરણકરણા-
નુયોગ ધર્મકથાનુયોગ, ગણિતાનુયોગ ઓર દ્રવ્યાનુયોગકે ભેદસે ચાર
પ્રકારકા હૈ, જીવાદિ દ્રવ્યકા જો વિચાર હૈ, વહ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ, યહ
દ્રવ્યાનુયોગ માતૃકાનુયોગ આદિ કે ભેદસે ૧૦ પ્રકારકા હૈ, જીવાદિમૈં
જો દ્રવ્યત્વકા વિચાર હૈ, વહ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ, જૈસે-જો ડન ડન પર્યા-
યોંકો પ્રાપ્ત કરતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ, અથવા ડન ૨ પર્યાયોં દ્વારા જો પ્રાપ્ત
કિયા જાતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ ।

એસા વહ દ્રવ્ય ગુણ ઓર પર્યાયવાલા વહ પદાર્થ જીવ હૈ, અતઃ
વહ દ્રવ્યરૂપ હૈ, ક્યોંકિ ઉસમૈં સહભાવી જો જ્ઞાનાદિક ગુણ હૈં વે હૈં
અન્યથા ડનકે અભાવમૈં ઉસમૈં જીવત્વહી નહીં બન સકતા હૈ, હસી

બન્ને શબ્દો એક અર્થવાળા છે. અનુયોગ શબ્દની વિસ્તૃત વ્યાખ્યા બાણવાને
ઉત્સુક પાઠકોએ ઉપાસકદશાઙ્ગની અગારધર્મસંજીવની ટીકા વાંચી જવી.

આ અનુયોગના નીચે પ્રમાણે ચાર પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) ચરણકરણાનુયોગ,
(૨) ધર્મકથાનુયોગ, (૩) ગણિતાનુયોગ અને (૪) દ્રવ્યાનુયોગ.

જીવાદિ દ્રવ્યવિષયક જે વિચાર કરવામાં આવે છે તેનું નામ દ્રવ્યાનુયોગ
છે તે દ્રવ્યાનુયોગના દ્રવ્યાનુયોગ, માતૃકાનુયોગ આદિ ઉપર્યુક્ત ૧૦ પ્રકારો કહ્યા છે.

દ્રવ્યાનુયોગ-જીવાદિમાં જે દ્રવ્યત્વનો વિચાર કરવામાં આવે છે તેને દ્રવ્યા-
નુયોગ કહે છે. જેમ કે-આત્મત્વ આદિ પર્યાયોને જે પ્રાપ્ત કરે છે, તેનું
નામ દ્રવ્ય છે, અથવા તે તે પર્યાયો દ્વારા જે પ્રાપ્ત કરાય છે તેનું નામ
દ્રવ્ય છે, અથવા તે તે પર્યાયો દ્વારા જે પ્રાપ્ત કરાય છે તે દ્રવ્ય છે. એવું તે
દ્રવ્ય ગુણ અને પર્યાયવાળા પદાર્થરૂપ હોય છે એવો ગુણપર્યાયવાળો તે પદાર્થ
જીવ છે. તેથી તે દ્રવ્યરૂપ છે, કારણ કે તેમાં સહભાવી જ્ઞાનાદિક ગુણોનો સહ-
ભાવ હોય છે. જે જ્ઞાનાદિક ગુણોનો તે પ્રાપ્ત હોય તો તેમાં જીવત્વ જ

માનુષ્યવાલત્વાદયઃ સન્ત્યેય, અતો ગુણપર્યાયવત્ત્વાજ્જીવો દ્રવ્યમિત્યાદિ દ્રવ્યાનુયોગઃ ૧। તથા-માતૃકાનુયોગઃ-માતૃકા=પ્રવચનપુરુષસ્ય ઉત્પાદવ્યયગ્રૌવ્યરૂપા પદત્રયી, તસ્યા અનુયોગઃ । સ યથા-જીવદ્રવ્યમ્ ઉત્પાદવત્-વાલત્વાદિપર્યાયાણાં પ્રતિક્ષણમુત્પાદાત્, અનુપાદે ચ વૃદ્ધાદ્યસ્થાનામપ્રાપ્તિપ્રસજ્ઞાત્ । તથા-જીવદ્રવ્યવ્યયવત્, પ્રતિક્ષણં ચાલ્યાદ્યવસ્થાનાં વ્યયદર્શનાત્, અવ્યયત્વે ચ તાસાં નિત્યત્વપ્રાપ્તેઃ । તથા-જીવદ્રવ્યં દ્રવ્યત્વેન ધ્રૌવ્યવત્ । યદિ તથા ન સ્યાત્તદા દ્રવ્યં સર્વથા

તરહ ઉસમેં ક્રમભાવી જો પર્યાયેહેં વે મીહેં, જીવમેં માનુષત્વ, ચાલત્વ આદિ પર્યાયેં હોતી હુઈ પ્રતીતિ હી હોતી હેં । ઇસ પ્રકાર ગુણ એવં પર્યાયવાલા હોનેસે જીવ દ્રવ્યરૂપ હૈ, ઇત્યાદિ રૂપ જો વિચાર હૈ, વહ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ, પ્રવચન પુરુષકી ઉત્પાદ વ્યય એવં ધ્રૌવ્યરૂપ જો પદત્રયી હૈ, વહ માતૃકા હૈ, ઇસ માતૃકાકા જો અનુયોગ હૈ, વહ માતૃકાનુયોગ હૈ જૈસે-એસા વિચાર કરના-કિ જીવ દ્રવ્ય ઉત્પાદવાલા હૈ, કયોંકિ ચાલત્વ આદિ પર્યાયોંકા પ્રતિક્ષણ ઉસમેં ઉત્પાદ હોના હૈ, યદિ એસા નહી હો તો વૃદ્ધ આદિ અવસ્થાઓંકી ઉસમેં પ્રાપ્તિ નહી હોનેકા પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોના હૈ, ઇસી પ્રકારસે જીવ દ્રવ્ય વ્યયવાલા મી હૈ, કયોંકિ ઉસમેં પ્રતિક્ષણ ચાલત્વ આદિ અવસ્થાઓંકા વ્યય હોતા હુમા દેખા જાતા હૈ, યદિ ઇન પર્યાયોંકા ઉસમેં વ્યય ન હો તો ઇનકા ઉસમેં નિત્યરૂપસે સદ્ભાવ રહનેકા પ્રસજ્ઞ પ્રાપ્ત હોના હૈ, ઇસી તરહસે જીવ દ્રવ્ય ધ્રૌવ્ય સ્વભાવવાલા મી હૈ, યદિ વહ ઇસ સ્વભાવવાલા ન હો તો વહ ઉત્પાદવાલાહી હોનેસે

સંભવી શકે નહીં. એ જ પ્રમાણે કમભાવી પર્યાયોનો પણ તેમાં સદ્ભાવ હોય છે. જીવમાં માનુષત્વ, બાલત્વ આદિ પર્યાયોના સદ્ભાવની પ્રતીતિ તો અવશ્ય થતાં જ હોય છે. આ રીતે ગુણ અને પર્યાયવાળો હોવાને લીધે જીવ દ્રવ્યરૂપ છે, ઇત્યાદિ રૂપ જે વિચારણા છે તેનું નામ જ દ્રવ્યાનુયોગ છે.

મ તૃકાનુયોગ-પ્રાચ્યનપુરુષની ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્યરૂપ જે પદત્રયી છે તેનું નામ માતૃકા છે આ મ તૃકાનો જે અનુયોગ (વ્યાખ્યાન) છે, તેનું નામ જ માતૃકાનુયોગ છે. જેમ કે-એવી વિચારણા કરવી કે જીવદ્રવ્ય ઉત્પાદવાળું છે, કારણ કે બાલત્વ આદિ પર્યાયોનો પ્રતિક્ષણ તેમાં ઉત્પાદ થતો રહે છે એ એવું ન હોત તો વૃદ્ધત્વ આદિ અવસ્થાઓની તેમાં પ્રાપ્તિ ન થવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાત. એજ પ્રમાણે જીવદ્રવ્ય વ્યયવાળું પણ છે, કારણ કે તેમાં પ્રતિક્ષણ બલ્યાદિ અવસ્થાઓનો વ્યય થતો રહે છે. જો આ પર્યાયોનો તેમાં વ્યય થતો ન હોત તો તેમાં તેનો નિત્યરૂપે સદ્ભાવ રહેવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાત. એજ પ્રમાણે જીવદ્રવ્ય ધ્રૌવ્ય સ્વભાવ

ઉત્પાદવ્યયવદેવ સ્યાત્ । તતશ્ચ-અકૃતાભ્યાગમકૃતવિપ્રણાશપ્રાપ્ત્યા પૂર્વદૃષ્ટાનાં
ભાવાનામનુસ્મરણાભિલાષાદ્ભાવપ્રસક્તેન ચ એહિકપારલૌકિકાનાં સર્વેષાં કૃત્યાનામુ-
ચ્છેદઃ પ્રસજ્જેત, અતો દ્રવ્યતયાઽસ્ય ધ્રૌવ્યમભ્યુપગન્તવ્યમ્ । एवं च-यतो जीव
उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तः, अतो द्रव्यमित्यादि रूपो मातृकानुयोग इति । २ । तथा-
एकार्थिकानुयोगः-एकः=समानः अर्थो=जीवादिर्येषां ते-एकार्थिकाः शब्दाः,
तैरनुयोगः । स यथा-जीवद्रव्यमुद्दिश्य-जीवः प्राणी भूतं सत्त्व इत्यादि । अथवा-
एकार्थिकानां शब्दानामनुयोगः, यथा-जीवनात्=प्राणधारणाज्जीवः, प्राणानाम्=

અકૃતાભ્યાગમ કૃત વિપ્રણાશ इन दोषोंकी प्राप्तिके बशवाला हो जावेगा,
और इससे उसमें पूर्वदृष्ट भावोंको स्मरण करनेकी अभिलाषा आदिके
होनेका अभाव प्रसक्त होगा इससे ऐहिक एवं पारलौकिक जितने भी
कृत्य हैं उन सबके उच्छेद होनेका भी प्रसङ्ग प्राप्त होगा, इसलिये इनका
उच्छेद प्राप्त न हो, जीवको द्रव्य रूपसे ध्रौव्यरूप मानना चाहिये इस
तरह जिस कारणसे जीव व्यय एवं ध्रौव्यसे युक्त है, इसी कारणसे
वह द्रव्यरूप है, इत्यादि रूप जो विचार है, वह मातृकानुयोग है २ ।

एकार्थिकानुयोग-जिन शब्दोंका अर्थ समान है वे एकार्थिक शब्द
हैं, इन शब्दोंको लेकर जो अनुयोग है, वह एकार्थिकानुयोग है, जैसे
जीव द्रव्यको लेकर-जीव, प्राणी, भूत, सत्त्व ये शब्द एक जीवके ही
वाचक हैं, ऐसा विचार एकार्थिकानुयोग हैं, अथवा-एकार्थिक शब्दोंका

વાળું પણ છે જો તે આ સ્વભાવવાળું ન હોત તો ઉત્પાદ સ્વભાવ વાળું જ હોવાને
કારણે તે 'અકૃતાભ્યાગમ અને કૃત વિપ્રણાશ' આ દોષોની પ્રાપ્તિના પ્રસંગ વાળું
થઈ જાત, અને તે પ્રકારની પરિસ્થિતિમાં તેમાં પૂર્વદૃષ્ટ ભાવોનું સ્મરણ કરવાની
અભિલાષા આદિનો અભાવ હોવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાત તે કારણે જેટલાં ઐહિક
અને પારલૌકિક કૃત્યો છે તે બધાનો ઉચ્છેદ થવાનો પણ પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાત. આ
પ્રકારે તેમના ઉચ્છેદનો પ્રસંગ ત્યારે જ પ્રાપ્ત નહીં થાય કે જ્યારે જીવને
દ્રવ્યરૂપે ધ્રૌવ્યરૂપ માનવામાં આવશે તેથી જ જીવદ્રવ્યને ધ્રૌવ્યસ્વભાવવાળું પણ
માનવું જ પડશે. આ રીતે જે કારણે જીવ વ્યય અને ધ્રૌવ્ય ગુણથી યુક્ત છે
એજ કારણે તે દ્રવ્યરૂપ છે. આ પ્રકારની જે વિચારણા થાય છે તેનું
નમ માતૃકાનુયોગ છે.

એકાર્થિકાનુયોગ-જે શબ્દોનો અર્થ સમાન હોય છે, તે શબ્દોને એકાર્થિક
શબ્દો કહે છે. આ શબ્દોને અનુલક્ષીને જે અનુયોગ (વ્યાખ્યાન) થાય છે.
તેને એકાર્થિકાનુયોગ કહે છે. જેમ કે-જીવ, પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ, આ ચારે
શબ્દો એક જીવના જ વાચક છે, આ પ્રકારની વિચારણાનું નામ એકાર્થિકાનુયોગ
છે. અથવા એકાર્થિક શબ્દોનો જે અનુયોગ છે તેનું નામ એકાર્થિકાનુયોગ છે-

ઉચ્છ્વાસાદીનાં વિદ્યમાનત્વાત્ પ્રાણી, સદા મરનાદ્ ભૂતમ્, સદા સત્ત્વાત્ સત્ત્વઃ, इति ॥ ૩ ॥ તથા-કરણાનુયોગઃ-ક્રિયતે એમિરિતિ કરણાનિ-ક્રિયાસિદ્ધૌ સાધ-કતમાનિ, તેષામનુયોગઃ, યથાકર્તુર્જીવદ્રવ્યસ્ય મિત્રમિત્રક્રિયામુ સાધકતમાનિ કાલસ્વભાવનિયતિકર્મપુરુષકારાણિ, તાન્યનુપાદાય જીવો ન કિમપિ કર્તુશ-ક્નોતિ, અતઃ કાલાદીનિ કરણાનિ । અથવા-મૃદ્દ્રવ્યં કુલ્લાલવક્રચીવરદણ્ડા-દીનિ કરણાનિ વિના ઘટરૂપેણ નિષ્પતુમશક્યમ્, અતઃ એતાનિ ઘટદ્રવ્યસ્ય કર-જો અનુયોગ હૈ, વહ એકાર્થિકાનુયોગ હૈ, જૈસ-પ્રાણધારણ કરનેવાલા હોનેસે વહ જીવ હૈ, ઉચ્છ્વાસ આદિ પ્રાણ જીવમેં ક્રિયમાગ હૈં इस कारण वह प्राणी है, यह जीव त्रिकालमें भी बिच्छेदको प्राप्त नहीं होता है, अर्थात् सदा इसका सद्भाव रहता है इस कारण इसे भूत कहा गया है, इसी तरहसे इसकी सत्ता सदा कायम रहती है, इस कारण इसे सत्त्व कहा गया है । ३॥

કરણાનુયોગ-ક્રિયા સિદ્ધિમેં જો સાધકતમ હોતે હૈં, તે કારણ હૈં । इन कारणोंका जो अनुयोग है, वह करणानुयोग है जैसे-कर्ता रूप जीव द्रव्यको भिन्न २ क्रियाओंमें साधकतम काल, स्वभाव नियति कर्म, पुरुषकार ये कारण होते हैं । क्योंकि इनके उपार्दन किये बिना जीव कुछ भी कार्य नहीं कर सकता है । इस कारण जोवको क्रिया सिद्धिमें प्रकृष्ट साधक होनेसे कारण होते हैं । अथवा-मृत्तिका रूप द्रव्य कुलाल (कुंमकार) चक्र (चाक) चीवर, दण्ड आदिरूप कारणोंके विना घटरूप

જેમ કે જીવને માટે વપરાતા ચારે સમાનાર્થી શબ્દોને આ પ્રમાણે એકાર્થિકાનુ-યોગ કરી શકાય-પ્રાણ ધારણ કરનારો હોવાથી તે જીવરૂપ છે, ઉચ્છ્વાસ આદિ પ્રાણ જીવમાં ક્રિયમાણ હોય છે, તે કારણે પ્રાણીરૂપ છે, ત્રણે કાળમાં તેને સદ્ભાવ રહે છે-કદી તેને વિચ્છેદ થતો નથી, તે કારણે તેને ભૂત પણ કહે છે. તેની સત્તા (વિદ્યમાનતા) કાયમ ટકી રહે છે, તે કારણે તેને સત્ત્વ પણ કહે છે.

કરણાનુયોગ-ક્રિયાસિદ્ધિમાં જે સાધકતમ (ઉત્કૃષ્ટ સાધકરૂપ) હોય છે તેમને કરણ કહે છે. તે કરણોને જે અનુયોગ છે તેનું નામ કરણાનુયોગ છે. જેમ કે.... કર્તારૂપ જીવદ્રવ્યને જુદી જુદી ક્રિયાઓમાં કાળ સ્વભાવ, નિયતિ, કર્મ અને પુરુષકારરૂપ કરણો સાધકતમ નીવડે છે, કારણ કે તેમનું ઉપાર્દન કર્યા વિના જીવ કોઈ પણ કાર્ય કરી શકતો નથી. આ કારણે જીવ ક્રિયાસિદ્ધિમાં તેઓ અત્યંત આવશ્યક હોવાથી તેમને કરણરૂપ કહ્યાં છે. અથવા-મૃત્તિકા (માટી)રૂપ દ્રવ્ય

ણાનિ । इत्थं योऽनुयोगः स करणानुयोग इति ४। तथा-अर्पिताऽनर्पितम्-
अर्पितं=विशेषितम्, अनर्पितम्,=अविशेषितम्, उभयोः कर्मधारयः । विशेषि-
ताविशेषितरूपो द्रव्यानुयोगः । तत्र-अर्पितं यथा-जीवद्रव्यं किंविधम् ? संसारि ।
संसार्यपि त्रसरूपम्, त्रसरूपमपि पञ्चेन्द्रियं, तदपि नररूपमित्यादि । अनर्पितं यथा-
जीवद्रव्यमिति । इत्थमेकस्य जीवद्रव्यस्य विशेषिताविशेषितरूपेण यद् व्याख्यानं
तत् अर्पितानर्पितरूपो द्रव्यानुयोगः ॥ ५ ॥ तथा-भाविताभावितम्-भावितं=

पर्याયસે ઉત્પન્ન होनेके लिये सनर्थ नहीं हैं, इसलिये ये घट द्रव्यके
कारण हैं । इस प्रकारसे जो अनुयोग-विचार है, वह करणानुयोग है,
द्रव्यका विशेषिता विशेषित रूपसे जो व्याख्यान है-वह अर्पिताऽ-
नर्पित रूप द्रव्यानुयोग है, अर्पित शब्दका अर्थ विशेषित और
अनर्पित शब्दका अर्थ अविशेषित है जैसे-जीव द्रव्यसे लेकर ऐसा
विचार करना कि जीवद्रव्य कैसा है ? संसारी है-तो कैसा संसारी
त्रस रूप संसारी है या स्थावर रूप संसारी है यदि वह त्रसरूप संसारी
है, दोइन्द्रियादि त्रस संसारी है, या पंचेन्द्रिय रूप त्रस संसारी है ?
यदि वह पंचेन्द्रिय रूप त्रस संसारी है तो क्या वह नररूप पंचेन्द्रिय
संसारी है या और कोई रूप पंचेन्द्रिय संसारी है ? इत्यादि तथा-जीव
द्रव्य ऐसा जो कथन है वह अविशेषित कथन है । ४ ॥

घट (घडा)રૂપ પર્યાયે ઉત્પન્ન થવાને સમર્થ ત્યારે જ બની શકે છે કે જ્યારે
તેને કુંભાર, ચક્ર (ચાકડો), ચીરર, દડ આદિરૂપ કરણોનો યોગ મળે છે. તેથી
તે વસ્તુઓને ઘટરૂપ દ્રવ્યનાં કરણરૂપ ગણી શકાય. આ પ્રકારનો જે અનુયોગ
(વિચારણા) છે તેને કરણાનુયોગ કહે છે.

અર્પિતાનર્પિતરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ-દ્રવ્યનું વિશેષિત અવિશેષિતરૂપે જે વ્યાખ્યાન
છે તેનું નામ અર્પિતાનર્પિતરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ છે. ‘ અર્પિત ’ શબ્દનો અર્થ વિશેષિત
થાય છે અને ‘ અનર્પિત ’ શબ્દનો અર્થ અવિશેષિત થાય છે. જેમ કે—

જીવદ્રવ્યની અપેક્ષાએ એવો વિચાર કરવો કે “ જીવદ્રવ્ય કેવું છે ? સંસારી
છે. જે તે સંસારી હોય તો કયા પ્રકારનું સંસારી છે-શું ત્રસરૂપ સંસારી છે કે
સ્થાવરરૂપ સંસારી છે ? જે તે ત્રસરૂપ સંસારી હોય તો શું દ્વાન્દ્રિયરૂપ છે કે
ત્રીન્દ્રિયરૂપ છે, કે ચતુરિન્દ્રિયરૂપ છે, કે પંચેન્દ્રિ રૂપ ત્રસસંસારી છે ? જે તે
પંચેન્દ્રિયરૂપ ત્રસસંસારી હોય તો શું નરરૂપ પંચેન્દ્રિયસંસારી છે, કે કોઈ અન્ય
પ્રકારનું પંચેન્દ્રિયસંસારી છે ? ” ઇત્યાદિ જે વિચારણા છે તે વિશેષિત કથન
રૂપ છે, તથા ‘ જીવદ્રવ્ય ’ એવું જે કથન છે તે અવિશેષિત કથન છે.

વાસિતં દ્રવ્યાન્તરસંસર્ગતઃ, અભાવિત્=અવાસિતમ્-દ્રવ્યાન્તરાસંસર્ગતઃ । ઉમયોઃ
કર્મધારયઃ । ભાવિતાભાવિતરૂપો દ્રવ્યાનુયોગઃ ! તત્ર-ભાવિતં યથા-કિંચિદ્
જીવદ્રવ્યં ભાવિતમ્ । તત્ પ્રશસ્તભાવિતં ચાપ્રશસ્તભાવિતં ચ । તત્ર પ્રશસ્તભાવિતં
સંયમિભાવિતમ્ । અપ્રશસ્તભાવિતમ્-અસંયમિભાવિતમ્ । દ્વિવિધમપિ તદ્ વમની-
યમવમનીયં ચ । તત્ર વમનીયં-યત્ સંસર્ગજાતં ગુણં દોષં વા અન્યસંસર્ગેણ વમતિ ।
અવમનીયં તુ તદ્વિપરીતમ્ । અભાવિતં યથા-કિંચિદ્જીવદ્રવ્યમ્ અભાવિતમ્ । તત્
અસંસર્ગપાત્રમ્ સંસર્ગપાત્રં વા 'કોરડુ-ઈતિ ભાષાશ્ચિદ્વજ્રમુદ્રતુલ્યં ન વાસ-

ભાવિતાભાવિત-एक द्रव्यका जो भावित अभावित रूपसे व्याख्यान
है, वह भावितभाविन रूप द्रव्यानुयोग है, वह द्रव्यान्तरके संसर्गसे
जो वासित होना है, वह भाविन है, और द्रव्यान्तरके संसर्गसे वासित
नहीं होता है, वह अवासित है, इसका विचार जीवद्रव्यके ऊपर इस
प्रकारसे किया गया है, जैसे-कोई जीवद्रव्य भावित होता है, और
अप्रशस्त भावोंसे भी भावित होता है, संयमी जीव प्रशस्त भावोंसे
भावित होता है, और जो असंयमी जीव होता है, वह अप्रशस्त
भावोंसे भावित होता है, प्रशस्त अप्रशस्त भावित भी वमनीय और
अवमनीयके भेदसे दो प्रकारका होता है, वमनीय वह है जो संसर्गसे प्राप्त
हुए गुण अथवा दोष अन्यके संसर्गसे वमित (निकलजाते) हो जाते हैं
इनसे विपरीत अवमनीय है । जो किसी भी तरहसे वासित नहीं होता है-

ભાવિતાભાવિત-એક દ્રવ્યનું જે ભાવિત અભાવિતરૂપે વ્યાખ્યાન છે, તેનું
નામ ભાવિતાભાવિતરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ છે. અન્ય દ્રવ્યના સંસર્ગથી વાસિત (યુક્ત)
થવું-તેના સંસર્ગની અસર થવી તેનું નામ ભાવિત છે, પરંતુ અન્ય દ્રવ્યના
સંસર્ગથી વાસિત ન થવું તેનું નામ અવાસિત છે જીવદ્રવ્યને અનુલક્ષીને તેનો
વિચાર આ પ્રમાણે કરવામાં આવ્યો છે-કોઈ દ્રવ્ય ભાવિતરૂપ હોય છે. તે પ્રશસ્ત
ભાવોથી પણ ભાવિત (યુક્ત) થાય છે અને અપ્રશસ્ત ભાવોથી પણ ભાવિત થાય છે.
સંયમી જીવ પ્રશસ્ત ભાવોથી ભાવિત થાય છે અને અસંયમી જીવ અપ્રશસ્ત
ભાવોથી ભાવિત થાય છે પ્રશસ્ત અપ્રશસ્તભાવિતા પણ વમનીય અને અવમ-
નીયના ભેદથી બે પ્રકારની હોય છે. વમનીયભાવિતા એવી હોય છે કે જેમાં
સંસર્ગથી પ્રાપ્ત થયેલા ગુણો અથવા દોષોનું અન્યના સંસર્ગથી વમન (પરિ-
યાગ) થઈ જાય છે. તેના કરતાં વિપરીત અવમનીયનું સ્વરૂપ હોય છે.

જે કોઈ પણ પ્રકારે-કોઈના પણ સંસર્ગથી-વાસિત થતું નથી, કોઈના પણ
સંસર્ગની જેના ઉપર બિરુદ્ધ અસર થતી નથી એવાં જીવદ્રવ્યને અભાવિત

યિતું શક્યમ્ । एवं घटादिद्रव्यविषयेऽपि स्वधियाऽऽलोचनीयम् । इत्थमेकस्य-
द्रव्यस्य भाविताभावितरूपेण यद् व्याख्यानं तद् भाविताभावितरूपो द्रव्यानुयोग
इति ॥ ६ ॥ तथा-बाह्याबाह्यम्-बाह्यं च तद्बाह्यंवेति, बाह्याबाह्यरूपो द्रव्यानु-
योगः । तत्र बाह्यं यथा-जीवद्रव्यं चैतन्यधर्मेण आकाशास्तिकायादिभ्यो विलक्षण-
त्वाद् बाह्यम् । अबाह्यं यथा-जीवद्रव्यम् अमूर्तत्वादिना धर्मेण आकाशास्तिकाय-
तुल्यत्वात् अबाह्यम् । अथवा-जीवद्रव्यं चैतन्यधर्मेण जीवास्तिकायतुल्यत्वात् अबा-
ह्यम् । इत्थमेकस्य जीवद्रव्यस्य बाह्याबाह्यरूपो द्रव्यानुयोग इति । अथवा-घटा-
दिद्रव्यं बाह्यं दृष्टिगोचरत्वात्, कर्मचैतन्यादि तु अबाह्यम्-आध्यात्मिकत्वादित्य-
न्योऽपि बाह्याबाह्यरूपो द्रव्यानुयोग इति ॥ ७ ॥ तथा-शाश्वताशाश्वतम्-शाश्वतं

વહ અભાવિત હૈ, યહ કોરડુ સૂંગ (સિદ્ધાને પર 'મી સિદ્ધના નહીં' હૈ)
કે તુલ્ય હોતા હૈ, યહ કિસી મી તરહસે-સંસર્ગ પ્રાપ્ત ગુણાદિસે યા
અસંસર્ગ પ્રાપ્ત ગુણાદિસે વાસિત નહીં ક્રિયા જા સકતા હૈ, હસી તરહકા
વિચાર ઘટાદિ દ્રવ્યકે વિષયમેં મી કર લેના ચાહિયે । ૫

વાહ્યાબાહ્ય-બાહ્ય એવં અબાહ્ય રૂપસે જો દ્રવ્યકા વિચાર હૈ, વહ
વાહ્યાબાહ્ય દ્રવ્યાનુયોગહૈ, જૈસે-જીવદ્રવ્ય ચૈતન્ય ધર્મકો લેકર આકા-
શાસ્તિકાયા આદિકૌસે વિલક્ષણ હોનેકે કારણ બાહ્ય હૈ, તથા અમૂર્તત્વ
સ્વભાવકો લેકર વહ આકાશાસ્તિકાયાસે તુલ્ય હોનેકે કારણ અબાહ્ય
હૈ, અથવા-ઘટાદિ દ્રવ્ય દૃષ્ટિગોચર હોનેસે બાહ્ય હૈ, એવં આધ્યાત્મિક
હોનેસે કર્મચૈતન્ય આદિ અબાહ્ય હૈ, એસા દૂસરા મી વાહ્ય અબાહ્ય-
રૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ ૭ શાશ્વતાશાશ્વત દ્રવ્યાનુયોગ હસ પ્રકારસે હૈ-

કહે છે. તે 'કોરડુ' મગ આદિના જેવું હોય છે. જેમ કોરડું મગને ગમે તેટલો
પલાળવામાં આવે છતાં પણ તે પોચો પડતો નથી એજ પ્રમાણે અભાવિત જીવ-
દ્રવ્યને પણ સંસર્ગપ્રાપ્ત ગુણાદિ વડે વાસિત કરી શકાતું નથી. સંસર્ગ કે અસંસર્ગ-
પ્રાપ્ત ગુણદેવોની તેના ઉપર કોઈ અસર થતી નથી. આ પ્રકારનો વિચાર ઘટાદિ
દ્રવ્યના વિષયમાં પણ કરી લેવો જોઈએ.

બાહ્ય બાહ્ય દ્રવ્યાનુયોગ-બાહ્ય અને અબાહ્યરૂપે જે દ્રવ્યનો વિચાર કરવામાં
આવે છે તેને બાહ્યાબાહ્ય દ્રવ્યાનુયોગ કહે છે જેમ કે-જીવદ્રવ્ય ચૈતન્ય ધર્મની
અપેક્ષાએ આકાશાસ્તિકાયા આદિથી ભિન્ન હોવાને કારણે બાહ્ય છે તથા જીવ
દ્રવ્ય અમૂર્તત્વ સ્વભાવની અપેક્ષાએ આકાશાસ્તિકાયાના જેવું જ હોવાને કારણે
અબાહ્ય છે. અથવા-ઘટાદિ દ્રવ્ય દૃષ્ટિગોચર થતું હોવાને કારણે બાહ્ય છે અને
આધ્યાત્મિક હોવાને કારણે કર્મ, ચૈતન્ય આદિ અબાહ્ય છે, એવો ખીજો પણ
બાહ્ય અબાહ્યરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ છે.

ચ અશાશ્વતં ચેતિ, શાશ્વતાશાશ્વતરૂપો દ્રવ્યાનુયોગ इति । તત્ર-જીવદ્રવ્યમ્ આદ્ય-
 ન્તરહિતત્વાત્ શાશ્વતમ્, તદેવ અન્યાન્યપર્યાયૈઃ પરિગમનાત્ અશાશ્વતમ્ । इत्यમે-
 કસ્ય જીવદ્રવ્યસ્ય શાશ્વતાશાશ્વતરૂપો દ્રવ્યાનુયોગ इति ॥ ૮ ॥ તથા-તથાજ્ઞા-
 નમ્-યથા વસ્તુ તથા જ્ઞાનં यस્ય તત્તથાજ્ઞાનમ્ । યથા-સમ્યગ્દૃષ્ટિજીવદ્રવ્યં તથા
 જ્ઞાનં, તસ્યૈવ અવિનયજ્ઞાનત્વાદિતિ । અથવા-તથા-જ્ઞાનમ્-યથા તદ્વસ્તુ તથૈવ
 જ્ઞાનમ્=અવબોધઃ-પ્રતોતિર્યસ્મિન્નત્ । યથા-ઘટાદિદ્રવ્યં તથાજ્ઞાનં, ઘટાદિતયૈવ
 પ્રતિભાસમાનત્વાદિતિ । અથવા-પરિણામિદ્રવ્યં તથાજ્ઞાનં, પરિણામિતતથૈવ પ્રતિભા-

જૈસે-આદિ અન્ત રહિત હોનેસે જીવ દ્રવ્ય શાશ્વત હૈ, તથા વહી અન્ય
 પર્વાર્થોસે પરિણત રહના હૈ, હસ કારણ અશાશ્વત હૈ, હસ તરહ એક
 જીવ દ્રવ્ય સમ્બન્ધી શાશ્વત અશાશ્વતકે વિચારસે યહ શાશ્વતાશાશ્વત
 રૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હોના હૈ ૮ ।

તથા જ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હસ પ્રકારસે હૈ-જૈસે વસ્તુ હૈ વૈસે હી
 ઉસકા જ્ઞાન જિસ વિચારમેં હોના હૈ વહ તથાજ્ઞાન રૂપ દ્રવ્યાનુયોગ
 હૈ, જૈસે-સમ્યગ્દૃષ્ટિ જીવ હૈ, ઉસી પ્રકારકા ઉસકે વિચારમેં જ્ઞાન
 હોતા હૈ, યહ તથાજ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ । ક્યોંકિ ઉસકા હી જ્ઞાન
 અવિનય હોતા હૈ, અથવા-જૈસી વસ્તુહૈ, ઉસકા વૈસાહી જિસ વિચારમેં
 જ્ઞાન હોતા હૈ વહ તથાજ્ઞાન હૈ, જૈસે-ઘટકા ઘટરૂપસે જો જ્ઞાન હોતા
 હૈ વહ તથાજ્ઞાન હૈ, ક્યોંકિ ઘટજ્ઞાનકા ઘટરૂપસે હી પ્રતિભાસ હોના
 હૈ, અથવા-દ્રવ્ય પરિણામી હૈ એસા જો જ્ઞાન હૈ, વહ તથાજ્ઞાન હૈ, ક્યોંકિ

શાશ્વતાશાશ્વત દ્રવ્યાનુયોગ-આદિ અન્ત રહિત હોવાથી અવદ્રવ્ય શાશ્વત
 છે અને અન્ય પર્યાયરૂપે પરિણત થતું રહેતું હોવાને કારણે એજ અવદ્રવ્ય
 અશાશ્વત છે. આ પ્રકારે એક અવદ્રવ્ય સંબંધી શાશ્વતાશાશ્વત દ્રવ્યાનુયોગ છે.

તથાજ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ આ પ્રકારનો છે-વસ્તુ જેવી હોય એવું જ તેનું
 જ્ઞાન જે વિચારણામાં થાય છે, તે વિચારણાને તથાજ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ કહે
 છે જેમ કે સમ્યગ્દૃષ્ટિ અવને તેના જ્ઞાન વડે અવદ્રવ્ય જેવું હોય છે એવું જ
 દેખાય છે, કારણ કે તેનું જ જ્ઞાન અવિનય હોય છે. તે તેની જ વિચારણા
 વડે અવદ્રવ્યને યથાર્થ રૂપે જાણે છે તે અવદ્રવ્યને યથાર્થ રૂપે જાણે છે તે
 વિચારણા રૂપ તેના જ્ઞાનને તથાજ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ કહે છે. અથવા જેવી વસ્તુ
 હોય એવું જ યથાર્થ તેનું રૂપ જે વિચાર દ્વારા સમજાય છે, તે પ્રકારની
 વિચારણાને તથા જ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ કહે છે. જેમ કે ઘટનું ઘટરૂપે જે જ્ઞાન
 થાય છે તેનું નામ તથાજ્ઞાન છે, કારણ કે ઘટજ્ઞાનનો ઘટરૂપે જ પ્રતિભાસ થાય

સમાનત્વાદિતિ । इत्थं तथा ज्ञानरूपो द्रव्यानुगोच इति । ९ ॥ तथा-अतथाज्ञानम्-न विद्यते यथा वस्तु तथा ज्ञानं यस्य तत्तथा । यथा-मिथ्यादृष्टि जीवद्रव्यम्, तस्य विपरीतज्ञानत्वादिति । अथवा-नास्ति यथा तद्वस्तु तथैव ज्ञानं=प्रतीतिर्यस्मिन्वस्तु-अतथाज्ञानम्, यथा-अलातद्रव्यम् । तद्धि यथा भवति न तथा प्रतीयते इति । अथवा-वक्रव्याप्तभासमानम् एकान्तवाद्यभ्युपगतं वस्तु । तद्धि एकान्तवादिभिरेकान्तेन नित्यमनित्यं वाऽभ्युपगम्यते, प्रतिभाति च परिणामितया तदिति । इत्थमयथाज्ञानरूपो द्रव्यानुगोच इति १० ॥ सू. २८ ॥

द्रव્યકા પરિણામી રૂપસેહી પ્રતિભાસ હોતા હૈ । હસ પ્રકારસે યહ તથા-જ્ઞાન રૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હૈ । જો વસ્તુ જૈસી નહીં હૈ, ડસકા વૈસા જ્ઞાન જિહ વિચારમૈં હોતા હૈ, જૈસે-મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવ દ્રવ્યકા જો જ્ઞાન હૈ, વહ અતથાજ્ઞાનહૈ, ક્યોંકિ મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવકા જ્ઞાન વિપરીત હોતાહૈ, અથવા-જો વસ્તુ જૈસી નહીં હૈ, ડસકી વૈસી પ્રતીતિ હોના યહ અતથાજ્ઞાન હૈ, જૈસે અલાત દ્રવ્ય (જલતા અંગાર) ગોલ નહીં હોતાહૈ-પર વહ ગોલ ફિરાને પર પ્રતીત હોના હૈ. ઓર જૈસા વહ હૈ, વૈસા વહ પ્રતીત નહીં હોતા હૈ, અથવા-વક્ર રૂપસે અવભાસિત હોતી હુઈ જો ઇકાન્તવાદિયોં દ્વારા માન્ય વસ્તુ હૈ, વહ અતથાજ્ઞાન હૈ, ક્યોંકિ ઇકાન્તવાદિયોં દ્વારા વહ ઇકાન્ત રૂપસે નિત્ય અથવા-અનિત્ય માની ગઈ હૈ, પરન્તુ વહ પરિણામી રૂપસે ભાસિત હોતી હૈ, હસ પ્રકારસે અતથાજ્ઞાન રૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હોતા હૈ । સૂત્ર ૨૮ ।

છે. અથવા દ્રવ્ય-પરિણામી છે એવું જે જ્ઞાન છે તેને તથા જ્ઞાન કહે છે, કારણ કે દ્રવ્યનો પરિણામી રૂપે જ પ્રતિભાસ થાય છે. આ પ્રકારનો આ તથાજ્ઞાન રૂપ દ્રવ્યનુયોગ છે.

અતથાજ્ઞાન-જે વસ્તુ જેવી નથી એવી જે વિચાર દ્વારા પ્રતિભાસિત થાય છે એવા વિચારને અતથાજ્ઞાન કહે છે. જેમ કે મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવનું દ્રવ્યવિષયક જે જ્ઞાન હોય છે તે અતથાજ્ઞાન જ હોય છે, કારણ કે મિથ્યાદૃષ્ટિ જીવનું જ્ઞાન વિપરીત હોય છે. અથવા જે વસ્તુનું જેવું યથાર્થ સ્વરૂપ હોય તેવા સ્વરૂપ કરતાં વિપરીત (અયથાર્થ) સ્વરૂપ હોવાની પ્રતીતિ થવી તેનું નામ અતથાજ્ઞાન છે. જેમ કે-અલાતદ્રવ્ય ગોળ હોતું નથી, પરન્તુ તેને ચક્કર ચક્કર ફેરવવ માં આવે તો તે ગોળ લાગે છે, અને તે પ્રકારે તે જેવું છે તેનું દેખાતું નથી અથવા એકાન્તવાદીઓ દ્વારા વિપરીતરૂપે સ્વીકારવામાં આવતી જે વસ્તુઓ છે તેમને પણ અતથ જ્ઞાન કહે છે, કારણ કે એકાન્તવાદીઓ દ્વારા તેમને એકાન્ત (સંપૂર્ણ) રૂપે નિત્ય અથવા અનિત્ય માનવામાં આવેલ છે, પરન્તુ તે પરિણામીરૂપે પ્રતિભાસિત થાય છે. આ પ્રકારનો અતથાજ્ઞાનરૂપ દ્રવ્યાનુયોગ હોય છે. ॥ સૂત્ર ૨૮ ॥

पुनर्गणितानुभोगमेवाधिकृत्य चमराद्यच्युनेन्द्राणामुत्पातपर्वतान् सममाण-
माह—

मूलम्—चमरस्त णं असुरिंदस्त असुरकुमाररन्नो तिगिच्छि-
कूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं
पण्णत्ते । चमरस्त णं असुरिंदस्त असुरकुमाररन्नो सोमस्त
महारन्नो सोमप्पमे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उद्धं उच्च-
त्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसयाइं विक्खं-
भेणं पण्णत्ते । चमरस्त णं असुरिंदस्त असुरकुमाररण्णो जमस्त
महारन्नो जमप्पमे उप्पायपव्वए एवं चेव । एवं वरुणस्तवि ।
एवं वेसमणस्तवि ॥ १ ॥ बलिस्तवि ॥ १ ॥ बलिस्त णं वइ-
रोयणिंदस्त वइरोयणरण्णो रुयणिंदे उप्पायपव्वए मूलेदसबा-
वीसे जोयणसए विक्खंभेणं पण्णत्ते । बलिस्त णं वइरोयणिं-
दस्त वइरोयणरन्नो सोमस्त एवं चेव । जहा चमरस्त लोग-
पालाणं तं चेव बलिस्तवि ॥ २ ॥ धरणस्त णं णागकुमारीं-
दस्त णागकुमाररन्नो धरणप्पमे उप्पायपव्वए दस जोयणस-
याइं उद्धं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोय-
णसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते । धरणस्त णं णागकुमारींदस्त
णागकुमाररन्नो कालवालस्त महारण्णो कालप्पमे उप्पायपव्वए
दस जोयणसयाइं उद्धं एवं चेव । एवं ज व संखवालस्त ३।
एवं भूयाणंदस्त वि । एवं लोगपालाणं वि से, जहा धरणस्त
एवं जाव थणियकुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं । सव्वेसिं
उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा ४। सक्कस्त णं देविं-

દસ દેવરણ્ણો સક્કપ્પમે ઉપ્પાયપઠ્ઠણ દસ જોયણસહસ્સાઈં
 ઉઢ્ઠુ ઉચ્ચત્તેણં, દસ ગાઉયસહસ્સાઈં ઉઠ્ઠેહેણં, મલે દસ જોયણ-
 સહસ્સાઈં વિઠ્ઠલંભેણં પણ્ણત્તે । સવ્વકસ્સ ણં દેવિદસ્સ દેવરન્નો
 સોમસ્સ મહારન્નો જહા સવ્વકસ્સ તહા સઠ્ઠેસિં લોગપાલાણં,
 સઠ્ઠેસિં ચ હંદાણં જાવ અચ્ચુયસ્સત્તિ સઠ્ઠેસિં પમાણમેગં ૧૦ સૂ. ૨૧।

છાયા--ચમરસ્ય ચલુ અસુરેન્દ્રસ્ય અસુરકુમારરાજસ્ય તિગિચ્છિકૂટઃ ઉત્પા-
 તપર્વતો મૂલે દશ દ્વાવિંશતિ યોજનશતાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ । ચમરસ્ય ચલુ
 અસુરેન્દ્રસ્ય અસુરકુમારરાજસ્ય સોમસ્ય મહારાજસ્ય સોમપ્રમઉત્પાતપર્વતો દશ
 યોજનશતાનિ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન, દશગવ્યૂતશતાનિ ઉદ્ઘેધેન, મૂલે દશ યોજનશતાનિ
 વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તઃ । ચમરસ્ય ચલુ અસુરેન્દ્રસ્ય અસુરકુમારરાજસ્ય યમસ્ય

ગણિતાનુયોગકો લેકર હી અવસૂત્રકાર ચમર આદિ અચ્યુતેન્દ્રોકે
 ઉત્પાત પર્વતોંકા પ્રમાણ સહિત કથન કરતે હૈં—

“ ચમસ્સ ણં અસુરિંદસ્સ અસુરકુમારરન્નો ” इत्यादि ।सू० २१।

શબ્દાર્થ—અસુરેન્દ્ર અસુરકુમાર રાજ ચમરકા જો તિગિચ્છિકૂટ નામકા
 ઉત્પાત પર્વત હૈ, વહ મૂલમૈં એક હજાર ૨૨ યોજન પ્રમાણ વિષ્કમ્ભવાલા
 હૈ, ઇન અસુરેન્દ્ર અસુર કુમારરાજ ચમરકે જો લોકપાલ સોમ મહારાજ
 હૈં, ડનકા સોમપ્રમ નામકા ઉત્પાત પર્વત ડંચાઈંમૈં ૧૦ સૌ યોજનકા કહા
 ગયાહૈ, તથા ઉદ્ઘેધસે (ગહરાઈ) વહ ૧૦ સૌ ગવ્યૂત પ્રમાણકા કહા ગયા
 અર્થાત્ જમોનમૈં ઇસકા મૂલ ભાગ નીચે ૧૦૦૦ કોશ ગહરા ગયા હૈ,
 ઓર મૂલમૈં ઇસકા વિષ્કમ્ભ ૧ હજાર યોજન કહા હૈ તથા—ઇન અસુ-
 રેન્દ્ર અસુરકુમારરાજ ચમરકે લોકપાલ જો યમ મહારાજ હૈં ડસકા
 યમપ્રમ નામકા ઉત્પાત પર્વત ઓ ઇસી પ્રકારકે પ્રમાણવાલા હૈ, વરુગ

ગણિતાનુયોગનો આધાર લઈને હવે સૂત્રકાર ચમર આદિ અચ્યુત પર્વ-
 તના ઈન્દ્રોના પર્વતોનું પ્રમાણ સહિત કથન કરે છે—

“ ચમરસ્સ ણં અસુરિંદસ્સ અસુરકુમારરન્નો ” इत्यादि—(सू. २६)

શબ્દાર્થ—અસુરેન્દ્ર, અસુરકુમારરાજ ચમરનો જે તિગિચ્છિકૂટ નામનો ઉત્પાત પર્વત
 છે તે મૂળમા ૧૦૨૨ યોજનપ્રમાણ વિષ્કંભવાળા છે. અસુરેન્દ્ર, અસુરકુમારરાજ
 ચમરના લોકપાલ સોમ મહારાજનો સોમપ્રમ નામનો જે ઉત્પાત પર્વત છે તેની
 ઊંચાઈ દસ સો (૧૦૦૦) યોજનની, અને તેનો ઉદ્ઘેધ (મૂળભાગ નીચેની
 ઊંચાઈ) દસ સો ગવ્યૂત પ્રમાણ—૧૦૦૦ કોસની છે તેના મૂળભાગનો વિષ્કંભ
 એક હજાર યોજનનો કહ્યો છે. અસુરેન્દ્ર, અસુરરાજ ચમરના લોકપાલ યમ

યાવત્ શઙ્ખવાલસ્ય ૩' एवं भूतानन्दस्यापि । एवं लोकपालानामपि तस्य, यथा धरणस्य, एवं यावत् स्तनितकुमाराणां सलोकपालानां भणितव्यम् । सर्वेषामुत्पातपर्वता भणितव्याः सदृशनामकाः ॥ ४ ॥ शक्रस्य खलु देवेन्द्रस्य देवराजस्य शक्रप्रभ उत्पातपर्वतो दशगोजनसहस्राणि ऊर्ध्वगुचत्वेन दश गव्यूतसहस्राणि उद्वेधेन, मूले दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भेण प्रज्ञप्तः । शक्रस्य खलु देवेन्द्रस्य देवराजस्य सोमस्य महाराजस्य दधा शक्रस्य तथा सर्वेषां लोकपालानां सर्वेषां च इन्द्राणां यावत् अच्युतस्येति । सर्वेषां प्रमाणमेकम् ५ ॥ सू० २९ ॥

યોજનકી હૈ, इसी प्रकारसे यावत् शङ्खवाले उत्पानपर्वतकी ऊंचाई है, इसी तरहसे भूतानन्दके उत्पातपर्वतके एवं इसके लोकपालोंके उत्पातपर्वतोंके सम्बन्धमें भी कथन जानना चाहिये जैसा कथन धरणके उत्पात पर्वतके विषयमें किया गया है, उसी तरहका कथन यावत् लोकपाल सहित स्तनितकुमारोंके उत्पातपर्वतोंके विषयमें कह लेना चाहिये, जैसा जिनका नाम है, उसी नामके उन सबके उत्पात पर्वत हैं ४ । देवेन्द्र देवराज शक्रका शक्रप्रभ नामका जो उत्पातपर्वत है, वह १० हजार योजनकी ऊंचाईवाला है, इसका उद्वेध १० हजार गव्यूत प्रमाण है, मूलमें इसका विष्कम्भ १० हजार योजनका है, देवेन्द्र देवराज शक्रके लोकपाल सोम महाराजके उत्पातपर्वतका वर्णन तथा

છે અને તેના મૂળભાગનો વિષ્કભ એક હજાર યોજનનો છે આ નાગકુમારેન્દ્ર, નાગકુમારરાજ ધરણનો લોકપાલ કાલવાલ મહારાજના કાલપ્રભ નામના ઉત્પાત પર્વતની ઊંચાઈ પણ એક હજાર યોજનની છે. શખવાલ પર્યન્તના તેમના લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોની ઊંચાઈ પણ એટલી જ કહી છે.

ભૂતાનન્દના ઉત્પાત પર્વતનું તથા તેના લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોનું પણ એવું જ સમજવું. એવું કથન ધરણના ઉત્પાત પર્વત વિષે કરવામાં આવ્યું છે, એવું જકથન સ્તનિકુમાર પર્યન્તના ઇન્દ્રોના ઉત્પાત પર્વતોના વિષયમાં તથા તેમના લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોના વિષયમાં પણ સમજવું. એવું ઇન્દ્રનું નામ છે એવું જ તે સૌના ઉત્પાત પર્વતનું નામ સમજવું પરંતુ તે નામની સાથે 'પ્રભ' પદ લગાડવાથી ઉત્પાત પર્વતનું નામ બની જાય છે ૧૪૧

દેવેન્દ્ર, દેવરાજ શક્રના ઉત્પાત પર્વતનું નામ શક્રપ્રભ છે. તે શક્રપ્રભ ઉત્પાત પર્વતની ઊંચાઈ દસ હજાર યોજનની, ઉદ્વેધ દસ હજાર ગવ્યૂતપ્રમાણ અને તેના મૂળભાગનો વિષ્કભ દસ હજાર યોજનનો છે.

ટીકા—‘ ચમરસ્સ ણં ’ इत्यादि—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નવરમ્-ઉત્પાતપર્વતઃ-ઉત્પત્તનમુત્પાતઃ, સ ચાસૌ પર્વત-
શ્ચતિ । તિર્યગ્લોકં ગન્તું યત્ર પર્વતે સમાગત્ય દેવા વૈક્રિયશરીરં પ્રકલ્પ્ય ઉત્પ-
તન્તિ=ઉત્પ્લુત્ય અવતરન્તિ સ પર્વત इत्यर्थः । અયં પર્વતશ્ચમરાદીનાં દેવાનાં
પ્રત્યેકં પૃથક્ પૃથગેવ ભવતિ । તત્ર-દાક્ષિણાત્યસ્ય અસુરકુમારેન્દ્રસ્ય અસુરકુમાર-
રાજસ્ય ચમરસ્યોત્પાતપર્વાઃ તિગિચ્છિક્કૂટનામકમ્ તિગિચ્છિઃ=કિજ્જલ્લકઃ કેસર
इत्यर्थः, તત્પ્રધાનત્વોદયં તિગિચ્છિક્કૂટ इत्युच्यते । તિગિચ્છિપ્રાધાન્યં ચ તત્ર

और भी इसके लोकपालोंके उत्पातपर्वतोंका वर्णन शक्रके उत्पात
पर्वतके ही जैसा है तथा शक्रसे अतिरिक्त और जो इन्द्र है, उनके
उत्पातपर्वतोंका वर्णन यावत् अच्युत तकके उत्पातपर्वतका वर्णन
सबका शक्रके उत्पातके जैसा ही है, तिर्यक् लोकमें जानेके लिये जिस
पर्वत पर आ करके देव वैक्रिय शरीरको बनाते हैं-और फिर वहांसे
वे तिर्यग् लोकमें आते हैं उस पर्वतका नाम उत्पात पर्वत है यह उत्पात
पर्वत प्रत्येक चमरादिक देवोंका भिन्न २ ही होता है, दक्षिण दिशाके
अधिपति असुरकुमारोंके इन्द्र जो असुर राज चमर हैं, उनके उत्पात
पर्वतका नाम तिगिच्छिकूट है तिगिच्छि नाम किज्जल्ल-केसरका है,
केसरकी प्रधानतावाला होनेसे इस पर्वतका नाम तिगिच्छिकूट हुआ
है, केसरकी प्रधानता यहां इसलिये है कि यहां कमलोंकी बहुलता है,

દેવેન્દ્ર, દેવરાજ શક્રના લોકપાલ સોમ મહારાજના ઉત્પાત પર્વતનું વર્ણન
તથા તેમના બીજા લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોનું વર્ણન પણ શક્રના ઉત્પાત
પર્વતના વર્ણન જેવું જ સમજવું. શક્ર સિવાયના અચ્યુત પર્યન્તના જે ઇન્દ્રો
છે, તેમના ઉત્પાત પર્વતોનું વર્ણન પણ શક્રના ઉત્પાત પર્વતના વર્ણન જેવું
જ સમજવું.

હવે ઉત્પાત પર્વતનો અર્થ સમજાવવામાં આવે છે—

તિર્યક્ લોકમાં જવા માટે જે પર્વત પર આવીને દેવ વૈક્રિય-શરીરની
રચના કરે છે, અને જ્યાંથી તિર્યગ્લોકમાં આવે છે તે પર્વતનું નામ ઉત્પાત-
પર્વત છે. ચમરાદિ પ્રત્યેક ઇન્દ્રના જૂદા જૂદા ઉત્પાત પર્વતો છે. દક્ષિણ દિશાના
અધિપતિ અસુરકુમારોનો ઇન્દ્ર અસુરરાજ ચમર છે. તેના ઉત્પાત પર્વતનું નામ
તિગિચ્છિકૂટ છે તિગિચ્છિ એટલે કેસર. તિગિચ્છિકૂટ પર્વત કેસરની પ્રધાનતા
વાળો હોવાથી તેનું એવું નામ પડ્યું છે. ત્યાં કમલોની અધિકતાને લીધે કેસરની
પ્રધાનતા સમજવી. આ ઉત્પાતપર્વત ક્યાં આવેલો છે તે હવે પ્રકટ
કરવામાં આવે છે—

કમલાનાં વાહુલ્યાત્ । અત્રેદ વોધ્યમ્-રુચકારનામ્નસ્રયોદશાત્ સમુદ્રાત્ દક્ષિગ-
તોડસંખ્યેયાન્ દ્વીપસમુદ્રાન્ વ્યતિવ્રજ્ય અરુણવરદ્વીપારુગધરસમુદ્રો સ્તઃ । તત્ર અરુણ-
વરસમુદ્રસ્ય દક્ષિણતો દ્વિચત્વારિંશદ્યોજનસદસ્ત્રાણ્યવગાહ્ય અયં પર્વતસ્તિઠતિ ।
સોડયં પર્વતો રત્નમયઃ પદ્મવરવેદિકયા વનલખ્ણેન ચ 'પરિવેષ્ટિતોડસ્તિ । અયં
ચ મૂલે-મૂળભાગે 'દમવાત્રીસે જોયગમ્' ત્તિ દશદ્વાવિંશતિં યોજનશત્તાનિ,
દ્વાવિંશત્યધિકાનિ દશશત્તાનિ યોજનાનિ-દ્વાવિંશત્યધિકૈકસદસ્ત્રપરિમિતો
વિષ્કમ્ભેણ મજ્જતઃ । તથા-ચમરસ્ય લોકપાલાઃ સોમયમવરુણવૈશ્રવણાઃ સન્તિ ।
તત્ર-સોમસ્ય મહારાજસ્ય=શેકપાલસ્ય ઉત્પાતપર્વતઃ સોમપ્રભઃ । અયં ચ એકસ-
દસ્યયોજનપરિમિત ઝર્ધ્વમુચ્ચત્વેન, એકમહસ્રગવ્યૂતપરિમિત ઉદ્વેધેન, મૂલે
વિષ્કમ્ભેણ એક સદસ્યયોજનપરિમિત ઇતિ । અયમ્-અરુણોદયમુદ્રે ઇવાડતિ । તથા-

યહાં હસ પ્રકારસે સમજ્ઞના ચાહિયે-રુચકવર નામકે ૧૨ વે સમુદ્રમેં
દક્ષિણ દિશાકી ઔર અસંખ્યાત દ્વીપસમુદ્રોંકો પાર કરકે અરુણવર દ્વીપ
ઔર અરુણવરસમુદ્ર આતાહૈ, યહાં અરુણવાસમુદ્રકી દક્ષિણ દિશાસે
૪૨ હજાર યોજન આગે ચલને પર યહ પર્વત હૈ, વહ યહ પર્વત રત્નમય
હૈ, પદ્મવર વેદિકાસે ઔર વન લખણસે પરિવેષ્ટિત હૈં, યહ મૂલમેં વિષ્ક-
મ્ભકી અપેક્ષા ૧૦૨૨ યોજન પ્રમાણ હૈ તથા-ચમરકે લોકપાલ સોમ,
યમ, વરુણ એવં વૈશ્રવણ હૈં, હનમેં જો સોમ મહારાજ લોકપાલ હૈં હનકે
ઉત્પાત પર્વતકા નામ સોમપ્રભ હૈ, યહ સોમપ્રભ ઉત્પાતપર્વત એક હજાર
યોજનકી ઝંચાઈવાલાહૈ, તથા ઉદ્વેધકી અપેક્ષા યહ ૧ હજાર ગવ્યૂત પરિ-
મિતહૈ, એવં મૂલમેં હસકા વિષ્કંભ એક હજાર યોજન પ્રમાણ વાલા હૈ

રુચકવર નામના ૧૩માં સમુદ્રથી દક્ષિણ દિશા તરફ અસંખ્યાત દ્વીપ-
સમુદ્રોને પાર કરવાથી અરુણવરદ્વીપ અને અરુણવર સમુદ્ર આવે છે તે અરુણ
વર સમુદ્રની દક્ષિણ દિશામાં ૪૨ હજાર યોજન આગળ જતાં આ ઉત્પાત
પર્વત આવે છે. આ તિગિચ્છિદ્ર પર્વત રત્નમય છે, અને પદ્મવર વેદિકા અને
વનખંડથી પરિવેષ્ટિત (વીંટળાયેલો) છે. તેના મૂળભાગનો વિષ્કંભ ૧૦૨૨
યોજનનો છે.

ચમરને ચાર લોકપાલો છે. તેમનાં નામ સોમ, યમ, વરુણ અને વૈશ્રવણ
છે. સોમ મહારાજના ઉત્પાત પર્વતનું નામ સોમપ્રભ છે તે સોમપ્રભ પર્વતની
ઊંચાઈ એક હજાર યોજનની છે, તેનો ઉદ્વેધ (જમીનની અંદર રહેલા અદૃશ્ય
ભાગની ઊંડાઈ) એક હજાર ગવ્યૂત (કોસ) પ્રમાણ છે અને તેના મૂળભાગનો
વિષ્કંભ પણ એક હજાર યોજનપ્રમાણ છે આ પર્વત અરુણોદયસમુદ્રમાં આવેલો

યમચરુણવૈશ્રવણાનાં યમપ્રમચરુગમ્રમવૈશ્રાણપ્રમનામાન ઉત્પાતપર્વતાઃ ક્રમેણ ઉક્ત-
પ્રમાણ એવ બોધ્યાઃ । એતેઽપ્યરુગોદે સ્થિતા વિજ્ઞેયાઃ ॥ ૧ ॥ તથા-વલેઃ-
ઔદીચ્યસ્ય અસુરકુમારાજસ્ય વૈરોચનેન્દ્રસ્ય વૈરોચનરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતો રુચ-
કેન્દ્રો નામ । સ ચ મૂલે વિષ્કમ્ભેણ દ્વાવિંશત્યધિકૈકમહસ્યયોજનપરિમિતોઽરુણ-
વરસમુદ્રો વર્તતે । તદુક્તમ્--

“ અરુણસ્મ ઉત્તરેણ, વાયાલીસં ભવે સહસ્સાઈ ।

ઓગાહિઝ્ઞ ઉદર્દિ, સિલ્લનિચયો રાયહાણીઓ ॥ ૧ ॥

છાયા--અરુણસ્ય ઉત્તરે દ્વિચત્વારિંશત્ ભવેત્ સહસ્રાણિ ।

અગ્રાહ્ય શિલાનિચયો રાજધાન્યઃ ॥ ૧ ॥ ઇતિ

અર્થ ભાવઃ--અરુણવરસમુદ્રસ્ય ઉત્તરસ્યાં દિશિ દ્વિચત્વારિંશત્સહસ્રાણિ યોજ-
નાનિ અરુણવરોદધિમ્ અગ્રાહ્ય રુચકેન્દ્રો નામ શિલાનિચયઃ=પર્વતોઽસ્તિ । તત્ર

હસી તરહસે ચમરકે જો વાકીકે યમ વરુગ એવં વૈશ્રવણ લોકપાલ
હૈ. ડનકે યમપ્રમ, વરુગ, એવં વૈશ્રવણપ્રમ, હસ નામકે અપને ૨ ઉત્પાત
પર્વત હૈ, ડનકે મૂલ ભાગકા વિષ્કમ્ભ પ્રમાણ, ઝંચાઈ આદિકા પ્રમાણ
સોમ મહારાજકે ઉત્પાત પર્વતકે પ્રમાણ જૈસા હી હૈ, યે સચ ઉત્પાત
પર્વત મી અરુણોદસમુદ્રમેં હી સ્થિત હૈં । ૧ ।

બલિ યહ ઉત્તરાર્ધકા અધિપતિ હૈ. ઓર અસુરકા ઇન્દ્ર હૈ હસકે
ઉત્પાતપર્વતકા કામ રુચકેન્દ્ર હૈ, યહ રુચકેન્દ્ર ઉત્પાતપર્વત મૂલમેં
વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા ૧૦૨૨ યોજનકા હૈ, ઓર અરુણવરસમુદ્રમેં હૈ ।
તદુક્તમ્--“ અરુણસ્મ ઉત્તરેણ ” ઇત્યાદિ ।

હસકા તાત્પર્ય યહ હૈ--અરુણવરસમુદ્રકી ઉત્તર દિશામેં ૪૨
હજાર યોજન આગે જાકર રુચકેન્દ્ર નામકા શિલાનિચય પર્વત હૈ ।

છે. યમ મહારાજના ઉત્પાત પર્વતનું નામ યમપ્રભ છે, વરુણ મહારાજના
ઉત્પાત પર્વતનું નામ વરુણપ્રભ છે, અને વૈશ્રવણ લોકપાલના ઉત્પાત પર્વતનું
નામ વૈશ્રવણપ્રમ છે. આ ત્રણે લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોની ઊંચાઈ, ઉદ્દેધ,
મૂળભાગનો વિષ્કંભ વગેરેનું પ્રમાણ સોમ મહારાજના ઉત્પાત પર્વતના પ્રમાણ
જેટલું જ સમજવું. આ ત્રણે ઉત્પાતપર્વતો અરુણોદય સમુદ્રમાં જ આવેલા છે. ૧૧।

બલિ ઉત્તરાર્ધનો અધિપતિ છે. તે અસુરકુમારોનો ઇન્દ્ર છે. તેના ઉત્પાત
પર્વતનું નામ રુચકેન્દ્ર છે. આ રુચકેન્દ્ર ઉત્પાત પર્વતના મૂળભાગનો વિષ્કંભ
૧૦૨૨ યોજનનો છે, અને તે પર્વત અરુણવરસમુદ્રમાં આવેલો છે. કહ્યું
પણ છે કે--“ અરુણસ્મ ઉત્તરેણ ” ઇત્યાદિ -

આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે--અરુણવર સમુદ્રના ઉત્તર દિશામાં
૪૨ હજાર યોજન આગળ જતાં રુચકેન્દ્ર નામનો શિલાનિચય (પર્વત) આવે

વત્સો રાજધાન્યઃ સન્તીતિ । વલેવૈરોચનેન્દ્રસ્ય વૈરોચનરાજસ્ય સોમસ્ય લોક-
પાલસ્ય સોમપ્રભો નામ ઉત્પાતપર્વતઃ ચમરેન્દ્રસ્ય સોમલોકપાલસ્યેવાસ્તિ । તથા-
ચમરેન્દ્રલોકપાલાનાં યમવરુગવૈશ્રવણાનામિવ બલેર્યમવરુણવૈશ્રવણાનાં લોકપાલા-
નામુત્પાતપર્વતા વોધ્યાઃ । ૨ । તથા-ધરણસ્ય દાક્ષિણાત્યસ્ય નાગકુમારેન્દ્રસ્ય
નાગકુમારરાજસ્ય અરુણોદસમુદ્રવર્તી ઉત્પાતપર્વતો ધરણપ્રભો નામ । અયં ચૈકસ-
હસ્રયોજનપરિમિત ઝર્ધ્વમુચ્ચત્વેન, એકસહસ્રગત્યૂતપરિમિત ઉદ્ધેધેન, મૂલે વિષ્ક-
મ્મેન એકસહસ્રયોજનપરિમિતો વર્તતે । તલ્લોકપાલાનાં કાલપાલ-કોલપાલ-
શૈલપાલ-શઙ્ખપાલાનામુત્પાતપર્વતાઃ ક્રમેણ કાલપાલપ્રભ-કોલપાલપ્રભ-શૈલપાલ-

વહાં ચાર રાજધાનિયાં હૈં । વૈરોચનેન્દ્ર વૈરોચનરાજ બલિકે લોકપાલ
જો સોમ મહારાજ હૈ, ડનકા જો ઉત્પાતપર્વત હૈ, ડસકા નામ સોમ-
પ્રભ હૈ, હસ સોમપ્રભ ઉત્પાતપર્વતકા વર્ણન ચમરેન્દ્રકે લોકપાલ યમ
વરુગ, ઓર વૈશ્રવણ હૈં, ડમી પ્રકારસે બલિકે મી યેહી લોકપાલ હૈં,
અર્થાત્ વરુગકે જો લોકપાલ હૈ, ડનકા મી ંસા હી નામ હૈં ઓર
હનકે મી અપને ૨ ઉત્પાત પર્વત હૈં । ૨ । નાગકુમારકે હન્દ્ર ંવં નાગ-
કુમારોકે રાજા જો દક્ષિણાર્ધકે અધિપતિ ધરણ હૈં, ડનકા જો ઉત્પાત
પર્વત હૈ, વહ ધરણપ્રભ નામકા હૈ, યહ મી અરુણોદ સમુદ્રવર્તી હૈ, હસકી
ઝંચાઈ ંક હજાર યોજનકી હૈ, ડદ્ધેધકી અપેક્ષા યહ ંક હજાર ગબ્ધૂત
(દો હજાર કોશ) પરિમિત હૈ મૂલમં યહ વિષ્કમ્મકી અપેક્ષા ંક
હજાર યોજનકા હૈ । ધરણકે જો લોકપાલ હૈ, ડનકે નામ હૈં કાલપાલ

છે. ત્યાં ચાર રાજધાનીઓ છે. વૈરોચનેન્દ્ર વૈરોચનરાજ બલિકા જે સોમ મહારાજ
નામના લોકપાલ છે તેમના ઉત્પાતપર્વતનું નામ સોમપ્રભ છે. તે સોમપ્રભ
ઉત્પાત પર્વતનું વર્ણન ચમરના લોકપાલ સોમ મહારાજના ઉત્પાત પર્વતના
વર્ણન જેવું જ સમજવું. બલિકા બીજાં ત્રણ લોકપાલોનાં નામ પણ ચમરના
બીજાં ત્રણ લોકપાલોનાં જેવાં જ છે એટલે કે યમ, વરુણ અને વૈશ્રવણ જ
છે. તે પ્રત્યેકના પણ અલગ અલગ ઉત્પાત પર્વતો છે. તે ઉત્પાતપર્વતોનું વર્ણન
સોમપ્રભના ઉત્પાત પર્વતના વર્ણન પ્રમાણે સમજવું. ૨।

નાગકુમારોના ઇન્દ્ર, નાગકુમારરાજ ધરણ દક્ષિણાર્ધનો અધિપતિ છે તેના
ઉત્પાત પર્વતનું નામ ધરણપ્રભ છે. તે પણ અરુણોદ સમુદ્રમાં આવેલો છે તેની
ઊંચાઈ ૧૦૦૦ યોજન, ઉદ્ધેધ ૧૦૦૦ ગબ્ધૂત (બે કોશ) અને તેના મૂળભાગનો
વિષ્કંભ એક હજાર યોજન છે ધરણના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે
છે-(૧) કાલપાલ, (૨) કોલપાલ, (૩) શૈલપાલ અને (૪) શંખપાલ તેમના

પ્રમ-શઙ્ખપાલપ્રમનામાનોઽરુણોદેસ્થિતા વિજ્ઞેયા इति। एषामेकैकस्य प्रमाणं यथा-
 एकप्रहस्रयोजनपरिमित ऊर्ध्वमुच्चत्वेन 'एवं चेत्' इति एवमेव धरणेन्द्रस्य
 धरणप्रभोत्पातपर्वतवदेव एकप्रहस्रगव्यूतपरिमित उद्वेचेन, मूले विष्कभेन एक
 सदस्रयोजनपरिमित इति। यथा-धरणस्य तथैव औदीच्यस्य नागकुमारेन्द्रस्य
 भूतानन्दस्य उत्पातपर्वतो वाच्यः। केवलं स नाम्ना भूतानन्दप्रभः। अयमपि
 अरुणोदसमुद्रेऽस्ति, परमयमुत्तरो वाच्यः। धरणस्य लोकपालानामिव तस्य=
 भूतानन्दस्यापि लोकपालानामुत्पातपर्वतो लोकपालप्रहस्रनामानो वाच्याः।
 लोकपालास्तु-कालपालः, कोलपालः, शङ्खपालः, शैलपालश्चेति। एषामुत्पातप-
 र्वतास्तु-कालपालप्रभ - कोलपालप्रभ-शैलपालप्रभ - शङ्खपालप्रभनामानोऽरुणोदे

कोलपाल शैलपाल और शङ्खपाल और इनके अपने २ जो उत्पात
 पर्वत हैं, इनके नाम क्रमशः कालपालप्रभ, कोलपालप्रभ, शैलपाल
 प्रभ और शङ्खपाल प्रभ हैं। और ये सब अरुणोदसमुद्रमें स्थित हैं।
 इनमें एक एकका प्रमाण पूर्वोक्त रूपसेही है-अर्थात् ऊंचाईमें ये सब एक
 २ हजार योजनके ऊंचे हैं, उद्वेधकी अपेक्षा ये सब एकर हजार गव्यूत
 परिमित हैं। मूलमें इन सबका विष्कम्भ एक एक हजार योजनका है
 उत्तर दिशाके अधिपति जो नागकुमारके इन्द्र भूतानन्द हैं, उनका भी
 उत्पातपर्वत है उसका नाम भूतानन्द प्रभहैं, यह भी अरुणोद समुद्रमें
 हैं और उत्तर दिशाकी तरफ हैं, धरणके लोकपालोंकी तरह भूतानन्दके
 भी लोकपालोंके उत्पात पर्वत हैं। इनके नाम लोकपालोंके जैसे ही हैं।
 भूतानन्दके लोकपालोंके नाम कालपाल, कोलपाल, शङ्खपाल, और
 शैलपाल हैं। इनके उत्पातपर्वत कालपाल प्रभ, कोलपालप्रभ, शङ्खपाल

ઉત્પાત પર્વતોના નામ અનુક્રમે કાલપાલપ્રભ કોલપાલપ્રભ, શૈલપાલપ્રભ અને
 શંખપાલપ્રભ છે. તે ચારે ઉત્પાત પર્વતો અરુણોદ સમુદ્રમાં જ આવેલાં છે. તે
 પ્રત્યેક પર્વત પણ એક એક હજાર યોજન ઊંચો, એક એક હજાર ગવ્યૂત પ્રમાણ
 ઉદ્વેધવાળો અને મૂળભાગમાં એક એક હજાર યોજનના વિષ્કંભવાળો છે.

નાગકુમારેન્દ્ર, નાગકુમારરાજ ભૂતાનન્દ ઉત્તર દિશાનો અધિપતિ છે. તેનો
 જે ઉત્પાત પર્વત છે તેનું નામ ભૂતાનન્દપ્રભ છે. તે પણ અરુણોદ સમુદ્રમાં છે
 અને ઉત્તર દિશામાં આવેલો છે. ભૂતાનન્દના લોકપાલોનાં નામ ધરણના લોક-
 પાલોનાં નામ જેવાં જ છે એટલે કે કાલપાલ, કોલપાલ, શંખપાલ અને શૈલપાલ
 છે. તે ચારે લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ અનુક્રમે કાલપાલપ્રભ, કોલપાલપ્રભ,
 શંખપાલપ્રભ અને શૈલપાલપ્રભ છે આ ચારે ઉત્પાત પર્વતો અરુણોદ સમુદ્રમાં

સ્થિતા દ્રષ્ટવ્યાઃ । ‘ જહા ધરણસે ’-ત્યાદિ-યથા=યત્પ્રમાણો ધરણસ્ય ઉત્પાત-
પર્વતઃ, એમ્=અનેન પ્રકારેણ યાવત્સ્તનિતકુમારાણામ્=સુપર્ણાદિસ્તનિતકુમારા-
ન્તાનાં લોકપાલપ્રદિતાનામુત્પાતપર્વતવિષયે મણિતવ્યમ્ । ઉત્પાતપર્વતઃશ્ચ તત્સ-
માનનામાનો વોધ્યાઃ ।

અર્થ માર્ગઃ--વેણુદેવસ્ય દક્ષિણાત્પસ્ય સુવર્ણકુમારેન્દ્રસ્ય સુપર્ણકુમારરાજસ્ય
ઉત્પાતપર્વતો વેણુદેવપ્રમ નામ । વેણુદેવસ્ય લોકપાલાસ્તુ-ચિત્ર-વિચિત્ર-ચિત્ર-
પક્ષ-વિચિત્રપક્ષ-નામાનો વિજ્ઞેયાઃ । ઉત્પાતપર્વતાસ્તુ ચિત્રપ્રમ-વિચિત્રપ્રમ-
ચિત્રપક્ષપ્રમ-વિચિત્રપક્ષપ્રમ-નામાનઃ । તથા-વેણુદાલે રૌદ્રીચ્યસ્ય સુવર્ણકુમારે-
ન્દ્રસ્ય સુપર્ણકુમારરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતો વેણુદાલિપ્રમઃ । વેણુદાલેર્લોકપાલાસ્તુ

પ્રમ ઓર શૈલપાલપ્રમ હૈં । યે સ્વ મી અરુણોદયે રિયતહૈં । જિતને પ્રમા
ણકા ધરણકા ઉત્પાતપર્વત કહા ગયા હૈ, હતને હી પ્રમાણકે અપને ૨
લોકપાલ સહિત સુવર્ણકે લેકર સ્તનિતકુમારોં તકકે ઉત્પાતપર્વત
મી કહના ચાહિયે । યે ઉત્પાતપર્વત સ્વ અપને ૨ લોકપાલોં એવં
ઇન્દ્રોંકે સમાન નામવાલે હૈં--

તાત્પર્ય યહ હૈ-સુપર્ણકુમારોંકે ઇન્દ્ર જો સુપર્ણકુમાર રાજ વેણુદેવ
હૈ, જો કિ દક્ષિણાર્ધકે અધિપતિ હૈં-उनका जो उत्पातपर्वत है, वह
वेणुदेव प्रम नामका है ।

વેણુદેવકે લોકપાલ-ચિત્ર, વિચિત્ર, ચિત્રપક્ષ એવં વિચિત્રપક્ષ યે હૈં,
વેણુદાલિક જો કિ ઉત્તરાર્દ્ધકે અધિપતિ એવં સુપર્ણકુમારોંકે ઇન્દ્ર
ઓર સુપર્ણકુમારોંકે રાજા હૈં, उनका जो उत्पात पर्वत है, उसका नाम

આવેલા છે તેમનું પ્રમાણ પણ ધરણપ્રમ ઉત્પાતપર્વતના પ્રમાણ જેટલું જ કહ્યું છે.

સુપર્ણકુમારોથી સ્તનિતકુમારો પર્યન્તના જે ઇન્દ્રો છે તેમના ઉત્પાત પર્વ-
તોનું પ્રમાણ તથા તેમના લોકપાલોનાં નામની પાછળ ‘ પ્રમ ’ પદ લગાડવાથી
તેમના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ બની જશે.

આ કથાનું તાત્પર્ય નીચે પ્રમાણે છે--

સુપર્ણકુમારોના ઇન્દ્ર જે સુપર્ણકુમારરાજ વેણુદેવ છે, તે દક્ષિણાર્ધના અધિ-
પતિ છે. તેના ઉત્પાત પર્વતનું નામ વેણુદેવપ્રમ છે તે વેણુદેવના ચાર લોકપાલોનાં
નામ નીચે પ્રમાણે છે--(૧) ચિત્ર, (૨) વિચિત્ર, (૩) ચિત્રપક્ષ અને (૪) વિચિત્રપક્ષ
ઉત્તરનિઠાયના સુપર્ણકુમારોના ઇન્દ્ર સુપર્ણકુમારરાજ વેણુદાલિક છે તેમના ઉત્પાત
પર્વતનું નામ વેણુદાલિપ્રમ છે. તેમના લોકપાલોનાં નામ ચિત્ર, વિચિત્રપક્ષ અને

ચિત્ર-વિચિત્ર-ચિત્રપક્ષ-વિચિત્રપક્ષ-નામાનો વિજ્ઞેયાઃ । ઉત્પાતપર્વતાસ્તુ ચિત્ર-
 પ્રમ-વિચિત્રપ્રમ-ચિત્રપક્ષપ્રમ-વિચિત્રપક્ષપ્રમ-નામાનઃ । તથા-વેણુદાલે રૌદ્રી-
 ચ્યસ્ય સુવર્ણકુમારેન્દ્રસ્ય સુવર્ણકુમારરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતો વેણુદાલિપ્રમઃ । વેણુ
 દાલે લૌકપાલાસ્તુ ચિત્ર-વિચિત્ર-વિચિત્રપક્ષ-ચિત્રપક્ષનામાનઃ । ચિત્રપ્રમ-વિચિ-
 ત્રપક્ષપ્રમ-ચિત્રપક્ષપ્રમ નામાન યામુત્પાતપર્વતાઃ । તથા-હરિકાન્તસ્ય દક્ષિણા-
 ત્યસ્ય વિદ્યુત્કુમારેન્દ્રસ્ય વિદ્યુત્કુમારરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતો હરિકાન્તપ્રમઃ ।
 એતલ્લોકપાલાનાં પ્રમ-સુપ્રમપ્રમકાન્ત-સુપ્રમકાન્તાનામુત્પાતપર્વતાઃ પ્રમપ્રમ-
 સુપ્રમપ્રમ-પ્રમકાન્તપ્રમ - સુપ્રમકાન્તપ્રમનામાનો વોદ્યાઃ । તથા-હરિપ-
 હસ્ય ઔદીચ્યસ્ય વિદ્યુત્કુમારેન્દ્રસ્ય વિદ્યુત્કુમારરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતો હરિપદપ્રમઃ ।
 એતલ્લોકપાલાસ્તુ-પ્રમઃ સુપ્રમઃ સુપ્રમકાન્તઃ પ્રમકાન્તશ્ચ । ઉત્પાતપર્વતાસ્ત્વેષામ્-
 પ્રમપ્રમઃ સુપ્રમપ્રમઃ સુપ્રમકાન્તપ્રમઃ પ્રમકાન્તપ્રમશ્ચેતિ । તથા-અગ્નિશિખસ્ય
 વેણુદાલિપ્રમ હૈ, ઓર ઇસ્કે જો ચિત્ર વિચિત્ર આદિ લોકપાલહૈ, ડનકે
 ઉત્પાત પર્વત ક્રમશઃ ચિત્રપ્રમ વિચિત્રપ્રમ, વિચિત્રપક્ષપ્રમ ઓર
 ચિત્રપક્ષપ્રમ ઇન નામોંકે હૈ ।

તથા-દક્ષિણ દિશાકે અધિપતિ જો હરિકાન્ત હૈ, જો વિદ્યુત્કુમા-
 રોંકે ઇન્દ્ર ઓર વિદ્યુત્કુમારોંકે રાજા હૈ, ડનકા ઉત્પાતપર્વત હરિકાન્ત
 પ્રમ નામકા હૈ, ઇનકે લોકપાલ પ્રમ, સુપ્રમ, પ્રમકાન્ત, ઓર સુપ્રમ-
 કાન્ત હૈ । ઇનકે ઉત્પાત પર્વતોંકા નામ પ્રમ પ્રમ, સુપ્રમપ્રમ, પ્રમકાન્ત
 પ્રમ ઓર સુપ્રમકાન્ત પ્રમ હૈ । વિદ્યુત્કુમારોંકે ઇન્દ્ર એવં વિદ્યુત્કુમા-
 રોંકે રાજા જો હરિવર્ષહૈ, એવં જો ઉત્તરાર્દ્રકે અધિપતિ હૈ ડનકે ઉત્પાત
 પર્વતકા નામ હરિષહ પ્રમ હૈ, ઇનકે લોકપાલોંકે નામ પ્રમ, સુપ્રમ,
 સુપ્રમકાન્ત ઓર પ્રમકાન્ત હૈ, ઇનકે ઉત્પાતપર્વતોંકે નામ પ્રમ પ્રમ,
 સુપ્રમપ્રમ, સુપ્રમકાન્તપ્રમ એવં પ્રમકાન્તપ્રમ હૈ, દક્ષિણ દિશાકે

ચિત્રપક્ષ છે તે લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે ચિત્રપ્રમ, વિચિત્ર
 પ્રમ, વિચિત્રપક્ષપ્રમ અને ચિત્રપક્ષપ્રમ છે.

દક્ષિણાર્ધના વિદ્યુત્કુમારેન્દ્ર વિદ્યુત્કુમારરાજ હરિકાન્તના ઉત્પાત પર્વતનું
 નામ હરિકાન્તપ્રમ છે. તેના લોકપાલોનાં નામ પ્રમ, સુપ્રમ, પ્રમકાન્ત અને
 સુપ્રમકાન્ત છે. તે ચારે લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે પ્રમપ્રમ,
 સુપ્રમપ્રમ, પ્રમકાન્તપ્રમ અને સુપ્રમકાન્તપ્રમ છે.

ઉત્તરાર્ધના વિદ્યુત્કુમારેન્દ્ર વિદ્યુત્કુમારરાજ હરિવર્ષના ઉત્પાત પર્વતનું નામ
 હરિષહપ્રમ છે. તેમના લોકપાલોનાં નામ પ્રમ, સુપ્રમ, સુપ્રમકાન્તપ્રમ અને
 પ્રમકાન્તપ્રમ છે.

દક્ષિણાત્યસ્ય અગ્નિકુમારેન્દ્રસ્ય અગ્નિકુમારરાજસ્ય અરુણદ્વીપસ્થિતઉત્પાતપર્વતો-
ઽગ્નિશિખપ્રભઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ-તેજાઃ, તેજશિશ્વઃ, તેજસ્કાન્તઃ તેજઃપ્રભ
ઈતિ । અરુણદ્વીપસ્થિતા એવામુત્પાતપર્વતાસ્તુ-તેજઃ પ્રભઃ, તેજશિશ્વપ્રભઃ, તેજ-
સ્કાન્તપ્રભઃ, તેજઃ પ્રભપ્રભ ઇતિ । તથા-અગ્નિમાળવક્રસ્ય ઔદીચ્યસ્ય અગ્નિકુમા
રેન્દ્રસ્ય અગ્નિકુમારરાજસ્ય અરુણદ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતોઽગ્નિમાળવક્રપ્રભઃ ।
એતલ્લોકપાલાસ્તુ-તેજાઃ, તેજશિશ્વઃ, તેજઃપ્રભઃ તેજસ્કાન્ત ઇતિ । અરુણદ્વી-
પસ્થિતા ઉત્પાતપર્વતાસ્તુ-તેજઃ પ્રભઃ, તેજઃશિખપ્રભઃ, તેજઃપ્રભપ્રભઃ તેજસ્કા-
ન્તપ્રભ ઇતિ । તથા-પૂર્ણસ્ય દક્ષિણાત્યસ્ય દ્વીપકુમારેન્દ્રસ્ય દ્વીપકુમારરાજસ્ય

અધિપતિ એવં અગ્નિકુમારોંકે હન્દ્ર તથા અગ્નિકુમારોંકે રાજા જો
અગ્નિશિખ હૈં, ઉત્પાતપર્વતકા નામ અગ્નિશિખ પ્રભ હૈ, યહ ઉત્પાત
પર્વત અરુણ દ્વીપમેં સ્થિત હૈ, અગ્નિશિખકે જો લોકપાલ હૈં उनके नाम
इस प्रकारसे हूँ-तेज, तेजशिश्व तेजस्कान्त और तेजःप्रभ इनके जो
उत्पातपर्वत हूँ-वे अरुण द्वीपमें स्थित हूँ । इनका नाम क्रमशः तेजः-
प्रभ, तेजःशिश्वप्रभ, तेजस्कान्तप्रभ और तेजःप्रभप्रभ है । तथा-अग्नि-
कुमारेन्द्र और अग्निकुमारराज जो अग्निमाणवक्र है, उनका अरुण
द्वीपस्थित जो उत्पातपर्वत है, उसका नाम अग्निमाणवक्रप्रभ हूँ,
इनके जो लोकपाल हूँ, उनका नाम तेज तेजःशिश्वप्रभ, तेजःप्रभप्रभ,
और तेजस्कान्तप्रभ है ।

तथा ये अग्निमाणवक्र उत्तरार्धके अधिपति हूँ । दक्षिणार्धके अधि-
पति द्वीपकुमारेन्द्र एवं द्वीपकुमारराज जो पूर्ण हूँ, उनका जो उत्पात

દક્ષિણાર્ધના અગ્નિકુમારોના ઈન્દ્ર, અને અગ્નિકુમારોના રાજાનું નામ
અગ્નિશિખ છે તેમના ઉત્પાતપર્વતનું નામ અગ્નિશિખપ્રભ છે આ ઉત્પાત
પર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલો છે અગ્નિશિખના લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે
છે-(૧) તેજ, (૨) તેજશિખ, (૩) તેજસ્કાન્ત અને (૪) તેજપ્રભ. તેમના
ઉત્પાતપર્વતો પણ અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે તે ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ
અનુક્રમે નીચે અગ્રા પ્રમાણે છે-(૧) તેજપ્રભ, (૨) તેજશિખપ્રભ, (૩)
તેજસ્કાન્તપ્રભ અને (૪) તેજપ્રભપ્રભ

ઉત્તરનિઠાયના અગ્નિકુમારોના ઈન્દ્ર અને અગ્નિકુમારોના રાજાનું નામ
અગ્નિમાળવક્રપ્રભ છે તે ઉ.પ.ત પર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલો છે. તે અગ્નિમાળવક્રના
આર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) તેજ, (૨) તેજઃશિખ, (૩) તેજઃપ્રભ
અને (૪) તેજસ્કાન્ત છે તેમના ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ તેજઃપ્રભ, તેજઃશિખપ્રભ,
તેજઃપ્રભપ્રભ અને તેજસ્કાન્તપ્રભ છે.

અરુણદ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતઃ પૂર્ણપ્રભઃ । એતલ્લોકપાલાઃ-રૂપ-રૂપાંશ-રૂપ-કાન્ત-રૂપપ્રમા ઇતિ । અરુણદ્વીપસ્થિતા એતેપામુત્પાતપર્વતાસ્તુ-રૂપપ્રભ-રૂપાંશપ્રભ-રૂપકાન્તપ્રભ-રૂપપ્રમા ઇતિ । તથા-વિશિષ્ટસ્ય ઔદીચ્યસ્ય દ્વીપકુમારેન્દ્રસ્ય દ્વીપકુમારરાજસ્ય અરુણદ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતો વિશિષ્ટપ્રભઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ-રૂપ-રૂપાંશ-રૂપપ્રભ-રૂપકાન્તા । ઇતિ । અરુણદ્વીપસ્થિતા ઉત્પાતપર્વતાસ્ત્વેપાં-રૂપપ્રભ-રૂપાંશપ્રભ-રૂપપ્રભ-રૂપકાન્તપ્રમા ઇતિ । તથા-જલકાન્તસ્ય દાક્ષિણા-ત્યસ્ય ઉદધિકુમારેન્દ્રસ્ય ઉદધિકુમારરાજસ્ય અરુણોદસ્થિત ઉત્પાતપર્વતો જલકાન્તપ્રભઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ-જલો જલરયો જલકાન્તો જલપ્રભઃતિ । અરુણો-

પર્વતનું છે, વહ અરુણદ્વીપમાં સ્થિત છે, એકા નામ પૂર્ણપ્રભ છે, એને લોકપાલોના નામ રૂપ, રૂપાંશ, રૂપકાન્ત, ઓર રૂપપ્રભ, એને ઉત્પાત પર્વત રૂપપ્રભ, રૂપાંશપ્રભ, રૂપકાન્તપ્રભ ઓર રૂપપ્રભપ્રભ નામકે છે, એવં એ અરુણસમુદ્રમાં સ્થિત છે । દ્વીપકુમારેન્દ્ર એવં દ્વીપકુમાર રાજ જો વિશિષ્ટ છે, એના ઉત્પાતપર્વત વિશિષ્ટ પ્રભ છે, ઓર યહ અરુણ દ્વીપમાં સ્થિત છે, એ વિશિષ્ટ ઉત્તરાર્ધકે અધિપતિ છે । એને લોકપાલોના નામ ઇસ પ્રકારસે છે-

રૂપ ૧, રૂપાંશ ૨, રૂપપ્રભ ૩, ઓર રૂપકાન્ત ૪, એને ઉત્પાત પર્વત અરુણ દ્વીપમાં સ્થિત છે, એના નામ રૂપપ્રભ, રૂપાંશપ્રભ રૂપ-પ્રભપ્રભ, ઓર રૂપકાન્ત પ્રભ છે, ઉદધિકુમારોનાં એન્દ્ર એવં ઉદધિકુમારોનાં રાજા જો જલકાન્ત છે, એને ઉત્પાતપર્વતના નામ જલકાન્ત પ્રભ

દક્ષિણનિકાયના દ્વીપકુમારેન્દ્ર દ્વીપકુમારરાજ પૂર્ણના ઉત્પાત પર્વતનું નામ પૂર્ણપ્રભ છે તે ઉત્પાતપર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે. પૂર્ણના લોકપાલોનાં નામ, રૂપ, રૂપાંશ, રૂપકાન્ત અને રૂપપ્રભ છે. તેમના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે રૂપપ્રભ, રૂપાંશપ્રભ, રૂપકાન્તપ્રભ અને રૂપપ્રભપ્રભ છે તે ચારે ઉત્પાત પર્વતો અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે.

ઉત્તરનિકાયના દ્વીપકુમારેન્દ્ર દ્વીપકુમારરાજ વિશિષ્ટના ઉત્પાત પર્વતનું નામ વિશિષ્ટપ્રભ છે. તે ઉત્પાત પર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે. તેના લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-રૂપ, રૂપાંશ, રૂપપ્રભ અને રૂપકાન્ત. તેમના ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ રૂપપ્રભ, રૂપાંશપ્રભ, રૂપપ્રભપ્રભ અને રૂપકાન્તપ્રભ છે. તે ચારે ઉત્પાત પર્વતો પણ અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે દક્ષિણનિકાયના ઉદધિકુમારેના ઇન્દ્ર અને ઉદધિકુમારરાજ જલકાન્તના ઉત્પાતપર્વતનું નામ જલકાન્તપ્રભ છે. તે ઉત્પાતપર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે, જલકાન્તના ચાર લોકપાલોનાં નામ

દસ્થિતા ઉત્પાતપર્વતાસ્ત્વેષામ્-જલપ્રમો જલરયપ્રમો જલકાન્તપ્રમો જલપ્રમપ્રમ
 હિતિ । તથા જલપ્રમસ્ય ઔદીચ્યસ્ય ઉદધિકુમારેન્દ્રસ્ય ઉદધિકુમારરાજસ્ય
 અરુણોદસ્થિત ઉત્પાતપર્વતો જલપ્રમપ્રમઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ-જલો જલરયો જલ
 પ્રમો જલકાન્ત હિતિ । અરુણોદસ્થિતા ઉત્પાતપર્વતાસ્ત્વેષામ્-જલપ્રમો જલરયપ્રમો
 જલપ્રમપ્રમો જલકાન્તપ્રમ હિતિ । તથા-અમિતગતે દક્ષિણાત્યસ્ય દિક્કુમારેન્દ્રસ્ય
 દિક્કુમારરાજસ્ય અરુણદ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતોઽમિતગતિપ્રમઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ-
 ત્વરિતગતિઃ ક્ષિપ્રગતિઃ સિંહગતિઃ સિંહવિક્રમગતિરિતિ । અરુણદ્વીપસ્થિતા ઉત્પા-

હૈ, યહ અરુણોદમે સ્થિત હૈ, હનકે લોકપાલ જલ, જલરય, જલકાન્ત
 ઔર જલપ્રમ હૈં હનકે ધી ઉત્પાતપર્વત અરુણોદમે સ્થિત હૈં. હનકા
 નામ હૈ-જલપ્રમ ૧, જલરયપ્રમ ૨, જલકાન્તપ્રમ ૩, ઔર જલપ્રમપ્રમ
 ૪, ઉદધિકુમારોંકે હન્દ્ર એવ ઉદધિકુમારોંકે રાજા જલપ્રમકા જો
 ઉત્પાતપર્વત હૈ ઉસકા નામ જલપ્રમ પ્રમ હૈ યહ અરુણોદમે સ્થિત
 હૈ, હનકે લોકપાલોંકા નામ જલ, જલરય, જલપ્રમ ઔર જલકાન્ત હૈં,
 હનકે જો ઉત્પાત પર્વત હૈં હનકે નામ જલપ્રમ, જલરય પ્રમ, જલપ્રમ
 એવં જલકાન્ત પ્રમ હૈ, યે સચ અરુણોદમે સ્થિત હૈં, દિક્કુમારેન્દ્ર
 એવં દિક્કુમારરાજ જો અમિતગતિ હૈં, હનકે ઉત્પાત પર્વતકા નામ
 અમિતગતિપ્રમ હૈ, યહ અરુણદ્વીપમે સ્થિત હૈ, હનકે લોકપાલોંકે નામ
 ત્વરિતગતિ, ક્ષિપ્રગતિ, સિંહગતિ, એવં સિંહવિક્રમગતિ હૈં. હનકે

નીચે પ્રમાણે છે-(૧) જલ, (૨) જલરય, (૩) જલકાન્ત અને (૪) જલપ્રમ. તેમના
 ઉત્પાત પર્વતોના નામ અનુક્રમે જલપ્રમ, જલરયપ્રમ, જલકાન્તપ્રમ, અને જલપ્રમ
 પ્રમ છે. આ ઉત્પાત પર્વતો પશુ અરુણોદમાં આવેલા છે ઉત્તરનિકાયના ઉદધિ
 કુમારોના ઈન્દ્ર અને ઉદધિકુમારરાય જલપ્રમના ઉત્પાતપર્વતનું નામ જલપ્રમ-
 છે. તે ઉત્પાદ પર્વત અરુણોદમાં આવેલો છે. જલપ્રમના ચાર લોકપાલોનાં
 નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) જલ, (૨) જલરય, (૩) જલપ્રમ, અને (૪) જલકાન્ત.
 તેમના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે જલપ્રમ, જલરયપ્રમ, જલપ્રમપ્રમ અને
 જલકાન્તપ્રમ છે. આ ચાર ઉત્પાતપર્વતો અરુણોદમાં આવેલા છે.

દક્ષિણનિકાયના દિક્કુમારોના ઈન્દ્ર અને દિક્કુમારરાય અમિતગતિના
 ઉત્પાતપર્વતનું નામ અમિતગતિપ્રમ છે, આ ઉત્પાતપર્વત અરુણદ્વીપમાં
 આવેલો છે અમિતગતિના લોકપાલોનાં નામ (૧) ત્વરિતગતિ, (૨)
 ક્ષિપ્રગતિ, (૩) સિંહગતિ અને (૪) સિંહવિક્રમગતિ છે. તેમના ઉત્પાતપર્વતો

તપર્વનાસ્તેષાં—ત્વરિતગતિપ્રમઃ ક્ષિપ્રગતિપ્રમઃ સિંહગતિપ્રમઃ સિંહવિક્રમગતિપ્રમ
 इति । तथा—અમિતવાહનપ્રમ ઓડીવ્યસ્ય દિવકુમારેન્દ્રસ્ય દિવકુમારરાજસ્ય અરુણ-
 દ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતોઽમિતવાહનપ્રમઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ—ત્વરિતગતિઃ ક્ષિપ્ર-
 ગતિઃ સિંહવિક્રમગતિઃ સિંહગતિશ્ચેતિ । અરુણદ્વીપસ્થિતા ઉત્પાતપર્વતાસ્ત્વેષાં—
 ત્વરિતગતિપ્રમઃ ક્ષિપ્રગતિપ્રમઃ સિંહવિક્રમગતિપ્રમઃ સિંહગતિપ્રમશ્ચેતિ । તથા—
 વેલમ્બસ્ય દાક્ષિનાત્યસ્ય વાયુકુમારેન્દ્રસ્ય વાયુકુમારરાજસ્યોત્પાતપર્વતો વેલમ્બ-
 પ્રમો નામ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ—કાલો મહાકાલઃ અજ્ઞનો રિષ્ટ ઇતિ । ઉત્પાત-
 પર્વતાસ્તુ—કાલપ્રમો મહાકાલપ્રમઃ અજ્ઞનપ્રમો રિષ્ટપ્રમ ઇતિ । તથા—પ્રમજ્ઞનસ્ય

ઉત્પાત પર્વત અરુણ દ્વીપમેં સ્થિત હૈં, इन उत्पातपर्वतोंके नाम हँ—
 त्वरितगतिप्रम १, क्षिप्रगतिप्रम २, सिंहगतिप्रम ३, एवं सिंह
 विक्रमगति प्रम ४ ।

ये इनके उत्पातपर्वत अरुणद्वीपमें स्थित हैं । दिक्कुमारैन्द्र दिक्कु-
 मारराज जो अमिन्वाहन हैं, सो इनका जो उत्पातपर्वत है उसका
 नाम अमिन्वाहनप्रम है, यह उत्तमार्धका अधिपति है, त्वरितगति,
 क्षिप्रगति, सिंहविक्रमगति, और सिंहगति इस नामके इसके लोक-
 पाल हैं । इनके उत्पातपर्वतोंके ये नाम हैं—त्वरितगति प्रम, क्षिप्रगति
 प्रम, सिंहविक्रमगतिप्रम और सिंहगतिप्रम ये चारोंही उत्पात-
 पर्वत अरुणद्वीपमें स्थित हैं । वायुकुमारैन्द्र, वायुकुमारराज जो
 वेलम्ब है उनके उत्पातपर्वतका नाम वेलम्बप्रम है, इनके लोकपा-
 लोंके नाम इस प्रकारसे हैं, काल १, महाकाल २, अज्ञन ३, एवं रिष्ट
 ४ इनके उत्पातपर्वत रूपशः कालप्रम १, महाकालप्रम २, अज्ञन-

અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે. તેમના નામ અનુક્રમે ત્વરિતગતિપ્રલ, ક્ષિપ્રગતિપ્રલ,
 સિંહગતિપ્રમ અને સિંહવિક્રમગતિપ્રમ છે. ઉત્તરાર્ધકાયના દિક્કુમારરાય અમિત-
 વાહનના ઉત્પાતપર્વતનું નામ અમિતવાહનપ્રલ છે તેમના લોકપાલોનાં નામ
 (૧) ત્વરિતગતિ, (૨) ક્ષિપ્રગતિ, (૩) સિંહગતિ છે અને સિંહવિક્રમગતિ (૪)
 તેમના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ ક્રમશઃ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ત્વરિતગતિપ્રલ,
 (૨) ક્ષિપ્રગતિપ્રમ, (૩) સિંહગતિ પ્રલ અને (૪) સિંહવિક્રમગતિપ્રલ છે.
 ઉત્પાત પર્વતો અરુણદ્વીપમાં આવેલા છે.

દક્ષિણાર્ધના વાયુકુમારોના ઈન્દ્ર અને વાયુકુમારરાજ વેલમ્બના ઉત્પાત
 પર્વતનું નામ વેલમ્બપ્રમ છે. તેમના લોકપાલોનાં નામ (૧) કાલ, (૨)
 મહાકાલ, (૩) અજ્ઞન અને (૪) રિષ્ટ છે આ ચારે લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વ-
 તોનાં નામ અનુક્રમે કાલપ્રમ, મહાકાલપ્રલ, અજ્ઞનપ્રલ અને રિષ્ટપ્રલ છે. ઉત્ત

ઔદીચ્યસ્ય વાયુકુમારેન્દ્રસ્ય વાયુકુમારરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતઃ પ્રમજ્જનપ્રમ્મ ઇતિ ।
 एतल्लोकपालास्तु कालो महाकालो रिष्टोऽञ्जन इति । उत्पातपर्वतास्त्वेषाम्-काल-
 प्रमो महाकालप्रमो रिष्टप्रमोऽञ्जनप्रम इति । तथा-घोषस्य दाक्षिणात्यस्य स्तनित-
 कुमारेन्द्रस्य स्तनितकुमारराजस्यारुणद्वीपस्थित उत्पातपर्वतो घोषप्रमः । एतल्लो-
 कपालास्तु-आवर्त्तो व्यावर्त्तो नन्धावर्त्तो महानन्धावर्त्त इति । अरुणद्वीपस्थिता
 उत्पातपर्वतास्त्वेषाम्-आवर्त्तप्रमो व्यावर्त्तप्रमो गन्धावर्त्तप्रमो महानन्धावर्त्तप्रम
 इति । तथा—महाघोषस्य ઔદીચ્યસ્ય સ્તનિતકુમારેન્દ્રસ્ય સ્તનિતકુમારરાજસ્યા-
 રુણદ્વીપસ્થિત ઉત્પાતપર્વતો મહાઘોષપ્રમ્મ ઇતિ । एतल्लोकपालास्तु-आवर्त्तो
 व्यावर्त्तो महानन्धावर्त्तो नन्धावर्त्त इति । अरुणद्वीपस्थिता उत्पातपर्वतास्त्वेषाम्-

પ્રમ ૩, ઔર રિષ્ટપ્રમ હૈ, વાયુકુમારેન્દ્ર વાયુકુમારરાજ જો પ્રમજ્જન
 હૈ, उनका उत्पातपर्वत प्रमज्जन प्रम हॆं, इनके लोकपाल चारहॆं-उनके
 नाम इस प्रकारसे हॆं-काल १, महाकाल २, रिष्ट ३ एवं अञ्जनप्रम ४ ये
 प्रमज्जन उत्तरार्धके अभिपत्ति हॆं । स्तनितकुમારેન્દ્ર સ્તનિતકુમાર રાજ
 જો ઘોષ હૈ, उनके उत्पातपर्वतका नाम इस प्रकारसे हॆं-आवर्त्त १,
 व्यावर्त्त २, नन्धावर्त्त ३ और महानन्धावर्त्त ४, घोषका उत्पात पर्वत
 अरुण द्वीपमें स्थित है । तथा लोकपालोंके ये चार आवर्त्तप्रम, व्यावર્त्त
 પ્રમ ૨, નન્ધાવર્ત્ત પ્રમ ૩ एवं મહાનન્ધાવર્ત્ત પ્રમ જો ચાર ઉત્પાત પર્વતહૈ
 વે મી અરુણ દ્વીપમૈંહી સ્થિત હૈ । સ્તનિતકુમારેન્દ્ર एवं સ્તનિતકુમાર
 રાજ જો મહાઘોષહૈ, उनका उत्पातपर्वत महाघोष नामका है इनके जो
 लोकपाल हॆं वे इस नामके हॆं-आवर्त्त १, व्यावर्त्त २ महानन्धा-

સાર્ધના વાયુકુમારેન્દ્ર વાયુકુમારરાજ પ્રમજ્જનના ઉત્પાત પર્વતનું નામ પ્રમજ્જન
 પ્રમ છે. તેમના ચાર લોકપાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) કાલ, (૨) મહા-
 કાલપ્રમ, (૩) રિષ્ટ અને (૪) અંજન. તેમના ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ અનુક્રમે
 કાલપ્રમ, મહાકાલપ્રમ, રિષ્ટપ્રમ અને અંજનપ્રમ છે.

દક્ષિણાર્ધના સ્તનિતકુમારેન્દ્ર સ્તનિતકુમારરાજ ઘોષના ઉત્પાતપર્વતનું
 નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) આવર્ત, (૨) વ્યાવર્ત (૩) નન્ધાવર્ત અને (૪)
 મહાનન્ધાવર્ત. ઘોષનો ઉત્પાતપર્વત અરુણદ્વીપમાં આવેલો છે અને તેના
 લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતો પણ અરુણદ્વીપમાં જ છે. આવર્ત આદિ લોકપા-
 લોના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે આવર્તપ્રમ, વ્યાવર્તપ્રમ, નન્ધાવર્તપ્રમ,
 અને મહાનન્ધાવર્તપ્રમ છે. ઉત્તરાર્ધના સ્તનિતકુમારેન્દ્ર સ્તનિતકુમારરાજ મહા
 ઘોષના ઉત્પાત પર્વતનું નામ મહાઘોષપ્રમ છે. તેમના લોકપાલોનાં નામ (૧)
 આવર્ત, (૨) વ્યાવર્ત, (૩) મહાનન્ધાવર્ત અને (૪) નન્ધાવર્ત છે. તેમના

“असुराणां नागाणां, उदद्विकुमारणं हौति आवासाः ।

दीपदिसा अग्नीणं, यणियकुमाराण हौति आवासाः ।

छाया—अमुराणां नागानाम्, उदधिकुमाराणां भवन्त्यावासाः ।

द्वीपदिगम्भीनां, स्तनितकुमाराणां भवन्त्यावासाः ।

अरुणवरे द्वीपे तु, तत्रैव च तेषामुत्पाताः ॥ २ । इति ।

वर्त्त ३ और नन्दावर्त्त ४ इन चार लोकपालोंके आवर्त्तप्रभ १, व्यावर्त्त प्रभ २, महानन्दावर्त्त प्रभ एवं नन्दावर्त्त प्रभ नामके चार पर्वत हैं, स्तनितकुमारका उत्पातपर्वत और इनके लोकपालोंके उत्पात पर्वत ये सब अरुण द्वीपमें ही स्थित हैं। ये उत्पातपर्वत स्थानोंको आश्रित करके इस प्रकारसे कहे गये जनना चाहिये--

इन गाथाओंका अर्थ साष्ट है, इस प्रकार भवनपतियोंके और उनके लोरुपालोंके पर्वत कहे अथ वैमानिकोंके उत्पातपर्वतोंके सम्बन्धमें कहा जाता है—“सकस्त” इत्यादि।

देवेन्द्र देवराज शरुके उत्पान पर्वतका नाम शक्रप्रभ है, यह शक्र

આ ઉત્પાતપર્વતોનું સ્થાન હરીવતી ગાથાઓ નીચે પ્રમાણે છે—

“અસુરાણં નાગાણં” ઇત્યાદિ—આ ગાથાઓનો અર્થ ઉપરના લખાણમાં સ્પષ્ટ થઈ ચુક્યો છે.

આ રીતે ભવનપતિ દેવાના ૨૦ ઇન્દ્રો, તેમના ઉત્પાત પર્વતો, તેમના લોકપાલો અને તે લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર વૈમાનિકેનાઉત્પાત પર્વતોનું કથન કરે છે-

“सक्त्स्” इत्यादि—देवेन्द्र देवराज शक्तिता उत्पात पर्वतनुं नाम शक्तिप्रभ

પર્વતઃ શક્રપ્રભનામકઃ । તલ્લોકપાલાનાં સોમયમવરુણવૈશ્રવણાનામુત્પાતપર્વતાઃ
સોમપ્રભ-યમપ્રભ-વરુણપ્રભ-વૈશ્રવણપ્રભનામાનઃ । શક્રસ્યોત્પાતપર્વતસ્ય યત્પ્રમાણં
તદેવ પ્રમાણં તલ્લોકપાલોત્પાતપર્વતાનામપિ બોધ્યમ્ । કુણ્ડલવરદ્વીપસ્થિતકુણ્ડ-
લપર્વતે દક્ષિણતઃ શક્રેન્દ્રસ્ય પોઢશ રાજધાન્યઃ સન્તિ, તાસુ ચતસૃણાં ચતસૃણાં
રાજધાનીનાં મધ્યે શક્રસ્ય ચતુર્ણાં લોકપાલાનામુત્પાતપર્વતા યથાક્રમં બોધ્યાઃ ।
તથા-ઈશાનસ્ય ઔદીચ્યસ્ય દેવેન્દ્રસ્ય દેવરાજસ્ય ઉત્પાતપર્વતઃ ઈશાનપ્રભનામકઃ ।
સ ચ શક્રોત્પાતપર્વતપ્રમાણઃ । તલ્લોકપાલાનાં સોમયમવશ્રવણવરુણાનામુત્પાત-

દક્ષિણ દિશાકા અધિપતિ હૈ, હસકે ચાર લોકપાલ હૈ-જિનકે નામ
હસ પ્રકારસે હૈ-સોમ ૧, યમ ૨, વરુણ ૩, ઓર વૈશ્રવણ હનકે ખી
અપને ૨ ઉત્પાત પર્વત હૈ-જિનકા નામ-સોમપ્રભ ૧ યમપ્રભ ૨ વરુણ-
પ્રભ ૩ ઓર વૈશ્રવણપ્રભ ૪ હમ પ્રકારસે હૈ, શક્રકે ઉત્પાતપર્વતકા
જો પ્રમાણ હૈ વહી પ્રમાણ હસકે લોકપાલોકે ઉત્પાતપર્વતોકા હૈ,
કુણ્ડલવરદ્વીપમેં સ્થિત જો કુણ્ડલ પર્વત હૈ હસ કુણ્ડલપર્વત પર
દક્ષિણ દિશાકી ઓર શક્રેન્દ્રકી ૧૬ રાજધાનિયાં હૈ । હનમેંસે ચાર
ચાર રાજધાનિયોકે બીચમેં શક્રકે ચાર ૨ લોકપાલોકે ઉત્પાતપર્વત
યથાક્રમસે જાનના ચાહિયે, તથા-દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનકા જો ઉત્પાત
પર્વત હૈ, હસકા નામ ઈશાન પ્રભ હૈ, યહ ઈશાન ઉત્તર દિશાકા અધિ-
પતિ હૈ. હસકે ઉત્પાતપર્વતકા પ્રમાણ શક્રકે ઉત્પાતપર્વતકે જૈસા
હૈ, હસકે ખી જો લોકપાલ હૈ, હનકા નામ ખી સોમ, યમ વૈશ્રવણ

છે. શક્ર દક્ષિણાર્ધના અધિપતિ છે. તેના ચાર લોકપાલાનાં નામ નીચે પ્રમાણે
છે-(૧) સોમ, (૨) યમ, (૩) વરુણ અને (૪) વૈશ્રવણ. તે ચારે લોકપાલોના
ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ હવે ક્રમશઃ પ્રકટ કરવામાં આવે છે-(૧) સોમપ્રભ, (૨)
યમપ્રભ, (૩) વરુણપ્રભ અને (૪) વૈશ્રવણપ્રભ. શક્રના ઉત્પાત પર્વતનું જે પ્રમાણ
આ સૂત્રમાં આગળ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે, એટલું જ તેના લોકપાલોના
ઉત્પાત પર્વતોનું પ્રમાણ પણ સમજવું. કુંડલવર દ્વીપમાં જે કુંડલપર્વત છે તે
કુંડલપર્વત પર દક્ષિણ દિશા તરફ શક્રેન્દ્રની ૧૬ રાજધાનીઓ છે. તેમાંની ચાર
ચાર રાજધાનીઓની વચ્ચે શક્રના ચાર લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોનાં ક્રમશઃ
આવેલા છે. એમ સમજવું. ઉત્તર દિશાના અધિપતિ દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનના
ઉત્પાત પર્વતનું નામ ઈશાનપ્રભ છે. આ ઈશાનપ્રભ ઉત્પાતપર્વતનું પ્રમાણ
શક્રના શક્રપ્રભ ઉત્પાત પર્વતના જેવું જ છે. દેવેન્દ્ર દેવરાજ ઈશાનના ચાર લોક-
પાલોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) સોમ, (૨) યમ, (૩) વૈશ્રવણ અને (૪)

પર્વતાઃ સોમપ્રમપ્રમપ્રમ-વૈશ્રવણપ્રમ-વરુણપ્રમનામાનો બોધ્યાઃ । એતે પર્વતાઃ કુણ્ડલવરદ્વીપસ્ય કુણ્ડલપર્વતે ઉત્તરતઃ ઈશાનેન્દ્રસ્ય યાઃ પોડશરાજધાન્યઃ સન્તિ, તાસુ શકલોરુપાલોત્પાતપર્વતવદ્ બોધ્યાઃ । એતેવાં પર્વતાનાં પ્રમાણં શકોત્પાત-પર્વતવદ્ બોધ્યમ્ । યથા શકસ્યોત્પાતપર્વતપ્રમાણં તથૈવ સલોકપાલ્યાનાં સનત્કુમારાચચ્યુતાન્તાનામિન્દ્રાણામપ્યુત્પાતપર્વતપ્રમાણં બોધ્યમ્ । એતમેવાર્થં મનસિ કૃત્વાદ-‘સકસ્ય ણં દેવિદંસ દેવરણ્ણો’ ઇત્યાદિ । તત્ર દાક્ષિણાત્યાનાં સનત્કુમાર-બ્રહ્મ-મહાશુકાશ્યાનાં દેવેન્દ્રાણામુત્પાતપર્વતાઃ સનત્કુમારપ્રમ-બ્રહ્મપ્રમ-

और वरुण है, इनके उत्पानपर्वतोंका नाम सोमप्रम, यमप्रम, वैश्र-वणप्रम और वरुणप्रम है, ये उत्पान पर्वत कुण्डलवर द्वीपके कुण्डल पर्वत पर उत्तर दिशाकी ओर ईशानेन्द्रकी जो १६ राजधानियाँ हैं उसमें शकके लोरुपालोंके उत्पात पर्वतोंकी तरह उत्पात पर्वत जानना चाहिये, तथा इन पर्वतोंका प्रमाण भी शकके उत्पान पर्वतके जैसा समझना चाहिये ।

जैसा शकके उत्पात पर्वतका प्रमाण है, वैसा ही प्रमाण लोकपाल सहित सनत्कुमार आदि अच्युत तकके इन्द्रोंके उत्पान पर्वतोंका प्रमाण है, ऐसा जानना चाहिये, इसी बातको मनमें धारण कर अत्र सूत्रकार “सकस्य णं देविदंस देवरण्णो” इत्यादि सूत्रका कथन करते हैं—दक्षिण दिशाकी ओर रहनेवाले जो सनत्कुमार, ब्रह्म, एवं महाशुक नामके देवेन्द्र हैं, सो उनके उत्पातपर्वतोंके क्रमशः नाम इस प्रकारसे है—सनत्कुमारप्रम, ब्रह्मप्रम, और महाशुकप्रम.

वरુણ. તે અ.ર લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોનાં નામ અનુક્રમે સોમપ્રમ, યમપ્રમ, વૈશ્રવણપ્રમ અને વરુણપ્રમ છે કુંડલવર દ્વીપમાં કુંડલપર્વતની ઉત્તર દિશા તરફ ઇશાનેન્દ્રની જે ૧૬ રાજધાનીઓ આવેલી છે, તેમાં શકના લોક-પાલોના ઉત્પાત પર્વતોની જેમ ઇશાનેન્દ્રના લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતો પણ આવેલા છે. તે ઉત્પાત પર્વતોનું પ્રમાણ શકના ઉત્પાતપર્વતોના પ્રમાણ જેવું જ સમજવું.

સનત્કુમારથી લઈને અચ્યુત પર્યન્તના ઇન્દ્રોના અને તેમના લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતોનું પ્રમાણ પણ શકના ઉત્પાત પર્વતના પ્રમાણ જેવું જ સમજવું. એજ વાત સૂત્રકારે “સકસ્ય ણં દેવિદંસ દેવરણ્ણો” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે.

આ કથનનું હવે વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—દાક્ષિણાત્ય ઇન્દ્રાનાં નામ સનત્કુમાર, બ્રહ્મ, અને મહાશુક છે. તેમની ઉત્પાત પર્વતોનાં નામ ક્રમશઃ શકપ્રમ, સનત્કુમારપ્રમ, બ્રહ્મપ્રમ અને મહાશુકપ્રમ છે શકના ઉત્પાત

મહાશુક્રપમારુયા વોધ્યાઃ । એતલ્લોકપાલાસ્તુ શક્રલોકપાલતુલ્યાઃ અત ષ્વામુત્પાત-
પર્વતાસ્તદુત્પાતપર્વતતુલ્યા એવ વોધ્યાઃ । તથા-ઔદીચ્યાનાં માહેન્દ્ર-લાન્તક-
સહસ્રાર-પ્રાણતાચ્યુતાનાં દેવેન્દ્રાણામુત્પાતપર્વતાઃ માહેન્દ્રપ્રમ-લાન્તકપ્રમ-
સહસ્રારપ્રમ-પ્રાણાતપમાચ્યુતપ્રમામાનો વોધ્યાઃ । એતેષાં લોકપાલા લોકપાલો-
ત્પાતપર્વતાશ્ચ શક્રેન્દ્રલોકપાલાનામિવ વોધ્યાઃ, અતએવાહ-‘ સન્વેર્સિ પમાણ-
મેગં ’ ઇતિ સર્વેષાં તુલ્યં પ્રમાણમિત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૯ ॥

યોજનસદસ્રાધિકારાત્ યોજનસદસ્રાત્મિકાં શરીરાવગાહનાં પ્રરૂપયતિ—

મૂળમ્—ત્રાપરવગસસદ્કાઙ્યાણં ઉક્લોસેણં દસ જોયળસયાઈ
સરીરોગાહના પળગતા । જલયમ્પાંચિદિયતિરિક્ષજોણિયાણં
ઉક્લોસેણં દસ જોયળપયાઈ સરીરોગાહના પળગતા । ઉપારિસ-
પ્પથલયરપંચિદિયતિરિક્ષજોણિયાણં ઉક્લોસેણં એવં ચેવ ॥સૂ.૩૦॥

તથા-इनके जो लोकपाल हैं वे शक्रके लोकपाल जैसे हैं-इसलिये
इनके उत्पातपर्वत शक्रके लोकपालोंके जैसे ही हैं । तथा-उत्तर
दिशामें रहनेवाले जो-माहेन्द्र, लान्तक, सहस्रार-प्राणत एवं अच्युत
देवेन्द्र हैं-सो उनके उत्पातपर्वतोंके नाम क्रमशः इस प्रकारसे हैं-
माहेन्द्रप्रभ १, लान्तकप्रभ २, सहस्रारप्रभ ३, प्राणतप्रभ ४, और
अच्युतप्रभ तथा इनके जो लोकपाल हैं, और इन लोकपालोंके जो
उत्पातपर्वत हैं सो यह सब कथन शक्रेन्द्रके लोकपालों एवं इनके
उत्पात पर्वतोंके जैसा ही है-ऐसा जानना चाहिये । इसी बातको
लेकर सूत्रकारने “ सन्वेर्सि पमाणमेगं ” ऐसा पाठ कहा है । सूत्र २९॥

પર્વત અને લોકપાલોનાં નામ આગળ આપવામાં આવ્યાં છે. આકીના ત્રણે
દાક્ષિણાત્ય દેવેન્દ્રોના લોકપાલોનાં નામ શકના લોકપાલોના જેવાં જ છે, અને
તેમના ઉત્પાતપર્વતો પણ શકના લોકપાલોના ઉત્પાતપર્વતો જેવાં છે. ઉત્તર
દિશામાં રહેતા દેવેન્દ્રોનાં નામ ઈશાન માહેન્દ્ર, લાન્તક, સહસ્રાર, પ્રાણુત અને
અચ્યુત છે. તેમના ઉત્પાતપર્વતોના નામ અનુક્રમે ઈશાનપ્રભ, માહેન્દ્રપ્રભ,
લાન્તકપ્રભ, સહસ્રારપ્રભ, પ્રાણુતપ્રભ અને અચ્યુતપ્રભ છે તેમના લોકપાલોના
નામ શકેન્દ્રના લોકપાલોનાં નામ જેવાં જ છે. તે લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોનાં
નામ, પ્રમાણુવગેરે શકના લોકપાલોના ઉત્પાત પર્વતોના કથન અનુસાર જ સમજવું.
એજ વાત સૂત્રકારે “સન્વેર્સિ પમાણમેગં” આસૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે. ॥સૂત્ર.૨૬॥

હાયા—વાદરવનસ્પતિકાયિકાનામ્ ઉત્કર્ષેણ દશયોજનશતાનિ શરીરાવગાહના પ્રજ્ઞતા । જલચરપંચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનામ્ ઉત્કર્ષેણ દશયોજનશતાનિ શરીરાવગાહના પ્રજ્ઞતા । ઉરઃપરિસર્પસ્થલચરપંચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનામ્ ઉત્કર્ષેણ એવમેવ ॥ સૂ. ૩૦ ॥

ટીકા—‘વાયરવણસ્સહકાશ્યાણં’ ઇત્યાદિ—

વાદરવનસ્પતિકાયિકાના—વાદરા:=સ્થૂળા જે વનસ્પતિકાયિકા સ્તેપાં શરીરાવગાહના ઉત્કર્ષેણ દશયોજનશતાનિ=અઠસદસ્યયોજનાનિ પ્રજ્ઞતા । વાદરેતિ વિશેષણં સૂક્ષ્મવ્યાપ્ત્યર્થમ્ । સૂક્ષ્માણાં શરીરાવગાહના તુ અઠ્ઠગુલાસંખ્યેયમાગમાત્રપ્રમાણા । इदं शरीरावगाहनाप्रमाणमुत्सेवाङ्गुलमानेन गृह्यते, न तु प्रमा-

યે યોજન સહસ્રકે અધિકારકો લેકર અવ સૂત્રકાર યોજન સહ-
સ્રાત્મિક જો શરીરકી અવગાહના હૈ—અલકા કથન કરતે હૈ—

“વાયરવણસ્સહકાશ્યાણં” ઇત્યાદિ । સૂત્ર ૩૦ ॥

ટીકાર્થ—વાદર વનસ્પતિકાયિકા જીવોંકી શરીરાવગાહના ઉત્કૃષ્ટસે ૧ હજાર યોજનકી કહી ગઈ હૈ, જલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવોંકી શરીરાવગાહના ઉત્કૃષ્ટસે ૧ હજાર યોજનકી કહી ગઈ હૈ, ઉરઃપરિસર્પ સ્થલચર પંચેન્દ્રિયતિર્યંચોંકી શરીરાવગાહના ઉત્કૃષ્ટસે ૧ હજાર યોજનકી કહી ગઈ હૈ, સ્થૂલ જો વનસ્પતિકાયિકા જીવ હૈ, યે વાદરવનસ્પતિકાયિકા જીવ હૈં યહાં વાદરવિશેષણ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકા જીવોંકી વ્યાપૃત્તિકે લિયે દિયા ગયા હૈ, ક્યોંકિ સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકા જીવોંકી અવગાહના અઠ્ઠગુલકે અસંખ્યાતયેં ભાગ પ્રમાણ કહી ગઈ હૈ, યહ શરીરાવગાહના

પૂર્વસૂત્રમાં હજાર યોજનના પ્રમાણવાળા ઉત્પાત પર્વતોની તાત કરવામાં આવી. હવે સૂત્રકાર હજારયોજનની અવગાહનાવાળાં જે શરીરો છે તેમનું નિરૂપણ કરે છે—“વાયરવણસ્સહકાશ્યાણં” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૦)

ટીકાર્થ—આદર વનસ્પતિકાયિકોના શરીરની ઉત્કૃષ્ટ (અધિકમાં અધિક) અવગાહના એક હજાર યોજનની કહી છે. જળચર પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ જીવોની શરીરાવગાહના વધારેમાં વધારે એક હજાર યોજનની કહી છે. ઉરઃપરિસર્પ સ્થલચર પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોની ઉત્કૃષ્ટ શરીરાવગાહના એક હજાર યોજનની કહી છે.

જે સ્થૂલ વનસ્પતિકાયિક જીવો છે તેમને આદરવનસ્પતિકાયિક જીવો કહે છે. અહીં સૂક્ષ્મવનસ્પતિકાયિક જીવોની વ્યાપૃત્તિને નિમિત્ત (તેમનું અહંશ કરવાનું ન હોવાથી) સ્થૂલ વિશેષણ લગાડવામાં આવ્યું છે, કારણ કે સૂક્ષ્મ વનસ્પતિકાયિકોની અવગાહના આંગળના અસંખ્યાતમાં ભાગપ્રમાણ જે કહી

ગાઙ્ગુલમાનેન । તદુક્તમ્-‘ ઉત્સેહપમાણા ડ મિણે દેહ ’ છાયા-ઉત્સેહપમાણાદ્ મિત્રુયાદ્ દેહમ્ ’ ઇતિ । શરીરાવગાહનાતુ યેષુ પ્રદેશેષુ શરીરઅવગાઢં સા । નાદર-વનસ્પતિકાધિકાનામિયં શરીરાવગાહના તથાવિધમહાનદાદિસ્થિતપદ્મનાલાપે-ક્ષયા વિજ્ઞેયેતિ । એવમેવ જલચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનામ્, ડર:પરિસર્પસ્થલ-ચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં ચ શરીરાવગાહના વિજ્ઞેયા । ‘ જલચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોનિકાનામ્ ’ ઇત્યત્ર જલચરા મત્સ્યા:, તે ચ ગર્ભજા: સંમૂર્ચ્છિમાશ્ચ સંમૂહ્યન્તે । તદુક્તમ્-‘ મચ્છજુયલે સહસ્તં ’ છાયા-મત્સ્યયુગલે સહસ્તમ્ ’ ઇતિ । એતે ચ સ્વયંભૂરમણે સમુદ્ર એવ ભવન્તીતિ । તથા-ડર:પરિસર્પસ્થલચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિ-યતિર્યગ્યોનિકાસ્તુ ગર્ભજા મહોરગા બોધ્યા: । તદુક્તમ્-“ ડરગેસુ ગર્ભજાએસુ ”

પ્રમાણ ઉત્સેધાઙ્ગુલ પ્રમાણસે ગૃહીત હુઆ હૈ, પ્રમાણાઙ્ગુલકે પ્રમાણસે નહીં ક્યોંકિ-“ ઉત્સેહપમાણા ડ મિણે દેહ ” શરીરાવગાહનાકા પ્રમાણ ઉત્સેધકે પ્રમાણસે નાપના ચાહિયે એસા કહા ગયા હૈ, જિન પ્રદેશોમેં શરીર અવગાઢ હોના હૈ, વહ શરીરાવગાહના હૈ, વાદર વનસ્પતિકાધિ-કોંકી યહ શરીરાવગાહના તથાવિધ મહાનદ આદિમેં સ્થિત પદ્મનાલ (કમલનાલ) કી અપેક્ષાસે કહી ગઈ જાનના ચાહિયે “ જલચર પદ્મચ્ચેન્દ્રિય ” ઇત્યાદિમેં જલચરસે મત્સ્ય-જીવ ગૃહીત હુએ હૈં એ મત્સ્ય ગર્ભજા ઔર સંમૂર્ચ્છિમ દોનોં પ્રકારકે કિયે ગયે હૈ, ક્યોંકિ-“ મચ્છજુયલે સહસ્તં ” મત્સ્ય યુગલમેં એક હજાર યોજનકી અવગાહના હૈ, એસા પાઠ હૈ, એ મત્સ્ય સ્વયંભૂરમણ સમુદ્રમેં હી હોતે હૈં ।

તથા-ડર:પરિસર્પસ્થ જો સ્થલચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્ય હૈં વે યહાં

આ શરીરાવગાહના પ્રમાણ ઉત્સેધાંગુલ પ્રમાણની અપેક્ષાએ અહણુ થયું છે-પ્રમા-ણાંગુલના પ્રમાણ વડે અહણુ થયું નથી, કારણ કે “ ઉત્સેહપમાણા ડ મિણે દેહ ” “ શરીરાવગાહનાતું પ્રમાણ ઉત્સેધના પ્રમાણ વડે માપવું જોઈએ, ” એવું કહેવામાં આવ્યું છે. જે પ્રદેશોમાં શરીર અવગાઢ હોય છે તે પ્રદેશોને શરીરાવગાહના કહે છે બાદરવનસ્પતિકાધિકોની આ ઉદ્કૃષ્ટ શરીરાવગાહના તથાવિધ મહાનદ આદિમાં સ્થિત પદ્મનાલ (કમલનાલ) ની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવી છે એમ સમજવું. “ જલચરપદ્મચ્ચેન્દ્રિય ” આ કથન દ્વારા મત્સ્યોને જળચરજીવોરૂપે અહણુ કરવામાં આવ્યાં છે અહીં ગર્ભજા અને સંમૂર્ચ્છિમ, આ બન્ને પ્રકારના મત્સ્યો અહણુ કરાયા છે, કારણ કે “ મચ્છજુયલે સહસ્તં ” મત્સ્ય યુગલની શરીરાવ-ગાહના ૧૦૦૦ યોજનની હોય છે, ” એવું શાસ્ત્રવાક્ય છે. આ મત્સ્યો સ્વયં-ભૂરમણસમુદ્રમાં જ હોય છે.

તથા અહીં જે ડર:પરિસર્પસ્થ સ્થલચર પદ્મચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યની શરીરાવ-

છાયા-उरगेषु गर्भजातेषु-इति । एते तु वाह्यद्वीपेषु जलनिश्रिता भवन्तीति ॥ सू० ३० ॥

एवंविधार्थप्ररूपकाश्च जिना भवन्तीति तत्सम्बन्धिकं सूत्रमाह—

सूत्रम्—संभवाओ णं अरहाओ अभिणंदणे अरहा दसहिं
सागरोपमकोटिसप्तहस्सेहिं वीइकंतेहिं समुप्पन्ने ॥ सू. ३१ ॥

छाया—संभवात् खलु अर्हतः अभिनन्दनोऽर्हन् दशसु सागरोपमकोटिशत-
सहस्रेषु व्यतिक्रान्तेषु समुत्पन्नः ॥ सू० ३१ ॥

टीका—‘ संभवाओ णं ’ इत्यादि ।

व्याख्या स्पष्टा । नवरं-सागरोपमकोटिशतसहस्रेषु = सागरोपमकोटिलक्षे
इति ॥ सू० ३१ ॥

उक्तप्रમાणा अवगाહनादयस्तदितरे च पदार्था जिनेरनन्ता दृष्टा इत्यनन्तं
गर्भज ही लिये ગયે હૈં । “ उરગેસુ ગર્ભજાણસુ ” ક્યોંકિ એસી વહી
અવગાહના ગર્ભજ ઉરગોંમેં હી હોંની હૈ, યે ગર્ભજ ઉરગ વાહ્યદ્વીપોંમેં
જલ નિશ્રિત જલાશ્રિત હોતે હૈં ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

इस प्रकारके अर्थके प्ररूपक जिनहोतेहैं—अब सूत्रकार जिन सम्बन्धी
सूत्रका कथन करते हैं—

“ संभवाओ णं अरहाओ ” इत्यादि ॥ सूत्र ३१ ॥

टीકાર્થ-સંભવનાથ અર્હન્તસે અભિનન્દન અર્હન્ ૧૦ લાખ સાગરોપમ
કોટિ સમાપ્ત હો જાને પર ઉપ્પન્ન હુવે હૈં ॥ સૂત્ર ૩૧ ॥

उक्त प्रमाणवाले अवगाहनादिक पदार्थ भौर इनसे भिन्न पदार्थ

ગાહનાની વાત કરવામાં આવી છે તે ગર્ભજના વિષયમાં જ કરવામાં આવી છે,
એમ સમજવું. “ ઉરગેસુ ગર્ભજાણસુ ” કારણ કે એટલી બધી વિશાળ અવ-
ગાહનાનો સદ્ભાવ માત્ર ગર્ભજ ઉરગોમાં જ હોય છે. તે ગર્ભજ ઉરગો
બાહ્યદ્વીપોમાં જલનિશ્રિત (જળમાં રહેતા) હોય છે. ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

આ પ્રકારના અર્થના પ્રરૂપક જિનેન્દ્ર ભગવાનો હોય છે, તેથી હવે
સૂત્રકાર જિનેન્દ્ર ભગવાન સંબંધી સૂત્રનું કથન કરે છે—

“ સંભવાओ णं अरहाओ ” इत्यादि—(सू. ३१)

टीकार्थ-સંભવનાથ અર્હન્તને થઈ ગયાને ૧૦ લાખ સાગરોપમ કોટિ સમાપ્ત
થઈ ગયા બાદ અભિનન્દન અર્હન્ત ઉત્પન્ન થયા હતા. ॥ સૂત્ર. ૩૧ ॥

ઉપર્યુક્ત પ્રમાણવાળા અવગાહનાદિક પદાર્થોને તથા તે સિવાયના પણ અનેક

દશમિઃ સ્થાનેરાહ—

મુદ્-દસવિદે અણંતપ્ પળ્લત્તે, તં જહા-ણામાણંતપ્ ૧,
ઠવણાણંતપ્ ૨, દ્વવણાણંતપ્ ૩, ગણણાણંતપ્ ૪, પ્ણસાણંતપ્
૫, ઇગઓડણંતપ્ ૬, દુહઓડણંતપ્ ૭, દેસવિત્થારાણંતપ્ ૮,
સઠ્ઠવિત્થારાણંતપ્ ૯, સાસયાણંતપ્ ૧૦ ॥ સૂ. ૩૨ ॥

જ્ઞાયા—દશવિધમનન્તકં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-નામાનન્તકં, ૧ સ્થાપનાનન્તકં ૨,
દ્રવ્યાનન્તકં ૩, ગણનાનન્તકં ૪, પ્રદેશાનન્તકમ્ ૫, એકતોડનન્તકં ૬, દ્વિધાતોડ-
નન્તકં ૭, દેશવિસ્તારાનન્તકં ૮, સર્વવિસ્તારાનન્તકં ૯, શાશ્વતાનન્તકમ્ ૧૦ ॥ સૂ. ૩૨ ॥

ટીકા—‘દસવિદે’ ઇત્યાદિ—

અનન્તકમ્—અનન્તમેવ મનન્તકં દશવિધં પ્રજ્ઞસમ્, તથા નામાનન્તકમિત્યાદિ ।
તત્ર-અનન્તકમ્-ઇત્યેવા યા નામધૂતા વર્ણાનુપૂર્વી સા નામાનન્તકમ્ । યદ્વા-
જિનેન્દ્રોને અનન્તરૂપસે દેલેલે—અતઃ અવ સૂત્રકાર દશ સ્થાનાસે અનન્તકા
કથન કરતે હૈ—“દસવિદે અણંતપ્ પળ્લત્તે” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

ટીકાર્થ—અનન્ત ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ—જૈસે—નામાનન્તક ૧ સ્થાપ-
નાનન્તક ૨ દ્રવ્યાનન્તક ૩, ગણનાનન્તક ૪ પ્રદેશાનન્તક ૫ એકતોડ-
નન્તક ૬ દ્વિધાતોડનન્તક ૭ દેશવિસ્તારાનન્તક ૮ સર્વવિસ્તારાનન્તક
૯ ઓર શાશ્વતાનન્તક ૧૦ ।

અનન્તહી અનન્તક હૈ યહ અનન્તક જો ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા
હૈ, ડસકા તાત્પર્ય ઇસ પ્રકારસે હૈ—“અનન્તક” ઇસ નામવાલી જો
વર્ણાનુપૂર્વી હૈ—વહ નામાનન્તક હૈ ।

પદાર્થોને જિનેન્દ્રોએ અનન્તરૂપે જોયાં છે તેથી હવે સૂત્રકાર ૧૦ પ્રકારના
અનન્તક નિરૂપણ કરે છે—“દસવિદે અણંતપ્ પળ્લત્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૨)

ટીકાર્થ—અનન્તના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) નામાનન્તક
(૨) સ્થાપનાનન્તક, (૩) દ્રવ્યાનન્તક, (૪) ગણનાનન્તક, (૫) પ્રદેશાનન્તક, (૬)
એકતઃઅનન્તક, (૭) દ્વિધાતઃઅનન્તક, (૮) દેશવિસ્તારાનન્તક, (૯) સર્વવિસ્તારા
નન્તક અને (૧૦) શાશ્વતાનન્તક.

અનન્ત જ અનન્તક રૂપ છે. તેના ૧૦ પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે.

“અનન્તક” આ નામવાળી જે વર્ણાનુપૂર્વી છે તેનું નામ ‘નામાનન્તક’
છે. અથવા—જે સચેતન આદિ પદાર્થોને “અનન્તક” એવી સંજ્ઞા વડે ઓળખ-

યસ્ય સથેતનાદેઃ પદાર્થસ્ય અનન્તરૂપિતિ સંજ્ઞા ક્રિયતે સ નામાનન્તકમિતિ ૧।
 સ્થાપનાનન્તકમ્-અક્ષાદી યદનન્તરૂપિનિ સ્થાપના ક્રિયતે, નદક્ષાદિકં સ્થાપના-
 નન્તરૂપ ૨। દ્રવ્યાનન્તકમ્-દ્રવ્યાણાં=જીવદ્રવ્યાણાં પુદ્ગલદ્રવ્યાણાં વા યદનન્ત-
 ત્વં તન્ ૩। ગણનાનન્તકમ્ ગણના=સંખ્યાનં, -તલ્લક્ષણમનન્તકમ્-અવિવક્ષિનાભા-
 દિસંખ્યેયવિષયઃ સંખ્યાવિશેષ इत्यर्थः ૮। પ્રદેશાનન્તકમ્-આકાશપ્રદેશાનામાન-
 ન્ત્યમ્, અગ્નિઆકાશપ્રદેશાનામાનન્ત્યમ્ ૫। એકનોડનન્તકમ્=અતીતાદ્વા અનાગ-
 તાદ્વા વા ૬। દ્વિધાતોડનન્તકમ્-સર્વાદ્વા ૭। દેશવિસ્તારાનન્તકમ્-એક આકાશ-
 પ્રતરઃ । इदमलोकाकाशापेक्षया बोध्यम् ૮। સર્વવિસ્તારાનન્તકમ્=સર્વાકાશાસ્તિ
 કાયઃ ૯ શાશ્વતાનન્તકમ્=અક્ષયં જીવાદિદ્રવ્યમ્ ૧૦ ડતિ ॥ મુ. ૩૨ ॥

અથવા-જિન સત્ત્વેનન આદિ પદાર્થની “અનન્તક” એવી સંજ્ઞાની
 જાતી છે, વહ નામાનન્તક છે, અક્ષ આદિકોંમેં જો યહ અનન્તક છે,
 એવી સ્થાપનાની જાતી છે, વહ સ્થાપનાનન્તક છે, જીવ દ્રવ્યોંમેં અથવા
 પુદ્ગલ દ્રવ્યોંમેં જો અનન્તતા છે વહ દ્રવ્યાનન્તક છે, સંખ્યારૂપ
 જો અનન્તતા છે વહ ગણનાનન્તક છે, યહ ગણનાનન્તક એવી સંખ્યા વિશે
 ષરૂપ હોના છે. કિ જિસમેં અણુ આદિ સંખ્યા વિશેષ અવિવક્ષિત હોના છે
 આકાશ પ્રદેશોંની જો અનન્તતા છે, વહ પ્રદેશાનન્તક છે, યહ પ્રદેશા-
 નન્તકતા અલોકાકાશકે પ્રદેશોંની અપેક્ષાસે કહી ગઈ છે અતીતાદ્વા
 અથવા અનાગતાદ્વા રૂપ એકનોડનન્તક સર્વાદ્વારૂપ દ્વિધાનોડનન્તક છે,
 એક આકારા પ્રતર દેશ વિસ્તારાનન્તક છે યહ અલોકાકાશકો અપેક્ષાસે
 જાનના ચાહિયે. સર્વાકાશ રૂપ જો અસ્તિકાય છે, વહ સર્વ વિસ્તારા-
 નન્તક છે, અક્ષય જો જીવાદિ દ્રવ્ય છે, વહ શાશ્વતાનન્તક છે ૧૦ ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

અવામાં આવે છે, તેને પણ નામાનન્તક કહે છે. અક્ષ આદિકોમાં જે આ અનન્તક
 છે,” એવી સ્થાપના કરાય છે, તેને ‘સ્થાપનાનન્તક’ કહે છે. અવદ્રવ્યો અથવા
 પુદ્ગલદ્રવ્યોમાં જે અનન્તતા છે તેને ‘દ્રવ્યાનન્તક’ કહે છે સંખ્યારૂપ જે
 અનન્તતા છે તેનું નામ “ગણનાનન્તક” છે તે ગણનાનન્તક એવી સંખ્યા-
 વિશેષરૂપ હોય છે કે જેમાં અણુ આદિ સંખ્યાવિશેષ અવિવક્ષિત હોય છે.
 આકાશપ્રદેશોની જે અનન્તતા છે તેનું નામ “પ્રદેશાનન્તક” છે આ પ્રદેશા-
 નન્તકતા અલોકાકાશના પ્રદેશોની અપેક્ષાએ કહેવામાં આવી છે. અતીતાદ્વા
 (ભૂતકાળ) અથવા અનાગતાદ્વા (ભવિષ્ય કાળ રૂપ ‘એકતાઃઅનન્તક’ હોય છે.
 સર્વાદ્વારૂપ ‘દ્વિધાતઃઅનન્તક’ હોય છે એક આકાશપ્રતર દેશવિસ્તારાનન્તકરૂપ
 હોય છે, અલોકાકાશની અપેક્ષાએ આ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ. સર્વાકાશરૂપ
 જે અસ્તિકાય છે તે ‘સર્વવિસ્તારાનન્તક’ રૂપ છે. અક્ષય જે અવદિ દ્રવ્ય છે.
 તેને ‘શાશ્વતાનન્તક’ રૂપ સમજવું ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

અનન્તસ્ય દશવિધત્વરૂપાર્યં પ્રતિપાદકં તુ પૂર્વગતશ્રુતમિતિ પૂર્વશ્રુતવિશેષમાહ—

મૂલમ્—ઉપ્પાયપુઞ્વસ્સ ણં દસવત્થૂ પળ્લણત્તા । અત્થિણત્થિ-
પ્પવાયપુઞ્વસ્સ ણં દસ ચૂલવત્થૂ પળ્લણત્તા ॥ સૂ. ૩૩ ॥

છાયા-ઉત્પાતપૂર્વસ્ય સ્વલુ દશ વસ્તુનિ પ્રજ્ઞમાનિ । અસ્તિ નાસ્તિ પ્રવાદપૂર્વસ્ય
સ્વલુ દશ ચૂલા વસ્તુનિ પ્રજ્ઞમાનિ ॥ સૂ. ૩૩ ।

ટીકા— ‘ ઉપ્પાયપુઞ્વસ્સ ’ इत्यादि—

ઉત્પાતપૂર્વસ્ય=પ્રથમપૂર્વસ્ય સ્વલુ દશવસ્તુનિ=અધ્યયનવિશેષાઃ પ્રજ્ઞમાનિ ।
અસ્તિનાસ્તિપ્રવાદપૂર્વસ્ય=ચતુર્થસ્ય પૂર્વસ્ય સ્વલુ દશ ચૂલાવસ્તુનિ=મૂલવસ્તુનામુ-
પરિ ચૂલારૂપાણિ વસ્તુનિ પ્રજ્ઞમાનિતિ ॥ સૂ. ૩૩ ॥

પૂર્વશ્રુતેષુ સાધૂનાં દશત્રિધા પ્રતિસેવના પ્રતિપિદ્ધેતિ તામાહ—

મૂલમ્—દસવિદ્ધા પડિસેવણા પળ્લણત્તા, તં જહા--દાપ ૧,
પમાય ૨, ણામોગે ૩, આઝરે ૪, આઢઈસુ ૫, ય । સંકિણ ૬
સહસકારે ૭ મય ૮ પ્પમોસા ૯ ય વીમંસા ૧૦ ॥ સૂ. ૩૪ ॥

અનન્ત દશ પ્રકારકા હૈ—પેસા પ્રતિપાદન કરનેવાલા પૂર્વગતશ્રુત
હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર પૂર્વશ્રુત વિશેષકા કથન કરતે હૈ—

“ ઉપ્પાયપુઞ્વસ્સ ણં દસવત્થૂ પળ્લણત્તા ” इत्यादि ॥ सूत्र ३३ ॥

ટીકાર્થ—ઉત્પાત પૂર્વ યહ ૧૪ પૂર્વોર્મસે પહિલા પૂર્વહૈ, इसकी वस्तुएँ अध्य-
यन विशेष १० कहे गये हैं, अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व जो चौथा पूर्व है
सो इसकी दस चूलिका रूप वस्तुएँ कही गई हैं । मूल वस्तुओंके ऊपर
जो चूला रूप वस्तुएँ हैं, वे चूलिका वस्तुएँ हैं ॥ सूत्र ३३ ॥

“ અનન્તના દસ પ્રકારો છે, ” આ બાબતનું પ્રતિપાદન કરનારુ જે શ્રુત
છે તેનું નામ પૂર્વગતશ્રુત છે તેથી હવે સૂત્રકાર પૂર્વશ્રુતવિશેષનું કથન કરે છે—

“ ઉપ્પાયપુઞ્વસ્સ ણં દસ વત્થૂ પળ્લણત્તા ” इत्यादि—(सू. ३३)

ટીકાર્થ—૧૪ પૂર્વોર્માના પહેલા પૂર્વનું નામ ઉત્પાતપૂર્વ છે. તેની વસ્તુઓ (અધ્ય-
યન વિશેષો) ૧૦ કહી છે. અસ્તિનાસ્તિપ્રવાદપૂર્વ નામનું જે ચોથું પૂર્વ છે
તેની ૧૦ ચૂલિકારૂપ વસ્તુઓ કહી છે. મૂળ વસ્તુઓની ઉપર જે ચૂલારૂપ વસ્તુઓ
હોય છે, તેમને ચૂલિકાવસ્તુઓ કહે છે. ॥ સૂત્ર. ૩૩ ॥

છાયા—દશવિધા પ્રતિસેવના પ્રજ્ઞપ્તા, તથા—દર્પ ૧ પ્રમાદા ૨, નાભોગે ૩ આતુરે ૪ આપત્તિષુ ૫ શક્તિ ૬ સદસાકારે ૭ ભય ૮ પ્રદેષાથ ૯ ત્રિમર્શાત્ ૧૦ ॥ સૂ. ૩૪ ॥

ટીકા—‘દસવિદા’ इत्यादि—

પ્રતિસેવના=પ્રતિષિદ્ધા સેવના-પ્રતિષિદ્ધપ્રાણાતિપાતાદિ વસ્તુસેવનરૂપા દશ-વિધા પ્રજ્ઞપ્તા, તથા—‘દર્પ-પ્રમાદા-નાભોગે’ इत्यादि । તત્ર=દર્પ-પ્રમાદા-ના-ભોગે-દર્પથ પ્રમાદથ અનાભોગથેતિ સમાશરદ્વન્દ્વે દર્પપ્રમાદા-નાભોગમ્, તસ્મિન્ સતિ પ્રતિસેવના ભવતિ । અયં ભાવઃ-દર્પોઽહંકારઃ, તસ્મિન્ સતિ યા પ્રતિસેવના=આગમવિરુદ્ધ પ્રાણાતિપાતાદ્યાસેવના સા પ્રથમા । તથા-પ્રમાદઃ=પરિહાસવિક્રયાદિઃ, તદુક્તમ્-‘કંદર્પાદિપ્રમાદો’ છાયા-કન્દર્પાદિઃ પ્રમાદ इति । અથવા-પ્રમાદઃ=કર્તવ્યેષુ પ્રયત્નાભાવઃ । તસ્મિન્ સતિ યા પ્રતિસેવના સા દ્વિતીયા । તથા-અના-

પૂર્વગત શ્રુતોંમેં સાધુજનોંકો દશ પ્રકારકી પ્રતિસેવના પ્રતિષિદ્ધ હૈ—અનઃ અવ સૂત્રકાર ડસીકા કથન કરતે હૈ—

“દસવિદા પદ્ધિસેવના પળ્લપ્તા” इत्यादि ॥ સૂ. ૩૪ ॥

ટીકાર્થ—પ્રતિષિદ્ધ પ્રાણાતિપાતાદિ વસ્તુકી જો સેવનાહૈ, વહ પ્રતિસેવના હૈ, યહ પ્રતિસેવના ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ, જો હસ પ્રકારસેહૈ—દર્પ-નાભ અહંકારકા હૈ, હસ અહંકારકે હોને પર જો પ્રતિસેવના હૈ—આગમ વિરુદ્ધ પ્રાણાતિપાત આદિકી જો આસેવના હૈ, વહ દર્પ નામકી પ્રથમ પ્રતિસેવના હૈ, પરિહાસ વિક્રયા આદિ રૂપ પ્રમાદ હોતા હૈ, તદુક્તમ્—‘કંદર્પાદિપ્રમાદો’ કન્દર્પ આદિ પ્રમાદ હૈ, અથવા—કરને યોગ્ય કર્તવ્યમેં પ્રયત્નકા અભાવ હસકા નામ પ્રમાદ હૈ, હસ પ્રમાદકે હોને

પૂર્વગતશ્રુતમાં સાધુજનોને હસ પ્રકારની પ્રતિસેવના પ્રતિષિદ્ધ ગણાવી છે. —ન કરવા યોગ્ય કહી છે. હવે સૂત્રકાર તે પ્રતિસેવનાનું નિરૂપણ કરે છે—

“દસવિદા પદ્ધિસેવના પળ્લપ્તા” इत्यादि—(સૂ. ૩૪)

ટીકાર્થ—પ્રતિષિદ્ધ (નિષેધયુક્ત) પ્રાણાતિપાત આદિ વસ્તુનું જે સેવન કરાય છે તેનું નામ પ્રતિસેવના છે. આ પ્રતિસેવના ૧૦ પ્રકારની કહી છે—પ્રથમ પ્રતિ સેવના દર્પનામની કહી છે, દર્પ એટલે અહંકાર-અહંકારને કારણે જે પ્રતિસેવના (આગમ વિરુદ્ધની પ્રાણાતિપાત આદિની આસેવના) કરાય છે તેનું નામ દર્પપ્રતિસેવના છે.

પ્રમાદપ્રતિસેવના—પરિહાસ, વિક્રયા આદિ રૂપ પ્રમાદ હોય છે. કહ્યું પણ છે કે—“કંદર્પાદિપ્રમાદો” “કન્દર્પ આદિરૂપ પ્રમાદ છે” અથવા કરવા યોગ્ય કર્તવ્યમાં પ્રયત્નનો અભાવ હોવો તેનું નામ પ્રમાદ છે. આ પ્રમાદનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે જે પ્રતિસેવના થાય છે તે પ્રતિસેવનાનું નામ પ્રમાદપ્રતિસેવના છે.

ભોગો=વિસ્મૃતિઃ, તસ્મિન્ સતિ યા પ્રતિસેવના સા તૃતીયા । તથા-આતુરે-ગ્લાને સતિ તદુપચારાર્થં યા પ્રતિસેવના સા, અથવા-આતુરશબ્દોઽત્ર ભાવવાચકઃ, તતશ્ચ-સ્વસ્યૈવાતુરત્વે સતિ યા પ્રતિસેવના સા । અયં ભારઃ-ક્ષુત્પિપાસાવ્યાધિભિરભિ-ભૂતઃ સન્ સાધુઃ યાં પ્રતિસેવનાં કરોતિ સેતિ । તદુક્તમ્—

“ પદમવીડદુઘો વાહિઓવ જં સેવહ આઝરા એસા ”

છાયા-પ્રથમો દ્વિતીયોપદ્રુતઃ (ક્ષુત્પિપાસોપદ્રુત.) વ્યાધિતો વા યત્ સેવતે આતુરા એવા ઇતિ ચતુર્થો । તથા-આપન્સુ=દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાલ ભાવભેદાચ્ચતુર્વિધાસુ આપત્તિષુ યા પ્રતિસેવના મા । તત્ર-દ્રવ્યતઃ પ્રાસુકદ્રવ્યં દુર્લભમ્, ક્ષેત્રતો માર્ગ-વર્તિત્વમ્, કાલતો-દુર્મિશ્વરમ્, ભાવતો ગ્લાનત્વમિતિ । તદુક્તમ્—

પર જો પ્રતિસેવના હૈ, વત્ર પ્રમાદ નામકી દ્વિતીય પ્રતિસેવના હૈ, અના-ભોગ નામ વિસ્મૃતિકા હૈ-હસ વિસ્મૃતિકે હોને પર જો પ્રતિસેવના હૈ, વહ અનાભોગ પ્રતિસેવના હૈ ।

આતુર-ગ્લાનકે હોને પર उसके ઉપચારકે લિયે જો પ્રતિસેવના હૈ, વહ અથવા-આતુર શબ્દ યહાં ભાવવાચક હૈ, હસસે અપની હી આતુ-રતામૈં જો પ્રતિસેવના હૈ, વહ આતુર પ્રતિસેવના હૈ તાત્પર્ય યહ હૈ કિ ક્ષુધા એવં પિપાસા આદિસે દુઃખિત હુઆ સાધુ જો પ્રતિસેવના કરતા હૈ, વહ આતુર પ્રતિસેવના હૈ તદુક્તમ્--

“પદમવીડદુઘો વાહિઓવ જં સેવહ આઝરા એસા” ક્ષુધાસે પિપાસાસે અથવા-વ્યાધિસે યુક્ત હુઆ સાધુ જો સેવન કરતા હૈ વહ આતુરા પ્રતિસેવના હૈ, દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ એવં આત્મકે ભેદસે ચાર પ્રકારકી આપ-ત્તિયોમૈં જો પ્રતિસેવના હૈ, વહ આપત્તિ પ્રતિસેવના હૈ, પ્રાસુક જલકી

(૩) અનાભોગપ્રતિસેવના-અનાભોગ એટલે વિસ્મૃતિ તે વિસ્મૃતિના સદ્-ભાવમાં જે પ્રાણાતિથ ત આદિનું સેવન કરાય છે તેને અનાભોગ પ્રતિસેવના કહે છે.

(૪) આતુરાપ્રતિસેવના-ખીમારીનું નામ ગ્લાનાવસ્થા છે. ખીમારીનો સદ્ભાવ હોય ત્યારે તેના ઉપચારને માટે જે પ્રતિસેવના થાય છે તેને આતુરપ્રતિસેવના કહે છે. અથવા-આતુર શબ્દ અહીં ભાવવાચક છે. એટલે પોતાની જે આતુરતાને કારણે જે પ્રતિસેવના થાય છે તેનું નામ આતુરપ્રતિસેવના છે એટલે કે ક્ષુધા, પિપાસા આદિથી વ્યકુળ થયેલો સાધુ જે પ્રતિસેવના કરે છે તેને આતુરપ્રતિ-સેવના કહે છે. કહ્યું પશ્ય છે કે -“પદમવીડદુઘો વાહિઓવ જં સેવહ આઝરા એસા” સાધુ ક્ષુધાને કારણે, પિપાસાને કારણે અથવા વ્યાધિથી યુક્ત થવાને કારણે જે પ્રતિસેવના (પ્રાણાતિપાત આદિનું સેવન કરે છે તેને આતુરાપ્રતિસેવના કહે છે.

(૫) આપત્તિ પ્રતિસેવના-દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવના ભેદથી ચાર પ્રકારની આપત્તિઓમાં જે પ્રતિસેવના થાય છે તેને આપત્તિપ્રતિસેવના કહે છે.

“ દ્રવ્યાઈ અલંભે પુણ ચત્ત્વિહા આવયા હોંતિ ”

છાયા—દ્રવ્યાધ્યામ્ભે પુનશ્ચત્ત્વિધા આપદો ભવન્તિ-इति ।

इयंपापद्विषया पञ्चमी । तथा-शङ्किते=एषणीयेऽप्यनेषणीयतया संदिग्धे=संदे-
हरूपे या प्रतिसेवना सा, तदुक्तम्-‘जं संकेतं समावज्जे’ यत् शङ्कते तत् समापद्यते-
इति, इयं षष्ठी । तथा-सहसाकारे-सहसाकरणं सहसाकारस्तस्मिन्-अकस्मात्क-
रणे या प्रतिसेवना सा । सहसाकारलक्षणं चेदम्—

“ पुढ્વં अपासिऊणं, पाए छूढंमि जं पुणो पासे ।

न चएइ नियत्ते उं, पायं सहसाकरणं मेगं ॥

છાયા—પૂર્વમ્ અદૃષ્ટા પાદે ત્યક્તે યત્પુનઃ પશ્યન્તિ ।

न शक्नोति निवर्तयितुं पादं सहसाकरणमेतत्-इति । इयं सप्तमी । तथा-

दुर्लभता यह द्रव्यसे आपत्ति है मार्गमें रहना यह क्षेत्रसे आपत्ति है,
दुर्भिक्षता यह कालसे आपत्ति है, ग्लानता यह भावसे आपत्ति है,
तदुक्तम्-“ द्रव्याइ अलंભે પુણ ચત્ત્વિહા આવયા હોંતિ ” દ્રવ્યાદિકે
અલાભમેં ચાર પ્રકારકી આપત્તિ હોતી હેં ।

एषणीयके अनेषणीयरूपसे संदिग्ध होने पर जो प्रतिसेवना है
वह शङ्कित प्रतिसेवना है । तदुक्तम्-“ जं संकेतं समावज्जे ” । इत्यादि
अकस्मात् करनेका नाम सहसाकार है, इस इकदम रूप अक-
स्मात् करनेमें जो प्रतिसेवना है, वह सहसाकार प्रतिसेवना है, सह-
साकारका लक्षण इस प्रकारसे है-“ पुढ्वं अपासिऊणं इत्यादि । राजा

પ્રાસુક જળની દુર્લભતા હોવી તેનું નામ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ આપત્તિ કહેવાય છે,
માર્ગમાં રહેવું પડે તે ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ આપત્તિ કહેવાય છે. દુર્ભિક્ષતા
(દુષ્કાળ) રૂપ આપત્તિને કાળની અપેક્ષાએ આપત્તિ કહી શકાય અને ગ્લાનતા
(ખીમરી)ને ભાવની અપેક્ષાએ આપત્તિ ગણાય. કહ્યું પણ છે કે-“ દ્રવ્યાઈ
અલંભે પુણ ચત્ત્વિહા આવયા હોંતિ ” દ્રવ્યાદિના અલાભ આદિરૂપ ચાર પ્રકારની
આપત્તિ હોય છે.”

(૬) શંકિતપ્રતિસેવના—આહારાદિની એષણીયતાના વિષયમાં અનેષણીયતા
રૂપ સંદેહ હોવા છતાં તે આહારાદિની એષણીયતારૂપ સંદેહ હોવા છતાં તે આહારાદિનું
સેવન કરવારૂપ જે પ્રતિસેવના છે તેને શંકિતપ્રતિસેવના કહે છે. કહ્યું
પણ છે કે “ જં સંકેતં સમાવજ્જે ”

(૭) સહસાકારપ્રતિસેવના—અકસ્માત કરવો તેનું નામ સહસાકાર છે આ
પ્રકારે અકસ્માત થવાનું કારણ વધુ પડતી હતાવળ અને સાવધાનીનો અભાવ
હોય છે. અકસ્માત થાય એવી પ્રવૃત્તિ કરવી તેનું નામ સહસાકારપ્રતિસેવના
છે. સહસાકારનું લક્ષણ આ પ્રમાણે કહ્યું છે-“ પુઢ્વં અપાસિઊણં ” ઇત્યાદિ.

ભયપ્રદેષાત્-ભયં ચ પ્રદેષશ્ચ-ભયપ્રદેષં, તસ્માત્-ભયાત્ પ્રદેશા ચેત્યર્થઃ । તત્ર-
ભયાત્=રાજાદિભયાત્ પ્રતિસેવના માર્ગાદિ પ્રદર્શનરૂપા, સિંહાદિ ભયાદ્ વા
પ્રતિસેવના દ્રુતદ્રુતગમનાદિ રૂપા । તદુક્તમ્—

“ ભયમભિ ઉગ્ગેણ સીંહમાર્દવા ”

છાયા—ભયમ્ અભયોગેન-સિંહાદિના વા ઇતિ । હયમષ્ટમી । પ્રદેષાત્=
ક્રોધાદિકાત્ કષાયાત્ પ્રતિસેવના-પ્રદેષપ્રતિસેવના । અત્ર ‘પ્રદેષ’ શબ્દેન ક્રોધાદિ
કષાયો ગૃહ્યતે, તદુક્તમ્-‘ કોહાર્દમો પઓસો ’ છાયા-ક્રોધાદિકઃ પ્રદેષ
ઇતિ । ઇયં નવમી । તથા-વિમર્શાત્-શિષ્યાદિ પરીક્ષણાત્ પ્રતિસેવના-‘ કિમેષ-
ક્ષોમયિતું શક્યો નવેતિ કૃત્વા ક્ષોમકૃત્વનોચારણાદિ રૂપા । ઉક્તશ્ચ—

‘ વીમંસા સેહમાર્દિગં ’ વિમર્શઃ શૈશાદીનામ્ ’ ઇતિ ઇયં વશમી ॥ સૂ. ૩૪ ॥

આદિકે ભયસે જો માર્ગ આદિકે પ્રદર્શન રૂપ પ્રતિસેવના હૈ, વહ ભય
પ્રતિસેવના હૈ । અથવા સિંહ આદિકે ભયસે જલ્દી ૨ આદિ
રૂપસે-ચલના હૈ વહ ભય પ્રતિસેવના હૈ ।

તદુક્તમ્—“ ભયમભિ ઉગ્ગેણ સીંહમાર્દવા । ”

ક્રોધ આદિ કષાયકે વશસે જો પ્રતિસેવના હૈ, વહ પ્રદેષ પ્રતિ-
સેવના હૈ, યહાં પ્રદેષ શબ્દસે ક્રોધાદિ કષાયોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ ।
તદુક્તમ્—“ કોહાર્દમો પઓસો ” । શિષ્ય આદિકી પરીક્ષા કરનેકે
લિધે જો ક્ષોમકૃત્વનાદિકોંકા ઉચ્ચારણ કરના હૈ, યહ વિમર્શકે
પ્રતિ ક્ષોનકૃત્વના ” યહ શિષ્ય ક્ષુભિત્ત હો સકતા હૈ, યા નહીં ”
હસ વાતકો પરીક્ષા કરનેકે અભિપ્રાયસે કહે જાતેહૈ । ઉક્તંચ—“ વીમંસા
સેહમાર્દિગં ’ ॥ સૂત્ર ૩૪ ॥

(૮) ભયપ્રતિસેવના-રાજા અ દિના ભયથી જે માર્ગ આદિના પ્રદર્શનરૂપ
પ્રતિસેવના થાય છે તેનું નામ ભયપ્રતિસેવના થાય છે. અથવા-સિંહ અ દિના
ભયથી જે જલ્દી જલ્દી ચાલવાનું થાય છે તેનું નામ ભયપ્રતિસેવના છે. કહ્યું
પણ છે કે—“ ભયમભિઉગ્ગેણ સીંહમાર્દવા ”

(૯) પ્રદેષ પ્રતિસેવના-ક્રોધાદિ કષાયને વશ થઈને જે પ્રતિસેવના થાય છે તેને
પ્રદેષ પ્રતિસેવના કહે છે. અહીં પ્રદેષ પદ વડે ક્રોધ વિગેરે કષાયોને ગ્રહણ
કરવામાં આવ્યા છે. કહ્યું પણ છે કે—“ કોહાર્દમો પઓસો ઇત્યાદિ.

(૧૦) વિમર્શ પ્રતિસેવના-શિષ્ય વિગેરેની પરીક્ષા કરવા નિમિત્તે જે
ક્ષોભક વચનોનું ઉચ્ચરણ થાય છે, તેને વિમર્શ કહે છે. આ પ્રકારના વિમર્શની
પ્રતિસેવનાનું નામ વિમર્શ પ્રતિસેવના છે.

આ પ્રકારના વિમર્શ વચનો-પ્રતિક્ષોમક વચનો—“ આ શિષ્ય ક્ષોભ
પામે છે કે નહીં એ વાતની કસોટી કરવા માટે વપરાય છે. કહ્યું પણ છે કે—
“ વીમંસા સેહમાર્દિગં ’ ॥ સૂ. ૩૪ ॥

સાધુમિયંદિ પ્રતિસેવના કથંચિત્ ક્રિયતે, તદા નૈરાલોચના કર્તવ્યેતિ તત્ર પરિહરણીયાન્ દોષાન્ દશભિઃ સ્થાનૈરાહ—

મૂલમ્—દસ આલોચના દોષા પળ્લગ્તા, તં જહા આકંપ-
હતા ૧, અણુમાળહતા ૨, જં દિટ્ઠં ૩, વાધરં ૪ વ સુદુમં વા ।
છળ્લણં ૬ સદ્દાઝલગં ૭ બહુજળ ૮ ઝઘ્વત્ત ૯ તત્સેવી ૧૦ ॥ સૂ. ૩૫ ॥

છાયા—દશ આલોચના દોષાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—આકમ્પ્ય ૧, અણુમાન્ય ૨
યદ્દુષ્ટં ૩, વાદરં ૪ વા સૂક્ષ્મં ૫ વા છન્નં ૬ શબ્દાનુકુલકમ્ ૭ બહુજનમ્ ૮
અવ્યક્તમ્ ૯ તત્સેવી ૧૦ ॥ મૂ. ૩૫ ॥

ટીકા—‘દસ આલોચના દોષો’ ઇત્યાદિ—

આલોચનમાલોચના—ગુરુસમીપે સ્વદોષપ્રકાશનમ્, તત્ર યે દોષાસ્તે આલો-
ચના દોષાઃ, તે દશપંચભાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—‘આકમ્પ્ય’ ઇત્યાદિ । તત્ર—
આકમ્પ્ય=ભાવજર્ચ-પ્રયાતૃત્વાદિના ગુરુનનુકૂલ્ય યાઽઽલોચના ક્રિયતે સ આકમ્પ્ય

સાધુજનો દ્વારા યદિ પ્રતિસેવના કથંચિન્ કી જાતી હૈ તો ‘અન્હે’
આલોચના અવશ્ય હો કરની પડની હૈ, અતઃ અય મૂત્રકાર ઝસ આલો-
ચનામેં પરિહરણીય દોષોંકા દશ સ્થાનોંસે કથન કરતે હૈ—

“દસ આલોચન દોષા પળ્લગ્તા” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૩૫ ॥

ટીકાર્થ—ગુરુકે સમીપ અપને દોષોંકા પ્રકાશન કરનો હમ્કા નામ આલો-
ચના હૈ હસ આલોચનામેં જો દોષ હૈં વે આલોચના દોષ હૈં । યે આલો-
ચના દોષ ૧૦ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં—જૈસે—આકમ્પ્ય ૧ અણુમાન્ય ૨ યદ્દુ-
ષ્ટા ૩ વાદર ૪ સૂક્ષ્મ ૫ છન્ન ૬ શબ્દાનુકુલક ૭ બહુજન ૮ અવ્યક્ત ૯
અં વ નત્સેવી ૧૦ ।

સાધુઓ દ્વારા કદાપિ પ્રતિસેવના થઈ જાય, તો તેમને અવશ્ય આલોચના
કરવી પડે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર આલોચનામાં પરિહરણીય (ત્યાગ કરવા યોગ્ય
દોષોનું) ૧૦ સ્થાનને અનુલક્ષીને કથન કરે છે—

‘દસ આલોચનદોષા પળ્લગ્તા’ ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૫)

ટીકાર્થ—ગુરુની સમીપે પોતાના દોષોને પ્રકટ કરવા તેનું નામ આલોચના છે. આ
આલોચનામાં જે દોષો થાય છે તેને આલોચનાદોષો કહે છે. તે આલોચના
દોષોના ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આકમ્પ્ય, (૨) અણુમાન્ય, (૩) યદ્દુષ્ટ, (૪)
વાદર, (૫) સૂક્ષ્મ, (૬) છન્ન, (૭) શબ્દાનુકુલક, (૮) બહુજન, (૯) અવ્યક્ત,
અને (૧૦) તત્સેવી.

દોષઃ પ્રથમઃ ૧। તથા-અનુમાન્ય=કિમયમાચાર્યાદિકો મૃદુદણ્ડદાયકો યદ્વા-
 ઉગ્રદણ્ડદાયકઃ ૧ इत्यनुमानं कृत्वा मृदुदण्डदायकसमीपे याऽऽलोचना क्रियते,
 સ દ્વિતીયઃ ૨। તથા-યદ્ દૃષ્ટમ્-અતીચારકર્તુર્યદ્ દોષજાતમાચાર્યાદિના દૃષ્ટં
 તદેવ આચાર્યપ્રસાદનાર્થમ્ આલોચયતિ, તૈરદૃષ્ટં તુ નાલોચયતિ ગુરુકર્મત્વાદ, સોઽયં
 તૃતીયઃ ૩। તથા-વાદરંવા-વાદર મેવ=સ્થૂલમેવ અતીચાર જાતમ્ આલોચયતિ
 ન સૂક્ષ્મમિતિ ચતુર્થઃ ૪। સૂક્ષ્મં વા=સૂક્ષ્મમેવ અતિચારજાતમાલોચયતિ । નનુ
 યઃ સ્વલુ સૂક્ષ્મમાલોચયતિ સ વાદરમપ્યાલોચયેત્, કથં તર્હ્યુંકં 'સૂક્ષ્મમેવ'

इनमें जो वैषावृत्य आदि द्वारा गुरु को अपने अनुकूल करके आलो-
 चना की जाती है वह आकम्प्य दोष है, यह आचार्यादिक कठोर दण्ड
 देनेवाला है या मृदु दण्ड देनेवाला है इस प्रकारका अनुमान करके जो
 आलोचना मृदु दण्ड देनेवाले आचार्य आदिके पास की जाती है वह
 अनुमान्य दोष है, जो आलोचना करनेवालेका दोष आचार्यादिकी दृष्टिमें
 आ गया हो उसी दोषकी आलोचना आचार्य आदिको प्रसन्न करनेके
 लिये यह यददृष्ट दोष हैं इस दोषमें आलोचनकर्ता आचार्यादि द्वारा
 अदृष्ट दोषोंकी आलोचना गुरुकर्मा होनेसे नहीं करता है, जो आलो-
 चनकर्ता अपने स्थूलदोषोंकी ही आलोचना करता है-वह वादर दोष
 है, जो सूक्ष्म दोषोंकी ही आलोचना करता है यह सूक्ष्मदोष है ।

શંકા--જો સૂક્ષ્મ અતિચાર રૂપ દોષોંકો આલોચના કરતા હૈ વહ

વૈષાવૃત્ય આદિ દ્વારા ગુરુને પોતાને અનુકૂળ કરીને જે આલોચના કરાય
 છે, તે આલોચનાને આકંઘ્યદોષયુક્ત આલોચના કહે છે અમુક આચાર્ય કઠોર
 હંડ (પ્રાયશ્ચિત્ત) દેનારા છે અને અમુક આચાર્ય મૃદુ હંડ દેનારા છે, આ
 પ્રકારનું અનુમાન કરીને મૃદુ હંડ દેનારા આચાર્યની સમીપે જે આલોચના
 કરાય છે તે આલોચનાને અનુમાન્ય દોષયુક્ત આલોચના કહે છે આલોચના
 કરનારને જે દોષ આચાર્ય આદિની નજરે પડી ગયો હોય તે દોષની જ આલો-
 ચના, આચાર્ય આદિને ખુશ કરવા મ.ટે કરવામાં આવે તો તે આલોચના
 યદ્દૃષ્ટ દોષ યુક્ત આલોચના કહેવાય છે. અહીં એવું બને છે કે આલોચના
 કર્તા સાધુ ગુરુકર્મા હોવાને કારણે પોતાના જે દોષો ગુરુ આદિના જણવામાં
 ન આવ્યા હોય તેની આલોચના કરતો નથી. જ્યારે આલોચનાકર્તા પોતાના
 સ્થૂલ દોષોની જ આલોચના કરે છે ત્યારે તેની આલોચના બાદર દોષયુક્ત
 ગણાય છે જ્યારે આલોચનાકર્તા પોતાના સૂક્ષ્મ દોષોની જ આલોચના કરે
 છે ત્યારે તે આલોચનાને સૂક્ષ્મદોષયુક્ત આલોચના કહેવાય છે.

હતિ ? અતોચયતે-‘ યઃ સૂક્ષ્મનિચારજાતમાલોચયતિ સ વાદરમપ્યાલોચયે દેવેત્યાવાચાર્યસ્ય સ્વપિપયે નિવાસસમ્પાદનાર્થમિતિ પશ્ચમઃ ’૫ તથા-છન્ન=પ્રછન્નમ્ આલોચયતિ, યથા આત્મનૈવ સ શ્રુણોતિ નત્વાચાર્યાદિમિતિ પઠઃ ૬ તથા-શબ્દાકુલકમ્ શબ્દેન આકુલં-શબ્દાકુલં તદેવ શબ્દાકુલકમ્-વૃહદ્ધ્વનિયુક્તમ્ આલોચયતિ । અયં ભાવઃ-તથા મહતા શબ્દેનાલોચનાં કરોતિ યથાઽન્યેઽપ્યગીતાર્થાઃ શ્રુયન્તિ, સ સત્તમઃ ૭ તથા-વહુજનમ્-વહુ જના આલોચનાચાર્યત્વેન યત્ર તદ્-ઇત્યપ્પઃ ૮ તથા-અવ્યક્તમ્-અવ્યક્તસ્ય=અગીતાર્થસ્ય પુરતો યાઽઽલોચના ક્રિયતે વાદર ભી અનિચારોંકી આલોચના કર સક્રતા હૈ તો ફિર આપ “ સૂક્ષ્મ હી ” દોષોંકી આલોચના કરતા હૈ એસા કયોં કહતે હૈ ?

ઉત્તર--જો સૂક્ષ્મ અનિચારોંકી આલોચના કરતા હૈ વહ વાદરોંકી આલોચના કરતા હી હૈ, એસા અપને વિષયમેં આચાર્યકા વિશ્વાસ સમ્પાદનકે લિયે યહ દોષ કહા ગયા હૈ ।

જો હમ રૂપસે આલોચના કરતા હૈ કિ જિસે સ્વયં સુનતા હૈ, આચાર્યાદિ નહીં યહ છન્ન દોષ હૈ, જો વહે જોરોંસે અપને દોષોંકા ઉચ્ચારણ કારકે આલોચના કરતા હૈ-કિ જિસસે ડન્હેં અન્ય અગીતાર્થ ભી સુન લેતે હૈ હસકા નામ શબ્દાકુલક દોષ હૈ, જહાં આલોચનાકે આચાર્ય રૂપસે અનેકજન હોતે હૈ વહ વહુજન દોષ હૈ, જો આલોચના અગીતાર્થકે સમક્ષ કી જાતી હૈ વહ અવ્યક્ત દોષ હૈ, તથા જિસ આલોચ્ય દોષોંકા

શંકા-જે સધુ સૂક્ષ્મ અનિચારરૂપ દોષોની આલોચના કરતો હોય છે તે બાદર અનિચારોની આલોચના પણ કરી શકે છે. તો આપે ‘ સૂક્ષ્મદોષોની જ આલોચના કરે છે,’ આ પ્રકારનું કથન શા માટે કર્યું છે ?

ઉત્તર--“ જે સૂક્ષ્મદોષોની આલોચના કરે છે તે બાદર અનિચારોની આલોચના પણ કરતો જ હશે,” આ પ્રકારનો પોતાને વિષે આચાર્યનો અભિપ્રાય એવી માન્યતાથી જે સૂક્ષ્મદોષોની જ આલોચના કરાય તો બાદર દોષનો સદ્ભાવ રહે છે.

જે સાધુ કૃત અનિચારોની આલોચના પોતે જ સાંભળી શકે એવી રીતે કરે છે-આચાર્ય અદિ સાંભળી ન શકે એવી રીતે કરે છે-તે આલોચનાને છન્નદોષયુક્ત આલોચના કહે છે. અન્ય અગીતાર્થ સાધુ આદિને પણ સંભળાય એવી રીતે મોટા અવાજે આલોચના કરનારાં આજે, તો તેને શબ્દાકુલક દોષયુક્ત આલોચના કહેવાય છે જ્યારે આલોચના કરનારના આચાર્યરૂપે અનેક ભાષુસો હોય છે, ત્યારે તે આલોચના બહુજન દોષયુક્ત ગણાય છે જે આલો-

સેતિ નવમ. ૧। તથા-તત્સેવી તાન્ આલોચયિતવ્યાન્ દોષાન્ સેવિતું શીલમસ્યેતિ તથા-યો ગુરુઃ સ્વયમેવ આલોચ્યાન્ દોષાન્ સેવતે, તદગ્રે યાઽતીચારાલોચના સેતિ દશમઃ ૧૦। ઇતિ ॥ સૂ ૩૫ ॥

આલોચના દોષા ઉક્તા ઇત્યાલોચનાયાઃ પ્રસ્તાવાત્ સમ્પ્રતિ આલોચનાયા દાતુર્ગ્રહીતુશ્ચ ગુણાન્ દશભિર્દશભિઃ સ્થાનૈરાહ—

મૂલમ્—દસહિં ઠાળેહિં સંપન્ને અળગારે અરિહૃદ્ અત્તદોસમા-
લોદ્તત્ત, તં જહા--જાદ્સંપન્ને ૧, કુલસંપન્ને ૨, एवं જહા અટ્ટ-
ટ્ટાળે જાવ સ્વંતે ૭, દંતે ૮, અમાઈ ૯ અપચ્છાણુયાવી ૧૦।
દસહિં ઠાળેહિં સંપન્ને અળગારે અરિહૃદ્ આલોચનં પઢિચ્છિ-
ત્ત, તં જહા--આચારવં ૧, અવહારવં ૨, જાવ અવાયદંસી ૮,
પિયધમ્મે ૯ દઢધમ્મે ૧૦ ॥ સૂ. ૩૬ ॥

છાયા—દશભિઃ સ્થાનૈઃ સમ્પન્નોઽનગારઃ અર્હતિ આત્મદોષમાલોચયિતું તથા—
જાતિસમ્પન્નઃ ૧, કુલસમ્પન્નઃ ૨, एवं યથા અષ્ટમસ્થાને યાવત્ ક્ષાન્તઃ ૭,
સેવન સ્વયં આચાર્ય કરતાહૈ, એસે ઉસ આચાર્યકે સમક્ષ જો આલોચના
કરતા હૈ વહ નત્સેવી દોષ હૈ ॥સૂત્ર ૩૫॥

હસ પ્રકારસે આલોચનાકે દોષોંકા કથન કર અવ મૂત્રકાર આલો-
ચના દેનેવાલેકે ઔર આલોચના કરનેવાલેકે ગુણોંકા દશ દશ સ્થાનોંસે
કથન કરતેહૈ—“દસહિં ઠાળેહિં સંપન્ને અળગારે ” ઇત્યાદિ ॥સૂત્ર ૩૬ ॥

ટીકાર્થ—જો અનગાર દશ સ્થાનોંસે ગુણોંસે સમ્પન્ન હોનાહૈ—વહી અપને
અપને અપરાધકી આલોચના કરનેકે લિયે યોગ્ય હોતો હૈ, વે દશ સ્થાન
હસ પ્રકારસે હૈ—જાતિસંપન્ન ૧ કુલસમ્પન્ન ૨ અષ્ટમ સ્થાનોક્ત

ચના અગીતાર્થની સમીપે કરવામાં આવે છે, તે આલોચનાને અન્યક્તદોષયુક્ત
ગણાય છે. આલોચના કરવાને યોગ્ય દોષોનું સેવન કરનારા આચાર્યની સમીપે
જે આલોચના રવામાં આવે છે તે આલોચનાને તત્સેવીદોષયુક્ત આલોચના કહે
છે ॥સૂ. ૩૫॥

પૂર્વસૂત્રમાં આલોચનાના દોષોનું કથન કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર
આલોચના દેનાર અને આલોચના કરનારના શુદ્ધોનું દસ સ્થાનને અનુલક્ષીને
કથન કરે છે—“દસહિં ઠાળેહિં સંપન્ને અળગારે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૩૬)

ટીકાર્થ—જે અષ્ટગાર નીચે દર્શાવેલાં ૧૦ સ્થાનોથી (શુદ્ધોથી) યુક્ત હોય છે
તે અષ્ટગાર જ આલોચના કરવાને અધિકારી ગણાય છે—(૧) જાતિસંપન્ન, (૨)

દાન્તઃ ૮, અમાયી ૯ અપશ્ચાદનુ તાપી ૧૦। દશભિઃ સ્થાનૈઃ સમ્પન્નોઽનગારોઽર્હતિ આલોચનાં પ્રત્યેષ્ઠુમ્, તથા—આચારવાન્ ૧, અવધારવાન્ ૨, યાવત્ અપાય-દર્શી ૮, પ્રિયધર્મા ૯ દૃઢધર્મા ૧૦ ॥ સૂ૦ ૩૬ ॥

ટીકા—‘દસર્હિ ઠાણેર્હિ’ इत्यादि—

દશભિઃ સ્થાનૈઃ=ગુણૈઃ સમ્પન્નોઽનગારઃ અર્હતિ=યોગ્યો ભવતિ આત્મદોષં=સ્વા-પરાધમ્ આલોચયિતુમ્, તથા—જાતિસમ્પન્ન इत्यादि। તત્ર—જાતિ સમ્પન્નઃ—જાતિઃ=માતૃકો વંશઃ તેન સમ્પન્નો=યુક્તઃ ॥૧॥ કુલસમ્પન્નઃ—કુલં પૈતૃકો વંશઃ, તેન સમ્પન્નઃ ॥૨॥ એવંધિઃ પુરુષઃ પ્રાયોઽકૃત્યં ન કુરુતે, યદિ કથંચિત્ કરોતિ તદા પશ્ચાત્તાપત્તઃ સન્ સ આલોચયત્યેવેતિ “જાતિસમ્પન્નઃ કુલસમ્પન્નઃ” इति स्थानद्वयमुक्तम्। તદુક્તમ્—

“જાઈકુલસંપળ્ળો પાપમકિચ્ચં ન સેવઈ કિંચિ।

આસેવિડં ચ પચ્છા તગ્ગુણો સમ્પમાલ્લો” ॥૧॥ इति।

છાયા—જાતિકુલસમ્પન્ન. પ્રાયોઽકૃત્યં ન સેવતે કિંચિત્।

આણેવિતું ચ પશ્ચાત્ તદ્ગુણતઃ સમ્યગાલોચયતિ ॥૧॥ इति।

વિનયસમ્પન્ન ૩ જ્ઞાનસમ્પન્ન ૪ દર્શનસમ્પન્ન ૫ ચારિત્રસમ્પન્ન ૬ ક્ષાન્ત ૭ દાન્ત ૮ અમાયી ૯ એવં અપશ્ચાદનુતાપી ૧૦

માતાકે વંશકા નામ જાતિ ઓર પિતાકે વંશકા નામ કુલ હૈ જો શુદ્ધ માતાકે વંશવાલા એવં પિતાકે વંશવાલા હોતા હૈ, એસા વહ પુરુષ પ્રાયઃ કરકે અકૃત્યકા સેવન નહીં કરતા હૈ, ઓર યદિ કિસી પ્રકારસે વહ અકૃત્યકા સેવન કર લેના હૈ, તો વહ પશ્ચાત્તાપસે તસ હોકર અપને દોષોંકી આલોચના કરતા હી હૈ। જાતિ સમ્પન્ન કુલ સમ્પન્ન યે દો સ્થાન હૈ। કહા મી હૈ— “જાઈ કુલસંપળ્ળો” इत्यादि।

કુલસંપન્ન, (૩) વિનયસંપન્ન, (૪) જ્ઞાનસંપન્ન, (૫) દર્શનસંપન્ન, (૬) ચારિત્ર સંપન્ન, (૭) ક્ષાન્ત, (૮) દાન્ત, (૯) અમાયી અને (૧૦) અપશ્ચાદનુતાપી

માતાના વંશનું નામ જાતિ અને પિતાના વંશનું નામ કુલ છે. જે પુરુષ શુદ્ધમાતાના વંશવાળો અને શુદ્ધપિતાના વંશવાળો હોય છે એવો પુરુષ તો સામાન્ય રીતે અકૃત્યનું સેવન કરતો જ નથી. પરંતુ ક્યારેક તેના દ્વારા જે અકૃત્યનું સેવન થઈ જાય છે તો તેનું અંતઃકરણ પશ્ચાત્તાપરૂપી અગ્નિ વડે તપ થઈ જાય છે. એવો પુરુષ પોતાના દોષોની આલોચના અવશ્ય કરે જ છે. આ પ્રકારના જાતિસંપન્ન અને કુલસંપન્નરૂપ પહેલાં બે સ્થાનો સમજવા. કહ્યું પણ છે કે—“ જાઈ કુલસંપળ્ળો” इत्यादि આ પ્રકારે આઠમાં સ્થાનમાં જેવું પ્રતિ

‘ एवं जहा अद् दृाणे नाव ’ एवम्=अनेन प्रकारेण यथाऽष्टमस्थाने तथाऽत्र विज्ञेयं, यावत्-यावत्पदेन-विनयसम्पन्नः ३, ज्ञानसम्पन्नः ४, दर्शनसम्पन्नः ५, चारित्रसम्पन्नः ६, इति चत्वारि पदानि संग्राह्याणि. तत्र-विनयसम्पन्नः= विनीतः । एवं विधः शिष्योऽनायासेनैव सर्वमालोचयति ३। ज्ञानसम्पन्नः= ज्ञानवान्, एतादृशो मुनिर्दोषविपाकं प्रायश्चित्तं चानायासेन-ज्ञात्वाऽऽलोचयति ।

तदुक्तम्—

“ नाणेण उ संपण्णे, दोसविवागं विद्याणिउं घोरं ।

आलोएइ सुहं चिय, पायच्छित्तं च अगच्छे ” ॥१॥ इति ।

જાયા—જ્ઞાનેન તુ સમ્પન્નો, દોષવિપાકં વિજ્ઞાય ધોરમ્ ।

આલોચયતિ મુલમેવ, પાપશ્ચિત્તં ચ અગચ્છતિ ॥૧॥ ઇતિ ૧૪ ।

दर्शनसम्पन्नः=श्रद्धावान्-एवंविधः पुरुषः ‘ दोषा अनर्थकरा ’-इति श्रद्धां

इस तरहसे जैसा कथन अष्टम स्थानमें किया गया है, वैसा ही यहां पर भी कर लेना चाहिये यहां यावत्पदसे “विनयसम्पन्न, ज्ञान-सम्पन्न, दर्शनसम्पन्न चारित्रसम्पन्न ” इन चार पदोंका ग्रहण हुआ है, जो शिष्य विनय-गुण सम्पन्न होता है-विनीत होता है, ऐसा शिष्य अनायास ही अपने सब दोषोंकी आलोचना कर लेता है, जो शिष्य ज्ञानसम्पन्न होता है-सम्यग्ज्ञानसे युक्त होता है, ऐसा शिष्य दोषविपा-कवाले-दोषोंकी श्रुद्धि करनेवाले प्रायश्चित्तको जान कर अनायास भावसेही अपने दोषोंकी आलोचना करता है-कहा भी हैं—

“ नाणेण उ संपण्णे ” इत्यादि ।

इसका भाव स्पष्ट है, दर्शन नमान जो शिष्य श्रद्धासे युक्त होना

પાદન કરવામાં આવ્યું છે એવું જ પ્રતિપાદન અહીં પણ દાનત પર્યન્તના શુદ્ધોવાળા અભુગાર વિષે પણ કરવું જોઈએ. અહીં “પર્યન્ત” પદ વડે “વિનયસંપન્ન, જ્ઞાનસંપન્ન, દર્શનસંપન્ન ચારિત્રસંપન્ન અને ક્ષાન્ત” આટલાં પદોને ગ્રહણ કરવ માં આવ્યાં છે

વિનયસંપન્ન-જે સાધુ વિનીત હોય છે, તે અનાયાસે જ (કોઈ ન કહે તો પણ) તે પોતાના બધા દેષોની આલોચના અવશ્ય કરી જ લે છે.

જે સાધુ જ્ઞાનસંપન્ન હોય છે સમ્યગ્જ્ઞાનથી યુક્ત હોય છે, તે દોષવિપાક વાળા-દોષોની શુદ્ધિ કરનારા-પ્રાયશ્ચિત્તને જાણીને અનાયાસ ભાવથી જ પોતાના દોષોની આલોચના કરે છે કહ્યું પણ છે કે—

“ નાણેણ ઉ સપણે ” ઇત્યાદિ. આ કથનનો ભાવार्થ સ્પષ્ટ છે.

दर्शनसंપन्न-જે શિષ્ય શ્રદ્ધાસંપન્ન હોય છે તે એવો દૃઢ વિશ્વાસ ધરાવે

કૃત્વાડડોચયતિ ॥ ૫ ॥ ચારિત્રસમ્પન્નઃ=ક્રિયાવાન, સ ચ ભૂયસ્તાપરાધં ન કરોતિ, સમ્યગ્લોચયતિ, પ્રાયશ્ચિત્તં ચ નિર્વાહયતિ ॥ ૬ ॥

તદુક્ત્-“ દોષાળત્થકર-ત્તિય, સમ્મં સદ્દર્શં દંસणेઃ સંપન્નો ।

ચરણેઽય સંપન્નો, ન કુગરં શુજ્જા તમચરાહં ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

છાયા—દોષા અનર્થકરા ઇતિ ચ સમ્યક્ શ્રદ્ધત્તે દર્શનેન સમ્પન્નઃ ॥

ચરણેન તુ સમ્પન્નો ન કરોતિ ભૂયસ્તાપરાધમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તથા—ક્ષાન્તઃ=ક્ષમાશીલઃ, एतादृश आचार्यैः कठोरवचनेनोक्तोऽपि न कदाचिदपि रोषमावहति । तदुक्तम्—

है ऐसा शिष्य “दोष अनर्थकारी होते हैं ” ऐसा दृढ विश्वास करके अपने दोषोंकी अच्छे प्रकारसे आलोचना करता है ५। जो शिष्य चारित्र सम्पन्न-क्रियाशाली होता है वह प्रायः पुन उस अपराधका सेवन नहीं करता है, और यदि किसी कारणवश अपराध सेविन हो जाता है, तो वह उसकी अच्छी तरहसे आलोचना करता है, और दिये गये प्रायश्चित्तका निर्वाह करता है—कहा भी है—

“ दोषा णत्थकर-त्तिय ” इत्यादि ।

दर्शन सम्पन्न शिष्य “दोष अनर्थकर हैं ” ऐसा पूर्ण रूपसे श्रद्धान करता है—तथा जो शिष्य चारित्रसे युक्त होता है, वह पुनः उस अपराधका सेवन नहीं करना है ६, जो शिष्य क्षान्त-क्षमाशील होता है, ऐसा वह शिष्य आचार्य द्वारा कठोर वचनसे कहे जाने पर भी रोष धारण नहीं करता है, कहा भी है—

छે કે “ દોષ અનર્થકારી હોય છે.” તે કારણે તે પોતાના દોષોની આલોચના કર્યા વિના રહેતો નથી.

ચારિત્રસંપન્ન-જે શિષ્ય ચારિત્રસંપન્ન હોય છે-ક્રિયાશાળી હોય છે-તે સામાન્ય રીતે ફરી એવા દોષનું સેવન કરતો નથી, અને કહાય કેઈ કારણ દોષનું સેવન થઈ જાય તો તેની સમ્યક્ રીતે આલોચના કરે છે અને તેને જે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવામાં આવ્યું હોય છે, તે પ્રાયશ્ચિત્ત યથાનિધિ કરે છે. કહ્યું પણ છે કે-“ દોષા ણત્થકર-ત્તિય ” ઇત્યાદિ—

આવાર્ય-“ દોષ અનર્થકર છે,” એવી પૂર્ણશ્રદ્ધાપૂર્વક દર્શનસંપન્ન શિષ્ય પોતાના દોષોની આલોચના કરે છે. જે શિષ્ય ચારિત્રસંપન્ન હોય છે તે ફરીથી અપરાધનું સેવન કરતો નથી.

ક્ષાન્ત-જે શિષ્ય ક્ષાન્ત-ક્ષમાશીલ-હોય છે તે આચાર્યના કઠોર વચનો સાંભળીને પણ રોષ ધારણ કરતો નથી. કહ્યું પણ છે કે—

“ સંતો આચરિર્હિ, કરુસં મણિમોવિ ન ચ રુસે ” ।

છાયા—શાન્ત આચાર્યઃ પરુષં મણિતોડપિ ન ચ રુપ્યેત્ત્વ ઇતિ ॥ ૭ ॥

તથા—દાન્તઃ=નિમ્બીતેન્દ્રિયઃ, અયં હિ દત્તં પ્રાયશ્ચિત્તં વોહું સમર્થો ભવતિ ।
તદુક્તમ્—“ દંતો સમર્થો વોહું પચ્છિત્તં જમિહ દિજ્જણ તસ્સ ” ।

છાયા—દાન્તઃ સમર્થો વોહું પ્રાયશ્ચિત્તં યદિહ દીયતે તસ્મૈ—ઇતિ ॥ ૮ ॥

તથા—અમાયી=માયાવર્જિતઃ—સ્વકૃતાતિચારજાતસ્યાનિહોતા ॥ ૯ ॥

અપશ્ચાદનુતાપી—ન પશ્ચાદનુતપ્તું શીલમસ્યેતિ, આલોચનાં કૃત્વા ‘કિમર્થ’
મયા સ્વાપરાધા આલોચિતાઃ ’ ઇતિ પશ્ચાત્તાપવર્જિતઃ ૧૦ ॥ તદુક્તમ્—

“ નો પલિઉંચે અમાયી અપચ્છયાવી ન પરિતપ્પે ”

છાયા—નો અપહનુતીત અમાયી અપશ્ચાત્તાપી ન પરિતપ્યેત્ત્વ—ઇતિ ।

“ સંતો આચરિર્હિ ” ઇત્યાદિ ।

જો શિષ્ય-દાન્ત-અપની ઇન્દ્રિયોંકા નિમ્બ કરનેવાળા હોતા હૈં-
વહ શિષ્ય દિયે મને પ્રાયશ્ચિત્તકો અચ્છે પ્રશ્નરસે વહન કર લેના હૈ,
જો શિષ્ય અમાયી-માયાસે વર્જિત હોના હૈ-અપને દ્વારા સેવિત પ્રતિ-
ચારોંકો છિપાનેવાળા નહીં હોના હૈ, વહ અપને દોષોંકો સ્પષ્ટ રૂપસે
પ્રકટ કર દેતા હૈ, તૌર દિયે મને પ્રાયશ્ચિત્તકો શાન્તિકે સાથ સ્વીકાર
કર લેનાહૈ, તથા-જો શિષ્ય અપશ્ચાદનુતાપી હોનાહૈ, ૧૦ વહ આલોચના
કરકે “ મૈને અપને અપરાધોંકી આલોચના કયોંકિ ” એસા પશ્ચાત્તાપ
નહીં કરતા હૈ કદા બી હૈ--“ નો પલિઉંચે અમાયી ” ઇત્યાદિ ।

ઇસ પ્રશ્નરસે ડરા ગુણ વિશિષ્ટ આલોચકકો કથન કર અથ સૂત્ર-

“ સંતો આચરિર્હિ ” ઇત્યાદિ.

દાન્ત-જે શિષ્ય દાન્ત (પેતાની ઇન્દ્રિયોના નિમ્બ કરનાર) હોય છે,
તે તેને જે પ્રાયશ્ચિત્ત દેવામાં આવ્યું હોય છે તેનું સારી રીતે વહન કરે છે.

અમાયી-જે શિષ્ય અમાયી (માયા અથવા કપટથી રહિત) હોય છે, તે
પેતાના દ્વારા સેવ્યમાં આવેલા દોષોને છુપાવતો નથી તે પેતાના દોષોને
શુરુ સમીપે સ્પષ્ટ રૂપે પ્રકટ કરે છે અને તેને જે પ્રાયશ્ચિત્ત દેવામાં આવે
તેનો શાન્તિથી સ્વીકાર કરે છે.

અપશ્ચાદનુતાપી જે શિષ્ય અપશ્ચાદનુતાપી હોય છે તે પેતાના દોષોની
આલોચના કર્યા બાદ આલોચના કરવા માટે પશ્ચાત્તાપ કરતો નથી. કહ્યું
પણ છે કે—“ નો પલિઉંચે અમાયી ” ઇત્યાદિ.

આ પ્રકારે ૧૦ ગુણોથી સંપન્ન આલોચકનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
આલોચના કરાવનારા પુરુષમાં જે દશ ગુણો હોવાં જોઈએ તેમનું નિરૂપણ

इत्थं दशगुणविशिष्टमालोचकमुत्त्वा सम्प्रति यद्गुणविशिष्टसनीपे आलोचना कर्तव्या तमाह—‘ दसहिं ठाणेहिं इत्यादि । दशभिः स्थानैः=गुणैः सम्पन्नोऽनगारोऽर्हति । आलोचनाम्=आलोचकेन श्राव्यमाणम् अनीचारजातं प्रत्येष्टुम्=ग्रहीतुं श्रोतुमित्यर्थः, तत्रया-आचारवान्-आचारो=ज्ञानादिपञ्चविधः, सोऽस्ति ज्ञानासेवनाभ्यां यस्य स तथा-ज्ञानादिपञ्चविधाचारज्ञस्तदा सेवकश्च?, अवधारवान्-अवधारः=अवधारणम्-आलोचकेन आलोच्यमानानामतीचाराणां निश्चयकरणं, सोऽस्यास्तीति तथा-अतीचारप्रकारनिर्णायक इत्यर्थः । उक्तंचात्र—

“ आचारवमाचारं पंचविहं मुणइ जो य आयरइ ।

ओहारवमवहारे आलोइंतस्स सर्व्वपि ॥ १ ॥

छाया—आचारवान् आचारं पञ्चविधं जानाति यश्च आचरति ।

अवधारवान् अवधारयति आलोचयतः सर्व्वमपि ॥ १ ॥

कार “ जिन गुणोंसे विशिष्ट पुरुषके पास आलोचना करनी चाहिये उस पुरुषका कथन करते हैं —“ दसहिं ठाणेहिं ” इत्यादि ।

दश स्थानोंसे युक्त हुआ अनगार आलोचकके द्वारा सुनाये गये अतिचारों सुननेके योग्य होता है, वे दश स्थान इस प्रकारसे हैं—जो गुरु आचारवाला होता है—ज्ञानादि रूप पांच प्रकारके आचारका जो ज्ञान एवं आसेवनकी अपेक्षासे जाननेवाला और सेवन करनेवाला होता है १—अवधारणवाला (निश्चय करनेवाला) होता है २—आलोच्यमान अनीचारोंके प्रकारका निर्णायक होता है, कहा भी है—

“ आचारवमाचार ” इत्यादि ।

કરે છે આ દસ ગુણોથી સંપન્ન હોય એના આચાર્ય અદિ પાસે જ પોતાના દોષોની આલોચના કરવી જોઈએ—

“દસહિં ઠાણેહિં” ઇત્યાદિ—દશ સ્થાનોથી (ગુણોથી) યુક્ત હોય એવા અણગાર જ આલોચક દ્વારા પ્રકટ કરાતાં અપરાધોને શ્રવણ કરવાનો અધિકાર (યોગ્યતા) ધરાવે છે તે દસ ગુણો નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે—

(૧) જે ગુરુ આચારસંપન્ન હોય છે તેમની આગળ પોતાના દોષોની આલોચના કરી શકાય છે. જ્ઞાનાદિરૂપ પાંચ પ્રકારના આચારનું જ્ઞાન ધરાવનારા તથા તે આચારોનું સ્વયં સેવન કરનારા ગુરુને આચારસંપન્ન કહે છે.

(૨) અવધારણાસંપન્ન-જે આચાર્ય આલોચ્યમાન અતિચારોના પ્રકારનો નિર્ણય કરવાનો સમર્થ હોય છે, તે આચાર્ય જ આલોચકની પાસે આલોચના કરાવવાને પાત્ર ગણાય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ આચારવમાચાર ” ઇત્યાદિ. અર્થ ઉપર પ્રમાણે જ છે.

‘ જાત્ર ’ ઇતિ યાવત્પદેન-વ્યવહારવાન્ ૩, અપત્રીડકઃ ૪, પ્રકારકઃ ૫, અપરિસ્ત્રાવી ૬, નિર્ચાપકઃ ૭ ઇતિ સંગ્રહ્યાણિ, તન્ન-વ્યવહારવાન્=આગમશ્રુતજ્ઞાધારણાજીતલક્ષણાનાં ગચ્છાનાં વ્યવહારાણામમિજ્ઞઃ ૩। અપત્રીડકઃ-અપત્રીડકરિ=અપગતત્રીડ-મૃદુવચનાદિના વિગતલજ્જં કરોતિ ય આલોચમાનં સાધુ સઃ ॥ ૪ ॥ ઉત્તં ચ—

“ વ્યવહારવં વ્યવહારં આગમમાઈ ઉ મુણ્ઠ પંચવિહં ।

ઓવીલુવગૂહંતં જહ આલોચ્ઠ તં સવં ” ॥ ૧ ॥

છાયા—વ્યવહારવાન્ વ્યવહારમ્ આગમાદિ તુ જાનાતિ પંચવિધમ્ ।

અપત્રીડ ઉપગૂહંતં યથા આલોચયતિ તત્સર્વમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

અર્થ માત્રઃ—યસ્તુ આગમાદિ પંચવિધં વ્યવહારં જાનાતિ સ વ્યવહારવાનિ ત્યુચ્યતે । તથા—યઃ સ્વાતિચારમ્ ઉપગૂહંતં=નિહનુવાનં સાધુ તથાવિધયા યુક્તયા

હસકા અર્થે પૂર્વોક્ત રૂપસે હી હૈ, યહાં યાવત્પદસે “ વ્યવહારવાન્ ૩ અપત્રીડક ૪, પ્રકારક ૫ અપરિસ્ત્રાવી ૬ નિર્ચાપકઃ ૭ ” ઇતિ પદોંકા સંગ્રહ હુઆ હૈ—ઇનમેં આગમ, શ્રુત, આજ્ઞા, ધારણા ઓર જીતકે મેદસે વ્યવહાર પાંચ પ્રકારકા હૈ, જો ઇન પાંચ પ્રકારકે વ્યવહારોંકા જ્ઞાતા હોતા હૈં વહ વ્યવહારવાન્ ૩ “ અપત્રીડક ”—જો અપને દોષોંકો કહનેમેં લજ્જાપાતા હો એસે સાધુકો જો મૃદુ વચન આદિ દ્વારા લજ્જાસે રહિત કર દેતા હૈ વહ અપત્રીડક હૈ કહા ખી હૈ—

“ વ્યવહારવં વ્યવહારં ” ઇત્યાદિ ।

હસ માથાકા અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપસે હી હૈ, તાત્પર્ય હસ કથનકા યહી હૈ કિ જો આગમાદિ રૂપ પાંચ પ્રકારકે વ્યવહારકો જાનતા હૈ, વહ

આલોચના કરાવનાર આચાર્ય માં આ સિવાય નીચે પ્રમાણે પણ યોગ્યતા હોવી જોઈએ—(૩) વ્યવહારવાન્, (૪) અપત્રીડક, (૫) પ્રકારકઃ, (૬) અપરિસ્ત્રાવી, (૭) નિર્ચાપક.

આગમ, શ્રુત, આજ્ઞા, ધારણા અને જીતના લેદથી વ્યવહાર પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે. જે આચાર્ય આ પાંચે પ્રકારના વ્યવહારનો જાણકાર હોય છે તેને વ્યવહારવાન્ કહે છે.

પોતાના દોષોને પ્રકટ કરનાર સાધુને મૃદુ વચન દ્વારા લજ્જા સંકેત આપીથી રહિત કરાવવાને સમર્થ આચાર્યને અપત્રીડક કહે છે કહ્યું પણ છે કે—“ વ્યવહારવં વ્યવહારં ” ઇત્યાદિ. આ ગાથાનો અર્થ ઉપર સ્પષ્ટ થઈ ચુક્યો છે આ કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે—

જે આગમાદિ પાંચે પ્રકારના વ્યવહારનો જ્ઞાતા હોય છે, તેને વ્યવહાર-

તત્ સર્વભવીચારજાતં પ્રકટી કારયતિ સોડપગ્રીહઃ=અપગ્રીહક ઇન્યુચ્યતે, इति ।
 પ્રકાર ૬:-આલોચનાનન્તરં યોડીચારવતઃ સાધોઃ શુદ્ધિકારકઃ સઃ । તદુક્તમ્--

“ આલોડ્યમ્મિ સોહિં, જો કારાવેઈ સો પકુવ્વઓ ” ।

જાયા--આલોચિતે શોધિં યઃ કારયતિ સ પ્રકારકઃ-इति ॥ ૫ ॥

અપરિસ્ત્રાવી-પરિસ્ત્રવતીતિ પરિસ્ત્રાવી, ન પરિસ્ત્રાવીત્યપરિસ્ત્રાવી-આલોચક-
 દોષાણામન્યેશ્યોડકથનશીલઃ, તદુક્તમ્--

“ જો અન્નસ્સ ડ દોસે, ન કહેઈ ય અપરિસાઈ સો હોઈ ” ।

જાયા-યોડન્યસ્મૈ તુ દોવાન્ ન કથયતિ ચાડપરિસ્ત્રાવી સ ભવતિ-इति ॥ ૬ ॥

નિર્ણાપકઃ-નિર્ણાપયતિ-તથાવિધયા યુક્તયા ગુર્વપિ પ્રાપશ્ચિત્તં શિષ્યેણ નિર્વા-
 હયતિ યઃ સ તથા । તદુક્તમ્--

“ નિઝજવઓ તદ્દ કુણ્ઢ નિવ્વઠ્ઠે જેમ પન્નિઠ્ઠત્તં ” ।

જાયા-નિર્ણાપકન્તથા કરોતિ નિર્વહતિ યેન પ્રાપશ્ચિત્તમ્-इति ॥ ૭ ॥

વ્યવહારવાન્ હૈ, एवं जो अपने अतिचारोंको छुपाते हुए साधु से तथा-
 प्रहारकी युक्ति द्वारा सर्व अतिचारोंको प्रकट करा लेता है, वह अप-
 ग्रीहक है, आलोचनाके पश्चात् जो अतीचारवाले साधुकी शुद्धिकरता है
 वह प्रहारक है कहा भी है--“ आलोड्यमि सोहि ” इत्यादि ।

जो आलोचकके दोषोंको अन्यके प्रति प्रकट नहीं करता है उसे
 अपरिस्त्रावी कहा गया है कहा भी है--

“ जो अन्नस्स ड दोसे ” इत्यादि ।

जो तथापकारकी युक्तिसे भयंकरसे भयंकर बहुत भारी भी प्रा-
 श्चित्तको शिष्यसे पकवा लेता है वह निर्णापक है कहा भी है--

“ निज्जवओ तद्द कुण्ह ” इत्यादि ।

વાના કહે છે પોતાના અતિચારોને છુપાવનારા સાધુ પસે યુક્તિપ્રયુક્તિથી
 અતિચારો પ્રકટ કરાવનાર સાધુને અપગ્રીહક કહે છે.

આલોચના કરાવ્યા બાદ અતિચારોનું સેવન કરનાર સાધુની શુદ્ધિ કરા-
 વનારને પ્રકારક કહે છે. કહ્યું પણ છે કે--“ આલોડ્યમ્મિ સોહિં ” ઇત્યાદિ

અલોચકના દોષોને અન્યની આગળ પ્રકટ નહીં કરનારને અપરિસ્ત્રાવી
 કહે છે, કહ્યું પણ છે કે--“ જો અન્નસ્સ ડ દોસે ” ઇત્યાદિ.

નિર્ણાપક-? યુક્તિપ્રયુક્તિ પૂર્વક-સમન્તતી-પટાવીને-ભયંકરમાં ભયંકર
 પ્રાપશ્ચિત્તનું પણ શિષ્યની પાસે પાલન કરાવે છે, તેને નિર્ણાપક કહે છે. કહ્યું
 પણ છે કે--“ નિઝજવઓ તદ્દ કુણ્ઢ ” ઇત્યાદિ.

તથા-અપાયદર્શી-અપાયાન=અનર્થાન્ પરવતીત્યેન શીલઃ-દુર્ભિક્ષદૌર્બલ્યાદિ-
કૃતશિષ્યચિત્તમજ્ઞાનિર્વાહાદિરૂપાનર્થદર્શી । યદ્વા- સમ્યગ્નાલોચિતશિષ્યેभ्यો
દુર્લભઓધિકત્વાદિકાન્ અનર્થાન્ દર્શયતિ યઃ સ તથા । તદુક્તમ્--

“ દુર્ભિક્ષઃ દુર્બલાઈ, ફરલોષ જાળણ અનર્થ ઉ ।

દંસેઈ ય પરલો, દુર્લભવોહિત્તિ સંસારે ॥ ૧ ॥

છાયા-દુર્ભિક્ષદૌર્બલ્યાદીન્ ફરલોકે જાનાતિ અપાયાંસ્તુ ।

દર્શયતિ ચ પરલોકે દુર્લભવોધિત્ત્વં સંસારે ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૮ ॥

તથા-પ્રિયધર્મા-પ્રિયો ધર્મો યસ્ય સ તથા ધર્મપ્રિય इत्यर्थः ॥ ૯ ॥ દદધર્મા-
દદો ધર્મોયસ્ય સ તથા-સમ્પ્રાપ્તેऽપિ મહાસંકટે ધર્માદગ્રચન્નગીલઈતિ ॥ ૧૦ ॥ સૂ ૩૬ ॥

જો દુર્ભિક્ષ, દુર્બલતા આદિ કૃત શિષ્ય ચિત્તમજ્ઞસે પ્રાયશ્ચિત્તકે
અનિર્વાહ આદિ રૂપ અનર્થોંકો જાનતા હૈ વહ અથવા-અચ્છે પ્રકારસે
અપને અનિચારોંકી આલોચના નહીં કરનેવાલે શિષ્યોંકે લિયે જો
દુર્લભ ઓધિકતા આદિ રૂપ અનર્થોંકો દિલ્લાતા હૈ વહ અપાયદર્શી
હૈ કહા મી હૈ--“ દુર્ભિક્ષઃ દુર્બલાઈ ” ઇત્યાદિ ।

જો ગુરુપ્રાયશ્ચિત્તસે અપને દોષોંકી શુદ્ધિ નહીં કરનેવાલે શિષ્ય-
જનોંકે ફરલોક સમ્બન્ધી દુર્ભિક્ષ દૌર્બલ્ય આદિ અપાયોંકો જાનતા હૈ,
અર્થ પરલોકમેં ડનકી દુર્લભઓધિકતા પ્રકટ કરતાહૈ, વહ અપાયદર્શી
હૈ ધર્મ જિસે પ્રિય હોના હૈ, એસા વહ પ્રિયધર્મવાલા ગુરુ પ્રિયધર્મા

(૮) અપાયદર્શી-દુર્ભિક્ષ, દુર્બલતા આદિને કારણે શિષ્યના મનને ડામા-
ડોળ થયેલું અને પ્રાયશ્ચિત્તનું પાલન કરવામાં શિથિલ થયેલું જોઈને તેને
તેના વિપાકનું ભાન કરાવનાર સાધુને અપાયદર્શી કહે છે. અપાયદર્શી આચાર્ય
અતિચારોની આલોચના નહીં કરનાર શિષ્યને કહે છે કે “ આલોચના નહીં
કરવાથી દુર્લભઓધિકતા આદિરૂપ અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે ” કહ્યું પણ છે કે-

“ દુર્ભિક્ષઃ દુર્બલાઈ ” ઇત્યાદિ.

જે ગુરુ પ્રાયશ્ચિત્ત દ્વારા પોતાના દોષોની શુદ્ધિ નહીં કરનારા શિષ્યોના
આ લોક સંબન્ધી દુર્ભિક્ષ, દૌર્બલ્ય આદિ અપાયોને જાણે છે અને પરલોકમાં
(પરલવમાં) તેમની દુર્લભઓધિકતાને પ્રકટ કરે છે, તે આચાર્યને અપાય-દર્શી
કહે છે (૯) પ્રિયધર્મા-જેમને ધર્મ પ્રિય હોય છે એવા ગુરુને પ્રિયધર્મા કહે છે

(૧૦) દદધર્મા-મોટામાં મોટું સંકટ આવી પડવા છતાં પણ પોતાના
ગૃહીત ધર્મમાંથી ચલાયમાન થતા નથી એવા આચાર્યને દદધર્મા કહે છે.

અચાલોચના પ્રસ્તાવાદશમિઃ સ્થાનૈઃ પ્રાયશ્ચિત્તમાદ--

મૂઝ્મ--દસવિદે પાયચ્છિત્તે પળ્લન્તે, તં જહા-આલોચના-
રિદે ૧, જાવ અળવટ્ટપ્પારિદે ૧ પારંચિયારિદે ૧૦ ॥ સૂ. ૩૭ ॥

છાયા--દશવિધં પ્રાયશ્ચિત્તં પ્રજ્ઞમ્, તથા-આલોચનાર્હં યાવત્ અનસ્થા
પ્યાર્હં ૧ પારાશ્ચિકાર્હમ્ ૧૦ ॥ મૂ. ૩૭ ॥

ટીકા--'દસવિદે' इत्यादि--

પ્રાયશ્ચિત્તં-'પ્રાયશ્ચિત્ત'-શબ્દોડપરાધે તચ્છુદ્ધૌ ચ દૃશ્યતે । અત્ર-અપરાધોડયો
ત્રિજેયઃ । તત્ર-પ્રાયશ્ચિત્તમ્=અપરાધો દશવિધઃ પ્રજ્ઞમઃ, તથા-આલોચનાર્હમ્-
આલોચના=નિવેદના તત્ત્વલક્ષણાં શુદ્ધિર્ઘ્નિતિ યત્તત્ ૧ । યાવત્પદેન-
પ્રતિક્રમણાર્હં ૨ તદુભયાર્હમ્ ૩, વિવેકાર્હમ્ ૪, વ્યુત્સર્ગાર્હમ્ ૫, તપોડર્હમ્ ૬,
હૈ, જો મહા સંકટકે પ્રાપ્ત હોને પર ખી અપને ગૃહીત ધર્મસે ચલાયમાન
નહીં હોતા હૈ, વહ દુઃખભી હૈ । સૂત્ર ૩૬ ।

આલોચનાકે પ્રસ્તાવકો લેકર અવ સૂત્રકાર દશ પ્રકારકે પ્રાયશ્ચિત્તોંકા
કથન કરતેહું--"દસવિદે પાયચ્છિત્તે પળ્લન્તે" इत्यादि ॥ સૂત્ર ૩૭ ॥
ટીકાર્થ-પ્રાયશ્ચિત્ત દશ પ્રકારકા કહા ગયાહું-યહ પ્રાયશ્ચિત્ત શબ્દ અપરાધ
ઑર અપરાધકી શુદ્ધિમે પ્રયુક્ત હુખા દેલા જાતાહૈ, યહાં યહ શબ્દ અપ
રાધાર્થક હૈ, હસ તરહ પ્રાયશ્ચિત્ત અપરાધ દશ પ્રકારકા જો કહા ગયા
હૈ, ડસકા તાત્પર્ય હસ પ્રકારસે હૈ, જો અપરાધ આલોચના રૂપ શુદ્ધિકે
યોગ્ય હોતા હૈ, વહ આલોચનાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ ૧, ધહાં યાવત્ પદસે-
"પ્રતિક્રમણાર્હં ૨, તદુભયાર્હમ્ ૩, વિવેકાર્હમ્ ૪ વ્યુત્સર્ગાર્હમ્ ૫ તપો-

આચાર્યપત્રથી લઈને દહધર્મા પયંતના શુભોથી યુક્ત હોય એવા અચાર્યને
જ આલોચના અતિચારોને શ્રવણ કરવાના અધિકારી ગણાય છે ॥ સૂત્ર ૩૬ ॥

આલોચનાનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર ૧૦ પ્રકારનાં પ્રાયશ્ચિત્તોનું
કથન કરે છે--"દસવિદે પાયચ્છિત્તે પળ્લન્તે" इत्यादि--(સૂ. ૩૭)

ટીકાર્થ-પ્રાયશ્ચિત્તના દસ પ્રકાર કહ્યા છે પ્રાયશ્ચિત્ત શબ્દ અપરાધ અને અ
રાધની શુદ્ધિના અર્થમા વપરાતો બેવામાં આયે છે અહીં આ શબ્દ અપરા
ધાર્થક છે. આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્તના પ્રકારો એટલે અપરાધના જ પ્રકારો અહીં
ખતાવ્યા છે. તેના દસ પ્રકારો નીચે ગમાણે છે-(૧) આલોચનાર્હ જે અપરાધને
માત્ર આલોચના દ્વારા જ શુદ્ધિ થઈ જાય છે તે અપરાધને આચાર્યનાર્હ કહે
છે. અહીં "યાવત્" પદ દ્વારા (૨) પ્રતિક્રમણાર્હ, (૩) તદુભયાર્હ, (૪) વિવે-

તદર્હતિ તત્પ્રાયશ્ચિત્તમનવસ્થાપ્યાર્હમ્ ૧। પારાશ્ચિકાર્હમ્—યસ્મિન્નતીચારે આસે-
વિતે સ'ધુર્લિજ્જેવકાઢતપોમિઃ પારાશ્ચિકો=વહિર્ભૂતઃ ક્રિયતે, તદર્હતિ યત્ તત્
પારાશ્ચિકાર્હમિતિ ॥ સૂ. ૩૭ ॥

પારાશ્ચિક કદાચિન્મિથ્યાત્વમપ્યનુભવેદતો મિથ્યાત્વં નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—દસવિદે મિચ્છત્તે પપ્પત્તે, તં જહા—અધમ્મે ધમ્મ-
સપ્પના ૧, ધમ્મે અધમ્મસપ્પના ૨, ઉમ્મગ્ગે મગ્ગસપ્પના ૩, મગ્ગે
ઉમ્મગ્ગસપ્પના ૪ અજીવેસુ જીવસપ્પના ૫, જીવેસુ અજીવસપ્પના
૬, અસાહુસુ સાહુસપ્પના ૭, સાહુસુ અસાહુસપ્પના ૮, અમુત્તેસુ
મુત્તસપ્પના ૯, મુત્તેસુ અમુત્તસપ્પના ૧૦ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

છાયા—દશવિધં મિથ્યાત્વં પ્રજ્ઞમ્, તવયા—અધર્મે ધર્મસંજ્ઞા ૧, ધર્મે અધ-
ર્મસંજ્ઞા ૨, ઉન્માર્ગે માર્ગસંજ્ઞા ૩, માર્ગે અમાર્ગસંજ્ઞા ૪, અજીવેષુ જીવસંજ્ઞા ૫
જીવેષુ અજીવસંજ્ઞા ૬, અસાધુષુ સાધુસંજ્ઞા ૭, સાધુષુ અસાધુસંજ્ઞા ૮, અમુત્તેષુ
મુક્તસંજ્ઞા ૯ મુક્તેષુ અમુક્તસંજ્ઞા ૧૦ । સૂ. ૩૮ ॥

સ્થપિત કર દિયા જાતા હૈ—એસે પ્રાયશ્ચિત્તકે યોગ્ય જો હોતા હૈ વહ
અનવસ્થાપ્યાર્હ હૈ ૧। જિસ અતિચોરકે સેવન કરને પર સાધુ લિજ્જ,
ક્ષેત્ર, કાલ, एवं તપ હનસે વહિર્ભૂત કર દિયા જાતા હૈ, ઉસકા નામ
પારાશ્ચિક હૈં હસ પારાશ્ચિકકે યોગ્ય જો હોતા હૈ, વહ પારાશ્ચિકાર્હ
પ્રાયશ્ચિત્ત હૈ ૧૦ ॥ સૂત્ર ૩૭ ॥

જો પારાશ્ચિક હોતા હૈ, વહ કદાચિત્ મિથ્યાત્વ કમી અનુભવ
કર સકતા હૈં અતઃ અવ સૂત્રકાર મિથ્યાત્વકા નિવેદન કરતે હૈં—

સાધુને અમુક સમય સુધી વ્રતોમાંથી અનવસ્થાપ્ય થવું પડે છે અને ત્યારબાદ
તપ દ્વારા દોષની શુદ્ધિ થઈ ગયા બાદ તેને વ્રતમાં સ્થાપિત કરવામાં આવે છે,
તે પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તને પાત્ર બનનાર સાધુના તે અપરાધને અનવસ્થાપ્યાર્હ કહે છે.

દસમે પ્રકાર—પારાશ્ચિકાર્હ—જે અતિચારનું સેવન કરવાથી સાધુને લિંગ,
ક્ષેત્ર, કાળ અને તપથી બહિર્ભૂત કરી નાખવામાં આવે છે—તેના સાધુવેષ કઢાવી
નાખવામાં આવે છે, તે પ્રકારના પ્રાયશ્ચિત્તને પારાશ્ચિકાર્હ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે. । સૂ. ૩૭ ।

જે પારાશ્ચિક હોય છે તે ક્યારેક મિથ્યાત્વનો પણ અનુભવ કરી શકે છે.
તેથી હવે સૂત્રકાર મિથ્યાત્વના પ્રકારનું નિરૂપણ કરી શકે છે—

ટીકા—‘ દસવિદે મિચ્છત્તે ’ इत्यादि—

મિથ્યાત્વ=વિપરીતજ્ઞાનં દશવિધં પ્રજ્ઞસમ્, તદ્વથા-અધર્મે=પ્રાણાતિપાતાદૌ ધર્મસંજ્ઞા=ધર્મબુદ્ધિરિતિ પ્રથમમ્ ૧। તથા-ધર્મે પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિ લક્ષણે આસ-
વચને અધર્મસંજ્ઞા-અધર્મત્વેન શ્રદ્ધાનં, વિપરીતબુદ્ધિત્વાત્ । વિપરીત બુદ્ધિસ્તુ મગવ-
દ્વિષયે અનાસત્વાભિમતત્વેન । તથાહિ-‘ સર્વં એવ પુરુષારાગાદિમન્તોઽસર્વજ્ઞાશ્ચ પુરુ-
ષત્વાદ્ યથાઽહમ્ ’ इत्यनुमानेन પુરુષભૂતાસ્તીર્થકરા અપિ રાગાદિમન્તોઽસર્વજ્ઞાશ્ચ,

“ દસવિદે મિચ્છત્તે પળગત્તે ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૩૮ ॥

ટીકાર્થ-મિથ્યાત્વ દશ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ વિપરીત અજ્ઞાનકા નામ મિથ્યાત્વ હૈ યહ મિથ્યાત્વ જો દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ-સો ઉસકા તાત્પર્ય હસ પ્રકારસે હૈ-“ અધર્મે ધર્મસંજ્ઞા ” પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ અધર્મમે ધર્મબુદ્ધિ રચના (ધર્મકા શ્રદ્ધાન કરના) યહ મિથ્યાત્વકા પ્રથમ ભેદ હૈ “ ધર્મે અધર્મ સંજ્ઞા ” પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિરૂપ ધર્મમે હસ પ્રકારકે આપ્રવચનમે અધર્મ રૂપતાકા ધ્યાન કરના-વિપરીત (શ્રદ્ધાન કરના) યહ મિથ્યાત્વકા દ્વિતીય ભેદ હૈ ક્યોંકિ હસ પ્રકારકી બુદ્ધિ રચનેવાલેકી બુદ્ધિ વિપરીત હસલિયે માની ગઈ હૈ કિ વહ ભગવાનકો અનાપ્ત-આપ્ત-વીત સર્વજ્ઞ રૂપસે માનતા હૈ ઉસકા કહના એસા હૈ કિ જિતને બી પુરુષ હૈ વે સવ રાગાદિવાલે એવં અસર્વજ્ઞ હૈ ક્યોંકિ વે પુરુષ હૈ જોસે કિ હમ, હસ પ્રકારકે અનુમાનસે પુરુષ રૂપ તીર્થકર બી રાગાદિયુક્ત ઓર અસર્વજ્ઞ કોટિમે આ જાતે

“ દસવિદે મિચ્છત્તે પળગત્તે ” इत्यादि—(સૂ ૩૮

ટીકાર્થ-વિપરીત જ્ઞાનને મિથ્યાત્વ કહે છે. તે મિથ્યાત્વના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—

(૧) અધર્મે ધર્મસંજ્ઞા”—પ્રાણાતિપાત આદિ અધર્મને જ ધર્મરૂપ માનવો તે મિથ્યાત્વનો પહેલો ભેદ છે. (૨) “ ધર્મે અધર્મ સંજ્ઞા ” પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિરૂપ ધર્મમાં-આ પ્રકારના આસવચન પ્રત્યે શ્રદ્ધા રાખવાને બદલે તેના કરતાં વિપરીત બાળતમાં શ્રદ્ધા રાખવી, આ મિથ્યાત્વનો બીજો ભેદ છે. આ પ્રકારનો વિચાર કરનારની બુદ્ધિને વિપરીત કહેવાનું કારણ એ છે કે તે ભગવાનને અનાસરૂપે માને છે આ પ્રકારની માન્યતાવાળા લોકો એવું કહે છે કે જેટલા પુરુષો છે તે બધાં રાગાદિથી યુક્ત હોય છે અને અસર્વજ્ઞ હોય છે, કારણ કે તેઓ પણ આપણી જ જેમ પુરુષો જ છે. આ પ્રકારની માન્યતા સ્વીકારવામાં આવે તો પુરુષરૂપ તીર્થકરોને પણ રાગાદિથી યુક્ત અને અસ-

અતઃ તેઽનાસાઃ । તતઃ તદુપદિષ્ટે શાસ્ત્રે ન ધર્મતા । इत्थं कुतर्कवशाद् यस्य
 तीर्थकरोक्ते आगमेऽपि अधर्मत्वेन श्रद्धानमिति द्वितीयम् । २ । तथा-उन्मार्गे=
 यथार्थतत्त्वापेक्षया विरुद्धश्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूपे मोक्षपुरीप्रत्यमार्गभूते मार्ग
 संज्ञा=कुसंસ્कारतो मार्गबुद्धिरिति तृतीयम् ३ । तथा-मार्गे=मोक्षपुरीप्रापके रत्न-
 त्रयात्मके वास्तविकमार्गे अमार्गसंज्ञेति चतुर्थम् ४ । तथा-अजीवेपु=आकाशपर-
 माण्वादिषु जीवसंज्ञा=जीवबुद्धिरिति पञ्चमम् ५ । तथा-जीवेपु पृथिव्यादिषु अजी-

हैं इसलिये वे अनास हैं । इसलिये इनके द्वारा उपदिष्ट शास्त्रमें धर्मता
 नहीं आती हैं, इस प्रकारसे कुतर्कके वश जो तीर्थ'करोक्त आगममें
 भी अधर्म रूपताका श्रद्धान करता है वह मिथ्यात्वका द्वितीय भेद है
 यथार्थतत्त्वकी अपेक्षासे विरुद्ध श्रद्धान एवं विरुद्ध ज्ञानसे आચરित
 हुए तथा मोक्ष पुरीके प्रति अमार्गभूत ऐसे उन्मार्गमें कुसंસ્कारके वशसे
 जो मार्गकी बुद्धि है वह मिथ्यात्वका तृतीय भेद हैं मोक्षके प्राप्त
 करानेमें वास्तविक मार्गरूप ऐसे रत्नत्रयमें जो अमार्गकी मान्यता है
 वह मिथ्यात्वका चतुर्थ भेद है-अजीवोंमें आकाश परमाणु आदिकोंमें
 जो जीव होनेकी मान्यता है वह मिथ्यात्वका पांचवा भेद है, पृथिवी
 आदिक जीवोंमें जो अजीव होनेकी मान्यता है वह मिथ्यात्वका छठा
 भेद है, इस विषयमें इस मान्यतावालेका ऐसा कहना है कि पृथिवी

વંશ માનવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે. તેથી આ પ્રકારના લોકો દ્વારા ઉપદિષ્ટ
 શાસ્ત્રમાં ધર્મતાનો સદ્ભાવ હોતો નથી. આ પ્રકારના કુતર્કથી પ્રેરાઈને જે
 લોકો તીર્થ'કરોક્ત આગમમાં પણ અધર્મરૂપના હોવાની શ્રદ્ધા રાખે છે એવા
 લોકોને આ ખીજ પ્રકારના મિથ્યાત્વના ઉપાસકો કહી શકાય છે.

(૩) યથાર્થતત્ત્વ પ્રત્યે શ્રદ્ધા રાખવાને બદલે તેના કરતાં વિરુદ્ધ અર્થ
 પ્રત્યે શ્રદ્ધા રાખનારી અને વિરુદ્ધ જ્ઞાન વડે આચરિત થતા, મોક્ષપુરી, પ્રત્યે
 નહીં લઈ જનાર હોવાને કારણે અમાર્ગરૂપ એવા ઉન્માર્ગને કુસંસ્કારને કારણે
 માર્ગરૂપ માનનારી જે બુદ્ધિ છે તેને મિથ્યાત્વના ત્રીજા ભેદ રૂપ કહી શકાય.

(૪) મોક્ષપુરીને પ્રાપ્ત કરાવનારા વાસ્તવિક માર્ગરૂપ રત્નત્રયમાં જે અમા-
 ગની માન્યતા છે, તે મિથ્યાત્વના ચોથા ભેદરૂપ છે.

(૫) અણુવોમાં-આકાશ, પરમાણુ આદિકોમાં-જે અણુ માન્યતા છે તેને
 મિથ્યાત્વના પાંચમાં ભેદ રૂપ સમજવી.

(૬) અણુને અણુ માનવા, તે મિથ્યાત્વનો છઠ્ઠો ભેદ છે. કેટલાક
 લોકો પૃથ્વી આદિ અણુને અણુરૂપ માને છે તેઓ એવી દલીલ કરે છે કે

વસંજ્ઞા યથા-પૃથિવ્યાદયોઽજીવાઃ ઉચ્છ્વાસાદીનાં જીવધર્મીણાં તત્રાનુપલમ્ભાત્
 ઘટવદિતિ ષષ્ઠમ્ ૬। તથા-અસાધુષુ=પૃથિવ્યાદિષ્ઠજીવનિકાયવધાદ્ નિવૃત્તેષુ
 ઔદેશિકાદિ ભોજિષુ બ્રહ્મચર્યરહિતેષુ સાધુસંજ્ઞેતિ સપ્તમમ્ ૭। તથા-સાધુષુ=
 સમ્યગ્જ્ઞાનદર્શનચારિત્રૈર્મોક્ષસાધકેષુ મુનિષુ અસાધુ-સંજ્ઞેત્યષ્ટમમ્ ૮। તથા-અમુ-
 ક્તેષુ=સકર્મકેષુ લોકવ્યાપારપ્રવૃત્તેષુ મુક્તસંજ્ઞેતિ નવમમ્ ૯। તથા-મુક્તેષુ=સકલ
 કર્મકૃતવિકારરહિતેષુ અનન્તજ્ઞાનદર્શનમુખવીર્યમુક્તેષુ સિદ્ધેષુ અમુક્તસંજ્ઞેતિ
 દશમમ્ ૧૦। ॥ સૂ. ૩૮ ॥

આદિકોર્મે ઉચ્છ્વાસ આદિ જો જીવ ધર્મ હૈં વે વહીં ઉપલબ્ધ હોતે હૈં,
 અતઃ ડનકી અનુગન્ધિસે ઘટકી તરહ વહ જીવત્વ નહીં હૈ, પૃથિવ્યાદિ
 જીવનિકાયકે વધસે નિવૃત્ત હુએ એવં ઔદેશિક આદિ આહારકે કર-
 નેવાલે એસે બ્રહ્મચર્ય રહિત સાધુઓંકો સાધુ માનના યહ મિથ્યાત્વકા
 સાતવાં ભેદ હૈ, સમ્યગ્દર્શન સમ્યગ્જ્ઞાન એવં સમ્યક્ ચારિત્ર, સમ્યક્
 તપ ઇનસે મોક્ષકે સાધકમૂત મુનિજનોંમેં અસાધુકી માન્યતા યહ મિથ્યા-
 ત્વકા આઠવાં ભેદહૈ, જો કર્મસે અમુક્તહૈ-લોક વ્યવહારમેં નિરતહૈ-સક-
 ર્મક હૈ, ડસમેં મુક્તકી માન્યતા યહ મિથ્યાત્વકા ૯ વાં ભેદ હૈ તથા-
 જો સકલ કર્મોં દ્વારા કૃત વિકારસે રહિત હૈં, એવં અનન્તજ્ઞાન, અનન્ત
 દર્શન, અનન્ત સુખ ઓર અનન્ત વીર્યસે જો મુક્તહૈ એસે સિદ્ધ પરમેષ્ઠીમેં
 અમુક્તકી માન્યતા યહ મિથ્યાત્વકા દશવાં ભેદ હૈં ॥ સૂત્ર ૩૮ ॥

પૃથ્વીકાય આદિમાં શ્વાસ, ઉચ્છ્વાસ આદિ જીવધર્મો જોવામાં આવતા નથી.
 તેમાં આ શુણોનો અભાવ હોવાથી તેમને તેઓ ઘટાદિની જેમ અજીવ જ માને
 છે. તેમની આ પ્રકારની માન્યતાને મિથ્યાત્વ જ ગણી શકાય. (૭) પૃથ્વી આદિ
 જીવનિકાયના વધથી નિવૃત્ત થયેલા ઔદેશિક આદિ આહાર કરનારા એવા
 બ્રહ્મચર્યરહિત સાધુઓને સાધુ માનવા તે પણ મિથ્યાત્વ જ છે. આ મિથ્યા-
 ત્વનો સાતમો ભેદ છે. (૮) સમ્યક્ દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યક્ચારિત્ર અને
 સમ્યક્ તપને મોક્ષના સાધનરૂપ માનનારા સાધુઓને અસાધુરૂપ માનવા તે
 પણ મિથ્યાત્વ જ છે. આ મિથ્યાત્વનો નવમો ભેદ છે. (૯) જેઓ અમુક્ત
 છે-લોકવ્યવહારમાં નિરત છે-સકર્મક છે, તેમને મુક્ત માનવા તે પણ મિથ્યા-
 ત્વનો નવમો ભેદ છે. (૧૦) જેઓ સકલ કર્મો દ્વારા કૃત વિકારોથી રહિત
 છે અને અનંતજ્ઞાન, અનંતદર્શન, અનંતમુખ, અને અનંત વીર્યથી મુક્ત છે
 એવાં સિદ્ધ પરમાત્માને અમુક્ત માનવા તે પણ મિથ્યાત્વ જ છે. આ મિથ્યા-
 ત્વનો દસમો ભેદ છે. ॥ સૂત્ર ૩૮ ॥

સિદ્ધો યાવત્ પ્રહીણઃ ૩। પુરુષસિંહઃ સ્વલુ વાસુદેવો દશવર્ષશતસહસ્રાણિ સર્વાયુષ્કં પાલયિત્વા ષષ્ઠ્યાં તમાયાં પૃથિવ્યાં નૈરયિકતયા ઉપપન્નઃ ૪। નેમિઃ સ્વલુ અર્હન્ દશ ધનૂંપિ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન દશચવર્ષસહસ્રાણિ સર્વાયુષ્કં પાલયિત્વા સિદ્ધો યાવત્ પ્રહીણઃ ૫। કૃષ્ણઃ સ્વલુ વાસુદેવો દશધનૂંપિ ઊર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન દશચ વર્ષશતાનિ સર્વાયુષ્કં પાલયિત્વા તૃતીયસ્થાં વાલુકાપ્રભાયાં પૃથિવ્યાં નૈરયિકતયા ઉપપન્નઃ ૬॥સૂ. ૩૯॥

ટીકા—‘ ચંદ્રપ્પમેણ ’ इत्यादि—

વ્યાख्या સ્પષ્ટા । અત્રેદં બોધ્યમ્—આદિતશ્ચત્વારિ સૂત્રાણિ આયુર્માત્ર વિષયાણિ । તતઃ સૂત્રદ્વયમ્ ઉચ્ચત્વવિષયમાયુર્વિષયં ચેતિ । ‘ સિદ્ધે જાવપ્પહીણે ’

વર્ષ તક સર્વાયુષ્કા પાલન કરકે સિદ્ધ યાવત્ સર્વ દુઃખોસે રહિત હુએ હૈં । નમિ અર્હન્ત ૧૦ લાખ વર્ષ તક સર્વાયુષ્કા પાલન કરકે સિદ્ધ યાવત્ સર્વ દુઃખોસે રહિત હુએ હૈં । પુરુષસિંહ વાસુદેવ ૧૦ લાખ વર્ષ તક સર્વાયુષ્કા પાલન કરકે છઠી તમા નામકી પૃથિવીમેં નૈરયિક રૂપસે ઉત્પન્ન હુએ હૈં ૪। નેમિનાથ અર્હન્ત દશ ધનુષ ડંચે થે વે ૧૦ હજાર વર્ષ તક સર્વાયુષ્કા પાલન કરકે સિદ્ધ યાવત્ સમસ્ત કર્મોસે રહિત હુએ હૈં । કૃષ્ણ વાસુદેવ દશ ધનુષ ડંચે થે વે ૧૦ સૌ વર્ષ તકકી સમસ્ત આયુકા પાલન કરકે ત્રીસરી પૃથિવીમેં ઉત્પન્ન હુએ હૈં ।

इस ३९ वें सूत्रमें आदिके चार सूत्र आयुके सम्बन्धमें कहे गये हैं । तथा दो सूत्र ऊंचाईके सम्बन्धमें एवं आयुके सम्बन्धमें कहे गये

ધર્મનાથ અર્હન્ત ૧૦ લાખ વર્ષ સુધીના સર્વાયુષ્કનું પાલન કરીને સિદ્ધ યાવત્ સર્વદુઃખોથી રહિત થઈ ગયા છે.

નમિ અર્હન્ત ૧૦ લાખ વર્ષ સુધીના સર્વાયુષ્કનું પાલન કરીને સિદ્ધ યાવત્ સર્વદુઃખોથી રહિત થયા છે. પુરુષસિંહ વાસુદેવ ૧૦ લાખ વર્ષ સુધી ના સર્વાયુષ્કનું પાલન કરીને છઠી ‘તમા’ નામની પૃથ્વીમાં (નરકમાં) નૈરયિક રૂપે ઉત્પન્ન થયા છે. ૪।

નેમિનાથ અર્હન્ત ૧૦ ધનુષપ્રમાણુ ઊંચા હતા. ૧૦ હજાર વર્ષ સુધી સર્વાયુષ્કનું પાલન કરીને તેઓ સિદ્ધ (યાવત્) સર્વદુઃખોથી રહિત થઈ ગયા છે. કૃષ્ણ વાસુદેવ ૧૦ ધનુષપ્રમાણુ ઊંચા હતા. ૧૦ સો (૧૦૦૦) વર્ષ પર્યન્ત સર્વાયુષ્કનું પાલન કરીને તેઓ ત્રીજા નરકમાં નારકની પર્યાયે ઉત્પન્ન થયા છે.

આ ૩૯માં સૂત્રનાં પહેલાં ચાર સૂત્રો આયુના વિષયમાં આપવામાં આવ્યા છે. બાકીનાં બે સૂત્રોમાં ઊંચાઈ અને આયુનું કથન કરવામાં આવ્યું છે.

इत्यत्र 'यावत्' पदेन 'बुद्धे मुक्ते परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे' इत्येतानि पदानि ग्राह्याणि । व्याख्यात्वेपां पूर्वंगता ॥ सू० ३९ ॥

“ नैरधिकृतया उत्पन्नः ” इति पूर्वमुक्तम् । क्षेत्रतो नारकसमीपवर्तिनो भवनवासिन इति भवनवासिनो दशविधत्वेनाह—

मूलम्—दसविहा भवणवासी देवा पणत्ता, तं जहा—
असुरकुमारा जात्र थणियकुमारा । एएसि णं दसविहाणं भव-
नवासीणं देवाणं दस चेइयरुक्खा पणत्ता, तं जहा—आसत्थ
१, सत्तिवन्ने २, तामलि ३, उंवर ४, सिरीस ५ दाहिवन्ने ६
वंजुल ७ पलास ८ वप्पा-यए ९ य कणियारुक्खे १० । सू० ४० ॥

छाया—दशविधा भवनवासिनो देवा मज्झताः, तद्यथा—असुरकुमारा यावत् स्तनितकुमाराः । एतेषां खलु दशविधानां भवनवासिनां देवानां दशचैत्यवृक्षाः हैं । “ सिद्धे जावप्पहीणे ” में यावत्पदसे “ बुद्धे मुक्ते, परिनिव्वुडे सव्व दुक्खप्पहीणे ” इन पदोंका संग्रह हुआ है, इन पदोंकी व्याख्या पहिले की जा चुकी है ॥ सूत्र ३९ ॥

३९ वे सूत्रमें “ नैरधिकृती पर्यायसे उत्पन्न हुए हैं ” ऐसा अन्तमें कहा गया है, सो क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी नारकके समीपवर्ती होते हैं—इसलिये अब सूत्रकार भवनवासियोंका दशविध रूपसे कथन करते हैं

“ दसविहा भवणवासी देवा पणत्ता ” इत्यादि ॥ सूत्र ४० ॥

टीकार्थ—भवनवासी देव दश प्रकारके कहे गये हैं—जैसे—असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार इन १० प्रकारके भवनवासी देवोंके १० चैत्यवृक्ष कहे

“ सिद्धे जावप्पहीणे ” आ सूत्रમાં જે “ જાવ (પર્યાન્ત) ” પદ વપરાયું છે. તેના દ્વારા “ બુદ્ધે, મુક્તે, પરિનિવ્વુડે સવ્વદુક્ખપ્પહીણે ” આ ચાર પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોનો અર્થ આગળ સ્પષ્ટ થઈ ચૂક્યો છે. ॥ સૂત્ર ૩૯ ॥

પૂર્વસૂત્રમાં એવું કથન કરવામાં આવ્યું છે કે કૃષ્ણવાસુદેવ નરકમાં ઉત્પન્ન થયા છે. ક્ષેત્રની દૃષ્ટિએ વિચારવામાં આવે તો ભવનવાસી દેવો પણ નારકોની સમીપના ક્ષેત્રમાં જ રહે છે. આ સંબંધને કારણે હવે સૂત્રકાર ભવનવાસી દેવોના દસ પ્રકારોનું કથન કરે છે—

“ દસવિહા ભવણવાસી દેવા પણત્તા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૦)

ટીકાર્થ—ભવનવાસી દેવો દસ પ્રકારના કહ્યા છે. (૧) અસુરકુમાર, (૨) નાગકુમાર, (૩) સુપર્ણકુમાર, (૪) વિદ્યુત્કુમાર, (૫) અગ્નિકુમાર, (૬) દ્વીપકુમાર, (૭) ઉદ

પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-અશ્વત્થઃ ૧ સપ્તપર્ણઃ ૨, શાલ્મલિઃ ૩, ઉદુમ્બરઃ ૪ શિરીષઃ ૫, દધિપર્ણઃ ૬, વજ્જુલઃ ૭, પલાશઃ ૮, વપ્રાતક ૯, અર્કણિકારવૃક્ષશ્ચ ૧૦ ॥ સૂ ૦૪૦ ॥

ટીકા—‘ દસવિહા ’ इत्यादि—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નવરં-યાવત્પદેન-નાગ-સુપર્ણ વિદ્યુદગ્નિ-દ્વીપોદધિ-દિક્ વાયુ-નામાનો ગ્રાહ્યા इति । અમુરાદીનાં દશાનાં ક્રમેણ અશ્વત્થાદયશ્ચૈત્યવૃક્ષાઃ= આવાસવૃક્ષા બોધ્યાઃ ॥ સૂ ૦ ૪૦ ॥

અનન્તરોક્તા ભવનવાસિનો દેવાઃ કિલ સુખેન તિષ્ઠન્તિ, અતઃ સુખં દશ-વિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—દસવિહે સોઝ્જલે પળણત્તે, તં જહા-આરોગ્ગ ૧
દીહમાઝ ૨ અઢ્ઢેઝ્ઞં ૩ કામ ૪ ભોગ ૫ સંતોસે ૬ અત્થિ ૭
સુહભોગ ૮ નિઝ્જલ્લમ્મમેવ ૯ તત્તો અણાવાહે ૧૦ । સૂ. ૪૧ ॥

છાયા-દશવિધં સૌખ્યં પ્રજ્ઞપ્તં તથા-આરોગ્યં ૧ દીર્ઘમાયુઃ ૨ આઢ્યત્વં ૩ કામૌ ૪
ભોગાઃ ૫ સન્તોષઃ । અસ્તિ ૭ શુભભોગઃ ૮ નિષ્ક્રમ એવં ૯ તતોનાવાધમ્ ૧૦ ॥ સૂ ૦ ૪૧ ॥

ગયે હૈં-જૈસે-અશ્વત્થ ૧ સપ્તપર્ણ ૨, શાલ્મલિ ૩, ઉદુમ્બર ૪, શિરીષ ૫, દધિપર્ણ ૬, વજ્જલ ૭ પલાશ ૮ વપ્રાતક ૯ એવં કર્ણિકાર ૧૦ યહાં
યાવત્પદસે “ નાગકુમાર, સુપર્ણકુમાર, વિદ્યુત્કુમાર, અગ્નિકુમાર, દ્વીપ-
કુમાર, ઉદધિકુમાર, દિક્કુમાર એવં વાયુકુમાર इन आठ भवनवा-
सियों का ग्रहण हुआ है, चैत्यवृक्षसे आवासवृक्ष गृहीत हुए हैं ॥ સૂ ૪૦ ॥

યે કથિવ ભવનવાસી દેવ સુખસે રહતે હૈં, અતઃ અવ સૂત્રકાર
સુખકા કથન ૧૦ વિધ રૂપસે કરતે હૈં—

“ દસવિહે સોઝ્જલે પળણ^સ ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૪૧ ॥

ધિકુમાર, (૮) દિક્કુમાર, (૯) વાયુકુમાર અને (૧૦) સ્તનિતકુમાર. આ દસ પ્રકારના ભવનવાસી દેવોના ૧૦ ચૈત્યવૃક્ષો કહ્યાં છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) અશ્વત્થ, (૨) સપ્તપર્ણ, (૩) શાલ્મલિ, (૪) ઉદુમ્બર, (૫) શિરીષ, (૬) દધિપર્ણ, (૭) વજ્જલ, (૮) પલાશ, (૯) વપ્રાતક અને (૧૦) કર્ણિકાર અહીં ચૈત્યવૃક્ષ પદ દ્વારા આવાસવૃક્ષ ગૃહીત થયાં છે. ॥ સૂત્ર ૪૦ ॥

ઉપર્યુક્ત ભવનવાસી દેવો સુખપૂર્વક રહે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર સુખના દસ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—“દસવિહે સોઝ્જલે પળણત્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૧)

ટીકા—‘ દસવિદે સોક્ષ્મે ’ ઇત્યાદિ—

સૌખ્યં—સુખમેવ સૌખ્યં, તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તત્રથા—આરોગ્યમ્=નિરો-
ગિતા ૧, દીર્ઘમ્ આયુઃ=શુભં ચિરજીવિતત્વમ્ ૨ । આદ્યત્વમ્=સમૃદ્ધિયુક્તતા
૩। કામૌ=શબ્દરૂપલક્ષણૌ ૪ ભોગાઃ=ગન્ધરસસ્પર્શલક્ષણાઃ ૫। કામભોગશબ્દા-
વત્ર લુપ્તવિભક્તિઙ્કૌ નિર્દિષ્ટૌ । તથા-સન્તોષઃ=તૃણાયાઃ અભાવઃ । સન્તોષોઽપિ
સુખમેવ સુખરૂપત્વાત્તસ્ય ૬। ઉક્તં ચ—

“ આરોગ્યસારિયં મણુસત્તણં સચ્ચસારિઓ ધમ્મો ।

વિજ્ઞા નિચ્છયસારા સુદ્ધાહં સંતોસસારાહં ॥૧૧॥ ”

છાયા—આરોગ્યસારં મનુષ્યત્વં સત્યસારો ધર્મઃ ।

વિદ્યા નિશ્ચયસારા સુખાનિ સન્તોષસારાણિ ॥૧૧॥ ઇતિ ।

સુખ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—જૈસે—આરોગ્ય ૧, નિરોગિતા
દીર્ઘ આયુ ૨ શુભ ચિરજીવિત આદ્યના—સમૃદ્ધિસે યુક્તતા ૩, ઇચ્છા-
નુકૂલ શબ્દ રૂપ કામ ૪, શુભ ગન્ધરસ સ્પર્શ રૂપ ભોગ ૫, તૃણાકા
અભાવ રૂપ સન્તોષ ૬, આવશ્યકતાકે અનુસાર વસ્તુકી પ્રાપ્તિ ૭, શુભ
ભોગ ૮ પ્રવ્રજ્યા ૯ ઔર અનાવાધ રૂપ મોક્ષ સુખ ૧૦ યહાં સન્તોષકો
સુખ ઇસલિયે કહા ગયા હૈ કિ વહ સુખ રૂપ હોતા હૈ કહા મી હૈ—

“ આરોગ્યસારિયં ” ઇત્યાદિ ।

મનુષ્યમ્વ આરોગ્યસારવાલાહી સુખરૂપ માના ગયા હૈ, સત્યસાર-
વાલાહી ધર્મ માના ગયા હૈ, નિશ્ચય રૂપ સારવાલી વિદ્યા માની ગઈ
ગઈ હૈ, ઔર સન્તોષસારવાલા સુખ માના ગયા હૈ ।

સુખના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) આરોગ્ય, (નિરોગિતા)
(૨) દીર્ઘ આયુ, (શુભચિરજીવિત) (૩) આદ્યના, સમૃદ્ધિ (સંપન્નતા) (૪) ઇચ્છા-
નુકૂલ શબ્દરૂપ કામ (૫) શુભ ગન્ધરસસ્પર્શ ભોગ, (૬) તૃણાના અભાવરૂપ
સંતોષ, (૭) આવશ્યકતા પ્રમાણે વસ્તુની પ્રાપ્તિ, (૮) શુભયોગ, (૯) પ્રવ્રજ્યા
અને (૧૦) અનાવાધરૂપ મોક્ષસુખ. અહીં કામભોગ આ શબ્દો લુપ્તવિભક્તિવાળા
છે. સંતોષને સુખ કહેવાનું કારણ એ છે કે તે સુખરૂપ હોય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ આરોગ્યસારિયં ” ઇત્યાદિ.

આરોગ્યસારવાળા મનુષ્યમ્વને જ સુખરૂપ માનવામાં આવ્યો છે. સત્ય-
સારવાળો જ ધર્મ માનવામાં આવ્યો છે, નિશ્ચયરૂપ સારવાળી વિદ્યાને જ વિદ્યા
મનાય છે, સંતોષરૂપ સારવાળું સુખ મનાય છે. અથવા—“ સન્તોષામૃતવૃક્ષાનાં ”

અથવા—“ સન્તોષામૃતતૃપ્તાનાં યત્સુખં શાન્તચેતસામ્ ।

કુસ્તદ્ધનલુગ્ધાનામિતથેતથ ધાવતામ્ ॥૧॥ ” ઇતિ” ॥૬॥

અસ્તિ=યદા યદા યદ્ યદ્ વસ્તુ પ્રયોજનીયતામુપગચ્છતિ, તદા તદા તત્તદ્ વસ્તુ અસ્તિ=જાયતે ઉપલબ્ધયતે તદ્, તસ્યાપિ સુખહેતુત્વાદિતિ ॥૭॥ શુભ ભોગઃ=શુભઃ=પ્રશસ્તો ભોગઃ=શુભભોગઃ । અયમપિ સુખમેવ સાતોદય-નિષ્પન્નત્વાત્ । ૮॥ નિષ્ક્રમઃ-નિષ્ક્રમણં નિષ્ક્રમઃ-સંસારપટ્ટાન્નિર્ગમનં પ્રવ્રજ્યેત્યર્થઃ । એવકારોઽત્ર નિશ્ચયે, તતથ-નિષ્ક્રમણમેવ સંસારસ્થિતાનાં સુખમ્, નિષ્ક્રાંતકસ્વાધીન સુખરૂપત્વાત્તસ્ય । અત એવોક્તમ્—

અથવા—“ સન્તોષામૃતતૃપ્તાનાં ” ઇત્યાદિ ।

સન્તોષ રૂપ અમૃત પાનણે તૃપ્ત હુએ એસે શાન્ત ચિત્તવાળે મનુષ્યોંકો સુખ પ્રાપ્ત હોતા હૈ, વહ ધનકે લુગ્ધકોંકો જો કિ ઇધર ઉધર દોડ લગાતે રહતે હૈં કહાંસે પ્રાપ્ત હો સકતા હૈ ।

અસ્તિ--જવ જવ જો વસ્તુ પ્રયોજનીય હોતી હૈ--તવ તવ ઉસ વસ્તુકી જો પ્રાપ્તિ હો જાતી હૈ, યહ મી સુખકા હેતુ હોનેસે સુખરૂપ હૈ, શુભ ભોગ-પ્રશસ્ત ભોગકા નામ શુભ ભોગ હૈ, યહ શુભભોગ સાતા વેદનીય કર્મકે ઉદયસે નિષ્પન્ન હોનેસે સુખ રૂપ કહા ગયા હૈ, સંસાર પટ્ટ (કીચડ)સે બાહર નિકલના-અર્થાત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરના યહ મી સુખરૂપ હૈ, યહાં જો એવ “ શબ્દકા પ્રયોગ કિયા ગયા હૈ, નિશ્ચય અર્થમેં હુઆ હૈ, અતઃ નિષ્ક્રમણહી સંસારસ્થ જીવોંકો સુખરૂપ હૈ, કયોંકિ વહ નિષ્ક્રાંતક સ્વાધીન સુખરૂપ હોતા હૈ । સોહી કહા હૈ-

ઈત્યાદિ—સંતોષરૂપ અમૃતતૃપ્ત પાન કરીને તૃપ્ત થઈ ગયેલા શાન્ત ચિત્તવાળા મનુષ્યને જે સુખ પ્રાપ્ત થાય છે, એવા સુખની પ્રાપ્તિ ધનની લાલસામાં રધવાયાની જેમ આમતેમ દોડતા માણસને કદી થતી નથી.

જે વસ્તુની જ્યારે જરૂર પડે ત્યારે તે વસ્તુની પ્રાપ્તિ થઈ જવી તેને પણ સુખના હેતુરૂપ હોવાને કારણે સુખરૂપ માનવામાં આવે છે. શુભભોગ-પ્રશસ્ત ભોગને શુભભોગ કહે છે. સાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી એવા શુભભોગની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ પ્રકારના ભોગ સુખદાયી હોવાને કારણે તેમને સુખરૂપ કહ્યા છે. સંસારરૂપ કાદવમાંથી બહાર નીકળવું-એટલે ગૃહસ્થાવાસને ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજ્યા અંગીકાર કરવી તેને પણ સુખરૂપ ગણવામાં આવેલ છે. અહીં જે “ એવ ” શબ્દનો પ્રયોગ થયો છે તે નિશ્ચયાર્થ કરવામાં આવ્યો છે એટલે કે સંસારમાંથી નિષ્ક્રમ કરવા પ્રવ્રજ્યા જ સંસારસ્થ જીવોના સુખરૂપ હોય છે, કારણ કે તે નિષ્ક્રાંતક સ્વાધીન સુખરૂપ હોય છે. કહું પણ છે કે

“દુવાલસમાસપરિયાપ સમણે નિર્ગંથે અનુત્તરાણં દેવાણં તેજોલેશ્યાં
છાયા—દ્વાદશમાસપર્યાપઃ શ્રમણો નિર્ગંથોઽનુત્તરાણાં દેવાનાં તેજોલેશ્યાં
વ્યતિવ્રજતિ—ઈતિ ।

તથા ચ—“નૈવાસ્તિ રાજરાજસ્ય, તત્સુખં નૈવ દેવરાજસ્ય ।

યત્સુખમિહૈવ સાધુર્લોકવ્યાપારરહિતસ્ય ॥૧॥ ” ઇતિ ।

ઈતોઽતિરિક્તં સુખં તુ દુઃખપ્રતીકારમાત્રત્વેન સુખાભિમાનજનકમાત્રમેવ ।
તદુક્તમ્—

“પ્રતીકારં વ્યાધેઃ સુખમિતિ વ્યવસ્યતિ જનઃ ” ઇતિ ।

‘સુખં હિ દુઃખપ્રતિકારસેવયા સ્થિતે ચ દુઃખે તદનુનિ વ્યવસ્યતિ ’ ઇતિ ચ ।

‘નિઃસ્વપ્નમ્’ ઇત્યત્ર નપુંસકત્વં મકારસ્ય દ્વિત્વં ચ પ્રાકૃતત્વાદિતિ ૧ । તતો=

“દુવાલસમાસપરિયાપ સમણે ” ઇત્યાદિ ।

એક વર્ષકી દીક્ષા પર્યાયવાલા શ્રમણ નિર્ગંથ અનુત્તર દેવોંકી
લેશ્યાકો ઉત્તલઢ્ઢન કર દેતા હૈ તથા ચ—

“નૈવાસ્તિ રાજરાજસ્ય ” ઇત્યાદિ ।

જો સુખ હસ લોકમેં લૌકિક વ્યાપારસે રહિત હુએ સાધુકો હૈ,
વહ સુખ ન તો કુબેરકો હૈ ઓર ન દેવરાજ ઇન્દ્રકો હૈ ।

હસસે અતિરિક્ત જો સુખ હૈ વહ તો દુઃખકા પ્રતીકાર હોનેસે
સુખકી કલ્પના માત્રકા જનક હી હૈ ।

કહા ખી હૈ—‘પ્રતીકારં વ્યાધેઃ ’ ઇત્યાદિ ।

વ્યાધિકા પ્રતીકારકોહી મનુષ્ય સુખરૂપ માનતાહૈ, દુઃખકા પ્રતિકાર
કરતે ૨ જય દુઃખ અલ્પ માત્રામેં અવશિષ્ટ રહ જાતા હૈ લોગ ઉસેહી
સુખ માન લેતે હૈં ।

“દુવાલસમાસપરિયાપ સમણે ” ઇત્યાદિ—

આ વર્ષની દીક્ષા પર્યાયવાળો શ્રમણનિર્ગંથ અનુત્તર દેવોની તેજોલેશ્યાનું
પણ ઉલ્લંઘન કરી નાખે છે. વળી—‘નૈવાસ્તિ રાજરાજસ્ય ’ ઇત્યાદિ—

આ લોકમાં લૌકિક વ્યવહારથી રહિત થયેલા સાધુને જે સુખની પ્રાપ્તિ
થાય છે, એવા સુખની પ્રાપ્તિ કુબેરને પણ થતી નથી અને દેવરાજ ઇન્દ્રને પણ
થતી નથી. આ સિવાયનું જે સુખ છે તે તો માત્ર દુઃખના પ્રતીકારરૂપ હોવાથી
સુખની કલ્પના માત્રનું જ જનક હોય છે. કહું પણ છે કે—‘પ્રતીકાર
વ્યાધેઃ ’ ઇત્યાદિ—

વ્યાધિના પ્રતીકારને જ મનુષ્ય સુખરૂપ માને છે. દુઃખનો ઇલાજ કરતાં બ્યારે
દુઃખ અલ્પ માત્રામાં બાકી રહી જાય છે, ત્યારે મનુષ્ય તેને જ સુખ માની લે છે.

નિષ્ક્રમણસુખાનન્તરમ્ અનાવાધમ્—ન વિદ્યતે આવાધા—જન્મજરામરણસુત્પિપાસાદિ
રૂપા પીડા, યત્ર તદનાવાધમ્—મોક્ષસુખમ્ । इदं च सुखं सर्वोत्कृष्टम् ।

તદુક્તમ્—

“ નવિ અત્થિ માણુસાણં, તં સોક્કલં નવિ ય સન્નદેવાણં ।

જં સિદ્ધાણં સોક્કલં, અવ્વાબાહં ઉવગયાણં ॥૧॥”

છાયા—નાપ્યસ્તિ મનુષ્યાણાં તત્ સુખં નાપિ ચ સર્વદેવાનામ્ ।

યત્ સિદ્ધાનાં સૌખ્યમ્ અવ્યાવાધમ્ ઉપગતાનામ્ ॥૧॥इति॥ ૧૦॥સૂ ૪૧॥

અનન્તરમૂત્રે નિષ્ક્રમણસુખમનાવાધસુખં ચ પ્રોક્તમ્ । તત્ર—નિષ્ક્રમણ-
સુખં=ચારિત્રસુખં, તત્ત્વેદનુપહતં ભવતિ તદૈવાનાવાધસુખમ્નુત્પદ્યતે । અતएव-
ચારિત્રસ્ય તત્સાધનસ્ય ભક્તાદેર્જ્ઞાનાદેશ્વોપઘાતં તદ્વિપરીતાં વિશોધિં ચ દશમિ-

નિષ્ક્રમણ સુખકે પશ્ચાત્ જિસમેં જન્મ જરા, મરણ ક્ષુધા તૃષા આદિ
રૂપ પીડા નહીં હૈ એસા મોક્ષ સુખ હૈ વહ અનાવાધ સુખ હૈ યહ સુખ
સર્વોત્કૃષ્ટ સુખ હૈ—કહા ખી હૈ—“ન વિ અત્થિ માણુસાણં ” इत्यादि ।

જો સુખ સિદ્ધોંકો પ્રાપ્ત હૈ, વહ સુખ ન મનુષ્યોંકો પ્રાપ્ત હૈ ઔર
ન સર્વ દેવોંકો પ્રાપ્ત હૈ ॥ સૂત્ર ૪૧ ॥

इस ४१ वे सूत्रमें निष्क्रमण सुख एवं अनावाध सुख कहा गया है
निर्मल हनमें जो निष्क्रमण सुख है वह चारित्रसुखरूप है, यह चारित्रसुख
यदि अनुपहत होता है, तब ही अनावाध सुख उत्पन्न होता है ।
अतः अब सूत्रकार चारित्रके एवं चारित्रके साधन रूप भक्त आदिके
तथा ज्ञान आदिके उपघातका एवं उपघातसे विपरीत विशोधिकी दश

સર્વોત્કૃષ્ટ સુખ તો મોક્ષસુખને જ કહી શકાય કારણ કે મોક્ષની પ્રાપ્તિ
કરનાર જીવને જન્મ, જરા, મરણ, ક્ષુધા, તૃષા આદિ રૂપ પીડા રહેતી જ નથી.
મોક્ષસુખ તો અનાવાધ સુખ છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ ન વિ અત્થિ માણુસાણ ” इत्यादि—

જે સુખ સિદ્ધ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે, તે સુખ મનુષ્યોને પણ પ્રાપ્ત થતું
નથી અને દેવોને પણ પ્રાપ્ત થતું નથી. ॥ સૂ ૪૧ ॥

પૂર્વસૂત્રમાં નિષ્ક્રમણસુખ (સંસાર ત્યાગરૂપ પ્રવ્રજ્યા સુખ) અને અના
વાધ સુખરૂપ મોક્ષસુખનું કથન કરવામાં આવ્યું છે. આ બન્નેમાંથી જે નિષ્ક્ર-
મણ સુખ છે તે ચારિત્રસુખરૂપ છે. જે આ ચારિત્રસુખ અનુપ્રહત (અખંડિત
હોય છે. તો જ અનાવાધ સુખ પ્રાપ્ત થઈ શકે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ચારિત્રના
અને ચારિ-ત્રના સાધનરૂપ ભક્તાદિ (આહારાદિ)ના તથા જ્ઞાનાદિના ઉપધા-

દશભિઃ સ્થાનૈરાહ—

મૂલમ્-દસવિદ્દે ઉવધાણ પળ્લન્તે, તં જહા-ઉગ્ગમોવધાણ ૧, ઉપ્પાયણોવધાણ ૨, જહ પંચટ્ટાણે જાવ પરિહરણોવધાણ ૫, જ્ઞાણોવધાણ ૬, દંસણોવધાણ ૭, ચરિત્તોવધાણ ૮, અચિયત્તોવધાણ ૯, સારક્કલ્લણોવધાણ ૧૦। દસવિદ્દા વિસોહી પળ્લન્ત્તા, તં જહા-ઉગ્ગમવિસોહી ૧ ઉપ્પાયણવિસોહી ૨ જાવ સારક્કલ્લણવિસોહી ૧૦ ॥ સૂ. ૪૨ ॥

છાયા—દશવિધ ઉપધાતઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—ઉદ્ગમોપધાતઃ ૧, ઉત્પાદનોપધાતઃ ૨, યથા પશ્ચમસ્થાને યાવત્પરિહરણોપધાતઃ ૫, જ્ઞાનોપધાતઃ ૬ દર્શનોપધાતઃ ૭, ચારિત્રોપધાતઃ ૮, અપ્રીતિકોપધાતઃ ૯, સંરક્ષણોપધાતઃ ૧૦। દશવિધા વિશોધિઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથા—ઉદ્ગમવિશોધિઃ ૧, ઉત્પાદનાવિશોધિઃ ૨, યાવત્સંરક્ષણવિશોધિઃ ૧૦ ॥ સૂ. ૪૨ ॥

દશ સ્થાનો દ્વારા કથન કરતે હું—

“દસવિદ્દે ઉવધાણ પળ્લન્તે” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪૨ ॥

સૂત્રાર્થ—ઉપધાત ૧૦ પ્રકારના કહા ગયાહૈ—જૈસે—ઉદ્ગમોપધાત ૧ ઉત્પાદનોપધાત ૨ તથા પંચમ સ્થાનમાં કહે ગયે અનુસાર યાવત્પરિહરણોપધાત ૫ જ્ઞાનોપધાત ૬ દર્શનોપધાત ૭ ચારિત્રોપધાત ૮, અપ્રીતિકોપધાત ૯ એવં સંરક્ષણોપધાત ૧૦ ।

વિશોધિ ૧૦ પ્રકારની કહી ગઈ હૈ, જૈસે—ઉદ્ગમ વિશોધિ ૧ ઉત્પાદના વિશોધિ ૨ યાવત્ સંરક્ષણ વિશોધિ ૧૦ ।

તત્તુ તથા ઉપધાતથી વિશુદ્ધ એવી વિશુદ્ધિત્તુ દસ સ્થાનો દ્વારા નિરૂપણ કરે છે.

“દસવિદ્દે ઉવધાણ પળ્લન્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૨)

ઉપધાતના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ઉદ્ગમોપધાત, (૨) ઉત્પાદનોપધાત, ત્યારનાદના પરિહરણોપધાત પર્યન્તના ઉપધાતોનાં નામ પાંચમાં સ્થાનમાં કહ્યા પ્રમાણે સમજવા, (૬) જ્ઞાનોપધાત, (૭) દર્શનોપધાત, (૮) અપ્રીતિકોપધાત અને (૧૦) સંરક્ષણોપધાત. વિશોધિ (વિશુદ્ધિ) ના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—ઉદ્ગમવિશોધિ, ઉત્પાદનાવિશોધિ આદિ સંરક્ષણ વિશોધિ પર્યન્તની ૧૦ પ્રકારની વિશોધિ સમજવા.

ટીકા—‘ દસવિદે ’ ઇત્યાદિ—

ઉપધાતઃ=ચારિત્રોપધાતકત્વાત્, અશુદ્ધતેત્યર્થઃ, સ દશવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્યથા—
 ઉદ્ગમોપધાતઃ—ઉદ્ગમૈઃ=ઉદ્ગમદોષૈરાધાકર્માદિભિઃ પોઢશવિધૈર્ભક્તપાનોપકરણવસતી-
 નામ્ ઉપધાતઃ=અશુદ્ધતા ૧। ઉત્પાદનોપધાતઃ—ઉત્પાદનાભિઃ ધાત્ર્યાદિભિઃ=પોઢશ-
 મિરૂપાદનાદોષૈર્ભક્તપાનાદીનામ્ ઉપધાતઃ ૨। યાત્રત્પદેવ—एषणोपधातपरिकर्मोपधा-
 તौ गृह्येते । अतएवोक्तम्—‘જહ પંચઢાણે જાવ’ ઇતિ । તત્ર—एषणोपधातः—एषणया=
 શક્તિતાદિમિર્દશમિરેષણાદોષૈરૂપધાતઃ ૩। પરિકર્મોપધાતઃ—परिकर्मवस्त्रपात्रादे-
 श्छेदनमीवनादिकं, तेन उपधातः=અકલ્પનીયતા । યદ્વા—उपधातः=स्वाध्यायस्य
 શ્રમાદિના શરીરસ્ય, સંયમસ્ય વા જાયતે, તત્ર—वस्त्रस्य परिकर्मोपधातः—

ટીકાર્થ—ઉપધાત શબ્દકા અર્થ અશુદ્ધતાહૈ, કયોંકિ યહ અશુદ્ધતા ચારિ-
 ત્રકી ઉપધાતક હોતી હૈ, યહ ઉપધાન જો દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ
 હસકા તાત્પર્ય એસા હૈ. આધાકર્મ આદિ ૧૬ પ્રકારકે ઉદ્ગમદોષોંસે
 ભક્તપાનોપકરણકે સ્થાનોંકી જો અશુદ્ધતા હૈ, વહ ઉદ્ગમોપધાત હૈ ૧
 ધાત્રી આદિ ૧૬ પ્રકારકે ઉત્પાદના દોષોંસે ભક્તપાન આદિકોંકા જો
 ઉપધાત હૈ વહ ઉત્પાદનોપધાત દોષ હૈ ૨ “ જહ પંચઢાણે જાવ ”
 જૈસા પાંચવેં સ્થાનકે દૂસરે હદેશેમેં કહા હૈ, વૈસે યહાં “ एषणोपधात
 ઔર परिकर्मोपधात ” इन दो पदोंका ग्रहण कर लेना चाहिए शक्ति
 આદિ ૧૦ एषणा दोषोंसे जो भक्तपान आदिकी अशुद्धता है, वह
 एषणोपधात है ३. वस्त्र पात्र आदिकोंका फाड़ना, फोड़ना सीना आदि
 जो काम है वह परिकर्म है, इस परिकर्मसे जो उपधात अकल्पनीयता
 હૈ—वह परिकर्मोपधातहै वस्त्र सम्बन्धी परिकर्मोपधात इस प्रकारसेहैं—

ઉપધાત ઁટલે અશુદ્ધતા, કારણ કે આ અશુદ્ધતા ચારિત્રનો ઉપધાત
 (ખંડન) કરે છે. ઉપધાતના હસે પ્રકારો હવે સમજાવવામાં આવે છે—

ઉદ્ગમોપધાત—આધાકર્મ આદિ ૧૬ પ્રકારના ઉદ્ગમદોષોવાળા આહારાદિને
 શ્રહણ કરવાથી ચારિત્રમાં જે અશુદ્ધતા આવી જાય છે તેનું નામ ઉદ્ગમોપધાત છે.
 ધાત્રી આદિ ૧૬ પ્રકારના ઉત્પાદના દોષોને લીધે આહારાદિમાં જે અશુદ્ધતા
 આવી જાય છે તેનું નામ ઉત્પાદના ઉપધાત છે. અહીં “ યાવત્ (પર્યન્ત) ”
 પદથી એષણોપધાત અને પરિકર્મોપધાત સૂત્રકારે “ જહપંચઢાણે જાવ ” આ
 સૂત્રપાઠ મૂક્યો છે.

એષણોપધાત—શંકિત આદિ ૧૦ પ્રકારના એષણદોષો કહ્યા છે. આ
 દોષોને કારણે આહારાદિમાં જે દોષો આવી જાય છે તે દોષોરૂપ અશુદ્ધિને
 એષણોપધાત કહે છે.

પરિકર્મોપધાત—વસ્ત્ર, પાત્ર આદિને ફેડવા, સીવવા, સાંધવા આદિ રૂપ
 ક્રિયાને પરિકર્મની અપેક્ષાએ જે અકલ્પનીયતા છે તેનું નામ પરિકર્મોપધાત છે.

“ તિષ્ઠુવરિફાલિયાણં, વત્થં જો ફાલિયં તુ સંસીવે ।

પંચપ્પહં ઇગયરં, સો પાવહ આણમાઈણિ ” ॥ ૧ ॥

છાયા—ત્રયાણામુપરિ પાટિતાનાં વત્થં યઃ પાટિતં તુ સંસીવ્યેત્ ।

પશ્ચાનામેકતમત્ સ પ્રાપ્નોતિ આજ્ઞાદીનિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

અર્થે ભાવઃ—યઃ પશ્ચાનામ્=ઝર્ણાદિપશ્ચવિધાનાં વત્થાણાં મધ્યે એકતમમ્=અન્યતમં વત્થં ત્રયાણાં પાટિતાનાં=તિષ્ઠુણાં થિગ્ગલિકાનામ્ ઉપરિ પાટિત, તંતુ યદિ સંસીવ્યેત્ તદા સ સાધુઃ આજ્ઞાદીનિ=આજ્ઞાવિરાધનાદીન્ દોષાન્ પ્રાપ્નોતીતિ । પાત્રસ્ય પરિકર્મોપધાતસ્તુ—

“ અનલક્ષણેગવંધે, દુગતિગ અરેગ વંધણં વાવિ ।

જો પાયં પરિયદ્ધ, પરં દિયદ્ધાઓ માસાઓ ” ॥ ૧ ॥

છાયા—અપલક્ષણૈકવન્ધે દ્વિકત્રિકાતિરેકવન્ધનં વાપિ ।

જો પાત્રં પરિવર્તયતિ પરં દ્વચપાર્દ્ધાં માસાત્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

અર્થે ભાવઃ—યત્ પાત્રમ્ અપલક્ષણૈકવન્ધમ્—અપગતં લક્ષણં=સ્વરૂપં યસ્ય તત્, એવંભૂતં સત્ એકવન્ધમ્=એકવન્ધયુક્તં ભવેત્, તત્ પાત્રં યઃ સાધુઃ દ્વચપાર્દ્ધાંત્-દ્વિતીયમ્ અપાર્દ્ધં યસ્મિન્નિદં દ્વચપાર્દ્ધં, તસ્માત્-સાર્દ્ધાંત્ માસાત્ પરં પરિવર્તયતિ=

“ તિષ્ઠુવરિફાલિયાણં વત્થં ” ઇત્યાદિ ।

તાત્પર્યં યહ હૈ કિ જો સાધુ ઝર્ણાદિ પાંચ પ્રકારકે વત્થોમેંસે કિસી એક ફટે હુએ વત્થકો ત્રીન થિગલેસે અધિક થિગલે લગાતા હૈ, અર્થાત્ કિસી એક વત્થમેં ત્રીન થિગલેસે અધિક થિગલા લગાતા હૈ, વહ સાધુ આજ્ઞા આદિકી વિરાધનાજન્ય દોષોંકો પ્રાપ્ત હોતા હૈ, પાત્ર સમ્બન્ધી પરિકર્મોપધાત્ ઇસ પ્રકારસે હૈ—“ અવલક્ષણેગ વંધે ” ઇત્યાદિ ।

જો પાત્ર અપગત હૈ, સ્વરૂપ જિસકા એસા હોતા હુઆ એક વન્ધન-યુક્ત હોતાહૈ, એસે ડસ પાત્રકો જો સાધુ ૧॥ ડેઠ માસસે અધિક સમય

વક્ષવિષયક પરિકર્મોપધાત્ આ પ્રકારનો સમજવો—

“ તિષ્ઠુવરિફાલિયાણં વત્થં ” ઇત્યાદિ—

આ કથનનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—જે સાધુ ઝર્ણાદિ (ઊનના બનાવેલા આદિ) પાંચ પ્રકારના વત્થોમાંના કોઈ પણ પ્રકારના કાટલ વત્થને ત્રણ કરતાં વધારે થિગડાં લગાવે છે, તે સાધુ આજ્ઞાદિની વિરાધના રૂપ દોષ કરે છે. પાનસંબન્ધી પરિકર્મોપધાત્ આ પ્રકારનો કહ્યો છે—“ અવલક્ષણેગવંધે ” ઇત્યાદિ

જે પાત્ર અપગત થઈ ગયું હોય—અપગત થઈ જવાને કારણે એક બન્ધનયુક્ત હોય, એવાં પાત્રનો ૧॥ માસ કરતાં અધિક સમય સુધી રાખે છે. તે તીથકરોની આજ્ઞાનો વિરાધક ગણાય છે. સુત્રક્ષણ પાત્ર એક બન્ધનથી યુક્ત હોય તો ૧॥

परिशुद्धते, स आज्ञाविराधनादिदोषयुक्तो भवति । सुलक्षणं पात्रमेकबन्धनयुक्त-
मपि सार्धमासात्परमपि परिशुद्धानः साधुः आज्ञाविराधनादिदोषभाग् नो भवति ।
तथा—द्विकत्रिकातिरेकबन्धनं=द्वाभ्यां बन्धनाभ्यां त्रिभ्यो बन्धनेभ्यश्चाधिकबन्धन-
युक्तं=चतुर्बन्धनयुक्तं सुलक्षणमपि पात्रं सार्धमासात् परं परिशुद्धानः साधुराज्ञा-
दिविराधको भवति । किञ्चिद्नचतुर्बन्धनयुक्तं पात्रं परिशुद्धानः साधुस्तु आज्ञादि-
विराधको न भवतीति बोध्यम् । वसतेः परिकर्मोपघातस्तु—

“ दूमिय धूमिय वासिय, उज्जोइय बलिकडा अवत्ता य ।

सित्ता संमट्ठावि य, अरुप्पणीया उ सा वसही ” । २ ॥

छाया—धरलिता धूमिता वासिता उद्धोतिता बलिकृता अव्यक्ता च ।

सित्ता सम्मृष्टाऽपि च अरुत्पनीया तु सा वसतिः ॥ १ ॥ इति ।

तक अपने उपयोगमें लाता है, ऐसा वह साधु आज्ञा विराधना आदि
दोषोंसे युक्त होता है । सुलक्षण पात्र यदि एक बन्धनसे युक्त भी
हो तो उसे १॥ माससे भी अधिक समय अपने उपयोगमें लानेवाला
साधु आज्ञा विराधना आदि दोषोंका पात्र नहीं होता है । तथा सुलक्षण
भी पात्र यदि दो बन्धनोंसे तीन बन्धनोंसे अधिक बन्धनोंसे युक्त
होता है—चार बन्धनोंसे युक्त होता है—तो ऐसे दो तीन बन्धनोंसे अधिक
बन्धनवाले सुलक्षण भी पात्रको जो साधु १॥ डेढ़ माससे अधिक समय
तक अपने उपयोगमें लाता है तो ऐसा वह साधु आज्ञा विराधना आदि
दोषोंका पात्र होता है, परन्तु कुछ कन चार बन्धनवाले पात्रको अपने
उपयोगमें लाता हुआ आज्ञा विराधना आदि दोषोंका पात्र नहीं होता
है. वसति सम्बन्धी परिकर्मोपघात इस प्रकारसे है—

“ दूमिय धूमिय वासिय ” इत्यादि ।

मास करता अधिक समय सुधी तेना उपयोग करनासे साधु आज्ञाविराधना
आदि दोषोंने पात्र थतो नथी तथा सुलक्षण पात्र पणु ने ये अथवा त्रणु
बन्धनो करता अधिक बन्धनवाणुं होय—चार आदि बन्धनवाणुं होय, तो तेना
१॥ मास करता अधिक समय सुधी उपयोग करनासे साधु आज्ञाविराधना
आदि दोषोंने पात्र बने छे, परन्तु चार बन्धनो करता ओछां बन्धनोवाणो
पात्रने १॥ मास करता अधिक समय सुधी उपयोग करनासे साधु आज्ञाविरा-
धना आदि दोषोंने पात्र थतो नथी.

वसति (निवासस्थान) संबन्धी परिकर्मोपघात आ प्रकारने कह्यो छे—

“ दूमिय धूमिय वासिय ” धल.दि—

અર્થ ભાવ:-યા વસતિઃ ધવલિતા=શુભ્રીકૃતા, ધૂમિતા=દંશમશકાદીનાં વિનાશાય કૃતધૂમા, વાસિતા=સુગન્ધિતા, ઉદ્યોતિતા=પ્રદીપાદિના પ્રકાશિતા, વલિકૃતાં-કૂરાદિના ભૂતાર્થં વલિઃ કૃતો યસ્યાં સા, અવ્યક્તા=ગોમયાદિના ઉપલિપ્તા, સિત્તા=જલસેકયુક્તા, તથા સમ્મૃષ્ટા=સંમાર્જિતાચાપિ ભવતિ, સા વસતિઃ અકલ્પનીયા વોધ્યેતિ । ૪ । તથા-પરિહરણોપઘાતઃ-પરિહરણમ્=આસેવનં, તેન ઉપઘાતઃ=ઉપધ્યાદેરકલ્પનીયત્વમ્ । તત્ર ઉપધેઃ પરિહરણોપઘાતો યથા-એકલવિદ્યારિણા સાધુના યદાસેવિત્પ્રપકરણં તદ્યદ્દીતું ન કલ્પતે इति । પરન્તુ સ ગચ્છન્તિ-

જો વસતિ ધવલિત હોઈ-ચૂના આદિસે પોતકર સફેદ કર દી ગઈ હો-ધૂમિત હોઈ-દંશમશક આદિ જીવોંકે વિનાશકે નિમિત્ત જિસમેં ધૂમ ક્રિયા ગયા હો-વાસિતા હો-સુગન્ધિત કી ગઈ હો ધૂપધત્તી આદિ જલા કર જિસે સુગન્ધયુક્ત ક્રિયા ગયા હો, ઉદ્યોતિતા હો, પ્રદીપ આદિકે પ્રકાશસે જિસે પ્રકાશિત ક્રિયા ગયા હો જો વલિકૃતા હો-ભૂતોંકે લિયે જિસમેં ખાત આદિ રાંધકર ચલિ કી ગઈ હો જો અવ્યક્તા હો-ગોવર આદિસે જો લીપકર સારુ કો ગઈ હો, જો સિત્તા હો, જલકા જિસમેં છિંડકાવ ક્રિયા ગયા હો, જો સમ્મૃષ્ટા હો-બુહારી આદિસે જિસકા કૂડા સાફ કર દિયા ગયા હો એસી વહ વસતિ-ઉપાશ્રય-સાધુ જનોંકેલિયે અકલ્પનીય કહી ગઈ હૈ, એસા જાનના ચાહિયે ૪ પરિહરણોપઘાત ઇસ પ્રકારસેં હૈ-પરિહરણ શબ્દકા અર્થ આસેવન હૈ, ઇસસે જો ઉપઘાત હૈ-ઉપધિ આદિકી અકલ્પનીયતા હૈ, વહ પરિહરણોપઘાત હૈ-જૈસે-સકલ

જે વસતિ (રહેઠાણ) ચૂના આદિ વડે ધોળીને સફેદ કરવામાં આવી હોય, ડાંસ, મચ્છર આદિ જીવોનો નાશ કરવાને માટે જેમાં ધુમાડો કરવામાં આવ્યો હોય, ધૂપ, ધૂપસળી આદિ સુગન્ધિદાર ચીજોને સળગાવીને જેને સુગન્ધ યુક્ત કરવામાં આવેલ હોય, દીવો આદિ સળગાવીને જેને પ્રકાશિત કરવામાં આવેલ હોય, ભૂત આદિને ભાત, અડક આદિ રાંધીને નૈવેદ્ય ધરાવવામાં આવેલ હોય, છાણુ આદિ લીંપીને જે વસતિને સાફ કરવામાં આવી હોય, જે વસતિમાં જળ છાંટીને ધૂળ માટી આદિને ઊડતાં અટકાવવામાં આવ્યાં હોય, પાવડા આદિ વડે જ્યાંથી કચરો સાફ કરવામાં આવ્યો હોય એવી વસતિ અથવા ઉપાશ્રય સાધુઓને માટે અકલ્પનીય ગણાય છે. એવા સ્થાનમાં ઉતરવાથી સાધુને વસતિસંબંધી પરિકર્મોપઘાતરૂપ અશુદ્ધિ લાગે છે.

પરિહરણોપઘાત-પરિહરણ એટલે આસેવન. અકલ્પનીયઉપધિ આદિને ઉપયોગ કરવાને કારણે ચારિત્રમાં જે અશુદ્ધિ આવે છે તેનું નામ પરિહરણો.

ગતઃ સાધુરેકાકી સન્નપિ જાગર્ત્તિ, દુગ્ધાદિવિકૃતિષુ પ્રતિવદ્ધો ન ભવતિ, તદાચિરેણાપિ ગચ્છે સમાગચ્છતોઽસ્ય સાધોરુપધિર્ગ્રહીતું કલ્પતે । તદુક્તમ્--

“ જગગણ અપ્પહિવજ્જગ, જહિ ચિરેણં ન ઉવહંમે ” ।

છાયા--જાગરણમ્ અપ્રતિવદ્ધો યદ્યપિ ચિરેણ નોપહન્યતે--ઇતિ ।

તથા--વસતેઃ પરિહરણોપવાતો યથા--યઃ કશ્ચિત્ સાધુર્યત્ર વસત્યાં શેષકાલસ્ય માસમેકં વર્ષાકાલસ્ય વા ચાતુર્માસીં સ્થિત્વા પુનસ્તત્રૈવ તિષ્ઠતિ, તતઃ સા વસતિઃ કાલાતિક્રાન્તદોષદુષ્ટા ભવતિ । યઃ સાધુર્યત્ર વસત્યાં શેષકાલસ્ય માસમેકં તિષ્ઠતિ, વર્ષાકાલસ્ય વા ચાતુર્માસીં તિષ્ઠતિ, તતો વિહત્ય તદ્વિગુણં કાલમનતિ-

વિહારી સાધુ દ્વારા આસેવિન ઉપકરણ ગ્રહણ કરના યોગ્ય નહીં કહા ગયા હૈ, યદિ કોઈ સાધુ ગચ્છસે નિર્ગત્ત્વે હોકર એકાકી વિહારમેં હો ઓર વહ અપને કર્તવ્યમેં જાગરુક હો એવં દુગ્ધ આદિ વિકૃતિયોમેં પ્રતિવદ્ધ ન હો એસા વહ સાધુ વહુત સમય કે વાદ બી યદિ અપને ગચ્છમેં આ જાતા હૈ તો એસે સાધુકી ઉપધિકા ગ્રહણ કરના ઉચિત માના ગયા હૈ કહા બી હૈ--“ જગગણ અપ્પહિવજ્જગ ” ઇત્યાદિ ॥

વસતિકા પરિહરણોપવાત્ત્વે હસ પ્રકારસે હૈ જૈસે કોઈ સાધુ જિસ વસતિમેં શેષકાલકે એક માસ તક અથવા વર્ષાકાલકે ચાર માસ તક રહકર પુનઃ વહીં પર રહ જાતા હૈ, તો એસી વસતિ કાલાતિક્રાન્ત દોષસે દૂષિત્ત્વે હોતી હૈ, જો સાધુ જિસ વસતિમેં શેષકાલકે એક માસ

પવાત છે. જેમ કે એકલવિહારી સાધુ દ્વારા જે ઉપકરણોનું સેવન કરાયું હોય તે ઉપકરણોને અન્ય સાધુએ ગ્રહણ કરવા બેઠાં એવા સાધુના ઉપકરણો કેઈ સાધુ ગ્રહણ કરે તો તેના ચારિત્રમાં પરિહરણોપવાતરૂપ અશુદ્ધિ આવી જાય છે. પરંતુ કેઈ સાધુ ગચ્છમાંથી નીકળી જઈને એકાકી વિહાર કરવા લાગ્યા હોય અને પોતાના કર્તવ્યના પાલનમાં પુરતો ભગૃત હોય, દૂધ આદિ વિકૃતિઓમાં પ્રતિબદ્ધ ન થયો હોય, એવો સાધુ ઘણા લાંબા સમય પછી પોતાના ગચ્છમાં પાછો આવી જાય તો તે સાધુનાં ઉપધિને ગ્રહણ કરવામાં કેઈ પણ પ્રકારની અકલ્પનીયતા કહી નથી. કહ્યું પણ છે કે--

“ જગગણ અપ્પહિવજ્જગ ” ઇત્યાદિ.

વસતિ (ઉપાશ્રય) સંબંધી પરિહરણોપવાત આ પ્રકારનો છે--કેઈ સાધુ કેઈ વસતિમાં એક માસ પર્યાન્તનો શેષકાળ વ્યતીત કરે અને ત્યાર બાદ પણ ત્યાંજ રહેવાનું ચાલુ રાખે તો તે વસતિ કાલાતિક્રાન્તદોષથી દૂષિત થાય છે.

વર્ષાકાળના ચાર માસ પૂરા થયા બાદ પણ જો સાધુ જો વસતિમાં રહે--ત્યાંથી વિહાર ન કરે--તો તે વસતિ પણ કાલાતિક્રાન્ત દોષથી દૂષિત થાય

ક્રમ્ય યદિ પુનસ્તત્રૈવ વસતૌ સમાયાતિ તદા સા વસતિરુપસ્થાનદોષદુષ્ટા ભવતિ ।
તદુક્તમ્—

“ ઉડવાસા સમર્ઘ્યા, કાલાતીયા ઉ સા ભવે સેજ્જા ।

સા ચેવ ઉવઢાણા, દુગુણા દુગુણં અવજ્જિત્તા ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—ઋતુવર્ષાઃ સમતીતાઃ કાલાતીતા તુ ભવેત્ શય્યા ।

સા એવ ઉપસ્થાના દ્વિગુણં દ્વિગુણમ્ અવર્જયિત્વા ॥૧॥ ઇતિ ।

તથા—મક્તસ્ય પરિહરણોપઘાતઃ પરિષ્ઠાપકં પ્રતિ ભવતિ । તદુક્તમ્—

“ વિહિગહિયં વિહિમુત્તં, અરેગં મક્તપાણ મોત્તવ્વં ।

વિહિગહિયં વિહિમુત્તે, એત્થ ય ચરો મંગા ॥૧॥

અહવાવિ ય વિહિગહિયં, વિહિમુત્તં તં ગુરુહણુન્નાયં ।

સેસા નાણુન્નાયા, ગઢ્ઢે દિન્ને ય નિજ્જુહણં ॥૨॥”

છાયા—વિધિગૃહીતં વિધિમુક્તમ્ અતિરેકં મક્તપાનમોક્તવ્યમ્ ।

નિધિગૃહીતે વિધિમુક્તે અત્ર ચ ચત્વારો ભવેયુર્મઙ્ગાઃ ॥૧॥

અથવાપિ ચ વિધિગૃહીતં વિધિમુક્તં તદ્ ગુરુભિરનુજ્ઞાતમ્ ।

શેષા નાનુજ્ઞાતા, ગૃહીતે દત્તેચ નિર્યૂહણા ॥૨॥ ઇતિ ।

નિર્યૂહણા=ત્યાગઃ । ગુરુભિરશનાદિકં પરિષ્ઠાપયિતુમાજ્ઞપ્તં શિષ્યં પ્રતિ પરિ-

તક ઠહરતા હૈં અથવા વર્ષાકાલકે ચાર મોસ તક ઠહરતા હૈં ફિર વહાંસે
વિહાર કર દ્વિગુણિત કાલકે મીતર ૨ હી ફિરસે વહીં આકર ઠહર
જાતા હૈં, તોં એસી વહ વસતિ ઉપસ્થાન દોષસે દૂષિત હોતી હૈં,
કહા મી હૈં—“ ઉડવાસા સમર્ઘ્યા ” ઇત્યાદિ ॥

તથા—મક્તકા પરિહરણોપઘાત પરિષ્ઠાપકકે પ્રતિ હોતા હૈં કહા
મી હૈં—વિહિગહિયં વિહિમુત્તં ” ઇત્યાદિ ।

નિર્યૂહણા શબ્દકા અર્થ ત્યાગ હૈં । ગુરુને શિષ્યકોં આજ્ઞા દી કિ
તુમ અશન આદિકા પરિષ્ઠાપન યથાવિધિ નહીં કરતા હૈં તોં ઉસ

છે. જો સાધુ કેઈ ઉપાશ્રયમાં વર્ષાકાળના ચાર માસ સુધી રહે અથવા શેષકાળના
એક માસ સુધી રહે અને ત્યાર બાદ ત્યાથી વિહાર કરીને ઉપર્યુક્ત સમય
કરતાં બમણો સમય વ્યતીત થયા પહેલાં એજ સ્થાનમાં આવીને ઉતરે, તો
વસતિ (ઉપાશ્રય) ઉપસ્થાન દોષથી દૂષિત થાય છે. કહ્યું પણ છે કે—“ ઉડ
વાસા સમર્ઘ્યા ” ઇત્યાદિ—તથા—આહારનો પરિહરણોપઘાત પરિષ્ઠાપના કરનારને
લાગે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ વિહિગહિયં વિહિમુત્તં ” ઇત્યાદિ—“ નિર્યૂહણા ”
આ પદનો અર્થ ત્યાગ છે. ગુરુ દ્વારા શિષ્યને અશનાદિનું પરિષ્ઠાપન (પરઠ-
નાની ક્રિયા) કરવાનું કામ સોંપાયું હોય. જો તે શિષ્ય તે અશનાદિનું વિધિ

ષ્ટાપનીયાશનાદેરવિધિવિષયકઃ પરિહરણોપધાતો ભવતીતિ વોચ્યમ્ ॥૧॥ તથા-
જ્ઞાનોપધાતઃ-જ્ઞાનેઃ શ્રુતજ્ઞાને-ઉપધાતઃ=પ્રમાદવશાત્ અવિશુદ્ધતા ॥ દર્શનોપધાતઃ=
શઙ્કાદિભિઃ સમ્યક્ત્વવિરાધના ॥૭॥ ચારિત્રોપધાતઃ=સમિતિભક્ત્યાદિભિશ્ચારિત્રાવ-
શિશુદ્ધતા ॥ ૮ ॥ ‘ અચિયત્તોપધાત્ ’ અપ્રીતિકોપધાતઃ-અપ્રીતિકેન=અપ્રીત્યા
વિનયાદેરુપધાતઃ ॥૯॥ તથા-સંરક્ષણોપધાતઃ-સંરક્ષણેન=શરીરાદિવિષયે મૂર્છયા
પરિગ્રહવિરતેરુપધાતઃ ૧૦ ઇતિ । તત્ર-વિશોધિઃ-વિશોધનં વિશોધિઃ-કલ્પનીયતા
દશવિધા પ્રજ્ઞસા, તથા-ઉદ્ગમવિશોધિરિત્યાદિ । તત્ર-ઉદ્ગમવિશોધિઃ-ઉદ્ગમદોષ-

શિષ્યકો પરિષ્ઠાપનીય અશન આદિકા અવિધિ વિષયક પરિહરણોપ-
ધાત હોતા હૈ ॥

જ્ઞાનોપધાત-પ્રમાદકે વશસે જો શ્રુતજ્ઞાનમેં અવિશુદ્ધતા હૈ, વહ
જ્ઞાનોપધાત હૈ દર્શનોપધાત-શઙ્કા આદિકો દ્વારા જો સમ્યક્ત્વકી
વિરાધના હૈં વહ દર્શનોપધાત હૈ, ચારિત્રોપધાત-સમિતિકે અજ્ઞ આદિસે
જો ચારિત્રમેં અવિશુદ્ધતા આતી હૈ વહ ચારિત્રોપધાત હૈ, અપ્રીતિકોપ-
ધાત-અપ્રીતિકે કારણ જો વિનય આદિકા ઉપધાત હૈ, વહ અપ્રીતિ-
કોપધાત હૈ, સંરક્ષણોપધાત-શરીર આદિકે વિષયમેં મૂર્છાકે પરિગ્રહ
વિરતિકા ઉપધાત હૈ, વહ સંરક્ષણોપધાત હૈ, વિશોધિ શબ્દકા અર્થ
કલ્પનીયતા હૈ, યહ કલ્પનીયતા રૂપ વિશોધિ ૧૦ પ્રકારકી જો કહી
ગઈ હૈ સો ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈ-ઉદ્ગમ દોષસે રહિત હોનેકે કારણ

પૂર્વક પરિષ્ઠાપન ન કરે, તો તે શિષ્યને પરિષ્ઠાપનીય અશન આદિની અવિધિ
વિષયક પરિહરણોપધાત લાગે છે.

જ્ઞાનોપધાત-પ્રમાદને કારણે શ્રુતજ્ઞાનમાં જે અવિશુદ્ધતા આવી જાય છે
તેનું નામ જ્ઞાનોપધાત છે. દર્શનોપધાત-શંકા આદિ દ્વારા સમ્યક્ત્વની જે વિરા-
ધના થાય છે તેનું નામ દર્શનોપધાત છે.

ચારિત્રોપધાત-સમિતિ આદિ ભંગને કારણે ચારિત્રમાં જે અવિશુદ્ધતા
આવી જાય છે, તેનું નામ ચારિત્રોપધાત છે.

અપ્રીતિકોપધાત-અપ્રીતિને કારણે જે વિનય આદિનો ઉપધાત થાય છે,
તેનું નામ અપ્રીતિકોપધાત છે.

સંરક્ષણોપધાત-શરીર આદિ પ્રત્યેની મૂર્છા (આસક્તિ)ને કારણે પરિ-
ગ્રહવિરતિનો જે ઉપયોગ થાય છે, તેનું નામ સંરક્ષણોપધાત છે.

‘ વિશોધિ ’ આ પદ કલ્પનીયતાના અર્થમાં વપરાયું છે. આ કલ્પનીયતા
૩૫ વિશોધિ ૧૦ પ્રકારની કહી છે.

રહિતત્વેન ભક્તપાનાદીનાં વિશુદ્ધતા ૧, ઉત્પાદનાવિશોધિઃ—ઉત્પાદનાદોપરહિત-
ત્વેન ભક્તપાનાદીનાં વિશુદ્ધતા ૨, યાવત્પદેન—‘ એષણાવિશોધિઃ ૩, પરિકર્મવિ-
શોધિઃ ૪, પરિહરણવિશોધિઃ ૫, જ્ઞાનવિશોધિઃ ૬, દર્શનવિશોધિઃ ૭, ચારિત્ર-
વિશોધિઃ ૮ ‘ અચિયત્તવિસોદ્ધી ’—અપ્રીતિકવિશોધિઃ ૯, इत्येतानि सप्तपदानि
ગ્રાહ્યાણિ । તત્ર—એષણાવિશોધિઃ—એષણા=શક્તિતાદિદોપરહિતત્વેન ભક્તપાનાદીનાં
વિશોધિઃ ૩। પરિકર્મવિશોધિઃ—પરિકર્મણા=ક્રિયમાણયા વચ્ચાદિસમારચનયા સંય-
મસ્ય વિશોધિઃ ૪। પરિહરણવિશોધિઃ—પરિહરણેન=વચ્ચાદીનાં શાસ્ત્રાનુસારતઃ સેવ-
નયા વિશોધિઃ ૫। જ્ઞાનવિશોધિઃ=જ્ઞાનસ્ય=જ્ઞાનાચારસ્ય પરિપાલનેન વિશોધિઃ ૬।

જો ભક્તપાન આદિકોંકી વિશુદ્ધતા હૈ, વહ ઉદ્ગમ વિશોધિ હૈ, દોષોંસે
રહિત હોનેકે કારણ જો ભક્ત પાન આદિકોંકી વિશુદ્ધતા હૈ, વહ
ઉત્પાદના વિશોધિ હૈ, યહાં યાવત્પદસે—“ એષણાવિશોધિ પરિકર્મ-
વિશોધિ, પરિહરણવિશોધિ, જ્ઞાનવિશોધિ, દર્શનવિશોધિ, ચારિત્ર
વિશોધિ, અપ્રીતિકવિશોધિ ” इन विशोधियोंका ग्रहण हुआ है ।
શક્તિ આદિ દોષોંસે રહિત હોનેકે કારણ જો ભક્ત પાન આદિકોંકી
વિશોધિ હૈ, વહ એષણા વિશોધિ હૈ । પરિકર્મ (શોભા નહીં વધાના) સે
ક્રિયમાણ વચ્ચાદિ સમારચનાસે જો સંયમકી વિશોધિ હૈ વહ પરિ-
કર્મ વિશોધિ હૈ વચ્ચાદિકોંકી શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસાર સેવનાસે જો વિશોધિ
હૈ, વહ પરિહરણવિશોધિ હૈ જ્ઞાનાચારકે પરિપાલનસે જો જ્ઞાનકી

ઉદ્ગમદોષથી રહિત હોવાને કારણે જે આહારાદિમાં વિશુદ્ધતા હોય છે,
તે વિશુદ્ધતાને ઉદ્ગમ વિશોધિ કહે છે. ઉત્પાદના રહિત હોવાને કારણે જે
આહાર પાણી આદિમાં વિશુદ્ધતા રહેલી હોય છે, તે આહારાદિને ઉત્પાદના
વિશોધિયુક્ત કહે છે. અહીં “ યાવત્ ” પદથી “ એષણા વિશોધિ, પરિકર્મ
વિશોધિ, પરિહરણ વિશોધિ, જ્ઞાન વિશોધિ, દર્શન વિશોધિ, ચારિત્ર વિશોધિ,
અને અપ્રીતિક વિશોધિ, ” આટલી વિશોધિઓને ગ્રહણ કરવામાં આવી છે.

ભક્તપાન આદિકોંકી શક્તિ આદિ દોષોંસે અભાવ હોવો જોઈએ તેનું
નામ એષણા વિશોધિ છે.

પરિકર્મવિશોધિ—શોભા વધારવાના ખ્યાલ વિના વચ્ચાદિકોંકી જે પરિ-
કર્મ કરવામાં આવે છે. તે પરિકર્મમાં અકલ્પનીયતા કહી છે. આ પ્રકારના
પરિકર્મથી સંયમની વિશુદ્ધતા જળવાય છે, તેથી તેને પરિકર્મ વિશોધિ કહે છે.

પરિહરણ વિશોધિ—વચ્ચાદિકોંકી શાસ્ત્રાજ્ઞાનુસારની સેવના રૂપ જે વિશોધિ
છે તેને પરિહરણવિશોધિ કહે છે.

દર્શનવિશોધિ:-દર્શનસ્ય=દર્શનાચારસ્ય પરિપાલનેન વિશોધિ: ૭। ચારિત્રવિશોધિ:-
ચારિત્રસ્ય=ચારિત્રાચારસ્ય પરિપાલનેન વિશોધિ: ૮। 'અચિયત્તવિશોધિ: '=અપ્રી-
તિકવિશોધિ: અપ્રીતકરસ્ય=અપ્રીતે: અવિનયાદ્યકરણાદ્વિશોધિ: ૯। તથા-સંરક્ષણ-
વિશોધિ:-ઉપધ્યાદે: સંયમાર્થં સંરક્ષણેન ચારિત્રસ્ય વિશોધિ: ૧૦। અથવા-ઉદ્ગ-
માદિદોષપરિહારતો દશધાડ્વીયં વિશોધિશ્ચિત્તવિષયા વોધ્યેતિ ॥ સૂ ૦ ૪૨ ॥

અનન્તરસૂત્રે ચિત્તવિષયા વિશોધિરુક્તા, સમ્પ્રતિ વિશોધિવિપરીતમ્ ઉપધ્યાદિ
સંકલેશં, તદ્વિપક્ષમસવલેશં ચ દશભિર્દશભિઃ સ્થાનૈરભિધાતુમાહ—

મૂલમ્—દસવિદ્દે સંકિલેસે પળળત્તે, તં જહા—ઉવહિસંકિલેસે
૧, ઉવસસયસંકિલેસે ૨, કસાયસંકિલેસે ૩, ભત્તપાણસંકિલેસે
૪, મળસંકિલેસે ૫, વહ્સંકિલેસે ૬, કાયસંકિલેસે ૭, ણાળ-
સંકિલેસે ૮, દંસળસંકિલેસે ૯ ચરિત્તસંકિલેસે ૧૦। દસવિદ્દે

વિશોધિ હૈ, વહ જ્ઞાનવિશોધિ હૈ, દર્શનાચારકે પરિપાલનસે જો
દર્શનકી વિશોધિહૈ, વહ દર્શનવિશોધિહૈ, ચારિત્રાચારકે પરિપાલનસે
જો ચારિત્રકી વિશોધિહૈ વહ ચારિત્ર વિશોધિહૈ, અપ્રીતિ રૂપ અવિનય
આદિકે નહીં કરનેસે જો વિશોધિ હૈ, વહ અપ્રીતિક વિશોધિ
હૈ, ઉપધિ આદિકે સંયમકે નિમિત્ત સંરક્ષણસે જો ચારિત્રકી વિશોધિ
હૈ, વહ સંરક્ષણ વિશોધિ હૈ, અથવા-ઉદ્ગમાદિ દોષોંકે પરિહારસે દશ
પ્રકારકી ભી યહ વિશોધિ ચિત્ત વિષયવાલી જાનના ચાહિયે ॥ સૂ ૦ ૪૨ ॥

જ્ઞાનવિશોધિ—જ્ઞાનાચારની પરિપાલના દ્વારા જ્ઞાનની જે વિશુદ્ધિ જળવાય
છે તેને જ્ઞાનવિશોધિ કહે છે.

દર્શનવિશોધિ—દર્શનાચારની પરિપાલના દ્વારા દર્શનની જે વિશુદ્ધિ
જળવાય છે તેને દર્શનવિશોધિ કહે છે.

ચારિત્રવિશોધિ—ચારિત્રાચારના પરિપાલન દ્વારા ચારિત્રમાં જે વિશુદ્ધિ
આવે છે તેને ચારિત્રવિશોધિ કહે છે.

અપ્રીતિકવિશોધિ—અપ્રીતિરૂપ અવિનય વિગેરે ન કરવાથી જે વિશુદ્ધિ
આવે છે, તેને અપ્રીતિકવિશોધિ કહે છે.

સંરક્ષણવિશોધિ—સંયમના નિભાવને માટે ઉપધિ આદિના સંરક્ષણ
વડે ચારિત્રમાં જે વિશોધિ આવે છે, તેને સંરક્ષણ વિશોધિ કહે છે. અથવા—
ઉદ્ગમાદિ દોષોના પરિહારવાળી દશ પ્રકારની આ વિશોધિને ચિત્તવિષય
વાળી સમજવી ॥ સૂત્ર ૪૨ ॥

અસંકિલેસે પળ્લત્તે, તં જહા—ઉવહિઅસંકિલેસે ૧ જાવ ચરિત્ત
અસંકિલેસે ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૩ ॥

હાયા—દશવિધઃ સંકલેશઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથથા—ઉપધિસંકલેશઃ ૧ ઉપાશ્રયસં-
કલેશઃ ૨, કષાયસંકલેશઃ ૩ ભક્તપાનસંકલેશઃ ૪, મનઃસંકલેશઃ ૫, વાક્કમંકલેશઃ
૬, કાયસંકલેશઃ ૭, જ્ઞાનસંકલેશઃ ૮, દર્શનસંકલેશઃ ૯, ચારિત્રસંકલેશઃ ૧૦। દશવિ-
ધોઽસંકલેશઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથથા—ઉપધ્યસંકલેશો ૧ યાવત્ ચારિત્રાઽસંકલેશઃ ૧૦ ॥ મૂ૦ ૪૩ ॥

હસ ઉપરકે ૪૨ વેં સૂત્રને વિશેધિ ચિત્ત વિષયવાલી હોતી હૈ,
એસા વહાં કહા ગયાહૈ, સો હસ વિશેધિસે વિપરીત જો ઉપધિ આદિકા
સંકલેશ હૈ ઓર હસકે વિપક્ષભૂત જો અસંકલેશ હૈ, ઉસકા અથ
સૂત્રકાર દસ દસ સ્થાનોસે કથન કરતે હૈ—

“ દસવિદે સંકિલેસે પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪૩ ॥

સૂત્રાર્થ—સંકલેશ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, અસમાધિકા નામ સંકલે-
શહૈ, હસકે દસ પ્રકાર થે હૈ—

ઉપધિસંકલેશ ૧, ઉપાશ્રયસંકલેશ ૨, કષાયસંકલેશ ૩, ભક્ત-
પાન સંકલેશ ૪, મનઃ સંકલેશ ૫, વચન સંકલેશ ૬, કાય સંકલેશ ૭,
જ્ઞાન સંકલેશ ૮ દર્શન સંકલેશ ૯ ઓર ચારિત્ર સંકલેશ ૧૦ અસંકલેશ
૧૦ પ્રકાર કહા ગયાહૈ, જૈસે ઉપધિ અસંકલેશ યાવત્ ચારિત્ર અસંકલેશ ૧૦

આગલા સૂત્રમાં એવું કહેવામાં આવ્યું કે વિશેધિ ચિત્તવિષયવાળી
હોય છે. આ વિશેધિથી વિપરીત એવો ઉપધિ આદિ વિષયક જે સંકલેશ છે.
તેનું તથા સંકલેશથી વિપરીત એવા અસંકલેશનું હવે સૂત્રકાર દસ દસ
સ્થાનોની અપેક્ષાએ નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિદે સંકિલેસે પળ્લત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૪૩)

સૂત્રાર્થ—અસમાધિનું નામ સંકલેશ છે તે સંકલેશના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર
કહ્યા છે—(૧) ઉપધિ સંકલેશ, (૨) ઉપાશ્રય સંકલેશ, (૩) કષાય સંકલેશ,
(૪) ભક્તપાન સંકલેશ, (૫) મનઃસંકલેશ, (૬) વાક્ સંકલેશ, (૭) કાય સંકલેશ,
(૮) જ્ઞાન સંકલેશ, (૯) દર્શનસંકલેશ અને (૧૦) ચારિત્રસંકલેશ.

અસંકલેશના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—

ઉપધિ અસંકલેશથી લઈને ચારિત્ર અસંકલેશ પર્યન્તના ઉપર્યુક્ત દસ
પ્રકારો અહીં ગ્રહણ કરવા બોધાયે.

ટીકા—‘ દસવિદે સંકલેસે ’ ઇત્યાદિ—

સંકલેશ:-સંકલેશનં સંકલેશ:-અસમાધિ:, સ દશવિધ: પ્રજ્ઞત:, તથા-
 ઉપધિસંકલેશ ઇત્યાદિ । તત્ર-ઉપધીયતે સ્થિરી ક્રિયતે સંયમ: શરીરં વા યેન સ
 ઉપધિ:=વસ્ત્રાદિ:, તદ્વિપયોડલાભેન પ્રજ્ઞસ્તાલાભેન વા સંકલેશોડસમાધિ:-ઉપધિ-
 સંકલેશ ઇતિ ૧। ઉપાશ્રયસંકલેશ:-ઉપાશ્રયો=વસતિ:, તદ્વિપય: સંકલેશ: ૨।
 કષાયસંકલેશ:-કષાયરૂપ: સંકલેશ:, કષાયૈર્વા સંકલેશ: ૩। ભક્તપાનસંકલેશ:-
 ભક્તપાનવિપયોડલાભેન પ્રજ્ઞસ્તાલાભેન વા સંકલેશ: ૪। મન:સંકલેશ:-મનસો મન-
 સિ વા સંકલેશ: ૬। કાયસંકલેશ:-કાયવિપય: સંકલેશ: ૭। જ્ઞાનસંકલેશ:-
 જ્ઞાનસ્ય સંકલેશ:=અવિશુદ્ધિ: ૮। દર્શનસંકલેશ:-દર્શનસ્યાવિશુદ્ધિ: ૯। તથા-
 ચારિત્રસંકલેશ:-ચારિત્રસ્યાવિશુદ્ધિ: । તથા-અસંકલેશ:=સમાધિ: દશવિધ: પ્રજ્ઞત:,

સંયમ અથવા શરીર જિસસે સ્થિર કિયા જાના હૈ, વહ ઉપધિ હૈ,
 પેસી ઉપધિ વસ્ત્રાદિ રૂપ હોતી હૈ, હસ વસ્ત્રાદિ રૂપ ઉપધિકે અલાભસે
 અથવા પ્રજ્ઞસ્ત રૂપ ઉસકે અલાભસે જો ચિત્ત સંકલેશ રૂપ સમાધિ હો
 જાતી હૈ, વહ ઉપધિ સંકલેશ હૈ, ઉપાશ્રય વિષયક જો સંકલેશ હૈ વહ
 ઉપાશ્રય સંકલેશ હૈ, કષાય રૂપ અથવા કષાયોસે જો સંકલેશ હૈ વહ
 કષાય સંકલેશ હૈ, અલાભસે અથવા પ્રજ્ઞસ્તકે અલાભસે ભક્ત પાન
 વિપયક જો સંકલેશ હૈ, વહ ભક્તપાન સંકલેશ હૈ, મનકા અથવા મનમેં
 જો સંકલેશ હૈ વહ મન: સંકલેશ હૈ, વચન દ્વારા જો સંકલેશ હૈ વહ
 વાક્ સંકલેશ હૈ, કાય વિષયક જો સંકલેશ હૈ વહ કાયસંકલેશ હૈ,
 જ્ઞાનકી જો અવિશુદ્ધિ હૈ વહ જ્ઞાનસંકલેશ હૈ, દર્શનકી જો અવિશુદ્ધિ

સંયમ અથવા શરીરની સ્થિરતાને માટે જરૂરી વસ્તુને ઉપધિ કહે છે.
 તે ઉપધિ વસ્ત્રાદિ રૂપ હોય છે. આ વસ્ત્રાદિ રૂપ ઉપધિ પ્રાપ્ત ન થવાને કારણે
 અથવા પ્રજ્ઞસ્ત રૂપે તેની પ્રાપ્તિ ન થવાને કારણે ચિત્તમાં જે સંકલેશ રૂપ
 અસમાધિ થાય છે, તેને ઉપધિસંકલેશ કહે છે. ઉપાશ્રય વિષયક ચિત્તમાં જે
 અસમાધિ થાય છે તેને ઉપાશ્રય સંકલેશ કહે છે. કષાયરૂપ અથવા કષાયોથી
 જન્ય જે સંકલેશ થાય છે તેને કષાયસંકલેશ કહે છે.

આહારાદિની પ્રાપ્તિ ન થવાથી અથવા અપ્રજ્ઞસ્ત આહારાદિની પ્રાપ્તિ
 થવાથી ચિત્તમાં જે સંકલેશ થાય છે તેને ભક્તપાન સંકલેશ કહે છે મનનો
 અથવા મનમાં જે સંકલેશ થાય છે તેને મન સંકલેશ કહે છે વચન દ્વારા જે
 સંકલેશ થાય છે તેને વાક્ સંકલેશ કહે છે. કાયવિષયક સંકલેશનું નામ કાય
 સંકલેશ છે. જ્ઞાનની જે અવિશુદ્ધિ છે તેને જ્ઞાનસંકલેશ કહે છે. દર્શનની જે
 અવિશુદ્ધિ છે તેને દર્શન સંકલેશ કહે છે. ચારિત્રની જે અવિશુદ્ધિ છે તેને

તથા-ઉપધ્યસંકલેશ इत्यादि । एषां व्याख्या उपधिमंकलेशादिभ्यो वैपरीत्येन भावनीया । ॥ सू० ४३ ॥

અસંકલેશયુક્તાથ જીવા વિશિષ્ટવીર્યબલવન્તો ભવતીતિ વલં દશવિધત્થેના-

મૂલમ્—દસવિદ્દે બલે પળણત્તે, તં જહ્વા-સોઈંદિયવલે ૧, જાવ ફાસિંદિયવલે ૫ જાણવલે ૬, દંસગવલે ૭, ચારિત્તવલે ૮, તવવલે ૯ વીરિયવલે ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૪ ॥

છાયા—દશવિધં વલં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયવલં ૧ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય-વલં ૫, જ્ઞાનવલમ્ ૬, દર્શનવલં ૭, ચારિત્તવલં ૮, તપોવલં ૯, વીર્યવલમ્ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૪ ॥

હૈ, વહ દર્શનસંકલેશ હૈ, ચારિત્રકી જો અવિશુદ્ધિ હૈ વહ ચારિત્ર સંકલેશ હૈ, હસી પ્રકારસે અસંકલેશ રૂપ જો સમાધિ હૈ, વહ મી દશ પ્રકારકી કહી ગઈ હૈ, હસકે પ્રકારોંકી વ્યાખ્યા ઉપધિ સંકલેશ આદિ કી વ્યાખ્યાસે વિપરીત હૈ એસા જાનનાં ચાહિયે ॥ સૂત્ર ૪૩ ॥

અસંકલેશ યુક્ત જીવ વિશિષ્ટ વીર્ય બલવાલે હોતે હૈં એવા વિચાર કરકે અવ સૂત્રકાર દશ પ્રકારસે બલકા કથન કરતે હૈં--

“ દસવિદ્દે બલે પળણત્તે ” इत्यादि ॥ सूत्र ४४ ॥

સૂત્રાર્થ—બલ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ, જૈસે—શ્રોત્રેન્દ્રિય બલ ૧, યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય બલ ૫, જ્ઞાન બલ ૬, દર્શન બલ ૭, ચારિત્ર બલ ૮, તપો બલ ૯ એવં વીર્ય બલ ૧૦ ।

ચારિત્ર સંકલેશ કહે છે. એજ પ્રમાણે અસંકલેશ રૂપ જે સમાધિ છે, તેના પણ દસ પ્રકાર પડે છે. તેમની વ્યાખ્યા ઉપધિ સંકલેશ આદિની વ્યાખ્યા કરતાં વિપરીત સમજવી. ॥ સૂત્ર. ૪૩ ॥

અસંકલેશ યુક્ત જીવો વિશિષ્ટ વીર્યબલવાળા હોય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકરના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર દસ પ્રકારના બલનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિદ્દે બલે પળણત્તે ” इत्यादि—(સૂ. ૪૪)

સૂત્રાર્થ—સામર્થ્યને બળ કહે છે. તે બળના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે. (૧) શ્રોત્રેન્દ્રિય બળથી લઇને સ્પર્શેન્દ્રિયબળ પર્યંતના પાંચ પ્રકારનાં બળ, (૨) જ્ઞાનબળ, (૩) દર્શનબળ, (૪) દર્શનબળ, (૫) ચારિત્રબળ, (૬) તપોબળ અને (૧૦) વીર્યબળ.

ટીકા—‘ દસવિહે વલે ’ इत्यादि—

વલં-સામર્થ્ય, તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞન્તમ્, તથા-‘ શ્રોત્રેન્દ્રિયવલમ્ ’ इत्यादि ।
તત્ર-શ્રોત્રેન્દ્રિયવલમ્=શ્રોત્રેન્દ્રિયવિષયગ્રહણસામર્થ્યમ્ । યાવત્પદેન-‘ ચક્ષુરિન્દ્રિય-
વલં ઘ્રાણેન્દ્રિયવલં રમનેન્દ્રિયવલમ્ ’ इति પદત્રયં ગ્રાહ્યમ્ । તથા-સ્પર્શેન્દ્રિયવલમ્
૫। ણ્ણામર્થસ્તુ પૂર્વવદ્વિજ્ઞેયઃ । તથા-જ્ઞાનવલમ્-અતીતાનાગતવસ્તુપરિજ્ઞાનસામ-
ર્થ્યમ્, ચારિત્રસાધનતથા મોક્ષસાધનસામર્થ્યં વા ૬। દર્શનવલમ્-અતીન્દ્રિયાણાં
તર્કમાત્રેણ અનવબોધ્યાનાં પદાર્થાનાં જિનવચનપ્રામાણ્યાદ રોચનમ્-અભિરુચીકર-

સામર્થ્યકા નામ વલ હૈ, यह वल जो १० प्रकारका कहा गया है,
उसका तात्पर्य ऐसा है, श्रोत्रेन्द्रिय की अपने विषयको ग्रहण करनेकी
जो सामर्थ्य है वह श्रोत्रेन्द्रिय बल है ।

यहां यावत्पदसे “ चक्षुरिन्द्रिय बल, घ्राणेन्द्रिय बल, रसनेन्द्रिय
बल ” इन तीन बलोंका ग्रहण हुआ है, चक्षुन्द्रियकी जो अपने विष-
यको ग्रहण करनेकी शक्ति हैं वह चक्षुइन्द्रिय बल है. घ्राणइन्द्रियकी
जो अपने विषयको ग्रहण करनेकी शक्ति हैं वह घ्राणेन्द्रिय बल है,
रसनाइन्द्रियकी जो अपने विषयको ग्रहण करनेकी शक्ति है, वह रसने-
न्द्रियबल है, तथा-स्पर्शनेन्द्रियकी जो अपने विषयको ग्रहण करनेकी
शक्ति है, वह स्पर्शनेन्द्रिय बल है । ज्ञानमें जो अतीत अनागत वस्तु-
ओंको जाननेकी शक्ति है वह अथवा-चारित्रके साधनसे जो मोक्षके
साधनकी सामर्थ्य है वह ज्ञानबल है, तर्क मात्रसे अनवबोध्य अतीन्द्रिय

શ્રોત્રેન્દ્રિયમા પે.તાના વિષયને ગ્રહણ કરવાનું સામર્થ્ય હોય છે તેને
શ્રોત્રેન્દ્રિયબળ કહે છે. અહીં “ યાવત્ (પર્યન્ત) ” પદથી “ ચક્ષુરિન્દ્રિયબળ,
ઘ્રાણેન્દ્રિયબળ અને રસનેન્દ્રિયબળ, ” આ ત્રણ પ્રકારનાં બળ ગ્રહણ કરવામાં
આવ્યાં છે ચક્ષુઇન્દ્રિયની જે પે.તાના વિષયને ગ્રહણ કરવાની શક્તિ છે, તેને
ચક્ષુરિન્દ્રિયબળ કહે છે ઘ્રાણેન્દ્રિયની જે પે.તાના વિષયને ગ્રહણ કરવાની
શક્તિ છે, તેને ઘ્રાણેન્દ્રિયબળ કહે છે રસના ઇન્દ્રિયની જે પે.તાના વિષયને
ગ્રહણ કરવાની શક્તિ છે તેને રસનેન્દ્રિયબળ કહે છે. સ્પર્શેન્દ્રિયની જે
પે.તાના વિષયને ગ્રહણ કરવાની શક્તિ છે, તેને સ્પર્શેન્દ્રિયબળ કહે છે.

જ્ઞાનમાં જે ભૂતકાલિન અને ભવિષ્યકાલિન વસ્તુઓને જાણવાની શક્તિ
છે તેનું નામ જ્ઞાનબળ છે. અથવા-ચારિત્રના સાધન વડે મોક્ષ રૂપ સાધ્યને
સાધવાનું જે સામર્થ્ય છે તેનું નામ જ્ઞાનબળ છે.

જિનેન્દ્ર ભગવાનના વચનોને પ્રમાણભૂત માનવા અને તે વચનોને
પે.તાની રુચિનેા વિષય બનાવવો તેનું નામ દર્શનબળ છે. એટલે કે તર્કમાત્રથી

ળમ્ ૭। તથા-ચારિત્રવલમ્-એતદયલમ્બ્ય જીવો દુષ્કરમપિ સાંસારિકપદાર્થો
સક્તિપરિત્યાગં કૃત્વાડનન્તમવ્યાવાધમૈકાન્તિકમાત્યન્તિકમાત્માનન્દમનુભવ-
તીતિ ૮। તપોવલમ્-તપસોડનશનાદેઃ સામર્થ્યમ્ । એતત્પ્રભાવેણ જીવોડનેક-
જન્માર્જિતં દુઃસ્વનિદાનમ્ભૂતં નિવિઙ્ઠતયા વદ્ધં કર્મગ્રન્થિ ક્ષપયતિ ૯। તથા-વીર્ય-
વલમ્-વીર્યમ્=આત્મશક્તિઃ, તદેવ વલમ્ । યેન જીવો વિભિન્નપ્રકારામ્ ગમનાગમ-
નાદિ ક્રિયાસુ પ્રવૃત્તો ભવતિ, તથા યેન ચ જીવઃ રાકલકલિમલપટલમપનીય
શાશ્વતામન્દાનન્દસન્દોહમાગમનતીતિ ૧૦ ॥ સૂ. ૪૪ ॥

પદાર્થોંકા જિન વચનકી પ્રમાણતાસે જો અપની રુચિકા વિષય વનોના
હૈ વહ દર્શન બલ હૈ, જિલ્લકે અવલમ્બનસે જીવ દુષ્કર ધ્રી સાંસારિક
પદાર્થોંકી આસક્તિકા પરિત્યાગ કરકે અનન્ત અવ્યાવાધ રૂપ જો
એકાન્તિક આત્યન્તિક આત્માકા આનન્દ હૈ ડમકા અનુભવ કરતા હૈ,
વહ ચારિત્ર વલ હૈ, અનશન આદિ તપકી જો શક્તિ હૈ વહ તપોવલ હૈ
હસકે પ્રભાવસે જીવ અનેક જન્માન્તરોંમેં ઉપાર્જિત કિયે ગયે, દુઃસ્વકે
આદિ કારણ એવં ગાઢરૂપસે બન્ધકો પ્રાપ્ત હુએ એસે કર્મોંકો નષ્ટ કર
દેતા હૈ, આત્મશક્તિ રૂપ જો વલ હૈ, વહ વીર્યવલ હૈ, હસકે પ્રભાવસે
જીવ વિભિન્ન પ્રકારકી ગમનાગમનાદિ રૂપ ક્રિયાઓંમેં પ્રવૃત્ત હોના હૈ,
તથા હસીકે પ્રભાવસે જીવ સમસ્ત કર્મરૂપ મલકો નિવારણ કરકે
શાશ્વત આનન્દ સન્દોહકો પ્રાપ્ત કરનેવાલા હોના હૈ ॥ સૂ. ૪૪ ॥

ન સમજી શકાય એવાં અતીન્દ્રિય પદાર્થોના વિષયમાં જિનેન્દ્ર લગવાનો એ જે
કહ્યું છે તેને જ પ્રમાણ માનવું તેનું નામ દર્શનબળ છે. જેનું અવલંબન
લઈને જીવ દુષ્કર સાંસારિક પદાર્થોની આસક્તિને પણ ત્યાગ કરીને અનંત,
અવ્યાવાધ એવાં એકાન્તિક અને આત્યન્તિક આત્માના આનંદને અનુભવ
કરે છે, તેનું નામ ચારિત્રબળ છે.

અનશનાદિ તપની જે શક્તિ છે તેને તપોબળ કહે છે. તપના પ્રભાવથી
જીવ અનેક જન્માન્તરોમાં ઉપાર્જિત કરેલાં, દુઃખના આદિ કારણ રૂપ, અને
ગાઢ રૂપે બન્ધદશાને પામેલાં એવાં કર્મોનો નાશ કરી નાખે છે.

આત્મશક્તિ રૂપ જે બળ છે તેનું નામ વીર્યબળ છે. તેના પ્રભાવથી
જીવ વિભિન્ન પ્રકારની ગમનાગમનાદિ રૂપ ક્રિયાઓમાં પ્રવૃત્ત થાય છે તથા
તેના જ પ્રભાવથી જીવ સમસ્ત કર્મરૂપ મળને સાફ કરીને શાશ્વત, અમન્દ
આનંદ સંદોહને પ્રાપ્ત કરે છે. ॥ સૂત્ર ૪૪ ॥

અનન્તરં ચારિત્રવલયુક્તમ્, ચારિત્રવલયુક્તશ્ચ સર્વદા સત્યભાષી ભવતીતિ સત્યં તદ્વિરુદ્ધં મૃષાદિકં ચ પ્રરૂપયિતુમાદ—

મૂલમ્-દસવિહે સચ્ચે પળ્લણ્ણે, તં જહા-જળવય ૧ સમ્મય ૨ ઠવળા ૩ નામે ૪ રૂવે ૫ પડુચ્ચ સચ્ચે ૬ ય ૭ વવહાર ૮ આવ ૯ જોગે ૧૦, દસમે ઓવમ્મસચ્ચે ૧૦ ય ॥ ૧ ॥ દસવિહે મોસે પળ્ણણ્ણે, તં જહા-કોહે ૧ માળે ૨ માયા ૩ લોહે ૪ પિજ્જે ૫ તદેવ દોસે ૬ ય હાલ ૭ ભણ ૮ અઝ્ઝાઙ્ગ ૯, ઉવઘાયનિ-સિણ ૧૦ દસમે દસવિહે સચ્ચામોસે પળ્ણણ્ણે-તં જહા-ઉપ્પન્ન-મોસણ ૨ વિગયમીસણ ૨ ઉપ્પળ્ણવિગયમીસણ ૩ જીવમીસણ ૪ અજીવમીસણ ૫ જીવાજીવમીસણ ૬ અણંતમીસણ ૭ પરિ-ત્તમીસણ ૮ અદ્ધામીસણ ૯ અદ્ધાદ્ધામીસણ ૧૦ ॥ ૩ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

છાયા—દશવિધં સત્યં પ્રજ્ઞસમ્, તથા-જનપદં ૧, સમ્મતં ૨, સ્થાપના ૩, નામ ૪, રૂપં ૫, પ્રતીત્યસત્યં ૬ ચ । વ્યવહારો ૭, ભાવો ૮, યોગો ૯ દશમમૌપમ્યસત્યં ૧૦ ચ ॥ ૧ ॥ દશવિધં મૃષા પ્રજ્ઞસમ્, તથા-ક્રોધો ૧ માનો ૨ માયા ૩ લોભ ૪ પ્રેમ ૫ તથૈવ દોષશ્ચ ૬ । હાસો ૭ ભયમ્ ૮ આશ્ચર્યયા ૯ ઉપઘાતનિશ્ચિતં ૧૦ દશમમ્ ॥ ૨ ॥ દશવિધં સત્યમૃષા પ્રજ્ઞસમ્, તથા-ઉત્પન્નમિશ્રકમ્ ૧, વિગતમિશ્રકમ્ ૨, ઉત્પન્નવિગતમિશ્રકમ્ ૩ જીવમિશ્રકમ્ ૪ અજીવમિશ્રકમ્ ૫ જીવાજીવમિશ્રકમ્ ૬ અનન્તમિશ્રકમ્ ૭, પરીતમિશ્રકમ્ ૮, અદ્ધામિશ્રકમ્ ૯ અદ્ધાદ્ધા મિશ્રકમ્ ૧૦ ॥ ૩ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

જપરકે ૪૪ વેં સૂત્રમેં ચારિત્ર બલકે વિષયમેં કથન ક્રિયા ગયા હૈ, સો ઇસ ચારિત્ર બલસે યુક્ત જો જીવ હોતા હૈ, વહ સર્વદા સત્યભાષી હોતા હૈ, અતઃ અવ સૂત્રકાર સત્યકા ઓર ઇસ સત્યસે વિરુદ્ધ મૃષા આદિકા કથન કરતેહૈ—“દસવિહે સચ્ચે પળ્ણણ્ણે” ઇત્યાદિ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

પૂર્વસૂત્ર ચારિત્રબલ વિષે કહેવામાં આવ્યું. આ ચારિત્રબળથી સંપન્ન હોય એવો જીવ સર્વદા સત્યભાષી હોય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના લીધે હવે સૂત્રકાર સત્યના ૧૦ પ્રકારોનું અને તેના કરતાં વિપરીત એવાં મૃષા (અસત્ય)ના દસ પ્રકારોનું કથન કરે છે—

દસવિહે સચ્ચે પળ્ણણ્ણે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૫)

ટીકા—‘ દસવિદે સત્ત્વે ’ इत्यादि—

સદ્ભ્યઃ—પ્રાણિભ્યઃ પદાર્થેભ્યો મુનિભ્યો વા હિતં સત્યં, તદ્દશવિધં પ્રજ્ઞ-
સમ્, તથા—‘ જનપદઃ ’ इत्यादि। અન્ન-જનપદાદયઃ શબ્દા ઉત્તરપદલોપેન
નિર્દિષ્ટાઃ। અનં એતેષુ સત્યમિતિ પદં સંયોજનીયમ્। તથાહિ-જનપદસત્યં—તં તં
જનપદમધિકૃત્ય ઇષ્ટાર્થપ્રતિપત્તિજનકતયા વ્યવહારહેતુત્વાત્ સત્યમિત્યર્થઃ।
યથા—કોઢ્ઢગાદિષુ પયઃ પિચ્ચ, इत्यादि—કથયતે १। સમ્મતરાત્યમ્—સકલલોક
સમ્મત્યા સત્યતયા પ્રસિદ્ધમ્। યથા—કુમુદકુવલયોત્પલતામરસાનાં પદ્મજાતત્વે

સત્ય ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહે।

જો પ્રાણિયોંકે લિયે પદાર્થોંકે લિયે અથવા મુનિજનોંકે લિયે હિત
રૂપ હોના હૈ, વહ સત્ય હૈ વહ સત્ય હસ પ્રકારસે ૧૦ ભેદોંવાલા કહા
ગયા હૈ, જૈસે-જનપદ સત્ય ૧, સમ્મત સત્ય ૨, સ્થાપના સત્ય ૩ નામ
સત્ય ૪, રૂપ સત્ય ૫, પ્રતીત્ય સત્ય ૬ વ્યવહાર સત્ય ૭ ભાવસત્ય ૮
યોગસત્ય ૯ ઓર ઔપમ્ય સત્ય ૧૦।

હસલિયે હનમેં ‘ સત્ય ’ પદ લગા લેનાચાહિયે હસ હસ જનપદકો
લેકર જો વચન હષ્ટ અર્થકી પ્રતિપત્તિકા જનક હોનેસે વ્યવહારકા હેતુ
હોતા હૈ, ઓર હસી કારણ જો સત્ય માના જાતાહૈ, વહ વચન જનપદ
સત્ય હૈ, જૈસે કોઢ્ઢગ આદિ દેશોંમેં પય-પાંજીકો “ પિચ્ચ ” કહા જાતા
હૈ १ જો વચન સકલ લોહોંકી સમ્મતિસે સત્ય રૂપસે પ્રસિદ્ધ હોતા હૈ
વહ સમ્મત સત્ય હૈ, જૈસે કુમુદ, કુવલય, ઉત્પલ, તામરસ વે સવ

સત્ય હસ પ્રકારનું કહ્યું છે. જે પ્રાણીઓને માટે, પદાર્થોને માટે અથવા
મુનિજનોને માટે હિતરૂપ હોય છે, તેનું નામ સત્ય છે. તેના નીચે પ્રમાણે
૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) જનપદ સત્ય, (૨) સમ્મત સત્ય, (૩) સ્થાપનાસત્ય,
નામસત્ય, (૫) રૂપસત્ય, (૬) પ્રતીત્યસત્ય, (૭) વ્યવહારસત્ય (૮) ભાવસત્ય,
(૯) યોગસત્ય અને (૧૦) ઔપમ્યસત્ય.

હવે આ હસે પ્રકારના સત્યનો ભાવાર્થ સમજાવવામાં આવે છે—જે જે
જનપદમાં જે વચન ઇષ્ટ અર્થની પ્રતિપત્તિનું જનક હોવાને કારણે વ્યવહારના
હેતુરૂપ ગનતું હોય છે અને એજ કારણે જેને સત્ય માનવામાં આવે છે,
એવાં વચનને જનપદસત્ય સમજવું. જેમ કે કોંકણમાં પય (પાણી)ને “ પિચ્ચ ”
કહે છે પાણીને “ પિચ્ચ ” કહેવું તે જનપદસત્યના દેખાત રૂપ સમજવું. જે
જે વચન સકળ લોકની સંગતિથી સત્યરૂપે પ્રસિદ્ધ થાય છે, તે વચનને સમ્મત
સત્ય કહે છે. જેમ કે કુમુદ, કુવલય, ઉત્પલ, તામરસ વગેરે પદ્મના પેદા થાય

સમાનેડપિ સૂર્યોદયવિકસનશીલ અરવિન્દમેવ પદ્મજત્વેન સકલસમ્મતં ન શેષમ્,
 इति । २ । સ્થાપનાસત્યમ્-સ્થાપ્યતે તત્તદ્રૂપેણ યા સા સ્થાપના, તદ્રૂપં સત્યમ્ ।
 इदं च तथाविधमङ्गादिविन्यासं मुद्राविन्यासं चोपलभ्य प्रयुज्यते । तत्राङ्गादि
 વિન્યાસમુપલભ્ય યથા-પુરસ્થિતવિન્દુદ્વયસહિતમેકમદ્ભુમુપલભ્ય ચતમિદમિતિ,
 વિન્દુત્રય સહિતમેકમદ્ભુમુપલભ્ય સહસ્રમિદમિતિ । તથાવિધમુદ્રાદિવિન્યાસમુપલભ્ય
 તુ મૃતિકાદિપુ માષોડયં કાર્પાવણોડયમિતિ । ૩ । નામસત્યમ્-નામતઃ સત્યં,
 यथा-कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इति नाम ४। રૂપસત્યમ્-રૂપતઃ સત્યમ્, યથા-

પદ્મસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં ફિર મી સૂર્યોદયકે હોને પર વિકસનશીલ હોનેકે
 कारण अरविन्दही पंकज रूपसे सकल जन सम्मत है, शेष नहीं २,
 સ્થાપના રૂપસે જો સત્ય હૈ, વહ સ્થાપનાસત્ય હૈ યહ સ્થાપનાસત્ય
 अङ्ग आदिके विन्यासको लेकर देखा जाता है, अङ्ग आदिके विन्यासको
 लेकर स्थापना सत्य इस प्रकारसेहैं जैसे-१ संख्याके आगे ० ० बिन्दुओंसे
 ૧૦૦ કી જો સંખ્યા માંગી જાતી હૈ, તોન વિન્દુઓંકે રાખને તે હજારકી
 संख्या मानी जाती है वह सब स्थापनासत्य हैं इसी
 પ્રકારસે મૃત્તિકાદિકોંમેં જો યહ એક માષા હૈ યહ એક તોલા હૈ, इत्यादि
 रूप जो व्यवहार है वह मुद्राविन्यास रूप स्थापना सत्य है ३, નામસે
 जो सत्य है वह नामसत्य है जैसे-कुलको नहीं बढ़ाने पर भी व्यवहार
 में कुलवर्द्धन ऐसा नाम रख लिया जाता है, सो यह नामसत्य है । ४।

છે. છતાં પણ સૂર્યોદય થાય ત્યારે જ વિકસવાના સ્વભાવવાળા અરવિન્દને જ
 સકળલોકમાં પકળને નામે ઓળખવામાં આવે છે-અન્ય કુલોને (કુસુદાહિને)
 પકળ રૂપે ઓળખવામાં આવતાં નથી. અરવિન્દ (કમળ)ને 'પકળ કહેવું' તે
 લોકસન્મત સત્ય છે.

સ્થાપના સત્ય સ્થાપના રૂપે જે સત્ય છે તેનું નામ સ્થાપના સત્ય છે.
 અંક આદિના વિન્યાસની દૃષ્ટિએ આ પ્રમાણે સ્થાપના સત્ય જોવામાં આવે
 છે.-'એક' સંખ્યાની જમણી બાજુએ (જે શૂન્ય) મૂકવાથી જે ૧૦૦ સંખ્યા
 માનવામાં આવે છે અને ૦૦૦ (ત્રણ શૂન્ય) મૂકવાથી જે ૧૦૦૦ ની સંખ્યા
 માનવામાં આવે છે તે સ્થાપના સત્યના દૃષ્ટાંત રૂપ છે એજ પ્રમાણે માટી
 આદિને માટે "આ એકમાષો છે, આ એક તોલો છે" ઇત્યાદિ રૂપ જે
 વ્યવહાર થાય છે તે મુદ્રાવિન્યાસરૂપ સ્થાપના સત્ય છે.

નામસત્ય-નામની અપેક્ષાએ જ (નહીં કે ગુણની અપેક્ષાએ) જે સત્ય
 છે તેને નામસત્ય કહે છે. જેમ કે કુળની વૃદ્ધિ નહીં કરનારને પણ 'કુલ-
 વર્દન' એવી સંજ્ઞા દ્વારા ઓળખવામાં આવે છે ધન વિનાના આદમીનું નામ
 "ધનપાલ" હોય છે, આ નામસત્યનાં દૃષ્ટાંતો છે.

દમ્ભતોડપિ પ્રવ્રજિત ઇત્યુચ્યતે । ૫ । પ્રતીત્ય સત્યમ્-પ્રતીત્ય=વસ્તવન્તરમાશ્રિત્ય સત્યમ્ । યથા-અનામિકાયાઃ કનિષ્ઠિકામાશ્રિત્ય દીર્ઘત્વં, મધ્યમામાશ્રિત્ય તુ હ્રસ્વત્વમિતિ ૬ । વ્યવહારસત્યમ્-વ્યવહારો=લોકવ્યવહારઃ, તદપેક્ષયા સત્યમ્ । યથા-ગિરિર્દઘ્વતે ભાજનં સ્રવતિ, અઙ્ગોમિકા ઇડકા, ઇત્યાદિ । અયં ભાવઃ-લોકે ગિરિગતતૃણાદિદાહેડપિ તૃણાદિના સહ ગિરેરભેદમાશ્રિત્ય ગિરિર્દઘ્વતે, ઇતિ । ભાજનગતજલસ્રાવેડપિ જલભાજનયોરભેદવિવક્ષણાદ્ ભાજનં સ્રવતિ, ઇતિ, કર્ત્તન-યોગ્યલોમાભાવે સૂક્ષ્મલોમસદ્ભાવેડપિ અઙ્ગોમિકા ઇડકેતિ ચ પ્રયુજ્યતે, ઇતિ ૭ ।

જો રૂપસે સત્ય હોતા હૈ, વહ રૂપ સત્ય હૈ જૈસે-કોઈ દમ્ભસે ભી યાહે પ્રવ્રજિત કયોં ન હુઆ હો પર ફિર ભી વહ પ્રવ્રજિત કહા હી જાતા હૈ, સો યહ રૂપસત્ય હૈ ॥૫॥

વસ્તવન્તરકો આશ્રિત કરકે જો સત્ય હૈ વહ પ્રતીત્ય સત્ય હૈ, જૈસે-અનામિકા અઙ્ગુલીમેં કનિષ્ઠિકા અઙ્ગુલીકી અપેક્ષા દીર્ઘતા હૈ, ઓર મધ્યમા અઙ્ગુલીકી અપેક્ષા હ્રસ્વતા હૈ ૬ લોક વ્યવહારકી અપેક્ષાસે જો સત્ય હૈ વહ વ્યવહાર સત્ય હૈ, જૈસે લોકમેં કહા જાતા હૈ કિ પહાડ જલ રહા હૈ ઘર ચૂ રહા હૈ ઇડકા (ઘેટા) લોમ વિના કી હૈ, યદ્યપિ પર્વત નહીં જલતા હૈ પહાડમેં રહા તૃણાદિ પદાર્થ પર તૃણાદિકે સાથ ગિરિકા અભેદ માનકર પહાડ જલ રહા હૈ, એસા લોકમેં વ્યવહાર હોતા હૈ હસી તરહસે ઘર ચૂના હૈ પરન્તુ જલ ઓર ઘરમેં અભેદકી વિવક્ષા કરકે લોક કહ દેતા હૈ કિ ઘર ચૂ રહા હૈ હસી

રૂપસત્ય-જે રૂપની અપેક્ષાએ સ.ય હોય છે તેને રૂપસત્ય કહે છે જેમ કે કોઈ વ્યક્તિ દંભને ખાતર પ્રવ્રજિત થાય, છતાં પણ તેનો વેષ જોઈને તેને પ્રવ્રજિત જ કહેવામાં આવે છે. આ રૂપસત્યના દૃષ્ટાન્તરૂપ છે.

પ્રતીત્યસત્ય શું વસ્તવન્તર (અન્ય વસ્તુનો)નો આશ્રય લઈને જે સત્ય રૂપ મનાય છે તેને પ્રતીત્ય સત્ય કહે છે. જેમ કે અનામિકા નામની જે આંગળી છે તે ટચલી આંગળી કરતાં મોટી છે અને વચલી આંગળી કરતાં નાની છે.

વ્યવહાર સત્ય-લોકવ્યવહારની અપેક્ષાએ જે વચન સત્ય ગણાય છે તે વચનને વ્યવહાર સત્ય કહે છે. તેનાં દૃષ્ટાંતો નીચે પ્રમાણે છે-“પહાડ સળગી રહ્યો છે, ઘર ચૂવે છે, ઘેડું રુવાયી વિનાનું છે,” ઇત્યાદિ વાક્યો. વ્યવહાર સત્યના દૃષ્ટાંતરૂપ છે. ખરી રીતે પહાડ બળતો નથી, પણ તૃણાદિની પદાર્થ બળતાં હોય છે. છતાં તૃણાદિની સાથે પહાડને અલેહ માનીને “પહાડ બળે છે,” એવો લોકમાં વ્યવહાર થાય છે. ઘર ચૂતું નથી, પણ પાણી ચૂવે છે. છતાં પણ ઘર અને જલમાં અલેહ માનીને “ઘર ચૂવે છે,” એવું લોકો કહે

ભાવસત્યમ્-ભાવો=વર્ણાદિઃ, તતઃ સત્યમ્ । અર્થ ભાવઃ-ગ્રો ભાવો વર્ણાદિર્યસ્મિન્નુ-
ત્કટો ભવતિ, તં ભાવમાશ્રિત્ય તસ્મિન્નયઃ શબ્દત્રયોગઃ સ ભાવસત્યમ્ । યથા શુક્લ
વલાકા-વક્રપક્તિઃ શ્વેતા इति वलाकायां यद्यपि निश्चयेन पञ्चवर्णसद्भावः, तथापि
सा शुक्लवर्णस्य प्राचुर्यात् शुक्लेति व्यपदिश्यते, इति ॥ ८ ॥ યોગસત્યમ્-યોગઃ=
સમ્બન્ધઃ, તતઃ સત્યમ્ । યથા-છત્રી દળડીતિ । છત્રયોગવાન્ દળડયોગવાન્ કદા-
ચિત્ છત્રદળડયોર્યોગાભાવેऽપિ છત્રી દળડીતિ પ્રોચ્યતે, इति ॥ ૯ ॥ તથા-

પ્રકારસે કતરનેકે યોગ્ય લોમોંકે અભાવમેં સૂક્ષ્મ લોમોંકે સદ્ભાવ હોને
પર ખી ખેડ વિના લોમ કી હૈ એસા વ્યવહાર હોતા હૈ ૭।

ભાવસત્ય--ભાવ નામ વર્ણ આદિકા હૈ, હસ વર્ણાદિકાને આશ્રિત
જો સત્ય હૈ વહ ભાવસત્ય હૈ જૈસે-વલાકા-વગલે કી પક્તિ શુક્લ હૈ
દેખા જાવે તો નિશ્ચય નયકી અપેક્ષા સે વલાકામેં પાંચોં હી વર્ણ હોતે
હૈ-પર ઉસમેં શુક્લ વર્ણ અધિક હોતા હૈ । સત્યલિયે ઉસકી પ્રચુરતાકો
લેકર વલાકા શુક્લ હૈ એસા વ્યવહાર હોતા હૈ, અતઃ યહ ભાવસત્ય હૈ
હસ પ્રકાર જિસમેં જિસ વર્ણકી અધિકતા હોતીહૈ, ઉસ વર્ણકી અધિક-
તાકો લેકર હોનેવાલા વ્યવહાર નયકી અપેક્ષાસે હી ભાવસત્ય હૈ ૮ ।

યોગસત્ય--સમ્બન્ધ રૂપ યોગસે જો સત્યહૈ વહ યોગસત્યહૈ જૈસે-
છત્રી દળડી આદિ રૂપ વ્યવહાર-જો સદા અપને પાસ દળડ એવં છત્ર
રખતા હૈ, વ્યવહારમેં વહ છત્રે વાલા દળડેવાલા કહા જાતા હૈ પરન્તુ
યદિ ઉસકે પાસ દળડ ઓર છત્રા નહીં ખી હોતે હૈ તવ ખી વહ દળડી
ઓર છત્રી એસા કહા જાતા હૈ ૯ ।

કહે છે. કાતરવા લાયક રુવાંટીનો અભાવ હોય અને સૂક્ષ્મ રુવાંટીનો સદ્ભાવ
હોય ત્યારે “ઘેટુ રુવાંટી વિનાતું છે,” એવું લોકો કહે છે.

ભાવસત્ય-વર્ણ આદિનું નામ ભાવ છે કેાંઈ પણ વસ્તુમાં જે રંગની
અધિકતા હોય તે પ્રકારનો તે વસ્તુનો રંગ કહેવો. તે ભાવસત્ય છે. જેમ કે
“બલાકા શુક્લવર્ણની છે.” ખરી રીતે બલાકામાં પાંચે વર્ણોનો સદ્ભાવ હોય
છે, પરન્તુ તેમાં શુક્લવર્ણ અધિક હોય છે-તેથી શુક્લવર્ણની પ્રચુરતાને લીધે
“બલાકા શુક્લ છે,” એવો વ્યવહાર થાય છે આ પ્રકારે વર્ણની અધિકતાની
અપેક્ષાએ જે વ્યવહાર થાય છે. તેને ભાવસત્ય કહે છે.

યોગસત્ય-સમ્બંધપૂર્ણ યોગની અપેક્ષાએ જે સત્ય છે તેને યોગસત્ય કહે
છે. જેમ કે જે પોતાની પાસે દંડ રાખે છે તેને દંડવાળો અને છત્રી રાખે
છે તેને છત્રીવાળો કહે છે; ભલે ક્યારેક તેની પાસે, દંડો અથવા છત્રી ન હોય,
તેપણુ તેમને માટે ‘દંડવાળા, છત્રીવાળા,’ ઇત્યાદિ જે વ્યવહાર થાય છે તે
યોગસત્ય રૂપ સમજવો.

ઔપમ્યસત્ત્વમ્-ઔપમ્યમ્=ઉપમા, તત્ત્વઃ સત્યમ્ । યથા-સમુદ્રવત્તટાગ ઇતિ ૧૦।૧॥

તથા-મૃષા=અસત્યં, તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞાન્તમ્ । તથા-ક્રોધ ઇત્યાદિ । અત્રા-
ડપિ ક્રોધાદિપદેન 'ક્રોધમૃષા' ઇત્યાદિરુપેણ વૌધ્યમ્ તથાદિ-ક્રોધમૃષા=ક્રોધા-
શ્રિતમ્ અસત્યમ્ । યથા-ક્રોધવશાત્પિતા પુત્રં પ્રતિ કથયતિ-'નાસિત્વં મમ પુત્રઃ'
ઇતિ ૧ । માનમૃષા-માનમાશ્રિત્યાસત્યમ્ । યથા-અપણ્ડિતોડપિ માનવશાદાહ-
'મહાપણ્ડિતોડહ'-મિતિ ૨ । માયામૃષા=માયાદશાદસત્યમ્ । યથા-ન્યાસરક્ષકેણ

ઔપમ્યસત્ય-ઉપમાસે જો સત્યહૈ વહ ઔપમ્ય સત્ય હૈ જૈસે-વ્યવ-
હારમેં એસા કહ દિયા જાતાહૈ કિ યહ તટાગ તાલાવ, સમુદ્રકીતરહૈ ૧૦।

હસી પ્રકારસે મૃષા વચન બી દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ-મૃષા
નામ અસત્યકા હૈ જૈસે-ક્રોધ ૧ માન ૨ માયા ૩ લોભ ૪ પ્રેમ ૫ દોષ
૬ હાસ ૭ ભય ૮ આખ્યાયિકા ૯ એવં ઉપઘાત નિશ્ચિત યહાં પ્રત્યેક
પદકે સાથ મૃષા શબ્દકા યોગ કર લેના ચાહિયે જૈસે-ક્રોધ મૃષા ઇત્યાદિ
જૈસે-ક્રોધકે આશ્રિત હોતા હૈ, વહ ક્રોધમૃષા હૈ જૈસે-ક્રોધકે વશસે
પિતા પુત્રસે એસા કહને લગતા હૈ કિ તું મેરા પુત્ર નહીં હૈ ૧।

માનકે આશ્રિત જો અસત્ય હોતા હૈ, વહ માન મૃષાહૈ-જૈસે-કોઈ
અપણ્ડિત મનકે આવેશમેં આકર કહને લગતા હૈ કિ મેં વહુત બડા
પણ્ડિત હૂં । ૨।

માયાકે વશસે જો અસત્ય કહા જાતા હૈ, વહ માયા મૃષા હૈ-જૈસે-

ઔપમ્યસત્ય-ઉપમાની અપેક્ષાએ જે સત્ય છે તેનું નામ ઔપમ્યસત્ય
છે. જેમ કે લોકોમાં એવું કથન થાય છે કે "આ તળાવ તો સમુદ્ર જેવું છે"

એજ પ્રમાણે મૃષાવચન પણ ૧૦ પ્રકારનાં રહ્યાં છે-

અસત્ય વચનને મૃષાવચન કહે છે. તેના ૧૦ પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે-
(૧) ક્રોધ, (૨) માન, (૩) માયા, (૪) લોભ, (૫) પ્રેમ, (૬) દ્વેષ, (૭) હાસ,
(૮) ભય, (૯) આખ્યાયિકા અને (૧૦) ઉપઘાત નિશ્ચિત

અહીં પ્રત્યેક શબ્દની સાથે 'મૃષા'નો યોગ કરવો જોઈએ જેમ કે
ક્રોધમૃષા ઇત્યાદિ.

ક્રોધને કારણે જે અસત્ય બોલાય છે તેને ક્રોધમૃષા કહે છે. જેમ કે
કોઈ વાર ક્રોધને કારણે પિતા પુત્રને કહે છે કે "તું મારો પુત્ર નથી.

માનમૃષા-માનને કારણે જે અસત્ય બોલાય છે તેને માનમૃષા કહે છે.
જેમ કે કોઈ અપણ્ડિત માનના આવેશમાં આવીને બોલી જાય છે કે "હું
ધણે મોટો પણ્ડિત છું."

નિષ્કેષ્ટા પ્રોચ્યતે-‘ નષ્ટસ્તે ન્યાસઃ ‘ થાપણ ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધઃ ’ ઇતિ ૩। લોભમૃષા-લોભમાશ્રિત્ય અસત્યમ્। યથા-અન્યથા ક્રીત્વા ’ ઇત્યમેવેદં ક્રીત ’-મિતિવણિક્ પ્રમૃ-તીનામુક્તિરિતિ ૪। પ્રેમમૃષા-પ્રેમ=પ્રીતિમાશ્રિત્ય મૃષા=અસત્યમ્। યથા-‘ તવ-દાસોઽહ ’ મિત્યાદિ ૫। દ્વેષમૃષા=દ્વેષાશ્રિતમસત્યમ્। યથા-મત્સરિણાં ગુણસમ્પ-ન્નેઽપિ ‘ નિર્ગુણોઽય ’ મિત્યાદિકથનમ્ ૬। હાસમૃષા-હાસમાશ્રિત્ય અસત્યમ્।

કોઈ ૨ ધરોહર રચનેવાલા વ્યક્તિ અન્ય કિસી ગહના રચનેવાલેસેમાયાકે વશસે એસા કહ દેના હૈ કિ તેરી ધરોહર નષ્ટ હો ગઈ હૈ ૩।

લોભકે આશ્રિત જો અસત્ય હોતા હૈ વહ લોભમૃષા હૈ જૈસે-જિતને માવમેં જો વસ્તુ નહીં સ્વરીરી ગઈ હોતી હૈ-વેચનેવાલા વણિક્ ઉસ વસ્તુકો લેનેવાલેસે એસા કહ દિયા કરતા હૈ કિ મૈને યહ વસ્તુ હતનેમેંહી સ્વરીરી હૈ ૪।

પ્રીતિકો આશ્રિત કરકે જો અસત્ય કહા જાતા હૈ વહ પ્રીતિમૃષા હૈ, જૈસે-કિતનેક મનુષ્ય પ્રીતિકે આવેશસે એસા કહ દિયા કરતે હૈ, કિ મૈ તો આપકા સેવક હૂં ૫, દ્વેષકો આશ્રિત કરકે જો અસત્ય વચન બોલે જાતે હૈ વહ દ્વેષમૃષા હૈ, જૈસે-કિતનેક મત્સરીજન (ઈર્ષ્યાલુ) અપને ગુણવાન્ વિપક્ષીકે પ્રતિ એસા કહ દેતે હૈ કિ વહ તો બિલકુલ સૂર્વ હૈ, હંસી મજાક મેં જો અસત્ય વચન બોલ દિયે જાતે હૈ વહ હાસ

માયામૃષા-માયા (કપટ)ને કારણે જે અસત્ય બોલવામાં આવે છે તેને માયામૃષા કહે છે. જેમ કે કોઈ માણસ કોઈને ત્યાં પોતાનાં ઘરેણાં આદિ થાપણ મૂકી ગયો હોય, તે પચાવી પડવાના હેતુપૂર્વક “તે ઘરેણાં આદિ ચોર ચોરી ગયા અથવા ઘરમાં આગ લાગવાથી નાશ પામ્યાં”, એવું અસત્ય બોલવું તેનું નામ માયામૃષા છે.

લોભમૃષા-લોભને કારણે જે અસત્ય બોલાય છે તેને ‘લોભમૃષા’ કહે છે જેમ કે કોઈ વેપારી પોતે ચાર રૂપીયે ખરીદેલી વસ્તુ પાંચ રૂપીયે ખરીદે છે, એવું જે અસત્ય કથન ગ્રાહક પાસે કરે છે તેને લોભમૃષા કહે છે.

પ્રેમમૃષા-પોતાના પ્રેમ પ્રકટ કરવાને માટે જે અસત્ય વચન બોલાય છે તેનું નામ પ્રીતિમૃષા છે. જેમ કે પ્રેમના આવેશમાં કોઈ માણસ કોઈને એવું કહી નાખે કે “હું આપનો સેવક છું,” આ પ્રેમમૃષાનો દાખલો થયો.

દ્વેષમૃષા-દ્વેષને કારણે અસત્ય બોલાય છે તેને દ્વેષમૃષા કહે છે. જેમ કે કોઈ ગુણવાન વિરોધીને માટે એવું કહેવું કે “આ માણસ તો તદ્દન મૂર્ખ છે.”

હાસમૃષા-મજાકમાં જે અસત્ય વચન બોલવામાં આવે છે. તેને હાસ-મૃષા કહે છે. જેમ કે કોઈની મજાક કરવા માટે તેની કોઈ વસ્તુ સંતાડી

યથા-કસ્યચિત્ કેનાપિ કસ્મિશ્ચિદ્ વસ્તુનિ ગૃહીતે પૃથોઽઠાસ્યવશાત્ સ ગ્રાહ--' ન મયા દૃષ્ટ '—મિતિ ૭। મયમૃપા-મયમાશ્રિત્ય મૃપા । યથા-રાજપુરુષૈર્ગૃહીતાનાં ચૌરાણામયથાતથાપણમ્ ૮। આખ્યાયિકા મૃપા-આખ્યાયિકામાશ્રિત્ય મૃપા= અત્યુત્તયાદિરૂપા । યથા-ગજમદજલૈર્નદીજાતેતિ ૯। તથા-દશમં મૃપા ઉપઘાત- નિશ્રિતમ્-ઉપઘાતે=પ્રાણિવધે નિશ્રિતમ્=આશ્રિતમ્ । યથા-અવાતકે 'વાતકો- ડય ' મિત્યાદ્યખ્યાખ્યાનવચનમ્ ૧૦ ॥ ૨ ॥ તથા-સત્યમૃપા-સત્યં ચ ત-મૃપા

મૃપા હૈ-જૈસે-કોઈ વ્યક્તિ હૈસી હંસીમેં જવ કિસી કી કોઈ વસ્તુ છિપા લેતા હૈ, તો જિસતી વહ વસ્તુ હોની હૈ વહ તમસે પૂછના હૈ કિ તુમને મેરી વહ વસ્તુ દેખી હૈ? તો વહ કહ દેતા હૈ કિ મૈને તેરી વહ વસ્તુ નહીં દેખી હૈ ॥૭॥

મયકો આશ્રિત કરકે જો અસત્ય બોલા જાતાહૈ, વહ મયમૃપાહૈ- જૈસે-રાજપુરુષોં દ્વારા પકડે ગયે ચૌર અપકે વશલે-ઝૂઠ બોલ દેલેહૈં ૮।

આખ્યાયિકા મૃપા--કથા-કહાનીકે પ્રસંગમેં જો ચઢા વઢાકર વાત કહી જાતી હૈ વહ આખ્યાયિકા મૃપા હૈ-જૈસે-વહાં ઇતના મદજલ હાથિયોંકા દ્વારા કિ ઉસસે ઇક નદી વહને લગી, જો અસત્ય પ્રાણિ- વધમેં આશ્રિત હોતા હૈ, વહ ઉપઘાત નિશ્રિત મૃપા હૈ જૈસે-અવાતકકે વિષયમેં વહ ઘાતક હૈ, ઇત્યાદિ રૂપ અખ્યાખ્યાન વચન ૧૦ ઇસી તરહસે

દેવામાં આવે. જ્યારે તે માણસ એવું પૂછે કે “શું તમે મારી આ વસ્તુ લીધી છે?” ત્યારે એવો જવાબ આપવામાં આવે કે “મેં તે વસ્તુ લીધી નથી” તો આ પ્રકારના અસત્ય વચનને હાસમૃપા કહે છે.

ભયમૃપા-ભયને કારણે જે અસત્ય બોલવામાં આવે છે. તેને ભયમૃપા કહે છે. જેમ કે રાજ્યના પોલીસો દ્વારા પકડવામાં આવેલો ચોર સજાના ભયથી જૂઠું બોલે છે.

આખ્યાયિકામૃપા-કથા કહેતી વખતે અથવા કોઈ પ્રસંગનું વર્ણન કરતી વખતે જે મીઠું મરચું ભભરાવીને અતિશયોક્તિભરી વાત કરવામાં આવે છે તેનું નામ આખ્યાયિકામૃપા છે. જેમ કે “ત્યાં હાથીઓના ગંડસ્થાનમાંથી એટલો બધો મદ્દ બરો કે મદ્દની નદી વહેવા લાગી.”

ઉપઘાતનિશ્રિતમૃપા-પ્રાણીવધનો આશ્રય લઈને જે અસત્ય બોલાય છે તેને ઉપઘાતનિશ્રિતમૃપા કહે છે. જેમ કે અઘાતકને ઘાતક કહેવો તે આ પ્રકારનું મૃપાવચન ગણાય છે. આ પ્રકારના અખ્યાખ્યાન વચનને ઉપઘાતનિશ્રિતમૃપા કહે છે.

ચેતિ, સત્યાનૃતાત્મક મિશ્રવચનં દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તથા-ઉત્પન્નમિશ્રકમ્-
 इत्यादि । तत्र-उत्पन्नमिश्रकम्-उत्पन्नम्=उत्पन्नविषयं मिश्रं=सत्यमृषारूपम्-
 उत्पन्नमिश्रं, तदेव-उत्पन्नमिश्रकमिति । यथा-‘श्वस्ते शत्रु दास्यामी’-त्युक्ता
 पञ्चाशद्दत्त’, यद्वा-‘अस्मिन्ननगरे दशदारका जाताः’ इति कथयतस्तन्म्यूनाधिक-
 भावे सत्यमृषात्वात्तदिति ।

સત્ય મૃષા વચન બી-સત્યાનૃતાત્મ વચન બી દશ પ્રકારકા કહા ગયા
 હૈ જૈસે-ઉત્પન્ન મિશ્રક ૧, વિગત મિશ્રક ૨, ઉત્પન્નવિગતમિશ્રક ૩
 જીવમિશ્રક ૪, અજીવમિશ્રક ૫, અનન્તમિશ્રક ૬, અનન્ત મિશ્રક
 ૭, પરીનમિશ્રક ૮, અદ્વા મિશ્રક ૯, ઓર અદ્વાદ્વા મિશ્રક ૧૦

इनमें उत्पन्न विषयक जो सत्य मृषा रूप वचन है, वह उत्पन्न
 मिश्रक है-जैसे-‘मैं तुम्हें कल सौ रुपया दूंगा’ इस प्रकार कह कर ५०
 पचास देनेवालेके वचन उत्पन्न मिश्रक हैं-क्योंकि जितने रुपया देनेको
 कहा है उतने रुपया नहीं देनेसे तो मृषापन वचनमें आया-परन्तु दिये
 अवश्य हैं-अतः इस अपेक्षा वचनमें सत्यता आई इस तरह ऐसे वचन
 सत्य और मृषा इन दोनोंसे मिले हुए होनेके कारण उत्पन्न विषयमें
 सत्यमृषा मिश्रक हैं । इसी तरहसे इस नगरमें १० बालक उत्पन्न हुए
 हैं-इस प्रकारके वचनमें भी न्यूनाधिक भावके होने पर सत्यमृषा
 मिश्रकना जाननी चाहिये ।

એજ પ્રમાણે સત્યમૃષા (સત્યાનૃતાત્મ) વચન પણ ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે.

(૧) ઉત્પન્નમિશ્રક, (૨) વિગતમિશ્રક, (૩) ઉત્પન્નવિગતમિશ્રક, (૪) જીવ-
 મિશ્રક, (૫) અજીવમિશ્રક, (૬) જીવાજીવમિશ્રક, (૮) અનન્તમિશ્રક, (૯) અદ્વા
 મિશ્રક અને (૧૦) અદ્વાદ્વામિશ્રક.

ઉત્પન્નમિશ્રક-ઉત્પન્ન વિષયક જે સત્યમૃષારૂપ વચન છે તેને ઉત્પન્નમિશ્રક
 કહે છે. જેમ કે કોઈને બીજે દિવસે ૧૦૦ રૂપિયા દેવાનો વાયદો કર્યો હોય,
 પરન્તુ ૫૦ રૂપિયા દેવામાં આવે, તો તે પ્રકારનો વાયદો કરનારના વચનને
 ઉત્પન્નમિશ્રક કહે છે, કારણ કે વાયદા પ્રમાણેની પૂરી રકમ ન દેવાને કારણે
 તેમાં સત્યનો અંશ જળવાયો છે આ વચનોમાં સત્ય અને મૃષા બન્ને સમિ-
 લિત હોવાને કારણે આ પ્રકારનાં વચનોને ઉત્પન્ન વિષયની અપેક્ષાએ સત્ય-
 મૃષામિશ્રક કહે છે. તથા કોઈ નગરમાં ૧૦ બાળકો ઉત્પન્ન થયાનું કથન કર
 વામાં આવે, તો તેમાં પણ ન્યૂનાધિકતા સંભવી શકે છે. તેથી આ પ્રકારનાં
 વચનને પણ સત્યમૃષામિશ્રક કહી શકાય છે

વિગતમિશ્રક-વિગતવિષય મિશ્રકમ્ । યથા-ઋસ્મિન્નિદ્રા ગ્રામે નગરે વા ઝનેષુ અવિકેષુ વા મૃતેષુ-‘અઘ્રાસ્મિન્નગરે દશજના મૃતાઃ’ ઇતિ ૨ । ઉત્પન્નવિગતમિશ્રકમ્-ઉત્પન્નવિષય વિગતવિષય ચ યન્મિશ્રકં તત્ । યથા-ઋસ્મિન્નગ્રામે ઝનેષુ અવિકેષુ વા દારકેષુ ઉત્પન્નેષુ=જાતેષુ ઝનેષુ અવિકેષુ વા જનેષુ વિગતેષુ=મૃતેષુ-‘અઘ્રાસ્મિન્નગરે દશ બાલકા જાતાઃ, દશ જનાશ્વાવાસ્મિન્નગરે મૃતાઃ’ ઇતિ ૩ । જીવમિશ્રકમ્=જીવવિષય મિશ્રકમ્ । યથા-પ્રભૂતાનાં જીવનાં સ્તોકાનાં ચ મૃગાનાં શઙ્ખ શઙ્ખનકાદીનામેકં મહારાશિં દૃષ્ટ્વા કથિદવદતિ-‘અહો ! મહાનયં જીવરાશિ’-રિતિ । અત્ર સત્યમૃપાત્વં જીવતામજીવતાં ચ મહારાશી મહા-

વિગતમિશ્રક-વિગત વિષય સમ્બન્ધી જો સત્યમૃપા વચન હૈ, વે વિગત મિશ્રક વચન હૈ-જૈસે-કિસી એક ગ્રામમેં કમ યા અધિક મનુષ્યોંકે મર જાને પર એસા કહના કિ આજ હસ ગ્રામમેં દશ આદમી મર ગયે હૈ ૨ ।

ઉત્પન્નવિગત મિશ્રક વચન વે હૈ જો ઉત્પન્ન વિષયક ઓર વિગત મિશ્રક હોતે હૈ-જૈસે-કિસી એક ગ્રામમેં કમ યા અધિક લડકોંકે ઉત્પન્ન હો જાને પર યા કમ અધિકે મર જાને પર એસા કહના કિ આજ હસ નગરમેં ૧૦ બાલક ઉત્પન્ન હુએ હૈ ઓર ૧૦ આજ મરે હૈ ૩ ।

જીવમિશ્રક-જીવ વિષયક જો સત્ય મૃપા વચન હૈ વે જીવ મિશ્રક વચન હૈ-જૈસે-વહુત અધિક જીવિત એવં કમ મરે હુએ’ શંખ શંખનક (૧) આદિકોંકી એક મહા રાશિકો દેખકર કોઈ એસા કહને લગે-કિ અહો ! યહ જીવ રાશિ વહુત વડી હૈ હસ પ્રકારકે વચનમેં જો

વિગતમિશ્રક-વિગત વિષય સમ્બન્ધી જે સત્યમૃપા વચન છે, તેને વિગત મિશ્રક વચન કહે છે. જેમ કે કોઈ ગામમાં ૧૦ કરતાં ઓછાં કે વધારે માણસો કોઈ દિવસ મરી ગયા હોય છતાં, તે ગામમાં તે દિવસે ૧૦ માણસો મરી ગયા, એવું કથન કરવું તેને વિગતમિશ્રક વચન કહે છે.

ઉત્પન્નવિગતમિશ્રક-ઉત્પન્ન વિષયક અને વિગતવિષયક જે સત્યમૃપા વચન છે તેને ઉત્પન્નવિગતમિશ્રક કહે છે. જેમ કે કોઈ નગરમાં ૧૦ થી અધિક કે ઓછાં બાળકોનો જન્મ થયો હોય અને ૧૦ થી ન્યૂન અથવા અધિક માણસોનું મૃત્યુ થયું હોય છતાં એવું કહેવું કે “આજે આ ગામમાં ૧૦ બાળકોનો જન્મ થયો છે અને ૧૦ માણસોનાં મરણ થયાં છે”

જીવમિશ્રક-જીવવિષયક જે સત્યમૃપા વચન છે તેને જીવમિશ્રક વચન કહે છે. જેમ કે-ધણાં જીવિત અને થોડા મૃત (અજીવિત) શંખ, શંખનક આદિનો એક મોટો ઢગલો બોધને કોઈ એવું કહે કે-“અરે, આ જીવરાશિ

જીવરાશિત્વવ્યપદેશેનેતિ ૪। અજીવમિશ્રકમ્-અજીવવિષયં મિશ્રકમ્ । યથા-
પ્રભૂતાનાં મૃતાનાં સ્તોકાનાં જીવતાં ચ શઙ્ખશઙ્ખનકાદીનામેકં મહારાશિ દૃષ્ટ્વા
કથિત્વદતિ-‘ અહો મહાનયમ્ અજીવરાશિ ’-રિતિ ૫। જીવાજીવમિશ્રકમ્-
જીવાજીવવિષયં મિશ્રકમ્ । યથા-તસ્મિન્નેવ જીવન્મૃતશઙ્ખશઙ્ખનકાદિરાશૌ ‘ એતા-
વન્તો જીવન્તિ એતાવન્તો મૃતાઃ ’ इति नियमतोऽभिधानम् ६। અનન્તમિશ્રકમ્-
અનન્તવિષયં મિશ્રકમ્ । યથા-મૂળઠાદિકમનન્તકાયં તસ્યૈવ સમ્બન્ધિભિઃ પાણ્ડુરૈઃ
પત્રૈઃ અન્યેન વા કેનચિદ્ વનસ્પતિના મિશ્રમવલોક્ય કથિત્ પ્રાઢ-‘ સર્વોઽપ્યે-

સત્ય મૃષાત્વ પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ વહ જીતે હુએ ઓર નહીં જીતે હુએ
શઙ્ખાદિકોંકી મહારાશિમેં મહાજીવરાશિકે વ્યપદેશસે પ્રકટ ક્રિયા
ગયા હૈ । ૪। અજીવમિશ્રક-—અજીવ વિષયક જો સત્ય મૃષા વચન
હૈં-વે અજીવ મિશ્રક વચન હૈં-જૈસે-અધિક મરે હુએ ઓર ક્રમ જીતે
હુએ શઙ્ખ શંખનક આદિકોંકી એક મહારાશિકો દેલકર કોઈ કહને
લગે કિ યહ અજીવ રાશિ મહાન હૈ ૫ ।

જીવાજીવમિશ્રક-—જીવાજીવ વિષયક જો મૃષા વચન હૈ વે
જીવાજીવમિશ્રક હૈં-જૈસે-ઉસી જીતી હુઈ ઓર મરી હુઈ શંખ-શંખ-
નક આદિ રાશિમેં એસા નિયમસે પ્રકટ કરના કિ ઇસમેં ઇતને જીવિત
હૈં, ઓર ઇતને મરે હૈં ૬, અનન્તમિશ્રક-—અનન્ત વિષયક જો સત્ય
મૃષા વચન હૈં-વે અનન્તમિશ્રક વચન હૈં-જૈસે-મૂલક આદિ અનન્ત

ઘણી મોટી છે,” તે આ પ્રકારનાં વચનને જીવમિશ્રક વચન કહે છે, કારણ કે
શંખાદિકોની મહારાશિમાં જીવિત શંખાદિ વધારે હોવાથી તેણે આ પ્રકારનો
શબ્દપ્રયોગ કર્યો છે. તે મહારાશિમાં જીવન્ત શંખાદિ અધિક હોવાને કારણે
સત્યતા પણ છે અને થોડા અજીવન્ત શંખાદિને કારણે મૃષાપનનો પણ સંભાવ છે.

જીવાજીવમિશ્રક-જીવ અને અજીવ વિષયક જે સત્યમૃષા વચન છે તેને
જીવાજીવમિશ્રક કહે છે જેમ કે ઉપર્યુક્ત જીવન્ત અને અજીવન્ત શંખ-શંખ-
નક આદિ રાશિમાં આટલાં મૃત છે એવું નિશ્ચય પૂર્વક પ્રકટ કરવું.

અનન્તમિશ્રક-અનન્ત વિષયક જે સત્યમૃષા વચન છે તેને અનન્તમિશ્રક
કહે છે. જેમ કે મૂલક (મૂળા) આદિ અનન્ત કાયને, તેના પીળાં પીળાં પાન
સાથે અથવા કોઈ અન્ય વનસ્પતિ સાથે મિશ્રિત થયેલ જોડને એવું કહેવું
કે ‘ આ બધાં અનન્તકાયિક છે,’ આ પ્રકારના કથનને અનન્તમિશ્રક કહે છે,

પોડનન્તકાયિકઃ ' ઇતિ ૭। પરીતમિશ્રકમ્-પરીતવિષયં મિશ્રકમ્ । યથા-પ્રત્યેક-
વનસ્પતિસંઘાતમનન્તકાયિકલેશેન સહિતમવલોચય કોઽપિ વદતિ-' સર્વોઽપિ-
પ્રત્યેકવનસ્પતિરય ' મિતિ ૮। અદ્વામિશ્રકમ્-અદ્વા=કાલઃ, સ ચેદ્ પ્રસ્તાનાત્
દિવસો રાત્રિર્વા ગૃહ્યતે, તદ્વિષયં મિશ્રકમ્ । યથા-કશ્ચિત્ કમપિ જનં ત્વરયન્
પરિણતપ્રાપ્તે દિનસે વદતિ-' શીઘ્રંકુરુ રાત્રિર્જાયતે '-તિ । રાત્રી વા પરિણતપ્રા-
પ્ત્યાયાં વદતિ-' ઉત્તિષ્ઠ સૂર્ય ઉદ્ભવઃ ' ઇતિ ૯। તથા-અદ્વાદ્વામિશ્રકમ્-દિવસરય
રાત્રેર્વા એકદેશોઽદ્વાદ્વા, તદ્વિષયં મિશ્રકમ્ । યથા કશ્ચિત્ કમપિ જનં પ્રથમપૌરુ-
ષ્યામેવ જાતાયાં ત્વરયન્નેવં વદતિ-' ગચ્છ મધ્યાહ્નો જાતઃ ' ઇતિ ૧૦। સૂ ૪૫॥

કાયકો ડસીકે સમ્બન્ધી પાણ્ડુ ૨-સફેદ પત્તોંસે અથવા ઓર કિસી
દૂસરી વનસ્પતિસે નિશ્ચિત હુઆ દેખકર કોઈ એસા કહને લગે કિ યદ્
સવ અનન્તકાયિક હૈ ।૭।

પરીતમિશ્રક--પરીત વિષયક જો સત્યમૃષા વચન હૈ વહ પરીત
મિશ્રક વચન હૈ જૈસે પ્રત્યેક વનસ્પતિકે સમૂહકો અનન્તકાયિકકે
લેશસે સહિત દેખ કર કોઈ એસા કહે કિ યદ્ સવ પ્રત્યેક વનસ્પતિહૈ ૮।

અદ્વા મિશ્રક--રાત્રિયા દિવસ રૂપ કાલકા નામ યહાં અદ્વા શબ્દસે
ગૃહીત હુઆ હૈ, હસ અદ્વા રૂપ કાલ વિષયક જો સત્ય મૃષા વચન હૈ
વહ અદ્વા મિશ્રક વચન હૈ, જૈસે-જબ દિવસ સમાપ્તિ કી ઓર જા રહા
હો તબ કોઈ કિસીકો જલ્દી કી ઓર પ્રેરિત કરતા હુઆ કહતા હૈ કિ
તુમ જલ્દી કરો રાત્ત હો ગઈ હૈ, અથવા-જબ રાત્ત સમાપ્ત હોનેકી ઓર
હોની હૈ તબ કહતા હૈ-તુમ શીઘ્ર ઊઠો-સૂર્ય નિકલ આયા હૈ ? દિવસ

પરીતમિશ્રક-પરીત વિષયક જે સત્યમૃષા વચન છે તેને પરીતમિશ્રક કહે
છે. જેમ કે પ્રત્યેક વનસ્પતિના સમૂહને અનન્તકાયિકના અંશથી યુક્ત બેઠને
કોઈ એવું કહે કે આખી પ્રત્યેક વનસ્પતિ છે, તે તે કથનને પરીતમિશ્રક કહેવાય

અદ્વામિશ્રક-રાત્રિ અથવા દિવસ રૂપ કાળને અહીં “અદ્વા” પદથી
ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ અદ્વારૂપ કાળવિષયક જે સત્યમૃષા વચન છે.
તેને અદ્વામિશ્રક કહે છે. જેમ કે દિવસ પૂરો થવાની તૈયારીમાં હોય ત્યારે
કોઈની પાસે કોઈ કામની ઝડપ લાવવા માટે એવું જે કહેવામાં આવે છે કે
“તમે ઉતાવળ કરો, રાત પડી ગઈ છે” અથવા રાત્રિ પૂરી થવાની તૈયારી
હોય ત્યારે એવું જે કહેવામાં આવે છે કે “તમે જલ્દી ઊઠો, સૂર્યોદય થઈ
ગયો છે,” આ પ્રકારના વચનને અદ્વામિશ્રક કહે છે.

અદ્વાદ્વા મિશ્રક-રાત્રિ અથવા દિવસનો જે એક દેશ (વિભાગ) હોય
છે તેનું નામ “અદ્વાદ્વા” છે. તે અદ્વાદ્વા વિષયક જે સત્યમૃષારૂપ વચન

અનન્તરસૂત્રે ભાષાયાઃ પ્રસ્તાવઃ કૃતઃ । અતઃ સકલભાષણીયાર્થવ્યાપકં સત્યભાષારૂપ દષ્ટિવાદં પર્યાયતો દશવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—દિદ્ધિવાયસ્સ ણં દસ નામધેજ્ઞા પળ્લણ્ણસા, તં જહા—
દિદ્ધિવાણ્ણવા ૧, હેતુવાણ્ણવા ૨, ભૂતવાણ્ણવા ૩, તત્ત્વવાણ્ણવા ૪, સમ્યગ્વાણ્ણવા ૫, ધર્મવાણ્ણવા ૬, ભાષાવિચયણ્ણવા ૭, પુર્વગણ્ણવા ૮, અણુજોગગણ્ણવા ૯, સર્વપ્રાણભૂતજીવસત્ત્વલુહાવહેણ્ણવા ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

જાણા—દષ્ટિવાદસ્ય સ્વલુ દશ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથથા—દષ્ટિવાદ इति वा १, हेतुवाद इति वा २, भूतवाद इति वा ३, तत्त्ववाद इति वा ४, सम्यग्वाद इति वा ५, धर्मवाद इति वा ६, भाषाविचय इति वा ७, पूर्वगतइति वा ८, अनुयोगगत इति वा, ९, सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वलुहावह इति वा १०॥સૂ૦ ૪૬॥

અથવા રાત્રિકા જો એકદેશ હૈં વહ અદ્વાદ્વા હૈં હસ અદ્વાદ્વા વિષયક જો સત્ય મૃધા રૂપ વચન હૈં વહ અદ્વાદ્વા મિશ્રક વચન હૈં, જૈસે—કોઈ કિસી કિસી મનુષ્યકો પ્રથમ પૌરુષીકે હી જાને પર શીઘ્રતાકી ઓર પ્રેરિત કરતા હુઆ એસા કહે કિ—તુમ જાઓ દો પહર હો ગયા હૈ। ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૫ ॥

હસ ડપરકે સૂત્રમેં ભાષાકા પ્રસ્તાવ કિયા ગયા હૈ, અતઃ સકલ ભાષણીય અર્થમેં વ્યાપક જો સત્ય ભાષારૂપ દષ્ટિવાદ હૈં ડસકા કથન પર્યાયકી અપેક્ષા લેકર સૂત્રકાર દશવિધ રૂપસે કરતે હૈં—

“દિદ્ધિવાયસ્સ ણં દસ નામધેજ્ઞા પળ્લણ્ણસા” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૪૬ ॥

દષ્ટિવાદકે દશ નામ કહે ગયે હૈં—જૈસે—દષ્ટિવાદ ૧, હેતુવાદ ૨

છે. તેને અદ્વાદ્વામિશ્રક કહે છે. જેમ કે પહેલો પ્રહર પૂરો થવાની તૈયારી હોય ત્યારે કામમાં ઉતાવળ કરાવવા માટે કોઈને એવું કહેવામાં આવે કે “તમે ઉતાવળ કરો, બીજે પ્રહર શરૂ થઈ ગયો,” આ પ્રકારના સત્યમૃધા વચનને અદ્વાદ્વામિશ્રક કહે છે. ॥ સૂત્ર ૪૫ ॥

આગલા સૂત્રમાં ભાષાનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે.

હવે સમસ્ત ભાષણીય અર્થમાં વ્યાપક જે સત્યભાષારૂપ દષ્ટિવાદ છે તેનું કથન પર્યાયની અપેક્ષાએ દશવિધ રૂપે કરે છે—

“દિદ્ધિવાયસ્સ ણં દસ નામધેજ્ઞા પળ્લણ્ણસા” इत्यादि—(સૂ ૪૬)

દષ્ટિવાદના નીચે પ્રમાણે દસ નામ કહ્યાં છે—(૧) દષ્ટિવાદ, (૨) હેતુવાદ, (૩) ભૂતવાદ, (૪) તત્ત્વવાદ, (૫) સમ્યગ્વાદ, (૬) ધર્મવાદ, (૭) ભાષાવિચય, સ્થા૦—૬૫

ટીકા--‘ દિદ્વિવાયસ્સ ણં ’ इत्यादि--

દૃષ્ટિવાદસ્ય-દૃષ્ટ્યો દર્શનાનિ, વદનં વાદઃ, દૃષ્ટીનાં વાદો દૃષ્ટિવાદસ્તસ્ય, યદ્વા-
‘ દૃષ્ટિપાતસ્ય ’ इतिच्छाया, દૃષ્ટીનાં=સર્વનયદૃષ્ટીનાં પાતો યસ્મિન્નસૌ દૃષ્ટિ-
પાતસ્તસ્ય, સ્વલ્લુ દશ નામધેયાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । તથથા-દૃષ્ટિવાદ इति वा । इति
શબ્દોઽન્ન સ્વરૂપનિરૂપણે । વા શબ્દો નિકલ્પે । એવમગ્રેઽપિ बोध्यम् । દૃષ્ટિવાદ
શબ્દસ્યાર્થસ્ત્વમિહિત एवेति १ । हेतुवादः-‘હિનોતિ-ગમયતિ જિજ્ઞાસાવિષયી
ભૂતમર્થ યઃ સ હેતુઃ-અનુમાનોત્પાદકં લિજ્ઞમ્, ઉપચારાદનુમાનમેવ વા, તસ્ય વાદો

ભૂતવાદ ૩ તત્ત્વવાદ ૪, સમ્યગ્વાદ ૫, ધર્મવાદ ૬, આયો વિચય ૭
પૂર્વગત ૮ અનુયોગગત ૯, ઔર સર્વપ્રાણ, ભૂત, જીવ, સત્ત્વ સુસ્વાવહ ૧૦

દૃષ્ટિ નામ દર્શનોંકા હૈ, ઔર વાદ નામ કહનેકા હૈ, इस तरह
दृष्टियोंका जो वाद है वह दृष्टिवाद है अथवा-‘ दिद्विवायस्स ’की
संस्कृत छाया “ दृष्टिपातस्य ” ऐसी भी हो सकती है इस पक्षमें ऐसा
अर्थ होता है कि जिसमें समस्त नयरूप दृष्टियोंका पात (निर्णय) होता है
वह दृष्टिपात है इसके दश नाम जो कहे गये हैं उनको तात्पर्यार्थ ऐसा है
यहां दृष्टिवाद आदि नामोंके साथ जो “ इति शब्द आया है तथा वा
शब्द विकल्पमें आया है, दृष्टिवाद शब्दका अर्थ तो कह ही दिया गया
है, जो जिनाज्ञाके विषयभूत अर्थ जानता है, वह हेतु है, ऐसा वह हेतु
अनुमानका उत्पादक लिङ्ग रूप होना है अथवा-उपचारसे अनुमान रूप
ही होना है इस हेतुका जो कथन है वह हेतुवाद है? भूतवाद वास्तविक जो

(૮) પૂર્વગત, (૯) અનુયોગગત અને (૧૦) સર્વપ્રાણ, ભૂત, જીવ, સત્ત્વસુખાવહ.

દર્શનોના નામ દૃષ્ટિ છે. અને મત પ્રકટ કરવો અથવા કહેવું તેનું નામ
વાદ છે. આ રીતે દૃષ્ટિઓનો જે વાદ છે તેનું નામ દૃષ્ટિવાદ છે. અથવા-
“ દિદ્વિવાયસ્સ ” આ પદની સંસ્કૃત છાયા “ દૃષ્ટિપાતસ્ય ” પણ થાય છે. આ
સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-જેમાં સમસ્ત
નય રૂપ દૃષ્ટિઓનો પાત થાય છે તેને દૃષ્ટિપાત કહે છે. હવે તેના દશ
નામોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-અહીં દૃષ્ટિવાદ આદિ નામોની સાથે
જે ‘ इति ’ તથા “ वा ” પદ આવ્યાં છે, તે વિકલ્પના અર્થમાં આવ્યાં છે,
દૃષ્ટિવાદનો અર્થ તો ઉપર સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે.

હેતુવાદ-જિજ્ઞાસાના વિષયભૂત જે અર્થજનતા છે, તેનું નામ હેતુ છે.
એવો તે હેતુ અનુમાનના ઉત્પાદક લિંગ (લક્ષણ) રૂપ હોય છે. અથવા ઉપ-
ચારની અપેક્ષાએ અનુમાનરૂપ જ હોય છે. આ હેતુનું જે કથન કરે છે,
તેને હેતુવાદ કહે છે.

हेतुवाद इति २। भूतवादः-भूताः=वास्तविकाः पदार्थागतेषां वाद इति ३। तत्त्व-
वादः-तत्त्वानि=जीवादीनि, तेषां वादः। अथवा-तथ्यवाद इतिच्छाया। तत्र-
तथ्यः=सत्यो वाद इति। सम्यग्वादः-सम्यग्=अविपरीतो वादः इति ५। धर्म-
वादः-धर्माणां=वस्तुपर्यायाणां धर्मस्य=श्रुतचारित्रलक्षणस्य वाद इति ६। तथा-
भाषाविजयः-भाषा=सत्यादिका तस्या विजयो=निर्णय इति। अथवा-भाषावि-
जयइति, पाठः। भाषायाः=वाचो विजयः=समृद्धिर्यस्मिन् स भाषाविजय इति
७। पूर्वगतः-पूर्वाणि-सर्वश्रुतान् पूर्वं क्रियन्ते इति पूर्वाणि-उत्पादपूर्वादीनि चतु-
र्दश तेषु गतः=अभ्यन्तरीभूतस्तथाविधस्वभावत्वादिति। यद्वा-पूर्वाणि-उत्पाता-
पदार्थहैं, वे भूतहैं इन भूतोंका जो वादहैं वह भूतवादहै३। जीवादिक तत्त्वों
का जो वादहै वह तत्त्ववादहै अथवा-“तत्त्वावाएइ वा”की संस्कृतच्छाया
तथ्यवाद ऐसी भी हो सकती हैं इस पक्षमें जो सत्यवाद है वह तथ्य-
वाद है। अविपरीत वादका नाम सम्यग्वाद है। धर्मोंका-वस्तुकी पर्या-
योंका-अथवा-श्रुतचारित्र रूप धर्मका जो वाद है वह धर्मवाद है
सत्यादिक रूप भाषाओंका जो विजय-निर्णय है, वह भाषा विजय
है अथवा-“भाषाविचएइ वा”की संस्कृतच्छाया “भाषा विजय”
ऐसी भी होती है, इस पक्षमें भाषाका-वाणीका विजय-समृद्धि जिसमें
है वह भाषा विजय हैं समस्त श्रुतोंसे जो पूर्वमें किये गये हैं वे पूर्व

ભૂતવાદ-વાસ્તવિક જે પદાર્થો છે તેમને ભૂત કહે છે તે ભૂતોનો જે
વાદ છે તેને ભૂતવાદ કહે છે

તત્ત્વવાદ-શ્રુતદિક તત્ત્વોનો જે વાદ છે તેને તત્ત્વવાદ કહે છે. અથવા
“તત્ત્વાવાएइवा” આ પદની સંસ્કૃત છાયા “તથ્યવાદ” પણ થાય છે. આ
તથ્યવાદનો અર્થ સત્યવાદ થાય છે.

(૫) સમ્યગ્વાદ-અવિપરીત વાદને સમ્યગ્વાદ કહે છે.

(૬) ધર્મવાદ-ધર્મોનો (વસ્તુની પર્યાયોનો અથવા શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો
જે વાદ છે તેનું) નામ ધર્મવાદ છે.

(૭) ભાષાવિજય-સત્ય દિકરૂપ ભાષાઓનો જે વિજય (નિર્ણય) છે તેનું
નામ ભાષાવિજય છે અથવા-“ભાષાવિચएइवा” આ પદની સંસ્કૃત છાયા
“ભાષાવિજય” પણ થાય છે.

ભાષાવિજય એટલે વાણીનો વિજય અથવા વાણીની સમૃદ્ધિ જેમાં છે એવી
ભાષાના કથનનું નામ ભાષાવિજય છે.

દીનિ ચતુર્દશગતાનિ-સમાધિષ્ઠાનિ યત્ર સ તથા (૮) અનુયોગગતઃ-અનુયોગો દ્વિવિધઃ-મૂલપ્રથમાનુયોગઃ, ગણિકાનુયોગચ્ચેતિ । તત્ર-મૂલપ્રથમાનુયોગઃ-મૂલં=ધર્મપ્રણયનાતીર્થકરાઃ, તેષાં પ્રથમઃ=સમ્યક્ત્વપ્રાપ્તિરૂપપૂર્વભવાદિગોચરો યોડ-નુયોગઃ=વ્યાખ્યાનં સઃ । તથા-ગણિકાનુયોગઃ-ગણિકા=ઇશ્તુસ્વખંડં, ગણિકેવ ગણિકા=एकाधिकारग्रन्थपद्धतिः, તા વ ઇશ્વાકુપ્રમૃતિવંશજાતાનાં નિર્વાણગમ-નાનુત્તરવિમાનવક્તવ્યતા, તસ્યા અનુયોગઃ=વ્યાખ્યાનગ્રન્થ ઇતિ । एवं द्विरूपेऽयोगे गत इति ९। પૂર્વગતોડનુયોગ ગતચ્ચેત્યેતન્નામદ્વયં યદ્યપિ દૃષ્ટિયાન્સ્યાંશભૂતં, તથા-

ऐसे पूर्व उत्पाद पूर्व आदि १४ हैं इनमें तथाविच स्वभाव होनेसे जो अभ्यन्तरी भूत है वह पूर्वगत है, अथवा-उत्पाद आदि १४ पूर्व जहां पर सन्नोविष्ट है, वह पूर्वगत है अनुयोग गत-मूलप्रथमानुयोग और गणिकानुयोगके भेदसे अनुयोग दो प्रकारका है, इनमें धर्मके प्रणयन-कर्ता होनेसे तीर्थंकर मूल हैं, इनका जो सम्यक्त्व प्राप्त रूप पूर्व भवादि सम्बन्धी अनुयोग है, वह मूल प्रथमानुयोग है अनुयोग शब्दका अर्थ व्याख्यान है, इश्टु खण्डका नाम गणिका है गणिकाके समान जो गणिका है, एकाधिकारवाली ग्रन्थपद्धति है, वः गणिका है, ऐसी वह गणिका इश्वराकु आदि वंशमें उत्पन्न हुआंकी निर्वाण गमन सम्बन्धी वक्तव्यता रूप होती है, इस गणिकाका जो व्याख्यान ग्रन्थ है, वह गणिकानुयोग है इस तरह द्विरूप अनुयोगमें जो गत हैं वह

અર્થાં શ્રુતો કરતાં જેની રચના પહેલા કરાઈ છે, તે શ્રુતનું નામ પૂર્વ છે. ઉત્પાદપૂર્વ આદિ એવાં ૧૪ પૂર્વ છે. તેમાં આ પ્રકારનું લક્ષણ હોવાથી તેમને પૂર્વગત કહે છે. એટલે કે ઉત્પાદ આદિ ૧૪ પૂર્વનો જે શાસ્ત્રગ્રન્થમાં સમાવેશ થાય છે તે શાસ્ત્રગ્રંથનું નામ પૂર્વગત છે.

અનુયોગગત-અનુયોગ બે પ્રકારનો છે (૧) મૂલ પ્રથમાનુયોગ, અને (૨) ગણિકાનુયોગ ધર્મના પ્રણયનકર્તા (પ્રવર્તક) હોવાથી તીર્થંકરોને મૂળરૂપ કહી શકાય, તેમના સમ્યક્ત્વપ્રાપ્તિરૂપ પૂર્વભવાદિ સંબંધી જે અનુયોગ છે તેનું નામ પ્રથમાનુયોગ છે. અનુયોગ શબ્દ વ્યાખ્યાનનો વાચક છે. શેરડીના પતીકાનું નામ ગણિકા છે આ ગણિકા જેવી જે એકાધિકારવાળી ગ્રંથપદ્ધતિ છે. તેનું નામ ગણિકા છે. એવી તે ગણિકા ઇશ્વાકુ આદિ વંશોમાં ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્યોની નિર્વાહપ્રાપ્તિના અથવા અનુત્તર વિમાનમાં તેમના ગમનના વર્ણનરૂપ હોય છે. આ ગણિકાનો જે વ્યાખ્યાનગ્રંથ છે તેનું નામ ગણિકાનુયોગ છે. આ પ્રકારે આ બે પ્રકારના અનુયોગમાં જેનો સમાવેશ થાય છે, તેને અનુયોગગત

પીદમ્ અવયવેડવયવ્યુપચારાદ્ દૃષ્ટિવાદતયોક્તમિતિ ૧। તથા-સર્વપ્રાણભૂતજીવ-
સત્ત્વસુખાવહ:-સર્વે=સમસ્તા એ પ્રાણા:==દ્વિત્રિચતુરિન્દ્રિયાદયશ્ચ, ભૂતા-તરવશ્ચ,
જીવા:==ચ્ચેન્દ્રિયાશ્ચ, સત્ત્વા:==પૃથિવ્યપ્તેજોવાયવશ્ચેતિ સર્વપ્રાણભૂતજીવસત્ત્વા:,
તેષાં સુખાવહ:, સંયમપ્રતિપાદકત્વાત્ નિર્વાણહેતુત્વાચ્ચેતિ ૧૦ ॥ સૂ-૪૬ ॥

અનન્તરમુત્રે દૃષ્ટિવાદોડશ્ચરૂપત્વાત્ પ્રાપ્ત્યાદીનાં સુખાવહતયા દશધિધત્વે-
નોક્ત: । અશ્ચયિપરીતં શક્તં તુ દુ:ખાવહમિતિ શક્તં દશધિધત્વેનાહ—

મૂલમ્-દસવિહે સત્થે પપગ્ગે, તં જહા-સત્થમમ્મી ૧, વિસં
૨, લોણં ૩, સિણેહો ૪, સ્વાર ૫, મંબિલં ૬, દુપ્પડત્તો મળો ૭,
વાયા ૮, કાયા ભાવો ૯, અવિરૂ ૧૦ ॥ ૧ ॥ દસવિહે દોસે
પપગ્ગે, તં જહા-તજ્જાયદોસે ૧ મહ્મંગદોસે ૨, પસત્થદોસે ૩
પરિહારદોસે ૪, સલક્કણ ૫ કારણ ૬ હેડદોસે ૭, સંકામણં

અનુયોગ ગત એ દો નામ યદ્યપિ દૃષ્ટિવાદકે અંશભૂત હૈં ફિર મી પૂર્વ
ગત એવં અનુયોગ ગત એસે નામ જો હસકે કહે ગયે હૈં વે અવયવમેં અવ-
યવીકા ઉપચાર કરકે દૃષ્ટિવાદ રૂપસે કહે ગયે હૈં તથા-“ સર્વ પ્રાણભૂત
જીવસત્ત્વસુખાવહ ” જો એસા નામ હસકા કહા ગયા હૈં વહ ઉનકો
સમસ્ત પ્રાણાદિકોંકો સંયમકા પ્રતિપાદક હોનેસે એવં નિર્વાણકા હેતુ
હોનેસે સુખાવહ હૈં, હસલિયે કહા ગયા હૈં ।

યહાં દોહન્દ્રિય, તેહન્દ્રિ, ચૌહન્દ્રિય આદિ પ્રાણ શબ્દસે, વૃક્ષભૂત
શબ્દસે, પંચેન્દ્રિય જીવ શબ્દસે. ઔર પૃથિવી અપ્ તેજ એવં વાયુ, એ સત્ત્વ
શબ્દસે ગૃહીત હુએ હૈં ॥ સૂ-૪૬ ॥

કહે છે. જો કે પૂર્વગત અને અનુયોગગત આ બન્ને નામ દૃષ્ટિવાદના અંશરૂપ
છે, છતાં પણ તેમના પૂર્વગત અને અનુયોગગત એવાં જે બે નામ આપવામાં આવ્યાં
છે તે અવયવમાં અવયવીનો ઉપયોગ કરીને દૃષ્ટિવાદ રૂપે કહેવામાં આવેલ છે,

“ સર્વપ્રાણભૂતજીવ સત્ત્વ સુખાવહ ” એવું જે તેનું નામ આપવામાં
આવ્યું છે તેનું કારણ એ છે કે તે સંયમનું પ્રતિપાદક અને નિર્વાણના હેતુ
રૂપ હોવાથી સમસ્ત પ્રાણાદિકોને માટે સુખાવહ (સુખદાયક) છે પ્રાણ પદ
દ્વીન્દ્રિય, ત્રીન્દ્રિય અને ચતુરિન્દ્રિય એવાનું વાયક છે, ભૂત પદ વનસ્પતિકાઓનું
વાયક છે, જીવ પદ પંચેન્દ્રિયોનું વાયક છે અને પૃથ્વીકાય, અપ્કાય, તેજસ્કાય
અને વાયુકાયનું વાયક ‘ સત્ત્વ ’ પદ છે, એમ સમજવું. ॥ સૂત્ર ૪૬ ॥

૧ ‘ તજ્જાયદોસે ’ ‘ હન્દ્રવજ્ઞા હન્દ: ।

૮, નિગ્રહ ૯, વસ્તુદોષે ૧૦ ॥ ૨ ॥ દસવિહે વિસેસે પળ્લન્તે,
તં જહા--વસ્તુ ૧ તજ્જાપદોસે ૨ ચ, દોસે ઇગટ્ટિણ્ણ ૩। કારણે
૪ ચ પડુપ્પન્ને ૫ દોસે ૬ નિચ્ચે ૭ હિ અટ્ટમે ૮ ॥ ૩ ॥ અત્તળા
૯ ઉવળીણ ૧૦ ચ વિસેસેઙ્ગ ચ તે દસ ॥ સૂ. ૪૭ ॥

છાયા—દશવિધં શસ્ત્રં મજ્જમ્, તથા—શસ્ત્રમગ્નિઃ ૧ વિષં ૨ લવણઃ ૩
સ્નેહઃ ૪ ક્ષારઃ ૫ અમ્લમ્ ૬। દુષ્પ્રયુક્તોમનો ૭ વાક્ ૮ કાયા-ભાવઃ ૯ અવિ-
રત્તિઃ ૧૦ ॥ ૧ ॥ દશવિધો દોષઃ મજ્જન્તઃ, તથા—તજ્જાતદોષઃ ૧, મતિમજ્જદોષઃ
૨, પ્રજાસ્તુદોષઃ ૩, પરિહારદોષઃ ૪। સ્વલક્ષણ ૫—કારણ ૬—હેતુદોષઃ ૭ સંક્રા-
મણ ૮—નિગ્રહ ૯—વસ્તુદોષઃ ૧૦ ॥ ૨ ॥ દશવિધો વિશેષઃ મજ્જન્તઃ, તથા—

અશસ્ત્રરૂપ હોનેસે દૃષ્ટિવાદ પ્રાણાદિકોંકો સુગ્રાવહ (સુગ્રદાયક)
હૈ, હસલિયે ઉસે ૪૬ વેં સૂત્રમેં ૧૦ નામવાલોં કહા ગયાહેં પરન્તુ અશ-
સ્ત્રસે વિપરીત શસ્ત્ર હોતા હૈ ઓર વહ દુઃખાવહ હોતા હૈ હસલિયે
ઉસે ખી અવ સૂત્રકાર દશ પ્રકારસે કહતે હૈ—

શસ્ત્ર દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે—અગ્નિ શસ્ત્ર ૧ વિષ શસ્ત્ર
૨ લવણ શસ્ત્ર ૩ સ્નેહ શસ્ત્ર ૪ ક્ષાર શસ્ત્ર ૫ અમ્લ શસ્ત્ર ૬, દુષ્પ્રયુક્ત
મનઃશસ્ત્ર ૭ દુષ્પ્રયુક્ત વચન શસ્ત્ર ૮, દુષ્પ્રયુક્ત કાયચેષ્ટા શસ્ત્ર ૯, ઓર
અવિરત્તિ શસ્ત્ર ૧૦।

દોષ દશ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—જૈસે—તજ્જાત દોષ ૧, મતિમજ્જ દોષ
૨ પ્રજાસ્તુ દોષ ૩ પરિહાર દોષ ૪ સ્વલક્ષણ દોષ ૫ કારણ દોષ ૬ હેતુ
દોષ ૭ સંક્રમણ દોષ ૮ નિગ્રહ દોષ ૯ ઓર વસ્તુ દોષ ૧૦

અશસ્ત્રરૂપ હોવાથી દૃષ્ટિવાદ પ્રાણાદિકોંકોને માટે સુખાવહ છે. તેથી ૪૬માં
સૂત્રમાં તેને ૧૦ નામોવાળો કહ્યો છે. પરન્તુ અશસ્ત્રથી વિપરીત જે શસ્ત્ર છે
તે પ્રાણાદિકોંકોને માટે દુઃખાવહ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર શસ્ત્રના દસ
પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—“દસવિહે સત્થે પળ્લન્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૭)

શસ્ત્રના દસ પ્રકારો મળ્યા છે—(૧) અગ્નિશસ્ત્ર, (૨) વિષશસ્ત્ર, (૩) લવણ-
શસ્ત્ર, (૪) સ્નેહશસ્ત્ર, (૫) ક્ષારશસ્ત્ર, (૬) અમ્લશસ્ત્ર, (૭) દુષ્પ્રયુક્ત મનઃશસ્ત્ર,
(૮) દુષ્પ્રયુક્ત કાયચેષ્ટાશસ્ત્ર અને (૧૦) અવિરત્તિશસ્ત્ર.

દોષના પણ નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર મળ્યા છે—(૧) તજ્જાતદોષ, (૨)
મતિભંગદોષ, (૩) પ્રજાસ્તુદોષ, (૪) પરિહારદોષ, (૫) સ્વલક્ષણદોષ, (૬)
કારણદોષ, (૭) હેતુદોષ, (૮) સંક્રમણદોષ, (૯) નિગ્રહદોષ અને (૧૦) વસ્તુદોષ.

વસ્તુ ૧ તજ્જાતદોષશ્ચ ૨, દોષ ૩ એકાર્થિક ઇતિ ૪। કારણે ૫ ચ પ્રત્યુપન્નો
દોષઃ ૬ નિત્યો ૭ ડધિકમ્ અષ્ટમઃ ૮ ॥ ૩ ॥ આત્મના ૯, ઉપનીતં ૧૦ ચ
વિશેષ ઇતિ ચ તે દશ ॥ સુ ૪૭ ॥

ટીકા--‘ દસવિદે ’ ઇત્યાદિ—

શસ્યતે=હિંસ્યતે-પ્રાણવિયોજનં ક્રિયતે=એનેતિ શસ્ત્રં, તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞ-
મમ્ । તદ્યથા-શસ્ત્રપગ્નિરિત્યાદિ । અયં ભાવઃ-શસ્ત્ર હિંસકં વસ્તુ, તચ્ચ દ્રવ્યતો
ભાવતશ્ચેતિ દ્વિવિધમ્ । તત્ર-દ્રવ્યતસ્તાવત્-અગ્નિઃ શસ્ત્રં ભવતિ । અયમગ્નિર્વિ-
જાતીયાગ્નિમપેક્ષ્ય સ્વકાયશસ્ત્રં, પૃથિવ્યાદિકાયમપેક્ષ્ય પરકાયશસ્ત્રમ્, અયોગોલ-
પ્રવિષ્ટોડગ્નિરુભયકાયશસ્ત્રં ભવતીતિ પ્રથમો ભેદઃ ૧। તથા વિપં=સ્થાવરજઙ્ગમેતિ
ભેદદ્વયં શસ્ત્રં ભવતિ । ‘ શસ્ત્ર ’-‘દયત્રાપિ સંવધ્યતે, અન્યત્રાપિ ન સંવન્ધનીય-

વિશેષ દોષ ૧૦દશ પ્રકારકા કહો ગયોહૈ જૌસે-વસ્તુ દોષ ૧ તજ્જાત
દોષ ૨ ઇત્યાદિ “ શસ્યતે-હિંસ્યતે-પ્રાણવિયોજન ક્રિયતે એનેતિ
શસ્ત્રમ્ ” ઇસ વ્યુત્પત્તિકે અનુસાર જિસકે દ્વારા પ્રાણિયોંકે પ્રાણોંકા
ઉનસે વિયોજન કિયા જાતા હૈ વહ શાસ્ત્ર હૈ, વહ શાસ્ત્ર જો ૧૦ પ્રકાર-
કા કહા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય એસા હૈ-શસ્ત્ર હિંસક વસ્તુરૂપ હોતા
હૈ, ઓર વહ દ્રવ્ય ઓર ભાવકે ભેદસે દો પ્રકાર કહા ગયા હૈ. દ્રવ્યકી
અપેક્ષા અગ્નિકો શસ્ત્ર કહા હૈ વહ અગ્નિશસ્ત્ર વિજાતીય અગ્નિકી
અપેક્ષાસે સ્વકાય શસ્ત્રરૂપ હૈ ।

પૃથિવી આદિ કાયકી અપેક્ષાસે પરકાય શસ્ત્રરૂપહૈ એવં અયોગોલકમેં
(લોહેકે ગોલેમેં) પ્રવિષ્ટ અગ્નિ ઉભયકાય શાસ્ત્ર રૂપહૈ ૧ સ્થાયર જઙ્ગમકે
ભેદસે વિષ દો પ્રકારકા હોતાહૈં । ઇસ શબ્દકે સાથ ઓ “ શસ્ત્ર ” પદકા

વિશેષદોષના પણ દસ પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) વસ્તુદોષ, (૨) તન્મદોષ ઇત્યાદિ.

“ શસ્યતે-હિંસ્યતે-પ્રાણિવિયોજનં-ક્રિયતે-એનેતિ શસ્ત્રમ્ ”

આ વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે એના દ્વારા પ્રાણીઓના પ્રાણોનું વિયોજન કરવામાં
આવે છે-જીવેની હત્યા કરવામાં આવે છે, તેનું નામ શસ્ત્ર છે તે શસ્ત્રના
ઉપર મુજબ દસ પ્રકાર પડે છે તે દરેક પ્રકારના શસ્ત્રનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં
આવે છે-શસ્ત્ર હિંસક સાધનરૂપ હોય છે. તેના દ્રવ્ય અને લાવની અપેક્ષાએ
એ ભેદ પડે છે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અગ્નિને શસ્ત્ર કહેવામાં આવેલ છે. આ
અગ્નિશસ્ત્ર વિજાતીય અગ્નિની અપેક્ષાએ સ્વકાયશસ્ત્ર રૂપ છે, અને પૃથ્વી
આદિ કાયની અપેક્ષાએ પરકાયશસ્ત્રરૂપ છે, અને અયોગોલકમાં (લોખંડના
ગોળામાં) પ્રવિષ્ટ અગ્નિ ઉભયકાયશસ્ત્રરૂપ છે.

તથા-તજ્જાતદોષ ઇત્યાદિ । એતે દોષા ગુરુશિષ્યયોર્વાદિ પ્રતિવાદિનોર્વા વાદ-
માશ્રિત્ય જાયન્તે । તન્ન-તજ્જાતદોષ:-તસ્ય=ગુર્વાદેર્જાતં=જાતિઃ જન્મમર્મકર્મા
દિલક્ષણઃ પ્રકારો વા તજ્જાતમ્, તદેવ દૂષણમિતિ કૃત્વા દોષસ્તજ્જાતદોષઃ ।
તથાવિધકુલાદિના દોષવત્તેત્યર્થઃ । અથવા-તસ્માત્=મતિવાદિનઃ સકાશાદ જાતઃ
ક્ષોભાન્મુલસ્તસ્માદિલક્ષણો દોષ ઇતિ તજ્જાતદોષ ઇતિ પ્રથમો ભેદઃ ૧ । તથા-
મતિભજ્જદોષઃ-મતેઃ=બુદ્ધેર્ભજ્જો વિનાશો મતિભજ્જઃ, તન્નિમિત્તો વિસ્મૃત્યાદિરૂપો
દોષ ઇતિ ૨ । પ્રશાસ્ત્વદોષઃ-પ્રશાસ્તા=વાદિપ્રતિવાદિનોર્વાદિનિર્ણાયકઃ, સ યદિ
દ્વેષયુક્ત ઉપેક્ષકો ભવેત્તતો યો દોષઃ-પ્રતિવાદિનો વિજયપ્રદાનરૂપો વિસ્મૃતપ્રમે

દોષ-દૂષણ દુર્ગુણ યે સઽ પર્વાય શબ્દ હૈ યહ જો દશ પ્રકારકા
કહા ગયા સો उसका तात्पर्य ऐसा है-तज्जान दोष ये सव दोष गुरु
एवं शिष्यके या वादी-प्रतिवादीके वादको आश्रित करके होते हैं अतः
गुरु आदीकोमें कुल जाति आदीकी जो दोषवत्ता है वह तज्जात दोष
है अथवा-प्रतिवादीसे उत्पन्न हुए क्षोभसे जो वादीका मुख स्तम्भ आदि
हो जाता है वह तज्जातदोष है १ ।

मतिभज्ज-बुद्धिका जो विनाश है वह मतिभज्ज है इस मतिभज्जको
लेकर जो विस्मृति आदि दोष उत्पन्न हो जाता है वह मतिभज्ज दोष
है २ । प्रशास्त्व दोष--वादी और प्रतिवादीके वादका जो निर्णायक होता
है, वह प्रशास्ता है, वह यह यदि दोषयुक्त होता है या उपेक्षक होता
है तो इससे प्रतिवादीको जो विजय प्रदान रूप दोष होता है अथवा

દોષ, દૂષણ દુર્ગુણ, આ ત્રણે શબ્દો એક જ અર્થના વાચક છે.

તજ્જાત દોષ-આ બધાં દોષો ગુરુ અને શિષ્યના અથવા વાદી અને
પ્રતિવાદીના વાદનો આશ્રય લઈને થતાં હોય છે. તેથી ગુરુ આદિકોમાં કુળ,
જાતિ આદિની અપેક્ષાએ જે દોષવત્તા હોય છે તેનું નામ તજ્જાત દોષ છે
અથવા પ્રતિવાદી દ્વારા ઉત્પન્ન થયેલા ક્ષોભને કારણે વાદીના મુખ પર જે અચંબાનો
ભાવ પ્રકટ થાય છે અથવા તેની જવાબ આપવાની શક્તિનો જ દોષ થઈ
થઈ જાય છે તેનું નામ તજ્જાતદોષ છે.

મતિભજ્જ-બુદ્ધિના વિનાશનું નામ મતિભજ્જ છે. આ મતિભજ્જને લીધે
જે વિસ્મૃતિ આદિ દોષ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, તેને મતિભજ્જ દોષ કહે છે.

પ્રશાસ્ત્વદોષ-વાદી અને પ્રતિવાદીના વાદનો જે નિર્ણાયક હોય છે તેને
'પ્રાશાસ્તા' કહે છે. તે જો દોષયુક્ત હોય અથવા ઉપેક્ષક હોય તો તેના દ્વારા
પ્રતિવાદીને વિજય પ્રદાન કરાવવારૂપ જે દોષ થાય છે તેને પ્રશાસ્ત્વદોષ કહે

યસ્ય પ્રતિવાદિનઃ પ્રમેયસ્મારણાદિરૂપો વા સ પ્રશાસ્તૃદોષ इति ३। પરિહાર-
 દોષઃ-પરિહરણ-પરિહારઃ=શાસ્ત્રનિષિદ્ધસ્ય લોકરૂઢ્યા વા નિષિદ્ધસ્ય વસ્તુન
 આસેવનં તદેવ દોષઃ। યદ્વા-પરિહારદોષઃ-વાદિના દત્તસ્ય દૂષણસ્યાડસમ્યક્ પરિ-
 હારઃ। યથા-શબ્દનિત્યત્વવાદિનો મીમાંસકસ્ય મતે બૌદ્ધેન દૂષણં દત્તમ્-‘શબ્દોઽ-
 નિત્યઃ કૃતકત્વાદ્ ઘટવદિતિ ।’ અન્ન મીમાંસકઃ ડાહ ચદ્ મનતા શબ્દસ્યાનિત્ય-
 ત્વસાધનાય કૃતકત્વાદિતિ હેતુત્વેનોપન્યસ્તમ્, તત્ કૃતકત્વં ઘટગતં કિંવા શબ્દ
 ગતમ્? યદિ ઘટગતં કૃતકત્વં તદા તચ્છબ્દે નામ્તીતિ હેતોરસિદ્ધત્વમ્। અથ
 શબ્દગતં કૃતકત્વં તન્ન અનિત્યત્વેન વ્યાપ્તપ્રપચ્છબ્દમ્-इत्यस्यासाधारणाऽनैका-

उत्से-उत्ससे जो प्रमेयका स्मरण करवा देनेरूप दोष होता है वह
 प्रशास्तु दोष है ३ परिहार दोष-जिस वस्तुका सेवन करना शास्त्रसे
 निषिद्ध है अथवा-लोकरूढिसे निषिद्ध है ऐसी वस्तुका जो सेवन है
 वह परिहार दोष है अथवा-वादीके द्वारा दिये गये दूषणका जो अस-
 म्यक् परिहार है वह परिहार दोष है जैसे-शब्दको नित्य माननेवाले
 मीमांसकके मनमें बौद्धने इस प्रकारसे दूषण दिया-जब बौद्धने ऐसा
 उससे कहा कि “ घटकी तरह कूनक होनेसे शब्द अनित्य है ” इस
 पर मीमांसकने उससे कहा-हे बौद्ध! तुम जो शब्दमें अनित्यता सिद्ध
 करनेके लिये “ कृतकत्वात् ” इस हेतुका उपन्यास कर रहे हो-सो
 हमारा तुमसे ऐसा पूछना है कि यह कूनकना शब्दमें क्या घटगत
 आई है या शब्दगत आई है, अर्थात् घटगत कूनकनाको लेकर शब्दको
 तुम अनित्य सिद्ध करते हो या शब्दगत कूनकनाको लेकर अनित्यता

છે. અથવા તે નિર્ણાયક દ્વારા તેને પ્રમેયત્વું સ્મરણ કરાવી દેવા રૂપ જે દોષ
 થાય છે તેને પ્રશાસ્તૃદોષ કહે છે.

પરિહારદોષ-જે વસ્તુનું સેવન કરવાનો શાસ્ત્રોએ નિષેધ કર્યો હોય અથવા
 લોકરૂઢિ દ્વારા જેના સેવનનો નિષેધ હોય એવી વસ્તુનું સેવન કરવું તેનું નામ
 પરિહારદોષ છે. અથવા વાદિ દ્વારા અપાયેલ દૂષણનો જે અસમ્યક્ પરિહાર
 છે તેનું નામ પરિહાર દોષ છે. જેમ કે-શબ્દને નિત્ય માનનારા મીમાંસકની
 માન્યતામાં કોઈ બૌદ્ધ મતવાદીએ આ પ્રમાણે દૂષણ (દોષ) બતાવ્યો-“ ઘટની
 જેમ કૃતક હોવાથી શબ્દ અનિત્ય છે.” ત્યારે મીમાંસક મતવાદીએ તેને આ
 પ્રમાણે કહ્યું-“ હે બૌદ્ધમતવાદી! તમે શબ્દમાં અનિત્યતાનું પ્રતિપાદન કરવાને
 માટે “ કૃતકત્વાત્ ” આ હેતુનો ઉપન્યાસ કરી રહ્યા છો, તો હું તમને પૂછું
 છું કે તે કૃતકતા શબ્દમાં શું ઘટગત આવી છે કે શબ્દગત આવી છે? એટલે
 કે ઘટગત કૃતકતાને આધારે શબ્દને તમે અનિત્ય સિદ્ધ કરો છો કે શબ્દગત

નિત્કોડયં હેતુરિતિ । અયં મીમાંસકોક્તઃ પરિહારો ન સમ્યક્ પરિહારઃ । एवं सति सर्वानुमानोच्छेदः प्रसज्जेत । अनुमानं हि-साधनधर्ममात्रात् साध्यधर्ममात्र निश्चयवक्षणम् । अन्यथा धूमादग्नेरनुमानमपि न सिध्येत् । तथाहि-पर्वतो वह्निमान् धूमाद् यथा महानमभित्पत्र पर्वतैकप्रदेशादिगतो धूमोऽग्निसाधनायोपात्तः उत महानसगतः ? यदि पर्वतादिगतो धूमोऽग्निसाधनाय विवक्ष्यते तदा सोऽग्निव्या-

સિદ્ધ કરતે હો યદિ ઘટગત કૂનકનાકો લેકર શબ્દમેં અનિત્યતા સિદ્ધ કરતે હો તો વહ શબ્દમેં નહીં આં સકનેકે કારણ હેતુ અસિદ્ધ હો જાતા હૈ, ઓર યદિ શબ્દગત કૂનકનાકો લેકર અનિત્યતા સિદ્ધ કરતે હો તો વહ અનિત્યકે સાધ વ્યસિ ઉપલબ્ધ નહીં હોની હૈ, અતઃ “કૂન-કત્વાત્” યહ હેતુ અસારતા નૈકાન્તિક હૈ, સો હસ પ્રકારકા યહ કિયા ગયા મીમાંસક દ્વારા પરિહાર સમ્યક્ પરિહાર નહીં હૈ, ક્યોંકિ હસ પ્રકારકે પરિહાર રૂપ કથનસે સર્વાનુમાન ઉચ્છેદ પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ હસ પ્રકારસે-

સાધનરૂપ ધર્મ માત્રસે સાધ્યરૂપ ધર્મ માત્રકા નિશ્ચય કરના યહી અનુમાન હૈ, ઓર વહ “પર્વતોડયં અગ્નિમાન્ ધૂમત્વાત્ મહાનસ-વત્” ઇત્યાદિ રૂપ હોના હૈ, અવ હસ પર પૂછનેવાલા એસા પૂછ સકતા હૈ કિ આપને અગ્નિકો સિદ્ધ કરનેકે લિયે જો ધૂમ રૂપ હેતુ દિયા હૈ, વહ પર્વતકે એક પ્રદેશમેં રહા હુઆ હેતુ દિયા હૈ, યા મહાનસગત ધૂમ હેતુ રૂપસે પ્રયુક્ત કિયા હૈ, યદિ પર્વતાદિ પ્રદેશગત ધૂમ અગ્નિકો સિદ્ધ

કૃતકતાને આધારે તેની અનિત્યતા સિદ્ધ કરે છે ? જો ઘટગત કૃતકતાને આધારે તમે શબ્દમાં અનિત્યતા સિદ્ધ કરવા માગતા હો, તો તે શબ્દમાં નહીં આવી શકવાને કારણે હેતુ અસિદ્ધ થઈ જાય છે, અને જો શબ્દગત કૃતકતાનો આધાર લઈને તમે તેમાં અનિત્યતા સિદ્ધ કરતા હો, તો તે અનિત્યની સાથે વ્યક્તિ ઉપલબ્ધ થતી નથી. તેથી “કૃતકત્વાત્” કૃતકતા રૂપ આ હેતુ અસાધારણ નૈકાન્તિક છે મીમાંસક દ્વારા આ પ્રકારનો જે પરિહાર કરવામાં આવ્યો છે તે સમ્યક્ પરિહાર રૂપ નથી, કારણ કે આ પરિહાર રૂપ કથન વડે સર્વાનુમાન ઉચ્છેદનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થાય છે. આ વાતનું પ્રતિપાદન કરી શકાય-સાધનરૂપ ધર્મમાત્રથી જ સાધ્યરૂપ ધર્મમાત્રનો નિશ્ચય કરવો તેનું નામ જ અનુમાન છે. અને તે “પર્વતોડયં અગ્નિમાન્ ધૂમત્વાત્ મહાનસવત્” ઇત્યાદિ રૂપ હોય છે. આ વિષયને અનુલક્ષીને કેઈ એવો પ્રશ્ન પણ પૂછી શકે છે કે “આપે અગ્નિનું અસ્તિત્વ સિદ્ધ કરવાને માટે જે ધૂમ (ધુમાડા) રૂપ હેતુ લીધો છે તે શું પર્વતાદિ એક પ્રદેશમાં રહેલો હેતુ લીધો છે કે મહાનસગત ધૂમને હેતુ રૂપે પ્રયુક્ત કર્યો છે ? જો પર્વતાદિ પ્રદેશગત ધૂમને અગ્નિનું

પ્યો ન સ્થાદિત્યસાધારણનૈકાન્તિકો હેતુઃ । અથ મહાનસગતો ધૂમો વિવક્ષ્યતે તદા નાસૌ પર્વતૈકદેશે વર્તતે इत्यસિદ્ધો હેતુરિત્યયં મીમાંસકોક્તઃ પરિહારઃ સર્વાનુમાનોચ્છેદકત્વેન અસમ્યક્પરિહારરૂપઃ પરિહારદોષ इति ४ । તથા-સ્વલક્ષણકારણ-હેતુદોષઃ-સ્વલક્ષણં ચ કારણં ચ હેતુઃવેતિ-સ્વલક્ષણકારણહેતવસ્તેષાં દોષસ્તથા । દ્વન્દ્વાન્તે દ્વન્દ્વાદૌ ચ શ્રૂયમાણં પદં પ્રત્યેકમભિસંવધ્યતે । તતશ્ચ-સ્વલક્ષણદોષઃ ૬, કારણદોષો ૬, હેતુદોષ ૭ ચેતિ । ત્રયો ભેદઃ ગ્રાહ્યાઃ । તત્ર-સ્વલક્ષણદોષઃ-લક્ષ્યતે=તદન્ય પૃથકારેણ અવધાર્યતે વસ્તવનેતિ લક્ષણં, સ્વં ચ તલ્લક્ષણં ચેતિ-

કરનેકે લિયે દિયા ગયા હૈ, તો વહ અગ્નિ વ્યાસ નહીં હો સકતા હૈ, અતઃ યહ અસાધારણ-નૈકાન્તિક હેત્વાભાસ રૂપ હો જાતા હૈ, ઔર યદિ મહાનસ ગત ધૂપ અગ્નિકો પર્વતમેં સિદ્ધ કરનેકે લિયે દિયા ગયા હૈ તો વહ પર્વતકે એકદેશમેં નહીં રહતાહૈ, વહ તો મહાનસમેંહી રહતા હૈ, ઇસ તરહસે યહ હેતુ અસિદ્ધ હો જાતા હૈ, ઇમ પૂર્વોક્ત પ્રકારસે મીમાંસક દ્વારા કિયા ગયા પરિહારસે ઇસ રૂપસે સમસ્ત અનુમાનકે ઉચ્છેદ હોનેકા પ્રસંગ પ્રાપ્ત હો જાતા હૈ, અતઃ ઇસ પ્રકારકા મીમાંસકકા કૃત પરિહાર અસમ્યક્ પરિહાર હોનેસે પરિહાર દોષ રૂપ હૈ ૪ ।

દ્વન્દ્વકે અન્તમેં ઔર દ્વન્દ્વકે આદિમેં પ્રયુક્ત શબ્દ પ્રત્યેકકે સાથ સંબન્ધિત હોના હૈ-ઇસ નિયમકે અનુસાર સ્વલક્ષણ દોષ, કારણદોષ ઔર હેતુદોષ ચે ત્રીન દોષ હૈ-જિસકે દ્વારા અનેક વસ્તવન્તરસે વસ્તુ ભિન્ન કી જાતી હૈ, વહ લક્ષણ હૈ, એસા અપના જો લક્ષણ હૈ વહ સ્વલ-

અસ્તિત્વ સિદ્ધ કરવાને માટે અહીં પ્રકટ કરવામાં હોય તો તે અગ્નિ વ્યાસ હોઈ શકે નહીં. તેથી તે અસાધારણ નૈકાન્તિક હેત્વાભાસરૂપ બની જાય છે, અને જો મહાનસગત ધૂમને અગ્નિનું પર્વતમાં અસ્તિત્વ સિદ્ધ કરવા માટે અહીં દેવામાં આવ્યો હોય, તો તે પર્વતના એકદેશમાં રહેતો નથી-તે તો મહાનસમાં જ રહે છે. આ રીતે આ હેતુ અસિદ્ધ થઈ જાય છે. આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે પણ મીમાંસક દ્વારા કરવામાં આવેલા પરિહાર વડે આ રીતે સમસ્ત અનુમાનના ઉચ્છેદ થવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાય છે. તેથી આ પ્રકારનો મીમાંસક દ્વારા કરાયેલો પરિહાર અસમ્યક્ પરિહારરૂપ હોવાને કારણે પરિહારદોષરૂપ છે.

દ્વન્દ્વને અન્તે અને દ્વન્દ્વને પ્રારંભે પ્રયુક્ત શબ્દ પ્રત્યેકની સાથે સંબન્ધિત હોય છે, આ નિયમ અનુસાર સ્વલક્ષણ દોષ, કારણદોષ અને હેતુદોષ, આ ત્રણ દોષ છે જેના દ્વારા અનેક વસ્તવન્તરમાંથી વસ્તુને જુદી પાડી શકાય છે તેનું નામ લક્ષણ છે. એવું પોતાનું જ લક્ષણ છે, તેનું નામ સ્વલક્ષણ છે, જેમકે

સ્વલક્ષણમ્ , યથા જીવસ્યોપયોગવત્ત્વમ્ , યથા વા-પ્રમાણસ્ય સ્વપરાત્રમાસકજ્ઞા-
નત્વમ્ । તસ્ય સ્વલક્ષણસ્ય દોષઃ=અવ્યાપ્તિરતિવ્યાપ્તિર્વા । તત્ર-અવ્યાપ્તિર્યથા-
પદાર્થસ્ય સ્વલક્ષણં સન્નિધાનાસન્નિધાનાભ્યાં જ્ઞાનપ્રતિભાસભેદઃ । इदं च इन्द्रिय-
प्रत्यक्षमेवाश्रित्य घटते, न तु योगिज्ञानमाश्रित्य । योगिज्ञाने हि सन्निधानासन्नि-
धानाभ्यां प्रतिभासभेदो नास्तीति तत्रेदं स्वलक्षणं न घटते इत्यव्याप्तिरत्र

ક્ષણ હૈ, જૈસે-જીવકા લક્ષણ ઉપયોગ અથવા-પ્રમાણકા લક્ષણ સ્વ
ઔર પર પદાર્થોંકા અવમાસ ન કરનેવાલા જ્ઞાન હસ લક્ષણકે દોષ
દો હોતે હૈ-અવ્યાસિ ઔર અતિવ્યાસિ જો લક્ષ્ય અપને પૂરે લક્ષ્યમેં
નહીં રહતા હૈ લક્ષ્યકે એકદેશમેં રહતા હૈ-વહ અવ્યાસિ દોષ હૈ-જૈસે
કિસીને પદાર્થકા એસા લક્ષણ કિયા કિ જિસ કી સન્નિધાનતાસે
ઔર અસન્નિધાનતાસે જ્ઞાનમેં પ્રતિભાસ ભેદ હોતા હૈ, વહ
પદાર્થ હૈ, એસા યહ લક્ષણ અવ્યાસિ દોષસે દૂષિત હો જાતા હૈ
ક્યોંકિ ઇન્દ્રિય પ્રત્યક્ષ રૂપ જ્ઞાનમેં તો એસા પ્રતિભાસ ભેદ પદાર્થકી
સન્નિધાનતા ઔર અસન્નિધાનતાસે હો જાતા હૈ, પર જો યોગિ જ્ઞાન
હૈ ડસમેં એસા નહીં હોતા હૈ, હસલિયે પદાર્થકા યહ લક્ષણ અવ્યાસિ
દોષવાલા હૈ-ક્યોંકિ પૂર્ણ લક્ષ્યમેં હસકી વૃત્તિ નહીં હૈ-લક્ષ્યકે એક
દેશમેં હી હસકી વૃત્તિ હૈ, જો સદોષ હોતા હૈ વહ લક્ષણ નહીં હોતા
હૈ સ્વલક્ષણકી અતિવ્યાસિ વહાં હોની હૈ જહાં લક્ષણ અપને લક્ષ્યમેં

અવતુ' લક્ષણ ઉપયોગ છે. અને પ્રમાણતુ' લક્ષણ સ્વ અને પર પદાર્થોતુ'
અવમાસન કરનારું જ્ઞાન છે આ લક્ષણના નીચે પ્રમાણે બે દોષ કહ્યા છે—

(૧) અવ્યાસિ અને (૨) અતિવ્યાસિ. જે લક્ષણ પોતાના પૂરા લક્ષ્યમાં
રહેતું નથી, પણ લક્ષ્યના એક દેશમાં રહે છે, તે અવ્યાસિ દોષવાળું ગણાય
છે. જેમ કે કોઇએ પદાર્થતુ' આ પ્રકારતુ' લક્ષણ બતાવ્યું—“ જેની સન્નિધા-
નતાથી (સમીપમાં હોવાથી) અને અસન્નિધાનતાથી જ્ઞાનમાં પ્રતિભાસભેદ થાય
છે, તે પદાર્થ છે.” આ પ્રકારતુ' લક્ષણ અવ્યાસિદોષથી દૂષિત થઇ બાય છે.
કારણ કે ઇન્દ્રિય પ્રત્યક્ષરૂપ જ્ઞાનમાં તો પદાર્થની સન્નિધાનતા અને અસન્નિ-
ધાનતાથી એવો પ્રતિભાસભેદ થઇ બાય છે, પરંતુ જે યોગિજ્ઞાન છે તેમાં એવું
થતું નથી. તેથી પદાર્થતુ' આ લક્ષણ અવ્યાસિ દોષવાળું ગણાય છે,
કારણ કે પૂર્ણ લક્ષ્યમાં તેની વૃત્તિ (વ્યાસિ) નથી, પણ લક્ષ્યના એક દેશમાં
જ તેની વૃત્તિ છે. જે સદોષ હોય તેને લક્ષણ રૂપ ગણી શકાય નહીં.

સ્વલક્ષણની અતિવ્યાસિ ત્યાં થાય છે કે જ્યાં લક્ષણ પોતાના લક્ષ્યમાં

વોધ્યેતિ । તથા-સ્વલક્ષણસ્વાતિવ્યાપ્તિર્યથા-પ્રમાણસ્ય લક્ષણમ્-અર્થોપલબ્ધિરેતુઃ
પ્રમાણમિત્યુક્તમ્ । અર્થોપલબ્ધિરેતુસ્તુ ચક્ષુર્દૃષ્યોદન મોજનાદીન્યનન્તાનિ વસ્તુ-
નીતિ પ્રમાણાનામાનન્ત્યં પ્રસજ્જેતેતિ પ્રમાણેષત્તા ન સ્યાદિત્યતિવ્યાપ્તિદોષ इति ।
અથવા-સ્વઃ=દાર્ઘ્યંતિકોડર્થોલક્ષ્યતેડનેતિ સ્વલક્ષણ=દૃષ્ટાન્તસ્તસ્ય દોષઃ=સાધ્ય-
વૈકલ્યમ્ । યથા-જગદો નિત્યો મૂર્તત્વાદ્ ઘટપદિતિ । અત્ર ઘટે નિત્યત્વં નાસ્તીતિ

રહતા હુઆ સી અલક્ષ્યમે રહતા હૈ, જૈસે અર્થોપલબ્ધિ હેતુ-પદાર્થોંકો
જ્ઞાપિ કરાનેમેં જો કારણ હોના હૈ-વહ પ્રમાણ હૈ, યહાં પ્રમાણ લક્ષણ હૈ
ઔર અર્થોપલબ્ધિ હેતુ યહ લક્ષણ હૈ, યહાં અર્થોપલબ્ધિ હેતુ મૂન ચક્ષુ,
દષ્ટિ, ઓદન આદિ અનન્ત વસ્તુએં સી હોતી હૈ અતઃ લક્ષણ કિયા ગયા
હૈ પ્રમાણકા ઔર ચલા ગયા વહ અપ્રમાણમૂન દષ્ટિ આદિ વસ્તુ મોમેં
યદિ હન્હેં સી પ્રમાણ માના જાવે તો પ્રમાણોંકી અનન્તતા હો જાનેકા
પ્રસજ્જ પ્રાપ્ત હોના હૈ અતઃ પ્રમાણકી સંરૂપામેં વાધા આતી હૈ હસલિયે
યહ લક્ષણ ઉપલક્ષ્યમે રહનેકે કારણ સદોષ હૈ ।

અથવા-સ્વશબ્દસે યહાં દાર્ઘ્યંતિક અર્થ લિયા ગયા હૈ સો દાર્ઘ્ય-
ન્ટિક રૂપ અર્થ જિસકે દ્વારા લક્ષણ હોના હૈ વહ સ્વલક્ષણ હૈ એસા વહ
સ્વલક્ષણ દૃષ્ટાન્ત હૈ હસ દૃષ્ટાન્તકા જો સાધ્ય વિકલતા સ્વ દોષ હૈ
વહ સ્વલક્ષણ દોષ હૈ જૈસે-કિસીને કહા કિ-“ શબ્દો નિત્યો મૂર્તસ્વાત્

રહેવા છતાં પણ અલક્ષ્યમાં રહે છે. જેમ કે....

અર્થોપલબ્ધિ હેતુ-પદાર્થોંની જ્ઞાપિ (જ્ઞાન) કરાવવામાં કારણભૂત હોય છે-
તેતુ' નામ પ્રમાણ છે. અહીં પ્રમાણ લક્ષ્ય છે અને અર્થોપલબ્ધિહેતુ તે લક્ષણ છે.
અહીં અર્થોપલબ્ધિના હેતુરૂપ ચક્ષુ, દષ્ટિ (દહીં) આદન (લાત) આદિ
અનન્ત વસ્તુઓ પણ હોઈ શકે છે. તેથી પ્રમાણના લક્ષણની વાત ચાકી રહી
હોવા છતાં પણ અપ્રમાણભૂત દષ્ટિ આદિ વસ્તુઓની વાતમાં પડી જવાથી અહીં
અતિવ્યાપ્તિ દોષનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થઈ જાય છે. જો દષ્ટિ આદિને પણ પ્રમાણ
માનવામાં આવે તો પ્રમાણોની અનન્તતા થઈ જવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થશે. તેથી
પ્રમાણની સંખ્યામાં અવરોધ આવી જાય છે. તેથી આ લક્ષણ ઉપલક્ષ્યમાં રહેવાને
કારણે સંદોષ છે.

અથવા સ્વ શબ્દ વડે દાર્ઘ્યંતિક અર્થ લેવામાં આવ્યો છે. તેથી દાર્ઘ્ય-
ન્ટિક રૂપ અર્થ જેના દ્વારા લક્ષ્ય થાય છે તે સ્વલક્ષણ છે. એવું તે સ્વલક્ષણ
દૃષ્ટાન્તરૂપ હોય છે, આ દૃષ્ટાન્તનો જે સાધ્યવિકલતારૂપ દોષ છે તેતુ' નામ
સ્વલક્ષણદોષ છે. જેમ કે-કોઈએ એવું કહ્યું કે “શબ્દો નિત્યો મૂર્તસ્વાત્ ઘટ-

દૃષ્ટાન્તદોષ इति ५। तथा-कारणदोषः-करोतीति कारणम्=परोक्षार्थनिर्णयार्थमुप-
पत्तिमात्रम् । यथा-सिद्धो निरुपमसुखो ज्ञानानावाधप्रकर्षात् । अत्र साध्यसाधन-
धर्मानुगतः सकललोकप्रसिद्धो दृष्टान्तो नास्तीत्युपपत्तिमात्रता बोधेति । कार-
णस्य दोषः कारणदोषः-साध्यव्यभिचारित्वम् । यथा-वेदोऽपौरुषेयो वेदकारण-
स्याश्रयमाणत्वादिति । अत्र वेदकारणस्याश्रयमाणता कारणान्तरादपि सम्भवतीति
घटवत् " घटकी तरह मूर्त होनेसे शब्द नित्य है यहां दृष्टान्तमें साध्य
जो नित्य है वह नहीं रहता है इसलिये वह साध्य विकलता रूप
दृष्टान्त दोष है ५ ।

कारण दोष—"करोतीति कारणम्" इस व्युत्पत्तिके अनुसार
"जो करता है" वह कारण है ऐसा वह कारण परोक्ष अर्थको निर्णय
करानेके लिये उपपत्ति मात्र रूप होना है जैसे—"ज्ञानके बाधक कार-
णोंके अभावकी प्रकर्षतासे सिद्ध निरुपम सुखवाले है" ऐसा किसीने
कहा सो इस परोक्ष अर्थको निर्णय करानेवाला यह ऐसा कोई दृष्टान्त
नहीं हैं जो साध्य एवं साधन धर्मसे युक्त हो और सकल लोकप्रसिद्ध
हो इसलिये ऐसे कथनको केवल उपपत्ति मात्र ही जानना चाहिये कार-
णका जो दोष है वह कारण दोष है यह कारणदोष साध्यविकलता
रूप होना है जैसे-किसीने ऐसा कहा कि "वेदके कारण सुने नहीं
जाते हैं इसलिये वह अपौरुषेय है-किसी भी पुरुषके द्वारा बनाया नहीं

वत् " "घटनी જેમ મૂર્ત હોવાથી શબ્દ નિત્ય છે." અહીં દૃષ્ટાન્તમાં સાધ્ય
જે નિત્ય છે તે રહેલું નથી, તેથી તેને સાધ્યવિકલતારૂપ દૃષ્ટાન્તદોષ કહી શકાય-

કારણદોષ-"કરોતીતિ કારણમ્" આ વ્યુત્પત્તિ અનુસાર "જે કરે છે.
તે કારણ છે" એવું તે કારણ પરોક્ષ અર્થના નિર્ણય કરાવવામાં ઉપપત્તિ
માત્ર રૂપ હોય છે. જેમ કે.... "જ્ઞાનમાં અવરોધ કરનારાં કારણોના અભાવની
પ્રકર્ષતાને લીધે સિદ્ધ નિરૂપમ સુખવાળા હોય છે" આ પ્રમાણે કોઈએ કહ્યું
છે. પરંતુ આ પરોક્ષ અર્થના નિર્ણય કરાવનારું એવું કોઈ દૃષ્ટાન્ત નથી કે
જે સાધ્ય અને સાધનધર્મથી યુક્ત હોય અને સકળ લોકમાં પ્રસિદ્ધ હોય તેથી
આ પ્રકારના કથનને માત્ર ઉપપત્તિ રૂપ જ સમજવું જોઈએ. કારણને જે દોષ
છે તેનું નામ કારણદોષ છે. તે કારણદોષ સાધ્ય વિકલતારૂપ હોય છે. જેમ કે-
કોઈએ એવું કહ્યું છે કે 'વેદના કારણ (વેદની રચના કરનાર પુરુષરૂપ કારણ
સંભવવામાં આવતાં નથી, તેથી વેદો અપૌરુષેય છે-એટલે કે કોઈ પણ પુરુષ
દ્વારા તેમની રચના થઈ નથી" અહીં વેદનાં કરણોની અશ્રૂયમાણતા તેના

કારણસ્ય સાધ્યવ્યભિચારિત્વમિતિ ૬। તથા - હેતુદોષ:-હિનોતિ=ગમયતીતિ
 હેતુ:-સાધ્યસદ્ભાવે હેતુસદ્ભાવઃ, સાધ્યાભાવે હેતોરભાવ इति । દૃષ્ટાન્તસદ્ભાવે
 કારણમે ૧ હેતુરિતિ વ્યપદિશ્યતે । તસ્ય હેતોરસિદ્ધવિરુદ્ધાનૈકાન્તિકત્વલક્ષણઃ દોષો
 હેતુદોષ इत्युच्यते । તત્રાસિદ્ધત્વલક્ષણો હેતુદોષો યથા-અનિત્યઃ શબ્દશ્ચાક્ષુષત્વાદ્
 ઘટવદિત્યત્ર ચાક્ષુષત્વં શબ્દે ન સિધ્યતીતિ । વિરુદ્ધત્વલક્ષણો હેતુદોષો યથા-

જાયા છે “ યહાં વેદકે કારણોંકી અશ્રૂયમાણતા ઉસકે અપૌરુષેયકો લેકર
 નહીં છે કિન્તુ અન્ય કારણોંસે બી હો સકની છે, અતઃ સાધ્ય વિકલતા
 રૂપ કારણ દોષ છે ૬ ।

હેતુદોષ-સાધ્યકે સદ્ભાવમેં હેતુકા સદ્ભાવ ઓર સાધ્યકે અભા-
 વમેં હેતુકા અભાવ હસ તરહકે અવિનાભાવ સાધ્યકે સાથ અન્યથાનુ-
 પપત્તિ રૂપ નિયમસે જો બંધા હોતા છે, વહ હેતુ હોતા છે દૃષ્ટાન્ત કે
 સદ્ભાવમેં કારણ હેતુ રૂપસે કહા જાના છે (!) હેતુકે અસિદ્ધ, વિરુદ્ધ
 ઓર અનેકાન્તિક યે તોન દોષ હોતે હેં યે હી હેતુદોષ કહે ગયે હેં ઇનમેં
 અસિદ્ધ રૂપ હેતુદોષ ઇસા હોતા છે “ અનિત્યઃ શબ્દઃ ચાક્ષુષત્વાત્
 ઘટવત્ ” ચાક્ષુષ હોનેસે ચક્ષુ ઇન્દ્રિયકા વિષય હોનેસે ઘટકી તરહ શબ્દ
 અનિત્ય છે, યહાં ચક્ષુષત્વ યહ હેતુદોષ રૂપ છે ક્યોંકિ શબ્દમેં ચાક્ષુ-
 ષતા નહીં રહતી છે । અતઃ પક્ષમેં સાધનકા અભાવ હોના યહી અસિદ્ધ
 દોષ છે વિરુદ્ધ રૂપ હેતુ દોષ જૈસે-“ શબ્દો નિત્યઃ કૃતકત્વાત્ ઘટવત્ ”

અપૌરુષેયને લીધે નથી, પરન્તુ અન્ય કારણોને લીધે પણ હોઈ શકે છે. તેથી
 આ પ્રકારના કથનમાં સાધ્યવિકલતારૂપ કારણદોષનો સદ્ભાવ રહેલો છે.

હેતુદોષ-સાધ્યના સદ્ભાવમાં હેતુનો સદ્ભાવ હોવો અને સાધ્યના અભા-
 વમાં હેતુનો અભાવ હોવો, આ પ્રકારના અવિનાભાવ સંબંધવાળો હેતુદોષ
 છે. એટલે કે સાધ્યની સાથે અન્યથાનુપપત્તિ રૂપ નિયમથી જે બંધાયેલો છે.
 તેનું નામ હેતુ છે. દૃષ્ટાન્તના સદ્ભાવમાં કારણને હેતુરૂપે કહેવામાં આવે છે.
 હેતુના ત્રણ દોષ કહ્યા છે-(૧) અસિદ્ધ, (૨) વિરુદ્ધ અને (૩) અનૈકાન્તિક.
 અહીં આ ત્રણને જ હેતુદોષ રૂપ સમજવા જોઈએ.

અસિદ્ધરૂપ હેતુદોષનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે-

“ અનિત્યઃ શબ્દઃ ચાક્ષુષત્વાત્ ઘટવત્ ” ચાક્ષુષ (ચક્ષુઃન્દ્રિયના વિષયરૂપ
 હોવાથી) હોવાથી ઘટની જેમ શબ્દ અનિત્ય છે. અહીં ‘ચક્ષુષત્વ’ હેતુદોષ
 રૂપ છે. કારણ કે શબ્દમાં ચક્ષુઃન્દ્રિય દ્વારા ગ્રાહ્યતા) હોતી નથી તેથી પક્ષમાં
 સાધનનો અભાવ હોવો તેનું નામ જ અસિદ્ધદોષ છે.

શબ્દોઽનિત્યઃ કૃતકત્વાદ્ ઘટવદિતિ । અત્ર કૃતકત્વં નિત્યત્વવિરુદ્ધમનિત્યત્વં સાધયતીતિ । અનૈકાન્તિકરવચ્છક્ષણે હેતુદોષો યથા—શબ્દો નિત્યઃ પ્રમેયત્વાદાકાશવદિતિ । અત્ર પ્રમેયત્વં શબ્દે નિત્યત્વસાધનાયોપાત્તમ્ । પ્રમેયત્વં ત્યનિત્યેષ્વપિ વર્તેતે इति हेतोरनैकान्तिकत्वमिति ७। મૂળે ‘ કારણ ’ શબ્દે કકારસ્ય દ્વિત્વં પદ્યાનુરોધાદ્ બોધ્યમિતિ । તથા—સંક્રમણ-નિગ્રહ-વસ્તુદોષઃ—સંક્રામણં ચ નિગ્રહશ્ચ વસ્તુચેતિ સંક્રમણ-નિગ્રહ-વસ્તૂનિ, તેષાં દોષઃ । અત્રાપિ દોષશબ્દઃ સંક્રમણાદિષુ ત્રિષુ

શબ્દ ઘટકી તરહ ક્રુતક હોનેસે અનિત્ય હૈ इस कथकमें कृतकत्व रूप हेतु अपने साध्य नित्यसे विरुद्ध अनित्यके साथ व्याप्त होनेके कारण अनित्यको साधन होना है नित्यका नहीं, अनैकान्तिक हेतुदोष—“ शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् आकाशवत् ” प्रमेय होनेसे शब्द आकाशकी तरह नित्य है इस कथनमें प्रमेयत्वरूप हेतु जिस प्रकारसे नित्यके साथ आकाशमें रहता है उसी तरहसे वह अनित्य घट पटादिकोंमें भी रहता है । इस कारण यह हेतु पक्ष सपक्षमें रहता हुआ भी विपक्षके साथ रहनेके कारण अनैकान्तिक है ७।

સંક્રામણ દોષ—પ્રસ્તુત પ્રમેયમાં અપ્રસ્તુત પ્રમેયકા જો પ્રવેશન હૈ પ્રમેયાન્તરમાં ગમન હૈ वह संक्रमण दोष है अथवा-प्रतिवादीके मतमें जो खुदका प्रवेशन है । अर्थात् प्रतिवादी के मतका समर्थन है । वह संक्रामण दोष है ८ ।

વિરુદ્ધરૂપ હેતુદોષનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે—

“ શબ્દો નિત્યઃ કૃતકત્વાદ્ ઘટવત્ ” “ શબ્દ ઘટની જેમ કૃતક હોવાથી નિત્ય છે ” આ કથનમાં કૃતકત્વ રૂપ હેતુ પોતાના સાધ્ય—નિત્યથી વિરુદ્ધ એવાં અનિત્યની સાથે વ્યાપ્ત હોવાને કારણે અનિત્યનો સાધક થાય છે—નિત્યનો સાધક થતો નથી.

અનૈકાન્તિક હેતુદોષ—“ શબ્દો નિત્યઃ પ્રમેયત્વાદ્ આકાશવત્ ” “ પ્રમેય હોવાથી શબ્દ આકાશની જેમ નિત્ય છે. ” આ કથનમાં પ્રમેયત્વરૂપ હેતુ જે પ્રકારે નિત્યની સાથે—આકાશમાં—રહે છે એજ પ્રમાણે તે અનિત્ય ઘટ, પટ વગેરેમાં પણ રહે છે આ કારણે આ હેતુ પક્ષમાં (સપક્ષમાં) રહેવા છતાં વિપક્ષની સાથે પણ રહેવાને કારણે અનૈકાન્તિક છે,

સંક્રામણદોષ—પ્રસ્તુત પ્રમેયમાં અપ્રસ્તુત પ્રમેયનો જે પ્રવેશ છે—તેનું પ્રમેયાન્તરમાં જે કથન છે તેને સંક્રામણદોષ કહે છે. અથવા પ્રતિવાદીના મત સાથે પોતાના મતને પણ મળતો કરી નાખવો એટલે કે પ્રતિવાદીના મતનું સમર્થન કરવું તેને સંક્રામણદોષ કહે છે

પદેષુ પ્રત્યેકત્ર સમ્બધ્યતે । તતથ-સંક્રમણદોષો ૮ નિગ્રહદોષો ૯ વસ્તુદોષ ૧૦ એતિ પદચયમુપલભ્યતે । તત્ર-સંક્રમણદોષઃ-સંક્રમણં-પ્રસ્તુત પ્રમેયેઽપ્રસ્તુત પ્રમેયસ્ય પ્રવેશન-પ્રમેયાન્તરગમનમિત્યર્થઃ । અથવા-પ્રતિવાદિનો મતે સ્વસ્ય સંક્રમણં-પ્રતિવાદિમતસમર્થનમિત્યર્થઃ, તદેવ દોષઃ-સંક્રમણદોષ ઇતિ ૮ । તથા-નિગ્રહદોષઃ-નિગ્રહઃ=છલચિત્તળાદિના પ્રતિવાદિનઃ પરાજયસ્થાન-પ્રાપ્તિ, સ એવ દોષો નિગ્રહદોષ ઇતિ ૯ । તથા-વસ્તુદોષઃ-સાધ્યસાધનધર્મૌવસતોઽત્રેતિ વસ્તુ પ્રસ્તાવાત્ પક્ષઃ, તસ્ય દોષઃ-પ્રત્યક્ષનિરાસરૂપઃ । યથા-શબ્દઃ શ્રવણવિષયાગોચરઃ । અત્ર શબ્દે શ્રવણ વિષયાગોચરત્વં પ્રત્યક્ષતો નિરસ્તમિતિ ૧૦ ।

અનન્તરં તજ્જાતાદયો દશ દોષાઃ સામાન્યતોઽભિહિતા ઇતિ તેષાં વિશેષતોઽભિધાનાય પ્રાહ—‘ દસવિહે વિસેસે ’ ઇત્યાદિ ।

નિગ્રહદોષ—છલકે દ્વારા યા વિનળા આદિકે દ્વારા જો પ્રતિવાદીનો પરાજયકે સ્થાનમેં પ્રાપ્ત કરા દેના હોતા હૈં વહ નિગ્રહ હૈં—પહ નિગ્રહ રૂપ હી જો દોષ હૈં વહ નિગ્રહદોષ હૈં । ૯

વસ્તુદોષ—સાધ્ય ઓર સાધન રૂપ ધર્મ જહાં પર રહતે હૈં વહ વસ્તુ હૈં એસી ઉસ વસ્તુ રૂપ પક્ષ હોતા હૈં ઉસ પક્ષકા જો દોષ હૈં—પ્રત્યક્ષ નિરાશય રૂપ વહ વસ્તુ દોષ હૈં જૈસે—શ્રવણ વિષયાગોચર શબ્દ હૈં યહાં પક્ષ રૂપ શબ્દમેં શ્રવણ વિષયક અગોચરતા પ્રત્યક્ષસેહી નિરસ્ત હૈં ક્યોંકિ વહ તો ઉસકા વિષય હી માના ગયા હૈં ૧૦ ।

તજ્જાત આદિ જો દશ દોષ સામાન્યસે કહે ગયે હૈં અવ ઉન્હીંકો વિશેષ રૂપસે કહનેકે લિયે સૂત્રકાર “ દસવિહે વિસેસે ” ઇત્યાદિ રૂપસે પ્રારંભ કરતે હૈં—

નિગ્રહદોષ—છલ દ્વારા અથવા વિતંડાવાદ દ્વારા પ્રતિવાદીને પરાજિત કરવો તેનું નામ નિગ્રહ છે. આ નિગ્રહરૂપ જે દોષ છે તેને નિગ્રહદોષ કહે છે.

વસ્તુદોષ—સાધ્ય અને સાધનરૂપ ધર્મ જ્યાં રહે છે, તેને વસ્તુ કહે છે. એવી તે વસ્તુરૂપ પક્ષ હોય છે. તે પક્ષને જે દોષ છે—તેનું નામ વસ્તુદોષ છે. જેમ કે શ્રવણ વિષયગોચર શબ્દ છે”, અહીં પક્ષરૂપ શબ્દમાં શ્રવણ વિષયક અગોચરતા પ્રત્યક્ષ રૂપે જ નિરસ્ત છે, કારણ કે તેને તો તેના વિષય રૂપ જ માનવામાં આવેલ છે.

તજ્જાત આદિ જે સામાન્ય દોષોનું કથન કરવામાં આવ્યું છે તેમનું જ વિશેષ દોષો રૂપે કથન કરવાને માટે હવે સૂત્રકાર “ દસવિહે વિસેસે ” ઇત્યાદિ સૂત્રોનું કથન કરે છે—‘ વિશેષ ’ પદ અહીં “ વિશેષ દોષોનું ” વાચક છે. વિશેષદોષના પણ વસ્તુદોષ, તજ્જાતદોષ આદિ ૧૦ પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

વિશેષ:-વિશેષદોષરતુ દશવિધઃ પ્રજ્ઞમઃ. તથા-‘ વસ્તુતજ્જાતદોષ ’
 ઇત્યાદિ । તત્ર-વસ્તુ=પક્ષઃ, તસ્ય=ગુણદેર્જાતં=જાતિઃ-જન્મમર્મકર્માદિ લક્ષણઃ
 પ્રકારો વા તજ્જાતમ્ । વસ્તુ ચ તજ્જાતં ચેતિ વસ્તુતજ્જાતં તદ્વપો દોષઃ । તતથ
 વસ્તુદોષસ્તજ્જાતદોષથેતિ પદદ્વયપ્રુપલભ્યતે । તત્ર-વસ્તુદોષઃ=પક્ષદોષઃ, તજ્જાત
 દોષઃ=જાત્યાદ્યભિધાનપૂર્વકમ્ અવહેલના । ઇતૌ ચ સામાન્યદોષાપેક્ષયા વિશેષો
 બોધ્યૌ । અથવા-વસ્તુદોષે તજ્જાતદોષે ઇતિ સપ્તમ્યન્તાચ્છાયા કર્તવ્યા । તત્ર-
 વસ્તુદોષે=વસ્તુદોષવિષયે વિશેષો=ભેદઃ-પ્રત્યક્ષનિરાસાદિઃ । તત્ર-પ્રત્યક્ષનિરસ્તો
 યથા-શબ્દઃ શ્રવણવિષયાગોચર ઇતિ, । અનુમાનનિરસ્તો યથા-શબ્દો નિત્ય

વિશેષસે યહાં વિશેષ દોષ કહે ગયે હૈં-વે વિશેષદોષ ઓ ૧૦
 પ્રકારકે હૈં જૈસે-વસ્તુદોષ, તજ્જાતદોષ આદિ ઇનમૈં વસ્તુ નામ
 પક્ષકા હૈ, પક્ષકા જો દોષ હૈ, વહ વસ્તુદોષ હૈ, જાતિ આદિકે અભિ-
 ધાનપૂર્વક જો અવહેલના હૈ વહ તજ્જાતદોષ હૈ, યે દોનો સામાન્ય
 દોષોંકી અપેક્ષા વિશેષ દોષ જાનના ચાહિયે અથવા-“ વસ્તુદોષે તજ્જાત
 દોષે ” યહાં ઇસી સપ્તમ્યન્ત છાયા કરની ચાહિયે-હસ પક્ષમૈં વસ્તુ
 દોષકે વિષયમૈં જો વિશેષ ભેદહૈ વહ અનેક પ્રકારકા હૈ-જૈસે-“ શબ્દઃ
 શ્રવણવિષયાગોચરઃ ” શબ્દ શ્રવણેન્દ્રિયકા વિષય નહીં હૈ, યહાં શબ્દ
 રૂપ જો પક્ષમૈં શ્રવણેન્દ્રિય અગોચરતા પ્રત્યક્ષસે નિરસ્ત હૈ । અતઃ શ્રવ-
 ણેન્દ્રિયાગોચરતા વિશિષ્ટ શબ્દ રૂપ પક્ષ પ્રત્યક્ષસે બાધિત હૈ અનુ-
 માનસે બાધિત પક્ષ હસ પ્રકારસે હૈ જૈસે-“ શબ્દો નિત્યઃ ” યહાં

વસ્તુદોષ-વસ્તુ ઓટલે પક્ષ. પક્ષનો જે દોષ છે તેને વસ્તુદોષ કહે છે.
 જાતિ આદિના અભિધાન (નિર્દેશ) પૂર્વક જે અવહેલના થાય છે, તે તજ્જાત
 દોષરૂપ છે. સામાન્ય દોષો કરતાં આ દોષમાં અધિકતા હોવાને કારણે આ
 પ્રકારના વસ્તુદોષને વિશેષદોષરૂપ કહ્યો છે.

અથવા-“ વસ્તુદોષે તજ્જાતદોષે ” આ પ્રકારની સાતમી વિશક્તિવાળી
 સંસ્કૃત છાયા અહીં કરવી જોઈએ આ સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ અહીં આ
 પ્રમાણે અર્થ થાય છે-

વસ્તુદોષના વિષયમાં જે વિશેષ-ભેદ છે તે અનેક પ્રકારનો છે જેમ
 કે-“ શબ્દઃ શ્રવણવિષયાગોચરઃ ” ‘ શબ્દ શ્રવણેન્દ્રિયનો વિષય નથી ’ અહીં
 શબ્દરૂપ પક્ષમાં શ્રવણેન્દ્રિ. અગોચરતા પ્રત્યક્ષ રૂપે નિરસ્ત છે તેથી શ્રવણે
 ન્દ્રિયાગોચરતા વિશિષ્ટ શબ્દરૂપ પ્રત્યક્ષ વડે બાધિત છે.

અનુમાન વડે બાધિત પક્ષ આ પ્રકારનો છે-“ શબ્દો નિત્યઃ ” અહીં

इति । स्ववचननिरस्तो यथा-यदहं ब्रवीमि तदनृतमिति । लोकरुढिनिरस्तो यथा-नरकपालं पवित्रमिति १। तज्जातदोषे=तज्जातदोषविषये विशेषोः भेदो जन्ममर्मकर्मदिभिः । तत्र-जन्मादाय तज्जातदोषविषये विशेषो यथा—

“ कच्छुल्लयाए घोडीए, जाओ जो गर्दहेण छूढेण ।

तस्स महायणमज्जे आयारा पायडा होति ॥१॥”

छाया-कच्छुमत्यां (कण्डूयनरोगमत्यां) घोड्यां जातो यो गर्दभेन क्षिप्तेन ।

तस्य महाजनमध्ये आकाराः प्रकटा भवन्ति ॥१॥

શબ્દમેં નિત્યતા અનુમાનસે બાધિત હૈ અતઃ નિત્યત્વ વિશિષ્ટ શબ્દ રૂપ પક્ષ અનુમાન નિરસ્ત હૈ ।

પ્રતીતિ નિરસ્ત પક્ષ હસ પ્રકારસે હૈ જૌસે-“શશીન ચન્દ્રઃ” સ્વ-વચન નિરસ્ત પક્ષ હસ પ્રકારસેહૈ-“યદહં બ્રવીમિ તદનૃતમ્” જો મૈં કહતા હૂં વહ જૂઠ કહતા હૂં, લોકરુઢિસે નિરસ્ત પક્ષ હસ પ્રકારસે હૈ “નરકપાલપવિત્રમ્” યહાં નરકપાલ રૂપ પક્ષ પવિત્રતા લોક રુઢિસે નિરસ્ત હૈ ૧ ।

હસી પ્રકારસે તજ્જાત દોષકે વિષયમેં જો જન્મ, મર્મ, કર્મ આદિ દ્વારા ભેદ હૈ, વહ બી અનેક પ્રકારકા હૈ-હનમેં જન્મકો લેકર જો તજ્જાતદોષકે વિષયમેં ભેદ હૈ વહ હસ પ્રકારસે હૈ—

“ કચ્છુલ્લયાએ ઘોડીએ ” ઇત્યાદિ ।

કણ્ઠઘન રોગવાલી ઘોડીમેં જો ગર્દભકે સંયોગસે સન્તાન ઉત્પન્ન હોતી હૈ ઉસકે આકારમેં ભેદ હોતા હૈ ઓર ઉસકા વહ આકાર મહા-

શબ્દમાં નિત્યતા અનુમાન વડે બાધિત છે. તેથી નિત્યત્વ વિશિષ્ટ શબ્દરૂપ પક્ષ અનુમાન નિરસ્ત છે.

પ્રતીતિ નિરસ્ત પક્ષ આ પ્રકારનો છે-“શશીન ચન્દ્રઃ” સ્વવચન નિરસ્ત પક્ષ આ પ્રકારનો છે-યદહં બ્રવીમિ તદનૃતમ્” હું જે કહું છું તે જૂઠું કહું છું”

લોકરુઢિ નિરસ્ત પક્ષ આ પ્રકારનો છે-“નરકપાલપવિત્રમ્” અહીં નરક-પાલ રૂપ પક્ષ પવિત્રતા લોકરુઢિની અપેક્ષાએ નિરસ્ત (બાધિત) છે.

એજ પ્રમાણે તજ્જાતદોષના જન્મ, મર્મ, કર્મ આદિ દ્વારા અનેક ભેદ પડે છે. તજ્જાત દોષનો જે જન્મની અપેક્ષાએ ભેદ પડે છે તેનું સ્વરૂપ આ પ્રકારનું છે-“કચ્છુલ્લયાએ ઘોડીએ” ઇત્યાદિ—

કંડૂયન રોગવાળી ઘોડી સાથે ગર્દભનો સંયોગ થવાથી - જે સંતાન ઉત્પન્ન થાય છે તેની આકૃતિમાં ઘણું તફાવત હોય છે. તેથી તેનો તે આકાર

વર્ણસંકરો ન પ્રચ્છન્નો ભવતીતિ । इत्यादि रनेकविधः । एवं मर्मकर्मधा-
दायापि तज्जातदोषविषये विशेषः स्वधिया भावनीय इति २। तथा—‘ दोषे’
त्ति अत्र ‘दोष’ शब्देन पूर्वसूत्रोक्त ‘तज्जातदोष’ वस्तुदोषद्वयमध्यगता मति-
भङ्गदोषादारभ्य निग्रहदोषपर्यन्ता अष्टौ दोषा ग्राह्या इति तृतीयः ३। अथवा-
दोषे इति सप्तम्यन्तत्वेन छाया कार्या । एकवचनं तु जात्याश्रयेण बोध्यम् । ततो
दोषे=दोषेष्विति बोध्यम् । अर्थस्तु—दोषेषु=मतिभङ्गादि शेषदोषविषये विशेषो=
भेदो द्रष्टव्य इति । अयं विशेषोऽनेकविधः स्वधिया भावनीय इति ३। तथा—

जनोंके बीचमें प्रकट हो जाता है छिपता नहीं है । तात्पर्य इसका यही
है कि वर्णसंकर प्रच्छन्न नहीं रहता है इसी तरहसे मर्मको लेकर एवं
कर्मको लेकर भी तज्जात दोषके विषयमें सामान्य दोषही अपेक्षा भेद
अपनी बुद्धिसे उद्घाटित कर लेना चाहिये यह दोष शब्दसे पूर्व सूत्रोक्त
तज्जान दोषसे लेकर अन्तिम वस्तु दोष, मध्यमें आये हुए मति भंग
दोष, प्रशास्तृ दोष, परिहार दोष, स्वलक्षण दोष, कारणदोष, हेतु-
दोष, संक्रामण दोष और निग्रह दोष ये आठ दोष ग्रहण किये गये
हैं ३ अथवा—“ दोषे ” की संस्कृत छाया “ दोषे ” ऐसी सप्तमी विभ-
क्तिवाली भी होती है, एकवचन यहां जातकी अपेक्षासे हुआ है
ऐसा जानना चाहिये, इसलिये “ दोषे ” यहां पर “ दोषेषु ” ऐसा
बहुवचन समझना—तथा च—मतिभङ्ग आदि शेष दोषोंके विषयमें भी
भेद अनेक प्रकारका है, और वह उनकी अनेक प्रकारता अपनी बुद्धिसे
उद्घाटित कर लेना चाहिये ३ ।

મહાજનોની વચ્ચે અવશ્ય પ્રકટ થઈ જાય છે એટલે કે વર્ણસંકરતા છાની રહી
શકતી નથી. એજ પ્રકારે મર્મ અને કર્મની અપેક્ષાએ તજ્જાત દોષના વિષયમાં
સામાન્ય દોષ કરતાં શી વિશેષતા છે તે પાઠકે પોતાની જાતે જ સમજી લેવું
આ સૂત્રમાં વિશેષદોષના વસ્તુદોષ, તજ્જાતદોષ આદિ ૧૦ પ્રકાર છે. વસ્તુ-
દોષ અને તજ્જાતદોષનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. બાકીનાં આઠ ભેદ નીચે
પ્રમાણે છે—(૩) મતિભંગદોષ, (૪) પ્રશાસ્તૃદોષ, (૫) પરિહારદોષ, (૬) સ્વ-
લક્ષણદોષ, (૭) કારણદોષ, (૮) હેતુદોષ, (૯) સંક્રામણદોષ અને (૧૦) નિગ્રહદોષ.
અથવા—“ દોષે ” પદની સંસ્કૃત છાયા “ દોષે ” પણ થાય છે. “ દોષે ” પદ
સાતમી વિભક્તિનું પદ છે. અહીં જાતની અપેક્ષાએ એક વચન વપરાયું છે,
એમ સમજવું તેથી અહીં “ દોષે ” આ પદ ‘ દોષેષુ ’ આ બહુવચનાન્ત પદનું
વાચક સમજવું. મતિભંગ આદિ દોષોના વિષયમાં પણ અનેક પ્રકારના ભેદ
પડે છે. પાઠકોએ તે ભેદોની અનેક પ્રકારતા પોતાની જાતે જ ઉદ્ઘાટિત કરી લેવી.

एकार्थिकः एकवचनो अर्थः=प्रतिशेवनेति एकार्थिकः, न विद्यते यस्याभावेकार्थिकः
 एकार्थवाचकः शब्द इत्यर्थः । तद्विरो दोष एकार्थिक दोष इति, यथा घटमान-
 येति वक्तव्ये घटं कुम्भं कलशमानयेत्येकार्थिकानेकशब्दकथनद्वयो दोषः ४।
 तथा कारणदोषः-अथ पूर्व व्याख्यातो, दोषसामान्यापेक्षया विशेषो बोध्य
 इति ५। प्रत्युत्पन्नो दोषः=वर्तमानकालिको दोष इत्यर्थः । अयं चार्त्तनादिदोष-
 सामान्यापेक्षया विशेषः । अयमा-प्रत्युत्पन्ने इति सप्तम्यन्तत्वेन व्यापाकार्थी ।
 तत्र प्रत्युत्पन्ने=पदार्थ सर्वथाऽभिगते यो दोषः=अकृताभ्यागमकृतविप्रगाशादि.,

एक अર્થ जिसका हो वह एकार्थिक है ऐसा एकार्थिक शब्द एक
 ही अर्थका कहनेवाला होता है ऐसा एकार्थिक रूप जो दोष है वह
 एकार्थिक दोष है जैसे “ घटमानय ” बडालाओ ऐसे वक्तव्यमें ऐसा
 कहना कि “ घटं, कुम्भं, कलशं, आनय ” घट, कुम्भ, कलश लाओ
 यहां पर एक अर्थवाले अनेक शब्दोंका प्रयोग जो किया गया है वही
 दोष है ४ तथा-कारण दोष-यह दोष पूर्वमें व्याख्यात हो चुका है,
 सो यह उस व्याख्यात सामान्य दोष की अपेक्षा विशेष दोष जानना
 चाहिये ५ । प्रत्युत्पन्न दोष-यह दोष वर्तमान कालिक होता है, अतः
 अतीतादि दोष सामान्यकी अपेक्षा इसे विशेष दोष समझना अथवा
 “प्रत्युत्पन्ने” जब ऐसी सप्तमी विभक्तिवाली संस्कृतछाया की जाती है
 तो इसका अर्थ ऐसा होता है कि जो पदार्थ सर्वथा अभिगत होता (जाना-

જેનો એક જ અર્થ થતો હોય એવા શબ્દને એકાર્થિક કહે છે. એકાર્થિક
 શબ્દો એક જ અર્થના વાચક હોય છે. એવો એકાર્થિકરૂપ જે દોષ તે તેનું
 નામ એકાર્થિકદોષ છે. જેમ કે “ ઘટમાનય ” ‘ ઘડો લાવો ’ આમ કહેવાને
 બદલે એવું કહેવું કે “ ઘટ, કુમ્ભં, કલશં, આનય ” “ ઘડો, કુંભ, કળશ,
 લાવો ” આ વાક્યમાં એક જ અર્થવાળા અનેક શબ્દોનો જે પ્રયોગ કરવામાં
 આવ્યો છે, એજ દોષ છે.

કારણદોષ-આ દોષનું નિરૂપણ આ સૂત્રમાં જ આગળ કરવામાં આવી
 ગયેલ છે. પૂર્વોક્ત વ્ય.ખ્યાત સામાન્ય કારણ દોષ કરતાં અહીં વિશેષ કારણ દોષ
 ગ્રહણ થયો જોઈએ.

પ્રત્યુત્પન્નદોષ-આ દોષ વર્તમાનકાલિક હોય છે. તેથી ભૂતકાલિન અ.હિ
 દોષ સામાન્યની અપેક્ષાએ તેને વિશેષદોષરૂપ સમજવો જોઈએ. અથવા અહીં
 “ પ્રત્યુત્પન્ન ” આ પ્રકારની સાતમી વિભક્તિવાળી સંસ્કૃત છાયા કરવામાં આવે
 તો તેનો અર્થ એવો થાય છે કે જે સર્વથા અધિગત હોય છે તેમાં અકૃતા-

સ એવ દોષસામાન્યાપેક્ષયા વિશેષ इति ६। નિત્યો દોષઃ=અભવ્યજીવાનાં-
મિથ્યાત્વાદિઃ, અનાદ્યપર્યવસિતત્યાત્ । અયં દોષસામાન્યાપેક્ષયા વિશેષો બોધ્યઃ।
અથવા-‘ નિત્યે ’ इति सप्तम्यन्तत्वेन छाया कार्या । सर्वथा नित्ये पदार्थेऽधि-
गते सति यो बाल्यकुमाराद्यवस्थानाम् अभावापत्तिरूपो दोषः सदोषसामान्या-
पेक्षया विशेषो बोध्य इति ७। तथा-अधिकम्=अधिकनामको दोषः-वादसमये
परेषां बोधनार्थं यदतिरिक्तं दृष्टान्तनिगमनादि, तदेव दोषोऽधिकदोषः । अति-

जाता) है सो उसमें जो अकृताभ्यागम कृतविप्रणाश आदि दोष होता है
वही दोष सामान्यकी अपेक्षा विशेष दोष होता है ६ अभव्य जीवोंका जो
मिथ्यात्व आदि दोष है यह नित्य दोष है क्योंकि उनका वह मिथ्यात्व
अनादि अनन्त रूप होता है, यह दोष, दोष सामान्यकी अपेक्षा विशेष
दोष रूप है अथवा-“ नित्ये ” जब ऐसी संस्कृत छाया सप्तमी विभक्ति-
वाली की जाती है तब इस पक्षमें ऐसा अर्थ होता है कि जब पदार्थ
सर्वथा नित्य है ऐसी मान्यता होती है तब उसमें बाल्यकुमार आदि
अवस्थाओंके अभाव होने रूप दोषकी आपत्ति आती है यह नित्यदोष
सामान्यकी अपेक्षा विशेष दोष है ७ ।

अधिक-अधिक नामका दोष-यह दोष उक्त समय होता है जब
बादके समयमें दूसरोंको समझानेके लिये अतिरिक्त दृष्टान्त निगमन
आदिका प्रयोग किया जाता है तात्पर्य यह है कि बादमें प्रतिज्ञा हेतु ये
दोही अनुमानके अङ्ग माने गये हैं उदाहरणादिका प्रयोग अधिक दोष
भ्यागमे कृतविप्रणाश आदि ७ दोष डोय छे ते दोषने सामान्य गणी शक्य
नही' પણ विशेषदोषરૂપ ગણી શકાય છે.

અભવ્ય જીવોમાં જે મિથ્યાત્વ આદિ દોષોનો સદ્ભાવ ડોય છે તે નિત્ય
દોષરૂપ ડોય છે, કારણ કે તેમનું તે મિથ્યાત્વ અનાદિ અનંતરૂપ ડોય છે. તેથી
આ દોષને દોષસામાન્ય કરતાં અધિકદોષરૂપ ગણી શકાય છે અથવા-

જો તેની સંસ્કૃત છાયા સાતમી વિભક્તિવાળું ‘ નિત્યે ’ પદ લેવામાં આવે
તો તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે—

જો પદાર્થ સર્વથા નિત્ય ડોય છે એવી માન્યતા સ્વીકારવામાં આવે તો
તેમાં બાલ્યાવસ્થા, આદિ અવસ્થાઓનો અભાવ હોવા રૂપ દોષની સદ્ભાવના
રહે છે. આ નિત્યદોષ સામાન્યની અપેક્ષાએ વિશેષ દોષ રૂપ છે.

અધિકદોષ-આ દોષ ત્યારે થાય છે કે જ્યારે વાદ કરતી વખતે અન્યને
સમજાવવાને માટે દૃષ્ટાન્ત નિગમન આદિનો પ્રયોગ કરવામાં આવે છે. આ

રિક્તદૃષ્ટાન્તનિગમનાદિકં ત્રિનૈવ વક્તવ્યસ્યાર્થસ્ય વોધાત્તત્કથનસ્યાડનર્થક્યં
વોધ્યમ્ । તદુક્તમ્—

“ જિણવચનં સિદ્ધં ચેવ મન્નપ કત્થઈ ઉદાહરણં ।

આસજ્જ ઉ સોયારં, હે ઝ વિ કઠિંચિ મન્નેજ્જા ॥૧॥

“ કત્થઈ પંચાવચનં, દસ દ્વાવા સવ્વદ્દા ન પઢિકુદ્ધં ’ ઇતિ ।

છાયા—જિનવચનં સિદ્ધમેવ મળતિ ક્વચિદુદાહરણમ્ ।

આસાદ્ય તુ શ્રોતારં હેતુમપિ કુત્રચિદ્ મળેત્ ॥૧॥

કથયતિ પચ્ચાવચનં દસદ્વા વા ન પ્રતિકુદ્ધમ્, ઇતિ ચ ।

અયમધિક્ત દોષોડપિ દોષસામાન્યાપેક્ષયા વિશેષો વોધ્ય ઇતિ ।

અથવા—‘ અધિકે ’ ઇતિ સપ્તમ્યન્તત્વેન ચ્છાયા કર્તવ્યા । અધિકે દૃષ્ટાન્તાદૌ
મતિ યો દોષો=ગદિનો દૂષણં સોડચિક્કદ્દાન્તાદિવિપયો દોષો દોષ-સામાન્યા-
રૂપ હૈ ક્યોંકિ પ્રતિજ્ઞા હેતુસેહી વ્યક્તવ્યાર્થકા વોંધ હો જાતા હૈ-અતઃ
ઉદાહરણાદિકે પ્રયોગકી વાદમેં આવશ્યકતા નહીં રહતી હૈ ફિર મી
જો इनका प्रयोग है वह इसी कारण अधिक दोष रूप माना गया है
कहा भी है—“ जिणवचनं सिद्धं चैव ” इत्यादि ।

જિન વચનોમેં સ્વનઃ પ્રમાણતા હૈ પરન્તુ કહોં ૨ પર इन वचनोंकी
सत्यता सिद्ध करनेके लिये उदाहरणादिका भी प्रयोग किया जाता है
और श्रोताजनकी अपेक्षासे उसे समझानेके लिये हेतुका भी प्रयोग
किया जाता है आदि यह अधिक दोष भी दोष सामान्यकी अपेक्षा
वशेष दोषरूप है अथवा—“ अधिके ” जब ऐसी सप्तमी विभक्तिवाली

કથનનો ભાવાર્થ એ છે કે-વાદમાં પ્રતિજ્ઞા હેતુ એ બેને જ અનુમાનના અંગ
રૂપ માનવામાં આવેલ છે-ઉદાહરણ આદિને અનુમાનના અંગરૂપ માનવામાં
આવતાં નથી. તેથી તે બે સિત્તાયના ઉદાહરણાદિકના પ્રયોગને અધિકદોષરૂપ
માનવામાં આવેલ છે, કારણ કે પ્રતિજ્ઞા હેતુ વડે જ વક્તવ્યતાના અર્થનો બોધ
થઈ જાય છે. તેથી દૃષ્ટાન્ત આદિની વાદમાં આવશ્યકતા રહેતી નથી. છતાં પણ
તેનો બે પ્રયોગ કરવામાં આવે તો તેને દેષરૂપ માનવામાં આવે છે. કહ્યું
પણ છે કે—“ જિણવચન સિદ્ધં ચેવ ” ઇત્યાદિ

જિનેન્દ્ર ભગવાનોનાં વચનોમાં સ્વનઃપ્રમાણતા છે. છતાં પણ ક્યારેક
તેમનાં વચનોની સત્યતાને સિદ્ધ કરવાને માટે ઉદાહરણાદિનો પ્રયોગ કરવામાં
આવે છે અને શ્રોતાજનોને આ વાત સમજાવવા માટે હેતુનો પણ પ્રયોગ કર-
વામાં આવે છે, અને પાંચ અવયવોનો પણ પ્રયોગ કરવામાં આવે છે. આ

પેક્ષયા વિશેષો વોધ્ય इति । अत्र-ब्रह्मरः प्रश्लिष्यते । ततश्च-‘अहीय’ इति पदं लुप्तविभक्तिकं विभावनीयम् । ‘अहमे’ इत्यस्याकारलोपश्चापि द्रष्टव्यः । अयं दोष आदितोऽष्टमो वोध्य इति ८। तथा-आत्मनेति । अत्र कृतमित्यध्या-
ह्रियते । ततश्च-आत्मना कृत इति आत्मना कृतश्च दोषो दोषसामान्यापेक्षया विशेष इति ९। तथा-परोपनीतः=परेण प्रापितः । अयं-परोपनीतो दोषोऽपि दोषसामान्यापेक्षया विशेषो वोध्य इति, त-एते दशविशेषा इति विशेषदोषा-
वोध्याः ॥ सू० ४७ ॥

સંસ્કૃત છાયા કી જાનીહૈ-તન્ન ઇસ પક્ષમેં એસા અર્થ હોતાહૈ-કિ અધિક દૃષ્ટાન્ત આદિકે પ્રયોગ હોને પર જો વાદીકો દૂષગ દિયા જાતા હૈ વહ અધિક દૃષ્ટાન્તાદિ દોષહૈ ઓર યહ દોષ સામાન્ય દોષકી અપેક્ષા વિશેષ દોષ હૈ યહાં અકારકા પ્રશ્લેષ હુ ખાહૈ અતઃ “અહીય” યહ લુપ્ત વિભ-
ક્તિવાલા પદ હૈ “અહમે” અકારકા લોપ ખી હો ગયા હૈ યહ દોષ આદિ દોષકી અપેક્ષા આઠવાં હૈ । આત્માકે સાથ કૃત ઇસ પદકા અધ્યા-
હાર કર લેના ચાહિયે ઇસ તરહ આત્માકે દ્વારા કિયા ગયા દોષ, દોષ સામાન્યકી અપેક્ષાસે વિશેષ દોષ હોતા હૈ ૯ પરકે દ્વારા દિયા ગયા એસા પરોપનીત દોષ ખી દોષ સામાન્યકી અપેક્ષા વિશેષ દોષ હોતા હૈ
૧૦ ઇસ પ્રકારકે ચે દશ વિશેષ દોષ હૈ ॥ સૂત્ર ૪૭ ॥

“અધિકે” અધિક પદની સાતમી વિભક્તિવાળી સંસ્કૃત છાયા લેવામાં આવે, તો તે સંસ્કૃત છાયાનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે—

અધિક દૃષ્ટાન્ત આદિનો પ્રયોગ કરવામાં આવે ત્યારે વાદીમાં જે દોષ ખતાવવામાં આવે છે તે દોષનું નામ અધિક દૃષ્ટાન્ત આદિ વિષયકદોષ છે, અને તે દોષને સામાન્યદોષરૂપ જ ગણવામાં આવે છે. અહીં ‘અ’ કારનો પ્રશ્લેષ થયો છે. તેથી “અહીય” આ પદ લુપ્તવિભક્તિવાળું પદ છે. ‘અહમે’ આ પદમાં અકારનો લોપ થઈ ગયો છે. પડેલેથી ગણવામાં આવે તો આ દોષને આઠમાં પ્રકારનો દોષ ગણી શકાય.

આત્માની સાથે કૃતપદને અધ્ય હાર રાખવું જોઈએ. આ રીતે આત્મા દ્વારા કરાયેલા દોષને પણ સામાન્યદોષરૂપ ગણવાને બદલે વિશેષદોષરૂપ જ સમજવો જોઈએ પરના દ્વારા કરાયેલા પરોપનીતદોષ પણ સામાન્યરૂપ ગણી શકાય નહીં. પરોપનીતદોષને વિશેષદોષ રૂપ જ ગણવો જોઈએ. આ પ્રકારના ૧૦ વિશેષદોષોનું અહીં નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૪૭ ॥

વિશેષાદયો યે ભાવા અનન્તરસૂત્રે પ્રોક્તારતેऽનુયોગગમ્યાઃ । અનુયોગશ્ચ અર્થ
વાચં ચાશ્રિત્ય ભવતિ । તત્રાર્થમાશ્રિત્યાનુયોગો યથા—“ અહિંસાસંજમોતવો ”
ઇત્યત્રાહિંસાદીનાં સ્વરૂપસ્ય ભેદપ્રકથનમ્ । વાચમાશ્રિત્યાનુયોગસ્તુ એવામેવાહિંસા-
વિષદાર્થાનાં શબ્દાશ્રિતો વિચાર ઇતિ । તત્ર વાચમાશ્રિત્યાનુયોગં દશવિધત્વેન પ્રાહ—

મૂલમ્--દસવિહે સુદ્ધવાયાણુઓગે પળ્ળત્તે, તં જહા—ચંકારે
૧ મંકારે ૨ પિંકારે ૩ સેયંકારે ૪ સાયંકારે ૫ એગત્તે ૬ પુહત્તે
૭ સંજુહે ૮ સંકામિણ ૯ મિન્ને ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૮ ॥

હાયા—દશવિધઃ શુદ્ધવાચાઽનુયોગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથથા—ચકારઃ ૧ માકારઃ
૨ અપિકારઃ ૩ સેકારઃ ૪ સાયંકારઃ ૫ એકત્વં ૬ પૃથક્ત્વં ૭ સંયૂથં ૮ સંક્રા-
મિતં ૯ મિન્નમ્ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૪૮ ॥

વિશેષાદિક જો આવ ઉપરકે સૂત્રમેં કહે ગયે હૈં વે અનુયોગ ગમ્ય
હોતે હૈં અર્થ ઓર વચનકો આશ્રિત કરકે અનુયોગ હોતા હૈ અર્થકો
આશ્રિત કરકે જો અનુયોગ હોતા હૈ વહ “ અહિંસા સંજમો તવો ”
ઇત્યાદિ રૂપ હોતા હૈ ક્યોંકિ યહાં પર અહિંસા આદિકે સ્વરૂપકા ભેદ
કથન હુઆ હૈ વાણીકો આશ્રિત કરકે જો અનુયોગ હોતા હૈ, વહ ઇન્હીં
અહિંસા આદિ પદાર્થોંકે શબ્દાશ્રિત વિચારરૂપ હોતા હૈ અતઃ અવ
સૂત્રકાર વચનકો આશ્રિત કરકે અનુયોગકી દશવિધતા કા કથન કરતેહૈં
“ દસવિહે સુદ્ધવાયાણુઓગે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪૮ ॥

સૂત્રાર્થ—વાક્યાર્થકી અપેક્ષા રહિત સૂત્રકા વ્યાખ્યાન રૂપ અનુયોગ દશ
પ્રકારકા કહા ગયા હૈ જૈસે—ચકાર ૧ માકાર ૨ અપિકાર ૩ સેકાર ૪
સાયંકાર ૫ એકત્વ ૬ પૃથક્ત્વ ૭ સંયૂથ ૮ સંક્રામિત ૯ ઓર મિન્ન ૧૦

વિશેષાદિક જે ભાવોનું ઉપરના સૂત્રમાં નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે, તે
ભાવો અનુયોગગમ્ય (વ્યાખ્યાન દ્વારા સમજી શકાય એવાં) હોય છે અર્થ
અને વચનનો આશ્રય લઈને અનુયોગ થાય છે તે “ અહિંસા સંજમો તવો ”
ઈત્યાદિ રૂપ હોય છે; કારણ કે આ કથન દ્વારા અહિંસા આદિના સ્વરૂપનું ભેદ
કથન થયું છે. વાણીનો આધાર લઈને જે અનુયોગ થાય છે તે એજ અહિંસા
આદિ પદાર્થોના શબ્દાશ્રિત વિચારરૂપ હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર વચનનો
આધાર લઈને અનુયોગના દસ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિહે સુદ્ધવાયાણુઓગે પળ્ળત્તે ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૪૮)

સૂત્રાર્થ—વાક્યાર્થની અપેક્ષાથી રહિત એવો સૂત્રના વ્યાખ્યાનરૂપ અનુયોગ દસ
પ્રકારનો કહ્યો છે. તે પ્રકારો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) ચકાર, (૨) માકાર, (૩)
અપિકાર, (૪) સેકાર, (૫) સાયંકાર, (૬) એકત્વ, (૭) પૃથક્ત્વ, (૮) સંયૂથ,
(૯) સંક્રામિત અને (૧૦) મિન્ન,

ટીકા — ‘ દસવિધે ’ इत्यादि—

શુદ્ધવાચાનુયોગઃ—શુદ્ધા=વાક્યાર્થપેક્ષારહિતા યા વાચા=વચન—સૂત્ર, તસ્યા અનુયોગો=વ્યાખ્યાનમ્ દશવિધઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તથા—ચકાર इत्यादि । તત્ર—ચકારાનુયોગઃ—ચકારસ્ય અનુયોગો । યથા—સમાહારેતરેતરયોગસમુચ્ચયાન્વાચયાવધારણપાદપૂરણાધિકવચનાદિરૂપશ્ચાર્થ इति । તત્ર—સંજ્ઞાપરિભાષ—મંજ્ઞા ચ પરિભાષા-

વાક્યાર્થકી અપેક્ષાસે રહિત હોના યહ શુદ્ધ શબ્દકા અર્થ હૈ ઔર વાચા શબ્દકા અર્થ વચન હૈ યહ વચન યહાં સૂત્ર રૂપ લિયા ગયા હૈ, અનુયોગ શબ્દકા અર્થ વચન હૈ યહ વચન યહાં સૂત્રરૂપ લિયા ગયા હૈ અનુયોગ શબ્દકા અર્થ વ્યાખ્યા હૈ હસ તરહ વાક્યાર્થકી જિસમેં અપેક્ષા નહીં હૈ એસે સૂત્રકા જો વ્યાખ્યાન હૈ વહ અનુયોગ હૈ અર્થાત્ શુદ્ધ વાચાનુયોગ હૈ હસકે જો ચકાર આદિકે ભેદસે ૧૦ પ્રકાર કહે ગયે હૈં ઉનકા તાત્પર્ય એસા હૈ ચકારાદિ પદોંકે સાથ અનુયોગકો સમ્બન્ધ કર લેના યાહિયે હસ તરહ ચકારકા જો અનુયોગ હૈ વહ ચકારાનુયોગ હૈ જૈસે—ચકારકા—ચક્રા હતને અર્થમેં પ્રયોગ હોતા હૈ—સમાહાર દ્વન્દ્વમેં ઇતરેતર યોગ દ્વન્દ્વમેં સમુચ્ચયમેં, અન્વાચયમેં, અવધારણમેં, પાદ પૂરણ ઔર અધિક વચન આદિમેં વ્યાકરણકે હસ નિયમાનુસાર “ કાર ગ્રહણે કેવલગ્રહણં વર્ણગ્રહણે સર્વર્ણગ્રહણં ” જિસ શબ્દકે સાથ “ કાર ” કા ગ્રહણ હોતા હૈં ઉસ શબ્દસે કેવલ હસી શબ્દકા ગ્રહણ હોતા હૈં ઔર જિસ શબ્દકે

વાક્યાર્થની અપેક્ષાથી રહિત હોવું, એવો શુદ્ધ શબ્દનો અર્થ છે અને વાચા શબ્દનો અર્થ વચન છે. તે વચનને અહીં સૂત્રરૂપ લેવામાં આવ્યું છે અનુયોગ શબ્દનો અર્થ વચન થાય છે. તે વચનને અહીં સૂત્રરૂપ ગણવામાં આવેલ છે. અથવા—અનુયોગ શબ્દ અહીં વ્યાખ્યાનના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે. આ રીતે વાક્યાર્થની જેમાં અપેક્ષાએ (આવશ્યકતા) રહેતી નથી એવા સૂત્રનું જે વ્યાખ્યાન છે તેને અનુયોગ-શુદ્ધ વાચાનુયોગ-કહે છે. તેના ચકાર આદિ જે હસ ભેદ પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે, તેમનો અર્થ હવે સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—ચકાર અનુયોગ—ચકારનો જે અનુયોગ છે તેનું નામ ચકાર અનુયોગ છે. જેમ કે “ ચ ” આ પદનો પ્રયોગ આટલા અર્થમાં થાય છે—સમાહાર દ્વન્દ્વમાં ઇતરેતરયોગદ્વન્દ્વમાં, સમુચ્ચયમાં, અન્વાચયમાં, અવધારણમાં, પાદ પૂરણમાં અને અધિક વચન આદિમાં.

“ કારગ્રહણે કેવલગ્રહણં વર્ણગ્રહણે સર્વર્ણગ્રહણં ”

વ્યાકરણના આ નિયમ અનુસાર જે શબ્દની સાથે “ કાર ” નું ગ્રહણ થાય છે તે શબ્દ દ્વારા કેવળ એજ શબ્દનું ગ્રહણ થાય છે, અને જે શબ્દની

ચેતિ । અત્ર ચકારઃ સમાહારે । ધવલદિરૌ-ધવથ્વ સ્વદિરથેતિ । અત્ર ચકાર
ઇતરેતરયોગે । ‘ ઇત્થીઓ સયણાણિ ય ’ ઇત્યત્ર ચકારઃ સમુચ્ચયે । તતથ્વ સ્ત્રીનાં
શયનાનાં ચાપરિભોગ્યતાયાસ્તુત્યત્વં પ્રતિપાદિતમ્ । ‘ ભિક્ષામટ ગ્લાનસેવાં ચ
કુરુ ’ ઇત્યત્ર ચકારોઽન્વાચયે । એવમેવ અવધારણાદિઘ્વપિ ચકારોઽનુયોક્તવ્ય
ઇતિ । ‘ ચંકાર ’ ઇત્યત્ર અનુસ્વારોઽભાક્ષણિકઃ । યથા-‘ છુંકે સર્ણિચરે ’ છાયા-

સાથે વર્ણકા ગ્રહણ હોતા હતા તે શબ્દસે તેના સર્વર્ણ વર્ણકા ગ્રહણ
હોતા હતા, યહાં ચકારસે ચકા ગ્રહણ હુઆ હૈ “ સંજ્ઞા પરિભાષામ્ ” હસ
શબ્દમેં “ સંજ્ઞા ચ પરિભાષા ચ ” હસ પ્રકારકે દ્વન્દ્વ સમાસમેં સમાહાર
દ્વન્દ્વકે અર્થમેં “ ચ ” શબ્દકા પ્રયોગ હુઆ હૈ “ ધવથ્વસ્વદિરથ્વ ” ધવ-
સ્વદિરૌ ” યહાં ચકાર ઇતરેતરયોગ દ્વન્દ્વકે અર્થમેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ “ ઇત્થીઓ
સયણાણિય ” યહાં પર ચકાર સમુચ્ચય અર્થમેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ સ્ત્રીયોમેં
એવં શયનોમેં હસસે અપરિભોગ્યતાકા તુલ્ય રૂપસે પ્રતિપાદન કિયા
ગયા હૈ “ ભિક્ષામટ ગ્લાનસેવાં ચ કુરુ ” ભિક્ષાલાઓ ઓર ગ્લાનકી સેવા
કરો-યહાં પર “ ચ ” કા પ્રયોગ અન્વાચય (એક કાર્ય કરનેમેં દૂસરા કાર્ય
કરનેકે લિયે કહના) અર્થમેં હુઆ હૈ હસી પ્રકારસે અવધારણા આદિ અર્થમેં
ભી ચકારકા પ્રયોગ સમજ્ઞ લેના ચાહિયે “ સૂત્રમેં ” “ ચકાર ” એસા પાઠ
હૈ સો હસમેં જો અનુસ્વારકા પ્રયોગ હુઆ હૈ વહ અભાક્ષણિક હૈ ।

સાથે વર્ણનું ગ્રહણ થાય છે. તે શબ્દ વડે તેના સર્વર્ણ વર્ણનું ગ્રહણ થાય
છે. અહીં ચકાર વડે ‘ ચ ’ નું ગ્રહણ થયું છે “ સંજ્ઞા પરિભાષામ્ ” આ શબ્દમાં
“ સંજ્ઞા ચ પરિભાષા ચ ” આ પ્રકારનો દ્વન્દ્વસમાસ બન્યો છે. અહીં ‘ ચ ’
પદના પ્રયોગ દ્વારા સમાહારદ્વન્દ્વસમાસ બનાવવામાં આવ્યો છે. “ ધવથ્વસ્વદિરથ્વ ”
“ ધવલદિરૌ ” અહીં ચકાર ઇતરેતરયોગ દ્વન્દ્વસમાસના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે.

ઇત્થીઓ સયણાણિ ય ” અહીં ચકાર સમુચ્ચયના અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો.
સ્ત્રીઓમાં અને શયનોમાં તેના દ્વારા અપરિભોગ્યતાનું તુલ્યરૂપે પ્રતિપાદન
કરવામાં આવ્યું છે.

“ ભિક્ષામટ ગ્લાનસેવાં ચ કુરુ ” “ ભિક્ષા લાવો અને ગ્લાનની (ખીમારની)
સેવા કરો ” આ સૂત્રમાં “ ચ ” પદનો પ્રયોગ અન્વાચય થયો છે. (એક કાર્ય
કરવાનું કહેવું તેનું નાપ અન્વાચય છે). એજ પ્રમાણે અવધારણા આદિ અર્થમાં
પણ ચકારનો પ્રયોગ કેવી રીતે થાય છે તે સમજી લેવું જોઈએ. મૂળ સૂત્રમાં

शुक्रः शनैश्चरः इत्यादौ । एवमप्येऽपि अनुस्वारविषये भावनीयमिति । तथा-
माकारः । ‘ मा ’ शब्दो निषेधे । ततः कारप्रत्यये माकार इति । तस्य अनु-
योगोऽव्याख्यानमपि माकारः । यथा-‘ समणं वा माहणं वा ’ इत्यत्र माहणशब्दे
मा शब्दो निषेधे । अथवा-‘ मकार ’ इतिच्छाया । यथा-‘ जेणामेव समणे भगवं
महावीरे तेणामेव ’ इत्यत्र ‘ जेणामेव ’ ‘ तेणामेव ’ इति पदद्वये मकारागम
आर्षत्वात् । अन्यथा-‘ जेणेव ’ तेणेव ’ इत्यनेनैव विवक्षितार्थप्रतीतेरिति २।

जैसा “ सु’के सर्णिचरे ”में हुआ है इसी तरहका कथन आगेके पदोंमें
आगम अनुस्वारके विषयमें भी जानना चाहिये “ माकार ”में “ मा ”
शब्द निषेध अर्थमें आया है इससे कार प्रत्यय करने पर “ माकार ”
ऐसा शब्द बन गया है इसका जो अनुयोग है वह भी माकार है जैसे
“ समणं वा माहणं वा ” इसमें “ माहण ” शब्दमें मा शब्द निषेधमें
प्रयुक्त हुआ है ।

अथवा-“ मकार ”की संस्कृतच्छाया “ मकार ” ऐसी भी होती
है सो मकारका जो अनुयोग है वह मकार है जैसे-“ जेणामेव समणे
भगवं महावीरे तेणामेव ” यहां पर “ जेणामेव ” में और “ तेणा-
मेव ” मकारका आर्ष होनेसे हुआ है नहीं तो “ जेणेव तेणेव ” इतने
मात्रसेही विवक्षित अर्थकी प्रतीति हो जाती है तथा-“ अपिकार ”

“ चकार ” आ पदने प्रयोग थये छे. तेमां के अनुस्वारने प्रयोग थये छे
ते अक्षाक्षुषिक छे. जेम के आ प्रकारने प्रयोग नीचेना सूत्रपाठमां पणु थये
छे-“ सु’के सर्णिचरे ” पछीना पदोमां पणु भूणसूत्रमां के अनुस्वार वपराये
छे. तेना विषे पणु आ प्रकारनुं स्पष्टीकरणु समणु लेवुं.

(२) माकार अनुयोग-“ माकार ” पदमां मा ” शब्द निषेधार्थे वपराये।
“ मा ” पदने “ कार ” प्रत्यय लगाडवाथी “ माकार ” माकार पद णन्थुं छे.
तेना के अनुयोग छे तेनुं नाम माकार अनुयोग छे. जेम के-“ समणं वा
माहणं वा ” आ सूत्रपाठमां “ म ङणु ” पदमां “ मा ” पदने प्रयोग
निषेधार्थे थयेदो छे.

अथवा “ मकार ” आ पदनी संस्कृत छाया “ मकार ” पणु थाय छे.
आ संस्कृत छयानी अपेक्षाये अही नीचे प्रमाणे अर्थ थय छे-“ मकारने
के अनुयोग छे तेने मकारअनुयोग कडे छे ” जेम के “ जेणामेव समणे भगवं
महावीरे तेणामेव ” आ सूत्रपाठमां “ जेणामेव ” पदमां अने “ तेणामेव ” पदमां
‘ मकार ’ने आर्ष थवाने दीये “ जेणेव....तेणेव ” ने णददे “ जेणामेव....

તથા-અપિકારઃ, અપિ શબ્દાત્કારપ્રત્યયે સાધુઃ । ‘પિકાર’ ઇતિ તુ આકાર લોપેऽનુસ્વારાગમે ચ સતિ સાધુઃ । અપિકારસ્ય=અપિશબ્દસ્યાનુયોગેઽપિ અપિકારઃ । સ યા-‘અપિ સંભાવના પ્રશ્નશક્તિગર્હાસમુચ્ચયે ।

“ તથા યુક્તપદાર્થે ચ કામચારક્રિયાસુ ચ ॥ ” ઇતિ ।

તત્ર-સંભાવનાયામ્-‘અપિ સ્તુયાજ્ઞિન’-મિતિ । ‘અપિ સ્તુહિ’ ઇતિ કામચારક્રિયાયામ્ । ધિગ્દેવદત્તમપિ સ્તુયાદધર્મિણ’-મિતિ ગર્હાયામ્ । અપિ

અપિ શબ્દસે કાર પ્રત્યય કરને પર “અપિકાર” એસા શબ્દ સિદ્ધ હોના હે “વિતાર” મેં અકારકે લોપ હોને પર ઓર અનુસ્વારકે આગમ હોને પર “પિકાર” એસા શબ્દ બન ગયા હે । અપિ શબ્દકા જો અનુયોગ હે વહ અપિકાર હે જૈસે-અપિ શબ્દ સંભાવનામેં પ્રશ્નમેં શંકામેં ગર્હામેં ઓર સમુચ્ચયમેં પ્રયુક્ત હુઆ હે તથા-અપિ શબ્દકા પ્રયોગ “યુક્ત પદાર્થે ચ કામચારક્રિયાસુ ચ” હસ કથનકે અનુસાર યુક્ત પદાર્થમેં ઓર કામચાર (યથારુચિ કાર્ય કરનેકા કહના) ક્રિયામેં મી હોતા હે “અપિ સ્તુયાજ્ઞિનમિતિ” મેં સંભાવના કરતા હૂં કિ આપને જિનેન્દ્રકી સ્તુતિ કરલી હોળી-યહાં “અપિ” શબ્દ સંભાવનામેં પ્રયુક્ત હુઆ હે “અપિસ્તુહિ” તુમ્હારી ઇચ્છા-તુમ સ્તુતિ કરો-યહાં અપિ શબ્દ કામચાર ક્રિયામેં પ્રયુક્ત હુઆ હે “ધિગ્દેવદત્તમ્ અપિ સ્તુયાત્

તેણામેવ” થયું છે તો માત્ર ‘જેણેવ તેણેવ” આ પદોના પ્રયોગથી જ વિવક્ષિત અર્થની પ્રતીતિ થઇ જાય છે.

અપિકાર અનુયોગ-‘અપિ’ પદને “કાર” પ્રત્યય લગાડનાથી ‘અપિકાર’ પદ બન્યું છે. ‘પિકાર’ આ પદ અકરનો લોપ થવાથી અને અનુસ્વારનું આગમન થવાથી ‘અપિકાર’ માંથી બન્યું છે અપિ શબ્દનો જે અનુયોગ છે, તેનું નામ અપિકાર અનુયોગ છે. ‘અપિ’ શબ્દ પ્રયોગ સંભાવનાના અર્થમાં, પ્રશ્નાર્થમાં, શંકાના અર્થમાં, ગર્હાના અર્થમાં અને સમુચ્ચયના અર્થમાં થાય છે તથા “યુક્તપદાર્થે ચ કામચારક્રિયાસુ ચ” આ કથન અનુસાર યુક્ત પદાર્થમાં અને કામચારમાં (રુચિ અનુસાર કાર્ય કરવાનું કહેવામાં પણ ‘અપિ’ શબ્દનો પ્રયોગ થાય છે.

“અપિ સ્તુયાજ્ઞિનમિતિ” “હું ધારું છું કે આપે જિનેન્દ્રની સ્તુતિ કરી લીધી હશે” અહીં અપિ પદ સંભાવનાર્થે વપરાયું છે “અપિ સ્તુહિ” તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે સ્તુતિ કરો,” આ વાક્યમાં અપિ પદ કામચાર ક્રિયામાં પ્રયુક્ત થયું છે.

સિન્ધ્ર-અપિ સ્તુહિ-इति समुच्चये । एवमेव अन्येष्वर्थेष्वपि स्वधिया भावनीय-
मिति ३। तथा-सेकार इति । ‘ से ’ इति अथार्थवाचकः प्राकृतः शब्दः । ततः
कारप्रत्यये सेकारः । तस्य अनुयोगो=व्याख्यानमपि सेकारः । अथार्थे सेकारस्तु
‘ से भिक्खुवा ’ इत्यत्र । अथार्थाश्च-संशयाधिकारमङ्गलविकल्पानन्तरप्रश्नका-
त्स्न्यारम्भ समुच्चयाः । ‘ से भिक्खु वा ’ इत्यत्र ‘ से ’ शब्द आनन्तर्ये । मूले
अधर्मिणम् ” देवदत्तको धिक्कार है उसने अधर्मीकी स्तुति की है यहां
पर अपि शब्द गहर्हिमें प्रयुक्त हुआ है, “ अपि सिन्ध्र-अपि स्तुहि ”
तुम पानी सींचो और स्तुति करो-यहां अपि समुच्चयमें प्रयुक्त हुआ
है इसी प्रकारसे अन्य अर्थोंमें भी अपनी बुद्धिसे अपि शब्दका प्रयोग
करके समझ लेना चाहिये ३ तथा-“ सेकार ” “ से ” यह “ अथ ”
अर्थका वाचक प्राकृत शब्द है इससे कार प्रत्यय करने पर ‘ सेकार ’
ऐसा सिद्ध होता है । इस साकारका जो अनुयोगका व्याख्यान है वह
भी सेकार है अथार्थमें ‘ सेकार ’ का प्रयोग जैसे-से भिक्खु वा ”
यहां पर हुआ है । अथ शब्दके इतने अर्थ होते हैं-संशय, अधिकार,
मङ्गल, विकल्प, अनन्तर, प्रश्न, कात्स्न्य आरम्भ और समुच्चय ” से
भिक्खुवा यहां “ से ” शब्द आनन्तर्य अर्थमें प्रयुक्त हुआ है मूलमें

“ धिदेवदत्तम् अपि स्तुयात् अधर्मिणम् ” देवदत्तને ધિક્કાર દો, કારણ
કે તેણે અધર્મીની સ્તુતિ કરી છે. આ વાક્યનાં ગહર્હિના અર્થમાં અપિ
પદ વપરાયું છે.

“ અપિ સિન્ધ્ર-અપિ સ્તુહિ ” “ તમે પાણીનું સિંચન કરો. અને સ્તુતિ
કરો ”-આ વાક્યમાં અપિ પદ સમુચ્ચયના અર્થમાં વપરાયું છે એજ પ્રમાણે
‘ અપિ ’ પદનો અન્ય અર્થોમાં પણ જાતે જ પ્રયોગ કરી લઈએ તેનો અર્થ
સમજી લેવો જોઈએ —

સેકાર અનુયોગ-‘ સે ’ પદ સંસ્કૃત શબ્દ “ અથ ” નું વાચક પ્રાકૃત
ભાષાનું પદ છે. તેને “ કાર પ્રત્યય લગાડવાથી ‘ સેકાર ’ પદ બને છે. તે સેકા-
રનો જે અનુયોગ-વ્યાખ્યાન-છે તેને સેકાર અનુયોગ કહે છે. ‘ અથ ’ ના
અર્થમાં ‘ સે ’ પદનો પ્રયોગ નીચેના સૂત્રપાઠમાં થયો છે—

“ સે ભિક્ખુ વા ” ‘ અથ ’ પદ નીચેના અર્થ દર્શાવે છે—સંશય, અધિ-
કાર, મંગળ, વિકલ્પ, અનન્તર પ્રશ્ન, કાત્સ્ન્ય આરંભ અને સમુચ્ચયના “ સે
ભિક્ખુ વા ” આ સૂત્રાંશમાં ‘ સે ’ પદ આનન્તર્યના અર્થમાં વપરાયું છે. મૂળ
સૂત્રમાં “ સેયંકારે ” આ પ્રકારનો પાઠ છે. તેમાં ‘ ય ’ આર્ષ હિવાશી આયુઃ

‘સેયંકાર’ इत्यत्र ‘य’ इति आर्पण्वात् । क्वचित् ‘से’ इत्यसावित्यर्थे । क्वचित्तु-तस्यार्थः । अथवा-‘सैयंकार’ इत्यस्य श्रेयस्कार इतिच्छाया । श्रेयसः-करणं श्रेयस्कार इति विग्रहः । श्रेयस उच्चारणमित्यर्थः । एतदनुयोगो यथा-‘सैयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती’ इत्यत्र श्रेयः-अतिशयेन प्रशस्यं-कल्याणमिति । अथवा-‘सैयंकारः’ इत्यस्य ‘सैयकार’ इतिच्छाया । ‘सैय’ शब्दो भविष्यदर्थे । ततः कारप्रत्ययः । तदनुयोगो यथा-‘सैयकाले अकम्मं नाविभवई’ इत्यत्र सैयशब्दो भविष्यदर्थवाचक इति । अत्रानुस्वारः प्राकृतत्वादिति ४।

“સેયંકારે” એસા પાઠ છે સૌ યહાં “યં” યહ આર્પ હોનેસે આયાહૈ કહીં પર “સે” યહ “અસૌ” હસ અર્થમેં જ્ઞાના હૈ અથવા-“સેયં-કાર” કી સંસ્કૃતચ્છાયા શ્રેયસ્કાર એસી ખી હોતી હૈ, હસકા વિગ્રહ “શ્રેયસ કરણમ્-શ્રેયસ્કારઃ” એસા હોના હૈ હસકા અર્થ હૈ શ્રેયકા-કલ્યાણકા-ઉચ્ચારણ કરના હસકા અનુયોગ હસ પ્રકારસે હૈ-જૈસે-“સેયં મે અહિજ્જિઉં અજ્ઝયણં ધમ્મપણ્ણત્તી” યહાં શ્રેય શબ્દ યહ હૈ કિ ધર્મ પ્રજ્ઞસિકા અધ્યયન મુજ્ઞે અધિકસે અધિક રૂપમેં પ્રશસ્ય હૈ કલ્યાણકર હૈ । અથવા-“સેયંકાર” કી છાયા “સેયકારઃ” એસી ખી હોતી હૈ હસ પક્ષમેં ‘સેય’ શબ્દ ભવિષ્યત્ અર્થમેં પ્રયુક્ત હોગા-ઔર ફિર ડસસે કાર પ્રત્યય હોકર “સેયકાર” એસા શબ્દ નિષ્પન્ન હો જાવેગા હસ સેયકારકા જો અનુયોગ હોગા વહ ખી સેયકાર હોગા હસકા અનુયોગ જૈસે-“સેયકાલે અકમ્મં વા વિભવઈ” એસા હૈ યહાં “સેય” શબ્દ ભવિષ્યત્ અર્થકા વાચક હૈ યહાં અનુસ્વાર પ્રાકૃત હોનેસે

છે. ઠ્યારેક ‘સે’ પદ ‘અસૌ’ આ સંસ્કૃત પદના અર્થમાં પણ વપરાય છે અથવા “સેયકાર” છાયા “શ્રેયસ્કાર” પણ થાય છે. તેની વ્યુત્પત્તિ આ પ્રમાણે થાય છે-“શ્રેયસઃ કરણમ્ શ્રેયસ્કારઃ” એટલે કે ‘શ્રેયનું-કલ્યાણનું-ઉચ્ચારણ કરવું’. તેનો અનુયોગ આ પ્રમાણે સમજવો-“સેયં મે અહિજ્જિઉં અજ્ઝયણં ધમ્મ પણ્ણત્તી” અહીં ‘શ્રેય’ શબ્દ એવું પ્રકટ કરે છે કે ધર્મપ્રજ્ઞ-સિતું અધ્યયન મારે માટે અધિકમાં અધિકરૂપે પ્રશસ્ય-કલ્યાણકારક છે. અથવા “સેયંકાર”ની સંસ્કૃત છાયા “સેયકારઃ” પણ થાય છે. આ સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ “સેય” પદ ભવિષ્યકાલિક અર્થના સંબંધમાં પ્રયુક્ત થશે. અને તેને ‘કાર’ પ્રત્ય લાગવાથી ‘સેયકાર’ શબ્દ બનશે, આ સેયકારનો જે અનુ-યોગ થશે તે પણ સેયકાર હશે. જેમ કે-“સેયકાલે અકમ્મં વા વિભવઈ” અહીં ‘સેય’ શબ્દ ભવિષ્યકાલિન અર્થનો વાચક છે. અહીં અનુસ્વાર પ્રાકૃત

તથા-સાયઙ્કારઃ । સાયમિતિ સત્યાર્યકો નિપાતઃ । તત્તજ્ઞાન્દસત્વાત્ કારપ્રત્યયે સાયઙ્કારઃ । અથવા-કરણં કારઃ, સાયં=સત્યસ્ય કારઃ સાયઙ્કાર ઇતિ । તદનુયોગોઽપિ સાયઙ્કાર ઇતિ । સ યથા-સત્યં તથા વચનસદ્ભાવપ્રશ્નેષ્વિતિ ૫। ચકારાદયો નિપાતા ઉપલક્ષણપરાઃ । તત્તથ્ચકારાદીનામનુયોગ इव શેષનિપાતાનામપ્યનુયોગઃ સ્વધિયા વત્પનીય ઇતિ । તથા-એકત્વમ્=એકવચનં, તદનુયોગોઽપિ એકત્વમ્ । યથા-સમ્યગ્દર્શનજ્ઞાનચારિત્રતપાંસિ મોક્ષમાર્ગ ઇતિ સૂત્રે મોક્ષમાર્ગ ઇત્યેક-

હો ગયા હૈ તથા-“ સાયઙ્કાર ” મેં સાય યહ પદ નિપાત હૈ ઓર ઇસકા અર્થ હોતા હૈ સત્ય, ઇસસે કાર પ્રત્યય કરને પર સાયઙ્કાર એસા શબ્દ બન જાતા હૈ અથવા-“ કરણં કારઃ ” કરનેકા નામ કાર હૈ સત્યકા જો કાર હૈ વહ સાયકાર હૈ ઇસકા અનુયોગ ઇસ પ્રકારસે હૈ-સત્ય યહ શબ્દ તથા વચનમેં સદ્ભાવમેં એવં પ્રશ્નમેં પ્રયુક્ત હોતા હૈ । ચકાર આદિ જો નિપાત હૈં વે ઉપલક્ષણ પરક હૈં ઇસસે ચકાર આદિકોંકે અનુયોગકી તરહ શેષ નિપાતોંકા ખી અનુયોગ અપની બુદ્ધિસે જાન લેના યાહિયે તથો-એકત્વ-એક વચનકા નામ એકત્વ હૈ ઇસકા જો અનુયોગ હૈ વહ ખી એકત્વ હૈ જૈસે-“ સમ્યગ્દર્શનજ્ઞાનચારિત્રતપાંસિ મોક્ષમાર્ગઃ ” યહાં પર જો સૂત્રમેં “ મોક્ષમાર્ગઃ ” એસે એકવચનકાં પ્રયોગ હુઆ હૈ વહ ઇસ વાતકો પ્રકટ કરનેકે લિયે હુઆ હૈ કિ સમ્યગ્દર્શન

પદને કારણે થયો છે. તથા “સાયઙ્કાર”માં ‘સાય’ તે પદ નિપાત છે, અને તેનો અર્થ ‘સત્ય’ થાય છે તેને ‘કાર’ પ્રત્યય લગાવવાથી ‘સાય’કાર’ પદ બન્યું છે. અથવા-“કરણં કારઃ” કરણું તેનું નામ કાર છે. સત્યનું જે કાર છે અથવા જે સત્ય કરવામાં આવે છે તેનું નામ સાયંકાર છે. આ સાયંકારનો જે અનુયોગ છે. તેને પણ સાયંકાર કહે છે. તેનો અનુયોગ આ પ્રકારનો સમજવો- ‘સત્ય’ પદ શબ્દ તથા વચનમાં, સદ્ભાવમાં અને પ્રશ્નમાં પ્રયુક્ત થાય છે. ચકાર આદિ જે નિપાત છે તેઓ ઉપલક્ષણપરક છે. તેથી ચકાર આદિના અનુયોગની અનુસાર જ બાકીના નિપાતોનો અનુયોગ પણ પાઠકોએ પોતાની બુદ્ધિથી સમજી લેવો જોઈએ

એકત્વ અનુયોગ-એક વચનનું નામ એકત્વ છે. તેના અનુયોગનું નામ એકત્વ અનુયોગ છે. જેમ કે... સમ્યગ્દર્શનજ્ઞાનચારિત્રતપાંસિ મોક્ષમાર્ગઃ” આ સૂત્રપાઠમાં “મોક્ષમાર્ગ.” ‘મોક્ષમાર્ગ’ આ પદ એક વચનમાં વપરાયું છે. તે પદનો આ રીતે એક વચનમાં પ્રયોગ થવાનું કારણ એ છે કે સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યક્ ચારિત્ર અને સમ્યક્ તપ, આ ચારેને અલગ અલગ રૂપે સ્થા-૬૯

ત્વેન નિર્દેશઃ સમ્યગ્દર્શનાદીનાં સમુદિતાનામેવ મોક્ષમાર્ગત્વપ્રદર્શનાર્થો, નત્વે-
કૈકસ્યેતિ । યથા વા—

“ શક્તિર્નિપુણતાલોકકાવ્યશાસ્ત્રાધવેક્ષણાન્ ।

કાવ્યજ્ઞશિક્ષયાઽભ્યાસ इति हेतुस्तदुद्भवे ” ॥ ૧ ॥

इत्यत्र हेतुरित्येकत्वेन निर्देशः शक्त्यादीनां समुदितानामेव कवित्वे हेतुत्वं
न तु शक्त्यादेरेकैकस्य हेतुत्वमिति प्रदर्शयितुमिति ६। तथा—पृथक्त्वम्=भेदो द्विव-
चनबहुवचने इत्यर्थः । तदनुयोगोऽपि पृथक्त्वम् । स यथा—‘ धम्मत्थिकाये धम्म-

सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र तथा सम्यक् तप ये अलग २ से मुक्तिके
मार्ग नहीं हैं किन्तु एक ही आत्मामें समुदित हुए ये मुक्तिके मार्ग हैं ।
इस तरह यह एक वचन समुदित सम्यग्दर्शनादिकोंमें मुक्ति मार्गत्वका
समर्थक है और यही यहां इसका अर्थ है इसी तरहसे—

“ शक्तिर्नિપુણતા લોક ” इत्यादि ।

यहां पर “ हेतुः ” यह एक वचनमें निर्दिष्ट हुआ है सो इससे
यह प्रदर्शित किया गया है कि ये शक्ति आदि गुण समुदित अवस्थामें
ही कवित्वमें कारण हैं- भिन्न २ रूपसे ये कवित्वमें कारण नहीं हैं—
एक वचनका अनुयोग है तथा—पृथक्त्व-पृथक्त्व नाम भेदका है और
यह भेद द्विवचन एवं बहुवचनका वाचक है इस पृथक्त्वका जो
अनुयोग है वह भी पृथक्त्व है इसका अनुयोग इस प्रकारसे है जैसे—

મુક્તિના માર્ગરૂપ સમજવાના નથી, પરંતુ એક જ આત્મામાં સમુદિત થયેલ
આ આરે વસ્તુ જ મુક્તિના માર્ગરૂપ છે. આ રીતે આ એક વચનવાળા
શબ્દનો પ્રયોગ સમુદિત સમ્યગ્દર્શન આદિકોમાં મુક્તિમાર્ગનું સમર્થન કરે
છે, એવો અહીં અર્થ ગ્રહણ કરવો જોઈએ. એજ પ્રમાણે...

“ શક્તિ નિપુણતા લોક ” ઇત્યાદિ—

આ સૂત્રપાઠમાં “ હેતુઃ ” પદ એક વચનમાં વપરાયું છે. અહીં તેનો એક
વચનમાં પ્રયોગ કરીને એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે શક્તિ આદિ
ગુણો અલગ અલગ રૂપે જુદી જુદી વ્યક્તિઓમાં રહેલા હોય તો તે વ્યક્તિ-
ઓને કવિ બનાવવામાં કારણભૂત બનતા નથી, પરંતુ એક જ વ્યક્તિમાં
આદિ ગુણોનો સમુદિત રૂપે સદ્ભાવ હોય તો તે વ્યક્તિમાં કવિત્વ શક્તિ
ખીલી ઉઠે છે. આ પ્રકારનું એકત્વ અનુયોગનું સ્વરૂપ છે.

પૃથક્ત્વ અનુયોગ—પૃથક્ત્વ એટલે અલગતા અથવા ભેદ. આ ભેદ દ્વિવચન
અને બહુવચનનો વાચક છે. આ પૃથક્ત્વનો જે અનુયોગ છે તેનું નામ
પૃથક્ત્વ અનુયોગ છે. તેનો અનુયોગ આ પ્રકારનો સમજવો—

ત્થિકાયદેસે ધમ્મત્થિકાયપ્પદેસા ' इत्यत्र ' धम्मत्थिकायप्पदेसा ' इति बहु-
चनं तेषामसंख्यातत्वप्रदर्शनार्थमिति ७। तथा-संयूथं संगतं यूथं-पदानां पदयोर्वा
समुचितः समूहः-समास इति यावत् । तदनुयोगोऽपि संयूथम् । यथा-सम्यग्दर्श-
नशुद्धम्-सम्यग्दर्शनेन सम्यग्दर्शनाय सम्यग्दर्शनाद् वा शुद्धमित्यादिरनेकविधः
समास इति ८। तथा-संक्रामितम्-भिन्नविभक्तिवचनादितया परिणामितम् ।
तदनुयोगोऽपि संक्रामितम् । तथा-‘ साहूणं वंदणेणं नासइ पावं असंकिया भावा’

“ ધમ્મત્થિકાए धम्मत्थिकायदेसे, धम्मत्थिकायप्पदेसा ” में जो बहु-
वचन है उनमें असंख्यतताके प्रदर्शनके लिये है क्योंकि धर्मास्तिकायके
प्रदेश सिद्धान्तमें असंख्यात ही कहे गये हैं संख्यात अनन्त आदि
नहीं अतः बहुवचनमें यहां असंख्यात ही कहे हैं । तथा-संयूथ-संगत
जो यूथ है अनेक पदोंका समुचित समूह है वह संयूथ है वह संयूथ
समास रूप होता है इस संयूथका जो अनुयोग है वह भी संयूथ है
जैसे “ सम्यग्दर्शनशुद्धम् ” यह एक संयूथ है इसका अनुयोग-“ सम्य-
ग्दर्शन, सम्यग्दर्शनाय, सम्यग्दर्शनात् वा ” इत्यादि अनेक प्रकारसे
होता है तथा-संक्रामित भिन्न विभक्तियोंके रूप एवं भिन्न वचनों
आदिके रूपमें जहां शब्दको बदल दिया जाना है वह संक्रामित है इस
संक्रामितका जो अनुयोग है वह भी संक्रामित है जैसे-“ साहूणं

“ ધમ્મત્થિકાए धम्मत्थिकायदेसे, धम्मत्थिकायप्पदेसा ”

આ સૂત્રપાઠમાં જે બહુવચનનો ઉપયોગ થયો છે, તે ધર્માસ્તિકાયના
પ્રદેશોમાં અસંખ્યાતના પ્રકટ કરવા માટે થયો છે, કારણ કે સિદ્ધાન્તના કથન
અનુસાર ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો અસંખ્યાત જ કહ્યા છે—

સંખ્યાત પણ કહ્યા નથી અને અનંત પણ કહ્યા નથી. તેથી બહુવચનમાં
તે પ્રદેશોને અસંખ્યાત જ કહ્યા છે.

સંયૂથ અનુયોગ-સાથે ઉપયોગમાં આવતા શબ્દસમૂહને સંયૂથ કહે છે
એટલે કે-અનેક પદોના સમુચિત સમૂહને સંયૂથ કહે છે. તે સંયૂથ સમાસરૂપ
હોય છે તે સંયૂથનો જે અનુયોગ છે તેનું નામ સંયૂથ અનુયોગ છે જેમ કે ...
“ સમ્યગ્દર્શનશુદ્ધમ્ ” આ એક સંયૂથ છે તેનો અનુયોગ “ સમ્યગ્દર્શન, સમ્ય
ગ્દર્શનાય, સમ્યગ્દર્શનાત્ વા ” ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારે થાય છે.

સંક્રામિત અનુયોગ-જુદી જુદી વિભક્તિયોનાં રૂપમાં અથવા જુદાં જુદાં
વચનાદિકોનાં રૂપમાં શબ્દને બદલવો-શબ્દનો જુદી જુદી વિભક્તિયોમાં કે વચનમાં
પ્રયોગ કરવો તેનું નામ સંક્રામિત છે. સંક્રામિતનો જે અનુયોગ થાય છે તેનું

इत्यत्र 'साहूणं' इत्यस्य पञ्चम्यन्तत्वेन विपरिणामं कृत्वा साधूनां सकाशात् अशङ्किता भावा जायन्ते ' इत्येवं विभक्तिविपरिणामरूपोऽनुयोगः क्रियते । तथा- ' अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चा इत्ति बुच्चइ ' इत्यत्र ' न स त्यागीत्युच्यते ' इत्येकवचनं बहुवचनतया विपरिणम्य ' न ते त्यागिनः ' इति वचनविपरिणामरूपोऽनुयोगः कर्तव्य इति ९। तथा-भिन्न-विसदृशम् । वैसादृश्यं च क्रमकाल-भेदादिमादाय बोध्यम् । तदनुयोगोऽपि भिन्नम् । तत्र-क्रमभिन्नानुयोगो यथा-

વંદણેળં નાસઈ પાવં અસંક્રિયા ભાવા ” યહાં પર 'સાહૂણં' ષષ્ઠી વિભક્તિ હૈ પરન્તુ પંચમી વિભક્તિમેં इसका विपरिणाम करके “ साधुभ्य ” ऐसा बनाया गया है, इसका अर्थ होता है साधुओंसे-साधुओंके सम्बन्धसे आशंकित शङ्का रहित-निःसंदिग्ध भाव उत्पन्न होते हैं । यहां यह विभक्ति विपरिणाम रूप अनुयोग है तथा-“ अच्छंदा जे न भुंजंति नसे चाइ त्ति बुच्चइ ” यहां पर ' से ' यह शब्द एक वचनवाला है परन्तु इसे बहुवचनमें विपरिणमित किया गया है इसका अर्थ होता है-जो इच्छानुसार खाते पीते हैं वे त्यागी नहीं कहलाते हैं । इस तरह यहां विभक्तिका विपरिणाम रूप यह अनुयोग है ९

भिन्न-શબ્દકા અર્થ યહાં વિસદૃશ લિયા ગયા હૈ વૈસાદૃશ્ય ક્રમભેદકો લેકર એવં કાલભેદ આદિકો લેકર હોતા હૈ इस भिन्न रूप वૈસાદૃશ્યકા જો અનુયોગ હૈ વહ બી ભિન્ન હૈ इसमें क्रमभिन्नानु-

નામ સંક્રામિત અનુયોગ છે. જેમ કે “ સાહૂણં વંદણેળં નાસઈ પાવં ” અસંક્રિયા ભાવા ” આ વાક્યમાં “ સાહૂણં ” આ પદ છટ્ટી વિભક્તિમાં વપરાયું છે. પરન્તુ પાંચમી વિભક્તિમાં તેને ફેરવી નાખીને “ સાધુભ્ય ” પદ બનાવવામાં આવ્યું છે. આ પદનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-સાધુઓના સંબંધથી અશંકિત (શંકારહિત, નિઃસંદિગ્ધ) ભાવ ઉત્પન્ન થાય છે.

આ વિભક્તિ વિપરિણામરૂપ સંક્રામિત અનુયોગ થયો. વિભક્તિના વિપરિણામરૂપ સંક્રામિત અનુયોગનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે-“ અછંદા જે ન ભુંજતિ, ન સે ચાઈ ત્તિ બુચ્છઈ ” અહીં “ સે ” પદ એક વચનમાં વપરાયું છે. પરન્તુ તેને બહુવચનમાં વિપરિણમિત કરવામાં આવ્યું છે. તેથી આ સૂત્રનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-જેઓ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે ખાય છે અને પીવે છે, તેમને ત્યાગી કહી શકાતા નથી. આ રીતે અહીં વચનના વિપરિણામરૂપ આ અનુયોગ થયો છે.

લિન્નઅનુયોગ-લિન્ન એટલે વિસદૃશ (અસમાન) આ પ્રકારનું વૈસાદૃશ્ય (ભિન્નતા) કમલેદને લીધે અને કાળલેદને લીધે ઉત્પન્ન થાય છે. આ લિન્ન રૂપ વૈસાદૃશ્યનો જે અનુયોગ છે તેનું નામ લિન્ન અનુયોગ છે જેમ કે,...

‘તિવિહં તિવિહેણ’ इति सामान्यत उक्त्वा ततः ‘तिविहेण’ इत्यस्य विवरणं ‘मणेण’ इत्यादिना कृतम् । क्रमेण विवरणे तु-‘तिविहं’ इत्येतस्य ‘न करोमि’ इत्यादिना विवरणं कृत्वा ततः ‘तिविहेण’ इत्यस्य विवरणं कर्त्तव्यम् । ततश्च यथासंख्यमन्वयः स्यात् । तथा सति-‘न करोमि मनसा, न कारयामि-वाचा, कुर्वन्तं नानुजानामि कायेन’ इत्यनिष्टोऽर्थः प्रसज्जेत । इष्टोऽर्थस्तु-मनःप्रभृतिष्वेकैकेन करणकारणानुमोदनानां निषेध इति क्रमभिन्नस्यानुयोगः ।

योग इस प्रकारसे जैसे “तिविहं तिविहेणं” ऐसा सामान्य रूपसे करके फिर “तिविहेणं” का विवरण मनसे वचनसे और कायसे ऐसा किया गया है अर्थात् मैं पापकार्य-हिंसादिक कार्य न मनसे करूंगा न मनसे करावाऊंगा और न करनेवालेकी मनसे अनुमोदना ही करूंगा, इसी तरहसे वचन और कायके साथ भी ऐसा ही संबन्ध कृत, कारित एवं अनुमोदना इन पदोंका किया गया है परन्तु जब इसका विवरण क्रमसे किया जावेगा तब इसका अर्थ ऐसा होगा कि मनसे न करूंगा वचनसे न करावाऊंगा और कायसे करानेवालेकी अनुमोदना नहीं करूंगा अर्थात् क्रमशः विवरण इन “तिविहं तिविहेणं” का करने पर त्रिविधका त्रिविधके साथ होगा मन, वचन काय ये इस तरफ त्रिविध हैं और कृतकारित एवं अनुमोदना ये दूसरी तरफ त्रिविध हैं अतः यथासंख्य मन वचन आदिका कृतकारित आदिके साथ सम्बन्ध हो जावेगा सो ऐसा सम्बन्ध इष्ट नहीं है क्योंकि ऐसा अर्थ सिद्धान्तकी

“તિવિહં તિવિહેણ” આપું સામાન્યરૂપે કહીને પુનઃ “તિવિહેણ” ત્રિવિધનું વિવરણ મનથી, વચનથી અને કાયથી કરવામાં આવ્યું છે એટલે કે હું હિંસા-દિક પાપકૃત્ય મનથી કરીશ નહીં, મનથી કરાવીશ નહીં અને પાપકૃત્ય કરનારની અનુમોદના કરીશ નહીં. એજ પ્રમાણે વચન અને કાયની સાથે પણ કૃત, કારિત અને અનુમોદનાની અપેક્ષાએ પણ એવો જ સંબંધ સમજીને એવું જ કથન કરી શકાય છે. પરન્તુ જો તેનું વર્ણન અનુક્રમે કરવામાં આવશે, ત્યારે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થશે-હું મનથી પાપકર્મ નહીં કરું, વચનથી નહીં કરાવું અને કાયથી કરનારની અનુમોદના નહીં કરું, વચનથી નહીં કરાવું એટલે કે “તિવિહં તિવિહેણ” આ પદનું ક્રમશઃ વિવરણ કરતા ત્રિવિધનું ત્રિવિધની સાથે વિવરણ થશે. એક તરફ મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રિવિધ છે અને બીજી તરફ કૃત, કારિત અને અનુમોદનારૂપ ત્રિવિધ છે, તેથી યથાસંખ્ય મન, વચન આદિનો કૃત કારિત આદિની સાથે સંબંધ થઈ જશે, પરન્તુ એવો સંબંધ ઈષ્ટ નથી,

કાલભિન્નતાતુ-અતીતાદિના નિર્દેશો કર્ત્તવ્યે વર્તમાનાદિના નિર્દેશઃ । તદનુયોગો-
યથા-‘ સત્ત્વકે દેવિંદે દેવરાયા વંદહ નમંસહ ’ इति ऋषभस्वामिवर्णने अतीत-
કાલિકે પ્રયોગે કર્ત્તવ્યે વર્તમાનકાલિકઃ પ્રયોગસ્ત્રૈકાલિકેષ્વપિ તીર્થકરેષુ શક્ર-
સ્યાયમેવ સમુદાચાર इति सूचयितुमिति १०। इदं सूत्रम्, अनन्तरोक्तं दोषसूत्रं
च अर्थगौरवयुक्तत्वादन्यथाऽपि प्रवचनानुकूलं व्याख्येयमिति ॥ सू० ४८ ॥

માન્યતા જે હસ પ્રકારકે સમ્બન્ધમેં વિરુદ્ધ પડના છે, સિદ્ધાન્તકી માન્યતા
તો મનકે સાથ કૃત, કારિત એવં અનુમોદનાકે સમ્બન્ધ માનને કી છે,
વચનકે સાથ કૃત, કારિત, અનુમોદનાકે સમ્બન્ધ માનને કી છે ઓર
કાયકે સાથ કૃત, કારિત એવં અનુમોદનાકે સમ્બન્ધ માનને કી છે ।

હસ પ્રકાર મન વચન ઓર કાયસે એક એકકે સાથ કરણ, કારણ ઓર
અનુમોદનાકા જો નિષેધ છે વહ ક્રમભિન્નતા અનુયોગ છે । કાલ
ભિન્નતા તો જહાં અતીત આદિસે નિર્દેશ કરને યોગ્ય હોને પર જો
વર્તમાન આદિસે નિર્દેશ હોતા છે વહાં હોતી છે જૈસે-“ સત્ત્વકે દેવિંદે
દેવરાયા વંદહ, નમંસહ ” ઋષભ સ્વામીકે વર્ણનમેં એસા વર્ણન કિયા
ગયા છે વૈસે દેખા જાવે તો યહાં અતીત કાલતો લેકર અતીતકાલિક
ક્રિયાઓંકા પ્રયોગ સૂત્રકારકો કરના ચાહિયે ધા, પરન્તુ એસા ન કરકે
જો વર્તમાનકાલિક ક્રિયાઓંકા પ્રયોગ કિયા ગયા છે યહી કાલભિન્નાનુ
યોગ છે ઓર યહ કાલભિન્નાનુયોગ હસ વાતકી સૂચના દેતા છે કિ
ત્રૈકાલિક ભી તીર્થકરોંકે વિષયમેં શકતા યહી સમુદાચાર છે યહ સૂત્ર

કારણ કે આ પ્રકારનો સંબંધ સિદ્ધાંતની માન્યતા અનુસાર તો મનની સાથે
કૃત, કારિત અને અનુમોદનાનો સંબંધ માનવો જોઈએ, વચનની સાથે પણ કૃત,
કારિત અને અનુમોદનાનો સંબંધ માનવો જોઈએ અને કાયની સાથે પણ કૃત,
કારિત અને અનુમોદનાનો સંબંધ માનવો જોઈએ. આ રીતે મન, વચન અને
કાય, આ ત્રણેમાંથી પ્રત્યેકની સાથે કરણ, કારણ અને અનુમોદનાનો નિષેધ
છે, તે કમલિન્નનો અનુયોગ છે જ્યાં ભૂતકાળનો નિર્દેશ કરવાનો હોય, ત્યાં
વર્તમાન આદિ કાળનો નિર્દેશ કરાય તો કાળલિન્નતા આવી જાય છે. જેમ કે
“ સત્ત્વકે દેવિંદે દેવરાયા વંદહ નમસહ ” ઋષભસ્વામીના વર્ણનમાં આ પ્રકારનું વર્ણન
કરવામાં ભૂતકાલીન પ્રસંગનું વર્ણન હોવાથી સૂત્રકારે ભૂતકાળના ક્રિયાપદોનો
પ્રયોગ કરવો જોઈતો હતો, પરન્તુ એ પ્રમાણે ન કરતાં જે વર્તમાનકાલિક ક્રિયા-
પદોનો પ્રયોગ કર્યો છે, તેને જ કાલલિન્નાનુયોગરૂપ ગણી શકાય. આ કાલલિ-
ન્નાનુયોગ એ વાતનું પણ સૂચન કરે છે કે ત્રણે કાળના તીર્થકરેના વિષયમાં

વચનાનુયોગાનન્તરમ્ અર્થાનુયોગઃ પ્રવર્ત્તેતે ઇતિ દાનરૂપસ્યાર્થસ્ય ભેદાના-
મનુયોગમાહ—

મૂલમ્—દસવિદ્દે દાણે પળ્લણ્ણે, તં જહા—અનુકંપા ૧ સંગ્રહે
ચેવ ૨, ભય ૩ કારુણિય ૪ ય ૪૧ લજ્જા ૫ ગૌરવેણ ચ ૬,
અહમ્મે ઉણ સત્તમે ૭ ॥ ૧ ॥ ધર્મમે ય અદ્ધમે વુત્તે ૮, કાહીઈ
ય ૯ કયંતિય ૧૦ ॥ સૂં ૪૯ ॥

છાયા—દશવિધં દાનં પ્રજ્ઞમ્, તથા—અનુકમ્પા ૧ સંગ્રહશ્ચેવ ૨ ભયં ૩ કારુણ્ય-
મિતિ ચ ૪૧ લજ્જયા ૫ ગૌરવેણ ચ ૬ અધર્મઃ પુનઃ મપ્તમમ્ ૭ ॥ ૧ ॥ ધર્મશ્ચ
અપ્તમમુક્તં ૮ કરિષ્યતીતિ ચ ૯ કૃતમિતિ ચ ૧૦ ॥ મૂં ૪૯ ॥

ઔર इसके ऊपर का दोषसूत्र अर्थ गौरवसे युक्त होनेके कारण प्रव-
चनकी मान्यताके साथ बाधा न आवे इस रूपसे दूसरे प्रकारसे भी
व्याख्यात कर लेना चाहिये ॥ सूत्र ४८ ॥

વચનાનુયોગકે અનન્તર અર્થાનુયોગકી પ્રવૃત્તિ હોની હૈ અતઃ અથ
સૂત્રકાર દાનરૂપ અર્થકે ભેદોંકા અનુયોગ કહતે હૈ—

“ દસવિદ્દે દાણે પળ્લણ્ણે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૪૯ ॥

સૂત્રાર્થ—દાન ૧૦ પ્રકારકાં કહાં ગયાહૈ જૈસે—અનુકંપા દાન ૧, સંગ્રહ
દાન ૨, ભયદાન ૩, કારુણ્ય દાન ૪, લજ્જા દાન ૫, ગૌરવદાન ૬,
અધર્મદાન ૭, ધર્મદાન ૮, કરિષ્યતિ દાન ૯, ઔર કૃતદાન ૧૦ ॥

અપની શક્તિકે અનુસાર જો દૂસરોંકી મલાઈકે નિમિત્ત પ્રત્યુપ-

જ સમુદાયાર છે. આ સૂત્ર અને તેના ઉપર દોષસૂત્ર અર્થ ગૌરવથી યુક્ત
હોવાને કારણે પ્રવચનની માન્યતામાં બાધા (વાધા) ન આવે એવે રૂપે બીજી
રીતે પણ વ્યાખ્યાત કરી લેવું ભેઈએ ॥ સૂ. ૪૮ ॥

વચનાનુયોગ પછી અર્થાનુયોગની પ્રવૃત્તિ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર
દાનરૂપ અર્થના ભેદોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસવિદ્દે દાણે પળ્લણ્ણે ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૪૯)

સૂત્રાર્થ—દાનના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અનુકંપાદાન, (૨) સંગ્રહ
દાન, (૩) ભયદાન, (૪) કારુણ્યદાન, (૫) લજ્જાદાન, (૬) ગૌરવદાન, (૭)
અધર્મદાન, (૮) ધર્મદાન, (૯) કરિષ્યતિદાન અને (૧૦) કૃતદાન.

બીજાનું હિત કરવા નિમિત્તે પ્રત્યુપકારની આશા વિના, પોતાની શક્તિ

ટીકા—‘ દસવિહે દાણે ’ ઇત્યાદિ—

દાનં=સ્વસત્ત્વનિવૃત્તિપૂર્વકપરસત્ત્વોત્પાદનવ્યાપારઃ, તદ્દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્ ।
તથા—‘ અનુકમ્પા ’ ઇત્યાદિ । દાનમિતિ સર્વત્ર સંબન્ધનીયમ્ । તતશ્ચ—અનુક-
મ્પયા યદ્ દાનં પદ્મગન્ધવધિરદીનાનાથેભ્યસ્તદનુકમ્પાદાનમ્ । અથવા—અનુક-
મ્પાવશાદ્ યદ્ દાનં તદપ્યુપચારાદનુકમ્પેતિ । તદુક્તમ્—

“ કૃપણાઽનાથદરિદ્રવ્યસનાગતરોગશોકત્રિવશેભ્યઃ ।

યદ્દીયતે કૃપાર્થાદનુકમ્પા તદ્ભવેદાનમ્ ” ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૧ ॥

તથા—સંગ્રહઃ—સંગ્રહણં સંગ્રહો—વ્યસનાદૌ સહાયકરણં, તદર્થં દાનં સંગ્રહ-
દાનમ્ । અથવા—સંગ્રહાથ દાનમપ્યુપચારાત્ સંગ્રહઃ । તદુક્તમ્—

“ અભ્યુદયે ચ વિપત્તૌ યત્કિંચિદ્ દીયતે સહાયાર્થમ્ ।

તત્ સંગ્રહતોઽમિમતં, તીર્થઙ્કરગણધરૈર્મુનિભિઃ ” ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૨ ॥

પ્રકારકી અભિલાષા કિયે વિના દ્રવ્યકા દેના વહ દાન હૈ એસા યહદાન
૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય હસ પ્રકારસે હૈ—અનુકમ્પા
આદિ શબ્દોંકે સાથ દાન પદ લગા લેના ચાહિયે—હસલિયે અનુકમ્પા
આદિ એસે ચે ૧૦ દાન બન જાતે હૈં ।

દયાકે વશ હોકર જો પદ્મગુકો અન્ધે લૂલે બહિરેકો, દીનોંકો એવં
અનાથોંકો દાન દિયા જાતા હૈ વહ અનુકમ્પા દાન હૈ । અથવા અનુક-
મ્પાકે વશસે જો દાન દિયા જાતાહૈ વહ દાન ભી ઉપચારસે અનુકમ્પાહૈ ।

તદુક્તમ્—“ કૃપણાનાથ દરિદ્રવ્યસના ” ઇત્યાદિ ।

વ્યસન આદિ અવસ્થામેં સહાયતા કરના હસકા નામ સંગ્રહ દાન
હૈ । અથવા—વ્યસન આદિ અવસ્થામેં કિયા ગયા દાન ભી ઉપચારસે
સંગ્રહ હૈ કહા ભી હૈ “ અભ્યુદયે ચ વિપત્તૌ ” ઇત્યાદિ ।

પ્રમાણે જે દ્રવ્ય આપવામાં આવે છે તેને દાન કહે છે. તેના અનુકંપાદાન
આદિ ૧૦ પ્રકાર પડે છે. તે દરેકનો અર્થ સમજાવવામાં આવે છે—

અનુકંપાદાન—દયાથી પ્રેરાઈને આંધળા, લૂલા, લંગડા, બેરા, બોખડા,
દીન, અનાથ, આદિ વ્યક્તિઓને જે દાન આપવામાં આવે છે તેને અનુકંપા-
દાન કહે છે. અથવા અનુકંપાથી પ્રેરાઈને જે દાન દેવામાં આવે છે તેને પણ
ઔપચારિક રીતે અનુકંપા જ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ કૃપણાનાથદરિદ્રવ્યસના ” ઇત્યાદિ—

સંગ્રહદાન—વ્યસન આદિ અવસ્થામાં સહાયતા કરવી તેનું નામ સંગ્રહદાન
છે. અથવા વ્યસન આદિ અવસ્થામાં અપાયેલા દાનને પણ ઔપચારિક રીતે સંગ્રહ
કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ અભ્યુદયે ચ વિપત્તૌ ” ઇત્યાદિ ।

તથા—ભયં-ભયદાનં-ભયાદ્ યદ્ દાનં તદિતિ । અથવા-ભયનિમિત્તં દાનમપ્યુપચારાદ્ ભયમિતિ । ઉક્તંચ—

“ રાજારક્ષપુરોહિતમધુમુખમાચ્છલદણ્ડપાશિષુ ચ ।

યદીયતે મયાર્થાત્તદ્ મયદાનં બુધૈર્જ્ઞેયમ્ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ॥ ૩ ॥

મધુમુખ ઇતિ દુર્જનઃ પિશુનઃ સ્વલ્પ ઇત્યર્થઃ । તથા-કારુણ્યં=કારુણ્યદાનમ્ । કારુણ્યં=કરુણા-પુત્રાદિવિયોગજનિતઃ શોકઃ, તેન હેતુના યદ્ દાનં તત્ કારુણ્યદાનમ્ । અથવા-કારુણ્યહેતુત્વાદાનમપ્યુપચારાત્ કારુણ્યમિતિ । અત્ર-ઇતિ શબ્દઃ સ્વરૂપોપપ્રદર્શને । ચ શબ્દઃ સમુચ્ચયે ॥ ૪ ॥ તથા-લજ્જયા યદ્ દાનં તદ્ લજ્જાદાનમ્ । તદુક્તત્—

“ અભ્યર્થિતઃ પરેણ તુ, યદ્ દાનં જનમધ્યસમૂહગતઃ ।

પરચિત્તરક્ષણાર્થં, લજ્જાયાસ્તદ્ ભવેદાનમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૫ ॥

અયસે જો દાન દિયા જાતા હૈ—વહ ભયદાન હૈ, અથવા-ભયકે નિમિત્તસે દિયા ગયા દાન મી ઉપચારસે ભય કહા ગયા હૈ કહા મી હૈ—

“ રાજા રક્ષપુરોહિતમધુમુખ ” ઇત્યાદિ ।

મધુમુખ શબ્દકા અર્થ દુર્જન, પિશુન—ચુગલ ધોર એવં સબ દુષ્ટ હૈ કારુણ્ય દાન—પુત્રાદિકે વિયોગસે જનિત જો શોક હૈ, ઉસકા નામ કારુણ્ય હૈ, હસ કારુણ્યકો લેકર જો દાન દિયા જાતા હૈ, વહ કારુણ્ય દાન હૈ, અથવા-કારુણ્ય હૈ હેતુ જિસકા એસા હોનેસે વહ દાન મી ઉપચારસે કારુણ્ય હૈ યહાં પર ઇતિ શબ્દ સ્વરૂપ પ્રદર્શનમેં ઓર ચ શબ્દ સમુચ્ચય અર્થમેં આયા હૈ ।

લજ્જાદાન-લજ્જાસે દાન દિયા જાતા હૈ વહ-લજ્જાદાન હૈ ।

ભયદાન—ભયને કારણે જે દાન દેવામાં આવે છે તેને ભયદાન કહે છે. અથવા ભયને કારણે અપાતાં દાનને પણ ઔપચારિક રીતે ભય કહેવાય છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ રાજા રક્ષ પુરોહિત મધુમુખ ” ઇત્યાદિ

ઉપરના સૂત્રમાં મધુમુખ એટલે દુર્જન, પિશુન એટલે ચાડીખોર અને ખલ એટલે દુષ્ટ અર્થ થાય છે

કારુણ્યદાન—પુત્રાદિના વિયોગથી જનિત જે શોક છે તેનું નામ કારુણ્ય છે. આ કારુણ્યને લીધે જે દાન દેવામાં આવે છે તેનું નામ કારુણ્યદાન છે. અથવા—કારુણ્યથી પ્રેરિત થઈને જે દાન દેવામાં આવે છે તેને પણ ઉપચારની અપેક્ષાએ કારુણ્ય કહે છે. મૂળસૂત્રમાં “ ઇતિ ” પદ સ્વરૂપના પ્રદર્શન માટે “ ચ ” પદ સમુચ્ચય અર્થમાં વપરાયું છે.

લજ્જાદાન—લજ્જાથી પ્રેરાઈને જે દાન દેવામાં આવે છે તેને લજ્જાદાન કહે

તથા—ગૌરવેણ=ગર્વેણ-અહ્ધ્કારેણ યદ્દાનં દીયતે તદ્ દાનં ગૌરવદાનમ્ ।
તદુક્તમ્—“ નટનર્ત્તમૌષ્ટિકેભ્યો, દાનં સમ્વન્ધિવન્ધુમિત્રેભ્યઃ ।

યદ્દીયતે યશોઽર્થં, ગર્વેણ તુ તદ્ ભવેદાનમ્ ” ॥૧॥ ઇતિ ॥૬॥

તથા-અધર્મઃ-અધર્મદાનમ્=અધર્મસ્ય=પાપસ્ય અવપ્રમ્મકં દાનમ્ । અધર્મहेतु-
ત્વાદ્ વા દાનમુપચારાદધર્મ ઇતિ । તદુક્તમ્—

“ હિંસાઽનૃતચૌર્યોઽતપરદારપરિગ્રહપ્રસક્તેભ્યઃ ।

યદ્દીયતે હિ તેભ્યસ્તજ્ઞાનીયાદધર્મીય ” ॥૧॥ ઇતિ । ૭॥

તથા-ધર્મઃ-ધર્મદાનમ્=ધર્મहेतुकं દાનમ્ । અથવા-ધર્મहेतुकं દાનમુપચારાદ

કહા મી હૈ—“ અભ્યર્થિતઃ પરેણ તુ ” ઇત્યાદિ ।

ગૌરવ દાન—જો દાન અહંકારસે દિયા જાતા હૈ નટ નર્તક સુષ્ટિસે
યુદ્ધ કરનેવાલે તથા વન્ધુવર્ગ, મિત્રકે લિયે ઓર યશકે લિયે જો દાન
દિયો જાતા હૈ વહ ગૌરવદાન હૈ કહા મી હૈ—

“ નટનર્ત્તમૌષ્ટિકેભ્યો ” ઇત્યાદિ ।

અધર્મ દાન—પાપકો વધાનેકે લિયે જો દાન દિયા જાતા હૈ, વહ
અધર્મદાન હૈ, હિંસાકે લિયે, છૂઠકે લિયે, ચોરીકે લિયે, પરસ્ત્રીમેં
આસક્તકે લિયે જો દાન દિયા જાતા હૈ વહ અધર્મદાન હૈ । અથવા—
અધર્મકા હેતુ હોનેસે દાન મી ઉપચારસે અધર્મ કહા ગયા હૈ કહા મી હૈ

“ હિંસાઽનૃતચૌર્યોઽત ” ઇત્યાદિ ।

ધર્મદાન—ધર્મ હૈ હેતુ જિસકા એસા જો દાન હૈ વહ ધર્મદાન
હૈ અથવા-ધર્મ હેતુક જો દાન હૈ વહ મી ઉપચારસે ધર્મ હૈ કહા મી હૈ

છે. કહ્યું પશુ છે કે—“ અભ્યર્થિતઃ પરેણ તુ ” ઇત્યાદિ.

ગૌરવદાન—જે દાન અહંકારથી પ્રેરાઈને આપવામાં આવે છે.
તે દાનને ગૌરવદાન કહે છે. નટોને, નર્તકોને, સુષ્ટિયુદ્ધ કરનારા મહોને, બંધુ-
જનોને અને મિત્રને જે દાન દેવામાં આવે છે તે દાનને ગૌરવદાન કહે છે.
કહ્યું પશુ છે કે—“ નટનર્ત્તમૌષ્ટિકેભ્યો ” ઇત્યાદિ.

અધર્મદાન—પાપની વૃદ્ધિ કરવાને માટે જે દાન દેવામાં આવે છે તેને અધર્મ
દાન કહે છે. એટલે કે હિંસાને નિમિત્તે, પરસ્ત્રી પ્રત્યેની આસક્તિને કારણે
—ઈત્યદિ પાપપ્રવૃત્તિને માટે—જે દાન દેવામાં આવે છે તેને અધર્મદાન કહે છે.
અથવા તે પ્રકારનું દાન અધર્મના હેતુરૂપ હોવાથી ઉપચારની અપેક્ષાએ તે
દાનને પણ અધર્મ કહે છે કહ્યું પશુ છે કે—“ હિંસાઽનૃતચૌર્યોઽત ” ઇત્યાદિ.

ધર્મદાન—જે દાન આપવામાં ધર્મ કારણરૂપ હોય છે અથવા ધર્મને
નિમિત્તે જે દાન દેવામાં આવે છે તેને ધર્મદાન કહે છે. અથવા ધર્મને નિમિત્તે

ધર્મ ઇતિ । તદુક્તમ્—

“ સમતૃણમણિમુક્તેભ્યો, યદ્ દાનં દીયતે સુપાત્રેભ્યઃ ।

અક્ષયમતુલમનન્તં, તદાનં ભવતિ ધર્માય ” ॥૧॥ ઇતિ ॥૮॥

તથા—કરિષ્યતિ મમાયં કમપ્યુપકારમિતિ ધિયા યદ્ દાનં તત્ કરિષ્યતિ-
દાનમુચ્યતે ॥૯॥ તથા—અનેન મમ કાર્યંકૃતમિત્યુપલક્ષ્ય યદ્દાનં તત્ કૃતદાન-
મુચ્યતે । તદુક્તમ્—

“ શતશઃ કૃતોપકારો, દત્તં ચ સહસ્રશો મમાનેન ।

અહમપિ દદામિ કિંચિત્ . મત્યુપકારાય તદ્ દાનમ્ ॥૧॥” ઇતિ ૧૦ સુ. ૪૨ ।

“ સમતૃણમણિમુક્તેભ્યો ” ઇત્યાદિ ।

તૃણ, મણિ, એવં મુક્તાકો સમાન ગિનનેવાલે એસે સુપાત્રોંકે લિયે
જો દાન દિયા જાતા હૈ વહ દાન ધર્મકે લિયે હોતા હૈ, એવં વહ દાન
દાતાકે લિયે અક્ષય અતુલ એવં અનન્ત રૂપ હોતા હૈ ૮ ।

કરિષ્યતિદાન—યહ મેરા કુછ મી ઉપકાર કરેગા હસ બુદ્ધિસે
જો દાન દિયા જાતા હૈ વહ કરિષ્યતિ દાન હૈ ૯ ।

તથા—હસને મેરા કાર્ય કિયા હૈ એસા ધ્યાન રાખકર જો દાન દિયા
વહ કૃતદાન હૈ કહા મી હૈ—“ શતશઃ-કૃતોપકારો ” ઇત્યાદિ ।

જે દાન દેવામાં આવે છે તેને પણ ઔપચારિક રૂપે ધર્મ કહે છે કહ્યું પણ છે કે—

“ સમતૃણમણિમુક્તેભ્યો ” ઇત્યાદિ—

તૃણ, મણિ અને મોતિને સમાન ગણનારા સુપાત્રને જે દાન દેવામાં
આવે છે. તે દાન, ધર્મને માટે જ થયું ગણાય છે. અને તે દાન દાતાને
અક્ષય, અતુલ અને અનંત સુખદાયક નિવડે છે,

કરિષ્યતિદાન—જો હું અમુક માણસને ધન આપીશ તો તે કોઈ પ્રકારે
મારા ઉપકારનો બદલો વાળી દેશે. આ રીતે પ્રત્યુપકારની આશાથી પ્રેરાઈને
જે દાન દેવામાં આવે છે તેનું નામ “ કરિષ્યતિ દાન ” છે,

કૃતદાન—આ માણસે મારું કાર્ય કર્યું છે—અથવા મારા ઉપર ઘણા ઉપ-
કારો કર્યા છે, આ પ્રકારની ભાવનાથી પ્રેરાઈને જે દાન દેવામાં આવે છે તે
દાનને કૃતદાન કહે છે કહ્યું પણ છે કે—“ શતશઃ કૃતોપકારો ” ઇત્યાદિ—

“ આ માણસે મારા સેંકડા ઉપકારો કર્યા છે, તથા તેણે મને હજારો
રૂપીઆની મદદ કરી છે, તેથી મારે પણ તેના ઉપકારનો બદલો વાળવા માટે

અનન્તરોક્તદાનાત્ શુભાશુભગતિર્ભવતીતિ સામાન્યતો ગતિં નિરૂપયતિ—

મૂલમ્—દસવિહા ગર્હ પળ્લતા, તં જહા—નિરયગર્હ ૧ નિરય વિગ્રહગર્હ ૨, તિરિયગર્હ ૩ તિરિયવિગ્રહગર્હ ૪ एवं जाव सिद्धिगर्ह ९ सिद्धिविग्राहगर्ह १० ॥ सू० ५० ॥

છાયા—દશવિધા ગતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા, તથથા—નિરયગતિઃ ૧ નિરયવિગ્રહગતિઃ ૨ તિર્યગગતિઃ ૩ તિર્યગ્વિગ્રહગતિઃ ૪ एवं यावत् सिद्धिगतिः ९ सिद्धिविग्रहगतिः १० ॥ सू० ५० ॥

ટીકા—‘ દસવિહા ગર્હ ’ ઇત્યાદિ—

ગતિઃ=ગમનં પર્યાયવિશેષો વા, સા દશવિધા પ્રજ્ઞપ્તા, તથથા—‘નિરયગતિ’—

इसने मेरे सैकड़ों उपकार किये हैं तथा हजारोंकी सहायता भी इसने मुझे पहुँचाई है अतः मैं भी प्रत्युपकारके निमित्त इसे कुछ देता हूँ ॥ सूत्र ४९ ॥

इस ४९ वे सूत्रमें जो दान कहा गया है उससे जीवकी शुभ अशुभ गति होती है अर्थात् धर्म दानसे शुभ गति होती है और अधर्म दान अशुभ गति होती है । अतः अब सूत्रकार सामान्यतः गतिका निरूपण करते हैं—“ दसविहा गर्ह पणत्ता ” इत्यादि ॥ सूत्र ५० ॥

टीकार्थ—गति दश प्रकारकी कही गई है जैसे—नरक गति १, नरक विग्रह गति २ तिर्यग्गति ३ तिर्यग् विग्रह गति ४ यावत् सिद्धि गति ९ और सिद्धि विग्रह गति १० ।

गमन अथवा पर्याय विशेषका नाम गति है, यह गति जो नरक

तेने કંઈક આપવું લેઈએ. ” આ પ્રમાણની ભાવનાથી જે દાન અપાય છે તેને કૃતદાન કહેવામાં આવે છે. ॥ સૂત્ર ૪૯ ॥

ઉપરના સૂત્રમાં દાનની વાત કરવામાં આવી છે તેનાથી જીવની શુભઅશુભ ગતિ થાય છે. અને અધર્મદાનથી જીવની અશુભગતિ થાય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ગતિના પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

દસવિહા ગર્હ પળ્લતા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૫૦)

ટીકાર્થ—ગતિના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) નરકગતિ, (૨) નરકવિગ્રહ ગતિ, (૩) તિર્યગ્ગતિ, (૪) તિર્યગ્વિગ્રહગતિ, એજ પ્રમાણે મનુષ્ય ગતિથી લઈને (૬) સિદ્ધિગતિ અને (૧૦) સિદ્ધિવિગ્રહગતિ પર્યન્તના પ્રકારો સમજવા.

સ્તિયાદિ । તત્ર — નિરયગતિઃ—નિરયાણાં=નારકાણામ્ — ગતિર્ગમ્યમાનત્વાન્ ।
અથવા—નિરયગતિઃ—નિરયગતિનામકર્મોદયજન્યો નારકત્વલક્ષગઃ પર્યાયવિશેષઃ ।
इति १। तथा—निरयविग्रहगतिः—निरयाणां विग्रहात्=क्षेत्रविभागातिक्रमणपूर्वकं-
गतिः=गमनम् । अथवा—निरयाणां विहायोगति कर्मजन्या स्थितिनिवृत्तिरूपा
ऋजुवक्रा गतिर्निरयविग्रहगतिरिति २। एवमेव—तिर्यग्गतिः ३ तिर्यग्विग्रहगतिः
४ यावत्पदग्राह्याः—मनुजगतिः ५ मनुजविग्रहगतिः ६ देवगतिः ७ देवविग्रह-
तिश्च व्याख्येयाः । तथा—सिद्धिगतिः—सिध्यन्ति=परिनिष्ठितार्थाः भवन्ति जीवा
यत्र सा सिद्धिः, सैव गम्यमानत्वाद् गतिः सिद्धिगतिः—लोकाग्ररूपा ९। तथा—

ગતિ આદીકે મી દસ ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈહૈ સો ડસકા તાત્પર્ય એસા
હૈ—નારકોંકી જો ગતિ હૈ વહ નિરય ગતિ હૈ ક્યોંકિ યહ ડન પાપીયોંકે
જીવોં દ્વારા પ્રાસિકે યોગ્ય હોતીહૈ અથવા નરક ગતિ નામ કર્મકે ડદ્યસે
જન્ય જો નારક રૂપ પર્યાય હૈ વહ નિરય ગતિ હૈ ૧ ।

નિરયવિગ્રહ ગતિ—નારકોંકી ક્ષેત્ર વિભાગકે અતિક્રમણપૂર્વક
જો ગતિ ગમન હૈ વહ નિરયવિગ્રહગતિ હૈ અથવા—નારકોંકી જો
વિહાયોગતિ કર્મ જન્ય સ્થિતિ નિવૃત્તિ રૂપ ઋજુ ગતિ અથવા વક્રગતિ
હૈ વહ નિરયવિગ્રહગતિ હૈ ૨ ।

इसी प्रकारसे तिर्यग्गति और तिर्यग् विग्रहगतिके विषयमें भी
જાનના ચાહિયે યહ યાવત્ શબ્દસે મનુજગતિ ૫ મનુજવિગ્રહગતિ
૬ દેવગતિ ૭ ઓર દેવવિગ્રહગતિ ૮ ઇન ગતિયોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ
નરક ગતિ ઓર નરક વિગ્રહ ગતિકે અનુસાર ઇન મનુજ ગતિ આદિ

ગમન અથવા પર્યાય વિશેષનું નામ ગતિ આદિ ૧૦ પ્રકાર છે. હવે તે
પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

નરકગતિ—નારકોની જે ગતિ છે તેને નિરયગતિ અથવા નરકગતિ કહે
છે, કારણ કે આ ગતિ નારકો દ્વારા પ્રાપ્ત કરાય છે અથવા નરકગતિ નામકર્મના
ઉદયથી જન્ય જે નારક રૂપ પર્યાય છે તેનું નામ નિરયગતિ છે.

નિરયવિગ્રહગતિ—નારકોની ક્ષેત્રવિભાગના અતિક્રમણપૂર્વક જે ગતિ (ગમન
ક્રિયા) છે, તેનું નામ નિરયવિગ્રહગતિ છે. અથવા—નારકોની જે વિહાયોગતિ
કર્મજન્ય સ્થિતિ નિવૃત્તિરૂપ ઋજુગતિ અથવા વક્રગતિ છે તેને નિરયવિગ્રહ
ગતિ કહે છે એજ પ્રમાણે તિર્યગ્ગતિ અને તિર્યગ્વિગ્રહગતિના વિષયમાં પણ
સમજવું. સૂત્રમાંના ‘યાવત્’ પદથી અહીં (૫) મનુજગતિ, (૬) મનુજવિગ્રહ
ગતિ, (૭) દેવગતિ અને (૮) દેવવિગ્રહગતિ, આ ચાર ગતિઓને ગ્રહણ કર-

સિદ્ધિવિગ્રહગતિઃ—સિદ્ધી=લોકાન્તે વિગ્રહાત્=આકાશવિભાગાતિક્રમણપૂર્વકં ગતિઃ=ગમનમિતિ ૧૦। વિગ્રહગતિર્યદપિ વક્રગતિઃ તથાપિ સિદ્ધસ્ય તદભાવાત્ તત્સાહ-ચર્યાન્નારકાદીનામપિ સા પ્રોક્તા । અથવા—અત્ર પ્રથમપદૈર્નિર્વિશેષણતયા ઋજુગતિ-રુક્તા, દ્વિતીયપદૈસ્તુ વક્રગતિરિતિ । અત્ર પક્ષે—સિદ્ધિગતિરિત્યનેન સામાન્યગતિ-રુક્તા । ‘સિદ્ધિવિગ્રહગઈ’ इत्यस्य तु सिद्धयविग्रहगतिरितिच्छाया । सिद्धी=लोकाग्रे अविग्रहेण=भाक्त्रेण गतिः=गमनमित्यर्थः । अनेन विशेषगतिरुक्ता । सामान्यवि-शेषापेक्षयैव पदद्वयस्य भेदो बोध्य इति ॥ सू० ५० ॥

ગનિયોંકા ગ્યાઘ્યાન કાર લેના ચાહિયે, જિસ ગતિમેં જીવ કૂનકૃત્ય હો જાતે હૈં વહ સિદ્ધિ હૈ વહી ઉનકે દ્વારા ગમ્યમાન હોનેકે કારણ ગતિ હૈ વહ સિદ્ધિગતિ લોકકે અગ્રભાગ રૂપ હૈ તથા—લોકાન્તમેં જો આકાશ વિભાગકા અતિક્રમણ કરતે હુએ ઉનકી ગતિ હોતી હૈ વહ સિદ્ધિ વિગ્રહગતિ હૈ વિગ્રહ ગતિ યદ્યપિ વક્રગતિ રૂપ હોતી હૈ પરંતુ સિદ્ધકો વિગ્રહગતિ—મોઢેવાલી ગતિ હોતી નહીં હૈ અતઃ ઉસકે સાહ-ચર્યસે વહ નારકાદિકોંકે ભી નહીં કહી ગઈ હૈ અથવા—પ્રથમ પદોં દ્વારા વિના વિશેષકે ઋજુ ગતિ કહી ગઈ હૈ ઓર દ્વિતીય પદોં દ્વારા વક્રગતિ કહી ગઈ હૈ ।

इस पक्षमें सिद्धिगति इस पदसे तो सामान्य गति कही है और “सिद्धिविग्रह गई” इस पदसे सिद्धयविग्रहगति कही गई है, क्योंकि इसकी छाया सिद्धयविग्रहगति ऐसी होती है सिद्धिमें—लोकके

વામાં આવી છે નરકગતિ અને નરકવિગ્રહગતિના વિષયમાં એવું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એવું જ કથન મનુજગતિ આદિના વિષયમાં પણ સમજી લેવું.

જે ગતિમાં જીવ કૃતકૃત્ય થઈ જાય છે તે ગતિનું નામ સિદ્ધગતિ છે. ક્રમેના સંપૂર્ણરૂપે ક્ષય કરીને થયેલા જીવેનું જ સિદ્ધગતિમાં ગમન થાય છે. આ સિદ્ધગતિ લોકના અગ્રભાગરૂપ છે. તથા—આકાશવિભાગનું અતિક્રમણ કરીને લોકાન્તમાં જે તેમની ગતિ થાય છે તેનું નામ સિદ્ધિવિગ્રહગતિ છે વિગ્રહગતિ જો કે વક્રગતિરૂપ હોય છે, પરંતુ સિદ્ધજીવોમાં વિગ્રહગતિ—મોઢ (વળાંકવાળી) ગતિ—હોતી નથી. તેથી તેના સંકચર્યથી નારકાદિકોમાં પણ એવી ગતિને સદ્-ભાવ કહ્યો નથી અથવા પ્રથમ પદો દ્વારા કેઈ પણ જાતની વિશેષતા વિના ઋજુગતિની વાત કરવામાં આવી છે અને બીજા દ્વારા વક્રગતિની વાત કરવામાં આવી છે. આ દૃષ્ટિએ ત્રિચાર કરવામાં આવે તો “સિદ્ધિગતિ” આ પદ દ્વારા તો સામાન્યગતિની વાત કરવામાં આવી છે અને “સિદ્ધિવિગ્રહગઈ” ‘સિદ્ધિ-વિગ્રહગતિ’ આ પદ દ્વારા સિદ્ધયવિગ્રહગતિની વાત કરવામાં આવી છે, કારણ

સિદ્ધિગતિસ્તુ મુળ્કાનામેવ ભવતીતિ મુળ્કાન્ દશવિઘત્વેનાહ—

મૂલ્ય—દસ મુંડા પળ્લતા, તં જહા--સોઈંદિયમુંડે ૧ જાવ
ફાસિંદિયમુંડે ૫ કોહમુંડે ૬ જાવ લોહમુંડે ૯ દસમે સિરમુંડે
૧૦ ॥ સૂ. ૫૧ ॥

છાયા—દશ મુળ્કાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-શ્રોત્રેન્દ્રિયમુળ્કો ૧ યાવત્ સ્પર્શેન્દ્રિય-
મુળ્કઃ ૫ ક્રોધમુળ્કો ૬ યાવત્ લોભમુળ્કો ૯ દશમઃ શિરોમુળ્કઃ ॥ ૧૦ ॥ સૂ. ૫૧ ॥

ટીકા—‘ દસ મુંડા ’ इत्यादि—

મુળ્કયતિ=અપનયતિ-દૂરીકરોતીતિ મુળ્કઃ । તદ્વદ્વત્વે મુળ્કાઃ । તે દશસં
ખ્યકાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । તથા-‘ શ્રોત્રેન્દ્રિયમુળ્ક ’ इत्यादि । તત્ર-શ્રોત્રેન્દ્રિયમુળ્કઃ=

અગ્રભાગર્મે-અવિગ્રહસે વિના મોઢેકે જો સિદ્ધ જીવકા ગમન હૈ વહ
સિદ્ધયવિગ્રહગતિહૈ હસસે વિશેષ ગતિ ઉક્ત હુઈહૈ इस तरह सामान्य
और विशेषकी अपेक्षासे ही दो पदोंका भेद जानना चाहिये ॥ સૂ. ૫૦ ॥

સિદ્ધિ ગતિ જો ગતિ હોતી હૈ વહ મુળ્કોંકી હી હોતી હૈ-इसलिये
अब सूत्रकार १० प्रकारके मुण्डोंका कथन करते हैं—

“ દસ મુંડા પળ્લતા ” इत्यादि ॥ सूत्र ५१ ॥

ટીકાર્થ—મુળ્ક દસ પ્રકારકે કહે ગયેહૈ—जैसे-श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड १ यावत्
स्पर्शेन्द्रिय मुण्ड ५ क्रोध मुण्ड ६ यावत् लोभ मुण्ड ९ और शिरो मुण्ड
१०—जो दूर करता है उसका नाम मुण्ड है ऐसे ये मुण्ड जो १० कहे

કે તેની છાયા “ સિદ્ધયવિગ્રહગતિ ” આ પ્રકારની થાય છે સિદ્ધિમાં-લોકના
અગ્રભ ગર્માં-અવિગ્રહગતિથી (મોઢ વિનાની ગતિથી) જે સિદ્ધ જીવોનું ગમન
છે તેનું નામ સિદ્ધયવિગ્રહગતિ છે. તેના દ્વારા વિશેષગતિ પ્રકટ કરવામાં આવી
છે આ રીતે સામાન્ય અને વિશેષની અપેક્ષાએ જ બન્ને પદો વચ્ચે ભેદ
સમજવો જોઈએ. ॥ સૂત્ર ૫૦ ॥

મુંડિત જીવો જ સિદ્ધિગતિમાં જાય છે. આ પ્રકારના પૂર્વસૂત્ર સાથેના
સંબંધને અનુલક્ષીને મુંડો (મુંડિતો)ના પ્રકારોનું સૂત્રકાર કથન કરે છે—

“ દસમુંડા પળ્લતા ” इत्यादि—(स. ५१)

મુંડ દસ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) થી (૫) શ્રોત્રેન્દ્રિયમુંડથી લઈને સ્પર્શેન્દ્રિય
મુંડ પર્યન્તના પાંચ પ્રકારો, (૬ થી ૯) ક્રોધમુંડથી લઈને લોભમુંડ પર્યન્તના
ચાર પ્રકારો અને (૧૦) શિરોમુંડ. જે દૂર કરે છે તેનું નામ મુંડ છે. હવે
આ દસે પ્રકારના મુંડોનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

શ્રોત્રેન્દ્રિયવિષયદૂરીકર્તા ૧। યાવત્પદેન-ચક્ષુરિન્દ્રિયમુણ્ડો ૨ ગ્રાણેન્દ્રિયમુણ્ડો ૩ રસનેન્દ્રિયમુણ્ડશ્ચ ૪। ગ્રાહ્યાઃ । તથા-દ્વિતીયયાવત્પદેન-માનમુણ્ડમાયામુણ્ડો । ગ્રાહ્યો । અર્થસ્તુ-શ્રોત્રેન્દ્રિયમુણ્ડત્રિગણેયઃ । નવરં-શિરોમુણ્ડઃ=દસ્તેન કેશલુચ્ચક્રમ્મિતિ ॥ સૂ. ૫૧ ॥

‘ દસ મુંડા પળ્લતા ’ इत्यत्र ‘ दस ’ इति संख्यानमिति संख्यानं दशविधत्वेनाह—

મૂલમ્-દસવિહે સંખાળે પળ્લત્તે, તં જહા--પરિકરમ્ ૨ વવ-
હારો ૨ રજ્જુ ૩ રાસી ૪ કલાસવન્ને ૫ ય । જાવંતાવાતિ ૬
વગ્ગો ૭ ઘળો ૮ ય તહ વગ્ગવગ્ગો વિ ૯ ॥ ૬ ॥ કપ્પો ય
૬૦ ॥ સૂ. ૫૨ ॥

ગયે હૈં-उसका तात्पर्य ऐसा है जो श्रोत्रेन्द्रियके विषयको दूर कर देना है-श्रोत्रेन्द्रियके विषयमें रागद्वेष करनेका सर्वथा त्याग कर देना है वह श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड है यहां यावत्पदसे चक्षुरिन्द्रिय मुण्ड, ग्राणेन्द्रिय मुण्ड, रसनेन्द्रिय मुण्ड इन चार मुण्डोंका ग्रहण हुआ है तथा द्वितीय यावत्पदसे “मान मुण्ड एवं माया मुण्ड ” इन दो मुण्डोंका ग्रहण हुआ है । इन सब काल अर्थको श्रोत्रेन्द्रिय मुण्डके जैसे जानना चाहिये जो क्रोध कषायको दूर करता है वह क्रोधमुण्ड है इसी प्रकारसे “मान माया लोभ ” इन मुण्डोंके विषयमें भी जानना चाहिये जो अपने हाथसे मस्तकके केशोंका लुंचन करता है वह शिरोमुण्ड है ॥सू. ५१॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયમુંડ-જે માણસ શ્રોત્રેન્દ્રિયના વિષયને દૂર કરી નાખે છે, એટલે કે શ્રોત્રેન્દ્રિયના વિષયમાં રાગદ્વેષનો ત્યાગ કરી નાખે છે તેને શ્રોત્રેન્દ્રિય મુંડ કહે છે.

સૂત્રમાં વપરાયેલા ‘ યાવત્ ’ પદ વડે અહીં ચક્ષુરિન્દ્રિયમુંડ ગ્રાણેન્દ્રિયમુંડ અને રસનેન્દ્રિયમુંડ ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. પાંચમો પ્રકાર સ્પર્શેન્દ્રિય મુંડ છે. આ દરેક ઇન્દ્રિયના વિષયમાં રાગદ્વેષનો ત્યાગ કરનાર વ્યક્તિઓને માટે આ પદો વપરાયા છે.

(૬) ક્રોધમુંડ-ક્રોધને દૂર કરનાર વ્યક્તિને ક્રોધમુંડ કહે છે. (૭) માનમુંડ-માનનો પરિત્યાગ કરનારને માનમુંડ કહે છે. (૮) માયામુંડ-માયા (કપટ) નો ત્યાગ કરનારને માયામુંડ કહે છે. (૯) લોભમુંડ-લોભનો ત્યાગ કરનારને લોભમુંડ કહે છે. (૧૦) શિરોમુંડ-પોતાના હાથે જ મસ્તકના વાળનું લુંચન કરે છે તેને શિરોમુંડ કહે છે. ॥ સૂ. ૫૧ ॥

છાયા—દશવિધં સંખ્યાનં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—પરિકર્મ ૧ વ્યવહારઃ ૨ રજ્જુઃ ૩ રાશિઃ ૪ કલાસર્વણશ્ચ ૫ યાવત્તાવત્ ૬ વર્ગો ૭ ઘનશ્ચ ૮ તથા વર્ગ-વર્ગોઽપિ ૯ ॥ ૧ ॥ કલ્પશ્ચ ૧૦ ॥ સુ. ૫૨ ॥

ટોકા—‘ દસવિદે સંખ્યાને ’ इत्यादि—

સંખ્યાનં=ગણના દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથા—‘ પરિકર્મ ’ इत्यादि । તત્ર-પરિકર્મ-સંકલિતાદિરૂપં बहुविधं ગણિતશાસ્ત્રપ્રસિદ્ધમ્, તદ્વારા યત્સંખ્યેયસ્ય ગણના ક્રિયતે સાઽપિ પરિકર્મેતિ બોધ્યમ્ ॥ ૧ ॥ તથા-વ્યવહારઃ=પાટીગણિત-પ્રસિદ્ધઃ શ્રેણીવ્યવહારાદિરૂપોઽનેકવિધઃ । તેન યત્સંખ્યેયસ્ય ગણના ક્રિયતે સાઽપિ-

મુખ ૧૦ દશ કહેહેં સો દશ સંખ્યા રૂપ હોતાહે અતઃ અવ સૂત્રકાર સંખ્યાકી દશવિધતાકા કથન કરતે હેં—

“ દસવિદે સંખ્યાને પળગત્તે ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૫૨ ॥

ટીકાર્થ—સંખ્યા—ગિનતી ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈહે જૈસે—પરિકર્મ ૧ વ્યવહાર ૨ રજ્જુ ૩ રાશિ ૪ કલાસર્વણ ૫ યાવત્તાવત્ ૬ વર્ગ ૭ ઘન ૮ વર્ગાવર્ગ ૯ ઓર સંખ્યા ૧૦ નામ ગણના—ગિનતીકાહે સો જો પરિકર્મ આદિકે ભેદસે દશ ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈહે, સો ડસકા તાત્પર્ય એસાહે પરિકર્મ સંકલિત આદિ રૂપસે અનેક પ્રકાર હોતા હૈ, ઓર યહ ગણિત શાસ્ત્રમેં પ્રસિદ્ધ હૈ, હસ પરિકર્મ દ્વારા જો સંખ્યેયકી ગણના કી જાતીહે વહ બી પરિકર્મ હૈ ૧ વ્યવહાર—યહ પાટી ગણિત રૂપસે પ્રસિદ્ધ હૈ ઓર યહ શ્રેણી વ્યવ-

ઉપરના સૂત્રમાં મુ'ડના ૧૦ પ્રકાર કહ્યા. હસને આંકડો સંખ્યારૂપ ગણાય છે. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ પ્રકારના સંબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર સંખ્યાના હસ પ્રકારો પ્રકટ કરે છે—“ દસવિદે સંખ્યાને પળગત્તે ”—(સુ. ૫૨)

સંખ્યા (ગણતરી કરવાની પદ્ધતિ) હસ પ્રકારની કહી છે—(૧) પરિકર્મ (૨) વ્યવહાર, (૩) રજ્જુ, (૪) રાશિ, (૫) કલાસર્વણ, (૬) યાવત્તાવત્, (૭) વર્ગ, (૮) ઘન, (૯) વર્ગવર્ગ અને (૧૦) કલ્પ.

ગણતરી કરવાની પદ્ધતિનું નામ સંખ્યા છે તેના પરિકર્મ આદિ ૧૦ પ્રકારોનું હવે સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

પરિકર્મ—સંકલિત (સરવાળા) આદિ રૂપે અનેક પ્રકારનું પરિકર્મ કહ્યું છે આ પરિકર્મ ગણિતશાસ્ત્રમાં જાણીતું હોવાથી અહીં તેનું વધુ સ્પષ્ટીકરણ કયું નથી. આ પરિકર્મ દ્વારા જે સંખ્યેયની ગણતરી કરાય છે તેનું નામ પણ પરિકર્મ છે

વ્યવહાર—તે પાટી ગણિત રૂપે પ્રખ્યાત છે, અને તે શ્રેણી વ્યવહાર આદિ સ્થા ૦-૭૧

વ્યવહારઃ । એવમેવાગ્રેડ પિ અષ્ટસુ ભેદેષુ વોધ્યમ્ ॥ ૨ ॥ તથા-રજ્જુઃ-રજ્જ્વા
 યત્ક્ષેત્રસ્ય સંખ્યાનં ક્રિયતે તદ્રજ્જુઃ । રજ્જુરિતિ ક્ષેત્રગણિતમ્ ॥ ૩ ॥ તથા-
 રાશિઃ=ધાન્યાદિસમૂહત્રિપયં ગણિતમ્ । અયં ચ પાટીગણિતે રાશિવ્યવહાર ઇતિ
 નામ્ના પ્રસિદ્ધઃ ॥ ૪ ॥ તથા-કલાસવર્ણમ્-કલાનામ્=અંશાનાં સવર્ણઃ=સવર્ણનં-
 સદશીકરણં યસ્મિન્ સંખ્યાને તન્ કલાસવર્ણનમ્ ઇતિ ॥ ૫ ॥ તથા-યાવત્તાવત્-
 'જાવં તાવંતિ વા ગુણાકારો ત્તિ વા એગદ્મ' ઇતિ-વચનાદ યાવત્તાવદિતિ ગુણ-
 કારઃ, તેન યત્સંખ્યાનં ક્રિયતે તદ યાવત્તાવદિત્યુચ્યતે । इदं च लोके प्रत्युत्पन्न-
 मिति रूढम् । अथवा-यावतः कुतोऽपि तावत एव यथेष्टाद् गुणकराद् यत्र यथेष्टं

હાર આદિ રૂપસે અનેક પ્રકારકા હૈ इस व्यवहारसे जो संख्येय की
 गणना की जाती है वह भी व्यवहार है इसी प्रकारसे आगे भी आठ
 भेदोंमें जानना चाहिये तथा-रज्जुसे जो क्षेत्रकी गिनती की जाती है
 वह रज्जु है रज्जु यह क्षेत्र गणित है ३ धान्यादि समूहके प्रमाणको
 घतानेवाला जो गणित है वह राशि है यह पाटी गणितमें राशि व्यव-
 हार इस नामसे प्रसिद्ध है ४ अंशोंका सदशीकरण जिस संख्यानमें
 गिनतीमें होता है, वह संख्यान कलास वर्ण है ५, यावत्तावत्-"जावं
 तावंति वा गुणाकारो त्ति वा एगदम्" इस वचनके अनुसार यावत्
 तावत् गुणकारका नाम है, इस गुणाकारसे जो गिनती की जाती है
 वह यावत्तावत् ऐसा कहा गया है । यह लोकमें प्रत्युत्पन्न इस रूपसे
 रूढ है । अथवा-कहीं से भी यथेष्ट गुणाकारसे जहां यथेष्ट संकलित

इये અનેક પ્રકારનો છે. આ વ્યવહારથી જે સંખ્યેયની ગણતરી કરાય છે તેને
 પણ વ્યવહાર કહે છે. એજ પ્રમાણે પછીના આઠ ભેદોમાં પણ સમજવું.

રજ્જુ-રજ્જુ વડે ક્ષેત્રની જે ગણતરી કરાય છે તેનું નામ રજ્જુ છે. ક્ષેત્રફળને
 લગતા ગણિતને (ગણતરીને) રજ્જુગણિત કહે છે.

રાશિગણિત-ધાન્યાદિના જથ્થાનું પ્રમાણ બતાવનાર જે ગણિત છે તેને
 રાશિગણિત કહે છે. આ પ્રકારે જે ગણતરી કરવાની પદ્ધતિ છે તેનું નામ રાશિ
 વ્યવહાર પણ છે.

સંખ્યાનકલા સવર્ણ જે ગણતરીમાં અંશોને સમાન બનાવીને ગણતરી
 કરવામાં આવે છે તે ગણતરીનું નામ 'સંખ્યાનકલાસવર્ણ' છે.

યાવત્તાવત્ ગણિત-"જાવં તાવંતિ વા ગુણાકારો ત્તિ વા એગદ્મ" આ
 કથન અનુસાર ગુણકારને 'યાવત્તાવત્' કહે છે. આ શબ્દ લોકમાં 'પ્રત્યુત્પન્ન'
 આ નામથી પણ રૂઢ છે અથવા-કોઈ પ્રકારે-યથેષ્ટ ગુણકાર આદિ વડે યથેષ્ટ

સંકલિતાદિકમાનીયતે તદ્ યાવત્તાવત્સંખ્યાનમુચ્યતે । તદુદાહરણં યથા—

“ ગચ્છો વાઙ્ઙાભ્યસ્તો, વાઙ્ઙયુનોગચ્છસંગુણઃ કાર્યઃ ।

દ્વિગુણીકૃતવાઙ્ઙહૃતે, વદન્તિ સંકલિતમચાર્યાઃ ॥૧૧॥ ” ઇતિ ।

અયં ભાવઃ—ગચ્છોડત્ર દશસંખ્યકો ગ્રાહ્યઃ । સ દશ સંખ્યકો ગચ્છો વાઙ્ઙા-
ભ્યસ્તઃ—વાઙ્ઙયા=યથેષ્ટેન ગુણકારેણ અષ્ટ સંખ્યકેન અભ્યસ્તઃ=ગુણિતઃ સનજાતો-
ડશીતિસંખ્યકઃ । સ પુનઃ વાઙ્ઙાયુતઃ=ગુણકારયુતઃ કાર્યઃ । તતોડષ્ટાશીતિઃ ।
તતો ગચ્છેન=દશભિઃ સંગુણઃ—ગુણનં કર્તવ્યમ્ । તતો જાતાનિ અષ્ટાશીત્યધિકાનિ
અષ્ઠૌ શતાનિ । તતો દ્વિગુણીકૃતગુણકારેણ અર્થાત્ ષોડશભિર્ભાગો દેયઃ । તતો
લબ્ધા પશ્ચપશ્ચાશદિતિ । પશ્ચપશ્ચાશદિતિ તુ દશાનાં સંકલિતમ્ । इदं च पाटीग-
णितत्वेन प्रसिद्धमिति ॥ ६ ॥ तथा—वर्गः=वर्गसंख्यानम् । यथा द्वयोर्वर्गश्चत्वारः,

આદિ લાંબા જાતા હૈ બહ યાવત્તાવત્સંખ્યાત કહા જાતા હૈ इसका
उदाहरण इस प्रकारसे है—“ गच्छो वाङ्ङाभ्यस्तो ’ इत्यादि ।

इसका भाव ऐसी है—यहां गच्छसे १० लेना और वाङ्ङासे ८
लेना १० गच्छको वाङ्ङा ८ से अभ्यस्त-गुणित करने पर ८० आते
हैं अब पुनः इस ८० में वाङ्ङाको जोड़ देना चाहिये तब ८८ हो जाते
हैं । अब ८८ को गच्छ १० से गुणा करने पर ८८० हो जाते हैं । अब
८८० में गुणाकार ८ को द्विगुणित करके उसका भाग देना चाहिये तब
५५ लब्ध आये इस तरह १० का संकलित ५५ हुआ यह संकलित पाटी
गणित रूपसे प्रसिद्ध है ६ वर्गका नाम वर्ग है जैसे दोका वर्ग ४ होता

सं'कलित (सं'ख्या) लावी देवी तेनु' नाम “यावत्तावत्” सं'ख्या छे. तेनु'
नीचे प्रमाणे ઉદાહરણ આપવામાં આંચું છે—

“ ગચ્છો વાઙ્ઙાભ્યસ્તો ” ઇત્યાદિ—

આ સૂત્રપાઠનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે—અહીં ‘ગચ્છ’ આ ૫૬ ૧૦
નું વાચક છે અને “વાઙ્ઙા” ૫૬ ૮ નું વાચક છે ગચ્છને વાંછા (૧૦ ને
૮ વડે) ગુણવાથી ૮૦ આવે છે ત્યારબાદ ૮૦ માં વાંછા (આઠ) ઉમેરવાથી
૮૮ આવે છે. હવે તે ૮૮ ને ગચ્છ (૧૦) વડે ગુણતા ૮૮૦ આવે છે તે
ગુણાકારને (૮૮૦) ને બમણી વાંછા (૨ x ૮ = ૧૬) વડે ભાગવાથી ૫૫ આવી
બચ છે આ રીતે સં'કલિત ૫૫ થયો આ પદ્ધતિનું બીજું નામ સં'કલિત
પાટી ગણિત છે.

વર્ગ ગણિત : કોઈ પણ રકમને એજ રકમ વડે ગુણવાથી તેનો વર્ગ
આવે છે જેમ કે બેનો વર્ગ ૪ અને તેનો વર્ગ ૬ થાય છે,

‘સદશદ્વિરાશિઘાતઃ’ ઇતિ વચનાત્ ॥ ૭ ॥ તથા ઘનઃ=ઘનસંખ્યાનમ્ । યથા-
 દ્વયોર્ઘનોડ્ઘૌ ‘સમત્રિરાશિઇતિ’ ઇતિ વચનાત્ ॥ ૮ ॥ તથા-વર્ગવર્ગઃ-સંખ્યા-
 નમ્ । યથા-વર્ગસ્ય=દ્વયોર્વર્ગસ્ય ચતુર્ણાં વર્ગઃ=ચતુર્ગુણઃ પોડશેતિ ૯ । તથા-
 કલ્પઃ સંખ્યાનમ્ । કલ્પશ્ચ ક્રાકચેન કાષ્ઠસ્ય છેદઃ, તદ્વિષયં સંખ્યાનમપિ કલ્પ
 ઇત્યુચ્યતે । इदं संख्याने पाटीगणिते क्राकचव्यवहार इति नाम्ना प्रसिद्धमिति
 ॥ १० ॥ इदं च संख्यानविषये संक्षेपेण व्याख्यानं कृतम् । विशेषजिज्ञासोपशमस्तु
 गणितशास्त्रात्कर्तव्य इति ॥ सू० ५२ ॥

હૈ “સદશ દ્વિરાશિઘાતઃ” એસા વર્ગકા લક્ષણ હૈ ૭ સંખ્યામેં ત્રીન
 વાર ગુણા કરને પર જો રાશિ આતો હૈ વહ ઘન હૈ જૈસે ૨ કા ઘન ૮
 હોતાહૈ “સમ ત્રિરાશિ ઇતિ” એસા ઘનકા લક્ષણહૈ । વર્ગકે વર્ગકા નામ
 વર્ગવર્ગ હૈ, જૈસે દોકા વર્ગ ૪ હોતાહૈ ઓર ૪ કા વર્ગ ૧૬ હોતાહૈ હસ તરહ
 દોકે વર્ગકા વર્ગ ૧૬ હોતા ૯ ક્રાકચ કરોનસે જો કાષ્ઠકા છેદનહૈ વહકલ્પહૈ
 હસ વિષયમેં જો સંખ્યા હૈ વહ ઓ કલ્પ હૈ યહ ગણિત પાટી ગણિતમેં
 ક્રાકચ વ્યવહાર હસ નામસે પ્રસિદ્ધ હૈ ૧૦, યહ સંખ્યાતકે વિષયમેં
 સંક્ષેપસે વ્યાખ્યા કી ગઈ હૈ જો વિશેષરૂપસે ઝાની જિજ્ઞાસાકી શાન્તિ
 યાહતે હોં વે ગણિતશાસ્ત્રકા અવલોકન કરે ॥ સૂ૦ ૫૨ ॥

“સદશદ્વિરાશિઘાતઃ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વર્ગનું ઉપર કહ્યા મુજબનું
 લક્ષણ પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે.

ઘનગણિત : કોઈ પણ સંખ્યાનો ત્રણ વાર ગુણાકાર કરવાથી તેનો ઘન
 આવે છે. જેમ કે ૨ નો ઘન $2 \times 2 \times 2 = 8$ થાય છે “સમત્રિરાશિઇતિ” આ
 સૂત્રપાઠ દ્વારા ઘનનું આ લક્ષણ પ્રકટ કર્યું છે

વર્ગવર્ગ-વર્ગના વર્ગનું નામ વર્ગવર્ગ (ચતુર્ઘાત) છે. જેમ કે બેનો વર્ગ
 ૪ અને ચારનો વર્ગ ૧૬ થાય છે. તેથી બેનો વર્ગવર્ગ ૧૬ થાય છે. ત્રણનો
 વર્ગવર્ગ ૮૧ થાય છે.

કલ્પગણિત-કરવતી વડે લાકડાને કાપવું તેનું નામ ‘કલ્પ’ છે તે કલ્પ-
 વિષયક જે સંખ્યા છે તેનું નામ પણ કલ્પ છે. આ ગણિત પાટીને (આ પ્રકારની
 ગણિત પાટીને) ગણિતમાં ‘ક્રાકચવ્યવહાર’ કહે છે.

અહીં ગણિતના (ગણતરીના) હસ પ્રકારનું સંક્ષિપ્તમાં વિવરણ કરવામાં
 આવ્યું છે, આ વિષયની વધુ માહિતી મેળવવા માટે ગણિતશાસ્ત્રનું અવલો-
 કન કરવું જોઈએ. ॥ સૂ. ૫૨ ॥

સંખ્યાન પ્રસ્તાવાત્ પ્રત્યાખ્યાન સંખ્યામાહ—

મૂલમ્—દસવિહે પચ્ચક્ષણે પળગત્તે, તં જહા—અનાગત ૬
મહ્વકંતં ૨ કોટીસહિયં ૩ નિયંતિયં ૪ ચેવ । સાગર ૫—
મળાગારં ૬ પરિમાણકડં ૭ નિરવશેસં ૮ ॥ ૬ ॥ સંકેયં ૯ ચેવ
અદ્ધાણ ૬૦ પચ્ચક્ષણં દસવિહં તુ ॥ સૂ ૫૩ ॥

છાયા—દશવિધં પ્રત્યાખ્યાનં પ્રજ્ઞપ્તમ્, તથથા—અનાગતમ્ ૧ અતિક્રાન્તમ્
૨ કોટીસહિતં ૩ નિયન્ત્રિતં ૪ ચૈવ । સાકારમ્ ૫ અનાકારં ૬ પરિમાણકૃતં
૭ નિરવશેષમ્ ૮ ॥ ૧ ॥ સંકેતં ૯ ચૈવ અદ્ધાયાઃ ૧૦ પ્રત્યાખ્યાનં દશવિધં તુ ॥ સૂ ૫૩ ।

ટીકા—‘દસવિહે પચ્ચક્ષણે’ इत्यादि—

પ્રત્યાખ્યાનમ્—પ્રતિ=પ્રતિકૂલત્વેન આ=મર્યાદયા રૂપાનં=ગુર્વાદિસમીપે પ્રક-
ટનં પ્રત્યાખ્યાનં—નિવર્તનમ્, તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તથથા—‘અનાગતમ્’ इत्यादि,
તત્ર—અનાગતકરણાદનાગતમ્ । અયં ભાવઃ—પર્યુપણાદિકાલે આચાર્યાદિવૈયાટ્યક-

સંખ્યાનકે પ્રસ્તાવસે અથ સૂત્રકાર પ્રત્યાખ્યાન સંખ્યાકા કથન કરતેહૈ

“દસવિહે પચ્ચક્ષણે પળગત્તે” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૫૩ ॥

ટીકાર્થ—પ્રત્યાખ્યાન ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયાહૈ જૈસે—અનાગત ૧ અતિ-
ક્રાન્ત ૨ કોટી સહિત ૩ નિયન્ત્રિત ૪ સાકાર ૫ અનાકાર ૬ પરિમાણ
કૃત ૭ નિરવશેષ ૮ સંકેત ૯ ઓર અદ્ધા પ્રત્યાખ્યાન ૧૦ ।

પ્રતિકૂલ રૂપસે મર્યાદાકે અનુસાર ગુર્વાદીકે સમીપમેં કથન કરના
ઇસકા નામ પ્રત્યાખ્યાન હૈ ઇસકા દૂસરા નામ નિવર્તન બી હૈ, યહ
પ્રત્યાખ્યાન જો ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ સો ઇસકા તાત્પર્ય એસા

સંખ્યાનું નિરૂપણ કરીને હવે સૂત્રકાર પ્રત્યાખ્યાનસંખ્યાનું (પ્રત્યાખ્યા-
નના પ્રકારોનું) નિરૂપણ કરે છે—

“દસવિહે પચ્ચક્ષણે પળગત્તે” इत्यादि—(સૂ. ૫૩)

ટીકાર્થ—પ્રત્યાખ્યાનના નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અનાગત, (૨) અતિ-
ક્રાન્ત, (૩) કોટીસહિત, (૪) નિયન્ત્રિત, (૫) સાકાર, (૬) અનાકાર, (૭) પરિ-
માણકૃત, (૮) નિરવશેષ, (૯) સંકેત અને (૧૦) અદ્ધાપ્રત્યાખ્યાન.

પ્રતિકૂળ રૂપે મર્યાદા અનુસાર ગુર્વાદિરની સમીપે કથન કરવું તેનું નામ
પ્રત્યાખ્યાન છે. તેને નિવર્તન પણ કહે છે. તેના દસ પ્રકારો કહ્યા છે હવે આ
પ્રકારોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે—

રણાદન્તરાયઃ સંભવેત્, અતઃ પ્રથમમેવ યત્તપઃ કરણં તદનાગતમિતિ ।

તદુક્તમ્—“ હોહી પઞ્જોસવળા, મમ ય તયા અંતરાયં હોઞ્જા ।

ગુરુથેયાવચ્ચેળં, તવસ્તિગેલન્નયાપ વા ॥ ૧ ॥

સો દાઙ્ તવોકમ્મં, પઙ્કિવઞ્જઙ્ તં અળાગપ કાલે ।

અયં પચ્ચક્કલાળં, અળાગયં હોઙ્ ણાયવ્વં ॥૨॥ ”

છાયા—ભવિષ્યતિ પર્યુષણા મમ ચ તદાન્તરાયિકં ભવેત્ ।

ગુરુથેયાવૃત્ત્યેન તપસ્વિગ્લાનતયા વા ॥ ૧ ॥

સ તદાનીં તપઃકર્મ પ્રતિપદ્યતે તત્ અનાગતે કાલે ।

અતત્ પ્રત્યાખ્યાનમ્, અનાગતં ભવતિ જ્ઞાતવ્યમ્ ॥૨॥ ઇતિ ॥૧॥

તથા —અતિક્રાન્તમ્—અતિકારણાદતિક્રાન્તમ્ । અયં ભાવઃ—પર્યુષણાદિકાલે

હૈ અનાગત કાલમેં કરને યોગ્ય જો પ્રત્યાખ્યાન વર્તમાતમેં પહિલે હી કર લિયા જાતા હૈ વહ અનાગત પ્રત્યાખ્યાન હૈ હસ પ્રત્યાખ્યાનમેં પ્રત્યાખ્યાન કરનેવાલા એસા વિચાર કરતા હૈ કિ પર્યુષણા આદિ કાલમેં આચાર્યાદિ કા વૈયાવૃત્તિ કરનેસે પ્રત્યાખ્યાનમેં અન્તરાય હો સકતા હૈ હસલિયે પહિલેસે હી મેં પ્રત્યાખ્યાન રૂપ તપકો ધારણ કર લૂં તો અચ્છા હૈ અતઃ હસ અભિપ્રાયસે પ્રેરિત હુઆ વહ પ્રત્યાખ્યાનકો પહિલેસે હી જો ધારણ કર લેતા હૈ વહ અનાગત પ્રત્યાખ્યાન હૈ સો હી કહા હૈ—

“ હો હી પઞ્જોસવળા ” ઇત્યાદિ ।

અતિક્રાન્તપ્રત્યાખ્યાન—અતિક્રાન્તકે કરને પર પ્રત્યાખ્યાન અતિક્રાન્ત હોતાહૈ તાત્પર્ય હસકા યહૈ કિ પ્રત્યાખ્યાન કરનેવાલા એસા સોચતાહૈ કિ

અનાગત પ્રત્યાખ્યાન—ભવિષ્યમાં જે પ્રત્યાખ્યાન કરવા યોગ્ય હોય તે પ્રત્યાખ્યાન વર્તમાનકાળે જ કરી લેવામાં આવે, તો તેને અનાગત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. આ પ્રત્યાખ્યાનમાં પ્રત્યાખ્યાન કરનાર વ્યક્તિ એવો વિચાર કરે છે કે પર્યુષણાદિ કાળમાં આચાર્ય આદિની વૈયાવચ્ચ કરવાની હોવાથી પ્રત્યાખ્યાનમાં અંતરાય નહીં શકે છે. તેથી આ પ્રત્યાખ્યાન રૂપ તપ પર્યુષણ પહેલાં જ કરી લેવું જોઈએ આ પ્રકરના વિચારથી પ્રેરાઈને વ્યક્તિ અમુક નિશ્ચિત સમય કરતાં અગાઉના સમયે જે પ્રત્યાખ્યાન ધારણ કરે છે તેને અનાગત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ હો હી પઞ્જોસવળા ” ઇત્યાદિ—

અતિક્રાન્ત પ્રત્યાખ્યાન—વર્તમાનકાળે કરવા યોગ્ય પ્રત્યાખ્યાન ભવિષ્યમાં કરવામાં આવે—કાળ અતિક્રાન્ત (વ્યતીત) થયા બાદ કરવામાં આવે, તો તે પ્રત્યાખ્યાનને અતિક્રાન્ત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. પર્યુષણાદિકાળમાં આચાર્ય આદિનું વૈયાવચ્ચ કરવાનું હોય છે. તે કારણે પ્રત્યાખ્યાનમાં અન્તરાય નહવાનો સંભવ

આચાર્યાદિવૈયાટ્ટત્યકરણાદન્તરાયસદ્ભાવાત્તપઃ કર્મ ન પ્રતિપદ્યતે । અતિક્રાન્તે તુ પર્યુષણાદિ કાલે તત્પ્રતિપદ્યતે । તત્તપઃ કરણમ્ અતિક્રાન્તમિત્યુચ્યતે । તદુક્તમ્—

“ પજ્જોસવણાણ તવં, જો સ્વલુ ન કરેહ કારણજ્ઞાણ ।

ગુરુવૈયાવચ્ચેણં, તવસ્સિ ગેલ્લન્યાણ વા ॥ ૧ ॥

સો દાહ તત્તોકમ્મં, પહિવજ્જહ અહિચ્છિણ કાલે ।

અયં પચ્ચલ્લાણં, અહિંકંતે હોહ નાયચ્ચં ॥ ૨ ॥ ”

છાયા—પર્યુષણાયાં તપો યઃ સ્વલુ ન કરોતિ કારણતઃ ।

ગુરુવૈયાટ્ટત્યેન તપસ્વિગ્લાનતયા વા ॥ ૧ ॥

સ તદાનોં તપઃ કર્મ, પ્રતિપદ્યતે તદતીતે કાલે ।

અતત્પ્રત્યાખ્યાનમ્, અતિક્રાન્તં ભવતિ જ્ઞાતવ્યમ્ ॥૧॥ ઇતિ ॥૨॥

તથા—કોટિસહિતમ્—પ્રથમસ્ય ચતુર્થાદેરન્તરિભાગ એકા કોટિઃ, દ્વિતીયસ્ય

પર્યુષણાદિકે સમયમે આચાર્યાદિકી વૈયાટ્ટત્તિ કરનેસે પ્રત્યાખ્યાનમે અન્તરાય હો સકતાં હૈ હસસે તપઃ કર્મ ધારણ નહીં ક્રિયા જા સકતાહૈ, પર્યુષણાદિ કાલકે નિકલ જાને પર હી વહ ધારણ ક્રિયા જા સકતા હૈ અતઃ હસ અભિપ્રાયસે જો તપઃ પર્યુષણાકે નિકલ જાને પર ધારણ ક્રિયા જાતા હૈ વહ અતિક્રાન્ત પ્રત્યાખ્યાન હૈ—તદુક્તમ્—

“ પજ્જોસવણાણ તવં ” ઇત્યાદિ ।

કોટિ સહિત પ્રત્યાખ્યાન—એક તપસ્યા સમાપ્તિ હોતે હી દ્વિતીય તપસ્યાકા જો પ્રારંભ કરના વહ કોટિસહિત પ્રત્યાખ્યાન હૈ જૈસે—કિસી તપસ્વીને પ્રથમ ચતુર્થાદિકી તપસ્યા કી ઓર જવ હસકી સમાપ્તિ હુઈ તો દ્વિતીય ચતુર્થાદિ તપસ્યા પ્રારંભ કર દી યહાં પ્રથમ તપસ્યાકા જો અન્ત હૈ વહ એક કોટિ હૈ ઓર દ્વિતીય તપસ્યાકા જો પ્રારંભ હૈ

રહે છે આ પ્રકારનો વિચાર કરીને પર્યુષણાદિકાળે ધારણ કરવા યોગ્ય પ્રત્યાખ્યાનને પર્યુષણ વ્યતીત થઈ ગયા બાદ ધારણ કરવામાં આવે, તો તે પ્રત્યાખ્યાનને અતિક્રાન્ત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ પજ્જોસવણાણ તવં ” ઇત્યાદિ

કોટિસહિત પ્રત્યાખ્યાન—એક તપસ્યા પૂરી થયા બાદ તુરંત જ બીજી તપસ્યાનો પ્રારંભ કરવો તેનું નામ કોટિસહિત પ્રત્યાખ્યાન છે. જેમ કે કોઈ તપસ્વીએ પહેલાં ચતુર્થાદિની (એક ઉપવાસ આદિની) તપસ્યા કરી. તે તપસ્યાની સમાપ્તિ થતાં જ તેણે દ્વિતીય ચતુર્થાદિની તપસ્યાનો પ્રારંભ કરી દીધો. તો તેણે કોટિસહિત પ્રત્યાખ્યાન કર્યા ગણાય. અહીં પહેલાં તપસ્યાનો જે અન્ત છે તેને એક કોટિ કહેવાય છે અને બીજી તપસ્યાના પ્રારંભને બીજી કોટિ કહેવાય છે આ પ્રમાણે

ચતુર્થાદેરાદિર્વિભાગોઽપરા કોટિરિત્યેતાભ્યાં દ્વાભ્યાં કોટિભ્યાં સહિતં=યુક્તં
કોટીસહિતં-સંયુક્તં દ્વિવિધ પ્રત્યાખ્યાનકોટેશ્ચતુર્થમક્તાદેઃ કરણમિત્યર્થઃ। તદુક્તમ્—

“ પટ્ટવળઓ ઉ દિવસો, પચ્ચક્ષાણસ્સ નિટ્ટવળઓ ય ।

જહિયં સમિતિં દુન્નિં ઉ, તં મન્નં કોડિસહિયં તુ ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—પ્રસ્થાપનકસ્તુ દિવસઃ પ્રત્યાખ્યાનસ્ય નિષ્ઠાપનકથા ।

યત્ર સમિતો દ્વૌ તુ, તદ્ મળ્યતે કોટિસહિતં તુ ॥ ૧ ॥ इति । ૩॥

‘ સમિતઃ ’ इति पूर्वकस्य ‘ इण ’-धातोर्लटि द्विवचने रूपम् ।

તથા—નિયન્ત્રિતમ્—નિ=નિતરામ્ — અતિશયેન યન્ત્રિતં=પ્રતિજ્ઞાતદિવસે
ગ્લાનત્વાદિ વિઘ્નસદ્ભાવેઽપિ નિયમતઃ કર્તવ્યં યત્તત્ પ્રત્યાખ્યાનં નિયન્ત્રિતમ્ ।
તદુક્તમ્—

“ માસે માસે ય તવો, અમુગો અમુગદિવસે ય એવહ્યો ।

હટ્ટેણ ગિલાલેણ વ, કાયવ્યો જાવ ઋસાસો ॥ ૧ ॥

एयं पच्चक्खणं, नियंटियं धीरपुरिषपन्नं ।

जं गिण्हंतऽणगारा, अणिसियप्पा अपडिवद्धा ” ॥ ૨॥

વહ દ્વિતીય કોટિ હૈં હસ પ્રકાર પ્રથમ કોટિ ઓર દ્વિતીય કોટિસે યુક્ત
ચતુર્થ મક્તાદિકા કરનાં વહ કોટિ સહિત પ્રત્યાખ્યાન હૈં સો હી કહા હૈં—

“ પટ્ટવળઓ ઉ દિવસે ” इत्यादि ।

નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન—પ્રતિજ્ઞાન દિવસમેં ગ્લાનત્વાદિ રૂપ વિઘ્નકે
સદ્ભાવમેં ઓ જો તપ નિયમસે કર્તવ્ય હોતા હૈં એસા વહ પ્રત્યાખ્યાન
નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન હૈં અર્થાત્ તકલીફમેં ઓ જો તપ ઓર પ્રત્યા-
ખ્યાનકો નહીં છોડતા હૈં વહ નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન હૈં ।

“ માસે માસે ય તવો ” इत्यादि ।

પહેલી કોટિ અને બીજી કોટિથી યુક્ત જે ઉપવાસ (ચતુર્થ ભક્ત) આદિ
કરવામાં આવે છે, તેનું નામ કોટિસહિત પ્રત્યાખ્યાન છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ પટ્ટવળઓ ઉ દિવસે ” इत्यादि

નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન—માંદગી આદિ વિદ્યો આવી પડે છતાં પણ જેટલા
માટે કોઈ તપસ્યા આદિ કરવાના પ્રત્યાખ્યાન કર્યા હોય તેટલા કાળ સુધી તે તપ
અને પ્રત્યાખ્યાન કર્યા હોય તેટલા કાળ સુધી તે તપ અને પ્રત્યાખ્યાનને ભંગ
ન થવા દેવો તેનું નામ નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન છે. એટલે કે ગમે તેવું વિદ્યો આવી
પડે તો પણ ધારણ કરેલા તપ અને પ્રત્યાખ્યાનને ત્યાગ ન કરનારના પ્રત્યાખ્યા-
નને નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ માસે માસે ય તવો ” इत्यादि—

ઢાયા—માસે માસે ચ તપોઽપુકમ્ અમુદિનસે ચ પ્તાવત્ ।

હૃષ્ટેન ગ્લાનેન વા કર્તવ્યં યાનદુચ્છવાસઃ ॥૧॥

પતત્ પ્રત્યાખ્યાનં નિયન્ત્રિતં, ધીરુરુપપ્રજ્ઞસમ્ ।

યદ્ ગૃહ્ણનોઽનગારા અનિશ્ચિતાત્માનોઽપતિવદ્ધાઃ ॥૨॥

તથા—સાકારમ્—આક્રિયન્તે इत्याकाराः=પ્રત્યાખ્યાનાપવાદહેતુવોઽનાભો-
ગાઘાઃ, તૈઃ સહિતં સાકારમ્ । અનાભોગાદિસહિતં પ્રત્યાખ્યાનમિત્યર્થઃ ॥૫॥ તથા—
અનાકારમ્—ન સન્તિ આકારાઃ=મહત્તરપરિષ્ઠાપનીયાદાકારાઃ પ્રત્યાખ્યાનગ્રહીતુ-
ર્યસ્મિન્સતત્ પ્રત્યાખ્યાનમ્ અનાકારમ્ । મુખેઽઙ્ગુલ્યાદિપ્રક્ષેપસમ્ભાવનયાઽત્ર
પ્રત્યાખ્યાનેઽનાભોગ ગદસાકારનામાનો આકારો ભવતિ એવેતિ । ૬॥ તથા—પરિ-

જવ તરુ જેરે 'નીતર સાંસ' હૈ તથ તરુ મેં 'ચાહે' સ્વસ્થ 'હોઝ' 'ચાહે'
અસ્વસ્થ 'હોઝ' 'કિની' ઓ 'અવસ્થા'મેં 'નયો' ન 'હોઝ' અમુક અમુક મહિનેમેં
અમુક ૨ દિવસમેં 'इननी' તપસ્યા 'તો' અવશ્ય 'હી' કરુગા 'એસે' નિયમસે
વદ્ધ 'હોકર' જો 'मुनिजन' તપસ્યા 'કરતે' હૈ 'વહ' નિયન્ત્રિત પ્રત્યાખ્યાન હૈ ।

સાકાર પ્રત્યાખ્યાન—પ્રત્યાખ્યાનકે અપવાદકે હેતુભૂત જો અના-
ભોગ આદિ હૈં 'वे' આકાર શબ્દસે ગૃહીત હુએ હૈં 'इन' આકારોસે સહિત
જો પ્રત્યાખ્યાન હૈ 'वह' સાકાર પ્રત્યાખ્યાન હૈ ।

અનાકાર પ્રત્યાખ્યાન—પ્રત્યાખ્યાન ગ્રહીતાકો 'जिसमें' મહત્તર (પર્યાય
ज्येष्ठ) પરિષ્ઠાપનીય આદિ આકાર નહીં 'होते' હૈં 'ऐसा' 'वह' પ્રત્યાખ્યાન
અનાકાર પ્રત્યાખ્યાન હૈ 'मुखमें' અઙ્ગુલી આદિકે 'डालनेकी' સમ્ભાવનાસે

“જ્યાં સુધી મારા શ્વાસોચ્છવાસ ચાલુ રહે ત્યાં સુધી કોઈ પણ અવસ્થામાં
(કોઈખીમારી આવી પડે અથવા ગમે તેવું) વિધન આવી પડે છતાં પણ) અમુક
અમુક મહિનાના અમુક અમુક દિવસોમાં હું આટલી તપસ્યા તો અવશ્ય કરીશ
જ ” આ પ્રકારના નિયમપૂર્વક જે મુનિજનો તપસ્યા કરે છે અથવા કોઈ પણ
પ્રકારના પ્રત્યાખ્યાન ધારણ કરે છે, તો તે પ્રત્યાખ્યાનને નિયન્ત્રિત પ્રત્યા-
ખ્યાન કહે છે.

સાકાર પ્રત્યાખ્યાન—પ્રત્યાખ્યાનના અપવાદના હેતુભૂત જે અનાભોગ આદિ
છે. તેમને અહીં 'आकार' શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. આ આકારોસહિત
જે પ્રત્યાખ્યાન છે તેને સાકાર પ્રત્યાખ્યાન કહે છે.

અનાકાર પ્રત્યાખ્યાન—પ્રત્યાખ્યાન લેનારને જેમાં મહત્તર (પર્યાય જ્યેષ્ઠ)
પરિષ્ઠાપનીય આદિ આકાર હોતા નથી, એવાં તે પ્રત્યાખ્યાનનું નામ અનાકાર
પ્રત્યાખ્યાન છે.

મુખમાં આંગળી આદિ નાખવાની સંભાવનાથી આ પ્રત્યાખ્યાનમાં અના-

માણકૃતમ્-પરિમાણં=પરિગણનં કૃતં દત્તિઋવલુગૃહમિશ્નાદીનાં યર્મિરતત્ પ્રત્યા-
ખ્યાનં પરિમાણકૃતમ્ । તદુક્તમ્—

“ દત્તીહિ વ કવલેહિં વ, ધરેહિં મિશ્નાદિં મહત્ત્વેહિં ।

જો મત્તપરિચ્ચાયં, કરેડ પરિમાણકૃતમેયં ॥૧॥ ”

છાયા—દત્તીમિશ્ના ક્વલૈર્ગૃ, ગૃહૈર્મિશ્નામિશ્નાદ્રવ્યૈઃ ।

યો મત્તપરિચ્ચાયં, કરોતિ પરિમાણકૃતમેતત્ ॥૧॥ ઇતિ ॥૭॥

તથા —નિરવશેષમ્-નિર્ગતમ્ અવશેષમ્=ન્યૂનાતિન્યૂનમપિ અશનાદિકં યર્મિ-
રતત્ । અથવા-નિરવશેષસ્ય=ચતુર્વિધસ્ય આહારસ્ય પરિત્યાગાન્નિરવશેષં પ્રત્યા-
ખ્યાનમ્ । તદુક્તમ્—

“ સઘ્વં અસળં સઘ્વં, ચ પાણગં સઘ્વત્ત્વજ્જપેઝ્જવિહિં ।

પરિહરડ સઘ્વભાવેણં, ઇયં માણિયં નિરવશેસં ॥૧॥ ”

હસ પ્રત્યાખ્યાનમેં અનામોગ એવં સહસાકાર નામકે દો આકાર તો
હોતે હી હેં । ષઠ્ઠ આદિ તપ ઓર સંધારા હન દોનોમેં ચઢોંકા આગાર
નહીં હોતા હૈ ।

પરિમાણ કૃત પ્રત્યાખ્યાન-જિસ પ્રત્યાખ્યાનમેં દત્તિયોંકી ઋવલોંકી
ગૃહોંકી એવં મિશ્ના આદિકોંકી ગિનતી કી ગઈ હોતી હૈ એસા વહ
પ્રત્યાખ્યાન પરિમાણ કૃત પ્રત્યાખ્યાન હૈ સો હી કહા હૈ—

“ દત્તીહિં વ કવલેહિં વ ” ઇત્યાદિ ।

નિરવશેષ પ્રત્યાખ્યાન-જિસ પ્રત્યાખ્યાનમેં ચતુર્વિધ આહારકા
ન્યૂનાતિન્યૂન અંશ પરિત્યક્ત હોતા હૈ એસા ચતુર્વિધ આહારકા ત્યાગ-
કરનેવાલા જો પ્રત્યાખ્યાન હોતા હૈ વહ નિરવશેષ પ્રત્યાખ્યાન હૈ—

બોગ અને સહસાકાર નામના બે આકાર તો હોય છે જ. છઠ્ઠ આદિ તપમાં
અને સંધારામાં મોટાઓનો આગાર હોતો નથી.

પરિમાણ કૃત પ્રત્યાખ્યાન-જે પ્રત્યાખ્યાનમાં આહારાદિની દત્તિઓની,
ઠાળીઓની, ધરોની અને મિશ્ના આદિકોની મર્યાદા નક્કી કરવામાં આવી
હોય છે, તે પ્રત્યાખ્યાનને પરિમાણકૃત પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—
“ દત્તીહિં વ કવલેહિં વ ” ઇત્યાદિ.

નિરવશેષ પ્રત્યાખ્યાન-જે પ્રત્યાખ્યાનમાં ચારે પ્રકારના આહારના ન્યૂનાતિ
ન્યૂન અંશનો પણ પરિત્યાગ કરવામાં આવે છે—એટલે કે ચતુર્વિધ આહારનો
પ્રત્યાખ્યાનમાં સંપૂર્ણતઃ પરિત્યાગ કરવામાં આવે છે, તે પ્રત્યાખ્યાનને
નિરવશેષ પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ સઘ્વં અસળં સઘ્વં ચ પાણગં ” ઇત્યાદિ—

છાયા—સર્વમશનં સર્વં, ચ પાનકં સર્વલાઘપેયત્રિધિમ્ ।

પરિહરતિ સર્વભાવેન, एतद् भणितं निरवशेषम् ॥૧॥ इति ॥૮॥

તથા—સકેતમ્—કેતઃ=કેતન-ચિહ્નમ્ અંગુષ્ઠમુષ્ટિગ્રન્થિગૃહાદિકં, તેન સહ-
વર્તતે યત્ પ્રત્યાખ્યાનં તત્, સકેતમ્ । તદુક્તમ્—

“ અંગુઠમુષ્ટિ ગંઠીધરસેઝસ્તાસ ધિબુગજોઢવલે ।

ભણિયં સકેયમેયં, ધીરેહિ અણંતળાળીહિ ॥૧॥ ”

છાયા—અંગુષ્ઠમુષ્ટિગ્રન્થિ ગૃહસ્વેદોન્ધ્રિસસ્તિબુક (જલબિન્દુ) જોતિષ્કમ્ (દીપ-
માશ્રિત્ય) । ભણિતં સકેતમેતદ્ ધીરેનન્તજ્ઞાનિભિઃ ॥૧॥ इति ।

હદં પ્રત્યાખ્યાનમભિગ્રહવિષયં વોધ્યમ્ । તથા—અદ્વાયાઃ=કાલસ્ય પૌરુષ્યાદિ-
રૂપસ્ય પ્રમાણમાશ્રિત્ય યત્ પ્રત્યાખ્યાનં તત્ અદ્વાપ્રત્યાખ્યાનમ્ । તદુક્તમ્—

“ સત્ત્વં અસત્ત્વં રાઘવં ચ પાળમં ” इत्यादि ।

સર્વ ભાવ શબ્દકા અર્થ હૈ મન, વચન ઓર કાય અર્થાત્ નિરવશેષ
પ્રત્યાખ્યાનમે ચારો પ્રકારકે આહારકા પરિત્યાગ મન, વચન ઓર કાયસે
તથા ચૌવિહાર તપસ્યા કરના.

સંકેત પ્રત્યાખ્યાન—કેત નામ ચિહ્નકા હૈ જો પ્રત્યાખ્યાન અંગુઠ,
મુષ્ટિ, ગ્રન્થિ एवं ગૃહાદિ રૂપ ચિહ્નસે સહિત હોતા હૈ, વહ સંકેત પ્રત્યા-
ખ્યાન હૈ કહા ઓ હૈ—“ અંગુઠમુષ્ટિગંઠીધર ” इत्यादि ।

સ્વેદ નામ પસીનાકા હૈ સ્તિબુ નામ જલ બિન્દુ કા હૈ । તથા જોતિ-
ષ્કસે યહાં દીપકી રોશની લીહૈ । યહ પ્રત્યાખ્યાન અભિગ્રહ વિષયક હોતાહૈ ।

અદ્વા પ્રત્યાખ્યાન—પૌરુષી આદિરૂપ કાલકો આશ્રિત કરકે જો
પ્રત્યાખ્યાન હોતા હૈ વહ અદ્વા પ્રત્યાખ્યાન હૈ કહા ઓ હૈ—

આ ગાથામાં વપરાયેલા “ સર્વભાવ ” પદ દ્વારા એ સૂચિત થાય છે કે
નિરવશેષ પ્રત્યાખ્યાનમાં ચારે પ્રકારના આધારનો મન વચન અને કાયાથી પરિ-
ત્યાગ કરવો પડે છે તથા ચૌવિહાર તપસ્યા કરવી પડે છે.

સંકેત પ્રત્યાખ્યાન—‘ કેત ’ એટલે “ ચિહ્ન ” જે પ્રત્યાખ્યાન અંગુઠ, મુષ્ટિ,
ગ્રન્થિ, ગૃહ આદિ રૂપ ચિહ્નથી યુક્ત હોય છે તે પ્રત્યાખ્યાનનું નામ
સંકેત પ્રત્યાખ્યાન છે. કહ્યું પણ છે કે—“ અંગુઠ મુષ્ટિ ગંઠી ધર ” इत्यादि.
સ્વેદ એટલે પરસેવો. સ્તિબુ એટલે જળબિન્દુ, તથા જ્યોતિષ્ક એટલે દીપનો
પ્રકાશ. આ પ્રત્યાખ્યાન અભિગ્રહ વિષયક હોય છે.

અદ્વા પ્રત્યાખ્યાન—પૌરુષી (પ્રહર) આદિરૂપ કાળને અનુલક્ષીને જે પ્રત્યા-
ખ્યાન થાય છે તે પ્રત્યાખ્યાનને અદ્વા પ્રત્યાખ્યાન કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“અદ્વાપચ્ચક્ષણં, તં જં કાલપમાણચ્છેદનં ।
પુરિમદ્ધપોરિસીર્હિ, મુદ્ધુતમાસદ્ધમાસેર્હિ ॥૧॥ ”

છાયા—અદ્વાપત્યાખ્યાનં, તત્ યત્ કાલપમાણચ્છેદનં ।

પુરિમાર્દ્ધ પૌરુષીભિઃ, મુદ્ધર્ત્તમાસાર્દ્ધમાસૈઃ ॥૧॥ ઇતિ ॥૧૦॥

સ્થમિદં દશવિધં તુ=દશવિધમેવ પ્રત્યાખ્યાનં વિજ્ઞેય, ન તુ તતોડધિકમિતિ ।
તુ શબ્દોડવધારણાર્થકોડત્ર વોદ્ય ઇતિ ॥ સૂ૦ ૫૩ ॥

પ્રત્યાખ્યાનં દશવિધત્વેન પૂર્વમૂત્રે નિરૂપિતમ્ । પ્રત્યાખ્યાનં ચ સાધુસામાચારીતિ સામાચારીં દશવિધત્વેન બિરૂપયતિ—

મૂલમ્—દસવિહા સામાચારી પળ્લતા, તં જહા—ઇચ્છા ૧
મિચ્છા ૨ તહક્કારો ૩ આવસ્સિયા ૪ નિલીહિયા ૫। આપુચ્છના
૬ ય પહિપુચ્છા ૭ છંદના ૮ ય નિમંતળા ૯ ॥૧॥ ઉવસંપયા
૧૦ ય કાલે સામાચારી ભવે દસવિહા ૩ ॥ સૂ૦ ૫૪ ॥

છાયા—દશવિધા સામાચારી પ્રજ્ઞતા, તથા—ઇચ્છા ૧ મિથ્યા ૨ તથાકારઃ
૩ આવશ્યકી ૪ નૈવેધિકી ૫। આપચ્છના ૬ ચ પ્રતિપૃચ્છા ૭ છન્દના ૮ ચ
નિમન્ત્રણા ૯ ॥૧॥ ઉપસમ્પત્ ૧૦ ચ કાલે સામાચારી ભવેદ્ દશવિધા તુ ॥સૂ૦ ૫૪॥

ટીકા—‘દસવિહા સામાચારી’ ઇત્યાદિ—

સમાચરણં સમાચારઃ—શિષ્યજનાવરિતઃ ક્રિયાક્રત્યાપઃ સ એવ સામાચારી,

“અદ્વાપચ્ચક્ષણં જં” ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રકારસે યે ૧૦ પ્રકારકે હી પ્રત્યાખ્યાન હોતે હૈ, ઇનસે અધિક પ્રત્યાખ્યાન નહીં હોતેહીં । યહાં “તુ” હસી અવધારણ અર્થમેંભાયા હૈ ૫૩।

હસ પ્રકારસે ૧૦ પ્રકારકા પ્રત્યાખ્યાન કહ કર અવ સૂત્રકાર પ્રત્યાખ્યાન સાધુ સામાચારી રૂપ હોનેસે ૧૦ પ્રકારકી સાધુ સામાચારીકા કથન કરતેહીં—“દસવિહા સામાચારી પળ્લતા” ઇત્યાદિ ॥ સૂ૦ ૫૪ ॥

ટીકાર્થ—સામાચારી ૧૦ પ્રકારકી કહી ગઈહૈ, શિષ્યજનોં દ્વારા આચરિત

“અદ્વા પચ્ચક્ષણં” ઇત્યાદિ. આ પ્રમાણે દસ પ્રકારના જ પ્રત્યાખ્યાન હોય છે. આ દસ પ્રકારના અધિક પ્રકારના પ્રત્યાખ્યાન હોતા નથી. અહીં “તુ” પદ અવધારણાર્થે વપરાયું છે. ॥ સૂત્ર ૫૩ ॥

ટીકાર્થ—આગલા સૂત્રમાં દસ પ્રકાર કરતાં પ્રત્યાખ્યાનોનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. પ્રત્યાખ્યાન સાધુસામાચારી રૂપ હોવાથી હવે સૂત્રકાર દસ પ્રકારની સાધુ સામાચારીનું કથન કરે છે—“દસવિહા સામાચારી પળ્લતા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૫૪)

સ્વાર્થે ઇયન્ પિત્વાન્હીપ્ । સા દશવિધા પ્રજ્ઞતા, તથા-ઈચ્છા મિથ્યેત્યાદિ ।
અત્ર-કૃત દ્વન્દ્વસમાસાનામ્ ઇચ્છામિથ્યા તથાશબ્દાનાં કારશબ્દેન સહ સમ્બન્ધઃ ।
તતશ્ચ-ઈચ્છાકારો મિથ્યાકારસ્તથાકાર ઇતિ ત્રીણિપદાનિ ભવન્તિ । તત્ર-ઈચ્છા-
કારઃ-ઈચ્છાયા વલામિયોગમન્તરેણ કરણમ્ ॥૧॥ મિથ્યાકારઃ-મિથ્યા="યદે-
તન્મયા કૃતં તદસ'-દિતિ મનસિ કરણમ્ । કર્મિશ્ચિદકૃત્યે કર્મણિ કૃતે સતિ
ભવ્યેનૈવં ચિન્ત્યતે-"યદિદં મયા કૃતં તદ્ ભગવતાઽનુક્તવાદ્ મિથ્યાભૂતમ્,
જો ક્રિયા કલોપ હૈ, उसका नाम समाचार है, समाचारसे स्वार्थमें
इयन् प्रत्यय करने पर सांभाचार ऐसा शब्द बन जाता है, बादमें डीष्
प्रत्यय करनेसे साभाचारी बन जाता है, यह साभाचारी जो १० प्रका-
रकी कही गई है, वह इच्छा १ मिथ्या २ तथाकार ३ आवश्यक ४,
नैषेधिकी ५, प्रच्छना ६, प्रतिपृच्छा ७, छन्दना ८, निमंत्रणा ९ और
उपसंपत् १० इस नामोवाली है, तथा के साथ आया हुआ कार शब्द
इच्छा और मिथ्या इन शब्दोंके साथ लगा लेना चाहिये, क्योंकि इच्छा,
मिथ्या, तथा शब्दोंमें द्वन्द्व समास हुआ द्वन्द्व समासमें जो शब्द आदि
या अन्तमें आता है, वह समासान्तर्गत सब शब्दोंके साथ लगाया
जाना है, इस नियमके अनुसार इच्छाकार, मिथ्याकार ये इस प्रकारके
पद बन जाते हैं, जिस साभाचारीमें जर्बर्दस्ती किये बिना स्वयं ही
इच्छा की जाती है, वह साभाचारी इच्छाकार है ।

સામાચારી દસ પ્રકારની કહી છે. શિષ્યજનો દ્વારા આચરિત જે ક્રિયા
કલાપ છે તેનું નામ સામાચાર છે તે સામાચારયુક્ત ક્રિયાનું નામ સામાચારી
છે. તેના નીચે પ્રમાણે દશ પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) ઇચ્છા (ઇચ્છાકાર) (૨) મિથ્યા (મિથ્યા
કાર), (૩) તથાકાર, (૪) આવશ્યક, (૫) નૈષેધિકી, (૬) આપ્રચ્છના, (૭) પ્રતિપૃચ્છા,
(૮) છન્દના, (૯) નિમંત્રણા અને ઉપસંપત્ત્રીજ પ્રકારની સામાચારીમાં જેમતથાની
સાથે કાર શબ્દ જોડવામાં આવ્યો છે, એજ પ્રમાણે ઇચ્છા અને મિથ્યા પદ સાથે
પણ કાર શબ્દ લગાડવો જોઈએ, કારણ કે ઇચ્છા, મિથ્યા અને તથા, આ ત્રણે
પદોનો દ્વન્દ્વસમાસ બન્યો છે. એવો નિયમ છે કે દ્વન્દ્વ સમાસમાં જે શબ્દ
આદિ કે અન્તમાં આવે છે, તે શબ્દને સમાસના દરેક શબ્દોની સાથે લગા
ડવો પડે છે આ નિયમ પ્રમાણે ઇચ્છાકાર, મિથ્યાકાર અને તથાકાર પદો બને છે.

ઇચ્છાકાર-જે સામાચારીમાં જબર્દસ્તી (જેર તલબી) કર્યા વિના જાતે
જ ઇચ્છા કરાય છે તે સામાચારીનું નામ ઇચ્છાકાર છે.

અગ્ર મયેદં દુષ્કૃત કૃત ”-મિત્યેવ ચદમત્ક્રિયાતો નિવૃત્તિઃ સ મિથ્યાકાર इति ॥૨॥ તથાકાર:-સૂત્રવ્યાખ્યાનાદૌ પ્રાપ્તે ગુરુભિઃ કસ્મિંશ્ચિદ વચસ્યુદીરિતે સતિ “ યથૌ ભવન્ત ઉદીરગન્તિ તથૈવૈતત્ ” ઇત્યેવ કરણમ્ વિતર્કમકૃત્યૈવ ગુર્વાજ્ઞાઽ-
શ્યુપગમ इत्यर्थ ॥૩॥ આવશ્યકી-જ્ઞાનાર્થમુપાદ્રવાદવચનં વહિર્ગમને સમુપસ્થિતે

મિથ્યાકાર—“ જો મૈને યહ (અતિચાર-પાપ) ક્રિયા હૈ, વહ મેરા કાર્યે મિથ્યાનિષ્ફલ હો જાઓ ” એસી જો વિચારધારા મનમેં ઉટનીહૈ, વહ મિથ્યાકાર માપ્રાચારી હૈ, યહ મિથ્યાકાર ઝમ સમય હોતા હૈ, જવ કોઈ અકૃત્ય કર્મ સેવિત હો જાતા હૈ, ડસ સમય વહ અવધ એસા વિચાર કરના હૈ, કિ જો યહ કાર્ય મૈને ક્રિયા હૈ, વહ ભગવાન્કે ઢાગ અનુક્રા હોનેકે કારણ મિથ્યારૂપ હૈ, કિમ્મી મૈને હસે અજ્ઞાન એવં પ્રમાદાદિકે વશવર્તી હોકર કર દિયા હૈ-અતઃ મેરા યહ દુષ્કૃત્ય મિથ્યા હો જાઓ-હસ પ્રકારસે જો અસત્ક્રિયાસે (અકલ્પનીય કાર્યસે) નિવૃત્તિ હૈ, વહ મિથ્યાકાર હૈ ૨. તથાકાર-ગુરુજનોં દ્વારા જવ સૂત્રકા વ્યાખ્યાન આદિ ક્રિયા જાતા હો ડસ સમય ડનકે કથનમેં કિસી મી પ્રકારકી તર્કના ક્રિયે વિના હી “ હે અદન્ત ! આપ જો કહતે હૈ વહ એસા હી હૈ-” હસ પ્રકારકા કહના સો તથાકાર હૈ, અર્થાત્ વિતર્ક ક્રિયે વિના હી ગુરુકી આજ્ઞાકો સ્વીકાર કરના સો તથાકાર હૈ ૩।

મિથ્યાકાર-“ મેં આ જે અતિચાર (પાપ) કર્યો છે, તે મારા અતિચાર મિથ્યા હો,” આ પ્રકારની જે વિચારધારા મનમાં ઉત્પન્ન થાય છે તેનું નામ મિથ્યાકાર સામાચારી છે. જ્યારે કોઈ અકૃત્યનું (ન કરવા યોગ્ય પાપકર્મનું) સેવન થઈ જાય છે ત્યારે આ મિથ્યાકાર કરવામાં આવે છે. અકૃત્યનું સેવન થઈ જાય ત્યારે તે ભવ્ય જીવ એવો વિચાર કરે છે કે મેં આ જે કાર્ય કર્યું છે તે ભગવાન દ્વારા અનુક્રા હોવાને કારણે-એવું કરવાનો નિષેધ હોવાને કારણે-મિથ્યારૂપ છે છતાં પણ અજ્ઞાન, પ્રમાદ આદિને કારણે તે અકૃત્યનું મારા દ્વારા સેવન થઈ ગયું છે. તેથી મારું આ દુષ્કૃત્ય મિથ્યા હો આ પ્રકારે અસત્ક્રિયામાંથી અકલ્પનીય કાર્યમાંથી-જે નિવૃત્તિ થાય છે તેનું નામ મિથ્યાકાર છે.

તથાકાર-ગુરુજનો દ્વારા જ્યારે સૂત્રનું વ્યાખ્યાન આદિ કરાતું હોય, ત્યારે તેમના કથન સામે કોઈ પણ પ્રકારની કલોલ અથવા વિતર્ક કર્યા વિના એવું કહેવું કે “ હે ભગવન ! આપ જે કહો છો તે યથાર્થ જ છે,” તેનું નામ તથાકાર છે. એટલે કે કોઈ પણ પ્રકારનો વિતર્ક કર્યા વિના જ ગુરુની આજ્ઞાને સ્વીકાર કરવો તેનું નામ ‘તથાકાર’ છે.

‘અવશ્યમિદં કર્તવ્યમતોડહં ગચ્છામિ’ इत्येवं या गुरुं प्रति निवेदना साऽऽवश्यकीति तात्पर्यम् ॥४॥ नैषेधिकी-निषेधे भवा नैषेधिकी-उपाश्रयाद् बहिः कर्तव्यव्यापारं परिसमाप्य पुनस्तत्रैव प्रविशतः साधोः शेषसाधूनामुत्त्रासादिदोषपरिजिहीर्षया बहिर्व्यापारनिषेधेन उपाश्रयप्रवेशसूचनम् ॥५॥ आप्रच्छना-“अदन्त ! करोमीदम्” इति गुरुं प्रति प्रच्छनम् ॥६॥ प्रतिपृच्छा-किंचित्कर्तव्यमुद्दिश्य शिष्येण पृष्ठो-गुरुस्तत्कार्यं प्रतिपिद्धवान् पुनः किंचित् कालं स्थित्वा शिष्यः कथयति-“अत्रेदं चेदं च कारणमस्ति, अतो यदि पूज्या आदिशन्ति तदा

આવશ્યકી-જ્ઞાન આદિકે નિમિત્તે યદિ ઉપાશ્રયકે બાહર અવશ્ય જાના પહે તો ऐसी स्थितिसे गुरुजनसे ऐसा निवेदन करना कि यह कार्य आवश्यक है, अतः मैं जाना हूं यह आवश्यक है ४।

नैषेधिकी-उपाश्रयसे बाह्यके कर्तव्य कार्यको समाप्त कर पुन उपाश्रयमें प्रवेश करनेवाले उस साधुको, शेष साधुजनोंके उद्वेग आदि दोषोंकी निवृत्तिके लिये अपने उपाश्रयमें आनेकी सूचना देना और अथ मुझे बाहर कोई काम नहीं है ऐसा कहना नैषेधिकी है ५।

आप्रच्छना-हे अदन्त ! मैं यह कार्य करता हूं ऐसा गुरुसे पूछना सो आप्रच्छना है ६।

प्रतिपृच्छा-किसी कार्यको करनेके लिये गुरुसे पूछना और यदि वे उस कार्य करनेकी आज्ञा नहीं देते हैं, पुनः कुछ देर तक ठहर कर ऐसा कहना कि हे अदन्त ! यह कार्य आवश्यक है और इसमें ये ये

આવશ્યકી-જ્ઞાન આદિને નિમિત્તે જે ઉપાશ્રયની બહાર જવું પડે તેમ હોય તો ગુરુને એવી વિનંતિ કરવી કે “આ કાર્ય આવશ્યક છે, તેથી હું જઉં છું,” તેનું નામ “આવશ્યકી” છે.

નૈષેધિકી-ઉપાશ્રયની બહાર ગયેલો સાધુ પોતાના બહારના કાર્ય પૂર્ણ કરીને જ્યારે ઉપાશ્રયમાં પાછો ફરે, ત્યારે તેણે ખીલ સાધુઓનો ઉદ્વેગ આદિ દોષોની નિવૃત્તિને માટે પોતે ઉપાશ્રયમાં આવી જવાની સૂચના આપવી પડે છે અને હવે તેને બહારનું કોઈ કામ બાકી રહ્યું નથી એવું જે કહેવું પડે છે તેનું નામ નૈષેધિકી છે.

આપ્રચ્છના-“હે શગવન ! હું આ કાર્ય કરું છું,” આ પ્રકારે ગુરુની અનુજ્ઞા લઈને કામ કરવું તેનું નામ આપ્રચ્છના છે.

પ્રતિપૃચ્છા-કોઈ કાર્ય કરવા માટે ગુરુની આજ્ઞા માગવામાં આવી હોય અને ગુરુ દ્વારા તે માટે આજ્ઞા દેવામાં ન આવી હોય તો થોડી વાર થોડી

કરોમિ ” ઇત્યેવં કાર્યકરણસમયે ચ્દ ગુરું પ્રતિ પુનઃ પ્રચ્છતં સા પ્રતિપૃચ્છા ।
અથવા—ગ્રામાન્તરગમનાય ગુરુનાઽઽદિષ્ટઃ શિષ્યો ગમનકાલે ચત્પુનર્ગુરું પ્રતિ
પૃચ્છતિ સા પ્રતિપૃચ્છા । એવં પ્રત્યેકં કાર્યે પ્રતિપૃચ્છા વિજેયા ॥ ૭ ॥ છન્દના-
સાધુઃ સ્વાનીતાશનાદુપભોગવિવચે ગુર્વાણ્યા “ પરિશુદ્ધવેદં કુરુ મયિકૃપામ્ ”
ઇત્યેવં ચથારાત્નિકમન્યસાધૂન્ પ્રતિ આગ્રહં કરોતિ સા છન્દના ॥ ૮ ॥ નિમન્ત્રણા-
—“ ઇમં પદાર્થમુપલભ્યાહં તુભ્યં દાસ્યામિ ” ઇત્યેવં પદાર્થપ્રાપ્તેઃ પૂર્વમેવ ચત્સાધુ-
નામામન્ત્રણં સા નિમન્ત્રણા । ઉક્તં ચ—

કારણ હૈં અનઃ આપ પૂજ્ય યદિ હમૈં આજ્ઞા દેતે હૈં તો મૈં ઇસે કર લૂં
હસ તરહસે કાર્ય કરનેકે સમયમૈં જો ગુરુસે પુનઃ પૂછતા હૈં વહ પ્રતિ-
પૃચ્છા હૈ । અથવા ગ્રામાન્તર જાનેકી ગુરુને આજ્ઞા દી હો તો વહ શિષ્ય
જો પુનઃ ગમન કાલમૈં ગુરુસે પૂછતા હૈ વહ પ્રતિપૃચ્છા હૈ, ઇસી તર-
હસે પ્રત્યેક કાર્યમૈં પ્રતિપૃચ્છા સમજ લેના ચાહિયે ૭।

છન્દના-સાધુ જો અપને લિયે આહાર આદિ લાયા હો વસકે
ઉપભોગકે વિષયમૈં ગુરુકી આજ્ઞા લેકર જો ચથારાત્નિક અન્ય સાધુ
જનોસે એસા આગ્રહ કરકે કહતા હૈ કિ “ આપ ઇસે લીજિયે, મેરે
ઉપર કૃપા કીજિયે ” ઇસકા નામ છન્દના હૈ ૮।

નિમન્ત્રણા—“ ઇસ પદાર્થકો લા કરકે મૈં આપકે લિયે દુંગા ” ઇસ
પ્રકારસે પદાર્થ પ્રાપ્તિકે પહિલે હી જો સાધુજનોકો આમંત્રણ કર દેના
વહ નિમંત્રણ હૈ ૯ સોહી કહા હૈ—

જઈને ફરીથી ગુરુને એવું કહેવું કે “ હે ભગવન્ ! આ કાર્ય આવશ્યક છે અને
આ કારણેને લીધે તે કરવા યોગ્ય છે. તો આપ મને અનુજા આપો તો હું
તે કાર્ય કરું ” આ પ્રકારે કાર્ય કરતી વખતે ગુરુને જે ફરીથી પૂછવામાં આવે
છે તેનું નામ પ્રતિપૃચ્છા છે અથવા—ગ્રામાન્તરમાં જવાની ગુરુએ આજ્ઞા ફરમાવી
છે. એજ પ્રમાણે પ્રત્યેક કાર્યવિષયક પ્રતિપૃચ્છનાના વિષયમાં પણ સમજવું.

છન્દના-સાધુ પોતાને માટે જે આહાર વહોરી લાગ્યા હોય તેના ઉપભોગને
માટે ગુરુની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને અન્ય સાધુજનોને તે સાધુ એવી વિનંતિ કરે છે
કે “ આપ કૃપા કરીને અહણુ કરો ” આ પ્રકારના સાધુના આચારનું
નામ છન્દના છે.

નિમંત્રણા—“ આ પદાર્થ લાવીને હું આપને આપીશ, ” આ પ્રકારે
પદાર્થની પ્રાપ્તિ થયા પહેલાં જ સાધુજનોને જે આમંત્રણ કરી દેવામાં આવે છે
તેનું નામ નિમંત્રણા છે કહ્યું પણ છે કે—

“ પુલ્લગ્ગહિણ છંદના, નિમંત્રણા હોદ્દ આમહીણં । ”

હાયા—પૂર્વગૃહીતેન છન્દના, નિમન્ત્રણા ભવતિ અગૃહીતેન ॥ ૧૧ ॥

તથા—ઉપસમ્પત્—“ ત્વદીયોઽહમ્ ’ ઇત્યાદિ રૂપેણાન્યસત્તાઽભ્યુપગમઃ ॥ ૧૦ ॥ ઇતિ ।

સામાચાર્યાઃ ક્રમવિન્યાસસ્ત્વેવમ્—૩૬ ધર્મસ્ય પરાનુપતાપમૂલત્વાત્ ઇચ્છાકારસ્ય આજ્ઞાવલાભિયોગલક્ષણપરોપપાતવર્જકત્વાત્ પ્રાધાન્યેન પ્રથમમુપન્યાસઃ ૧।

“ પુલ્લગ્ગહિણ છંદના ” ઇત્યાદિ ।

ઉપસમ્પત્—“ મੈં તો આપકા હી હૂં ” ઇત્યાદિ રૂપસે જો અપનેમેં દૂસરેકી સત્તાકા અભ્યુપગમ્ હૈ, વહ ઉપસમ્પત્ હૈ, અર્થાત્ જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર આદિકે લિયે ગુરુકી સેવા કરના ૧૦।

હસ સાધુ સામાચારીકા જો હસ પ્રકારકે ક્રમસે વિન્યાસ છુઝા હૈ, સો ઉસકા કારણ હસ પ્રકારસે હૈ—પરકો કિસી મી તરહસે વાધા ન હો એસે વિનય સૂલવાલા ધર્મ હોતા હૈ—અતઃ ઇચ્છાકારકા હસીલિયે પ્રથમ ઉપન્યાસ કિયા ગયા—ક્યોંકિ જહાં કોઈ મી વસ્તુ ઇચ્છાકે અભાવમેં જબદસ્તીસે ગ્રહણ કરાઈ જાતી હૈ, વહાં જીવકો સંકલેશ પરિણામ હો જાનેકે કારણ ઉસકો ઉપતાપ—સંતાપ હોતા હૈ, ઇચ્છાકારમેં જીવ સ્વયં હાર્દિક ઉત્લાસસે ક્રિયાઓંકો ગ્રહણ કરનેકી અપની ઇચ્છા

“ પુલ્લગ્ગહિણ છંદના ” ઇત્યાદિ

ઉપસમ્પત્—“ હું તો આપનો જ છું, ” ઇત્યાદિકથન દ્વારા ખીજની સત્તા (પ્રભાવ)નો સ્વીકાર કરવો તેનું નામ ઉપસમ્પત્ છે. અથવા જ્ઞાન, દર્શનચારિત્ર આદિને માટે ગુરુની સેવા કરવી તેનું નામ ઉપસમ્પત્ છે.

સાધુ સામાચારીનું આ પ્રકારના ક્રમે જે નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે તેનું કારણ નીચે પ્રમાણે છે—

અન્યને કોઈ પણ પ્રકારે પોતાના તરફથી પાધા (મુશ્કેલી) ન રહે, એવું વિનયમૂળવાળા ધર્મનું લક્ષણ ગણાય છે. અહીં ઇચ્છાકારનો ઉપન્યાસ (નિર્દેશ) સૌથી પહેલાં કરવાનું કારણ એ છે કે—જ્યારે કોઈ પણ વસ્તુને ગ્રહણ કરવાની ઇચ્છા ન હોય છતાં પણ જો તે વસ્તુને બળબળરીથી કે ખોટા દમણથી ગ્રહણ કરાવવામાં આવે, તો ગ્રહણકર્તાને કલેશ થાય છે. પરંતુ જ્યારે કોઈ પણ પ્રકારના દમણ—વિના—પોતાની જ ઇચ્છાથી કોઈ વસ્તુ અથવા ક્રિયાને ગ્રહણ કરવામાં આવે છે ત્યારે જીવ ઉત્સાહપૂર્વક તેને ગ્રહણ કરે છે. આ રીતે ઇચ્છાકાર સામાચારીનો સદ્ભાવ હોય તો જીવ પોતાની હાર્દિક ઇચ્છા અને ઉમળકાથી ધાર્મિક પ્રવૃત્તિ કર્યા કરે છે. માટે ઇચ્છાકારનો ઉપન્યાસ કૌથી પહેલા કરવામાં આવ્યો છે. ઇચ્છાકાર પૂર્વક કરાતી ક્રિયાઓમાં કોઈ અતિચાર (દોષ) લાગી જાય, તો

પરાનુપતાપકેનાપિ ચ કથંચિત્ સ્વલ્ને મિથ્યાદુષ્કૃતં દાતવ્યમિતિ તદનન્તરં
મિથ્યાકારસ્યોપન્યાસઃ ।૨। એતૌ ચ ગુરુવચનપ્રતિપત્તાવેવ જ્ઞાતું શક્યૌ, ગુરુવચનં
ચ તથાકારકરણેનૈવ સમ્યક્પ્રતિપન્નં ભવતીતિ તદનન્તરં તથાકારસ્યોપન્યાસઃ
૩। ગુરુવચનં સ્વીકૃત્યાપિ શિષ્ય ઉપાશ્રયાદ્ વહિર્નિર્ગમનકાલે ગુરું પૃથ્વૈવ નિર્ગ-
ચ્છેત્, અતસ્તથાકારાનન્તરં ગુરુપૃચ્છારૂપાયાં આવશ્યકયાઃ કથનમ્ ૪। વહિર્નિ-
ર્ગતઃ શિષ્યો નૈષેધિકીપૂર્વકમેવોપાશ્રયે પ્રવિશેદિતિ આવશ્યકયા અનન્તરં નૈષેધિકયાઃ
કથનમ્ ૫। તતઃ કિંચિત્કાર્યં કર્તું પ્રવૃત્તઃ શિષ્યો ગુરું પૃચ્છતીતિ નૈષેધિકયા અન-

પ્રકટ કરતા હૈ ૧, તો એસી સ્થિતિમેં વહ અપને આપકો સંભાલનેકે
લિયે મિથ્યાદુષ્કૃત દેના હૈ, હસલિયે દ્વિતીય નમ્બરમેં હસે સ્થાન દિયા
ગયા હૈ ૨ ઇચ્છાકાર ઓર મિથ્યાદુષ્કૃત યે દોનોં ગુરુકે વચનકી
સ્વીકૃતિમેંહી જાન સકતે હૈં, ક્યોંકિ તથાકાર કરનેસે ગુરુવચન અચ્છી
તરહસે સ્વીકૃત હોતે હૈં, હસીલિયે ઉસકે વાદ તથાકાર ઉપન્યાસ કિયા
ગયા હૈ ૩, ગુરુ વચનકો સ્વીકૃત કરકે ખી શિષ્ય જવ ઉપાશ્રયસે વાહર
જાને લગે તો ઉસકા એસા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ગુરુ આજ્ઞા અવશ્ય ૨
જાનેકે લિયે પ્રાપ્ત કરે હસી વાતકો સૂચિત કરનેકે લિયે તથાકારકે
વાદ ગુરુ પૃચ્છા રૂપ આવશ્યકીકા કથન હુઆ હૈ ૪। વાહરસે અપના
કર્તવ્ય કાર્ય સમાપ્ત કરકે જવ શિષ્ય પુનઃ ઉપાશ્રયકે ખીતર પ્રવિષ્ટ
હોતા હૈ તો વહ નૈષેધિકી પૂર્વક હી ઉપાશ્રયમેં પ્રવિષ્ટ હો હસી વાતકો
સૂચિત કરનેકે લિયે આવશ્યકીકે અનન્તર નૈષેધિકીકા કથન હુઆ
હૈ, જો કુહ ખી કર્તવ્ય કાર્ય શિષ્ય કરતા હૈ, તો ઉસકા યહ અવશ્ય

૭૭ પોતાની શ્રુતિ સુધારી લેવાને માટે ‘તે હુશ્કૃત્ય મિથ્યા હો,’ એવી ઉત્કટ
ધ્વજી પ્રકટ કરે છે. તેથી મિથ્યાકારને ખીજે નંબર આપવામાં આવ્યો છે. ધ્વજી
કાર અને મિથ્યાદુષ્કૃત, એ બન્ને ગુરુના વચનનો સ્વીકાર કરવાથી જ સંભવી
શકે છે. “આપની વાત યથાર્થ છે,” આ પ્રકારે તથાકાર કરવાથી જ ગુરુના વચ
નોની સંપૂર્ણતા સ્વીકૃતિ થાય છે તેથી જ મિથ્યાકારનો ઉપન્યાસ કર્યા બાદ
તથાકારનો ઉપન્યાસ કરવામાં આવ્યો છે. ગુરુની અનુજ્ઞા સ્વીકારીને શિષ્ય જ્યારે
ઉપાશ્રયની બહાર જાય ત્યારે પણ તેણે ગુરુની આજ્ઞા અવશ્ય લેવી જ જોઈએ
એ વાત પ્રકટ કરવા માટે તથાકારનું કથન કર્યા પછી તુરત જ ગુરુપૃચ્છારૂપ
આવશ્યકીતું કથન કરવામાં આવ્યું છે. ઉપાશ્રયની બહારનું પોતાનું કાર્ય
પતાવીને શિષ્ય જ્યારે ઉપાશ્રમાં પાછો ફરે ત્યારે નૈષેધિકીપૂર્વક જ ઉપાશ્રયમાં
પ્રવેશ કરે, એ વાતને સૂચિત કરવાને માટે આવશ્યકીતું કથન કરીને નૈષેધિકીતું

નતરમ્ આપ્રચ્છનાયાઃ કથનમ્ ૬। इत्थं शिष्येणापृष्टे गुरुस्तत्कार्यं नानुमोदित-
वान् । पुनः शिष्यस्तत्कार्यं प्रति गुरोरनुमतिं प्राप्तुकामः कारणप्रदर्शनपूर्वकं पुनः
पृच्छेदिति आप्रच्छनाया अनन्तरं प्रतिपृच्छायाः कथनम् ६। प्रतिपृष्टेन गुरुणाऽ
जुज्ञातः शिष्योऽशनाधानीय तत्परिभोगार्थं साधूनामन्त्रयेदिति तदनन्तरं छन्द-
नाया उपन्यासः ७। छन्दना तु गृहीत एवाशनादौ संभवेत् ८, अगृहीते तु निम-
न्त्रणैवेति छन्दनायाः अनन्तर निमन्त्रणाया उपन्यासः ९। इच्छाकारादि निमन्त्र-

ही कर्तव्य है कि वह बिना गुरुको पूछे न करे-गुरुसे पूछ करही करे
इसी बातको सूचिन करनेके लिये नैषधिकीके बाद आपृच्छनाका कथन
हुआ है ६, कर्तव्यकार्य करनेके लिए पूछे गये गुरुदेव यदि अपनी अनु-
मति उस कार्यको करनेकी नहीं देते हैं, तो शिष्यका यह कर्तव्य है
कि वह पुनः उस कार्यको उन्हें आवश्यक रूपसे निवेदित करे-और
जब वे अपनी आज्ञा प्रदान करें तभी शिष्य उस अपने आवश्यक
कार्यको करे-यही बात समझानेके लिये आपृच्छनाके बाद प्रतिपृच्छ-
नाका पाठ रखा गया है ७। गुरुसे आज्ञा प्राप्त कर आहारादिकी सामग्री
लाकर शिष्यको चाहिये कि वह उस अशनादिके उपभोगके लिए
साधुजनोंके लिये आमंत्रित करे यही बात समझानेके लिये उसके
बाद छन्दनाका पाठ रखा गया है ८। छन्दना जो होती है गृहीत हुए

કથન કરવામાં આવ્યું છે. શિષ્ય જે કોઈ કાર્ય કરે તે ગુરુને પૂછ્યા વિના
ન કરે, પરંતુ ગુરુની આજ્ઞા લઈને કરે, તે પ્રકટ કરવાને માટે નૈષેધિકીનું
કથન કર્યા બદ આપૃચ્છનાનું કથન કરવામાં આવ્યું છે આપૃચ્છનાનું કથન
કરવાનું કારણ એ છે કે કોઈ કાર્ય કરવા માટે ગુરુદેવ અનુમતિ ન આપે,
અને શિષ્યને એમ લાગતું હોય કે તે કાર્ય કરવું આવશ્યક છે, તો તેણે
ફરીથી ગુરુની અનુમતિ માગવી જોઈએ, તે કાર્ય કેવી રીતે આવશ્યક છે
તે ગુરુને સમજાવવું જોઈએ જે ગુરુદેવ તે કાર્ય કરવાની અનુમતિ પ્રદાન કરે તો
જ તે કાર્ય કરવું જોઈએ. આ રીતે આપૃચ્છના બાદ જ પ્રતિપૃચ્છનાનો પ્રસંગ
ઉપસ્થિત થતો હોવાથી તેનું કથન આપૃચ્છનાનું કથન કર્યા બાદ કરવામાં આવ્યું છે.

ગુરુની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને આહારાદિ સામગ્રી લાવ્યા બાદ તે આહારાદિ
સામગ્રીનો ઉપભોગ કરવા માટે સાલોગિક સાધુઓને આમંત્રિત કરવા જોઈએ.
એજ વાત પ્રકટ કરવાને માટે પ્રતિપૃચ્છનાનું કથન કર્યા બાદ છન્દનાનું કથન
કરવામાં આવ્યું છે. શ્રદ્ધા કરવામાં આવેલા આહારાદિના વિષયમાં જ આમંત્રણ

ગાન્તા સર્વાંપિ સામાચારી ગુરુસાધીપ્યમન્તરેણ ન જ્ઞાયતે ઇતિ સર્વાન્તે ઉપસ-
મ્પદ્ ઉપન્યાસઃ ૧૦ ઇતિ ॥ સૂ. ૫૪ ॥

પૂર્વોક્ત સામાચારી પ્રરૂપન્તશ્ચ ભગવાન્ મહાવીરસ્વામીતિ તત્સ્વપ્નમાશ્રિત્ય
દશ સ્થાનાન્યાહ—

મૂલમ્—સમળો ભગવં મહાવીરે છઠમત્થકાલિયાણ અંતિમ
રાઝ્યંસિ ઇમે દસ મહાસુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે, તં જહા-
ણં ચ ણં મહં ઘોરદિત્તરૂઢધરં તાલપિસાથં સુમિળે પરાજિયં
પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૧, ણં ચ ણં મહં સુક્કિલ્લપક્કલગં પુંસકો-
ઇલયં સુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૨, ણં ચ ણં મહં ચિત્ત-
વિચિત્તપક્કલગં પુંસકોઇલં સુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૩, ણં
ચ ણં મહં દામદુગં સવરયણામયં સુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે
૪, ણં ચ ણં મહં સેયં ગોવગ્ગં સુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે
૫, ણં ચ ણં મહં પડમસરં સવ્વઓ સમંતા કુસુમિયં સુમિળે
પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૬, ણં ચ ણં મહાસાગરં ઉમ્મીવીચિસ-
હસસકલિયં ધુયાહિં તિણ્ણં સુમિળે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૭,
ણં ચ ણં મહં દિળયરં તેયસા જલંતં સુમિળે પાસિત્તા ણં

અશનાદિમેંહી હોતી હૈ ઓર નિમંત્રણા અગૃહીત અશનાદિમેં હોતી હૈ,
હસી બાતકો પ્રકટ કરમેંકે લિયે છન્દનાકે વાદ નિમંત્રણાકા પાઠ રહ્યા
ગયા હૈ ૯। ઇચ્છાકારસે લેકર નિમંત્રણા તકકી યહ સમસ્ત સામાચારી
ગુરુકી સમીપતાકે વિના જાની નહીં જા સકતી હૈ હસલિયે સબકે
અન્તમેં ઉપસમ્પત્કા ઉપન્યાસ કિયા ગયા હૈ ॥ સૂત્ર ૫૪ ॥

—છન્દના—સંભવી શકે છે. પરન્તુ અગૃહીત આહારાદિના વિષયનાં નિમંત્રણાનો
સદ્ભાવ રહે છે. તેથી છન્દનાનું કથન કર્યા બાદ નિમંત્રણાનું કથન કરવામાં
આવ્યું છે—ઇચ્છાકારથી લઈને નિમંત્રણા પર્યન્તની સામાચારી ગુરુની સમીપતા
વિના જાણી શકાતી નથી, તે કારણે સૌથી છેલ્લું ઉપસમ્પત્તનું કથન કરવામાં
આવ્યું છે. ॥ સૂ. ૫૪ ॥

પડિબુદ્ધે ૮, એમં ચ ણં મહં હરિવૈરુલિયવન્નાભેણં નિયણં ણમં-
તેણં માણુસુત્તરં પઠવ્યં સઠ્ઠવો સમંતા આવેઢિયં પરિવેઢિયં
સુમિણે પાસિત્તા ણં પડિબુદ્ધે ૯। એમં ચ ણં મહં મંદરે પઠવણ
મંદરચૂલિયાઓ ઉવરિં સીહાસણવરગયમત્તાણં સુમિણે પાસિત્તા
ણં પડિબુદ્ધે ૧૦ ॥ સૂ ૦ ૫૫ ॥

છાયા—શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીર છદ્મસ્થકાલિક્યામન્તિમરાત્રો હમાન્ દશ
મહાસ્વપ્નાન્ દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ, તદ્યથા—એકં ચ સ્વલુ મહાન્તં ધોરદીપ્તરૂપધરં
તાલપિણાચં સ્વપ્ને પરાજિતં દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૧, એકં ચ સ્વલુ મહાન્તં શુક્લ-
પક્ષકં પુસ્કોક્કિલં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૨, એકં ચ સ્વલુ મહાન્તં ચિત્ર
વિચિત્રપક્ષકં પુસ્કોક્કિલં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૩, એકં ચ સ્વલુ મહત્ દામ-
દ્વિકં સર્વરત્નમયં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૪, એકં ચ સ્વલુ મહાન્તં પ્થેત-
ગોવર્ગં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૫, એકં ચ સ્વલુ મહત્ પશસરઃ સર્વતઃ સમ-
ન્તાત્ કુલુમિતં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૬, એકં ચ સ્વલુ મહાસાગરં ઝર્મિ-
વીચિસહસ્રકલિતં ધ્રુજાઘ્નાં તીર્ણં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૭, એકં ચ સ્વલુ
મહાન્તં દિનકરં તેજસા જ્વલન્તં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૮, એકં ચ સ્વલુ
મહાન્તં હરિવૈરૂર્ધ્વચર્ણામેન નિજક્રેન અન્ત્રેણ માણુસુત્તરં પર્વતં સર્વતઃ સમન્તાત્ આવે-
ષ્ટિતં પરિવેષ્ટિતં સ્વપ્ને દૃષ્ટ્વા પ્રતિબુદ્ધઃ ૯, એકં ચ સ્વલુ મહતિ મન્દરે પર્વતે મન્દર
ચૂલિયાઓ ઉપરિ સિંહાસનવરગતમ્ આત્માનં દૃષ્ટ્વા સ્વલુ પ્રતિબુદ્ધઃ ૧૦ ॥ સૂ ૦ ૫૫ ॥

ટીકા—‘સમણે ભગવં’ इत्यादि—

છદ્મસ્થકાલિક્યામ્=છદ્મસ્થકાલ સંવન્ધિન્યામ્ અન્તિમરાત્રો અન્તિમયામે
શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીર હમાન્=અનન્તરં વક્ષ્યમાણાન્ દશ મહાસ્વપ્નાન્=પ્રશ-

હસ પૂર્વેક્ત સામાચારીકે પ્રરૂપક ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી હુણ્હે અતઃ
અથ સૂત્રકારે ઉનકે સ્વપ્નોંકો, આશ્રિત કરકે ૧૦ સ્થાનોંકો કથન કરતે
હિં—“સમણે ભગવં મહાવીરે છદ્મસ્થ કાલિયાણ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૫૫ ॥

ટીકાર્થ—શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને છદ્મસ્થકાલ સમ્બન્ધ રાત્રિકે અન્તિમ

આગલા સૂત્રમાં સાધુસામાચારીની પ્રરૂપણ કરવામાં આવી છે તે સાધુ-
સામાચારીના પ્રરૂપક મહાવીર પ્રભુ હતા. તેથી સૂત્રકારે તે મહાવીર પ્રભુને કેવળ
જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પૂર્વે જે ૧૦ સ્વપ્નો આપ્યાં હતાં તે પ્રકર કરે છે—

“સમણે ભગવં મહાવીરે છદ્મસ્થકાલિયાણ” इत्यादि—(સૂ ૫૫)

ટીકાર્થ—પોતાની છદ્મસ્થાવસ્થાની છેલ્લી રાત્રીના છેલ્લા પ્રહરમાં શ્રમણ ભગવાન

स्तान् स्पृशन् दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धः=जागरितः । तद्यथा-ते स्वप्ना यथा-‘एकं च खलु महान्तं घोरदीप्तरूपधरम्’ इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा । नवरम्-महान्तं=विशालं घोरदीप्तरूपधरम्-घोरम्=अतिभयङ्करं दीप्तं=क्रोधाध्मातं यत् रूपं तद्वरम् । ‘दित्त’ इत्यस्य दृष्टेतिच्छायापक्षे=दृष्टम्=दर्पयुक्तमिति । तालपिशाचम् तालशृङ्गाद् दीर्घपिशाचम् पराजितं=मगवता स्वपराक्रमेण परास्तं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । इति प्रथमः स्वप्नः । १ । द्वितीयस्वप्ने शुक्लपक्षकम्=शुक्लपक्ष-युक्तं पुष्कोकिल=पुरुषजातीयं कोकिलम् २ । तृतीये चित्रविचित्रपञ्चकम्-चित्रेण=चित्रकर्मणा विचित्रो=विविधवर्णयुक्तौ पक्षौ यस्य स तथा तम् ३ । चतुर्थे दामद्विकम्=मालाद्वयम् ४ । पञ्चमे-श्वेतं गोवर्गम्=शुक्लं गोसमूहम् ५ । षष्ठे महत्=विशालं पद्मम्=रत्नानि यत्र जायन्ते तत् सरः । सर्वतः समन्तात्=वर्षासु दिक्षु विदिक्षु कुतुमितं कुपुमानि=रुमलरूपाणि पुष्पाणि संजातानि यत्र तत्तादृशम् ६ ।

प्रहरमें इन १० महा स्वप्नोंको देखा और देखकर वे प्रतिबुद्ध हुए वे १० महास्वप्न इस प्रकारसे हैं, प्रथम स्वप्नमें उन्होंने ऐसा देखा कि मैंने एक बहुतही विशाल मोटे-ताजे भयंकर पिशाचको परास्त कर दिया है, यह पिशाच ताड़के जैसा लम्बा-ऊँचा था, एवं क्रोधसे लाल, पीला हो रहा था अथवा अभिमानसे भरा हुआ था (१)

द्वितीय महास्वप्नमें उन्होंने एक दोनों पक्ष जिसके शुक्ल वर्ण-वाले हैं ऐसे पुरुषजातीय कोकिलको देखा (२)

तृतीय स्वप्नमें भी उन्होंने एक पुरुष जातीय कोकिलको ही देखा पर इसके दोनों पंख चित्रकर्मसे विविध वर्णोंसे युक्त हो रहे थे (३)

चतुर्थ स्वप्नमें उन्होंने दो सुन्दर मालाएँ देखी (४) पांचवें महा-स्वप्नमें सफेद वर्ण संयुक्त गायोंके समूहनो देखा (५) छठे महास्वप्नमें

महावीरे आ इस महा स्वप्नमें जेयां डतां अने ते स्वप्नमें देणीने तेओ प्रतिबुद्ध थया डता —पड़ेला रात्राभां तेमणे ओक जडु ज पिशाच काय, ताडना जेवे। तेओ अने क्रोधथी लालपीणे। थर रडेवे।-अथवा अभिमानथी लरेवे।-पिशाच जेथो अने तेमणे ते पिशाचने पोताना जगथी परास्त (पराजित) थतो जेथो। जीज महास्वप्नमां तेमणे सदैव वर्षांनी जन्ने पांजोवाणे। नरकोयल देण्यो त्रीज स्वप्नमा तेमणे ओक जेवा नरजातिना कोयलने जेथो के जेनी जन्ने पांजो विविध वर्णोथी युक्त डती। योथा महास्वप्नमा तेमणे जे सुंदर भाजाओ देणी। (५) पांचमां महास्वप्नमां तेमणे ओक सदैव रगनी गाथोनुं धणु जेथुं (६) छठे महास्वप्नमां तेमणे दिशाओ अने विदिशाओमां विकसित

સપ્તમે ઝર્મિવીચિસહસ્રકલિતમ્-ઝર્મયો ગુસ્તરજ્ઞાઃ, વીચયો લઘુતરજ્ઞાઃ, તેષાં યાનિ સહસ્રાણિ તૈઃ કલિતં=યુક્તમ્ । ઝર્મિવીચ્યોર્યઘપિ સમાનાર્થતા, તથાપ્યત્ર ગુસ્ત્ર-લઘુત્વભેદમાદાય દ્વયોરુક્તૌ પૌનરુત્તયશઙ્કાડપનેયેતિ ૭। અષ્ટમે તેજસા જ્વલન્તં=જાજ્વલ્યમાનં દિનકરં=સૂર્યમ્ ૮। નવમે-હરિવૈદૂર્યવર્ણાભેન-ઠરિઃ=પિઙ્ગલવર્ણો મણિઃ, વૈદૂર્યં=નીલવર્ણો મણિવિશેષઃ તયોર્વર્ણયોરિવ આમઃ=કાન્તિર્યસ્ય તદ્ હરિવૈદૂર્યવર્ણાભં તેન તથોક્તેન નિજકેન સ્વકીયેન, અન્ત્રેણ=ઉદારાન્તર્ગતશરીરાવયવવિશેષેણ, 'આંત' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધેન આવેષ્ટિતં=મક્રદ્વેષ્ટિતમ્, પરિવેષ્ટિતમ્=અસક્રદ્વેષ્ટિતમ્ ૯। દશમે-સિંહાસનવરગતમ્-સિંહાસનાનાં મધ્યે યદ્ વરં-શ્રેષ્ઠં સિંહાસનં તત્ર ગતં-સ્થિતં સ્વાત્માનં દૃષ્ટ્વા પ્રતિબુદ્ધઃ ૧૦ । ઇતિ ॥ સૂ. ૫૫ ॥

ભગવતા યે દશ સ્વપ્ના દૃષ્ટાસ્તેષાં કીદૃશં ફલં જાતમિતિ પ્રતિપાદયિતુમાહ-

મૂઝ્મ-જન્નં સમણે ભગવં મહાવીરે ઇગં મહં ઘોરદિત્તરૂવ-ધરં તાલપિસાયં સુમિણે પરાજિયં પાસિત્તા ણં પઢિબુદ્ધે, તન્નં

અન્હોને એક પદ્મસરોવર દેખા-કિ જિસમેં ચારોં દિશાઓમેં એવં ચિદિ-શાઓમેં કમલ ધિલ રહે હૈં (૬)

સાતવેં મહાસ્વપ્નમેં અન્હોને એક વિશાલ સમુદ્ર દેખા જો ઝર્મિયોસે ગુરુ તરજ્ઞોસે એવં વીચિયોસે. લઘુ તરજ્ઞોસે યુક્ત હો રહા થા (૭) આઠવેં મહાસ્વપ્નમેં અન્હોને તેજસે જોજ્વલપ્રમાન સૂર્યકો દેખા (૮) નૌવેં મહાસ્વપ્નમેં અન્હોને માનુષોત્તર પર્વત દેખા જો હરિપિઙ્ગલ વર્ણવાળે મણિકી એવં વૈદૂર્ય મણિકી નીલવર્ણવાળે મણિકી કાન્તિ જૈસી કાન્તિવાળે અપની આંતસે આવેષ્ટિત ઓર પરિવેષ્ટિત ચાર ચાર વેષ્ટિત હો રહા હૈં (૯)

દશવેં મહાસ્વપ્નમેં અન્હોને અપને આપકોં સિંહાસનોંકે બીચમેં શ્રેષ્ઠ સિંહાસન પર બેઠે હુએ દેખા હસ પ્રકારકે મહાસ્વપ્નોંકો દેલ્લકર વે પ્રતિબુદ્ધ હો ગયે ॥ સૂત્ર ૫૫ ॥

કમળોથી યુક્ત એવું પદ્મસરોવર દેખ્યું. (૭) સાતમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે એક વિશાળ સમુદ્ર જોયો કે જે ઊર્મિઓ (વિશાળ મોબ્જો) અને વીચિઓ (મંદમંદ તરંગો)થી યુક્ત હતો. (૮) આઠમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે જ્વલ્નલ્યમાન સૂર્યને જોયો. (૯) નવમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે માનુષોત્તર પર્વત જોયો તે માનુષોત્તર પર્વત પિંગલ વર્ણવાળા મણિની અને નીલવર્ણવાળા વૈદૂર્યમણિની કાન્તિ જેવી કાન્તિવાળા પોતાના આંતરડા વડે વેષ્ટિત અને પરિવેષ્ટિત (વારંવાર વીંટળાતો) થઈ રહ્યો હતો. (૧૦) દસમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે પોતાને સૌથી શ્રેષ્ઠ સિંહાસન પર બેઠેલાં જોયાં. આ પ્રકારના આ દસ મહાસ્વપ્નોને દેખીને તેઓ પ્રતિબુદ્ધ થઈ ગયા ॥ સૂ. ૫૫ ॥

समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिजे कस्मै मूलाओ उग्घा-
 इए १। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्खिलपक्खगं
 जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणे भगवं महावीरे सुक्खज्झाणोवगए
 विहरइ ३। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविधि-
 त्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणे भगवं महावीरे ससमय-
 परसमइयं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेइ पण-
 वेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ, तं जहा-आयारं जाव
 दिट्ठिवायं ३। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं दासदुगं
 सबरयणामयं जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणे भगवं महावीरेदुविहं
 धम्मं पणवेइ ५, तं जहा-अगारधम्मं च अणगारधम्मं च
 ४। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवगं सुमिणे
 जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउवण्णा-
 इण्णे संघे जाए, तं जहा-समणा समणीओ सावगा सावि-
 याओ ५। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं
 जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण-
 वेइ, तं जहा-भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसवासी, वेमाणवासी
 ६। जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं उम्मिवीइ-जाव पडि-
 बुद्धे, तन्नं समणेणं भगवया महावीरेणं अणाइए अणवदग्गे
 दीहमद्धे चाउरंतसंसारसागरे तिण्णे ७। जन्नं समणे भगवं
 महावीरे एगं महं दिणयरं जाव पडिबुद्धे, तन्नं समणस्स
 भगवओ महावीरस्स अणुत्तरे जाव समुप्पण्णे ८। जन्नं समणे

भगवं महावीरे एगं महं हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे, तन्नं सम-
णस्स भगवओ महावीरस्स सदेव मणुयासुरलोगे उराला
कित्तिवन्नसदसिलोगा परिगुव्वन्ति—‘ इइ खलु समणे भगवं
महावीरे, इइ खलु समणे भगवं महावीरे ’ ९। जन्नं समणे
भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरि जाव पडि-
बुद्धे, तन्नं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए
मज्झगए केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेइ पण्णवेइ जाव उवदं-
सेइ १० ॥ सू० ५६ ॥

छाया—यत्खलु श्रमणो भगवान् महावीर एकं महान्तं घोरदीप्तरूपधरं ताल-
पिशाचं स्वप्ने पराजितं दृष्ट्वा खलु प्रतिबुद्धः, तत् खलु श्रमणेन भगवता महा-
वीरेण मोहनीयं कर्म मूलात् उदघातितम् १। यत्खलु श्रमणो भगवान् महावीर
एकं महान्तं शुक्लपक्षकं यावत् प्रतिबुद्धः, तत्खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
शुक्लध्यानोपगतो विहरति २। यत्खलु श्रमणो भगवान् महावीर एकं महान्तं
चित्रविचित्रपक्षकं यावत् प्रतिबुद्धः, तत्खलु श्रमणो भगवान् महावीरः स्वसमयपर-
समयिकं चित्रविचित्रं द्वादशाङ्गं गणिपिटकम् आख्यापयति प्रज्ञापयति प्ररूपयति
दर्शयति निदर्शयति उपदर्शयति, तद्यथा—आचारं यावद् दृष्टिवादम् ३,। यत् खलु
श्रमणो भगवान् महावीर एकं महद् दामद्विकं सर्वरत्नमयं यावत् प्रतिबुद्धः,
तत्खलु श्रमणो भगवान् महावीरो द्विविधं धर्मं प्रज्ञापयति ५। तद्यथा—अगारधर्मं
च अनगारधर्मं च ४। यत् खलु श्रमणो भगवान् महावीर एकं महान्तं श्वेतं
गोवर्गं स्वप्ने यावत् प्रतिबुद्धः, तत् खलु श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य चातुर्वर्ण्या-
कीर्णः संघो, जातः, तद्यथा—श्रमणाः श्रमण्यः श्रावकाः श्राविकाः ५। यत्खलु श्रमणो
भगवान् महावीर एकं महत् पद्मसरो यावत् प्रतिबुद्धः, तत्खलु श्रमणो भगवान्
महावीरश्चातुर्विधान् देवान् प्रज्ञापयति, तद्यथा—भवनवासिनो व्यन्तरान् ज्योतिर्वा-
सिनो विमानवासिनः ६। यत् खलु श्रमणो भगवान् महावीर एकं महान्तम् ऊर्मि-
बीचि—यावत् प्रतिबुद्धः, तत् खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण अनादिकम् अन-
वदग्रं दीर्घाध्वानं चातुरन्तसंसारसागरं तीर्णम् ७। यत्खलु श्रमणो भगवान् महा-
वीर एकं महान्तं दिनकरं यावत् प्रतिबुद्धः, तत्खलु श्रमणस्य भगवतो महावी-

रस्य अनन्तम् अनुत्तरं यावत् समुत्पन्नम् ८। यत्खलु श्रमणो भगवान् महावीर
एकं महान्तं हरिवैडूर्यं यावद् प्रतिबुद्धः, तत्खलु श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य
सदेवमनुजासुरे लोके उदाराः कीर्त्तिवर्णशब्दश्लोकाः परिगूयन्ते—' इति खलु
श्रमणो भगवान् महावीर—इति खलु श्रमणो भगवान् महावीरः ' ९। यत्खलु
श्रमणो भगवान् महावीरो मन्दरे पर्वते मन्दरचूलिकाया उपरि यावत् प्रतिबुद्धः,
तत्खलु श्रमणो भगवान् महावीरः सदेवमनुजासुरायां परिपदि मध्यगतः केवलि
प्रज्ञप्तं धर्मम् आख्यापयति प्रज्ञापयति यावत् उपदर्शयति १० ॥ सू० ५६ ॥

टीका—' जणं समणे भगवं ' इत्यादि—

यत्खलु भगवान् महावीरः प्रथमे स्वप्ने स्वपराक्रमेण क्रोधाध्मातं महान्तं
घोरं तालवृक्षवद् दीर्घं पिशाचं पराजितं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । तेन भगवता महावी-
रेण मोहनीयं कर्म मूलात् उद्धातितम्=उत्पाटितम्-विनाशितमिति प्रथमस्वप्न-
फलम् १। तथा-भगवान् द्वितीये स्वप्ने एकं महान्तं शुक्लपक्षयुक्तं कोकिलं
दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । तेन भगवान् महावीरः शुक्लध्यानोपगतः=शुक्लध्यानयुक्तः सन्
विहरति=शुक्लध्यानं ध्यायतीत्यर्थ इति द्वितीयम् २। तथा-भगवान् तृतीये स्वप्ने

भगवान्ने जो ये १० महास्वप्न देखे उनका फल कैसा हुआ अब
इस बातको सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—

“ जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं ” इत्यादि ॥ सूत्र ५६ ॥

टीकार्थ—श्रमण भगवान् महावीरने जो प्रथम स्वप्नमें अपने द्वारा परास्त
किये गये एक भयङ्कर तालवृक्षके जैसे लम्बे मोटे ताजे क्रोधी पिशाचको
देखा सो उसका फल उन्होंने ऐसा प्राप्त किया कि उन्होंने समस्त कर्मोंके
प्रधान मोहनीय कर्मको जड़मूलसे विध्वंस कर दिया १। द्वितीय स्वप्नमें
जो उन्होंने एक पुरुष जातीय शुक्ल वर्णके पांखोवाले कोकिलको देखा
सो उसका फल उन्होंने यह प्राप्त किया कि उन भगवान्ने शुक्ल ध्यानको

महावीर प्रभुओं ने उपर्युक्त इस महास्वप्न देखा, तो महास्वप्नोत्तुं
इस डेवे सूत्रकार प्रकट करे छे—

“ जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं ” इत्यादि—(सू. ५६)

टीकार्थ—श्रमण भगवान् महावीर ने पड़ेला महास्वप्नमां ओक लयंकर, महाकाय
ताड नेवा ठांवा अने क्रोधी राक्षसने पोताना द्वारा पराजित थयेला जेथे, तेनुं
तेमने आ प्रकटनुं इल मज्जुं—तेमणे समस्त कर्मोंमां मुज्ज्य जेवां मोहनीय
कर्मोंना जड़मूलमांथी उच्छेद (विनाश) करी नाज्ये। तेमणे भीम महास्वप्नमां,
शुक्लवर्णनी पांखोवाला नरकोयलना ने दर्शन कर्था तेना इलस्वप्ने तेमणे

एकं महान्तं चित्रविचित्रपक्षयुक्तं कोकिलं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । तेन भगवान् महा-
वीरः स्वसमयपरसमयिकं - स्वसमयाः=जिनसिद्धान्ताः परसमयाः=परतीर्थिक-
सिद्धान्ताः, ते उभयेऽणिसन्ति यत्र तं तादृशम्, अत एव-चित्रविचित्रं=स्याद्वाद-
युक्तं द्वादशाङ्गं-द्वादश अङ्गानि-अङ्गानीव अङ्गानि-अवयवा यस्मिस्तं तथाविधं
गणिपिटकं-गणिनः=आचार्यस्य पिटक इव=रत्नाधारमञ्जूषेव यः स तं तथावि-
धम् आख्यापयति-सामान्यतः, प्रज्ञापयति-वचनपर्यायेण नामादिभेदेन वा,
प्ररूपयति-प्रतिसूत्रमर्यापरूपणतः, दर्शयति-तत्तत्सूत्रनिर्दिष्टप्रत्युपेक्षणादिक्रियाणां
प्रदर्शनतः । निदर्शयति-पराऽनुकम्पया भव्यकल्याणापेक्षया वा नितराम्=अति-
शयेन दर्शयति, उपदर्शयति-सकलनययुक्तिभिरिति, तान्यङ्गानि तु आचारादिदृष्टि-
बादान्तानि बोध्यानीति तृतीयम् ३, तथा-श्रमणो भगवान् महावीरः चतुर्थस्वप्ने

જાયા ૨। તૃતીય મહાસ્વપ્નમેં જો ડન્હોને જો એક વિશાલ ચિત્રવિચિત્ર
પક્ષ યુક્ત પુરુષ જાતીય કોકિલકા નિરીક્ષણ ક્રિયા સો હસસે ડન્હોને
સ્વસિદ્ધાન્ત એવં પરસિદ્ધાન્તવાલે એસે ગણિપિટકકા જો ૧૨ અંગોવાલાહૈ,
એવં સ્યાદ્વાદસે યુક્ત દ્વાદશાંગકા સામાન્ય રૂપસે કથન ક્રિયા, પ્રજ્ઞાપન
ક્રિયા વચન પર્યાયસે યા નામાદિ રૂપસે કથન ક્રિયા, પ્રરૂપણ ક્રિયા, અર્થકી
પ્રરૂપણાસે પ્રતિ સૂત્રકા કથન ક્રિયા, તત્તત્સૂત્ર નિર્દિષ્ટ પ્રત્યુપેક્ષણાદિ
ક્રિયાઓંકા પ્રદર્શન ક્રિયા, નિર્દર્શન ક્રિયા, દૂસરે જીવોંકી અનુકમ્પાસે
અથવા-ભવ્ય જીવોંકે કલ્યાણકી અપેક્ષાસે અતિશય રૂપસે ઉસે દિલ્-
લાયાં એવં સમસ્ત નય એવં યુક્તિયોં દ્વારા ઉસકા ઉપદર્શન ક્રિયા યે
અંગ આચારાંગસે લેકર દૃષ્ટિવાદ તક હૈ ૧૩।

શુકલધ્યાન ધર્મુ. ત્રીજા મહાસ્વપ્નમાં તેમણે વિવિધ વર્ણોથી યુક્ત પાંખોવાળા
નરકોયલના જે દર્શન કર્યો તેના ફલસ્વરૂપે તેમણે ગણિપિટકનું કથન કર્યું, પ્રજ્ઞાપન
કર્યું, પ્રરૂપણ કરી, ઇત્યાદિ અહીં અહણુ થવું જોઈએ આ ગણિપિટકના આચાર
રાંગથી લઈને દૃષ્ટિવાદ પર્યન્તના આર અંગો છે. તેમાં સ્વસિદ્ધાન્ત અને પર સિદ્ધા-
ન્તનું તથા સ્યાદ્વાદયુક્ત દ્વાદશાંગનું સામાન્ય રૂપે કથન કરવામાં આવ્યું છે પ્રજ્ઞાપન
કરવામાં આવ્યું છે, -એટલે કે વચન પર્યાયપૂર્વક અથવા નામાદિરૂપે કથન
કરવામાં આવ્યું છે, પ્રરૂપણ કરવામાં આવી છે એટલે કે અર્થની પ્રરૂપણા
પૂર્વક પ્રત્યેક સૂત્રનું કથન કરવામાં આવ્યું છે-તે સૂત્રનિર્દિષ્ટ પ્રત્યુપેક્ષણાદિ
ક્રિયાઓનું પ્રદર્શન કરવામાં આવ્યું છે એટલે અન્ય જીવો પ્રત્યે અનુકંપાથી
પ્રેરાઈને અથવા ભવ્ય જીવોનું કલ્યાણ થાય એવી ભાવનાથી પ્રેરાઈને અતિ-
શયરૂપે તેને પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે અને સમસ્ત નયો (સામાન્યતાઓ) અને
યુક્તિઓ દ્વારા તેનું ઉપદર્શન કરવામાં આવ્યું છે-ત્રીજા મહાસ્વપ્નના ફલસ્વરૂપે

एकं महत् सर्वरत्नमयं मालायुगलं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धस्तेन भगवान् आगारानगारलक्षणं द्विविधं धर्मं प्रज्ञापयतीतिचतुर्थम् ४। तथा-पञ्चमे स्वप्ने भगवान् एकं महान्तं श्वेतवर्णं गोसमूहं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धस्तेन भगवतो महावीरस्य चातुर्वर्ण्याकीर्णः चत्वारो वर्णाश्चातुर्वर्ण्यं श्रमणश्रमणीश्रावक श्राविकारूपं, तेन आकीर्णो=व्याप्तः सङ्घो जात इति पञ्चमम् ५। तथा-षष्ठे स्वप्ने भगवान् विकसितकमलसमूहसहितं सरोवरं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धस्तेन भगवान् भवनवासिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकरूपान् चतुर्विधान् देवान् प्रज्ञापयति=कथयतीति षष्ठम् ६। तथा-भगवान् सप्तमे स्वप्ने तरङ्गपरम्परायुक्तं महासागरं बाहुभ्यां स्वयं तीर्णं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धास्तेन भगवता अनादिकम्-नास्ति आदिर्यस्य तत्-आदिरहितम्, अनवदग्रहम्-नास्ति अवदग्रः=अन्तो यस्य तत्अन्तरहितम्, तथा-दीर्घाध्वानं दीर्घः अध्वा=चतुर्गतिपरिश्रमणरूपो मार्गो यस्मिंस्तत्, पुनः पुनस्तत्रैव श्रमणाद्, एवं विधं चातुरन्तसंसारसागरं-चत्वारः=

चतुर्थ महास्वप्नमें जो श्रमण भगवान् महावीरने एवं विशाल सर्व रत्नमय माला युगल देखा, सो इसके फलस्वरूप उन्होंने आगार और अनगार धर्मकी प्ररूपणा की (४) पांचवें स्वप्नमें जो श्रमण भगवान् महावीरने जो एक महान् श्वेत वर्णवाले गो समूहको देखा सो इसके फल स्वरूप उनका सङ्घ, श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका इन चार वर्णोंवाला हुआ ५। छठे स्वप्न देखे गये पद्म सरोवरके फल स्वरूप उन्होंने भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क एवं वैमानिक रूपसे चार प्रकारके देवोंकी प्रज्ञापना की ६। सातवें स्वप्नमें जो उन्होंने तरङ्ग परम्पराओंसे युक्त महासागरको अपनी भुजाओं द्वारा पार किया गया देखा सो इसके फलस्वरूप उन्होंने अनादि अनन्त इस चतुर्गति परिश्रमण रूप

મહાવીર પ્રભુને આ બાર અંગવાળા ગણિપિટકનું કથન આદિ કરવાની શક્તિ પ્રાપ્ત થઇ. એથા મહાસ્વપ્નમાં તેમણે જે જે સુંદર માળાઓ દેખી તેના ફળ સ્વરૂપે તેમણે અગારધર્મની અને અનગારધર્મની પ્રરૂપણા કરી. પાંચમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે જે સફેદ વર્ણની ગાયોનો સમૂહ જોયો તેના ફલસ્વરૂપે તેમણે સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવકો અને શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ સંઘની સ્થાપના કરી. છઠ્ઠા મહાસ્વપ્નમાં તેમણે ચારે દિશાઓ અને વિદિશાઓમાં વિકસિત કમળોથી યુક્ત એવું જે પદ્મસરોવર દેખ્યું તેના ફલસ્વરૂપે તેમણે ભવનવાસી વ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિકરૂપ ચાર પ્રકારના દેવોની પ્રજ્ઞાપના કરી. સાતમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે તરંગ પરંપરાઓથી યુક્ત મહાસાગરને પોતાના દ્વારા જે તરી જવાતો દેખ્યો, તેના ફલ સ્વરૂપે તેમણે અનાદિ અનંત અને દેવગતિરૂપ ચારગતિવાળા (નારક, તિર્થંચ, મનુષ્ય અને દેવગતિરૂપ

ચતુસ્સંખ્યકા અન્તાઃ=નરકતિર્યક્મનુજદેવરૂપા ગતયો યસ્મિન્સ્તાદ્દશો યઃ સંસાર-
સાગરઃ સ એવ સાગરઃ=દુર્ગમવર્ત્તમ તત્ત્વતીર્ણમિતિ સપ્તમમ્ ૭। તથા-ભગવાન્
અષ્ટમે સ્વપ્ને એકં મહાન્તં તેજસા જ્વલન્તં દિનકરં=સૂર્યં દૃષ્ટ્વા પ્રતિબુદ્ધસ્તેન ભગ-
વતઃ અનન્તમ્=અન્તરહિતમ્ અનુત્તરમ્-નાસ્તિ ઉત્તરમ્=પ્રધાનં=યસ્માત્તત્-સર્વોત્કૃ-
ષ્ટમ્, તથા-યાવત્પદેનાત્ર-‘ નિર્વાધાત્ નિરાવરણે કસિજે પડિપુણે કેવલવરના-
ણદંસણે ’ છાયા-નિર્વાધાત્ નિરાવરણં કૃત્સ્નં પ્રતિપૂર્ણં કેવલવરજ્ઞાનદર્શનમ્-
ઇતિ પશ્ચપદાનિ ગૃહ્યન્તે । તત્ર-નિર્વાધાત્મ=વ્યાધાતરહિતમ્, નિરાવરણમ્=આવ-
રણરહિતમ્, કૃત્સ્નં=સમ્પૂર્ણમ્, પ્રતિપૂર્ણમ્=સર્વથા સમ્પૂર્ણમ્, એતાદૃશં યત્ કેવલ-
વરજ્ઞાનદર્શનં, તત્ સમુત્પન્નમિત્યષ્ટમમ્ ૮। તથા-ભગવાન્ નવમે સ્વપ્ને હરિવૈદૂર્ય-

માર્ગવાલે એવં નરક, તિર્યક્, મનુજ, દેવ ઇતિ ચાર ગતિયોવાલે સંસાર
તેર ગયે હૈં ૭। આઠવે સ્વપ્નમેં જો ઉન્હોને તેજસે દેદીપ્યમાન સૂર્યકો
દેખા હૈં, સો હસકે ફલસ્વરૂપ ઉન્હેં અનન્ત-અન્ત રહિત, અનુત્તર, જિસકે
જેસા કોઈ જ્ઞાન પ્રધાન નહીં હૈ-સર્વોત્કૃષ્ટ એસા કેવલજ્ઞાન એવં કેવલ-
દર્શન પ્રાપ્ત હુઆ હૈ, યહાં પર યાવત્પદસે-“ નિર્વાધાત્, નિરાવરણે,
કસિજે, પડિપુણે, કેવલવરનાણદંસણે ” હસ પાઠકા ગ્રહણ હુઆ હૈ,
યહ કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન વ્યાધાત રહિત હોનેકે કારણ નિર્વાધાત
હોતા હૈ, આવરણ-જ્ઞાનાવરણાદિસે સર્વથા રહિત હોનેકે કારણ-નિરા-
વરણ હોતા હૈ સમ્પૂર્ણ હોનેકે કારણ કૃત્સ્ન હોતા હૈ, તથા-સર્વથા સમ્પૂર્ણ
હોનેકે કારણ પ્રતિપૂર્ણ હોતા હૈ ૮।

આર ગતિવાળા) આ સંસાર કાનનને અથવા તો આ સંસારસાગરને પાર કરીને
સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કરી. આઠમાં મહાસ્વપ્નમાં તેમણે જે તેજથી દેદીપ્યમાન સૂર્યને
જોયો, તેના ફલસ્વરૂપે તેમને અનન્ત (અન્તરહિત), અનુત્તર (સર્વોત્કૃષ્ટ-અનુપમ)
નિર્વાધાત, નિરાવરણ, કૃત્સ્ન અને પ્રતિપૂર્ણ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન
પ્રાપ્ત થયાં કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન એક વાર પ્રાપ્ત થયા બાદ
કાયમને માટે ટકી રહે છે-કદી તેમનો અન્ત આવતો નથી, તેથી તેમને અનન્ત
વિશેષણ લગાડયું છે. બીજા કોઈ પણ જ્ઞાન કરતાં તે પ્રધાન-સર્વોત્કૃષ્ટ હોય છે
તેથી તેને અનુત્તર વિશેષણ લગાડયું છે. આ કેવલજ્ઞાન અને કેવલદર્શન વ્યાધાત
રહિત હોય છે તેથી તેમને નિર્વાધાત વિશેષણ લગાડયું છે, જ્ઞાનાવરણ આદિ
આવરણોથી રહિત હોવાને કારણે તેને નિરાવરણ વિશેષણ લગાડયું છે, સંપૂર્ણ
હોવાને કારણે તેમને ‘કૃત્સ્ન’ વિશેષણ લગાડયું છે અને સર્વથા સંપૂર્ણ હોવાને
કારણે “પ્રતિપૂર્ણ” વિશેષણ લગાડવામાં આવ્યું છે. જ્ઞાનના મહાવીરે નરના મહા-

વર્ણાભેન સ્વકીયેન અન્નેન એકં મહાન્તં માનુષોત્તરં પર્વતમ્ આવેષ્ટિતં પરિવેષ્ટિતં
 દદ્વા પ્રતિબુદ્ધસ્તેન ભગવતઃ સદેવમનુજાસુરે=દેવમનુજાસુરૈઃ સહિતં સદેવમનુજાસુરં
 તસ્મિન્સ્તથોક્તે લોકે ઉદારાઃ=ઉત્કૃષ્ટાઃ=પ્રધાના इति યાવત્ કીર્તિર્વર્ણશબ્દ-
 શ્લોકઃ-તત્ર-કીર્તિઃ=સર્વદિગ્વ્યાપિની, વર્ણઃ=એકદિગ્વ્યાપી, શબ્દઃ=અર્ધદિગ્વ્યાપી,
 શ્લોકઃ=તત્સ્થાન એવ ગુણકીર્તનમ્, ઇપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વસ્તે તથાશ્રુતાઃ પરિ-

ભગવાનને જો નૌવે મહાસ્વપ્નમેં હરિ વૈદૂર્ય મણિકી આંખા જૈસી
 આંખાવાલી અપની આંતસે એક મહાન માનુષોત્તર પર્વતનો આવેષ્ટિત
 પરિવેષ્ટિત હુઆ દેખા હૈં, સો હસકે ફલસ્વરૂપ ઉનકી દેવલોકમેં
 મનુષ્ય લોકમેં એવં અસુરલોકમેં એસી ઉત્કૃષ્ટ કીર્તિ ગાઈ ગઈ એસા
 ઉત્કૃષ્ટ વર્ણ યશ ગાયા ગયા, એસા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ ઓર એસા ઉત્કૃષ્ટ
 શ્લોક ગાયા કિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સર્વજ્ઞ હૈં, સર્વદર્શી હૈં, સબ
 પ્રકારકે સંશયકે નાશનહારે હૈં, સર્વજીવ સુખપૂર્વક સમજ સકે,
 એસી ભાષાકે બોલનેવાલે હૈં, ષટ્ કાયકે જીવોંકે રક્ષક હૈં, સુર, અસુર
 એવં મનુષ્યોંસે સેવિત ચરણ યુગલવાલે હૈં, એવં સંકલ સંયતિ જનોંકે
 શિરોભૂષણ રૂપ હૈં. સમસ્ત દિશાઓંમેં જો યશ પ્રાપ્ત હોના હૈ, ઉસકા
 નામ કીર્તિ હૈ, એક દિશામેં જો યશ વ્યાપ્ત હોતા હૈ, ઉસકા નામ
 વર્ણ હૈ, અર્ધ દિશામેં જો વ્યાપ્ત હોના હૈ, ઉસકા નામ શબ્દ હૈ, ઓર
 કેવલ ઉસી સ્થાનમેં જો ગુણ કીર્તન હોતા હૈ, વહ શ્લોક હૈ ૧। તથા

સ્વપ્નમાં પિંગલમણિ અને નીલ વૈદૂર્યમણિ જેવી પ્રજ્ઞાવાળા પોતાના આંતરડા
 વડે માનુષોત્તર પર્વતને આવેષ્ટિત અને પરિવેષ્ટિત થતો જોયો. આ મહા-
 સ્વપ્નના ફલસ્વરૂપે દેવલોકમાં, મનુષ્યલોકમાં અને અસુરલોકમાં તેમની એવી
 ઉત્કૃષ્ટ કીર્તિ ગવાવા લાગી, એવો ઉત્કૃષ્ટ યશ ગવાવા લાગ્યો; એવા ઉત્કૃષ્ટ
 શબ્દ અને એવી ઉત્કૃષ્ટ પ્રશંસા ગવાવા લાગી કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર
 સર્વજ્ઞ છે, સર્વદર્શી છે અને સઘળા સંશયોનો નાશ કરનારા છે. તેઓ એવી
 ભાષા બોલનારા છે કે સઘળા જીવો તેમની વાણીને સરળતાથી સમજી શકે
 છે. તેઓ છકાયના જીવોનું રક્ષણ કરનારા છે, સુર, અસુર અને મનુષ્યો પણ
 તેમના ચરણયુગલની સેવા કરે છે. તેઓ સકળ સંયમીજનોના શિરોભૂષણરૂપ
 છે. સમસ્ત દિશાઓમાં યશનો ફેલાવો થવો તેનું નામ ‘કીર્તિ’ છે, એક
 જ દિશામાં યશનો ફેલાવો થવો તેનું નામ ‘વર્ણ’ છે અથવા દિશામાં જ જે
 વ્યાપ્ત થાય છે તેનું નામ ‘શબ્દ’ છે અને ફક્ત અમુક જ સ્થાનમાં જે ગુણ
 કીર્તન થાય છે તેનું નામ ‘શ્લોક’ છે. હસમાં સ્વપ્નમાં તેમણે મન્દર પર્વતની

युनन्ते—कीर्त्यन्ते, कथं कीर्त्यन्ते ? इत्याह—' इति खलु इत्यादि । इति=एवंविधः, अर्थात् सर्वज्ञः सर्वदर्शी सर्वसंशयव्ययच्छेदकः सर्वजीवाभिगम्यभाषाभाषी षट्काय—जीववत्सलः सुरासुरमनुजसेवितचरणयुगलः सकलसंयतिशिरोभूषणः श्रमणो भगवान् महावीरः, इति खलु श्रमणो भगवान् महावीर इति । अत्र द्विरुक्तिः कीर्त्तयितुर्बाहुल्यात् आदराद् वा बोध्येति नवमम् ९। तथा भगवान् दशमे स्वप्ने मन्दरपर्वतस्य चूलिकाया उपरि आत्मानं सिंहासनवरगतं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धस्तेन भगवान् देवासुरमनुजपरिषदि मध्यगतः सन् केवलप्रज्ञप्तं पूर्ववर्त्तितीर्थकरोक्तं आख्यापयति प्रज्ञापयति यावत् उपदर्शयतीति । आख्यापयतीत्यादि व्याख्यातपूर्वम् १०। इति दशस्वप्नफलम् । इति ॥ सू० ५६ ॥

यदा भगवान् दशविधान् स्वप्नान् दृष्टवान्, तदा स सरागसम्यग्दर्शनयुक्त आसीदिति सरागसम्यग्दर्शनं दशविधत्वेनाह—

मृगल—दशविधे सरागसम्पदसंज्ञे पन्नत्ते, तं जहा—निसर्गु १ वृषसर्प २ आणरुई ३ सुत्त ४ वीयरुईमेव ५। अभिगम ६ वित्थाररुई ७ किरिया ८ संखेव ९ धम्मरुई १० ॥ सू० ५७ ॥

छाया—दशविधं सरागसम्यग्दर्शनं प्रज्ञप्तं, तद्यथा—निसर्गो १, पदेशरुचिः २ आज्ञारुचिः ३ सूत्र ४ बीजरुचिरेव ५। अभिगम ६ विस्ताररुचिः ७ क्रिया ८ संक्षेप ९ धर्मरुचिः १० ॥ सू० ५७ ॥

१० वे महास्वप्नमें जो उन्होंने मन्दर (मेरु) पर्वतकी चूलिकाके ऊपर अपने आपको श्रेष्ठ सिंहासनके ऊपर विराजमान देखा है, सो इसके फल स्वरूप उन्होंने देव, मनुज, एवं असुर सम्पन्न परिषदामें बैठकर केवल प्रज्ञा अपने पूर्ववर्त्ति तीर्थकरोक्त धर्मका कथन किया है, यावत् उसका उपदर्शन किया है, यहां यावत् शब्दसे गृहीत प्रज्ञापयति आदि पदोंका अर्थ पूर्वमें व्याख्यात किया जा चुका है, इस प्रकारसे यह फल दश स्वप्नोंका हैं ॥ सू० ५६ ॥

चूलिका (शिखर) ऊपर उड़ेला श्रेष्ठ सिंहासन ऊपर पोताने विराजमान थयेला देखा होता. आ महास्वप्नना इलस्वप्ने तेमणे देवा, मनुष्या आने असुरादी संपन्न परिषदमां केवलप्रज्ञासितुं पोताना पड़ेलां अर्थात् गयेला तीर्थकरोक्त धर्मनु कथन कथुं, प्रज्ञापन कथुं, इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रपाठ अर्थात् पणु अर्थात् करवे। नेधये. आ रीते " उपदर्शन करवा " पर्यन्तने। सूत्रपाठ अर्थात् अर्थात् करवे। नेधये. आ प्रकारतुं इस महास्वप्नोतुं इल समजतुं. ॥ सूत्र ५६ ॥

ટીકા—‘ દસવિહે ’ ઇત્યાદિ—

સરાગસમ્યગ્દર્શનમ્—સરાગઃ=અનુપશાન્તાક્ષીણમોહઃ, તસ્ય યત્ સમ્યગ્દર્શનં= તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનમ્, અથવા—સરાગં ચ તત્સમ્યગ્દર્શનંચેતિ સરાગસમ્યગ્દર્શનમિતિ । તદ્ દશવિધં પ્રજ્ઞમ્ । તદ્યથા—‘ નિસર્ગોપદેશરુચિ ’—રિત્યાદિ । તત્ર—નિસર્ગોપદે- શશબ્દયોઃ કૃતદ્વન્દ્વયો રુચિ શબ્દેન સહ સમ્બન્ધઃ । તતશ્ચ નિસર્ગરુચિ રૂપદેશરુચિ- શ્ચેતિ પદદ્વયમ્ । એવમગ્રેऽપિ યથાસંભવં બોધ્યમ્ । તત્ર—નિસર્ગરુચિઃ=નિસર્ગઃ= સ્વભાવઃ, તેન રુચિઃ=તત્ત્વાભિલાષઃ ૧, તથા—ઉપદેશરુચિઃ—ઉપદેશઃ=તીર્થંકર- ગણધરગુરુપ્રભૃતીનામાત્મપુરુષાણાં વચનં, તેન રુચિઃ ૨। તથા—આજ્ઞારુચિઃ—

જિસ સમય ભગવાનવ્ને ૧૦ પ્રકારકે સ્વપ્નોંકો દેલા તથા વે સરાગ સમ્યગ્દર્શનસે યુક્ત થે અતઃ અવ સૂત્રકાર સમ્યગ્દર્શન ૧૦ પ્રકારસે કથન કરતે હૈં—“દસવિહે સરાગસમ્મહંસણે પન્નત્તે ” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૫૭ ॥

ટીકાર્થ—સરાગ સમ્યગ્દર્શન—જિસ જીવકા મોહ ન ઉપશાન્ત હો નક્ષીણ હો ઉસ જીવકા જો સમ્યગ્દર્શનહૈ, વહ સરાગ સમ્યગ્દર્શન હૈ, તત્ત્વાર્થકે શ્રદ્ધાનકા નામ સમ્યગ્દર્શન હૈ, અથવા—રાગ સહિત જો સમ્યગ્દર્શન હૈ, વહ સરાગસમ્યગ્દર્શન હૈ, યહ સરાગસમ્યગ્દર્શન ૧૦ પ્રકારકા કહાં ગયા હૈ, જૈસે—નિસર્ગરુચિ ઉપદેશ રુચિ આદિ—સ્વભાવતઃ જો રુચિ તત્ત્વ વિષયક અભિલાષા હોતી હૈ, વહ નિસર્ગ રુચિ હૈ ૧, તીર્થંકર ગણધર ગુરુ આદિ આત્મ પુરુષોંકે વચનસે જો રુચિ હોતી હૈ વહ ઉપદેશ

જ્યારે મહાવીર પ્રભુએ ઉપયુક્ત દસ મહાસ્વપ્નાં દેખ્યાં, ત્યારે તેઓ સરાગ સમ્યગ્દર્શનથી યુક્ત હતા. તેથી હવે સૂત્રકાર સમ્યગ્દર્શનના દસ પ્રકારોનું કથન કરે છે—“દસવિહે સરાગસમ્મહંસણે પન્નત્તે” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૫૭)

ટીકાર્થ—સરાગ સમ્યગ્દર્શનનો અર્થ આ પ્રમાણે કહ્યો છે—જે જીવનો મોહ ઉપ- શાન્ત પણ ન હોય અને ક્ષીણ પણ ન હોય એવા જીવનું જે સમ્યગ્દર્શન હોય છે તેનું નામ સરાગ સમ્યગ્દર્શનના છે. અથવા રાગસહિતનું જે સમ્યગ્દર્શન છે તેને સમ્યગ્દર્શન કહે છે. તે સરાગસમ્યગ્દર્શનના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) નિસર્ગરુચિ, (૨) ઉપદેશરુચિ, (૩) આજ્ઞારુચિ, (૪) સૂત્રરુચિ, (૫) ણીજરુચિ, (૬) અભિગમરુચિ, (૭) વિસ્તારરુચિ, (૮) ક્રિયારુચિ (૯) સંક્ષેપરુચિ અને (૧૦) ધર્મરુચિ. હવે આ દસે પ્રકારોનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

નિસર્ગરુચિ—કુદરતી રીતે જ તત્ત્વવિષયક જે રુચિ (અભિલાષા) થાય છે તેનું નામ નિસર્ગરુચિ છે.

ઉપદેશરુચિ—તીર્થંકર, ગણધર, આદિ આત્મપુરુષોનાં વચનોને લીધે જે રુચિ થાય છે તે રુચિનું નામ ઉપદેશરુચિ છે.

આજ્ઞા=તીર્થંકરવચનરૂપા, તયા રુચિઃ ૩, તથા-સૂત્રરુચિઃ-સૂત્રેણ=આગમેન રુચિઃ ૪, બીજરુચિઃ-બીજમિવ બીજમ્=અનેકાર્થાભિધાયકમેકં વચનં તેન રુચિઃ ૫, અભિગમરુચિઃ-અભિગમેન=જ્ઞાનેન રુચિઃ ૬। તથા-વિસ્તારરુચિઃ-વિસ્તારો=ધર્માસ્તિકાયાદિપદાર્થાનાં સર્વનયપ્રમાણૈ વિસ્તરતો જ્ઞાનં, તેન રુચિઃ ૭, ક્રિયા=પ્રતિ-લેખનાપ્રમાર્જનાદિરૂપા, તત્ર રુચિઃ ૮, સંક્ષેપઃ-જિનોક્તતત્ત્વાનાં સંગ્રહસ્તત્ર રુચિઃ ૯। તથા-ધર્મરુચિઃ-ધર્મે=શ્રુતચારિત્રલક્ષણે રુચિરિતિ ૧૦।

યદ્વા-દશવિધઃ સરાગસમ્યગ્દર્શનઃ પ્રજ્ઞસઃ, તદ્યથા-ઇત્યાદિરૂપેણ છાયા-કર્તવ્યા । અત્ર પક્ષેત્વેવં વ્યાખ્યા । તથાહિ—

રુચિ હૈ ૨, તીર્થંકરકે વચન રૂપ આજ્ઞાસે જો રુચિ હોતી હૈ, ઉસકા નામ આજ્ઞા રુચિ હૈ ૩, આગમસે જો રુચિ હોતી હૈ, વહ સૂત્રરુચિ હૈ ૪, અનેક અર્થકા અભિધાયક જો એક વચન હૈ, વહ બીજ હૈ, હસ બીજસે જો રુચિ હૈ વહ બીજરુચિ હૈ ૫, અભિગમસે જ્ઞાનસે જો રુચિ હૈ, વહ અભિગમ રુચિ હૈ ૬, ધર્માસ્તિકાયાદિક પદાર્થોંકા જો સર્વનય એવં પ્રમાણોંસે વિસ્તારપૂર્વક જ્ઞાન હોતાહૈ, વહ વિસ્તાર રુચિ હૈ ૭, પ્રતિ-લેખના પ્રમાર્જન આદિ રૂપ ક્રિયામૈં જો રુચિ હોતી હૈ, વહ ક્રિયારુચિ હૈ ૮, સંક્ષેપ-જિનોક્ત તત્ત્વોંકા સંગ્રહમૈં જો રુચિ હૈ વહ સંક્ષેપરુચિ હૈ ૯। તથા-શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મમૈં જો જો રુચિ હૈ વહ ધર્મરુચિ હૈ ૧૦,

આજ્ઞારુચિ-તીર્થંકરનાં વચનો ૩૫ આજ્ઞાને લીધે જે રુચિ થાય છે તે રુચિને આજ્ઞારુચિ કહે છે.

સૂત્રરુચિ-આગમન લીધે જે રુચિ થાય છે તે રુચિને સૂત્રરુચિ કહે છે.

બીજરુચિ-અનેક અર્થનું અભિધાયક જે એક વચન છે તેનું નામ બીજ છે. આ બીજને લીધે જે રુચિ થાય છે તેનું નામ બીજરુચિ છે.

અભિગમરુચિ-જ્ઞાનને અભિગમ કહે છે. તે જ્ઞાનને લીધે જે રુચિ થાય છે તેને અભિગમરુચિ કહે છે.

વિસ્તાર-ધર્માસ્તિકાયા આદિ પદાર્થોંનું જે સર્વનય અને પ્રમાણોથી વિસ્તાર પૂર્વકજ્ઞાન થાય છે તેનું નામ વિસ્તાર છે. તે વિસ્તારને લીધે જે રુચિ થાય છે તેનું નામ વિસ્તારરુચિ છે.

ક્રિયારુચિ-પ્રતિલેખના, પ્રમાર્જના આદિ ક્રિયાઓ પ્રત્યે જે રુચિ હોય છે. તેને ક્રિયારુચિ કહે છે.

સંક્ષેપરુચિ-જિનોક્ત તત્ત્વોના સંગ્રહ કરવાની જે રુચિ હોય છે તેનું નામ સંક્ષેપરુચિ છે.

ધર્મરુચિ-શ્રુતચારિત્ર ૩૫ ધર્મ પ્રત્યેની રુચિનું નામ ધર્મરુચિ છે. અથવા

સરાગસમ્યગ્દર્શનઃ—સરાગં સમ્યગ્દર્શનં यस્ય સ તથા—અનુપશન્તાઽક્ષીણમોહ-
યુક્ત તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનવાન્ પુરુષો દશવિધઃ પ્રજ્ઞતઃ । તત્રથા—નિસર્ગરુચિઃ—નિસર્ગેણ=
સ્વભાવેન રુચિઃ=તત્ત્વાભિલાષો यस્ય સ તથા । યો હિ—જાતિસ્મરણાદિરૂપયા
સ્વમત્યા જ્ઞાતેષુ જિનોક્તેષુ વાસ્તવિકેષુ જીવાજીવાદિપદાર્થેષુ રુચિયુક્તો ભવતિ
સ इत्यर्थः । तदुक्तम्—

“ જો જિણદિદે ભાવે, જીવા ઇય સદ્દહાઈ સયમેવ ।

एमेव नम्रहृत्ति य, निसर्गरुइत्ति नायव्वो ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—યો જિનદૃષ્ટાન્ ભાવાન્ જીવાદિકાન્ શ્રદ્ધાતિ સ્વયમેવ ।

एवमेव नान्यथेति च निसर्गरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ૧ ॥ इति ॥ ૧ ॥

અથવા—“ દસવિદે સરાગસમ્મદંસણે ” ઇત્યાદિ સૂત્રકી વ્યાખ્યા—હસ
પ્રકારસે મી કી જા સકતી હૈ, હસ પક્ષમેં સરાગ સમ્યગ્દર્શન પદસે
સરાગ સમ્યગ્દર્શનવાલા પુરુષ ગૃહીત હુઆ હૈ, ઓર વહ હસ પ્રકારસે
૧૦ પ્રકારકા હોતા હૈ—જિસમેં મોહ ન ઉપશાન્ત હુઆ હૈ ઓર ન ક્ષીણ
હી હુઆ હૈ એસા સરાગ સમ્યગ્દર્શન જિસકા હૈ વહ સરાગ સમ્યગ્દર્શન
હૈ સરાગ સમ્યગ્દર્શનવાલા હૈ—હનમેં નિસર્ગ રુચિવાલા વહ પુરુષ હૈ કિ
જિસકી તત્ત્વાભિલાષ રૂપ રુચિ સ્વભાવસે હૈ—જાતિસ્મરણ આદિ રૂપ
સ્વમતિ દ્વારા જ્ઞાત જિનોક્ત જીવાજીવાદિ પદાર્થોમેં જો રુચિ યુક્ત
હોતા હૈ કહા મી હૈ—“ જો જિણદિદે ભાવે ” ઇત્યાદિ ।

“ દસવિદે સરાગસમ્મદંસણે ” ઇત્યાદિ—

આ સૂત્રની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે પણ કરી શકાય છે—‘ સરાગસમ્યગ્દર્શન ’
આ પદથી સરાગસમ્યગ્દર્શનવાળા પુરુષને ગ્રહણ કરવામા આવે તો તે
સરાગસમ્યગ્દર્શનવાળા પુરુષના પણ નિસર્ગરુચિવાળો ઇત્યાદિ હસ પ્રકાર પડે છે.
જેમાં મોહ ઉપશાન્ત થયો નથી પણ ક્ષીણ જ થયો છે એવા સમ્યગ્દર્શનને
સરાગ સમ્યગ્દર્શન કહે છે. એવા સરાગસમ્યગ્દર્શનવાળા પુરુષના નીચે
પ્રમાણે હસ પ્રકાર પડે છે—

(૧) નિસર્ગરુચિવાળો—જે પુરુષમાં તત્ત્વાભિલાષરૂપ રુચિનો સ્વભાવથી જ
નૈસર્ગિક રીતે જ સદ્ભાવ હોય છે—જાતિસ્મરણ આદિ રૂપ સ્વમતિ દ્વારા જ્ઞાત
ભવ, અભવ આદિ પદાર્થોમાં જે રુચિયુક્ત હોય છે. એવા પુરુષને નિસર્ગ
રુચિથી યુક્ત સરાગસમ્યગ્દર્શનવાળો કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ જો જિણદિદે ભાવે ” ઇત્યાદિ—

જે પુરુષ એવી શ્રદ્ધા રાખે છે કે ભવાદિક પદાર્થોનું જેવું સ્વરૂપ જિનેન્દ્ર

તથા—ઉપદેશરુચિઃ—ઉપદેશેન=તીર્થંકરગણધરગુરુપ્રભૃતીનામાસપુરુષાણાં વચ-
નેન રુચિર્યસ્યાસૌ તથા । યો હિ તીર્થંકરપ્રરૂપિતાનેવ જીવાદિપદાર્થાન્, તીર્થ-
ંકર-ગણધરગુર્વાધાસપુરુષોપદેશેન શ્રદ્ધાતિ સ इत्यर्थः । તદુક્તમ્—

“ एए चेव उ भावे, उवइष्टे जो परेण सदहइ ।

छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरई मुणेयब्बो ॥१॥ ”

છાયા—एतानेव तु भावान्, उपदिष्टान् यः परेण श्रदधाति ।

छन्नस्थेन जिनेन वा, उपदेशरुचिर्ज्ञातव्यः ॥१॥ इति ॥२॥

તથા—આજ્ઞારુચિઃ—આજ્ઞાયા=સર્વજ્ઞવચનરૂપયા રુચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ

જો જિનદૃષ્ટ જીવાદિક પદાર્થોંની અપને આપ શ્રદ્ધાન કરતા હૈ, કિયે પદાર્થ હસી તરહસે જૈસા સ્વરૂપ જિનેન્દ્રદેવને કહા હૈ, વૈસાહી
इनका स्वरूपहै, अन्य रूपसे इनका स्वरूप नहीं हैं, इसीका नाम निसर्ग
रुचि है और इस निसर्गरुचिसे युक्त जोहैं वह निसर्ग रुचिवाला है ।

ઉપદેશ રુચિ—જિસ જીવકો જીવાદિક પદાર્થોંમૈં રુચિ તીર્થંકર
गणधर गुरु आदि आस पुरुषोंके वचनसे होती है, वह उपदेश रुचि
है, उपदेश रुचिवाला है, जो जीव तीर्थंकर प्ररूपित जीवादिक पदार्थों
तीर्थंकर गणधर गुरु आदि आस पुरुषके उपदेशसे श्रद्धाका विषय
बनता है वह उपदेश रुचिवाला है—कहा भी है—

“ एए चेव उ भावे ” इत्यादि ।

આજ્ઞા રુચિ—સર્વજ્ઞની વચન રૂપ આજ્ઞાસે જિસકો રુચિ હોતી હૈ, વહ આજ્ઞારુચિવાલા સમ્યગ્દૃષ્ટિ પુરુષ હૈ એસા આજ્ઞારુચિ જીવ પ્રતનુ-

દેવોએ કહ્યું છે એવું જ સ્વરૂપ છે કોઈ બીજા પ્રકારનું તેમનું સ્વરૂપ હોઈ
શકે જ નહીં. આ પ્રકારની રુચિનું નામ નિસર્ગરુચિ છે. આ પ્રકારની રુચિને
જે પુરુષમાં સદ્ભાવ હોય છે તે પુરુષને નિસર્ગરુચિવાળો કહે છે.

ઉપદેશરુચિ-તીર્થંકર, ગણધર, ગુરુ આદિ આસપુરુષોનાં વચનો સાંભળીને
જે પુરુષમાં ભવાદિક પદાર્થો પ્રત્યે રુચિ ઉત્પન્ન થાય છે તે પુરુષને ઉપદેશ-
રુચિવાળો કહે છે. એટલે કે ભવ તીર્થંકર પ્રરૂપિત ભવાદિક પદાર્થો પ્રત્યે
તીર્થંકર ગણધર ગુરુ આદિના ઉપદેશથી શ્રદ્ધાભાવવાળો થાય છે તે ભવને
ઉપદેશરુચિવાળો કહે છે. કહ્યું પણ છે—“ एए चेव उ भावे ” ઇત્યાદિ

આજ્ઞારુચિ—સર્વજ્ઞોના વચનરૂપ આજ્ઞાપ્રત્યે જેને રુચિ હોય છે એવા પુરુષને
આજ્ઞારુચિવાળો સમ્યગ્દૃષ્ટિ કહે છે. એવા આજ્ઞારુચિવાળા ભવના રાગદ્વેષ અને
મિથ્યાજ્ઞાન ક્ષીણ થઈ ગયા હોય છે અને તે કદાચકથી રહિત હોવાને કારણે

પ્રતનુરાગદ્વેપમિથ્યાજ્ઞાનત્વાત્ કદાગ્રહરહિત્યેન આચાર્યાદીનામાજ્ઞયૈવ=ઉપદેશેનૈવ માષતુષાદિવત્ જીવાદીન્ પદાર્થાન્ શ્રદ્ધાતિ સ इत्यर्थः । तदुक्तम्—

“ રાગો દોસો મોહો, અન્નાણં જરૂસ અવગયં હોઈ ।

આળાણ રોયંતો, સો સ્વલુ આળારૂઈ હોઈ ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—રાગો દ્વેષો મોહઃ, અજ્ઞાનં યસ્ય ઉપગતં ભવતિ ।

આજ્ઞયા રોચયન્ સ સ્વલુ આજ્ઞારૂચિ ભવતિ ॥ ૧ ॥ इति ॥ ૩ ॥

તથા—સૂત્રરૂચિઃ=સૂત્રેણ=આગમેન રૂચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ દ્વાદશાઙ્ગ્યાદિરૂપં સૂત્રં પઠંસ્તેનૈવ સૂત્રેણ સમ્યક્ત્વં લભતે સ इत्यर्थः । तदुक्तम्—

“ જો સુત્તમહિજ્જંતો, સુણ્ણ ઓગાહઈ ઉ સમ્મત્તં ।

અંગેણ વાહિરેણ વ, સો સુત્તરૂઈત્તિ નાયવ્વો ॥ ૧ ॥ ”

છાયા—યઃ સૂત્રમધીયાનઃ, શ્રુતેન અવગાહતે તુ સમ્યક્ત્વમ્ ।

અજ્ઞેન વાહ્યેન વા, સ સૂત્રરૂચિરિતિ જ્ઞાતવ્યઃ ॥૧॥ इति ४ ॥

રાગદ્વેષ મિથ્યા જ્ઞાનવાલા હોનેસે એવં કદાગ્રહ રહિત હોનેસે આચાર્યાદિકોંકે આજ્ઞારૂપ ઉપદેશસેહી માષતુષ આદિકી તરહ જીવાદિક પદાર્થોંકાં શ્રદ્ધાન કરનેવાલા હોતા હૈ કહા મી હૈ—

“ રાગો દોસો મોહો ” इत्यादि ।

સૂત્ર રૂચિ-આગમસે જિસ જીવકો જિનોક્ત તત્ત્વોંમે રૂચિ હોતી હૈ એસા વહ જીવ આજ્ઞારૂચિ-આજ્ઞા રૂચિવાલા હૈ-અર્થાત્ જો દ્વાદશાઙ્ગીરૂપ સૂત્રકો પઢતા હુઆ उसी सूत्रसे सम्यक्त्वको पालताहै, એસા જીવ આજ્ઞા રૂચિ રૂપ સમ્યક્ત્વવાલા હૈ । કહા મી હૈ-“ જો સુત્તમહિજ્જંતો ” इत्यादि ।

તાત્પર્ય યહી હૈ કિ અજ્ઞ પ્રવિષ્ટ રૂપ શ્રુતસે યા અજ્ઞ વાહ્યરૂપ શ્રુતસે પઢકર સમ્યક્ત્વકો પ્રાપ્ત કર લેતા હૈ વહ સૂત્ર રૂચિવાલા જીવ હૈ—

આચાર્યાદિકેના ઉપદેશ દ્વારા જ-આજ્ઞારૂપ ઉપદેશ દ્વારા જ-માષ, તુષ આદિ પ્રત્યક્ષ પદાર્થોની જેમ જીવાદિક પદાર્થો પ્રત્યે પણ શ્રદ્ધા રાખતો થાય છે. કહ્યું પણ છે કે—“ રાગો દોસો મોહો ” इत्यादि.

સૂત્રરૂચિ-આગમ દ્વારા જે જીવમાં જિનોક્ત તત્ત્વો પ્રત્યે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે તે જીવને સૂત્રરૂચિવાળો કહે છે. એટલે કે જે જીવો બાર અંગરૂપ સૂત્રને આધારે જ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ કરે છે એવા જીવને સૂત્રરૂચિરૂપ સમ્યક્ત્વવાળો કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—“ જો સુત્તમહિજ્જંતો ” इत्यादि.

એટલે કે અંગપ્રવિષ્ટ શ્રુતનું અથવા અંગ બાહ્યરૂપ શ્રુતનું અધ્યયન કરીને જે જીવ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ કરી લે છે તે જીવને સૂત્રરૂચિવાળો કહે છે.

તથા—વીજરુચિઃ—વીજેન=અનેકાર્થબોધકેન એકેન પદેનાપિ રુચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ જ્ઞાતેન જીવાદિના એકેન પદેન અનેકેષુ પદાર્થેષુ શ્રદ્ધાવાન્ ભવતિ સ इत्यर्थः । તદુક્તમ્—

“ एगपए जेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्ते ।

उदएव तिलविंदु, सो वीयरुइत्ति नायव्वो ॥ १ ॥ ”

છાયા—એકપદેન અનેકાનિ પદાનિ યઃ પ્રસરતિ તુ સમ્યક્ત્વમ્ ।

उदके इव तैलविन्दुः स बीजरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥१॥ इति ॥५॥

તથા—અભિગમરુચિઃ—અભિગમેન=જ્ઞાનેન રુચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ પૂર્વ-માચારાદિરૂપસ્ય શ્રુતાજ્ઞસ્યાર્થજ્ઞો ભવતિ પશ્ચાત્તુ શ્રદ્ધાવાન્ ભવતિ સ इत्यर्थः ।

અનેક અર્થકે બોધક એક પદસે મી જિસકી રુચિ જીવાદિક પદાર્થ વિષયક હોતી હૈ વહ બીજ રુચિ સમ્યક્ત્વવાલા જીવ હૈ । તાત્પર્ય યહી હૈ કિ જો જીવ જ્ઞાત એક જીવાદિ પદસે મી અનેક પદાર્થોસે શ્રદ્ધા-વાલા હોતા હૈ એસા વહ જીવ બીજરુચિ સમ્યક્ત્વવાલા હૈ । કહા મી હૈ—

“ एग पए जेगाइं ” इत्यादि ।

જિસ પ્રકાર તૈલકી બિન્દુ પાનીમેં ઢાલને પર સર્વત્ર ફેલ જાતી હૈ उसी प्रकारके जो जीव एक आगमके पदको जानकर अन्य और समस्त विषयको जान लेता है वह बीजरुचि सम्यक्त्ववाला जीव है ।

અભિગમ રુચિ—અભિગમ શબ્દકા અર્થ જ્ઞાન હૈ, જો જીવ પહિલે આચારજ્ઞ આદિ રૂપ શ્રુતાજ્ઞકે અર્થકા જ્ઞાના હોતા હૈ બાદમેં શ્રદ્ધાવાલા

બીજરુચિ—અનેક અર્થના બોધક એક પદ દ્વારા પણ જે જીવમાં જીવાદિક પદાર્થો પ્રત્યે રુચિ ઉત્પન્ન થઈ જાય છે, તે જીવને બીજરુચિ સમ્યક્ત્વવાળો કહે છે.—

આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે જે જીવ માત્ર એક જ જીવાદિ પદના જ્ઞાન દ્વારા અનેક તત્ત્વો પ્રત્યે શ્રદ્ધા રાખે છે, તે જીવને બીજરુચિ સમ્યક્ત્વવાળો કહે છે કહ્યું પણ છે કે—“ एग पए जे गाइं ” ઇત્યાદિ.

જે રીતે તેલનું એક જ ટીપું પાણીમાં નાખવામાં આવે, તે પાણીમાં સર્વત્ર ફેલાઈ જાય છે, એજ શ્રમાણે જે જીવ આગમના એક જ પદને જાણીને અન્ય પદોને—ખાકીના સમસ્ત વિષયને જાણી લે છે અથવા ખાકીના સમસ્ત જિનોક્ત પદાર્થો વિષે પણ શ્રદ્ધાભાવયુક્ત બની જાય છે, એવા જીવને બીજરુચિવાળો જીવ કહે છે.

અભિગમરુચિ—અભિગમ એટલે જ્ઞાન. જે જીવ પહેલાં આચારાંગ આદિ 'ઇપ' શ્રુતાંગના અર્થનો જ્ઞાતા થાય છે અને ત્યાર બાદ જિનોક્ત તત્ત્વો પ્રત્યે શ્રદ્ધાભાવયુક્ત થાય છે, એવા જીવને અભિગમરુચિ સમ્યક્ત્વવાળો જીવ કહે

તદુક્તમ્—

“ સો હોઈ અભિગમરૂઈ, સુચનાણં જસ્સ અથઓ દિદ્ધં ।

एकारस अंगाई, पञ्चयं दिद्धिवाओ य ॥ १ ॥ ”

છાયા—સ ભવતિ અભિગમરુચિઃ શ્રુતજ્ઞાનં યસ્ય અર્થતો દૃષ્ટમ્ ।

एकादश अङ्गानि, प्रकीर्णकम् दृष्टिवादश्च ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

તથા—વિસ્તારરુચિઃ—વિસ્તારઃ—ધર્માસ્તિકાયાદીનાં પદાર્થનાં વિસ્તારેણ= સર્વનયપ્રમાણૈર્જ્ઞાનં, તેન રુચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ ધર્માસ્તિકાયાદીન્ પદાર્થાન્ સર્વનયપ્રમાણૈર્જાનાતિ સ इत्यर्थः । તદુક્તમ્—

“ द्रव्याण सव्वभावा, सव्व पमाणेहि जस्स उवलढा ।

सव्वाहि नयविहीहि, वित्थाररूई मुणेयवो ॥ १ ॥

છાયા— દ્રવ્યાણાં સર્વ ભાવાઃ, સર્વપ્રમાણૈર્યસ્ય ઉપલબ્ધાઃ ।

सर्वैर्नयविधिभिर्विस्ताररुचिः स ज्ञातव्यः ॥ १ ॥ इति । ७ ॥

તથા—ક્રિયારુચિઃ—ક્રિયા=પ્રતિલેખનાદિરૂપા તત્ર રુચિ ર્યસ્ય સ તથા । યો હિ પ્રતિલેખનાદિરૂપાયાં ક્રિયાયાં શ્રદ્ધાવાન્ ભવતિ સ इत्यर्थः । તદુક્તમ્—

“ पडिलेहणाइकरणे, रुजुतो जो य संजओ होइ ।

केवलनाणिवरेहि, सो खड्ड किरियारूई भणिओ ॥ १ ॥ ”

હોતા હૈ એસા જીવ અભિગમ રુચિ સમ્યક્તવવાલા હોતા હૈ । કહા ખી હૈ—

“ સો હોઈ અભિગમરૂઈ ” इत्यादि ।

હસકા અર્થ સ્પષ્ટ હૈ વિસ્તાર રુચિ—સર્વનય એવં પ્રમાણોસે જો ધર્માસ્તિકાયાદિક પદાર્થોંકા જ્ઞાના હોતા હૈ એસા વહ જીવ વિસ્તાર રુચિ સમ્યક્તવવાલા હૈ કહા ખી હૈ—“ द्रव्याणसव्व भावा ” इत्यादि ।

ક્રિયારુચિ—પ્રતિલેખનાદિ ક્રિયાઓંમેં જિસકી રુચિ હોતી હૈ પ્રતિલેખનાદિ રૂપ ક્રિયામેં જો શ્રદ્ધાવાલા હોતા હૈ વહ જીવ ક્રિયારુચિ સમ્યક્તવવાલા હોતા હૈ । કહા ખી હૈ—“ पडिलेहणाइ करणे ” इत्यादि ।

छे. ३६५ पञ्च छे ३—“ सों होई अभिगम रूई ” इत्यादि—

आ सूत्रपाठने। अर्थ स्पष्ट छे,

विस्ताररुचि—सर्वनय अने प्रमाणोंने। आधार लघने ७ धर्मास्तिकाय आदि पदार्थोंने। ज्ञाता थाय छे, ओवा एवने विस्ताररुचि सम्यक्त्ववाणे। कहे छे. ३६५ पञ्च छे ३—“ द्रव्याणसव्वभावा ” इत्यादि.

क्रियारुचि—प्रतिवेचना आदि क्रियाओं। प्रत्ये ७ एवने रुचि डोय छे ओटले ३ प्रतिवेचना आदि क्रियाओं। प्रत्ये ७ एवने श्रद्धा डोय छे ते एवने क्रियारुचि सम्यक्त्ववाणे। कहे छे. ३६५ पञ्च छे ३—

છાયા—પ્રતિલેખનાદિકરણે રુચિયુક્તો યથા સંયતો ભવતિ ।

કેવલજ્ઞાનિવરૈઃ સંસ્કૃત્ ક્રિયારુચિર્મણિતઃ ॥૧॥ ઇતિ ॥૮॥

તથા—સંક્ષેપરુચિઃ—સંક્ષેપે રુચિર્યસ્ય સ તથા । અયં ભાવઃ—યો હિ કપિલાદિપરતીર્થિકદર્શનં ન જાનાતિ તથા જિનપ્રવચનેષ્યમિજ્ઞો ન ભવતિ, એતાદૃશચિલાતિપુત્રવદ્ યઃ ઉપશમાદિપદત્રયેણ જિનોક્તત્ત્વેઽભિરુચિં પ્રાપ્નોતિ સ સંક્ષેપરુચિરિત્યુચ્યતે ઇતિ । તદુક્તમ્—

“ અણમિગ્ગહિયકુદિટ્ટી, સંસ્કેવરુદ્ધિ હોઝ નાયવ્વો ।

અવિસારઓ પવચણે, અણમિગ્ગાહિઓ ય સેસેષુ ॥ ૧ ॥

છાયા—અનમિગ્ગહીતદૃષ્ટિઃ સંક્ષેપરુચિરિતિ ભવતિ જ્ઞાતવ્યઃ ।

અવિસારદઃ પ્રવચને, અનમિગ્ગહીતશ્ચ રોપેસુ ॥૧॥ ઇતિ ॥૯॥

તથા—ધર્મરુચિઃ—ધર્મે=શ્રુતચારિત્રલક્ષણે રુચિર્યસ્ય સ તથા । યો હિ જિનોક્તેઽસ્તિકાયધર્મે શ્રુતધર્મે ચારિત્રધર્મે ચ શ્રદ્ધાવાન ભવતિ સ ઇત્યર્થઃ । તદુક્તમ્—

“ જો અત્થિકાયધમ્મં, સુયધમ્મં સ્વલ્લુ ચરિત્તધમ્મ ચ ।

સદ્દહ્ જિનામિહિયં, સો ધમ્મરુદ્ધિ નાયવ્વો ॥૧॥ ”

છાયા—યઃ અસ્તિકાયધર્મં શ્રુતધર્મં સ્વલ્લુ ચારિત્રધર્મં ચ ।

શ્રદ્ધાતિ જિનામિહિતં, સ ધર્મરુચિરિતિ જ્ઞાતવ્યઃ ॥૧॥ ઇતિ ॥૧૦સુ.૫૭॥

સંક્ષેપ રુચિ—સંક્ષેપમેં જિસકી રુચિ હોતી હૈ અર્થાત્ કપિલાદિ પ્રણીત પરતીર્થિક દર્શનકો જો નહીં જાનતાહૈ તથા—જિન પ્રવચનમેં જો અમિજ્ઞ નહીં હોતા હૈ એસા જીવ ચિલાતિ પુત્રકી તરહ કેવલ ઉપશમા આદિ પદત્રયસે જિનોક્ત તત્ત્વમેં અભિરુચિક સમ્યક્ત્વવાલા હૈ કહા ઓ હૈ—

“ અણમિગ્ગહિયકુદિટ્ટી ” ઇત્યાદિ ।

ધર્મરુચિ—શ્રુત ચરિત્ર રૂપ ધર્મમેં રુચિ હોતી હૈ અર્થાત્ જો જિનેન્દ્ર-દેવ દ્વારા કથિત અસ્તિકાય ધર્મમેં શ્રુત ધર્મમેં એવં ચારિત્ર ધર્મમેં શ્રદ્ધા-

“ પઢિલેહ્નાદ્ધકરણે ” ઇત્યાદિ.

સંક્ષેપરુચિ—સંક્ષેપમાં જેમને રુચિ હોય છે, એટલે કે કપિલાદિ પ્રણીત પરતીર્થિકોના દર્શનને જે બાણુતો નથી, તથા જિનપ્રવચનોનો પણ જે જ્ઞાતા હોતો નથી એવો જીવ ચિલાતિ—પુત્રની જેમ કેવળ ઉપશમા આદિ પદત્રય વડે જિનોક્ત તત્ત્વ પ્રત્યે અભિરુચિવાળો બની બાય છે; તેથી એવા જીવને સંક્ષેપ રુચિ સમ્યક્ત્વવાળો જીવ કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ અણમિગ્ગહિયકુદિટ્ટી ” ઇત્યાદિ.

ધર્મરુચિ—જેને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ પ્રત્યે શ્રદ્ધા હોય છે—એટલે કે જિનેન્દ્ર દેવ દ્વારા પ્રરૂપિત અસ્તિકાયધર્મ, શ્રુતધર્મ અને ચારિત્રધર્મ પ્રત્યે જે જીવ શ્રદ્ધા-

સરાગસમ્યગ્દૃષ્ટિસ્તુ દશવિધા અપિ સંજ્ઞાઃ ક્રમેણ વ્યવચ્છિન્નતીતિ સંજ્ઞાનાં દશવિધત્વેમાહ—

મૂલમ્—દસ સપ્પનાઓ પપ્પણત્તાઓ, તં જહા—આહારસપ્પના ૧ જાવ પરિગ્રહસપ્પના ૪ કોહસપ્પના ૫ જાવ લોહસપ્પના ૮ ળોગસપ્પના ૯ ઓહસપ્પના ૧૦ નેરઙ્ગયાણં દસ સપ્પનાઓ એવં ચેવ । એવં નિરંતરં જાવ વેમાણિયાણં ॥ સૂ. ૫૮ ॥

છાયા—દશ સંજ્ઞા પ્રજ્ઞાતાઃ, તથા—આહારસંજ્ઞા ૧ યાવત્ પરિગ્રહસંજ્ઞા ૪ ક્રોધસંજ્ઞા ૫ યાવત્ લોભસંજ્ઞા ૮ લોકસંજ્ઞા ૯ ઓઘસંજ્ઞા ૧૦ નૈરયિકાણાં દશ-સંજ્ઞા એવમેવ । એવં નિરંતરં યાવત્ વૈમાનિકાનામ્ ॥ સૂ. ૫૮ ॥

ટીકા—‘ દસ સપ્પનાઓ ’ इत्यादि—

સંજ્ઞાયતે=અવગમ્યતે આહારાદ્યર્થી જીવોઽનયેતિ સંજ્ઞા, વેદનીયમોહનીયો-દયાશ્રયા જ્ઞાનદર્શનાવરણક્ષયોપશમાશ્રયા ચ આહારાદિપ્રાપ્ત્યર્થા વિચિત્રા ક્રિયા-વાલા હોતા હૈ એસા વહ જીવ ધર્મરુચિ સમ્યક્ત્વવાલા હૈ કહા મી હૈ—

“ જો અત્થિકાયધમ્મં ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૫૭ ॥

સરાગ સમ્યગ્દૃષ્ટિ ૧૦ પ્રકારની મી સંજ્ઞાઓનો ક્રમશઃ નષ્ટ કરતે હૈં હસલિયે અવ વે સંજ્ઞાઓની દશવિધતાકા કથન કરતે હૈં—

“ દસ સપ્પનાઓ પપ્પણત્તાઓ ” इत्यादि ॥ સૂત્ર ૫૮ ॥

ટીકાર્થ—સંજ્ઞાઈ ૧૦ પ્રકારની કહી ગઈહૈં—આહાર સંજ્ઞા યાવત્ પરિગ્રહ સંજ્ઞા ૪ ક્રોધસંજ્ઞા ૫ યાવત્ લોભસંજ્ઞા ૮ લોકસંજ્ઞા ૯ ઓઘસંજ્ઞા

જિસકે દ્વારા યહ જીવ આહાર આદિકા અર્થી-इच्छाવાલાહૈ એસા જાના જાતાહૈ, સંજ્ઞાહૈ વે વિચિત્ર પ્રકારની ક્રિયા રૂપ હોતીહૈ, વેદનીય એવં મોહ-

વ.જો હોય છે એવા જીવને ધર્મરુચિ સમ્યક્ત્વવાળો કહે છે. કહ્યું પણ છે કે—

“ જો અત્થિકાયધમ્મં ” इत्यादि. ॥ સૂત્ર ૫૭ ॥

ટીકાર્થ—સરાગ સમ્યદૃષ્ટિ જીવ દસે પ્રકારની સંજ્ઞાઓને ક્રમશઃ નાશ કરે છે, તેથીહવે સૂત્રકાર સંજ્ઞાઓના દસ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ દસ સપ્પનાઓ પપ્પણત્તાઓ ” इत्यादि—(સૂત્ર ૫૮)

સંજ્ઞાના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકારો કહ્યા છે—(૧) આહારસંજ્ઞા, (૨) ભય સંજ્ઞા, (૩) મૈથુનસંજ્ઞા, (૪) પરિગ્રહસંજ્ઞા, (૫) ક્રોધસંજ્ઞા, (૬) માનસંજ્ઞા, (૭) માયાસંજ્ઞા, (૮) લોભસંજ્ઞા અને (૧૦) ઓઘસંજ્ઞા.

જેના દ્વારા જીવ આહારાદિ અભિલાષાવાળો બને છે, તેનું નામ સંજ્ઞા છે. તે વિચિત્ર પ્રકારની ક્રિયારૂપ હોય છે, વેદનીય અને મોહનીય કર્મના

તસ્યા નહુત્વે સંજ્ઞાઃ । તાદૃશ પ્રજ્ઞતા', તદ્યથા-આહારસંજ્ઞા इत्यादि । तत्र-आहार-
संज्ञा-आहाराभिलाषः । इयं तैजसशरीरनामकर्मोदयादसातोदयाच्च भवति १।
भयसंज्ञा=त्रासरूपा २, मैथुनसंज्ञा=स्थ्यादिवेदोदयरूपा ३, परिग्रहसंज्ञा=मूर्च्छा-
रूपा ४। एता भयसंज्ञादयस्त्रित्सः संज्ञा मोहनीयोदयजन्याः । त-१-क्रोधसंज्ञा=
अप्रीतिरूपा ५, मानसंज्ञा-गर्वरूपा ६ मायासंज्ञा=कपटरूपा ७ लोभसंज्ञा=गृद्धि-
रूपा ८। एताः क्रोधसंज्ञादयश्चतस्रः संज्ञा मोहकर्मोदयजन्याः । तथा-लोकसंज्ञा=

નીચ કર્મકે ઉદયાધીન होती है ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयो-
पशमाधीन होती हैं एवं आहार आदिको प्राप्त करनेके प्रयोजनवाली
होती है, यह संज्ञा दस प्रकारकी होती है इसलिये यहाँ बहुवचनका निर्देश
किया गया है वे सब अनेक प्रकार इन १० प्रकारोंमेंही अन्तर्हित हो
जाते हैं आहारकी अभिलाषाका नाम आहार संज्ञा है यह संज्ञा जीवके
तैजस शरीर नामकर्मके उदयसे एवं असातावेदनीय कर्मसे होती है १

भय संज्ञा-त्रासरूप होती है, मैथुन संज्ञा-स्त्री आदि वेदके उदय
रूप होती है, और परिग्रह संज्ञा मूर्च्छारूप होती है, भय संज्ञासे लेकर
परिग्रह संज्ञा तककी ३ संज्ञाएँ मोहनीय कर्मके उदयसे जन्य होती हैं।
क्रोध संज्ञा अप्रीति रूप होती है, मानसंज्ञा गर्वरूप होती है, माया संज्ञा
कपटरूप होती है, लोभसंज्ञा गृद्धि रूप होती है, ये क्रोध आदि धार्मिक
चार संज्ञाएँ मोहनीय कर्मके उदयसे होती हैं। लोकसंज्ञा अपनी

ઉદયાધીન હોય છે, જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનાવરણીય કર્મોના ક્ષયોપશમાધીન
હોય છે અને આહારાદિપ્રાપ્ત કરવાના પ્રયોજનવાળી હોય છે. આ સંજ્ઞા અનેક
પ્રકારની હોય છે, તેથી અહીં બહુવચનનો પ્રયોગ કરાયો છે. આ અનેક
પ્રકારનો તેના દસ પ્રકારોમાં સમાવેશ થઈ જતો હોવાને કારણે અહીં તેના
દસ પ્રકારો કહેવામાં આવ્યા છે.

આહારની અભિલાષા થવી તેનું નામ આહારસંજ્ઞા છે. તૈજસશરીર નામ
કર્મના ઉદયથી જીવમાં અને અસાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી જીવમાં આ
સંજ્ઞા ઉદ્ભવે છે.

ભયસંજ્ઞા ત્રાસરૂપ હોય છે. મૈથુનસંજ્ઞા-આ સંજ્ઞા સ્ત્રી આદિ વેદના ઉદય
રૂપ હોય છે અને પરિગ્રહસંજ્ઞા મૂર્ચ્છારૂપ (પદાર્થ પ્રત્યેની આસક્તિરૂપ) હોય
છે. ભયસંજ્ઞા, મૈથુનસંજ્ઞા અને પરિગ્રહસંજ્ઞા, આ ત્રણે સંજ્ઞાઓ મોહનીય
કર્મના ઉદયથી જન્ય હોય છે.

ક્રોધસંજ્ઞા અપ્રીતિરૂપ હોય છે, માનસંજ્ઞા ગર્વરૂપ હોય છે, માયાસંજ્ઞા

સ્વચ્છન્દમતિકલ્પિતા । યથા-‘ ન સન્ત્યનપત્યસ્ય લોકાઃ, શ્વાનો યક્ષાઃ, વિપ્રા-
દેવાઃ, કાકાઃ પિતામહાઃ, વર્હિણાં પક્ષવાતેન ગર્ભઃ ’ इत्येवमादिरूपा । इयं च
ज्ञानावरणक्षयोपशमामोहोदयाच्च भवतीति ९। तथा-ઓઘવંજ્ઞા-અવ્યક્તોપયોગ-
રૂપા વલ્લિવિતાનારોહણાદિલિજ્ઞા । इयं ज्ञानावरणीयाल्पक्षयोपशमजन्या बोध्या
१०। અથ્ર પ્રથમ યાવત્પદેન ‘ ભયસંજ્ઞા મૈથુનસંજ્ઞા ચ ગૃહ્યેતે, દ્વિતીયેન તુ-માન-

સ્વચ્છન્દ મતિસે કલ્પિત હોતી હૈ, જૈસે-જિણકે લહકા નહીં હોતા હૈ
ઉસકી પરલોકમેં ગતિ અચ્છી નહીં હોતી હૈ, શ્વાન-કુત્તે યક્ષ હૈ, વિપ્ર
દેવ હૈ, કૌઈ પિતામહ હૈ, एवं पांखोंकी हवासे मयूरोंके गर्भ रहता है,
इत्यादि । यह संज्ञा ज्ञानावरणीय कर्मके क्षयोपशमसे और मोहनीय
कर्मके उदयसे होती है ९ ।

ઓઘ સંજ્ઞા-અવ્યક્ત ઉપયોગરૂપ હોતી હૈ ઓર યહ વેલો (લતાઓ) કા
જો પાસમેં પઢી હુઈ વસ્તુ હોતી હૈ ઉસ પર ચઢને આદિરૂપ લિજ્ઞસે અનુમિત
હોતી હૈ. જ્ઞાનાવરણીય કર્મકે અલ્પ ક્ષયોપશમસે હોતી હૈ યહાં પ્રથમ
યાવત્પદસે “ ભય સંજ્ઞા મૈથુન સંજ્ઞા ” इन दो संज्ञाओंका ग्रहण हुआ
है तथा दूसरे यावत्पदसे मान संज्ञा माया संज्ञा आदि संज्ञाओंका

કપટરૂપ હોય છે અને લોભસંજ્ઞા ગૃહિ (લાલચ)રૂપ હોય છે. ક્રોધાદિ ચારે
સંજ્ઞાઓ મોહનીયકર્મના ઉદયથી જન્ય હોય છે.

લોકસંજ્ઞા-પોતાની સ્વચ્છન્દ મતિથી કોઈ પણ કલ્પના કરવારૂપ લોકસંજ્ઞા
હોય છે. જેમ કે એવી કલ્પના કરવી કે અપુત્ર માનવીની પરલોકમાં સદ્ગતિ
થતી નથી, કૂતારાઓ યક્ષ છે, બ્રાહ્મણો દેવો છે, ક ગડાઓ પિતામહ છે,
પાંખોની હવાથી મયૂરોને (માદા પક્ષીઓને) ગર્ભ રહે છે, ઇત્યાદિ જે
કલ્પના કરવામાં આવે છે તેને લોકસંજ્ઞા કહે છે.

આ સંજ્ઞા જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અને મોહનીય કર્મના
ઉદયથી જન્ય હોય છે.

ઓઘસંજ્ઞા-આ સંજ્ઞા અવ્યક્ત ઉપયોગરૂપ હોય છે, અને વેલાઓ
પાસે રહેલી વસ્તુઓનો આધાર લઈને ઊંચા વધે છે, તે લક્ષણ અને બીજાં
લક્ષણો વડે આ સંજ્ઞાનું અનુમાન કરી શકાય છે આ જ્ઞાનાવરણીય કર્મના
અલ્પક્ષયોપશમથી જન્ય હોય છે.

આ સૂત્રમાં “ યાવત્ ” પદથી ભયસંજ્ઞા આદિને ગ્રહણ કરવાની છે અને
બીજા યાવત્ પદથી માનસંજ્ઞા માયાસંજ્ઞા વિગેરે સંજ્ઞાઓ સમજવાની છે.
તે બધી સંજ્ઞાઓનાં નામ ઉપર આપી દેવામાં આવ્યા છે. અહીં સામાન્ય
જીવ પદને આશ્રિત કરીને આ સંજ્ઞાઓનું કથન કરવામાં આવ્યું છે-પંચેન્દ્રિય

સંજ્ઞા માયાસંજ્ઞા ચેતિ । એતાઃ સંજ્ઞાઃ પચ્ચેન્દ્રિયાનાશ્રિત્ય વ્યાખ્યાતાઃ એકેન્દ્રિયા-
દીનાં તુ યથોક્ત ક્રિયાપ્રયુક્ત કર્મોદયાદિપરિણતિરૂપા એવ તા વોધ્યા ઇતિ ।

इत्थं सामान्यतः संज्ञाभेदानभिधाय संप्रति ता एव चतुर्विंशतिदण्डकस्थम-
त्येकजीवमाश्रित्याह—‘ नेरइयाणं ’ इत्यादि । नैरयिकाणां=नारकजीवानाम् एव-
मेव=अनन्तरोक्तसंज्ञावदेव दश संज्ञा वोध्या । एताः संज्ञा न केवलं नारकाणामेव
अपि तु नारकाधारभ्य वैमानिकान्तानां चतुर्विंशतिदण्डकोक्तानां समस्तजीवानां
भवतीति दर्शयितुमाह—‘ एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ’ इति । सू ५८ ॥

अनन्तरसूत्रे नैरयिकादि वैमानिकान्तानां संज्ञा उक्ताः । तत्र वैमानिकाः

ग्रहण हुआ है । ये संज्ञाएँ यहाँ पञ्चेन्द्रिय जीवोंके अश्रित नहीं करके
व्याख्यात हुई हैं । एकेन्द्रिय आदि जीवोंके तो ये यथोक्त क्रिया प्रयुक्त
कर्मोदय आदिकी परिणति रूपही होती हैं ऐसा जानना चाहिये ।

इस तरहसे सामान्य रूपसे संज्ञा भेदोंको कहकर अब सूत्रकार
उनका कथन चौबीस दण्डकोंमें प्रत्येक जीवको आश्रित करते हैं—
“ नेरइयाणं ” इत्यादि—

इस सूत्र द्वारा यह प्रकट किया गया है कि नारक जीवोंको अन-
न्तरोक्त संज्ञाओंकी तरह ही १० संज्ञाएँ होती हैं—ये संज्ञाएँ केवल नार-
कियोंको ही होती हैं ऐसी बात नहीं है किन्तु नारकसे लेकर वैमानिक-
तकके समस्त जीवोंको होती है । यही बात—“ एवं निरंतरं जाव वेमा-
णियाणं ” इत्यादि सूत्र पाठ द्वारा प्रकट की गई है ॥ सूत्र ५८ ॥

इस पूर्वोक्त ५८ वे' सूत्रमें नैરયિકसे लेकर वैમાનિક तकके समस्त
जीवोंके संज्ञાएँ होती हैं ऐसा कहा गया है—इनमें वैમાનિક जो जीव

જીવોને આશ્રિત કરીને આ સંજ્ઞાઓનું વિવેચન કરવામાં આવ્યું નથી એકેન્દ્રિય
આદિ જીવોમાં તો તે સંજ્ઞાઓ યથોક્ત ક્રિયાપ્રયુક્ત કર્મોદય આદિની પરિણતિ
રૂપ જ હોય છે, એમ સમજવું.

આ રીતે સામાન્ય રૂપે સંજ્ઞાના ભેદોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર ૨૪
દંડકોમાંના પ્રત્યેક દંડકના જીવને અનુલક્ષીને આ સંજ્ઞાઓનું કથન કરે છે—
“ નેરइयाणं ” ઇત્યાદિ—આ સૂત્ર દ્વારા એ વાત પ્રકટ કરવામાં આવી છે કે
ઉપર્યુક્ત હસે પ્રકારની સંજ્ઞાઓનો નારકોમાં સદ્ભાવ હોય છે. આ સંજ્ઞાઓનો
એકલાં નારકોમાં જ સદ્ભાવ હોય છે, એવું નથી પરંતુ નારકોથી લઈને
વૈમાનિકો પર્યન્તના સમસ્ત જીવોમાં પણ આ સંજ્ઞાઓનો સદ્ભાવ હોય
છે. એજ વાત સૂત્રકારે “ एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ” ઇત્યાદિ સૂત્રપાઠ દ્વારા
પ્રકટ કરી છે ॥ સૂ. ૫૮ ॥

આગલા સૂત્રમાં એવું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે કે આહારસંજ્ઞા
આદિ હસે સંજ્ઞાઓનો નારકથી લઈને વૈમાનિકો પર્યન્તના જીવોમાં સદ્ભાવ

સુખવેદનાનુભવિનો ભવન્તિ । નૈરયિકાસ્તુ દુઃસ્વવેદનાનુભવિન ઇતિ નૈરયિકાણાં
યા દુઃસ્વવેદના ભવન્તિ તાઃ પ્રસજ્જતઃ પ્રાહ—

મૂલ્ય- નેરહયા ણં દસવિહં વેયણં પચ્છણુભવંતિ, તં જહા-
સીયં ૧ ડસિણં ૨ સુહં ૩ પિવાસં ૪ કંહું ૫ પરજ્ઞં ૬ ભયં ૭
સોગં ૮ જરં ૯ વાહિં ૧૦ ॥ સૂ૦ ૫૯ ॥

જાયા—નૈરયિકાઃ સ્વલુ દશવિધાં વેદનાં પ્રત્યનુભવન્તિ, તથા—શીતામ્
ઉષ્ણામ્ ૨ ક્ષુધાં ૩ પિપાસાં ૪ ક્રુણ્ડં ૫ પરતન્ત્રતાં ૬ ભયં ૭ શોકં ૮ જરાં ૯
વ્યાધિમ્ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૫૯ ॥

ટીકા—‘ નેરહયા ણં ’ ઇત્યાદિ—

નૈરયિકાઃ સ્વલુ=નિશ્ચયેન દશવિધાં વેદનાં=પીડામ્ પ્રત્યનુભવન્તિ, તથા—
હોતે હું વે સુખ વેદનાનુભવી હોતે હું, ઓર જો નૈરયિક જીવ હોતે હું
વે દુઃસ્વ વેદનાનુભવી હોતે હું—હસલિયે અથ સૂત્રકાર નૈરયિક જીવોંકી
જો દુઃસ્વ વેદનાઈ હોતી હું ડનકા પ્રસજ્જતઃ કથન કરતે હું—

“ નેરહયાણં દસવિહં વેયણં ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૫૯ ॥

ટીકાર્થ—નૈરયિકોં ૧૦ પ્રકારકી વેદનાકા અનુભવ કરતેહું—જૈસે—શીત
વેદના ૧, ઉષ્ણ વેદના ૨, ક્ષુધા વેદના ૩, પિપાસા વેદના ૪, ક્રુણ્ડ વેદના ૫,
પરતન્ત્રતા વેદના ૬, ભયવેદના ૭, શોકવેદના ૮, જરા વેદના ૯,
અં વ્યાધિ વેદના ૧૦ ।

વેદના શબ્દકા અર્થ પીડા હૈ, નૈરયિક ૧૦ પ્રકારકી વેદનાકા જો

હોય છે. ઉપર્યુક્ત ૨૪ દંડકના જે જીવો છે તેમાંના વૈમાનિક દેવો સુખ-
વેદનાનુભવી (સાતાવેદનીયનો અનુભવ કરનારા) હોય છે. અને નારકો દુઃખ
વેદનાનુભવી (અસાતા વેદનાનો અનુભવ કરનારા) હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર
નારક જીવોની દુઃખવેદનાઓનું નિરૂપણ કરે છે—

“ નેરહયાણં દસવિહં વેયણં ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૫૯)

ટીકાર્થ—નારકો દસ પ્રકારની વેદનાઓનું વેદન કરે છે. તે વેદનાઓ નીચે
પ્રમાણે કહી છે—

(૧) શીતવેદના, (૨) ઉષ્ણવેદના, (૩) ક્ષુધાવેદના, (૪) પિપાસાવેદના, (૫)
કંડુવેદના, (૬) પરતન્ત્રતાવેદના, (૭) ભયવેદના, (૮) શોકવેદના, (૯) જરા
વેદના અને (૧૦) વ્યાધિવેદન.

વેદના એટલે પીડા. નારક જીવો શીતવેદના આદિ દસ વેદનાઓનું વેદન
કરે છે.

શીત સ્પર્શ વડે જતિત જે વેદના છે. તેનું નામ શીતવેદના છે, ઉષ્ણ

‘શીતામ્’ इत्यादि । तत्र-शीता=शीतस्पर्शजनिता वेदना १। उष्णा=उष्णस्पर्शज-
नितावेदना २। क्षुत्=बुभुक्षा ३। पिपासा=प्रसिद्धा ४। कण्डू=खर्जूः ५। ‘परज्ज्ञे’
इति देशीयशब्दः परतन्त्रतार्थवाचकः । ततश्च-परतन्त्रता=पराधीनता ६। भय-
प्रसिद्धम् ७। शोकः दैन्यम् ८। जरा=वृद्धता ९। व्याधिः=ज्वरकुष्ठादिरूपः १०
इति ॥ सू० ५९ ॥

अयं च वेदनादिरूपोऽर्थोऽमूर्तः । अमूर्तमर्थं च जिन एव जानाति न तु
छन्नस्य इति दर्शयितुमाह—

मूलम्—दस ઠાણાઈં છુડમત્થે ણં સવ્વભાવેણં ણ જાણઈ ણ
પાસઈ, તં જહા-ધમ્મમત્થિકાયં ૧ જાવ વાયં ૮। અયં જિણે ભવિ-
સ્સઈ વા ણ વા ભવિસ્સઈ ૯; અયં સવ્વદુક્ખાણમંતં કરિસ્સઈ
વા ણ વા કરિસ્સઈ ૧૦। ઇયાણિ ચેવ ઉપ્પન્નનાણદંસણધરે
અરહા જાવ અયં સવ્વદુક્ખાણમંતં કરિસ્સઈ વા ણ વા કરિ-
સ્સઈ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૬૦ ॥

अनुभव करते हैं, सो उसका तात्पर्य ऐसा है—शीत स्पर्शसे जनित
जो वेदना होती है, वह शीत वेदना है, उष्ण स्पर्शसे जनित जो वेदना
होती है वह उष्ण वेदना है, भूखकी वेदनाका नाम क्षुत् वेदना है,
प्यासकी वेदनाका नाम पिपासा वेदना है, खुजलीकी वेदनाका नाम
कण्डू वेदना है “परज्ज्ञे” यह देशीय शब्द है और यह परतन्त्रता रूप
अर्थका वाचक है परतन्त्रता-पराधीनता एवं भय-डर ये तथा शोक-
दैन्य, जरा वृद्धता, एवं ज्वर, कुष्ठादि रूप व्याधि ये सब भोगी जाती
हैं इसलिये वेदना रूप हैं ॥ सूत्र ५९ ॥

સ્પર્શ પડે જનિત જે વેદના છે તેનું નામ ઉષ્ણુવેદના છે. બૂખને
કારણે જીવ જે વેદનાનો અનુભવ કરે છે તે વેદનાનું નામ ક્ષુધાવેદના અને
પ્યાસ (તૃષ્ણા)ને કારણે જે વેદના અનુભવે છે તેને પિપાસાવેદના કહે છે.
ખજવાળરૂપ વેદનાનું નામ કંડૂવેદના છે “પરજ્ઞ” આ ગામઠી શબ્દ છે અને તે
પરતંત્રતાનું વાચક છે. નારક જીવને પરતંત્રતારૂપવેદના, ભયરૂપવેદના, (દૈન્ય)
રૂપ વેદના, જરા (વૃદ્ધત્વ)રૂપ વેદના અને તાવ આદિ વ્યાધિયો રૂપ વેદના
પણ ભોગવવી પડે છે. ॥ સૂત્ર ૫૯ ॥

છાયા—દશ સ્થાનાનિ છદ્મસ્થઃ સ્વલ્લ સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પશ્યતિ, તદ્વથા—ધર્માસ્તિકાયં ૧ યાવદ વાયુમ્ ૮, અયં જિનો ભવિષ્યતિ વા ન વા ભવિષ્યતિ ૯, અયં સર્વ દુઃખાનામન્તં કરિષ્યતિ વા ન વા કરિષ્યતિ ૧૦। એતાન્યેવ ઉત્પન્નજ્ઞાનદર્શનધરઃ અર્હન્ યાવત્ અયં સર્વદુઃખાનામન્તં કરિષ્યતિ વા ન વા કરિષ્યતિ ૧૦। ॥ સૂ. ૬૦ ॥

ટીકા—‘ દસ ઠાણાં ’ સ્થાદિ—

છદ્મસ્થઃ—પરમાવધિજ્ઞાન યુક્તો મુનિઃ દશ સ્થાનાનિ સર્વભાવેન=સાક્ષાત્કારેણ—પ્રત્યક્ષતત્ત્વેત્યર્થઃ, ન જાનાતિ ન પશ્યતિ । તાનિ સ્થાનાન્યાહ—તદ્વથા—

બેદના આદી રૂપ અર્થ અમૂર્ત હોતા હૈ, ઓર જો અમૂર્ત હોના હૈ ઉસે જિનહી જાનતેહૈં છદ્મસ્થ નહીં હસી વાતકો અથ સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈ—“ દસ ઠાણાં છદ્મસ્થેણ સર્વભાવેણ ” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૬૦ ॥

ટીકાર્થ—૧૦ સ્થાનોંકો છદ્મસ્થ સર્વ ભાવસે જાનતાહૈ ન દેખનાહૈ—થે ૧૦ સ્થાન હસ પ્રકારસે હૈ—ધર્માસ્તિકાય ૧ યાવત્ વાયુ ૮ યહ જિન હોગા યા નહીં હોના ૯ ઓર યહ સર્વ દુઃખોંકા અન્ત કરેગા યા નહીં કરેગા હન્હીં ૧૦ સ્થાનોંકો ઉત્પન્ન જ્ઞાન દર્શન ધારી જિન અર્હન્ત યાવત્ યહ સર્વ દુઃખોંકા અન્ત કરેગા યા નહીં કરેગા યહ સવ જાનતે હૈ—

છદ્મસ્થ પદસે યહાં પરમ અવધિજ્ઞાન વર્જિત મુનિ લિયા ગયા હૈ, એસા છદ્મસ્થ મુનિ હન પૂર્વોક્ત ૧૦ સ્થાનોંકો નહીં જાનતા હૈ ધર્માસ્તિકાયકે સાથ આગત યાવત્પદસે અધર્માસ્તિકાય આકા-

બેદનારૂપ પદાર્થો અમૂર્ત હોય છે. એવાં અમૂર્ત પદાર્થોને જિનેન્દ્ર ભગવાનો જ જાણી શકે છે—છદ્મસ્થ એવો તેમને જાણી-દેખી શકતા નથી. એજ વાતને સૂત્રમાં હવે પ્રકટ કરે છે—

“ દસ ઠાણાં છદ્મસ્થેણ સર્વભાવેણ ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૬૦)

ટીકાર્થ—નાથેનાં દસ સ્થાનોને છદ્મસ્થ સર્વભાવ (પ્રત્યક્ષરૂપે) જાણતો પણ નથી અને દેખતો પણ નથી—(૧ થી ૮) ધર્માસ્તિકાયથી લઈને વાત પર્યન્તના આઠ પદાર્થો (૮) અમુક વ્યક્તિ જિન (કેવળી) થશે કે નહીં. (૯) અને અમુક વ્યક્તિ સમસ્ત દુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહીં કરે. ૧૦

પરન્તુ જેમને કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થઈ ગયું છે એવાં અહિંત જિનેન્દ્ર ભગવાન ઉપયુક્ત દસે સ્થાનોને જાણે છે અને દેખે છે.

આ સૂત્રમાં અવધિજ્ઞાનથી રહિત મુનિને છદ્મસ્થ પદ દ્વારા અહણ કરવામાં આવેલ છે. એવો છદ્મસ્થ મુનિ ધર્માસ્તિકાય આદિ

ધર્માસ્તિકાયમિત્યાદિ । અન્ન-યાવત્પદેન-અધર્માસ્તિકાયમ્ ૨, આકાશાસ્તિકાયં ૩, જીવમશરીરપ્રતિબદ્ધમ્ ૪, પરમાણુપુદ્ગલમ્ ૫, શબ્દં ૬, ગન્ધમિતિ ૭ પદ્ પદાનિ ગૃહ્યન્તે । તતશ્ચ ધર્માસ્તિકાયાદિ ગન્ધાન્તાનિ સપ્ત સ્થાનાનિ છદ્મસ્થઃ સાક્ષાત્કારેણ ન જાનાતિ ન પश्यतीતિ સપ્ત સ્થાનાનિ કથિતાનીતિ સપ્ત સ્થાનાનિ ૭। તથા-છદ્મસ્થઃ સર્વભાવેન વાતં=વાયુમ્ ન જાનાતિ ન પश्यतीત્યદ્દમં સ્થાનમ્ । ૮। તથા-‘અયં જનો જિનઃ=કેવલી મવિષ્યતિ ન વા મવિષ્યતિ’-इति છદ્મસ્થઃ સાક્ષાત્કારેણ ન જાનાતિ ન પश्यतीતિ નવમં સ્થાનમ્ । ૯। તથા-અયં જનઃ સર્વદુઃસ્વાનાં=શારીરિકમાનસિકસકલદુઃસ્વાનામ્ અન્તમ્=અવસાનં કરિષ્યતિ ન વા કરિષ્યતિ-इति છદ્મસ્થઃ સર્વભાવેન ન જાનાતિ ન પश्यतीતિ દશમં સ્થાનમ્ ॥ ૧૦ ॥

પ્રતાનિ દશ સ્થાનાનિ છદ્મસ્થઃ શ્રુતજ્ઞાનેન તુ જાનાત્યેવ । અત્રેદં બોધ્યમ્-પર-

શાસ્તિકાય અશરીરપ્રતિબદ્ધ જીવ, પરમાણુ પુદ્ગલ, શબ્દ એવં ગન્ધ इन छद्म पदोंका ग्रहण हुआ है, इन तरह छद्मस्थ इन धर्मास्तिकायादिक गन्धान्तके सात स्थानोंको साक्षात् रूपसे नहीं जानता है, और न देखता है तथा-छद्मस्थ सर्वभावसे वायुको नहीं जानता है ८, और नहीं देखता है, तथा छद्मस्थ यह जन जिन होगा या नहीं होगा ९ इस बातको भी स्पष्ट रूपसे नहीं जानता है, और न देखता है तथा-यह जन शारीरिक मानसिक सकल दुःस्वोंका नाश करेगा या नहीं करेगा यह बात भी साक्षात् रूपसे वह नहीं जानता है और नहीं देखता है १० पर वह छद्मस्थ इन सब स्थानोंको श्रुतज्ञानके बलसे तो जानता ही है । यहाँ ऐसा समझना चाहिये-अवधिज्ञानी यद्यपि छद्मस्थही है, पर उस छद्मस्थकी यहाँ विवक्षा नहीं हुई है, क्योंकि

हस स्थानाने जायते-देयते नथी. सूत्रमां धर्मास्तिकायनी पछी जे, ‘यावत् (पर्यन्त) यह वपरायुं छे तेना द्वारा नीयेनां छ स्थानाने अरुण करवामां आयां छे-अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अशरीर प्रतिबद्धजिव, परमाणुपुद्गल, शब्द अने गंध. आरीते छद्मस्थजिव धर्मास्तिकायकी लधने शब्द पर्यन्तना सात अभूत पदार्थाने साक्षात् रूपे जायते नथी, तथा (८) छद्मस्थ जिव वायुने पछु सर्वभाव-साक्षात् रूपे जायते नथी अने देयते नथी. (९) आ मायुस जिन (केजवी) थशे के नही, आ वात पछु ते स्पष्ट रूपे जायती देणी शकती नथी. (१०) अमुक मायुस समस्त दुःषोना-शारीरक अने मानसिक दुःषोना नाशकर्ता थशे के नही, जे वातने पछु छद्मस्थ साधु साक्षात् रूपे जायते नथी अने देयते नथी. परंतु ते छद्मस्थ जिव श्रुतज्ञानना प्रभावथी आ हसे स्थानाने सामान्यरूपे तो जायते छे. अही जेवुं समजवुं जेथजे के अवधिज्ञानी जे के छद्मस्थ न होय छे,

માવધિજ્ઞાની યદ્યપિ છદ્મસ્થ એવ તથાપિ સ નેહ વિવક્ષિતઃ, પરમાણુપુદ્ગલસ્ય શબ્દસ્ય ગન્ધસ્ય વાયોશ્ચ તત્સાક્ષા ત્કારવિપયત્વાત્ ।

નહુ 'સર્વભાવેન' इत्यस्य 'सर्वपर्यायेण' इत्यर्थः, एवं च अवधिज्ञानी सर्वपर्यायेण परमाणुपुद्गलादीन् न जानाति न पश्यतीति छद्मस्थपदेन अवधिमनःपर्ययज्ञानिनोऽपि ग्रहणे का हानिः ? इति चेत्, अत्रोच्यते—यदि 'सर्वभावेन' इत्यस्य 'सर्वपर्यायेण' इत्यर्थः स्वीक्रियते, तर्हि 'अशरीरप्रतिबद्धं जीवं छद्मस्थः सर्वपर्यायेण न जानाति न पश्यति' इत्युक्ते शरीरप्रतिबद्धं जीवं तु सर्वपर्यायेण जानाति पश्यतीत्यर्थो गम्यते । न च शरीर-

અવધિજ્ઞાની રૂપ છદ્મસ્થ પરમાણુ પુદ્ગલકો શબ્દકો ગન્ધકો એવં વાયુકો સાક્ષાત્ રૂપસે જાનતા હૈ ।

શંકા—યહાં સૂત્રમેં “સર્વ આવ પદ” આપા હૈ, સો इसका अर्थ सर्व पर्याय ऐसा यदी माना जावे तो यह ज्ञान भी स्पष्ट हो जाती है, कि अवधिज्ञानी भी परमाणु आदि पुद्गलोंको सर्व आवसे नहीं जानता है, तो फिर इससे जो आप इनके ग्रहणका निषेध करते हैं—वह नहीं हो सकता है, नहीं होनेसे इनके भी ग्रहणमें छद्मस्थ पदसे आपको क्या बाधा है ?

उत्तर—यदि आपकीही धान ज्ञान ली जावे—तो फिर इसका ऐसा अर्थ निकलता है कि छद्मस्थ जीव अशरीर प्रतिबद्ध जीवको सर्व पर्यायसे नहीं जानता है, नहीं देखता है परन्तु वह शरीर प्रतिबद्ध जीवको तो सर्व पर्यायसे जानता और देखता है सो ऐसा अर्थ हो जाने पर

પરન્તુ એવા છદ્મસ્થની વાત અહીં કરવામાં આવી નથી, કારણ કે અવધિજ્ઞાની રૂપ છદ્મસ્થ પરમાણુપુદ્ગલને, શબ્દને, ગંધને અને વાયુને સાક્ષાત્ રૂપે જાણે છે.

શંકા—અહીં સૂત્રમાં “સર્વભાવે (સાક્ષાત્ રૂપે)” પદ આવ્યું છે. જો તે પદનો અર્થ “સર્વ પર્યાયની અપેક્ષાએ” એવો માનવામાં આવે તો એ વાત પણ સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે અવધિજ્ઞાન અને મનઃપર્યાવજ્ઞાની પણ પરમાણુ આદિ પુદ્ગલોને સર્વભાવે (સર્વ પર્યાયની અપેક્ષાએ) જાણતો નથી. આ પ્રકારે વિચાર કરવામાં આવે તો અવધિજ્ઞાની અને મનઃપર્યાવજ્ઞાનીને પણ છદ્મસ્થ જીવ તરીકે ગ્રહણ કરવાનો નિષેધ આપ શા કારણે કરો છો ? તેમને પણ છદ્મસ્થ એવો જ કહેવામાં શો વાધો આવે છે ?

ઉત્તર—જો તેમને પણ છદ્મસ્થ માની લેવામાં આવે, તો એવું માનવાનો પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાય છે કે છદ્મસ્થ જીવ અશરીર પ્રતિબદ્ધ જીવને સર્વ પર્યાયની અપેક્ષાએ જાણતો અને દેખતો નથી, પરન્તુ તે શરીર-પ્રતિબદ્ધ જીવને તો સર્વ

પ્રતિવદ્ધં જીવમ્ અવધિજ્ઞાની સર્વપર્યાયેણ જાનાતિ । અતઃ ‘સર્વભાવેન’ इत्यस्य ‘साक्षात्कारेण’ इत्येवार्थो युक्तः । परमाणुपुद्गलादींस्तु साक्षात्कारेण अवध्या-
दिज्ञानी जानात्येव, अतश्छद्मस्थपद्वेनात्र अवध्यादिरहित एव ग्राह्य इति । जिनस्तु
-एतानि दशस्थानानि साक्षात्कारेण जानात्येवेत्यत आह-‘एयाणि चेव’
इत्यादीति ॥ सू. ६० ॥

‘સર્વજ્ઞો જિનો દશવિધાન્ ભાવાન્ સર્વભાવેન જાનાતિ પચ્યતિ’ इत्युक्तम् ।
સ ચ સર્વજ્ઞો જિનો યાન્ પરોક્ષાર્થપ્રદર્શકાન્ શ્રુતવિશેષાન્ પ્રણીતવાન્, તાનેવ
દશસ્થાનકોપયુક્તાન્ શ્રુતવિશેષાનાહ—

મૂલમ્—દસ દસાઓ પળણત્તાઓ, તં જહા—કસ્મવિવાગદ-
સાઓ ૧, ઉવાસગદસાઓ ૨ અંતગડદસાઓ ૩ અણુત્તરો-

भी आपके अभिमतकी सिद्धि नहीं होती है क्योंकि अवधिज्ञानी
‘रूप छद्मस्थ शरीर’ प्रतिवद्ध जीवको सर्व पर्यायसे नहीं जानता है
और नहीं देखता है, इसलिये सर्वभाव शब्दका अर्थ “साक्षा-
त्कार रूपसे” ऐसा ही करना चाहिये “सर्व पर्यायसे” ऐसा अर्थ
नहीं ‘करना’ चाहिये” अवधिज्ञानी पुद्गलादीको साक्षात्कार
रूपसे तो जान लेही हैं । इसलिये छद्मस्थ पदसे यहां अवधि
आदि ज्ञानसे बिहीन जो छद्मस्थ हैं—वही गृहीत हुआ है ऐसा समझना
चाहिये जब छद्मस्थ इन्हें साक्षात् रूपसे नहीं जानना है, तो फिर इन्हें
साक्षात् रूपसे कौन जानता है ? तो इसके लिये कहा गया है—“एया-
णिचेव” इत्यादि—इन १० स्थानोंको जो जिन हैं वे तो साक्षात् रूपसे
जानतेही हैं ॥ सू. ६० ॥

પર્યાયીની અપેક્ષાએ જાણું છે અને દેખે છે. જો આ પ્રકારનો અર્થ સ્વીકારવામાં
આવે તો પણ આપની જે માન્યતા છે તે સિદ્ધ થતી નથી કારણે કે અવધિ-
જ્ઞાને...મનઃપર્યાયજ્ઞાનીરૂપે છદ્મસ્થ જીવ (સાધુ) શરીર પ્રતિબદ્ધ જીવને સર્વપર્યા-
યની અપેક્ષાએ જાણુતો અને દેખતો નથી. તેથી “સર્વભાવ” પદનો અર્થ
“સાક્ષાત્કારરૂપે, (સ્પષ્ટરૂપે)” જ થતો. જોઈએ નહીં. અવધિજ્ઞાની અને મનઃ
પર્યાયજ્ઞાની પુદ્ગલાદિકોને સાક્ષાત્કારરૂપે (સ્પષ્ટરૂપે) તો જાણુતા જ નથી. તેથી
છદ્મસ્થ પદ દ્વારા અહીં અવધિજ્ઞાન આદિ જ્ઞાનોથી રહિત જીવ જ ગ્રહણ થવો.
જોઈએ જો છદ્મસ્થ તેમને સાક્ષાત્કારરૂપે જાણુતો નથી, તો તેમને સાક્ષાત્કારરૂપે
કોણ જાણું છે ? આ પ્રશ્નનો જવાબ “एयाणि चेव” इत्यादि सूत्रपाठ द्वारा
ले. वात्.प्रकट करवाया-आवी. छे. के अर्ह. त. जिन केवली. आ. पुद्गलादि. वसे
स्थानोने साक्षात् रूपे ज्ञाणी. शके. छे. અને દેખી શકે છે. ॥ સુ. ૬૦ ॥

ववाइयदसाओ ४ आचारदसाओ ५ पण्हावागरण-
 दसाओ ६ बंधदसाओ ७ दोगिद्धदसाओ ८ दीहदसाओ ९
 संखेवियदसाओ १०। कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता,
 तं जहा-भियापुत्ते १ य गोत्तासे २, अंडे ३ समडे ४ त्तियावरे ।
 माहणे ५ णंदिसेणे ६, य सौरियत्ति ७ उदुंवरे ८ ॥१॥ सहसु-
 द्वाहे आमलए ९ कुमारे लेच्छई १० इय ॥ १ ॥ उवासगदसाणं
 दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-आणंदे १ कामदेवे २ य
 गाहावइ चुलणीपिया ३। सुरादेवे ४ चुल्लसयाए ५ गाहावइ कुंड-
 कोलिए ६। सहलपुत्ते ७ महासयए ८ णंदिणीपिया ९, साल-
 इयापिया १० ॥ २ ॥ अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता,
 तं जहा-णमि १ मातंगे २ सोमिले ३ रामपुत्ते ४ सुदंसणे ५
 चेव । जमाली ६ य भगाली ७ य, किंकम्मे ८ पल्लएइ ९ य
 ॥ १ ॥ फाळे अंबडपुत्ते १० य, एमेए दस आहिया ॥ ३ ॥ अणु-
 त्तरोववाइयदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-इसिदासे
 १ य धन्ने २ य सुनक्खत्ते ३ य काइए ४ इय । सट्ठाणे ५
 सालिभद्दे ६ य, आणंदे ७ तेयली ८ इय ॥ १ ॥ दसन्नभद्दे
 ९ अइमुत्ते १०, एमेए दस आहिया ॥ ४ ॥ आचारदसाणं
 दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-वीसं असमाहिट्ठाणा १ एग-
 वीसं सबला २ तेत्तीसं आसायणाओ ३ अट्ठविहा गणिसंपया
 ४ दस चित्तसमाहिट्ठाणा ५ पण्णारस उवासगपडिमाओ ६ वारस
 भिक्खुपडिमाओ ७ पज्जोसवणाकप्पो ८ तीसं मोहणिज्झाणा

९ आयाइट्टाणाइं १० ॥ ५ ॥ पणहावागरणदसाणं दस अज्झ-
यणा पणत्ता, तं जहा-उवमा १ संखा २ इसिभासियाइं ३
आयरियभासियाइं ४ महावीरभासियाइं ५ खोमगपसिणाइं ६
कोमलपसिणाइं ७ अहागपसिणाइं ८ अंगुट्टपसिणाइं ९ बाहुप-
सिणाइं १० ॥ ६ ॥ वंधदसाणं दस अज्झयणा पणत्ता, तं
जहा-बंधे १ य, मोक्खे २ य, देवद्धि ३, दप्पारमंडले ४ वि
य, आयरिय विप्पडिवत्ती ५, उवज्झायविप्पडिवत्ती ६, भावणा
७, विमुत्ती ८ साओ ९ कम्मे १० ॥ ७ ॥ दोगिद्धिदसाणं दस
अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-वाए १ विवाए २ उववाए ३ सुखित्ते
कसिणे ४ बायालीसं सुमिणा ५ तीसं महासुमिणा ६ बावत्तरिं
सन्व सुमिणा ७ हारे ८ रामे ९ गुत्ते १० एमेए दसआहिया ॥ ८ ॥
दीहदसाणं दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-वंदे १ सूरिए २
सुक्के ३ य सिरिदेवी ४ पभावई ५ दोवसमुदोववती ६ बहुपुत्ती
७ मंदरेइय ८; थेरे संभूयविजए ८ पम्ह ऊसासनीसासे १०
॥ ८ ॥ संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-
खुड्डिया विमाणपविभत्ती १ महल्लिया विमाणपविभत्ती २ अंग-
चूलिशा ३ वंगचूलिशा ४ विवाहचूलिया ५ अरुणोववाए ६ वरुणावे-
वाए ७ गरुलोववाए ८ वेलंधरोववाए ९ वेसमणोववाए १० ॥ सू० ६१ ॥

छाया-दश दशाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कर्मविपाकदशाः १ उपासकदशाः २ अन्तर्कृद्दशाः
३ अनुत्तरोपपातिकदशाः ४ आचारदशाः ५ प्रश्नव्याकरणदशाः ६ बन्धदशाः ७-
द्विगृद्धिदशाः ८ दीर्घदशाः ९ संश्लेषिकदशाः १०। कर्मविपाकदशानां दश अध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-मृगापुत्रः १ उज्जिज्जकः २ अमग्नः ३ शकटे तिचापरे ४ बृह-
स्पतिः ५ नन्दिषेजः ६। शौरिदतः ७ उदुम्बरः ८ देवदत्ताः ९ अञ्जुधः १० ॥ ११ ॥
उपासकदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-आनन्दः १ कामदेवश्च २

गाथापतिचुलनीपिता ३। सुरादेवः ४ सुदशतकः ५ गाथापतिकण्डकोलिकः ६।
 सदाशुभः ७ महाशतकः ८ नन्दिनीपिता ९ शालेयिकापिता १० ॥१॥ अन्त-
 कृतदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—गौतमः १, समुद्रः २, सागरः ३
 गम्भीरश्चैव ४ भवेति स्तिमितश्च ५। अचलः ६ काम्पिल्यः ७ खलु अक्षोभः
 ८ प्रसेनजिह्व ९ विष्णुः ॥३॥ अनुत्तरोपपानिकदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञ-
 प्तानि, तद्यथा—ऋषिदासश्च १ वन्यश्च २ मुनक्षत्रश्च ३ आख्यातः ४ पेल्लकोः ४
 रामपुत्रश्च ५ चन्द्रिकः ६ पुष्टिमातृकः ७ ॥ १ ॥ पेदालपुत्रः अनगारः ८ नवमः
 पोट्टिछोऽपि ९ च । पेह्लछो १० दशम उक्तः इमे च दश आख्याताः ॥ २ ॥ ४॥
 आचारदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—विंशतिरसमाधिस्थानानि १,
 एकविंशतिशब्दाः २ त्रयस्त्रिंशत् आशातनाः ३ अष्टविंश गणिसंपत् ४ दश
 चित्तसमाधिस्थानानि ५ एकादश उपासकगतिमाः ६ द्वादशमिक्षुपतिमाः ७ पयु-
 षणाकल्पः ८ त्रिंशद् मोहनीयस्थानानि ९ आयतिस्थानानि १० ॥ ५ ॥ मश्न-
 व्याकरणदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—उपमा १ संख्या २ ऋषि-
 भाषितानि ३ आचार्यभाषितानि ४ महावीरभाषितानि ५ शौमकप्रश्नाः ६-
 कोमलप्रश्नाः ७ आदर्शप्रश्नाः ८ अङ्गुष्ठप्रश्नाः ९ बाहुप्रश्नाः १० ॥ ६ ॥ वन्य-
 दशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—वन्यश्च १ मोक्षश्च २ देवर्द्धिः ३
 दशरमण्डलम् ४ अपि च आचार्यविप्रतिपत्तिः ५ उपाध्यायविप्रतिपत्तिः ६
 भावना ७ विप्रुक्तिः ८ सातं ९ कर्मः १० ॥ ७ ॥ द्विष्टदशानां दश अध्यय-
 नानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—वातः १ विवातः २ उतातः ३ सुक्षिप्तं कृत्स्नं ४
 द्विचत्वारिंशत् स्वप्नाः ५ त्रिंशद् महास्वप्नाः ६ द्वाप्ततिः सर्वस्वप्नाः ७ हारो
 ८ रामो ९ सुप्तः १० एवमेतानि दश आख्यातानि ॥ ८ ॥ दीर्घदशानां दश
 अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—चन्द्रः १ सूर्यः २ शुक्रश्च ३ श्रीदेवो ४ प्रभावती
 ५ द्रीपसमृद्धोपपत्तिः बहुपुत्री ७ मन्दर इति च ८ स्थविरः सम्भूतविजयः ९
 पक्ष्मोच्छ्वासनिःश्वासम् १० ॥ ९ ॥ संक्षेपिकदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
 तद्यथा—क्षुद्रिका विमानप्रविभक्तिः १ महती विमानप्रविभक्तिः २ अङ्गचूलिका
 ३ वक्रचूलिका ४ विवाहचूलिका ५ अरुणोपपातः ६, वरुणोपपातः ७ गरुडो-
 पपातः ८ वेलन्धरोपपातः ९ वैश्रवणोपपातः १० ॥ मू० ६१ ॥

सर्वज्ञ जिन दश प्रकारके भावोंको सर्व भावसे जानते देखते हैं,
 ऐसा तो कह दिया गया है अब उन सर्वज्ञ जिनने जिन परोक्षार्थ प्रका-

आगला सूत्रसांख्येय प्रतिपादन करवाया आगुं छे किं सर्वज्ञ जिनने
 (केवलज्ञानी) इस प्रकारना उपयुक्तभावोने साक्षात् रूपे नाछे छे अने देखे छे

ટીકા—‘દસ દસાઓ’ इत्यादि—

‘દશા’—‘દશા’ અધ્યયનયુક્તવાદ દશાયાઃ=અવસ્થાયાઃ, પ્રતિપાદકત્વાદ, ‘દશા’ શાસ્ત્રવિશેષાઃ, ‘દશ પ્રજ્ઞા’—તથા—કર્મવિપાકદશા, ઉપાસકદશા—इत्यादि, તત્ત્વ-કર્મવિપાકદશાઃ—કર્મણઃ=અશુભસ્ય કર્મણો યો વિપાકઃ=પરિણામઃ=ફલં, તત્પ્રતિ-પાદિકાઃ દશાઃ. અત્ર કર્મવિપાકદશાશબ્દેન, દુઃખવિપાકરૂપઃ, પ્રથમશ્રુતસ્કન્ધ-એવ ગૃહ્યતે, તસ્યાધ્યયનાનામેવાત્ર વક્ષ્યમાણત્વાદિતિ, ૧. ઉપાસકદશાઃ=ઉપા-સકાઃ=શ્રમણોપાસકાઃ=આવકા, इति, યાવત્, તદનુષ્ઠેયક્રિયાકદમ્વપ્રતિપાદિકા-

શક્રે, શ્રુત-વિશેષોંકા પ્રણયન-રચના ક્રિયા જાણા છે. ‘અને’ સૂત્રકાર દશ-અધ્યયન રૂપ દશ સ્થાનસે પ્રકટ કરતે હૈ—

“‘દસ દસાઓ પળણત્તાઓ’” इत्यादि॥ सूत्र. ६१ ॥.

ટીકાર્થ—‘દશા’ શબ્દસે યહાં શાસ્ત્ર વિશેષ ગૃહીત ક્રિયે ગયેહૈ, કયોંકિ વે દશ અધ્યયનોસે યુક્ત હૈ, ઓર દશા-અવસ્થાઓંકે પ્રતિપાદક હૈ ‘વે’ હસ પ્રકારસે હૈ—કર્મ વિપાક દશા. ૧, ઉપાસક દશા. ૨, અન્તકૃત દશા. ૩, અનુત્તરોપપાતિક દશા. ૪, આત્માર-દશા. ૫, પ્રશ્ન વ્યાકરણ દશા. ૬, વન્ધ દશા. ૭, વિગૃહિ દશા. ૮, દીર્ઘ દશા. ૯, એવં સંક્ષેપિક દશા. ૧૦. અંશુભ-કર્મકે ફલકો પ્રતિપાદન કરનેચાલી જો દશાઈ હૈ વે કર્મ-વિપાક દશા હૈ, યહાં કર્મવિપાક દશા શબ્દસે દુઃખવિપાક રૂપ પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધહી ગૃહીત હુઆ હૈ, કયોંકિ યહાં ‘અસકે અધ્યયન હી કહે જાવેંગે, ઉપાસક દશા-શ્રમણોપાસક આવક ઉપાસક કહે ગયે હૈ,

તે સર્વશઃ જિનેન્દ્રોએ જે પરોક્ષાર્થ પ્રકાશક શ્રુતવિશેષોની રચના કરી છે, તેમને સૂત્રકાર દશાધ્યયનરૂપ દસ સ્થાનો દ્વારા પ્રકટ કરે છે—

“‘દસ દસાઓ પળણત્તાઓ’” इत्यादि—(સૂ. ૬૧)

ટીકાર્થ—‘દશા’ આ પદ દ્વારા અહીં અમુક શાસ્ત્રવિશેષોને ગ્રંથ કરવામાં આવેલા છે, કારણ કે તેઓ દસ અધ્યયનોથી યુક્ત છે અને દશ (અવસ્થાઓ)નું પ્રતિપાદન કરે છે, તે દસ શાસ્ત્રોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) કર્મવિપાકદશા, (૨) ઉપાસકદશા, (૩) અન્તકૃદશા, (૪) અનુત્તરોપપાતિકદશા, (૫) આચારદશા, (૬) પ્રશ્નવ્યાકરણદશા, (૭) બન્ધદશા, (૮) વિગૃહિકદશા, (૯) દીર્ઘદશા, અને (૧૦) સંક્ષેપિકદશા.

અશુભ કર્મના ફલનું પ્રતિપાદન કરનારી જે દશાઓ છે તેમને કર્મવિપાકદશા કહે છે, અહીં “કર્મવિપાકદશા” પદ દ્વારા દુઃખવિપાકરૂપ પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધ જે ગ્રંથ કરવામાં આવ્યો છે, કારણ કે તેમાં તેના અધ્યયન કરવામાં આવ્યા છે.

દશા ૨। ઇતિ ૨। અન્તકૃતદશાઃ-અન્તઃ=આયુષોડશસાનસમયે કેવલં પ્રાપ્ય ધર્મ-
 દેશનામદન્તૈવ કર્મણાં તત્કલભૂતસ્ય સંસારસ્ય ચ નાશઃ કૃતો યૈસ્તેડન્તકૃતાઃ,
 તચ્ચરિત્રપ્રતિપાદિકા દશા ઇતિ ૩। અનુત્તરોપપાતિકદશાઃ-નાસ્તિ ઉત્તર=ઉત્કૃ-
 ણ્ણતરઃ=મથાત ઉપપાતો યસ્માત્ સોડ્નુત્તરોપપાતઃ=સર્વાર્થસિદ્ધાદિષુ પચ્ચમુ
 વિમાનેષુપપાત ઇત્યર્થઃ, સ વિદ્યતે યેષાં તેડ્નુત્તરોપપાતિકાઃ, તત્પ્રતિવદ્ધકથા-
 પ્રતિપાદિકા દશા ઇતિ ॥ ૪ ॥ આચારદશાઃ-આચારો=જ્ઞાનાચારાદિઃ પચ્ચવિધઃ,
 તત્પ્રતિપાદિકા દશાઃ-દશાશ્રુતસ્કન્ધ ઇતિ સુદ્ધાઃ ॥ ૫ ॥ મશ્વર્યાકરણદશાઃ-

इन आवकों द्वारा करने योग्य क्रियाओंके प्रतिपादक जो दशा हैं वे
 श्रमणोपासक दशा हैं २, अन्तःकृत दशा-अन्तमें-आयुके अवमानके
 समयमें केवलज्ञानको प्राप्त करके धर्मदेशना दिये बिना ही जिन्होंने कर्मों
 का एवं कर्मों के फलभूत संसारका नाश कर दियाहै वे अन्तकृतहैं इनके
 चरित्रका प्रतिपादन करनेवाली जो दशाएँहैं वे अन्तकृत दशाहैं ३, अनुत्त-
 रोपपातिक दशा-जिस उपपातसे उत्कृष्टतर उपपात और कोई नहीं होना
 है वह अनुत्तरोपपातहै, ऐसा वह उपपात सर्वार्थसिद्ध आदि पांच विमा-
 नोंमें होना है, यह अनुत्तरोपपात जिनके होना है वे अनुत्तरो-
 पपातिक हैं। इनके सम्वन्धकी कथाको प्रतिपादन करनेवाली जो दशाएँ
 हैं वे अनुत्तरोपपातिक दशा हैं ४।

આચારદશા-જ્ઞાનાચાર આદિકે એવસે આચાર પાંચ પ્રકારકા

ઉપાસકદશા-શ્રમણોપાસક શ્રાવકોને માટે અહીં ઉપાસક શબ્દનો પ્રયોગ થયો છે તે શ્રમણોપાસકો દ્વારા કરવા યોગ્ય અનુષ્ઠાનો (ક્રિયાઓ)નું પ્રતિ-
 પાદન કરનાર જે દશા છે-જે શાસ્ત્ર છે તેનું નામ શ્રમણોપાસકદશા છે

અન્તકૃતદશા-આયુષ્યના અન્તકાળે કેવળજ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરીને ધર્મદેશના દીધા વિના જ જેમણે કર્મોના અરે કર્મોના ફલસ્વરૂપ સંસારનો અન્ત કરી દાંધો છે, તેમને અન્તકૃત કહે છે. તેમના ચરિત્રનું પ્રતિપાદન કરનારી જે દશાઓ છે તેમનું નામ અન્તકૃતદશા છે.

અનુત્તરોપપાતિકદશા-જે ઉપપાત કરતા વધારે સારો ઉત્પાત બોલે કોઈ હોતો નથી, તે ઉપપાતને અનુત્તરોપપાત કહે છે. એવા તે ઉપપાત સર્વાર્થસિદ્ધ આદિ પાંચ અનુત્તર વિમાનોમાં થાય છે. જેમણે આ અનુત્તર ઉપપાત પ્રાપ્ત કર્યો છે એવાં જીવોને અનુત્તરોપપાતિક કહે છે એવા જીવો સંબંધીકથાનું પ્રતિપાદન કરનારી જે દશાઓ છે તેમને અનુત્તરોપપાતિક દશાઓ કહે છે.

આચારદશા-જ્ઞાનાચાર આદિના ભેદોથી આચાર પાંચ પ્રકારના કહ્યા છે.

પ્રશ્નાઃ-પ્રચ્છનાનિ, વ્યાકરણાનિ=ઉત્તરાણિ, તદુભયપ્રતિપાદિકા દશા इति ॥ ૬ ॥
 બન્ધદશા-બન્ધમોક્ષાદિ પ્રતિપાદિકા દશાઃ । બન્ધાધ્યયનસ્ય પ્રાથમ્યાત્ અસ્ય
 સૂત્રસ્ય બન્ધદશાઈતિ નામ બોધ્યમિતિ ॥ ૭ ॥ દ્વિગૃહ્ણિદશાઃ-વાતવિવાતાદિદશા-
 ધ્યયનાત્મિકાઃ ॥ ૮ ॥ દીર્ઘદશાઃ-ચન્દ્રસૂર્યાધ્યયનાત્મિકાઃ ॥ ૯ ॥ તથા-
 સંક્ષેપિકદશાઃ=ક્ષુદ્રિકા વિમાનપ્રવિભક્તિરિત્યાદિદશાધ્યયનાત્મિકા ॥ ૧૦ ॥ इति ।
 एतासु दशसु दशासु बन्धदशा द्विगृह्णिदशादीर्घदशासंक्षेपिकदशाख्याश्रतस्रो दशा
 विच्छिन्ना इति । इत्थं दशदशानां नामान्यभिधाय सम्प्रति प्रत्येकदशानां दशा-

કહા ગયા હૈં, इस आचारकी प्रतिपादक जो दशाएँ हैं वे आचार दशा
 हैं ५ इसे दशाश्रुतस्कन्ध भी कहा गया है, प्रश्न व्याकरण दशा-प्रश्न
 और उत्तर इन दोनोंका कथन करनेवाली जो दशाएँ हैं वे प्रश्न
 व्याकरण दशा हैं ६ ।

બન્ધદશા—બન્ધ, મોક્ષ આદિકી પ્રતિપાદક જો દશાઈ હૈં વે બન્ધ
 દશાઈ ૭ इस सूत्रका जो बन्ध दशा ऐसा नामकरण है, वह बन्धाध्ययनकी
 प्रथमताको लेकर है द्विगृह्णि दशा-वात विवात आदि १० अध्ययनोंसे
 यह सूत्र युक्त है दीर्घ दशा ९-चन्द्र सूर्य सम्बन्धी अध्ययनोंसे युक्त
 होनेके कारण सूत्रका नाम दीर्घ दशा हुआ है, संक्षेपिक दशा १०-यह
 सूत्र क्षुद्रिका विमानप्रविभक्ति, इत्यादि १० अध्ययनोंवाला है इन
 १० दशाओंमेंसे बन्ध दशा, द्विगृह्णि दशा, दीर्घ दशा एवं संक्षेपिक
 दशा ये चार दशाएँ सूत्र विच्छिन्न हो गये हैं । इस प्रकारसे १० दशा

આ આચારોનું પ્રતિપાદન કરનારી જે દશાઓ છે તેમને આચારદશા કહે છે.
 તેનું 'ગીગુ' નામ દશાશ્રુતસ્કન્ધ પણ છે

પ્રશ્નવ્યાકરણદશા-પ્રશ્ન અને ઉત્તર આ બન્નેનું કથન કરનારી જે દશાઓ
 છે, તેમને પ્રશ્નવ્યાકરણદશા કહે છે.

બન્ધદશા-બન્ધ, મોક્ષ આદિની પ્રતિપાદક જે દશાઓ છે તેમને બન્ધ
 દશા કહે છે. આ સૂત્રનું 'બન્ધદશા' નામ આપવાનું કારણ એ છે કે તે
 સૂત્રના પહેલા અધ્યયનનું નામ બંધ અધ્યયન છે.

દ્વિગૃહ્ણિદશા-વાત, વિવાત આદિ દસ અધ્યયનોથી એ સૂત્રયુક્ત છે.

દીર્ઘદશા-આ સૂત્રમાં ચન્દ્ર અને સૂર્ય વિષયક અધ્યયનો છે

સંક્ષેપિકદશા-આ સૂત્ર ક્ષુદ્રિકા વિમાન પ્રવિભક્તિ આદિ દસ અધ્યય-
 નોથી યુક્ત છે.

ઉપયુક્ત ૧૦ દશાઓ (સૂત્રો)માંથી બન્ધદશા, દ્વિગૃહ્ણિદશા, દીર્ઘદશા
 અને સંક્ષેપિકદશા, આ ચાર દશાઓ (સૂત્રો) વિચ્છિન્ન થઈ ગયેલ છે. આ

અધ્યયનાનિ નામતઃ પ્રાહ-‘કર્મવિવાગદસાણં’ ઇત્યાદિ । તત્-કર્મવિવાગદસાણાં મૃગાપુત્ર ગોત્રાસાદીનિ દશાધ્યયનાનિ વિજ્ઞેયાનિ । ઇમાનિ નામનિ વાચનાન્તરાપેક્ષયાં વોધ્યાનિ । ઉપાસકદશાનામ્ આનન્દાદિગાથાપતિચરિત્રનિબંધાનિ આનન્દાદિનામ્નાં પ્રસિદ્ધાનિ દશાધ્યયનાનિ વિજ્ઞેયાનીતિ ॥ ૨ ॥ અન્તકૃતદશાનાં પ્રથમવર્ગે ‘જમિમાતંગે’ ઇત્યાદિ નામધેયાનિ દશાધ્યયનાનિ । વાચનાન્તરાપેક્ષાપ્યેતાન્યધ્યયનાનિ વિજ્ઞેયાનીતિ ॥ ૨ ॥ અનુત્તરોપપાતિકદશાનાં તૃતીયવર્ગે ઋષિદાસધન્યાદીનિ દશાધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનીતિ । વાચનાન્તરાપેક્ષાપ્યેતાનિ વિજ્ઞેયાનીતિ ॥ ૪ ॥ આચારદશાનાં દશાશ્રુતસ્કન્ધદશાનાં વિંશતિઃ અસમાધિસ્થાનાનિ એકવિંશતિઃ શબ્લાઃ ’ ઇત્યાદીનિ દશાધ્યયનાનિ વિજ્ઞેયાનીતિ ॥ ૫ ॥ પ્રશ્નવ્યા-

ઓંકે સૂત્રોંકે નામોંકા કથન કરેં અર્થ સૂત્રકાર હનેં દશાઓંમેંસે પ્રત્યેક દશાંકે ૧૦ અધ્યયનોંકે નામ કહેતે હે-“કર્મવિવાગદસાણં” ઇત્યાદિ કર્મવિવાગદસાણાંકે મૃગાપુત્ર (મૃગાપુત્ર) ગોત્રાસાદિકાંકે ૧૦ દશ અધ્યયન હેં એ નામ વાચનાન્તરની અપેક્ષાસે હેં, ઉપાસક દશાંકે આનન્દ આદિ ગાથાપતિકે ચરિત્રસે નિબંધ આનન્દ આદિ નામસે પ્રસિદ્ધ ૧૦ અધ્યયન હેં । અન્તકૃત દશાંકે પ્રથમ વર્ગમેં “જમિમાતંગે” ઇત્યાદિ । નામક ૧૦ દશ અધ્યયન હેં એ અધ્યયન વાચનાન્તરની અપેક્ષાસે હેં એસાં જાનનાં સાહિયે અનુત્તરોપપાતિક દશાંકે તૃતીય વર્ગમેં ઋષિદાસ, ધન્ય આદિ ૧૦ અધ્યયન કહે શયે હેં । એ સી વાચનાન્તરની અપેક્ષાસે હેં । દશાશ્રુતસ્કન્ધ રૂપ જો આચારદશા હેં ઉસકે ૨૦ અસમાધિ સ્થાનકે ઓર ૨૧ શબ્લ આદિ દશ પ્રતિપાદક ૧૦ અધ્યયન હેં, પ્રશ્નવ્યાકરણ દશાંકે ઉપમા

પ્રકારે દશ દશાઓ (સૂત્રો)નાં નામોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર તે પ્રત્યેક દશાના હસ હસ અધ્યયનોનાં નામ પ્રકટ કરે છે—

“કર્મવિવાગદસાણં” ઇત્યાદિ—

કર્મવિવાગદસાણાં મૃગપુત્ર, ગોત્રાદિક વિગેરે હસ અધ્યયનો છે. આ નામો વાચનાન્તરની અપેક્ષાએ આપ્યાં છે. ઉપાસકદશાના આનન્દ આદિ ગાથાપતિનું ચરિત્રનું નિરૂપણ કરનારા આનન્દ આદિ નામના હસ અધ્યયનો છે.

અન્તકૃતદશાના “જમિમાતંગે” ઇત્યાદિ નામના હસ અધ્યયનો છે. આ અધ્યયનો વાચનાન્તરની અપેક્ષાએ સમજવાના છે, અનુત્તરોપપાતિક દશાના તૃતીય વર્ગમાં ઋષિદાસ, ધન્ય આદિ હસ અધ્યયનો કહ્યાં છે. આ અધ્યયનો યજ્ઞ વાચનાન્તરની અપેક્ષાએ કહ્યાં છે, એમ સમજવું. દશાશ્રુતસ્કન્ધરૂપે જે આચારદશા છે તેના હસ અધ્યયનો છે. તે અધ્યયનોમાં ૨૦ અસમાધિસ્થાનોનું અને ૨૧ શબ્લ આદિ દશાઓનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. પ્રશ્નવ્યાકરણ

કરણદશાનામ્ ઉપમાસંખ્યાદીનિ દશાધ્યયનાનિ વિજ્ઞેયાનિ । સમ્પ્રત્યેતાનિ વિચ્છિન્નાનિ । પ્રચલિતપ્રશ્નવ્યાકરણદશાસુ પશ્ચાત્ત્વદ્વારાધ્યયનાનિ પશ્ચસંવરદ્વારાધ્યયનાનિ ચ દૃશ્યન્તે इति ॥ ૬ ॥ બન્ધદશાનાં બન્ધમોક્ષાદીનિ દશાધ્યયનાનિ સન્તિ । ન ચૈતાનિ સમ્પ્રત્યુપલબ્યન્તે । અતો બન્ધદશાનામશેષર્તા પ્રાપ્તા इति ॥ ૭ ॥ વાત-વિવાતાદિદશાધ્યયનાત્મિકા દ્વિગૃહ્ણિદશા અપિ વિચ્છિન્નત્વાન્નામશેષતામેવ પ્રાપ્તા इति ॥ ૮ ॥ તથા-ચન્દ્ર-સૂર્ય-શુક્રાદિદશાધ્યયનાત્મિકા દીર્ઘદશા અપિ વિચ્છિન્ના એવ । તથાપ્યાસાં કાનિચિદધ્યયનાનિ નિરયાવલિકાસૂત્રે દૃશ્યન્તે । તથાહિ-ચન્દ્ર-સૂર્ય-શુક્ર-બહુપુત્રિકેતિ ચત્વાર્યધ્યયનાનિ પુષ્પિતાનામક તૃતીયવર્ગે દૃશ્યન્તે, શ્રીદેવીનામકમધ્યયનં તુ પુષ્પચૂલિકાનામકે ચતુર્થે વર્ગે । અવશિષ્ટાન્યધ્યયનાનિ

સંખ્યા આદિ ૧૦ દશ અધ્યયનહૈં, હસ સમયમેં યે વિચ્છિન્ન હો ગયેહૈં । પ્રચલિત પ્રશ્નવ્યાકરણ દશામેં પાંચ આસ્રવદ્વાર અધ્યયન ઓર પાંચ સંવરદ્વાર અધ્યયન ઉપલબ્ધ હૈં । બન્ધ દશાકે બન્ધ મોક્ષ આદિ ૧૦ અધ્યયન હૈં । યે હસ સમય ઉપલબ્ધ નહીં હૈં । કેવલ “ બન્ધ દશા ” યહ નામ હી નામ રહ ગયા હૈ । વાત વિવાત આદિ ૧૦ અધ્યયન રૂપ દ્વિગૃહ્ણિ દશા મી વ્યુચ્છિન્ન હો ગઈ હૈ, કેવલ હસકા મી નામ રહ ગયા હૈ, ચન્દ્ર સૂર્ય શુક્ર આદિ ૧૦ અધ્યયન રૂપ દીર્ઘ દશા મી નષ્ટ હો ગઈ હૈ, ફિર મી હસકે કિતનેક અધ્યયન નિરયાવલિકા સૂત્રમેં દેલનેમેં આતે હૈં । જૈસે-ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર બહુપુત્રિકા યે ચાર અધ્યયન પુષ્પિતા નામક તૃતીય વર્ગમેં દેલે જાતેહૈં, એવં શ્રીદેવી નામકા અધ્યયન પુષ્પ ચૂલિકા નામકે ચતુર્થ વર્ગમેં દેલા જાતાહૈ, પરન્તુ અવશિષ્ટ અધ્ય-

દશાના ઉપમા, સંખ્યા આદિ હસ અધ્યયન છે હાલમાં તે અધ્યયનો વિચ્છિન્ન થઈ ગયેલા હોવાથી અપ્રાપ્ય છે. પરન્તુ પ્રચલિત પ્રશ્નવ્યાકરણદશામાં પાંચ આસ્રવ દ્વાર અધ્યયનો અને પાંચ સંવર દ્વાર અધ્યયનો ઉપલબ્ધ છે. બન્ધ-દશાના બન્ધ, મોક્ષ આદિ હસ અધ્યયનો છે. આ અધ્યયનો વિચ્છિન્ન થઈ ગયા હોવાથી “ બન્ધદશા ” આ નામ ક્ષિવાયનું તેમાં પ્રતિપાદિત કોઈ પણ સાહિત્ય ઉપલબ્ધ નથી. વાત, વિવાત આદિ હસ અધ્યયનોયુક્ત દ્વિગૃહ્ણિદશા નામનું સૂત્ર પણ વિચ્છિન્ન થઈ ગયું છે અને તેનું નામ માત્ર જ રહી ગયું છે. ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર આદિ હસ અધ્યયનોથી યુક્ત દીર્ઘદશા નામનું સૂત્ર પણ વિચ્છિન્ન થઈ ગયું છે; પરન્તુ તેના કેટલાક અધ્યયનો નિરયાવલિકા સૂત્રમાં જોવા મળે છે. જેમ કે-ચન્દ્ર, સૂર્ય, શુક્ર, બહુપુત્રિકા, આ ચાર અધ્યયનો પુષ્પિતા નામના ત્રીજા વર્ગમાં જોવા મળે છે, આઅને શ્રીદેવી નામનું અધ્યયન પુષ્પચૂલિકા નામના ચોથા વર્ગમાં જોવા મળે છે, પરન્તુ બાકીના અધ્યયનો

તુ ન ક્વાડપ્યુપલભ્યન્તે ઇતિ ॥ ૯ ॥ તથા—‘હુદ્રિકા વિમાનપ્રવિભક્તિઃ ૧ મહતી વિમાનપ્રવિભક્તિઃ ૨’ ઇત્યાદિદશાધ્યયનાત્મિકાઃ સંક્ષેપિકદશા યપિ વિચ્છિન્ન-
ત્વાન્નોપલભ્યન્તે ઇતિ ॥ ૧૦ ॥ સૂ. ૬૧ ॥

ઈદં ચ શ્રુતં કાલવિશેષ એવ ભવતીતિ કાલવિશેષમાહ—

મૂલમ્—દસ સાગરકોડાકોડીઓ કાલો ઉત્સર્પણીય, દસ સાગરકોડાકોડીઓ કાલો ઓસર્પણીય ॥ સૂ. ૬૨ ॥

છાયા—દશસાગરકોટીકોટિકઃ કાલઃ ઉત્સર્પિણ્યાઃ, દશસાગરકોટીકો-
ટિકઃ કાલઃ અવસર્પિણ્યાઃ ॥ સૂ. ૬૨ ॥

ટીકા—‘દસસાગર’ ઇત્યાદિ—

ઉત્સર્પિણ્યાઃ કાલઃ દશસાગરકોટીકોટિપ્રમાણઃ । એવમેવ અવસર્પિણ્યા અપિ
બોધ્ય ઇતિ ॥ સૂ. ૬૨ ॥

ઉપાધિવશાઘથા કાલદ્રવ્યસ્ય ભેદા ભવન્તિ, એવમેવોપાધિવશાદ નારકાદિ-
જીવદ્રવ્યાણામપિ ભેદા ભવન્તીતિ દર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—દસવિહા નેરઙ્ગયા પળ્લન્તા, તં જહા—અંતરોવ-

યનોંકી ઉપલબ્ધિ કહીં પર મી નહીં હૈ હુદ્રિકાવિમાનપ્રવિભક્તિ ૧
મહતી વિમાનપ્રવિભક્તિ ૨, ઇત્યાદિ રૂપ ૧૦ અધ્યયનોંવાલી સંક્ષેપિક
દશા મી વિચ્છિન્ન હો ગઈહૈ, અતઃ ઉત્સર્પી મી ઉપલબ્ધિ નહીં હૈ સૂ. ૬૧ ॥

એસા શ્રુતકાલ વિશેષમેં હી હોતા હૈ, અતઃ અય સૂત્રકોર કાલ
વિશેષતા કથન કરતે હૈ—

“દસ સાગરકોડા કોડીઆ કાલો” ઇત્યાદિ ॥ સૂ. ૬૨ ॥

ટીકાર્થ—ઉત્સર્પિણી કાલ ૧૦ સાગરોપમકોટી કોટિ પ્રમાણ કહા ગયાહૈ,
હસીસે અવસર્પિણી કાલ મી જાનના ચાહિયે ॥ સૂ. ૬૨ ॥

અપ્રાપ્ય છે હુદ્રિકા વિમાનપ્રવિભક્તિ, મહતી વિમાન પ્રવિભક્તિ, ઇત્યાદિ દસ અધ્ય-
યનોથી યુક્ત સંક્ષેપિકદશા નામનું સૂત્ર પણ વિચ્છિન્ન થઇ ગયેલું હોવાથી
અપ્રાપ્ય ગણાય છે. ॥ સૂ. ૬૧ ॥

આગલા સૂત્રમાં શ્રુતની વાત કરી. શ્રુતનો કાળવિશેષમાં જ સદ્ભાવ હોય
છે. તેથી હવે સૂત્રકાર કાળવિશેષનું કથન કરે છે.

“દસ સાગરકોડાકોડીઓ કાલો” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૬૨)

ટીકાર્થ—ઉત્સર્પિણીકાળનું દસ સાગરોપમકોટીકોટીનું પ્રમાણ કહ્યું છે. એટલું
જ પ્રમાણ અવસર્પિણીકાળનું પણ સમજવું ॥ સૂ. ૬૨ ॥

वन्ना १, परंपरोववन्ना २ अर्णंतरावगाढा ३ परंपरावगाढा ४
अर्णंतराहारगा ५ परंपराहारगा ६ अर्णंतरपञ्जत्ता ७ परंपरप-
ञ्जत्ता ८ चरिमा ९ अचरिमा १०। एवं जाव वेमाणिया ॥१॥
चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सां
पणत्ता ॥ २ ॥ रयणप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दस-
वाससहस्साइं ठिई पणत्ता ॥ ३ ॥ चउत्थीए णं पंकप्पभाए
पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई पणत्ता
॥ ४ ॥ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं
दस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥ ५ ॥ असुरकुमाराणं जह-
न्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पणत्ता ॥ ६ ॥ एवं जाव थाणि-
यकुमाराणं ॥ ७ ॥ बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दस वास-
सहस्साइं ठिई पणत्ता ॥ ८ ॥ वाणमंतरदेवाणं जहन्नेणं दस-
वाससहस्साइं ठिई पणत्ता ॥ ९ ॥ बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं
देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥ १० ॥ लंतए कप्पे
देवाणं जहन्नेणं दस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥ ११ ॥ सू० ६३ ॥

छाया—दशविधा नैरयिकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—अनन्तरोपपन्नाः १ परम्परोप-
पन्नाः २ अनन्तरावगाढाः ३ परम्परावगाढाः ४ अनन्तराहारकाः ५ परम्परा-
हारकाः ६ अनन्तरपर्याप्ताः ७ परम्परपर्याप्ताः ८ चरमाः ९ अचरमाः १०। एवं
यावद् वैमानिकाः ॥ १ ॥ चतुर्थ्यां खलु पङ्कप्रभायां पृथिव्यां दश निरयावास-
सहस्रहस्त्राणि प्रज्ञप्तानि ॥ २ ॥ रत्नप्रभायां पृथिव्यां जघन्येन नैरयिकाणां दश-
वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ ३ ॥ चतुर्थ्यां खलु पङ्कप्रभायां पृथिव्याम्
उत्कर्षेण नैरयिकाणां दश सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ ४ ॥ पञ्चम्यां खलु
धूमप्रभायां पृथिव्यां जघन्येन नैरयिकाणां दश सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता
॥ ५ ॥ असुरकुमाराणां जघन्येन दश वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ ६ ॥ एवं

યાવત્ સ્તનિતકુમારાણામ્ ॥ ૭ ॥ વાદરવનસ્પતિકાયિકાનામ્ ઉત્કર્ષેણ દશ
વર્ષસદ્સાણિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ॥ ૮ ॥ વ્યન્તરદેવાનાં જઘન્યેન દશવર્ષસદ્સાણિ
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ॥ ૯ ॥ બ્રહ્મલોકે કલ્પે ઉત્કર્ષેણ દેવાનાં દશ સાગરોપમાણિ
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ॥ ૧૦ ॥ લાન્તકે કલ્પે દેવાનાં જઘન્યેન દશ સાગરોપમાણિ
સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞપ્તા ૧૧ ॥ સૂ. ૬૬ ॥

ટીકા—‘દસવિહા’ इत्यादि—

નૈરયિકાઃ=નારકા દશવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા—‘અનન્તરોપપન્ના’ इत्यादि ।
તત્ર-અનન્તરોપપન્નાઃ-ન વિષતે અન્તરં=વ્યવધાનમસ્યેતિ અનન્તર=અવ્યવહિતઃ-
વર્તમાનઃ સમયઃ, તત્ર ઉપપન્નાઃ=સંયોજાતા इत्यर्थः । યેષાં નૈરયિકાણામેકોડ્પ્યુ-
ત્પત્તિસમયો નાતિક્રાન્તસ્તે નૈરયિકા અનન્તરોપપન્ના इति भावः ॥ ૧ ॥ તથા—

ઉપધિકે વશસે જિસ પ્રકાર કાલદ્રવ્યકે ભેદ હોતેહૈ, હસી પ્રકારસે
ઉપધિકે વશસે નારકાદિ જીવદ્રવ્યોકે ભી ભેદ હોતે હૈ, યહી યાત અય
સૂત્રકાર પ્રકટ કરતેહૈ—‘‘દસવિહા નેરહયા પળ્ણત્તા’’ इत्यादि ॥સૂત્ર૬૩॥

ટીકાર્થ—નારક જીવ ૧૦ પ્રકારકે કહે ગયેહૈ—જૈસે—અનન્તરોપપન્ન ૧,
પરમ્પરોપપન્ન ૨ અનન્તરાવગાઢ ૩, પરમ્પરાવગાઢ ૪ અનન્તરાહારક ૫,
પરમ્પરાહારક ૬, અનન્તરપર્યાસ ૭ પરમ્પરપર્યાસ ૮ ચરમ ૯, ઓર
અચરમ ૧૦

इनमें संयोजात—उसी समय—उत्पन्न हुए जो नारक हैं वे अनन्त-
रोपपन्न हैं अन्तर नाम व्यवधानका है, जिसका व्यवधान नहीं है
वह अनन्तरहै, ऐसा अनन्तर वर्तमान समय रूप होता है, इस वर्तमान
समयमें जो उत्पन्न हुए हैं वे अनन्तरोपपन्न नैरयिक हैं । अर्थात् जिन

ઉપધિને આધારે જેમ કાળદ્રવ્યના ભેદ પડે છે, એજ પ્રમાણે ઉપધિને
આધારે નારકાદિ જીવોના પણ ભેદ પડે છે. એજ વાત હવે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે—
“દસવિહા નેરહયા પળ્ણત્તા”—(સૂ. ૬૩)

ટીકાર્થ—નારક જીવના નીચે પ્રમાણે દસ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) અનન્તરોપપન્ન,
(૨) પરમ્પરોપપન્ન, (૩) અનન્તરાવગાઢ, (૪) પરામ્પરાવગાઢ, (૫) અનન્તરા
હારક, (૬) પરમ્પરાહારક, (૭) અનન્તરપર્યાસ, (૮) પરમ્પરપર્યાસ, (૯)
ચરમ અને (૧૦) અચરમ,

જે નારકો સંયોજાત—આ સમયે જ નારક રૂપે ઉત્પન્ન થયેલા છે તેમને
અનન્તરોપપન્ન નારકો કહે છે અન્તર એટલે સમયતુલ્ય વ્યવધાન જેને લાગુ પડતું
હોતું નથી તેને અનન્તર કહે છે. એવું અનન્તર વર્તમાન સમયરૂપ હોય છે.
તેથી આ વર્તમાન સમયમાં જ જેઓ ઉત્પન્ન થાય છે તેમને અનન્તરોપપન્ન

પરમ્પરોપપન્નાઃ—અતીતદ્વ્યાદિસમયોત્પત્તિકા નારકા इत्यर्थः । येषामुत्पत्तौ द्व्या-
दिसमया व्यतीतास्तथाविधा नारकाः परम્परोपपन्ना इति भावः ॥ २ ॥ इदं भेद-
द्वयं कालकृतं बोध्यम् । तथा—अनन्तरावगाढाः—अनन्तरेषु=अव्यवहितक्षेत्रप्रदे-
शेषु अवगाढाः=अवगाहनावन्तो नैरयिकाः । अथवा—अनन्तरावगाढाः=प्रथमसमये
क्षेत्रप्रदेशेष्ववगाढा नैरयिकाः ॥ ३ ॥ तथा—परम्परावगाढाः—परम्परेषु=व्यवहित
क्षेत्रप्रदेशेषु अवगाहनावन्तो नैरयिकाः । अथवा—द्व्यादिसमयव्यवधानेन क्षेत्रप्रदे-
शेषु अवगाहनावन्त इति ॥ ४ ॥ इदं भेदद्वयं क्षेत्रकृतम् । तथा—अनन्तराहारकाः—
अनन्तरान्=अव्यवहितान् जीवप्रदेशैराक्रान्तान् स्पृष्टान् वा पुद्गलान् आहारयन्ति

નારકોંકા એક મી ઉત્પત્તિ સમય અમી અતિક્રાન્ત નહીં હુઆ હૈ, જો
ઠીક વર્તમાન સમયમેં નહીં મોજૂદ હૈ, એસે વે નારક યહાં અનન્તર
સમયોપપન્ન કહે ગયે હૈ ૧, પરમ્પરોપપન્ન—જિન નારકોંકી ઉત્પત્તિમેં
દો આદિ સમય નિકલ ચુકે હૈ, એસે નારક પરમ્પરોપપન્ન હૈ । યે દો
ભેદ કાલકૃત હૈ ૨, અનન્તરાવગાઢ—જો નારક અવ્યવહિત ક્ષેત્ર પ્રદે-
શોમેં અવગાહનાવાલે હૈ, એસે વે નારક અનન્તરાવગાઢ હૈ । અથવા પ્રથમ
સમયમેં જો ક્ષેત્ર પ્રદેશોમેં અવગાઢ હૈ વે નૈરયિક અનન્તરાવગાઢ હૈ ।
જો નૈરયિક વ્યવહિત ક્ષેત્ર પ્રદેશોમેં અવગાઢ હૈ અવગાહનાવાલે હૈ—
વે નૈરયિક પરમ્પરાવગાઢ હૈ ૪ ।

અથવા—દ્વિઆદિ સમયકે વ્યવધાનસે જો ક્ષેત્ર પ્રદેશોમેં અવગાહ-
નાવાલે હૈ વે પરમ્પરાવગાઢ હૈ । યે દો ભેદ ક્ષેત્રકૃત હૈ । અનન્તરાહારક—

કહે છે. એટલે કે જે નારકેને ઉત્પન્ન થયા બાદ એક પણ સમય વ્યતીત
થઈ ગયો નથી—એઓ બરાબર આ સમયે જ ત્યાં ઉત્પન્ન થયા છે, એવા
નારકોને અનન્તરોપપન્નક નારકો કહે છે.

પરમ્પરોપપન્ન—જે નારકોને નારક રૂપે ઉત્પન્ન થયાને બે આદિ સમય
વ્યતીત થઈ ગયા છે તે નારકોને પરમ્પરોપપન્ન કહે છે. આ બન્ને કાળ-
કૃત ભેદો છે.

અનન્તરાવગાઢ—જે નારકો અવ્યવહિત ક્ષેત્રપ્રદેશોમાં અવગાહનાવાળા છે,
તે નારકોને અનન્તરાવગાઢ કહે છે. અથવા—પ્રથમ સમયમાં જે નારકો ક્ષેત્રપ્રદેશોમાં
અવગાઢ છે તે નારકોને અનન્તરાવગાઢ છે કહે છે.

પરમ્પરાવગાઢ—જે નારકોને પરમ્પરાવગાઢ (અવગાહનાવાળા) છે, તે
નારકોને પરમ્પરાવગાઢ કહે છે. અથવા બે આદિ સમયના વ્યવધાનથી જે
નારકો ક્ષેત્રપ્રદેશોમાં અવગાહનાવાળા છે, તે નારકોને પરમ્પરાવગાઢ કહે છે,
ત્રીજો અને ચોથો ભેદ ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ પાડવામાં આવ્યો છે.—

યે તે તથા । અથવા-પ્રથમસમયે યે પુદ્ગલાનાહારયન્તિ તેऽનન્તરાહારકાઃ ॥ ૫ ॥ તથા-પરમ્પરાહારકાઃ-પરમ્પરાન્=પૂર્વવ્યવહિતાન્ જીવપ્રદેશાગતાન્ પુદ્ગલાનાહાર-યન્તિ યે તે તથા । અથવા-દ્વ્યાદિસમયવ્યવધાનેન જીવપ્રદેશાગતાન્ પુદ્ગલાનાહારયન્તિ યે તે તથા ॥ ૬ ॥ હંદં ભેદદ્વયં દ્રવ્યકૃતમ્ । તથા-અનન્તરપર્યાપ્તાઃ-ન વિદ્યતે અન્તરં=વ્યવધાનં પર્યાપ્તત્વે યેવાં તેऽનન્તરાઃ, તે ચ તે પર્યાપ્તાશ્ચેતિ તથા । પ્રથમસમયપર્યાપ્તકા इत्यर्थः ॥ ૭ ॥ તથા-પરમ્પરપર્યાપ્તાઃ-દ્વ્યાદિ-સમયપર્યાપ્તા इत्यर्थः ॥ ૮ ॥ હંદં ભેદદ્વયં ભાવકૃતમ્ । પર્યાપ્તે ભાવત્વાદિતિ । તથા-ચરમાઃ=અન્તિમમવિકા નારકાઃ । યે નરકાન્નિર્ગતાઃ સન્તો ન પુનર્નારકા

જો નૈરયિક જીવ પ્રદેશોસે આક્રાન્ત અથવા સ્પૃષ્ટ-અવ્યવહિત પુદ્ગલોંકા આહાર કરતે હૈં વે અનન્તરાહારક હૈં । અથવા-પ્રથમ સમયમેં જો નૈરયિક પુદ્ગલોંકા આહાર કરતે હૈં વે અનન્તરાહારક હૈં । ૫ । પરમ્પરાહારક-પૂર્વમેં વ્યવહિત હુએ એસે જીવપ્રદેશાગત પુદ્ગલોંકા જો નૈરયિક આહાર કરતે હૈં વે અથવા-દ્વિ આદિ સમયકે વ્યવધાનસે જીવપ્રદેશાગત પુદ્ગલોંકા જો આહાર કરતે હૈં વે પરમ્પરાહારક નૈરયિક હૈં । ૬ । યે દો ભેદ દ્રવ્યકૃત હૈં । અનન્તરપર્યાપ્તક-જિન્હે પર્યાપ્ત હોનેમેં કોઈ વ્યવધાન-અન્તર નહીં હૈ એસે પ્રથમ સમયમેં પર્યાપ્ત હુએ નૈરયિક જીવ અનન્તર પર્યાપ્ત હૈં । ૭ । પરમ્પરપર્યાપ્ત-જો દોઆદિ સમયોમેં પર્યાપ્ત હોતે હૈં વે પરમ્પર પર્યાપ્ત હૈં-યે દો ભેદ ભાવકૃત હૈં । ૮ । જો ચરમ નૈરયિક નરકસે

અનન્તરાહારક-જે નારકો જીવપ્રદેશોથી આક્રાન્ત અથવા જીવપ્રદેશોની સાથે સ્પૃષ્ટ એવાં અવ્યવહિત પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે તે નારકોને અનન્તરાહારક કહે છે. અથવા જે નારકો પ્રથમ સમયમાં પુદ્ગલોનો આહાર કરે છે, તે નારકોને અનન્તરાહારક કહે છે.

પરમ્પરાહારક-પૂર્વ વ્યવહિત થયેલાં જીવપ્રદેશાગત પુદ્ગલોનો જે નારકો આહાર કરે છે તે નારકોને પરમ્પરાહારક કહે છે. અથવા જે આદિ સમયના વ્યવધાન બાદ જે આદિ સમય વ્યતીત થઈ ગયા બાદ-જીવપ્રદેશાગત પુદ્ગલોનો જે નારકો આહાર કરે છે, તે નારકોને પરમ્પરાહારક કહે છે. આ બન્ને ભેદો દ્રવ્યકૃત ભેદો છે.

અનન્તર પર્યાપ્ત જે નારકોને પર્યાપ્ત થવામાં કોઈ પણ વ્યવધાન (સમયનું અંતર) પડતું નથી એવા પ્રથમ સમયમાં પર્યાપ્ત બનેલા નારક જીવોને અનન્તર પર્યાપ્ત કહે છે.

પરમ્પરપર્યાપ્ત-જે નારકો જે આદિ સમય વ્યતીત થયા બાદ પર્યાપ્ત થાય છે તેમને પરમ્પરપર્યાપ્ત કહે છે. આ બન્ને ભેદો ભાવકૃત છે.

ભવિષ્યન્તિ તે જીવા इति भावः ॥ ९ ॥ तथा—अचरमाः=अग्रेऽपि नारकत्वेनो-
त्पत्त्यमानाः ॥ १० ॥ एतद् भेदद्वयमपि भावकृतम्, चरमाचरमत्वयोजीवपर्या-
यत्वादिति ॥ १ ॥ इति चतुर्विंशतिदण्डकस्थप्रथमभेदस्य दश भेदा उक्ताः ।
एवमेव नरकातिरिक्तानां चतुर्विंशतिदण्डकस्थानां त्रयोविंशतिसंख्यकानां जीव
भेदानां प्रत्येकम् अनन्तरोपपन्नादिका दश भेदाः स्वयमूहनीयाः । एतदेव सूच-
यितुमाह—‘ एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ’ इति ॥ २ ॥ चतुर्विंशतिदण्डकस्थ-

નિકલકર પુનઃ નૈરયિક નહીં હોતેહૈં વે ઓર અચરમ-જો નરકસે નિકલ-
કર પુનઃ નારક હોનેવાલે હોતે હૈં, ક્રમશઃ ચરમ ઓર અચરમ નૈરયિક
હૈં । યે દો ભેદ મી ભાવકૃત હોતે હૈં । ક્યોંકિ ચરમતા ઓર અચરમતા
યે જીવકી પર્યાય રૂપ હોતી હૈં । હસ પ્રકારસે ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકસ્થ
પ્રથમ ભેદકે યે ૧૦ ભેદ કહે હૈં, સો હસી તરહસે ૧૦ ભેદ ઓર મી
ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકસ્થમેં ૨૩ જીવ ભેદોંમેંસે પ્રત્યેક ભેદ કહ લેના ચાહિયે
યહી વાત “ एवं નિરંતરં જાવ વેમાણિયાણં ” ઇત્યાદિ સૂત્ર પાઠ દ્વારા
પ્રકટ કી ગઈ હૈ ॥૨॥

હસ પ્રકારસે ચતુર્વિંશતિ દણ્ડકસ્થ નારક જીવકે ભેદ કહે સો
અય સૂત્રકાર હસી પ્રસંગસે નૈરયિકોંકે નિવાસસ્થાન ભૂત જો નારકા-
વાસ હૈં ઉનકા કથન ૧૦ સ્થાનક રૂપસે કહતે હૈં—

“ અવત્થીપ્પણં ” ઇત્યાદિ—ચૌથી પદ્ધતિપ્રમા પૃથિવીમેં ૧૦ લાખ નિર-
યાવાસ કહે ગયે હૈં । રત્નપ્રમા પૃથિવીમેં જઘન્યસે નૈરયિકોંકી ૧૦

અચરમ નારક-જે નારકો નરકગતિમાંથી નીકળ્યા બાદ ફરી નરકગતિમાં જતા
નથી તેમને અચરમ નારકો કહે છે.

અચરમનારક-જે નારકો નરકમાંથી નીકળીને ફરી નરકગતિમાં ઉત્પન્ન
થવાના હોય છે તેમને અચરમનારકો કહે છે. આ બન્ને ભેદ પશુ ભાવકૃત છે,
કારણ કે અચરમતા અને અચરમતા, આ બન્ને જીવની પર્યાયરૂપ હોય છે આ
પ્રકારે ૬૦ હંડકમાંથી પહેલા ૬૦ હંડકના જીવોના ભેદોનું કથન કરીને હવે બાકીના
૨૩ હંડકના ભેદોનું સૂત્રકાર કથન કરે તે—“ एवं निरंतरं वेमाणियाणं ” ઇત્યાદિ
—આ સૂત્રપાઠ દ્વારા સૂત્રકારે એ વાત પ્રકટ કરી છે વેમાણિકો પર્યાનતના
બાકીના ૨૩ હંડકોના જીવોના પશુ નારકોના જેવો જ હસ હસ પ્રકાર સમજવો.

આ પ્રકારે ૨૪ હંડકના નારકાદિ જીવોના ભેદોનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર
નારકોના નિવાસસ્થાનરૂપ જે નરકાવાસો છે તેમનું હસ સ્થાનકરૂપે કથન કરે છે—

“ અવત્થીપ્પણં ” ઇત્યાદિ—

ચૌથી પદ્ધતિપ્રમા નામની નરકમાં હસ લાખ નિરયાવાસો કહ્યા છે. પહેલી

નારકજીવસ્ય દશ ભેદા ઉક્તાઃ, અતઃ પ્રસજ્જતસ્તન્નિવાસસ્થાનભૂતાન્ નરકાવાસાન્
દશસ્થાનાનુપાતિત્વેનાહ—‘ ચતુર્થીં ણં ’ इत्यादि । व्याख्या स्पष्टा ॥ सू० ६३ ॥

અનન્તરસૂત્રે લાન્તકદેવાનાં સ્થિતિરુક્તા । લાન્તકદેવાશ્ચ પ્રાપ્તમદ્રા મન્-
ન્તીતિ મદ્રકારિકર્મણાં કારણાન્યાહ—

મૂલમ્—દસર્હિં ઠાણેહિં જીવા આગમેસિમદ્સાષ્ કમ્મં
પગેરેતિ, તં જહા—અણિયાણયાષ્ ૧ દિટ્ઠિસંપન્નયાષ્ ૨ જોગવા-
હિયત્તાષ્ ૩ સ્વાંતિસમ્મણયાષ્ ૪ જિહંદિયયાષ્ ૫ અમાહ્લયાષ્
૬ અપાસત્થયાષ્ ૭ સુસામ્મણયાષ્ ૮ પવ્વયણવચ્છલ્લયાષ્ ૯
પવ્વયણ ઉબ્ભાવણયાષ્ ૧૦ ॥ સૂ૦ ૬૪ ॥

છાયા—દશભિઃ સ્થાનૈઃ જીવાઃ આગમિષ્યદ્ગદ્રતાયૈ કર્મપ્રકુર્વન્તિ, તદ્ધયા—
અનિદાનતયા ૧ દૃષ્ટિસમ્પન્નતયા ૨ યોગવાહિકતયા ૩ શાન્તિલક્ષમણતયા ૪
હજાર વર્ષકી જઘન્ય સ્થિતિ કહી ગઈ છે, ચતુર્થ પદ્મપ્રમા પૃથિવીમેં ઉત્કૃ-
ષ્ટસે નૈરયિકોંકી ૧૦ સાગરોપમકી સ્થિતિ કહી ગઈ છે, પાંચવી ધૂમપ્રમા
પૃથિવીમેં જઘન્યસે નૈરયિકોંકી સ્થિતિ ૧૦ સાગરોપમકી કહી ગઈ છે ।
અસુરકુમારોંકી સ્થિતિ જઘન્યસે ૧૦ હજાર વર્ષકી કહી ગઈ છે, इसी
प्रकारसे यावत् स्तनितकुमारोंकी स्थिति भी जाननी चाहिये ।

બાદર વનસ્પતિકાયિકોંકી સ્થિતિ ઉત્કૃષ્ટસે ૧૦ હજાર વર્ષકી કહી
ગઈ છે, ब्रह्मलोककल्पमें देवोंकी उत्कृष्ट स्थिति १० सागरोपमकी कही
गई है, लान्तक कल्पमें देवोंकी जघन्य स्थिति दस सागरोपमकी कही
गई है ॥ सूत्र ६३ ॥

રત્નપ્રમા નરકના નારકોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની કહી છે. ચોથી
પંકપ્રમા પૃથ્વીના નારકોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ૧૦ સાગરોપમની કહી છે.

પાંચમી ધૂમપ્રમા નરકમાં નારકોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ સાગરોપમની કહી
છે અસુરકુમારોની જઘન્યસ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની કહી છે સ્તનિતકુમારો પચન્તના
બાકીના ભવનપતિ દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ પણ દસ હજાર વર્ષની કહી છે. બાદર
વનસ્પતિકાયિકોની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની કહી છે. વ્યન્તર દેવોની
દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ દસ હજાર વર્ષની કહી છે. બ્રહ્મલોક કલ્પના દેવોની
ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ દસ સાગરોપમની કહી છે અને લાન્તક કલ્પના દેવોની જઘન્ય
સ્થિતિ દસ સાગરોપમની કહી છે. ॥ સૂત્ર ૬૩ ॥

જિતેન્દ્રિયતયા ૫ અમાયિકતયા ૬ અપાર્થિરથતયા ૭ સુશ્રામણ્યતયા ૮ પ્રવચ-
નવત્સલતયા ૯ પ્રવચનોદ્ઘાવનતયા ૧૦ ॥ સૂ. ૬૪ ॥

ટીકા—‘ દસહિં ઠાણેહિં ’ इत्यादि—

દશમિથ્યાનૈઃ=હેતુભિઃ જીવાઃ આગમિષ્યદ્ભદ્રતાયૈ=આગમિષ્યતિ=આગા-
મિનિકાણે ભદ્રં=સુમાનુષત્વપ્રાપ્ત્યા મોક્ષરૂપં, યદ્રા-સુદેવત્વરૂપમ્, અનન્તરં સુમા-
નુષત્વપ્રાપ્ત્યા મોક્ષરૂપં ચ કલ્યાણં યેષાં તે-આગમિષ્યદ્ભદ્રાઃ, તેષાં આવસ્તત્તા
તસ્યૈ-માવિકલ્યાણાર્થં કર્મ=શુભપ્રકૃતિરૂપં પ્રકુર્વન્તિ=પ્રકર્ષેણ પ્રાપ્તસ્યેન કુર્વન્તિ=
આચરન્તિ । તથા-અનિદાનતયા-નિદાયતે=છિવતે આનન્દરસસંવલિતમોક્ષ-

इस ऊपरके सूत्रमें लान्तक देवोंकी स्थिति कही गई है—सो ये लान्तक
देव प्राप्त भद्रवाले-प्राप्त कल्याणवाले होते हैं, अतः अब सूत्रकार भद्र-
कारी कर्मोंके कारणोंको कथन करते हैं—

“ दसहिं ठाणेहिं जीवा ” इत्यादि । सूत्र ६४ ॥

ટીકાર્થ-જીવ ૧૦ કારણોં સે આગમિષ્યદ્ ભદ્રતા કે લિયે કાર્ય
કરતે હિં-આગામી કાલમેં સુમાનુષત્વકી પ્રાપ્તિસે મોક્ષરૂપ, અથવા-
સુદેવત્વરૂપકે અનન્તર સુમાનુષત્વકી પ્રાપ્તિસે મોક્ષરૂપ કલ્યાણ જિનકા
હોનેવાલા હોતાં હૈ, યે આગમિષ્યદ્ ભદ્ર જીવ હિં, જનકા જો માવ હૈ, વહ
આગમિષ્યદ્ ભદ્રતા હૈ, હસ ભદ્રતાકે લિયે-માવિકલ્યાણકે લિયે જીવ
નિદાન (નિયાણા) આદિબંધ રહિત હોકર શુભ પ્રકૃતિરૂપ કર્મ પ્રકર્ષસે
અઞ્છી તરહસે કરતે હિં યે ૧૦ કારણ હસ પ્રકારસે હિં, અનિદાનતા-
આનન્દ રસસે મિશ્રિત, એવં મોક્ષરૂપ ફલકો ઉત્પન્ન કરનેવાલી એસી

આગલા સૂત્રમાં લાન્તક કલ્પના દેવોની જઘન્ય સ્થિતિ પ્રકટ કરવામાં
આવી છે. તે લાન્તક આદિ કલ્પના દેવો પ્રાપ્ત ભદ્રવાણા-પ્રાપ્ત કલ્યાણવાળા
હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર ભદ્રકારી (કલ્યાણકારી) કર્મોનાં કારણોનું
નિરૂપણ કરે છે—‘ દસહિં ઠાણેહિં જીવા ’ इत्यादि—(સૂ. ૬૪)

ટીકાર્થ-જીવ દસ કારણોને લીધે આગમિષ્યદ્ ભદ્રતાને માટે-ભાવી કલ્યાણને
માટે-કર્મ કરે છે. ભવિષ્યકાળમાં સુમાનુષત્વની પ્રાપ્તિ દ્વારા મોક્ષરૂપ અથવા
સુદેવત્વરૂપ અને ત્યારબાદ સુમાનુષત્વની પ્રાપ્તિ દ્વારા મોક્ષરૂપ કલ્યાણની
જેને પ્રાપ્તિ થવાની હોય છે, એવા જીવને “ આગમિષ્યદ્ભદ્રજીવ ” કહે
છે, અને તેનો જે લાભ છે તેનું નામ આગમિષ્યદ્ ભદ્રતા છે આ ભદ્રતાને
માટે-આ ભાવિકલ્યાણને માટે જીવ નિદાન આદિ બંધરહિત થઈને શુભ પ્રકૃતિ
રૂપ કર્મ સારામાં સારી રીતે કરે છે. તે દસ કારણો નીચે પ્રમાણે છે—

રૂપફલપ્રસવિની જ્ઞાનાધારાધનલતા યેન ચક્રવર્તિદેવેન્દ્રાદિ સમૃદ્ધિસંપ્રાપ્તિપ્રાર્થનાઽધ્યવસાનેન તદ્ નિદાનમ્, નાસ્તિ નિદાનં યસ્ય સોઽનિદાનઃ, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા, નિદાનરહિતતયેત્યર્થઃ ॥ ૧ ॥ તથા-દૃષ્ટિસંપન્નતયા-દૃષ્ટિઃ=સમ્યગ્દૃષ્ટિઃ, તયા સંપન્નો=યુક્તો દૃષ્ટિસંપન્નઃ, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા-સમ્યગ્દૃષ્ટિ-યુક્તત્વેત્યર્થઃ ॥ ૨ ॥ તથા-યોગવાદિકતયા યોગેન=સર્વત્ર નિરૂહતારૂપેણ સમાધિના પદ્ધતિઃ=ગચ્છતીત્યેવંશીઞઃ યોગવાદી, સ ઇવ યોગવાદિકસ્તસ્ય ભાવસ્તત્તા-

જ્ઞાનાદિ-આરાધના રૂપ લતા જિસ ચક્રવર્તીની દેવેન્દ્રાદિકી સમૃદ્ધિકી સંપ્રાપ્તિકી પ્રાર્થનાકે અધ્યવસાયસે છેદ લી જાતી હૈ વહ નિદાન હૈ, જિસકે એસા નિદાન નહીં હૈ વહ અનિદાન હૈ, ઇસ અનિદાનકા જો ભાવ હૈ, વહ અનિદાનતા હૈ-નિદાન રહિતતા હૈ, ઇસ નિદાન રહિતતાસે જીવ આગામી કાલમેં અપની ભદ્રતાકે લિયે કર્મકા-પ્રશસ્ત કર્મકા આરચણ કરતે હૈ ૧ દૃષ્ટિ સંપન્નતા-દૃષ્ટિ નામ સમ્યગ્દૃષ્ટિકા હૈ-ઇસ સમ્યગ્દૃષ્ટિસે યુક્ત જો જીવ હૈ વહ દૃષ્ટિસંપન્ન હૈ, ઇસ દૃષ્ટિ સંપન્નકા જો ભાવ હૈ, વહ દૃષ્ટિસંપન્નતા હૈ, ઇસ દૃષ્ટિસંપન્નતાસે બી જીવ અપની ભાવિ ભદ્રતાકે લિયે શુભ કર્મકા આચરણ કરતે હૈ ।

(૧) અનિદાનતા-અનંદ રસથી મિશ્રિત, અને મોક્ષરૂપ ફલની પ્રાપ્તિ કરાવનારી એવી જ્ઞાનાદિની આરાધના રૂપલતા જેના દ્વારા છેદાર્થ જાય છે તે પ્રાર્થના અથવા નિયાણાનું નામ નિદાન છે. જેમ કે જ્ઞાનાદિની આરાધના કરનારો કોઈ જીવ નિયાણું ખાધે કે મારા તપના પ્રભાવથી મને ચક્રવર્તી પદની પ્રાપ્તિ થાય અથવા દેવેન્દ્રોની સમૃદ્ધિની મને સંપ્રાપ્તિ થાય, તો આ પ્રકારના તેના નિદાન દ્વારા તે મોક્ષમાર્ગની પ્રાપ્તિ કરવાને બદલે સંસારમાં ખટવાયા કરે છે-

જે જીવમાં આ પ્રકારના નિદાનનો અભાવ હોય છે તે જીવને અનિદાનતાવાળો જીવ કહે છે. એટલે કે નિદાન રહિતતાના ભાવને અનિદાનતા કહે છે આ નિદાન રહિતતાપૂર્વક પ્રશસ્ત કર્મનું સેવન કરીને જીવ ભવિષ્યમાં ભદ્રતા-કલ્યાણની પ્રાપ્તિ કરે છે. આ રીતે અનિદાનતારૂપ કારણ પણ તેના ભાવિ કલ્યાણનું સાધક બને છે.

(૨) દૃષ્ટિસંપન્નતા-સમ્યગ્દૃષ્ટિને દૃષ્ટિ કહે છે. આ સમ્યગ્દૃષ્ટિથી યુક્ત જે જીવ હોય છે તેને દૃષ્ટિસંપન્ન કહે છે. આ દૃષ્ટિસંપન્નનો જે ભાવ છે તેનું નામ દૃષ્ટિસંપન્નતા છે. આ દૃષ્ટિસંપન્નતાને કારણે પણ જીવ પોતાની ભાવિ ભદ્રતાને નિમિત્તે શુભકર્મનું આચરણ કરે છે આ રીતે દૃષ્ટિસંપન્નતા પણ ભાવિકલ્યાણ સાધવાનું કારણભૂત બને છે.

તયા સર્વજ્ઞાનુક્ષ્ણશાલિતયેત્યર્થઃ ॥ ૩ ॥ ક્ષાન્તિ ક્ષમણતયા-શક્તેઃ સદ્ભાવેઽપિ
ક્ષાન્તયા=ક્ષમયા ક્ષમતે યઃ સ ક્ષાન્તિક્ષમણઃ, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા । શક્તિસદ્ભા-
વેઽપિ ક્ષમાગુણેન સહ ન શક્તિમત્તયેત્યર્થઃ ॥ ૪ ॥ જિતેન્દ્રિયતયા=ઇન્દ્રિયનિગ્રહેણ
॥ ૫ ॥ અમાયિકતયા=અમાયયા રારલતયેતિ યાવત્ ॥ ૬ ॥ અપાર્શ્વસ્થતયા-

યોગવાહિકતા-જો સર્વજ્ઞ નિસ્પૃહતા રૂપ સમાધિસે ચલતા હૈ, યુક્ત
રહતા હૈ-વહ યોગવાહી હૈ યા યોગવાહિક હૈ, હસ યોગવાહિકતા જો ભાવ
હૈ વહ યોગવાહિકતા હૈ, અર્થાત્ સર્વજ્ઞ અનુત્ક્રંઠાશાલિના (ઉત્સુક પનસે
રહિત) રૂપ યોગવાહિકતાસે મી જીવ અપની આગામી કાલમેં હોનેવાલી
મદ્ધતાકે પ્રશસ્ત કર્મકા આચરણ કરતા હૈ, ક્ષાન્તિ ક્ષમણતા શક્તિ કે
સદ્ભાવમેં મી જો શાન્તિસે ક્ષમા ભાવસે પરકૃત અપરાધોંકો સહન કર
લેતા હૈ, વહ ક્ષાન્તિ ક્ષમણ હૈ, હસ ક્ષાન્તિ ક્ષમણકા જો ભાવ હૈ, વહ
ક્ષાન્તિ ક્ષમણતા હૈ, હસ ક્ષાન્તિ ક્ષમણનાસે મી જીવ આગામી કાલમેં
જિન કર્મોંસે મદ્ધતા આતી હૈ, ડન કર્મોંકા આચરણ કરતા હૈ, જિતે-
ન્દ્રિયતા-ઇન્દ્રિયોંકો અપને વશમેં કરનેવાલા જિતેન્દ્રિય કહા ગયા હૈ-
જિતેન્દ્રિયકા જો ભાવહૈ, વહ જિતેન્દ્રિયતાહૈ, હસે જિતેન્દ્રિયતાકે કારણ
મી જીવ આગામી કાલમેં હોનેવાલે અપને કલ્યાણકે યોગ્ય પ્રશસ્ત

(૩) યોગવાહિકતા-જે જીવ સદા નિઃસ્પૃહતારૂપ સમાધિથી યુક્ત રહે છે
તે જીવને યોગવાહી અથવા યોગવાહિક કહે છે આ યોગવાહિકનો જે ભાવ
છે તેનું નામ યોગવાહિકતા છે એટલે કે સર્વજ્ઞ અનુત્ક્રંઠા (અનુસુક્તા અથવા
નિઃસ્પૃહતા) ભાવ રાખનારો જીવ યોગવાહિક કહેવાય છે એવો જીવ પણ
પોતાની યોગવાહિકતાને કારણે પોતાની ભાવિ ભદ્રતાને નિમિત્તે શુભકર્મમાં
પ્રવૃત્ત થાય છે. આ રીતે યોગવાહિકતા પણ ભાવિ કલ્યાણની સાધક બને છે.

(૪) ક્ષાન્તિ ક્ષમણતા-શક્તિનો સદ્ભાવ હોવા છતાં પણ ક્ષમાભાવપૂર્વક
અન્યના અપરાધોને સહન કરી લેનાર વ્યક્તિને ક્ષાન્તિક્ષમણતા કહે છે. આ
ક્ષાન્તિક્ષમણતાને લીધે પણ જીવ આગામી કાળમાં પોતાનું કલ્યાણ થાય
એવાં શુભ કર્મોંનું સેવન કરે છે. આ પ્રકારે ક્ષાન્તિક્ષમણતા પણ ભાવિકલ્યાણની
સાધક બને છે.

(૫) જિતેન્દ્રિયતા-જે જીવ ઇન્દ્રિયોંને પોતાના કાળમાં રાખે છે તે જીવને
જિતેન્દ્રિય કહે છે. જિતેન્દ્રિયનો જે ભાવ છે તેનું નામ જિતેન્દ્રિયતા છે. આ
જિતેન્દ્રિયતાને કારણે પણ જીવ એવાં પ્રશસ્ત કર્મોંમાં પ્રવૃત્ત થાય છે કે જેને
લીધે તેને ભવિષ્યમાં ભદ્રતા (કલ્યાણ)ની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ રીતે જિતેન્દ્રિયતા
પણ ભાવિકલ્યાણની પ્રાપ્તિમાં કારણભૂત બને છે.

પાર્શ્વ=જ્ઞાનાદીનાં બહિર્દેશતઃ સર્વતો વા તિષ્ઠતિ યઃ સ પાર્શ્વસ્થઃ, ન પાર્શ્વસ્થો-
પાર્શ્વસ્થઃ, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા । જ્ઞાનદર્શનચારિત્રાચારિત્રતયા ક્રિયાપાત્રતગે-
ત્યર્થઃ, શય્યાતરાભિહૂતનિત્યપિણ્ડાદ્યમોજિતયા વા । પાર્શ્વસ્થલક્ષણંચેદમુક્તમ્—

“ સો પાસત્યો દુવિહો, દેસે સવ્વે ય હોઈ નાયવ્વો ।

સવ્વમ્મિનાણદંસણ, ચરણાણં જો ય પાસત્યો ॥ ૧ ॥

દેસમ્મિ ઉ પાસત્યો, સેજ્જાયરભિહ્વનિયપિંડં ચ ।

નીયં ચ અગ્ગપિંડં, મુજ્જં જો સો ઉ નાયવ્વો ॥ ૨ ॥

છાયા—સ પાર્શ્વસ્થો દ્વિવિધો દેશે સર્વસ્મિન્ન ભવતિ જ્ઞાતવ્યઃ ।

સર્વસ્મિન્ જ્ઞાનદર્શનચરણાનાં યઃ પાર્શ્વસ્થઃ ॥ ૧ ॥

દેશે તુ પાર્શ્વસ્થઃ શય્યાતરાભિહૂતનિયતપિંડં ચ ।

નિત્યં ચાગ્રપિંડં મુક્તે યઃ સ તુ જ્ઞાતવ્યઃ ॥ ૨ ॥ इति । ७॥

કર્મના આચરણ કરતા હૈ, इसी तरहसे अनायिकतासे सरलतासे-
जीव भाविभद्रताके लिये शुभ प्रकृति रूप कर्मके आचरणमें सन्नद्ध
रहता हैं, इसी तरह जीव पार्श्वस्थ नहीं होता है, ज्ञान दर्शन एवं
चारित्र रूप आत्म परिणतिमें रमण करता है, अथवा शय्यातरके
पिण्डका अभोजी होता है, ऐसा वह जीव भी भावि भद्रताके लिये
शुभ प्रवृत्ति रूप कर्मके आचरणमें सन्नद्ध रहता है, पार्श्वस्थका लक्षण
इस प्रकारसे कह गया है—“ सो पासत्यो दुविहो ” इत्यादि ।

જ્ઞાન, દર્શન एवं चारित्रका जो ऊपरसेही पालन करता है, वह
सर्व रूपसे पार्श्वस्थ है, सुश्रामण्यता-जिसका आग्रण्य-चारित्र पार्श्वस्थ

અમાયિકતા-સરલતા અથવા નિષ્કપટતા યુક્ત જીવને અમાયિકતાને કારણે
પણ જીવ ભાવિભદ્રતાને યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મોમાં પ્રવૃત્ત થાય છે. આ રીતે અમા-
યિકતા પણ ભાવિકલ્યાણની પ્રાપ્તિ બને છે.

(૭) અપાર્શ્વસ્થતા-જે જીવ પાર્શ્વસ્થ હોતો નથી-એટલે કે જ્ઞાન, દર્શન
અને ચારિત્રરૂપ આત્મપરિણતિમાં જે જીવ રમણ કરે છે તેને અપાર્શ્વસ્થ કહે છે.
અથવા જે જીવ શય્યાતરના નિત્ય પિંડને અભોજી હોય છે એવો જીવ પણ ભાવિ
ભદ્રતાને યોગ્ય શુભ પ્રવૃત્તિરૂપ કર્મનું આચરણ કરવામાં પ્રવૃત્ત રહે છે. પાર્શ્વ-
સ્થલક્ષણ આ પ્રમાણે કહ્યું છે—“ સો પાસત્યો દુવિહો ” ઇત્યાદિ—

જે જીવ ઉપર ઉપરથી જ જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્રનું પાલન કરે છે તેને
પાર્શ્વસ્થ કહે છે.

તથા-સુશ્રામણ્યતયા-પાર્શ્વસ્થત્વાદિદોષાભાવેન મૂજોત્તરગુણયુક્તત્વેન ચ સુષ્ટુ=શોભનં શ્રામણ્ય=ચારિત્રં यस્ય સ સુશ્રામણ્યસ્તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા ॥ ૮ ॥ પ્રવચનવત્સલતયા-પ્રવચનં=દ્વાદશાંગીલક્ષણં આગમસ્તદાધારઃ સંઘો વા, તત્ર વત્સલતા=પ્રત્યનીકતારાહિત્યેન હિતકારિતા તયા ॥ ૯ ॥ તથા-પ્રવચનોદ્ઘાવનતયા-પ્રવચનસ્ય=દ્વાદશાંગીલક્ષણસ્ય ઉદ્ઘાવનઃ=તસ્ય સર્વતો વૈશિષ્ટ્યપ્રદર્શન-રૂપધર્ણવાદાદિના પ્રભાવકઃ, તસ્ય ભાવસ્તત્તા તયા । પ્રવચનપ્રભાવનયેત્યર્થઃ

આદિ રૂપ દોષકે અભાવસે એવં સૂલ ગુણ ઔર ઉત્તર ગુણસે યુક્ત હોનેસે શોભન હૈ, વહ સુશ્રામણ્ય હૈ, હસ સુશ્રામણ્યતા જો ભાવ હૈ, વહ સુશ્રામણ્યતા હૈ, હસ સુશ્રામણ્યતાસે મી આગમી કાલમેં હોનેવાલી અપની મદ્રતાકે યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મકા આચરણ કરનેકે લિયે સન્નદ્ધ રહતા હૈ, પ્રવચનવત્સલતા-દ્વાદશાંગી રૂપ આગમકા નામ પ્રવચન હૈ, અથવા હસકા આધારભૂત જો સંઘ હૈ, વહ પ્રવચન હૈ, હસ પ્રવચનમેં વત્સલતાકા હોના-હસકે વિપરીત વ્યવહારસે રહિત હોકર ઉસકા હિતકારી હોના-હસસે મી જીવ આગમી કાલમેં હોનેવાલી અપની મદ્રતાકે યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મકા આચરણ કરતા હૈ, પ્રવચનોદ્ઘાવનતા-જો દ્વાદશાંગી રૂપ પ્રવચનકી સર્વ તરફસે સ્વ પ્રકાર વિશિષ્ટતાકા પ્રદર્શન કરતા હૈ ઉસકી પ્રભાવના કરતા હૈ, વહ પ્રવચનોદ્ઘાવન હૈ, હસકા જો ભાવ હૈ વહ પ્રવચનોદ્ઘાવનતા હૈ, અર્થાત્ પ્રવચનકી

(૮) સુશ્રામણ્યતા-જેમનું શ્રામણ્ય (ચારિત્ર) પાર્શ્વસ્થ આદિરૂપ દોષોના અભાવથી અને મૂળગુણ અને ઉત્તર ગુણોથી યુક્ત હોવાને કારણે સુંદર (પ્રશસ્ત) હોય છે એવા સાધુને સુશ્રામણ્ય કહે છે. તે સાધુમાં રહેલા ગુણનું નામ સુશ્રામણ્યતા છે. આ સુશ્રામણ્યતાને કારણે પણ જીવ પોતાની આગમી ભદ્રતાને યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મોમાં પ્રવૃત્ત થાય છે.

(૯) પ્રવચનવત્સલતા-દ્વાદશાંગીરૂપ આગમનું નામ પ્રવચન છે. અથવા તેના આધારરૂપ જે સંઘ છે તેનું નામ પ્રવચન છે. આ પ્રવચન પ્રત્યે વત્સલતા હોવી-તેના વિરૂદ્ધનો વ્યવહાર કરવાને બદલે તેના હિતકારી થવું તેનું નામ પ્રવચન વત્સલતા છે. તેને કારણે પણ જીવ પોતાના ભાવિકથાણને યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મોનું આચરણ કરે છે.

(૧૦) પ્રવચનોદ્ઘાવનતા-જે જીવ દ્વાદશાંગીરૂપ પ્રવચનની સઘળી વિશિષ્ટતાઓનું પ્રદર્શન કરે છે-તેની પ્રભાવના કરે છે-તે જીવના તે શુભ કાર્યને પ્રવચનોદ્ઘાવન કહે છે. તે પ્રવચનોદ્ઘાવનનો જે ભાવ છે તેનું નામ પ્રવચનોદ્ઘાવનતા

॥ ૧૦ ॥ ઇતિ! એમિઃ અનિદાનત્વાદિ પ્રવચનોદ્ભાવકત્વાત્તૈર્દશભિઃ સ્થાનૈઃ જીવા ભાવિભદ્રતાર્થશુભપ્રકૃતિરૂપ કર્માચરણે સર્વદા સન્નદ્રા ભવન્તીતિ સૂત્રાશયઃ॥ સૂ. ૬૪॥

ભાવિભદ્રકારણં શુભપ્રકૃતિકં કર્મકુર્વતા સાધુના ન કદાપ્યાશંસાપ્રયોગઃ કર્તવ્ય ઇત્યાશંસાપ્રયોગં દશવિધત્વેનાહ—

મૂળ-દશવિધે આસંસપ્પઓગે પળ્લપ્તે, તં જહા-ઇહલોગા-સંસપ્પઓગે ૧ પરલોગાસંસપ્પઓગે ૨ દુહઓલોગાસંસપ્પઓગે ૩, જીવિયાસંસપ્પઓગે ૪ મરણાસંસપ્પઓગે ૫ કામાસંસપ્પ-ઓગે ૬ ભોગાસંસપ્પઓગે ૭ લાભાસંસપ્પઓગે ૮ પૂજાસંસપ્પ-ઓગે ૯ સત્કારાસંસપ્પઓગે ૧૦ ॥ સૂ. ૬૫ ॥

છાયા—દશવિધઃ આશંસાપ્રયોગઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, તદ્વયા—ઇહલોકાશંસાપ્રયોગઃ ૧, પરલોકાશંસાપ્રયોગઃ ૨, દ્વિ-ગતો લોકાશંસાપ્રયોગઃ ૩, જીવિતાશંસાપ્રયોગઃ ૪ મરણાશંસાપ્રયોગઃ ૫, કામાશંસાપ્રયોગઃ ૬, ભોગાશંસાપ્રયોગઃ ૭, લાભાશંસાપ્ર-યોગઃ=પૂજાશંસાપ્રયોગઃ ૮, સત્કારાશંસાપ્રયોગઃ ॥ સૂ. ૬૫ ॥

પ્રભાવના હૈ, હસ પ્રવચન પ્રભાવના રૂપ પ્રવચનોદ્ભાવનતાસે ખી જીવ અપની ભદ્રતાકે યોગ્ય પ્રશસ્ત કર્મકા આચરણ કરનેકે લિયે સર્વદા સન્નદ્ર (નૈયાર) રહતા હૈ, હસ તાહ અનિદાનતાસે લેકર પ્રવચનોદ્ભા-વનતા તકકે હન ૧૦ કારણોંકો લેકર જીવ ભાવિ ભદ્રતાકે લિયે શુભ પ્રકૃતિરૂપ કર્મકે આચરણમેં સર્વદા કટિવદ્ધ રહતે હૈ, એસા આશય હસ સૂત્રકા હૈ ॥ સૂત્ર ૬૪ ॥

ભાવિ ભદ્રતાકે કારણભૂત શુભ પ્રકૃતિ રૂપ કર્મકા આચરણ કરતે હુણ સાધુઓ કમી આશંસા પ્રયોગ નહીં કરના ચાહિયે, અતઃ અથ સૂત્રકાર હસી આશંસા પ્રયોગકો દશવિધ રૂપસે કહતે હૈ—

છે. એટલે કે પ્રવચનની પ્રભાવનાનું નામ પ્રવચનોદ્ભાવનતા છે. તેને કારણે પણ જીવ આગામી કાળમાં ભદ્રતા (કલ્યાણ) સાધવામાં કારણભૂત બને એવાં પ્રશસ્ત કર્મો કરવાને સદા તત્પર રહે છે આ પ્રકારે અનિદાનતાથી લઇને પ્રવચનોદ્ભાવ-નતા સુધીના દસ કારણોને લીધે જીવ ભાવિભદ્રતા (કલ્યાણ)ને યોગ્ય શુભપ્રકૃતિ રૂપ કર્મના આચરણ માટે કટિવદ્ધ રહે છે, એવો આ સૂત્રનો આશય છે. ॥ સૂ. ૬૪ ॥

ભાવિ ભદ્રતાના (કલ્યાણના) કારણભૂત શુભ પ્રકૃતિરૂપ કર્મનું આચરણ કરતા સાધુઓએ કદી પણ આશંસાપ્રયોગ (ધ્વંષારૂપ મનોવ્યાપાર) કરવો જોઈએ નહીં. હવે સૂત્રકાર આશંસાપ્રયોગના દસ પ્રકારોનું કથન કરે છે—

ટીકા—‘ દસવિદ્દે ’ આસંસપ્પઓગે ’ इत्यादि—

આશંસાપ્રયોગઃ—આશંસનમાશંસા=इच्छा, તસ્યાઃ પ્રયોગઃ=करणम्, યદ્વા-
આશંસા=इच्छा, સૈવ પ્રયોગો=व्यापारः, इच्छारूपो व्यापार इत्यर्थः । स दशविधः
प्रज्ञप्तः । तद्यथा—इहलोकाशंसाप्रयोग इत्यादि । तत्र—इहलोकाशंसाप्रयोगः—इह-
लोके=एतल्लोकविषय आशंसाप्रयोगः । यथा—एतत्तपः समाराधनेनाहमिहलोके
समृद्ध्यादि सम्पन्नो भवेयमिति ॥ १ ॥ परलोकाशंसाप्रयोगः=परलोके=परलोक
विषय आशंसाप्रयोगः । स यथा—एतत्तपश्चरणादह परलोके इन्द्र इन्द्रसामायिको वा

“ દસવિદ્દે આસંસપ્પઓગે પળ્લગ્તે ” इत्यादि ॥ सूत्र ६५ ॥

ટીકાર્થ—આશંસા પ્રયોગ ૧૦ પ્રકારકા કહા ગયા હૈ—જૈસે—इह लोका-
शंसा प्रयोग १ परलोकाशंसाप्रयोग २, द्विधातो लोकाशंसा प्रयोग ३ जीवि-
ताशंसाप्रयोग ४, मरणाशंसाप्रयोग ५, कामाशंसा प्रयोग ६, भोगा-
शंसा प्रयोग ७, लाभाशंसा प्रयोग ८, पूजाशंसा प्रयोग ९ और सत्कारा
शंसा प्रयोग १० आशंसा नाम इच्छाका है, इस इच्छाका जो करना
है, यह आशंसा प्रयोग अथवा इच्छारूप जो व्यापार है, यह आशंसा
प्रयोग है, यह आशंसा प्रयोग १० प्रकारका जो कहा गया है, उसका
तात्पर्य ऐसा है कि इस तपके समाराधनसे मैं इस लोकमें समृद्ध्यादि
संपन्न होऊँ, सो इहलोकाशंसा प्रयोग है, परलोकाशंसा प्रयोग—
यह ऐसा होता है कि मैं इस तपश्चरणसे परलोकमें इन्द्र या इन्द्रका

“ દસવિદ્દે આસંસપ્પઓગે પળ્લગ્તે ” इत्यादि—(सू ६५)

ટીકાર્થ—આશંસાપ્રયોગના દસ પ્રકાર કહ્યા છે—(૧) ઇહલોકાશંસાપ્રયોગ,
(૨) પરલોકાશંસાપ્રયોગ, (૩) દ્વિધાતોલોકાશંસાપ્રયોગ, (૪) જીવિતાશંસાપ્રયોગ, (૫)
મરણાશંસાપ્રયોગ, (૬) કામાશંસાપ્રયોગ, (૭) ભોગાશંસાપ્રયોગ, (૮) લાભાશંસા-
પ્રયોગ, (૯) પૂજાશંસાપ્રયોગ અને (૧૦) સત્કારાશંસાપ્રયોગ.

ઇચ્છાને આશંસા કહે છે. કોઈ પણ વસ્તુની ઇચ્છા કરવી તેનું નામ આશં
સાપ્રયોગ છે. અથવા વ્યાપારનું નામ આશંસાપ્રયોગ છે હવે આ દસે પ્રકારના
આશંસાપ્રયોગોનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે—

ઇહલોકાશંસાપ્રયોગ—મારા આ તપના પ્રભાવથી મને આ લોકમાં ધન આદિ
સમૃદ્ધિની પ્રાપ્તિ થાય, એ પ્રકારની અભિલાષા સેવવી તેનું નામ ઇહલોકા-
શંસા પ્રયોગ છે.

પરલોકાશંસા પ્રયોગ—મારા આ તપના પ્રભાવથી મને પરલવમાં દેવ,
ઈન્દ્ર, સામાનિક દેવ, ચક્રવર્તી આદિ પદની પ્રાપ્તિ થાય, આ પ્રકારની અભિલાષા
સેવવી તેનું નામ પરલોકાશંસા પ્રયોગ છે.

દેવચક્રવર્તી વા ભવેયમિતિ ॥ ૨ ॥ દ્વિધાતો લોકાશંસાપ્રયોગઃ—દ્વિધાતો=દ્વાભ્યાં પ્રકારાભ્યાં વ્યવસ્થિતૌ યૌ લોકૌ તૌ દ્વિધાતો લોકૌ=ઇહલોકપરલોકાવિત્યર્થઃ, તદ્વિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા—ઇતત્તપશ્ચરણાદહમિહલોકે સમૃદ્ધ્યાદિસમ્પન્નઃ પરલોકે ચ ઇન્દ્રાદિપદધારકો ભવેયમિતિ ૩॥ જીવિતાશંસાપ્રયોગઃ—જીવિતે=જીનને—જીવનવિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા—ચિરાયુષ્કત્વં મે ધૂયાદિતિ ॥ ૪॥ મરણાશંસાપ્રયોગઃ=જીવિતપરિત્યાગવિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા—રોગાદિપીડિતસ્ય મે મરણં ધૂયાદિતિ ॥ ૫ ॥ કામાશંસાપ્રયોગઃ—કામૌ=મનોજ્ઞે શબ્દરૂપે, તદ્વિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા—મનોજ્ઞે શબ્દરૂપે મે ધૂયાસ્તામિતિ ॥ ૬ ॥ ભોગાશંસાપ્રયોગઃ—ભોગાઃ=મનોજ્ઞા ગન્ધરસસ્પર્શાઃ, તદ્વિષયઃ આશંસાપ્રયોગઃ । યથા—મનોજ્ઞા ગન્ધરસસ્પર્શા મે ધૂયાસુરિતિ ॥ ૭ ॥ લાભાશંસાપ્રયોગઃ—લાભઃ=પ્રાપ્તિઃ,

સામાનિક દેવ યા ચક્રવર્તી હો જાઝ, દ્વિધાતોલોકાશંસા પ્રયોગ ઇહ પ્રકારસે હોના હૈ, કિ મેં ઇસ તપશ્ચરણસે ઇસ લોક ઓર પરલોક દોનોં લોકોંમેં કમલઃ સમૃદ્ધ્યાદિ સંપન્ન ઓર ઇન્દ્રાદિ પદકા ધારક હોજાઝ । જીવિતાશંસાપ્રયોગ—એસા હોતા હૈ કિ મેં ચિરજીવિ હોજાઝ, મરણાશંસાપ્રયોગ—એસા હોતા હૈ કિ મેં અવ રોગસે પીડિત હો રહા હૂં, સો અઞ્છા હો મેં જલ્દી મરજાઝ, મનોજ્ઞ શબ્દ ઓર રૂપ યે કામ શબ્દસે યહાં લિયે ગયે હૈ—ઇસ કામ વિષયક જો આશંસા પ્રયોગ હૈ, વહ કામાશંસા પ્રયોગ હૈ, વહ ઇસ પ્રકારકા હોના હૈ, કિ મનોજ્ઞ શબ્દરૂપ મેરે પાસ સદા હોવે, ભોગાશંસા પ્રયોગ—મનોજ્ઞ ગન્ધ, રસ ઓર સ્પર્શ યે ભોગ શબ્દસે લિયે ગયે હૈ, ઇસ ભોગ વિષયક જો આશંસા

દ્વિધાતોલોકાશંસાપ્રયોગ—મારા તપના પ્રભાવથી હું આ લોકમાં સમૃદ્ધિ આદિથી સંપન્ન બનું અને પરલોકમાં પણ દેવ, ઇન્દ્ર આદિ પદની પ્રાપ્તિ કરું, આ પ્રકારની બન્ને લોકસંબંધી અભિલાષા મેળવી તેનું નામ દ્વિધાતોલોકાશંસા પ્રયોગ છે,

જીવિતાશંસા પ્રયોગ—તપ આદિના પ્રભાવથી લીધે ધનની પ્રાપ્તિ ઇચ્છવી તેનું નામ જીવિતાશંસા પ્રયોગ છે.

મરણાશંસાપ્રયોગ—રોગાદિથી કંટાળીને મરણ અભિલાષા કરવી તેનું નામ મરણાશંસા પ્રયોગ છે.

કામાશંસાપ્રયોગ—મનોહર શબ્દ સાંભળવાની અને સુંદરરૂપ નિહાળવાની અભિલાષા સેવવી તેનું નામ કામાશંસા પ્રયોગ છે.

ભોગાશંસાપ્રયોગ—મનોજ્ઞ ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શને ભોગ કહે છે, આ ભોગવિષયક જે અભિલાષા થાય છે તેનું નામ ભોગાશંસાપ્રયોગ છે. ઓટલે કે

તદ્વિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા-કીર્ત્તેઃ શ્રુતાદીનાં ચ લાભો મે ભૂયાદિતિ ॥ ૮ ॥
પૂજાશંસાપ્રયોગઃ-પૂજા=પૂજનીયતા-સકલજનાભિવન્દનીયતા, તદ્વિષય આશંસા-
પ્રયોગઃ । યથા-સકલજનાભિવન્દ્યો ભવેયમિતિ ॥ ૯ ॥ તથા-સત્કારાશંસાપ્ર-
યોગઃ-સત્કારઃ=વસ્ત્રાદિપ્રદાનપૂર્વકં સમ્માનઃ, તદ્વિષય આશંસાપ્રયોગઃ । યથા-
વસ્ત્રાદિપ્રદાનપૂર્વકં જના માં સમ્માનયેયુરિતિ ॥ સૂ ૬૫ ॥

इहलोके आशसाप्रयोगपूर्वकमपि केचिद्धर्ममाचरन्तीति धर्मं दशविधत्वेनाह—

મૂલ્ક-દસવિધે ધર્મસે ષણત્તે, તં જહા-ગામધર્મસે ૧ નગર-
ધર્મસે ૨ રત્નધર્મસે ૩ પાસંડધર્મસે ૪ કુલધર્મસે ૫ ગણધર્મસે ૬ સંઘધર્મસે
૭ સુયધર્મસે ૮ ચરિત્તધર્મસે ૯ અત્થિકાયધર્મસે ૧૦ ॥ સૂ ૬૬ ॥

પ્રયોગ હૈ, इच्छा करता है, वह भोगाशंसाप्रयोग हैं, जैसे मनोज्ञ
गन्ध, रस, स्पर्श सुझे प्राप्त होवे, लाभशंसा प्रयोग-लाभ नाम प्राप्ति
है इस प्राप्ति विषयक जो आशंसा प्रयोग है, वह लाभशंसा प्रयोग
है, जैसे कीर्तिका या श्रुत आदिकोंका लाभ सुझे हो, पूजाशंसा प्रयोग
सकल जनों द्वारा अभिवंदनीयताका नाम पूजा है, इस पूजा विषयक
जो आशंसा प्रयोग है, वह पूजाशंसा प्रयोग है, जैसे कि मैं सकलजनों
द्वारा अभिवन्द्य होऊँ तथा-सत्काराशंसा प्रयोग-वस्त्रादि प्रदानपूर्वक
सन्मानका नाम सत्कार है, इस सत्कार विषयक जो आशंसाप्रयोग
है, वह सत्काराशंसा प्रयोग है, जैसे कि वस्त्रादि प्रदानपूर्वक मनुष्य
मेरा सन्मान करे ॥ सूत्र ६५ ॥

“મને મનોજ્ઞ ગન્ધ, રસ અને સ્પર્શ લોગવવા મળે, આ પ્રકારની ઈચ્છાનું
નામ લોભાશંસાપ્રયોગ છે.

લાભાશંસાપ્રયોગ-લાભ એટલે પ્રાપ્તિ. પ્રાપ્તિવિષયક આશંસા કરવી તેનું
નામ લાભાશંસાપ્રયોગ છે જેમ કે “મને કીર્તિ મળે, મને શ્રુતાદિનો લાભ
મળે,” આ પ્રકારની અભિલાષા સેવવી તેનું નામ લાભાશંસાપ્રયોગ છે

પૂજાશંસાપ્રયોગ-સમસ્ત લોકો દ્વારા અભિવંદનીયતાનું નામ પૂજા છે.
આ પૂજાવિષયક જે આશંસાપ્રયોગ છે તેનું નામ પૂજાશંસાપ્રયોગ છે. જેમ
કે “બધાં લોકો મને વન્દે,” આ પ્રકારની ઈચ્છા સેવવી તેનું નામ પૂજાશંસાપ્રયોગ છે

સત્કારાશંસાપ્રયોગ-વસ્ત્રાદિ પ્રદાનપૂર્વક સમ્માન કરવું તેનું નામ સત્કાર
છે. “વસ્ત્રાદિ પ્રદાનપૂર્વક લોકો મારું સન્માન કરે.” આ પ્રકારની અભિલાષા
સેવવી તેનું નામ સત્કારાશંસાપ્રયોગ છે. ॥ સૂત્ર ૬૫ ॥

છાયા—દશવિધો ધર્મઃ પ્રજ્ઞતઃ, તદ્વયા-ગ્રામધર્મઃ ૧ નગરધર્મઃ ૨ રાષ્ટ્રધર્મઃ ૩ પાવણ્ડધર્મઃ ૪ કુલધર્મઃ ૫ ગણધર્મઃ ૬ સંઘધર્મઃ ૭ શ્રુતધર્મઃ ૮ ચારિત્રધર્મઃ ૯ અસ્તિકાયધર્મઃ ૧૦ ॥ મૂ. ૬૬ ॥

ટીકા—‘દસવિદે ધર્મે’ इत्यादि—

ધર્મઃ=સમાચારઃ વ્યવસ્થેતિ યાવત્, સ દશવિધઃ પ્રજ્ઞતઃ, તદ્વયા-ગ્રામધર્મ इत्यादि । તત્ર-ગ્રામધર્મઃ=ગ્રામાઃ=જનનિવાસભૂતાનિ સ્થાનાનિ, તેવાં તેષુ વા ધર્મઃ=સામાચરણં સઃ । અયં ગ્રામભેદાત્ પ્રાયો મિથ્યતે એવ ॥ ૧ ॥ નગરાણિ=પુરાણિ તેવાં તેષુ વા ધર્મઃ=સમાચરણમ્ । અયં ચાપિ પ્રતિનગરં મિથ્યતે એવ ॥ ૨ ॥

इस लोकमें आशंसाप्रयोगपूर्वक भी कितनेकजन धर्मका आचरण करते हैं—अतः अब सूत्रकार दशविध रूपसे धर्मका कथन करते हैं—

“दसविदे धर्मे पणत्ते” इत्यादि सूत्र ६६ ॥

ટીકાર્થ—ધર્મ દસ પ્રકારકા કહા ગયા હૈં—જૈસે—ગ્રામ ધર્મ ૧, નગર ધર્મ ૨, રાષ્ટ્ર ધર્મ ૩, પાવણ્ડ ધર્મ ૪, કુલધર્મ ૫, ગણધર્મ ૬, સંઘધર્મ ૭, શ્રુતધર્મ ૮ ચારિત્ર ધર્મ ૯ ઓર અસ્તિકાય ધર્મ ૧૦ યહાં ધર્મ શબ્દકા અર્થ વ્યવસ્થા હૈ, વહ ૧૦ પ્રકારકા જો કહા ગયાહૈ, સો ડસકા તાત્પર્ય યેસા હૈ, જનતાકે નિવાસભૂત જો સ્થાન હૈ, ડનકા નામ ગ્રામ હૈ, ઇન ગ્રામોમૈં જો સમાચરણ રૂપ ધર્મ હૈ—વ્યવસ્થા હૈ, વહ ગ્રામધર્મ હૈ, યહ ધર્મ ગ્રામ ભેદસે પ્રાયઃ વિશિષ્ટ હોના હો હૈ, નગર નામ પુરકા હૈ, ઇન પુરોંકે યા પુરોંમૈં જો સમાચરણ હૈ વ્યવસ્થા હૈં વહ નગરધર્મ હૈં,

આ લોકમાં આશંસાપ્રયોગ પૂર્વક પણ કેટલાક લોકો ધર્મનું આચરણ કરે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દસ પ્રકારના ધર્મનું કથન કરે છે—

“दसविदे धर्मे पणत्ते” इत्यादि—(सू. ६६)

ટીકાર્થ—ધર્મ દસ પ્રકારના કહ્યા છે—(૧) ગ્રામધર્મ, (૨) નગરધર્મ, (૩) રાષ્ટ્રધર્મ, (૪) પાવંડધર્મ, (૫) કુળધર્મ, (૬) ગણધર્મ, (૭) સંઘધર્મ, (૮) શ્રુત-ધર્મ, (૯) ચારિત્રધર્મ અને (૧૦) અસ્તિકાયધર્મ.

અહીં ધર્મ શબ્દનો અર્થ વ્યવસ્થા થાય છે તેના ગ્રામધર્મ આદિ જે દસ પ્રકારો બતાવવામાં આવ્યા છે, તેનો આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે—

ગ્રામધર્મ—લોકોના નિવાસસ્થાનરૂપ ધર્મ—વ્યવસ્થા—છે, તેનું નામ ગ્રામ-ધર્મ છે પ્રત્યેક ગામનો વિશિષ્ટ પ્રકારનો ગ્રામધર્મ હોય છે.

નગરધર્મ—પુર અથવા શહેરને નગર કહે છે. આ નગરોમાં અથવા આ નગરજનોનું જે સમાચરણ છે—જે વ્યવસ્થા છે, તેનું નામ નગરધર્મ છે. સામાન્ય રીતે પ્રત્યેક નગરનો ધર્મ અથવા વ્યવસ્થા અલગ અલગ પ્રકારની હોય છે,

રાષ્ટ્રધર્મઃ=રાષ્ટ્ર=દેશઃ, તસ્ય ધર્મઃ=આચારઃ । અયમપિ પ્રતિદેશં ભિવતે ॥ ૩ ॥
 પાષણ્ડધર્મઃ-પાષણ્ડાઃ=શ્રમણાઃ, તેવાં ધર્મઃ ॥ ૪ ॥ કુલધર્મઃ-કુલાનિ=ઉગ્રાદિ-
 કુલાનિ, તેવાં ધર્મઃ । અથવા-કુલાનિ=સાધુનાં ગચ્છરૂપાણિ, તેવાં ધર્મઃ=સામા-
 ચારી ॥ ૫ ॥ ગણધર્મઃ-ગણઃ=મલ્લાદિગણઃ, તસ્ય ધર્મઃ=સમાચારઃ । અથવા-
 સાધુનાં ગચ્છસમુદાયો ગણઃ, તસ્ય ધર્મઃ=સામાચારી ॥ ૬ ॥ સંઘધર્મઃ-સંઘઃ=
 સમાનશીલાનાં જનાનાં સમુદાયો ગોઠીતિ યાવત્ તસ્ય ધર્મો વ્યવસ્થા । અથવા-
 સાધુનાં ગણસમુદાયઃ સંઘઃ, તસ્ય ધર્મઃ=સામાચારી । યદ્વાઃ-ચતુર્ણાં સાધુસાધ્વી
 શ્રાવકશ્રાવિકારૂપાણાં સંઘઃ, તસ્ય ધર્મઃ ॥ ૭ ॥ શ્રુતધર્મઃ-શ્રુતમ્=આચારાદિ-

યહ નગર ધર્મ મ્હી પ્રાયઃ હરેક નગરમેં અલગ ર હોતા હૈ, :રાષ્ટ્રધર્મ-
 રાષ્ટ્ર નામ દેશકા હૈ-હસ રાષ્ટ્રકા જો ધર્મ આચાર હૈ વહ રાષ્ટ્રધર્મ
 યહ રાષ્ટ્રધર્મ મ્હી પ્રાયઃ પ્રત્યેક રાષ્ટ્રકી અપેક્ષા ભિન્ન ર હોતા હૈ,
 પાષણ્ડ નામ શ્રમણોંકા હૈ, હનકા જો ધર્મ હૈ, વહ પાષણ્ડ ધર્મ હૈ,
 ઉગ્રાદિ કુલોંકા નામ કુલ હૈ હન કુલોંકા જો ધર્મ હૈ વહ કુલધર્મ હૈ,
 અથવા-સાધુજનોંકે જો ગચ્છ હૈ વે કુલ હૈ, હન કુલોંકી જો સામા-
 ચારી હૈ વહ કુલધર્મ હૈ । ગણધર્મ-મલ્લ આદિકે ગણકા જો ધર્મ હૈ
 અથવા સાધુઓંકે ગચ્છકા સમુદાયકો ગણ કહતે હૈ-उनका जो धर्म
 सामाचारी उसको गण धर्म कहते हैं । संघधर्म समानशीलवाले जनोंका
 जो समूह है, वह संघ है इस संघकी जो व्यवस्था है, वह संघधर्म

રાષ્ટ્રધર્મ-દેશને રાષ્ટ્ર કહે છે. આ રાષ્ટ્રનો જે ધર્મ (આચાર) હોય છે તેનું નામ રાષ્ટ્રધર્મ પણ પ્રત્યેક રાષ્ટ્રની અપેક્ષાએ વિચારવામાં આવે તો અલગ અલગ હોય છે.

પાષંડધર્મ-શ્રમણોને પાષંડ કહે છે. તે શ્રમણોનો જે ધર્મ છે તેને પાષંડધર્મ કહે છે.

કુળધર્મ-ઉગ્રાદિ જે કુળો હોય છે તેમના ધર્મને કુળધર્મ કહે છે. અથવા -સાધુઓના જે ગચ્છ હોય છે તેમને કુળ કહે છે. તે કુળોની જે સામાચારી છે તેનું નામ કુળધર્મ છે.

ગણધર્મ-મલ્લ આદિ જાતિઓના ગણનો જે ધર્મ છે તેનું નામ ગણધર્મ છે, અથવા સાધુઓના ગચ્છના સમુદાયને ગણ કહે છે. તે સમુદાયનો જે ધર્મ અથવા સામાચારી છે તેને ગણધર્મ કહે છે

સંઘધર્મ-સમાન શીલવાળા જનોના સમૂહને સંઘ કહે છે તે સંઘની જે વ્યવસ્થા છે તેને સંઘધર્મ કહે છે. અથવા-સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા, આ આરેનો સંઘ બને છે તે સંઘનો જે ધર્મ છે તેને સંઘધર્મ કહે છે.

કમ્, તદેવ દુર્ગતિપ્રપત્તઃજન્તુધારણાદ ધર્મઃ, આચારાજ્ઞાદય આગમા इत्यर्थः । ૮॥
 ચારિત્રધર્મઃ—ચારિત્ર=સંસારકારણકર્મચયરિત્તકારકં જિનોક્તમનુષ્ઠાનં, તદેવ
 ધર્મઃ, ચારિત્રાનુષ્ઠાનમિત્યર્થઃ ॥ ૯॥ તથા—અસ્તિકાયધર્મઃ—અસ્તયઃ=પ્રદેશઃ, તેષાં
 કાયઃ=સમુદાયઃ, સ એવ ધર્મઃ અયં ચ ધર્માસ્તિકાયાદીનાં વિજ્ઞેય इति ॥ સૂ. ૬૬ ॥

અયં ગ્રામધર્માદિદશવિધો ધર્મઃ સ્થવિરવિનિર્મિત इति સ્થવિરાન્
 દશવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—દસથેરા પળ્લન્તા, તંજહા—ગામથેરા ૧ નગરથેરા ૨
 રઘથેરા ૩ પસત્થારથેરા ૪ કુલથેરા ૫ ગળથેરા ૬ સંઘથેરા ૭
 જાહથેરા ૮ સુઘથેરા ૯ પરિયાયથેરા ૧૦ ॥ સૂ. ૬૭ ॥

હૈ, અથવા સાધુ—સાધ્વી, આચક, એવં આધિકા હન ચાર ધર્મ વહ સંઘ
 ધર્મ હૈ શ્રુત ધર્મ—આચાર આદિકા નામ શ્રુત હૈ યહ શ્રુતરૂપ ધર્મ હી
 દુર્ગતિમેં પડતે છુપ જીવોંકા ઉદ્ધારક હોતા હૈ—યહ શ્રુતધર્મ આચારાજ્ઞ
 આદિ આગમ રૂપ હોતા હૈ, ચારિત્ર ધર્મ—સંસારકા કારણભૂત જો
 કર્મ હૈ, ઉસ કર્મકા નાશ કરનેવાલા જો જિનપ્રણીત અનુષ્ઠાન હૈ,
 વહી ચારિત્ર ધર્મ હૈ, યહ ચારિત્ર ધર્મ ચારિત્રાનુષ્ઠાન રૂપ પડના હૈ, અસ્તિ-
 કાય ધર્મ—અસ્તિ નામ પ્રદેશોંકા હૈ, એવં કાય નામ સમુદાયકા હૈ, સો
 પ્રદેશોંકા જો સમુદાય હૈં વહ સમુદાય હી ધર્મ હૈ યહ અસ્તિકાય રૂપ ધર્મ
 ધર્માસ્તિકાયાદિકોંકા હોતા હૈ ॥ સૂ. ૬૬ ॥

યહ ગ્રામધર્મ આદિ રૂપ દશ પ્રકારકો ધર્મ સ્થવિરોં દ્વારા વિનિ-
 મિત હુઆ હૈ । અતઃ અથ સૂત્રકાર દશ પ્રકારકે સ્થવિરોંકા કથન

શ્રુતધર્મ—આચાર આદિનું નામ શ્રુત છે. આ શ્રુતરૂપ ધર્મ જ દુર્ગતિમાં
 પડતાં જીવોના ઉદ્ધારક ગણાય છે. તે શ્રુતધર્મ આચારાંગ આદિ આગમરૂપ હોય છે.

ચારિત્રધર્મ—સંસારના કારણભૂત જે કર્મોનો નાશ કરનાર જે જિનપ્રણીત
 અનુષ્ઠાન છે, તેનું નામ ચારિત્રધર્મ છે. આ ચારિત્રધર્મ ચારિત્રાનુષ્ઠાનરૂપ સમજવો.

અસ્તિકાયધર્મ—પ્રદેશોને અસ્તિ કહે છે. અને સમુદાયને કાય કહે છે.
 પ્રદેશોના સમૂહને અસ્તિકાય કહે છે. તે પ્રદેશોનો સમુદાય જ ધર્મરૂપ છે. ધર્મા-
 સ્તિકાય આદિકોના ધર્મનું નામ જ અસ્તિકાયધર્મ છે. ॥ સૂ. ૬૬ ॥

ગ્રામધર્મ આદિ દસ પ્રકારના ધર્મોના નિર્માતા સ્થવિરોને જ ગણવામાં
 આવે છે, તેથી હવે સૂત્રકાર તે સ્થવિરોનું કથન કરે છે—

છાયા-દશસ્થવિરાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-ગ્રામસ્થવિરાઃ ૧ નગરસ્થવિરાઃ ૨
રાષ્ટ્રસ્થવિરાઃ ૩ પ્રજ્ઞાસ્તૃસ્થવિરાઃ ૪ કુલસ્થવિરાઃ ૫ ગણસ્થવિરાઃ ૬ સંઘસ્થવિરાઃ
૭ જાતિસ્થવિરાઃ ૮ શ્રુતસ્થવિરાઃ ૯ પર્યાયસ્થવિરાઃ ૧૦ ॥ સુ ૬૭ ॥

ટીકા-‘દસથેરા’ ઇત્યાદિ-સ્થાપયન્તિ=દુર્વ્યવસ્થિતં જનં સન્માર્ગે સ્થિરી-
કુર્વન્તિ યે તે સ્થવિરાઃ । તે વ્યવસ્થાકારિણો બુદ્ધિમન્ત આદેયવચના પ્રભાવ-
શક્તિભ્ર ભવન્તિ । તે તુ દશવિધાઃ પ્રજ્ઞતાઃ । તથા-‘ગ્રામસ્થવિરા’ ઇત્યાદિ ।
તત્ર-ગ્રામસ્થવિરાઃ=ગ્રામવ્યવસ્થાકારિણઃ ॥૧॥ નગરસ્થવિરાઃ=નગરવ્યવસ્થા-
કારિણઃ ॥૨॥ રાષ્ટ્રસ્થવિરાઃ=દેશવ્યવસ્થાકારિણઃ ॥૩॥ પ્રજ્ઞાસ્તૃસ્થવિરાઃ-
પ્રજ્ઞાસ્તારઃ=ધર્મોપદેશકાઃ, તે ચ તે સ્થવિરાઃ=ધર્મે સ્થિરીકારકાઃ ॥૪॥ કુલ-
સ્થવિરાઃ ॥૫॥ ગણસ્થવિરાઃ ॥૬॥ સંઘસ્થવિરા ॥૭॥ ઇતિ ત્રીણિ સ્થાનાનિ

ચાર ભેદસે કરતે હૈ—“ દસ થેરા પળજ્ઞતા ” ઇત્યાદિ ॥ સૂત્ર ૬૭ ॥

ટીકાર્થ-જો દુર્વ્યવસ્થિત જનકો સન્માર્ગમે સ્થાપિત કરતે હૈ, સ્થિર કરતે
હૈ થે સ્થવિર કહલાતે હૈ । યે સ્થવિર વ્યવસ્થા કરનેકે સ્વભાવવાળે હોતે
એવં બુદ્ધિશાલી હોતે હૈ । જનકી વાતકો હરકોઈ માનતા હૈ એસે પ્રભાવ
સંપન્ન હોતે હૈ । યે ગ્રામસ્થવિર ૧ નગરસ્થવિર ૨ રાષ્ટ્રસ્થવિર ૩,
પ્રજ્ઞાસ્તૃ સ્થવિર ૪ કુલ સ્થવિર ૫ ગણસ્થવિર ૬, સંઘ સ્થવિર ૭, જાતિ
સ્થવિર ૮, શ્રુતસ્થવિર ૯ એવં પર્યાયસ્થવિરકે ભેદસે ૧૦ પ્રકારકેહોતે હૈ ।

જનમે જો ગ્રામકી વ્યવસ્થા કરનેવાળે હોતે હૈ થે ગ્રામસ્થવિર હૈ ૧
નગરકી વ્યવસ્થા કરનેવાળે નગરસ્થવિર ૨, દેશકી વ્યવસ્થા કરને-
વાળે રાષ્ટ્રસ્થવિર ૩, ધર્મકા ઉપદેશ દેનેવાળે ઓર ધર્મમે સ્થિર કરને-
વાળે પ્રજ્ઞાસ્તૃસ્થવિર હોતે હૈ । કુલસ્થવિર, ગણ સ્થવિર, એવં સંઘસ્થવિર

“ દસ થેરા પળજ્ઞતા ” ઇત્યાદિ—(સુ ૬૭)

ટીકાર્થ-જેઓ દુર્વ્યવસ્થિત જનોને સન્માર્ગમાં સ્થાપિત કરે છે-અથવા કુમાર્ગે
જતા જનોને જેઓ સન્માર્ગે સ્થિર કરે છે, તેમને સ્થવિર કહે છે તે સ્થવિરો
વ્યવસ્થા કરવાના સ્વભાવવાળા અને બુદ્ધિશાળી હોય છે, તથા તેમની વાતને
દરેક માણસ માને છે. તેઓ પ્રભાવસંપન્ન હોય છે તે સ્થવિરોના નીચે પ્રમાણે દસ
પ્રકાર કહ્યા છે-(૧) ગ્રામસ્થવિર, (૨) નગરસ્થવિર, (૩) રાષ્ટ્રસ્થવિર, (૪) પ્રજ્ઞા-
સ્તૃસ્થવિર, (૫) કુલસ્થવિર, (૬) ગણસ્થવિર, (૭) સંઘસ્થવિર, (૮) જાતિસ્થવિર,
(૯) શ્રુતસ્થવિર અને (૧૦) પર્યાયસ્થવિર—

ગ્રામસ્થવિર-ગ્રામની વ્યવસ્થા કરનાર વ્યક્તિને ગ્રામસ્થવિર કહે છે.
નગરસ્થવિર-નગરની વ્યવસ્થા કરનારને નગરસ્થવિર કહે છે. દેશની વ્યવસ્થા
કરનારને રાષ્ટ્રસ્થવિર કહે છે, ધર્મને ઉપદેશ દેનારને અને લોકોને ધર્મમાં

વ્યાહ્યાતમાયાણિ । જાતિસ્થવિરાઃ-જાત્યા=જન્મના સ્થવિરાઃ-પષ્ટિવર્ષપ્રમાણ-
જન્મપર્યાયાઃ ॥૮॥ શ્રુતસ્થવિરાઃ=સ્થાનાજ્ઞાધિક્ષારિણઃ ॥૯॥ તથા-પર્યાયસ્થવિરાઃ=
વિશ્રુતિવર્ષપ્રમાણપ્રવ્રજ્યાપર્યાયધારકા इति ॥૧૦॥ સૂ૦ ૬૭॥

સ્થવિરાશ્ચ સ્વાશ્રિતાન્ પુત્રવત્પાલયન્તીતિપુત્રભેદાન્ પ્રાહ-

મૂલ્ય-દસ પુત્તા પળગત્તા, તંજહા-અત્તણ ૧ ક્ષેત્રજ ૨
દિક્ષણ ૩ વિનયિત ૪ ઓરસ ૫ મૌહર ૬ શૌંડીર ૭ સંવદ્ધિત ૮
૮ ઉવયાદ્યણ ૯ ધર્મન્તેવાસી ૧૦ ॥સૂ૦ ૬૮॥

છાયા-દશ પુત્રાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તથા-આત્મજઃ ૧ ક્ષેત્રજઃ ૨ દત્તકઃ ૩
વિનયિતઃ ૪ ઓરસઃ ૫ મૌહરઃ ૬ શૌંડીરઃ ૭ સંવદ્ધિતઃ ૮ ઔપચાચિતકઃ ૯
ધર્મન્તેવાસી ૧૦ ॥સૂ૦ ૬૮॥

इन तीन स्थानोंकी व्याख्या पहिले की जा चुकी है । जो ६० वर्षकी
जन्म पर्यायवाला हो चुका हो वह जाति (वय) स्थविर है, आचार आदि
अङ्गोंका जो धारक होता है वह श्रुतस्थविर है और जिसकी दीक्षा पर्याय
२० वर्षकी हो चुकी है ऐसा वह साधु पर्यायस्थविर है ॥सू. ६७॥

સ્થવિર જન અપને આશ્રિતોંકા પાલન પુત્રકી તરહ કરતે હૈં અતઃ
અથ સૂત્રકાર પુત્ર કે ભેદોંકા કથન કરતે હૈં--

“ દસ પુત્તા પળગત્તા ” इत्यादि ॥ सूत्र ६८ ॥

टीकार्थ-पुत्र दश प्रकारके कहे गये हैं-जो सदाचारके पालनसे अपने
पिताकी मर्यादाको पविष्ट रखता है वह पुत्र है ये पुत्र आत्मज १ क्षेत्रज २
दत्तक ३ विनयित ४ औरस ५ मौह्र ६, शौण्डीर ७, संवर्द्धित ८
औपचाचितक ९ एवं धर्मान्तेवासी १० इस प्रकारसे १० प्रकारके कहे

સ્થિર કરનારને પ્રશસ્તૃસ્થવિર કહે છે. કુલસ્થવિર, ગણસ્થવિર અને સંઘસ્થ-
વિરની વ્યાખ્યા આગળ કહ્યા પ્રમાણે સમજવી ૬૦ વર્ષની જન્મપર્યાય જેણે
વ્યતીત કરી નાખી છે એવી વ્યક્તિને જાતિસ્થવિર કહે છે. આચાર આદિ
અંગોનો જે ધારક હોય છે તેને શ્રુતસ્થવિર કહે છે. જેણે ૨૦ વર્ષની દીક્ષા
પર્યાય પાળી લીધી હોય એવી વ્યક્તિને પર્યાયસ્થવિર કહે છે. ॥ સૂત્ર ૬૭ ॥

સ્થવિરો પેતાના આશ્રિતોનું પુત્રની જેમ પાલન કરે છે, તેથી હવે
સૂત્રકાર પુત્રના ભેદોનું કથન કરે છે,--“દસપુત્તા પળગતા” ઇત્યાદિ--(સૂ. ૬૮)

टीकार्थ-पुत्र दस प्रकारका कहा है--(१) आत्मज, (२) क्षेत्रज, (३) दत्तक,
(४) विनयित, (५) औरस, (६) मौह्र, (७) शौंडीर, (८) संवर्द्धित, (९) औप-
चाचितक અને (१०) धर्मान्तेवासी.

ટીકા-‘દસપુત્રા’ इत्यादि-पुनाति=पवित्रयति सदाचारपालनेन पितृमर्यादा-
मितिपुत्र’, तद्वहुत्वे पुत्राः, ते दशविधाः प्रज्ञप्ताः, तथा-‘अत्तए’ इत्यादि । तत्र-
आत्मजः-आत्मनः=पितृशरीराज्जातः । यथा-ऋषभस्य भरत इति ॥१॥ क्षेत्रजः-
क्षेत्रं=दारा, ततो जातः । यथा-लोकरूढ्या पाण्डोर्मर्यायां कुन्त्यां धर्मादि-
भिर्जाता युधिष्ठिरादय इति ॥२॥ दत्तकः-दत्त एव दत्तकः-केनचित् कस्मैचित्
स्वपुत्रः पुत्रत्वेन वितीर्णः । यथा बाहुबलिनोऽनिलवेगः । अयं च पुत्रतुल्यत्वात्पुत्रो-
बोध्य इति । एवमग्रेऽपि पुत्रता पुत्रतुल्यत्वेनैव बोध्येति ॥३॥ तथा-विनयितः-
विनयं=शिक्षां प्रापितः-शिष्य इत्यर्थः ॥४॥ औरसः-उरसि=हृदये स्नेहाविर्भावेन

गये हैं । इनमें जो पिताके शरीरसे उत्पन्न होता है, वह आत्मज है
जैसे ऋषभका भरत १, स्त्रीसे जो उत्पन्न होता है वह क्षेत्रज है जैसे-
लोकरूढिसे पाण्डुकी पत्नी कुन्तीमें धर्मादिकों द्वारा युधिष्ठिर आदि
उत्पन्न हुए २, जो अपना पुत्र दूसरेके लिये पुत्र रूपसे दे दिया जाता
है वह दत्तक पुत्र है ३, जैसे-बाहुबलिका अनिलवेग इसे पुत्रतुल्य
होनेसे पुत्र कहा गया है ।

इसी प्रकारसे आगे कहे जानेवाले पुत्रोंमें भी पुत्रता पुत्रतुल्यतासे
ही जानना चाहिये शिष्य विनयित पुत्र है ४ जिसमें पुत्रके जैसा स्नेह
प्रकट होता है-हृदयमें जो स्नेहकी प्रकटतासे पुत्रके जैसा बना रहता
है, वह औरस पुत्र है ५, मीठी वाणी बोलनेके कारण अपनेको पुत्र

જે સદાચારના પાલન વડે પોતાના પિતાની મર્યાદાને પવિત્ર રાખે છે,
તેને પુત્ર કહેવાય છે. તેના આત્મજ આદિ દસ પ્રકારના હવે સ્પષ્ટીકરણ
કરવામાં આવે છે—

આત્મજ-પિતાના શરીરથી (વીર્યથી) જે પુત્ર ઉત્પન્ન થાય છે તેને આત્મજ
કહે છે. જેમ કે ઋષભનો પુત્ર ભરત.

ક્ષેત્રજ-જે પુત્ર સ્ત્રીથી ઉત્પન્ન થાય છે (પતિના સંસર્ગ વિના ઉત્પન્ન
થાય છે) તેને ક્ષેત્રજ કહે છે. જેમ કે પાંડુ રાજાની પત્ની કુંતીએ ધર્માદિકે
દ્વારા યુધિષ્ઠિર આદિનો જન્મ આપ્યો હતો.

દત્તકપુત્ર-કોઈ અન્ય વ્યક્તિના પુત્રને પોતાના પુત્ર રૂપે સ્વીકારવામાં
આવે, તો તે પુત્રને દત્તક પુત્ર કહે છે જેમકે-બાહુબલિનો અનિલવેગ. અનિલવેગને
બાહુબલિ પુત્રસમાન ગણાતો હતો, તેથી તેને તેનો દત્તકપુત્ર ગણ્યો છે. એજ
પ્રમાણે બાકીના પુત્રપ્રકારોમાં પણ પુત્રતુલ્યતાને કારણે જ પુત્રતા સમજવી. શિષ્યને
વિનયિતપુત્ર કહે છે. જેના પ્રત્યે દિલમાં પુત્રના જેવો પ્રેમ ઉભરાય છે—

પુત્રત્વેન વર્તેતે યઃ સ તથા । અથવા-ઉપરસઃ-ઉપગતઃ=ઉત્પન્નઃ રસઃ=પુત્રસ્નેહ
 લક્ષણો યસ્મિન્ સ તથા । યદ્વા-ઉપગતો રસઃ=પિતૃલક્ષણો યસ્ય સ તથેતિ ॥૫॥
 મૌલરઃ-મુલર-તયા=મધુરભાષિત્વેન આત્માનં પુત્રતયા પ્રાપયતિ યઃ સ તથા ॥૩॥
 શૌણ્ડીર-યેન કેનચિત્ શરેણ કથિત શૌણ્ડીરઃ=શૂરો યુદ્ધે નિગૃહીતઃ પુત્રત્વેન
 વિજયકારિણં શૂરં પ્રતિપન્નઃ સઃ ॥ ૭ ॥ અથવા-‘વિણ્ણ ૪ ઊરસે ૫ મોહરે ૬
 સૌંડીરે ૭’ इत्येतानि चत्वारि पदानि गुणभेदात् पुत्रविषयाण्येव बोध्यानि ।
 तत्र-‘विण्ण’ इत्यस्य ‘विज्ञकः’ इतिच्छाया । विज्ञकः=विद्वान् । यथा-अभयकुमार
 इति ॥४॥ औरसः=बलवान्, यथा-बाहुबलीति ॥५॥ मौलरः=मधुरभाषी ।

રૂપસે પ્રકટ કરતા હૈ વહ મૌલર પુત્ર હૈ ૬, કિસી શૂરવીરકે દ્વારા
 યુદ્ધમેં પરાસ્ત કિયે જાને પર જો પરાસ્ત હુઆ શૂરવીર उस विजयी
 शूरके प्रति अपनेको पुत्र रूपसे प्रकट करता है वह शौण्डीर पुत्र है ७ ।

ये चार पद गुण भेदसे पुत्र विषयकही जाननो चाहिये इनमें
 “विण्ण” की संस्कृतछाया विज्ञक ऐसी भी होती है-इसका अर्थ
 जो विद्वान् होता है, वह विज्ञक है । अभयकुमारकी तरह जो
 पुत्र विद्वान् होता है, वह इस विद्वत्ता गुणके कारण विज्ञक पुत्र कहा
 गया है, बाहुबलीकी तरह जो पुत्र होता है, वह बलवत्ता गुणके कारण
 औरस पुत्र कहा गया है, जो मधुर भाषी होता है, वह रामचन्द्रकी
 तरह मधुर भाषण गुण विशिष्ट होनेके कारण मौलर पुत्र कहा गया

જે પ્રેમની પ્રખરતાને કારણે હૃદયમાં પુત્રના જેવું સ્થાન જમાવે છે, તેને
 औरसपुत्र કહે છે. મીઠી વાણી બોલવાને કારણે જે પોતાને પુત્ર રૂપે પ્રકટ
 કરે છે, તેને मौलरपुत्र કહે છે. કોઈ શૂરવીર પુરુષ દ્વારા યુદ્ધમાં પરાજિત
 થયેલો પુરુષ જે પોતાની જાતને તે શૂરવીરના પુત્ર રૂપે પ્રકટ કરતો હોય તો
 તેને शौंडीरपुत्र કહે છે.

અથવા-“વિણ્ણ ૪, ઊરસે ૫, મોહરે ૩, સૌંડીરે ૭” ચાર પદોને શુશ્રુલેદની
 અપેક્ષાએ પુત્રવિષયક જ સમજવા ભેદથી “વિણ્ણ” આ પદની સંસ્કૃત
 છાયા “વિજ્ઞક” થાય છે. તે સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ તેનો અર્થ ‘વિદ્વાન’
 થાય છે. અભયકુમારની જેમ જે પુત્ર વિદ્વાન હોય છે તેને વિજ્ઞકપુત્ર કહેવામાં
 આવે છે. બાહુબલીની જેમ જે પુત્ર બળવાન હોય છે તેને તેની બલવત્તાને
 કારણે औरसपुत्र કહેવામાં આવે છે. જે પુત્ર મધુરભાષી હોય છે તેને મૌલર
 पुत्र કહેવામાં આવે છે. જેમ કે રામચન્દ્રજીને તેમનાં મધુરભાષા યુક્તતાના શુશ્રુને

યથા-રામચન્દ્ર ઇતિ ॥૬॥ શૌન્ડીરઃ=શૂરો ગર્વિતો વા । યથા-વાસુદેવ ઇતિ ॥૭॥
તથા-સંવર્દિતઃ=આહારદાનાદિના સંવર્દિતઃ । યથા-અનાથપુત્રક ઇતિ ॥૮॥ તથા-
ઔપયાચિતકઃ-ઉપયાચિતેન=દેવતારાધનન લબ્ધઃ । યથા-સુલસાયાઃ પદ્મ પુત્રાઃ ।
અથવા-આવપાતિક ઇતિચ્છાયા । અવપાતઃ=સેવા પ્રયોજનમસ્યેતિ સ તથેતિ વિગ્રહઃ ।
સેવક ઇત્યર્થઃ ॥૯॥ ધર્માન્તેવાસી=અન્તે=સમીપે વસ્તું શીલમસ્યેતિ અન્તેવાસી,
ધર્માર્થમન્તેવાસી-ધર્માન્તેવાસી-ધર્મ જિઘૃક્ષુઃ શિષ્ય ઇત્યર્થઃ ॥૧૦॥ સૂ. ૬૮॥

અનન્તરસૂત્રે ધર્માન્તેવાસિત્વમુક્તમ્, તત્ત્વ કેવલિત્વપ્રાપ્ત્યર્થ સ્વીક્રિયતે,
કેવલી ચાનુત્તરજ્ઞાનાદિસમ્પન્નો ભવતીતિ તસ્ય દશાનુત્તરાણિ પ્રાહ-

મૂલમ્-કેવલિસ્સ ણં દસ અણુત્તરા પપ્પણ્ણા, તંજહા-
અણુત્તરે ણાણે ૧ અણુત્તરે દંસણે ૨ અણુત્તરે ચરિત્તે તવે ૪

શૂર અથવા ગર્વસે યુક્ત જો પુત્ર હોતા હૈ, વહ વાસુદેવકે સમાન હસ
ગુણસે યુક્ત હોનેકે કારણ શૌન્ડીર પુત્ર કહા ગયા હૈ, આહાર આદિ
દેકર જિસે વર્દિત કિયા જાતા હૈ-પાલા પોષા જાતા હૈ, વહ અનાથ
પુત્રકી તરહ સંવર્દિત પુત્ર હૈ । દેવતાકી આરાધનાકે નિમિત્તકો લેકર
જો પુત્ર સુલસાકે ૬ પુત્રોની તરહ પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ ઔપયાચિતક પુત્ર
હૈ । અથવા-જબ-“ આવપાતિક ” એસી સંસ્કૃતચ્છાયા “ઉચયોદય”કી
હોતી હૈ, તબ હસ પક્ષમે સેવાહી જિસકા પ્રયોજન હોતા હૈ, એસા જો
સેવક હૈ વહ આવપાતિક પુત્ર હૈ । તથા-ધર્માન્તેવાસી-જો ધર્મ પ્રાપ્તિકે
નિમિત્ત ગુરુકે પાસ રહતા હૈ એસા ધર્મ જિઘૃક્ષુ જો શિષ્ય હૈ વહ
ધર્માન્તેવાસી પુત્ર હૈ ॥ સૂ. ૬૮ ॥

કારણે મૌખરપુત્ર કહી શકાય છે. શૌયં અથવા ગર્વથી યુક્ત પુત્રને શૌન્ડીર-
પુત્ર કહેવામાં આવેલ છે.

સંવર્દિતપુત્ર-આહાર આદિ દર્શને જેનું સંવર્ધન-પાલનપોષણ-કરવામાં
આવે છે તેને સંવર્દિતપુત્ર કહે છે. જેમ કે અનાથપુત્ર.

ઔપયાચિતકપુત્ર-દેવતાની આરાધનાને કારણે જે પુત્રની પ્રાપ્તિ થાય છે
તે પુત્રને ઔપયાચિતકપુત્ર કહે છે. જેમ કે સુલસાના છ પુત્રો. અથવા-“ઉ-
ચાદય” આ પદની સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષા એ તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-
સેવા જ જેનું પ્રયોજન હોય છે એવા સેવકને “આવપાતિકપુત્ર” કહે છે.

ધર્માન્તેવાસીપુત્ર-જે શિષ્ય ધર્મપ્રાપ્તિને નિમિત્તે જ ગુરુની પાસે રહે છે
એવા ધર્મપ્રાપ્તિની જિજ્ઞાસાવાળા શિષ્યને ધર્માન્તેવાસીપુત્ર કહે છે. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

અણુત્તરે વીરિણ ૫ અણુત્તરા ધંતી ૬ અણુત્તરા મુત્તી ૭ અણુ-
ત્તરે અજ્જવે ૮ અણુત્તરે મહવે ૯ અણુત્તરે લાઘવે ૧૦ ॥સૂ૦ ૬૯॥

છાયા-કેવલિનઃ સ્વલુ દશ અણુત્તરાણિ પ્રજ્ઞાપાનિ તથા-અણુત્તરં જ્ઞાનમ્ ૧
અણુત્તરં દર્શનમ્ ૨ અણુત્તરં ચારિત્રમ્ ૩ અણુત્તરં તપઃ ૪ અણુત્તરં વીર્યમ્ ૫ અણુત્તરા
ક્ષાન્તિઃ ૬ અણુત્તરા મુક્તિઃ ૭ અણુત્તરમ્ આર્જવમ્ ૮ અણુત્તરં માર્દવમ્ ૯ અણુત્તરં
લાઘવમ્ ૧૦ ॥સૂ૦ ૬૯॥

ટીકા-‘કેવલિસ્સ ણ’ ઇત્યાદિ-કેવલિનઃ-કેવલ જ્ઞાનિનઃ સ્વલુ દશસંખ્યકાનિ
અણુત્તરાણિ નાસ્તિ ઉત્તરં=પ્રધાનં ચેભ્યસ્તાનિ તથોક્તાનિ-સર્વોત્કૃષ્ટાનિ પ્રજ્ઞાપાનિ ।
તથા-‘અણુત્તરં જ્ઞાનમ્’ ઇત્યાદિ । તત્ર-અણુત્તરં જ્ઞાનમ્-જ્ઞાનાવરણીયક્ષયાત્ ૧
અણુત્તરં દર્શનં દર્શનાવરણીયક્ષયાદ્ દર્શનમોહનીયક્ષયાદ્ ૨ અણુત્તરં ચારિત્રં-

૬૮ વેં સૂત્રકે અન્તર્મે કથિત જો ધર્માન્તેવાસિત્વ હૈ વહ કેવલિકે
પદકો પ્રાપ્ત કરનેકે લિયે સ્વીકાર કિયા જાતા હૈ તથા કેવલિ જો હોતે
હૈ વે અણુત્તર જ્ઞાનાદિસે યુક્ત હોતે હૈ, અતઃ અથ સૂત્રકાર ઉનકે દશ
અણુત્તરોંકા કથન કરતે હૈ—

“ કેવલિસ્સ ણં દસ અણુત્તરા પણ્ણત્તા ” ઇત્યાદિ સૂ૦ ૬૯ ॥

ટીકાર્થ-કેવલીકે ૧૦ અણુત્તર સર્વોત્કૃષ્ટ વસ્તુએ કહી ગઈ હૈ, જૈસે
અણુત્તર જ્ઞાન જ્ઞાનાવરણીય કર્મકે સર્વથા પ્રક્ષયસે ઉન્હેં પ્રાપ્ત હોતા હૈ ૧
અણુત્તર દર્શન દર્શનાવરણીય કર્મકે સર્વથા નાશસે અથવા દર્શન
મોહનીય કર્મકે સર્વથા ક્ષયસે ઉન્હેં પ્રાપ્ત હોતા હૈ । અણુત્તર ચારિત્ર-

આગલા સૂત્રના અન્તે જે ધર્માન્તેવાસિત્વની વ ત કરવામાં આવી છે, તે
ધર્માન્તેવાસિત્વને કેવલિપદની પ્રાપ્તિ કરવાને માટે સ્વીકાર કરવામાં આવે છે.
તથા જેઓ કેવલી હોય છે તેઓ અણુત્તર જ્ઞાનાદિથી યુક્ત હોય છે, તેથી
હવે સૂત્રકાર કેવલીના દસ અણુત્તરોનું નિરૂપણ કરે છે—

“ કેવલિસ્સ ણં દસ અણુત્તરા પણ્ણત્તા ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૬૯)

ટીકાર્થ-અણુત્તર એટલે સર્વોત્કૃષ્ટ વસ્તુ. કેવલીના નીચે પ્રમાણે દસ અણુત્તરો
કહ્યા છે—(૧) અણુત્તરજ્ઞાન-જ્ઞાનાવરણીય કર્મના સર્વથા ક્ષયને લીધે તેમને અણુત્તર
જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે કેવળીના કેવળજ્ઞાન કરતાં ઐશ્વર્ય અન્ય કોઈ પણ જ્ઞાન
હોતું નથી, માટે તેમના જ્ઞાનને અણુત્તર કહ્યું છે. (૨) અણુત્તરદર્શન-દર્શના
વરણીય કર્મના સર્વથા નાશ થવાને લીધે અથવા દર્શન મોહનીય કર્મના સર્વથા ક્ષય
થવાને લીધે તેમને અણુત્તરદર્શનની પ્રાપ્તિ થાય છે. (૩) અણુત્તરચારિત્ર-ચારિત્ર

ચારિત્રમોહનીયક્ષયાત્ ૩ અનુત્તરં તપઃ=શુક્લધ્યાનાદિરૂપમ્, તત્ત્વ ચારિત્ર-
મોહનીયક્ષયાત્ અનન્તવીર્યત્વાત્ત્વ ભવતીતિ બોધ્યમ્ ૪ અનુત્તરં વીર્ય-વીર્યાન્તરાય-
ક્ષયાત્ તથા-ચારિત્રમોહનીયક્ષયાત્ ૫ અનુત્તરા ક્ષાન્તિઃ=ક્ષમા ૬ અનુત્તરા
મુક્તિઃ=નિર્લોભતા ૭ અનુત્તરમ્ આર્જવમ્ ૮ અનુત્તરં માર્દવમ્ ૯ અનુત્તરં લાઘવં
૧૦ ચ ભવતિ । યદ્યપિ તપઃ ક્ષાન્તિમુક્ત્યાર્જવમાર્દવલાઘવાનિ ચારિત્રમોહનીય-
ક્ષયાદુત્પન્નત્વેનચારિત્રભેદા इति ચારિત્રત્વેનૈષામેકત્વમેવ, તથાપ્યત્રૈતાનિ
સામાન્યવિશેષભેદેન કથચ્છિદ્ ભેદાદ્ વિન્નત્વેનોક્તાનીતિ ॥સૂ૦ ૬૧॥

ચારિત્ર મોહનીય કર્મકે સર્વથા નાશસે યહ અનુત્તર ચારિત્ર હોતા હૈ ।
અનુત્તર તપ-યહ શુક્લ ધ્યાનાદિ રૂપ હોતા હૈ, ઓર યહ ચારિત્ર મોહ-
નીય કર્મકે ક્ષયસે હોતા હૈ, એવં અનન્તવીર્યસે । અનુત્તરવીર્ય-યહ
વીર્યાન્તરાય કર્મકે ક્ષયસે તથા ચારિત્ર મોહનીય કર્મકે ક્ષયસે હોતા હૈ,
અનુત્તરા ક્ષાન્તિ-સર્વોત્કૃષ્ટ ક્ષમા, અનુત્તરા મુક્તિ-સર્વોત્કૃષ્ટ નિર્લો-
ભતા, અનુત્તર આર્જવ, અનુત્તર માર્દવ ઓર અનુત્તર લાઘવ યે સર્વ
મી ચારિત્ર મોહનીય કર્મકે ક્ષયસે ઉત્પન્ન હોતે હૈ । અનુત્તરકા તાત્પર્ય
એસા હૈ કિ યે ૧૦ વસ્તુએ અન્ય છદ્મસ્થ જનોની અપેક્ષા ઉનમેં વિશિષ્ટ-
તમ-અસાધારણ હોતી હૈ । યદ્યપિ તપ, ક્ષાન્તિ, મુક્તિ, આર્જવ, માર્દવ,
એવં લાઘવ યે સર્વ ચારિત્ર મોહનીય કર્મકે ક્ષયસે ઉત્પન્ન હોનેકે કારણ
ચારિત્રકે ભેદ હૈ, એવં ચારિત્રકી અપેક્ષા ઉનમેં એકત્વ હી હૈ-નચ મી

મોહનીયનો સર્વથા ક્ષય થવાથી તેઓ અનુત્તરચારિત્ર પ્રાપ્ત કરે છે. (૪) અનુત્તર
તપ-તે શુક્લ-ધ્યાન આદિ રૂપ હોય છે અને તે ચારિત્રમોહનીયના ક્ષયથી
અને અનન્તવીર્યથી પ્રાપ્ત થાય છે (૫) અનુત્તરવીર્ય-વીર્યાન્તરાય કર્મના ક્ષયથી
તથા ચારિત્રમોહનીય કર્મના ક્ષયથી અનુત્તરવીર્ય પ્રાપ્તિ થાય છે (૬) અનુત્તરા
ક્ષાન્તિ-સર્વોત્કૃષ્ટ ક્ષમા, (૭) અનુત્તરા મુક્તિ-સર્વોત્કૃષ્ટ નિર્લોભતા, (૮) અનુત્તર
આર્જવ, (૯) અનુત્તર માર્દવ અને (૧૦) અનુત્તર લાઘવ. અનુત્તર ક્ષાન્તિ
આદિની ઉત્પત્તિ પણ ચારિત્રમોહનીય કર્મના ક્ષયને લીધે થાય છે.

અનુત્તરનો ભાવાર્થ એ છે કે ઉપર્યુક્ત દસ વસ્તુઓ અન્ય છદ્મસ્થો કરતાં
તેમનામાં વિશિષ્ટતમ-અસાધારણ હોય છે એ કે તપ, ક્ષાન્તિ, મુક્તિ, આર્જવ,
માર્દવ અને લાઘવ આ છએની ઉત્પત્તિ ચારિત્રમોહનીય કર્મના ક્ષયને કારણે
જ થતી હોવાથી તેમને ચારિત્રના ભેદ રૂપ જ ગણવા લેઈએ, અને ચારિત્રની
અપેક્ષાએ તેમનામાં એકત્વ જ ગણવું લેઈએ, છતાં પણ અહીં તેમની વચ્ચે

કેવલિનો દશાનુત્તરાણિ પૂર્વસૂત્રે પ્રોક્તાનિ કેવલી તુ મનુષ્યક્ષેત્રેષ્વ ભવતીતિ મનુષ્યક્ષેત્રં મનુષ્યક્ષેત્રસ્થિતાન્ મહાદ્રુમાન્ મહાદ્રુમનિવાસિનો દેવાંશ્વ પ્રત્યેકં દશવિધત્વેન પ્રાહ—

શૂક્લ-સમયસ્થેત્તે ણં દસ કુરાઓ પળણત્તાઓ, તંજહા-પંચ દેવકુરાઓ પંચ ઉત્તરકુરાઓ । તત્થ ણં દસ મહ્દમહાલયા મહાદુમાપળણત્તા, તંજહા-જંબુસુદંસણા ૧ ધાયઙ્ગુસ્થ ૨ મહા-ધાયઙ્ગુસ્થ ૩ પડમસ્થ ૪ મહાપડમસ્થ ૫ પંચકૂડસામલીઓ ૧૦ । તત્થ ણં દસ દેવા મહિઙ્ગિયા જાવ પરિવસંતિ, તંજહા-અણાઢિણ જંબુદીવાહિવર્દ ૧ સુદંસણે ૨ પિયદંસણે ૩ પોંડરીણ ૪ મહાપોંડરીણ ૫ પંચ ગરુલા વેણુદેવા ૧૦ ॥ સૂ. ૭૦ ॥

છાયા-સમયક્ષેત્રે સ્થલ દશ કુરવઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા-પશ્ચ દેવકુરવઃ પશ્ચ ઉત્તરકુરવઃ । તત્ર સ્થલ દશ મહાતિમહાલયા મહાદ્રુમાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તથા-જમ્બૂઃ સુદર્શના ૧ ધાતકીવૃક્ષઃ ૨ મહાધાતકીવૃક્ષઃ ૩ પદ્મવૃક્ષઃ ૪ મહાપદ્મવૃક્ષઃ ૫-પશ્ચ કૂટશાલ્મલયઃ ૧૦ । તત્ર સ્થલ દશ દેવાઃ મહર્દિકા યાવત્ પરિવસન્તિ, તથા-અનાહતો જમ્બૂ દ્વીપાધિપતિઃ ૧ સુદર્શનઃ ૨ પિયદર્શનઃ ૩ પુન્ડરીકઃ ૪ મહાપુન્ડરીકઃ ૫ પશ્ચ ગરુડા વેણુદેવાઃ ૧૦ ॥ સૂ. ૭૦ ॥

ટીકા-‘સમયસ્થેત્તે’ इत्यादि—

સમયક્ષેત્રં=મનુષ્યક્ષેત્રં, તત્ત્વ-જમ્બૂદ્વીપો ૧ ધાતકીસ્થલપૂર્વાદ્વિપાશ્ચાર્દેતિ દ્વીપ-

યહાં ફનમેં સામાન્ય વિશેષકે ભેદકી અપેક્ષા કથંચિત્ ભેદ હોનેકે કારણ ભિન્ન રૂપસે ફનકા નિર્દેશ કિયા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૬૯ ॥

દશ અનુત્તરવાલે યે કેવલી મનુષ્ય ક્ષેત્રમેંહી હોતે હૈં. ફસલિયે અવ સૂત્રકાર મનુષ્ય ક્ષેત્રકા, મનુષ્ય ક્ષેત્રસ્થિત મહાદ્રુમોક્ષા એવં મહાદ્રુમ-નિવાસી દેવોંકા પ્રત્યેકકા દશ પ્રકારસે વર્ણન કરતે હૈં—

“ સમયસ્થેત્તે ણં દસ કુરાઓ ” इत्यादि ॥ સૂ. ૭૦ ॥

સામાન્ય-વિશેષના ભેદની અપેક્ષાએ થોડો ભેદ હોવાને કારણે અહીં તેમને ભિન્નભિન્નરૂપે નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂ. ૬૯ ॥

દસ અનુત્તરોથી યુક્ત કેવલીઓના મનુષ્યલોકમાં જ સદ્ભાવ હોય છે, તેથી હવે સૂત્રકાર મનુષ્યક્ષેત્રના, મનુષ્યક્ષેત્રસ્થિત મહાદ્રુમો (વૃક્ષો)ના અને તે દ્રુમનિવાસી દેવોના દસ દસ ‘પ્રકારો’ કથન કરે છે—

“ સમયસ્થેત્તે ણં દસ કુરાઓ ” इत्यादि—(સૂ. ૭૦)

જ્જુહ્યા, મહાવલા, મહાજસા, મહાસૌખ્યા, પલિઓવમદ્વિહ્યા ” इति संग्राहम् ।
 ત્ર મહાદ્યુતિકાઃ=વિશિષ્ટશરીરાભરણાદિપ્રમાણાસ્વરાઃ, મહાવલાઃ=વિશેષવલ-
 શાલિનઃ, મહાયજસઃ=વિશાલકીર્તિમન્તઃ, મહાસૌખ્યાઃ=વિશિષ્ટસુખસમ્પન્નાઃ,
 પલ્યોપમસ્થિતિકાઃ=પલ્યોપમાયુક્તા इति । ત્ર-અનાદતો નામ જમ્બૂદ્વીપાધિપતિ-
 દેવઃ સુદર્શનાયાં જમ્બ્યાં પરિવસતિ ૧ સુદર્શનો ધાતકીવૃક્ષે ૨ પ્રિયદર્શનો
 મહાધાતકીવૃક્ષે ૩ પુન્ડરીકઃ પદ્મવૃક્ષે ૪ મહાપુન્ડરીકો મહાપદ્મવૃક્ષે ૫ તથા-
 પશ્ચસુ કૂટશાલ્મલિષુ પશ્ચગરુડા વેણુદેવા વસન્તીતિ ॥મુ૦ ૭૦॥

આદિ ઋદ્ધિ સે યુક્ત-ચાવત્ રહતે હૈં. યહાં યાવત્પદ સે—“ મહજ્જુહ
 યા, મહાવલા, મહાજસા, મહાસૌખ્યા, પલિઓવમદ્વિહ્યા ” इन पदों का
 संग्रह हुआ है इन पदोंका अर्थ इस प्रकार से है—महाद्युतिये देव विशिष्ट
 शरीरके आभरण आदिकोंकी प्रभा से देदीप्यमान हैं महावला
 शरीरके विशेषबल से संपन्न हैं महाजसा विशालकीर्ति से
 युक्त हैं महासौख्या एवं विशिष्ट सुख से संपन्न हैं । तथा इन
 सबकी १ पल्योपमकी स्थिति है सुदर्शना नामका जो जम्बूवृक्ष है. इस
 पर अनादत नामका जम्बू द्वीपका अधिपति देव रहता है. धातकीवृक्ष
 पर सुदर्शन नामका देव रहता है. महाधातकी वृक्ष घर प्रियदर्शन
 नामका देव रहता हैं. पद्मवृक्ष पर पुण्डरीक नामका देव रहता है. एवं
 महापद्म वृक्ष पर महापुण्डरीक नामका देव रहता है । तथा जो पांच
 कूटशाल्मलिमहाद्रुम हैं उन पर पांच गरुडावेणु देव रहते हैं । सूत्र ॥७०॥

મહદ્વિક, મહદ્યુતિક, મહાબલસંપન્ન, મહાપ્રભાવશળી અને એક પલ્યોપમની
 સ્થિતિવાળા દસ દેવો વસે છે. તે દેવો વિશિષ્ટ વિમન, પરિવાર આદિ ઋદ્ધિથી
 યુક્ત હોવાને કારણે તેમને મહદ્વિક કહ્યા છે. તેઓ શરીરની વિશિષ્ટ કાન્તિ
 અને આભરણોની પ્રભાથી દેદીપ્યમાન હોય છે, તેથી તેમને મહાદ્યુતિક કહ્યા છે.
 તેઓ વિશિષ્ટ બળથી યુક્ત હોવાને કારણે તેમને મહાબલસંપન્ન કહ્યા છે.
 મહાકીર્તિ સંપન્ન હોવાને કારણે તેમને મહાપ્રભાવસંપન્ન કહ્યા છે અને વિશિષ્ટ
 સુખથી સંપન્ન હોવાને કારણે તેમને મહાસુખસંપન્ન કહ્યા છે.

હવે તે દસ દેવોનાં નામ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—

સુદર્શના નામના જંબૂવૃક્ષ ઉપર અનાદત નામનો દેવ વસે છે. તે જંબૂ
 દ્વીપનો અધિપતિ છે. ધાતકીવૃક્ષ ઉપર સુદર્શન નામનો દેવ વસે છે. મહાધાતકી
 વૃક્ષ ઉપર પ્રિયદર્શન નામનો દેવ વસે છે. પદ્મવૃક્ષ ઉપર પુન્ડરીક નામનો દેવ
 વસે છે અને મહાપદ્મવૃક્ષ ઉપર મહાપુન્ડરીક નામનો દેવ વસે છે. પાંચ કૂટ
 શાલ્મલિ મહાદ્રુમો ઉપર પાંચ ગરુડાવેણુ દેવો નિવાસ કરે છે. ॥ સૂત્ર ૭૦ ॥

દુષ્પમા સુષમા ચ સમયક્ષેત્રે એવ ભવતિ इति दुष्पमायाः सुषमायाश्च परिज्ञान प्रकारान् दशभिर्दशभिः स्थानैराह—

મૂળમ્—દસહિં ઠાળેહિં ઓગાઢં દુસ્સમં જાળેજા, તં જહા—
અકાલે વરિસઈ ૧ કાલે ન વરિસઈ ૨ અસાહૂ પૂઝ્જંતિ ૩ સાહૂ ણ
પુઝ્જંતિ ૪ ગુરુસુ જળો મિચ્છત્તં પઢિવન્નો ૫ અમણુણ્ણા સહા
૬ જાવ અમણુણ્ણા ફાસા ૧૦। દસહિં ઠાળેહિં ઓગાઢં સુસમં
જાળેજા, તંજહા—અકાલે ન વરિસઈ ૧ તંષેવ વિપરીયં સઠ્ઠં
જાવ મણુણ્ણા ફાસા ૧૦ ॥સૂ ૭૧॥

છાયા-દશભિઃ સ્થાનૈરવગાઢાં દુષ્પમાં જાનીયાત્, તથા-અકાલે વર્ષતિ ૧
કાલે ન વર્ષતિ ૨ અસાધવઃ પૂજ્યન્તે ૩ સાધવો ન પૂજ્યન્તે ૪ ગુરુપુ જનો
મિથ્યાત્વં પ્રતિપન્નઃ ૫ અમનોજ્ઞાઃ શબ્દાઃ ૬ યાવત્ અમનોજ્ઞાઃ સ્પર્શાઃ ૧૦॥
દશભિઃ સ્થાનૈરવગાઢાં સુષમાં જાનીયાત્, તથા-અકાલે ન વર્ષતિ ૧ તદેવ
વિપરીતં સર્વં યાવદ્ મનોજ્ઞાઃ સ્પર્શાઃ ૧૦ ॥મૂ ૭૧॥

ટીકા-‘દસહિં ઠાળેહિં’ इत्यादि—

इदं सूत्रं व्याख्यातमायम् । नवरं-यावत्पदेन अमनोज्ञानि रूपाणि ७ अमनोज्ञा

દુષ્પમા ઓર સુષમા એ દો કાલ સમય ક્ષેત્ર મેં હી હોતે હૈં—હસ
લિયે અષ સૂત્રકાર દુષ્પમા એવં સુષમા કે જાનનેકે પ્રકારોંકા કથન દશ
દશ સ્થાનોં સે કરતે હૈં—દસહિં ઠાળેહિં ઓગાઢ-इत्यादि । सूत्र-७१ ॥

ટીકાર્થ-यह सूत्र व्याख्यात प्राय है । यहाँ यावत् पद से “अमनोज्ञानि
रूपाणि ७. अमनोज्ञा गन्धाः ८. अमनोज्ञा रसाः ९” यहाँ तक के ३

દુષ્પમા અને સુષમા આ બે કાળો હોય છે. સમયક્ષેત્રમાં (મનુષ્યક્ષેત્રમાં)જ
હોય છે. તેથી હવે સૂત્રકાર દુષ્પમા અને સુષમાકાળના લક્ષણો પ્રકટ કરતાં દસ
દસ સ્થાનોતું નિરૂપણ કરે છે —“દસહિં ઠાળેહિં ઓગાઢ” इत्यादि— (સૂ ૭૧)

ટીકાર્થ-दुष्पमाकाण शङ्क्यर्थगयो છે, તે બાણવાનાં લક્ષણો નીચે પ્રમાણે છે—
(૧) આ કાળમાં સમયસર વરસાદ પડતો નથી (૨) કમોસમે વરસાદ પડે છે.
(૩) અસાધુજનોની પૂજા થાય છે, (૪) સંતોની પૂજા થતી નથી, (૫) ગુરુજનો
પ્રત્યે લોકોનો વિપરીત વર્તાવ રહે છે (૬) અમનોજ્ઞ શબ્દોનો અનુભવ થાય
છે. “યાવત્” પદ દ્વારા “અમનોજ્ઞાનિ રૂપાણિ, અમનોજ્ઞા ગન્ધાઃ, અમનોજ્ઞા રસાઃ”

ગન્ધાઃ૮=અમનોજ્ઞા રસાઃ ૯ इत्येतानि त्रीणि पदानि ग्राह्याणीति । एतद्वैपरीत्येन सुषमावगाढहेतुभूतानि दश स्थानानि व्याख्येयानीति ॥सू० ७१॥

કાલાધિકારાત્ સુષમસુષમાયાઃ કિંચિદ્ વૈશિષ્ટ્યમાહ—

મૂલમ્—સુસમસુસમાય ણં સમાય દસાવિહા રુચ્ચા ઉવ-
ભોગત્તાય હવમાગચ્છંતિ, તંજહા—મત્તંગયા ૧ ય ભિયગા ૨
તુડિયંગા ૩ દીવ ૪ જોઈ ૫ ચિત્તંગા ૬ ચિત્તરસા ૭ મણિયંગા
૮ ગેહાગારા ૯ અણિયંગા ૧૦ ય ॥સૂ૦ ૭૨॥

છાયા-સુષમસુષમાયાં સ્વલુ સપ્રાયાં દશવિધા વૃક્ષા ઉપભોગ્યતયા હવમાગ-
ચ્છન્તિ, તથયા—મત્તાજ્ઞકા ૧ શ્વ મૃતાજ્ઞાઃ ૨ ત્રુટિતાજ્ઞાઃ ૩ દીપ ૪ ડ્યોતિ ૫
થિત્રાજ્ઞાઃ ૬ વિત્તરસાઃ ૭ મળ્યજ્ઞાઃ=ગેહાકારાઃ ૯ અનગનાશ્વ ૧૦ ॥સૂ૦ ૭૨ ॥

ત્રીન પદ ગૃહીત હુએ હૈં ઇન સ્થાનોં સે ભિન્ન સુષમા કાલવિશેષ કે
આજાને કે ચિહ્ન હોતે હૈં ॥ તાત્પર્ય યહ હૈં કિ દુષ્પમા કાલ વિશેષ આ-
ગયા હૈં હસકે જાનને કે યે ચિહ્ન હૈં—

इस कालमें समय पर पानी नहीं बरसता है १. अकालमें पानी
बरसता है २. असाधुजनोंकी पूजा होती है ३. साधुजनोंकी पूजा नहीं
होती है यातापिता आदि ४. गुरुजनोंके प्रति लोकोंका व्यवहार विनय-
रहित होता है ५. अमनोज्ञ शब्द यावत् अमनोज्ञ स्पर्श हो जाते हैं ।
सुषमाकालमें ये ही सब बातें विपरीत रूपमें होने लगती हैं—जैसे—पानी
अकालमें नहीं बरसता है इत्यादि । सूत्र ॥७१॥

કાલકે અધિકારકો લેકર સુષમ સુષમાકાલ કી કુછ વિશિષ્ટતાકા
કથન અથ સૂત્રકાર કરતે હૈં—

આ ત્રણે પદોને ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે—(૭) અમનોજ્ઞરૂપો ભોવામાં આવે
છે, (૮) અમનોજ્ઞ ગન્ધનો, (૯) અમનોજ્ઞ રસનો અને (૧૦) અમનોજ્ઞ સ્પર્શનો
અનુભવ થાય છે.

દુષ્પમાકાળ કરતાં સુષમાકાળના લક્ષણો વિપરીત હોય છે. જેમ કે (૧)
સુષમાકાળમાં સમયસર વરસાદ પડે છે. બાકીના લક્ષણો પણ દુષ્પમાકાળના
કરતાં વિપરીતરૂપે સમજવા ભોઈએ ॥ સૂ ૭૧ ॥

આગલા સૂત્રમાં કાળનું કથન કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર સુષમસુષમા
કાળની વિશિષ્ટતાઓનું નિરૂપણ કરે છે—

ટીકા-‘સુસમસુસમાય ણં’ ઇત્યાદિ—

સુષમસુષમાભિધાનાયાં સમાયાં=કાલવિશેષે દશવિધાઃ-દશપ્રકારા વૃક્ષાઃ
હૃદ્યં=પર્યાપ્તમ્ જનાનામ્ ઉપભોગ્યત્વેન આગच्छन्ति=પ્રાદુર્ભવન્તિ, તથા-
‘મત્તાજ્ઞકા’ ઇત્યાદિ । તત્ર-મત્તાજ્ઞકાઃ-મત્તં=મદો હર્ષ इति યાવત્, તત્કારણભૂતો
વિશિષ્ટબલવીર્યકાન્તિजनकः સુખપેયરસો મત્તાજ્ઞક इत्युच्यते, તદ્દાયિનઃ કલ્પવૃક્ષા
અપિ મત્તાજ્ઞકા इति ॥૧॥ મૃતાજ્ઞાઃ-મૃતં=મરણં=પૂરણં, તત્ર-અજ્ઞાનિ=કારણાનિ
મૃતાજ્ઞાનિ-પાત્રાણિ, તદ્દાયકા વૃક્ષા અપિ મૃતાજ્ઞાઃ । પાત્રદાયકા વૃક્ષા इत्यर्थः
॥૨॥ ત્રુટિતાજ્ઞાઃ-ત્રુટિતાનિ=તૂર્યાણિ-ચતુર્વિધાનિ વાદ્યાનિ, તદજ્ઞભૂતાઃ=કારણ-
ભૂતાઃ વૃક્ષાઃ । ચતુર્વિધવાદ્યદાયિનો વૃક્ષા इत्यर्थः ॥૩॥ તથા-કૃતદ્વન્દ્વસમાસાનાં
દીપજ્યોતિશ્ચિત્રશબ્દાનામ્ અજ્ઞશબ્દેન સહ સમ્બન્ધાત્-‘દીપાજ્ઞ જ્યોતિરજ્ઞાચ્ચિત્રાજ્ઞા’

“સુસમસુસમાય ણં સમાય”-ઇત્યાદિ । સૂત્ર ॥ ૭૨ ॥

ટીકાર્થ-સુષમ સુષમાકાલવિશેષમે દશ પ્રકારકે વૃક્ષ પર્યાપ્તિ માત્ર
મેં જનોંકે ઉપભોગ્યરૂપસે ઉત્પન્ન હોતે હૈં-જેસે માત્રજ્ઞક ? મત્ત નામ મદ-
હર્ષકા હૈ જો વૃક્ષ હસકા કારણ ભૂત હોતા હૈ. વિશિષ્ટબલ વીર્ય ઓર
કાન્તિ કા જનક હોતા હૈ તથા સુખસે પીને યોગ્ય રસવાલા હોતા હૈ-
ઉલ્લકા નામ મત્તાજ્ઞક હૈ. મત્તાજ્ઞક જાતિકે કલ્પવૃક્ષ હોતે હૈ. જો વૃક્ષ થાલી
કટોરા આદિ પાત્રોંકો દેતે હૈં વે મત્તાજ્ઞ હૈં. ચાર પ્રકારકે વાદ્યોંકે કારણ-
ભૂત જો વૃક્ષ હોતે હૈં વે ત્રુટિતાજ્ઞ હૈં. દીપજ્યોતિ ઓર ચિત્ર હન શબ્દોંકે
સાથ અજ્ઞશબ્દ લગા લેના ચાહિયે તથા ચ-દીપાજ્ઞ, જ્યોતિરજ્ઞ ઓર
ચિત્રાજ્ઞ હસ પ્રકાર સે કલ્પવૃક્ષોં કે નામ બન જાતે હૈ. હનમેં જો કલ્પ-

“સુસમસુસમાય ણં સમાય” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૨)

ટીકાર્થ-સુષમસુષમાકાળમાં લોકોને ઉપભોગ્યરૂપે ઉપયોગમાં આવે એવાં હસ પ્રકારના વૃક્ષો વિપુલ પ્રમાણમાં ઉત્પન્ન થાય છે. તે વૃક્ષોનાં નામ નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે—

(૧) મત્તાંગવૃક્ષ-“મત્ત” આ પદ હર્ષ’નું વાચક છે. જે વૃક્ષ હર્ષના જનક હોય છે, વિશિષ્ટ બલ, વીર્ય અને કાન્તિ જનક હોય છે અને સ્વા-
દિષ્ટ રસ દેનારાં હોય છે, એવાં મત્તાંગક જાતિનાં કલ્પવૃક્ષો સુષમસુષમાકાળમાં થતાં હોય છે.

(૨) મૃતાંગવૃક્ષ-આ વૃક્ષો પાત્રો આવે છે.

(૩) ત્રુટિતાંગવૃક્ષો-આ વૃક્ષો ચાર પ્રકારનાં વાદ્યો બનાવવા માટે ઉપયોગી થઈ પડે છે.

“અંગ” પદની આગળ “દીપ, જ્યોતિ અને ચિત્ર” આ પદો લગાડવાથી “દીપાંગ, જ્યોતિરાંગ અને ચિત્રાંગ” આ ત્રણ પ્રકારનાં વૃક્ષોનાં નામ બને છે.

इति पदत्रयमुपलभ्यते । तत्र-दीपाङ्गाः-प्रदीपकारणभूता वृक्षाः ४ ज्योतिरङ्गाः-ज्योतिः=वादराग्निः, सुषमसुषमायां तदभावात् ज्योतिरत्र वादराग्निसदृशं किमपि सौम्यप्रकाशकं वस्तु, तदङ्गभूता वृक्षाः ५ चित्राङ्गाः-चित्रशब्दोऽनेकविधमाल्यपरो विवक्षितः । ततश्च-चित्राणि=अनेकप्रकाराणि माल्यानि, तदङ्गभूता वृक्षा इत्यर्थः । विविधमाल्यदायका वृक्षा इति भावः ॥६॥ चित्ररसाः-चित्राः=मधुरादयोऽनेकविधा रमाश्चित्ररसाः, तत्कारणभूता वृक्षा अपि । मधुराद्यनेकविध भोजनदायका वृक्षा इत्यर्थः ॥७॥ उक्तं चात्र—

“ दीवसिहाजोऽसनामया य एए करिति उज्जोयं ।

चित्तंगेषु य मल्लं, चित्ररसा भोयणट्ठाए ॥१॥ ”

छाया-दीपशिखा ज्योतिर्नामकाश्च एते कुर्वन्ति उद्द्योतम् ।

चित्राङ्गेषु च माल्यं, चित्ररसा भोजनार्थाय ॥१॥ इति ।

वृક્ષ પ્રદીપકે કારણ ભૂત હોતે હૈં વે દીપાઙ્ગ હૈં. અર્થાત્ દીપ કે સમાન પ્રકાશ કરતે હૈં વહ દીપાઙ્ગ હૈં । વાદરાગ્નિ જૈસી સૌમ્ય પ્રકાશવાલી વસ્તુ કે જો કારણભૂત હોતે હૈં વે જ્યોતિરાઙ્ગ કલ્પવૃક્ષ હૈં. ચિત્ર શબ્દ યહાં અનેક પ્રકાર કે માલ્યોંકા વાચકરૂપ સે વિવક્ષિત હુઆ હૈં. અતઃ અનેક પ્રકાર કી માલાઓંકે કારણભૂત જો વૃક્ષ હૈં વે ચિત્રાઙ્ગ જાતિ કે કલ્પવૃક્ષ હૈં । મધુર આદિ અનેક પ્રકારકે મનોહરસોંકો દેનેવાલે જો વૃક્ષ હોતે હૈં એસે વે વૃક્ષ ચિત્રરસ વૃક્ષ હૈં-યે વૃક્ષ મધુર આદિ અનેક પ્રકાર કે ભોજન પ્રદાતા હોતે હૈં. કહા મી હૈં—

“ દીવસિહાજોઽસનામયા ય’ ઇત્યાદિ ।

(૪) દીપાંગવૃક્ષો-જે વૃક્ષો દીપકની જેમ પ્રકાશ આપે છે, તે વૃક્ષોને દીપાંગવૃક્ષો કહે છે.

(૫) જ્યોતિરાંગવૃક્ષો-બાદરાગ્નિ જેવાં સૌમ્ય પ્રકાશવાળી અગ્નિ આપવામાં કારણભૂત બનતાં કલ્પવૃક્ષોને જ્યોતિરાંગવૃક્ષો કહે છે.

(૬) ચિત્રાંગવૃક્ષો-‘ચિત્ર’ આ પદ અહીં ‘અનેક પ્રકારની માલાઓનું વાચક છે. જે વૃક્ષો અનેક પ્રકારની માલાઓ બનાવવામાં ઉપયોગી થઈ પડે છે, તે વૃક્ષોને ચિત્રાંગવૃક્ષો કહે છે.

(૭) ચિત્રરસ-મધુર આદિ અનેક પ્રકારના રસવાળી વસ્તુઓના કારણભૂત જે કલ્પવૃક્ષો હોય છે, તેમને ચિત્રરસવૃક્ષો કહે છે, આ વૃક્ષો મધુર આદિ સ્વાદ વાળાં અનેક પ્રકારનાં ભોજનોનાં પ્રદાતા હોય છે. કહું પણ છે કે—

“ દીવસિહાજોઽસનામયા ય’ ઇત્યાદિ.

तथा-मण्यङ्गाः-मणीनां=मणिमयानामाभरणानाम् अङ्गभूताः वृक्षाः । आभरणं दायका वृक्षा इत्यर्थः ॥८॥ गेहाकाराः=द्विचत्वारिंशद्भूमभवनदायिनो वृक्षाः ॥९॥ तथा-अनग्नाः=वस्त्रदायिनो वृक्षाः ॥१०॥ उक्तं चात्र—

“मणियंगेषु य भूषणवराइ भवणाइ भवणरुक्खेसु ।
अणियणेषु य धणियं वत्थाइ बहुप्पगाराइ १० । १॥”

छाया-मण्यङ्गेषुच भूषणवराणि भवनानि भवनवृक्षेषु ।
आनग्नेषु धणियं (प्रचुराणि) वस्त्राणि बहुप्रकाराणि

॥१॥ इति ॥सू० ७२॥

कालाधिकारादेव कालविशेषभाविनां दशकुलकराणां नामानि प्राह—

मूलम्-जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे तीयाए उरुसप्पिणीए दसकुलगरा होत्था, तं जहा-सयज्जले १ सयाऊ २ य अणंत-सेणे ३ अमियसेणे ४ य तकसेणे ५ भीमसेणे ६ महाभीमसेणे ७ य सत्तमे ॥१॥ दढरहे ८ सयरहे १०। जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उरुसप्पिणीए दसकुलगरा भविस्संति, तं जहा-सीमंकरे १ सीमंधरे २ खेमंकरे ३ खेमंधरे ४ विमलवाहणे ५ संमुई ६ पडिसुए ७ दढधणू ८ दसधणू ९ सयधणू १०॥सू० ७३॥

मण्यङ्ग जाति के जो कल्पवृक्ष होते हैं वे मणिमय अनेक प्रकार के आभरणों के प्रदाता होते हैं । गेहाकार जाति के जो वृक्ष होते हैं वे ४२ खण्डों के भवनों को देनेवाले होते हैं । और अनग्न जाति के वृक्ष होते हैं वे वस्त्रों के प्रदाता होते हैं—कहा भी है—

“मणियंगेषु य भूषणवराइ” इत्यादि ।

इन गाथाओंका अर्थ ऊपर में लिखा गया है । सू० ॥ ७२ ॥

(८) रुष्यांगवृक्षो-आ वृक्षो अनेक प्रकारनां मणिमय आभूषणानां प्रदाता होय छे. (९) गेहाकारवृक्षो-आ वृक्षो ४२ अंशवाणां भवनानां प्रदाता होय छे.

(१०) अनग्नजातिनां वृक्षो-आ वृक्षो वस्त्रानां प्रदाता होय छे. कलुं पणु छेडे-

“मणियंगेषु य भूषणवराइ” इत्यादि.

आ गाथाओना अर्थ उपर स्पष्ट थर्ग गयो छे. ॥ सू. ७२ ॥

છાયા-જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષેડતીતાયામુત્સર્પિણ્યાં દશકુલકરા અમવન્, તદ્યથા-શતજ્વલઃ ૧ શતાયુશ્વ ૨ અનન્તસેનોડ ૩ મિતસેનશ્વ ૪ તર્કસેનઃ ૫ ભીમસેનઃ ૬ મહાભીમસેનશ્વ ૭ સપ્તમઃ ॥૧॥ દ્વરથો ૮ દશરથઃ ૯ શતરથઃ ૧૦॥ જમ્બુદ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષે આગમિલ્યન્ત્યામુત્સર્પિણ્યાં દશકુલકરા મધિષ્યન્તિ, તદ્યથા-સીમદ્ધરઃ ૧ સીમંધરઃ ૨ ક્ષેમદ્ધરઃ ૩ ક્ષેમન્ધરઃ ૪ વિમલવાહનઃ ૫ સંમુચિઃ ૬ પ્રતિશ્રુતઃ ૭ દ્વદધનુઃ ૮ દશધનુઃ ૯ શતધનુઃ ૧૦॥મુ. ૭૩॥

ટીકા-‘જંબુદ્વીપે દીવે’ इत्यादि—

જમ્બુદ્વીપસ્થિતભરતક્ષેત્રેડતીતાયામ્ ઉત્સર્પિણ્યાં દશકુલકરાઃ=કુલકરણશીલા વિશિષ્ટબુદ્ધિમન્તો લોકવ્યવસ્થાવિધાનદક્ષાઃ પુરુષવિશેષાઃ પ્રજ્ઞતાઃ, તદ્યથા-‘શતજ્વલ’

કાલ કે અધિકારકો લેકર હી અવ સૂત્રકાર કાલ વિશેષ મેં હોને વાલે કુલકરોં કે નામોંકા કથન કરતે હૈ—

“જંબુદ્વીપે દીવે ભારહે વાસે તીયાઈ”—इत्यादि । सू. ॥ ७३ ॥

ટીકાર્થ-જમ્બુદ્વીપસ્થિત ભરત ક્ષેત્ર મેં અતીત ઉત્સર્પિણી કાલમેં ૧૦ કુલકર હુઈ હૈ. ઉનકે નામ હસ પ્રકાર સે હૈ—

શતજ્વલ ૧ શતાયુ ૨ અનન્તસેન ૩ અમિતસેન ૪ ભીમસેન ૬ મહાભીમસેન ૭ દ્વરથ ૮ દશરથ ૯ એવં શતરથ ૧૦ કુલકો (મર્યાદાકો) કરને કે સ્વભાવવાલે, વિશિષ્ટ બુદ્ધિવાલે એવં લોકવ્યવસ્થા કરનેમેં દક્ષ જો પુરુષ વિશેષ હોતે હૈં વે કુલકર કહલાતે હૈં હસી પ્રકાર જમ્બુદ્વીપ સ્થિત આગામી ઉત્પર્પિણીકાલ મેં ૧૦ કુલકર હોગેં ઉનકે નામ હસ

કાળનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે. તેથી હવે સૂત્રકાર કાળવિશેષમાં થઈ ગયેલા કુલકરોનાં નામોનું કથન કરે છે.

“જંબુદ્વીપે દીવે ભારહે વાસે તીયાઈ” इत्यादि—(સૂ. ૭૩)

ટીકાર્થ-જંબુદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમાં અતીત ઉત્સર્પિણી કાળમાં જે દસ કુલકરો થયા હતા, તેમનાં નામ આ પ્રમાણે હતાં—(૧) શતજ્વલ, (૨) શતાયુ, (૩) અનન્તસેન, (૪) અમિતસેન, (૫) ભીમસેન, (૬) મહાભીમસેન, (૮) દ્વરથ, (૯) દશરથ અને (૧૦) શતરથ.

કુળની રચના કરનારા-કુળની મર્યાદા બાંધનારા, વિશિષ્ટ બુદ્ધિવાળા અને લોકવ્યવસ્થામાં નિપુણ એવાં જે પુરુષો થઈ ગયાં છે, તેમને કુલકર કહે છે. જેમ અતીત ઉત્સર્પિણી કાળમાં થયેલા દસ કુલકરોનાં નામ પ્રકટ કરવામાં આયાં, એજ પ્રમાણે હવે આગામી ઉત્સર્પિણીકાળમાં થનારા કુલકરોનાં નામો પ્રકટ કરવામાં આવે છે-આગામી ઉત્સર્પિણી કાળમાં જંબુદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમાં

इत्यादि । जम्बूद्वीपस्थितभरतक्षेत्रे आगभिष्यन्त्याम् उत्तापिण्यां दशसंख्यकाः कुलकराः भविष्यन्ति, तद्यथा—‘सीमङ्करः सीमन्धर’ इत्यादि ॥ सू० ७३ ॥

जम्बूद्वीपमस्तावाद्दशवक्षस्कारपर्वतानाह—

મૂલમ્—જંબુદ્વીપે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ પુરત્થિમે ણં સીયાણ મહાણર્હણ ઉભઓકૂલે દસ વક્ષારપવ્વયા પપ્પણત્તા, તં જહા—માલવંતે ૧ ચિત્તકૂડે ૨ પમ્હકૂડે ૩ નલિણકૂડે ૪ જાવ સોમણસે ૧૦ જંબૂમંદરપચ્ચત્થિમે ણં સીઓયાણ મહાણર્હણ ઉભઓકૂલે દસ વક્ષારપવ્વયા પપ્પણત્તા, તં જહા—વિજ્જુપ્પમે ૧ જાવ ગંધમાયણે ૧૦ એવં ધાયહસંહપુરત્થિમદ્દે વિ વક્ષારા ભાણિયઠ્ઠા જાવ પુક્કરવરદીવહ્મપચ્ચત્થિમદ્દે ॥સૂ. ૭૪॥

छाया—जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य पौरस्त्ये खलु सीताया महानद्या उभयतः कूले दशवक्षस्कारपर्वताः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—माल्यवान् १ चित्रकूटः २ प्रकार से हैं—सीमाङ्कर १ सीमन्धर २ क्षेमङ्कर ३ क्षेमन्धर ४ विमलबाहन ५ संमुचि ६ प्रतिश्रुत ७ दशधनु ८ दृढधनु ९ और शतधनु १०। सूत्र॥७३॥

जम्बूद्वीप के प्रस्तावको लेकर अब सूत्रकार १० वक्षस्कार पर्वतोंका कथन करते हैं—

“जंबुद्वीपे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स ’—इत्यादि । सूत्र ॥ ७४ ॥

टीકાર્થ—જમ્બૂદ્વીપ સ્થિત મન્દર પર્વતની પૂર્વદિશામેં સીતા મહાનદીકેં દોનોં ઉત્તર દક્ષિણ તટોં પર ૧૦ વક્ષસ્કાર પર્વત—ગજદન્ત પર્વત કહે ગયે હેં ઉનકે નામ હસ પ્રકાર સે હેં—માલ્યવાન્ ૧ ચિત્રકૂટ ૨ પદ્મકૂટ ૩ નલિન-

આ ૧૦ કુલકરો થશે—(૧) સીમાંકર, (૨) સીમંધર, (૩) ક્ષેમંકર, (૪) ક્ષેમંધર, (૫) વિમલવાહન, (૬) સંમુચિ, પ્રતિશ્રુત, (૮) દૃઢધનુ, (૯) દશધનુ અને (૧૦) શતધનુ. ॥ સૂ. ૭૩ ॥

આગલા સૂત્રમાં જંબૂદ્વીપના કુલકરોનું કથન કરવામાં આવ્યું. હવે સૂત્રકાર જંબૂદ્વીપના ૧૦ વક્ષસ્કાર પર્વતોનું કથન કરે છે—

“જંબુદ્વીપે દીવે મંદરસ્સ પવ્વયસ્સ ” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૪)

ટીકાર્થ—જંબૂદ્વીપમાં આવેલા મન્દર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં સીતા મહાનદીના બન્ને તટ પર (ઉત્તર દક્ષિણ તટો પર) ૧૦ વક્ષસ્કાર પર્વતો (ગજદન્ત પર્વતો) આવેલા છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે—(૧) માલ્યવાન, (૨) ચિત્રકૂટ, (૩) પદ્મકૂટ,

પગ્ગકૂટઃ ૩ નલિનકૂટો ૪ યાવત્ સૌમનસઃ ૧૦। જમ્બૂમન્દરપાશ્ચાત્યે સ્થલ
સીતોદાયા મહાનદ્યા ઉભયતઃ કૂલે દશવક્ષસ્કારપર્વતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા વિદ્યુત્પ્રભો
યાવત્ ગન્ધમાદનઃ ૧૦। एवं धातकीखण्डपौरस्त्यार्द्धेऽपि वक्षस्कारा भणितव्या
યાવત્ પુષ્કરવરદ્વીપાર્ધપાશ્ચાત્યાર્દ્ધે ॥ સૂ. ૭૪ ॥

ટીકા—‘જંબુદીપે દીપે’ इत्यादि—

જમ્બુદ્વીપસ્થમન્દરપર્વતસ્ય પૌરસ્ત્યે પૂર્વ દિગ્ભાગે સ્થલ સીતાયા મહાનદ્યા
ઉભયતઃ કૂલે=ઉત્તરદક્ષિણગતકૂલદ્વયે દશવક્ષસ્કારપર્વતાઃ=ગજદન્તપર્વતાઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ । તદ્યથા—માત્યયાન્ ૧ ચિત્રકૂટઃ ૨ પગ્ગકૂટઃ ૩ નલિનકૂટઃ ૪ યાવત્
સૌમનસઃ ૧૦ અત્ર યાવત્પદેન—અકશૌલઃ ૫, ત્રિકૂટઃ ૬, વૈશ્રવણકૂટઃ ૭, અંજનઃ
૮, માતંજનઃ ૯ इत्येषां संग्रहो भवति । तथा—जम्बूद्वीपस्थमन्दरपर्वतस्य पाश्चात्ये-
પશ્ચિમદિગ્ભાગે સીતોદામહાનદ્યા ઉભયતઃ કૂલે દક્ષિણોત્તરતટે દશવક્ષસ્કાર પર્વતાઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા—વિદ્યુત્પ્રભઃ ૧, યાવત્ ગન્ધમાદનઃ ૧૦, અત્ર યાવત્પદેન—
અંકાવતી ૨, પદ્માવતી ૩, આશીવિષઃ ૪, સુલાવહઃ ૫, ચન્દ્રપર્વતઃ ૬, સૂરપર્વતઃ
૭, નાગપર્વતઃ ૮, દેવપર્વતઃ ૯, इत्येषां संग्रहो भवति । एवमेव धातकोखण्डस्य
પૌરસ્ત્યાર્દ્ધે પાશ્ચાત્યાર્દ્ધે ચ દશ દશ વક્ષસ્કારપર્વતાઃ, તથા પુષ્કરવરદ્વીપાર્ધસ્યાપિ
પૌરસ્ત્યાર્દ્ધે પાશ્ચાત્યાર્દ્ધે ચ દશ દશ વક્ષસ્કારપર્વતા વોદ્યા इति ॥ સૂ. ૭૪ ॥

કૂટ ૪ અકશૌલ ૫ ત્રિકૂટ ૬ શ્રવણકૂટ ૭ અંજન ૮ માતંજન ૯ ઔર
સૌમનસ ૧૦ इसी प्रकार से जम्बूद्वीप स्थित मन्दर पर्वतकी पश्चिम
दिशामें सीतोदा महानदी के दोनों दक्षिण उत्तर तटों पर ૧૦ વક્ષસ્કાર
પર્વત કહે ગયે હૈં— જૈસે—વિદ્યુત્પ્રભ ૧ અંકાવતી ૨ પદ્માવતી ૩ આશી
વિષ ૪, સુલાવહ ૫, ચન્દ્રપર્વત ૬, સૂરપર્વત ૭ નાગપર્વત ૮ દેવપર્વત ૯
ઔર ગન્ધમાદન પર્વત ૧૦ इसी तरह से धातकी खण्डके पूर्वार्ध और पश्चि-
માર્ધ में भी वक्षस्कार पर्वत कह लेना चाहिये और इसी तरह से यावत्
पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्वार्ध और पाश्चात्यार्द्ध में भी ૧૦-૧૦ वक्षस्कार

(૪) નલિનકૂટ, (૫) અકશૌલ, (૬) ત્રિકૂટ, (૭) શ્રવણકૂટ, (૮) અંજન, (૯)
માતંજન અને (૧૦) સૌમનસ. એજ પ્રમાણે જંબુદ્વીપસ્થ મન્દર પર્વતની
પશ્ચિમ દિશામાં આવેલી સીતોદા મહાનદીના બન્ને તટો પર (ઉત્તર દક્ષિણ
તટો પર) પણ દસ વક્ષસ્કાર પર્વતો આવેલા છે. તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે
છે—(૧) વિદ્યુત્પ્રભ, (૨) અંકાવતી, (૩) પદ્માવતી, (૪) આશીવિષ, (૫) સુલા-
વહ, (૬) ચન્દ્રપર્વત, (૭) સૂરપર્વત, (૮) નાગપર્વત, (૯) દેવપર્વત અને (૧૦)
ગન્ધમાદન પર્વત. એજ પ્રમાણે ધાતકીખંડના પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધમાં આવેલા

પુષ્કરાદ્ધક્ષેત્રસ્ત્વરૂપં પૂર્વમભિહિતમ્ । ક્ષેત્રમસ્તાવાત્ સમ્પતિ કલ્પાન્ દશ-
વિધત્વેનાહ—

મૂલમ્-દસકળ્પા ઇંદાહિદ્વિયા પળ્ળન્તા, તં જહા-સૌહર્મ્મે ૧
જાવ સહસ્ત્રારે ૮ પાળણ ૧ અચ્ચુષ ૧૦। એસુ ણં દસસુ
કળ્પેસુ દસ ઇંદા પળ્ળન્તા, તં જહા-સવ્કે ૧ ઈસાળે ૨ જાવ
અચ્ચુષ ૧૦। એસુ ણં દસળહં ઇંદાળં દસ પારિજાણિયવિમાળા
પળ્ળન્તા, તં જહા-પાલણ ૧ પુળ્ફણ ૨ જાવ વિમલવરે ૧
સવ્વઓ મદ્દે ૧૦ ॥ સૂ. ૭૫ ॥

છાયા-દશ કલ્પા ઇન્દ્રાધિષ્ઠિતાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-સૌધર્મો ૧ યાવત્
સહસ્ત્રારઃ ૮ પ્રાણતઃ ૧ અચ્યુતઃ ૧૦। એતેષુ સ્વલુ દશસુ કલ્પેષુ દશ ઇન્દ્રાઃ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા શક્રઃ ૧ ઈશાનો ૨ યાવત્ અચ્યુતઃ ૧૦। એતેષુ સ્વલુ દશાનામ્
ઇન્દ્રાણાં દશ પારિયાનિકવિમાનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-પાલકઃ ૧ પુષ્પકો ૨
યાવદ્ વિમલવરઃ ૧ સર્વતો મદ્રઃ ॥ સૂ. ૭૫ ॥

ટીકા-‘દસ કળ્પા’ ઇત્યાદિ ।

ઇન્દ્રાધિષ્ઠિતાઃ-ઇન્દ્રૈરધિષ્ઠિતઃ-ઇન્દ્રનિવાસયુક્તા દશ કલ્પાઃ-ઇન્દ્રસામાનિક
ત્રાયક્ષિંશાદિ વ્યવહારયુક્તા દેવલોકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-‘સૌધર્મ’ ઇત્યાદિ ।

પર્યંત કહે ગયે હૈં એસા કહલેના ચાહિયે યહાં યાયસ્ શબ્દસે ધાતકી સ્વળકા
પાશ્ર્વત્યાર્દ્ધ ઓર પુષ્કરચરદ્વીપાર્ધ કા પૂર્વાર્ધ ગૃહીત હુઆ હૈ । સૂત્રા||૭૪||

પુષ્કરાર્ધ ક્ષેત્રકા સ્વરૂપ પહિલે કહ દિયા ગયા હૈ-સો અય ક્ષેત્ર કે
પ્રસ્તાવ કો લેકર સૂત્રકાર કલ્પોંકા દશ પ્રકાર સે કથન કરતે હૈ—

“દસ કળ્પા ઇંદાહિદ્વિયા પળ્ળન્તા-ઇત્યાદિ । સૂ. ॥ ૭૫ ॥

ટીકાર્થ-દશ કલ્પ ઇન્દ્રોં દ્વારા અધિષ્ઠિત-उनके निवासवाले कहे गये
हैं-अर्थात्-इन्द्र, सामानिक, त्रायक्षिंश आदि रूप व्यवहार जो हैं उस

વક્ષસ્કાર પર્વતોનુ’ કથન કરવું જોઈએ. એજ પ્રમાણે પુષ્કરવર દ્વીપાર્ધના પૂર્વાર્ધ
અને પશ્ચિમાર્ધમાં પણ ૧૦-૧૦ વક્ષસ્કાર પર્વતો કહેવા જોઈએ. ॥ સૂત્ર ૭૪ ॥

આગલા સૂત્રમાં પુષ્કરાર્ધ ક્ષેત્રનો ઉલ્લેખ થયો છે. આ રીતે ક્ષેત્રનો
અધિકાર ચાલુ હોવાથી હવે સૂત્રકાર કલ્પોના દસ પ્રકારોનું કથન કરે છે—

“દસ કળ્પા ઇંદાહિદ્વિયા પળ્ળન્તા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૫)

ટીકાર્થ-દસ કલ્પોને ઇન્દ્રો દ્વારા અધિષ્ઠિત-ઇન્દ્રોના નિવાસવાળાં કહ્યાં છે
એટલે કે ઇન્દ્ર, સામાનિક કેવો ત્રાયક્ષિંશ કેવો આદિથી યુક્ત છે. તે દસ કલ્પોનાં

સૌધર્મઃ ૧ ईशानः २ सनत्कुमारः ३ माहेन्द्रः ४ ब्रह्मलोको ५ लान्तकः ६ महाशुक्रः ७ सहस्रारः ८ प्राणतः ९ अच्युतः १० इति दश । आनतारणौ तु इन्द्रानधिष्ठिताविति । तथा-एतेषु दशसु कल्पेषु क्रमेण शक्रः १ ईशानः २ सनत्कुमारः ३ माहेन्द्रः ४ ब्रह्मा ५ लान्तकः ६ महाशुक्रः ७ सहस्रारः ८ प्राणतः ९ अच्युतः १० इत्येते दश इन्द्रा बोध्याः । अमुमेवार्थमाह सूत्रकारः-‘एषु णं दससु कल्पेषु दस इदा’ इति । तथा-एतेषु दशसु कल्पेषु शक्रादीनां दशानामिन्द्राणां पारિયાणिकविमानानि परियानं=स्व स्व कल्पादन्यत्र गमनम्, तत्प्रयोजनं येषां तानि पारिયાणिकानि=गमनप्रयोजनानि, तानि च तानि विमानानि पालकाद्यभिधेयानि दशसंख्यकानि बोध्यानि । तत्र शक्रस्य पालक विमानम् १, ईशानस्य पुष्पकः २, सनत्कुमारस्य सौमनसः ३, माहेन्द्रस्य

व्यवहार से युक्त कहे गये हैं वे इस प्रकार से हैं-सौधर्म १ ईशान २ सनत्कुमार ३ माहेन्द्र ४ ब्रह्मलोक ५ लान्त ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ प्राणत ९ और अच्युत १० आनत और आरण ये दो देवलोक इन्द्र से अनधिष्ठित हैं । तथा इन १० कल्पों में क्रम से शक्र १ ईशान २ सनत्कुमार ३ माहेन्द्र ४ ब्रह्मा ५ लान्तक ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ प्राणत ९ और अच्युत ये १० इन्द्र हैं । इसी बातको सूत्रकार ने “एषु णं दससु कल्पेषु दस इदा” इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया है । इन दश कल्पों में शक्रादिक दश इन्द्रों के पारिયાणिक विमान-अपने २ कल्प से अन्यत्र लेजाने के प्रयोजनवाले ऐसे पालक आदि नामवाले विमान-दश हैं । पालक नामका विमान शक्रका है । पुष्पक विमान ईशानका

નામ નીચે પ્રમાણે છે-(૧) સૌધર્મ, (૨) ઇશાન, (૩) સનત્કુમાર, (૪) માહેન્દ્ર, (૫) બ્રહ્મલોક, (૬) લાન્તક, (૭) મહાશુક્ર, (૮) સહસ્રાર (૯) પ્રાણુત અને (૧૦) અચ્યુત. આનત આરણ, આ બે કલ્પો ઇન્દ્રોથી અનધિષ્ઠિત છે-એટલે કે તે બે કલ્પોમાં ઇન્દ્રોનો નિવાસ હોતો નથી. આ દશ કલ્પોમાં અનુક્રમે (૧) શક્ર, (૨) ઇશાન, (૩) સનત્કુમાર, (૪) માહેન્દ્ર, (૫) બ્રહ્મા, (૬) લાન્તક, (૭) મહાશુક્ર, (૮) સહસ્રાર, (૯) પ્રાણુત અને (૧૦) અચ્યુત. નામના ઇન્દ્રો વસે છે. એજ વાતને સૂત્રકારે-“એષુ ણં દસસુ કલ્પેષુ દસ ઇદા” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા બ્યક્ત કરી છે.

ઉપર્યુક્ત દસ કલ્પોના બે દસ ઇન્દ્રો કહ્યા છે તેમના ૧૦ પારિયાણિક વિમાન કહ્યાં છે પોતપોતાના કલ્પમાંથી અન્ય સ્થળે ગમન કરવા માટે જે પાલક વિમાનો હોય છે તેમને પારિયાણિક કહે છે તેમનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે. - (૧) શક્રના વિમાનનું નામ પાલક વિમાન છે. (૨) ઇશાનના વિમાનનું નામ પુષ્પક વિમાન છે. (૩) સનત્કુમારના વિમાનનું નામ સૌમનસ છે (૪) માહેન્દ્ર

શ્રીવત્સઃ ૪, બ્રહ્મણો નન્ધાવર્તઃ ૫, લાન્તકસ્ય કામકમઃ ૬, મહાશુક્રસ્ય પ્રીતિગમઃ ૭, રાહસ્યારસ્ય મનોરમઃ ૮, પ્રાણતસ્ય વિમલવરઃ ૯, અચ્યુતસ્ય સર્વતોમદ્રઃ ૧૦, इति ॥ सू० ७५ ॥

પાછકાદિ વિમાનયાયિન ઇન્દ્રા ઉક્તાઃ । ઇન્દ્રત્વં તુ જીવાઃ પ્રતિમાદિરૂપ તપોધર્મારાધનતઃ પ્રાપ્નુવન્તીતિ પ્રતિમાયા દશવિધત્વમાદ—

મૂલમ્—દસ દસમિયા મિશ્વરુપહિમા ણં ઇગેણ રાઈંદિયસણં
અદ્ધછદ્દેહિં મિશ્વસણહિં અહાસુત્તં જાવ આરાહિયા આણાપ્પ
અણુપાલિયાન્નિ મ્મવ્વહ ॥ સૂ૦ ૭૬ ॥

છાયા—દશ દશમિકા મિશ્વપ્રતિમા સ્વલુ એકેન રાત્રિન્દિવશતેન અર્દ્ધવષ્ટૈ-
મિશ્વાશતૈર્યથાસૂત્રં યાવત્ આરાધિતા આજ્ઞયા અનુપાલિતાઽપિ ભવતિ ॥ સૂ૦ ૭૬ ॥

ટીકા—‘દસદસમિયા’ ઇત્યાદિ—

દશ દશમિકા—દશ દશમાનિ દિનાનિ યશ્યાં સા તથાભૂતા—મિશ્વપ્રતિમા=
અભિગ્રહવિશેષઃ સ્વલુ=નિશ્ચયેન એકેન રાત્રિન્દિવશતેન=એકશતરાત્ર્યકૈરહોરાગ્રૈઃ
અર્ધવષ્ટૈશ્ચ મિશ્વાશતૈઃ=સાર્ધપશ્ચશતસંખ્યા—મિર્દત્તિમિશ્વ યથાસૂત્રં=સૂત્રનિર્દિષ્ટ-

હૈ ૨ સૌમનસ વિમાન સનસ્કુમાર કા હૈ ૩ શ્રીવત્સ વિમાન માહેન્દ્ર કા
હૈ, નન્ધાવર્ત વિમાન બ્રહ્માકા હૈ ૫ કામકમ વિમાન લાન્તકકા હૈ ૬ પ્રીતિગમ
વિમાન મહાશુક્ર કા હૈ ૭ મનોરમ વિમાન રાહસ્યાર કા હૈ ૮ વિમલવર
વિમાન પ્રાણતકા હૈ ૯ ઓર સર્વતોમદ્ર વિમાન અચ્યુતકા હૈ ॥ સૂ૦ ॥ ૭૯ ॥

પાલક આદિ વિમાનોં સે ગમન કરને કે સ્વભાવવાલે ઇન્દ્ર કહે ગયે
હેં । જીવ ઇન ઇન્દ્રોં કે પદ્ધતો પ્રતિમાદિ રૂપ તપ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત
કરતે હેં—ઇસલિયે અથ સૂત્રકાર પ્રતિમા કા દશવિધ રૂપ સે કથન
કરતે હેં—“દસ દસમિયા મિશ્વરુપહિમાણં” ઇત્યાદિ । સૂ૦ ॥ ૭૬ ॥

ટીકાર્થ—દશ દશકવાળી મિશ્વ પ્રતિમા—અભિગ્રહ વિશેષ નિશ્ચય સે
૧૦૦ રાત્ર દિનોં સે ૫૫૦ મિશ્વાઓં સે યથાસૂત્ર—સૂત્ર નિર્દિષ્ટ વિધિ કે

વિમાનનું નામ શ્રીવત્સ છે. (૫) બ્રહ્માના વિમાનનું નામ નન્ધાવર્ત છે, (૬) લાન્ત-
કના વિમાનનું નામ કામકમ છે, (૭) મહાશુક્રના વિમાનનું નામ પ્રીતિગમ છે.
(૮) રાહસ્યારના વિમાનનું નામ મનોરમ છે. (૯) પ્રાણ્યુતના વિમાનનું નામ
વિમલવર છે. (૧૦) અચ્યુતના વિમાનનું નામ સર્વતોમદ્ર છે. ॥ સૂ. ૭૫ ॥

પાલક આદિ વિમાનમાં ઇન્દ્રો ગમન કરનારા હોય છે. પ્રતિમાદિ તપની
આરાધના દ્વારા ઇન્દ્રપદની પથ્થુ પ્રાપ્તિ કરી શકે છે. તેથી હવે સૂત્રકાર પ્રતિમાના
દસ પ્રકારોનું નિરૂપણ કરે છે—“દસ દસમિયા મિશ્વરુપહિમાણં” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૬)

ટીકાર્થ—દસ દસકવાળી (દસ દસ દિનના કથ સમૂહવાળી) મિશ્વપ્રતિમાનું
(અભિગ્રહ વિશેષનું) ૧૦૦ રાત્રિવસોમાં ૫૫૦ મિશ્વાઓ વડે યથાસૂત્ર (સૂત્રમાં

વિધ્યનુસારં, યાવત્પદ્મન—‘અહાકર્પં અહામર્ગં અહાતત્ત્વં અહાસમ્મં કાણં ફાસિયા પાલિયા સોહિયા તીરિયા કિટ્ટિયા’ છાયા-યથાકલ્પં યથામાર્ગં યથાતત્ત્વં યથાસામ્યં કાએન સ્પૃષ્ટા પાલિતા સોધિતા તીરિતા કીર્તિતા’ ઇતિ સંગ્રહઃ । તત્ર-યથાકલ્પં-કલ્પ=સ્થવિરાદિકલ્પમનતિક્રમ્ય-કલ્પાનુસારમિત્યર્થઃ, યથા-માર્ગમ્=જ્ઞાનદર્શનચારિત્રલક્ષણમોક્ષમાર્ગાનતિક્રમેણ ક્ષયોપશમભાવાનતિક્રમેણ વા, યથાતત્ત્વમ્=તત્ત્વાનતિક્રમેણ, ‘યથાતથ્યમ્’ ઇતિચ્છાયા-પક્ષે-સત્યાનુસારં, યથાસામ્યં-સમભાવગતતિક્રમ્ય - સુષ્ટુપ્રકારેણ કર્મનિર્જરણભાવનયેત્યર્થઃ, કાએન=શરીરેણ સ્પૃષ્ટા=સપ્રુચિતકાલે સવિધિગ્રહણાત્ ન તુ મનોરથમાત્રેણ,

અનુસાર-યાવત્ આરાધિત થોતી હૈ અભિગ્રહ વિશેષનો પ્રતિમા કહતો હૈં યહાં યાવત્ પદ્ સે “અહાકર્પં, અહામર્ગં, અહાતત્ત્વં, અહાસમ્મં કાણં, ફાસિયા, પાલિયા, સોહિયા, તીરિયા, કિટ્ટિયા” ફન પદોળા સંગ્રહ હુઆ હૈ । સ્થવિર કલ્પ કે અનુસાર પાલન કરના ફસકા નામ યથાકલ્પ હૈ, જ્ઞાન, દર્શન ચારિત્ર તપ, રૂપ મોક્ષ માર્ગકો યા ક્ષયો પશમ ભાવ કો ઉત્તલજ્ઞન નહીં કરકે જો પાલન કરના હૈ વહ યથામાર્ગ હૈ તત્ત્વ કે અનુસાર અથવા-“અહાતત્ત્વ” કી ‘યથાતથ્ય’ છાયા કે પક્ષમે સત્ય કે અનુસાર જો પાલન કરના હૈ, વહ યથા તત્ત્વ યા ‘યથા-તથ્ય’ હૈ-સનયાવકે અનુસાર-અઠ્ઠી તરફ સે કર્મ નિર્જરા કી ભાવના સે-જો પાલન કરના હૈ વહ યથાસામ્ય હૈ “કાણં ફાસિયા”કા તાત્પર્ય

ઘતાવેલી વિધિ અનુસાર) આદિ રૂપે આરાધન કરાય છે. અભિગ્રહ વિશેષને પ્રતિમા કહે છે. તેની આરાધના કેવી રીતે થવી જોઈએ, તે વાત યથાસૂત્ર આદિ પદો દ્વારા પ્રકટ કરી છે. સૂત્રમાં ‘યથાસૂત્ર’ પદ પછી નીચેનો સૂત્રપાઠ ગ્રહણ કરવો જોઈએ “અહાકર્પં, અહામર્ગં, અહાતત્ત્વં, અહાસમ્મં કાણં, ફાસિયા, પાલિયા, સોહિયા, તીરિયા, કિટ્ટિયા”

યથાકલ્પ પાલન કરવું જોઈએ કે સ્થવિરકલ્પ પ્રમાણે પાલન કરવું. જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્રતપરૂપ માર્ગનું અથવા ક્ષયોપશમ ભાવનું ઉદ્દલંઘન કર્યા વિના જે આરાધના કરાય છે તેને યથામાર્ગ આરાધના કહે છે. તત્ત્વ અનુસાર આરાધના કરવી તેનું નામ યથાતત્ત્વ આરાધના છે. “યથાતથ્ય” આ પ્રકારની “અહાતત્ત્વ”ની સંસ્કૃત છાયાની અપેક્ષાએ આ પદનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે-સત્યના અનુસાર તેનું પાલન કરવું તેનું નામ યથાતથ્ય આરાધના છે. સમભાવ પૂર્વક-સમ્યક્રૂપે કર્મનિર્જરાની ભાવનાથી જે આરાધના કરાય છે તેનું નામ યથાસામ્ય છે. “કાણં ફાસિયા” આ પદનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-શરીરથી

પાલિતા-વારંવારમુપયોગેન તત્પરતયા પાલનાવિષયીકૃતા, શોધિતા=પારણકદિને
ગુર્વાદિદત્તાવશિષ્ટભોજનાત્ અતીચારપલ્લુશાલનાદ્ વા, તીરિતા-પૂર્ણેઽપિ
તદવધૌ સ્વલ્પકાઝાવરથાનાત્, કીર્તિતા=પારણકદિને-“અયમયં ચ અભિગ્રહ-
વિશેષઃ કૃત આસીત, અસ્યાં પ્રતિમાયાં ચારાધિત એવ, અધુના પારિતપ્રતિમોઽહમ્”
ઇતિ ગુરુસમક્ષં કીર્તનાત્, એવં ચ આરાધિતા=અગ્નિઃ સમસ્તૈઃ પ્રકારૈર્નિષ્ઠાં નીતા,
અત એવ-આજ્ઞયા=જિનાજ્ઞયા-અનુપાલિતાઽપિ ભવતીતિ । અત્રેદં વોદ્યમ્-પ્રથમે

હૈ-કિ શરીર સે સમુચિત કાલ મેં હસ પ્રતિમા કા સવિધિ ગ્રહણ પાલન
કરના ન કિ મનોરથ માત્ર સે પાલન કરના-“પાલિતા” કા તાત્પર્ય
હૈ-અસાવધાની સે હસ અક્ષુ પ્રતિમાકા પાલન નહીં કરના કિન્તુ ઉપયોગ
દેકર હસકા પાલન કરના “શોધિતા” કા તાત્પર્ય હૈ-પારણા કે દિન
ગુરુ આદિ દ્વારા દિયે ગયે અવશિષ્ટ ભોજન સે અથવા અતિચાર રૂપ
કીચડ કે પ્રક્ષાલન સે નિર્મલ કર લેના “તીરિતા” કા તાત્પર્ય હૈ-
જિતને સમય કી હસકે પાલન કી અવધિ હૈ. હસ અવધિ કે પૂર્ણ હો
જાને પર મી કુછ સમય તક ઓર હસમેં અવસ્થિત (ઠહરના) રહના
કીર્તિતા કા તાત્પર્ય હૈ-પારણા કે દિન “યહ અભિગ્રહ વિશેષ મૈને
કિયા થા સો વહ મૈને હસ પ્રતિમા મેં આરાધિત કર લિયા હૈ અતઃ અવ
મેં પૂર્ણરૂપ સે આરાધિત પ્રતિમાવાલા હો ચુકા હું” હસ પ્રકાર સે ગુરુ
કે સમક્ષ કીર્તન કરના હસ પ્રકાર સે હન સમસ્ત પ્રકારોં કે સાથ પૂર્ણતા

સમુચિત કાળમાં આ પ્રતિમાને સવિધિ ગ્રહણ કરવી-જેટલે કે મનોરથ માત્રથી
જ તેનું પાલન કરી શકાતું નથી-‘પાલિતા’ આ પદનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે
છે-અસાવધાનીથી આ કિશ્કુપ્રતિમાનું પાલન કરવું જોઈએ નહીં, પરંતુ ઉપયોગ
પૂર્વક તેનું પાલન કરવું જોઈએ. ‘શોધિતા’ આ પદનો ભાવાર્થ આ પ્રકારનો
છે-પારણાને દિવસે ગુરુ આદિ દ્વારા આપવામાં આવેલા અવશિષ્ટ ભોજન વડે
અથવા અતિચારરૂપ કીચડના પ્રક્ષાલન વડે વિશુદ્ધિ કરી લેવી જોઈએ. ‘તીરિતા’
આ પદનો ભાવાર્થ આ પ્રકારનો છે-તેના પાલનની જેટલા સમયની અવધિ
હોય તેટલા સમય પૂર્ણ થઈ ગયા બાદ પણ થોડો વધુ સમય તેમાં સ્થિર રહેવું
‘કીર્તિતા’ આ પદનો ભાવાર્થ નીચે પ્રમાણે છે-“મેં આ અભિગ્રહવિશેષ ધારણ
કર્યો હતો-આ પ્રતિમાની આરાધના મેં શરૂ કરી હતી, અને હવે મેં આ
પ્રતિમાની આરાધના કરી લીધી છે, તેથી હવે હું પૂર્ણરૂપે આરાધિત પ્રતિમા
વાળો થઈ ચૂક્યો છું,” આ પ્રકારે પારણાને દિવસે ગુરુની સમક્ષ કહેવું તેનું
નામ કીર્તિતા આરાધના છે. યથાસૂત્ર આદિ સમસ્ત પ્રકારે જ્યારે તે પ્રતિમાની

દશકે પ્રથમદિવસે એકાદત્તિ ભક્તસ્ય એકા દત્તિઃ પાનકસ્ય, દ્વિતીયે દિવસે દ્વે દત્તી ભક્તસ્ય દ્વે દત્તી પાનકસ્ય, તૃતીયે દિવસે તિસ્રો દત્તયો ભક્તસ્ય તિસ્રો દત્તયઃ પાનકસ્ય, इत्येवं क्रमेण प्रतिदिनमेकैकदत्तिवृद्ध्या दशमे दिवसे दश दत्तयो भक्तस्य दश दत्तयः पानकस्येत्येकस्मिन्दशके सर्वसंमेलने पञ्चपञ्चाशदत्तयो भक्तस्य पञ्चपञ्चाशदत्तयश्च पानकस्य भवन्ति । एवं क्रमेणैव द्वितीयादिष्वपि दशकेषु प्रत्येकदशके पञ्चपञ्चाशदत्तयो भक्तस्य पञ्चपञ्चाशदत्तयः पानकस्य च भवन्तीति । दशसु दशकेषु पञ्चाशदधिकगञ्जशतसंख्यका दत्तयो भक्तस्य, तावत्यो दत्तयश्च पानकस्य, परन्तुत्र पानकस्य दत्तयः अविवक्षिता बोध्याः । यद्वा-प्रथमे

કો પ્રાપ્ત જબ ઘણું પ્રતિષ્ઠા હો જાતી હૈ તબ વહ જિનાજા કે અનુસાર અનુપાલિત હુઈ કંઈ જાતી હૈ યહાં હસ પ્રકાર સે સમપ્તના ચાહિયે- પ્રથમ દશક કે પ્રથમ દિવસમેં ભક્ત કી એક દત્તિ હોતી હૈ ઓર પાનક કી ઓ એક દત્તિ હોતી હૈ, દ્વિતીય દિવસમેં ભક્ત કો દો દત્તિયાં ઓર પાનક કી ઓ દો દત્તિયાં હોતી હૈં । તીસરે દિનમેં ઓ ભક્ત કી ત્રીન દત્તિયાં ઓર પાનક કી ઓ ત્રીન દત્તિયાં હોતી હૈં । હસ ક્રમ સે પ્રતિદિન એક એક દત્તિકી વૃદ્ધિ સે દશમેં દિવસમેં દશ દત્તિયાં ભક્તકી ઓર દશ હી દત્તિયાં પાનક કી હોતી હૈં હસ પ્રકાર એક દશકમેં સબ દત્તિયાં મિલકર ૫૫ હો જાતી હૈં । હસી ક્રમ સે હી દ્વિતીય દશકોમેં ઓ ભક્ત કી ઓર પાનક કી દત્તિયાં હોતી હૈં । સબ દશ દિનોંકી દત્તિયાં ૫૫૦ મિલકર હો જાતી હૈં । પરન્તુ યહાં પર પાનક કી દત્તિયાં વિવક્ષિત નહીં

આરાધના પૂરી થાય છે ત્યારે જ તેનું જિનાજાનુસાર પાકન થયું ગણાય છે. આ પ્રતિભાની આરાધના કેવી રીતે થાય છે, તે હવે પ્રકટ કરવામા આવે છે—

પ્રથમ દશકના (દસ દિવસોમાં) પ્રથમ દિવસે ભક્તની (આહારની) એક દત્તિ અને પાનની (પાણીની) એક દત્તિ લેવામાં આવે છે. બીજે દિવસે આહારની બે દત્તિ અને પાણીની બે દત્તિઓ લેવામાં આવે છે. ત્રીજે દિવસે આહારની ત્રણ દત્તિઓ અને પાનકની ત્રણ દત્તિઓ લેવામાં આવે છે. આ પ્રકારે પ્રતિદિન એક એક દત્તિની વૃદ્ધિ કરતાં કરતાં દસમે દિવસે આહારની દસ દત્તિઓ અને પાનકની દસ દત્તિઓ લેવામાં આવે છે. આ પ્રકારે પ્રથમ દશકમાં આહારની કુલ ૫૫ દત્તિઓ લેવામાં આવે છે. સૂત્રમાં પાનકની કુલ ૫૫ દત્તિઓને ગણતરીમાં લીધા વિના આહારપાનની ૫૫ દત્તિઓ કહેવામાં આવી છે. પહેલા દશક પ્રમાણે જ બીજાથી લઈને દસમા દશક સુધીના પ્રત્યેક દશકમાં પણ ૫૫-૫૫ દત્તિઓ જ લેવામાં આવે છે. આ રીતે દસે દશકની-કુલ ૧૦૦ દિવસની-૫૫૦ દત્તિઓ થાય છે. અહીં પણ પાનકની દત્તિઓની ગણતરી કર-

દશકે પ્રતિદિવસમેકૈકા દત્તિર્મક્તસ્ય એકૈકા પાનકસ્ય, દ્વિતીયે દશકે પ્રતિદિવસં દ્વે દ્વે દત્તી મક્તસ્ય દ્વે દ્વે પાનકસ્ય । એવં ક્રમેણ પ્રતિદશકે એકૈકદત્તિવૃદ્ધ્યા દશમે દશકે પ્રતિદિવસં દશદત્તયો મક્તસ્ય દશદત્તયઃ પાનકસ્ય ચ ભવન્તીતિ । અત્ર પક્ષેઽપિ મક્તપાનદત્તિસંખ્યાં પૂર્વોક્તા એવ । અત્ર પક્ષેઽપિ પાનકદત્તયઃ અવિવક્ષિતા વોધ્યા હતિ ॥ સૂ. ૭૬ ॥

પ્રતિમાધારકાશ્ર જીવા એવેતિ જીવાધિકારાત્ જીવમેદાનાહ—

મૂલમ્—દસવિહા સંસારસમાવજ્જગા જીવા પપ્પણત્તા, તં જહા—
પઠમસમયણિંદિયા ૧ અપઠમસમયણિંદિયા ૨ એવં જાવ
અપઠમસમયપંચિંદિયા ૧૦૧ દસવિહા સવ્વજીવા પપ્પણત્તા, તં
જહા—પુઠવિકાઙ્કા ૧ જાવ વણસ્સઙ્કાઙ્કા ૫ બેઙ્કાંદિયા ૬ જાવ
પંચિંદિયા ૯ અણિંદિયા ૧૦૧ અહવા--દસવિહા સવ્વજીવા
પપ્પણત્તા, તં જહા--પઠમસમયનેરઙ્કા ૧ જાવ અપઠમસમયદેવા
૮ પઠમસમયસિદ્ધા ૯ અપઠમસમયસિદ્ધા ૧૦ ॥ સૂ. ૭૭ ॥

હુઈ હૈં । અથવા—પ્રથમ દશકમેં પ્રતિદિન એક એક દત્તિ ભક્ત કી ઔર
એક એક દત્તિ પાનક કી હોતી હૈં । દ્વિતીય દશકમેં પ્રતિદિન દો-દો
દત્તિયાં ભક્ત કી ઔર દો-દો દત્તિયાં પાનક કી હોતી હૈં । સ્વ ક્રમ સે
પ્રતિ દશકમેં એક-એક દત્તિ કી વૃદ્ધિ સે દશમેં દશકમેં પ્રતિદિન દશ
દત્તિયાં ભક્ત કી ઔર દશ દત્તિયાં પાનક કી હોતી હૈં । સ્વ પક્ષમેં ઔ
ભક્ત ઔર પાનક કી દત્તિયોં કી સંખ્યા વહી પૂર્વોક્ત ૫૫૦ આતી હૈં ।
સ્વ પક્ષમેં ઔ પાનક કી દત્તિયાં અવિવક્ષિત હુઈ હૈં । એસા જાનના
ચાહિયે । સૂત્ર ॥ ૭૬ ॥

વામાં આવી નથી તેમ સમજવું. અથવા—પ્રથમ દશકના દસે દિવસોમાં પ્રતિદિન
આહારની એક એક દત્તિ અને પાનકની એક એક દત્તિ લેવામાં આવે છે.
બીજા દશકના દસે દિવસોમાં પ્રતિદિન આહારની બપ્પે દત્તિઓ અને પાનકની
બપ્પે દત્તિઓ લેવામાં આવે છે. આ પ્રકારે પ્રતિદશકમાં એક એક દત્તિની
વૃદ્ધિ કરતાં કરતાં દસમાં દશકના પ્રત્યેક દિવસે આહારની ૧૦-૧૦ અને
પાનકની દસ દસ દત્તિઓ લેવાય છે. આ પ્રકારે પણ ૧૦૦ દિવસમાં આહાર
પાનની કુલ ૫૫૦ દત્તિઓ જ ગ્રહણ કરાય છે. આ ગણતરીમાં પણ પાનકની
દત્તિઓ ગણતરીમાં લેવામાં આવી નથી, એમ સમજવું. ॥ સૂત્ર ૭૬ ॥

છાયા-દશવિધાઃ સંસારસમાવન્નકા જીવાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્યથા-પ્રથમસમય-
કેન્દ્રિયા ૧ અપ્રથમસમયકેન્દ્રિયાઃ ૨ एवं यावत् अप्रथमसमयपञ्चेन्द्रियाः १०
॥१॥ दशविधाः सर्वजीवाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पृथिवीकायिकाः यावत् वनस्पति-
कायिकाः ५ द्वीन्द्रियाः ६ यावत् पञ्चेन्द्रियाः ९ अनिन्द्रियाः ॥२॥ अथवा दशविधाः
सर्वजीवाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्रथमसमयनैरयिकाः १ अप्रथमसमयनैरयिकाः २ यावत्
अप्रथमसमयदेवाः ८ प्रथमसमयसिद्धाः ९ अप्रथमसमयसिद्धाः १० ॥३॥ सू० ७७॥

ટીકા-‘દસવિદા સંસારસમાવન્નગા’ ઇત્યાદિ—

વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । નવરમ્-પ્રથમસમયકેન્દ્રિયાઃ=એકેન્દ્રિયત્વસ્ય પ્રથમે
સમયે વર્તમાનાઃ ૧। તદ્વિન્નાસ્તુ-અપ્રથમસમયકેન્દ્રિયાઃ ૨। एवमेव प्रथमसमय-
द्वीन्द्रियाः ૩। अप्रथमसमयद्वीन्द्रियाः ૪ प्रथमसमयत्रीन्द्रियाः ૫ अप्रथमसमय-
त्रीन्द्रियाः ૬ प्रथमसमयचतुरिन्द्रियाः ૭ अप्रथमसमयचतुरिन्द्रियाः ૮ प्रथमसमय-
पञ्चेन्द्रियाः ૯ अप्रथमसमयपञ्चेन्द्रियाश्च ૧૦ व्याख्यायाः । अमुमेवार्थं सूचयितु-

પ્રતિમા ધારક જીવ હોતે હૈં અતઃ જીવાધિકાર કો લેકર અથ સૂત્ર-
કાર જીવ એદોકા કથન કરતે હૈં—

“દસ વિદા સંસાર સમાવન્નગા જીવા પન્નપ્તા” ઇત્યાદિ । સૂ. ૦ ॥ ૭૭ ॥

ટીકાર્થ-સંસારસમાવન્નક જીવ ૧૦ પ્રકારકે કહે ગયે હૈં-જૈસે પ્રથમ
સમયકેન્દ્રિય-એકેન્દ્રિય પર્યાય કે પ્રથમ સમયમેં વર્તમાન ૧ અપ્રથમ
સમયકેન્દ્રિય ૨ એકેન્દ્રિય પર્યાય કે દ્વિતીયાદિ સમયોમેં વર્તમાન इसी
प्रकार से यावत् अप्रथम समय पञ्चेन्द्रिय-१० यहां यावत् पद से-प्रथम
समय द्वीन्द्रिय ३ अप्रथम समय द्वीन्द्रिय ४ प्रथम समय त्रीन्द्रिय ५ अप्रथम
समय त्रीन्द्रिय ६, प्रथम समय चतुरिन्द्रिय, अप्रथम समय चतुरिन्द्रिय
८ प्रथमसमयपञ्चेन्द्रिय ९ अप्रथमसमय पञ्चेन्द्रिय १० “इन पदोंका संग्रह

અનજ પ્રતિમા ધારણ કરી શકે છે. આ પ્રકારના પૂર્વસત્ર સાથેના
સંબંધને લીધે સૂત્રકાર હવે ‘અવબોદોનુ’ કથન કરે છે—

“દસવિદા સંસારસમાવન્નગા જીવા પન્નપ્તા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૦)

ટીકાર્થ-સંસારસમાવન્નક જીવો દસ પ્રકારના કહ્યા છે-(૧)પ્રથમસમયકેન્દ્રિય,
(૨) અપ્રથમસમયકેન્દ્રિય, (૩) પ્રથમસમયદ્વીન્દ્રિય, (૪) અપ્રથમસમયદ્વીન્દ્રિય,
(૫) પ્રથમસમયત્રીન્દ્રિય, (૬) અપ્રથમસમયત્રીન્દ્રિય, (૭) પ્રથમસમયચતુરિન્દ્રિય,
(૮) અપ્રથમસમયચતુરિન્દ્રિય, (૯) પ્રથમસમયપંચેન્દ્રિય અને (૧૦) અપ્રથમ
સમયપંચેન્દ્રિય.

એકેન્દ્રિય પર્યાયના પ્રથમ સમયમાં વર્તમાન જીવોને પ્રથમસમય એકે-
ન્દ્રિય કહે છે. એકેન્દ્રિય પર્યાયના દ્વિતીય આદિ સમયોમાં વર્તમાન જીવોને
અપ્રથમસમયકેન્દ્રિય કહે છે. એજ પ્રમાણે બાકીનાં પદોનો અર્થ સમજવો.

માદ-‘એવં જાન અપદમસમયપંચિદિયા’ ઇતિ ॥૧॥ તથા-સર્વજીવાઃ-સર્વેચ તે જીવાથેતિ, સંસારિણઃ સિદ્ધાથેત્યર્થઃ । તે જીવા દશવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-પૃથિવીકાયિકા ઇત્યાદિ । વ્યાખ્યા સ્પષ્ટા । પ્રથમેન યાવત્પદેન-‘અપ્કાયિકાઃ ૨ તેજસ્કાયિકાઃ ૩ વાયુકાયિકાઃ’ ઇતિ પદત્રયં ગ્રાહ્યમ્ । દ્વિતીયેન યાવત્પદેન તુ-‘ત્રીન્દ્રિયાઃ ૭ ચતુરિન્દ્રિયાઃ ૮’ ઇતિ પદદ્વયં ગ્રાહ્યમ્ । ‘અનિન્દ્રિયાસ્તુ-સિદ્ધાઃ, અપર્યાપ્તાઃ, તથા-ઇન્દ્રિયોપયોગવર્જિતત્વાત્કેવલિન ઇતિ ॥૨॥ અથવા-સર્વજીવાઃ દશવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-પ્રથમસમયનૈરયિકાઃ=નૈરયિકત્વસ્ય પ્રથમે સમયે

હુઆ હૈ ચહી ઘાત” એવં જાન અપદમસમયપંચિદિયા “હસ સૂત્રજ પાઠ દ્વારા પ્રકટકી ગઈ હૈ ૧૦ તથા-સમસ્ત જીવ સંસારી એવં સિદ્ધ જીવ-દશ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ-જેસે-પૃથિવીકાયિક ૧ યાવત્ વનસ્પતિકાયિક ૫ ત્રીન્દ્રિય ૬, યાવત્ પચ્ચેન્દ્રિય ૯ ઓર અનિન્દ્રિય ૧૦ (૨) અથવા-સર્વ જીવ દશ પ્રકાર કે કહે ગયે હૈ-પ્રથમસમયનૈરયિક ૧ અપ્રથમ સમય નૈરયિક ૨ યાવત્ અપ્રથમ સમય દેશ ૮ પ્રથમ સમય સિદ્ધ ૯ ઓર અપ્રથમ સમય સિદ્ધ ૧૦ યહાં દ્વિતીય સૂત્રમે પ્રથમ યાવત્ પદ સે “અપ્કાયિક ૫ તેજસ્કાયિક ૩ વાયુકાયિક ૩” હન ત્રીન પદોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ. તથા-દ્વિતીય યાવત્પદ સે-તેજન્દ્રિય ઓર ચૌહન્દ્રિય “હન દો જીવોંકા ગ્રહણ હુઆ હૈ અનિન્દ્રિય પદ સે સિદ્ધ ઓર અપર્યાપ્ત જીવ તથા ઇન્દ્રિય-ઉપયોગવર્જિત હોને સે કેચલી ગૃહીત હુએ હૈ. નૈરયિક પર્યાય કે પ્રથમ સમય મેં ધર્તજ્ઞાન જીવ પ્રથમ સમય નૈરયિક કહે ગયે હૈ । તથા-નૈરયિક

“એવં જાન અપદમસમયપંચિદિયા” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ થતાં હસે લેટે ઉપર પ્રકટ કરવામાં આવ્યા છે. ૧૧।

અમસ્ત જીવોના (સંસારી જીવોના અને સિદ્ધ જીવોના) નીચે પ્રમાણે ૧૦ પ્રકાર કહ્યા છે-પૃથ્વીકાયિકથી વનસ્પતિકાયિક પર્યાન્તના પાંચ પ્રકારો (૬) ત્રીન્દ્રિય, (૭) ચતુરિન્દ્રિય, (૮) પચ્ચેન્દ્રિય અને (૧૦) અનિન્દ્રિય. ૧૨।

અથવા સમસ્ત જીવોના નીચે પ્રમાણે હસ પ્રકાર કહ્યા છે-પ્રથમ સમય સિદ્ધ અને (૧૦) અપ્રથમસમયસિદ્ધ. ૧૩।

ખીજા ત્રણમાં “યાવત્ (પર્યાન્ત)” પદ દ્વારા ‘અપ્કાયિક, તેજસ્કાયિક વાયુકાયિક’, આ ત્રણ પદોને ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે.

ખીજા ત્રણમાં ‘અનિન્દ્રિય’ પદ દ્વારા સિદ્ધ, અપર્યાપ્ત જીવો તથા ઇન્દ્રિયોપયોગવર્જિત હોવાને કારણે કેવલીને ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે. નૈરયિક

ટીકા-‘વાસસયાડયસ્સ’ इत्यादि—

वर्षशतायुष्कस्य वर्षाणां शतमायुः=जीवितकालो यस्य तस्य पुरुषस्य खलु दशसंख्यका दशाः=अवस्थाः प्रज्ञाः । अत्र वर्षशतायुरिति पदमुपलक्षणम् । ततश्च यस्मिन् काले यस्य यावत् पूर्णमायुस्तावदायुर्युक्तस्य पुरुषस्य दश दशा बोध्याः । अन्यथा-पूर्वकोट्यायुष्कस्य पुरुषस्य बाल्ये एव दशापि दशाः समापद्येरन् । ता दश दशा इमाः, तथाहि-तद्यथा-बाला १ क्रीडा २ च” इत्यादि । तत्र-बाला-बाल-स्य=बालकस्य या दशा साऽपि धर्मधर्मिणोरभेदाद् बाला बोध्या ।

अब सूत्रकार संसारी जीव के प्रस्ताव को लेकर संसारी जीव के पर्याय विशेषोंका कथन करते हैं-

‘वाससयाडयस्स णं पुरिसस्स’-इत्यादि । सूत्र ॥ ७८ ॥

टीकार्थ-जिसकी आयु १०० वर्षकी है ऐसे पुरुषकी अवस्थाएँ दश कही गई हैं-जैसे-बाला १ क्रीडा २ मन्दा ३ बला ४ प्रज्ञा ५ हायनी ६ प्रपञ्चा ७ प्राग्भारा ८ मुङ्मुखी ९ और स्वापनी १०

यहां वर्षशतायुष्क शब्द उपलक्षण रूप है इस से जिस कालमें जिसकी जितनी पूर्ण आयु होती है उतनी आयु से युक्त पुरुष भी गृहीत हुआ है सो इसकी भी १० दश अवस्थाएँ होती हैं । यदि ऐसा न हो तो जिस पुरुष की एक कोटिपूर्व की आयु होती है उस पुरुष की बाल्य-कालमें ही दश दशाएँ हो जावेगी दश दशाएँ जो कही गई हैं-सो उनका तात्पर्य ऐसा है-बाल-बालक-की जो दशा है वह भी धर्म धर्मि

સંસારી જીવોની વાત આલી રહી છે. તેથી હવે સૂત્રકાર સંસારીજીવોના ‘પર્યાયવિશેષોનું’ કથન કરે છે. “વાસસયાડયસ્સ ણં પુરિસસ્સ” ઇત્યાદિ—(સૂ ૭૮)

ટીકાર્થ-જેનું આયુષ્ય ૧૦૦ વર્ષનું હોય એવા મનુષ્યની અવસ્થાઓ દસ કહી છે તે દસ અવસ્થાઓ નીચે પ્રમાણે સમજવી—(૧)બાલા, (૨) ક્રીડા, (૩) મન્દા, (૪) બલા, (૫) પ્રજ્ઞા, (૬) હાયની, (૭) પ્રપંચા, (૮) પ્રાગ્ભારા, (૯) મુઙ્મુખી અને (૧૦) સ્વાપની.

અહીં “૧૦૦ વર્ષના આયુષ્યવાળો” આ શબ્દ ઉપલક્ષણરૂપ છે. જે કાળમાં જેનું જેટલું પૂર્ણ આયુ હોય એટલા આયુવાળા પુરુષને પણ “વર્ષ શતાયુષ્ક” પદ દ્વારા ગ્રહણ કરી શકાય છે, અને એવા પુરુષની પણ ઉપર પ્રમાણે દસ અવસ્થાઓ જ સમજવી. જો આ પ્રમાણે માનવામાં ન આવે, તો જે પુરુષનું એક કોટિપૂર્વનું આયુષ્ય હોય છે, તે પુરુષની દસ અવસ્થાઓ તો તેના બાલ્ય કાલમાં જ આવી જશે. હવે આ દસ અવસ્થાઓનો ભાવાર્થ પ્રકટ કરવામાં આવે છે—

उक्तंचैतत्स्वरूपम्—“ जायमेत्तस्स जंतुस्स, जा सा पढमिया दसा ।

न तत्थ सुहदुक्खाइं बहुं जाणंति वालया ॥१॥ ”

छाया—जातमात्रस्य जन्तोर्यां सा प्राथमिका दशा ।

न तत्र सुखदुःखानि बहु जानन्ति वालकाः ॥१॥ इति ।

शतवर्षायुष्कस्य जनस्य इयं दशा दशवर्षપ્રમાણા વોધ્યા । एवमग्रेऽपि दश-
वर्षप्रमाणता बोध्या । एवं पूर्वकोटयाद्यायुष्काणामेकैका दशा तत्तदाशुपो दशम-
भागप्रमाणा बोध्येति ॥१॥ तथा—क्रीडाप्रधाना दशा क्रीडेति,

तदुक्तम्—“ विइयं च दसं पत्तो, नाणाक्रीडाहिं कीडइ ।

न तत्थ कामभोगेहि, तिन्वा उप्पज्जई मई ॥१॥

को अभेद मानकर वाला दशा-अवस्था है कहा भी है—

“ जायमेत्तस्स जंतुस्स ’ इत्यादि ।

जात मात्र (जन्मते ही) जन्तु की जो प्राथमिक दशा है वही बाल दशा है इस दशामें वह सुख दुःखका भान स्पष्ट रूप से नहीं कर पाता है जिस मनुष्य की आयु १०० वर्ष की है उसकी बाल दशा १० वर्ष तक की होती है, इसी प्रकार से आगे भी दशवर्ष प्रमाणता जाननी चाहिये । जिन जीवों की एक कोटिपूर्व की आयु होती है, उस जीवोंकी आयुका जो दशवां भाग है वह बाल अवस्थारूप होता है ऐसा समझना चाहिये तथा—जो अवस्था क्रीडा प्रधान होती है वह क्रीडा अवस्था है कहा भी है—

(૧) બાલાદશા—બાલ્યાવસ્થા અથવા બાલકદશાનું નામ બાલાદશા છે. ધર્મ અને ધર્મિમાં અલેદ માનીને આ દશાનું નામ “બાલાદશા કહેવામાં આવ્યું છે. કહ્યું પણ છે કે—“ જાયમેત્તસ્સ જંતુસ્સ ” ઇત્યાદિ—

જાતમાત્ર (જન્મતા જ) જન્તુની જે પ્રાથમિક દશા છે તેને બાલદશા કહે છે. આ દશામાં તે સુખદુઃખનું ભાન સ્પષ્ટરૂપે કરી શકાતું નથી. જે માણસનું આયુષ્ય ૧૦૦ વર્ષનું હોય છે, તે માણસની બાલાદશા દસ વર્ષની ઉંમર સુધીની સમજવી. એજ પ્રમાણે બીજી અવસ્થાઓ પણ દસ-દસ વર્ષપ્રમાણ સમજવી. જે જીવેનું આયુષ્ય એક કોટિ પૂર્વનું હોય છે, તે જીવેના દસમાં ભાગનું આયુષ્યકાળને—આયુષ્યકાળના શરૂઆતના દસમાં ભાગના કાળને—તેની બાલ્યાવસ્થા ગણવામાં આવે છે.

ક્રીડાવસ્થા—જે અવસ્થા ક્રીડાપ્રધાન હોય છે. તેને ક્રીડાવસ્થા કહે છે કહ્યું પણ છે કે—“ વિइयं च दसं पत्तो ” ઇત્યાદિ—

છાયા—દ્વિતીયાં ચ દશાં પ્રાપ્તો, નાનાક્રીડાભિઃક્રીડતિ ।

ન તત્ર કામભોગેષુ તીવ્રા ઉત્પન્નતે મતિઃ ॥૧॥ ઇતિ ॥૨॥

તથા—મન્દા—યસ્યાં દશાયાં જનઃપ્રશસ્તબલબુદ્ધ્યભાવાત્ તત્સાધ્યકાર્યમુપદર્શ-
યિતુમસમર્થો ભવતિ, પરન્તુ ભોગાનુભૂતો સ ક્ષમો ભવતિ સા દશા મન્દા ।

તદુક્તમ્—“તદ્યં ચ દસં પત્તો, અણુપુવ્વીષ જો નરો ।

સમત્થો મુંજિતં ભોગે, જડ્ સે અત્થિ ઘરે ધ્રુવા ॥૧॥”

છાયા—તૃતીયાં ચ દશાં પ્રાપ્ત આનુપૂર્વ્યાં યો નરઃ ।

સમર્થો ભોક્તું ભોગાન્ યદિ તસ્ય સન્તિ ગૃહે ધ્રુવાઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

અર્થ ભાવઃ—મન્દાભિધાનાં તૃતીયાં દશામ્ આનુપૂર્વ્યાં=ક્રમેણ પ્રાપ્તો યો નરઃ
સ ભોગાન્ ભોક્તું સમર્થો ભવતિ, યદિ તે ભોગાસ્તસ્ય જનસ્ય ગૃહે ધ્રુવાઃ=નિશ્ચિતાઃ
ભવેયુરિતિ ॥૩॥ તથા—વલા—યસ્યામવસ્થાયાં પુરુષો વલયુક્તો ભવતિ, સા દશા
વલયોગાદ્ વલેત્યુચ્યતે ।

“ચિદ્યં ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ ।

દ્વિતીય અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઆ મનુષ્ય જો નાના પ્રકારકી ક્રીડાઓ
કો કરતા હૈ વહી ઉસકી ક્રીડા અવસ્થા હૈ, હસ અવસ્થા મૈં વહ કામ-
ભોગોમૈં તીવ્રમતિવાલા—ઉત્પન્ન વહીં હોતા હૈ । જિસ દશામૈં મનુષ્ય
પ્રશસ્ત બલ બુદ્ધિ કે અભાવ સે પ્રશસ્ત બલ બુદ્ધિ સે સાધ્યકાર્ય કો
દિલ્લલને કે લિયે અસમર્થ હોતા હૈ, પરન્તુ ભોગોં કી અનુભૂતિ કરને મૈં
સમર્થ હોતા હૈ એસી વહ ઉસકી દશા મન્દા કહી ગઈ હૈ. કહા બી હૈ—

“તદ્યં ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ ।

મન્દાનામ કી તૃતીય દશાક્રો ક્રમશઃ પ્રાપ્ત હુઆ જો મનુષ્ય ભોગોં
કો ભોગને મૈં સમર્થ હોતા હૈ યદિ વે ભોગ ઉસકે ઘરમૈં ધ્રુવ—નિશ્ચિત—

દ્વિતીય અવસ્થા જેણે પ્રાપ્ત કરી છે એવો મનુષ્ય વિવિધ પ્રકારની ક્રીડાઓ
કર્યા કરે છે, તેથી જ આ અવસ્થાને ક્રીડા અવસ્થા કહે છે. આ અવસ્થામાં
માણસ કામભોગોની તીવ્ર અભિલાષાવાળો હોતો નથી.

(૩) મન્દા અવસ્થા—જે અવસ્થામાં પ્રશસ્ત બલબુદ્ધિના અભાવને લીધે,
મનુષ્ય પ્રશસ્ત બલબુદ્ધિ વડે સાધ્ય એવાં કાર્યોને કરી શકવાને અસમર્થ હોય
છે, પરન્તુ ભોગોની અનુભૂતિ કરવાને સમર્થ હોય છે, તે અવસ્થાનું નામ મન્દા
અવસ્થા છે. કહ્યું પણ છે કે—“તદ્યં ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ—

મન્દા અવસ્થા જેણે પ્રાપ્ત કરી છે એવો મનુષ્ય ભોગોને ભોગવવાને

તદુક્તમ્—“ચતુર્થી ચ વલા નામ, જં નરો દસમસ્સિત્તો ।
સમર્થો વલં દરિસેઝં, જહ્ હોઝ નિરુપદ્રવો ॥૧॥”

છાયા—ચતુર્થી ચ વલા નામ, યાં નરો દશામાશ્રિતઃ ।
સમર્થો વલં દર્શયિતું યદિ ભવતિ નિરુપદ્રવઃ ॥૧॥ ઇતિ ।

નિરુપદ્રવઃ=રોગાદ્યુપદ્રવવર્જિત ઇત્યર્થઃ ॥૪॥

તથા—પ્રજ્ઞા—પ્રકર્ષેણ જ્ઞાયતેઽનયેતિ પ્રજ્ઞા—અભીપ્રાયસમ્પાદનવિષયા પરિવા-
રાભિવૃદ્ધિવિષયા ચા બુદ્ધિઃ, તદ્યોગા દશાઽપિ પ્રજ્ઞા ।

તદુક્તમ્—“પંચમિંચ દસં પત્તો, અણુપુઞ્વીષ જો નરો ।
ઈચ્છિયત્થં વિચિંતેઝ, કુઙ્ઘં ચામિકંસર્વ ॥૧॥”

છાયા—પંચમીંચ દશાં પ્રાપ્તઃ, આનુપૂર્વ્યાં ચ યો નરઃ ।
ઈપ્સિતાર્થં વિચિન્તયતિ, કુટુમ્બં ચામિકાઙ્ક્ષતિ ॥૧॥ ઇતિ ॥૫॥

હોતે હૈં તો । તથા—જિસ અવસ્થા મેં પુરુષ બલ યુક્ત હોતા હૈં એસી વહ
દશાં બલ કે યોગ સે બલાં કહી ગઈ હૈં. કહાં બી હૈં—

“ચતુર્થીય વલા નામ’ ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થી દશા કા નામ વલા હૈં ઇસ દશા કો પ્રાપ્ત હુઆ મનુષ્ય અપને
બલકા પ્રદર્શન કરને મેં સમર્થ હોતા હૈં યદિ વહ રોગોદિ ઉપદ્રવોં સે
રહિત હોતા હૈં તો જિસ દશા પ્રાપ્ત હુઆ પ્રાણી—મનુષ્ય—ઈચ્છિત અર્થ
કે સમ્પાદન કરને મેં સમર્થ બુદ્ધિવાલા એવં પરિવાર કી વૃદ્ધિ કરનેવાલી
બુદ્ધિવાલા હોતા હૈં, વહ દશા પ્રજ્ઞા (બુદ્ધિ) કે યોગ સે પ્રજ્ઞા દશા હૈં ।
કહાં બી હૈં—“પંચમિં ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ—

સમર્થ હોય છે. જે તેના ઘરમાં ભોગોને ભોગવવાની સગવડ હોય, તો તેમને
ભોગવવાને તે અવશ્ય સમર્થ હોય છે.

(૪) બલા અવસ્થા—જે અવસ્થામાં માણસ શારીરિક બળથી યુક્ત હોય
છે, તે અવસ્થાને બલના યોગને કારણે બલાઅવસ્થા કહે છે. કહું પણ છે કે—

“ચતુર્થીય વલા નામ”

ચોથી દશાનું નામ-બલાવસ્થા છે. આ અવસ્થામાં જે માણસ નીરોગી
હોય તો પોતાના બળનું પ્રદર્શન કરવાને સમર્થ હોય છે.

(૫) પ્રજ્ઞાદશા—જે અવસ્થામાં માણસ ઇચ્છિત અર્થની પ્રાપ્તિ કરાવનારી
બુદ્ધિથી યુક્ત હોય છે અને પોતાના પરિવારની વૃદ્ધિ કરનારી બુદ્ધિથી સંપન્ન
હોય છે, તે દશાને પ્રજ્ઞાના યોગથી પ્રજ્ઞાદશા કહે છે. કહું છે કે—“પંચમિં
ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ

તથા-હાયની-હીયતે=ક્ષીયતે જનનામિન્દ્રિયશક્તિર્યસ્યાં દશાયાં સા દશા ।
ઇન્દ્રિયાણાં વિષયગ્રહણાક્ષમકારિણી દશેત્યર્થઃ ।

તદુક્તમ્—“છટ્ટી ડ હાયણી નામં, જં નરો દસમસ્સિઓ ।

વિરજ્જઈય કામેસુ, ઇંદિણસુ ય હાયઈ ॥ ૧ ॥”

છાયા—ષષ્ઠી તુ હાયની નામ યાં નરો દશામાશ્રિતઃ ।

વિરજ્યતે ચ કામેષુ ઇન્દ્રિયેષુ ચ હીયતે ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૬ ॥

તથા-પ્રપન્ચા-પ્રપન્ચતે=વ્યનક્તિ વૃદ્ધતાં, પ્રપન્ચયતિ વિસ્તારયતિ શ્લેષ્મકા-
સાદિરોગાન્ વા, પ્રપન્ચયતિ=અવપાતયતિ વાઽઽરોમ્યાદ યા દશા સા ।

ઉક્તં ચાત્ર—“સત્તમિંચ દસં પત્તો, આણુપુવ્વીણ જો નરો ।

નિચ્છહઈ ચિક્કણં ચેલં, ચાસઈ ય અભિક્કણં ॥ ૧ ॥”

છાયા—સપ્તમીંચ દશાં પ્રાપ્ત આનુપૂર્વ્યા યો નરઃ ।

નિષ્કાસયતિ ચિક્કણં શ્લેષ્માણં કાસતે ચ અભીક્ષણમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ ૭ ॥

હસકા અર્થ પૂર્વોક્ત જૈસા હી હૈ । જિસ અવસ્થામેં મનુષ્યોં કી ઇન્દ્રિ-
યશક્તિ ક્ષીણ હોને લગતી હૈ વહ દશા હાયની હૈ યહ દશા ઇન્દ્રિયોંકો
અપને ૨ વિષયકો ગ્રહણ કરાને મેં અસમર્થ હોને લગતી હૈ કહા મી હૈ—

“છટ્ટી ડ હાયણી નામં” ઇત્યાદિ ।

છટ્ટી-દશા હાયની હૈ હસ અવસ્થામેં પહુંચા હુઆ મનુષ્ય કામ-
ભોગોં સે વિરક્તતા કી ઓર વઢ જાતાં હૈ ઓર ઇન્દ્રિયોં કે બલ સે મી
વિહીન હો જાતા હૈ પ્રપંચા નામકી જો સાતવીં દશા હૈ વહ વૃદ્ધતાકો
પ્રકટ કર દેલી હૈ અથવા શ્લેષ્મા-કફરોગ-યા ચાંસી આદિકા વિસ્તાર
કરતી હૈ અથવા-આરોગ્ય સે પતિત કરતી હૈ કહા મી હૈ—

હાયની અવસ્થા—જે અવસ્થામાં માણસની ઇન્દ્રિયોની શક્તિ ક્ષીણ થવા
માંડે છે, તે દશાનું નામ હાયનીદશા છે. આ અવસ્થાએ પહોંચેલા મનુષ્યની
ઇન્દ્રિયો પોતપોતાના વિષયને ગ્રહણ કરવાને અસમર્થ થવા માંડે છે. કહ્યું
પણ છે કે—“છટ્ટી ડ હાયણી નામ” ઇત્યાદિ.

છટ્ટીદશાનું નામ હાયની દશા છે. આ અવસ્થાએ પહોંચેલા મનુષ્ય કામ-
લોભાથી વિરક્ત થતો જાય છે અને તેની ઇન્દ્રિયોની શક્તિ પણ હ્રાસ
થવા માંડે છે.

પ્રપંચદશા—આ સાતમી દશ વૃદ્ધા અવસ્થાનાં પાંચો પ્રકટ કરવા માંડે
છે. અથવા કંઈની વૃદ્ધિ થવાને લીધે ઉધરસ, દમ આદિ રોગો આ અવસ્થાએ
પહોંચેલા મનુષ્યને લાગુ પડે છે. અથવા આ અવસ્થાએ પહોંચેલા માણસનું
આરોગ્ય બગડે છે. કહ્યું પણ છે કે—“સત્તમિં ચ દસં પત્તો” ઇત્યાદિ.

તથા-પ્રાગ્ભારા-પ્રાગ્ભારમ્=ઈષદવનતં શરીરં યસ્યાં સા ।

ઉક્તં ચાત્ર—“સંકુચિ ચ વલીચમ્મો, સંપત્તો અદ્વિમિં દસં ।

નારીણ મળભિષ્પેઓ, જરાણ પરિણામિઓ ॥૧૧॥ ”

છાયા—સંકુચિતવલીચમૌ સંપ્રાપ્તઃ અષ્ટમીં દશામ્ ।

નારીણામનભિપ્રેતો, જરયા પરિણામિતઃ ॥૧૧॥ ઇતિ ॥૮॥

તથા-મુહુમુહી-મોચનં મુક્-પરિત્યાગઃ, તં પ્રતિ મુખં યસ્યાં સા । જરયા
ગૃહીતશરીરસ્ય પુરુષસ્ય યસ્યાં દશાયાં શરીરત્યાગં પ્રતિ ઉદ્યુક્તતેવ ભવતિ સા
દશેત્યર્થઃ ।

“સત્તમિંચ દસં પત્તો ’ ઇત્યાદિ ।

ક્રમશઃ સસમી અવસ્થા પર પહુંચા હુઆ વ્યક્તિ કો ચિકના ૨
કફ નિકલતા હૈ ઓર વહ ચાર ૨ ઝાંસતા હૈ । જિસ અવસ્થામેં શરીર
કુછ ૨ જુક જાતા હૈ-વહ પ્રાગ્ભારા હૈ કહા ભી હૈ—

“સંકુચિયવલીચમ્મો ” ઇત્યાદિ ।

હસ અવસ્થાકો પ્રાપ્ત હુએ મનુષ્ય કે શરીર પર ઝુરિયાં પડ જાતી
હૈ ઝાલ કુકર જાતી હૈ, ઓર વહ સ્ત્રિયોં કો અનભિપ્રેત હો જાતા હૈ ।
અર્થાત્ ઘરકી સ્ત્રી ભી ડસસે સ્નેહ નહીં દિલ્લાતી હૈ । જરા સે ગૃહીત
શરીરવાલે પુરુષકા જિસ અવસ્થા મેં શરીર ત્યાગ કે પ્રતિ તૈયારી જૈસી
હોને લગતી હૈ ઉત્કંઠા જૈસી વડને લગતી હૈ વહ મુહુમુહી દશા હૈ । કહા

સાતમી અવસ્થાએ પહોંચેલા માણસ ચીકણો ચીકણો કંક કાઢ્યા કરે છે.
અને વારંવાર ઉધરસ ખાધા કરે છે.

પ્રાગ્ભારા-જે અવસ્થામાં માણસનું શરીર ટટાર રહેવાને બદલે ઝુકવા
માંડે છે-પીઠ કમાનના જેવી થઈ જાય છે, છે અવસ્થાનું નામ નામ પ્રાગ્ભારા
અવસ્થા છે. કહ્યું પણ છે કે-“સંકુચિયવલી ચમ્મો ” ઇત્યાદિ—

પ્રાગ્ભારાવસ્થાએ પહોંચેલા મનુષ્યના શરીર પર કરચલીઓ પડી જાય
છે. તેની આમડી લૂખી (ફક્) થઈ જાય છે અને તેની પત્ની પણ તેના તરફ
સ્નેહ બતાવતી નથી.

મુહુમુહી અવસ્થા-જરાથી ગૃહીત થયેલા-વૃદ્ધાવસ્થાએ પહોંચેલા શરીર
વાળો પુરુષ જે અવસ્થાએ શરીર ત્યાગની જાણે કે તૈયારી કરી રહ્યો હોય
એવું લાગે છે-અથવા આ શરીર હવે વહેલામાં વહેલી તકે છૂટી જાય એવી
ઉત્કંઠા જે અવસ્થામાં વૃદ્ધિ પામતી જાય છે, તે અવસ્થાનું નામ મુહુમુહીદશા
છે. કહ્યું પણ છે કે-“નવમી મુંમુહી નામ ” ઇત્યાદિ.

ઉક્તં ચાત્ર—“નવમી મુંમુહી નામ, જં નરો દસમસ્સિઓ ।

જરા ઘરે વિણસ્સંતે, જીવો વસઇ અકામઓ ॥૧॥ ”

છાયા—નવમી મુદ્ગમુખી નામ યાં નરો દશામાશ્રિતઃ ।

જરયા મૃદ્ધે વિનશ્યતિ જીવો વસતિ અકામતઃ ॥૧॥ઈતિ॥૯॥

તથા—સ્વાપની—સ્વાપયતિ—શાયયતિ—નિદ્રાયુક્તં કરોતિ યા સા । નિદ્રાકારિણી દશેત્યર્થઃ । અસ્યાં દશાયાં નરો યથા ભવતિ ।

તદુક્તમ્—“હીનમિન્નસ્સરો દીણો, વિવરીઓ વિચિત્તઓ ।

દુબ્બલો દુવિલ્લઓ વસઇ સંપત્તો દસમિં દસં ॥ ૧ ॥”

છાયા—હીનમિન્નસ્વરો દીનેા, વિપરીતો વિચિત્રકઃ ।

દુર્બલો દુઃખિતો વસતિ, સંપ્રાપ્તો દશમીં દશામ્ ॥૧॥ઈતિ॥૧૦॥સૂ ॥૭૮॥

મી હૈ—“નવમી મુંમુહી નામ’ ઇત્યાદિ ।

જિસ દશાકો પ્રાપ્ત હુઆ જીવ યહ જાનકર કિ યહ મેરા શરીર રૂપ ઘર જરા સે વિનષ્ટ હો રહા હૈ ઉસમેં વિના ઇચ્છાકે રહતા હૈ.

જિસ અવસ્થામેં મનુષ્યકો નીંદ પર નીંદ આનેલગજાતી હૈ એસી વહ નિદ્રાકારિણી દશા સ્વાપની દશા હૈ । કહા મી હૈ—“હીન મિન્નસ્સરો દીણો’ ઇત્યાદિ । ઇસ અવસ્થામેં મનુષ્ય હીન ઓર લડ્ડાલડાતે હુએ સ્વર વાલા હો જાતા હૈ દીન હો જાતા હૈ. ઇસકા ચિત્ત મી ઠિકાને પર નહીં રહતા હૈ. દુર્બલ કમજોર હો જાતા હૈ એવં દુઃખિત હુઆ વહ જિસ કિસી મી પ્રકાર સે અપને જીવન કો વ્યતીત કરતા હુઆ સમાપ્ત હોને કા અભિલાષી બન જાતા હૈ । સૂત્ર ॥૭૮॥

જે અવસ્થાએ પહોંચેલો જીવ પોતાના શરીરરૂપ ધરને વિનષ્ટ થઈ રહેલું બેઠને તેમાં અનિચ્છાએ પણ રહે છે—લાચારીથી તે શરીરને છોડી શકતો નથી, તે અવસ્થાનું નામ મુદ્ગમુખી અવસ્થા છે.

(૧૦) સ્વાપનીદશા—જે અવસ્થામાં માણસને બહુ જ ઊંઘ આવે છે એવી નિદ્રાકારિણીદશાનું નામ સ્વાપની દશા છે કહ્યું પણ છે કે—

“હીન મિન્નસ્સરો દીણો” ઇત્યાદિ—

આ અવસ્થાએ પહોંચેલો મનુષ્ય હીન અને લડખડાતા (થોથરાતા) અવાજવાળો થઈ જાય છે, દીન થઈ જાય છે; તેનું ચિત્ત પણ ઠેકાણે રહેતું નથી. તે કમજોર બની જાય છે. આ પ્રકારની દશાને લીધે દુઃખી થતો તે મનુષ્ય પોતાના મૃત્યુની પ્રતીક્ષા કરતો થકો પોતાનું શેષ જીવન વ્યતીત કરે છે. ॥ સૂત્ર ૭૮ ॥

પૂર્વસૂત્રે પુરુષાણાં દશ દશા ઉક્તાઃ, અતઃ પુરુષસમાનધર્માણાં વનસ્પતીનાં તા
દશાઃ પ્રકારાન્તરત આદ—

મૂલમ્—દસ તળવળસ્સઙ્કાઙ્યા પળ્લન્તા-મૂલે ૧ કંદે ૨
જાવ પુષ્પે ૮ ફલે ૧ બીજ ૧૦ ॥ સૂ. ૭૯ ॥

છાયા—દશ તળવનસ્પતિકાયાિકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તથા-મૂલમ્ ૧ કન્દો ૨
યાવત્ પુષ્પમ્ ૮ ફલં ૧ વીજમ્ ૧૦ ॥ સૂ. ૭૯ ॥

ટીકા—‘દસ તળવળસ્સઙ્કાઙ્યા’—ઈત્યાદિ—

તળવનસ્પતિકાયાિકાઃ—તળમિવ વનસ્પતિકાયાિકાઃ। તળસાધર્મ્યં ચૈવાં વાદરત્વેન।
તેન મૂલમા નાત્ર વિવક્ષિતા। તે ચ વાદરા વનસ્પતિકાયાિકા દશસંખ્યકાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ।
તથા—‘મૂલમ્’ ઇત્યાદિ। તત્ર—મૂલમ્ પ્રસિદ્ધમ્ ૧, કન્દઃ=સ્કન્ધાધોવર્તી ભાગઃ
૨, યાવત્ કરણાત્—“સ્કન્ધઃ=સ્થુડમિતિ પ્રસિદ્ધઃ ૩, ત્વક્પ્રસિદ્ધા ૪, શાલા=
શાલા ૫, પ્રવાલમ્=૪, પત્રં પ્રસિદ્ધમ્ ૬,” ઇત્યેતાનિ પશ્ચપદાનિ સંગ્રાહ્યાણિ।
તથા-પુષ્પાદીનિ ત્રીણિ પદાનિ પ્રસિદ્ધાનિ ૧૦ ॥ સૂ. ૭૯ ॥

હસ પ્રકાર સે પુરુષોંકી ૧૦ દશાઓંકા કથન કર અવ સૂત્રકાર
પુરુષ સમાન ધર્મવાલી વનસ્પતિયોંકી ડન દશાઓંકા વર્ણન પ્રકારાન્તરસે
કરતે હૈં—“દસ તળવળસ્સઙ્કાઙ્યા પળ્લન્તા—ઈત્યાદિ। સૂત્ર ॥૭૯॥

ટીકાર્થ—વાદર હોનેસે તળકે જૈસે વાદરવનસ્પતિ કાયાિક ૧૦ પ્રકાર
કે કહે ગયે હૈં—જૈસે—મૂલ ૧ કન્દ ૨ યાવત્ પુષ્પ ૮ ફલ ૧ ઓર વીજ ૧૦
હનમેં મૂલ નામ જહકા હૈ, કન્દ નામ સ્કન્ધકે અધોવર્તી ભાગકા નામ કન્દા
હૈ. યહાં યાવત્ પદસે સ્કન્ધ—થુડ ત્વચા શાલા—શાલા, પ્રવાલ—કોંપલ એવં
પત્ર, હનકા ગ્રહણ હુઆ હૈ। તથા—પુષ્પ, ફલ એવં વીજ યે પ્રસિદ્ધ હૈં। સૂત્ર ॥૭૯॥

આગલા સૂત્રમાં પુરુષોની દસ દશાઓનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું. હવે
સૂત્રકાર પુરુષસમાન ધર્મવાળી વનસ્પતિઓની દશ દશાઓનું નિરૂપણ કરે છે—

“દસતળવળસ્સઙ્કાઙ્યા પળ્લન્તા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૭૯)

ટીકાર્થ—વાદર હોવાને લીધે તળના જેવા વાદર વનસ્પતિકાયાિકના દસ પ્રકાર
કહ્યા છે—(૧) મૂલ, (૨) કન્દ (યાવત્) (૮) પુષ્પ, (૬) ફલ અને (૧૦) બીજ. અહીં
યાવત્ પદ દ્વારા નીચેનાં પદો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે—(૩) સ્કન્દ (થડ), (૪)
ત્વક્ (છાલ), (૫) શાખા, (૬) પ્રવાલ, (૭) પત્ર.

જેના આધારે ઝાડ કે છોડ જમીન ઉપર ઊભાં રહે છે. તેનું નામ મૂળ છે.
સ્કન્દ—થડનો જે ભાગ જમીનમાં રહેલો હોય છે તેને સ્કન્દ કહે છે.

પ્રવાલ—અંકુશ અથવા કુમળાં પશુને પ્રવાલ કહે છે. શાખા એટલે થડથી
નીકળતી ડાળી છે. પુષ્પ, ફલ અને બીજ શબ્દો બાણીતા છે. ॥ સૂ. ૭૯ ॥

દશસ્થાનકાનુરોધાદ્ વિદ્યાધરાભિયોગિકશ્રેણીનાં વિષ્કમ્ભ માનમાહ—

મૂલમ્—સવ્વઓઽવિ ણં વિજ્ઞાહરસેઢીઓ દસ દસ જોયણાં
વિક્કમ્ભેણં પપ્પણ્ણા । સવ્વઓઽવિણં આભિઓગિયસેઢીઓ દસ
દસ જોયણાં વિક્કમ્ભેણં પપ્પણ્ણા ॥ સૂ ૦ ૮૦ ॥

છાયા—સર્વતોઽપિ સ્વલુ વિદ્યાધરશ્રેણયો દશદશ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ।
સર્વતોઽપિ સ્વલુ આભિયોગિકશ્રેણયો દશ દશ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥
સૂ ૦ ૮૦ ॥

ટીકા—‘સવ્વઓઽવિ’ इत्यादि—

સર્વતોઽપિ=સર્વસ્યામપિ દિશિ સ્વલુ વિદ્યાધરશ્રેણયઃ=દીર્ઘવૈતાદ્યસ્થિતા વિદ્યા-
ધરનગરશ્રેણયો દશ દશ યોજનાનિ વિષ્કમ્ભેણ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । એવાભિયોગિકશ્રેણીનામપિ
વિષ્કમ્ભતઃ પ્રમાણો બોધ્યઃ । અત્રેદં બોધ્યમ્ દીર્ઘવૈતાદ્યપર્વતા ઉચ્ચત્વેન પશ્ચર્વિંશતિ
યોજનાનિ, મૂલવિષ્કમ્ભેણ ચ પચ્ચાશદ્ યોજનાનિ । તત્ર દીર્ઘવૈતાદ્યેષુ પર્વતેષુ
ભૂમિતલાદ્ દશ યોજનાનિ વ્યતિવ્રજ્ય વિષ્કમ્ભતો દશયોજનપ્રમાણા દક્ષિણત

દશ સ્થાનકોકે અનુરોધસે અથસૂત્રકારવિદ્યાધરશ્રેણિયોકા વિષ્કમ્ભ
માન કહતે હૈ—“સવ્વઓઽવિણં વિજ્ઞાહરસેઢીઓ—इत्यादि । સૂત્ર ॥ ૮૦ ॥

ટીકાર્થ—સમસ્ત મી દિશાઓમ્ વિદ્યાધરશ્રેણિયાં—દીર્ઘવૈતાદ્ય પર્વત
પર સ્થિત વિદ્યાધર નગરકી શ્રેણિયાં વિષ્કમ્ભકી અપેક્ષા ૧૦-૧૦ યોજન
કી કહી ગઈ હૈ । હસી પ્રકાર સે આભિયોગિક શ્રેણિયોકા મી વિષ્કમ્ભ
કી અપેક્ષા સે પ્રમાણ જાનના ચાહિયે, યહાં એસા સમક્ષના—દીર્ઘવૈતાદ્ય
પર્વત સવ ઝુચાઈ મ્ ૨૫ યોજન કે હૈ ઓર મૂલ કે વિષ્કમ્ભ સે ૫૦
યોજન કે હૈ । દીર્ઘવૈતાદ્ય પર્વતોં પર ભૂમિતલ સે ૧૦ યોજન તક આગે

હવે સૂત્રકાર દસ સ્થાનકોના અનુરોધની અપેક્ષાએ વિદ્યાધર શ્રેણીઓનું
કથન કરે છે—“સવ્વઓઽવિણં વિજ્ઞાહરસેઢીઓ” इत्यादि—(સૂ. ૮૦)

ટીકાર્થ—દીર્ઘવૈતાદ્ય પર્વત પર આવેલી વિદ્યાધરનાં નગરોની શ્રેણીઓને
અહીં ‘વિદ્યાધરશ્રેણીઓ’ કહી છે. આ વિદ્યાધરશ્રેણીઓ બધી દિશાઓમાં આવેલી છે.
આ વિદ્યાધર નગરની શ્રેણીઓનો વિષ્કંભ (વિસ્તાર) ૧૦-૧૦ યોજનનો કહ્યો
છે. આભિયોગિક શ્રેણીઓ (આભિયોગિક દેવોનાં નગરોની શ્રેણીઓ)નો વિષ્કંભ
પશ્ચ એટલોજ સમજવો. દરેક દીર્ઘવૈતાદ્ય પર્વતની ઉંચાઈ ૨૫ યોજનની અને તેના
મૂળ ભાગનો વિસ્તાર ૫૦ યોજનનો કહ્યો છે. આ દીર્ઘવૈતાદ્ય પર ભૂમિતલથી

ઉત્તરતથા વિદ્યાધરશ્રેણયો ભવન્તિ । ભરતક્ષેત્રસ્થદીર્ઘવૈતાલ્યદ્યે દક્ષિણતઃ પચ્ચાશ્વદ્-
વિદ્યાધરશ્રેણયો ભવન્તિ । ઉત્તરતસ્તુ પષ્ઠિસંખ્યકાઃ । ઐરવતક્ષેત્રસ્થદીર્ઘવૈતા-
લ્યદ્યે દક્ષિણતઃ પષ્ઠિસંખ્યકાઃ, ઉત્તરતઃ પચ્ચાશ્વત્સંખ્યકાઃ । વિજયસ્થિતેષુ દીર્ઘવૈ-
તાલ્યદ્યેષુ દક્ષિણત ઉત્તરતથા પચ્ચાશ્વપચ્ચાશ્વત્સંખ્યકા વિદ્યાધરશ્રેણયો વોધ્યાઃ ।
તથા—વિદ્યાધરશ્રેણીનામુપરિ દશ યોજનાનિ વ્યતિવ્રજ્ય વિદ્યાધરશ્રેણીવદેવ આભિ-
યોગિકદેવાનાં શ્રેણયો વોધ્યાઃ । આભિયોગિકશ્રેણીનામુપરિ દીર્ઘવૈતાલ્યદ્યા
ઉચ્ચત્વેન પચ્ચયોજનાનિ, વિષ્કમ્ભેણ તુ દશ યોજનાનિ । આભિયોગિકા દેવાસ્તુ-
શક્રાદિવશવર્તિ સોમયમવરુણવૈશ્રવણાખ્યાનાં લોકપાલ્યાનાં સમ્યન્ધિનો વ્યન્તરા

જાકર કે વિષ્કમ્ભની અપેક્ષા દશ યોજન પ્રમાણવાલી દક્ષિણમાં અને ઉત્તરમાં વિદ્યાધર શ્રેણીયાં છે । ભરતક્ષેત્રમાં જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે
ઉપર દક્ષિણની ओर ૫૦ વિદ્યાધર શ્રેણીયાં છે । એવં ઉત્તરની ओर ૫૦
વિદ્યાધર શ્રેણીયાં છે । ઐરવત ક્ષેત્રમાં જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે ઉપર
દક્ષિણની ओर ૬૦ અને ઉત્તરની ओर ૫૦ વિદ્યાધર શ્રેણીયાં છે । વિજયો
માં સ્થિત જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે ઉપર દક્ષિણ અને ઉત્તરમાં ૫૦-૫૦
વિદ્યાધર શ્રેણીયાં છે તથા વિદ્યાધર શ્રેણીયાં કે ઉપર દશ યોજન આગે
જાકર વિદ્યાધરની શ્રેણીઓની તરફ આભિયોગિક દેવોની શ્રેણીયાં છે । આ-
ભિયોગિક શ્રેણીઓને ઉપર જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે તેની ઉંચાઈ પાંચ
યોજનની અને તેના વિષ્કમ્ભદશ યોજનની છે જે જો આભિયોગિક દેવ
છે તે શક્રાદિકોને વશવર્તી જો સોમ યમ વરુણ અને વૈશ્રવણ લોકપાલ છે

૧૦ યોજનપ્રમાણ ઉંચે ગયા બાદ, દક્ષિણમાં અને ઉત્તરમાં, દસ યોજનના
પ્રમાણવાળી વિદ્યાધરશ્રેણીઓ આવે છે. ભરતક્ષેત્રમાં જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે.
તેના ઉપર દક્ષિણમાં ૫૦ વિદ્યાધરશ્રેણીઓ અને ઉત્તરમાં પણ ૫૦ વિદ્યાધર
શ્રેણીઓ છે. ઐરવતક્ષેત્રમાં જે દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વત છે, તે પર્વત ઉપર દક્ષિણમાં
૬૦ અને ઉત્તરમાં ૫૦ વિદ્યાધર શ્રેણીઓ છે. વિજયોમાં આવેલા જે દીર્ઘ
વૈતાલ્ય પર્વત છે, તે પર્વત પર દક્ષિણમાં ૫૦ અને ઉત્તરમાં પણ ૫૦ વિદ્યા-
ધર શ્રેણીઓ છે વિદ્યાધરશ્રેણીઓથી ૧૦ યોજન ઉંચે જવાથી વિદ્યાધર
શ્રેણીઓના જેવી જ આભિયોગિક દેવોની શ્રેણીઓ આવે છે. આભિયોગિક શ્રેણી-
ઓની ઉપરના ભાગમાં દીર્ઘવૈતાલ્ય પર્વતોના જેટલા ભાગ બાકી રહે છે તેટલા
ભાગનો વિસ્તાર ૧૦ યોજનનો અને ઉંચાઈ ૫ યોજનની છે.

ઉપર જે આભિયોગિક દેવોની વાત કરી તે દેવો શક્રાદિકોના સોમ, યમ,
વરુણ, વૈશ્રવણ આદિ લોકપાલોને આધીન હોય છે, અને તેઓ વ્યન્તર દેવરૂપ

બોધ્યાઃ । એતે હિ લોકપાલાનામ્-અભિયોગેન-આજ્ઞયા ચરન્તીતિ દેતોરાભિયો-
ગિકા ઉચ્ચન્તે इति ॥ સૂ. ૮૦ ॥

આભિયોગિકશ્રેણયો હિ દેવાવાસવિશેષાનાહ—

મૂલમ્-ગેવિજ્જગવિમાણા ણં દસ જોયણસયાઈં ઉઠ્ઠં ઉચ્ચત્તેણં
પપ્પણત્તા ॥ સૂ. ૮૧ ॥

છાયા—ગ્રૈવેયકવિમાનાનિ સ્વલુ દશ યોજનશતાનિ ઝર્ધ્વમુચ્ચત્ત્વેન પ્રજ્ઞસાનિ
॥ સૂ. ૮૧ ॥

ટીકા—‘ગેવિજ્જગવિમાણા’ इत्यादि—

વ્યાख्या સ્પષ્ટા ॥ સૂ. ૮૧ ॥

ગ્રૈવેયકવાસિનસ્તુ દેવા ભવન્તિ । દેવાશ્ચ મહર્દિકા इति તેષાં મહર્દિકત્વમુપ-
વર્ણયિતું, મહર્દિકત્વપ્રસ્તાવાદ્ મુનીનામપિ તદ વર્ણયિતું તેજોનિર્સર્ગપ્રકારમાહ—

उनके सम्बन्धी हैं और ये व्यन्तर देव रूप हैं । ये लोकपालोंकी आज्ञा से
चलते फिरते हैं इस कारण आभियोगिक कहलाते हैं । सूत्र ॥८०॥

ये आभियोगिक श्रेण्यां देवावास रूप हैं-अतः अब सूत्रकार देवा-
वास विशेषोंका कथन करते हैं--

“गेविज्जगविमाणणं दस जोयणसयाईं”—इत्यादि । सूत्र ॥८१॥

टीकार્थ—ગ્રૈવેયક વિમાન ૧૦ સૌ યોજનકે અર્થાત્ ૧ હજાર યોજનકે
ઝંઘે કહે ગયે છે । સૂત્ર ॥૮૧॥

ગ્રૈવેયકવાસી દેવ હોતે છે-ઑર દેવ મહર્દિક હોતે છે, इसलिये
अब सूत्रकार उनके मर्दिकताका वर्णन करनेके लिये और मर्दिकता
के प्रस्तावमें मुनिजनोंकी भी मर्दिकताका वर्णन करनेके लिये तेजो-

હોય છે, તે દેવો લોકપાલોની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તતા હોય છે, તે કારણ તેમને
આભિયોગિક દેવો કહે છે. ॥ સૂત્ર ૮૦ ॥

આ આભિયોગિકશ્રેણીઓ દેવાવાસરૂપ હોવાથી સૂત્રકાર હવે દસ સ્થાનોની
અપેક્ષાએ દેવાવાસવિશેષોનું કથન કરે છે.

“गेविज्जगविमाणणं दस जोयणसयाईं ” इत्यादि—(सू. ८१)

टीकार्थ—ગ્રૈવેયક વિમાનો દસસો યોજનપ્રમાણ એટલે કે એક હજાર યોજન-
પ્રમાણ ઊંચાં છે. ॥ સૂત્ર ૮૧ ॥

ગ્રૈવેયક વિમાનોમાં દેવો નિવાસ કરે છે. દેવો મહર્દિક હોય છે, તેથી
હવે સૂત્રકાર તેમની મહર્દિકતાનું કથન કરવાને માટે અને મુનિજનોની મહર્દિક

मूलम्--दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा, तं जहा--
 केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य
 अच्चासाइए समाणे परिकुविए, तस्स तेयं निसिरेज्जा, से तं
 परितावेइ से तं परितावेत्ता तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा १।
 केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चा-
 साइए समाणे देवे परिकुविए. तस्स तेयं निसिरेज्जा, से तं
 परितावेइ, से तं परितावेत्ता तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा २। केइ
 तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए
 समाणे परिकुविए देवे य परिकुविए, दुहओ पडिण्णा तस्स तेय
 निसिरेज्जा, से तं परिताविति, ते तं परितावित्ता तमेव सह तेयसा
 भासं कुज्जा ३। केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा
 से य अच्चासाइए देवे परिकुविए, तस्स तेयं निसिरेज्जा
 तत्थ फोडा समुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति ते फोडा भिन्ना
 समाणा तमेव सह तेयसा भासंकुज्जा ४। केइ तहारूवं
 समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा से य आच्चसाइए देवे परि-
 कुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा
 भिज्जंति ते फोडा भिन्ना समाणा तमेव सह तेयसा भासंकुज्जा
 ५। केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य
 अच्चासाइए परिकुविए देवे वि य परिकुविए, ते दुहओ पडिण्णा
 तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोडा संमुच्छंति, सेसं तहेव जाव
 भासं कुज्जा ६। केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा अच्चा-
 लेइयाके प्रकारोंका कथन करते हैं--

द्विकृतानुं पणु वणुन करवाने भाटे तेनेवेश्याना प्रकारानुं निरूपणु करे छे-

साएज्जा, से य अच्चासाइए परिकुविए, तस्स तेयं निसि-
रेज्जा, तत्थ फोडा संमुच्छंति, ते फोडा भिज्जंति, तत्थ पुला
संमुच्छंति, ते पुला भिज्जंति, ते पुला भिन्ना समाणा तमेव सह
तेयसा भासं कुज्जा ७। एए तिन्नि आलावगा भाणियव्वा ९। केइ
तहारूवं समणं वा माहनं वा अच्चासाएमाणे तेयं निसिरेज्जा
सेय तत्थ णो कम्मइ, णो पकम्मइ, अंचियांचियं करेइ, करित्ता
आयाहिणपयाहिणं कोइ, करित्ता उडुं वेहासं उप्पयइ। उप्पइत्ता
सेण तओ पडिहए पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता तमेव सरीरगं
अणुदहमाणे अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा, जहा वा
गोसालगस्स मखंलिपुत्तस्स तवे तेए १० ॥ सू० ८२ ॥

छाया-दशभिः स्थानैः सह तेजसा भस्म कुर्यात् तद्यथा- कोऽपि तथारूपं
श्रमणं वा माहनं वा अत्याशातयेत् स च अत्याशातितः सन् परिकुपितः तस्य तेजो
निष्ठजेत्, स तं परितापयति, स तं परिताप्य तमेव सह तेजसा भस्म कुर्यात् १।
कोऽपि तथारूपं श्रमणं वा माहनं वा अत्याशातयेत् स च अत्याशातितः सन् देवः
परिकुपितः, तस्य तेजो निष्ठजेत् स तं परितापयति, स तं परिताप्य तमेव सह
तेजसा भस्म कुर्यात् २। कोऽपि तथारूपं श्रमणं वा माहनं वा अत्याशातयेत्, स च
अत्याशातितः सन् परिकुपितो देवश्च परिकुपितः, उभौ प्रतिज्ञौ तस्य तेजो निष्ठजे-
ताम् तौ तं परितापयतः तौ तं परिताप्य तमेव सह तेजसा भस्म कुर्याताम् ३। कोऽपि
तथारूपं श्रमणं वा माहनं वा अत्याशातयेत्, स च अत्याशातितः देवे परिकुपितः,
सन् तस्य तेजो निष्ठजेत्, तत्र स्फोटाः सम्पृच्छन्ति, ते स्फोटा भिद्यन्ते, ते स्फोटा
भिन्नाः सन्तः तमेव सह तेजसा भस्म कुर्युः ४। कोऽपि तथारूपं श्रमणं वा माहनं
वा अत्याशातयेत्, स च अत्याशातितो देवः परिकुपितः, तस्य तेजो निष्ठजेत् तत्र
स्फोटाः सम्पृच्छन्ति, ते स्फोटा भिद्यन्ते, ते स्फोटा भिन्नाः सन्तस्तमेव सह
तेजसा भस्म कुर्युः ५। कोऽपि तथारूपं श्रमणं वा माहनं वा अत्याशातयेत्, स च
अत्याशातितः परिकुपितो देवोऽपि च परिकुपितः, तौ उभौ प्रतिज्ञौ तस्य तेजो

નિસ્રજેતામ્, તત્ર સ્ફોટાઃ સમ્પૂર્ણાન્તિ, શેષં તયૈવ યાવદ્, ભસ્મકુર્યુઃ ૬ । કોઽપિ તથારૂપં શ્રમણં વા માહનં વા અત્યાશાતયેત્, સ ચ અત્યાશાતિતઃ પરિકુપિતઃ, તસ્ય તેજો નિસ્રજેત્, તત્ર સ્ફોટા સમ્પૂર્ણાન્તિ, તે સ્ફોટા મિથ્યન્તે, તત્ર પુલાઃ સમ્પૂર્ણાન્તિ, તે પુલા મિથ્યન્તે, તે પુલા મિન્નાઃ સન્તસ્તમેવ સહ તેજસા ભસ્મકુર્યુઃ ૭ । એતે ત્રય આલાપ કા મણિતવ્યાઃ ૮ કોઽપિ તથારૂપં શ્રમણં વા માહનં વા અત્યાશાતયન્ ત્વેજો નિસ્રજેત્, તત્ત્વ તત્ર નો ક્રમતે, નો પ્રક્રમતે, અશ્ચિતા-શ્ચિતં કરોતિ, કૃત્વા આદક્ષિણપ્રદક્ષિણાં કરોતિ, કૃત્વા ઊર્ધ્વ વિહાય ઉત્પતતિ ઉત્પત્ય તત્ સ્વલુ તતઃ પ્રતિહતં પ્રતિનિવર્તતે, પ્રતિનિવૃત્ય તમેવ શરીરકમનુદહન્ અનુદહન્ સહ તેજસા ભસ્મ કુર્યાત્, યથા વા ગોશાલકસ્ય મહ્વલિપુત્રસ્ય તપસ્તેજઃ ॥ સૂ. ૮૨॥

ટીકા-દસહિં ઠાળેહિં ઇત્યાદિ—

તેજોલેશ્યાવાન્ શ્રમણો દશમિઃ સ્યાનૈઃ=પકારૈઃ સહ તેજસા વર્તમાન તેજો લેશ્યાવાન્તમ્ ઉપસર્ગકારિણં ભસ્મ-ભસ્મેવ ભસ્મ-ભસ્મવત્ કુર્યાત્=વિનાશયેત્, તથા- કોઽપિ તેજોલેશ્યાવાન્ ઉપસર્ગકારી તથારૂપં=તેજોલેશ્યાવાન્તં શ્રમણં=તપસ્વિનં માહનં=મા જહિ મા જહિ' ઇતિ પ્રરૂપકં વા અત્યાશાતયેત્=મહતીમાશાતનાં કુર્યાત્ । અત્યાશાતિતશ્ચ સન્ સ શ્રમણો માહનો વા પરિકુપિતઃ=અત્યન્તં । ક્રોધવ-

“દસ હિંઠાળેહિં સહ તેજસા ભાસં કુજ્જા”-ઇત્યાદિ । સૂત્ર ॥૮૨॥

ટીકાથ-જો તેજોલેશ્યાવાલા શ્રમણ તેજોલેશ્યાસે યુક્ત ઉપસર્ગકારી કો ભસ્મસાત્ કર દેના હૈ-નષ્ટ કર દેના હૈ-સો ઇસમેં યે ૧૦ કારણ હૈ-યદિ કોઈ તેજોલેશ્યાવાલા ઉપસર્ગકારી કિસી દૂસરે તેજોલેશ્યાવાલે તપસ્વીજન કી અથવા માહનકી-મત મારો મન મારો ઇસ પ્રકાર સે પ્રરૂપણા કરનેવાલે કી-મહતી આશાતના કર દેના હૈ ઓર આશાતના યુક્ત હુઆ વહ શ્રમણ અથવા માહન જબ અત્યન્ત કુપિત હો જાતા હૈ હૈ, તો વહ ક્રોધ કે વશ સે ડસ આશાતના કારક કે ડપર તેજોલેશ્યા

“દસહિં ઠાળેહિં સહ તેજસા ભાસં કુજ્જા” ઇત્યાદિ—(સૂ. ૮૨)

ટીકાથ-નીચેનાં દસ કારણોને લીધે તેજોલેશ્યાવાળો સાધુ, તેજોલેશ્યાથી યુક્ત ઉપસર્ગકારી બને, પોતાની તેજોલેશ્યા વડે બાળીને ભસ્મ કરી નાખે છે—

(૧) જો કોઈ તેજોલેશ્યાવાળો ઉપસર્ગકારી મનુષ્ય કોઈ બીજા તેજોલેશ્યાવાળા તપસ્વી જાતની અથવા માહાત્મની (માહાત્મા, એવો ઉપદેશ આપનારની) ખૂબ જ આશાતના કરે છે અને આશાતનાયુક્ત થયેલો છે શ્રમણ અથવા માહાત્મ જ્યારે અત્યન્ત કુપિત થઈ જાય છે, ત્યારે તે ક્રોધને કારણે તે આશાતનાકારક

શાત્ સ તસ્ય=આશાતનાકારકસ્યોપરિ તેજો નિષ્ક્રજેત્=તેજોલેશ્યાં પ્રક્ષિપેત્ ।
તેજોલેશ્યાયાઃ પ્રક્ષેપેણ સ શ્રમણઃ તપ્પસર્ગકારિણં પરિતાપયતિ=પીડયતિ,
પરિતાપ્ય=પીડયિત્વા તેજસા સહૈવ=તેજોલેશ્યા સહ વર્તમાનમપિતમ્=આશાત-
નાકારિણં તદપેક્ષયા બલવત્તેજોલેશ્યાયુક્તત્વેન મસ્મ કુર્યાત્=વિનાશયેત્ । એવકારોઽન્ન
ભિન્નક્રમોપ્યથો^૧ વોશ્યઃ । એવમગ્રેઽપિ । ઇતિ પ્રથમં સ્થાનમ્ । એવમેવ દ્વિતીયતૃતી-
યસ્થાનદ્વયમપિ વ્યાખ્યેયમ્ । નવરમ્-દ્વિતીયસ્થાને શ્રમણમાહનપક્ષપાતી દેવ આશાતના
કારિણં વિનાશયતિ, તૃતીયસ્થાને તુ શ્રમણો માહનો વા તત્પક્ષપાતી દેવશ્ચેત્યુભૌ
પ્રતિજ્ઞૌ=આશાતનાકારિણૌ વિનાશને કૃતનિશ્ચયૌ તમાશાતનાકારિણં વિનાશયત
કો છોડ દેતા હૈ તેજોલેશ્યા કે પ્રક્ષેપ સે વહ શ્રમણ ઉસ ઉપસર્ગકારી
કો પીડિત કર દેતા હૈ ઓર પીડિતકર કે તેજોલેશ્યા કે સાથ વર્તમાન
મી ઉસ આશાતનાકારી કો ઉસકી અપેક્ષા બલિષ્ઠ તેજોલેશ્યા સે
યુક્ત હોને કે કારણ વહ અસ્મકર દેતા હૈ યહાં એવકાર ભિન્નક્રમર્થ મેં
હૈ હસી પ્રકારસે આગે મી જાનના ચાહિયે એસા યહ પ્રથમ સ્થાન હૈ । હસી
પ્રકાર સે દ્વિતીય ઓર તૃતીય સ્થાન-કારણ મી જાનના ચાહિયે । દ્વિતીય
સ્થાનમેં શ્રમણ કા અથવા માહનકા પક્ષપાતી કોઈ દેવ યદિ હૈ તો વહ
ઉસ આશાતનાકારી કો નષ્ટ કર દેતા હૈ । ઓર તૃતીય સ્થાન મેં શ્રમણ
અથવા માહન અથવા તત્પક્ષપાતી કોઈ દેવ યે દોનોં ઉસ આશા-
તનાકારી કે વિનાશ કરને મેં યદિ કૃતનિશ્ચયવાલે હો જાતે હૈ તો
ઉસ આશાતાનાકારી કો નષ્ટ કર દેતે હૈ-હસ પ્રકાર સે યે દ્વિતીય

ઉપર તેજોલેશ્યા છોડે છે, અને તેજોલેશ્યા ફેંકીને તે શ્રમણ તે ઉપસર્ગકારીને
પીડિત કરે છે અને તેને બાળીને ભસ્મ કરી નાખે છે. આશાતનાકારી કરતાં
વધારે બલિષ્ઠ તેજોલેશ્યાથી યુક્ત હોવાને કારણે તેજોલેશ્યાવાળો શ્રમણ આશા-
તનાકારીને બાળીને ભસ્મ કરી નાખે છે. અહીં “ એવકાર ” ભિન્ન કર્માર્થમાં
પ્રયુક્ત થયેલ છે. એજ પ્રમાણે આગળ પશુ સમજવું. એજ પ્રમાણે બીજા
અને ત્રીજા કારણે વિષે પશુ સમજવું. બીજું સ્થાન આ પ્રમાણે છે-શ્રમણ
અથવા માહણ પ્રત્યે લાગણી ધરાવનારો કોઈ દેવ હોય, તો તે દેવ આશાત-
નાકારીને તેની તેજોલેશ્યા વડે ભસ્મસાત્ કરી નાખે છે. ત્રીજું સ્થાન (કારણ)
નીચે પ્રમાણે છે-તે શ્રમણ અથવા માહણ અથવા તેમના પ્રત્યે લાગણી ધરા-
વનારો કોઈ દેવ, એ બન્ને જો તે આશાતનાકારીનો નાશ કરવાને કૃતનિશ્ચયી
બને, તો તેઓ તે આશાતનાકારીનો નાશ કરી શકે છે. આ પ્રકારના દ્વિતીય
અને તૃતીય સ્થાન સમજવા

इति द्वितीयतृतीयस्थानद्वयम् ॥ २।३ ॥ तथा कोऽपि तेजोलेख्यावानुपसर्गकारी प्रबलतेजोलेख्यायुक्तं कमपि श्रमणं माहनं वा अत्याशातयेत्, तेनोपसर्गकारिणा-
अत्याशातितः स परिकुपितः सन्-तस्य=आशातनाकारकस्योपरि तेजोलेख्या
प्रक्षिपेत् । ततस्तत्र=आशातना कारिणि पुरुषे स्फोटाः=स्फोटकाः अग्निदग्धे पुरुष इव
सम्भूच्छन्ति जायन्ते । ततस्ते स्फोटा भिद्यन्ते=विशीर्यन्ते, स्फोटा विशीर्णाः सन्त-
स्तेनसा सदैव=तेजोलेख्या सह वर्तमानमपि तमाशातनाकारिणं पुरुषं भस्म कुर्यात्=
विनाशयेदिति चतुर्थं स्थानम् ॥ ४ ॥ एवमेव पञ्चमषष्ठस्थानद्वयमपि बोध्यम् ।
नवरं पञ्चमस्थाने श्रमणमाहनपक्षपाती देवस्तेजोलेख्यां निमृजति, षष्ठे श्रवणो
माहनो वा तत्पक्षपाती देवश्च तेजोलेख्यां निमृजे । इति पञ्चमषष्ठस्थानद्वयम्
॥ ५ ॥ ६ ॥ तथा-कोऽपि तेजोलेख्यावान् उपसर्गकारी प्रबलतेजोलेख्यासमन्वितं

और तृतीय स्थान है । २-३, तथा-कोई तेजोलेख्यावाला उपसर्गकारी
प्रबल तेजोलेख्या से युक्त किसी भी श्रमण अथवा माहन की अशा-
तना करता है तो उस उपसर्गकारी से अत्याशातित होकर क्रुद्ध हुआ
वह तेजोलेख्यावाला श्रमण अथवा माहन उस तेजोलेख्यावाले आशा-
तनाकारीके ऊपर अपनी तेजोलेख्या छोड़ देता है-तो इस अवस्थामें उस
आशातनाकारी पुरुष के शरीर पर अग्नि से दग्ध हुए की तरह फोड़े
हो जाते हैं, फिर जब वे फूटते हैं तो उस आशातनाकारी तेजोलेख्यावाले
पुरुष को भस्म कर देते हैं । ४। इसी प्रकार से पांचवां और छठा कारण
भी जानना चाहिये-पांचवें स्थान में श्रवण माहनका पक्षपाती
देव तेजोलेख्याको छोड़ता है छठे स्थान में श्रमण अथवा माहन अथवा
पक्षपाती देव तेजोलेख्याको छोड़ता है ५-६ उपसर्गकारी कोई भी तेजो-

ચોથું સ્થાન (૪૨૭) આ પ્રમાણે છે-કોઈ તેજોલેશ્યાવાળો ઉપસર્ગકારી,
કોઈ પ્રબળ તેજોલેશ્યાવાળા કોઈ શ્ર.ણ અથવા માહણની અશાતના કરે છે, તો
તે અશાતનાકારી પ્રત્યે અત્યન્ત ક્રોધાયમાન થયેલો. તે તેજોલેશ્યાવાળો શ્રમણ
અથવા માહણ તે અશાતનાકારી તેજોલેશ્યાવાળી વ્યક્તિની ઉપર પોતાની તેજો-
લેશ્યા છોડી દે છે. તે કારણે તે અશાતનાકારી વ્યક્તિના શરીર ઉપર, દાઝી
ગયો હોય એવાં ફાલ્લા થઈ જાય છે. જ્યારે તે ફાલ્લા ફૂટે છે ત્યારે તે
અશાતનાકારી વ્યક્તિ મરી જાય છે. આ રીતે તેજોલેશ્યાને કારણે શરીર ઉપર
ઉત્પન્ન થયેલા ફાલ્લાં ફૂટવાથી તે અશાતનાકારી, તેજોલેશ્યાવાળો ઉપદ્રવકારી
જીવ ભસ્મસાત્ થઈ જાય છે. એજ પ્રમાણે પાંચમું અને છઠ્ઠું સ્થાન પણ
સમજવું. પાંચમા સ્થાનમાં શ્રમણ અથવા માહણ પ્રત્યે લાગણી ધરાવતા દેવ

કમપિ શ્રમણં માહનં વા અત્યર્થમ્ આશાતયેત્ । તેનાશાતિતઃ સ શ્રમણો માહનો
વા પરિકુપિતો ભવતિ । પરિકુપિતશ્ચ સ તસ્ય=આશાતનાકારકસ્યોપરિ તેજોલેશ્યાં
પ્રક્ષિપેત્ । તતશ્ચ તત્ર=આશાતનાકારિણિ પુરુષે સ્ફોટાઃ સમુત્પદ્યન્તે, તે સ્ફોટા
ભિદ્યન્તે ભિન્નેષુ તેષુ સ્ફોટેષુ પુલાઃ=ઊઘુસ્ફોટાઃ સમ્પૂર્ણાન્તિ=સંજાયન્તે, તે પુલાઃ
ભિદ્યન્તે, ભિન્નાઃ સન્તસ્તે પુલાસ્તેજસા સહ વર્તમાનમપિ તમાશાતનાકારિણં મસ્મ
કુર્યાદિતિ સપ્તમમ્ ॥ ૭ ॥ એવમેવાષ્ટમનવમસ્થાનદ્વયમપિ बोध्यम् । નવમ-
અષ્ટમસ્થાને-“ સ ચ અત્યાશાતિત સ્તેન તત્પક્ષપાતી દેવઃ પરિકુપિતઃ ” ઇતિક્રમેણ
નવમસ્થાને તુ-“ સ ચ અત્યાશાતિતઃ પરિકુપિતો દેવોર્સપ ચ પરિકુપિતઃ, તૌ
ઉમૌ મનિજ્ઞૌ-” ઇતિ ક્રમેણ પાઠોઽનુસન્ધેયઃ । અત એવ સપ્તમં ભેદમાદાયમાદ-

લેશ્યાવાલા મનુષ્ય પ્રવલ તેજોલેશ્યા સે યુક્ત કિસી શ્રમણ અથવા
માહન કી બહુત પ્રકાર સે યદિ આશાતના કરતા હૈ તો ઉસ સે
આશાતિત હુઆ વહ શ્રમણ અથવા માહન જબ ક્રુદ્ધ હો જાતા હૈ તબ
વહ આશાતનાકારી કે ડપર તેજોલેશ્યા કો છોડ દેતા હૈ-તબ ઉસ
આશાતનાકારી પુરુષ કે શરીર પર ફોડે હો જાતે હૈં ઓર વે ફોડે જબ
ફૂટતે હૈં તો ઉનકે સ્થાન પર દૂસરે ઓર છોટે ૨ ફોડે ઉત્પન્ન હો જાતે
હૈં. ફિર વે મી ફૂટતે હૈં ઓર ફૂટકર ઉસ તેજોલેશ્યાવાલે આશાતના-
કારી પુરુષ કો મસ્મકર દેતે હૈં ॥ ૭, હસી પ્રકાર સે આઠવાં એવં નવવાં
સ્થાન મી જાનના ચાહિયે । આઠવેં સ્થાન મેં આશાતના સે યુક્ત હુએ
શ્રમણ અથવા માહન કા પક્ષપાતી કોઈ દેવ કુપિત હોતા હૈ, નૌવેં સ્થાન
મેં આશાતના યુક્ત હુઆ વહ શ્રમણ અથવા માહન મી કુપિત હોતા હૈ,
ઓર તત્પક્ષપાતી દેવ મી કુપિત હોતા હૈ. હસ પ્રકાર વે દોનોં ઉસ

દ્વારા તેજોલેશ્યા છે ઉવ.માં આવે છે એમ સમજવું. તે દેવે તે અશાતનાકારી
તેજોલેશ્યાવાળા ઉપસર્ગકારી પુરુષના શરીર પર ફેલાવા ઉત્પન્ન થાય છે અને
તે ફેલાવા કૂટે ત્યારે તે અશાતનાકારી ઉપસર્ગકારી જીવનો નાશ થઈ જાય છે.

છટ્ઠું કારણ આ પ્રમાણે સમજવું-શુઅહીં શ્રમણ અથવા માહણ અને
તેના તરફ લાગણી ધરાવતો દેવ, આ જન્મે દ્વારા તેજોલેશ્યા છોડવામાં આવે
છે, એમ સમજવું. બાકીનું કથન-ફેલાવા કૂટવાથી અશાતનાકારીના મૃત્યુ થવા
સુધીનું કથન-આગલા કથન પ્રમાણે જ સમજવું. સાતમું કારણ આ પ્રમાણે
સમજવું કોઈ પણ તેજોલેશ્યાવાળો પુરુષ જ્યારે કોઈ શ્રમણ અથવા માહણની
ખૂબજ અશાતના કરે છે, ત્યારે કોપાયમાન થયેલો તે શ્રમણ અથવા માહણ
તેની ઉપર તેજોલેશ્યા છોડે છે-ત્યારે છે અશાતનાકારી પુરુષના શરીર ઉપર

સૂત્રકાર:—“ए ए तिन्नि वि आलावगा भाणियव्वा ” इति । इति अष्टमनवमस्थानं द्वयमिति ॥८॥९॥ तथा—कोऽपि तेजोलेख्यावान् उपसर्गकारी तथारूपं=वीतरागं श्रमणं माहनं वा अत्याशातयन् तेजः=तेजोलेख्यां निमृजेत्=प्रक्षिपेत्, निमृष्टं तत् तेजस्तत्र=श्रमणे माहने वा नो क्रमते=ना क्रामति सामान्यतः, नो प्रक्रमते=विशेषतश्च ना क्रामति, तर्हि किं करोतीत्याह—ततेजस्तत्र अश्विताश्वितम्=गमनागमनं करोति, गमनागमनं कृत्वा तस्य श्रमणस्य माहनस्य वा आदक्षिणं प्रदक्षिणम्=दक्षिणपार्श्वोदारभ्य प्रदक्षिणरूपां क्रियां करोति, तत ऊर्ध्वं विहायः=आकाशम् उत्पतति=उद्गच्छति. उत्पत्य ‘ से ’ तत् तेजः खलु ततः=श्रमणस्य माहनस्य वा प्रबलतरतेजसः सकाशात् प्रतिहतं=व्यावर्तितं सत् प्रतिनिवर्तते=प्रत्यागच्छति,

આશાતનાકારી કે ऊपर तेजोलेख्या छोड़ने के लिये कृत निश्चयवाले हो जाते हैं इस क्रम से पाठ यहां लगाना चाहिये इसी लिये सप्तम भेद को लेकर के सूत्रकारने “ए ए तिन्नि वि आलावगा भाणियव्वा” ऐसा कहा है. इस प्रकार से ओठवाँ और नौवाँ स्थान हैं। १० वां स्थान इस प्रकार से है—उपसर्गकारी कोई तेजोलेख्यावाला वीतराग श्रमण अथवा माहन की आशातना करता है और इस प्रकार वह उसके ऊपर तेजो-लेख्या छोड़ देता है अब छोड़ी गई वह तेजोलेख्या उस वीतराग श्रमण के अथवा माहन के ऊपर अपना कुछ भी प्रभाव नहीं दिखला

ફેલ્લા થઈ જાય છે તે ફેલ્લા જ્યારે ફૂટે છે ત્યારે તેમની જગ્યાએ બીજાં નાનાં નાનાં ફેલ્લા થઈ જાય છે તે નાનાં નાનાં ફેલ્લા જ્યારે ફૂટે છે, ત્યારે તે અશાતનાકારી તેજોલેશ્યાવાળો પુરુષ મરી જાય છે. એજ પ્રમાણે આઠમું અને નવમું કારણ પણ સમજવું. આઠમાં સ્થાનમાં પોતે જેના પ્રત્યે લાગણી ધરાવે છે એવા શ્રમણ અથવા માહણની અશાતના થવાથી કુપિત થયેલો દેવ તેજો-લેશ્યા છોડે છે, એમ સમજવું. નવમાં કારણમાં જેની અશાતના કરવામાં આવી છે એવા શ્રમણ અથવા માહણની અને તેના પ્રત્યે લાગણી ધરાવનારા દેવ, આ બન્ને કુપિત થઈને ઉપદ્રવકારી ઉપર તેજોલેશ્યા છોડે છે, એમ સમજવું. બાકીનું કથન સાતમાં કારણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે જ સમજવું. એજ વાત સૂત્ર-કારે “ए ए तिन्नि वि आलावगा भाणियव्वा” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા પ્રકટ કરી છે આ રીતે આઠમાં અને નવમાં સ્થાનમાં બાકીનું બધું કથન સાતમાં સ્થાન પ્રમાણે જ સમજવું. હવે દસમું કારણ બતાવવામાં આવે છે—

કોઈ તેજોલેશ્યાવાળો ઉપસર્ગકારી મનુષ્ય, વીતરાગ, શ્રમણ અથવા માહણની અશાતના કરે છે, અને તેને બાળીને ભસ્મ કરી નાખવા માટે તેના ઉપર તેજોલેશ્યા છોડે છે તેના દ્વારા છોડવામાં આવેલી તે તેજોલેશ્યા તે વીત-

પ્રતિનિષ્ઠૃત્ય તત્તેજઃ સ્વપ્રક્ષેપ્તુઃ શરીરમ્ અનુદહન્ અનુદહન્=પ્રકર્ષેણ દહન્ તેજસા જહ વર્તમાનં તમેવ=ઉપસર્ગકારિણમેવ મસ્મ કુર્યાત્ । વીતરાગસ્યાસ્તિ કશ્ચિદેતાદૃશઃ પ્રમાવો યત્તસ્મિન્ નિક્ષિપ્તં તેજઃ તદીયપ્રવલતરતેજસા પ્રતિહતં તં તેજોનિર્સર્ગકમેવ વિનાશા વર્તીતિ બોધયમ્ । અન્નાર્થે દૃષ્ટાન્તમાહ યથા-ગોશાલકસ્ય=ગોશાલકેત્યભિધાનસ્ય મગવદવિનીતશિષ્યસ્ય મંહુલિપુત્રસ્ય=મહુલિઃ=ચિત્રફલકપ્રધાનો મિશ્નુક-સક્તી હૈ કેવલ વહુ ઉનકે સમીપ તક હી આતી જાની રહતી હૈ ઓર આ જા કરકે ઉનકી પ્રદક્ષિણા કરતી હૈ હસ કે બાદ વહુ આકાશ મેં ઉપર કો ઉડ જાતી હૈ. હસ પ્રકાર ઉન વીતરાગ શ્રમણ અથવા માહનકે પ્રવલતર તેજ સે પ્રતિહત હોકર વહુ પીછે લૌટ આતી હૈ, ઓર પીછે લૌટકર વહુ અપને પ્રક્ષેપ્તા કે શરીર કો અપને તેજ સે વહુન વુરી તરહ જલા દેતી હૈ ઓર જલાકર ઉસ ઉપસર્ગકારી કો મસ્ન કર દેતી હૈ. વીતરાગકા કોઈ એલા પ્રભાવ હોતા હૈ કિ ઉન પર છોડા ગયા તેજ ઉનકે પ્રવલતર તેજ સે પ્રતિહત હોકર ઉસ તેજકો છોડનેવાલે પુરુષકા હી વિનાશ કર દેતા હૈ. હસ વિષય મેં દૃષ્ટાન્ત ગોશાલક હૈ. યદ્ ગોશાલક મગવાન્ મહાવીરકા અવિનીત શિષ્ય થા. ઓર મહુલિકા-ચિત્ર ફલક કો વેચનેવાલોં કે-અથવા ચિત્રફલક કો લેકર બિશ્વાવૃત્તિ કરનેવાલોં કે પ્રધાનમિશ્નુક વિશેષકા પુત્ર થા. હસને મગવાન્ મહાવીર કે

રાગ શ્રમણ અથવા માહણના ઉપર પોતાના પ્રભાવ બિલકુલ પાડી શકતી નથી, તે તેજોદેશ્યા માત્ર તેમની સમીપમાં જ આવે છે, સમીપમાં આવી ગયેલી તે વીતરાગ શ્રમણ અથવા માહણની પ્રદક્ષિણા કરીને પાછી ફરી જાય છે

તે વીતરાગ શ્રમણ અથવા માહણના પ્રવલતર તેજથી પ્રતિહત થઈને આ રીતે પાછી ફરેલી તે તેજોદેશ્યા તે પ્રક્ષેપ્તાની (તેજોદેશ્યા છોડનાર ઉપદ્રવ કારી માણસની) તરફ પાછી ફરેલી તેજોદેશ્યા તે પ્રક્ષેપ્તાના શરીરને જ ખાળી દે છે આ રીતે તેજોદેશ્યા છોડનાર ઉપદ્રવકારી જીવ જ ખાળીને ભસ્મ થઈ જાય છે. વીતરાગનો એવો કેઈ પ્રભાવ હોય છે કે તેમના તરફ છોડવામાં આવેલી તેજોદેશ્યા પ્રવલતર તેજથી પ્રતિહત થઈને તે તેજોદેશ્યા છોડનાર પુરુષના શરીરનો જ નાશ કરી નાખે છે. આ વિષયનું પ્રતિપાદન કરવા માટે ગોશાલકનું દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે આ ગોશાલક શ્રમણ મગવાન મહાવીરનો અવિનીત શિષ્ય હતો તેને મંબલિપુત્ર પણ કહેવામાં આવે છે, કારણ કે ચિત્રફલક વેચનારનો અથવા ચિત્રફલકની મદદથી લોકોને ચિત્રો બતાવીને પોતાની આજીવિકા ચલાવનારનો પુત્ર હતો. તે ગોશાલકે મગવાન મહાવીર ઉપર તેજોદેશ્યા છોડી હતી,

વિશેષઃ, તત્પુત્રસ્ય તપઃ=તપોજનિતં તેજઃ=તેજોલેશ્યા । તપોજનિતત્વાત્ તેજોઽપિ તપ હત્યુચ્યતે । અસ્ય કથા ભગવતીસૂત્રસ્ય પચ્ચદશશતકે વિલોકનીયા, ઇતિ દશમં-સ્થાનમ્ ૧૦ ॥ સૂ. ૮૨—

સકલસુરાસુરમનુજસમર્ચિતચરણયુગલસ્ય ત્રિભુવનગુરોઃ સ્વપ્રભાવપ્રતિહતયોજન-શતાભ્યન્તરમહામાર્ગાણ્યુપસર્ગસ્ય વિવિધલબ્ધિલબ્ધામિતપ્રભાવપ્રભાવિત-લોકવલય-વિનેયસહસ્રસંપરિવૃત્તરય પરમસમર્થસ્ય દેવદેવેન્દ્રનરેન્દ્રસ્વામિકલ્પસ્ય શ્રમણસ્ય ભગવતો મહાવીરસ્ય યચ્છિષ્યકલ્પેનાપિ હ્રુદ્ગ્રભાવેણ ગોશાલકેનોપસર્ગઃ સમર્જિઁ ઉપર તેજોલેશ્યા છોડી થી. પર ઉસને ભગવાન્ કા કુછ મી ચિગાડ નહીં કિયા પ્રત્યુત અનેકે તેજ સે પ્રતિહત હોકર ઉસને ગોશાલકકા હી વિનાશ કર દિયા હસકી પૂરી કથા ભગવતી સૂત્રકે ૧૫ વેંશતકમેં આઈ હૈ—સો દેખલેની ચાહિયે. હસ પ્રકારસે યહ દશવાં સ્થાન હૈ । સૂત્ર ॥ ૮૨ ॥

સકલ સુર અસુર એવં મનુષ્ય જિનકે ચરણ યુગલકી સેવામેં તત્પર રહતે હૈં તથા જો ત્રિભુવનકે ગુરુ હૈં, એવં જિનકે અમિત પ્રભાવ સે ૧૦૦ યોજન (ચારોંદિશાઓં મેં પચીસ પચીસ યોજન) અર્થાત્ ૧૦૦ કોશ તક મહામારી આદિ જૈસે ઉપસર્ગ નહીં હોતે હૈં, તથા જો અમિત અનેક પ્રકારકી લબ્ધિઓંસે લબ્ધ પ્રભાવસે વિરાજિત રહતે હૈં, ઓર હસીસે પ્રભાવિત હુએ લોક સમુદાયકે હજારોં શિષ્યોંસે જો સદા ઘિરે રહતે હૈં' એસે પરમ સમર્થ ઓર દેવોં, દેવેન્દ્રોં એવં રાજાઓં કે સ્વામિ તુલ્ય શ્રમણ ભગવાન્ કે ઉપર જો અનેકા શિષ્ય ગોશાલકને ઉપસર્ગ કિયા—વહ એક પ્રકારકાં

પરન્તુ તે તેજોલેશ્યા ભગવાન મહાવીરને ધબ્બ કરી શકી ન હતી; ઊલટા તેમના તેજથી પ્રતિહત થઈને તે તેજોલેશ્યા પાછી ફરી હતી અને પાછી ફરેલી તે તેજોલેશ્યાએ ગોશાલકનાં જ પ્રાણુ હરી લીધાં હતાં, ગોશાલકની વિસ્તૃત કથા ભગવતી સૂત્રના ૧૫ માં શતકમાં આપવામાં આવી છે, તે જિજ્ઞાસુ પાઠકોએ ત્યાંથી તે વાંચી લેવી. આ પ્રકારનું 'દશમું' કારણ સમજવું. ॥ સૂ. ૮૨ ॥

સકલ સુર, અસુર અને મનુષ્ય જેમના ચરણયુગલની સેવા કરવાને તત્પર રહે છે, જેઓ ત્રિભુવનના ગુરુ છે, જેના અમિત પ્રભાવથી આસપાસના ૧૦૦-૧૦૦ યોજનપ્રમાણુ એટલે કે (ચારે દિશાઓમાં પચીસ પચીસ યોજના) ક્ષેત્રમાં મહામારી આદિ ઉપસર્ગો થતાં નથી, તથા જેઓ અમિત અનેક પ્રકારની લબ્ધિઓથી સંપન્ન હોય છે, અને જેમના પ્રભાવથી પ્રભાવિત થઈને હજારો શિષ્યોનો સમુદાય જેમની આસપાસ ઘેરાયેલો રહે છે, એવા સમર્થ અને દેવો, દેવેન્દ્રો અને રાજેન્દ્રોના સ્વામીતુલ્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ઉપર તેમના શિષ્ય ગોશાલકે જે ઉપસર્ગ કર્યો તે એક પ્રકાર

તદાશ્વર્યમિતિ આશ્વર્યપ્રસ્તાવાન્ આશ્વર્યં દશવિધત્વેનાહ—

મૂલમ્—દસ અચ્છેરગા પળ્લગ્તા, તં જહા—ઉપસર્ગ ૧ ગર્ભહરણં
૨ સ્ત્રીતીર્થં ૩ અભાવિતા પરિષ્તા ૪ । કળ્પહસસ અવરકંકા ૫
ઓયરણં ચંદસૂરાણં ૬ ॥૧॥ હરિવંસકુલુપ્પત્તી ૭ ચમરુપ્પાઓ ૮
ય અદ્દસયસિદ્ધા ૯। અસંયજણસુ પૂયા ૧૦ દસ વિ અણંતેણ
કાલેણ ॥૨॥ સૂ. ૮૩ ॥

છાયા —દશ આશ્વર્યાણિ પ્રજ્ઞસાનિ તથા—ઉપસર્ગો ૧ ગર્ભહરણં ૨ સ્ત્રીતીર્થમ્
૩ અભાવિતા પરિષ્ત ૪। કૃષ્ણસ્ય અપરકઢ્ઢા ૫ અવતરણં ચન્દ્રસૂર્યયોઃ ॥૧॥ હરિવંશ-
કુલોત્પત્તિઃ ૭ ચમરોત્પાતશ્ચ ૮ અષ્ટશતસિદ્ધાઃ ૯। અસંયતેષુ પૂજા ૧૦ દશાપિ અનન્તેન
કાલેન ॥૨॥ સૂ. ૮૩ ॥

ટીકા—‘દસ અચ્છેરગા’ इत्यादि—

આશ્વર્યાણિ—‘આ’ इति વિસ્મયેન ચર્યંતે, અવગમ્યત इत्याશ્વર્યમ્, તસ્ય વહુત્વે
આશ્વર્યાણિ=અદ્ભુતાનિ દશસંખ્યકાનિ પ્રજ્ઞસાનિ । તથા—‘ઉપસર્ગોઃ ૧ ગર્ભહરણમ્
આશ્વર્યં જૈસા હૈ. અતઃ આશ્વર્યં કે પ્રસ્તાવ કો લેકર અચ સૂત્રકાર દશ
પ્રકાર સે આશ્વર્યકા કથન કરતે હૈ—

“દસ અચ્છેરગા પળ્લગ્તા”—इत्यादि । सूत्र ॥८३॥

ટીકાર્થ—આશ્વર્ય દશ કહે ગયે હૈ—જૈસે ઉપસર્ગ ૧ ગર્ભહરણ ૨ સ્ત્રીતીર્થ
૩ અભાવિતા પરિષત્ ૪ કૃષ્ણ કી અપરકઢ્ઢા ૫ ચન્દ્ર સૂર્યકા સાક્ષાત્
અવતરણ ૬ હરિવંશ કુલોત્પત્તિ ૭ ચમરોત્પાત ૮ અષ્ટશતસિદ્ધ ૯
અવં અસંયત પૂજા ૧૦.

આશ્વર્ય શબ્દકા અર્થ અદ્ભુત હૈ—આશ્વર્ય મેં જો “આ” હૈ વહ
વિસ્મય અર્થકા વાચક હૈ. હસ સે જો વસ્તુ વિસ્મય સે જાની જાતી હૈ

૧નુ’ આશ્વર્ય’ લાગે છે. તથા હવે સૂત્રકાર દસ પ્રકારના આશ્વર્યો પ્રકટ
કરે છે—“દસ અચ્છેરગા પળ્લગ્તા” इत्यादि—(સૂ. ૮૩)

ટીકાર્થ—અચ્છેરગાં (અ શ્વર્યો) દસ કહ્યાં છે. જેમ કે—(૧) ઉપસર્ગ, (૨) ગર્ભહરણ,
(૩) સ્ત્રી તીર્થ, (૪) અભાવિતા પરિષદ, (૫) કૃષ્ણની અપરકંકા, (૬) ચન્દ્ર
સૂર્યનું અવતરણ, (૭) હરિવંશ કુલોત્પત્તિ, (૮) ચમરોત્પાત, (૯) અષ્ટશત
સિદ્ધ અને (૧૦) અસંયત પૂજા

‘આશ્વર્ય’ આ પદ અદ્ભુતતા અર્થમાં વપરાયું છે. ‘આશ્વર્ય’ પદમાં
જે “આ” ઉપસર્ગ છે તે વિસ્મયાર્થનો વાચક છે જે વસ્તુ લોકોમાં વિસ્મ.

૨ 'ઇત્યાદિ । તત્ત્વ-ઉપસર્ગ:-ઉપસૃજ્યતે=ઉપદ્રૂયતે ચાલ્યતે પ્રાણી ધર્માદિ નેનેત્યુ-
પતર્ગ:-ધર્માત્ મચ્યાલયિતું દેવાસુરમનુજાદિ કૃતો વિધ્નઃ । ઉપસર્ગશ્ચ કેવલિનો
ન ભવતિ કિન્તુ ભગવતો મહાવીરસ્ય કેવલિકાલે જાતઃ । તસ્યાનન્તેન કાલેન
જાયમાનત્વાદાશ્ચર્યત્વમિત્યયમુપસર્ગ, આશ્ચર્યમિત્યુચ્યતે-ઇતિ પ્રથમમ્ ॥૧॥ તથા-
ગર્ભહરણં-ગર્ભસ્ય-ઉદરગતજીવસ્ય ઉદરાન્તરે હરણં=સંક્રામણમ્ । ઇદં ગર્ભહરણં ન
કસ્યાપિ તીર્થકૃતો જાતં કેવલં ભગવતો મહાવીરસ્યેવ જાતમિતિ દ્વિતીયમ્ ॥૨॥

વહ આશ્ચર્ય છે. તાત્પર્ય યહ છે કે જો બાત અપૂર્વ હતી છે વહ આશ્ચર્ય
કહા જાતા છે. એ અપૂર્વ બાતે જો ૧૦ પ્રકાર કી કહી ગઈ હૈં-उनका
विवरण इस प्रकार से है-प्राणी जिस के द्वारा अपने धर्म से विचलित
कर दिया जाता है वह उपसर्ग है. देवों द्वारा, असुरों द्वारा एवं मनुष्यों
द्वारा धर्म से विचलित करने के लिये जो विघ्न उपस्थित किया जाता है.
वह उपसर्ग है. उपसर्ग केवलियों को नहीं होता है-किन्तु यह उपसर्ग
भगवान् महावीर को केवलि अवस्था में हुआ है. अतः यह आश्चर्यकारी
घटना है. क्योंकि अनन्त काल से यह हुआ है. इसलिये इसे
आश्चर्य कहा गया है. गर्भापहार-उदर गत जीवको दूसरे उदर में रख-
देना यह गर्भहरण रूप आश्चर्य है. यह गर्भहरण किसी भी तीर्थंकरका
नहीं हुआ है. केवल भगवान् महावीरका ही हुआ है. तीर्थंकर रूप से

યનેા ભાવ ઉત્પન્ન કરે છે તેને આશ્ચર્ય રૂપ માનવામાં આવે છે આ કથ-
નનો ભાવાર્થ એ છે કે જે વાત પહેલાં કદી ન બની હોય એવી અપૂર્વ
વાતને આશ્ચર્ય રૂપ માનવામાં આવે છે. તેના ઉપર મુજબ દસ પ્રકાર કહ્યા
છે હવે આ દસે પ્રકારના આશ્ચર્યોનું વધુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવે છે.

(૧)ઉપસર્ગ-જે ત્રાસ દ્વારા મનુષ્યને પોતાના ધર્મમાંથી ચલાયમાન કરવામાં
આવે છે, તે ત્રાસને ઉપસર્ગ કહે છે. દેવો, મનુષ્યો અને અસુરો દ્વારા આ પ્રકારના
ઉપસર્ગો કરવામાં આવે છે. ધર્મની આરાધના કરનાર જીવને ધર્મના માર્ગેથી
ચલાયમાન કરવા માટે જે વિઘ્નો ઉપસ્થિત કરવામાં આવે છે, તેમને ઉપ-
સર્ગ કહે છે. કેવલીએને આવા ઉપસર્ગો સહન કરવા પડતા નથી. છતાં પણ
શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તેમની કેવલી અવસ્થામાં આ પ્રકારના ઉપસર્ગો
સહન કરવા પડ્યાં હતાં, તે વાત આશ્ચર્ય જનક લાગે છે. આવું પૂર્વે કદી
બન્યું ન હોવાને કારણે આ ઘટનાને આશ્ચર્ય જનક ગણવામાં આવી છે.

(૨) ગર્ભાપહાર-એક સ્ત્રીના ઉદરમાં રહેલા જીવને બીજા સ્ત્રીના ઉદરમાં
મૂકી દેવો તેનું નામ ગર્ભાપહાર છે. કોઈ પણ તીર્થંકરની જાબતમાં ગર્ભાપ-
હરણની ઘટના બની નથી, માત્ર ભગવાન મહાવીરની જાબતમાં જ આ ઘટના
બની હતી, તે કારણે તે અપૂર્વ બનાવને પણ આશ્ચર્ય રૂપ ગણવામાં આવે છે.

તીર્થકરત્વેનોત્પન્નાયાઃ સ્ત્રિયાસ્તીર્થદ્વાદશાઙ્ગી સદ્ધો વા, અવેદં વોધ્યમ્-પૂરુષમિદ્ધાઃ
પુરુષવર્ગન્વહસ્તિનો લોકત્રયેઽપ્યપ્રતિહતપ્રભાવા एव तीर्थं प्रवर्त्तयन्ति, न तु स्त्रियः।
परन्त्वस्यामवસर्पिण्यां मिथिगधिपतेઃ કુમ્ભકસ્ય પુત્રી મલ્લીતિ નામ્ના પ્રસિદ્ધૈકો-
નવિશતિતમતીર્થકરો બ્રૂત્વા તીર્થં પ્રવર્તિતવતીત્યશ્નૂતપૂર્વં યત્ સ્ત્રીતીર્થં જાતં તત્તુનીચ
માશ્ચર્યમ્ ॥ ૩ ॥ તથા-અભાવિતા=વિરતિગ્રહણાયોગ્યા પરિષત્। અયં ભાવઃ-
સમુત્પન્નકેવલજ્ઞાનસ્ય ભગવતો મહાવીરસ્ય પ્રથમસમવસરણે ન કોઽપિ વિરતિં પ્રત્ય-
પદ્યનેત્યશ્નૂતપૂર્વત્યાદાશ્ચર્યમિતિ ચતુર્થમ્ ॥ ૪ ॥ તથા-કૃષ્ણસ્ય અપરકઙ્કા-एको वासु-
देवो नापरस्य वासुदेवस्य क्षेत्रं कदाचिदपि गच्छति परन्तु कृष्णो नाम नवमो वासु-

ઉત્પન્ન હુણ સ્ત્રીકા તીર્થદ્વાદશાઙ્ગી અથવા સદ્ધુ જો હૈ વહ સ્ત્રીતીર્થ હૈ
વહાં એસા જાનના ચાહિયે-પુરુષ સિંહ, પુરુષચર ગન્ધ હસ્તી એવં અપ્રતિ-
હત પ્રભાવવાલે હી તીર્થ કી પ્રવૃત્તિ કરતે હૈ-સ્ત્રીજન નહીં પરન્તુ હસ
અવસર્પિણી કાલમેં મિથિલા પતિ કુંભક કી પુત્રી જો મલ્લી હસ નામ
સે પ્રસિદ્ધ હુઈ હૈ ડસને ડન્નીસ વેં તીર્થકર હોકર તીર્થકી પ્રવૃત્તિ કી
હૈ એસા યહ કાર્ય અશ્નૂતપૂર્વ હુઆ કિ જો સ્ત્રી તીર્થકર હુઈ. યહ તૃતીય
આશ્ચર્ય હૈ। વિરતિ ગ્રહણ કે અયોગ્ય પરિષત્ કા હોના યહ ચતુર્થ
આશ્ચર્ય હૈ। તાત્પર્ય યહ હૈ કિ જય ભગવાન્ મહાવીરકો કેવલજ્ઞાન
ઉત્પન્ન હોગયા તવ ડનકે પ્રથમ સમવસરણમેં કિસીને બી વિરતિ કો
સ્વીકાર નહીં કિયા યહ બી અશ્નૂતપૂર્વ હોને સે આશ્ચર્ય કે રૂપમેં પ્રકટ
કિયા ગયા હૈ, કૃષ્ણકી અપરકઙ્કા-एक वासुदेव अपर वासुदेव के क्षेत्र

(૩) સ્ત્રીતીર્થ-તીર્થકર રૂપે ઉત્પન્ન થયેલી સ્ત્રીનું જે તીર્થ છે-જે સંધ
છે, તેનું નામ સ્ત્રીતીર્થ છે સામાન્ય રીતે તો પુરુષસિંહ, પુરુષચર ગન્ધહસ્તી
અને અપ્રતિહત પ્રભાવવાળા પુરુષો જે તીર્થની પ્રવૃત્તિ કરે છે. પરન્તુ આ
અવસર્પિણી કાળમાં મિથિલાપતિ કુંભકની મલ્લી નામની પુત્રીએ ૧૯માં
તીર્થકર થઈને તીર્થની પ્રવૃત્તિ કરી હતી સ્ત્રી તીર્થકર બને, એ બનાવ
અશ્નૂતપૂર્વ હોવાથી, આ બનાવને આશ્ચર્ય રૂપ ગણવામાં આવે છે

(૪) અભાવિતા પરિષદ-તીર્થકરની દેશના કદી ખાલી જતી નથી છતાં
તીર્થકરની દેશના સંભળવા છતાં જે કોઈ પણ વ્યક્તિ વિરતિ ગ્રહણ ન
કરે તો તેમની તે પરિષદને અભાવિતા પરિષદ કહે છે. ભગવાન મહાવીરને
કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થયા બાદ તેમના પ્રથમ સન્નવસરણમાં તેમની દેશના
સંભળવા માટે એકત્ર થયેલા જીવોમાંથી કોઈ પણ જીવે વિરતિનો સ્વીકાર
કર્યો ન હતો. આવી ઘટના અશ્નૂતપૂર્વ હોવાને કારણે અહીં આશ્ચર્ય રૂપે
અભાવવામાં આવી છે.

દેવઃ કપિલવાસુદેવક્ષેત્રસ્થિતાપરકઙ્કારાજધાની ગત ઇતિ કૃષ્ણેન વાસુદેવેન યદપર-
કઙ્કારાજધાની ગતિવિષયોક્તતા તદ્ભૂતપૂર્વત્વા દાશ્વર્યમિતિ પશ્ચમમ્ ॥૫॥ તથા-
ચન્દ્રસૂર્યયોઃસ્વ સ્વ વિમાનયુક્તયોર્ગત્વદ્વન્દ્વનાર્થં સમવસરણે મવસાણમિતિ પઠ્ઠમ્
તથા-હરિવંશકુલોત્પત્તિઃ-હરિઃ=પતન્નામઋયુગલિયપુરુષવિશેષઃ, તસ્ય વંશઃ=પુત્ર-
પૌત્રાદિમન્તાનઃ સ એવ કુલં તસ્યોત્પત્તિરિતિ । શ્રૂયતે ક્ષિત્ર ભરતક્ષેત્રાપેક્ષયા તૃતીયે
હરિવર્ષાલ્યે યુગલિકક્ષેત્રે સ્થિતં હરિનામકં યુગલિકં કોઽપિ વ્યન્તરસુરઃ પૂર્વભવત્રૈરેણ

મેં કમી ખી નહીં જાના હૈ પરન્તુ નોવે નારાયણ જો યે કૃષ્ણ હુએ હૈં વે
કપિલવાસુદેવ કે ક્ષેત્ર મેં સ્થિત જો અપરકઙ્કા નામકી રાજધાની મેં ગયે
હમ કો અભૂતપૂર્વ હોને સે આશ્ચર્ય કે રૂપ મેં યહાં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ
યહ પાંચવાં આશ્ચર્ય હૈ-તથા ચન્દ્રમા ઓર સૂર્યકા અપને ૨ વિમાન
સહિત ભગવાન કો વન્દનાકે લિયે સમવસરણમેં સાક્ષાત્ આના યહ છઠા
આશ્ચર્ય હૈ । હરિવંશ કુલોત્પત્તિ યહ સાતવાં આશ્ચર્ય હસલિયે માના
ગયા હૈ કિ હરિનામ કે યુગલિક પુરુષ વિશેષ કે પુત્રપૌત્રાદિ સન્તાન
રૂપ કુલ કી ઉત્પત્તિ હુઈ હૈ યુગલિક પુરુષ કે સમક્ષ ડસકી વંશ પરમ્પરા
નહીં ચલતી હૈ-ક્યોંકિ સન્તાન કે હોતે હી માતા પિતા કી મૃત્યુ હો
જાતી હૈ એસી સિદ્ધાન્ત કી માન્યતા હૈ હસ વિષય મેં કથા એસી સુની
ગઈ હૈ કિ ભરતક્ષેત્ર કી અપેક્ષા તોસરે હરિવર્ષ નામકે યુગલિક ક્ષેત્ર
મેં હરિનામ કે યુગલિક કો કિસી વ્યન્તર દેવને પૂર્વભવ કે વૈર સે હર

(૫) કૃષ્ણની અપરકંકા-એક વાસુદેવ ણીજા વાસુદેવનાક્ષેત્રમાં કંઠી જતો
નથી. પરન્તુ નવમાં કૃષ્ણ નામના વાસુદેવ કપિલ વાસુદેવના ક્ષેત્રમાં આવેલી
અપરકંકા નામની રાજધાનીમાં ગયા હતા. આ બનાવ પણ અભૂતપૂર્વ હોવાને
કારણે તેને અહીં આશ્ચર્ય રૂપ બતાવવામાં આવ્યો છે.

(૬) ચન્દ્રસૂર્યનું અવતરણ-ચન્દ્રમા અને સૂર્યનું પોતપોતાના વિમાન
સહિત ભગવાનને વંદણા કરવા માટે ભગવાનના સમવસરણમાં જે આગમન
થયું હતું, તેને છઠા આશ્ચર્ય રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે.

(૭) હરિવંશકુલોત્પત્તિ-હરિ નામના યુગલિક પુરુષ વિશેષના પુત્ર પૌત્રાદિ
રૂપ કુળની જે ઉત્પત્તિ થઈ તેને સાતમું આશ્ચર્ય ગણવામાં આવે છે. યુગલિક
પુરુષની નજર સમક્ષ તેની વંશપરમ્પરા આલુ રહેતી નથી, કારણ કે સંતાનની
ઉત્પત્તિ થતાં જ માતા-પિતાનું મૃત્યુ થઈ જાય છે, એવી સિદ્ધાંતની માન્યતા
છે. હરિવંશકુલોત્પત્તિના વિષયમાં આ પ્રકારની કથા સંભળાય છે-ભરત ક્ષેત્રની
અપેક્ષાએ ત્રીજા હરિવર્ષ ક્ષેત્રમાં યુગલિકો જ વસે છે. તેથી તેને યુગલિકક્ષેત્ર
કહે છે. આ હરિવર્ષ ક્ષેત્રમાં વસતા હરિ નામના કોઈ યુગલિક પુરુષને તેના

સમુત્થાપ્ય ભરતક્ષેત્રે નિશ્ચિતવાન। સ ચ જન્માન્તરપુણ્યપ્રભાવેળલગ્ન રાજ્યોઽનેકપુત્ર-
પૌત્રાદિયુક્તશ્ચિરં રાજ્યં કૃતવાન। તસ્ય વંશસ્તુ તતો જાતત્વાદ્ હરિવંશ-ઇતિ નામ્ના
પ્રસિદ્ધઃ। અયં ચાભૂતપૂર્વં ઇત્યાશ્વર્યમ્ ॥૭॥ તથા-ચમરોત્પાતઃ-ચમરસ્યાસુરકુમાર-
રાજસ્ય હત્પાતઃ=ઉર્ધ્વગમનમ્-સૌધર્મકલ્પે ગમનમ્। અત્રેત્યં શ્રૂયતે-દક્ષિણદિશિ ચપ-
રચશ્ચામિધાનાયાં રાજધાન્યાં સઘોજાતશ્ચમરેન્દ્રોઽવધિજ્ઞાનેનોર્ધ્વમવલોકયામાસ।
સ ચ સ્વશીર્ષોપરી સૌધર્મકલ્પસ્થિતસ્ય શક્રસ્ય ચરણૌ દદર્શ। તૌ દૃષ્ટ્વૈવ માત્સર્યાનલ-
પ્રદીપ્તહૃદયઃ શક્રં તિરસ્કર્તુમના હૃદ તિર્યગ્લોકે સુંસુમારનગરોદ્યાને છદ્મસ્થાવસ્થાયામ્

લિયા થા. ઓર હરકર ઉસ ભરત ક્ષેત્રમેં હાલ દિયા થા જન્માન્તર કે
પુણ્ય પ્રભાવ સે ઉસે રાજ્યકી પ્રાપ્તિ હો ગઈ-સો ઉસ અવસ્થા મેં ઉસકે
પુત્રપૌત્રાદિરૂપ અનેક સંતાન હુઈ. ઉસ સંતાન સે યુક્ત હુઈ ઉસને ચિર-
કાલ તક રાજ્ય કિયા અતઃ ઉસસે ઉત્પન્ન હોને કે કારણ ઉસકા વંશ
હરિવંશ ઇસ નામ સે પ્રસિદ્ધ હો ગયા. યહ અભૂત પૂર્વ હોને સે આશ્ચર્ય
કે રૂપમેં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ। ચમરોત્પાત-અસુરકુમાર રાજ ચમરકા
સૌધર્મકલ્પમેં જાના યહ આઠવાં આશ્ચર્ય હૈં. ઇસ વિષયમેં કથાનક એસા
હૈ-દક્ષિણ દિશામેં ચમરચન્દ્રાનામકી રાજધાની હૈ, ઉસમેં ચમર ઉત્પન્ન
હુઆ ઉત્પન્ન હોતે હી ઉસને અવધિજ્ઞાન સે ઝૂંચે કો દેખકર એસા દેખા
કિ મેરે શિર કે ઉપર સૌધર્મકલ્પ સ્થિત શક્રકે દો ચરણ હૈં। એસા
દેખકર ઉસકા હૃદય માત્સર્યરૂપ અગ્નિ સે પ્રદીપ્ત હો ઉઠા-ઉસને શક્રકો

પૂર્વ ભવનો હુશ્મન એવો કોઈ વ્યન્તર દેવ ઉપાડી ગયો હતો તેણે તેને
ભરતક્ષેત્રમાં મૂકી દીધો હતો. પૂર્વભવના પુણ્યપ્રભાવથી ત્યાં તેને રાજ્યની
પ્રાપ્તિ થઈ. ત્યાં તેણે કોઈ સ્ત્રી સાથે લગ્ન કર્યાં, અને તેને પુત્ર પૌત્રાદિ રૂપ
પરિવારની પ્રાપ્તિ થઈ તેણે આ પરિવાર રૂપ કુળથી યુક્ત થઈને લાંબા
સમય સુધી રાજ્ય કર્યું. આ રીતે એક યુગલિક પુરુષની કુળપરમ્પરા ચાલુ
થવાનો જે બનાવ બન્યો, તે અભૂતપૂર્વ હોવાને કારણે તેને અહીં આશ્ચર્ય
રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવેલ છે. તે હરિના વંશને અહીં હરિવંશને નામે પ્રકટ
કરવામાં આવ્યો છે

(૮) ચમરોત્પાત-અસુરકુમાર રાજ ચમરે સૌધર્મકલ્પમાં જઈને જે
ઉત્પાત મચાવ્યો તેને અહીં આઠમાં આશ્ચર્ય રૂપ ગણાવ્યો છે. આ વિષયનું
આ કથા દ્વારા સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે-દક્ષિણ દિશામાં અસુરકુમાર
રાય ચમરની ચમરચન્દ્રા નામની રાજધાની છે તેમાં કોઈ જીવ અસુરકુમારેન્દ્ર
ચમર રૂપે ઉત્પન્ન થયો ઉત્પન્ન થતાની સાથે જ તેણે અવધિજ્ઞાનથી ઉર્ધ્વ
દિશામાં જોયું તો પોતાના જ મસ્તક પર સૌધર્મકલ્પસ્થિત શક્રના જે ચરણ
જોયા. તે જોઈને તેનું હૃદય માત્સર્યરૂપ અગ્નિથી પ્રભવક્ષિત થયું. તેણે શક્રનો

एकरात्रिकीं प्रतिमामास्थाय विहरन्तं भगवन्तं महावीरं भक्तिविह्वलचेतसा प्रणम्य प्रोवाच—“भगवन् ! प्रबलवैरीपराजितस्य मम सर्वापदां प्रशमनसमर्थं भवचरणयुगलं शरणं भवत्विति” । एवमुक्त्वा सलक्षयोजनप्रमाणं महाभयङ्करं शरीरं वैक्रियशक्त्या विरचय्य परिवरत्नं प्रहरण परितो भ्रामयन् गर्जितास्फोटिताभ्यां देवांस्त्रासयन् सौधर्मावतंसकविमानवेदिकायां गत्वा शक्रं दुर्वचनै रध्यक्षिपत् । तेनाधिक्षिप्तः शक्रोऽपि क्रोधताम्रलोचनो मरीचिमालाकुलितं कुलिशं तदुपरि क्षिप्तवान् । कुलिशप्रयाद्

तिरस्कार करने की इच्छा से हम तिर्यङ्गलोक में स्थित सुंसमार नगरके उद्यान में छद्मस्थावस्थामें एक रात्रिकी प्रतिमा धारण की प्रतिमाको धारण करके विहार करते हुए भगवान् महावीरको भक्तिसे विह्वल चित्त होकर उसने नमस्कार किया और नमस्कार कर फिर वह कहने लगा—“भगवन् ! प्रबल वैरी से पराजित हुए मुझे समस्त आपत्तियों के प्रशमन करने में समर्थ ऐसे आपके चरण युगल शरणभूत हों” इस प्रकार कहकर के उसने एक लाख योजन प्रमाण महाभयङ्कर शरीरकी वैक्रियशक्ति से रचना की और ऐसा करके वह परिवरत्नरूप प्रहरणको चारों ओर घुमाता हुआ एवं अपनी गर्जनाओं एवं आस्फोटों से देवोंको भयभीत करता हुआ सौधर्मावतंसक विमान की वेदिकामें जा पहुँचा । वहाँ पहुँच करके शक्र को दुर्वचनों से तिरस्कार किया उसके दुर्वचनों से तिरस्कृत शक्रने भी क्रोधाग्निमान हो कर के मरीचिमाला—चमकती हुई किरण से युक्त कुलिश—वज्र को उसके ऊपर प्रहार किया—कुलिश (वज्र)

तिरस्कार करवाने निश्चय कर्था तयारआइ तिर्यङ्गलोकमां आवेक्षी सुंसमार नामनी नगरीना उद्यानमां जधने तेष्ते छद्मस्थ मुनिनुं इप धारणु करीने ओक रात्रिनी प्रतिमा धारणु करी आ प्रकारे प्रतिमा धारणु करीने विचरता जेवा तेष्ते अङ्गितथी विह्वल चित्तवणी दशाभां लगवान महावीरने नमस्कार करीने आ प्रमाणे प्रार्थना करी—“हे लगवान ! प्रणज वेरीथी पराजित थयेला जेवां मने, समस्त आपत्तिज्जेनुं प्रशमन करवाने समर्थ जेवां आपना चरणयुगलनुं शरणु डे।” आ प्रमाणे कहीने तेष्ते पोतानी वैक्रियशक्तिथी ओक लाख योजनप्रमाणना महा भयंकर शरीरनी रचना करी। तयार आइ परिवरत्न इप प्रहरणुने तारे तरङ्ग घुमावतो घुमावतो अने पोतानी गर्जनाज्जे अने पडाराथी देवाने भयभीत करतो करतो ते सौधर्मावतंसक विमाननी वेदिकाभां जध पडोज्जे। त्यां जधने तेष्ते दुर्वचने दावा शक्ने तिरस्कार कर्था। तेथी कोपायमान थयेला शक्ने मरीचिमाला (तेजस्वी किरण्णे) थी युक्त कुलिश (वज्र) ने तेना उपर प्रहार कर्था। ते कुलिशना प्रहारथी भयभीत

भीतस्वतः पलायितः कुलिशेनानुगतो भगवन्तम् शरणं ययौ । शक्रश्चावधिज्ञानेनेमं
व्यतिकरं विज्ञाय तीर्थकराशातनाभयास्तत्र शीघ्रमागत्य वज्रं प्रत्यावर्त्य तं शोचां च
मुक्तोऽसि भगवच्छरणपरिग्रहणात् । नास्त्यधुना ते मम सकाशात् किञ्चिदपि भयमिति ।
न कश्चिदपि चमरेन्द्र ऊर्ध्वलोके गच्छति, अतोऽस्य चमरेन्द्रस्योत्पातोऽभूतपूर्वत्वा-
दष्टममाश्चर्यमिति ॥ ८ ॥ तथा-अष्टशतसिद्धाः-अष्टोत्तरं शतम्-अष्टशतं, तच्च ते
सिद्धाश्चेति । भगवत ऋषभदेवस्य तीर्थ उत्कृष्टावगाहनाधारिणोऽष्टोत्तरशतसंख्यका
मुनय एक समयेन सिद्धा इतीदमभूतपूर्वत्वान्नवममाश्चर्यम् ॥ ९ ॥ तथा-असंयतेषु=

કે પ્રહાર સે ભયभीત હુઆ ચમરેન્દ્ર વહાં સે ભાગા ઓર સુધર્મા ઇન્દ્ર
ઉસકે પીછે પડા ચમરેન્દ્ર ભાગતા ૨ ભગવાન કી શરણમેં આયા શક્ર
અપને અવધિજ્ઞાન સે હસ સમાચાર કો જાનકર તીર્થ કરકી આશાતના
કે ભયસે શીઘ્રહી વહાં પર આયા ઓર વહાં આકરકે ઉસને વજ્રકો
લૌટા લિયા તથા ઉસસે બોલા-તુમ ભગવાનકી શરણમેં આ ગયે હો
હસલિયે મેં તુમ્હેં છોડતા હૂં । અથ તુમ્હેં સુઝસે કોઈ ભય નહીં હૈં । હસે
આશ્ચર્ય રૂપ હસલિયે કહા ગયા હૈં કિ કોઈ બી ચમરેન્દ્ર ઉર્ધ્વલોકમેં
નહીં જાતા હૈં અતઃ હસ ચમરેન્દ્રકા ઉત્પાત અભૂતપૂર્વ હોને સે આઠવેં
આશ્ચર્ય રૂપમેં યહાં પ્રકટ કિયા ગયા હૈં । અષ્ટશત સિદ્ધ-ભગવાન
ઋષભદેવકે તીર્થમેં ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના કે ધારી ૧૦૮ મુનિજન એક સમયમેં
સિદ્ધ હુએ હૈં. યહ બી અભૂતપૂર્વ હોને સે નૌવાં આશ્ચર્ય હૈં । અસંયત પૂજા

થયેત્રો ચમર ત્યાંથી ભાગ્યો અને સુધર્મા દેવલોકનો ઇન્દ્ર (શકે) તેની પાછળ
પાછળ પડ્યો. ચમરેન્દ્ર ભાગીને ભગવાન મહાવીરને શરણે આવ્યો. શકે પોતાના
અવધિજ્ઞાનથી એ વાત જાણી લીધી કે ચમરે ભગવાન મહાવીરનું શરણ
સ્વીકાર્યું છે. તેથી ભગવાનની આશાતના થવાના ભયથી તે ત્યાં આવ્યો અને
તેણે પોતાનું વજ્ર પાછું ખેંચી લીધું. તેણે ચમરને આ પ્રમાણે કહ્યું-“તું
ભગવાનને શરણે આવી ગયો છે, તેથી હું તને જતો કરું છું. કેવે તારે મારો
ભય રાખવાની જરૂર રહેતી નથી,” આ બનાવને આશ્ચર્ય રૂપ કહેવાનું કારણ
એ છે કે આ પહેલાં કદી પણ કોઈ ચમર ઉર્ધ્વલોકમાં ગયો હોય એવું
ખંન્યુ નથી. આ ચમરેન્દ્રનો ઉત્પાત આશ્ચર્યજનક અને અભૂતપૂર્વ હોવાથી
તેને અહીં આઠમા આશ્ચર્ય રૂપ ગણાવ્યો છે.

(૯) અષ્ટશતસિદ્ધ- એક જ સમયમાં ૧૦૮ સિદ્ધો થયાનો જે બનાવ
ભગવાન ઋષભદેવના તીર્થમાં ખંન્યો હતો, તે બનાવ પણ અભૂતપૂર્વ હોવાને
કારણે આશ્ચર્ય રૂપ ગણાય છે. ભગવાન ઋષભદેવના ઉત્કૃષ્ટ અવગાહના ધારી
૧૦૮ મુનિઓ એક જ સમયે સિદ્ધ થયા હતા.

આરમ્ભપરિગ્રહવસ્તુ પૂજા=સમ્માનઃ। અયં ભાવઃ-પુરા કાલે આરમ્ભપરિગ્રહાસક્તા ન કદાચિદપિ પૂજાર્હી જાતા અપિતુ સંયમિન પ્વ। અસ્યામવસર્પિણ્યાં તુ તત્પતિકૂલં જાતમિતિદશમમાશ્ચર્ય મિતિ ॥ ૧૦ ॥ એતાનિ અભૂતપૂર્વાણિ દશાઽપ્યાશ્ચર્યાણિ અનન્તેન કાલેનાઽસ્યામવસર્પિણ્યાં જાતાનીત્યેતેપામાશ્ચર્યત્વમિતિ। અતएવાહ-‘દસ-વિ અણંતેણં કાલેણં’ ઇતિ ॥ સૂ. ૮૩ ॥

પૂર્વેમૂત્રે ચમરોત્પાતોઽષ્ટમાશ્ચર્યત્વેનોક્તઃ। સ ચોત્પાતો રત્નપ્રભાપૃથિવીતો જાત ઇતિ રત્નપ્રભાવિષયે કિંચિદાહ—

મૂલમ્—ઈમીસેણં રયણપ્પમાણ પુઢવીણ રયણે કંડે દસ જોયણસયાઈં વાહલ્લેણં પન્નત્તે ૧। ઇમીસે રયણપ્પમાણ પુઢવીણ વયરે કંડે દસ જોયણસયાઈં વાહલ્લેણં પન્નત્તે ૨। એવં વેરુલિય ૩, લોહિયક્કલ્હે ૪, મસારગલ્લે ૫ હંસગલ્લે ૬ પુલ્લ ૭ સોગંધિય ૮ જોર્ડરસે ૯ અંજણે ૧૦ અંજણપુલ્લ ૧૧ રયણ ૧૨ જાયરુવે ૧૩ અંકે ૧૪ ફલિહે ૧૪ રિટ્ટે ૧૬, જહા રયણે તહા સોલસવિ માણિયવા ॥ સૂ. ૮૪ ॥

પુરાને સમયમેં જો જીવ આરમ્ભ પરિગ્રહમેં તત્પર હોતે થે વે કમી મી પૂજા કે યોગ્ય નહીં હોતે થે પૂજા કે યોગ્ય તો સંયમી જન હી હોતે—પરન્તુ હસ અવસર્પિણી કાલમેં તો હસસે પ્રતિકૂલ હી હુઆ હૈ—એસા દશવાં આશ્ચર્ય હૈં। યે દશ આશ્ચર્ય અનન્તકાલ સે હસ અવસર્પિણી કાલમેં હુણ હૈં। યહી વાત “દસ વિ અણંતેણં કાલેણં” હસ સૂત્ર પાઠ દ્વારા પ્રકટ કી ગઈ હૈ। સૂત્ર ॥૮૩॥

(૧૦) અસંયત પૂજા— પુરાણા કાળમાં આરંભ અને પરિગ્રહથી યુક્ત જીવેને પૂજાને યોગ્ય ગણવામાં આવતા નહીં સંયમી જીવેને જ પૂજાને પાત્ર ગણવામાં આવતા હતાં. પરન્તુ આ અવસર્પિણી કાળમાં તો એના કરતાં જિલ્લી જ વાત જીવમાં આવે છે. તેથી તેને પણ આશ્ચર્ય રૂપ ગણવામાં આવે છે.

ઉપર ગણાવેલા દસ બનાવો અનંત કાળમાં કદી પણ બન્યા નથી, આ અવસર્પિણી કાળમાં જ આ પ્રકારના આશ્ચર્ય જનક બનાવો બન્યા છે. એજ વાત સૂત્રકારે “દસ વિ અણંતેણં કાલેણં” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે. ॥ સૂત્ર ૮૩ ॥

છાયા—અસ્યાઃ સ્વલુ રત્નપ્રમાયાઃ પૃથિવ્યાઃ રત્નકાણ્ડો દશ યોજનશતાનિ
વાહલ્યેન પ્રજ્ઞપ્તઃ ૨। એવં વૈદૂર્ષો ૩ લોહિતાક્ષો ૪ મસારગલ્લો ૫ હંસગર્ભઃ ૬ પુલકઃ
૭ સૌગન્ધિકો ૮ જ્યોતીરસઃ ૯ અઙ્ગનઃ ૧૦ અઙ્ગનપુલકઃ ૧૧ રજતમ્ ૧૨
જાતરૂપમ્ ૧૩ અક્કઃ ૧૪ સ્ફટિકઃ ૧૫ રિપ્તઃ ૧૬ । યથા રત્નસ્તથા ષોડશાપિ
માણિતવ્યા : ॥ સૂં ૮ ૪ ॥

ટીકા—‘ઈમીસે જં’ इत्यादि—

આયામવિષ્કમ્માભ્યાં રજ્જુ પ્રમાણાવાહલ્યતથા અશીતિસહસ્રાધિક-લક્ષયો-
જનપ્રમાણાયા રત્નપ્રમાવિધાનાયાઃ પૃથિવ્યા વાહલ્યે ઉપરિ મધ્યે-૬ધસ્તાચ્ચ સ્વરકાણ્ડ
૧ પક્કવહુલકાણ્ડ ૨ જલવહુલકાણ્ડાભિધાનાસ્ત્રયઃ ૩ કાણ્ડાઃ સન્તિ । એતે ત્રયોઽપિ
ક્રમેણ વાહલ્યતઃ ષોડશચતુરશીત્પશીતિસહસ્રયોજનપ્રમાણાઃ । તત્ર-ષોડશસહસ્રયો-
જનવાહલ્યાત્મકે સ્વરકાણ્ડે ષોડશરત્નાત્મકાઃ ષોડશકાણ્ડાઃ સન્તિ । તત્રૈકૈકઃ કાણ્ડો
વાહલ્યેન સહસ્રસહસ્રયોજનાત્મકો વિજ્ઞેયઃ । અમુમેવાર્થમાહ સૂત્રકારઃ—, ‘ઈમીસે જં’

ચમરોત્પાત પૂર્વસૂત્રમેં અષ્ટમ આશ્ચર્યરૂપ સે કહા ગયા હૈ. યહ
ઉત્પાત રત્નપ્રભા પૃથિવી સે હુઆ હૈ અતઃ અવ સૂત્રકાર રત્નપ્રભાકે
વિષયમેં કુછ કથન કરતે હૈ—“ઈમીસે રચણપ્પમાણ-इत्यादि । સૂં ॥ ૮ ૪ ॥

ટીકાર્થ—ઈસ રત્નપ્રભા પૃથિવીકા આયામ ઓર વિષ્કમ્મ એક રાજૂકા
હૈ તથા ઇસકા વાહલ્ય—મોટાઈ—૧ લાખ ૮૦ હજાર યોજનકી હૈ. ઇસકે ત્રીન
કાણ્ડ હૈ । સબસે ઊપરકા પ્રથમ સ્વરકાણ્ડ હૈ. જો મોટાઈ મેં ૧૬ હજાર
યોજન પ્રમાણ હૈ ઇસકે નીચેકા દૂસરા કાણ્ડ પક્કવહુલ હૈ, જો મોટાઈમેં
૮૪ હજાર યોજન પ્રમાણ હૈ. ઇસકે નીચેકા ત્રીસરા કાણ્ડ જલવહુલ હૈ
જો મોટાઈમેં ૮૦ હજાર યોજન પ્રમાણ હૈ. ૧૬ હજાર યોજનકી મોટાઈ-
વાલે સ્વરકાણ્ડ કે રત્નાત્મક ૧૬ કાણ્ડ હૈ । ઇનમેં એક એક કાણ્ડકી
મોટાઈ ૧-૧ હજાર યોજનકી હૈ । ઇસી વાતકો મનમેં ધારણ કરકે

આગલા સૂત્રમાં આઠમાં આશ્ચર્ય રૂપે ચમરોત્પાતનું કથન કરવામાં
આવ્યું છે. આ ઉત્પાત રત્નપ્રભા પૃથ્વીમાંથી થયો હતો. પૂર્વસૂત્ર સાથે આ
પ્રકારના પ્રબંધને લીધે હવે સૂત્રકાર રત્નપ્રભા પૃથ્વી વિષે થોડું કથન કરે છે.
“ઈમીસે રચણપ્પમાણ” इत्यादि

આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીનો આયમ (લાંબાઈ) અને વિષ્કંભ (પહોળાઈ)
એક રાજુપ્રમાણ છે, તથા તેની ઊંડાઈ ૧ લાખ ૮૦ હજાર યોજનની છે તેના
ત્રણ કાંડ છે. સૌથી ઉપરનો કાંડ ખરકાંડ છે. તેની ઊંડાઈ ૧૬ હજાર યોજન
પ્રમાણ છે. તેની નીચે બીજો પંકબહુલ કાંડ છે તે ૮૪ હજાર યોજન પ્રમાણ
ઊંડો છે. તેની નીચે ત્રીજો જલબહુલ કાંડ છે, તે ૮૦ હજાર યોજન પ્રમાણ છે.

इत्यादिना । अस्याः=सर्वतः समीपवर्तिन्या रत्नप्रभागाः पृथिव्याः खरकाण्डः
सम्बन्धि षोडशकाण्डेषु रत्ननामको यः प्रथमः काण्डः स बाह्येन=स्थूलतया दश
योजनशतानि=सहस्रयोजनपरिमितः प्रज्ञप्तः । एवमेव शेषा वज्रकाण्डादारभ्य रिष्ट
काण्डपर्यन्ताः सर्वेऽपि काण्डाः सहस्रसहस्रयोजनपरिमिता बोध्याः । तदेवाह
सूत्रकारः—“जहा रयणे तहा सोलस वि भाणियव्वा” इति ॥ ॥सू० ८४ ॥

रत्नप्रभाया अधिकरात् तदाधेयद्वीपादिवक्तव्यतामाह—

मूलम्—सर्वेऽपि णं दीवसमुद्रा दस जોયણસયાઈં ઉવ્વેહેણં
પળણત્તા ૧। સર્વેઽપિ ણં મહાદ્વદા દસજોયણાઈં ઉવ્વેહેણં પળણત્તા
૨। સર્વેઽપિ ણં સલિલકુંડા દસજોયણાઈં ઉવ્વેહેણં પળણત્તા ૩।
સીયા સીયોયા ણં મહાળઈંઓ મુહમૂલે દસ દસ જોયણાઈં ઉવ્વે-
હેણં પળણત્તા ૪॥ સૂ૦ ૮૫॥

છાયા—સર્વેઽપિ સ્વલુ દ્વીપસમુદ્રા દશ યોજનશતાનિ ઉદ્વેધેન પ્રજ્ઞપ્તાઃ ૧।
સર્વેઽપિ સ્વલુ મહાદ્વદા દશ યોજનાનિ ઉદ્વેધેન પ્રજ્ઞપ્તાઃ ૨। સર્વાણ્યપિ સ્વલુ સલિલ-

સૂત્રકારને “ इमीसेणं ” इत्यादि रूपसे सूत्रपाठ किया हैं सब पृथिवियों
की अपेक्षा समीपवर्ती इस रत्नप्रभा पृथिवी के खरकाण्ड सम्बन्धी १६
काण्डोंमें जो प्रथम रत्न नामको प्रथम काण्ड है वह १० सौ योजनका
एक हजार योजनका—मोटा कहा गया है. इसी तरह वज्रकाण्ड से लेकर
रिष्टकाण्ड तक जो और शेषकाण्ड हैं, वे सब भी एक एक हजार योजन
के मोटे हैं । यही बात सूत्रकारने “ जहा रयणे तहा सोलस वि भाणि-
यव्वा ” इस सूत्रपाठ द्वारा प्रकटकी है । सूत्र । ८४॥

रत्नप्रभा के अधिकार से अब सूत्रकार इनके आधेय भूत द्वीपा-

સૌથી ઉપરનો ખરકાંડ રત્નાત્મક ૧૬ કાડોવળો છે. તે પ્રત્યેક કાંડની
ઊંડાઈ ૧૦૦૦-૧૦૦૦ યોજન પ્રમાણુ કહી છે. એજ વાતને સૂત્રકારે અહીં
“ इमीसेणं ” इत्यादि सूत्रपाठ द्वारा प्रकट करी છે. સઘળી નારક પૃથ્વીઓની
અપેક્ષાએ સમીપવર્તી એવી આ રત્નપ્રભા પૃથ્વીના ખરકાંડ સંખ્યાથી ૧૫
કાંડો છે, તેમાંના સૌથી પહેલો કાંડ રત્નકાંડ છે. તે દસસો (૧૦૦૦) યોજન
પ્રમાણુ ઊંડો છે એજ પ્રમાણુ વજ્રકાંડથી લઈને રિષ્ટકાંડ પર્યન્તના બાકીના
કાડો પણ ૧૦૦૦-૧૦૦૦ યોજનપ્રમાણુ ઊંડાં છે. એજ વાત સૂત્રકારે “ જહા
રયणे તહા સોલસ વિ ભાણિયવ્વા ” આ સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે. ॥સૂત્ર ૮૪॥

આગલા સૂત્રમાં રત્નપ્રભા પૃથ્વીની વાત કરી. હવે સૂત્રકાર તેના આધેય-

કુણ્ડાનિ દશયોજનાનિ ઉદ્વેધેન પ્રજ્ઞાનિ ૨। શીતાશીતોદે સ્વલુ મહાન્ધૌ મુસ્મૂલે
દશ દશ યોજનાનિ ઉદ્વેધેન પ્રજ્ઞપ્તે ૪। સૂ ૦ ૮૫।

ટીકા—‘સન્વેડવિ ણં’ इत्यादि—

સર્વેડવિ દ્વીપસમુદ્ધા ઉદ્વેધેન=ગામ્ભીર્યેણ દશ યોજનશતાનિ=સહસ્રયોજનાનિ
પ્રજ્ઞપ્તાઃ=તથિતાસ્તિર્થંકરદિમિઃ । દ્વીપાનાં ગામ્ભીર્યં તુ જમ્બુદ્વીપસ્ય પશ્ચિમવિદેહ-
ક્ષેત્રે જગતિ સમીપે ભવતિ, નાન્યત્ર, તથાડવિ અધોદિશિ સહસ્રયોજનપર્યન્તં તત્તદ્વી-
પવ્યપદેશાત્ તદાદાય તેષામપિ ગામ્ભીર્યેણ સહસ્રયોજનાત્મકત્વમુક્તમ્ । અયમેવા-
ર્થોડન્યત્રાપ્યુક્તઃ “ઉન્વેહો-ઉંડત્તિ મણિયં હોઽ । દીવાણં ઉંડત્તણાભાવે વિ અહોદિસિ
સહસ્સં જાવ દીવન્વવદેસો । જંબુદ્વીવે ઉ પચ્છિમવિદેહે જગઈ પચ્ચાસત્તીણ ઉંડંતણ-
મવિ અત્થિત્તિ” છાયા-ઉદ્વેધઉંડત્વમિતિ મણિતં ભવતિ । દ્વીપાનામુણ્ડત્વાભાવેડવિ

દિકોંકી વત્તવ્યતા કહતે હૈં—

“સન્વેડવિ ણં દીવસમુદ્ધા દસજોયણસયાઈ”-इत्यादि। सूत्र ८५

ટીકાર્થ—સમસ્ત દ્વીપ ઓર સમુદ્ર ગમ્ભીરતાકી અપેક્ષા સે તીર્થંકરા-
દિકોંકે ૧૦-૧૦ સૌ યોજનકે ૧-૧ હજાર યોજનકે કહે ગયે હૈં । દ્વીપોંકા
ગાંભીર્ય તો જમ્બુદ્વીપસ્ય પશ્ચિમવિદેહ ક્ષેત્રમૈં જગતીકે સમીપમૈં હોતા
હૈ, અન્યત્ર નહીં । ફિર ખી અધોદિશામૈં એક હજાર યોજન પર્યન્ત ઉસ
૨ દ્વીપ કે નામ સે વ્યપદેશ હોતા હૈ અતઃ ઉસે લેકર ઉનકા ખી વહ
ગાંભીર્ય એક હજાર યોજનકા કહા ગયા હૈ । યહી અર્થ અન્યત્ર ખી કહા
ગયા હૈ—“ ઉન્વેહો ઉંડત્તિ મણિયં હોઽ દીવાણં ઉંડત્તણાભાવેડવિ
અહોદિસિ સહસ્સ જાવ દીવન્વવદેસો । જંબુદ્વીવે ઉ પચ્છિમવિદેહે જગઈ
પચ્ચાસત્તીણ ઉંડંતણમવિ અત્થિત્તિ ” ઉદ્વેધનામ ગહરાઈકા હૈ. યહ ગહ-

ભૂત દ્વીપાદિકોંકાનું કથન કરે છે.

“સન્વેવિ ણં દીવસમુદ્ધા દસ જોયણસયાઈ” ઈત્યાદિ—

ટીકાર્થ—સમસ્ત દ્વીપો અને સમુદ્રોની ગંભીરતા (ઉંડાણ) તીર્થંકરાદિકોંકાએ
૧૦-૧૦ સૌ યોજનની એટલે કે ૧૦૦૦-૧૦૦૦ યોજનની કહી છે. દ્વીપોનું ગાંભીર્ય
તો જંબુદ્વીપસ્ય પશ્ચિમ વિદેહ ક્ષેત્રમાં જગતીની સમીપમાં હોય છે—અન્યત્ર
નહીં. છતાં પણ અધોદિશામાં એક હજાર યોજનપર્યન્તના પ્રદેશ માટે તે તે
દ્વીપના નામનો વ્યપદેશ (વહેપાર) ચાલે છે તે કારણે સમસ્ત દ્વીપોનું ગાંભીર્ય
૧૦૦૦-૧૦૦૦ યોજનનું કહ્યું છે એજ અર્થ અન્યત્ર પણ કહેવામાં આવ્યો
છે—“ ઉન્વેહોઉંડત્તિ મણિયં હોઽ દીવાણં ઉંડત્તણાભાવેડવિ અહોદિસિ સહસ્સજાવ
દીવન્વવદેસો જંબુદ્વીવે ઉ પચ્છિમવિદેહે જગઈ પચ્ચાસત્તીણ ઉંડંતણમવિ અત્થિત્તિ”

અધોદિશિ સદૃશં યાત્રદ્ દ્વીપવ્યપદેશઃ । જમ્બૂદ્વીપે તુ પશ્ચિમવિદેહે જગતી પ્રત્યાસત્યા
 ઉણ્ડત્વમપ્યસ્તીતિ । ઇતિ ॥ ૧ ॥ તથા—સર્વેઽપિ મહાહ્રદાઃ હિમવત્તાદિ સ્થિતાઃ પદ્માદયો
 ગામ્ભીર્યેણ દશયોજનપ્રમાણા બોધ્યાઃ ॥ ૨ ॥ તથા—સર્વાણ્યપિ સલિલકુંડાનિ—સલ્હિ-
 લાનિ=ગંગાદયો મહાનદયઃતેષાં કુંડાનિ-પ્રપાતકુંડાનિ પ્રભવકુંડાનિ ચ ગામ્ભીર્યેણ
 દશ યોજનપ્રમાણાનિ ॥ ૩ ॥ તથા—શીતા શીતોદેતિ મહાનદિ દ્વયં મુલમૂલે=સમુદ્રપ્ર-
 વેશસ્થાને—ગામ્ભીર્યેણ દશયોજનાત્મકં બોધ્યમિતિ ॥ ૪ ॥ મૂં ૮૫ ॥

દ્વીપસમુદ્રાધિકારાત્ તદ્વર્તીનિ નક્ષત્રાણિ દર્શયિતુમાહ—

મૂલમ્—કત્તિયાણવલ્લભે સવ્વવાહિરાઓ મંડલાઓ દસમે
 મંડલે ચારં ચરઈ ૧ । અણુરાહાણવલ્લભે સવ્વવર્મંતરાઓ મંડલાઓ
 દસમે મંડલે ચારં ચરઈ ૨ ॥ સૂં ૮૬ ॥

છાશા—કૃત્તિકાનક્ષત્રં સર્વગાહ્યાત્ દશમે મંડલે ચારં ચરતિ ૧ । અનુરાધાનક્ષત્રં
 સર્વાભ્યંતરાદ્ મંડલાદ્ દશમે મંડલે ચારં ચરતિ ॥ ૨ ॥ સૂં ૮૬ ॥

રાઈ દ્વીપોંમેં નહીં હોતી હૈ. પરન્તુ ફિર ખી અધોદિશામેં એક હજાર
 યોજન તક દ્વીપવ્યપદેશ હોતા હૈ જમ્બૂદ્વીપમેં તો પશ્ચિમ વિદેહમેં જગતી
 કે પાસ ગહરાઈ ખી હૈ ॥ ૧ ॥ તથા—સમસ્ત ખી મહાહ્રદ હિમવત્ આદિ
 પર્વતોં પર સ્થિત પદ્માદિક હ્રદ—ગહરાઈમેં દશ યોજનકે હૈ—એસા જાનના
 ચાહિયે. ॥ ૨ ॥ તથા જિતને ખી સલિલ કુંડ હૈ—ગંગાઆદિ નદિયોંકે
 કુંડ હૈ—પ્રપાતકુંડ ઓર પ્રભવકુંડ હૈ—વે ખી સવ ૧૦ યોજન પ્રમાણ
 કે ગહરે હૈ ॥ ૩ ॥ તથા—શીતા શીતોદા નામકી જો દો નદિયાં હૈં વે
 સમુદ્ર પ્રવેશ સ્થાનમેં દશ દશ યોજનકી ગહરી હૈં ॥ ૪ ॥ સૂત્ર ॥ ૮૫ ॥

દ્વીપ ઓર સમુદ્રકે અધિકાર સે અવ સૂત્રકાર તદ્વર્તી નક્ષત્રોંકો
 પ્રકટ કરતે હૈ—“કત્તિયાણવલ્લભે સવ્વવાહિરાઓ—ઇત્યાદિ । સૂત્ર ॥ ૮૬ ॥

ગહરાઈ (ગંડાણ)ને ઉદ્દેશ કહે છે આ ગંડાણનો દ્વીપોમાં સદ્ભાવ હોતો
 નથી. પરન્તુ અધે દિશામાં એક હજાર યોજન સુધીના ભાગ માટે તે દ્વીપના
 નામનો વ્યવહાર થાય છે. જમ્બૂદ્વીપમાં તો પશ્ચિમ વિદેહમાં જગતીની પાસે
 ગહરાઈ પણ કોાય છે. ॥ ૧ ॥ તથા સઘળાં મહાહ્રદની—હિમવત્ આદિ પર્વતો
 પર આવેલાં પદ્માદિક હ્રદની—ગહરાઈ (ગંડાણ) હસ યોજનની કહી છે, એમ
 સમજવું. ૧૨ । તથા જેટલા સન્નિલ કુંડો (ગંગાદિ નદીઓના કુંડો) છે—પ્રપાત-
 કુંડ અને પ્રલવકુંડો છે—તેઓ પણ ૧૦ યોજનપ્રમાણ ગંડા છે. ૧૩ । તથા
 શીતા અને શીતોદા નામની જે મહાનદીઓ છે, તેઓ સમુદ્રપ્રવેશ સ્થાને
 ૧૦-૧૦ યોજનપ્રમાણ ગંડી છે. ૧૪ । ॥ સૂત્ર ૮૫ ॥

દ્વીપો અને સમુદ્રોનો અધિકાર ચાલી રહ્યો છે, તેથી હવે સૂત્રકાર તેમાં

ટીકા—‘કત્તિયાણકલતે’ इत्यादि—

સૂર્યસ્ય મળ્ડલાનિ ચતુરશીત્યધિકશતસંખ્યકાનિ ચન્દ્રસ્ય પશ્ચદશ, નક્ષત્રાણાં ચાષ્ટીતત્ર-કૃત્તિકાનક્ષત્રં સર્વવાહ્યાત્ મળ્ડલાત્=ચન્દ્રમળ્ડલાત્-ચન્દ્રસંચરણમાર્ગ-વિશેષાત્ પશ્ચદશાનાં મધ્યે દશમે મળ્ડલે ચંદ્રમળ્ડલે સર્વાભ્યન્તરાત્ ષષ્ઠે ચન્દ્રમળ્ડલે ચારં ચરતિ= ભ્રમણં કરોતિ ૧ । તથા-અનુરાધા નક્ષત્રં સર્વાભ્યન્તરાત્ ચન્દ્રમળ્ડલાત્ દશમે સર્વવાહ્યાત્ ષષ્ઠે ચન્દ્રમળ્ડલે ચારં ચરતિ ॥સૂ. ૮૬॥

નક્ષત્રપ્રસ્તાવાત્ સમ્પ્રતિ જ્ઞાનવૃદ્ધિકરાણિ દશનક્ષત્રાણ્યાહ—

મૂલમ્-દસ ણકલ્પત્તા ણાણસ્સ વિદ્ધિકરા પળ્ણત્તા, તં જહા મિગસિરમહા પુસ્સો, તિન્નિ ય પુવ્વાઈં મૂલમ્સસેસા । હત્થો ચિત્તા ય તહા, દસ બુદ્ધિકરાઈં નાણસ્સ ॥૧ સૂ. ૮૭॥

છાયા—દશ નક્ષત્રાણિ જ્ઞાનસ્ય વૃદ્ધિકરાણિ પ્રજ્ઞસાનિ, તથા-મૃગશિરઃ ૧ આર્દ્રા ૨ પુષ્યઃ ૩ તિસ્ત્રશ્ચ પૂર્વા ૬ મૂલમ્ ૭ અશ્લેષા ૮ । હસ્તઃ ૯ ચિત્રા ૧૦ ચ તથા દશ વૃદ્ધિકરાણિ જ્ઞાનસ્ય ॥ ૧ ॥ સૂ. ૮૭॥

ટીકાર્થ—સૂર્યકે મળ્ડલ ૧૮૪ હૈં । ચન્દ્રકે મળ્ડલ ૧૫ હૈં । નક્ષત્રોંકે મળ્ડલ આઠ હૈં । इनमें कृत्तिका जो नक्षत्र है वह सर्व वाह्यमળ्ડल से-चन्द्र संचरण मार्ग विशेष से ૧૫ મળ્ડલોંમેં સે દશવેં મળ્ડલમેં-ચન્દ્રમળ્ડલમેં ઓર સર્વ આભ્યન્તર મળ્ડલ સે છઠ્ઠે ચન્દ્રમળ્ડલમેં ભ્રમણ કરતા હૈ । ૧॥ તથા-અનુરાધા નક્ષત્ર સર્વાભ્યન્તર મળ્ડલ સે-ચન્દ્રમળ્ડલ સર્વવાહ્ય સે છઠ્ઠે ચન્દ્રમળ્ડલમેં ભ્રમણ કરતા હૈ । સૂત્ર ॥૮૬॥

નક્ષત્રકે પ્રસ્તાવ સે અબ સૂત્રકાર જ્ઞાનકી વૃદ્ધિકારક દશ નક્ષત્રોંકા કથન કરતે હૈં—“દસણકલ્પત્તા ણાણસ્સ”—इत्यादि ।સૂ. ॥૮૭॥

દેખાતાં નક્ષત્રોનાં નામ કહે છે. “કત્તિયાણકલતે સન્ન વાહિરાઓ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—સૂર્યનાં મંડળ ૧૮૪ છે ચન્દ્રનાં મંડળ ૧૫ છે. નક્ષત્રોનાં મંડળ આઠ છે. તેમાંનું જે કૃત્તિકા નક્ષત્ર છે તે સર્વ બાહ્યમંડલોમાંના-ચન્દ્રના સંચરણના માર્ગમાંના ૧૫ મંડલોમાંના હસમાં ચન્દ્રમંડલમાં અને સર્વ આભ્યન્તર મંડલોમાંના છઠ્ઠા ચન્દ્રમંડલમાં ભ્રમણ કરે છે. ૧૧ । તથા અનુરાધા નામનું જે નક્ષત્ર છે તે સર્વ આભ્યન્તર ચન્દ્રમંડલોમાંના દશમાં ચન્દ્રમંડલમાં અને સર્વ બાહ્ય ચન્દ્રમંડલોમાંના છઠ્ઠા ચન્દ્રમંડલમાં ભ્રમણ કરે છે. ॥ સૂ. ૮૬ ॥

પૂર્વસૂત્રમાં નક્ષત્રોનો અધિકાર ચાલી રહ્યો હતો. હવે સૂત્રકાર જ્ઞાનની સ્થાન—૮૮

ટીકા—‘દસ નક્ષત્રા’ ઇત્યાદિ—

જ્ઞાનસ્ય=શ્રુતજ્ઞાનસ્ય વૃદ્ધિકરાણિ મૃગશિર આદીનિ દશ નક્ષત્રાણિ ભવન્તિ ।
અયં ભાવઃ—ચન્દ્રો યદિ દશસુ એતેષુ નક્ષત્રેષુ કેનાપિ નક્ષત્રેણ યુક્તો ભવેત્, તદા
યદિ શ્રુતજ્ઞાનસ્યોદ્દેશાદિઃ ક્રિયતે, તર્હિ તદ્ વર્દ્યતે । ક્ષયોપશમદેતુત્વેન કાલ-
વિશેષસ્ય તથાવિધકાર્યેષુ કારણત્વાત્ । તદુક્તમ્—

“ઉદયવલયલઔચસમોચસમાજંચ કમ્મુણો ભણિયા । દ્રવ્યં સ્વેતં કાલં ભવંચ
ભાવંચ સંપપ્પ ॥ ૧ ॥”

છાયા—ઉદયક્ષયક્ષયોપશમોપશમા યચ્ચ કર્મણો ભણિતાઃ ।

દ્રવ્યં ક્ષેત્રં કાલં ભવંચ ભાવંચ સમ્પ્રાપ્ય ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥ મૂ. ૮૭ ॥
અનન્તરસૂત્રે શ્રુતજ્ઞાનવૃદ્ધિકરાણિ દશ નક્ષત્રાણ્યુક્તાનિ । શ્રુતજ્ઞાનસ્ય વૃદ્ધિસ્તુ
તત્પ્રતિષ્ઠાતરુકર્મણઃ ક્ષયોપશમાદેવ ભવતીતિ કર્મનિવન્ધનકૃત્કોટીસૂત્રમાહ—

મૃગશિર આદિ ૧૦ નક્ષત્ર શ્રુતજ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરનેવાળે હોતે હૈં—
જેસે—મૃગશિર ૧ આર્દ્રા ૨ પુષ્ય ૩ પૂર્વા ૬ મૂલ ૭ અશ્લેષા ૮ હસ્ત ૯
એવં ચિત્રા ૧૦, તાત્પર્ય એસા હૈં કિ ચન્દ્ર હન ૧૦ નક્ષત્રમેં સે કિસી મી
નક્ષત્ર સે યુક્ત હો, તો ડસ સમય યદિ શ્રુતજ્ઞાનકા ઉદ્દેશ આદિ કિયા
જાવે તો વહ વૃદ્ધિકો પ્રાપ્ત હોતા હૈં ક્યોંકિ કાલ વિશેષ મી ક્ષયોપશ-
મકા હેતુ હોતા હૈં અતઃ વહ તથાવિધકાર્યમેં કારણ હોતા હૈં—કહા મી
હૈં “ઉદયવલયલઔચસમો”-ઇત્યાદિ ।

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, ભવ, ઓર ભાવ હનકો પ્રાપ્તકર કર્મકે ઉદય,
ક્ષય, ક્ષયોપશમ ઓર ઉપશમ હોતે હૈં । સૂત્ર ૮૭ ॥

હસ ડપર કે સૂત્રમેં શ્રુતજ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરનેવાળે ૧૦ નક્ષત્રોંકો કહ-

વૃદ્ધિ કરનારાં હસ નક્ષત્રોનું કથન કરે છે “દસ નક્ષત્રા નાનસ” ઇત્યાદિ.

ટીકા—મૃગશીર્ષ આદિ ૧૦ નક્ષત્રો શ્રુતજ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરનારા હોય છે.
તે ૧૦ નક્ષત્રોનાં નામ નીચે પ્રમાણે છે—(૧) મૃગશીર્ષ, (૨) આર્દ્રા, (૩) પુષ્ય,
(૪-૫-૬) પૂર્વા, (૭) મૂલ, (૮) અશ્લેષા, (૯) હસ્ત અને (૧૦) ચિત્રા,
આ કથનનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્યારે ચન્દ્ર આ ૧૦ નક્ષત્રોમાંથી કોઈ પણ
નક્ષત્રથી યુક્ત હોય, ત્યારે શ્રુતજ્ઞાનનો અભ્યાસ, વાચના આદિ કરવામાં આવે
તો જ્ઞાનની વૃદ્ધિ અવશ્ય થાય છે; કારણ કે કાળવિશેષ પણ ક્ષયોપશમમાં
કારણભૂત અને છે કહ્યું પણ છે કે—“ઉદયવલયલઔચસમો” ઇત્યાદિ—દ્રવ્ય,
ક્ષેત્ર, કાળ, ભવ અને ભાવને પ્રાપ્ત કરીને કર્મનો ઉદય, ક્ષય, ક્ષયોપશમ
અને ઉપશમ થતાં હોય છે. ॥ સૂ. ૮૭ ॥

મૂલપ્—ચતુષ્પથ થલચરપંચિદિયતિરિક્ષજોણિયાણં દસ
જાડકુલકોડિ જોણીપમુહસહસ્સા પળ્લન્તા । ઉરપરિસપ્થલચર-
પંચિદિયતિરિક્ષજોણિયાણં દસ જાડકુલકોડિ જોણિ પમુહ-
સચસહસ્સા પળ્લન્તા ॥સૂ૦ ૮૮॥

છાયા—ચતુષ્પદસ્થલચરપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં દશ જાતિકુલકોટિયોનિ
પ્રમુલ્લશતસહસ્રાણિ પ્રજ્ઞતાનિ । ઉર:પરિસર્પસ્થલચરપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં દશ
જાતિકુલકોટિયોનિપ્રમુલ્લશતસહસ્રાણિ પ્રજ્ઞતાનિ ॥ સૂ૦ ૮૮ ॥

ટીકા—‘ચતુષ્પથ થલચર-’ इत्यादि—

ચતુષ્પદસ્થલચરપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં—ચત્વારિ પદાનિ=ચરગાનિ ચેપાં
તે ચતુષ્પદાઃ, સ્થલે ચરન્તીતિ સ્થલચરાઃ, પચ્ચેન્દ્રિયાણિ ચેપાં તે પચ્ચેન્દ્રિયાઃ,
તિર્યગ્યોનિકાઃ=તિર્યગ્ચઃ, એપાં ચતુર્ણાં પદાનાં કર્મધારયઃ, તેષાં તથાભૂતાનાં
જીવાનાં દશસંખ્યકાનિ જાતિયોનિપ્રમુલ્લકુલકોટી-શતસહસ્રાણિ=જાતૌ=પચ્ચેન્દ્રિય-
તિર્યગ્જાતૌ યા યોનિપ્રમુલ્લાઃ=ચતુર્લક્ષસંખ્યકપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકોત્પત્તિસ્થાન-

કર અથ સૂત્રકાર યહ પ્રકટ કરને કે લિયે કિ શ્રુતજ્ઞાનકી વૃદ્ધિ તો
શ્રુતજ્ઞાન કે પ્રતિઘાતક શ્રુતજ્ઞાનાવરણીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે હી
હોતી હૈ અતઃ કર્મકે કારણભૂત કુલકોટિ સૂત્રકા કથન કરતે હૈ—

“ચતુષ્પથથલચરપંચિદિય”-इत्यादि । सूत्र ॥८८॥

ટીકાર્થ—ચાર ચરણ જિનકે હોતે હૈં વે ચતુષ્પદ હૈં. સ્થલમેં જો ચલતે
હૈં વે સ્થલચર હૈં. તથા પાંચ ઇન્દ્રિયાં જિનકો હોતી હૈં વે પચ્ચેન્દ્રિય હૈં. ઇન
ચતુષ્પદ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચોંકી જો ઉત્પત્તિ સ્થાનરૂપ યોનિયાં હૈં વે ચાર
લાખ હૈં. ઇન યોનિયોં સે ઉત્પન્ન હુઈ ચતુષ્પદ સ્થલચર પચ્ચેન્દ્રિય તિર્ય-
ગ્યોનિકોંકી કુલકોટિકી સંખ્યા ૧૦ લાખ હૈં. કયોંકિ એક યોનિમેં

પૂર્વસૂત્રમાં શ્રુતજ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરનારાં દસ નક્ષત્રોના નામ પ્રકટ કરવામાં
આવ્યાં. હવે સૂત્રકાર એ વાત પ્રકટ કરવા માગે છે કે શ્રુતજ્ઞાનાવરણીય કર્મોના
ક્ષયોપશમથી જ શ્રુતજ્ઞાનની વૃદ્ધિ થાય છે. તેથી તેઓ કર્મના કારણભૂત
કુલકોટિઓનું કથન કરે છે “ચતુષ્પથથલચરપંચિદિય” (इत्यादि सू ८८)

ટીકાર્થ—જેને ચાર પગ હોય છે, તેને ચતુષ્પદ કહે છે. જે પ્રાણીઓ
જમીન પર જ હલનચલન કરે છે તેમને સ્થલચર કહે છે. જે જીવોને પાંચ
ઇન્દ્રિયો હોય છે, તેમને પચ્ચેન્દ્રિય કહે છે. તે ચતુષ્પદ પચ્ચેન્દ્રિય
તિર્યગ્યોની જે ઉત્પત્તિસ્થાનરૂપ યોનિઓ છે, તે ચાર લાખ કહી છે આ
યોનિઓમાંથી ઉત્પન્ન થયેલી ચતુષ્પદ સ્થલચર પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્યોની કુલ-
કોટિની સંખ્યા ૧૦ લાખ છે, કારણ કે એક યોનિમાં અનેક કુલ હોય છે.

કારણાઃ કુલકોટયસ્તાસાં શતસહસ્રાણિ-લક્ષાણિ પ્રજ્ઞતાનિ=પ્રરૂપિતાનિ તીર્થકર-
ગણધરાદિભિઃ । અયં ભાવઃ=પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્જાતો યા યોનયઃ=ચતુર્લક્ષસંખ્યકાનિ
ઉત્પતિસ્થાનાનિ.તત્પ્રભવાયાશ્ચતુષ્પદસ્થલચરપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાનાં કુલકોટયસ્તા
દશલક્ષસંખ્યકા બોધ્યા इति । एकस्यामपि योनौ अनेककुलानि भवन्ति यथा-
गोमयरूपायामेकस्यां योनौ विचित्राकाराः कृम्यादय उत्पद्यन्ते, अतो दशलक्ष-
संख्यकाः कुलकोटयो भवन्तीति । सूत्रे-“जाइजोणी पमुहकुलकोडिसयसहस्सा”
इतिवक्तव्ये “जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्स” इति कथनं “जोणीपमुह” शब्दस्य
प्राकृत्वेन-परनिपातनाद् बोध्यम् । तथा-उरःपरिसर्पस्थलचरपच્चેન્દ્રિયતિર્યગ્યોनि-
कानामित्यादि सूत्रमपि पूर्ववद् व्याख्येयम्- नवरम् उरसा=वक्षसा परिसर्पन्ति=सञ्च-
रन्ति ये ते उरःपरिसर्पाः उरःपरिसर्पादीनां चतुर्णां पदानां कर्मधारय इति ॥सू०८८॥

પચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકાસ્તુ કર્મપુદ્ગલચયાદિસત્વે એવ ભવન્તીતિ ચયાદીનાહ—

મૂલમ્-જીવાણં દસટ્ટાણનિવ્વત્તિણ પોગ્ગલે પાવકમ્મત્તાણ
ચિણિંસુ વા ચિણંતિ વા ચિણિસ્સંતિ વા, તં જહા-પઠમસમય-
ણિંદિયનિવ્વત્તિણ ૧ જાવ અપઠમસમયપંચિંદિયનિવ્વત્તિણ

अनेक कुल होते हैं. जैसे-गोवर रूप एक योनिमें विचित्र आकार के
कृमी आदि उत्पन्न होते हैं । इसलिये इनकी १० लाख कुलकोटि
संख्या कही गई है । सूत्रमें-“जाइजोणी पमुहकुलकोडिसयसहस्सा”
ऐसा पाठ कहना चाहिये था-सो ऐसा न कहकर “जाइ कुल कोडि
जोणी पमुहसयसहस्सा” जो ऐसा पाठ कहा गया है सो उसमें “जोणी-
पमुह ” शब्दका प्राकृत होने से परनिपात हुआ है इसी प्रकार से जो
“उरः परिसर्पस्थलचर पचच्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकम्” यह पाठ है उसकाभी
कथन जानना चाहिये छातीसे जो सरकते हैं वे उरःपरिसर्प हैं ।सू०८८॥

જેમ કે ગોખર (છાણ) રૂપ એક યોનિમાં વિચિત્ર આકારના કૃમી આદિ
ઉત્પન્ન થાય છે. તેથી તેમની કુલકોટિ સંખ્યા ૧૦ લાખ કહી છે. સૂત્રમાં
“ જાઈજોણીપમુહકુલકોડિસયસહસ્સા ” પાઠ આપવામાં આવેલો બેઠો. હોતો,
પણ એવો પાઠ આપવાને બદલે “ જાઈ કુલકોડિજોણીપમુહસયસહસ્સા ”
આ પ્રકારનો પાઠ આપવામાં આવ્યો છે. કારણ કે તેમાં “ જોણીપમુહ ”
શબ્દનો-પ્રાકૃત હોવાથી-પરનિપાત થયો છે. એ જ પ્રમાણે જે “ ઉરઃપરિસર્પ-
સ્થલચરપચ્ચેન્દ્રિયતિર્યગ્યોનિકમ્ ” આ મૂળપાઠ આવ્યો છે તેનું કથન પણ
સમજવું. છાતીની મદદથી સરકતા એવાને ઉરઃપરિસર્પ કહે છે. ॥ સૂત્ર ૮૮ ॥

૧૦। એવં-ચિળ ૨ બંધ ૩ ઉદીર ૪ વેદ ૫ તહ ણિજ્જરા ચેવ્ઽ દસપણ-
સિયા યંધા અણંતા પળ્લન્તા । દસપણ્ણસોગાઢા પોગ્ગલા અણંતા
પળ્લન્તા । દસ સમયઠિઙ્ગયા પોગ્ગલા અણંતા પળ્લન્તા । દસગુ-
ણકાલગા પોગ્ગલા અણંતા પળ્લન્તા । એવં વન્નેહિં ગંધેહિં રસેહિં
ફાસેહિં દસગુણલુક્ખા પોગ્ગલા અણંતા પળ્લન્તા ॥સૂ ૦ ૮૯॥

॥ દસમં ઠાણં સમ્મત્તં ॥

॥ ઇઙ્ઠ ઠાણં નામ તઙ્ગમં સંમત્તં ॥ ૩ ॥

છાયા-જીવાઃ સ્વલુ દશ સ્થાનનિર્વર્તિતાન્ પુદ્ગલાન્ પાપકર્મતયા અચિન્વન્ વા,
ચિન્વન્તિ વા ચેષ્ણન્તિ વા, તથા-પ્રથમસમયૈકેન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૧ યાવત્ અપ્રથમ
સમયપચ્ચેન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૧૦। એવં-ચયઃ ૧ ઉપચયઃ ૨ વન્ધઃ ૬ ઉદીરઃ ૪ વેદઃ ૫
તથા નિર્જરાચૈવ દશપ્રદેશિકાઃ સ્કન્ધાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । દશપ્રદેશાવગાઢાઃ પુદ્ગલા
અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ દશ સમયસ્થિતિકાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ । દશગુણકાલકાઃ પુદ્ગલા
અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ એવં વર્ણો ગંધૈ રસૈઃ સ્પર્શૈર્દશગુણલુક્ખાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ ॥સૂ ૦ ૮૯,
દશમં સ્થાનં સમાપ્તમ્ ॥

॥ ઇતિ સ્થાનં નામ તૃતીયમઙ્ગં સમાપ્તમ્ ॥ ૩ ॥

ટીકા—‘જીવા ણં’ इत्यादि—

જીવાઃ=સિદ્ધવર્જિતા જીવાઃ, કષાયાદિ પરિણામેન દશસ્થાનનિર્વર્તિતાન્=
દશભિઃ સ્થાનૈઃ=પ્રથમસમયૈકેન્દ્રિયત્વાદિભિઃ પર્યાયૈર્હેતુભિર્નિર્વર્તિતાન્=નિષ્પાદિ-

પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચોનિક જીવ કર્મપુદ્ગલ કે ચયાદિકે સદ્ભાવમેં હી
હોતે હૈં હસલિયે અવ સૂત્રકાર ચયાદિકોંકા કથન કહતે હૈં—

“જીવાણં દસઢ્ઠાણનિવ્વત્તિણ પોગ્ગલે”-इत्यादि । सू ० ॥ ८९ ॥

ટીકાર્થ—સિદ્ધ વર્જિત જીવોંને (સંસારીજીવો) કષાયાદિ પરિણામકે
વશવર્તીં હોકર પ્રથમ સમયૈકેન્દ્રિયાદિરૂપ ૧૦ પર્યાયોં દ્વારા નિષ્પાદિત કર્મ

કર્મપુદ્ગલોના અયાદિને સદ્ભાવ હોય, તે જ પચ્ચેન્દ્રિય તિર્યગ્ચે નિક
આદિ જીવોની ઉત્પત્તિ સંભવી શકે છે, તેથી હવે સૂત્રકાર અય, ઉપચય
આદિનું નિરૂપણ કરે છે “જીવાણં દસઢ્ઠાણનિવ્વત્તિણ પોગ્ગલે” ઇત્યાદિ—(સૂ ૮૯)

ટીકાર્થ—સિદ્ધ સિવાયના જીવોએ કષાયાદિ પરિણામોને આધીન થઈને
પ્રથમસમયૈકેન્દ્રિય આદિ ૩૫ ૧૦ પર્યાયો દ્વારા નિષ્પાદિત કર્મવર્ગણા ૩૫ પુદ્ગલોને

તાન્ પુદ્ગલાન્=કર્મવર્ગનારૂપાન્ પાપકર્મતયા-પાપં=ઘાતિકર્મ સર્વકર્મ વા, તદેવ ક્રિયામાણત્વાત્ કર્મ, તસ્ય માસરતત્તા તયા-અવિન્વન્=સંગ્રહીતયન્તઃ, ચિન્વન્તિ=સંગ્રહણન્તિ વા, ચેષ્યન્તિ=સંગ્રહીપ્યન્તિ વા । અનેન-જીવાનાં પાપકર્મતયા ચિત્તૈઃ પુદ્ગલૈઃ સહ ત્રૈકાલિકોઽન્વયઃ સૂચિતઃ । કે દશસ્થાનનિર્વર્તિતાઃ પુદ્ગલા જીવૈસ્ત્રિ કાલત્રિપયત્વેન સંગ્રહવિપયી-ક્રિયન્તે ૧ इत्याह-तद्यथा प्रथमसमयैकेन्द्रियनिर्वर्तितान्-प्रथमः=आद्यः समय एकेन्द्रियत्वस्य येषां ते प्रथमसमयाः, ते च ते एकेन्द्रियाश्च-प्रथमसमयैकेन्द्रियाः तैर्निर्वर्तितान्=निष्पादितास्तान् एकेन्द्रियत्वस्य प्रथमे समये वर्तमानैर्जीवैर्निष्पादितान् पुद्गलानित्यर्थः १। यावत्पदेन-“अप्रथम समयैकेन्द्रियनिर्वर्तितान् २ प्रथमसमयद्वीन्द्रियनिर्वर्तितान् ३ अप्रथमसमयद्वीन्द्रियनिर्व-

वर्गणारूप पुद्गलोंको पाप कर्मरूपसे घातिया कर्मरूपसे या सर्व कर्मरूपसे ग्रहण किया है, अब भी वे करते हैं और आगे भी वे करेंगे-इस प्रकारके इस कथन से सूत्रकारने जीवोंका पापकर्म रूपसे अर्जित हुए पुद्गलोंके साथ त्रैकालिक अन्वयरूप सम्बन्ध सूचित किया है. वे दश स्थान इस प्रकारसे हैं-प्रथम समयैकेन्द्रिय निर्वर्तित पुद्गल १० एकेन्द्रिय पर्यायके प्रथम समयमें वर्तमान जो जीव हैं वे प्रथमसमयैकेन्द्रिय हैं इन एकेन्द्रिय जीवोंके द्वारा निष्पादित जो पुद्गल हैं वे प्रथमसमयैकेन्द्रिय निष्पादित पुद्गल हैं । यहां यावत्पदसे “अप्रथमसमयैकेन्द्रिय निर्वर्तितान् २, प्रथमसमयद्वीन्द्रियनिर्वर्तितान् ३, अप्रथमसमयद्वीन्द्रियनिर्वर्तितान् ४

પાપકર્મ'રૂપે-ઘાતિયા કર્મ' રૂપે અથવા સર્વ' કર્મ' રૂપે ભૂતકાળમાં ગ્રહણ કર્યા છે, વર્તમાનમાં ગ્રહણ કરે છે અને ભવિષ્યમાં પણ ગ્રહણ કરશે. આ પ્રકારના આ કથન દ્વારા સૂત્રકારે પાપકર્મ'રૂપે એકત્ર થયેલાં પુદ્ગલોની સાથે જીવોને ત્રૈકાલિક અન્વય રૂપ સંબંધ પ્રગટ કર્યો છે. તે દસ સ્થાન નીચે પ્રમાણે છે પ્રથમ સમયેકેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલથી લઈને અપ્રથમ સમય પંચેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલ પર્યાન્તના દસ સ્થાનો અહીં ગ્રહણ કરવા જોઈએ. હવે સૂત્રકાર આ દસે સ્થાનોનો અર્થ સ્પષ્ટ કરે છે.

એકેન્દ્રિય પર્યાયના પ્રથમ સમયમાં વર્તમાન જે જીવ છે તેનું નામ પ્રથમ સમયેકેન્દ્રિય છે. આ એકેન્દ્રિય જીવો દ્વારા નિષ્પાદિત જે પુદ્ગલો છે તેમને પ્રથમ સમયેકેન્દ્રિય નિષ્પાદિત પુદ્ગલો કહે છે. અહીં “પર્યાન્ત” પદ દ્વારા નીચેનાં આઠ સ્થાનો ગ્રહણ થયાં છે.

(૨) અપ્રથમ સમયેકેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૩) પ્રથમ સમયદ્વીન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૪) અપ્રથમસમયદ્વીન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૫) પ્રથમ

તિતાન્ ૪ પ્રથમસમયત્રીન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૫ અપ્રથમસમયત્રીન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૬
પ્રથમસમયચતુરિન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૭ અપ્રથમસમયપચ્ચેન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૮ પ્રથમસમય-
પચ્ચેન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૯” इति संग्राहम् । तत्र अप्रथमसमयैकेन्द्रियनिर्वर्तितान्—
एकेन्द्रियत्वस्य द्वितीयादिसमयेषु वर्तमानै जीवै निष्पादितान् २। एवमेव—प्रथम-
समयद्वीन्द्रियनिर्वर्तितान् इत्यारभ्य ‘अप्रथमसमयपच्येन्द्रियनिर्वर्तितान्, इत्यन्तानां
पदानामप्यर्थो विज्ञेय इति। यथा जीवा अप्रथमसमयैकेन्द्रिय-निर्वर्तितानीन् पुद्गलान्
काञ्चनविषयतया उपचय विषयीकुर्वन्ति, बन्धविषयीकुर्वन्ति, उदीरणा विषयी-

પ્રથમસમયત્રીન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૫, અપ્રથમ સમયત્રીન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૬,
પ્રથમ સમય ચતુરિન્દ્રિયનિર્વર્તિતાન્ ૭, અપ્રથમ સમયચતુરિન્દ્રિય
નિર્વર્તિતાન્ ૮, પ્રથમ સમય પચ્ચેન્દ્રિય નિર્વર્તિતાન્ ૯ “इस पाठका संग्रह
हुआ है एकेन्द्रिय पर्यायके द्वितीयादि समयोंमें वर्तमान जो जीव हैं वे
अप्रथम समयैकेन्द्रिय हैं ऐसे इन एकेन्द्रिय जीवों द्वारा निष्पादित जो
पुद्गल हैं वे अप्रथमसमयैकेन्द्रियनिर्वर्तितपुद्गल हैं। इसी प्रकारसे
प्रथमसमयद्वीन्द्रियनिर्वर्तितान् “पदसे लगाकार” अप्रथम
समयपच्येन्द्रियनिर्वर्तितान् “यहां तकके समस्त पदोंनकका अर्थ
करलेना चाहिये, जिस प्रकार जीव अप्रथम समयैकेन्द्रिय निर्वर्तित हुए
आदि पुद्गलोंको कालत्रयमें संगृहीत करते हैं उसी तरह वे जीव उन
पुद्गलोंको त्रिकालमें उपचयका विषय बनाते हैं बन्धका विषय बनाते हैं,

સમય ત્રીન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૬) અપ્રથમ સમય ત્રીન્દ્રિય નિર્વર્તિત
પુદ્ગલો, (૭) પ્રથમ સમય ચતુરિન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૮) અપ્રથમ સમય
ચતુરિન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો, (૯) પ્રથમ સમય પચ્ચેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો.

દસમું સ્થાન—અપ્રથમસમયપચ્ચેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો.—આ સ્થાનનું
નામ તે આગળ આપવામાં આવ્યું જ છે.

એકેન્દ્રિય પર્યાયના આદિ સમયોમાં વર્તમાન જે જીવો છે તેમનું નામ
અપ્રથમ સમયેકેન્દ્રિયો છે એવાં તે એકેન્દ્રિય જીવો દ્વારા નિષ્પાદિત જે પુદ્ગલો
છે તેમને અપ્રથમ સમયેકેન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલો કહે છે. એજ પ્રમાણે પ્રથમ
સમય દ્વીન્દ્રિય નિર્વર્તિત પુદ્ગલોથી લઈને અપ્રથમ સમય પચ્ચેન્દ્રિય નિર્વર્તિત
પુદ્ગલો પર્યન્તના આઠે પદોનો અર્થ પણ સમજવો. જેવી રીતે જીવો પ્રથમ
સમય એકેન્દ્રિય નિર્વર્તિતથી લઈને અપ્રથમ સમય પચ્ચેન્દ્રિય નિર્વર્તિત
પર્યન્તના પુદ્ગલોનો ત્રણે કાળમાં ચય (સંગ્રહ) કરે છે, એ જ પ્રમાણે તેઓ
ત્રણે કાળમાં તેમનો ઉપચય પણ કરે છે, બન્ધ પણ કરે છે, ઉદીરણા પણ

કુર્વન્તિ, વેદવિષયીકુર્વન્તિ, નિર્જરાવિષયી=કુર્વન્તિ ચ । એતદેવ દર્શયિતુમાહ—‘એવં ચિણ ઉવચિણ’ ઇત્યાદિ । અસ્યાયમર્થઃ—યથા ચય સૂત્રમભિહિતં તથૈવ ઉપચયાદિ સૂત્રાણ્યપિ વક્તવ્યાનીતિ । ચયોપચયાદીનાં ભેદસ્ત્વયમ્—ચયઃ=રૂપાયાદિ પરિણામ—યુક્તસ્ય જીવસ્ય કર્મપુદ્ગલાનાં ગ્રહણમાત્રમ્ ઉપચયઃ=ગૃહીતાનાં કર્મપુદ્ગલાનાં જ્ઞાનાવરણાદિત્વેન નિષેકઃ, બન્ધઃ=નિકાચનં કર્મપુદ્ગલાનાં નિવિઢતયા બન્ધનમ્, ઉદીરઃ=ઉદીરણમ્=અપ્રાપ્તેઽપિ કાલે પ્રયત્નવિશેષેણ કર્મફલાનામુદયાવલિકાયાં પ્રવેશનમ્, વેદઃ=વેદનમ્=ઉદયાવલિકાયાં પ્રવેશિતાનાં કર્મણાં ફલસ્ય મુલ્લઘ્વાદેરનુભવનમ્, નિર્જરા=ઉદયાવલિકા પ્રવેશિતકર્મપુદ્ગલફલભૂતમુલ્લઘ્વાદિરનુભવનેન જીવપ્રદેશેભ્યઃ

और निर्जराका विषय बनाते हैं । इसी बातको प्रकट करनेके लिये सूत्रकारने “एवं चिण उवचिणं” इत्यादि पाठ कहा है, इस पाठका ऐसा अर्थ है जिस प्रकारसे चयसूत्र कहा गया है उसी प्रकारसे उपचयादि सूत्र भी कहलेना चाहिये, चय उपचयआदिमें ऐसा भेद है—कषायादि परिणामसे युक्त जीवका जो कर्मपुद्गलोंका ग्रहण करना है वह चय है गृहीत कर्मपुद्गलोंका ज्ञानावरणादिरूपसे जो निषेक है वह उपचय है कर्म पुद्गलोंका जो निविडरूप से बन्धन है वह बन्ध है अप्राप्त कालके होने पर भी प्रयत्न विशेष से कर्मफलोंका जो उदयावलिकामें प्रवेश कराना है वह उदीरण है उदयावलिकामें प्रवेशित कर्मपुद्गलके फलभूत सुख-दुःखादिका जो अनुभवन करता है वह वेद है उदयावलिकामें प्रवेशित कर्मपुद्गलके फलभूत सुख दुःखादिके अनुभवन से

કરે છે, વેદન પણ કરે છે અને નિર્જરા પણ કરે છે. એ જ વાતને સૂત્રકારે નીચેના સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે.

“એવં ચિણ ઉવચિણં” ઇત્યાદિ. આ સૂત્રપાઠ દ્વારા એવું સૂચન કરવામાં આવ્યું છે કે જે પ્રકારે ચયસૂત્રનું કથન કરવામાં આવ્યું છે, એ જ પ્રકારે ઉપચયાદિ સૂત્રોનું પણ કથન કરવું જોઈએ.

ચય, ઉપચય આદિ વચ્ચે આ પ્રકારનો તફાવત છે—કષાયાદિ પરિણામોથી યુક્ત જીવ દ્વારા કર્મપુદ્ગલોને ગ્રહણ કરવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને ચય કહે છે. ગૃહીત કર્મપુદ્ગલોનો જ્ઞાનાવરણીય આદિ રૂપે જે નિષેક થાય છે, તેનું નામ ઉપચય છે. કર્મપુદ્ગલોનું જે નિષિઢ (ગાઢ) રૂપે બન્ધન છે તેનું નામ બન્ધ છે. ઉદયમાં આવવાનો સમય પરિપક્વ થયા પહેલાં પ્રયત્ન વિશેષ દ્વારા કર્મફલોને ઉદયાવલિકામાં જે પ્રવેશ કરાવવામાં આવે છે તેનું નામ ઉદીરણ છે. ઉદયાવલિકામાં પ્રવેષિત કર્મપુદ્ગલોના ફલરૂપ મુલ્લઘ્વાદિનું જે અનુભવન કરવામાં આવે છે તેનું નામ વેદન છે. ઉદયાવલિકામાં પ્રવેશિત કર્મપુદ્ગલોના

કર્મપુદ્ગલાનાં પૃથગ્ભવનમિતિ । અનન્તરં કર્મપુદ્ગલાનાં ચયાદિરુક્ત ઇતિ પુદ્ગલપ્રસ્તાવાત્
સ્કન્ધાદીનાહ—‘દસપણસિયા’ ઇત્યાદિ । દશપ્રદેશિકાઃ—દશચ તે પ્રદેશાઃ=નિરંશા
અવયવાશ્ચેતિ દશપ્રદેશા, તે સન્તિ યેષાં તે તથા—દશપ્રદેશાત્મકાઃ સ્કન્ધાઃ=પુદ્ગલ-
સમૂહાઅનન્તાઃ=પ્રજ્ઞપ્તા ઇતિ દ્રવ્યતઃ । તથા—દશપ્રદેશાવગાઢાઃ દશસુ પ્રદેશેષુ=ક્ષેત્રાંશ-
વિશેષેષુ અવગાઢાઃ=આશ્રિતાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ કથિતા ઇતિ ક્ષેત્રતઃ । તથા—દશ-
સમયસ્થિતિકાઃ—દશસમયાન્ યાવત્ સ્થિતિમન્તઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ ઇતિ કાલતઃ ।
एवमेव पञ्चानां वर्णानां ५, द्वयोर्गन्धयोः २ पञ्चानां रसानां ५ पञ्चानां स्पर्शानां
च भेदैर्युक्ताः पुद्गला अनन्ताः बोध्याः । अमुमेवार्थं सूचयितुमाह—‘दशगुणकालकाः

કર્મપુદ્ગલોંકા જો જીવ પ્રદેશોંસે પૃથગ્ હોના હૈ વહ નિર્જરા હૈ હસ
પ્રકારસે કર્મપુદ્ગલોંકા ચયાદિ કહકર અવ સૂત્રકાર પુદ્ગલકે પ્રસ્તાવસે
સ્કન્ધ આદિકા કથન કરતે હૈ—“દસપણસિયા” ઇત્યાદિ—દશ જો
નિરંશા અવયવ હૈ વે દશ પ્રદેશ હૈ—યે દશ પ્રદેશ હૈ જિનકે વે દશ
પ્રદેશિક સ્કન્ધ હૈ પરમાણુરૂપ પુદ્ગલોંકા સમુદાયરૂપ હોતા હૈ । યે દશ
પ્રદેશિક સ્કન્ધ દ્રવ્યકી અપેક્ષાસે અનન્ત કહે ગયે હૈ । તથા—દશ પ્રદે-
શાવગાઢ સ્કન્ધ ક્ષેત્રાંશ વિશેષરૂપ પ્રદેશોંમે આશ્રિત પુદ્ગલ ક્ષેત્રકી
અપેક્ષાસે અનન્ત કહે ગયે હૈ તથા—દશ સમય તકકી સ્થિતિવાલે પુદ્ગલ
કાલકી અપેક્ષા અનન્ત કહે ગયે હૈ । હસી પ્રકાર પાંચ વર્ણોંકે દો ગન્ધોં
કે, પાંચ રસોંકે પાંચ સ્પર્શોંકે ભેદોંસે યુક્ત પુદ્ગલ ભી અનન્ત કહે ગયે
હૈ । હસી અર્થકો સૂચિત કરનેકે લિયે સૂત્રકારને “દશ ગુણકાલકાઃ
પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ “યહાંસે લેકર” દશ ગુણરૂક્ષાઃ પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ

इत्यत्र सुषुप्तः आदिना वेदन द्वारा कर्मपुद्गलानुं एवप्रदेशोऽथी अलग्ग थावा
इय न्ने कायं थाय छे तेनुं नाम निर्जरा छे.

આ પ્રકારે પુદ્ગલોના ચયાદિનું કથન કરીને હવે સૂત્રકાર સ્કન્ધ આદિનું
કથન કરે છે “દસપણસિયા” ઇત્યાદિ—જે હસ નિરંશ અવયવ છે તેમને હસ
પ્રદેશ કહે છે. એવાં હસ પ્રદેશોવાળા સ્કન્ધને હસ પ્રદેશિક સ્કન્ધ કહે છે.
સ્કન્ધ પરમાણુ રૂપ પુદ્ગલોના સમુદાય રૂપ હોય છે. આ હસ પ્રદેશિક સ્કન્ધોને
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત કહ્યા છે. તથા હસ પ્રદેશાવગાઢ (હસ પ્રદેશોની
અવગાહનાવાળા) સ્કન્ધને ક્ષેત્રાંત વિશેષ રૂપ પ્રદેશોમાં આશ્રિત પુદ્ગલ ક્ષેત્રની
અપેક્ષાએ અનંત કહ્યા છે તથા હસ સમય સુધીની સ્થિતિવાળાં પુદ્ગલોને
કાળની અપેક્ષાએ અનંત કહ્યા છે.

એ જ પ્રમાણે પાંચ વર્ણો, બે ગન્ધો, પાંચ રસો અને પાંચ સ્પર્શોના
ભેદોથી યુક્ત પુદ્ગલો પણ અનંત કહ્યા છે. એજ વાતને સૂત્રકારે “દશગુણ

પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તા ઇત્યારમ્ય દશગુણરૂક્ષાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ' ઇત્યન્તં
 બોધ્યમિતિ । અર્થસ્તુ-દશગુણઃ=એકગુણાપેક્ષયા દશગુણાધિકઃ કાલઃ=કૃષ્ણવર્ણ-
 વિશેષો યેષાં તે તથાભૂતાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ' ઇતિ ક્રમેણ વિજ્ઞેય ઇતિ ।
 શાસ્ત્રાદૌ શાસ્ત્રાન્તે શાસ્ત્રમધ્યે ચ મજ્જલમાચરણીયમ્ ઇતિ શિષ્ટાચારોઽત્ર શાસ્ત્રાન્તે
 મજ્જલાર્થકાનન્તશબ્દોપાદાનેન પરિરક્ષિત ઇતિ બોધ્યમ્ ॥ સૂ. ૮૯ ॥

॥ ઇતિ દશમં સ્થાનં સમાપ્તમ્ ॥

॥ ઇતિ શ્રી ત્રિશ્વશિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચક પશ્ચદશ ભાષા-
 કલિતલલિતકલાપાલાપક પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યાનૈઃગ્રન્થનિર્માયક
 વાદિમાનમર્દક શ્રી શાહુ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત-
 'જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુર રાજગુરુ-
 વાલબ્રહ્મચારિ-જૈનચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર
 -પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલત્રિવિર-
 ચિતા શ્રી સ્થાનાન્ગસૂત્રસ્ય
 સુધારણ્યા વ્યાખ્યા
 સમાપ્તા ॥

॥ ઇતિ દશમં સ્થાનં સમાપ્તમ્ ॥

પ્રજ્ઞપ્તાઃ “યહાં તકકા પાઠ કહા હૈ, એક ગુણકી અપેક્ષાસે દશ ગુણ
 અધિક કાલ-કૃષ્ણ વર્ણ જિનકા હોતા હૈ એસે વે પુદ્ગલ દશ ગુણકોલક
 કહે ગયે હૈ” । એસે દશ ગુણકાલ પુદ્ગલ અનન્ત કહે હૈ । હસી ક્રમસે
 દશ ગુણ રૂક્ષ આદિ પદોંકા મી વ્યાખ્યાન કરલેના ચાહિયે, “આદૌ
 મધ્યાવસાને ચ મજ્જલં ભાષિતં બુધૈઃ” હસ કથનકે અનુસાર શાસ્ત્રકી
 આદિમેં શાસ્ત્રકે અન્તમેં ઓર શાસ્ત્રકે મધ્યમેં મંગલ આચરણીય હોતા
 હૈ, એસા જો શિષ્ટાચાર હૈ વહ સૂત્રકારને મજ્જલાર્થવાચક અનન્ત શબ્દકે
 ઉપાદાનસે પરિરક્ષિત કિયા હૈ-અર્થાત્ ઉસકા નિર્વાહ કિયા હૈ, એસા
 જાનના ચાહિયે । સૂત્ર ॥૮૯॥ ॥ દશવાં સ્થાન સમાપ્ત ॥

કાલકાઃ પુદ્ગલાઃ અનન્તાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ” થી લઈને “દશગુણરૂક્ષાઃ પુદ્ગલા અનન્તાઃ
 પ્રજ્ઞપ્તાઃ” આ સૂત્રપાઠ પર્યન્તના સૂત્રપાઠ દ્વારા વ્યક્ત કરી છે.

કોઈ એક પુગદ્દલમાં બેટલી કાળાશ હોય તેના કરતાં દસગણી કાળાશવાળા
 પુગદ્દલને બહી. “દસગુણ કાલક” દસગણું કાળું કહ્યું છે. એવાં દસ ગણી
 કાળાશવાળાં પુદ્ગલો પણ અનન્ત કહ્યાં છે આ કેમ અનુસાર દસ ગણી રૂક્ષતા
 વળાં પુદ્ગલો સુધીના પુદ્ગલોનું કથન પણ બહી કરવું જોઈએ.

“આદૌ મધ્યાવસાને ચ મજ્જલં ભાષિતં બુધૈઃ” આ કથન અનુસાર શાસ્ત્રના
 પ્રારંભે, અન્તે અને મધ્યભાગે મંગલ આચરણીય હોય છે. સૂત્રકારે મંગલાર્થક
 “અનન્ત” પદનો પ્રયોગ કરીને આ શિષ્ટાચારનું પાલન કયું છે, એમ
 સમજવું. ॥ સૂત્ર ૮૬ ॥ ॥ દસમું સ્થાન સમાપ્ત ॥

શાસ્ત્રપ્રશસ્તિ:—

દ્વિસહસ્રે સપ્તસંખ્યે, વૈક્રમીયે ચ વત્સરે ।
 બુધે ચ ચૈત્રમાસસ્ય, દશમ્યાં પુણ્યમે સિતે ॥ ૧ ॥
 સૌરાષ્ટ્ર સુભગે દેશે. મધુમત્યાસ્તટસ્થિતે ।
 મેન્દડા સંજ્ઞક ગ્રામે, શ્રાવકાવાસસંકુલે ॥ ૨ ॥
 ટીકા સ્થાનાઙ્ગસૂત્રસ્ય સુધાખ્યા મન્યમઞ્જુલા ।
 સંઘમોજનશાલાયાં, પૂર્વાર્હે પૂર્ણતામગાત્ ॥ ૩ ॥
 અત્યત્વઃ સ્વલ્પ ભક્તિભાવસરસઃ કારુણ્યરત્નાકરઃ,
 શુદ્ધસ્થાનકવાસિધર્મનિરતઃ સમ્યક્ત્વભાવાન્વિતઃ ।
 તત્ત્વાતત્ત્વપયોવિવેચનધિધૌ હંસાયમાનઃસદા,
 સર્વેષામુપકારકો વિજયતે શ્રી જૈનસંઘો મહાન્ ॥૪॥

શાસ્ત્રપ્રશસ્તિ

દો હજાર સાત વિક્રમ સંવત્સરમેં જબ કિ બુધવારકા દિન થો
 ઓર ચૈત્રકા મહીના થા શુક્લ પક્ષથા પુણ્યનક્ષત્ર થા ૧૦ વીં તિથી થો
 ૧, સૌરાષ્ટ્ર પ્રાંતમેં સ્થિત મેન્દડાં નામકે ગ્રામમેં જો કિ મધુવંતીકે તટ
 પર સ્થિત હૈ ઓર જિસમેં શ્રાવકોંકે અધિક ઘર હૈ ૨, ઇસ સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર-
 સુધાનામકી યહ ટીકા પૌષધશાલામેં સમાપ્ત હુઈ હૈ. યહ ટીકા મન્ય-
 જીવોંકો વડી સુન્દર લગી હૈ । જબ યહ ટીકા પૂર્ણ હુઈથી ડસ સમય
 પૂર્વાહ્નિકા સમય થા ૩.

યહાંકા શ્રી જૈનસંઘ ભક્તિભાવસે સરસ હૈ, કરુણાકા સમુદ્ર હૈ
 શુદ્ધ સ્થાનકવાસિધર્મકે પાલન કરનેમેં નિરત હૈ, સમ્યક્ત્વ ભાવસે

શાસ્ત્ર પ્રશસ્તિ

વિક્રમ સંવત ૨૦૦૭ના ચૈત્ર સુદ દસમને બુધવારે, પુણ્ય નક્ષત્ર ત્યારે
 ચાલતું હતું ત્યારે સૌરાષ્ટ્રના મેન્દડા નામના મધુમતિ નદીના કિનારે વસેલા
 ગામની પૌષધશાળામાં, સ્થાનાંગ સૂત્રની આ સુધા નામની ટીકા સમાપ્ત થઈ
 હતી. પૂર્વાર્હ કાળે (દ્વિસના પૂર્વાર્ધમાં) આ ટીકા લખવાનું કામ પૂરું થયું
 હતું. આ ટીકા ભવ્ય જીવેને ઘણી સુંદર લાગી છે. આ મેન્દડા ગામમાં
 શ્રાવકોનાં ઘણાં ઘર છે.

મેન્દડા ગામનો જૈનસંઘ ભક્તિભાવથી યુક્ત અને કરુણાનો સાગર છે,
 શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મનું પાલન કરવામાં લીન છે. સમ્યક્ત્વ ભાવથી પૂર્ણ

देवे गुरौ धर्मपथे च भक्तिर्यथा सदाचाररुचिर्हिनित्यम्
ते श्रावका धर्मपरायणाश्च सुश्राविकाः सन्ति गृहे गृहेऽत्र ॥५॥

॥ शास्त्र प्रशस्तिः समाप्त ॥

भरा हुआ है इसी प्रकार तत्त्वा तत्त्वका विवेक करनेमें पटु हैं, और समस्त जीवोंका उपकारक है ऐसा यह महान् श्री जैनसंघ सदा विजयशील बना रहे ४ देवमें गुरुमें और धर्ममार्गमें जिनकी परम भक्ति रहती है सदाचारके पालनमें जिनकी सदा रुचि बनी रहती है ऐसे वे श्रावक और धर्मपरायणा श्राविकाएँ यहां पर घर घरमें हैं ।

॥ शास्त्र प्रशस्ति समाप्त ॥

અને તત્ત્વાત્ત્વનો વિવેક કરવામાં નિપુણ, અને સમસ્ત જીવોનો ઉપકારક છે. એવો આ મહાન શ્રી જૈનસંઘ સદા વિજયશીલ બની રહે, એવી મારી શુભેચ્છા વ્યક્ત કરું છું.

આ ગામના પ્રત્યેક ઘરમાં એવાં શ્રાવક શ્રાવિકાઓ વસે છે કે જેઓ દેવ, ગુરુ અને ધર્મમાર્ગ પ્રત્યે ભક્તિભાવથી યુક્ત અને સદાચારનું પાલન કરવાની રુચિવાળાં છે.

॥ शास्त्र प्रशस्ति समाप्त ॥

